

खोज में उपसुब्ध
हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों

का
त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण

[सम् १९२६-१९२८ ई०]

संग्रहक
स्वर्गीय रा० ब० डा० हीरालाल, बी० लिट्, एम० आर० ए० एस०

(श्री बटुकृष्ण एम० ए० द्वारा अमेजी से हिंदी में रूपांतरित)



उत्तर प्रदेशीय शासन के संरक्षण में काशी नागरीप्रचारिणी समा
द्वारा संपादित और प्रकाशित

काशी

सं० २०१० वि०

श्री अखण्डराज्यीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

सूची

	१३
बाल्य	२
पूर्व पीठिका	५
आमुर	७
विचरगिरा	१
प्रथम परिशिष्ट—उपसम्पन्न हस्तलेखों के रचयिताओं पर टिप्पणियाँ	११
द्वितीय परिशिष्ट—प्रथम परिशिष्ट में यंत्रित रचनाओं की वृत्तियों के उद्धरण	१९
तृतीय परिशिष्ट—अज्ञात रचनाकारों के ग्रंथों की सूची	७७९
चतुर्थ परिशिष्ट—महावैष्णव हस्तलेखों की समसम्पन्न तादिका	७८७
ग्रंथकारों की अनुक्रमगणिका	४-३
ग्रंथों की अनुक्रमगणिका	४-५

श्री अखण्डराज्यीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

वक्तव्य

प्रस्तुत योजन-विवरण को हिंदी में रूपांतरित करके सं० २००५ दि० (सन् १९४९ ई०) में ही उत्तरप्रदेश के राज्यशासन के पाम प्रकाशनार्थ भेज दिया गया था। परंतु राजकीय मुद्रणालय के अत्यधिक कार्यव्यस्त रहने के कारण इसकी छपाई न हो सकी। इस प्रकार यह अप्रकाशित ही रह गया। इस विवरण के अतिरिक्त १९२९ से १९४० ई० तक के और भी सात वार्षिक वृहत्काय विवरण अप्रकाशित पड़े हुए हैं और आठवाँ तैयार हो रहा है। कहना नहीं होगा कि इनके अप्रकाशित रहने से हिंदी साहित्य के अनुसंधान कार्य में बड़ी बाधा पड़ रही थी। अनुसंधानकों की सुविधा के लिए आवश्यकता पड़ने पर अप्रकाशित विवरण भी उन्हें देखने को दिए जाते हैं। परंतु इसका एक दुष्परिणाम यह होता है कि विवरणों के जीर्ण पत्रे बार बार खोजन-बाँधने से नष्ट हो जाते हैं। नष्ट पत्रों के स्थान पर नये पत्रे छिन्नकर आइने पड़ते हैं। परंतु कई हाथों द्वारा प्रतिक्रियादान में मूक पत्रों के पाठ के कुछ-न-कुछ बरख जाने की आशंका बनी रहती है। इन सब बातों को दूरते हुए इनका अप्रकाशित रहने से बचा उचित नहीं था। सभा इन्हें छपाने के लिये बहुत उत्सुक रही। सं० २००७ (सन् १९५१) में सभा में योजन विभाग के महासचिव निरीक्षक डा० बासुदेव शरण अग्रवाल के सुझाव के अनुसार उत्तर प्रदेशीय राज्य शासन के समुच्च एक याजना रही। इसमें राजकीय मुद्रणालय की धरतलता देने के लिए विवरणों को अल्पसे छपा देने का सुझाव था। उस समय इन सार विवरणों को कुछ संक्षिप्त करके छपाने का व्यव २०७००) कृता गया था। राज्यशासन ने उद्योगितापूर्वक इस प्रस्ताव पर ध्यान दिया और मंजूर करके ठीक परंतु २७ दिसंबर १९५२ के आदेश पत्र द्वारा (१००००) का अनुदान स्वीकार किया। इस अनुदान को दृष्टि में रखते हुए यथासंभव संक्षेप करके विवरणों का प्रकाशित कर देने का निश्चय किया गया। सभा ने इसका पूर्ण भी विवरणों को कुछ संक्षिप्त करके छपाने का निश्चय किया था। और मिति २० अगस्त २०१० दि० (सन् १९५३ ई०) की योजन विभाग की उपसमिति ने निश्चय किया कि लगभग एक एक हजार पृष्ठों की तीन जिल्दों में मिलने भी विवरण छप सकें छाप किए जायें। इसी निश्चय के अनुसार ये विवरण छापे जा रहे हैं। प्रथम जिल्द पाठकों के सामने है। इसमें सन् १९२९-२८ का वार्षिक विवरण है जिसका मूल रूप अब तक के प्रकाशित सभी विवरणों से अधिक विस्तार था। संक्षेपकरण के कारण ही यह एक जिल्द में प्रकाशित किया जा सका है। हमें आशा है कि दोष को जिल्दों में आने के कम से कम दो और वार्षिक विवरण अल्पसे छाप किए जायेंगे। संक्षेप करने से इस बात का पूरा प्पान होता गया है कि विवरणों का मूल उद्देश्य नष्ट न होना पाए। उदाहरणों की मात्रा कम करके दे दी गई है, पर कवि-परिचय ऐतिहासिक महत्त्व की बातें, ग्रंथ का काष्ठ निर्णय करने वाला और तथा अन्य आवश्यक बातें ज्यों-की-ज्यों

रहने दी गई हैं। जिन निर्देशों में केवल ग्रंथ का परिचय मात्र दिया गया है उनकी पुष्पिकाओं में यदि कोई महत्त्व की बात दिखी है, या उसी के समान ग्रंथों की पुष्पिका से भिन्न बात दिखी है तो उसे भी छाप दिया गया है। प्रस्तुत निरीक्षक के हाथ में आने के पूर्व प्रस्तुत त्रैवार्षिक विवरण एकाधिक सपादकों के हाथों से गुजर चुका था। इसका संक्षेपीकरण भी कर लिया गया था। फिर भी प्रस्तुत निरीक्षक ने उन्हें फिर से देख लिया है और प्रयत्न किया है कि अनुसंधायकों की दृष्टि से जो बातें महत्त्वपूर्ण हैं वे झूटने न पाएँ। इसीलिये कई जगह काटे अंशों को भी छापने का आदेश देना पड़ा है। विवरण अंग्रेजी वर्णमाला के अनुसार सजाए गए हैं। पं० विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र द्वारा लिखित 'पूर्व पीठिका' में उनके परिवर्तित न करने का कारण बताया गया है। हिंदी पाठकों की सुविधा के लिये नागरी अक्षरों के क्रम से अक्षरों और ग्रंथों की अनुक्रमणिकाएँ दे दी गई हैं। उन्हें देखने से पता चल जाएगा कि किस लेखक या ग्रंथ का विवरण कहाँ दिया गया है।

दीर्घ व्यवधान के बाद ये विवरण प्रकाशित हो रहे हैं। इसके लिये हम उत्तर-प्रदेश राज्यशासन के आभारी हैं जिसकी सहायता से यह सम्भव हो सका है और जिसको इस कार्य के संरक्षण का श्रेय प्राप्त है। हमें पूर्ण आशा है कि राज्यशासन की सहायता से अप्रकाशित सभी विवरण अब शीघ्र से शीघ्र छप जाएँगे।

वक्तव्य को समाप्त करने से पहले मैं सभा के प्रधान मंत्री डा० राजवली पांडेय के प्रति आभार प्रकट कर देना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने इस कार्य में पूर्ण रुचि लेते हुए इस बृहत्काय विवरण को नागरी मुद्रणालय में छपवाने का शीघ्र प्रबंध कर दिया। मुद्रणालय के मैनेजर वावू महतावराय जी का मैं विशेष अनुगृहीत हूँ जिन्होंने प्रस्तुत विवरण को समय पर छापने के अतिरिक्त पूर्ण मशीन के कार्य में बड़ी सहायता पहुँचाई है। खोज विभाग के अन्वेषक श्री दौलतराम जुयाल के परिश्रम और लगन से ही यह कार्य शीघ्र संपन्न हो सका है। वे और उनके सहायक श्री रघुनाथ शास्त्री भी हमारे विशेष धन्यवाद के भाजन हैं।

काशी,

पाप शुद्ध ५, स० २०१० वि०

}

हजारीप्रसाद द्विवेदी
निरीक्षक,
खोज विभाग

पूर्व पीठिका

सं० २००० में काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने अपना अर्धशताब्दी उत्सव मनाया और उस अवसर पर यह निश्चय किया कि शास्त्र-विभाग की विवरणिकाएँ हिंदी भाषा और नागरी लिपि में ही प्रस्तुत की जायें। इसके पूर्व कुछ प्रांतीय सरकार को प्रकाशित करने के लिए त्रिभुजा विवरणिकाएँ ही गई थीं। उनमें प्रयोग के उदाहरणों और उनके साथ हिंदू उक्त प्रयोगों के विषय परिचय के अतिरिक्त प्रायः शेष तथा अंगरजी भाषा और रोमक लिपि में ही रहते थे। सरकार ने सन् १९२५ तक की विवरणिकाएँ प्रकाशित कर दी हैं। इसके अनंतर सभा द्वारा लिखा पढ़ी आम पर सरकार ने आगे की विवरणिकाओं के छापन की भी व्यवस्था की और उसके लिए सभा से सन् १९२६ से १९३८ तक की श्रियो की विवरणिका छापने के लिए माँगी। यह विवरणिका भूतपूर्व निरीक्षक श्री हीरासाम जी ने श्लोक-विभाग के साहित्यान्वेषकों की सहायता और प्रस्तुत सामग्री के आधार पर अंगरजी में ही संपादित की थी। सभा के निश्चय के अनुसार इस और इसके आगे की विवरणिकाओं का पूर्णतया हिंदी भाषा और नागरी लिपि में होना आवश्यक था। पर पूर्णतया हिंदी भाषा में करने में सब से बड़ी बात यह उत्पन्न हुई कि सभा सन् १९०० से १९४४ तक के शास्त्र विवरणों का जो संक्षिप्त विवरण प्रकाशित कर रही है और जिसका कार्य सभा का पूर्ण निश्चय होने के पूर्व ही समाप्त हो चुका था उसमें लाभ के प्रस्तुत विवरणों और विवरणिकाओं का ही संकेत दिया हुआ है। अब यदि आगे की विवरणिकाओं में परिशिष्ट २ में दिए गये उदाहरणों के संकेत शुद्ध हिंदी में अकारादि क्रम से कर दिए जाते तो संक्षिप्त विवरण का मार्ग परिश्रम निष्कल हो जाता या उस नए सिरे में संपादित करना पड़ता। उस संक्षिप्त विवरण का कुछ अंश मुद्रणालय में छप भी गया है। जमी स्थिति में यही ठीक समझा गया कि सामान्य लिपि के अनुसार प्रयोगों का जो अनुक्रम बनाया गया है वह ज्यों का त्यों रखा जाय और शेष अंश हिंदी भाषा में कर दिया जाय तथा सशत्रु नागरी लिपि का नियमपूर्वक व्यवहार किया जाय। श्री हीरासाम जी द्वारा प्रस्तुत विवरणिका का हिंदी भाषा में हस्तांतरित काम का काम सभा के अनुपजीवन विभाग के अनुसंधायक और श्री पद्मपति मिहानिया छात्र सृष्टि भागाधी बर हृष्ण श्री० ए० (धारम) एम० ए० को सौंपा गया और उसकी महाबता के लिए शास्त्र-विभाग के वर्तमान साहित्यान्वेषक श्री दीक्षितराम शुक्ल तथा श्री हृष्णकुमार यात्रपती का आदेश दिया गया। श्री बर हृष्ण जी ने अत्यंत सावधानी और धारणापूर्वक यह कार्य सम्पन्न किया और कट्टर स्थलों पर विवरणिका में मूलों की निर्दिष्ट कीं। ईति अब विवरणिका का दृग्गता आरंभ किया तो अद्यतन प्राप्त सामग्री के आधार पर उसमें जनक परि बतनों की आवश्यकता प्रकट हुई। इन सुक्तियों का परिभाषित करने और विवरणिका को समधानुक्रम कर देने में दो पाठ्य थीं। एक तो संक्षिप्त विवरण में बहुत उलट कर करना पड़ना दूसरे जमा करने में पर्याप्त समय भी लगने की संभावना है। विवरणिकाओं का बहुत

काल तक अमुद्रित पढ़ा रहने देना अनुसंधान की दृष्टि से हानिकर और अनुचित है। हिंदी के प्राचीन काव्यों के प्रकाशन और विवेचन तथा अनुशीलन और अनुसंधान की बढ़ती हुई अभिरुचि में इन विवरणिकाओं का अति शीघ्र प्रकाशित हो जाना आवश्यक है। अतः संपादक के निश्चयों पर कोई टिप्पणी या उनके कथनों का सरकार सुधार कहीं नहीं किया गया है। आगे की विवरणिकाएँ भी इसी क्रम से और इसी रूप में प्रस्तुत हो रही हैं। यदि सरकार ने इन्हें शीघ्र प्रकाशित कर दिया तो प्राचीन हिंदी-साहित्य के शोध के लिए बहुत कुछ सामग्री अनुसंधायकों और अनुशीलकों के समक्ष अविलंब प्रस्तुत हो जायगी। सक्षिप्त विवरण भी यथा शक्य शीघ्र प्रकाशित कर दिया जायगा। उसमें यत्र तत्र अनेक प्रकार की त्रुटियों का परिमार्जन करने का भी प्रयास किया गया है। मेरे विचार से अब तरु की खोज स्वतः अनुसंधान का एतद् विषय है। यदि कुछ परिश्रमी अनुसंधायक इसमें श्रम करें तो हिंदी-साहित्य के इतिहासों के लिए नूतन सामग्री तो बहुत कुछ मिलेगी ही साथ ही खोज की विवरणिकाओं को भी टिप्पणियों और निरूपणों के द्वारा बहुत कुछ प्रामाणिक कर दिया जा सकता है। मेरा विचार है कि कुछ प्रमुख ग्रंथकारों पर खोज की सामग्री के आधार पर कुछ पुस्तकें ग्रंथक रूप में क्रमशः प्रकाशित की जायें। इनमें अनुसंधान करने वालों को विशेष लाभ तो होगा ही आलोचना करने वालों और ग्रंथ संपादित करने वालों को भी सरलता होगी। अनायास उन्हें बहुत सी सामग्री घर बैठे मिल जायगी। इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा
नाग पंचमी, स० २००५ वि०

{ विश्वनाथ प्रसाद मिश्र,
प्रधान मंत्री
निरीक्षक खोज-विभाग
काशी नागरीप्रचारिणी सभा

आमुस

सब में अपने तिरगठवें वर्ष के समीप पहुँच, तब अरबी वृद्धावस्था का विचारते हुए मैंने बड़ी निश्चय किया था कि मेरी प्रस्तुत की हुई पशुपत्रीवायिक विवरणिका ही संक्षिप्त होगी। अतः मैंने काशी नागरीप्रचारिणी सभा की शिफ्ट दिया कि मन् १९२९ ई० में कायकाय समाप्त होने पर मुझे अर्द्धतनिक निरीक्षक के पद से मुक्त कर दिया जाए। किंतु सभा ने यह इच्छा प्रकट की कि अपना कार्य-भार सँपाने के पूर्व अपने मात्री उच्चरा विद्यारी को इस कार्य में सही मौलत शिक्षित कर दें। अतएव मुझे उम रचनाकारों पर टिप्पणी लिखने का कार्य सँपा गया है जिनके इन्स्टीट्यूट भागारा स्थित सेंट जॉन्स कॉलेज में हिंदी के प्राध्यापक यादू हरिहरनाथ शर्मा को मिले हैं। आरंभ में उन्होंने यह कार्य बड़े उत्साह से उठाया। ये समकाल थे कि इसके लिए वा मास पर्याप्त हैं। किंतु जब वे कार्य करने बैठे तब इस अवधि में वे स्वयं ही अपने पूरा न कर सक। अंततः दो वर्ष के पश्चात् समस्त कागज पत्र नर पास भेज दिए गए। उनके साथ यना हुआ काँपा भी मेरे पास आया जिसका पंजा विस्तृत संशोधन अपेक्षित था जिससे उसका स्वरूप ही बदल जाता जिसमें उसके निमाता का कोई छान न था। ऐसी स्थिति में उसने पड़ी निर्णय किया कि सक्षिप्य में इस प्रकार के कलंशकारक पूर्व कष्टकारक कायों से दूर रहना ही अच्छा है। ऐसा करने से विवरणिका के उपस्थित करने में जो बिर्भव हुआ उमकी शक्ति पूर्ति ता नहीं हुई, किंतु इससे कोई अनुविधा भी नहीं हुई। क्योंकि विगत विवरणिका अब तक मुद्रणाख्य में ही पड़ी हुई है और उसके प्रकाशित होने में अभी बिर्भव प्रतीत हो रहा है। फिर भी मुझ चेद है कि यह दर से उपरिपत की जा रही है।

कटनी

१-१०-३१

}

हीरासास

हिंदी हस्त-लेखों की खोज की तेरहवीं विवरणिका

(सम् १६२६, १६२७ और १६२८ ई० की)

१ कार्य विवरण—यह सम् १९२६-२८ ई० की प्रिन्सिपल में हुए कार्य की विवरणिका है। इस कार्यकाक में अधिकाधिक निरीक्षण में या और मेरे निरीक्षण में तीन पर्यटनकारी साहित्यान्वेषक कार्य करते थे। इनमें से दो तो स्थायीरूप में विभिन्न कार्य करते रहे, किंतु तीसरे व्यक्ति के अस्थिर होने के कारण उन्हें कई बार कई कारणों से बदलना भी पड़ा। वस्तुतः उनका स्थान अगमग संपूर्ण बच तक रिक्त ही रहा। फिर भी यह प्रसन्नता की बात थी कि साहित्यरत्न पंडित बाबूराम विखरिया अपनी उस कठिन बीमारी में स्वस्थ होकर अपने पद पर पुनः आ गए जिसके कारण श्रेष्ठ कार्य में हुई बाधा का उपशान्त गत विवरणिका में करना पड़ा था। इस प्रिन्सिपल में कुल १२०८ हस्तलेख उपलब्ध हुए हैं जो गत प्रिन्सिपल से संख्या में १४८ अधिक हैं। गत प्रिन्सिपल में कुल ११३० हस्तलेख मिले थे जो संख्या में तब तक की अर्थात् पचीस वर्षों के बीच की प्रिन्सिपलों में सबसे अधिक थे। यह संख्या और भी बढ़ी होती यदि संपुष्ट प्रांत के सभी हिंदी अर्थात्कों में हमारे साथ कैसे ही सहयोग किया होता किंतु उनका सहयोग तिस्रो मिडिल स्कूल के एक अर्थात्क में बहुत से हिंदी हस्तलेखों का विवरण स्वयं भेज कर किया और इसके लिए उन्हें पर्याप्त पुरस्कार भी दिया गया। यह देखकर कि अर्थात्के एक उपप्रांत में ही श्रेष्ठ कार्य पूरा करने में उन्तीस वर्ष लग गये, इस कार्यमें सहयोग करने की विवेक सूचना सभी अर्थात्कों को उनके अधिकाधिकों के जरिये दी गई। किंतु कहीं से कोई उत्तर न मिला। इस प्रिन्सिपल में ८०० प्र.कों के हस्तलेखों का विवरण किया गया है जिनमें से १३० प्र.पत्र अर्थात् रचयिताओं के हैं। इस प्रकार दोष ०४० प्र.पत्र ५०८ रचयिताओं की कृतियाँ हैं जिन सबका विवरण प्रथम परिशिष्ट में पूर्य्यूपर्य्य दिया गया है। इनमें १ रचनाकार बारहवीं, ४ पंद्रहवीं, ११ सोलहवीं, ५३ सत्रहवीं, ९५ अठारहवीं और १९८ उन्तीसवीं शता के हैं। १४६ रचनाकारों का समय अज्ञात है।

२ हस्तलेखों का समय—निर्माण काल के अनुसार हस्तलेखों का विभाजन इस प्रकार किया गया है—

शताब्दी	बारहवीं	तेरहवीं	बीसवीं	पंद्रहवीं	सोलहवीं	सत्रहवीं	अठारहवीं	उन्तीसवीं	अज्ञात	औड़
हस्तलेख	२	-	-	९	३९	२०१	२०९	४२०	३९४	१२०८

उपयुक्त तालिका से स्पष्ट है कि सत्रमे अधिक हस्तलेख उर्नागर्वा शती के हैं। यदि सत्रहवीं और अठारहवीं शतियों की सर्याएँ जोड़ दें तो जोड़ दृश्यमें विशेष अधिक नहीं होगा, क्योंकि प्रत्येक में दो दो सों में कुछ ही अधिक हस्तलेख हैं। सोलहवीं शती में कुल ३६ ही और पत्रहवीं में तो उसके चौथाई हस्तलेख ही मिले हैं। तेरहवीं और चौदहवीं शतियों का तो एक भी हस्तलेख नहीं है। प्राचीनतम हस्तलेख बारहवीं शती के हैं जो केवल दो ही हैं।

चतुर्थ परिशिष्ट में महत्वपूर्ण हस्तलेखों के समय की तालिका दी हुई है। यह तालिका सन् १९२०-२२ की त्रैवार्षिक विवरणिका (देखिए पृष्ठ ५ में १६) से अधिक उपयुक्त है, क्योंकि एक तो उसमें दी हुई संख्याओं में छापे की अनेक अशुक्तियाँ हो गई हैं और दूसरे उसके निवारणार्थ कोई शुद्धिपत्र भी उसमें नहीं दिया गया है। यह तालिका हिंदी के विद्वानों और ग्रंथ प्रकाशकों की सहायता के उद्देश्य में प्रस्तुत की गई है जिससे उन्हें सक्षेप में हस्तलेखों की जानकारी तो हो ही साथ ही उन्हें प्राप्त करने में भी सुविधा हो। यह लिपिकारों द्वारा हुई गलतियों से बचकर शुद्ध पाठ प्राप्त करने में विशेष सहायक होगी कम से कम मुझे तो विभिन्न पाठों के उपलब्ध होने में सदेहाम्पद स्थानोंपर समय-निर्णय में दृग्से विशेष सहायता मिली ही है। जैसे कवि तरंग की एक प्रति में समय दिया है—

गये जो विक्रम वीर विताय । सत्रह सैं अरु आठि गिनाय ।

—(देखिए द्वितीय परिशिष्ट सर्या ४४० पृ० और वी०)

दूसरी प्रति में 'आठि' की जगह 'साठि' पाठ है। गणना से मैंने 'साठि' पाठ ठीक पाया और 'आठि' गलत (विरतृत विवरण के लिए देखिए प्रथम परिशिष्ट सर्या ४४०)। उसी हस्तलेख में एक और भयंकर भूल थी। 'सत्रह सैं संवत् समय और साठ निरधार' के स्थान पर 'एकादश संवत् समय और साठ निरधार' लिखा हुआ है (इसका भी विवेचन वही किया जा चुका है)।

३ हस्तलेखों के विषय—हस्तलेखों के विषय का विवरण निम्नलिखित है—

धर्म	३५८	हस्तलेख
दर्शन	११४	"
पिंगल	३१	"
अलंकार	५०	"
शृंगार	१४१	"
रागरागिनी	५१	"
नाटक	२	"
जीवन चरित	२५	"
उपदेश	४३	"
राजनीतिक	१२	"
कोश	१६	"

स्पोतिप	१२४	इस्तलेख
सामुद्रिक	९	"
गणित व विज्ञान	६	"
रघु	०४	"
साहि-दोष	११	"
कोर	११	"
इतिहास	६०	"
कथा कहानी	४४	"
विचित्र	८०	"

योग १२०८ इस्तलेख

जैसा कि स्वामाधिक ही है धार्मिक ग्रंथ ग्रन्थ विषयों के ग्रंथों से कहीं अधिक है। यहाँ यह दुहराने की आवश्यकता नहीं कि भाषा क्रियों का सुझाव धर्म की ओर क्यों अधिक था। विगत विचारक्रियाओं में इसके कारणों का विश्वास किया जा चुका है। धर्म के भीतर सांप्रदायिक साहित्य की भी गणना कर ली गई है जिसके अंतर्गत सतनामी, कबीरपंथी, वावूपंथी, धामी और राजास्वामी संप्रदाय भी परिगणित हैं। सतनामी संप्रदाय के बहुत सारे ग्रंथ इस खोज में भी मिले हैं जिनमें दोहाबकी नामक ग्रंथ मया है। इन संप्रदाय के प्रवर्तक चारोंपंथी मिले हैं जो राजा के ही जगजीवनदास थे। उन्होंने 'सत्य नाम' की उपासना का उपदेश किया है। इसे उन्होंने सर्व सृष्टिकारक ईश्वर का वास्तविक नाम बताया है, जो माया से परे है और जो अनादि तथा अमृत है। उन्होंने मोस, मसूर (इसका एक वर्ण एक सूत्रक नामा गया है) भंडा और मादक ग्रंथों को ग्रहण करने का निषेध किया है। श्री जगजीवनदास ने स्वतः ही अनेक ग्रंथ लिखे ही हैं, उनका शिष्यों ने भी बहुत सा साहित्य प्रस्तुत किया है जिसमें ईसा की सत्रहवीं सदी के अंत में इस संप्रदाय की स्थापना के बाद इसका प्रसूत साहित्य निर्मित हुआ। इस संप्रदाय के विषय में यह बात उल्लेखनीय है कि इन प्रभाग स्वाम में उतने अधिक स्पष्टित दीक्षित नहीं हो सके अतः अधिक इस संप्रदाय के उत्तीसगढ़ राज्या में हुए जो मध्य प्रांत में अपस्थित है। यहाँ स्वामी चमारों ने जो विपट विद्यालय तथा अनेकानेक अंध-विश्वासों से अंध प्रीत हैं शिष्यों से मूर्ख एवं भूल पूजा रयाग दी है और मोम-मदिरा क्या एकवर्ण को बस्तुएँ जैसे मसूर भंडा एक निर्वा आदि भी यहाँ ग्रहण करते। उनमें इसका प्रचार एक मत्र दूर की दूना इतरी दवा जिससे कभी कोई उपदेश नहीं किया वे केवल उरुके कमुकरण पर ही सत्यनाम की अमूर्त भावना की उपासना करने लगे हैं। सन् १८२० से जब से उसने सत्यनाम की उपासना आरंभ की थी अब तक उस संप्रदाय में प्रायः ४ लाख व्यक्ति दीक्षित हो चुके हैं। आश्चर्य तो यह है कि उसके मग मंत्रों और गाँव वाले ही उनका उपहास करते हैं। एक बार शयपुर जिले के उमी के गाँव 'गिरोह' में उसके एक चाचा ने मरी अँट हुई। उसने पागल यमिया का उल्लेख बहुत ही अपमानजनक ढंग से किया। यह सब की बात है जब छात्रों व्यक्ति उसे वास्तविक ज्ञानी समझकर घासी

दास के नाम से उसको पूजते थे । विगत विवरणिकाओं में दादूपथी और कवीरपथी धामी मंत्र-के विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है । केवल इन्हीं खोज में राधा-मोक्षामी (राधा-स्वामी नहीं) संप्रदाय का एक ग्रंथ मिला है । यह संप्रदाय अभी नया उभड़ा है और हिंदी में अभी इसका अधिक साहित्य निर्मित नहीं हुआ है । दार्शनिक साहित्य में वेदांत प्रमुख है और एतद्विषयक जितने हस्तलेखों का ऊपर उल्लेख हुआ है वे सब वेदांत के ही हैं । हिंदी साहित्य के दर्शन और धर्म के ग्रंथों में वास्तविक भेद करना बहुत कठिन है । दोनों एक दूसरे में ऐसा घुल-मिल गए हैं कि उन्हें पृथक् नहीं किया जा सकता । इसके बाद परिमाण और श्रेष्ठता के विचार से श्रुतार्थी रचनाएँ आती हैं । यद्यपि कुछ कवियों ने इन रचनाओं को रहस्यात्मक या आध्यात्मिक अर्थ पहना कर ऊँचे उठाने का प्रयत्न किया है किंतु वस्तुतः ये धर्म-प्रतिकूल ही हैं । श्रुतार के बाद ज्योतिष का क्रम है जिसका राष्ट्रीय जीवन पर बहुत ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है । प्रत्येक पढ़े लिखे के घर में एक न एक ऐसा हस्तलेख मिलता ही है जिसमें घर से बाहर निकलने का शुभागुप्त विचार वर्णन रहता है । यदि किसी का इस ओर झुकाव हुआ तो वह ज्योतिषी बन जाता है और यदि कुछ पढ़ा-लिखा भी हुआ तो इस विषय का कुछ साहित्य भी प्रस्तुत कर देता है । इस विषय के अधिकार ग्रंथों के रचनाकारों के नाम नहीं मिलते । ईश्वर के ग्रंथों की भी यही स्थिति है जो इसके बाद आते हैं । इतिहास और कहानियों की भी बहुत बढ़ी संख्या है जो आपस में मिल जुल गई हैं किंतु कोई महत्वपूर्ण ग्रंथ नहीं मिला है । वास्तविक इतिहास तो अत्यंत अल्प है । छठ और अलंकार शास्त्र के हस्तलेख अपेक्षाकृत कम हैं किंतु जो हैं वे विभिन्न रचनाकारों के अवश्य हैं । संगीत के भी ५१ हस्तलेख मिले हैं किंतु प्रायः सभी एक ही ग्रंथ की विभिन्न स्थानों पर विद्यमान प्रति लिपियाँ ही हैं । प्रकीर्णक में कुछ रोचक ग्रंथ भी हैं जैसे विद्यारभ कराने के नियमादि का ग्रंथ । विद्यारभ में सर्वप्रथम 'ओम् नमो सिद्धम्' कहा जाता है । विद्यार्थी उसका उच्चारण करता है—'ओ नमो मा सी धम्' जो अशुद्ध है । तत्पश्चात् पाँचों पाठियों से युक्त खड़ियों भिन्वाई जाती हैं जो सरकृत का अपभ्रष्ट रूप है । यह 'वतक धुनि' और तुलसीदास जी के शब्दों में दादुर-रोर से अधिक कुछ नहीं है । यह पद्धति लगभग ६० वर्ष पूर्व प्रचलित थी । मुझ स्मरण है उस समय अपना नाम एक सरकारी पाठशाला में लिखा लेने से मैं कम से कम चार पाठियों रटने से बच गया । इसमें 'व्यजन सार' ऐसे ग्रंथ भी मिले हैं जिनमें स्वादिष्ट भोजन का वर्णन है ।

४ नवोपलब्धियों—नवोपलब्ध रचनाएँ अधिक से अधिक १८८६ हैं । नवोपलब्ध से यह तात्पर्य नहीं कि इसके पहले इन्हें कोई जानता ही न था । वस्तुतः ये काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा उन्तीस वर्षों से कराए जाने वाले खोज कार्य के लिये ही नहीं हैं । इनमें से कुछ रचनाएँ तो टूटे-फूटे पद्यों की छोटी छोटी पुस्तिकाएँ मात्र हैं जिनका कोई महत्त्व नहीं है । जैसे बारहमासा, लावनी, स्तुति आदि । नवयुवक पति से वियुक्त विरहिणियों की प्रेमभरी उक्तियों में विशेष आनंद लेते हैं । बारहमासा में ऐसी ही विरहिणियों की उक्तियाँ प्रत्येक मास के क्रम से वर्णित होती हैं । इसे एक प्रकार का मासिक रोजनामचा

समझना चाहिए। अतः सुप्रसिद्ध व्यक्तियों की आशु रचना है जिसमें वे वयावसर अपनी कल्पनासक्ति का प्रदर्शन समाज को आश्चर्य चकित करने के लिये बड़ी उत्सुकता से करते हैं। इन आशु पद्यकारों के सामान्यतः दो संप्रदाय हैं—(१) कलौगी और (२) गुराँ। इनमें पहला नाम श्रीरिंग है और दूसरा पुर्विसंग। अतः श्री और पुरप दोनों एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए गहरी होड़ लगाते हैं। जब इनके बंग या दोह भी उस बाबुद में अक्ष की भाँति सहयोग करने लगते हैं तब कभी कभी तो यह युगों की कदार्थ का सा रूप धारण कर खती है। सावनीबाजों का अब उठना प्रचार नहीं रह गया है जितना पहले कभी था। किसी लावनीबाज की अवस्था ज्यों ज्यों बढ़ती चलती है, त्यों त्यों उसमें सक्ति भावना का विकास भी होता चलता है। वह टेक के रूप में अपने उपाम्यद्वय को विक्षेप महत्व देने के लिए उनका नाम अधिक से अधिक जितनी बार अपनी स्तुतियों में ला सकता है काने का प्रयत्न करता है। ऐसी रचना के लिए द्वितीय परिशिष्ट में संख्या ९१ (सी) को देखिए। एक कहर हिंदू के लिए ऐसे अछूत पद्य बरिष्ठ हैं, किंतु धार्मिक गीतों को छूट मिस जाने से साधुओं को ऐसे पद्यों के लिए प्रोत्साहन मिरु गया है। इसके परिणाम स्वरूप बहुत सा कृदा करकट अवश्य एकत्र हो गया है, फिर भी इसमें कुछ वास्तविक नाम भी हुआ है। कुछ साधुओं की रचनाएँ भी उत्तमकोटि की मानी जाती हैं। हिंदी का सर्वोत्कृष्ट कवि एक साधु ही था। वर्तमान खोज में वास्तविक महत्त्व की भी कुछ रचनाएँ उपलब्ध हुई हैं जिन्हें प्रथम एवं द्वितीय परिशिष्टों में देखा जा सकता है। यह भी पाठकों पर ही छोड़ देता हूँ कि आप उन्हें स्वतः पढ़े और अपने मनानुकूल ढंगके अष्टे सुरे का निर्णय करें क्योंकि मेर संकेत करने का अर्थ होगा स्वतंत्र निष्पत्ति पर अनावश्यक प्रहार।

५. खोज की कुछ उल्लेखनीय घातें - वर्तमान खोज में मूल गोसाईं चरित्र नामक एक बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रंथ मिला है जिसमें श्री तुलसीदास जी के जीवन चरित्र में संयत्न अनेक परंपरित चारण्यों में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया है। उनकी श्रापु संवंधी दोहा 'संवत् सोरह से अमी अमी गंग के तीर। भावग हाहा सप्तमी तुलसी तया शरीर। अब अछूत प्रमाप्ति हो गया है। इस ग्रंथ के यह मित्र कर दिया है कि श्री तुलसीदास जी की श्रापु 'भावग इयामा तीज सनि' अर्थात् शनिवार माघम बन्दी ३ का दुर्ग, सावन सुधी ७ को नहीं जो ठमकी जन्मतिथि है। सामान्यतः कृत 'तुलसी चरित' का भी दो इस्तरेय मिस है जिनका समीक्षामक अल्पवय उक्त महाकवि के जीवन चरित्र की प्रामाणिकता के लिए अभी तक नहीं हुआ है।

सामान्यतः नवाब अफ़्जुलहीम ने 'मदनाटक' नामक आठ आठ गारी पद्यों का एक संग्रह रचा है जो उनका उत्कृष्ट काव्य माना जाता है। उसमें हिंदी-संस्कृत की एक-एक पंक्ति अत्यंत संयोजित की गई है। वर्तमान खोज में एक हिंदू कवि जलप बिहारी भी मिला है जिन्होंने इसी तरह अपनी रचना में अत्यंत ही हिंदी और चरामी की पंक्तियाँ रगी हैं। किंतु, 'विना पिन केतु क राग रही बर, ता बिरही त्रिय जाबा सपान। बिरह छे न दुखिया मन में परा नाक मधुंजि सपानो जबाब।' रहीम अपने मदनाटक का आरंभ करते हैं— 'मनगि मन नितामन्तम् जाय के बामु कीया। मन धन सय मेरा मान नै छीन लीया।' एक बार

फिर चरनदास के बड़े बड़े ग्रंथों के बहुत से हस्तलेख मिले हैं जिनमें उनकी शिष्या दया-
चार्ड की भी एक रचना पहली ही बार उपलब्ध हुई है ।

सीतापुर जिले में पार नगर के इंद्रवरी त्रिपाठी ने 'रामायण राम-विलास' नामक
रामायण सन् १८५९ ई० में लिखी है । तुलसीकृत रामायण की भाँति यह भी सातों काण्डों
में विभक्त है और विभिन्न छंदों में रचित है । यह रचना महत्वपूर्ण है । अन्य अनेक रत्न
जैसे रामप्रसाद कृत आनंद रस, सुगतरायकृत निलयनरु, कालीदत्त कृत नग शिखर, मोहन
कृत देवी-देवताओं की न्युतियाँ एवं बटनारू आदि नगोपलब्ध कृतियों में हैं । इस त्रिवर्षी
की एक विशिष्ट बात यह है कि इसमें गद्य के अनेक ग्रंथ मिले हैं । उनमें से टाटुर लेखरत्न
कृत पदार्थ-तत्व-दीपिका नामक भी एक ग्रंथ है जिसमें सृष्टि-त्रिकाम, उद्योतिष, पदार्थ-
विज्ञान, अतरिक्ष-विद्या, रसायन, धातुशोधन, वनप्रसालन, उद्यान कला, रजामत, पारविद्या,
भूमिपामन, पर्याय शब्द-व्यवस्थापन, शृंगार पुगण, वेद, आदि जितने भी विषय हों सको
हैं सबका संग्रह है । टाटुर शिवसिंह के जो हिंदी साहित्य के प्रथम इतिहासकार माने जाते
हैं, प्रसिद्ध हिंदी साहित्य का इतिहास का रत्नलेख भी इस त्रिवर्षी में उपलब्ध हुआ है ।

अज्ञात समय हरिहर ब्रह्म ने शारदास्तोत्र संस्कृत गर्भ भाषा में रचा है जो वरिम-
चंद्र के बदेमातरम् गान से मिलता जुलता है । दुर्भाग्यवश उक्त स्तोत्र अपूर्ण है, फिर भी
उसमें १० छंद हैं । कुछ रचनाकारों के मध्य में गणना करने पर यह ज्ञात हुआ है कि
उनका समय हिंदी के उत्पत्ति-काल के भी पहले चला गया है । उदाहरण के लिये पाठ्य
वस्तुओं में से नकुल को ही ले सकते हैं । वे पशु-विज्ञान के प्रसिद्ध चितोपज थे और उन्होंने
'अश्व चिकित्सा' नामक ग्रंथ भी रचा है । इसका अनुवाद नकुल को हिंदी कवि मानवर
नकुल कृत शालिहोत्र के नाम से मिला है । इसी प्रकार शतपञ्चाशिका नामक एक ग्रंथ
पृथ्वीजन्म नामक हिंदी कवि की कृति बताया गया है । कुरु वाग्भट्टिकता यह है कि यह ग्रंथ
मूलतः संस्कृत में छठी शती के चरार्मिहिर के पुत्र पृथुयज्ञ द्वारा रचा गया था, जिसका
हिंदी अनुवाद वाद में उन्ही के नाम से कर दिया । कालांतर में मूल ग्रंथकार की लोग मूल
गद्य और उनका संस्कृत नाम अपभ्रष्ट होकर हिंदी कवि की भाँति विख्यात हो गया । संस्कृत
शीघ्रबोध के कर्ता काशिनार्थ भट्टाचार्य हिंदी में उसके अनुवादक के रूप में कामीनाथ दूधे
वन गये हैं । परिशिष्ट में इस प्रकार के नभी प्रयोगों का स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है ।

६ आलोचनात्मक भावना का विकास —

अपनी विगत विवरणिका अर्थात् क्रम से चारहवीं में मैंने यह संकेत किया है कि
खोज कार्य का महत्वपूर्ण परिणाम यह भी हुआ है कि हिंदी विद्वानों में आलोचना की भावना
विकसित हो रही है । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण कुछ आलोचनात्मक ग्रंथों का प्रकाशन है जिनमें
सबसे महत्वपूर्ण शय्याहाव श्यामसुंदर दास कृत हिंदी भाषा और साहित्य, विद्या भास्कर
सूर्यकांत शास्त्री कृत प्रधान कवियों के आलोचनात्मक अध्ययन सहित हिंदी साहित्य का इति-
हास और मिश्रचतुर्भों के 'हिंदी नवरत्न' का संशोधित संस्करण तथा 'विनोद' है । इनमें
से कुछ तो इस त्रिवर्षी के मध्य ही में और कुछ इसके समाप्त होते होते प्रकाशित हुए हैं ।
तुलना करने पर इनमें प्राचीन आलोचकों द्वारा बंधे बंधाग्य ढंग ने आलोचना सिद्धान्तों के

प्रयोग में स्वयं अंतर दृष्टिगायक हुआ है। रायमादय स्वामनुदरदास की कभी हाल ही में अपने हम मध्य प्रथम पर स्वयं पदक मिला है। हिंदी के सुप्रसिद्ध आलाचक्र पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी (जो पदक का दाता भी है) ने इसके गुणों की प्रशंसा करते हुए यह भाषित किया है कि बहुत ही मध्यम ने पदक को ही गौरवान्वित किया है, न कि पदक ने प्रथम को। हिंदी के क्षेत्र में यह बहुत ही मतोपहायक उन्नति हुई है।

७ परिशिष्ट—अपनी विगत विचारगिर्य सन् १९२३-२५ में जो अथ भी उप ही रही है मैंने लिखा था कि हिंदी के उत्साही विद्वानों के लिए ये परिशिष्ट बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगे, विमला समर्थन सर जार्ज ग्रियर्सन जैसे महान् भाषाविद् ने भी किया है। मेरी विचारगिर्य सन् १९१०-१९ और १९२०-२२ की प्राप्ति पर उन्होंने निम्नलिखित विचार प्रकट किए हैं—

'मुझे व रक्षिप्राहक प्रकृत हुई है। निश्चय ही वे भारती साहित्य के प्रत्येक विद्वान् के लिए बहुमूल्य सिद्ध होंगी।'

प्रथम परिशिष्ट में ब्रह्मसूत्र से उन सभी रचनाकारों पर दिव्यगिर्या लिखी गई है जिनकी हम विद्वानों में प्राप्त कृतियों में उनके समय या इतिहास संबंधित कोई भी नई या नया बात हुई है। इसमें विगत विचारगिर्यों के विवादास्पद स्थलों की विवेचना भी की गई है। द्वितीय परिशिष्ट में प्रत्येक उपखण्ड दृष्टिकोण के उद्धारण का साथ साथ उसके रूप, आकार, प्रासिध्यात् तथा अन्य विशेषताओं का भी उल्लेख किया गया है जिसमें कोई विद्वान् आश्चर्यचकितता पक्षों पर उन्हीं प्राप्त भी कर सक। इसमें विगत विचारगिर्यों की अपेक्षा प्रथमों के विषय का विचार विस्तार से दिया भी गया है। कबल उन्हीं का विवरण नहीं दिया गया है जिसका विगत विचारगिर्यों में विस्तृत रूप में विद्यमान है। एसा सर जार्ज ग्रियर्सन के मुताबिक से ही किया गया है जो उपरोक्त तो अथर्व है किंतु इसमें विचारगिर्य का विस्तार बहुत हो गया है। यहाँ यह उल्लेख कर देना भी अप्रासंगिक न होगा कि विस्तार रोहने का भी प्रयत्न किया गया है किंतु न्यायसम्बद्ध इमताओं की अपेक्षा से विचारगिर्य का मातृपा प्राकृतिक ही है अस्वाभाविक नहीं। इसी विचार से ही तृतीय परिशिष्ट जिसमें अज्ञातनामा व्यक्तियों की कृतियों का विषय दिया जाता है संक्षिप्त कर दिया गया है। उसमें उद्धारणों के स्थान पर एक सूचीमात्र दी गई है जिसमें प्रथमों के नाम उनके वर्गीकरण रचना काय तथा लिपिकाल आदि बलिग विषय का उल्लेख है। चतुर्थ परिशिष्ट में मुख्य प्रमुख कर्मचारियों के लिए उपयोगी सूचना है जिनके विषय में मैं उपरोक्त द्वितीय अनुच्छेद में कह चुका हूँ। अंत में दो आर सूचियाँ दी गई हैं जिनमें व प्रथम में आकारादि क्रम से रचना कर्तों के आर द्वितीय में उनी क्रम से रचनाओं के नाम दिए हैं।

दीराहास
कैथनिक निरीक्षक,
दिली इन्फेन्सो का लात्र विभाग,
संयुक्तप्रांत

प्रथम परिशिष्ट

उपलब्ध हस्तलेखों के रचयिताओं पर टिप्पणियाँ

प्रथम परिशिष्ट

रचयिताओं पर टिप्पणियाँ

१ अण्णुल मजीद—दिस्ती के अण्णुल मजीद मजीद उपमध्य लेखक हैं। इन्होंने चिकित्सा-विज्ञान पर अपना मूल ग्रंथ 'आरामी में चिकित्सा' उमदा हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया है जिसके दो हस्तलेख प्राप्त हुए हैं। शर्मा जर्नल है; एक का डिप्लोमा संवत् १८३० (सन् १७७३) है और दूसरे का संवत् १८३९ (सन् १७७९ ई०)। ग्रंथ हिंदी गद्य में है।

२ अचलदास—अचलदास का जन्म बीमबादा के बुरहीपुर ग्राम में हुआ था और वे वाराणसी जिले के सूरजपुर बहरेस की गरी के ब्रह्मण्य मंडय थे। वे अचलदास के सिल्ले कहे जाते हैं। इनकी मृत्यु संवत् १९२० (सन् १८७० ई०) में हुई। इन्होंने बेदांत और भक्ति के धार्मिक विषयों पर सात ग्रंथ रचे—(१) मन्दसागर, (२) माम-सागर, (३) मन्द-गुंजार, (४) अमरावती, (५) अनुभव प्रकाश, (६) शमावसी भार (७) राज-सागर। इनका कविताकाल सन् १८५० ई० के लगभग प्रारंभ हुआ। इनकी रचना से यह प्रकट होता है कि इनकी दृष्टि-बस्तु पर अधिक धी सीसी पर कम।

३ आचार मिश्र—ईशक-योग-संग्रह के रचयिता आचार मिश्र का पता सन् १९२२-२५ की विचारमित्र में लग चुका है। उन्नी की भौति हम बार भी इनकी रचना के तीन हस्तलेख उपलब्ध हुए हैं जिनमें सबसे पुराना हस्तलेख सन् १७९९ ई० का है। इनकी रचना से इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं होता।

४ अग्रदास—अग्रदास अजपुर राज्य के निवासी थे और गुरुता की ब्रह्मण्य गरी पर थे। हम मात्र में इनकी रचना प्यान मंत्री के तीन हस्तलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें सबसे पुराना सन् १७९७ ई० का है। सन् १९२०-२१ की ग्लोब विचारमित्र में भी इनके ग्रंथों का विवरण है। इतिव प्रथम परिशिष्ट संख्या १।

५ अजयदास—अजयदास ने हमने रच दिये। सबसे पहला उमदा (ग्रंथों का) विवरण सन् १९१२-१९ की विचारमित्र में दिया गया है। उनकी दो प्रतिर्पा सन् १९२२-२५ की ग्लोब में फिर मिलीं। हम बार भी दो हस्तलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें से एक का डिप्लोमा सन् १८१९ ई० है और दूसरे का १७७३ ई०। हम बार 'शाब्द-वर्णी' नामक इनके एक मजीद ग्रंथ का भी पता लगा है जो अब तक अज्ञात था। जब पहला हम यह ज्ञात होता है कि इनका जन्म मुम्तासपुर जिले के पलिया (काबय) नामक स्थान में हुआ था। इनके ज्ञानकी दाम नामक एक पुत्र थे जो कवि भी थे और जिनके ग्रंथ भी हम मात्र में प्राप्त हुए हैं। अजयदास का मृत्युका मालम (अमरमठ के नृपे) और ईशक था। इनकी मृत्यु अयोध्या में सन् १८९३ ई० में हुई।

६ अजीत सिंह मेहता—जयसलमेर के दीवान अजीत सिंह मेहता का उपस्थिति-काल १८६० ई० है। इनके दो ग्रंथ मिले हैं—(१) शिक्षा-वृत्तीसी और (२) विद्या-वृत्तीसी। पहला नैतिक शिक्षा विषयक तथा दूसरे ज्ञान-प्रशस्ति सर्वधी है। इनकी मातृभाषा गुजराती थी जिसके मुहावरे यत्रतत्र इनकी रचना में मिलते हैं जिसमें इनकी शैली शक्तिशाली एवं महत्वपूर्ण हो गई है। गुजराती और हिंदी का नैकट्य भी ध्यान देने योग्य है जो गुजरातियों को हिंदी का सफल लेखक बनने में सहायक होता है। समसामयिक कवि श्रीधर इनके विषय में लिखते हैं—

‘कहैं कवि श्रीधर रणजीत नरेश पर मेहता अजीत सिंह मंत्री बुद्धिमान हैं। जो इनकी रचना से डके की चोट प्रमाणित है। विद्या-वृत्तीसी का रचनाकाल इस प्रकार उल्लिखित है—

उगनी सौ अट्टारवे दीपमाल शनि दिन्न।

ईसवी सन् के अनुसार यह दिन २ नवंबर सन् १८६१ ई० शनिवार को पड़ता है।

७ अमरसिंह—चिकित्सा-विज्ञान (वैद्यक) पर लिखनेवाले अमरसिंह का ज्ञान प्रथम बार हुआ है। इनके ग्रंथ का नाम है ‘अमर-विनोद’। इस खोज में इनके तीन हस्तलेख मिले हैं। ग्रंथ में रचनाकाल नहीं दिया है किंतु प्राचीनतम प्रति सन् १८१३ ई० की लिखी है। ग्रंथ पद्य में है, किंतु व्यवस्था पत्र सामान्यतया गद्य में है।

८ अवरदास—भक्त विरूटावली के रचयिता अवरदास की सूचना सन् १९०६-०८ और १९२२-२५ ई० की खोज विवरणिका में दी जा चुकी है। इस बार इनकी रचना के दो हस्तलेख मिले हैं जिसमें सन् १७२७ ई० में लिखा गया हस्तलेख अद्य तक प्राप्त सभी हस्तलेखों में प्राचीनतम है। अवरदास जो अमरदास के नाम से भी प्रसिद्ध हैं सत्रहवीं शती के अंत में विद्यमान थे। अतः यह हस्तलेख रचनाकाल के बहुत बाद का नहीं है।

९ आमोलक—अमोलक का विवरण सर्वप्रथम सन् १९२२-२५ की खोज विवरणिका में दिया गया है। उसमें इनके ग्रंथ का नाम ‘खाँ खवास की कथा’ दिया है किंतु इस खोज में उसका नाम ‘खवास खाँ की कथा’ मिला है। कवि सूरवशी शासकों का समकालीन था। अतः इन्हें सोलहवीं शती का समझना चाहिए।

१० आनंद—कोकसार, कोक-मंजरी या कोक-विलास के रचयिता आनंद कवि का विवरण पहले की कई खोज विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। इस खोज में इनके ग्यारह हस्तलेख मिले हैं जिनमें से छः का लिपिकाल इस प्रकार है—सन् १८१३, १८३५, १८५०, १८६९, १८७५, १८९८ और १९०१ ई०। कुछ हस्तलेखों में रचयिता का नाम मकुद दिया हुआ है जो समभवतः अशुद्ध पढ़ लिया गया है। विभिन्न हस्तलेखों में रचनाकाल भी भिन्न भिन्न दिया हुआ है, किंतु किसी का विस्तृत विवरण नहीं है जिससे गणना करके वास्तविकता की जाँच की जा सके। एक का स्पष्ट पाठ यह है—

‘रितु वसत सवत सरस सोरह सै अक आठ।

कोक मंजरी सहकरी धर्म कर्म करि पाठ’।

इससे रचनाकाल सोझहर्षी शर्ती का मध्य शत होता है । दूसर हस्तलेख में इसी पाद्य के अष्टाष्ट पाठ से रचनाकाल संवत् १९९० (रिगु बसंत संवत् सत्सोयह आगत सन्धि । ओङ्क मंत्रो यह करी करम करम के पठि ॥) उद्धरता है । हिंदी में 'आड' और 'माड' इस ढंग से लिखा जा सकता है कि उसे दोनों ही पढ़ सकते हैं । फिर भी यह तो निश्चित ही है कि ग्रंथ की रचना या तो सोझहर्षी शर्ती के मध्य में हुई या सप्तहर्षी के आरंभ में ।

११ आनंदीदीन—आनंदीदीन उपनाम आनंदी प्रथम बार शत रूप है । राम और हनुमान की मक्ति विषयक इनकी दो रचनाएँ (१) प्रार्थना और (२) हनुमत् पूजा मिली है । रचनाओं से इनके विषय में कुछ शत नहीं होता किन्तु पृष्ठांक करने से शत हुआ है कि ये सल्लग्न किले के अहममामक के समीप एक ग्राम में रहते थे और अहमामक के जमींदार ठाकुर जंगबहादुर सिंह के मंदिर में पुजारी थे ।

१२ आनंदधन—आनंदधन या धनआनंद अष्टाहर्षी शर्ती के बहुत प्रसिद्ध कवि थे । पूर्व की विवरणिकाओं में इनके ग्रंथों के विवरण दिए गए हैं । जिनमें से सन् १९१०-१० ई० की विवरणिका में इनका विस्तृत विवरण है । वर्तमान खोज में इनके दो ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं—(१) पद्मवक्त्र और (२) कवित । इनमें से पहला (पद्मवक्त्र) प्रथम बार उपलब्ध हुआ है । इन ग्रंथ से यह पता चलता है कि ये हिंदी की विभिन्न बाधियों का भी जानते थे जिनमें राजस्थानी भी है ।

१३ आनंदराम—भगवद्गीता के हिंदी अनुवादक आनंदराम का विवरण पूर्व विवरणिकाओं में है । वर्तमान खोज में जो हस्तलेख उपलब्ध हुआ है वह सन् १७४८ ई० का है । एक विद्वत्पत्नी यह इस खोज में है कि भगवद्गीता भाषा के बाल्मगीर्ष्य नाम के एक तीसरे रचयिता भी भुम पढ़ होते । आनंदराम कृत पद्मवक्त्र अनुवाद बाल्मगीर्ष्य के अनुवाद से अक्षरसः मिकता है । सन् १९१०-१९ ई० की विवरणिका के ग्यारहवें अनुच्छेद में मैंने इस ग्रंथ के रचनाकार का विचार किया है और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इसके बाल्मगीर्ष्य अनुवादक हरिबल्लभ ही हैं । इन प्रकार आनंदराम और बाल्मगीर्ष्य दोनों विषयों पर ही इसमें प्रविष्ट हो गए हैं और दूसर की रचना अपनी बताने लगे हैं ।

१४ अनन्य या अक्षर अनन्य—अनन्य या अक्षर अनन्य रचनाओं का विवरण सन् १९२०-२१ ई० और १९२३-२५ ई० की विवरणिका में दिया हुआ है । वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ फिर मिले हैं—(१) प्रेमदीपिका की तीन प्रतियाँ (२) मित्रांत बोध की दो प्रतियाँ और (३) बुर्गपथ या सुंदरी कवित की एक प्रति । मित्रांत ५५ जो पहली बार उपलब्ध हुआ है वेदांत का ग्रंथ है ।

१५ अनाथपुरी—अनाथपुरी अनाथघाम या जय अनाथ का विवरण पूर्व विवरणिकाओं में है । वर्तमान खोज में इनके विचारमाका नामक ग्रंथ के दो हस्तलेख मिले हैं । समय इन प्रकार है—'सप्रह से छथीम संबत माघ मास शुभ । मो मक्ति जिनक दुर्ताम तेतेक बरनी प्रगट कर ।' विवरणिकाओं में सन् १९०९-१० ई० और १९०९ ११ ई० में दिए समय की हमस पुष्टि होती है । इनका दूसरा ग्रंथ प्रबोध-बाल्मगीर्ष्य भी मिला हुआ है जिसे अविष्कृत विवरण सन् १९२०-२२ की विवरणिका में है ।

१६ अंगद शास्त्री—अंगद शास्त्री नए मिले रचनाकार हैं। इन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता के दशम स्कंध का अनुवाद व्यासों की पंडिताऊ हिंदी गद्य में किया है। इन्होंने निश्चित रूप से ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। ये जमामर्दपुर के निवासी थे। इन्होंने विद्वामित्रपुर के राजा जयकृष्ण के पुत्र गिरिप्रसाद के अनुरोध पर यह ग्रंथ रचा।

१७ अंगनेराय—अंगनेराय रसाल कवि के नाम से रचना करते थे। मिश्रवजुओं ने इन्हें उपनाम से ही रखा है। 'वारहमासा' के अतिरिक्त 'वरवै अलकार' तथा 'नखशिव' इनके दो ग्रंथ और हैं। ये साधारणतः अच्छे कवि थे और अनुग्राम इन्हें विशेष प्रिय था। वास्तव में वारहमासा के अंत में इनका यह कथन कि "छन्द और कवित्त चारु सोरठा सु वरवै ये जटित किये हैं लाय प्रेम के नगाना मैं। सुवरण मोधि उक्ति युक्ति के नवीनी विधि वृत्ति अनुप्रासन को नापे कियो मीना मैं ॥" अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है। अंगनेराय हरदोई जिले के विलग्राम निवासी थे। वारहमासा का रचनाकाल गुरुवार कार्तिक वदी १० मवत् १८८६ वि० तदनुसार गुरुवार २२ अक्टूबर सन् १८७९ ई० है।

१८ असगर हुसेन—हकीम असगर हुसेन, फर्रुखाबाद के निवासी थे। इन्होंने चिकित्साशास्त्र विषयक यूनानीयार नामक ग्रंथ सन् १८७७ ई० में रचा। ग्रंथ का लिपिकाल सन् १८८२ ई० है।

१९ अवधविहारी कायस्थ—अवधविहारी कायस्थ या अवधविहारी लाल सुलतानपुर जिले के दिखौली निवासी थे और प्रतापगढ़ गवर्नमेंट हाई स्कूल में अध्यापक थे। इनकी रचनाओं में प्रथम बार उपलब्ध हुई हैं। पाँच उपलब्ध हस्तलेखों में से दो का कोई नाम नहीं दिया है, और दो क्रमशः आल्हा खड और आल्हा नाम से अभिहित हैं। पाँचवें का नाम वारहमासा है जिसकी रचना मवत् १९२७ वि० (सन् १८८८ ई०) में हुई है। अन्य किसी हस्तलेख में कोई समय नहीं दिया गया है। अवधविहारी लाल फारसी के अच्छे ज्ञाता जान पड़ते हैं। जिन ग्रंथों में कोई नाम नहीं है उनमें इन्होंने अच्युतुरहीम खानखाना की भाँति प्रत्येक छंद में क्रम से एक चरण हिंदी का और एक चरण फारसी का रखा है। जैसे, कहा निज लाली पै विग्व मरै। लवे लाल निगारम रा दरियाव या टौलत जान निसार कुनम जद देखूँ विहारी जू मोहनी मूरत। जुमले गम इजहार कुनम जो मिलें हँय के वो नाँवरी सूरति। हयाते अच्युती गर शब्द विला दोस्त वेकार। मीत पाम जाको सदा ताके वस मसार। मीत हू न अंक लग्यौ वजि के कलंक लग्यौ, मुफ्त दर इश्क वे विहारी वदनाम शुद। प्राय दो हजार अनुष्टुप श्लोकों में कवि ने द्विभाषिक रचना बहुत चातुरी से की है। वारहमासा शुद्ध रूप से हिंदी में लिखा है और वह भी निम्न कोटि की रचना नहीं है। जहाँ तक आल्हा का संबंध है, ऐसा जान पड़ता है कि ग्रामीणों के द्वारा गाये जानेवाले अवधी के प्रसिद्ध गीतों का संग्रह है। यद्यपि गँवारों के बीच यह भडा एवं कुरुचिपूर्ण होता है, किंतु एक कुशल व्यक्ति के हाथों पढ़कर यह हिंदी की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं के समकक्ष पहुँच गया है।

२० श्रीरोल्लास—श्रीरीलास नरु मिले कवि हैं। इन्होंने श्रीताका पचासा रचा है या अर्ध है। ये सामान्य कवि जान पड़ते हैं और इनकी भाषा प्रादेशिक प्रयोगों से भी मुक्त नहीं है।

२१ अयोध्या प्रसाद पाण्डेयी—अयोध्याप्रसाद पाण्डेयी (भीष कवि) न रघुनाथ मन्वसी प्रिय रचा है जिसका उल्लेख सन् १९२३-२५ ई० की विवरणिका में हो चुका है। ये रायबरेली निवासी थे और सन् १८८५ ई० में दिवंगत हुए।

२२ यादूराम पांडे—बाबू राम पांडे नरु मिले कवि हैं। इनका भीष संग्रह रीष का प्रिय है जो गद्य-पद्य दोनों में रचित है। इसका रचनाकाल और छिपिकाल दोनों एक ही हैं, क्योंकि सन् १७४५ ई०। हस्तलेख रचय रचनाकार के ही हाथों लिखा हुआ है। इन्होंने यह प्रति अथवा भाषा के लिए प्रस्तुत की थी। इन्होंने बंगमेन, उद्दिस और साईगधर से अथवा रीष रीषार करना स्वीकार किया है। यादूराम प्रतापगढ़ जिले के गोंडा निवासी थे। किंतु इन्होंने अपने प्रिय की रचना प्रयाग में की है।

२३ घट्टीलाल—घट्टीलाल नरु मिले कवि हैं। इनके अयोध्या-विषयक सत रचा शिखर प्रिय की तीन प्रतिर्षां मिली हैं जिनमें सबसे पुरानी प्रति सन् १८७० ई० की है।

२४ वीरनाथ—वीरनाथ नरु मिले कवि हैं। ये जैनपुर जिले के बादसाहपुर निवासी बाबू सीताराम के भाहित थे। वर्तमान गीत्र में इनके दो प्रिय—(१) गोपी-विरह उद्गावली और (२) नाम विक्रम मिले हैं। पहले का विषय श्रीकृष्ण से भङ्गा हो जाने पर गोपियों का विरह और दूसरे का नायिकाभेद है। पहले का रचनाकाल सन् १८६० ई० है। दूसरे का समय-सूचक छोटा अल्प हाने के कारण रचनाकाल संवत् १९३४ और १७३४ दोनों ही हो सकता है, जो इस बात को ध्यान में रखते हुए नितांत अर्धगत है कि छिपिकार ने इसकी प्रतिलिपि संवत् १९२८ (सन् १८१९ ई०) में रचय लेखक की आज्ञा से प्रस्तुत की। यदि १७३४ को शक संवत् भी मानें तो भी प्रिय का रचनाकाल सन् १८१९ ई० नहीं हो सकता। प्रिय की पुष्पिका से यह भी प्रकृत होता है कि वीरनाथ के पिता विनेश भी अष्टे कवि थे।

२५ वैजू—वैजा कि प्रिय के नाम से प्रकृत है वैजू में 'कविता संग्रह' नामक कवियों का एक संग्रह सन् १८१८ ई० में प्रस्तुत किया। उपलब्ध हस्तलेख इसके पाँच वष बाबू का है।

२६ वीरलाल—गीत्र विवरणिका सन् १९२३-२५ ई० संख्या २५ और सन् १९०६-०८ ई० संख्या १३३ में वीरलाल का विवरण दिया हुआ है। प्रिय का रचनाकाल संवत् १८९५ (सन् १७९८ ई०) तथा छिपिकाल संवत् १९४९ (सन् १८६९ ई०) है।

२७ वीताल कवि—गीत्र में वीताल पचीमी का जो हस्तलेख मिला है, केवल उसकी पुष्पिका में ही वीताल कवि का नाम आया है। हमने यह सहिह उत्पन्न होना है कि कहीं छिपिकार ने तो प्रिय के नाम के आधार पर रचनाकार का नाम वीताल नहीं लिख

दिया है। इस ग्रंथ की भाषा प्राकृत से कुछ कुछ मिलती-जुलती है जिन्में इस बात का मकेत मिलता है कि रचना सत्रहवीं शती के धैताल कवि के पूर्व की है। कछति, गमंति, जपियो जैसे शब्दों का प्रयोग चदवरदाईं ऐसे पुराने राजपूत कवियों तक की भाषा का स्मरण दिलाते हैं। शिवदास कृत संस्कृत की पचविंशतिका की रोचक कहानियों ने हिंदी के बहुत से कवियों का ध्यान अनुवाद के लिए आकृष्ट किया है जिनमें से चार का उल्लेख मर जार्ज ग्रियर्सन ने अपने माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आव् हिंदुस्तान में भी किया है और उसके कतिपय हस्तलेख साहित्यान्वेषकों को भी खोज के आरंभ में ही मिल चुके हैं (जैसे, देविगु प्रथम त्रैवार्षिक विवरणिका, सख्या ८६, द्वितीय, सख्या १३, छठी, सख्या २७; सातवीं, सख्या २३४ (बी), आठवीं, सख्या २६)। इनमें से कुछ में रचयिताओं के नाम दिए हैं। जैसा ऊपर कहा जा चुका है मक्षिस पुष्पिका के उपलब्ध होते हुए भी मैं वर्तमान खोज में प्राप्त हस्तलेख को इसी श्रेणी में गिनता हूँ। ऐसी परिस्थितियों में धैताल कवि की जीवनी के विषय में कुछ स्थिर कर देना पूर्णतः कार्पनिक ही होगा।

२८ वाजीलाल—वाजीलाल ने कान्यकुब्ज वशावली विस्तार से लिखी है जो केवल कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के ही काम की हो सकती है। रचयिता स्वयं कान्यकुब्ज ब्राह्मण था। वह सीतापुर जिले में कोटवा का निवासी था। ग्रंथ का रचनाकाल सन् १८६० (सन् १८०३ ई०) है। रचयिता ने पद्य में भी कुछ लिखा है जो सामान्यतः गद्य में ही होना चाहिए था। उसने ऐसा शायद इस लिए किया होगा कि संभवतः बिना पद्य-रचना के उसे कोई महत्त्व न मिले। वास्तव में वह इसके योग्य है भी नहीं। इस महत्त्वहीन वशावली के अतिरिक्त इसकी और किसी रचना का पता नहीं चलता।

२९ बलभद्र—बलभद्र बुदेलखंड के ओरछा के प्रसिद्ध कवि केशवदास के भाई थे। वर्तमान खोज में इनकी रचना नवशिव के दो हस्तलेख मिले हैं, जो अपने विषय अर्थात् नायिका के शारीरिक सौंदर्य के वर्णन का प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। इस ग्रंथ का विवरण पूर्व की कई विवरणिकाओं में उपलब्ध है (देखिए सन् १९०३-०५ ई० की त्रैवार्षिक विवरणिका में सख्या २८ के अंतर्गत)। सोलहवीं शती के अंत में ये विद्यमान थे।

३० बालचंद्र—स्वरोदय के रचयिता बालचंद्र या बालनदास नए मिले कवि हैं। उपलब्ध हस्तलेख खंडित है और रचयिता तथा रचनाकाल के विषय में उससे कुछ भी ज्ञात नहीं होता। मिश्रवधु विनोद में (देखिए सख्या १०८१) रमल भाषा के रचयिता एक बालनदास का उल्लेख है। 'रमल भाषा' में पासा फेंककर भविष्य बताने की क्रिया का वर्णन है और इसमें इशाम के लेने छोड़ने के आधार पर। इसलिए दोनों के एक होने की संभावना है। रमल के रचयिता सत्रहवीं शती के अंत में विद्यमान थे।

३१ बालदास—चित्तबोध और ब्रह्मवाद के रचयिता बालदास का विवरण सन् १९१७-१९ ई० की विवरणिका के सख्या १४ पर भी दिया जा चुका है। उस समय केवल पहला ग्रंथ ही उपलब्ध हुआ था। दोनों ग्रंथ वेदात के ही हैं। रचयिता के विषय में ज्ञात

हुभा है कि वे रायबरली जिले के उपनगर निवासी का-उकुण्ड ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम चिंटेबीब प्रसाद तिवारी था। रचयिता काही द्वारा के दिगंबर बलादे के थे, जो वैष्णवों का एक उपसंप्रदाय है। ये सामान्य कोटि के लेखक हैं।

३२ यशदेव—बलदेव जाति के काव्यस्य (वास्तव्य) थे। व रहते थे जिला फतहपुर के कल्याणपुर परगाबातगत हीरकपुर में। वर्तमान जोर में इनके ग्रंथ 'जानकी विजय' के दो हस्तलेख प्रथम बार मिले हैं यद्यपि 'मिश्रपद्म-विनोद' में संख्या २३४० पर इनका उल्लेख है। प्राप्त ग्रंथ का रचनाकाल सन् १८७९ ई० है और एक प्रतिकल्पित हस्त लेख इनके तीन वर्ष बाद का है। ग्रंथ में अद्भुत रामायण के आधार पर महाराजन पर जानकी विजय की कथा वर्णित है। रचना शुद्ध एवं सामान्य कथा भाव है। ग्रंथकार ने तुलसीदास की शैली के अनुकरण का प्रयास किया है और कुछ स्थानों पर ता उनके छंद्यों के ल्यों उद्धृत कर दिए हैं।

३३ यशदेव—बलदेव नवीन उपसंख्य महारथान पद्यकार है। इन्होंने 'कृष्ण सीसा' नामक एक ग्रंथ लिखा है जिसमें शब्दों की सोडमरोक में इनकी विशेष स्वच्छंदता दिखाई पड़ती है। शैले, छंद भाग से बचन के किन्तु इन्होंने 'भारतार' और 'शिवार' के तुक पर 'भारी' का 'भारे' कर दिया है। ये उन्नीसवीं शती के मध्य में विद्यमान थे।

३४ यशदेवप्रसाद—बलदेव प्रसाद अग्रवाल वैद्य नबोपलक्ष्य रचनाकार हैं। ये काणपुर जिले के अमरोहा-निवासी थे और इन्मीरपुर में पोतदार का कार्य करते थे। इनकी छोटी सी पुस्तक बिरहनीक सारहमासा सन् १८०३ ई० में रची गई थी। रचयिता के कथना सुधार राय शिवमहाय और चरकारी के मङ्गलान इनके आश्रयदाता थे।

३५ यालगोविंद—नबापलक्ष्य रचनाकार बालगोविंद की एक नामविहीन पोथी मिली है जिसमें इन्होंने कुछ सम्पन्न के श्लोको को आधार रूप में समूह कर कविच और मंडियों में उनका विस्तार किया है। इन्होंने अपने तथा अपने कविताकाल के विषय में कुछ भी संकेत नहीं किया है।

३६ यालगोविंद वैष्णव—बालगोविंद गौड़वा निवासी नबोपलक्ष्य रचनाकार हैं। इन शिखों में इनका भागवतगीता का अनुवाद मिला है। ग्रंथ का छपिकाल संवत् १८०९ वि० (सन् १०५० ई०) है। इनका समय अज्ञात है। इनके इन ग्रंथ के रचना कर होने में भी संदेह है।

३७ बालकराम मैनसुख—बालकराम मैनसुख नबापलक्ष्य रचनाकार हैं किन्तु अनै-सर्गिक दोहरे नामों में संदेह होता है। बालकराम नामके विशिखा-नाथ के कोर्ने भी रचयिता अब तक नहीं मिले हैं किन्तु मैनसुख नाम के एक प्रसिद्ध बंध ही गए हैं जिन्होंने सन् १५९२ ई० में वैद्य-मनोमथ नामक ग्रंथ रचा है। यदि उपलक्ष्य रचना ईसा की सोलहवीं शती के अंत की सिद्ध हो जाए तो इनके रचयिता और वैद्य मनोमथ के कर्ता का एक मान लेने

में कोई कठिनाई न होगी । किंतु इम ग्रथ का रचना-काल सन् १८१३ ई० दिया हुआ जिससे त्राण पाना अमभव है ।

३७ वालमकुन्द—वालमकुन्द नवोपलब्ध रचनाकार है । इनके चारहमा वर्ष के चारह महीनों के क्रम से प्रेमिका का पति-विश्रोग वर्णित है । कवि ने अधिपत्नी भी नहीं छोड़ा है, किंतु उममें उमने अपने गुरु घासी से भेंट का वर्णन किया है । आज्ञा से इमने यह चारहमासा सवत् ४७ में चंद्र शुद्ध अष्टमी को संपूर्ण किया । ३ लिपिकाल सवत् १९२६ होने से यह निश्चित है कि इसकी रचना सवत् १८४७ में नहीं हुई है । तथापि ग्रथ की भाषा भी इमी स्थापना का समर्थन करती है । वालमुरादादा के ठाकुरद्वारा के थे ।

३८ चतुर्वीर द्विवेदी—चतुर्वीर द्विवेदी कर्नाज-निवासी थे । इनका सन् १९२३-२५ ई० की खोज-विवरणिका में संख्या ३४ पर हो चुका है । वर्तमान में इनके ग्रथ रससागर उपनाम वंपतिविलास की तीन प्रतियाँ तथा नखशिख की दो प्राप्त हुई हैं । इन दोनों का विवरण पहले दिया जा चुका है । रस-सागर की अब तक सबसे पुरानी प्रति सन् १७९० ई० की है और नखशिख की सन् १७८९ ई० की ।

३९ बनारसीदास जैन—बनारसीदास जैन गोस्वामी तुलसीदास के सम थे । ये आगरे के रहनेवाले थे और सन् १९२३-२५ ई० की विवरणिका में स्वर पर इनका कुछ विवरण भी दिया जा चुका है । वर्तमान खोज में इनके तीन ग्रथ में आए हैं—(१) वादन सर्वथा, (२) वेद-निर्णय-पञ्चाशिका और (३) सूक्त मुक्त ये सब ग्रथ जैन-धर्म से संबंधित हैं तथा अन्य धर्मों के विरोध में हैं । वर्तमान खोज सबसे प्राचीन प्रति सन् १६२९ ई० की है ।

४० बाँकेराम दीक्षित—नवोपलब्ध बाँकेराल दीक्षित के विषय में कुछ नहीं है । इन्होंने सामुद्रिक शास्त्र (हस्तरखा शास्त्र) पर एक पोथी लिखी है । द्वारा भविष्य-ज्ञान जन-सोचक होने के कारण यह बहुत से लेखकों को प्रिय रहा है मान खोज में बाँकेराम के नाम पर दो हस्तलेख मिले हैं, किंतु एक छंद में त उल्लेख होने से यह सदेह होता है कि कहीं यह ताहिरकृत संस्कृत के सामु अनुवाद न हो । (ज्ञान घटे दरसन किये काया घटे रतिकेलि । भूलि न अमृत डालिं विप की बेलि ॥) । ताहिर उपनाम अहमद ने भी सामुद्रिक पर ग्रथ लिखा है । शुरुक्त दोहे में उसके नाम का संकेत है । चाहे जो हो दोनों रचयिताओं के छंद नहीं मिलते जिनसे स्पष्ट है कि बाँकेराम ने अपने छंद अलग बनाए हैं । ताहिर ने ग्रथ सन् १६२१ ई० में रचा, किंतु बाँकेराम ने समय का कोई संकेत नहीं दिया है मान खोज में उपलब्ध एक प्रति का समय सन् १७९२ ई० है जिससे प्रकट है कि इसके पहले के अवश्य होंगे । अतः समय-निर्धारण के लिए १६२१ और १७९२ बहुत बड़ा अंतर है ।

४१ बंसीधर—मिथ-मनोहर के रचयिता बंसीधर का पता पहले मी मिस बुका है किन्तु जो इस्तलेक बाबू राम मनोहर बिबरपुरिया के पास है वह अब तक प्राप्त सबसे पुराना है। इसका समय १७९७ है जो रचनाकार के इकसवीं वर्ष बाद का है। बंसीधर ने मित्रमनोहर नाम से द्वितीयदेश का अनुवाद किया है (पश्चिम खोज-बिबरमिका सन् १९१७-१९ ई० संख्या २०)।

४२ येनीवपय—बेनी वन्दत का बिबरण खोज-बिबरमिका सन् १९१२-१९ ई० के संख्या १९ पर दिया जा चुका है। इनके प्रथम हरिदत्त कथा की दो प्रतिबौ मिली हैं और दोनों का छपिकाक सन् १८७४ ई० है। पुस्तक में उन्हीं राजा हरिदत्त की प्रसिद्ध कथा वर्णित है जिन्होंने स्ववचन-रक्षण में अपना सर्वस्व होम कर दिया था।

४३ येनीमाधव—बेनी माधव ने बारहमासी लिखी है जिसमें मासकर्म से राधा का श्रीकृष्ण-विद्योग वर्णित है। ऐसे साहित्य का तो प्राचुर्य है, किन्तु ये कवि प्रथम बार ही मिले हैं। इन्होंने अपने विषय में कुछ भी नहीं लिखा है।

४४ येनीमाधवदास—बेनीमाधवदास बाबा गोस्वामी तुलसीदास के सिष्य थे। इन्होंने गोस्वामी जी का जीवन चरित लिखा है। इनका प्रथम शूक गोसाईं चरित सर्व प्रथम इसी खोज में मिल्य है। इस पुस्तक ने तुलसीदास के संबंध में प्रसिद्ध कुछ परंपरागत धारणाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित कर दिया है। कपशी बागरी प्रचारिणी सभा ने इसे प्रकाशित कर इसकी आलोचना का आवाहन किया था जो बागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है। बेनीमाधवदास ने इसकी रचना अपने गुप्त की श्राव्य के सात वर्ष बाद की थी जब उनकी सभी बातें इनके प्यान में थीं। उपर्युक्त इस्तलेक का छपिकाक सन् १७९१ ई० है।

४५ येनी प्रवीन—बेनी प्रवीन अपने की कलत्रक का बाकपेयी बताते हैं। इन्होंने मबरस तरंग नामक ग्रन्थ लिखा है जो पिछली कई बिबरमिकाओं में बिबरित हो चुका है। एतत्संबंधी सभी ज्ञातप्य सूचनाएँ खोज बिबरमिका सन् १९१३-१५, ई० संख्या ४० में उपलब्ध हैं। मबरस तरंग की रचना सन् १८१७ ई० में हुई थी।

४६ भदुरी—भदुरी या भदुरी नाम हिंदी भाषा भाषी प्रांत में बितेफ्तः किसानों के बीच बर्षों एवं कृषि संबंधी ज्योतिष विषयक सुक्तियों तथा कहानियों के संग्रह प्रसिद्ध है। प्रायः सभी कृषकों की जिज्ञा पर इनकी बिसिद्ध छाप से अलंकृत कुछ व कुछ कहानतें रहती ही हैं। जैसे, सावन पहिली बीम में जो मेघा बरसाय। ऐना बाई भदुरी साल सवाई जाय।

इतने प्रसिद्ध होते हुए भी इनके विषय में बहुत कम ज्ञात है। फिर भी इनके विषय में वैरागिक ङग की कुछ कपारें अबहय गयी गई हैं जो छीक पदमा अंग कदकना, पक्षियों के कसरय, पशुओं की घ्यनि, बिस्तुलिका पतन, मसत्र-अमाव आदि संबंधी इनके असाधारण ज्ञान की प्रकटिका हैं। भदुरी ने इन सय विषयों पर रचना की है और सीमाग्य से वर्तमान

खोज में इनके बहुत से ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं। उनके नाम हैं—(१) भड्डरी पुराण, (२) बृहस्पति कांड और (३) मगुनावली या सगुन-विचार जिसकी तीन प्रतियाँ मिली हैं। पहला ग्रंथ जो सन् १९०० की खोज में भी मिल चुका है, अवधी गद्य में है। इसमें ढक्क ऋषि तथा उनकी पत्नी के बीच हुए ज्योतिष सवधी सवाद का वर्णन है। दूसरा ग्रंथ संस्कृत के छंदों से आरंभ होकर तुरंत ही हिंदी के छंदों की ओर बढ़ जाता है जिसमें आवश्यकतानुसार यत्र तत्र गद्य का भी मिश्रण हो गया है। तीसरा ग्रंथ हिंदी पद्य में है तथा उसकी शैली औरों से कुछ अच्छी है। इससे यह भी संदेह उत्पन्न होता है कि ये ग्रंथ चम्पुत. एक ही व्यक्ति के लिखे हैं या नहीं। इससे कथन की पुष्टि इससे भी होती है कि सवुन-विचार का एक हस्तलेख उसका भड्डरी सहदेव का रचा होना बताया है, और भड्डरीः शब्द ज्योतिषी अर्थ का द्योतक प्रतीत होता है। अतः इसका वास्तविक रचयिता सहदेव होना चाहिए (मिश्रबंधुओं ने भ्रमवशा उन्मे शाहाबाद पढ़ लिया है, देखिए मिश्रबंधु-विनोद, तृतीय भाग, पृष्ठ ९९२, सख्या १६१०, द्वितीय संस्करण) जो जाति का भड्डरी था। इसमें यह निष्कर्ष निकलता है कि ज्योतिष विषयक इस प्रकार की रचनाएँ विभिन्न व्यक्तियों ने कीं और जिनके लिए ये लिखी गई थीं उनमें विश्वास उत्पन्न करने के लिए ये सर्वाधिक प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम पर प्रचारित कर दी गईं।

४७ भद्रनाथ दीक्षित—छद-शिरोमणि (छदशास्त्र का ग्रंथ) के रचयिता भद्रनाथ दीक्षित नवोपलब्ध कवि हैं। ये कानपुर जिले के विल्हूर निवासी थे। ग्रंथ का रचनाकाल इस प्रकार दिया है—संवत् ठारह सै अमी शुक्ल छठि बुद्ध। मृग सिर को रजनीस सुभ भयो ग्रंथ यह सुद्ध ॥ तदनुसार ईसवी दिनांक है १६ अप्रैल सन् १८२३ ई० बुधवार। उस दिन सूर्योदयोपरांत मृगशिरा नक्षत्र कम से कम पैंतालिस मिनट तक था। भद्रनाथ वैद्यक के भी ऐसे ही पंडित थे। इन्होंने इस विषय का भी एक ग्रंथ संस्कृत के रचनाकारों में संग्रह करके 'सग्रह-शिरोमणि' नाम से लिखा है।

४८ भगवानदास—अमृतधर के रचयिता भगवानदास निरजनी सन् १९०६-०८ ई० और १९०३-२५ ई० की खोज में भी मिल चुके हैं। अमृतधर वेदांत का ग्रंथ है और सन् १९०६-०८ ई० की खोज विवरणिका के अनुसार सन् १६६५ ई० में रचा गया है। वर्तमान खोज में प्राप्त प्रति सन् १८२७ ई० की लिखी है।

४९ भगवंतराय खीची—भगवत राय खीची ने हनुमान जी के कवित्त या हनुमत-पचाया लिखा है। ये पहले भी मिल चुके हैं। देखिए खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ ई० और १९०३-२५ ई०, सख्या ४३।

५० भागवत—भागवत नाम के कई रचनाकार खोज में मिल चुके हैं, किंतु ये सबमें भिन्न हैं। इनके ग्रंथ नागर-सभा का समय अनिश्चित है, किंतु उपलब्ध हस्तलेख

* भड्डरी जीतियों की एक जाति है जो चारी और घूम-घूमकर भिचा मोंगकर, भविष्य बताकर तथा ईशानिक उशक्ते करकर अपनी जीविका निवाह करते हैं (देखिए रमेल तथा हीरालाल कृत ट्राइम्फ् एट दि काश्मि अॉव दि मेंटल प्राविमेज, तृतीय भाग, पृष्ठ २५६)।

सन् १८९५ ई० का डिला है। यह ग्रंथलेखी बोली में लिखा गया है और इसमें पारमो-
जबो से व्युत्पन्न शब्दों का प्राचुर्य है। भागवत नामा ईश्वर नामा के पीछे पर लिखा गया
प्रतीत होता है, जिसमें जानू को सहायता से काम होता है। ग्रंथ का दूसरा नाम किम्सये
सु दर-भागरी भी है जो उसके अंत में लिखा हुआ है।

५१ भागवतदास—भागवतदास की सर्वाग्रिम उपलब्धि सन् १९०९ ११ की
शोध में हुई थी जब कि इनका भागवतचरित नामक ग्रंथ मिला था। वर्तमान शोध में
साक्षरपाठ्यपत्र ने सन् १९०९ ११ ई० में ही हस्तलेख को पुनः प्राप्त कर उसमें से तीसरे
अध्याय का वह अंश छूट निकाला जिसमें रचनाकार, स्वान आदि विष्ट हुए हैं और जो पहले
नहीं मिला था। ग्रंथकार ने भागवत का माहात्म्य प्रयोग में अपने गुरु स मुसा और भपुरा
में पद्य-बद्ध किया। ऐसे ही गुरुमीश्वर ने भी राम की कथा सूक्ष्मलेख में अपने गुरु से मुन
कर अम्पन्न रामायण के रूप में लिखित की थी। ग्रंथ का समय हम प्रकार दिया है—
अध्याय १ सिरमठ संमत। कर्मी कथा इतिहास जस मंतत। कार्तिक शुद्ध पक्ष पुष्यवार।
श्रीमी तिथि मुन योग वदारा। अर्थात् रचना कार्तिक शुद्ध पक्ष नवमी मघत् १८९३ पुष्य
वार को लगभग १९ मंघर सन् १८०९ ई० बुधवार की आरंभ हुई। जिस प्रकार भागवत
दास का 'भागवत चरित्र' पद्यपुराण के आधार पर निर्मित हुआ है जिसका संकेत इन्होंने
अपनी रचना में दिया भी है, उसी प्रकार इनका दूसरा ग्रंथ मध्माह-माहात्म्य भागवत
चरित्र पर आधारित है। ऐसा प्रतीत होता है कि भागवतदास तुलसीदास की के पद-विन्दों
का ही अनुकरण करना चाहते थे, किन्तु वे सफल न हो सके।

५२ भागवतदास—रामनाथिनी के रचयिता भागवतदास हमी नाम के अन्य
कवियों से भिन्न हैं और हम शोध में नए मिले हैं। इनका ग्रंथ तुलसीदास कृत रामायण के
पाशों की कार्य-सूची है।

५३ भागवत शरण पांडे—भागवत शरण पांडे सरयूपारी माझण प्रतापगढ़
जिले के पुरवा इरादत मिश्र के रहनेवाले थे। वे कामपुर में माछन सेना में जमादार थे।
वर्तमान शोध में इनका दो ग्रंथ मिले हैं—(१) ज्ञानदीपिका और (२) अक्षरशास्त्र
प्रापतिक। इनमें से प्रथम वेदों की और द्वितीय धार्मिक विषय की पुस्तक
है। दूसरी का प्रत्येक अंश हिंदी बजमाला के अंत में आरंभ होता है। दोनों का
समय अज्ञात है।

५४ भगवतीदास—प्रसिद्ध जैन कवि भगवतीदास या भैया भगवतीदास के दो
ग्रंथ बेतम चरित्र और निर्धामकंड पहले मिल चुके हैं (इन्दि पत्र विचारविषय मन्
/ १९०० ई० और सन् १९१३-२५ ई०)। वर्तमान शोध में पुण्यपचीमी नाम का इनका एक
ग्रंथ भी मिला है। इसकी रचना सन् १९०९ ई० में हुई। इसमें जैन तीर्थंकरों की प्रशंसा
है तथापि कुछ धार्मिक शिक्षा भी कथित है।

५५ भगवतीदास द्विज—भगवतीदास द्विज का विवरण धर्मिकेताजी पुराण
या नामिकेताप्यायन के रचयिता के रूप में शोध विवरणिका सन् १९१३-२५ ई० मंत्र्या ४८

पर दिया जा चुका है। वर्तमान रोज में इसका नाम नामिरेत क्या प्रयोग मिला है। इन्सानों में रचनाकाल इस प्रकार दिया है—

संवत् सोलह सौ अठार्या। जेट माय दुनिया परकामी।
सुकल पक्ष आँ सोमरु वारा। मृगविर लग्यत धीन्ह उपचारा ॥

अर्थात् जेट सुदी २ संवत् १६८८ वि०, सोमवार तदनुसार २३ मई सन् १६३१ ई०। डाक्टर ग्रियर्सन ने भ्रम से इसे रचयिता का जन्मकाल मान लिया है। मिश्रप्रभुओं ने ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १७१७ (सन् १३७४ ई०) माना है जो अशुद्ध है।

५६ भक्तराम—जालधर (पजाब) निवासी भक्तनाम ने विभिन्न कवियों रचित कृष्ण-लीला के पदों का भक्त-चिन्तामणि नामक संग्रह राग-रागिनियों में किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस हस्तलेख के अंत में रागमाला नामक गुरु स्वतंत्र ग्रंथ ही जुड़ा हुआ है जिसमें संगृहीत पदों के गाने के समय तथा ढंग का विवरण दिया है, क्योंकि संग्रह की पुष्पिका में भक्त-चिन्तामणि की समाप्ति का उल्लेख है, रागमाला का नहीं। संग्रहकर्ता के अनुसार ग्रंथ में ९९९ राग रागिनियों का संग्रह किया गया है जिसे तानदेन गर्दये ने गाया था। हस्तलेख में दो सवत दिए गए हैं—(१) सैत वदी २ संवत् १८०० शुक्रवार जो गणना से अशुद्ध है क्योंकि उक्त तिथि शुक्रवार को न पड़कर शनिवार को पड़ती है, (२) माघ मास द्वितीया संवत् १९०७, शुक्र जो लिपिकाल है। इस संवत् (१९०७) में विद्याधर ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करमासिंह पोतवार की आज्ञा से की थी। किंतु पक्ष का उल्लेख न होने से तथा किसी भी पक्ष की द्वितीया का शुक्रवार को न पडने से यह तिथि भी दोषपूर्ण है। ऐसी स्थिति में न तो रचनाकाल का ही निर्णय हो सकता है और न लिपिकाल का ही। अन्य साधनों से भी इस समस्या का कोई हल नहीं निकलता।

५७ भौन कवि—सन् १९२३-२५ ई० की रोज-विवरणिका में भौन कवि सचधी पूजा विवरणिकाओं के सभी उल्लेखों की तालिका दी जा चुकी है। इनकी शक्ति-चिन्तामणि पहले भी एक बार मिल चुकी है और उग्रका विवरण भी दिया जा चुका है। दुर्भाग्य से रचनाकाल का विवरण न होने से समय का निर्णय नहीं हो सका है। ज्ञात हुआ है कि भौन ब्रह्म भट्ट थे और रायबरेली जिले के वेन्ती निवासी थे।

५८ भवानी—अयोध्या-निवासी भवानी ने रामचंद्र की चारहमासी लिखी है जिसमें राम के जन्म से लेकर उनके निर्वासन तक की कथा वर्णित है। इस ग्रंथ में छंदो-विधान का कोई विचार नहीं है, सामान्य पद्यकार की सी रचना है। अंत में शब्दों की ध्वनि जोर से हो इसी का विचार रखा गया है।

५९ भवानीदास—भवानीदास नाम के कई कवि हुए हैं, किंतु भेदसूचक पर्याप्त सामग्री के अभाव में उन्हें अलग अलग करना अभी संभव नहीं है। सर जार्ज ग्रियर्सन ने किसी भवानीदास का १८४५ में जन्म होना लिखा है और उनके पुत्र जयकृष्ण को भी कवि बताया है। सन् १९०० और १९०९-११ ई० की रोज-विवरणिकाओं ने इस

की पुष्टि की है और यह स्थापना भी की है कि ये पुष्कल ब्राह्मण थे। सन् १९०४ ई० की लोख विवरणिका में इसी नाम के एक कायस्थ का भी उल्लेख है जिसका पुत्र रामसहाय काशी के महाराज उदित-नारायणसिंह का दरबारी कवि था और जिसने रामसहायसिंह की पुस्तक लिखी है। रामसहाय १८१९ के लगभग विद्यमान था जिसके अनुसार उसके पिता अठारहवीं शती के अंत तक रहे होंगे। ये भवानीदास मिश्रचंभुओं द्वारा उल्लिखित उस भवानीदास से नहीं मिल सकते जिनका जन्म उन्होंने १८१८ ई० में बताया है। सन् १९२०-२२ ई० और १९२३-२४ ई० की लोख-विवरणिकाओं में भी दो भवानीदासों का उल्लेख है। पहले सूर्य माहात्म्य के रचयिता हैं, दूसरे स्वरोदय-मनोबोध के। महाराज-विनोद के रचयिता प्रस्तुत भवानीदास इन सबसे भिन्न हैं। इनकी रचना कुछ महत्त्वपूर्ण भी है। इस ग्रंथ में कृष्ण की अत्रकेलि वर्णित है और यह कवि के उद्देश्य विषयक सम्यक् ज्ञान का द्योतक है। अधिकतर छंद तो गाने के लिए हैं। हस्तलेख में रचनाकाळ और लिपिकाळ दोनों नहीं हैं, केवल कवि का नामोलेख है जो प्रायः सभी छंदों में मिलता है। अपूर्णवस्था में भी इस ग्रंथ में १२०० श्लोक हैं।

६० भवानीदास—आत्मव्य-नीति के रचयिता भवानीदास संवत् ५९ बाळे भवानीदास से भिन्न प्रतीत होते हैं। शय और पद्य दोनों में इनकी हीनी आनुनिकता की परिचायक है। ग्रंथ में रचनाकाळ नहीं दिया है, किन्तु हस्तलेख का लिपिकाळ सन् १८५२ ई० है। जब तक कुछ विशेष सूचना नहीं मिलती तब तक इन्हें संवत् ५९ में वर्णित भवानीदासों में से किसी से मिलाया व्यर्थ है।

६१ मिश्रारीदास—मिश्रारीदास प्रसिद्ध कवि हैं और कई विवरणिकाओं में इनका उल्लेख हो चुका है। वर्तमान लोख में अठारह हस्तलेख ऐसे मिले हैं जिनमें इनके सबसे अधिक ग्रंथ हैं। वस्तुतः संख्या १ ४ और ५ तो पिलकुल मरू मिले हैं जिनका जब तक पता ही नहीं लगाया जा सके। प्राप्त ग्रंथों की सूची निम्नलिखित है—

- (१) अमर-तिसक की दो प्रतियाँ।
- (२) काव्य-निर्णय की पाँच प्रतियाँ।
- (३) वैदेह-रस-सारांश की एक प्रति।
- (४) अंगार-निर्णय की तीन प्रतियाँ।
- (५) उद्धार्यक की दो प्रतियाँ।
- (६) तरिज-काव्य-निर्णय की एक प्रति।
- (७) विष्णु-पुराण की दो प्रतियाँ।
- (८) रम-सारांश की दो प्रतियाँ।

अमर-तिसक संस्कृत के प्रसिद्ध निर्धनु अमर कोश का पदानुवाद है। मिश्रचंभुओं द्वारा कथित नामप्रकाश परी ग्रंथ है। प्रतापगढ़ के राजा थे, मिश्रारीदास वहाँ के निवासी थे, यह ग्रंथ मिश्रचंभुओं के नाम परीभार्य भेजा था। उनका विश्वास है अरसी का भाग

वहार इसी का अनुवाद है। इसकी रचना संवत् १७६५ (सन् १७३८ ई०) में हुई थी। कोश जैसी रचना बिना किसी प्रकार के छादिक दोष के विभिन्न छंदों में प्रस्तुत करना बहुत बड़ी बात है जो इस ग्रंथ में स्पष्ट है। इनका दूसरा ग्रंथ विष्णु पुराण का अनुवाद है भिन्न-वयु जिसे इनकी प्रथम पद्य रचना मानते हैं, (देखिये ऊपर स० ७)। यह रचना इनकी और कृतियों से कुछ हल्की है। इस कवि के शेष ग्रंथ अलंकार तथा छंद शास्त्र के हैं जो अपने दग के अद्वितीय हैं। इन ग्रंथों का रचनाक्रम निम्नलिखित है—

(१) रस सारांश नभ (श्रावण) सुदी ६ गुरुवार सवत् १७९१ तदनुसार दिनांक २५ जुलाई सन् १७३४ ई०, गुरुवार को समाप्त हुआ।

(२) छंदार्णव मनु (चैत्र) वदी ९ संवत् १७९९ (मिश्रवयु विनोद में छपा १७९९ अशुद्ध है) तदनुसार दिनांक २ अप्रैल सन् १७४२ ई० को समाप्त हुआ।

(३) काव्य निर्णय का आरंभ आश्विन शुक्ल १० (विजयादशमी) सवत् १८०३ तदनुसार दिनांक १३ सितंबर सन् १७४६, शनिवार को हुआ।

(४) शृंगार निर्णय का आरंभ माघ (वैशाख) सुदी १३ सवत् १८०७ गुरु को हुआ। संयोग से उस दिन दिनांक ८ मई सन् १७५० था, किंतु गुरुवार नहीं था। यदि सवत् १८०७ को चालू वर्ष मान लें तो भी १८०६ की सुदी १३ बुधवार को पड़ी थी, गुरुवार को नहीं। सवत् १८०७ में सन् १७५० थी।

(५) छंद प्रकाश, (६) तेरिज रस सारांश और (७) तेरिज काव्य निर्णय के सन् सवत् ज्ञात नहीं हैं। अंतिम दो के स्वतंत्र ग्रंथ होने में भी संदेह है। 'तेरिज' का अर्थ स्पष्ट नहीं है। यदि कुछ हो तो 'परिशिष्ट' से मिलता जुड़ता हो सकता है। भिखारी दास ने अपने छंदार्णव में एक छंद दिया है जिसमें एक एक अक्षर छोड़कर पढ़ने से इनकी जाति, सवधियों तथा स्थान का विवरण ज्ञात होता है। यह छंद इस विवरणिका के परिशिष्ट २, सप्त्या ५६ (डी०) पर दिया है। एक एक अक्षर छोड़कर पढ़ने से उसका रूप इस प्रकार हुआ—भिखारीदास कायस्थ, वरन वही वार भाई चैन लाल को, सुत कृपाल दास को, नाती वीर भानु को, पन्नाती रामदास को, अरवर देश टेडंगा नगर ता थल। इसका तात्पर्य हुआ भिखारी दास कायस्थ चैनलाल के भाई, कृपाल दास के पुत्र, वीर भानु के पौत्र, रामदास के प्रपौत्र तथा अरवर देशातर्गत (प्रतापगढ़, सयुक्त प्रांत) टेडंगा ग्राम निवासी थे (यह स्थान प्रतापगढ़ किले से एक मील दूर है)।

६२ भीष्म—भीष्म कवि का विवरण खोजविवरणिका सन् १९०३ ई० और १९१७-१९ ई० में दिया जा चुका है। सन् १९१७-१९ ई० की विवरणिका में यह मत व्यक्त किया गया है कि भीष्म नाम के दो कवि हुए हैं जिनमें समय का अंतर एक शती का है। किंतु मिश्रवयुओं ने अपने विनोद के द्वितीय संस्करण में एक ही भीष्म स्थिर किया है। यह विषय अब भी संदेहास्पद है। वर्तमान खोज में नखशिख नाम का एक ग्रंथ भी मिला है जिसकी शैली देखने से अन्य विवरणिकाओं में उल्लिखित भागवत के अनुवादक और इसके रचयिता एक ही ठहरते

धे । माताहीम के कवित्त-रत्नाकर में वर्णित भीष्म का कथा जहानाबाद् निबानी तथा नवाब मंसूर बनी गईं सफ़्दर जंग के सूबदार हिम्मत गिरि गोसाईं के समकालीन थे जय भी प्युइ ही हैं । उनसे माया में पूर्वी हिंदी मिली हुई है किन्तु हमारे भीष्म कुछ पश्चिमी हिंदी के हैं ।

६३ भोगीसाल—यद्यत् विसास के कर्ता भोगीसाल का उल्लेख सन् १९२३-२४ की विवरणिका में हो चुका है । जिसमें उनके अर्द्धद्वार-प्रदीप नाम अर्द्धद्वार-ग्रंथ का विवरण है । ये ग्रंथिक कवि देव के प्रवीण थे और ईनपुर जिले के कमर के रहनवाठ थे । उपरलक्ष्य हस्तलक्ष्य रचयिता के शायों का ही लिखा हुआ है । इसका रचनाकाल कालिक सुदी ५ मृगशिरा संवत् १८५६ तदनुसार १ नवंबर सन् १७९९ ई० आरंभ है । 'उस दिन पंचमी सूर्योदय का ७ घंटा ४० मिनट बाद सगी थी, अर्थात् लगभग दो बजे दिन में । कवि ने ग्रंथ की प्रतिलिपि अपने आश्रयश्रता के किये ग्रंथ समाप्ति के ठीक दस महीने बाद आश्विन शुद्ध १५ शुक्लवार, संवत् १८५० तदनुसार ३ अक्टूबर १८०० ई० सुबहार का की थी । इस हस्तलेख की सुष्पिका ने बरठाबर सिंह का निर्दिष्ट कठपाद कुलमूषण श्रीहरिश्चन्द्र शठ राजा बरठाबर सिंह ही लिख कर दिया है । "अलवर के महाराजे बरुण राजपूत जाति के हैं जो कठपादा राजपूतों की एक शाखा है, जिसके अग्रणी जयपुर नरान हैं । वर्तमान अलवर राज्य के संस्थापक प्रतापसिंह जी थे जिसका जन्म १०४० में हुआ था तथा मृत्यु १०९१ में । मृत्यु के बाद उनके बेटे बरुण राजपूत बरठाबर सिंह सिंहासनारूढ़ हुए । बरठाबर सिंह की मृत्यु के बाद उनके भतीजे बेनीसिंह और अर्धपुत्र बलवंत सिंह का बीच सिंहासन के सिंघ हुआ । इस पर एक दोनों पर बाध कर चुक चुक में लगे रह जिसके परिणामस्वरूप राज्य गड़भट हो गया । अंत में बेनी या बनी सिंह की जीत हुई और १८५७ में उनके कुरते जीवन की समाप्ति हुई ।" यह छंदा उद्धरण जयन किशोर ने दिया गया है जो भारत में भोगी साल के आश्रयश्रता के विषय में सन् १९२३-२४ की विवरणिका में उड़े संदेशों को पूर करता है । ऐसा प्रतीत होता है कि भोगीसाल ने बरुण विक्रम का अर्द्धद्वार प्रदीप की रचना बरठाबर सिंह के पुत्र बलवंत सिंह के सिंघ की थी । किन्तु बनी सिंह की जीत के बाद उसमें से बलवंत सिंह का नाम हटा कर बनी सिंह या बेनीसिंह का नाम लिखा दिया । इसमें उक्त विवरणिका की छाति का गिराकरण हो जाता है । अर्द्धद्वार-प्रदीप में एक दोहा है—मुसम मान-मर हंस नुप बंस कर्म अक्षतमु । अलवर गिरिबर उद्यय में दिग्बिषणु दिनकर अक्षु ॥ कवि युद्ध के निर्णय का उल्लेख इस प्रश्न करता है—धर्म प्रतिपातक है कवि भोगीसाल कई मुसम विमात के बहाल करणे देना है ॥ इसमें स्पष्ट है कि ग्रंथ की रचना १८१५ ई० के बाद ही हुई होगी और यह १८२५ ई० के बाद ही प्रकाशित हुआ होगा जब कि दोनों प्रतिपक्षियों का हागहा समाप्त हो गया । इस समय के बीच कवि शरण्य बना रहा और जब बेनी सिंह की जीत देगी तब कुरते उसकी आर हा गया ।

६४ योग्य मुसलन—योग्य मुसलन भरतपुर निबानी थे और "मिलन की महाराज को साद साद मे" नामक एक ग्रंथ लिखा है जिसमें भरतपुर के महाराज की रणधीर सिंह का भारत के गवर्नर जनरल ने सन् १८१९ ई० में सिंघन का पर्यंत है ।

६५ भूप कवि—भूप कवि का शृंगार-तिलक' नवोपलब्ध ग्रंथ है। ये कानपुर जिले के काकापुर के भाट थे और नवाब शूजाउद्दौला के समकालीन थे जो सन् १७५३ ई० के लगभग विद्यमान था। ऐसा कहा जाता है कि इन्होंने शिवराजपुर के राजा की वशावली तथा बहुत सी शिक्षात्मक कविताएँ लिखी हैं। उपलब्ध रचना शृंगार-रस की है।

६६ भूपति—भूपति अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह का उपनाम है, देखिए खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ६० जिसमें इनका विस्तार से वर्णन किया गया है। ये बहुत से सुकवियों के आश्रयदाता थे तथा स्वयं भी बहुत अच्छे कवि थे। इनकी सतसई पहले मिल चुकी है। उसका रचनाकाल निम्नलिखित है—

सत्रह शत एकानवे, कातिक सुदि बुधवार।

ललित तृतीया में भयो, सतसैया अवतार ॥

किंतु यह त्रुटिपूर्ण है क्योंकि सवत् १७९१ की कातिक सुदी ३ बुधवार को नहीं पड़ी थी।

६७ भूषण—भूषण ऐसे हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि का परिचय देने की कोई आद-श्यकता नहीं। इनका उल्लेख प्रायः सभी खोज-विवरणिकाओं में मिलता है। वर्तमान खोज में इनके 'शिवभूषण' की दो प्रतियाँ मिली हैं। ग्रंथ की रचना सन् १६७३ ई० में हुई थी।

६८ बिहारीलाल महाकवि—बिहारीलाल महाकवि इतने प्रसिद्ध हैं कि इनका विवरण देना निरर्थक है। इनका उल्लेख कई खोज-विवरणिकाओं में हो चुका है। वर्तमान खोज में इनकी सतसई की पाँच प्रतियाँ मिली हैं। उनमें से सबसे पुरानी का लिपिकाल १७७१ ई० है।

६९ विद्याम—विद्याम नवोपलब्ध कवि हैं। वर्तमान खोज में इनके दो ग्रंथ मिले हैं—(१) मानलीला और (२) सगीत लैला मजनूँ। पहले की दो प्रतियाँ और दूसरे की एक प्रति मिली है। मानलीला ब्रजभाषा में है और संगीत लैला मजनूँ खड़ी बोली में मानलीला की रचना सन् १८४३ ई० में हुई जो मूल की प्रतिलिपि है तथा जिनका लिपिकाल क्रम से सन् १८४४ ई० और १८४५ ई० है। सगीत लैला मजनूँ का रचनाकाल अज्ञात है।

७० बोधमल्ल—बोधमल्ल उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध के हैं। इनके ग्रंथ भक्ति-विनोद का विवरण सन् १९२३-२५ ई० की खोज विवरणिका में संख्या ६६ पर दिया जा चुका है, विस्तृत जानकारी के लिए जिसका आलोचन किया जा सकता है।

७१ बोधीदास—बोधीदास ने संस्कृत के योगवासिष्ठ का हिंदी पद्य में अनुवाद किया है जिसकी अपूर्ण प्रति वर्तमान खोज में मिली है। इसकी प्रतिलिपि का समय सन् १८१८ ई० है। सन् १९०९-११ ई० की खोज-विवरणिका में इनके झूलना तथा शिक्षात्मक पद्यों का विवरण दिया जा चुका है।

७२ ब्रजवासीदास—ब्रजवासी दास प्रसिद्ध कवि हैं और इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११, १९२०-२२ और १९२३-२५ में दिया जा चुका है। वर्तमान

शोत्र में इनके प्रवृत्तियों की दो प्रतिचौं मिली हैं। श्रवण का रचनाकाल सन् १७७० ई० है। सन् १८२०-२२ की शोत्र विवरणिका में वर्णित प्रति सबसे पुरानी है।

७३ बुध—बुध बनारस निवासी थे। इसके अतिरिक्त इनके संबन्ध में और कुछ भी ज्ञात नहीं है। वर्तमान शोत्र में इनके ज्योतिष विचार नामक ग्रन्थ की तीन प्रतिचौं मिली हैं जिसका लिपिकाल क्रम से यह है—सन् १७८३, १८१३ और १८७०। श्रवण की रचना संवत् १८१० वि० में कुँवार सुदी ११ को हुई थी। दोहा—

संबत सति बसु सति बहुरि रिपि विद्वम पद्विचान ।

बवार सुदी पञ्चदशी यह सुम संबत जाम ॥

इसमें दिन का नाम न होने से वी हुई तिथि की परीक्षा नहीं हो सकती। यह तिथि सोम वार २० अषट्ठर सन् १७६० ई० की पड़ी थी।

७४ बुध जन—बुध जन का विवरण शोत्र-विवरणिका सन् १८०० संख्या ११८ में योगीन्द्रसार के रचयिता के रूप में दिया जा चुका है। किंतु मिश्रबसु विनोद में संख्या १३ के अंतर्गत दिए हुए वार ग्रंथों में इस श्रवण का उल्लेख नहीं है, यद्यपि वर्तमान शोत्र में उपलब्ध बुधजन सतसई का उल्लेख इसमें है। बुध जन सतसई का रचना काल सन् १८३८ सिद्ध होता है, किंतु 'विनोद' में सन् १८२४ ई० लिखा है। बुध जन जयपुर राज्य के जैन अंडेलवाल बनिया थे। वे सामान्य रचनाकार हैं। इनकी रचनाओं में सतसई ही सर्वोत्तम रचना है।

७५ चंद्र या चंद्र धरदाई—चंद्र या चंद्रधारदाई चारण काव्य के सुप्रसिद्ध कवि हैं जो दिल्ली के पृथ्वीराज के राजकवि थे। इनका उल्लेख शोत्र विवरणिका सन् १९००-१९०१, १८०२, १९०६-०८ १०-१७-१८, १९२०-२२, १८२३-२५ में हो चुका है। वर्तमान शोत्र में इनके श्रवण पृथ्वीराज शासो के दो भाय—पद्मावतीखंड और अम्हा खंड (या महोबा खंड) पुनः प्राप्त हुए हैं। इन्हें उल्लेख का क्रमशः लिपिकाल है संवत् १८१५ (सन् १८४८ ई०) और संवत् १९१६ (सन् १८५९ ई०)।

७६ चंद्र—मगधाला के रचयिता चंद्र का विवरण शोत्र विवरणिका सन् १९०६-०८ में संख्या १८ पर दिया जा चुका है। इस शोत्र में प्राप्त इन्हें उल्लेख का समय संवत् १८०२ (सन् १७४५ ई०) है। रचनाकाल है—संवत् १७१५ तदनुसार १६५८ ई०।

७७ चंद्रन—काम्यामरण सिद्धनय और मशा-विद्वान के रचयिता चंद्रन का विवरण गत शोत्र-विवरणिका में भी दिया जा चुका है (वैदिक विवरणिका सन् १८२३-२५ संख्या ७३)। वर्तमान शोत्र में काम्यामरण का जूयरा इन्हें उल्लेख भी मिला है जिसका समय संवत् १८४४ (सन् १८८० ई०) है। इसका रचना तिथि संवत् १८४३ माघ सुदी २ अत्रवार है जो गणना से ठीक नहीं उतरती किंतु वर्ष संवत् १८४५ (सन् १७८८ ई०) निश्चित है।

७८ चंद्रनदास—गत विवरणिकाओं में चरणशाम के विवरण दिए जा चुके हैं। वर्तमान शोत्र में उपलब्ध इनके ग्रन्थ निम्नलिखित हैं—

(१) स्वरोदय, ५ प्रतियाँ, (२) ब्रह्म-ज्ञान सागर, ४ प्रतियाँ, (३) भक्ति सागर, दो प्रतियाँ, (४) योग संदेह सागर, ३ प्रतियाँ, (५) अमरलोक निजधाम, १ प्रति, (६) पंच उपनिषद्, १ प्रति और (७) शतरूप मुक्ति, १ प्रति । अंतिम दो ग्रंथ पंच उपनिषद् और शतरूप मुक्ति पहली चार मिले हैं जिनमें से पहला उपनिषदों का अनुवाद है और दूसरे में मुक्ति पाने के विभिन्न उपायों का कथन है । इन हस्तलेखों में से कुछ जैसे भक्ति सागर का लिखना चैत्र सुदी १५ सवत १७८१ सोमवार तदनुसार ८ अप्रैल १७२३ ई० को आरंभ हुआ । उस दिन पूर्णिमा सूर्योदय के साढ़े चारह घंटे बाद लगी थी । तात्पर्य यह कि रचनाकार ने सायँ सात बजे से इसे लिखने का विचार किया । सन् १९२०-२२ की खोज विवरणिका में असावधानीवश इस ग्रंथ की ईसवी तिथि अशुद्ध हो गई है । उपर्युक्त तिथि के अनुसार उसे शुद्ध कर लेना चाहिए । इससे रचनाकार के समय का पता लगता है । ये राजपूताना के अलवर राज्यान्तर्गत देहरा के निवासी थे ।

७६ चतुरदास—चतुरदास ने अपने गुरु के निरीक्षण में भागवत दशम स्कंध का अनुवाद सवत् १६९२ (सन् १६३५ ई०) में किया । इस ग्रंथ का विवरण पहले भी कई बार दिया जा चुका है । गत खोज विवरणिका १९२३-२५ में सख्या ७६ के अंतर्गत पहले के सभी विवरणों का उल्लेख है । उपलब्ध प्रति के अनुसार ग्रंथ का रचनाकाल सवत् १६९२ जेठ शुक्ल पष्ठी कुंज अर्थात् मंगलवार १२ मई सन् १६३५ ई० है ।

८० चेतन चंद—शालिहोत्र या अश्व विनोद के रचयिता चेतन चंद का उल्लेख खोज विवरणिका सन् १९०६-११ तथा १६२३-२५ में हो चुका है । वर्तमान खोज में उपलब्ध दो हस्तलेखों में से एक में रचनाकाल सवत् १६२८ दिया हुआ है जो सन् १६२३-२५ के विवरण की पुष्टि करता है । अतः रचनाकार सन् १५७१ ई० में विद्यमान था ।

८१ छवीलेदास—छवीलेदास नवोपलब्ध रचनाकार हैं जिन्होंने भक्ति-विलास नामक ग्रंथ भक्तिमार्ग की ओर मार्गों से विशिष्टता सिद्ध करने के लिए लिखी है । कथन की पुष्टि में इन्होंने पुराणों की कथाओं का उद्धरण दिया है । मिश्रवधुओं ने दो छवीले का वर्णन किया है, किंतु सामग्री के अभाव में यह नहीं कहा जा सकता कि हमारे छवीले उनमें से कौन थे ।

८२ छविनाथ—राजनीति के नाम से हितोपदेश का छदोवद्ध अनुवाद करनेवाले छविनाथ पहली बार मिले हैं । इनकी रचना का समय जिस दोहे में दिया है वह अशुद्ध है । दोहा है—

सवत् श्रुति शुभ नाग शशि, कृष्ण कार्तिक मास ।

रामरमा तिथि भूमिसुत वासर कीन्ह प्रकास ॥

शुभ के स्थान पर जुग किए बिना कोई अर्थ नहीं बैठता । जुग कर देने पर समय होगा सवत् १८२४ कार्तिक कृष्ण १३, भौमवार तदनुसार मंगलवार २० अक्टूबर सन् १७-६७ ई० । वस्तुतः रचयिता को यही सवत् अभीष्ट था ।

८३ सुप्रसिद्ध—छत्रसिंह काव्यस्य ग्वालियर राज्य में मन्दावर के अंदर मामक स्थान के रहने वाले थे। इन्होंने विजय मुच्छबली जर्नाल महाभारत की कथा हिंदी पद्य में लिखी। यह ग्रंथ सन् १७०० में निर्मित हुआ और सन् १९०६-०८ और १९०९-११ की लोख-बिबरणिकाओं में हमका उल्लेख हो चुका है। इसका भाषा पर अच्छा अधिकार था और अनुभास से उन्हें विशेष प्रेम था।

८४ छेदीसास—उड़ीसाक नबोपसम्प रचनाकर हैं। इन्होंने प्रेम वीर्य नामक शृंगार-रस का ग्रंथ लिखा है जिसमें अपने विषय में कुछ भी संकेत नहीं किया है। मिश्र अनुभों में भी इसका उल्लेख नहीं किया है।

८५ दादू दयाल—दादू दयाल सुप्रसिद्ध धर्म-सुधारक हुए हैं और उनका तथा उनकी रचनाओं का जिसमें दादू की जानी भी शामिल है, विवरण विभिन्न लोख-बिबरणिकाओं में दिया जा चुका है। सन् १९१७-१९ ई० की बिबरणिका में इनकी जीवनी तथा रचनाओं के विषय में विस्तृत विवरण मिलेगा।

८६ दलपति राय—दलपति राय अलंकार के रचयिता हैं, जिसका कुछ बंधक साज बिबरणिका सन् १९२३-२५ में संख्या ८२ के अंतर्गत किया जा चुका है। ये और इनके सहयोगी बंशीधर मेरुपाट या मेबाड़ के भीमाली ब्राह्मण थे। उपर्युक्त ग्रंथ की दो प्रतिर्पा वर्तमान शोध में मिली हैं जिनमें एक का नाम अलंकार रत्नाकर है दूसरी का भाषा मूल्य, किन्तु दोनों प्रतिर्पा से उद्धरण अक्षरशः नहीं मिलते यद्यपि दोनों के संग्रहाचरण तथा विषय एक ही हैं। बुर्मायवसा रचनाकार का छंद छूट जाने से दोनों में से किसी का भी शीघ्र समय-निर्धारण नहीं हो सकता जो अब तक अनिश्चित ही है।

८७ दामोदरदास—दामोदरदास ने हस्तरेखा तथा प्रश्नबिचार विषयक ज्ञान प्रसन्नरत्नी नामक व्याप्ति का ग्रंथ रचा है। इसमें पाँच और चार के हिसाब से भीम खाने बने हैं और सब गानों में एक एक करके एक से लगाकर बीस तक की संख्या लिखी हुई है। प्रत्येक संख्या में प्रश्न के शुभाशुभ का संकेत है। प्रश्नकर्ता को किसी भी संख्या पर खैरादी रणनी होती है और उसी संख्या का फल पड़ा जाता है। जैसे संख्या एक का फल हम प्रकार है—तुम्हारी मनोकामना इत्तर पूरी करेंगे। तुम्हें कुछ घन मिलेगा उससे प्यापार करो सफलता मिलेगी। फल की परीक्षा के लिए अपने मुण की ओर देखो तुम्हें एक नेत्रला मिलेगा। शीरक की स्तुति करो और एक ब्रह्म कुत्ते को शक्तिवार के दिन मियाई गिरलाओ (जिनमे सफलता निश्चित मिलगी)। ग्रंथ गद्य में है। रचयिता के कद नाम है किन्तु उन नामों के किसी कवि से बह नहीं मिलाया जा सकता।

८८ दरिया साहब—दरिया साहब विख्यात रचयिता हैं जिनके १३ ग्रंथ पढ़ने मिल चुके हैं (देगिरु साज-बिबरणिका १९१७-१९ संख्या ७३)। हम यार अलिफनामा मिरु जाने थे इसकी संख्या १७ हो गई है। अलिफनामा का समय नहीं दिया है किन्तु प्राप्त प्रति का लिपिकाल सन् १८३३ ई० है। ग्रंथ में वर्तनी तथा अन्य प्रकार की अनुविर्पा भी हैं। दरिया साहब अठारहवीं शती के थे और अपने को कपीर का अवतार यनाते थे।

८६ दसन्य दास—दसन्य दास ने तुलसी-चरित्र लिखा है जिसकी दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। यह ग्रंथ सर्व प्रथम खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ में मिला। वर्तमान खोज के अनुसार इसके अतिरिक्त और कोई विशेष बात नहीं बताई जा सकती कि प्राप्त दो प्रतियों में से एक गत खोज में प्राप्त प्रति से तीन वर्ष पहले की है, अर्थात् संवत् १९१८ (सन् १८६२ ई०)। रचनाकाल अज्ञात है। वाया माधोदास कृत मूल गोसाईं चरित को दृष्टि में रखकर ग्रंथ का आलोचनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता है।

९० दाताराम—दाताराम या दीनदास बदल शुक्ल के पुत्र थे, और इत्याहा-वाद जिले के चतुरपुर नामक स्थान के निवासी थे। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित चार ग्रंथ मिले हैं—(१) गोपी-विरह-माहात्म्य (२) मटचरित्र, (३) मगहीत लतिका तथा (४) कवित्त दाताराम। इनमें से किसी का भी रचनाकाल नहीं दिया है जो इनके समसामयिक ध्वजनाथ के समय से मिलाया जा सके। ध्वजनाथ ने गोपी विरह छंदावली संवत् १९२४ (सन् १८६७ ई०) में लिखी। पहले ग्रंथ में गोपियों का विरह वर्णन है, दूसरे में मद का दुष्परिणाम, तीसरे में अन्य कवियों की रचनाओं का संग्रह और चौथे में रचयिता के स्वनिर्मित मुक्तक छंद हैं।

९१ दत्तदास—दत्तदास नवोपलब्ध रचनाकार हैं जिन्होंने कृष्ण और राम की भक्ति से परिपूर्ण कमल नेत्र तथा शमाष्टक नामक ग्रंथ लिखे हैं। दूसरा तो कठिनता से ही ग्रंथ कहा जा सकता है। इसमें राम के २१ पर्यायवाची शब्दों का राम का संपुट है।

९२ दत्तराम माथुर—दत्तराम माथुर ने वैद्यक का ग्रंथ लिखा है। वर्तमान खोज में इनके तीन ग्रंथ प्रकाश में आए हैं—(१) अर्जुन मजरी, (२) नाड़ी प्रकाश और (३) रमल नवरत्न दर्पण। सबके सब ग्रंथ में हैं। प्रथम मदाग्नि रोग विषयक है, दूसरा नाड़ी-ज्ञान विषयक तथा तीसरा फलित ज्योतिष में उसी नाम के संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है। प्रथम ग्रंथ की रचना सन् १८६४ में हुई थी, दूसरे की सन् १८८६ तथा तीसरे की १८५५ ई० में। अतः यह स्पष्ट है कि रचनाकार ने प्रारंभ में ज्योतिष का ग्रंथ लिखा और बाद में वैद्यक के ग्रंथ रचे। नाड़ी प्रकाश के दो हस्तलेख मिले हैं जिनमें रचनाकाल के दो संवत् दिए हुए हैं, किंतु प्रतीत होता है कि एक ग्रंथ दूसरे ग्रंथ में जो खनिज धातुओं को फूँककर औषध-निर्माण के संबंध में है, मिल गया है। पहले में संवत् विस्तार से इस प्रकार दिया है—संवत् १९३७ आश्विन शुक्ल १० बुधवार जो गणना से १३ अक्टूबर १८८० ई० ठीक ठीक रहता है। रमल नवरत्न में तीन संवत् दिए हुए हैं जिनमें से एक मूल संस्कृत ग्रंथ का रचनाकाल है। यह संस्कृत श्लोक में ही दिया हुआ है—विक्रम संवत् १८६७ फाल्गुन शुक्ल ३ चद्रवार (तदनुसार सोमवार, २५ फरवरी १८११ ई०)। अनुवाद का समय भी श्लोक में इस प्रकार दिया हुआ है—दाशि युग नप चन्द्रे धैक्रमे ज्येष्ठ शुक्ले ग्रह तिथि कवि वारे। इस तिथि को शुक्रवार, ज्येष्ठ शुक्ल ९ संवत् १९२१ वि० या १९४१ वि० कह सकते हैं, किंतु दोनों में कोई भी परीक्षा का आधार नहीं हो सकती, क्योंकि दोनों तिथियाँ शुक्रवार को पड़ती हैं सोमवार को नहीं।

६३. **द्वयादाई**—द्वयादाई चरमदास की शिष्या थीं। यह पहला ही जवसर है जब इनकी रचना द्वयादाई की बानी मिली है। इसका रचनाकाळ नहीं दिया गया है, किंतु इसे निश्चित रूप से अठारहवीं सती के मध्य का मान सकते हैं जब इनके गुड विद्यमान थे। यह भक्ति विषयक ग्रंथ है।

६४. **द्वयाराम**—बैद्यक ग्रंथ द्वा बिलास के रचयिता द्वयाराम का विवरण लोख-विवरणिका सन् १९०१, १९०२, १९०९ ११ और १९२०-२२ ई० में है। ये विस्वी निवासी थे और सन् १७२९ ई० में इन्होंने अपना ग्रंथ रचा।

६५. **देवदत्त**—देवदत्त उपनाम देव हिंदी कविता के नवरत्नों में से एक हैं और सन् १६९०-२२ तथा १९२३-२५ ई० की लोख विवरणिका में इनका विस्तार से वर्णन है। वर्तमान लोख में इनके निम्नलिखित ९ ग्रंथ मिले हैं—(१) अष्टयाम, (२) देवमाया-प्रपंच वादक, (३) जाति-व्यक्रांत, (४) काम्य रसायन, (५) नक्षत्रिण और (६) प्रेम-व्यक्रिण। इनमें नक्षत्रिण लोख में प्रथम बार मिला है। मिश्रबन्धु-विनोद के दूसरे भाग में प्रथम संस्करण के २० के स्थान पर दूसरे संस्करण में २९ ग्रंथ ही दिए गए हैं। उसमें दो ग्रंथ नक्षत्रिण और प्रेम-वर्णन एक में मिला दिया है, किंतु अनुसंधान से यह प्रकृत है कि दोनों दो ग्रंथ हैं एक नहीं। एक वर्तमान लोख में मिल्य है और दूसरा सन् १९०९ ११ और १९२०-२२ ई० की लोख-विवरणिकाओं में। देव के संस्कृत में भी नायिका-मेघ छिलने का प्रेष प्राप्त है जिसकी एक प्रति नागरी-मचारिणी समा, काशी के पुस्तकालय में है जो अहिंदी होने के कारण हिंदी ग्रंथों के साथ विवरणिका में नहीं प्रहण किया गया। अब भी इनके २९ ग्रंथ बचे हैं जिन सब के हस्तलेख नहीं मिल सके हैं।

६६. **देवकीर्तवृत्त**—देवकीर्तवृत्त ने रागासंग्रह नामक ग्रंथ में विभिन्न कवियों के गीतों का संग्रह किया है। यह संग्रह सन् १८०० ई० में प्रस्तुत हुआ। यही इनका विद्यमान काक भी है। मिश्रबन्धु इनके रचे ११ ग्रंथ बताते हैं किंतु उनमें रागमाळा की गलना नहीं है। किंतु दोनों के रचनाकाळ का एक होना दोनों की एकता सिद्ध करता है।

६७. **देवस्वामी**—गण वार्त्तिक विवरणिका के अयोध्या-विंदु के रचयिता और इस शिष्यों के जानकी-विंदु के रचयिता द्वयाराम एक ही हैं। ये काशी के बड़ी देव कवि काष्ठबिहारी स्वामी हैं, जोख में जिनके अन्य प्राप्त ग्रंथ हैं—पदावली, रामकण्ठ और रामायण परिचर्चा। इनका विवरण लोख-विवरणिका सन् १९०१ १९०४, १९०६-०८ में है। देव कवि सन् १८४० ई० के लगभग काशी जेस महाराज ईश्वरी प्रसाद मारायण सिंह के गुठ थे। वे मुकवि और सुप्रसिद्ध दोनों थे। एक बार इन्होंने अपने गुठ से ही शास्त्रार्थ किया जिनके बाद इन्होंने अपनी शिष्या पर काठ का बककन लगा ठिंवा और फिर कभी न बोले। इसी से इन्हें काष्ठ शिष्या के नाम से पुकारते हैं। इनकी रचना मगोहर बीली में अक्षिपूर्व है।

६८ देवीदास—देवीदास (बुढेलखडी) ने प्रेम रत्नाकर लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५, सख्या ६६ में है । ग्रंथ करौली के महाराज रत्नपाल की आज्ञा से सन् १६८५ या १६८९ ई० में बना, क्योंकि लिपिकार ने सबत् सत्रह से छालीस लिखा है और दूसरे ने सत्रह से व्यालीस । कोई और सामग्री भी उपलब्ध नहीं है जिससे इस अशुद्धि का परिमार्जन किया जा सके ।

६९ देवीदास—देवीदास जैन कवि है । इन्होंने पुकारपचीमी नामक पुस्तक लिखी है जो वर्तमान खोज में पहली बार मिली है । इस ग्रंथ में जिनराज का स्तवन किया गया है । ये जयपुरराज्यातर्गत विसवा निवासी थे और सबत् १८४४ (सन् १७८७ ई०) के लगभग विद्यमान थे । इनके ग्रंथ जो जैनों के बीच प्रसिद्ध हैं, ये हैं—(१) सिद्धातसार सग्रह वचनिका और (२) तत्त्वार्थसूत्र वचनिका ।

१०० देवीदास—गौड़ क्षत्रिय देवीदास सत्नामी मत के अधिष्ठाता जगजीवन-दास के शिष्य थे और जिला वाराणसी के एक गाँव में रहते थे जो इन्हीं के नाम पर देवी-दास का पुरवा नाम से प्रसिद्ध है । वर्तमान खोज में उपलब्ध 'लीला' ग्रंथ के अतिरिक्त इन्होंने और ग्रंथ भी लिखे हैं, जैसे—भ्रमरगीत, विनोद-भगल, सुख-सनाथ, भ्रम-विनास, चरन-ध्यान, गुरुचरन, ज्ञान-देन, भक्ति-भगल, नारद-ज्ञान, वैराग्य और शब्द-सागर ।

१०१ देवीसिंह—कौमल्या जी की वारहमासी के रचयिता देवीसिंह सामान्य कवि हैं । ये चदेरी के राजा थे और इन्होंने बहुत से ग्रंथ लिखे हैं जिनमें एक वारहमासी भी है जिसकी शैली वर्तमान खोज में उपलब्ध ग्रंथ से मिलती है । राजा देवी सिंह सन् १६७६ ई० के लगभग विद्यमान थे ।

१०२ धनपति—धनपति उपनाम धनलाल ने बदरेमुनीर नामक एक प्रेमास्थान संवत् १९२८ (सन् १८७५ ई०) में लिखा है । यह खड़ी बोली में लिखा गया है और इसमें फारसी-अरबी के तद्भव शब्दों की बहुलता है ।

१०३ धनीराम—धनीराम ने राम की प्रशंसा में रामगुणोदय तथा तत्त्वार्थ-प्रदीप नामक दो ग्रंथ लिखे हैं । पहले का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०३ में दिया जा चुका है । काव्य प्रकाश नाम की इनकी रचना भी जो इस्ती नाम के संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है सन् १९२३-२५ ई० की खोज में मिल चुकी है । राम गुणोदय का संवत् इम प्रकार दिया है—रस रस सिद्धि निसीस बुध द्वार शुक्ल तिथि नैन, अर्थात् बुधवार आश्विन शुक्ल ३ संवत् १८६६ ई० तदनुसार ११ अक्टूबर सन् १८०६ ई० । उस दिन द्वितीया सूर्योदय के ३ घंटे २० मिनट बाद समाप्त हो गई थी । और तृतीया १० बजे के लगभग लग गई थी । तत्त्वार्थ-प्रदीप संवत् १९६३ में आश्विन कृष्ण १५ तदनुसार सोमवार ५ अक्टूबर सन् १८०६ ई० को समाप्त हुई । इन्होंने दोनों रचनाओं के मध्य संवत् १८६७ वि० (सन् १८१० ई०) में काव्य प्रकाश की रचना की । इसकी समाप्ति का ठीक समय

दिया है शुक्र (ज्येष्ठ) कवी ११, शुक्रवार, रेवती मङ्गल, संवत् १८१० वि० । यह संपूर्ण विवरण १९ मार्च सन् १८१० ई० से मिलता है, किंतु दिन का नाम शुक्रवार न मिल कर मंगलवार मिलता है । धनी राम अस्तनी के टागुर कवि के पुत्र थे और शंकर कवि तथा सेवक राम के पिता थे ।

१०४ धर्मदेव — धर्मदेव आगरे के शैल कवि थे । इन्होंने पारसनाथ पुराण नामक ग्रंथ रचनाया है । जिसमें शैल दर्शन के सिद्धांतों का कथन है तथा जैन तीर्थंकर पारसनाथ का जीवन चरित्र वर्णित है । ग्रंथ संवत् १७८९ तदनुसार सन् १७९२ में समाप्त हुआ ।

१०५ भूषदास—भूषदास का विवरण लोच विवरणिका सन् १६०० और १९०६ ११ ई० में दिया जा चुका है । इनकी रचना बृंदावनदातक की दो प्रतिभों बतमान छात्र में उपलब्ध हुई हैं । वे अत्यधिक रचना करनेवाले कवियों में से हैं । लोच-विवरणिका सन् १६०६ ११ ई० में इनके ३८ ग्रंथों का उल्लेख है जो उस विवरणों में मिले थे । बृंदावन सन या शतक संवत् १६८९ (सन् १६९९ ई०) में समाप्त हुई ।

१०६ विग्विजयसिंह—विग्विजय सिंह प्रतापगढ़ जिले के सुमकरा के क्षत्रिय ताम्रकुमार थे । इन्होंने तुर्गकाल कायस्थ से कायस्थता का अध्ययन किया और भागवत दशम स्कंध का अनुवाद अरबि में किया, किंतु १० अध्याय से अधिक का अनुवाद न कर सके । इन्होंने अपने अनुवाद का नाम रखा अनुराग-विद्यास । इन्होंने अपने ग्रंथ का रचना काल नहीं दिया है किंतु तुर्गकाल के समसामयिक होने से इन्हें उन्नीसवीं शती के अनुर्थ पात्र का मान सकते हैं । क्योंकि तुर्गकाल सन् १८९२ ई० के लगभग विद्यमान थे ।

१०७ दीनानाथ—दीनानाथ ने ब्रह्मोपर कांड का हिंदी पद्य में अनुवाद किया है । मियर्सन और मिश्रबंशुओं ने एक दीनानाथ का उल्लेख किया है, किंतु सामग्री के अभाव में इन्हें किसी दीनानाथ से संघटि नहीं मिलीया जा सकता । अपने विषय में इन्होंने कब्रक इतना बताया है कि मैं काव्यकुञ्ज ब्राह्मण हूँ । हस्तलेख का समय सन् १८२० ई० दिया है अतः यह इस समय के पहले अवस्थ विद्यमान रहे होंगे ।

१०८ वृषधारी—अपूर्ण रचना 'ज्ञान विकास' (जो पहले पहल सिन्धी है) के रचयिता वृषधारी नामक किसी व्यक्ति की अपेक्षा किसी साधु का नाम होने की अधिक संभावना है । हस्तलेख इतना जीर्ण-शीर्ण हो गया है कि यदि उसमें इनके विषय में कुछ लिखा भी हो तो भी कुछ ज्ञान नहीं हो सकता । कुछ छंदों से पूसा प्रतीत होता है कि ये किसी ईया भवानी सिंह के आश्रित थे ।

१०९ वृक्षनाथ—धर्मई के वृक्षनाथ प्रसिद्ध कवि हुए हैं । इनके ग्रंथों का विवरण लोच-विवरणिका सन् १९०९ ११ ई० और १९२३ २५ ई० में दिया हुआ है । वर्तमान लोच में इनके उपदेशों का एक संग्रह शब्दावली के नाम से मिला है । इसका विवरण

दो बार दिया जा चुका है, (देखिए खोज-विवरणिका सन् १९०६-११ और १९२०-२२) ।
दूलन सत्नामी संप्रदाय के अधिष्ठाता जगजीवनदास के अनुयायी थे ।

११० **डूँगरलाल**—डूँगरलाल नवोपलब्ध कवि हैं । इन्होंने राजा गोपीचंद का ख्याल नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें राजा गोपीचंद के योगी होने की कथा वर्णित है । हस्तलेख से रचनाकार और रचना के समय आदि के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं होता ।

१११ **दुर्गालाल कायस्थ**—प्रतापगढ़ जिले के दिग्विजयसिंह के प्रकरण में दुर्गालाल कायस्थ का भी उल्लेख हो चुका है । इनका जन्म सवत् १८८० (१८२३ ई०) में हुआ था और ये सवत् १९५४ (१८८८ ई०) में परलोकावासी हुए । ये मुजाखेर के तालुकदारों के आश्रित थे और उनमें से एक को कवि कहलाने की इच्छा से अत्यधिक प्रभावित भी किया । इनकी नाममाला, औपधवर्गनामे और कलाधर-वंशावलीविधान नामक तीन रचनाएँ वर्तमान खोज में मिली हैं । पहली तो ठीक नददास की नाममाला की तरह है, दूसरी में सोमवंसी राजपूतों की वंशावली तथा इतिहास है और तीसरी औपधकोश है जिसमें उनके गुण, लक्षणादि बताए गए हैं । केवल वंशावली का रचनाकाल दिया हुआ है जो इस प्रकार है—पौष शुक्ल १३, ऋगुवार, भवनाम सवत्सर, सवत् १९१९ तदनुसार शुक्रवार, २ जनवरी, १८६३ ई० ।

११२ **दुर्गाप्रसाद**—दुर्गाप्रसाद ने सवत् १९३१ (सन् १८७४ ई०) में लिंग-पुराण का हिंदी अनुवाद किया है । इनका विद्यमान-काल भी वही है । यह रचना इस खोज में पहली बार मिली है ।

११३ **दुर्गाप्रसाद त्रिपाठी**—मालवा के सरखेड निवासी दुर्गाप्रसाद त्रिपाठी ने 'वैद्य-विनोद' नामक वैद्यक का ग्रंथ शार्गाधर और भावप्रकाश के आधार पर लिखा है । हस्तलेख अपूर्ण एवं अज्ञातकालीन है ।

११४ **द्वारिकाप्रसाद**—द्वारिकाप्रसाद सारस्वत ब्राह्मण ने राधाविलास नाम की एक छोटी सी पुस्तक ख्यालों में लिखी है । तीन उपलब्ध हस्तलेखों में से केवल एक में लिपिकाल सवत् १९२८ (सन् १८७१ ई०) दिया हुआ है ।

११५ **द्वारिकाप्रसाद**—मुहम्मद पुर चमसना के द्वारिकाप्रसाद उपनाम सुकदेव ने तत्त्व-ज्ञान की बारहमासी नामक पुस्तक लिखी है जिसकी दो प्रतियाँ मिली हैं । रचना-काल इस प्रकार है—'कार्तिक सुदि रविवार सवत् इनइस से इकसि' तदनुसार रविवार १३ नवंबर, १८६४ ई० । दोहे में शुक्ल पक्ष की तिथि नहीं दी है । उस वर्ष कार्तिक शुक्ल पक्ष में दो रविवार थे एक सप्तमी को पड़ता था दूसरा पूर्णिमा को । वस्तुतः रचनाकार को अंतिम ही अभीष्ट था ।

११६ **द्विज छुटकन**—द्विज छुटकन वर्तमान खोज में नवोपलब्ध रचनाकार हैं । इनकी रचना चौताला चितामणि चौताला छंद में लिखी है जिसमें राम-सीता और

राधा-कृष्ण की श्रीवक्तियों की प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन है। इन्होंने अन्य कवियों के गीतों को भी अपनी रचना में स्थान दिया है जिसके नाम उन रचनाओं में घटिगोचर होते हैं।

११७ घानतराय—मंगलभारती के रचयिता घानतराय सामान्यतः अष्टे श्लोक कवि थे। इनका विवरण योजन-विवरणिका १९२३-२५ (संख्या ११०) और १९०१ (संख्या १०१) में दिया जा चुका है। इनकी रचनाओं का एक संग्रह 'धर्मविद्यास या घानतविरास' के नाम से छप चुका है जिसका कुछ भंड भांगर में और कुछ दिल्ली में लिखा गया है और जो संवत् १०८० (सन् १७२३) में संपूर्ण हुआ। ये अग्रबाम ईश्वर के और भांगरे में संवत् १७३३ या सन् १९७६ में उत्पन्न हुए थे। तेरह वर्ष की अवस्था में इन्होंने तीन वर्ष ग्रहण कर लिया।

११८ सी० ई० ईलिपट्ट—सी० ई० इलिपट्ट संयुक्त प्रांत में प्रथम भूमिक निर्माण के समय फर लाबाद जिन्हे के अधिकारी थे। 'नाम्हा खंड' का प्रथम संग्रह प्रकाशित करने का श्रेय इन्हीं का है। वर्तमान खोज में प्राप्त इन्स्टिटेस का समय संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) है।

११९ फकीरदास बाबा—फकीरदास बाबा धार्मिक रचनाकार थे और सन् १८१८ के लगभग विद्यमान थे। ये बहराबू जिन्हे के नरोत्तमपुर में रहते थे और जाति के मुरई या मुरऊ थे। ये अपने की रामानंद का शिष्य बताते थे और इनके शिष्य का नाम मुरजीदास था। इनके ग्रंथ का नाम बानी या आनंदबर्जनी था जिसका विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ में दिया जा चुका है। इनके अन्य तीन उपलब्ध ग्रंथ हैं—गारी ज्ञान की होरी ज्ञान की और ज्ञान का वारहमासा इनका फसली सन् इस प्रकार है—

बानी—१२३३ या सन् १८२७ ई०।

होरी बारहमासा—१२३८ या सन् १८३० ई०।

गारी—१२४० या सन् १८३२ ई०।

१२० फतहसिंह—फतहसिंह उपनाम हितराम नबोपकम्प छेरक हैं जिनका श्रीकृष्ण स्तुति का 'हरि-भक्ति मिर्जत' नामक ग्रंथ वर्तमान खोज में पहली बार मिला है। इन्होंने अपने अपने माता-पिता तथा अपने गुरु का विवरण दिया है जिससे यह ज्ञात होता है कि वे कछवाहा क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए थे और इनके पिता का नाम रामसाहि नरेस था। यह बंध हितहरिबंध का अनुयायी था। फतहसिंह वर्णनात्मक रचनाकार हैं और हिन्दू धर्मशास्त्र विषयक ग्रंथ की रचना की है। ग्रंथ का समय इस प्रकार दिया है—
नयन नयन रिपि अष्ट श्रुम अति मंगल अत। पुनि पवित्र ईशाल सुकुल पछ तीज अर्थ तत। अर्थान् ईशान् शुकु अहाय नृतीया संवत् १७२२ तदनुसार सविवार ८ अक्षर १६६५ ई०। माताहिक दिवस नहीं दिया गया है जो ठीक समय की कसौरी है।

१२१ गजाधरदास—गजाधरनाम नबोपकम्प कवि हैं। इनकी 'अवराधनी बंग विषयक रचना है। कवि मरूपारी प्राणन थे और बारापकी जिन्हे के हरिचंदपुर के

बाबा रामसेवकदास के दिव्य थे। ये मुल्तानपुर जिले में फूलमऊ नामक स्थान पर रहते थे। अमरावली बुधवार ज्येष्ठ शुक्ल ६ सवत् १८८६ तदनुसार १० जून सन् १८२९ ई० को समाप्त हुई। उम्र दिन सूर्यास्त के समय अष्टमी थी किंतु पंद्रह मिनट बाट ही नभमी लग गई।

१२२ गल्लूजी—गल्लूजी ने 'राधा रमण के निय कीर्तन के पद' भगवान के वार्षिक पूजन एवं कीर्तन के लिए बनाए। ये गोन्वामी थे और क्रिमी धार्मिक गद्दी के महत भी थे। ग्रंथ में रचनाकाल तो नहीं दिया है, किंतु लिपिकाल सवत् १६३० या सन १८७३ ई० दिया हुआ है।

१२३ गणेशदास ब्राह्मण—गणेशदास ब्राह्मण ने अपने 'द्वैत प्रकाश' की रचना सन् १८१७ ई० में मद्रदेश में की जब कि लाहौर में महाराजा रणजीतसिंह राज कर रहे थे। ये कन्ह ग्राम के निवासी थे, जो इन्हीं के कथनानुसार कुम्पुरा के रामने पर लाहौर से बाराह कोम है। ये लाहौर का दूसरा नाम लखपुर भी बताते हैं। इस प्रकार ये प्राचीन भौगोलिक नाम का भी प्रयोग करते हैं जो ध्यान देने योग्य है। प्राचीन काल में रावी और चनाब के बीच का प्रदेश मद्र देश कहा जाता था। यहाँ महाभारत के राजा शल्य का राज्य था जिसकी राजधानी 'शकल' थी जो आजकल मियालकोट के नाम से पुकारा जाता है। कुशपुरा राजा कुश की राजधानी थी, टीक उर्मी प्रसार जैसे लखपुर लव की। लव और कुश दोनों अयोध्या नरेश राजा रामचंद्र के पुत्र थे। कुश पुरा अब मुल्तानपुर के नाम से प्रसिद्ध है और अवध में गोमती किनारे बना है। रचयिता अपने ग्रंथ की समाप्ति का समय देता है 'सवत् १८७४ कृष्ण पक्ष सावन बड़ी पट' तदनुसार २७ अगस्त सन् १८१७ ई०।

१२४ गणेशजी—आगरा के गणेशजी नवोपलब्ध रचनाकार हैं। वर्तमान खोज में इनके वेदावधिपयक ग्रंथ 'परतत्त्व प्रकाश' के दो हस्तलेख मिले हैं। उन दोनों में से सवत् पुरानी प्रति सवत् १९२८ तदनुसार सन् १८७१ ई० की है।

१२५ गणेशप्रसाद—फर्रुखाबाद के गणेशप्रसाद ने 'बुद्धि विलास' और 'राग रत्नावली' दो ग्रंथ लिखे हैं। पहले में हिंदू देवी देवताओं की जैसे गंगा, राम, कृष्ण, आदि की प्रशंसा है। दूसरे में प्रसिद्ध गेय छठ लावनी में भागवत दशम स्कंध की कथा वर्णित है। मिश्रवधुओं ने इनके रचे चार ग्रंथ बताए हैं किंतु इन दोनों में से कोई भी उनमें नहीं गिने गए हैं। हस्तलेख में उपलब्ध प्राचीन समय सन् १८७१ ई० है जो रचनाकाल से बहुत दूर का नहीं जान पड़ता।

१२६ गंग—नवोपलब्ध 'गंग-पचीमी' के कर्ता गंग अपने विषय में कुछ नहीं लिखते। गंगपचीमी की तीन प्रतियाँ मिली हैं जिनमें से सवत् पुरानी सवत् १८२६ (सन् १७६९ ई० की है। इसकी रचना शैली उस प्रसिद्ध कवि गंग से नहीं मिलती जो कवियों के लिए विख्यात है और जिन्हें हाथी के पैर के नीचे कुचलवा कर मार डालने की आज्ञा दी गई

थी, (गंग जेमे गुनी के शय्य से विराह्य) । ये कूसरे के गंग मी बहीं हैं जिन्होंने सबसे पहले लखी बाकी में रचना की है ।

१२७ गंगादास—गंगादास (साधु) ने रागकावनी और रँगगीरगत सावनी नामक दो पुस्तकें लिखी हैं जिसका नामकरण रचना में प्रयुक्त छंदों के नाम पर हुआ है, विषय के आधार पर नहीं । कावनी 'बीग' या छोटी बीसक पर गाई जाती है । पहले ग्रंथ में इन्होंने अपने गुरु तथा रामानुज का स्तवन किया है, जो इनके संन्यासाधार्य थे और दूसरे में राजा मत्तु हरि का वर्णन किया है जो योगी हो गए थे । रँगगीर गत का क्रियाकाल संवत् १९२४ सन् १८६७ ई० है ।

१२८ गंगाधर शास्त्री—भागरा के गंगाधर शास्त्री ने संस्कृत की सत्यनारायण कथा का हिंदी गद्य में अनुवाद किया । इनकी बीबी पंडिताक है, ठीक वैसी ही जैमी मरय नारायण के पूजन में उषरी भारत में प्रचलित है । यह अनुवाद संवत् १८५७ सन् १७९७ में प्रस्तुत हुआ । यह बहुत संभव है कि रचनाकार भागरा काञ्चिज का संस्थापक ही हो ।

१२९ गंजन—कमरुद्दीन खॉं हुसाम के रचयिता गंजन का विवरण स्रोत्र-विधर मिश्र सन् १९०३ (संख्या ६५) और १९०९-१० (संख्या ६२) में दिया जा चुका है । ये गुजराती साहित्य थे और संवत् १७८५ (सन् १७२८ ई०) में इन्होंने अपनी रचना प्रस्तुत की । यह समय सम्राट मुहम्मदशाह के सिंहासनारुह होने के नीचे वर्ष बाद का है । कमरुद्दीन खॉं जिसके नाम पर इस ग्रंथ की रचना हुई है, इसी सम्राट का प्रधान मंत्री था । कमरुद्दीन खॉं हिंदी कविता के प्रेमी थे और इन्होंने कथ्य में अपना नाम कमर कर देने के लिए गंजन को पर्याप्त धन दिया था । ग्रंथ में भाव और रस का वर्णन है तथा अंत में आश्रयदाता कमरुद्दीन खॉं की प्रशंसा है । गंजन अच्छे कवि हैं और रचना में बस्तुतः सफल हुए हैं ।

१३० गन्नाराम—गन्नाराम के विरह वर्णन बारहमासा के दो हस्तलेख वर्तमान स्रोत्र में मिले हैं । गन्नाराम की उन्हीं पद्यकारों में से हैं जिन्होंने हिंदी साहित्य में विरह मामों की वाद छा दी है । इनकी बीबी देखने से ज्ञात होता है कि ये राजपूताने के रहने वाले थे ।

१३१ शरती झन—रागमाता के रचयिता शरती जब नवोपलब्ध रचनाकार हैं । ये संवत् १८५५ (सन् १७९८ ई०) में विद्यमान थे । इन्होंने तामपेय द्वारा आधिष्ठित संगीत-विधान का उपयुक्त प्रामाणिक ग्रंथ संपादित किया है । इस्तखेत का रचनाकाल सन् १७९८ ई जो उसमें दिया हुआ है । रचनाकार का नाम कुछ विद्वानों मा है ।

१३२ शरीशहास—शरीशहास ने एक सामान्य पोषी गंगाहक लिखी है जिसका शाब्द ही कोई महत्व हो ।

१३३ शरीशंकर भट्ट—कल्याणत प्रवाह और राग रत्नाकर के कर्ता शरीशंकर भट्ट कालपुर किले के अमरपुर निवासी थे । कल्याणत प्रवाह में अनेकानेक प्रसिद्ध कवियों की और और अंगार रमों की रचनाओं का संग्रह है । रत्नाकर में बर्ण और दिन में

सभी समय के गाने योग्य गीतों का संग्रह है। दूसरे ग्रंथ का संग्रह सन् १८७१ ई० में हुआ है जिसमें संग्रहकर्ता का विद्यमान काल भी ज्ञात होता है।

१३४ घनश्यामराय—म्यन्मार्थ-विनामणि या म्यन्म पर्वाशा के रचयिता घनश्यामराय उन्नीसवीं शती के मध्य में विद्यमान थे। इनके ग्रंथ की दो प्रतियाँ वर्तमान गोंज में उपलब्ध हुई हैं। ग्रंथ में शुभाशुभ न्यन्नों का विचार है।

१३५ घनश्याम व्यास—घनश्याम व्यास ज्योतिषी थे और इन्होंने 'ज्योतिष की लावनी' नामक ग्रंथ लावनी छंद में चारह राशियों के फल के विषय में लिखा है। इसकी रचना सन् १८७० ई० में हुई।

१३६ घासीराम—पक्षी-विलास के रचयिता घासीराम सन् १६२५ ई० के लगभग विद्यमान थे। इनका और इनके ग्रंथों का विवरण गोंज विवरणिका सन् १९०६-११ और १९२३-२५ (मध्या १२३) में दिया जा चुका है।

१३७ घीसाराम—मेरठ जिले के भाटीपुर निवासी घीसाराम ने रामायण का चारहमासा मयत १९२४ (सन् १८६७ ई०) में लिखा है। इसमें रामायण की कथा वर्णित है।

१३८ घिसियाचनदास बाबा—रामरस के कर्ता घिसियाचनदास बाबा अठारहवीं शती के अंत में विद्यमान थे। इनका जन्म रायबरेली जिले में महाराजगंज तहसील के जमुली ग्राम में हुआ था। इनका संबंध अयोध्या के बाबा रामप्रसाद से था जहाँ ये पर्यटन हुए मातृ माने जाते थे। रामरस में राम-नाम का स्तवन है, जो अनेकानेक महात्माओं के जीवन की घटनाओं से संबद्ध है।

१३९ गिरिधरचंद्र—गिरिधरचंद्र नचोपलब्ध रचनाकार हैं। इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं है। इनकी कृति दानलीला में कृष्णदास की दानलीला के दो तीन पद ज्यों के त्यों मिलते हैं। अतः समस्त रचनाएँ नहीं बल्कि कुछ ही दूसरों की नकल पर बनी कही जा सकती है।

१४० गिरिधरदास—प्रसिद्ध कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र के पिता बाबू गोपालचंद्र उपनाम गिरिधरदास ने बलरामकथासृजांतर्गत विदुर नीति नामक ग्रंथ रचा है। ये सन् १८२५ ई० के लगभग विद्यमान थे और इनका विवरण एक बार सन् १६१२-१६ (मध्या ६०) की नोज-विवरणिका में दिया जा चुका है। पिता-पुत्र दोनों अल्पायु थे जिसमें पिता की मृत्यु तो २७ वर्ष की ही अवस्था में ही हुई और पुत्र की ३५ वर्ष में। किंतु दोनों ही उच्च कोटि के और अधिक परिमाण में लिखने वाले रचनाकार थे। पुत्र तो पिता से भी बढ़कर हो गए हैं।

१४१ गिरिधारीदास—श्यामविलास के रचयिता गिरिधारीदास का विवरण पूर्व विवरणिकाओं में कृष्णचरित के कर्ता और भागवत दशम स्कंध के अनुवादक के रूप में दिया जा चुका है। किंतु ये तानो पुस्तकें एक ही हैं। गिरिधारीदास रायबरेली जिले के

साठनपुरा के रहनेवाले थे। खोज-विचारमिका सन् १९२३-२५ (संख्या १२४) में सूदन चरित्र एवं रहस्य मंडल के कर्ता के रूप में भी इनका विवरण दिया जा चुका है।

१४२ गिरिवरदास—मठ-विनय-शोहाबखी या केवल शोहाबखी के कर्ता गिरि वरदास का विवरण खोज-विचारमिका सन् १९२०-२२ (संख्या ५०) तथा १९२३-२३ (संख्या १२८) में दिया जा चुका है। इनके पितामह कोटवा के बाबा जगजीवनदास प्रसिद्ध सत्नामी संप्रदाय के संस्थापक थे और बाद में वे भी उन्नी गद्दी पर बैठे।

१४३ गोकुल कायस्थ—बलरामपुर के गोकुल कायस्थ राजा दिग्विजयसिंह के आश्रय में रचना करते थे। इनका विवरण खोज-विचारमिका सन् १९०९-११ (संख्या ९५) तथा १९२३-२३ (संख्या १२९) में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में इनके दो ग्रंथ ध्वजधाम प्रकाश तथा दिग्विजय भूषण मिले हैं जिनमें प्रथम तो पहलू मिल चुका है किंतु दूसरा इस खोज में मिला है। पहले की रचना सन् १८९२ ई० में हुई है किंतु सन् १९२३-२५ की विचारमिका में प्राप्त इस्तखेल के लिपिकार के प्रमाद से सन् १८९१ ही गया है। काल-विषयक छंद में दिन का नाम न होने से पूरी गणना न हो सकने से कोई निश्चय नहीं किया जा सकता। दिग्विजय भूषण में ग्रंथकर्ता के आश्रयदाता की बंझाबखी एवं बरलकार, नायक-नायिका भेद आदि अनेक कार्यों का वर्णन है।

१४४ गोकुलनाथ यज्ञीजन—झपती के गोकुलनाथ बंजीजन ने महामारत के बनपर्व का मापानुवाद किया है जिसका विवरण खोज-विचारमिका सन् १९०४ (संख्या २५) में दिया जा चुका है। ग्रंथकर्ता का विवरण सन् १९२०-२२ की खोज विचारमिका में दिया जा चुका है जिनमें इनकी समस्त उपलब्ध कृतियों की सूची ही हुई है। ये अधिक परिमाण में रचना करने वाले स्थानियों में थे और कश्मी के राजा के आश्रय में अठारहवीं सती के अंत में रहते थे।

१४५ गोमती गिरि परमहंस—गोमती गिरि परम ईस ने तारबलनदीपिका नामक बंदात विषयक ग्रंथ की रचना की है।

१४६ गोपाल—श्रीमद्-भागवत के अनुवादक गोपाल गोरखपुर जिले में प्रतापपुर के निवासी थे। इन्होंने अपने ग्रंथ का आरंभ संवत् १७८९ में ईश्वर की राम लक्ष्मी मंगलवार तद्युमार १० मार्च १७३० ई० को किया। उपलब्ध प्रति अनिवार सावन कृष्ण ३ संवत् १८५६ तद्युमार १७ जुलाई १८०२ ई० की है।

१४७ गोपाल (मुकुचि)—गोपाल (मुकुचि) हृत्त पुरूपखी-संवाद या चारों दिशा के मुलकुल नामक ग्रंथ की दो प्रतिपों वर्तमान खोज में मिली हैं। गोपाल (मुकुचि) संभवतः बुद्धलखंड के रहने वाले थे। इन्होंने वहीं महाराज रत्नसिंह के आश्रय में कार्य किया था। ये चरखारी की बंजीजन के नाम से प्रसिद्ध थे। इनका ग्रंथ 'ईपति काव्य विधास' नाम से प्रकाशित भी हो चुका है। इनके मुकुचि की उपाधि मिली थी। किंतु मिश्रबंजुओं ने मुकुचि नाम के एक अण्ण कवि को ही माना है (देखिए मिश्रबंजु विमोह संख्या १०९४ १२७८ और १२८१)।

१४८ गोपाल द्विज—रामायण के माहात्म्य के रचयिता गोपाल द्विज का विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ (सत्या १३३) में दिया जा चुका है। इन्होंने अपने ग्रंथ की रचना गुस्वार मार्ग (शीर्ष) शुक्ल एकादशी सवत् १९०८ तदनुसार ४ दिग्बर सन् १८५१ ई० को की। जैसा कि इनकी रचना से ही व्यक्त है, गोपाल द्विज रामनगर के निकट लखनपुर में उत्पन्न हुए थे और रामकोल की मत्लामी गद्दी के अधिकांगी हुए। ये स्वामी रामप्रसाद से पांचवीं पीढ़ी में हुए और उन्हें ये बहुत ही प्रसिद्ध एवं पहुँचे हुए मानते थे।

१४९ गोपीनाथ—काशी के गोपीनाथ गोकुलनाथ बंदीजन के पुत्र थे जिनका विवरण पहले दिया जा चुका है। इन्होंने देव के साथ महाभारत का हिंदी अनुवाद काशीनरेश महाराज उदितनारायणमिह के आश्रय में किया था। 'महाभारत दर्पण' का शातिपर्व इन्हीं का लिखा है। ये अठारहवीं शती के अंत के लगभग विद्यमान थे।

१५० गोरेलाल पुरोहित—गोरेलाल पुरोहित लाल कवि के नाम से कविता करते थे। इन्होंने छत्रप्रकाश नामक ग्रंथ रचा है जिसका विवरण खोज विवरणिका सन् १९०६-०८ में दिया जा चुका है। ग्रंथ की रचना सवत् १७७२ (सन् १७१५) में हुई। गोरेलाल पन्ना के महाराज छत्रसाल के आश्रय में थे और इन्होंने प्रशासक होते हुए जहाँ उचित समझा वहाँ निर्भीकतापूर्वक महाराज की आलोचना की है। उपलब्ध हस्तलेख अपूर्ण हैं, किंतु इसके पाठ काशी नागरीप्रचारिणी सभा के संस्करण से अच्छे जान पड़ते हैं।

१५१ गोसाईदास—गोसाईदास नवोपलब्ध रचनाकार हैं। इन्होंने शब्दावली नामक पुस्तक राम की प्रशान्ता में तथा भगवान् की स्तुति के लिए लिखी है। ये मत्लामी संप्रदाय के अनुयायी थे और वाराणसी जिले के कमोली नामक स्थान के रहनेवाले थे। ये सन् १६७० ई० के लगभग विद्यमान थे। इन्होंने दो और ग्रंथ करुहरा और दोहावली की भी रचना की है।

१५२ गोवर्धनदास सारस्वत—क्रोटपुतली के गोवर्धनदास सारस्वत ने सुदरी तिलक नामक एक सग्रह प्रस्तुत किया है जिसमें तुलसीदास, मोतीराम तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र की राधाकृष्ण प्रेम विषयक रचनाओं का सग्रह है। इसका रचनाकाल तथा लिपिकाल दोनों सवत् १९३७ (सन् १८८० ई०) है।

१५३ गोवर्धनदास (मिश्र)—शिव विलास, शिव विनोद और विष्णुविनोद शिवविलास के रचयिता गोवर्धनदास कानपुर जिले के विलौरा के रहनेवाले थे। वर्तमान खोज में उपलब्ध ग्रंथों की रचना क्रमशः सवत् १९२४ (सन् १८६७ ई०), सवत् १९२६ (सन् १८६९ ई०) और १९३० (सन् १८७३ ई०) में हुई थी। ये सब भक्ति-विषयक रचनाएँ हैं।

१५४ गोविंददास—बारहमासा लिखनेवाले गोविंददास खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ सं० ५३ वाले ही जान पड़ते हैं। उसमें इन्होंने अपने को बहुत से भक्ति

विषयक गीतों का रचयिता बताया है। बारहमासा में राधा और कृष्ण का विवाह में बारह महीनों तक कास-वापन का वर्णन है।

१५५ गुह गोविन्दसिंह—गुह गोविन्दसिंह ने त्रिपावरिज नामक ग्रंथ लिखा है जिसका मूल-संघी-संवाद अर्थात् राजा और संघी की बातों नामक ४०४ अध्याय मात्र ही वर्तमान श्लोक में मिला है। ग्रंथ की रचना संवत् १७५१ (सन् १६९६) में हुई थी। रचनाकास-विषयक छंद श्लोपण प्रतीत होता है। उसमें 'सहम' के स्थान पर 'सत' पढ़ना पड़ेगा। छंद है—

संवत् समग्र सहम भीजै । अथ सहस पुनि तीन कहिँवै ।

भाइव मुदि अहमि रवि वारा । वीर समुद्र ग्रंथ संभारा ।

इसका तात्पर्य हुआ कि ग्रंथ की रचना संवत् १७५१ मार्च सुप्री ८ रविवार को हुई। पर वास्तव में संवत् १७५४ में पड़ित होता है जब अहमि रविवार को पड़ी थी, अर्थात् १५ अगस्त सन् १६९० ई० को। संवत् १७५१ में तिथि मंगल को थी।

१५६ गुलझारीलाल रसीले—कानपुर जिले में मरहम के गुलझारीलाल रसीले ने रसीले तरंग नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें रामायण की कथा साबनी छंदों में वर्णित है। ग्रंथ की रचना संवत् १९२८ (सन् १८७१ ई०) में हुई।

१५७ गुमान मिश्र—गुलाबचंद्रोदय के रचयिता गुमान मिश्र बहुत प्रसिद्ध रचनाकार हैं। इनका विवरण श्लोक-विवरणिका सन् १९१२ १६ (सं० ६८) में दिया जा चुका है। इस ग्रंथ के दो हस्तलेख हम आज में मिले हैं। इनका रचनाकाल संवत् १८२० पूस सुप्री (शुक्ल) इसी गुह तदनुसार वृहस्पतिवार १२ जनवरी सन् १७६४ ई० दिया हुआ है। ग्रंथ में पुरानी परिपाटी का भावक-नायिका भेद आदि वर्णित है। गत श्लोक-विवरणिकाओं में इनके कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ मिले थे। जैसे, कृष्णचंद्रिका और लंकावती (द्विपुत्र श्लोक-विवरणिका १९०५ और श्लोक-विवरणिका १९०६-०८)।

१५८ गुमानी—गुमानी ने संस्कृत के जाजयनीति का भाषानुवाद जाजय नीति भाषा के नाम से किया है। हस्तलेख का समय संवत् १९२० (सन् १८६३) है।

१५९ गुरुचंद्रदास—गुरुचंद्रदास ने बन्दाबली और होहाबली नामक ग्रंथ राम नाम की प्रशंसा में लिखे हैं। ये बबोपकल्प रचनाकार हैं। ये मल्हामी संवत् १९ के थे और बाताबंदी जिले में पुरबा साहेब देवीदाम के निवासी थे। ये संवत् १८७७ (सन् १८२० ई०) में उत्पन्न हुए थे और संवत् १९३८ (सन् १९०१) में परलोकवासी हुए।

१६० गुरुप्रसाद—गुरुप्रसाद ने स्वरोदय नामक ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख के अंतिम पत्र से एक पत्र पहले में इन्होंने संवत् १९३७ (सन् १८८० ई०) दिया है जो रचनाकाल ही होगा।

१६१ ग्याल—प्रसिद्ध कवि ग्याल के गोपी पत्नी की कृष्ण जगन्निष्ठ और रमिका भेद नामक ग्रंथों के हस्तलेख वर्तमान श्लोक में मिले हैं। इनमें से प्रथम दो ग्रंथों की प्रतियों

का विवरण विगत खोज विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। देखिए खोज-विवरणिका सन् १९२२-२३ (सं० ५८)। अंतिम रचना पहली बार मिली है। यह नायिकाभेद का ग्रंथ है और महाराज जसवंतसिंह के लिए लिखा गया है। निम्नलिखित दोहे में ग्रंथ का रचना काल दिया है—

संवत् निधि ऋषि सिद्धि ससि श्याम पक्ष मनुमास ।

अद्वित चार सुदादशी रसिकानंद प्रकास ॥

यह रविवार चैत्र वदी १२ संवत् १८७६ तदनुसार ६ मार्च सन् १८२३ ई० है। यह वही समय है जब ये विद्यमान थे जैसा कि अन्य प्रमाणों से भी सिद्ध है।

१६२ हैदर—हैदर ने कासिदनामा लिखा है जिसके दो हस्तलेख पहली बार मिले हैं। ये दिल्ली निवासी थे और मुसलमान होने के कारण इनकी भाषा अरबी और फारसी के शब्दों में परिपूर्ण है। ग्रंथ छोटासा है और उसमें प्रेमी का सदेश प्रियतमा के प्रति वर्णित है।

१६३ हलधर—सुदामा चरित्र के रचयिता हलधर का विवरण गोज विवरणिका सन् १९०६-०८ (सं० ५९) में दिया जा चुका है। किंतु इस बार उससे पुराना हस्तलेख मिला है। इसका रचनाकाल कुछ संदिग्ध सा लिखा है—

दहस सहस रस वेनि मत कुमुमाकर सुदि पच दश

इसका तात्पर्य होगा एक हजार और ६ + २ = ८ सौ अर्थात् १८००। किंतु दिन नाम न दिया रहने से गणना करके तिथि मिलाई नहीं जा सकती। हस्तलेख की प्रतिलिपि संवत् १८८२ या सन् १८२५ में हुई थी।

१६४ हमीदउद्दीनकाजी—हमीदउद्दीनकाजी ने तबल्लुद नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें मुहम्मद का चरित्र तथा इस्लाम धर्म का प्रसार वर्णित है। यह अवधी भाषा में लिखा हुआ है जिसमें स्पष्ट है कि रचयिता अवध प्रांत का ही निवासी था। यह ध्यान देने योग्य है कि रचयिता ने कुरान को चतुर्थ वेद माना है और महादेव, पार्वती और नारद का भी हल्लेख अपनी रचना में किया है।

१६५ हसराज वक्सी—हमराज वक्सी ने पन्ना के राजा अमानसिंह के आश्रय में कई ग्रंथ लिखे हैं। इनके तीन ग्रंथ (१) सनेह सागर, (२) विरह विलास और (३) सुरिहारिन लीला वर्तमान खोज में मिले हैं। इनमें से पहला और तीसरा ग्रंथ पहले भी मिल चुके हैं, किंतु विरह विलास नई उपलब्ध रचना है। इसकी रचना संवत् १८११ या सन् १७५४ में हुई। इस ग्रंथ में रचयिता ने पन्ना के राजाओं तथा अपनी वशावलियाँ भी दी हैं। धामी मप्रदाय के अधिष्ठाता प्राणनाथ का पद्मावती या पन्ना आगमन की भी रचयिता ने चर्चा की है, जिसके कारण वह (पन्ना रियासत) इतनी प्रसिद्ध हो सकी। कवि अपने को श्रीवास्तव कायस्थ तथा अपनी मातृभूमि को हम्मीरपुर जिला कहता है।

१६६. हरदास—हरदास नपोपलब्ध रचनाकार हैं जिनके तीन ग्रंथ (१) कृष्ण जी का वारहमासा, (२) गिरधारी जी की मुरली और (३) श्री कृष्ण जी की

बारहमासी खोज में मिले हैं। गिरधारी जी की मुरली के इन्सलेण में रचनाकाल सन् १९२० (सन् १८००) दिया है।

१६७ हरनाम—हरनाम ने हरनाम का बारहमासा सिन्हा है जिसके दो इस्तलेण मिले हैं। इसकी रचना संवत् १९१० (सन् १८९३) में हुई थी।

१६८ हरदेव—हरदेव ने रंगभाव मातुरी नामक पुस्तक लिखी है जो पद्मी बार मिली है। इसमें मायिकाओं और उनकी सन्तियों एवं कृतियों का वचन है। रचयिता ने कवि विहारीदास की शैली तथा रस ग्रहण कवन का प्रयोग किया है।

१६९ हरिहर प्रज्ञ—हरिहर प्रज्ञ न सरोज नामक एक प्राधना लिखी है जो पद्मिण्य के बंदावतार की भाँति ही स्तोत्र है। शैली और भाषा भी ऐसी है जिसमें रचना हिंदी की न होकर संस्कृत की सी हो गई है।

१७० हरिप्रसाद—हरिप्रसाद उपनाम हरचंद्र ने साहित्य सुधार निधि नामक ग्रंथ लिखा है जिसके दो इन्सलेण वर्तमान ग्राह में मिले हैं। रचयिता शैली के महाराज रामनाथसिंह का आश्रित था तथा उन्होंने की प्रसन्नता क स्पष्ट उदाहरण की रचना संवत् १९३३ (सन् १८७६) में की है। इस्तलेण रचयिता की ही इन्सलिपि में लिखा है और रचनाकाल तथा लिपिकाल दोनों करीब करीब एक ही हैं। समय है माघ मास शुक्ल पक्ष द्वितीया या सामवात १० अर्धस १८०६ ई०। इसी दिन ग्रंथ समाप्त हुआ था और इन्सलेण उपेष्ट शुक द्वितीया गुरा या गुणार २५ मई १८०६ ई० को तैयार हो गया था। ग्रंथ में कपिल राजाओं की बहुत बड़ी संसाराही जो चालुक्य या सोलुकी राजाओं से आरंभ होती है और रचयिता के आश्रयदाता तक चली आई है, ही हुई है। प्रत्येक राजा का नाम के अनु रूप ही प्रयोग की गई है। उनमें यदि एतिहासिक महत्त्व की कोई वस्तु है तो केवल क्रम बढ़ सूची ही जो व्यापारिक से आरंभ होती है जिन्होंने गुजरात में आकर विप्रहृद के निवृत्त गहोरा में आकर निवास किया। कवि ने कुछ गण में भी लिखा है। यह व्यास के विषय में लिखता है, जैसे "३५ वर्ष २ माह ४ रोज राज्य किया और संवत् ६३१ साले ४९६ मार्ग तीर्थ शुक्ल १२ को गुजरात छोड़ा।" इसका कुछ महत्त्व भी होता यदि उन्होंने दिन काम भी दे दिया होता जिसमें गणना करके शुभाशुभ परीक्षण का सुयोग मिलता। श्रिया कि उन्होंने कहा है उनका समय होगा सन् ३७३ ई० के लगभग। किन्तु रियासत के लोगों से जात होता है सन् ६३१ हिजरी में यह रणनीतारण हुआ था। अतः यह सन् संवत् ११५५ ई ७९६ मही। हम वर्ष ईसाई संवत् १२३३ या जिसमें ६९० वर्षों का अंतर स्पष्ट दिगाई दे रहा है। किन्तु कवि तो कवि ही होते हैं। वे पद्मी कल्पना करते हैं जिसमें समय का मार्गदर्शक ही नहीं मिलता। ग्रंथ का वास्तविक विषय गुणार रस है और जब तक हमारी प्राचीन परंपरा संशोधन ही से पत्नी चलती थी तब तक कोई हमके स्पष्ट दर्शन नहीं दे सकता।

१७१ हरिप्रसाद मिश्र—हरिप्रसाद मिश्र अथाप्या के नर्मदा चर्यगी नदी के तट पर पार्वती नामक ग्राम में रहते थे। उन्होंने 'एक मुहूर्त' नामक ज्योतिष का ग्रंथ मुहूर्त

के विषय में लिखा है। इसके दो हस्तलेख मिले हैं। इसका रचनाकाल संवत् १६१६ सन् १८६२) है और सन् १९२३-२५ (मर्या १५८) की खोज-विवरणिका में भी इसका विवरण है।

१७२ हरिशंकर—हरिशंकर ने 'गणेश माहात्म्य अंतर्गत संकट-व्रत-कथा' नामक ग्रंथ लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ (नं० २५८) में है। प्रयकर्ता ने अपनी रचना राजा वरजोरगिह के आश्रय में प्रस्तुत की है। ग्रंथ की रचना संवत् १६५४ (सन् १५६४ ई०) में हुई।

१७३ हरिवल्लभ—हरिवल्लभ बहुत ही महत्त्वशाली और प्रसिद्ध रचनाकार हैं। वर्तमान खोज में इनके तीन हस्तलेख मिले हैं—(१) भाषा गीता ज्ञान, (२) श्री-मद् भगवद्गीता भाषा और (३) सगीत सार, सुराध्याय। प्रथम दो तो एक ही हैं म्बिवा सामान्यतः अंतर के जिनसे दो ग्रंथों का अम उत्पन्न होता है। वस्तुस्थिति यह है कि उसमें बहुत तरह की बातें जोड़ दी गई हैं जैसे, मूल सरकृत पाठ, दोहों का मूल रूप, इन दोनों का मेल और प्रसंगानुकूल अन्य छंद। जैसा मैंने खोज-विवरणिका सन् १९१७-१९ के पृष्ठ १४ के ग्यारहवें अनुच्छेद में लिखा है, किसी आनंदराम ने इनके सारे अनुवाद हड़प लिए और उन्हें अपना घोषित कर दिया (देखिए सं० १३ ऊपर)। प्रत्येक श्लोक का यह सुंदर हिंदी अनुवाद हरिवल्लभ का ही है इसका एक प्रमाण यह भी है कि हरिवल्लभ ने संवत् १७०१ (सत्रह सै जु एकोतरा माघ मास तिथि ग्यारस) में अनुवाद प्रस्तुत किया और आनंदराम ने संवत् १७६१ में (जैसा उसने कहा भी है—'सपि रम उदवि-धरा ममति कातिक उज्जल मास। रवि पाच्यौ पूरन भयो यह गीता परगास) जो गणनानुसार रविवार २ अक्टूबर सन् १७०४ ई० से ठीक ठीक मिलता भी है।

दूसरी पुस्तक संगीत सार जिसका एक अध्याय मात्र वर्तमान खोज में मिला है, खोज-विवरणिका सन् १९०१ की सगीत भाषा और खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ का संगीत दर्पण दोनों से मिलती है। राय साहय वाचू श्यामसुंदरदास ने इसे इसी नाम के दूसरे व्यक्ति की रचना मानी है जो विवादास्पद प्रश्न है और जिसके लिए पुष्ट प्रमाणों की आवश्यकता है।

१७४ हरिवंश—हरिवंश नायक नायिका-भेद का ग्रंथ 'रसिक विनोद' के रचयिता थे। इसके तीन हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। इसका रचनाकाल है—

राम नयन वसु इंदु के कातिक पिछले पाप।

दसमी मंगल को रच्यो पूरन रम को दाप ॥

अर्थात् कार्तिक शुक्ल १० संवत् १८२३ मंगलवार-तदनुसार मंगलवार ११ नवंबर सन् १७६६ ई०।

१७५ हरिवशराय—हरिवशराय (मुंशी) ने भगवद्गीता का हिंदी गद्य में अनुवाद करके उसका नाम भगवद्गीता भाषा रखा। वर्तमान खोज में इसके दो हस्तलेख

मिले हैं। इसकी भाषा नहीं पाली है। रचनाकाल है सन् १९२८ वि० (१८७१ ई०)। रचयिता काशीवासी था।

१७६ हरियिज्ञान—अभिन्-विज्ञान के रचयिता हरिविज्ञान का विवरण गीत विवरणिका मन् १९२३-२४ (मन्वा १९१) में दिया जा चुका है। प्रथम जन्मकुण्डली विचार करने की विधि बताता है। इसका रचनाकाल अज्ञात है, किन्तु इसकी प्रतिलिपि सन् १९६० (१८७३ ई०) में प्रस्तुत हुई है।

१७७ हरियिज्ञान—हरि विज्ञान कदमणपुरी या सगनऊ के निवासी थे। वर्तमान शोध में इनकी तीन रचनाएँ प्राप्त हुई हैं—(१) गाने के पत्र (गीतों का संग्रह), (२) हरिविज्ञान संग्रह (राधा और कृष्ण विषयक गीतों तथा अन्य छंदों का सूचका संग्रह) जिसकी रचना सन् १९१९ (सन् १८९२ ई०) में हुई थी और (३) राजा कण (रघु का ग्रंथ) जिसकी रचना सन् १९१९ (सन् १८९२ ई०) में हुई।

१७८ हेमराज—आगरा के हेमराज प्रसिद्ध हैं रचनाकार थे। वे सत्रहवीं शती के अन्त्य पत्र में विद्यमान थे। इनके प्रथम रोहिणी मत की कथा का विवरण शोध-विवरणिका मन् १९२३-२५ (सं० १९४) में पहले ही दिया जा चुका है। इस बार मनुगाचार्य कृत मन्मथ पर इनकी टीका प्राप्त हुई है। इसकी रचना प्रथम तीर्थेश्वर आदिनाथ की प्रशंसा में हुई है और इसकी प्रेमी कथा है कि इसके पाठ करने पर काम भी छोड़ देता है आत्म-मन नहीं करता।

१७९ हितहरिवंश—हित हरिवंश सोलहवीं शती में विद्यमान थे। वर्तमान शोध में इनके 'चौदासी पद' की दो प्रतियाँ मिली हैं। इस ग्रंथ का विवरण शोध-विवरणिका मन् १९२३-२५ में पहले ही दिया जा चुका है और इसकी टीका पहले की भार विवरणिकाओं में भी मिल चुकी है। हितहरिवंश राधापहमी संप्रदाय के संग्रहापक थे।

१८० हृदयराज—कृष्णराज के पुत्र हृदयराज संजायी थे। उन्होंने संस्कृत के अनुसन्धातक का हिंदी अनुवाद १९६० (सन् १९२३ ई०) में प्रस्तुत किया। इसका विवरण शोध विवरणिका मन् १९२३-२५ में (मन्वा १९९) में भी है। यही एतद्विषयक अन्य पूर्व विचारों की सूचना भी दी हुई है।

१८१ हृदयराज—हृदयराज घामी संप्रदायानुयायी थे और उन्होंने 'प्रमार्ता नामक प्रातःकाल गाए जाने वाले गीतों का छोटा सा संग्रह रचा है। इसमें इनके संप्रदाय के गीतों का संश्लेष में बतल है। रचयिता ने अपने को घामी संप्रदाय के संग्रहापक प्राप्त नाथ का शिष्य बताया है। जतः उन्हें सत्रहवीं शती का मरुता से माना जा सकता है।

१८२ हृत्वासराय विद्या—आगरा निवासी हृत्वासराय विद्या रचयिता का नामक ग्रंथ में स्वर्णों के शुभाशुभ विचार तथा सङ्गठित सुरारिमाओं से बचन के उपाय बताए हैं। रचयिता और तथा दोनों ही पदकी बार मिले हैं। ग्रंथ की रचना सन् १९२० (मन् १८९३ ई०) में हुई और उसकी प्रतिलिपि सन् १९२४ (मन् १८९० ई०) में हुई।

१८३ हुलास पाठक (कवि)—हुलास पाठक ने दैद्यक का ग्रंथ लिखा है । इनके दो ग्रंथ मिले हैं—(१) शालिहोत्र और (२) दैद्य-विलास । इनमें से प्रथम पुस्तक अश्वविषयक है और दूसरी मानवी रोगों की चिकित्सा संबंधी है । प्रथम ग्रंथ हुलास कवि कृत है और दूसरा हुलास पाठक कृत । निश्चय ही दोनों कवि एक ही व्यक्ति हैं, क्योंकि दोनों ग्रंथों में त्रिपुरासुंदरी की वटना एक ही शब्दों में की गई है । संपूर्ण शालिहोत्र पद्य में है, किंतु दैद्यविलास गद्य और पद्य दोनों में है ।

१८४ इलाहीवक्त्र—इलाहीवक्त्रा लिखित अवधी के पाँच ग्रंथ मिले हैं जिनमें फारसी अरबी के शब्दों की बहुलता है । वे इस्लाम धर्म संबंधी तथा उपासनात्मक हैं । उनमें से प्रथम 'अदहम नामा' 'अरेबियन निट्टून्' के ढंग पर प्रेमाराध्यानक काव्य है जिसमें आश्चर्यजनक वटनाओं का सविधान है । इस कहानी में अदहम नामक एक भिक्षुक एक राजकुमारी से प्रेम करने लगता है जिसका पता चलने पर उसे दंड दिया जाता है । यह शाप दे देता है और राजकुमारी मर जाती है । किंतु वह उसे फिर जावित कर देता है और उससे विवाह भी कर लेता है । उस राजकुमारी से एक पुत्र उत्पन्न होता है जो भागे चलकर अपने मातामह के राज्य का उत्तराधिकारी होता है । संपूर्ण कथा का अंत दुःखात्मक होता है । ग्रंथ की रचना ११ सुहरम सन् १२८६ हिजरी तदनुसार गुरुवार २१ मार्च सन् १८७२ ई० को हुई । दूसरी पुस्तक हथ्र नामा उम्मी नाम के फारसी ग्रंथ का अनुवाद है जिसमें इस्लाम धर्म और तदनुसार स्वर्ग और नरक का वर्णन है । ग्रंथ की रचना ११ सत्वाल सन् १२५७ हिजरी को जुमा के दिन हुई जब रविवार को पूर्णिमा थी । देखने में रचनाकाल देने का यह विलक्षण ढंग प्रतीत होता है । किंतु गणना में यह विलकुल ठीक है । ईसाई सन् के अनुसार यह समय शुक्रवार २६ नवंबर सन् १८४१ ई० है । इसके बाद की पूर्णिमा जो तत्कालीन कार्तिक मास की थी रविवार १८ नवंबर को पड़ी थी । तीसरा ग्रंथ सुशैद वेनजीर में दो विवाहित व्यक्तियों की कथा वर्णित है । इसका रचनाकाल भी उसी ढंग से दिया हुआ है जैसा अभी बताया जा चुका है अर्थात् १८ जिलकदा सन् १२६४ हिजरी सोमवार जिसके बाद फागुन की पूर्णिमा हुई । गणना से यह तिथि खरी नहीं उतरती क्योंकि न तो १८ जिलकदा ही सोमवार को पड़ा और न उस महीने में फागुन पूर्णिमा ही । जिलकदा के महीने में हिंदू मास कार्तिक था । चौथा ग्रंथ रमजाननामा जो रमजान महीने की प्रशंसा में लिखा गया है सवाम सन् १२६० हिजरी अर्थात् अक्टूबर सन् १८७३ ई० को रचा गया । पाँचवाँ पुस्तक साद फकीरी छोटी सी धार्मिक शिक्षा संबंधी पुस्तिका है । इससे यह भी ज्ञात होता है कि रचयिता का दूसरा नाम रमजानशेख था । इसमें समय नहीं दिया है ।

१८५ ईश्वरदास—महाभारत के स्वर्गारोहण पर्व का ईश्वरदास कृत अनुवाद से उसके रचयिता और समय का ज्ञान नहीं होता । ग्रंथ आरभ तो होता है रामप्रसाद के नाम से (राम प्रसाद कई कर जोरी) किंतु समाप्त होता है ईश्वरदास के नाम से (स्वर्गारोहण कथा यह (गाड़) व्यास ऋषि राय । जनमेजय सुख पायउ ईश्वरदास कविराय) । ऐसा प्रतीत होता है कि आरभ में छंदानुरोध से ईश्वर के रथान पर राम लिख दिया गया है ।

१८६ ईश्वर त्रिपाठी—ईश्वर त्रिपाठी सीतापुर जिसे श्री सिधौली कहलीस में पीरनगर के निवासी थे। इन्होंने राम का संपूर्ण चरित्र गोस्वामी गुरुसीदास जी श्री भक्ति सात अध्यायों में किन्तु उनमें भिन्न छंदों में लिखा है और उसका नाम रामायण राम विनास रत्ना। ये नबोपलब्ध रचनाकार हैं। ग्रंथ का समय संवत् १९१९ (सन् १८५९) है।

१८७ जगजीवनदास—सदाशामी संग्रहाय के अधिष्ठाता जगजीवनदास सुप्रसिद्ध रचनाकार हैं। वर्तमान खोज में इनके तीन ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं—(१) दोहाबली, (२) सीता और (३) शब्दसागर। दोहाबली को छोड़ कर अन्य समस्त ग्रंथों का विवरण पिछली खोज विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। रचनाकार का विस्तृत विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२४ संख्या १२५ में है।

१८८ जगन्नाथ—जगन्नाथ ने जगलक्षितोर की बारहमासी नामक पुस्तक लिखी है। इनके विषय में हमसे अधिक ज्ञात नहीं है।

१८९ जगन्नाथ—जगन्नाथ ने गुरु-चरित्र या गुरु-महिमा नामक ग्रंथ लिखा है जिसके दो इस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। यह खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या १०६ में भी उल्लिखित हो चुका है। जहाँ तक रचना के समय का संबंध है तीनों इस्तलेखों में अंतर है। वर्तमान खोज में उपलब्ध एक इस्तलेख में समय दिया है—संवत् सत्रह सौ अठ्ठाई। माघ मास उजियारी आठे। भारती रवि अष्ट मंगलवारा। गुरु-चरित्र भाषा विस्तारा। अर्थात् मंगलवार माघ शुद्ध ८ संवत् १७०८। किन्तु गणना से यह तिथि मंगलवार को नहीं पड़ती। दूसरे इस्तलेख में समय सूचक पद्य इस प्रकार है—

संवत् सत्रह सौ अठ्ठाई। महामास उजियारी आठे।

बरणी ईश्वर मंगल वारा। गुरु चरित्र भाषा विस्तारा।

इनके अनुसार संवत् १७०७ होता है और विस्तृत विवरण अशुद्ध वर्तनी के कारण अस्पष्ट है। फिर भी जितना स्पष्ट है वह भी मंगलवार को सिद्ध नहीं होता। किन्तु सन् १९२३-२५ की खोज-विवरणिका में दिया हुआ समय संवत् १८६० मंगलवार माघ शुद्ध ८ गणना से बिल्कुल ठीक रहता है अर्थात् मंगलवार १ फरवरी सन् १७०४ ई०। बलुतः वर्तमान खोज में उपलब्ध दोनों इस्तलेखों के लिखिकों ने 'साठे' (१०) शब्द को अशुद्ध पण किया। एक ने आरंभ के 'सा' अक्षर को 'अ' पढ़कर 'आठे' लिखा और दूसरे ने दूसरे अक्षर 'ई' को 'ई' समझकर माघ लिखा। अतः सन् १९२३-२५ की खोज-विवरणिका में दिया हुआ समय ठीक है।

१९० जगन्नाथ—वर्तमान खोज में उपलब्ध 'बारहमासा के रचयिता जगन्नाथ कानपुर जिसे मैं महाराजपुर के रहनवाले थे। इत्यादि संवत् १९३७ (सन् १८८० ई०) का है और ऐसा प्रतीत होता है कि यही उक्त रचनाकार भी है।

१९१ जगन्नाथ—जगन्नाथ ने श्रीकृष्ण जी की बारहमासा नामक पोथी लिखी है जिसकी दो प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। ये उपर्युक्त जगन्नाथ (संख्या १९०) से एक नहीं

किये जा सकते, यद्यपि उन्होंने भी वारहमासा लिखा है। क्योंकि दोनों की वर्णनशैली में भिन्नता है।

१६२ जगतसिंह विसेन—गोंडा जिले के जगतसिंह विसेन ने साहित्यसुधानिधि और जगत-विलास नामक रसिकप्रिया की टीका लिखी है। ये भिनगा नरेश के सवधी थे। ये उन्नीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में थे और खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ (स० १७९) में इनका विवरण दिया जा चुका है। उसमें इनके प्रायः एक दर्जन ग्रंथों की सूची भी दी हुई है। इनकी गणना उच्च कोटि के कवियों में होती है।

१६३ जन दयाल—खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ (सख्या २६८) में वर्णित प्रेमलीला के रचयिता और वर्तमान खोज में उपलब्ध धरम सवाढ के रचयिता जन दयाल एक ही व्यक्ति हैं। ग्रंथ में युधिष्ठिर और चाढाल वेशधारी धर्म का सवाढ वर्णित है। जन दयाल ने इस कथा के वर्णन के लिए गुरु गोविंद की आज्ञा का उल्लेख किया है। हस्तलेख का समय सन् १७७६ ई० है अर्थात् गुरु गोविंद के सौ वर्ष बाद का समय।

१६४ जन जगन्नाथ—मोहमर्दराजा की कथा और होली संग्रह कर्ता जन जगन्नाथ का वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या १७७ में हो चुका है। इनका होली संग्रह नवोपलब्ध रचना है जो सवत् १७७५ (सन् १७१८ ई०) में रची गई। मोहमर्द की रचना एक वर्ष बाद हुई थी।

१६५ जानकी मंगल—जानकी मंगल ने छोटा सा शिवस्तोत्र लिखा है जिसका कोई महत्त्व नहीं है।

१६६ जानकी प्रसाद—जानकी प्रसाद पुवार ने भगवतीविनय और रामनवरत्न विनय नामक ग्रंथ लिखे हैं। शिवसिंहसरोज में इन्हें अनेक ग्रंथों का रचयिता माना गया है। भगवती विनय में कोई सन्-संवत् नहीं दिया है, किंतु रामनवरत्न विनय की प्रति रचयिता ने स्वहस्त से माघ शुक्ल पंचमी भांमे सवत् १९२१ को लिखी है ऐसा कहा जाता है। गणना से यह तिथि ३१ जनवरी सन् १८६५ ई० मंगलवार को पड़ती है। यह कवि का विद्यमान काल भी प्रतीत होता है। रचयिता रायबरेली जिले का निवासी था। वह फारसी और संस्कृत का अच्छा ज्ञाता भी था जो उसकी पुष्पिका से प्रमाणित है जिसमें उपर्युक्त तिथि का उल्लेख हुआ है।

१६७ जानकीप्रसाद—ग्रनारस के जानकी प्रसाद ने युक्ति रामायण ग्रंथ लिखा है जिसमें राम की कथा वर्णित है। मिश्रवतु ने इन्हें रामभक्ति-प्रकाशिका और राम-चट्टिका-टीका का कर्ता भी बताया है, किंतु खोज-विवरणिका सन् १९०३ के अनुसार दोनों ग्रंथ एक ही माने जाते हैं।

१६८ जानकी सहाय—जानकी सहाय भजन-विनोद के रचयिता थे जिसमें विनय के पद संगृहीत हैं। ग्रंथ की रचना संवत् १८८३ (सन् १८२६ ई०) में हुई।

१६९ जन राम हित—जन रामहित ने 'गणक आल्हाटिका' नामक ज्योतिष का ग्रंथ लिखा है जो सर्वप्रथम मिला है। ग्रंथ का रचनाकाल इस प्रकार दिया हुआ है—

एक आठ पुनि आठ व सापर चारि बोट्टु । मंषत् शुभ पदिचानिः प्रंय पूर हृत् ७८ ॥
 ईय शुक्रु श्रीमी मुनिधि । गुद पागर मुपररूप । प्रंय गनक आम्हादिह्य कीन्ही मति अनुरूप ॥

अथात् गुदपाग ईय मुनी ६ संबन् १८८४ तदनुमार गुदवार ५ अर्षिक १८९० ई० ।

२०० जनाद्वल मष्ट—ईय रान के कर्ता जनार्दन मष्ट का बर्नन ग्रात्र-विबरणिह्य सन् १९२३ २५ (सत्या १८१) में हो चुका है । बतमान ग्योज में उमी क तीन हस्त स्य मिले हैं । उनमें सपय पुराणा संबन् १८८९ (सन् १८९९ ई०) का है ।

२०१ जमयतसिंह—जीपपुर बरहा राजा जसवंतसिंह अग्रहर्षी दाती में विद्यमान थे । इनके भावा-मूपन की चार प्रतिपों और अयोध्या सिद्धांत की एक प्रति वर्तमान ग्योज में मिली है । दातों का वर्नन पूर्ण ग्योज विबरणिह्यमें में विशेषतः सन् १९२०-२१ की विबरणिह्य में हो चुका है । उनमें ईने कुछ विस्तार से इनका विवरण दिया है । भावा मूपन की नवोपलब्ध एक प्रति संभवतः अथ तक प्राप्त सभी प्रतिपों से पुरानी है । इसका समय संबन् १७८४ (सन् १७२७ ई०) है । जमवंतसिंह महान् पदित थे और साथ ही उष्यछेदि के कवि भी थे ।

२०२ जमयतसिंह—भृंगार-शिरोमणि के रचयिता जमवंतसिंह कल्याणाब्द शिष्ट क तिरवा के राजा थे और सन् १७९७ के लगभग विद्यमान थे । इनका उक्त ग्रंथ भृंगारी कविताओं का संग्रह है और उनका बर्नन ग्रात्र-विबरणिह्य सन् १९०६ ११ और १९२३ २५ में हो चुका है ।

२०३ जयघट्ट—दिल्ली निवासी जयचंद कायस्थ भटनागर ने नामिकेत पुराण या कथा लिखी है जो नवोपलब्ध हृति है । ग्रंथ की रचना संवत् १६३२ (सन् १५७५ ई०) में हुई, किन्तु समय का विस्तृत विवरण गंगाका न टीक नहीं बदरता । समय सुबह उंयु पद है—

संवन मारद से बानीया । तप हरि कृपा की जगदीया ।

गुद पागर रबनी बनन गनि । माय माय मुकस्य सारें मुनि ।

सापर्य पद कि अथ की रचना गुदपाग माय शुक्रु ७ की रबनी नक्षत्र में संवत् १६३२ में हुई । यह तिथि ८ जनवरी सन् १५७५ ई० को थी किन्तु दिन रेबनी नक्षत्र की था किन्तु उम दिन रविवार था गुदवार नहीं । यदि गुद के रवान पर रवि हो जाय तो मय सिक है किन्तु लिखार ने रवि को गुद कैये पद लिया यह बताया कठिन है ।

२०४ जयलाल—जयलाल ने चार ग्रंथ लिखे हैं जो वर्तमात्र ग्रात्र में मिले हैं—
 (१) श्री हृत्न जी की बिनती (२) शिवजी की विनती (३) श्रीरामनाथ की मदिमा और गर्भ-विनामनि । प्रथम तीन ग्रंथों में समय नहीं दिया है, किन्तु चौथ में है । इसकी रचना सन् १८२० ई० में हुई थी । इसमें कवि का विद्यमान-काल भी ज्ञान होता है ।

२०५ जयराम भारती—जयराम भारती (गुनी) ने लावनी और रवान में 'मदिरामन स्त्रीया' लिखी है । इसग्रंथ का समय संबन् १६१४ (सन् १८५७) है । इसके पूर्व रचयिता अग्रय विद्यमान रहा होगा । लावनीकाओं क दो टार थे—(१) तुरी और

(२) कलगी । दोनों का अर्थ एक ही है । पहला पुष्टिग है और दूसरा स्त्रीलिङ्ग । तुरावाले पति पत्नी की जोड़ी लेते हैं और मातृपक्ष को पुत्रपक्ष में अत्यधिक अच्छा बताते हैं । लग्न-नक्ष आगरा और फिरोजाबाद में तो उन लोगों में लावनी गाने का नियमित ताग्रचूद-पुञ्ज होता है । कभी कभी तो दर्शकों के लिए यह अत्यधिक रोचक होता है । जयराम तुरा संप्रदाय के थे ।

२०६ जयसुख—जयसुर नचोपलब्ध रचनाकार हैं । इनके दो ग्रंथ—राधा-विलास और ज्ञानगीता, वर्तमान रोज में मिले हैं दोनों में राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन है । हस्तलेख में कोई समय नहीं दिया है ।

२०७ जेठमल—नागपुर के जेठमल ने 'नरसिंह मेहता की हुडी' लिखी है जिसकी तीन प्रतियाँ वर्तमान रोज में मिली है । ग्रंथ की रचना सवत् १७१० (सन् १६७३ ई०) में हुई । इसका वर्णन रोज-विवरणिका सन् १९०१ सख्या ७७ में भी हो चुका है । इसमें नरसी मेहता की एक सातु की दो हुई हुडी भगवान् श्री कृष्ण द्वारा सकारे जाने का वर्णन है ।

२०८ भामराम—भामराम ने रामायण पिगल नामक ग्रंथ लिखा है जिसका विवरण रोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या १९२ में दिया जा चुका है । उपलब्ध हस्तलेखों में सबसे पुराना सवत् १६०१ (सन् १८४४ ई०) का है । रोज विवरणिका सन् १९२०-२२ और १९२३-२५ में इस विषय में जितना दिया हुआ है उसमें अधिक इन हस्त-लेखों से नहीं जाना जा सकता ।

२०९ ज्ञानदास—वाराणसी जिले में धेवा के ज्ञानदास अचलदाम के शिष्य थे । इन्होंने पचरत्न और अनुभव ग्रंथ नामक दो ग्रंथ लिखे हैं । प्रथम की रचना सवत् १६३३ (सन् १८७३) में हुई है । उपलब्ध प्रति रचयिता की स्वहस्त लिखित है । दूसरी सवत् १९२७ (सन् १८७०) की कृति है ।

२१० ज्ञानी जी—शब्द पारखी के रचयिता ज्ञानी जी कर्नारपयी प्रतीत होते हैं । इनका कथन है कि स्त्रीपरित्याग से इन्द्रिय-निग्रह होता है । ये पंडित, भक्त, हिंदू, मुसलमान आदि की विशेषताएँ भी अपनी धारणानुसार बतलाते हैं । रचयिता और उनके विषय में इससे अधिक कुछ ज्ञात नहीं है ।

२११ जुगलदास—यद्यपि रोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ में जुगलदाम के अन्य दो ग्रंथों का विवरण दिया जा चुका है किंतु 'जुगलदाम की बानी' का नहीं जो इस रोज में प्रथम बार मिली है । ये राधावल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे और सवत् १८२१ के लगभग विद्यमान थे । हस्तलेख का लिपिकाल संवत् १८७१ (सन् १८१३ ई०) है ।

२१२ जुगतराय—जुगतराय ने 'तिलशतक' नामक एक ग्रंथ लिखा है जो नचोपलब्ध कृति है । हरतलेख का लिपिकाल सवत् १८९० (सन् १८३३ ई०) है । ग्रंथ में १०० दोहों में तिल का वर्णन है और यह ग्रंथ सुवारक के 'तिलशतक' से अच्छा जान पड़ता है ।

२१३ ज्योतिपराज—ज्योतिपराज ने 'प्रश्न-विचार' नामक छोटी सी पुस्तक लिखी है ।

२१४ कबीरदास—कबीरदास प्रसिद्ध रचनाकार हैं और इनके विवरण अनेक पूर्व खोज-विवरणिकाओं में दिए जा चुके हैं। वर्तमान खोज में इनकी निम्नलिखित रचनाएँ मिली हैं—(१) संतों की गाथी, (२) अल्लरावती (३) उग्रगीता, (४) ज्ञानस्वरोदय, (५) कबीर मांझ्यो। इनमें से पहली और पाँचवीं सर्वप्रथम उपलब्ध हुई हैं। किसी भी उपलब्ध हस्तलेख में रचनाकारक नहीं दिया है। 'संतों की गाथी' तो विवाहोपलक्ष में गाई जानेवाली गाथी के रूप में लिखी हुई है किंतु सबस्य आप्पात्मिक अर्थ है। अल्लरावती में 'सत्-नाम' और 'मत्-गुरु' अर्थात् 'सत्' के प्राधान्य का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। 'उग्रगीता' में आप्पात्मिक विषयों पर धर्मशास्त्र और कथोरदास के बीच प्रतियोग है। ज्ञानस्वरोदय भी इसी विषय का ग्रंथ है। 'कबीर मांझ्यो' राजस्थानी की रचना प्रतीत होती है जो कबीरमासा के रूप में गुरु मिलन, बुद्धि आदि की प्रशंसा में संकलित की गई है। इसका अंतिम दोहा है—

कबीरमासा पहरियां कुछ नहीं भगति न जाइ हाथ ।

मार्घा मूछ मुंदाय करि चमा जगत के माय ॥

२१८ कालीदत्त नागर—उन्हें के ब्राह्मण कालीदत्त नागर ने दो ग्रंथ लिखे हैं—(१) रसिक विनाय और (२) छबिरत्न। पहला नायिकावेद का ग्रंथ है जिसके तीन हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं और दूसरा नलसिन्धु का है जिसमें नायिका के सिर से पीर तक समस्त अंगों का वर्णन बहुत कथित छंदों में किया गया है। 'प्रभा' नाम्नी उसकी टीका भी इसी से सम्बन्ध है। रचनाकार और उग्रजी रचनाएँ सब मधोपलम्भ हैं। उनका रचनाकारक नहीं दिया है, किंतु रसिक विनाय के दो हस्तलेखों का लिपिकारक संवत् १६२१ (सन् १८९४ ई०) और सबत् १९३४ (सन् १८७७ ई०) दिया हुआ है। छबिरत्न की प्रति संवत् १९३२ (सन् १८९५) की है। इन संवत्तों से स्पष्ट है कि कालीदत्त सन् १८९४ के पहले के हैं। किंतु श्रीबाल प्रतिपाक सिंह कृत बुद्धिकर्मठ का इतिहास (वेदिय भाग १, पृष्ठ २७५) में इनका समय संवत् १६३० (सन् १८९३) बताया गया जो ठीक नहीं हो सकता। उन्हें उरई (जार्जन) के ब्राह्मण बताते हुए श्रीबाल जी ने इनके साथ 'इनुमत बताका' का कृतत्व भी जोड़ दिया है जो ठीक हो सकता है, किंतु उन्हें उन दोनों ग्रंथों का पता नहीं है जिसका उल्लेख ऊपर हुआ है।

२१६ कालिका सेठ—कालिका सेठ शाहजहाँपुरी ने शबदिकल्प नामक एक ग्रंथ लिखा है जिसमें सीता स्वर्णरत्न का स्थान वर्णित है। ग्रंथ की समाप्ति सबत् १९१० कागुन सुदी २ सुषवार तदनुवार १ मार्च सन् १८५४ ई० की हुई।

२७ कालिकाचरण—कालिकाचरण कृत कृष्णाक्षीदा के तीन हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। उनमें रचनाकारक तो नहीं दिया है किंतु सबसे पुराना हस्तलेख सबत् १९२० (सन् १८९३ ई०) का है।

२१८ कमला—कमला या कमलाचरण ने हस्तु मालिका नामक पौरी लिखी है और इनका वर्णन खोज विवरणिका सन् १९०६-०८ (संख्या ५६) में हो चुका है। ग्रंथ

का आरंभ रचनाकाल और विषय वर्णन में होता है। रचनाकाल बताया गया है—सावन कृष्ण १३ भानुवार सवत् १८४७ तदनुसार रविवार (८ अगस्त सन् १७६० ई०) रचना का उद्देश्य अक्षर से लेकर आय-व्यय का चिक्छरण करने तक का सम्पूर्ण ज्ञान कराना है। अनेक रचयिताओं ने इस विषय के ग्रंथ लिखे हैं, जैसे फतहसिंह देगिण्ण गोज विवरणिना १६०५ और १९२०-२२) रामसिंह (ग्यो० वि० १६०६-०८); वंसीधर-ग्यो० वि० १६०९-११)। अन्य लेखकों ने रचना के नाम में थोड़ा परिवर्तन भी किया है, जैसे, दम्तूर सागर, दम्तूर चिंतामणि, दम्तूर-अमला आदि।

२१६ कमलदास वैष्णव—कमलदास वैष्णव ने सन् १८८० (सन् १८०३) में ज्ञानमाला की रचना श्रीशुकदेव और राजा परीक्षित के सवाद रूप में की। इन्होंने खड़ी बोली गद्य का बेसा ही रूप प्रयुक्त किया है जैसा लल्लूलाल के प्रेमसागर में।

२२० कमलाकर भट्ट—रामकृष्ण के पुत्र कमलाकर भट्ट ने गोत्र-प्रवर-त्र्यम्बक नामक ग्रंथ रचा है जिसमें ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों के गोत्र और प्रवर का वर्णन विवाहादि के निमित्त किया है। इसके दो हस्तलेख मिले हैं जिनमें प्राचीनतर सन् १८७३ ई० का है। इसकी भाषा आधुनिक खड़ी बोली है। रचना गद्य में है।

२२१ कनकसिंह—कनकसिंह ने ब्रह्मवाहन की कथा लिखी है जो नवोपलब्ध रचना है। ग्रंथ अवधी में है।

२२२ कन्हैयाचक्र पाल—कन्हैयारत्नमंजरी नामक नायिकाभेद ग्रंथ के रचयिता कन्हैयाचक्र पाल नवोपलब्ध रचनाकार हैं। रचयिता अपने को सूर्यवंशी क्षत्रिय बताता है और कुमायूँ से अपना वंश जोड़ा है जहाँ से आकर उसका परिवार महुलीगढ़ में बस गया।

२२३ कान्हरदास—कान्हरदास (चावा) ने भजन की छोटी सी पुस्तक पद रामायण लिखी है। ये आगरा के गोकुलपुरा में लल्लूजी लाल के निवास स्थान में ही रहते थे।

२२४ कपूरचन्द—कपूरचन्द उपनाम चंद दिल्ली निवासी ब्राह्मण थे और इन्होंने रामचरित्र नामक पोथी लिखी है। खोज-विवरणिका सन् १९०३ मर्या ९९ में इनका वर्णन हो चुका है जहाँ इनका रचनाकाल इस प्रकार दिया है—

सत्रह सै संवत् भूप विक्रम को गनिण्ड। एक हजार पचा हजार सन् हजार गनिण्ड।
फेर वदी वैसाख चातुरन जाने ज्ञाता। साहिजहाँ पातिसाह दिल्ली अदल विज्ञाता।

यह पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है। होना चाहिए था—'सत्रह सै संवत् भूप विक्रम को गनिण्ड। एक हजार पचास चार सन् हिजरी गनिण्ड। फेर वदी वैसाख चातुरन जाने ज्ञाता। शाहजहाँ-पतसाह दिल्ली अदल विज्ञाता।' इसका तात्पर्य हुआ विक्रम संवत् १७०० और हिजरी सन् १०५४ जब मन्नाद् शाहजहाँ दिल्ली में राज्य करता था। कुडलिया छठ में दिया हुआ यह समय संप्रति प्राप्त हस्तलेख में दिग्गु इस दोहे से पुष्ट होता है—

सम्राट् श्री विक्रम को बन्धा सप्त हजार पंचाम ।

चार हजार (विजयी) ताको गिर्नी केरि बड़ी बिसाल ।

यह बुधा विक्रम संवत् १७०० और विजयी सन् १००० + ५० + ४, महीना बिसाल रूप्य पक्ष । विजयी सन् १०२४ फरवरी २९ सन् १६४४ ई० का आरम्भ बुधा अर्थात् १५ शुक्र २ विक्रम संवत् १७०० । किन्तु ग्रंथ रचना ईश्वर के वात् ईसास्य शक में हुई ।

२२५ फरनेस महापात्र—अनेक महापात्र ने बरुमद्र प्रकल्प नामक असंबत सिंह कृत माया मूयम की टीका राजा बरुमद्रसिंह की संरक्षता में लिखी है । टीका की रचना संवत् १०१० (सन् १६९०) में हुई । यह नबोपलक्ष्य रचना है ।

२२६ कासीदास—असी दास ने ज्योतिष माया ग्रंथ लिखा है जो पहली बार लिखा है । इसमें विवाहादि की लगन बर्णित है । इस्तलेख संवत् १०८४ (सन् १०२४ ई०) का है ।

२२७ कासी गिरि दत्तारसी—असी गिरि दत्तारसी न लावनी (मराठी रयाक) और गंगदसहरी लिखी है जो नबोपलक्ष्य रचना है । एक में गंगा की स्तुति है और दूसरे में विभिन्न देवी देवताओं के स्तवन हैं । रचनाकाक अज्ञात है किन्तु लावनी के इस्तलेख का समय संवत् १६३९ (सन् १८७० ई०) है और गंगाकहरी का संवत् १९१४ (सन् १८५० ई०) ।

२२८ कासीनाथ—आशीनाथ महाशार्य शीमशोध नामक ज्योतिष के संस्कृत ग्रंथ के मूल लेखक थे । किसी ज्योतिषी ने इसका हिंदी अनुवाद किया और अपना नाम विपाकर मूल लेखक का ही नाम रहन दिया जिससे हिंदी अनुवादक के विषय में अज्ञान उत्पन्न हो गया है । वर्तमान जोड़ में इस अनुवाद के चार इस्तलेख मिले हैं । चारों शोधा बहुत भिन्न हैं किन्तु सब का सम्यक् रूप से एक ही पाठ नहीं प्रतीत होता । कुछ लिपि कारों ने रचयिता का नाम कासीराम लिखा है जो संस्कृत के रचनाकार से हिंदी अनुवादक का वैशिष्ट्य व्यक्त कर अज्ञान उत्पन्न करता है । किन्तु पूर्वापर विचार करने से इसका निराकरण हो जाता है । इस्तलेखों का समय है—सन् १८१३ १८३० और १८३४ ई० ।

२२९ काशीनाथ—आशीनाथ ने अतु हरि चरित्र लिखा है, वर्तमान जोड़ में जिसके तीन इस्तलेख मिले हैं । ग्रंथ की रचना संवत् १८०५ सन् १७४८ ई० में हुई थी । प्राचीनतम इस्तलेख संवत् १८०८ (सन् १८२१ ई०) का है ।

२३० केसवप्रसाद द्विवेदी—केसवप्रसाद द्विवेदी ने तीन ग्रंथ रचे हैं— १) ज्योतिष सार (२) पप्पापप्य और (३) मयूर चित्रम् । इनमें से पहला और तीसरा ज्योतिष का ग्रंथ है दूसरा ईषक का । रचयिता आगरा कालिदास में संस्कृत के अध्यापक थे । इन्होंने अमरास्य सन् १८६९ में मयूर चित्रम् की सन् १८७९ ई० में ज्योतिषसार की और सन् १८७५ ई० में पप्पापप्य की रचना की ।

२३१ केशव—केसव ने ईषक का ग्रंथ लिखा है । इसकी पुरातन 'ईषक' में विभिन्न रमों एवं यानुओं का अर्थों को ईषार करने की विधिर्ण बनाई गई है ।

२३२ केशवदास (कायस्थ)—गणेश-चौथ-कथा के कर्ता केशवदास का वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ में हो चुका है। वर्तमान खोज में उपलब्ध हस्तलेख सवत १८४० (सन् १७८३ ई०) का है।

२३३ केशवदास मिश्र—ओड्डा के केशवदास सुप्रसिद्ध एव महत्त्वशाली रचनाकार हैं। इनके ग्रथ भूतपूव अनेक खोज-विवरणिकाओं में वर्णित हैं और सभी उपलब्धियों की विस्तृत तालिका मेरी खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ मग्या २०७ में दी हुई है। निम्नलिखित हस्तलेख वर्तमान खोज में उपलब्ध हुए हैं—

(१) विज्ञान-गीता के दो हस्तलेख—समय सवत १७०५ अर्थात् सन् १६४८ (रचनाकाल सन् १६१० ई०)।

(२) रसिक प्रिया के दो हस्तलेख—समय सवत् १७३७ अर्थात् सन् १६८० ई० (रचनाकाल सन् १५९१ ई०)।

(३) ऋषि प्रिया के तीन हस्तलेख—समय सवत् १७३७ अर्थात् १६८० ई० रचनाकाल (सन् १६०१ ई०)।

(४) रामचद्रिका की एक प्रति (रचनाकाल सन् १६०१ ई०)।

(५) वारहमासा की एक प्रति।

अन्तिम ग्रथ पहली बार प्राप्त हुआ है और प्रथम तीन ग्रथों के हस्तलेख अब तक सभी प्रतियों में प्राचीनतम हैं। केशवदास का समय लगभग १६०० ई० है।

२३४ खैराशाह—मेरठ के खैराशाह ने एक छोटी सी पुस्तिका 'वारहमासा' लिखी है जिसका उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ सख्या ९१ में हो चुका है। वर्तमान खोज में इसका एक हस्तलेख और मिला है।

२३५ खेमकरन द्विज—खेमकरन द्विज ने पक्षी चैतावनी या चिरई चेतन नामक एक पुस्तिका ३१ दोहों में लिखी है जिसके प्रत्येक दोहे में एक पक्षी का वर्णन है, साथ ही उसके दूसरे अर्थ से किसी नायिका के प्रवासी प्रिय के आगमन की प्रतीक्षा भी व्यक्त होती है। पुस्तिका में सोलह स्तभों में सोलह पक्षियों के नाम की एक तालिका भी है, किंतु इसका उपयोग नहीं बताया गया है। निश्चय ही यह अपूर्ण है। इससे सलग्न और भी तालिकाएँ होनी चाहिए थी जिनमें नामों का परिवर्तित क्रम इस प्रकार दिया होता कि यदि कोई प्रश्नकर्ता किसी पक्षी का नाम न बताकर केवल इतना ही बताए कि असुक तालिका में अभीष्ट पक्षी का नाम बता दे। इन तालिकाओं में कुछ सख्याएँ इस ढंग से दैठाई रहती हैं कि उनके जोड़ से उस छंद का पता चल जाता है जिसमें अभीष्ट पक्षी का वर्णन होता है।

२३६ खेतसिंह—खेतसिंह ने दैद्यप्रिया नामक दैद्यक का एक ग्रथ लिखा है जिसकी रचना सवत् १८८० (सन् १८२३ ई०) में हुई। इसके दो हस्तलेख मिले हैं जिसमें एक सन् १८४७ ई० का है और दूसरा १८३५ ई० का है।

२३७ सुमान या मान—सुमान उपनाम 'मान' वर्तमान खोज में प्राप्त बिन्दु-लिखित चार ग्रंथों के रचयिता हैं—

(१) सम्मग्नसतक, (२) नरसिंह चरित्र, (३) हनुमान के मत्स्यखण्ड और (४) रामरासो । इनका वर्णन खोज-विवरणिका सन् १९२३ २५ संख्या २१० तथा अन्य विवरणिकाओं में भी हो चुका है । रामरासो की उपसम्पि पहली बार हुई है । इसमें तुलसी कृत रामायण के छन्द-कांड की कथा वर्णित है । सुमान चरन्तारो रामयांतरगत सीरगाँव के निवासी थे और वही के राजा विक्रमराज के आश्रित भी थे ।

२३८ सुशाल दूरे—सुशाल दूरे दीसरिहा ने जातक माला और मदनसार नामक ज्योतिष के दो ग्रंथ रचे हैं । इन्होंने अपनी रचनाओं का समय नहीं दिया है, किन्तु प्राचीनतम प्रति सन् १८४३ ई० की है । कतः ये उस वर्ष के पूर्व के अवश्य ही होंगे । सम-वतः ये अष्टादशी शती के मध्य के भी हो सकते हैं । क्योंकि ये उन्हीं प्रसिद्ध वेद कवि की पौत्राणी पीढ़ी में थे जिनका जन्म सन् १६०३ ई० में हुआ था ।

२३९ सुशालसदृ काला—'सद्भाषितावली वा सुभाषितावली की भाषा' के कर्ता सुशालसदृ काला का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ में दिया जा चुका है । यह ग्रंथ इसी नाम के प्राकृत ग्रंथ का संवत् १७९४ सन् १७३७ ई० में प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद है । इस्तलेल का समय १८१० = सन् १८०३ ई० है । रचयिता साँगाणेर का निवासी था । यह कोई महत्त्वशाली रचनाकार नहीं, बड़ा अनुवादक था ।

२४० ययातीदास—ययातीदास मञ्जुरा निवासी थे । वर्तमान खोज में इनकी 'मद्भस्मक लीला' की दो प्रतियाँ मिली हैं । ग्रंथ में कृष्णजन्मोत्सव की कथा वर्णित है । इसकी रचना संवत् १९२३ (सन् १८६६ ई०) में हुई ।

२४१ किंकरप्रभु—किंकरप्रभु ने गोपी बलदेव की धारहमासी लिखी है जिसमें छप्पन के षष्ठे जाने पर गोपियों का उठाहना तथा उनकी जीवन संर्षयिनी अन्य घटनाओं का भी वर्णन है । इस्तलेल का समय संवत् १९१४ (सन् १८५७ ई०) है ।

२४२ कीर्तिसेन—कीर्तिसेन राजनीति भाषा के रचयिता हैं जो कुछ व्यापक विरचित उसी नाम के ग्रंथ का अनुवाद है । इस विषय में अन्य अनेक रचनाकारों को आहूत किया है जिन्होंने इनके अन्धे ही अनुवाद उपस्थित किए हैं ।

२४३ कोविद—कोविद ने रामक विचार नामक ज्योतिष ग्रंथ लिखा है । जोड़ठा के किसी चंद्रमणि मिश्र की उपाधि भी कोविद की जो सन् १७२० के लगभग विद्यमान थे, किन्तु उनकी उपसम्पि रचना ज्योतिष से इतर विषयों की हैं । इस्तलेल का समय संवत् १९३३ (सन् १८७६ ई०) है ।

२४४ कृपामिवांस स्वामी—कृपामिवांस स्वामी ने लगनपचीसी नामक ग्रंथ रचा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२० २२ संख्या ८५ में दिया जा चुका है । ग्रंथ प्रधानतः भक्ति-विषयक है और इस्तलेल का समय संवत् १८९८ (सन् १८४१ ई०) है । रचयिता जयोज्या में मरठी मंत्रदाय के महन्त थे ।

२४५ कृपाराम—समय-बोध और भाषा भागवत एकादश ग्यः के रचयिता कृपाराम का वर्णन अनेक खोज-विवरणिकाओं में हो चुका है, देखिए खोज-विवरणिका मन् १९२३-२५ सख्या २२६। समयबोध का रचनाकाल मवत् १७७२ (मन् १७१५ ई०) है।

२४६ कृष्ण-विहारी—कृष्ण-विहारी कृत मर्वमग्रह पहली बार मिला है। ग्रंथ में गीतों तथा सामुद्रिक पर स्फुट विचारों का मग्रह है। हस्तलेख में कोई समय नहीं दिया है।

२४७ कृष्णदास पयहारी—डानलीला के रचयिता कृष्णदास पयहारी का वर्णन खोज-विवरणिका मन् १९०३ और १९२३-२५ सख्या १९ में हो चुका है। वर्तमान खोज में उक्त ग्रंथ के पाँच हस्तलेख मिले हैं जिनमें से दो में ही मन्-मवत् दिया है और प्राचीनतर प्रति का समय मन् १८५६ ई० है।

२४८ कृष्णदत्त कवि—कृष्ण कवि विहारी-मतमई के प्रसिद्ध टीकाकार हैं। इन्होंने अर्थ स्पष्ट करने के उद्देश्य से उसके प्रत्येक दोहे पर मदीया बोधो हैं, माय ही विषय को सुबोध बनाने के लिए गद्य में भी लिखा है। कृष्ण कवि ओडिशा के निकट भंडर के निवासी थे। इनका वर्णन भूतपूर्व विवरणिकाओं में हो चुका है। वर्तमान खोज में इनकी इमी टीका के दो हस्तलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें से एक का समय मवत् १८२४ (मन् १७६७ ई०) है।

२४९ कृष्णमणि—नवीन रचयिता कृष्णमणि अपने को मगवद् गीता के अनुवादक बताते हैं। इनकी रचना हरिवल्लभ की रचना से ज्यों की त्यों मिलती है। मैंने अपनी त्रैवार्षिक विवरणिका मन् १९१७-१९, पृष्ठ १४, अनुच्छेद ११ में इस नकल पर विचार किया है, तथापि इस विवरणिका में भी आनंदराम और हरिवल्लभ के प्रकरणों में इस पर अपने विचार प्रकट किए हैं। वास्तव में किमी वालगोविंद वैष्णव ने ही आनंदराम की ही भाँति उनकी नकल की नकल कर ली है, (देखिए सख्या ११३ बी)। निस्संदेह यह अंतिम नकल है जिसके कर्ता ने ठीक-ठीक सवत् लिखा है, अर्थात् शुक्रवार, २१ अगस्त १८१८ ई० और इस नैदित्य के साथ और ह्यर्थक शब्दावली में लिखा है कि यदि कभी पकड़ जायँ तो निकल भागने का रास्ता खुला रहे।

२५० कुलपति मिश्र—कुलपति मिश्र प्रसिद्ध रचनाकार हैं और इनका विवरण विगत अनेक विवरणिकाओं में दिया जा चुका है (देखिए खोज विवरणिका १९०३—२५ सख्या २०८)। वर्तमान खोज में इनके रस-रहस्य की तीन प्रतियाँ मिली हैं। यह अलंकार का ग्रंथ संस्कृत के मम्मटाचार्य कृत 'काव्य प्रकाश' के आधार पर निर्मित हुआ है। इन्होंने कहीं कहीं मतभेद होते हुए भी मम्मटाचार्य की आलोचना नहीं की है। ग्रंथ का रचनाकाल इस प्रकार दिया हुआ है—वनीस या बृहस्पतिवार कातिक वदी ११ संवत् १७२७ तदनुसार २७ सितंबर १६७० ई०। एक हस्तलेख में इनका उपनाम 'दास कवि' भी दिया हुआ है जो मभवत निम्नलिखित दोहे से व्यक्त होता है—

वसत आगरे आगरे गुनियन की जहाँ रास।

विश्र मधुरिया मिश्र है हरि चरनन के दास ॥

ईश्वरयोग स मित्र बंधुओं ने इन्हें दास कवि की श्रेणी का माना भी है। दास कवि (सुप्रसिद्ध कवि मित्तारीदास) हिंदी के मान्य आळकारिक थे, साथ ही मुमबुर कवि भी।

२५१ कुंदनप्रसाद—कुंदनप्रसाद ने तुलसीदास कृत रामायण की प्रशंसा में रामायण माहात्म्य लिखा है। यह नवोपलब्ध रचना है।

२५२ कुंजजन—कुंजजन या कुंजमणि का विवरण जिन्होंने पचस और उपा चरित्र बारहलक्षी लिखे हैं, न्याज-विवरणिका सन् १९०६-०८ और १९१०-२२ में दिया या हुआ है। पचस में रचनाक्रम इस प्रकार दिया है—

एक सहस्र पर आठ सौ संवत् मुम तेरीम।

दुठिया मुदी ६साल में कृपा करी जगदीस ॥

तदनुसार २० अर्धक सन् १७७६ ई०। उपा-चरित्र की समाप्ति सन् १७७९ में हुई थी। (देखिए न्याज-विवरणिका १९२०-२१ संख्या ६१)।

२५३ कुंजरसेन कायस्थ—दिखी के कुंजरसेन कायस्थ ने दो ग्रंथ संगीतबाल चरित्र और संगीत गोबर्धन लीखा लिखे हैं। दोनों में कृष्ण की बाल लीला भीतों में लिखी गई है। पहले की रचना १८२६ में और दूसरे की १८३० ई० में हुई। फारसी और भारती की शब्दावली का बीच बीच में प्रयोग लेखक की कायस्थता स्पष्ट कर देता है।

२५४ कुशलसिंह—बाराबकी जिले के मयुरा निवासी कुशलसिंह गीता, अर्जुन-गीता या राम रत्नांगिता नामक ग्रंथ के रचयिता हैं। इनका वर्णन विगत न्याज-विवरणिका सन् १९२३-२४ संख्या २३१ में हो चुका है।

२५५ लछीमन—लछीमन या लछीमनदास ने दो ग्रंथ गोपीचंद्र भरभरी लीला और महाद चरित्र लिखे हैं और प्रत्येक की दो प्रतियाँ वर्तमान न्याज में मिली हैं। ये ग्रंथ महामयम इसी पार उपलब्ध हुए हैं। दोनों ही रचनाएँ गाने के किण प्रस्तुत की गई हैं। न्याज-विवरणिका सन् १९१०-१९ संख्या १०३ में इसी नाम के एक और रचयिता का उल्लेख है जिन्होंने रामरसावली और हनुमान जी का तमाशा नामक ग्रंथ लिखे हैं। उन दोनों का रचनाक्रम वर्तमान न्याज में उपलब्ध उपर्युक्त लछीमन कृत ग्रंथों के निर्माणकाल से मिलता है। यदि कियेकर ऐसे न रहे हों कि अवधी के स्थान पर कुछ राजस्थानी शब्दों का प्रयोग कर दिया हो तो दोनों की रचनाधीनी में भिन्नता है और यदि ऐसा ही है तो दोनों रचनाकार एक ही हैं। दोनों ही उन्नीसवीं शती के मध्य में विद्यमान थे।

२५६ लक्ष्मणसिंह राजा—लक्ष्मणसिंह राजा प्रसिद्ध कवि हुए हैं। इनके शकुंतला अनुवाद का एक हरतलेत्र वर्तमान न्याज में मिला है। इसकी रचना १८६१ ई० में हुई थी किंतु बटेवर के किमी ज्ञानसिंह ने स्वपदमार्थ इसकी प्रतिलिपि रचना के पाँच वर्ष की थी। भी बर्ष बाद यह पौरुष में मुद्रित हुआ था और इंडियन गिथिक सर्विस की परीक्षा के लिये पाठ्य ग्रंथ स्वीकृत हुआ था। राजा लक्ष्मणसिंह लखी बीली के आर्यिक रचनाकारों में गिने जाते हैं।

२५७ लक्ष्मीपति—लक्ष्मीपति ने श्रीकृष्णरत्नावली लिखी है जो नवोपलब्ध कृति है। इसमें गीतादर्शन वर्णित है तथा निश्चित रूप में इसकी रचना सन् १८३६ ई० में हुई थी। रचना के समय-वर्णन के दृग से भ्रम उत्पन्न हो सकता है। काल सूचक छंद इस प्रकार है—

हर भूपन ८ हर वनन ५ वर, हर तल, ७ हर गिर १ रूप।
 एते अक मिलायके वीने साके भूप।
 हर रिपु निधि हर नयन मुख (मल ?) माम पच्छ सनिवार।
 लछन कृष्ण रत्नावली पोथी क्रियो तयार ॥

इसमें संवेहात्पद दृग से शक संवत् १७५८, शनिवार मलमाम १० लिखा गया है। शक संवत् १७७८ में मलमाम (अधिक माम) आषाढ़ में पड़ा था और इस माम के शुक्ल पक्ष की दशमी शनिवार को अर्थात् २३ जुलाई सन् १८३६ ई० को पड़ी थी।

२५८ लक्ष्मीप्रसाद तिवारी—द्वैतस्यार के कर्ता लक्ष्मीप्रसाद तिवारी प्रतापगढ़ जिले में सरायराजा के निवासी थे। वे इस शताब्दी के आरंभ के लगभग परलोकवासी हो गए। इनके ग्रंथ में स्त्रियों एवं बच्चों के रोगों की चिकित्सा का वर्णन है।

२५९ लालकवि—इनुमान पंज के रचयिता लाल कवि का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०२-२५ मध्या २४४ में दिया जा चुका है। ये सुल्तानपुर जिले के निवासी थे।

२६० लालचंद जैन—लालचंद जैन ने जैन तीर्थहरों की स्तुति में जवमाला नामक एक ग्रंथ लिखा है। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१७-१९ सख्या १०६ में दिया जा चुका है। ये अठारहवीं शती में विद्यमान थे।

२६१ लालचराम—भागवत पुराण दशम स्कंध के अनुवादक लालचराम का विवरण विगत कई खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है (देखिए खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या २३८)। इनकी उक्त रचना के दो हस्तलेख मिलते हैं और दोनों में भिन्न भिन्न रचना काल दिद् हुए हैं। एक हस्तलेख में संवत् १५२५ (सन् १४६८ ई०, दिया हुआ है और दूसरे में संवत् १५८५ (सन् १५२८ ई०) किंतु किसी में विस्तार से तिथि का उल्लेख नहीं है जिसमें वास्तविकता का निर्णय किया जा सके।

२६२ लालदास वरेली निवासी—वरेली निवासी लालदास ने अवध-विलास और भरत की वारहमासी नामक ग्रंथ क्रमशः सन् १६४३ और सन् १६३३ ई० में लिखे हैं। इनके कथनानुसार उस वर्ष अधिक माम और ग्रहण साठों और अग्रहण में पड़े थे। उस वर्ष वैशाख में अधिक मास अवश्य था और भादों में सूर्यग्रहण भी था किंतु अग्रहण में नहीं। लालदास का विवरण विगत अनेक विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। (देखिए खोज-विवरणिका सन् १९०३-२५ सख्या २३६)।

२६३ लालदास वैश्य—आगरे के लालदास वैश्य ने इतिहास सार समुच्चय और मानसी तीर्थ माहात्म्य नामक ग्रंथ लिखे हैं। ये सत्रहवीं शती के तृतीय माह में विद्यमान

थे। प्रथम ग्रंथ त्रिममें महाभारत की कथा वर्णित है। श्लोक-विषयमिका सन् १९०१ और १९०२ में सूचित किया जा चुका है। दूसरा ग्रंथ महापुरुष कृति है। इसमें तीर्थयात्रा को निम्नकाटि का बताया गया है और इन्द्रय शक्ति का ही विशेष महत्त्व प्रतिपादित किया गया है।

२६४ लालन पिया—उपनावाय निवासी कस्तुर पिया प्रसिद्ध सर्गोत्तम रूप हैं। इन्होंने दुमरी गीतों की रचना की है। इनका ग्रंथ इन्द्रग या गानों की पुस्तक की रचना संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) में हुई है।

२६५ ललिताप्रसाद—भास्वा लाल रामायण के कर्ता सकिता प्रसाद काम्यबुद्धि ब्राह्मण थे और उन्नाय त्रिके में पाद्री कर्मों के निवासी थे। इनके ग्रंथ का केवल एक अध्याय ही मिला है जिसमें समय का उद्देश्य इस प्रकार है—

युग सर अंक मयंक सु संवत् माघव मास शशी सुत वा ।।

पूरण सुन्दर कोड मयो जयि नापक गायक के अनुभार ।।

यह कुछ मरिहास्यद सा है क्योंकि युग का अर्थ 'दो' और 'चार' दोनों होता है। इस प्रकार संवत् होगा या तो १९५२ या १९५७। मास का नाम दिया हुआ है माघव या वैशाख। किपिदोष से सुतबारा सिध गया है जो होना चाहिए इतबारा। त्रियि के किण 'सति' शब्द का व्यवहार किया गया है त्रिमका तात्पर्य है पूर्वमा। यदि इसे ही सिक मानें तो संवत् होगा १९५४ क्योंकि इसी वर्ष वैशाख पूर्वमा रविवार १९ मई सन् १९५७ ई० को पड़ी थी। १९५२ में यह त्रियि बुधवार का पड़ी थी और इस बात की कोई संभावना नहीं है कि सिधिकर न 'बुधवार' को 'सुतबारा' पद किया हो। रामायण आदि का उद्देश्य में लिखी हुई है जो ग्रामीणों के बीच बहुत प्रचलित है।

२६६ लल्लूजी लाल—भागर क लल्लूजी लाल प्रसिद्ध रचनाकार हो चुके हैं त्रिमके तीन निम्नलिखित ग्रंथ वर्तमान काब में मिले हैं—

(१) मभाबिदास (दो प्रतिर्पा)

(२) राजनीति (एक प्रति)

(३) माघवबिदास (एक प्रति)

इसमें से कुछ ग्रंथ तो हिंदी-बिदास्यों में पाठ्य ग्रंथ की भाँति स्वीकृत थे। राजनीति की रचना सन् १८१९ ई० में हुई और मभाबिदास की उसके दूरतर वर्ष।

२६७ लेखराज मिश्र—विर्षाकी क लेखराज मिश्र ने गंगा की स्तुति में गंगा भरण लिखा है। गंगा सन् के कौतुक से रचनाकार ने रचनाकार का उद्देश्य यह बिलक्षण था से किया है। उद्देश्य है—

गंगा नामग गंगा मग त्रियि दीर्घे सति गंगा
गंगा गति गति अंक की संवत् सिधनु सुदंग
माघ पक्ष त्रियि चार शुभ के उद्देश्य यदि गंगा
गंगा गंगभरण की उद्देश्य मयो यह गंगा ।

इसके अनुसार समय संवत् १६३५ वैशाख शुक्ल ७ गुरुवार तदनुसार ९ मई १८७८ ई० होता है। लेखराज चमत्कार-प्रिय रचनाकार थे जिन्होंने अनुग्राम के लिए भावों का हनन तक किया है। एक दोहे में तो इन्होंने एक ही अक्षर का प्रयोग आग्रत किया है। दोहा इस प्रकार है—

गगी गो गो गोग ने गुगी गो गो गुग ।

गगा गगे गं गगा गगा गगे गग ।

२६८ लेखराजसिंह ठाकुर—लेखराजसिंह ठाकुर ने गद्य में पद्यार्थ तत्त्व टीपिका नामक एक ग्रंथ लिखा है जिसमें विविध प्रकारों के उपयोगी-विज्ञान, ऋतु-विज्ञान, रसायन-शास्त्र, धातुविद्या, वस्त्र-प्रक्षालन-विद्या, उद्यान विद्या, मजावन-कला, पाकशास्त्र, भूमि-माप-विधान, पर्यायवाचन, काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, वेद आदि सभी विषय। रचयिता आधुनिक युगीन प्रतीत होते हैं, किंतु इन्होंने कोई सन्-संवत् अपनी रचना में नहीं दिया है जिसमें इनका समय निर्धारित किया जा सके। इन्होंने देवयोग से इतना ही लिखा है कि मैं क्षुशाली गाँव का निवासी हूँ जिसका पुराना नाम करहरा था और आधुनिक नाम मेरे पितामह के नाम पर रखा गया है। यह म्यान आठ गगा के किनारे है।

२६९ लोचनसिंह—लोचनसिंह-ज्योतिषी ने जातक लेखिका भाषा ग्रंथ लिखा है जो संस्कृत के ज्योतिष ग्रंथ का अनुवाद है। रचनाकाल है सन् १६१० पाँच कृष्ण कुज द्वादशी तदनुसार मंगलवार, २७ दिम्बर सन् १८५३ ई०।

२७० लोकसिंह वावू—लोकसिंह वावू ने बलवंत प्रकाश ग्रंथ लिखा है जिसमें प्रतापगढ़ जिले के बीसेन राजपूतों का पूरा इतिहास विस्तार से दिया है। ग्रंथ की रचना रामपुर के बलवत्सिंह के आग्रह से हुई है जिन्होंने रचयिता को अपने पिता एवं पितामह के निकट संपर्क में रहने वाले तथा जानकार वृद्ध पुरुष ममझर यह कार्य सौंपा था। इस प्रकार यह ग्रंथ रचयिता ने पूर्ण वृद्धावस्था में लिखा था। यह ग्रंथ बहुत ही सुष्ट और शक्ति-शाली शैली में लिखा गया है।

२७१ लोनेदास—स्वर्गारोहण के रचयिता लोने का चित्रण खोज-चित्रणिका १६२३-२५ सख्या २४९ में दिया जा चुका है। ग्रंथ में रामचंद्र के स्वर्गारोहण की कथा वर्णित है। वर्तमान खोज में उपलब्ध प्रति में कोई सन्-संवत् नहीं दिया है, किंतु खोज-चित्रणिका १९२३-२५ में सन् १८३५ ई० दिया हुआ है।

२७२ मदनगोपालसिंह—मदनगोपाल सिंह उपनाम खलस ने चिनयपत्रिका नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें स्तुति एवं भक्ति विषयक रचनाएँ संगृहीत हैं। हस्तलेख का समय संवत् १८९६ (सन् १८३९ ई०) दिया हुआ है।

२७३ मदनपाल—मदन विनोद निवट्ट (औपधियों तथा गुणों का कोश) के रचयिता मदनपाल का वर्णन खोज-चित्रणिका सन् १९०६-११ सख्या १७६ में हो चुका है। पुष्पिका में इनके नामोल्लेख के ढग से यह निश्चित प्रकट होता है कि ये मूल संस्कृत ग्रंथ

क रचयिता थे। इस प्रकार हिंदी अनुवादक का नाम अज्ञात है। उपर्युक्त चार हस्तलेखों में से एक तो सन् १९०९ ई० की प्रति से ज्यों का त्यों मिलता है। प्राचीनतम हस्तलेख का समय १८५५ ई० है।

२७४ माधव या माधो—माधव या माधो ने संवत् १९३६ (सन् १८०९ ई०) में रेक बर्गन नामक एक छोटी सी पुस्तिका लिखी है जिसमें देसगाड़ी का वर्णन बहुत ही रोचक एवं विनोदी ढंग से किया गया है।

२७५ माधवदास—कदम बत्तीसी के रचयिता माधवदास का विवरण लोत्र विवरणिका सन् १९०१ संख्या ७८ में दिया जा चुका है। मिश्रबंधु इन्हें महर्षि चैतामणि का और नारायण लीला के कर्ता (वस्तुसे लोत्रविवरणिका सन् १९०६ ११) मानने हैं। माधवदास बागौर निवासी कायस्थ बंथाए गए हैं।

२७६ माधवजू—माधव जू पवरमविषयक ग्रंथ सारस्वतपारमभुक्तकानिधि के रचयिता हैं। इनकी रचना बीली से यह प्रकृत होता है कि ये रोबाबासे माधव ही हैं जिन्होंने महाराज विठ्ठलनाथसिंह के आश्रय में संवत् १९०० के लगभग आदि रामायण रची थी। उस ग्रंथ में इन्होंने अपने को काशीराम का पुत्र और गंगाप्रसाद का पीछ बंथाया है विचारार्थीय हस्तलेख संवत् १९१६ या सन् १८५९ ई० का है। एक षंग से इनमें भी दागों की पड़ता की पुष्टि ही होती है।

२७७ माधवानंद भारती—माधवानंद भारती रामकृष्ण भारती के सिष्य थे। वर्तमान प्रोग में इनके दो ग्रंथ मिले हैं—(१) कैलाश मार्ग (संकपुरात्र के ज्योतिर शंभ का अनुवाद) और (२) माधवी संकर विभिन्नयः। पहले का रचनाकाल इस प्रकार दिया है—

इंदु अंक विद्यति पदसाका। आनंद बन यह शरित रसाका।

आगुल सुपद् पाप उत्रियारा। दशमी ईति पुत्र सविबारा।।

अर्थात् शनिवार फाल्गुन सुदी १० संवत् १९२६ ठट्टनुसार १९ मार्च सन् १८०० ई०। हस्तलेख का समय संवत् १९२८ (सन् १८७१ ई०)। दूसरे हस्तलेख में रचनाकाल नहीं दिया है, किंतु इसकी प्रतिलिपि उसी वर्ष हुई थी जिस वर्ष पहले हस्तलेख की हुई थी।

२७८ मधुसूदनदास—मधुसूदनदास का विवरण लोत्र-विवरणिका सन् १९०९ १९११ संख्या १८१; सन् १९२०—२२ संख्या ९० और १९२३—२५ संख्या २५१ में दिया जा चुका है। इनके रामायणमें की तीन प्रतिषां वर्तमान कात्र में उपलब्ध हुई हैं। ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १८३९ (सन् १०८२ ई०) है। इस कात्र में प्राप्त प्राचीनतम हस्त लेख सन् १८६७ ई० का है।

२७९ महादेव—महादेवने 'मामुद्रिक' नामक ग्रंथ लिखा है। ग्रंथ में रचनाकाल नहीं दिया है किंतु लिपिकाल संवत् १९४० (सन् १८८३) दिया है।

२८० महादेव वनिया—भैनपुरी के महादेव अयोध्यावासी वनिया ने ऋवलीला नामक गीतों का एक संग्रह लिखा है जिसमें भक्तध्रुव की कथा वर्णित है। ग्रंथ में रचनाकाल नहीं दिया है, किंतु इसकी प्रतिलिपि सवत् १०५० (सन् १८९३ ई०) में हुई थी।

२८१ महादेव क्षत्रिय—शाहजादापुर (एलाहाबाद) के महादेव क्षत्रिय ने नीति सरोह नामक ग्रंथ सवत् १६२४ (सन् १८६७ ई०) में लिखा। यह चारित्रिक शिक्षा विषयक ग्रंथ है और नवोपलब्ध कृति है।

२८२ महाराजदास—महाराजदास ने सुदामा चरित्र लिखा है जिसका रचना काल है—

सवत् वोनह्म से वोनह्म। माघ मास कुज वार।

चरित्र सुदामा को रचेउ। पिय महाराज दिचार ॥

अर्थात् सवत् १९१६ माघ मास में मंगलवार। इसमें तिथि नहीं दी है। यदि यह दिन पूर्णिमा का हो तो उस दिन ३ फरवरी सन् १८६३ ई० थी। इसका लिपिकाल है १८९७ ई०।

२८३ महावीर—महावीर ने सोने-लोहे का झगडा नामक पुस्तिका लिखी है जिसमें सवाद के रूप में दोनों का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। यह बाल-विनोद के लिये अच्छा विषय है। हस्तलेख का समय है १६३० (सन् १८७३ ई०)।

२८४ महावीरप्रसाद कायस्थ—गोरखपुर जिले में उनवल के महावीर प्रसाद कायस्थ ने कृष्ण गीतावली नामक एक संग्रह प्रस्तुत किया है जिसमें केवल तुलसीदास और सूरदास के पद संगृहीत हैं। वर्तमान खोज में इस ग्रंथ की तीन प्रतियाँ मिली हैं और तीनों में तीन भिन्न भिन्न रचनाकाल दिए हैं जिसमें कुछ अशों तक लिपिकारों का ही दोष है। एक हस्तलेख का समयसूचक छंद किसी प्रकार परीक्षायोग्य है और इस प्रकार उसे ठीक मान सकते हैं। छंद है—

मास मधुप तिथि दशमी कृष्ण पक्ष रविवार।

सवत सैंतिस विक्रमी भै पुस्तक तैयार ॥

गणना से यह तिथि ४ अप्रैल सन् १८८० ई० को पड़ती है।

२८५ महेशदत्त—वाराणसी के धनौली निवासी महेशदत्त ने 'अठारह पुराण की नामावली और सांख्य तथा पञ्चीम अवतारों के नाम' नामक एक छोटा सा परिपत्र तैयार किया है जिसमें प्रत्येक पुराण का नाम और उसकी छंद-संख्या तथा पञ्चीस अवतारों के नाम उनके प्रसिद्ध चरित्रों के विवरण सहित वर्णित हैं।

२८६ मकसूद—मकसूद ने अपने नाम पर ही मकसूद वाहमासा नामक एक वारह-मासा लिखा है। हस्तलेख का समय सन् १२६० हिजरी (सन् १८७३ ई०) है। इसकी भाषा फारसी मिश्रित हिंदी है जिसे उर्दू भी कहते हैं।

२८७ मखदूमशाह दरियावादी—अमनशाह के पुत्र मखदूमशाह दरियावादी ने हसजवाहर नामक एक प्रेमकाव्य लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०२

संख्या १११ में दिया जा चुका है। उसमें अलिमसाह को इम प्रीय का रचनाकार बताया गया है, किंतु उसके समयमें कोई उद्धरण प्रस्तुत नहीं किया गया है। प्रीय में राजा इंस का उवाहर नामी किर्मी को स प्रीय का ईश्वर विषयक रहस्यात्मक (सूक्ष्म मत का) वर्णन है।

२०८ मफखनसाल खत्री—अली के मफखननाम खत्री ने भागवत दशमस्कंध का भाषानुवाद 'सुरसगर' नाम से किया और अन्य ६ अध्यायों का अनुवाद 'गण्डरग माहात्म्य' नाम से, जिनमें भक्ति और ज्ञान का वर्णन है। दोनों की रचना सन् १८४९ ई० में हुई थी।

२०९ मलिक मुहम्मद जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी प्रसिद्ध रचनाकार हुए हैं जिनके वा प्रीय पद्मावत और कहरामा इस श्रेणी में मिले हैं। पद्मावत का विवरण ता बिगत अनेक शास्त्र-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है जिनका अबलाइन खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १०९ और सन् १९२३-२३ संख्या २८४ के आधार पर किया जा सकता है। 'कहरामा' गरीब रचना कहल्य है जिनमें ईश्वर भक्ति का प्रतिपादन किया है। पद्मावत की रचना इस मथुरागर के कष्ट से तर जाने के उद्देश्य से संवत् १५६० (सन् १३४० ई०) में की गई थी। दूसरे प्रीय का रचनाकार नहीं दिया है। इसका हस्तलेख संवत् १८२७ (सन् १७७० ई०) में तैयार किया गया था।

२१० मल्लकदान्—मल्लकदान् तुल्मीदास के समकालीन थे और इलाहाबाद के समीप कदा मामिकपुर के रहनेवाले थे। इनके प्रीय 'भगत बच्छत का विवरण बिगत खोज विवरणिका सन् १९०४ संख्या ८० और १९०९-११ संख्या १८५ (७) में दिया जा चुका है। इस रचनाकार के विषय में जो कुछ ज्ञात हो सका है सब का संग्रह खोज-विवरणिका सन् १९१०-१९ संख्या १०९ में है।

२११ मगरशालाल पन्नीवाल—कर्मवीर के मगरशालाल पन्नीवाल तीन कवि थे। इन्होंने चौबीसी पद्य नामक प्रीय लिखा है। खोज विवरणिका सन् १९३३-३५ संख्या २६० में इसका विवरण दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में तीर्थंकर मेनिनाथ का जीवनचरित्र विषयक मेनि खोजिका नामक इनका एक प्रीय मिला है। खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ में समय सूचक छन्द के अनुसार रचना का समय मगधिर शब्द १० गुरुवार संवत् १८८० तत्सुमार २५ नवंबर १८३० ई।

२१२ मंडन—मंडन की रमरसायली के चार हस्तलेख इस खोज में मिले हैं। रचनाकार का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १०३ और १९२३-२३ संख्या २६३ में दिया जा चुका है। इस खोज में प्राप्त प्राचीनतम हस्तलेख संवत् १७७० (सन् १७१३ ई०) का है। प्रीय अत्यंत विषयक है और इसी विषय का संस्कृत प्रीय का हिंदी रूप है।

२१३ मण्डिये भट्ट—मण्डिये भट्ट पंजीजन अली के राजा उदितनारायण के अधिष्ठित थे। इन्होंने अन्य अन्य दो माधवी गोपीनाथ और गोतुलनाथ के साथ महाभारत

का हिंदी अनुवाद करना आरंभ किया। इस ग्योज में उम्र ग्रंथ के दो अध्याय औंशिक पर्व और दर्प विशोक पर्व (देविण्यु) ग्योज-विवरणिका सन् १६०४ सत्या ६५) मिले हैं। एक हस्तलेख का समय संवत् १९३२ (सन् १८७५) है।

२९४ मजु मिश्र—मजु मिश्र ने गद्य में भगवद्गीता भाषाटीका नामक पुस्तक लिखी है जिसकी सन् १७५० ई० की एक प्रति इस ग्योज में मिली है। अनुवादक के विषय में इसके अतिरिक्त और कुछ ज्ञात नहीं है।

२९५ मन्नालाल—मन्नालाल आधुनिकीय ने वेदांतग्रंथी नामक वेदांत दर्शन पर एक ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय सन् १८६८ ई० है।

२९६ मनोहरदास—मनोहरदास ने फूल चरित्र लिखा है जिसका विवरण ग्योज-विवरणिका सन् १६०६-११ सत्या १६२ में हो चुका है। हस्तलेख में कोई समय नहीं दिया है।

२९७ मातादीन शुक्ल—प्रतापगढ़ जिले में अजगर के मातादीन शुक्ल का विवरण रस सारिणी और सग्रहावली के कर्ता के रूप में ग्योज-विवरणिका सन् १९०९-११ सत्या ३५ (परिशिष्ट २) और ग्योज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सत्या २७४ में दिया जा चुका है। इन दोनों के साथ इस ग्योज में इनके तीन ग्रंथ और मिले हैं। वे हैं—

(१) रामायण का ला० (रचना काल संवत् १८६९, सन् १८७१ ई०) की दो प्रतियाँ।

(२) ज्ञान-दोहावली (रचनाकाल संवत् १६०३, सन् १८४६ ई०) की दो प्रतियाँ।

(३) राम गीता अष्टक (रचनाकाल संवत् १८९६, सन् १८४२ ई०) की दो प्रतियाँ।

(४) रस सारिणी (रचनाकाल संवत् १६०३, सन् १८४६ ई०) की दो प्रतियाँ।

(५) नानार्थ नव सग्रहावली (रचनाकाल १८६६, सन् १८४२ ई०) की चार प्रतियाँ।

रस सारिणी में काल-सूचक दोहा निम्नलिखित है—

एक सहस्र नव सै त्रिजुत मितौ मास सुदि ज्येष्ठ
तेरस तिथि रवि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ

इंसाई सन् के अनुसार यह तिथि रविवार ७ जून सन् १८४६ ई० को पड़ी थी।

२९८ मथुरादास ब्राह्मण—मथुरादास ब्राह्मण ने वाल्मीकीय रामायण के लंका-कांड का भाषानुवाद सीधे संस्कृत से न करके कालीप्रमन्न कृत वाल्मीकीय रामायण के बंगला अनुवाद से किया है। हस्तलेख का समय संवत् १६४१ (सन् १८८४ ई०) है।

२९९ मथुरादास फायस्थ—मथुरादास फायस्थ ने दैद्युक्सार (सर्व) सग्रह सन् १६७० ई० में लिखा है। इसमें रोग और उनके उपचार का विचार किया गया है।

३०० मतिराम—अनूपुर जिले में तिकरवाँपुर के निवासी मतिराम सुयसिंह कवि हो गये हैं। इनका विवरण बिगत अनेक खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है जिसका विस्तृत विचार खोज-विवरणिका सन् १९१०-१२ संख्या १०५ में किया गया है। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१) रसराज के सात हस्तलेख जिनमें प्राचीनतम संवत् १८०९ (सन् १७५२) का है।

(२) लखितलसाम की तीन प्रतियाँ जिनमें प्राचीनतम संवत् १८३३ (सन् १७७७ ई०) की है।

(३) मतिराम सतसई के दो हस्तलेख जिनमें से एक संवत् १८३२ (१७७५ ई०) का है।

ये सब ग्रंथ सन् १९२३-२५ ई० की खोज में मिल चुके हैं। (वलिय संपत्ता २५९)।

३०१ मेदैलाह—मेदैलाह कागपुर जिले में विस्हीर के वैश्य थे। इनकी मृत्यु संवत् १९२४ (सन् १८६७ ई०) में अस्सी वर्ष की अवस्था में हुई। इन्होंने मक्ति विषयक रचनाएँ की हैं जिनका संग्रह 'मेदैलाह इत कवित्त सर्षया के नाम से हुआ है। रचना काल एवं हस्तलेख का समय संवत् १९१० (सन् १८५३ ई०) है।

३०२ मेहराज—मेहराज जीन थे। वे पंजाब के बालंधर जिले में फगुवार में रहते थे। इन्होंने ज्योतिष पर मेयनाहा नामक ग्रंथ संवत् १८१७ (सन् १७६० ई०) में लिखा। इनकी भाषा में पंजाबी और खड़ी-बोली दोनों का मिश्रण है। रचना में काव्यत्व नहीं है। इनकी पद्यरचना प्रायः दोषपूर्ण है। इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या २७८ में दिया जा चुका है।

३०३ मीरपयाई—मीरपयाई बहुत ही प्रसिद्ध भगतिय हो गई हैं जिसका परिचय इनके गीतों से मिलता है। वर्तमान खोज में इनके गीतों का एक संग्रह मिला है जिसमें न तो संग्रहकर्ता का नामोच्छेद है और न समय ही दिया है। मीरपयाई का समय १५१६ और १५७३ ई० के बीच है।

३०४ मीर पनाह अली—दिल्ली के मीरपयाह अली ने व्यव्रजनसार नामक ग्रंथ पाकशाह का लिखा है। हस्तलेख का समय सन् १८८८ ई० है।

३०५ मोहन (कवि)—मोहन हिंदी भाषा के शक्तिशाली लेखक थे। इन्होंने देवी देवताओं की स्तुतियाँ रची हैं। इनमें पाँच विभिन्न ग्रंथों के निम्नलिखित सात हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं—

(१) हनुमान कपीदा विजय के दो हस्तलेख।

(२) बामुदेव अष्टक का एक हस्तलेख।

(३) राम अष्टक का " "

- (४) नरसिंह अष्टक का एक हस्तलेख ।
 (५) आदिशक्ति के कवित्त का ,,
 (६) हनुमानजी के कवित्त का ,,

इन सब में प्राचीनतम संवत् १८७६ (सन् १८१९ ई०) का है इन लेखों ने रचनाकार के विषय में कुछ नहीं ज्ञात होता । इतना अवश्य ज्ञात होता है कि बहुत से मोहन कवियों में ये मोहन कवि मध्यभारत के चरग्वारी स्थान के रहने वाले थे ।

३०६ मोहनदास कायस्थ—मोहनदास कायस्थ जो पवनविजय स्वरोदय के रचयिता हैं, हरदोई जिले में कुरमठ के रहनेवाले थे । इनके ग्रंथ का विवरण विगत खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ सत्या १०७ में दिया जा चुका है । रचयिता संवत् १६८७ (सन् १६३० ई०) के लगभग विद्यमान थे क्योंकि इन्हीं वर्ष ग्रंथ समाप्त हुआ था । समय सूचक दोहा इस प्रकार है—

संवत् सोरह से रची ऊपर अस्मी मात ।

विष्णु मते वीता वरण मारग मुदि तिथि मात ॥

अर्थात् वैष्णवों के अनुसार संवत् १६८७ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ । यष्टि दिन का नाम भी दिया होता तो निश्चयपूर्वक कहा जा सकता कि उम्र दिन बुधवार १ दिवसर सन् १६३० ई० थी । उस दिन सूर्योदय के ११ घंटे बाद सप्तमी समाप्त होकर अष्टमी लगी थी । मंगलवार को रिक्ता तिथि थी और सोमवार २९ नवंबर को पष्टी थी । जो भी हो समय विलकुल ठीक है ।

३०७ मोहनदास (जन)—मोहनदास या जनमोहन ने जो ओढ़छा राजप्रासाद में मंदिर के पुजारी थे सनेह-लीला नामक पोथी लिखी है जिसके दो हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं । इस ग्रंथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ ई० सत्या २६७ में दिया जा चुका है ।

३०८ मोहनसूरत—वारहमासा लेखकों में मोहनसूरत भी एक है जिन्होंने राधा जी का वारहमासा लिखा है जिसमें राधा की कृष्णवियोग में दुःखी दिखाया गया है । उसके साथ ही इन्होंने ललितामखी का वारहमासा भी जोड़ दिया है जिसमें राधा की मखी ललितिका का भी वही कृत्य वर्णित है ।

३०९ मोतीलाल—मोतीलाल ने गणेशपुराण लिखा है जिसके पाँच हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं । इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सत्या २८२ में भी लिखा जा चुका है । प्राचीनतम हस्तलेख संवत् १८७५ (सन् १८१८) का है ।

३१० मूलचंद्र—मूलचंद्र ने जुगल-विहार लिखा है जो खोज में पहली बार उपलब्ध हुआ है । हस्तलेख का समय संवत् १९१४ (सन् १८५७) है ।

३११ मुन्ना—मुन्ना ने सनातन कल्पलतिका नामक पोथी संतति-निग्रह पर लिखी है । खोज में यह पहली बार मिली है ।

३१२ मुरली—मुरली ने गुरु की स्तुति में गुरुमहिमा लिखी है। ये सत्नामी मंत्रदायानुयायी थे। हस्तलेख का समय संवत् १८२६ (सन् १७७२ ई०) है। यही रचना-काण्ड भी प्रतीत होता है।

३१३ नागरीदास—नागरीदास की राम पंचाव्यापी इस खोज में मिली है। यह सुप्रसिद्ध कवि नंददास की इसी नामकी राधा-कृष्ण-केटि-विषयक रास पंचाव्यापी से बोधी बड़ी पुस्तक है। इनका यह ग्रंथ काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला में प्रकाशित भी जा चुका है। इसके संपादक बापू राधाकृष्णदास ने इसे हमकी मसुरतम रचना बताया है। किंतु नागरीदास के और ग्रंथ भी कुछ कम मसुर नहीं हैं। बुर्मांग से हमका रचनकाल नहीं दिया है जिससे यह पता लगाना कठिन हो गया है कि अजमेरकाल में बननेवाले इसी नाम के चार या पाँच कृष्णमठ नागरीदासों में से ये कौन थे। हममें से सबसे पुराने तो बिहारिनदास के सिष्य थे जिनका विचारण खोज विवरणिका सन् १९२३-२४ संख्या २९१ में दिया जा चुका है। ये सोलहवीं शती के अंत में विद्यमान थे। दूसरे कृष्णगढ़ के महाराज थे जो विरल हाकर वृदाचर में बस गए थे और अपना नाम नागरीदास रख दिया था। हमका समय लगभग १७२५ ई० है। तीसरे हमसे दस वर्ष बाद के बताये गए हैं और चौथे तीस वर्ष और बाद के। मरे विचार से काण्डकोट में महाराज नागरीदास सर्वोत्कृष्ट थे और यह ग्रंथ उन्हीं का रचा है। उन्होंने प्रचुर परिमाण में रचना की है। मिश्र अनुओं ने हमके ऐसे ७७ ग्रंथों का उल्लेख किया है किंतु उनमें रास पंचाव्यापी का नाम नहीं है। यह सूची निश्चित रूप से अपूर्ण है। अला नामामात्र सामान्य बात है। रचनाशीली और उपनाम नागरी या नागरीदास जो हम लोगों से परिचित हो गए हैं और जिनका प्रयोग हम रचना में हुआ है उन्हीं के रचनाकार होने का समर्थन करते हैं।

३१४ नकुल—नकुल के साहित्योपेय का विचारण खोज विवरणिका सन् १९०९-११ में दिया जा चुका है। पाँचों पाँचों के नकुल के समय हिंदी का जन्म नहीं हुआ था। नकुल पद्य-विद्या में निपुण प्रसिद्ध थे और संस्कृत में नकुल कृत अद्व-विक्रितिक ग्रंथ भी है जिसका उल्लेख हम उपलब्ध ग्रंथ के अंत में है। अनुवादक ने अपना नाम छिपा दिया है।

३१५ नामक—जिन धर्म के प्रवर्तक गुरु नामक का विचारण विभिन्न खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। देविद खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या २६३। हम बार उनकी 'सुखमयी' की एक प्रति मिली है।

३१६ नंददास—नंददास प्रसिद्ध कवि हुए हैं हमका विचारण खोज-विवरणिका सन् १९०२, १९०६, १९०९, १९१७-२० और १९२६-२८ में दिया जा चुका है। इस बार हमने अनेकप्रनाममाला के आठ हस्तलेख और राजगीति की दो प्रतियाँ मिली हैं। राजगीति की एक प्रति का समय संवत् १९२३ (सन् १८६९) है। अनेकप्रनाममाला का प्राचीनतम हस्तलेख संवत् १८१३ (सन् १७५९ ई०) का है।

३१७ नंदकिशोर—नंदकिशोर कलकत्ता निवासी ने मातंगरायण की कथा नामक पुस्तक लिखी है जिसका रचनाकार निम्नलिखित छंद में है—

वर्तमान खोज में मिले हैं। जिनमें से प्राचीनतम मन् १६७८ ई० का है। ग्रंथ की रचना सवत् १६४६ (मन् १५९२ ई०) में हुई थी।

३३३ नजीर—अकबरवाद के नजीर ने रफस्यवादी शाखा की कथा हम नामा रची है। वर्तमान खोज में इसके दो हस्तलेख मिले हैं। रचनाकाल ई सवत् १६१८ (सन् १८६१ ई०)।

३३४ निधान कवि—निधान कवि ने अष्टव्यवधी पशु-विज्ञान पर साल्होट्र ग्रंथ लिखा है जिसे इन्होंने नवीन अनुवाद कहा है और जिसका आरंभ इन्होंने बुधवार माघव शुक्ल ५ सवत् १८१२ तदनुमार १६ अप्रैल सन् १७५५ ई० में किया। उपर्युक्त ग्रंथ किमी सरदार सैयद अकबर अली के अनुरोध पर रचा गया था। इसका विवरण खोज-विवरणिका मन् १६१२-१६ सत्या १२४ और १९२३-१५ में दिया जा चुका है किन्तु दोनों ही में समय सूचक पद्य का अर्थ गलत करने से रचनाकाल अशुद्ध हो गया है। लिखा है—'सवत् वसु^{१८००} दम से जहाँ उत्तर जानौ भानु^{१२}।' इसका तात्पर्य १८१२ ई, १८०० नहीं।

३३५ निधिरानी—उन्नाव जिले में पुरवा रणजीत के राजा गिरिजाद्वय सिंह की पत्नी निधि रानी ने अपने गुरु और राम की स्तुति में राम मिलन नामक ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय सवत् १९४० (सन् १८८३ ई०) है।

३३६ निहालदास—निहालदास के श्री राधा कृष्ण हिंडोल, रामलीला और सग्रह सब नवोपलब्ध रचनाएँ हैं। इनका रचनाकाल नहीं दिया है। प्राचीनतम हस्तलेख सन् १८४१ ई० का है। रचनाकार के विषय में कुछ ज्ञात नहीं है।

३३७ नित्यानन्द—नित्यानन्द ने 'ग्रह-कर्म-विचार' नामक ज्योतिष का ग्रंथ लिखा है जो पहली बार मिला है। इसकी रचना सवत् १८८५ (सन् १८२८ ई०) में हुई। हस्त-लेख दो वर्ष बाद तैयार किया गया था।

३३८ पद्माकर भट्ट—पद्माकर भट्ट प्रसिद्ध कवि हुए हैं और इनका विवरण कति-पय खोज-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है, किन्तु विस्तार से खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ मस्या १२३ में दिया गया है जिसमें भूल से इनका मृत्यु-संवत् १८३३ ई० के स्थान पर १८०३ ई० लिख गया है और इसकी पुनरुक्ति सन् १६२३-२५ की खोज विवरणिका में भी हो गई है। ये सन् १७५३ ई० में उत्पन्न होकर अस्सी वर्ष पर्यंत जीवित रहे और इन्हें जयपुर उदयपुर, ग्वालियर, मत्तारा, बुंदेलखंड की अनेक रियासतों आदि के दरबार देपने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जहाँ इनका शानदार स्वागत हुआ था। ये बहुत ही शिक्षाली कवि थे और सोलह वर्ष की ही अवस्था में अपनी जन्मभूमि सागर के मराठा दरवार से समान प्राप्त कर चुके थे। इस खोज में प्राप्त ग्रंथों में जगद्विनोद जयपुराधीश जगतसिंहके लिए लिखा गया था और हिम्मत बहादुर विरूदावली हिम्मत बहादुर गोसाईं की प्रशंसा में जो अपने समय में बुंदेलखंड के राजनीतिक सरदार थे। तीसरा ग्रंथ 'गंगालहरी' गंगा की स्तुति में स्वपाप प्रक्षालनार्थ-लिखा गया है जो कोढ़ के रूप में इनके शरीर में प्रकट हो गया था।

३३६ पदुमनदास कायस्थ - पदुमनदास कायस्थ न द्वितोपदास का अनुवाद उन्नी नाम से हिंदी में खैरवार सरदार वृद्धसिंह की संरक्षता में किया है। यह नवोपसंभ प्रभ है और इसकी रचना बुधवार १० मार्च सन् १६८० ई० को आरंभ हुई। अनुवाद पत्र में दो और अध्या है।

३४० पहलघामदास - पहलघामदास सत्नामी संप्रदाय के थे। इनका मूळ स्थान मुहलतानपुर जिले में था किन्तु ये रायबरेली के बीलीपुर में आकर बस गए थे। इनकी निम्नलिखित चार पुस्तकें मिली हैं—

(१) मुक्त पान (२) विरहसागर, (३) अरिहस और (४) उपाख्याम विवेक अंतिम ग्रंथ का विवरण पहले दिया जा चुका है (देखिए शोक-विचारणिका १६२३-२५ संवत् ३०८)। ये उन्नीमर्षी शास्त्री के प्रथम चरण में विद्यमान थे।

३४१ परमानन्ददास - परमानन्ददास ने दाम्पतीका या वृषिकीका लिखी है। इनका विवरण शोक-विचारणिका सन् १६२३ २५ तथा अन्य विगत विचारणिकाओं में दिया जा चुका है।

३४२ परमानन्द (स्वामी) - परमानन्द (स्वामी) ने परमानन्द-विकास या बहुरंगी सार में भक्ति-विषयक प्रचलित गीतों की रचना की है। इस ग्रंथ की दो प्रतिर्पों मिली हैं एक संवत् १९३० की और दूसरी संवत् १९३६ की। रचनाकाळ दिया है—

संवत् शशि तिथि बसु गमन बुद्धम बरी मासु मास ।

बहुरंगी मञ्जनाबली परमानन्द प्रकास ॥

यदि हमें अंशना वामती गति के नियम से पढ़ें तो विमलान संवत् जान पड़ेगा। यदि इसे वाहिनैसे पढ़ें पढ़ें तो हमकी रचना हुए कुछ मास ही वर्ष होंगे जो अर्धमय है। क्योंकि संवत् १६३० (सन् १८७३ ई०) में तो हमारी प्रतिक्रिया ही हुई थी। यह संभव है कि लिपिकार ने 'बसु' को अस्वाभाव्य कर दिया है। यदि बसुनिधि हो ती संवत् होगा १८९०। किन्तु वास्तविक विषय का उल्लेख न होने से इसे गणना करके नहीं मिलाया जा सकता।

३४३ परखनदास पांडे - अजमेर या जदोपा के निकट मगरसी परगना में पंडितपुर के निवासी परखनदास पांडे ये सोनार-विद्या ग्रंथ लिखा है जिसका विषय इनके लिप्य अक्षितीय ही है। इन्होंने विभिन्न प्रकार के स्वर्ण रसत और उनके मूल, उनके परीक्षण एवं सोनारों की बोलियों का वर्णन किया है। इन्होंने उन लोगों को बहुत तथा साप भी दिया है जो इनके ग्रंथ से दूसरों को उगेंगे। इसका रचनाकाळ निम्नलिखित है—

संवत् मम सो मंद विष्णु, मास कृष्ण तिथि काम ।

विन बुधवार विचारि कै, बीध जान अमिराम ॥

अर्थात् संवत् १९२० माघ बदी १० बुधवार। 'सो' को 'दो' मानने से ठीक गणना होगी बुधवार ३ फरवरी १८६४ ई०।

३४४ परसुराम—परसुराम ने उपा चरित्र (वाणासुर की कन्या का वृत्तांत) लिखा है । इनका विवरण विगत खोज विवरणिकाओं सन् १९१२-१६ सख्या १२७ और १६२३-२५ सख्या ३११ में दिया जा चुका है । ये सन् १६३० के लगभग विद्यमान थे ।

३४५ परवतदास - राम कलेवा रहस्य और शत रहस्य के कर्ता परवतदास का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १२५ सौर १९२३-२५ सख्या ३१२ में दिया जा चुका है । पहले में कुछ विस्तृत विवरण है । शत रहस्य के तीन हस्तलेख और राम कलेवा रहस्य या जनक राम सवाठ के दो हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं । इन्में से प्राचीनतम सवत् १७७० ई० का है ।

३४६ पतितदास स्वामी—श्रैसवाड़ा में गिरिधरपुर के स्वामी पतितदास ने निम्नलिखित ग्रंथ लिखे हैं—

(१) वैद्यक कल्प, औषधि एव झाड़फूँक विषयक ग्रंथ	१ प्रति
(२) कुडली फल या ज्योतिष (रचनाकाल १८८० ई०)	२ प्रति
(३) राजस्वत विधान	३ प्रति
(४) देवी-स्तुति	१ प्रति
(५) गंगा स्तुति (रचनाकाल १८४० ई०)	१ प्रति
(६) अस अंस ग्रहण गुण या नीति (रचनाकाल १८७८ ई०)	१ प्रति
(७) शिव-स्तुति	१ प्रति
(८) विश्वरूप-विनय	१ प्रति
(९) नदी, औषधि-विषयक (रचनाकाल १८७४ ई०)	१ प्रति
(१०) दोहावली, भक्ति एव नीति-विषयक	१ प्रति
(११) यात्रा-गुण	१ प्रति
(१२) रमलादि फलित ज्योतिष-विषयक	१ प्रति
(१३) तत्रमत्र जत्रावली, झाड़फूँकविषयक	१ प्रति

उपरिलिखित सवत् रचयिता का विद्यमान-काल सूचित करते हैं । इनका अंतिम जीवन अयोध्या में बीता जहाँ इनके नाम से सवद्ध एक मंदिर भी है ।

३४७ प्रगन—प्रगन के अमरगीत का विवरण खोज विवरणिका सन् १६२३-२५ सख्या ३१६ में दिया जा चुका है । इसके दो हस्तलेख वर्तमान खोज में भी मिले हैं । उनमें से एक का समय सवत् १८६५ (सन् १८०८ ई०) है ।

३४८ प्रानकिसन—कश्मीरी ब्राह्मण प्रानकिसन ने मोहिनीचरित्र लिखा है जिमकी दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली है । इसमें जान आलम की कथा वर्णित है जो उर्दू से अनुवादित है । इसका रचनाकाल सवत् १९२१ (सन् १८६४ ई०) है ।

३४९ प्राणनाथ—धामी सप्रदाय के प्रवर्तक प्राणनाथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १६२३-२५ और १६२०-२२ में दिया जा चुका है । यद्यपि ये अच्छे रचयिता

मही थे, फिर भी इन्होंने विभिन्न मापा मिश्रित प्रचुर-सोमवायिक साहित्य प्रस्तुत किया है जिसमें हिंदी और मराठी का संयोग है। इनके लिखे निम्नलिखित ग्रंथ वर्तमान शोध में उपलब्ध हुए हैं— (१) फरमान, (२) तारतम्य (३) घनी जी की चाले की रीपाई, (४) जंजुर कम्म (५) तीनों स्वरूप की प्रकट (६) प्रकरण सगरम का (७) रमत रहस की (८) लीला मीतल पुरी। ये इनके मध्यम काल के पूर्व स्वतंत्र ग्रंथ नहीं हैं, इनके प्रभाव ग्रंथ 'कुसुमम स्वरूप' के अंत में हैं। इसका विचार सन् १९२१ २५, पृष्ठ ६ और उसके पहले की शोध-विवरणिकाओं में हो चुका है। शोध-विवरणिका १९२० २२ पृष्ठ २७ तथा उसके पहले की शोध-विवरणिका भी इतिहास। वर्तमान शोध में उपलब्ध इस्तलेखों में से एक को छोड़कर जिसमें सन् १८५२ (सन् १७९५ ई०) दिया हुआ है, और किसी में सन्-संकेत नहीं दिया है।

३५० प्रताप जैन—प्रताप जैन पूत माल-मार्ग निरूपण ग्रंथ पहली बार लिखा है। इस्तलेख का समय संवत् १८२८ (सन् १७७१ ई०) है। रचनाकार के विषय में कुछ भी शक्त नहीं है।

३५१ प्रताप साही—प्रतापसाही ने काव्य विद्या नामक ग्रंथ लिखा है जिसके पाँच इस्तलेख वर्तमान शोध में मिले हैं। कवि का विवरण शोध-विवरणिका सन् १९०६ ०८ और १९०५ संख्या ४९ में दिया जा चुका है। ग्रंथ का निर्माण सन् १८८६ (सन् १८२९ ई०) में हुआ था। प्राचीनतम इस्तलेख का समय सन् १८४४ ई० है।

३५२ प्रतापसिंह—जयपुराधीन महाराजा प्रतापसिंह ने अमृतसागर नामक ग्रंथ का ग्रंथ सन् १७७९ ई० में लिखा है। इस ग्रंथ का विवरण शोध-विवरणिका सन् १९२३ २५ संख्या ३२२ में दिया जा चुका है। इसके चार इस्तलेख वर्तमान शोध में मिले हैं जिनमें से प्राचीनतम संवत् १८७३ (सन् १७८८ ई०) का है।

३५३ प्रयागदास (स्यामी)—प्रयागदास ने प्रयागविज्ञानविषय नामक ग्रंथ धार्मिक उपासना संबंधी लिखा है। ये प्रकाशनी थे और फैजाबाद के निकट रामपुर में एक कुटिया में रहते थे। अंत में ये प्रतापगढ़ जिले में सई नदी के तट पर चले गए थे। वे उर्मीसकी छाती में विद्यमान थे।

३५४ प्रयागदास पाठक—काजपुर जिले के बिस्दौरा निवासी प्रयागदास पाठक ने काशीराज बंशावली में बनारस के राजाओं का वंश वृक्ष लिखा है। वर्तमान शोध में उपलब्ध इस्तलेख रचयिता की ही कम्म से संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) का लिखा हुआ है। यही इसका रचनाकाल भी है।

३५५ प्रेमदास—प्रेमदास ने विमानिक लीला लिखी है जिसका विवरण शोध विवरणिका सन् १९०९ ११ संख्या २२९ की में दिया जा चुका है। ये कथकाल वैश्य थे तथा रामानुजी प्रेमदास के अनुयायी थे। वे बुंदेलखंड के अजयगढ़ में रहते थे। मिश्रकृतियों में ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १८२७ (सन् १७७० ई०) माना है।

३५६ प्रेमदास—गोरखपुर जिले में बड़ागांव के प्रेमदास ने जैमिनी पुगण का हिंदी अनुवाद किया है जिसे उन्होंने हाजीपुर के धरणीधर पंडित से सुना था ।

३५७ प्रेमनिधि प्रेमनिधि ने कुछ भक्ति विषयक छठ करणा-पचीसी नाम से लिखा है । हस्तलेख का समय संवत् १८९१ (सन् १८३९ ई०) है ।

३५८ प्रेमसागर—प्रेमसागर ने कुशी मग विहार चारहमासा लिखा है । हस्त-लेख का समय संवत् १९१४ (सन् १८५७ ई०) है ।

३५९ पृथ्वीजस—पृथ्वीजस ने शत पंचाशिका नामक ज्योतिष का ग्रंथ लिखा है । ये उसी सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य बराहमिहिर के विख्यात पुत्र हैं जिनकी मृत्यु सन् ५८७ ई० में हुई थी । वास्तविकता यह है कि बराहमिहिर के पुत्र ने जिनका शुद्ध नाम प्रथुयदा था, संस्कृत में शत पंचाशिका या होड़ा शत पंच नामक ग्रंथ लिखा था जिसका आधुनिक हिंदी में छदानुवाद वर्तमान ग्ज में उपलब्ध यह ग्रंथ है । अनुवादक ने अपना नाम नहीं दिया है, किंतु वह ग्रंथ के लिपिकाल संवत् १९१८ (सन् १८६१ ई०) से बहुत दूर नहीं हटाया जा सकता । ग्रंथ में जन्मकुंडली तथा तत्पयथी ज्योतिष गणित के अंकों को तैयार करने की विधि बताई गई है । यह ग्रंथ एक बार पहले भी सन् १९१७-१९ की ग्ज में मिल चुका है जिसकी विवरणिका में इनके दो हस्तलेखों का उल्लेख तृतीय परिशिष्ट में सरया ८१ और ८२ पर हो चुका है । उसमें पृथुयदा नाम शुद्ध दिया हुआ है ।

३६० पृथ्वीलाल—पृथ्वीलाल ने स्वर्गीय वैद्य धन्वतरि की स्तुति में धन्वतरि स्तुति नामक ग्रंथ सन् १८६१ ई० में लिखा है । उसका समय सूचक छठ निम्न-लिखित है—

सामन वदि एकादशी गुरु वासर सुपदाई ।

संवत् उनइस से बरस, अनइस ऊपर आई ॥

तात्पर्य यह कि ग्रंथ गुरुवार, सावन वदी ११ संवत् १९१९ को संपूर्ण हुआ । संवत् १९१९ (या विगत संवत् १९१८) में यह तिथि गुरुवार १ अगस्त सन् १८६१ ई० को थी उस दिन एकादशी सूर्योदय के ९ घंटा ५० मिनट बाद थी । रचयिता भदावर राज्य में भिंड का निवासी था । उसने लिखा है कि मैंने इसी नाम की संस्कृत की रचना का अनुवाद किया है ।

३६१ प्रियादास—प्रियादास भक्तमाल की अपनी भक्तस बोधिनी टीका के लिए सुप्रसिद्ध हैं । वर्तमान खोज में उसकी दो प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं । इसकी रचना संवत् १७६९ (सन् १७१२) में हुई । एक हस्तलेख का समय संवत् १८६५ (सन् १८०८ ई०) है । रचयिता का विवरण खोज विवरणिका सन् १९२०-२२ सख्या १५५ और खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या ३२३ में दिया जा चुका है । रचना में क्षेपक भी बढ़ रहा था इसका प्रमाण यही है कि सन् १८५६ की प्रति में लैला मजनों भी जोड़ दिए गए हैं । प्रियादास संग्रह नामक सन् १८५६ ई० का दूसरा हस्तलेख भी मिला है जिसमें कृष्णलीला तथा गीत हैं और कुछ गजलें भी हैं ।

३६२ पूरन—पूरन मे बाणी-भूपल नामक एक अलंकार ग्रंथ लिखा है जिसके दो हस्तलेख बतमान खोज में मिले हैं।

३६३ पुरुषोत्तमदास—दादरा के पुरुषोत्तमदास ने जैमिनी-पुराण का हिंदी अनुवाद किया है। ये बहुत अच्छे रचनाकार प्रतीत होते हैं।

३६४ पुरुषोत्तम शुक्ल—पुरुषोत्तम शुक्ल ने मारतेंदु हरिश्चंद्र की भाषा से विभिन्न कवियों के छंदों का संग्रह संवत् १९२६ (सन् १८९९) में किया है। हस्तलेख का समय संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) है।

३६५ राधाकृष्ण चौधे—राधाकृष्ण चौधे ने बिहारी सतसई की पद्यपत्र टीका की है जिसका बिबरण खोज-बिबरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ९६ में दिया जा चुका है। हस्तलेख का समय संवत् १८७७ (सन् १८५० ई०) है।

३६६ राघव या राघवदास—राघव या राघवदास व राघवचैताननी प्रश्न नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें कौड़ी छंदकर प्रश्नों का उत्तर बर्णित है। हस्तलेख का समय संवत् १८७७ (सन् १८१७ ई०) है।

३६७ रघुनाथ—रघुनाथ ने रस-मंजरी नामक नायिकामेघ का ग्रंथ लिखा है। बस्तुतः यह इसी नाम के संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है। इसका बिबरण खोज-बिबरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ३१० में दिया जा चुका है। रघुनाथ गंग कवि के शिष्य थे और बहौलीर के समकालीन थे। हस्तलेख संवत् १७४१ (सन् १६८४ ई०) का है।

३६८ रघुनाथ—सीतापुर जिले में संदीपा के रघुनाथ ने कृष्ण खाकिनी का हागड़ा नामक छोटी सी पुस्तिका संवत् १८८४ (सन् १८२७ ई०) में लिखी है।

३६९ रघुनाथ संदीपन—कासी के रघुनाथ संदीपन का बिबरण खोज-बिबरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १३८ और १९२३-२५ संख्या ३२६ में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में काव्य कलाधर और बालगोपाल चरित नामक इनकी दो पुस्तकें मिली हैं। अंतिम ग्रंथ इस खोज में ही मिला है। रचयिता अठारहवीं सती के मध्य में विद्यमान थे।

३७० रघुनाथदास जी—तुलसीदास (जयोध्या) के रघुनाथदास जी राम मनेरी ने 'मङ्गलाक्ष को माहात्म्य' नामक ग्रंथ संवत् १९१७ (सन् १८५७ ई०) में लिखा है। इनका बिबरण एक बार खोज बिबरणिका सन् १९२३-२४ संख्या ३२८ में हरिकाम मुमिरीजी के रचयिता के रूप में दिया जा चुका है। बतमान खोज में उपलब्ध ग्रंथ इनकी बचोपलब्ध रचना है।

३७१ महाराज रघुराजसिंह—सीता-नरस रघुराज सिंह शक्तिप्राप्ती रचनाकार थे। इनकी आर्जुनविधि और राम स्वयंवर नामक पुस्तकें वर्तमान खोज में मिली हैं। इनका बिबरण खोज-बिबरणिका सन् १९०१ और १९०३ में दिया जा चुका है। पहले ग्रंथ की रचना संवत् १९११ (सन् १८५४ ई०) में और दूसरे की संवत् १९३७ (सन् १८७७ ई०) में हुई थी।

३७२ **रघुनाथदास**—मानसदीपिका के रचयिता रघुनाथदाम का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३२७ में दिया जा चुका है। यह ग्रंथ फिर मिला है और इसके साथ इनके दो और ग्रंथ विश्राम मानम और सांकावली रामायण मिले हैं। सबका एक ही विषय है अर्थात् तुलसीदास कृत रामायण का स्पष्टीकरण। निस्संदेह रघुनाथ तुलसी कृत रामायण के मर्मज्ञ थे और काशीनरेश ने इन्हें इन टीकाओं को रचने के लिए इसलिये प्रोत्साहित किया था कि ये टीकाओं अयोध्या के बाबा रामचरनदास लाहौर के संत-सिंह बखरा के राजा गोपालशरण सिंह और अपने गुरु विद्यारण्य तीर्थ के नाम पर रामायण परिचर्या के लेखक काशी के स्वामी जी महाराज की टीकाओं ने भी उत्कृष्ट हो।

३७३ **रामकवि**—ग्लभद्र विलास के रचयिता रामकवि कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और मल्लनपुर के बलभद्रसिंह की संरक्षता में रहते थे। रचना का समय निम्नलिखित पद्य में दिया हुआ है—

राम रन्ध्र वसु चन्द्र लिपि सवत सहित विलास ।
कातिक सुदि दिग तिथि विदित सुर गुरवार प्रभास ॥

अर्थात् संवत् १८६३ गुरवार कार्तिक सुदी १० तदनुगार १७ नवंबर सन् १८३६ ई०। उस दिन नवमी सूर्योदय के ५ घंटे ४५ मिनट बाद समाप्त हो गई थी और ढसमी लग गई थी।

३७४ **रामआसरे**—रामआसरे ने वैद्यकसार संग्रह नामक वैद्यक का ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय संवत् १९१० (सन् १८५३ ई०) है।

३७५ **रामचंद्र वसु**—रामचंद्र वसु ने कादवरी का गद्यानुवाद संवत् १९२४ (सन् १८६७ ई०) में किया। इसके चार हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं जिनमें से प्राचीनतम उपर्युक्त संवत् का ही है।

३७६ **रामचंद्र**—आगरा के रामचंद्र ने उपदंश-चिकित्सा नामक ग्रंथ लैंगिक रोगों की चिकित्सा के लिए संवत् १९२७ (सन् १८७० ई०) में लिखा है।

३७७ **रामचंद्र**—राम-विनोद के कर्ता रामचंद्र का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२, पृष्ठ १७ और खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या ३३७ में दिया जा चुका है। ग्रंथ की रचना संवत् १७२० (सन् १६६३ ई०) में हुई। इस ग्रंथ की दो प्रतियाँ इस खोज में मिली हैं जिनमें एक गद्य में है और दूसरी पद्य में।

३७८ **रामचरनदास**—अयोध्या के रामचरनदास का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११, १९१७-१९ और १९२३-२५ में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं जिनमें काव्य शृंगार नामक ग्रंथ इनके ज्ञात ग्रंथों के अतिरिक्त है—(१) सप्त पञ्चासिका, (२) अष्टयाम सेवाविधि, (३) राम जानकी चरण चिह्न, (४) रामायण बालकांड की टीका, (५) दृष्टांत वैधिका और (६) काव्य शृंगार।

प्रथम तीन ग्रंथों में रचयिता का नाम रामचरम दिया है और दोष में अयोध्या के रामचरनदास । सत पंचामिका चित्रकूट में रची कही जाती है जिससे दो निम्न रचयिताओं के होने का भ्रम होता है, किन्तु पर्याप्त सामग्री के अभाव में संशय दोनों को स्पष्टता बरुग बताना अभी संभव नहीं । किसी मत के पक्ष या विपक्ष में जब तक कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिल जाता, तब तक यह विषय कथ्य में ही पड़ा रहेगा ।

३७६ रामचरन—श्रीहजाने के रामचरन कृत काव्यज्ञान शोत्र विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३४० से मिलता है । इस्तलेख का समय संवत् १७९१ (सन् १७०४ ई०) है ।

३८० रामदास—रामदास ने तीर्थ माहात्म्य लिखा है जिसमें प्रवाग, कशी, गया, शिवनाथ, रामेश्वर, अयोध्या, मथुरा आदि स्थानों की याथा करने के पुण्य का वर्णन है । इस्तलेख संवत् १८९३ (सन् १८३६ ई०) का है ।

३८१ रामदास—रामदास ने गंगा-विवाह लिखा है । यह साधारण रचना है जिसका विशेष महत्त्व नहीं ।

३८२ रामकृष्ण—रामकृष्ण ने दानस्वीक्य लिखी है जो रचना आरंभ करनेवालों के लिए अनुकूल विषय है । रचना उर्दू शैली में है और उसमें संस्कृत के सर्वभूषण शब्दों के साथ फारसी के शब्द भी मिले मिले हैं ।

३८३ रामानन्द—रामरक्षा के कर्ता रामानन्द का विवरण शोत्र विवरणिका सन् १९०० संख्या ७६ में दिया जा चुका है । इस्तलेख का समय संवत् १८८४ (सन् १८२७ ई०) है ।

३८४ रामनाथ—रामनाथ ने पक्षोद्गा श्रीकृष्ण का झगड़ा और दानलोका का पारदमासा लिखा है । बौद्धों का विपिकार एक ही है तथापि उनका समय भी लगभग मुग़ी ७ संवत् १९२७ (सन् १८७० ई०) है ।

३८५ पंडित रामनाथ—जीवपुर के समीप बादशाहपुर के पंडित रामनाथ ने एक छोटी सी पुस्तिका काव्यियादमन नामक लिखी है जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा यमुना में काविया बाग की वना में करने की कथा वर्णित है । यह ग्रंथ पहली ही बार लिखा है । शैली आधुनिक मानुषानिक है । इस्तलेख में कोई सन्-संवत् नहीं दिया है ।

३८६ रामनाथ प्रधान - रामनाथ प्रधान कृत राम कलेवा रहस्य का विवरण शोत्र-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १३३ और शोत्र-विवरणिका सन् १९२३-२३ संख्या ३४६ में दिया जा चुका है । इसी ग्रंथ का दो इस्तलेख वर्तमान सात्र में उपलब्ध हुए हैं । ग्रंथ की रचना संवत् १९०२ (सन् १८४३ ई०) हुई थी ।

३८७ रामनाथ सहाय—अकमार के रचयिता रामनाथ सहाय शोत्र में पहली ही बार मिले हैं । इस्तलेख में कोई सन्-संवत् नहीं दिया है और रचयिता के विषय में भी कुछ बात नहीं है ।

३८८ रामनेस या रमणविहारी—रामनेस या रमणविहारी ने कर्णाटक और राम मठ लीला नामक ग्रंथ लिखे हैं। प्रथम स्तुति विषयक ग्रंथ है और दूसरे में राम द्वारा किए जाने वाले शारीरिक व्यायाम का वर्णन है। तीन हस्तलेखों में से एक संवत् १९१४ (सन् १८५७ ई०) का है।

३८९ रामप्रसाद कथिक—बिहार में वेतिया निवासी रामप्रसाद कथिक ने वेतियानरेश आनदकिशोर के नाम पर आनदरस नामक नायक-नायिका भेद का ग्रंथ रचा है जिसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें नायक के भी उतने ही भेद किए गए हैं जितने नायिकाओं के होते हैं। इसे रचनाकार ने एक छंद में स्पष्ट भी किया है। छंद है—

सुर केसो मंडन विहारी कालिदास ब्रह्म चिन्तामणि मतिराम भूपन सु आनिये ।
लीलाधर सेनापति निपट निवाज निधि नीलकंठ मिश्र सुखदेव देव मानिये ।
आलम रहीम रसखान सुन्दरादिक अनेक सुकवि भये कहाँ ली बखानिये ।
इन भापा हेतु जितनी नायिका करी हैं ते ते नायक हूँ होत इहाँ आदि होते जानिये ।

रचयिता ने ग्रंथ समाप्ति पर समय का उल्लेख इस प्रकार किया है—

सवत् दिन मुनि नाग महि कातिक मास सुपंथ
शुक्ल अष्टमी चार रवि भो संपूरन ग्रंथ

तदनुसार रविवार १२ नवंबर सन् १८२० ई० हुआ यद्यपि उस दिन अष्टमी सूर्योदय के १९ घंटे बाद लगी थी। रचनाकाल ने अपना वर्णन एक पहेली के रूप में दिया है जिसमें १२८ खाने हैं और प्रति खाने में एक अक्षर है। इन्में यदि विशिष्ट ढंग से पढ़ा जाय तो सुखदायक देवता की स्तुति का एक छंद बन जाता है और यदि सामान्य रूप से एक अक्षर छोड़ कर पढ़ा जाय तो निम्नलिखित गद्य सामने आता है—

राम परसाद कथिक वरन महाउर, भाई
आशालदीन के, सुत मुरली करह, नाति
वेनी राम को, पनाति नौल राम कर,
परगना अगुली ताखा, नगर मवासुर

अर्थात् रामप्रसाद जाति के कथिक (कथावाचक) थे। इनका वर्ण महाउर था। ये आशालदीन के भाई, मुरली के पुत्र, वेनीराम के पौत्र और नौलराम के प्रपौत्र थे। ये निवासी थे परगना अगुरी ताखा में नगर मवासुर के। ठीक यही ढंग भिखारीदास का भी है। उन्होंने भी अपना विवरण ठीक ऐसे ही और इसी तरह की शब्दावली में दिया है। (देखिए भिखारीदास का विवरण)।

३९० रामप्रसाद—वारहमासा और वज्रवाहन की कथा के रचयिता रामप्रसाद ने अपने विषय में कुछ नहीं लिखा है। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि ये जैमिनी पुराण के कर्ता त्रिलग्राम के रामप्रसाद भाट ही हैं। वज्रवाहन की कथा उस ग्रंथ का एक अंश मात्र है। इनका दूसरा ग्रंथ जुगल पद है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ सख्या २५४ (बी) में दिया जा चुका है। ये अठारहवीं शती के मध्य में विद्यमान थे।

३३१ रामराज या रामराज—रामराज या रामराज अथवा के सरदार या जमींदार (महाराज या मूमिपार) थे। ये संस्कृत के जानकार थे तथा हिंदी कवियों के संरक्षक थे। एक कवि ने इनके लिए काव्य प्रकाश का हिंदी अनुवाद काव्य प्रकाश नाम से किया है। वास्तविक अनुवादक ने ध्यानपूर्वक अपना नाम अंकित नहीं किया है और उसे अपने संरक्षक के नाम से कर दिया है। ग्रंथ की रचना संवत् १८८० बसंत पंचमी गुरुवार तदनुसार ५ फरवरी सन् १८२४ ई० को आरंभ हुई। इसके प्राप्त दो हस्तलेखों में से एक की पुष्टि का विशेष आश्चर्य है कि जिनमें लिखा है कि संपूर्ण ग्रंथ की एक प्रतिकृति पठारपुर जिला मझौली बमनी के मिश्र कृष्ण शर्मा कवि ब्रह्ममह ने महाराजबिराज को समर्पित की। यह उल्लेख स्पष्टतः सीतापुर जिला मस्तापुर के राजा प्रकाशसिंह से संबंधित है जिसके यहाँ यह प्रति सुरक्षित है। यह ग्रंथ एक बार पहले और मिश्र बुझा है देखिए लोज बिराजिका सन् १९०६-०८ संख्या ३१५ जिसमें रचयिता का नाम रामराज दिया हुआ है।

३३२ रामराज—रामराज ने राम चरितावली या राम चरित लक्ष्मी लिखा है वर्तमान लोज में इनके दो हस्तलेख प्राप्त हुए हैं तथापि इसका विवरण लोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ संख्या १५६ में दिया जा चुका है।

३३३ रामराज—सैता मजदू के रचयिता रामराज का विवरण लोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ३१४ में दिया जा चुका है। इन लोज में प्राप्त तीन प्रतियों में से सबसे पुरानी प्रति संवत् १०१९ (सन् १९६२ ई०) की है।

३३४ रामसहाय काव्यस्य—रामसहाय काव्यस्य ने कुछ तरंगिणी की रचना की है जिसका विवरण लोज-विवरणिका सन् १९०४ संख्या १४ में दिया जा चुका है इनकी दो प्रतियाँ वर्तमान लोज में मिली हैं। दोनों का समय संवत् १९०० (सन् १८३९ ई०) है। रचनाकाल है संवत् १८०३ (सन् १८१९ ई०)।

३३५ रामसले—मंगलाष्टक के कर्ता रामसले का विवरण लोज-विवरणिका सन् १९१७-१९ सं० १३८ में तथा बाद की दो श्रीवाणिक विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। रचयिता अग्ररहनी सती के मध्य में विद्यमान था तथा महज का है।

३३६ रामसिंह—ग्वाठियर के समीप मरहर के राजा रामसिंह ने मनमोहन भक्ति विलास पुष्पक-विलास तथा रस-मिश्रमणि नामक ग्रंथ लिखे हैं जो वर्तमान लोज में उपलब्ध हुए हैं। रचनाकार का समय संवत् १०२० ई० है।

३३७ रणजीतसिंह महाराज—महाराज रणजीतसिंह ने धर्मावर्स नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें धार्मिक हृद्य पूर्व उनके माहात्म्य का वर्णन है।

३३८ राय रणकरण—राय रणकरण ने आर्जुन मंजरी नामक मगवती स्तव का एक ग्रंथ लिखा है। इनकी प्राप्ति पहली ही बार हुई है। न तो इनके लेखक के ह बिषय में कुछ ज्ञात है और न रचना के समय का ही बिषय में। हस्तलेख का समय संवत् १८२८ (सन् १७७१ ई०) है।

३६६ रंगीलाल—आगरा के रंगीलाल ने तोता मीना की कहानी नामक ग्रंथ में एक छोटी सी कथा लिखी है जो पहली ही बार उपलब्ध हुई है। यह सुग्गा-सुग्गी का सवाद है जिसमें पुरुष ने सारा ढोप मादा के सिर मढ़ा है और मादा ने पुरुष के। रचना खड़ी बोली की है। हस्तलेख का समय सवत् १९०७ (सन् १८५० ई०) है।

४०० रंगीलाल मथुरा के रंगीलाल ने वैद्यक जर्नाही लिखी है जिमकी रचना संवत् १६२७ (सन् १८७० ई०) म हुई। यह भारतीय शल्य-विज्ञान विषयक सचित्र ग्रंथ है।

४०१ रंगीलाल द्विज—रंगीलाल द्विज ने वारहमासा निपट निदान ग्रंथ लिखा है जिसमें अल्प वयस्क लड़के से विवाह के दुःपरिणाम वर्णित है।

४०२ रसनिधि—रसनिधि ने श्रीकृष्ण स्तुति में १००० छंदों का रत्न हजारा नामक ग्रंथ रचा है। इसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १६०३ संख्या ९४ में भी दिया जा चुका है। रचनाकार सत्रहवीं शती का है।

४०३ रसरूप—रसरूप उपनाम सुकवि ने 'उपालभ शतक' नामक उद्धव गोपी-सवाद लिखा है। उपलब्ध हस्तलेख ठीक वही है जो खोज-विवरणिका सन् १६०९-११ संख्या २६१ में उल्लिखित है और उसमें वही सवत् भी दिया है अर्थात् स० १८८६ (सन् १८३२ ई०)। रचनाकार अच्छा लेखक है और संस्कृत तथा फारसी का उसे अच्छा ज्ञान है। उसने फारसी शब्दों का ऐसा स्पष्ट व्यवहार किया है कि जिससे रचना अरुचिकर न हो जाय।

४०४ रसिकराम—रसिकराम कृत सनेहलीला का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ३१० में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में उक्त ग्रंथ के दो हस्त-लेख मिले हैं जिनमें से एक संवत् १८२६ (सन् १७६९ ई०) का है और दूसरा सवत् १८७२ (सन् १८१५ ई०) का।

४०५ रसिकरूप—रसिकरूप ने माँझ वत्तीसी नामक ग्रंथ रचा है जो नवोपलब्ध रचना है। इसमें श्रीकृष्ण के भक्ति विषयक गीत हैं। हस्तलेख में कोई सन् सवत् नहीं है।

४०६ रतन कवि—फतहप्रकाश नामक ग्रंथ के कर्ता रतन कवि का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०६-११ संख्या २६६ और खोज विवरणिका सन् १६२३-२५ संख्या ३६० में दिया जा चुका है। उपयुक्त ग्रंथ पन्ना के फतहसिंह के नाम पर लिखा गया है। हस्तलेख का समय सवत् १६०६ (सन् १८९९ ई०) है।

४०७ रविदत्त—रोहतक जिले में बेरी के गौड़-ब्राह्मण रविनाथ ने सुखेण वैद्यक लिखा है जो सुपेण कृत संस्कृत ग्रंथ आयुर्वेद महोदधि का अनुवाद है। यह अनेक परंपरा-युक्त महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है।

४०८ रिपभदेव—फलित ज्योतिष के ग्रंथ रमल ग्रंथ प्रश्नावली के कर्ता रिपभ देव पहली बार वर्तमान खोज में ही मिले हैं। रचयिता के विषय में और कुछ ज्ञात नहीं है। हस्तलेख का समय संवत् १९१२ (सन् १८५५ ई०) है।

४०६ रुद्रनाथ—बिरहौर के रुद्रनाथ उपनाम कुशली कवि न बारहमासा
खिला है जिसमें पति वियोग में नायिका-बिरह वर्णित है। इसका रचनाकाल दिया है संवत्
१८७६ सावन वदी २ शुक्र तदनुसार ९ अक्टूबर सन् १८१९ ई०।

४१० रूपचंद—रूप चंद ने पञ्चरम्याज नामक तीन धर्म का ग्रंथ लिखा है।
रचनाकार के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। ये पहली बार वर्तमान काज में ही मिले हैं।

४११ रायचंद्र नागर—राय चंद्र नागर का विवरण खोज-विवरणिका सन्
१९०९ ११ संख्या २३९ में विभिन्न मासिक के कर्ता के रूप में और खोज-विवरणिका
सन् १९१०-१९ संख्या १६३ में गीत गोविंद टीका के रचयिता के रूप में दिया जा चुका
है। वर्तमान खोज में दूसरी पाथी के तीन हस्तलेख मिले हैं जिनमें से एक का नाम गीत
गोविंददर्प है। सबसे पुराना हस्तलेख संवत् १९०३ (सन् १८४६ ई०) का है।

४१२ सयसिंह—सबसिंह चौहान महाभारत के प्रसिद्ध अनुवादक हैं।
विगत अनेक काज विवरणिकाओं में इनका विवरण दिया हुआ है जिनमें से अंतिम सन्
१९२३-२४ की है जिनमें संख्या ३६३ पर भ्रम्य टक्केल सिंघे हुए हैं। सबसिंह बहुत ही
योग्य लेखक थे। हमी से इनके ग्रंथों की प्रतिक्रियाओं की भारत में एक परंपरा ही चली।
वर्तमान खोज में इनकी रचना के निम्नलिखित हस्तलेख मिले हैं—

	रचनाकाल	लिपिकाज	संख्या
(ए) महाभारत कर्णपर्व	१९७७ ई०	१८६० ई०	४
(बी) शास्य पर्व	१९६७ ई०	१८६३ } १८८७ }	२
(सी) उपोदपर्व	"	१८७६ } १८७८ }	२
(डी) विराट पर्व	"	१८६७ } १८७९ }	२
(ई) घाति पर्व	"	१८७७	१
(एफ) बल	"	१८६७	१
(जी) भीष्म पर्व	१९६१	१७३३	४
(एच) समा पर्व	१९७०	१८९५ } १८८४ }	२
(आई) स्वर्गारोहण पर्व	१९७४	१८७७	२
(जे) द्रौण पर्व	१९७०	१८५०	१
(के) गदा पर्व	,	१८७७	१
(एफ) आश्रम क्षामिक	१९२४	१८७७	१
(एम) ज्योति पर्व	"	१८७७	१
(एन) शी पर्व	"	"	१

	रचनाकाल	लिपिकाल	संख्या
(ओ) अश्वमेध पर्व	१६९४	१८७७	१
(पी) महाप्रस्थान पर्व	„	१८७७	१
(क्यू) मूसल पर्व	१६७३	१८७७	१

प्राचीनतम हस्तलेख कर्णपर्व का है जिसका समय सन् १८६० ई० है ।

४१३ **सवल स्याम**—सवल स्याम ने भागवत दशम स्कंध भाषा या हरिचरित्र लिखा है, जिसके दो हस्तलेख वर्तमान खोज में उपलब्ध हुए हैं । इसका रचनाकाल निम्न-लिखित छंद में दिया हुआ है—

सवत सत्रह सै सोरह दम, कवि दिन तिथि रजनीस वेद रम ।

माव पुनीत मकर गत भान्, असित पक्ष ऋतु शिशार समान् ।

अर्थात् कवि दिन माव वढी ११ सवत् १७२६ तदनुसार शुक्रवार ७ जनवरी १६७० ई० ।

४१४ **सहदेव**—रामगढ़ के सहदेव ने एक छोटी सी पुस्तिका 'नदगाँव बरसाने की होली' लिखी है । हस्तलेख में कोई सन् सवत् नहीं है ।

४१५ **सहजराम**—प्रह्लाद चरित्र और हनुमान बाललीला के कर्ता सहजराम का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ और १९२३-२५ सख्या ३६७ में दिया जा चुका है । वर्तमान खोज में प्रह्लाद-चरित्र के दो और हनुमान बाललीला का एक हस्तलेख मिले हैं ।

४१६ **सहजो वाई**—सहजोवाई ने भक्ति विषयक गीत लिखे हैं जो सहजोवाई की बानी के नाम से संगृहीत हैं । इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२०-२२ सख्या १७१ में दिया जा चुका है जिसमें विगत-खोज-विवरणिकाओं में दिए इनके विवरण का भी उल्लेख है । ये चरणदास की शिष्या थीं और ईसा की अठारहवीं शती के मध्य में विद्यमान थीं ।

४१७ **शालिग्राम परमहंस**—शालिग्राम परमहंस ने सद्गुरु विनय नामक भक्तिविषयक ग्रंथ रणजीत पुरवा के जर्मोदार की विधवा निधिरानी के हृदय में भक्तिभावना जगाने के लिए रचा था । निधिरानी ने इन्हें अपना गुरु मान लिया था । रानी स्वयं कवि-यित्री थीं और उसने 'राममिलन' नामक ग्रंथ लिखा है जिसका विवरण इसी विवरणिका में ऊपर दिया जा चुका है । वह अठारहवीं में विद्यमान थीं और वही समय उसके गुरु का भी मानना चाहिए ।

४१८ **शालिग्राम वैश्य**—मुरादाबाद के शालिग्राम वैश्य ने श्रीमद्भागवत के दशमस्कंध का अनुवाद किया है । भाषाभागवत दशमस्कंध के दो हस्तलेख मिले हैं, एक पूर्वाह्न है और दूसरा उत्तराह्न । रचनाकाल अज्ञात है । हस्तलेखों का समय है १९५० (सन् १८९३) और सवत् १९५१ (सन् १८९४ ई०) ।

४१९ **सामरदास**—मगरौदा के सामरदास का विवरण खोज-विवरणिका सन्

१९२३-२५ संख्या ३७० में दिया जा चुका है। इनकी रचनाओं के निम्नलिखित हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं—

- (१) रामायण बालकांड की एक प्रति रचनाकाल सन् १८५९ ई० ।
- (२) रामायण किर्किष्वाकांड की दो प्रतियाँ रचनाकाल १८६६ ई० ।
- (३) रामायण सुंदरकांड की एक प्रति रचनाकाल १८६२ ई० ।
- (४) लंकाकांड की दो प्रतियाँ, रचनाकाल सन् १८६२ ई० ।
- (५) सुग्रह पताका की एक प्रति, रचनाकाल सन् १८६८ ई० ।
- (६) भजनबली की एक प्रति ।

केवल अंतिम की छोड़ और सब ग्रंथ मिल चुके हैं।

४२० सामर्थी द्विज—सामर्थी द्विज ने श्रीकृष्णकीला विषयक प्रेममंजरी ग्रंथ लिखा है जो नबोपखण्ड रचना है और जर्मन सत्र संबन्ध नहीं दिया है।

४२१ समुनाथ त्रिपाठी—समुनाथ त्रिपाठी का विवरण खोज विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३०१ में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१) ब्रह्मक पचीमी की एक प्रति रचनाकाल सन् १७५२ ई० ।

(२) मुहूर्त चिंतामणि या मंजरी या कल्पद्रुम की तीन प्रतियाँ, रचनाकाल सन् १७४६ ई० ।

(३) जातक चंद्रिका, रचनाकाल संख्या २ के पूर्व ।

पहला ग्रंथ किसी शुभाय ब्राह्मण के लिये रचा गया था और दोप बक्सर के राजा अचलेय या लखकसिंह के लिये ।

४२२ सघर कवि—मंजर कवि ने किमी जैन महिला राजकुल का बारहमासा लिखा है, जो पति से बियुक्त हो गई है। रचयिता भी जैन ही था। हस्तलेख या ग्रंथ की समाप्ति कुमार वर्षी ८ बुधवार सबत् १८९७ तदनुसार १९ सितंबर सन् १७०० ई० को हुई ।

४२३ राजा सधामसिंह—सिरमीर के राजा सधामसिंह ने संबत् १८६६ (सन् १८०९ ई०) में काव्यार्णव लिखा है। ग्रंथ में छन्द तथा काव्यकला संबंधी काव्य विषयों का वर्णन है। इसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या २७६ में दिया जा चुका है।

४२४ शंकराचार्य—परम बार्तनिक शंकराचार्य ने संस्कृत में पद्मवतार और नारायण स्तोत्र लिखा है। पहली का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ संख्या १६७ और खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ संख्या १९८ में दिया जा चुका है। दूसरा ग्रंथ पहली बार इसी खोज में मिला है। अनुबाहक ने अपना नाम नहीं दिया है।

४२५ शंकरदत्त—प्रतापगढ़ के शंकरदत्त अध्यापक व बीयर क्लब भूगोल के आधार पर ज्ञानिय तथा प्रकृति संबंधी भूगोल का ग्रंथ तिसोई राज के बाबू अजीतसिंह

के लिये लिखा है। रचयिता उसी राज्य के अतर्गत बीरज ग्राम का निवासी था। ग्रंथ की रचना संवत् १६२७ (सन् १८७२) में हुई थी। यह ग्रंथ ६० वर्ष पूर्व सरकारी पाठ-शालाओं में व्यवहृत होने वाली भाषा का नमूना है।

४२६ शंकर दीक्षित—वेदांत विषयक ग्रंथ माधुरी-विलास के कर्ता शंकर दीक्षित इटावा जिले में लखुना के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। ये गोस्वामी उमरावपुरी के शिष्य थे। माधुरी-विलास की रचना संवत् १९३२ (सन् १८७५ ई०) में हुई थी। यह नवोपलब्ध रचना है।

४२७ संतदास—संतदास उपनाम शिवदास का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या २८१ और खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३७५ में संतदाम शब्दावली और संतदास की बानी के कर्ता के रूप में दिया जा चुका है। वर्तमान खोज में इनके तीन ग्रंथ और प्रकाश में आ चुके हैं—(१) काया विलास, (२) विपर्यय को अंग और (३) स्वाम विलास। मंत्र में हिंदू विचारधारा के अनुसार शरीर-रचना, पुनर्जन्म, ज्ञान, चक्र आदि का वर्णन है। केवल संख्या (२) में कवि सुंदरलाल कृत उन्नी नाम के ग्रंथ के उलटवासियों की व्याख्या है। संतदाम सन् १८३० के लगभग वर्तमान थे और कवीर के अनुयायी थे।

४२८ संतदाम—संतदाम ने गोपीकृष्ण की धारहराज्ञी लिखी है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ संख्या १६९ में दिया जा चुका है। मिश्रवधुओं का अनुमान है कि ये मंत्रहर्षी शती के प्रथम चरण में विद्यमान थे।

४२९ सतसिंह सिख—सतसिंह सिख ने नुलसीदास कृत रामायण के बालकांड और अयोध्याकांड की टीका की है जिसका विवरण खोज विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या २८२ में दिया जा चुका है। हस्तलेख का समय सन् १८९४ और १८९५ ई० है।

४३० सरयूदास—सरयूदास कलचुरि क्षत्रिय अगदसिंह के पुत्र थे और राय बरेली जिले में शंकरगंज के निवासी थे। इन्होंने कवितावली और विरहमागर ग्रंथ रचे हैं। इनमें से प्रथम तो पहली धार इन्हीं खोज में मिला है; किंतु दूसरा सन् १९२३-२५ ई० की खोज में मिल चुका है। देखिए विवरण संख्या ३७७। रचयिता अठारहवीं शती में विद्यमान थे।

४३१ सरयूराम पंडित—सरयूराम पंडित ने जैमिनि पुराण (महाभारत) का अनुवाद सन् १७४८ ई० में प्रस्तुत किया। यह नवोपलब्ध रचना है।

४३२ सवितादत्त—हरदोई जिले में हरदोई निवासी सवितादत्त ने कृष्ण-विलास नामक नायिका-भेद का ग्रंथ लिखा है। इसका नामकरण किमी राजा के पुत्र के नाम पर हुआ है। जिस दिन वे वाईस वर्ष के पुरे हुए उसी दिन कवि को इस ग्रंथ की रचना की आज्ञा दी जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार दिया है—

जा दिन वैस कुमार की भई वरप चाइस।

साके चित्रम भूप के, मंत्रह से पैतीस ॥

भाहों मास पुनीत भति, जाते हरपति जोगु
कृष्ण जन्मतिथि अष्टमी सोमवार सिद्धि जोगु ॥

अर्थात् संवत् १७३३ भाहों बड़ी ८ सोमवार, किन्तु गणमा से यह ठीक नहीं उतरता । १७३५ में कृष्ण जन्माष्टमी सुषवार (३१ जुलाई १६७८ ई०) को थी, सोमवार की नहीं । यदि वैतीस के स्थान पर सैंतीस हो और वह चाखु वर्ष हो, तो तिथि सोमवार (१८ अगस्त १६७९ ई०) को पड़ती है ।

४३३ सेनापति—सेनापति सुप्रसिद्ध कवि हैं और इनका विवरण विगत अनेक खोज-बिबरणिकाओं में दिया जा चुका है । देखिए खोज-बिबरणिका १९२३-२५ संख्या ३७२ जिसमें सबका उल्लेख है । वर्तमान खोज में इनके कवित्त-रत्नाकर के दो हस्तलेख मिले हैं । ग्रंथ की रचना संवत् १७०६ (सन् १६४९ ई०) में हुई थी ।

४३४ सेनादास—सेनादास ने सृष्टि पुराण लिखा है जिसका विवरण खोज-बिबरणिका १९२३-२५ संख्या ३६१ में दिया जा चुका है । हस्तलेख का समय संवत् १७७९ (सन् १७१५ ई०) है । रचयिता राजपूताने में एक मईत था ।

४३५ सेवकराम—सेवकराम ने स्तुतियों का गीतों का एक संग्रह तैयार किया है जिसका नाम रचा है संग्रहग्रंथ माका । संग्रहित इतने प्रमाण नहीं मिले हैं कि इन्हें या तो जसपी के सेवकराम से मिला दिया जा सके किन्तु विवरण सन् १९२३-२५ की खोज-बिबरणिका में संख्या ३८३ पर दिया हुआ है या अन्य बिबरणिकाओं में उल्लिखित और सेवकराम से ।

४३६ सेवासिंह ठाकुर—सीतापुर जिसे में फतेहपुर के सेवासिंह ठाकुर ने नैपथ्य चरित का अनुवाद नैपथ्य ग्रंथ के नाम से किया है । इसमें नत्त-वृमर्चती की कथा वर्णित है । यह नवोपलब्ध रचना है । हस्तलेख का समय संवत् १९५९ (सन् १८९५ ई०) है ।

४३७ सिधादास—हरगवा के सिधादास सत्त्वामी संप्रदाय के थे और इनके गुरु का नाम बृकनदास था । इनका विवरण खोज-बिबरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ३६६ में दिया हुआ है । वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१) शम्भाबळी, (२) बिरह सार्य (३) साली और (४) कवित्त स्युट । इनकी रचना सन् १७५३ में हुई थी और सब भक्ति-विषयक ग्रंथ हैं ।

४३८ सीताराम—हसनपुरा के सीताराम ने भावच निदान का अनुवाद दिव्य कान्त चिकित्सा नाम से किया है । इस ग्रंथ की तीन प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं जिनमें से एक का रचनाकाल इस प्रकार दिया है—

संवत् टारह से तिरपचा सावन अधिक सुहायो ।

कृष्ण प्रयोदशि ईद छबीली चरवार सुम दायो ॥

अर्थात् संवत् १८५३ सावन कृष्ण १३ चरवार तदनुमार १ अगस्त सन् १६९६ ई० । दो प्रतियों में चिकित्सा ने 'टारह से तिरपचा को 'टारा से सत्तर महीना' किन्तु दिया

है जिसमें छठोभग तो है ही, साथ ही गणना से भी यह अशुद्ध है क्योंकि सवत् १८७० में सावन वटी १३ शनिवार को थी, सोमवार को नहीं।

४३६ सीताराम शुक्ल—गोंडा (जिला हरदोई) के सीताराम शुक्ल ने अपने श्रृंगारी छंदों का संग्रह सवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) में कवित्त संग्रह के नाम से किया है।

४४० सीताराम उपाध्याय—सीताराम उपाध्याय (सरयूपारी ब्राह्मण) ने 'काव्य कल्पतरु' या 'वशावली तिलोई राज्य की' तिलोई के राजा शंकर मिश्र की मरक्षता में रची। इसमें राजा की वशावली वर्णित और इसकी रचना सन् १८७८ ई० में हुई। उपलब्ध हस्तलेख एक वर्ष बाद सन् १८७९ ई० का लिखा है।

४४१ सीताराम वैद्य—सीताराम वैद्य ने फारसी के तिब्बत सहाय के आधार पर कवितरंग नामक ग्रंथ रचा है। इन्होंने ग्रंथ की रचना सोमवार मार्गशीर्ष सवत् १७६० (१५ नवंबर सन् १७०३ ई०) को आरंभ की और शुक्रवार मकर कृष्ण तृतीया सवत् १७६० (१४ जनवरी सन् १७०४) को समाप्त की। अर्थात् ठीक दो महीने बाद। किंतु लिपिकारों ने प्रतिलिपि में ऐसी भयंकर भूलें की हैं कि प्रथम का समय 'एकादश सवत्' समय और साठ निःधार हो गया है जिसका अर्थ होगा १० ६० ७० जो निरर्थक है। पहला शब्द 'एकादश सत्रह सै' होना चाहिए अर्थात् १७०० + ६० = १७६० जो समाप्ति काल के पद्य से मिश्र हो जाता है।

(गये जो विक्रम वीर विताय । सत्रह सै अरु साठि गिनाय ॥)

ऐसे ही एक लिपिकार ने साठि का 'आठि' करके ५२ वर्ष का अंतर कर दिया है। फिर भी यह तो बहुत ही आश्चर्यजनक है कि दो भिन्न भिन्न लिपिकारों ने 'सत्रह सै' को 'एकादश' कैसे पढ़ लिया जो निर्विवाद है।

४४२ सिववक्त्र—शिववक्त्र ने पवन परीक्षा नामक ग्रंथ में विभिन्न देवताओं की स्तुति लिखी है। इसकी रचना सवत् १८७५ (सन् १८१८ ई०) में हुई। ग्रंथ के अंत में रचयिता ६ कहावतों की समस्या पूर्ति में उलझ गया है।

४४३ शिवदत्त—शिवदत्त रामप्रसाद कृत ब्रह्मावर्त माहात्म्य या उत्पलारण्य माहात्म्य की तीन प्रतियाँ तथा ज्ञान की बारहमासी इस खोज में मिली हैं। पहला ग्रंथ सवत् १६२६ (सन् १८६९ ई०) में रच गया और दूसरा सवत् १९३३ (सन् १८७७ ई०) में। ये सामान्य ऋवि हैं और पहली बार इसी खोज में मिले हैं।

४४४ शिवदयाल—जलालाबाद (फर्रुखाबाद जिला) के शिव दयाल ने राधा जी की बारहमासी सवत् १९१५ (सन् १८५८ ई०) में रची। हस्तलेख का समय सवत् १६१८ (सन् १८६१ ई०) है।

४४५ शिवदीनदास—कंधरपुर (प्रतापगढ़ जिला) के शिवदीनदास ने गूढार्थ श्रीकृष्ण लीला विषयक राधाकृष्ण विहार कुंजरूपललिता नामक ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय सवत् १८९२ (सन् १८३५ ई०) है।

४४६ शिवलाल पंडित—सिवलाल पंडित ने अमिषाय दीपक नामक ग्रंथ लिखा है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०४ संख्या ११२ में दिया जा चुका है। इस खोज में प्राप्त हस्तलेख का समय संवत् १९०२ (सन् १८४५ ई०) है।

४४७ शिवानन्द स्वामी—शिवानन्द स्वामी ने त्रिमूर्ति भारती या भगवत् स्तुति नामक छोटी सी पुस्तिक लिखी है।

४४८ शिवनारायण—गाजीपुर के शिवनारायण राजपूत ने संत उपदेश लिखा जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या ११ में दिया जा चुका है। इन्होंने प्रचुर मात्रा में रचना की है और पूरे एक दर्जन ग्रंथ रचे हैं जिनमें से एक इनके ही द्वारा अपने नाम पर स्थापित सप्रदाय के अधिकार में है। वे अठारहवीं शती के मध्य में विद्यमान थे।

४४९ शिवनाथ—सिवनाथ ने रस रंजन ग्रंथ लिखा है जिसकी पाँच प्रतियाँ वर्तमान खोज में पकड़ी वार मिली हैं। यह मायिद्य भेद का ग्रंथ है। इसका रचना काळ दिया है संवत् १८४६ या सन् १७११ माघ्य सुदी १० चतुवार तदनुसार ७ मई सन् १७८९ ई०।

४५० शिवप्रसाद कायस्थ—शिवप्रसाद कायस्थ ने छद्मसार विंगल नामक ग्रंथ लिखा है। हस्तलेख का समय संवत् १९१९ (सन् १८६२ ई०) है। ग्रंथ रचना विंगल भासा (प्रतापगढ़ जिल्ला) के राजा महीपाकसिंह की मरफता में हुई है।

४५१ शिवप्रसाद सिंह ठाकुर—जालीपुर के शिवप्रसाद सिंह ठाकुर ने विभिन्न कवियों के नैम पुस्तोत्तम, नरहरि तोप और पद्यात्म्य के छंदों का एक संग्रह प्रस्तुत किया है जिसका नाम है 'अनेक कवियों की कविताओं का संग्रह'।

४५२ शिवसिंह सेंगर—शिवसिंह सेंगर ने जिन्होंने सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'शिवसिंह मरोड' लिखकर हिंदी साहित्य के प्रथम इतिहासकार होने का पक्ष प्राप्त किया है, गौड़रत माहात्म्य नामक एक पुस्तक लिखी है जिसकी दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। यह उपयुक्त इतिहास के टीका एक बर्ष बाद संवत् १९३३ (सन् १८७६ ई०) में प्रस्तुत हुई। इन छोटे से ग्रंथ से यह स्पष्ट है कि इनमें उक्त छोटी की कविता शक्ति विद्यमान थी।

४५३ सियाराम—सियाराम ने 'जानकी-विजय' रचा है जिसकी तीन प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। इसका रचनाकाल है संवत् १८१३ ईश्वर सुदी २ तदनुसार गुप्तवार १ मकर सन् १७५६ ई०। इस रचनाकार का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या २७ में भी दिया जा चुका है।

४५४ धीधर गौड़—अजमेर के विद्वत् पुंकर के निवासी धीधर गौड़ ने निम्न लिखित तीन ग्रंथ रचे हैं—

(१) इनुमान विजय, रचनाकाल संवत् १९२१ (सन् १८६४ ई०)।

(२) शिक्षा कक्षा बहीसी (बालोपयोगी शिक्षा-संबंधी)।

(३) सामुद्रिक (हस्तरंजना-मयधी), रचनाकाल सवत् १९२८ (सन् १८७१ ई०) ।

४५५ श्रीधर—शालिहोत्र के कर्ता श्रीधर का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ सख्या ११७ और १९२३-२५ सख्या ४०१ में दिया जा चुका है । ग्रंथ का रचना काल है संवत् १८६६ (सन् १८३७ ई०) ।

४५६ श्रीवर पंडित—श्रीधर पंडित ने 'छोँक तथा मकुन विचार' नामक पोथी रची है । पुस्तक भद्वर की प्रसिद्ध कहावतों की नकल जान पड़ती है । श्रीधर ने भद्वर का नाम छिपाने का प्रयत्न नहीं किया है, फिर भी हममें सदेह नहीं कि कुछ रचनाएँ उसकी भी है ।

४५७ श्रीकृष्ण मिश्र—प्रश्नतत्र मात्रा के कर्ता श्री कृष्ण मिश्र का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ में तिमिर दीपिका के कर्ता के रूप में दिया जा चुका है । दोनों ही ग्रंथ ज्योतिष के हैं । प्रश्नतत्र चाराह मिहिरकृत जातक के आधार पर है ।

४५८ श्रीलाल—श्रीलाल ने चाणक्य नीति दर्पण सवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) में रचा है । यह गद्य में शुद्ध भाषा के ढंग से लिखा गया है ।

४५९ श्रीपति मिश्र—कालर्षी के श्रीपति मिश्र ने काव्य सरोज की रचना सन् १७२० ई० में की है । इसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ सख्या ३०४ में दिया जा चुका है ।

४६० सुभकरन—सुभकरन ने विहारी मतमंड की टीका अपने आश्रयदाता अनवरखों के नाम पर 'अनवरचंद्रिका' नाम से सवत् १७७१ (सन् १७१४ ई०) में की है । इनका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या ४०६ तथा अन्य विगन विवरणिकाओं में दिया जा चुका है ।

४६१ सुदामा—सुदामा ने वारह खड़ी और नैना भेष नामक ग्रंथ रचे हैं । वर्तमान खोज में पहले के चार और दूसरे के दो हस्तलेख मिले हैं । पहले ग्रंथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ में दिया जा चुका है । दूसरी नवोपलब्ध रचना है ।

४६२ सुदर्शन वैद्य—हमरपुर के सुदर्शन वैद्य ने भिषग-प्रिया नामक पोथी रची है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या ४०६ में दिया जा चुका है । ये कायस्थ थे और ओरछा के सुजानासिंह की संरक्षता में ग्रंथ रचना करते थे । समय-सूचक पद्य निम्नलिखित है—

सवत् सत्रह सै वरप, लगी माल उन्नीस ।

ऋतु वसंत फागुन सुभग, कृष्ण पक्ष वृत् ईस ॥

सनि दिन सुभग चतुर्दशी सिद्ध जोग तिथिवार ।

प्रथम पहर आरंभ यह ता दिन भयो विचार ॥

तात्पर्य यह कि कवि को ग्रंथ-रचना का विचार सवत् १७२९ फागुन वदी १४ वसंत ऋतु शनिवार तदनुसार सन् १६७२ ई० में हुआ । अतः इसे ठीक समय समझना चाहिए ।

४६३ सुदर्शन विग्रह—सुदर्शन विग्रह ने मुद्रादशी माहात्म्य सन् १७२० ई० में रचा जिसका विवरण लोह-विवरणिका सन् १९२३-२४ संख्या ४०८ में दिया जा चुका है।

४६४ सुकवि—सुकवि ने रामाष्टक लिखा है जिसका कुछ भी महत्त्व नहीं है।

४६५ सुखदेव मिश्र—सुखदेव मिश्र प्रसिद्ध रचनाकार हुए हैं और इनका विवरण विभिन्न लोह-विवरणिकाओं में दिया जा चुका है। अंतिम विवरण लोह-विवरणिका १९२३ २५ संख्या ४१२ में दिया हुआ है। इन लोह में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१) फारुखमली प्रकाश की दो प्रतियाँ, रचनाकाल संवत् १७३३ (सन् १९७६ ई०) ।

(२) गठ विचार पिंगल की एक प्रति, रचनाकाल संवत् १७२८ (सन् १९७१ ई०) ।

(३) छंद विचार की दो प्रतियाँ, रचनाकाल संवत् १७२८ (सन् १९७१ ई०) ।

(४) अष्टाध्याय प्रकाश की दो प्रतियाँ रचनाकाल संवत् १७३५ (सन् १९८८ ई०) ।

४६६ सुखार्जुन—भारत के सुखार्जुन ने गुह्यक केवदा नामक छोटी सी पुस्तिका संवत् १८२७ (सन् १८७० ई०) में रची है। इसका विवरण पहली बार इसी लोह में दिया गया है।

४६७ सुखानन्द—सुखानन्द ने दीप जीवन नामक दीपक ग्रंथ संवत् १९२० (सन् १८६३ ई०) में रचा। हस्तलेख की प्रतिक्रिपि संवत् १९३० (सन् १८७३ ई०) में हुई।

४६८ सुखाराम—सुखाराम ने ज्योतिष का ग्रंथ पारासरी का अनुवाद पारासरी माया के नाम से किया है। ग्रंथ का रचनाकाल जब लिखिकाल दोनों संवत् १९३७ (सन् १८८० ई०) है।

४६९ सुंदरदास—ग्वाडियर के सुंदरदास ने सुंदर शृंगार की रचना की थी जिसका विवरण लोह-विवरणिका सन् १९१७-१९ संख्या १८४ और १९२०-२२ संख्या १८८ में दिया जा चुका है। कुछ विवरणिकाओं में इसमें सुंदरदास दार्दृपंथी मान लिया गया है। उदाहरणार्थ सुंदरदास दार्दृपंथी का ज्ञान समुद्र ग्रंथ सुंदरदास ग्वाडियर वाले का मान लेने में लोह-विवरणिका सन् १९०९-११ संख्या १११ और बाद में लोह-विवरणिका सन् १९२०-२२ में इसका हा गया है। अब तक इनका केवल एक ही ग्रंथ मिला है और वह सुंदर शृंगार है। वर्तमान लोह में प्राप्त मू.व.कीला ग्रंथ अनुमान से ही इनका माना जाता है। इसकी पुष्टि की आवश्यकता है।

४७० सुंदरदास दार्दृपंथी—सुंदरदास दार्दृपंथी बहुत प्रसिद्ध कवि हुए हैं और विगत अनेक विवरणिकाओं में इनका विवरण दिया जा चुका है। उनके निम्न लिखित ग्रंथ वर्तमान लोह में मिले हैं—

- (१) नर्वाणयोग की एक प्रति ।
- (२) वेदात्मर की एक प्रति ।
- (३) सदैया की दो प्रतियाँ ।
- (४) सुदर-विलास की एक प्रति ।

संख्या १ और २ के अथ विगत विवरणिकाओं में नहीं मिले हैं । संख्या ३ का विवरण खोज-विवरणिका १६०२ संख्या २५, १९१२-१६ संख्या १८८ और १९२३-२५ संख्या ४१५ और संख्या ४ का खोज-विवरणिका १६०३-२५ संख्या ४१५ में दिया जा चुका है ।

इनके अन्य अथ जो विभिन्न खोज-विवरणिकाओं में उद्धिगित हैं वे इस प्रकार हैं—

- (५) हरिवोल चिंतामणि (खोज-विवरणिका १९०० संख्या ०७) ।
- (६) ज्ञान-ममुद्र और भागर (खोज-विवरणिका १६०३ संख्या ३४, खोज-विवरणिका १९०६-०८ संख्या ४२) १९-११ संख्या ३११ और १९२३-२५ संख्या ४१५)
- (७) सुदस्तास की बानी (खोज-विवरणिका १९०६-११ संख्या ३११) ।
- (८) विचारमाला (खोज-विवरणिका १६०९-११ संख्या ३११) ।
- (९) विवेक-चिंतामणि (खोज-विवरणिका १९०९-११ संख्या ३११) ।
- (१०) पंचेंद्रिय निर्णय (खोज-विवरणिका १९१२-१६ संख्या १८४) ।
- (११) अष्टक (खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या ४१५) ।
- (१२) शब्दमर (खोज-विवरणिका १९२३-२५ संख्या ४१५) ।

४७१ **सूरदास**—सूरदास इतने प्रसिद्ध हैं कि इनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं है । इनके निम्नलिखित अथ इस खोज में मिले हैं—

- (१) सूरभागर की दो प्रतियाँ ।
- (२) नागलीला की एक प्रति ।
- (३) विसातिन लीला की एक प्रति ।
- (४) वारहमासासग्रह की एक प्रति ।
- (५) राधाकृष्ण मंगल की दो प्रतियाँ ।
- (६) महादेव लीला की एक प्रति ।
- (७) राम का वारहमासा की तीन प्रतियाँ ।
- (८) वाँसुरी लीला की एक प्रति ।
- (९) वेनी माधव की वारहमासी की एक प्रति ।
- (१०) सूररत्न की एक प्रति ।

४७२ **सूरदास**—अर्जुन गीता के कर्ता सूरदास साधारण रचनाकर हैं । उपलब्ध हस्तलेख संवत् १६३६ (सन् १८८२ ई०) का है ।

४७३ **सूरजदास**—सूरजदास ने एकादशी माहात्म्य और रामजन्म नामक दो अथ लिखे हैं और दोनों का विवरण खोज-विवरणिका १६२३-२५ संख्या ४१७ में दिया जा चुका है ।

४७३ सूरति मिथ—सूरति मिथ का उल्लेख विभिन्न विवरणियों में हो चुका है। इस लोक में इसके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

- (१) धिताल पचीसी का ४ प्रतिर्षा।
- (२) भमर बंदिना की १ प्रतिर्षा।
- (३) ओरावर प्रकाय या रसिक प्रिया की टीका की १ प्रति।
- (४) रस रत्नाकर की एक प्रति।
- (५) रस प्राहक बंदिना की एक प्रति।

इसका अंतिम विवरण गोज-विवरणिका सन् १९२३-२४ संख्या ४१९ में मिलेगा।

४७४ सुयंशु कवि—सीतापुर जिले में शिव्या के सुयंशु कवि प्रसिद्ध रचनाकार हुए हैं। ये ठाकुर उमराव सिंह तालुकदार के आश्रय में थे। वर्तमान लोक में इनके निम्नलिखित चार ग्रंथ मिले हैं—

- (१) उमराव का की दा प्रतिर्षा।
- (२) रसतरंगिणी, रचनाकार संवत् १८६१ (मन् १८०४ ई०) की एक प्रति।
- (३) रसमञ्जरी की एक प्रति।
- (४) विप्लव की दो प्रतिर्षा।

इसका उल्लेख अनेक विवरणियों में है, किन्तु अंतिम सन् १९२३-२४ संख्या ४२२ में है।

४७५ स्वरूपदास—स्वरूपदास उपनाम रसूल के पांडव-यशोदर-वदिका सन्वत् १८६२ (मन् १८१५) में रचा गया कि गोज-विवरणिका सन् १९२३-२४ संख्या ४२३ में स्पष्ट है।

४७६ सेजसिंह ठाकुर—तजसिंह ठाकुर के ज्ञान चंद्रादय नामक हस्तलेख का ग्रंथ रचा है। ये पदवी वार इसी लोक में मिले हैं। ये आगरा जिले में क्रिया के रहनेवाले थे। ग्रंथ की रचना सन् १९६० (मन् १८७३ ई०) में हुई थी। यह शही वाली गद्य की रचना है।

४७७ ठाकुर कवि—ठाकुर कवि फतहपुर जिले में भमनी के रहनेवाले थे। इन्होंने बिहारी गतमार्थ की टीका अपने आश्रयदाता देवकीनंदन काशीधारी के नाम पर देवकीनंदन लिखक नाम से की है। उमा जान पड़ता है कि इन्होंने रसग्राह्य गतसिद्धा नाम की कोई दूसरी टीका भी की है जिसका उल्लेख इन्होंने देवकीनंदन लिखक में किया है। देवकीनंदन लिखक का विवरण गोज-विवरणिका १९०४ संख्या १८ में दिया जा चुका है। ठाकुर अठारहवीं शती के मध्य के लगभग विद्यमान थे।

४७८ ठाकुरप्रसाद पंडित—लिप्या रत्नाकर के कर्ता ठाकुर प्रसाद परिल पदवी वार इसी लोक में मिले हैं। इन्होंने कृष्ण काशी ग्रंथ में अनुवाद करके उक्त ग्रंथ प्रस्तुत किया है। इन्होंने का समय संवत् १९४३ (मन् १८८६ ई०) है।

४७९ याना कवि या धामाराम—याना कवि या धामाराम के रस-प्रकाश नामक अर्थात् विषय-ग्रंथ मिले हैं। इसका रचनाकार दिया हुआ है गुग्गार माय मुदी

१० सवत् १८४८ तदनुसार २ फरवरी १७६२ ई० । अंत में भी समय सूचक छंद दिया हुआ है जो देखने से तो रचनाकाल मालूम पड़ता है, किंतु वस्तुतः वह लिपिकाल ही है । दोहा है—

रस श्रुति निधि शशि वर्ष अरु आश्विन कृष्ण सुमास ।

दर्श कुजहि दिन पूर्ण भो सिंह दलेल प्रकास ॥

अर्थात् आश्विन कृष्ण दर्श या अमावास्या सवत् १९४६ मंगलवार तदनुसार १४ सितंबर १८८९ ई० । उस दिन सूर्योदय के १ घंटा १५ मिनट बाद चतुर्दशी समाप्ति हो गई थी और अमावस्या आरंभ हुई थी । ग्रंथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९०९-११ सख्या ३१७ और १९२३-२५ संख्या ४२७ में भी दिया जा चुका है ।

४८२ तीर्थराज—समर-विजय के कर्ता तीर्थराज का विवरण खोज-विवरणिका सन् १९२३-२५ सख्या ४२३ में दिया जा चुका है । उसमें इस ग्रंथ का नाम समर सूर दिया हुआ है । सन् १६०६-०८ की खोज-विवरणिका में सख्या ११५ पर इसी ग्रंथ का नाम समर सार दिया हुआ है । इस ग्रंथ में युद्ध आरंभ करने के सुहृत् का विचार है । इसकी रचना सवत् १८०७ (सन् १७५० ई०) में अलीपुर के राजा अचलसिंह के लिए हुई थी । वर्तमान खोज में इसकी चार प्रतियाँ मिली हैं । हस्तलेख का समय है सवत् १८२६ (सन् १७६९ ई०) ।

४८२ टोडरमल जैन—जयपुर के टोडरमल जैन ने आत्मानुशासन नामक ग्रंथ सवत् १८१८ (सन् १७८१ ई०) में रचा । इनका उल्लेख खोज-विवरणिका १६०० सख्या १३४ और १९२३-२५ सख्या ४२६ में हो चुका है । ग्रंथ ज्ञान-विषयक है ।

४८३ तोमरदास—तोमरदास सत्नामी सप्रदायानुयायी और दूलनदास के शिष्य थे । इन्होंने एकाक्षरी या शब्दावली नामक ग्रंथ राम की महत्ता के प्रतिपादन में लिखा है । ये सोमवशी क्षत्रिय थे । इनका जन्म रायवरेली जिले के टड्डीपुर नामक स्थान में हुआ था और ये सवत् १९१३ (सन् १८५६ ई०) में परलोकवासी हुए । इनके ग्रंथ का विवरण खोज-विवरणिका सन् १६०९-११ सख्या ३१८ और सन् १९२०-२२ संख्या १९५ में दिया जा चुका है ।

४८३ तुलसीदास गोस्वामी—हिंदी के सर्वोत्कृष्ट कवि तुलसीदास गोस्वामी का उल्लेख विगत सभी खोज विवरणिकाओं में हुआ है । वर्तमान खोज में इनके निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं—

(१)

१-रामायण की	२ प्रतियाँ ।
२-बालकांड की	३ " ।
३-अयोध्याकांड की	५ " ।
४-अरण्यकाण्ड की	१ " ।
५-किष्किंधाकांड की	१ " ।

१-सुंदरकांड की	१ प्रतिपाँ ।
७-संकाकांड की	३ " ।
८-उपरकांड की	१ " ।
९-विनयपत्रिका की	५ " ।
१०-इच्छाबली वा अक्षय रामायण की	३ " ।
११-शोकावली वा दाहावली रामायण वा सत भक्त की	४ " ।
१२-शैशव्य संदीपनी की	१ प्रति ।
१३-बरबे रामायण की	१ " ।
१४-राम सरकाव्य वा सगुनीती की	४ " ।
१५-जानकी-मंगल वा सीता स्वयंवर की	३ " ।
१६-कृष्ण गीतावली की	१ " ।
१७-बाहुक विनय वा हनुमान बाहुक की	४ " ।
१८-गीतावली की	२ " ।
१९-हनुमान-काशीसा की	३ " ।
२०-हनुमान वाचिक, अंधी मोचन वा भजूंगनाथकी	४ " ।
२१-संकटमोचन की	१ " ।
२२-विजय शोहावली की	२ " ।
२३-पर्मराय की गीता की	१ " ।
२४-हनुमान-स्तोत्र की	१ " ।
२५-भरत मित्राय की	१ " ।

यह पूर्व संदेहास्पद है कि सख्या १९ से २५ तक के ग्रंथ तुलसीदास कृत हैं या नहीं। जो कुछ भी हो अंतिम चार रचनाएँ तो इतनी हफकी हैं कि वे तुलसीदास की हो नहीं सकतीं। इसी नाम के अन्य व्यक्ति भी हुए हैं जिन्होंने कुछ ग्रंथ रचे हैं, किंतु पर्याप्त प्रमाण के अभाव से वास्तविक रचनाकारों को छंटना संभव नहीं है।

४८५ तुलसीदास—सूर्यपुराण के कर्ता तुलसीदास रामायण के कर्ता तुलसीदास ने मित्र हैं। इन श्लोक में इनके भाठ हस्तलेख मिले हैं जिनमें प्राचीनतम संवत् १८७० (सन् १७१३ ई०) का है।

४८६ उदयनाथ—मीठापुर जिले में रत्नाड़ी के उदयनाथ ने सगुण विभाग किया है जिसका उल्लेख श्लोक-विचारत्रिंशत् सन् १९१७-१९ संवत् १९८ तथा १९९३ २५ संवत् ४३६ में है।

४८७ उदयराजदास—उदयराजदास ने भगवद्गीता का अनुवाद किया है। हस्तलेख का समय संवत् १७७१ (सन् १७१४ ई०) है १५भाकार क विषय में और कुछ बातें नहीं हैं।

४८८ उमादत्त त्रिपाठी—उमादत्त त्रिपाठी ने अध्यात्म रामायण का अनुवाद किया है।

४८९ चहाव—चहाव ने वारहमामा लिखा है जिसकी तीन प्रतियाँ मिली हैं। सबसे पुरानी प्रति सन् १८४८ ई० की है। इसकी भाषा फारसी अरबी मिश्रित रखी बोली है।

४९० चञ्जभ रसिक—चञ्जभ रसिक ने चञ्जभरसिक वाइसी नामक शृंगार रस की पोथी लिखी है जिसका विवरण खोज-विवरणिका सन् १९१२-१६ संख्या १४ और १९१७-१९ संख्या १५९ में दिया जा चुका है। इनके अन्य ग्रंथवानी या हिंदोर वारहवात मनेही-विनोद और प्रेम चन्द्रिका हैं। इनका जन्म सवत् १६८१ (सन् १६२४ ई०) में हुआ था।

४९१ वसत—वसत ने नरसी मेहता या नरसी मेहता की जीवनी लिखी है जो नवोपलब्ध रचना है। हस्तलेख का समय सवत् १८७३ (सन् १८१६ ई०) है।

४९२ वसतराज—वसतराज अलीगढ़ जिले में कोइला के निवासी थे। इनके दो ग्रंथ सकुन विचार और कार्तिक माहात्म्य के दो दो हस्तलेख वर्तमान खोज में मिले हैं। कार्तिक माहात्म्य की रचना सवत् १९२५ (सन् १८६८ ई०) में हुई। इन्हीं को रचयिता का विद्यमान काल भी समझना चाहिए।

४९३ वासुदेव स्वामी—कानपुर जिले में कहिजरी के वासुदेव स्वामी उम खोज में नए रचनाकार ज्ञात हुए हैं। ये अपने अंतिम समय में सन्यासी हो गए थे और काशी में रहते थे। इन्होंने सन् १८७० ई० में विज्ञान - प्रकाश की रचना की है।

४९४ वैकटेश—वैकटेश स्वामी ने आत्म प्रकाश नामक वेदांत का ग्रंथ लिखा है जिसका उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ३४१ में हो चुका है।

४९५ विद्यारण्य स्वामी - विद्यारण्य स्वामी ने युगल सुधा नामक ग्रंथ लिखा है जिसमें राम और कृष्ण के भक्तों का आपसी विरोध दूर करने का प्रयत्न किया गया है। इसकी रचना काशी के राजा के लिए सवत् १८९८ (सन् १८४१ ई०) में हुई।

४९६ विक्रमाजीत विजय वहादुर—विक्रमाजीत विजय वहादुर बुंदेलखंड की चरखारी रियासत के राजा थे। इनके आश्रय में अनेक कवि रहते थे। इन्होंने चित्रम सतसई नामक ग्रंथ रचा है जिसका एक हस्तलेख गद्य टीका सहित वर्तमान खोज में मिला है। ग्रंथ का उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९०५ संख्या ५९ और १९०६-०८ संख्या ११६ में हो चुका है। महाराज ने सन् १७८२ ई० से सन् १८२९ ई० तक राज्य किया था।

४९७ वीरभद्र—वीरभद्र ने एक छोटी सी पुस्तिका उड़ड़ीस लिखी है जिसमें मंत्रों तथा उद्देश्य पूर्ति के लिए अव्यवहार्य उपायों का वर्णन है। इसी नाम का लका के राक्षस-राज रावण का भी एक तंत्र है जिसके आधार पर इस ग्रंथ की रचना हुई है।

४९८ विष्णुदास—विष्णुदास कृत रुक्मिणी मंगल की दो प्रतियाँ वर्तमान खोज में मिली हैं। इसका उल्लेख खोज-विवरणिका सन् १९१०-१६ संख्या १९३ में भी दिया जा चुका है। मिश्रबंधुओं ने इन्हें सन् १४३५ ई० में ग्वालियर के किले में रहनेवाला कवि बताया है।

४२६ विष्णुदास—समेदहीना के कर्ता विष्णुदास का विवरण खोज-विबरणिका सन् १९२०-२२ संख्या २०४ में दिया जा चुका है ।

४०० विष्णुवत्त—विष्णुवत्त ने बसंत बिकास ग्रंथ अर्द्धकार का लिखा है । इसका उल्लेख खोज-विबरणिका सन् १९१७-१९ संख्या २०३ में हो चुका है । ग्रंथ का रचनाकार संवत् १८९९ (सन् १८०८ ई०) है । रचनाकार फतेहपुर जिले में बसनी के रहनेवाले थे । ये नसिरपुर के राजा सरनामसिंह के आश्रित थे ।

४०१ विष्णुगिरि गोस्वामी—विष्णुगिरि गोस्वामी के सुगमनिदान का उल्लेख खोज-विबरणिका सन् १९०२ संख्या १०६ में हो चुका है । इस काम में इनका दूसरा ग्रंथ बृहत् भागवत नीति भाषा पहली ही बार उपलब्ध हुआ है । इसमें रचनाकार का उल्लेख नहीं है । किंतु खोज विबरणिका सन् १९०२ संख्या १०६ में सुगम निदान का समय संवत् १८०१ (सन् १७४४ ई०) दिया हुआ है जिससे विष्णुगिरि का समय ज्ञात हो जाता है ।

४०२ विश्वंभर—विश्वंभर ने स्वरोदय नामक योग विषयक ग्रंथ लिखा है जो नवोपलब्ध रचना है ।

४०३ विश्वनारायणसिंह महाराज—रीषानरेस महाराज विश्वनारायणसिंह ने शांतशांतक लिखा है जिसका विवरण खोज विबरणिका सन् १९०३ संख्या ५४, १९०६-११ संख्या ३२९ (इसमें महाराज के रचे ग्रंथों की एक बड़ी सूची दी है), १९२०-२२ संख्या २०३ और १९२३-२५ संख्या ४४३ में दिया जा चुका है । विश्वनारायणसिंह का समय लगभग सन् १७७८ ई० है ।

४०४ शृंग कवि—नाब प्रकाश पंचाक्षिक के कर्ता शृंग कवि का विवरण खोज विबरणिका सन् १९०९-११ संख्या २३० और १९२३-२५ संख्या ४४६ में दिया जा चुका है । रचनाकार का संवत् १७७५ (सन् १६८७ ई०) ।

४०५ शृंगायन—शृंगायन ने ज्योतिषसार नामक ज्योतिष का ग्रंथ लिखा है । इतलेख का समय संवत् १८७० (सन् १८१३ ई०) है ।

४०६ व्यास—व्यास ने प्रकृत ज्योतिष की एक पोथी 'सगुर्वाती' लिखी है । खोज-विबरणिका सन् १९२३-२५ संख्या ४४९ में वर्णित ज्योतिषपत्र के कर्ता व्यासदेव और ये एक ही जात पड़ते हैं । इतलेख का समय संवत् १८२७ (सन् १७७० ई०) है ।

४०७ यतुनाथ शास्त्री—काशी के पंडित मधुरानाथ मालवीय के पुत्र यतुनाथ शास्त्री का विवरण खोज विबरणिका सन् १९०६-०८ संख्या ३४४ में दिया जा चुका है । इन्होंने संवत् १८०३ (सन् १७४६ ई०) में सामुद्रिक नामक इतरका का एक ग्रंथ लिखा है ।

४०८ युगलक्षिणोर मिश्र—युगलक्षिणोर मिश्र ने युगलक्षिणोर नामक पोथी श्रीकृष्ण और राधिका के सौंदर्य पर रची है । यह नवोपलब्ध रचना है ।

५०६ ज़ाहरसिंह—जाहरसिंह ने 'श्रीकृष्ण फाग' नामक पोथी लिखी है जिसमें श्रीकृष्ण की होली का वर्णन है। हस्तलेख का समय है सवत् १६३२ (सन् १८७५ ई०)।

५१० ज़ोरावर मल—ज़ोरावरमल नागपुर के माथुर कायस्थ थे। इन्होंने शनिश्चर देव की कथा नामक पोथी लिखी है जो वर्तमान रोज में मिली है। इसका रचनाकाल है सवत् १८२४ (सन् १७६७ ई०), किंतु तिथि गणना में ठीक नहीं घटती। उसमें सवत् १९२६ भी दिया है जिससे वह तिथि ठीक उतरती है। इसकी भाषा राजस्थानी मिश्रित हिंदी है।

द्वितीय परिशिष्ट

प्रथम परिशिष्ट में वर्णित रचनाकारों की कृतियों के उद्धरण



द्वितीय परिशिष्ट

रचनाकारों की कृतियों के उद्धरण

संख्या १७—कठेश भंजनी या ताफ्नुस गुर्बा—रचयिता—अफ्नुस मजीद (दिही)
 कागज—दौसी पत्र—६० आकार १२ × ६ इंचों में पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) २३ परिमाण
 (अनुपुप) १६००० लक्षित रूप—गुरानी, गद्य, क्लिपि—नागरी, क्लिपिकाल—मं० १८३०
 (मन् १७३३ ई०) प्राप्तिस्थान—बैथ, ग्राम—बोझारा इमदादी, शककर -बिमवा,
 त्रिस्ता—सीतापुर (अजय) ।

आदि—भीगौशापनम—अथ कठेश भंजनी तोफ्नुस गुर्बा लिख्यते । अफ्नुस मजीद इस्लाम
 जामीनुस इस्लाम स्वेकमानइस्लाम, जरस्ता लाम्बीस इस्लाम, सकराती इस्लाम, मध्दकीमन्ह मिर
 के इस्लाम रूपण का समन पोपी ये जो जो बाजमाइस बीच अया मो एक जगह के के
 पोपी ईदक की बनाइ के नाम तोफ्नुस गुरबा आरती मई हिन्दी मई कठेश भंजनी राया ।
 बरकत उसनास की सी सी बद् अज्ञान कबीर हक मेन उरुक अजनुस मजीद अनुसार लिखण
 पोपी का की छिर काफियत सो तमाम होतीस । पीठे इस्लाम सबन तुलन का बनाई दिया कि
 बुपिन के काम आबै और इस्लाम आरति मरु का । मरु की कामएव त्रियादा होइ और
 गुन गरम होइ ।

अट—सराकीव इस्लाम अर्जि का त्रिय मूर्ति होइ तिमका पिसा मर पात भीम के
 साये में सुयार्ब । एही बराबर सब लेइ । इरही, मिरच भोया बाय बिर्ग, ईतरा सोकि
 हरा बहेरा, आबक, सैयानोन, संय मिमरी दादहरही, बेल् बिचिर कूरि पीपरि सब दारु
 बराबर लेइके कूरे छान मिमाल सुरमा के मिही करे वाँच रूप मेही मिगोई तब रूप को इरु
 पी जाय तव गोली मेकहार मिरच बाये साये मी सुयार्ब अब सूये तब आनि सुयी इरु कर ती
 मेही के रूप मह घसि के आनि मह अंजन करे तो अर्जि इरु न करे कूकी वर होय । जो
 किमी की आलि में कमल होइ ती काजी सो घसि के साथे सात रोज कबल वृरि होय जो
 किमी की अर्जि में माड़ा होय तो जो अर्जि बेटी जनी हाय उसके उसके रूप में घसि के
 मात रोज अंजन करे माड़ा वृर होइ । जो आँख मेंह काया छाया होय तो बानी पानी में
 पिनी के अंजन करे मात रोज ती काया वृर होइ । जो अर्जि मह रोसनी न हाय तिमिरि
 होइ एक को बुइ ईर्ष तो पानी ताये में पिनि के अंजन करे सात रोज तिमिरि वृरि होय
 अर्जि रोमन होय नूब । जो कोई खाना त्रियादा लाये हो पचा न होय एक गोली गाय ती
 मितापी मे इजम होय मूर सगि मिताष जो किमी को सॉप काय होय तो एक गोली त्रियाद्
 देइ अहर वृर होय । जो किमी का मनिपात हाइ तो बीदइ रोज गोमी त्रियाद् ती मनि
 पात वृर होय ॥

विषय—द्वैतक

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रन्थ के समग्रहकर्ता अच्युत मजीद हैं। पुस्तक बहुत अशुद्ध लिखी गई है। लिपिकाल १८३० वि० है।

सत्या १ वी—श्लेषभजिनी या तोफतुल गुर्वा—रचयिता अच्युत मजीद, दिल्ली। कागज देशी, पत्र ६०, आकार—१२" X ६", पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप) १६०० श्लोक। खटित रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३६ = १७७६ ई० प्राप्तिस्थान—प० गणपति जी द्विवेदी, ग्राम—नयागांव, डाकघर सादरपुर, जिला सीतापुर (अवध)।

आदि—ॐ श्री गणेशायनमः ॥ कौवाकी इलाज के दुपण को दूर करने का अफला तूण हकीम, जालीनूर हकीम। लोकमान हकीम। अरस्ता तालीम हकीम। मर्राती हकीम। सब हकीमन्ह मिलि इलाज दुपण का मवन पोथी से जो जो अजमाइया ॥ इस बीच आया सो एक जगह कह कह पोथी बंदक चनाइ नाम पोथी तोफतूल गुरवा फारसी मर्हें हिंदूइ कलेस भजनी रापा। वरकत उसनास की से मैं चद अठान फकीर एक। मेन उरूप अच्युत मजीद अनुसार लिपण पोथी का की रंगर आफियत मो तमाम होतीम पीले इलाज सवन दूपण का चनाइ दिया कि दुखिन के काम आर्वे X X X X X X X X X X तरकीब इलाज नामर्द का ले आर्वे नारौ री वीसठो जवेह करिके उसके पेट में अर्ध एक लरी मो सधे जो टारु गिरि न आध सेर मनु मर्हें डारि देह की दूवा रहे सात रोज तय निम्नल के रथे तिय पीठे एक एक चीरा रोज गाय के घीव में पकाइ के साइ करम से दुवारा मरद होइ वीस X X व से सत्रमे रोज एक ही तरह से पकाय खाय मरदी बहुत होय। जितना पोस्तक मित्ती उतनी लिखी करीम र्हाँ जिल्दसाज देहली सवत् १८३८ मिय मीर दरवाजा माह वैशाख दसमी रोज ॥

विषय—द्वैतक

सत्या २ ए—अमरावली—रचयिता—(स्वामी) अचलदास, कागज देशी, पत्र ७४ आकार—६" X ५", पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ५०० श्लोक। रूप—प्राचीन। लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०८ = १८५१ ई० प्राप्तिस्थान—बाबा साहब दास गणेशमदिर—प्रसानी देवी वाले, डाकघर सहादतगज, जिला लखनऊ

आदि—श्री अपठानद साहेब की दया ॥ रिपि संत की दया ॥ सब देवन की दया ॥ अमरावली ग्रन्थ लिख्यते जो चौपाई ॥ अमरपुरा सतन की वासा। तहर्वाँ शब्द राम परकासा ॥ जो आवे मन इद विस्वासा। मिलै राम पूरण परकासा ॥ आदि X X नामै की आसा। जब लग रहे घट भीतर स्वासा ॥ राम नाम रस चारौ दासा। और न राखो दूसरि आसा ॥

अर्त्—द्रोहा—सुनिन्ह पादुहा है जोति करै परकास। दास अचल सतगुरु मिले शब्दै करि विश्वास ॥ सन् वारा सै अड्डावन मां ग्रय कीन परकास। दास अचल सत्तगुरु मिले पूरन ह्वे गइ आस ॥ सवत वनइस सै आठ मा ग्रय कीन यह भास। दास अचल सत्तगुरु मिले रहौ चरण के पास ॥ जोति जगमगी सीस पर निरखो सत सुजान ॥ दास अचल सतगुरु मिले करु नैनन पहिचान ॥ जहलग जग मां जीव है जोतिन ते निरधार। दास अचल सत्त-

गुह मिले नैतन मध्य विचार ॥ अथल माहेव का प्रथम सम्पूर्ण । सतगुरु उपदेश नाम पर
गास ॥ अगहन सुरी बुद्ध दिन सोमवार ॥

विषय—रामनाम महिमा ।

मंठया २ बी—अनुमठ प्रकाश—रचयिता—(स्वामी) अथलगास, सृष्टपुर पद
रेस, कागज तथा पत्र, ८, आकार—१३ × ८', पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुपुष्ट)
१४७ श्लोक । रूप—मधीन । तिथि—सागरी, प्रासिस्थान—याबा साहब गणेशमंदिर मगामी
देवी घाल, डाकघर सहादतगंज, त्रिंसा कछनड ।

आदि—प्रथम अनुमठी प्रकाश लिप्यन्ते ॥ सठ गुरोवाच ॥ शोदा ॥

दस प्रकार अनहदु बर्जे सुभी लिप्ये र्द काज ।

आबा गदन बुविषा मिठे पाई पद निषांन ॥

जोति मरुपी नीरजन सो इहे अस्यान ।

बौह गौह जो मऽ पाई अनर्भा जान ॥

निर्घोवाच—अथ आहं विचाम दिदिदु गुग्हर चरण का प्यान । अथर कपु मारी
वही मार्य बचन परमान ॥ दाम अथल के शीत पर गुग्हरी हा निषान । करि बापा
आपन करी अग न माया पान ॥ इहा पींगला मुनमना विकुटी मध्य मुकाम । गुग्हरी बापा
त पाहूही मक्ति सहित तब नाम ॥ सठगुरोवाच ॥ यही वरतु निज जानिसे और नहीं
कपु जान । जो कौरे मारी लर्य लह प्रहस मुन प्यान । अरि सरल आया लर्भ दिन मध्य
समान । सा शामी पर मुकभ है मार्य कर परमान ॥ × × × ×
अत—दाहा ॥ प्रथम अनर्भा प्रकाश यह पद गुर्न पितसाय । सइस भर्म विमता मिठे
सतगुरु दीन कलाय ॥ १ ॥ माहेव अथल गुह, जोगिया काज जगत भीतार । मक्ति मुक्ति
जीवन की इहे कीम्हद पतित उवार ॥ २ ॥ इति श्री प्रथम अनर्भा प्रकाश अथल माहेव
को मंठर्ण ॥ शुभ मस्तु ॥ इति ॥

विषय—संवाद रूप में इधर-महिमा और मक्ति निरूपण

मंठया २ सी—नाम सागर—रचयिता—(स्वामी) अथलगास, कागज देती मिर, पत्र
१४६, आकार—१० × ७, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८ परिमाण (अनुपुष्ट) ११५०
श्लोक रूप—प्राचीन । तिथि—सागरी रचनाकाम—मं० १६०५=१८४८ ई०, प्रासिस्थान—
बाबा साहबदाम (गणेश मंदिर मगामी देवी घाल) डाकघर सहादतगंज, त्रिंसा
कछनड ।

आदि—ॐ तामन् ओं तामन् ॥ श्री कर्मदा मंद माहेव की दवा ॥ प्रथम नाम सागर
लिप्यन्ते ॥ श्रीपार् ॥ बुहे अथर का सुमिरन जानी । मग्नु महित गणेश बलानी ॥ नाम
महात्म मुना भवानी । अनहदु मरुद करी पदियानी ॥ १ ॥ बदा शंसु अयि विर्मल वानी ।
तबही निर्द्वं अज भवानी ॥ ३ ॥ अहे नि मुगन मनमानी । शुक्राचार्य भये मद्रजानी । ४ ।
कट्टे लति महिमा नाम की गार् । जाहा बेद विमल गाहार् ॥ ५ ॥ × × ×

अत—टोहा—धरती और आकाश में रहा शब्द भरपूर । कहै दास अचल मतगुरु मिले
हय हिय शब्द हजूर ॥ जो देखा सो मति कहा मत्यनाम उपदेश । पटन धवन जो कोट
करै रहै न दुख लवलेम ॥ दैत सुदी चतुर्दस संवत वनद्वय में पाँच । ग्रथ अल्प प्रकाश
यह भयो पूर्ण मन राच ॥ इति ॥

विषय—नाम की महिमा तथा भक्तों की विस्तार पूर्वक कथा ।

सत्या २ डी०—रामावती, रचयिता—(स्वामी) अचलदास, कागज—देशी, पत्र ६६
आकार—६ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुपुष्प) ९३६ श्लोक, रूप—
प्राचीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०६=१८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—वावा
साहबदास जी गणेश मठिर मयानी देवी वाले,—डाकघर महादत्तगज, जिला लखनऊ ।

आदि—श्री अखदानद साहेब की दया ॥ रिषी मुनी संत की दया ॥ सब देवन
की दया ॥ रामाडली ग्रथ लिप्यते ॥ चौपाई ॥ यदो गुरु पितु मातु मनाई । यदो चाँद
सुरज हरपाई ॥ वन्दो रिषि मुनि मत मनाई ॥ वन्दो धरनि अकाम महाई ॥ वन्दो
अग्नि पवन मन लाई ॥ वन्दो जल रसमीम नचाई ॥ वन्दो ब्रह्मा विश्नु गुमाई ॥ वन्दो
महादेव गुण गाई ॥

अत—टोहा—जो कष्ट नखो बनायो रघुपति दीन दयाल । दास अचल मत गुरु
मिले सट्ट निरोमनि लाल ॥ अचल साहेब का गृथ सम्पूर्ण । सत्य महीना फागुन सुदी २
दिन गतवार ॥ साखी ॥ मन् वारा मै उनमठ ग्रथ भये सपूर ॥ दास अचल मत गुरु मिले
साँढा पूरमपूर ॥ सवत् १९०९ है ग्रथ भये भरपूर । दास अचल मत गुरु मिले हाजिर रहाँ
हजूर ॥ दस नारी वरनन करौं जानो ज्ञानी लोग । दास अचल मत गुरु मिले लागे न माया
रोग ॥ समाप्त ॥

विषय—राम यश वर्णन । इयमें रामचंद्र ने सतों की रक्षा के लिये जो जो कार्य
किये हैं उन का वर्णन है । विशेषता यह है कि हर एक चौपाई में राम का याने रकार व
मकार अक्षर में न कहीं आ गया है । यह भक्ति रम का ग्रथ है ।

सत्या २ ई०—रत्नमागर, रचयिता—(स्वामी) अचलदास, सूर्यपुर बहरेल, कागज—
नया, पत्र—२६, आकार—६३ × ८ इंच, पक्ति—(प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुपुष्प)
५२३ श्लोक, रूप—नवीन, लिपि—नागरी रचनाकाल—स० १९०६=१८५२ ई०,
प्राप्तिस्थान—वावा साहबदास गणेश मठिर मयानी देवी वाले,—डाकघर—महादत्तगज
जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री अखदानद साहेब की दया । ऋषि मुनि संत की दया ॥ ग्रथ रत्न
मागर लिप्यते—झलना ॥

काया मक्का मकान जाहूत बना आला जोति सो आप विराजत जी ।
काजी मोलना दर्म दिशर करो तेरा साहेब हिया के माछ है जी ॥
घट भीतर बाहर ज्योति वरै हिय सट्ट आखड आपार है जी ।
अचल साहेब विचार कहै ले नाम भवमागर पार है जी ॥१॥

चारि पारी मुहम्मद पीर मिर्क कसिमा जाय है जीप वेताइय जी ।
 बहुतो रंप अवार हबे कोइ विरले मुरसद जानिये जी ॥
 कुरान किताब की गम्य नहीं शेखा जाय निमाज पदाइये जी ।
 अचल साहेब बिचार कइ से भाम भवसागर पार है जी ॥२॥

अंत—इस जगद हमी घट मा प्रीमे सोइ मही मां तो है जी ।
 अचल साहेब बिचारि कइ से भाम भवसागर पार है जी ॥१०३॥
 गुद संत ते बिनती करी मोरी छोइ न कयहूँ बिमारिये जी ।
 मीं तो तुम्हरे भरोये रहेक छिरी और के पास न जाइये जी ॥
 मइ आंगद बसि घट मा बहु जलम मघाती इमार है जी ।
 अचल साहेब बिचारि कई से नाम भौसागर पार है जी ॥१०४॥

इति श्री प्रथ रत्न सागर सङ्गुल छममस्तु ॥

साय महीना अठ का रबिदिन तेरम जाय । संख्य बनइय छे तीं कही पूरल प्रथ प्रमाण ॥

॥ समाप्त ॥

विषय—वेदान्त । इममें सब ब्रह्म निरूपण है ।

संख्या २ पङ्क-दाण्ड गुंजार, रचयिता—(स्वामी) अचलदास, मुर्षापुर बहरोल, कागज
 नया, पत्र २१, आकार—१३ × ८ इंच पन्डि (प्रति पृष्ठ) ३० परिमाण (अनुच्छेप)
 ४३३ श्लोक, रूप—जर्बन, छिपि—यागरी रचनाकाल—सं० १९०८ = १८२१ ई०,
 प्रसिरयाज—बाबा साहेब दास गौतममंदिर मनामी दुबी बाम, डाकपर सहादतगंज,
 त्रिहा सत्यनरक

बादि श्री गौतमवचनः ॥ श्री अर्वाहामंद साहेब की दया ॥ सब ध्वन की दया ॥
 अपि मुनि संतन की दया । प्रथ दाण्ड गुंजार छिप्यनयम् ॥ श्रीपार्इ ॥ दस प्रकार बनइय
 पहिचानी । अवन समाधि विपारै ज्ञानी ॥ इंगा मण्ड गर्जे अशामानी । बदे बिदेह पुरय
 विर्वानी ॥ १ ॥ × × × × × × × ×

अंत—बिन मनगुद नहिं सुई ज्ञानी । अंधा इपन सों पहिचानी ॥ बिन सतगुद को
 जानै ज्ञानी । यिपा राम मुमिरी अभिमानी ॥ २७९ ॥ दीहा ॥ मन् बारा सी अड्डावन
 प्रथ कीन परगणम । सहेब अचल मतगुर मिले पूरल होइगी आन ॥ २७० ॥ संख्य
 बनइय मी भाठ मां प्रथ कियो पद भाय । सहेब अचल सतगुद मिले मिदिगी यम
 है धाम ॥ २७८ ॥ ना इम, मरय त्रियय नही ना इक आदब जाब । सहेब
 अचल सतगुद मिले सार मण्ड मिलि जाब ॥ २७९ ॥ प्रथ दाण्ड गुंजार यह सचल मिदि
 की गान ॥ पठन अवन जो कोइ करे । पावे पद निर्वाण ॥ २८० ॥ इति ॥

विषय—वेदान्त । इममें परम पद प्राप्ति का वर्णन है । विचार हाइय कमल जाग
 मारग प्राय बायु के अर्ध लिगे है । निर्गुन सगुन ब्रह्म का निरूपण भी है ।

संख्या २ जी—दाण्ड (बानी) सागर, रचयिता—(स्वामी) अचलदास मुर्षापुरा

वहंरल, कागज देशी, पत्र १०, आकार—१३' X ८", पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३२, परिमाण (अनु-
पट्टप) १६८०, खंडित । रूप—प्राचीन, जीर्ण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०६ =
१८४६ ई० प्राप्तिस्थान—त्रावा साहजदाम गणेश मंदिर मगनी देवी वाले, ढाकघर
सहादतगंज, जिला लखनऊ ।

आदि—अथ शब्द वानी उच्चारणम् ॥ शब्दमागर ॥ दोहा ॥ श्री अखंडानन्द माहेय
विनै करौ कर जोरि । सहेव अचल अपना करौ विगरे ना सुधि मोरि ॥ १ ॥ श्री अगटा नद
साहेव तुमरे चरण पर ध्यान । सहेव अचल अपना करौ लगे न माया वान ॥ २ ॥ महा
सुन्य ते शब्द भे शब्द हिते अंकार । सहेव अचल सत्तगुरु मिले लखि पायो धन्द-
कार ॥ ३ ॥

अत—

वाजे वाजे अनहद धुनि विमल तान ।

कोई सुनै सत जाकी लागी कान । परमात्म पूरण धरौ ध्यान ॥ वाजे ॥
जाकी जोति वरै लखु घट समान । हिरटे उजयारी कौटि भान ॥ वाजे २ ॥
जम माया लाये आन तान । तोहि सूक्ष्म नार्ही सुन रे नदान ॥ वाजे २ ॥
लखि दास अचल छवि के मस्तान् । मोहि और न भायै आन जान ॥ वाजे २ ॥

सम्पूर्ण सत माघ सुदी १३ मघत् १६०६ ॥ समाप्त भई ॥

विषय—भक्ति निरूपण

सख्या ३ पु.—द्वैचक जोग समग्र, रचयिता—आधार मिश्र, कागज देशी, पत्र १२८,
आकार—१२ X ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुपट्टप) २०४८
श्लोक, खंडित । रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५६ = १७९६
ई०, प्राप्तिस्थान—प० श्रीकृष्ण लाल दूवे, ग्राम—बलगावाँ, ढाकघर धानागाँव, जिला सीता-
पुर, (अवध)

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ द्वैचक जोग समग्र लिप्यते ॥ जीर्ण ज्वर लक्षण ॥
उदर पीड़ा छटि होइ गरी जरै विरोचन हुकार ॥ मत्तज्वर ॥ कठ सूपै दाह अग होइ पीड़ा
अंग भर्म सिर पीड़ा ॥ पित्त ज्वर लछन ॥ सिर पीड़ा भर्म मूर्छा अस्ति पीडा दाह रक्त
मुप कटुक ॥ पेट ज्वर लक्षण ॥ देह पीड़ा निद्रा आलस स्वेद जम नेत्र पीडा ॥ वात ज्वर
लक्षण ॥ सीत कप महा दाह नृपा चित्त भर्म विकलौ जीभ कटक फटी ॥

अंत—अथ कपूर सोधै ॥ गुक दुग्ध में डोला जत्र करिके चुरवै ॥ सुद्ध होइ ।
अभ्रक मारन विधि ॥ कृष्ण अभ्रक अग्नि बीच लाल करै गो दुग्ध में बुझावै कृति कै अर्क
दुग्ध में घोटे चक्र करि अर्क पत्र लपेटे पर्त ४ गज पुट आच देइ अर्क दुग्ध में घोटे
घोटे गज पुट करै वारह वार फिरि वह जटा क्वाथ में घोटे घोटे आंच देइ वार ३ चंद्र देपि
कै तव सिद्धि करै चमकै तौ फिरि मारै वट दुग्ध में वा क्वाथ फूँ कि कै रस लाल कै सर्व
काम करै ॥ इति द्वैचक जोग समग्र आधार मिश्र कृत सपूर्ण समाप्त । लिखत वेनी वकस
मुराऊ सैदापुर वाले संवत् १८५६ चैत्र प्रतिपदा ॥

विषय—द्वैचक,

संख्या ३ बी—बैद्यक जोग संग्रह, रचयिता—भाषार मिश्र, कागज वेसी, पत्र—१०८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुपुष्टय) १८२८ । रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, छिपिकाल—सं० १८७० = १८१३ ई० प्राप्तिस्थान—पं० सिद्धिनाथ वैद्य ग्राम—हुसैनगंज बाबली, बिला—कलकत्ता (अजय)

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक नाम जोग संग्रह ग्रंथ लिख्यते ॥ अथ नाड़ी परीक्षा लिख्यते ॥ हाथ के अँगूठे की जड़ में जो नाड़ी चलती है सो बीच की साड़ी है वैद्य उमकी गति का ज्ञान करके सुख और दुःख जान लेते हैं सो क सर्प की नाई चाँदी वायु प्रधान नाड़ी चलती है ॥ कुर्लिंग काँक मेदक की गति फुदकती पित्त की नाड़ी चलती है, इस कबूतर बतक मोर इनकी चाल कक की नाड़ी चलती है संवपात की सीतर बटेर की चाल चलती है और दो दोय बादिका की नाड़ी कहीं भीर और कहीं स्त्रीय चलती है और जो नाड़ी अपने स्थान को त्याग द ती प्राण के हरनेवाली है ॥ जो नाड़ी दस पाँच बेर चलके बंद हो हो के चले और अति ठंडी हो तो रोगी न बिये ॥

अंत—युगः पाह भारत बिधि । अमकोना की माजीसों योदि के धरीत्रै ताके बीच पाह धरं गज पुद बाँच हीनै अमिछी की मुर्चां तर ऊपर धरि बीत्रै । अमिछी न मिलै ती पीपरि को लीत्रि भीसी दफ भडी सो ३ दिवस प्रथै । चौथे दिन रस निकारि रोगी छपि प्रथै ॥ कोठा दम इह कांस बाई को मारै चारि प्रकार जूड़ी रस पडुचत में दारै ॥ इति श्री भाषार मिश्र विरचिते वैद्यक नाम जोग संग्रह पंचमों बिलासा संपूर्ण समाप्त । कृपा ज्ञानी राम वैद्य वैद्य शुकुटा २ संबत १८७० वि० ॥

विषय—वैद्यक ।

संख्या ३ सी—वैद्यक जोग संग्रह, रचयिता—भाषार मिश्र, कागज—वेसी, पत्र—१०६, आकार—१२ × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६ परिमाण (अनुपुष्टय) १९०६ अक्षित । रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, छिपिकाल—सं० १९३२ वि० प्राप्ति स्थान—छात्र शिक्षरत्नसिंह, ग्राम—रामपुर मधुरा, बाकधर—बसोरा बिला—सीतापुर (अजय) आदि—श्रीगणेशायनमः । श्रीमतेरामानुजायनमः ॥ अथ पोषी वैद्यक जोग संग्रह लिख्यते ॥ परिगंभर कल्पन ॥ उद्धर पीदा छर्वि होइ नर जरी विरोचन हुँकार ॥ अथ मल ज्वर कल्पन ॥ कंठ सोय दाह अंग अंग पीदा नर्म सिर पीदा ॥

अंत—अथ सीसा मारन नागरस नाम । माडी को कराही में सीसा को धरे चूहे पर चडाइ तरे अछ्यी आँच करै चुटकी चुटकी कछमी सोरा ऊपर तै छोड़े रसे रसे छक परै सीसा को मारै । रची एक पान पर धरि मिठ प्रमात जो पाइ लुधा प्रबल बरवान सो २० प्रमेह मियाइ ॥ इति जितनी पोषी पाई तितनी क्विपी लिपाई ॥ १ ॥ ह्यया क्विपी गवा प्रमात् पाडे समुभा स्थान संबत १९३२ वैसाव मासे कृष्ण पक्षे बुधवासरे ॥ शुभमस्तु । श्रीराम श्रीराम ।

विषय—वैद्यक (रोग और उमकी औषधियाँ अथ ग्रंथ तथा संहित रसायन रस, धानु मारन बिधि, सेवन बिधि और जससे स्थान आदि)

संख्या ४ ए—प्यान भंजरी, रचयिता—अप्रदास, कागज—वेसी पत्र—२२, आकार—

५ × ४, इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ७, परिमाण (अनुष्टुप) १०६, खडित, रूप - नवीन, पद्य—लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५१ = १७६४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० सुखदेव प्रसाद, ग्राम—पुरासेवकराम, डाकघर—लक्ष्मीकांतगज, जिला—प्रतापगढ़ (अवध)

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ध्यान मंजरी लिप्यते ॥

श्री सुमिरौ श्री रघुवीर धीर रघुवज विभूयन ।
सरन गहे सुप रासि हरत अघ सागर दूपन ॥
सुन्दर राम उदार वानकर सारंग धारी ।
हिय धरि प्रसु को ध्यान विदुप जन आनंद कारी ॥
अंत—सुनौ आगम विधि अरथ कलुक जो मनहिं सुहार्यौ ।
यह मगलकारी ध्यान जथा मति वरन सुनार्यौ ॥
श्री गुरु सत अनुज हर हत असौ गोपुर वामी ।
रसक जनन हित करन रहस यतहि प्रकासी ॥
ध्यान मजरी नाम सुनत मन मोद वढ़ावौ ।
श्री रघुवर को दास सुदित मन अज्ञा मो गावौ ॥
यह लीला विनोद हटे धरि चित लावै ।
परम सुभग धैकुठ पाइ वहुरै नहि आवै ॥

इति श्री ध्यानमंजरी संपूर्णम् सचत् १८५१

विषय—राम के समाजादि के वर्णन के साथ उनके ध्यान का वर्णन ।

सख्या ४ वी ध्यानमजरी, रचयिता—अग्रदास, कागज देशी, पत्र २६, आकार—
६ × ३ १/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, परिमाण (अनुष्टुप) ६०, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—
नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामावतार शर्मा, ग्राम—कृष्णदासपुर डाकघर परियावाँ, जिला
प्रतापगढ़, (अवध)

सूचना—आरंभ और अंत ४ ए के समान ही हैं । पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री स्वामी अग्रदास कृतं रामध्यान मजरी संपूर्णम् ।

सख्या ४ सी—ध्यान मजरी, रचयिता—अग्रदास, कागज सामान्य, पत्र ६,
आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, परिमाण (अनुष्टुप) ५४ ।
रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मानिकलाल जवाहिरलाल चौकी नवीस,
डाकघर चरखारी ।

सूचना—आदि—अत ४. ए के समान हैं । पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री अग्रदास
कृत ध्यानमंजरी संपूर्णं भवत् १९०८ की लिखी भई पोथी से उतारी वैसाख व० १३
संवत् १९५३ में लिखी चौकी नवीस हीरालाल की जै जै श्री सीता राम पहुँचै जो कोउ
वांचे सुनै ताको ।

सख्या ५ ए—अजवदास का झलना, रचयिता—अजवदाम, कागज देशी, पत्र १६,
आकार—७ १/२ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप) १०८, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७६ = १८१६ ई०, प्राप्तिस्थान—
रामेश्वरप्रसाद, ग्राम—देवा = जिला प्रतापगढ़, (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथा श्री अन्नचक्षुःश्याम को शूलना लिप्यते ॥ राम ॥ का
कर्म के चंद में मंद मम कापिभा मेल त्रिभि जार घांग आनि पेरी ॥ मन्म गजराज का जोड़
तब का रहेत एत जब दारी पग सोह बरी : संत के संग में बैठि से पार तुम पाठ यह पुत्र
का मानु मेरी ॥ अन्नचक्षुःश्याम राम के नाम का गाह से चेरि नहीं जगत में होचे पेरी ॥१॥

अंत—ये प काही पाठ को त्रिभि है पाह दीन विधि मे ठाही तू काही
जाना ॥ शीश को छोड़ि के काच मन हाह रहा सुन हा बात का ठम ठामा ॥ पोत हाथे
सिया दारि हीरा दिया इनि श्री साम कपु मादि जाना ॥ अन्नचक्षुःश्याम शूलकी शीत यह
देवि से मिय का बाल करि भेठि माना ॥ ३२ ॥ इनि श्री अन्नचक्षुःश्याम कृत सूचना संपूरन ॥
सबत १८०६ इत्ययं श्रीदहीम साल के । जो दया मो सिया मम होमा न दीयते ॥ मिती
कागुन सुदी ७ राम राम राम राम राम ।

विषय—वर्ष माता के प्रपंड अक्षरों के क्रम मे पारह १५ के परिके पर राम नाम
की महिमा का वचन ।

मंत्र्या ५ बी—सूचना, रचयिता—अन्नचक्षुःश्याम, कावस्थान की पत्निया, त्रिभि—मुल्तानपुर
कागज माटा बाहामी, पत्र २८, आकार—६ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १, परिमाण (अनुपुत्र)
३२, रूप—नवीन लिपि—मागरी, रचनाक्रम—संगम, १७३३ = १९७८ ई०, लिपि
काष्ठ—मं० १९६० = १९०३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर जगन्नाथ चक्रम सिद्ध ग्राम—पनुदा
छात्रपर तिमोई, त्रिभि रायचरणी, (अक्षय)

आदि—'अ' कर्म के चंद मा मंद मम कापिभा मेल गजराज त्रिभि जान पेरी ।
मन्म गजराज को जार तब का श्या दत जब दारि पग सोह बेरी ॥
संत के संग में बैठि से पार तू बात यह गूब जो मान मेरी ।
अन्नचक्षुःश्याम राम के नाम का गापठ चेरि नहि जग में होत पेरी ॥१॥

अंत—'ऊ' जग की बुद्धि को छोड़ि ९ पार तू , छुट कर जापु में हेरु करता ।
दृष्टि को जारि के मिय छुटे नहीं राग लाडा नपन मीर भरता ॥
चरि जागे चला देवता भाईया दान जोशर नहि परक परता ।
अन्नचक्षुःश्याम अक्षय की शूलक मे दूरि दे मानु जामंड जहें कानि परता ॥

x x x x

१५पम्म् ।

विषय—संसार की अकारना—शैशव्य इक्षर की भक्ति प्रेम और भाजन की विधि ।

मंत्र्या ५ मी—सूचना, रचयिता—अन्नचक्षुःश्याम कावस्थान की पत्निया त्रिभि—बाराबंकी,
कागज मन्चेद नया पत्र—३०, आकार—८ x ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २० परिमाण
(अनुपुत्र) ६० मंदित रूप—नवीन; लिपि—देवनागरी प्राप्तिस्थान—ठा० शावरदा
चक्रम सिद्ध ग्राम—पनुदा छात्रपर तिमोई त्रिभि रायचरणी (अक्षय) ।

आदि—दो०—गुरु समान कोठ वैद नहिं, राम नाम सम मूरि ।
 दास अजव परतीति से, होत व्याधि सब दूरि ॥
 दास अजव गुरु तो मिल्यो, शिष्य रग्यो वे होम ।
 मूरि न मुख रोगी धरै, काह वैद कर दोष ॥
 अत—विदेसिया छाए केहि देश । टेक ।

पिय परदेसी ह्वै गए, निशि दिन यही अँदेस ।
 अब आए पन तीसरो, सेत भये सिर केश ॥
 जाको विछुरन होत है, ताको कठिन कलेस ।
 विरहिनि होय सो जानिए, जाको पिय परदेस ॥
 पाती लिखि जावै नही, आवै नही सँदेस ।
 मैं वन २ हेरत फिरौं, करि योगिन को भेष ॥
 कोइ कहै वैकुण्ठ मैं, कोइ कहै सिर शेश ।
 दास अजव कैसी करै, विन साँचै उपदेश ॥
 विरह की मारि मरि जैये, नेह काहुँ सों नहि लैये । टेक ।
 नेह करै तेहि सँग रहै, मति कोइ होय अकेलि ॥
 विछुरन मैं वह हाल है, पाचक लागी वेलि ॥
 नेह करै तवहूँ मरै, छोड़त छूटत प्रान ।
 औपधि लावै नहि लगै, ज्यों विप वारो वान ॥ विरहकी० ।

× × × ×

विषय—ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, विरह, और, राम नाम की महिमा, निहंग मार्ग की भक्ति ।

सरुया ६ ए—शिक्षा वत्तीसी, रचयिता—अजीतसिंह, (जैसलमेर), कागज—देशी, पत्र ३, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुपटुप) ३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्रासिस्थान—लाला रतनलाल, ग्राम—मोहारी, डाकघर सदरपुर, जिला सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शिक्षा वत्तीसी प्रारंभ ॥ दोहा ॥ श्री बल्लभ विठ्ठल प्रभू गिरधर गोविंद राय । वाल कृष्ण गोकुल रघू यदू श्याम घन साय ॥ गढ़ जेसाणे धे तते रावल श्री रणजीत । यह शिक्षा वत्तीस का म्हेता करी अजीत ॥ मन्त्री सेवन कीजिये नृप सेवन के काज । केवल नृप नहिं सेविये सेव्या हुए अकाज ॥ पहिलो भय भगवान को भय वृजो भुव पाल । तीजो भय लोकीक को राख्यां विन मत चाल ॥

अंत—क्षमा दया रख शील सत रख संतोष सुध प्रीति । जुरत फुरत अरु सुरत । से सिध कारज सब होय । म्हेता अजीत को कियो निश्चय यह करि जोय ॥ भूल चूक

सब समझ कै करि कचेग्र सुय सोध । सुन अजीत की वीरती मो मै पाई बहु बोध । छत उबीस अद्वारे आदिबन सुदि दसरत भयो समापत ग्रंथ ये करि अजीत सिंह भाव ॥ इति शिक्षा बचीस मेहता अजीतसिंह कृत संपूरणम् ॥ लिपत गिरधर काष्ठ संवत् १९४० वि०

विषय—शक्ति संबंधी उपदेश

संख्या ६ बी—शिक्षा बचीसी, रचयिता—अजीतसिंह, (बैसफमेर), कागज—दुधी पत्र ३, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुच्छेप) ५० रूप—मबीन, पय । लिपि—जागरी शब्दाकार—सं० १९१८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ शुक्ल, ग्राम—सगगावो डाकघर बीधरा, जिला—उन्नाव (अजय)

सूचना—आदि अंत ६—९ के समान है । आरंभ में विशेषता इतनी ही है—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शिक्षा बचीसी लिप्यते ॥

अंतिम वाक्य इस प्रकार है—इति शिक्षा बचीसी मेहता अजीत कृत संपूर्ण समाप्त ।

संख्या ६ सी—शिक्षा बचीसी, रचयिता—अजीतसिंह कागज—देसी, पत्र ३, आकार—८ × ६" इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३२, परिमाण (अनुच्छेप) ५४, रूप—मशीन, लिपि—जागरी, शब्दाकार—सं० १९१८, प्राप्तिस्थान—पं० रामाधार मिश्र, ग्राम—नगर, डाकघर, मल्लीमपुर, जिला—झीरी (अजय) ।

सूचना—आदि अंत ६ ए, के समान ही है ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति शिक्षा बचीसी अजीतसिंह कृत संपूर्ण समाप्त ॥

संख्या ६ टी—शिक्षा बचीसी रचयिता—अजीतसिंह, कागज—नया पत्र—५, आकार—६ × ४ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८ परिमाण (अनुच्छेप) ६०, पूर्ण । रूप—मशीन, पय । लिपि—जागरी, लिपिकार—सं० १९१८, प्राप्तिस्थान—पं० रमाकांत शुक्ल ग्राम—गरीयदास का पुरवा, डाकघर—गोडबारा, जिला—प्रतापगढ़ (अजय) ।

सूचना—आदि अंत ६ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री महता अजीतसिंह कृत शिक्षा बचीसी ।

संख्या ६ ई—विद्या बचीसी, रचयिता—अजीतसिंह (बैसफमेर), कागज—देधी, पत्र—३, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुच्छेप) ४६, रूप—मशीन, लिपि—जागरी शब्दाकार—सं० १९१८ = १८९१ ई० लिपिकार सं० १९२१ = १८६४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ, ग्राम—सगगावो, डाकघर—बीधरा, जिला—उन्नाव (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विद्या बचीसी लिप्यते ॥ दो० ॥ श्रीकृष्णहिं की मरण है सुधि बुधि दे ततकाक । विघन हरन सब सुप करन नमो नमो गोपाल ॥ गादी बैसन नगर की राजेश्वर रजनीत । यह विद्या बचीस को मेहता करी अजीत ॥ प्रातर्हि उठि गुरु ध्यान धरि प्रभु के चरण संभार सादर गणपति सुमिरि के कर विद्या उपचार ॥ कर्मों मे गुरु वाक्य सुन सुन मों करो उचार ॥ ऐरि इदय धरि कर किन्नी

अक्षर नैन निहार ॥ पांच वर्ष मे आदि लें कर विद्या अभ्यास । जय लग करे श्वेत द्वे
छांड न विद्य आस ॥

अन्त—अरज करत जगजीत ए बहुत नमामे बोध । चूक भूल को जाच कर
सुद्ध करौ कवि सोध ॥ उगनी सौ अठारवै दीप माल शनि दिन्न । कियो संपूरण ग्रथ को
पढ़ मन होय प्रमन्न है ॥ इति श्री अजीत मेहता कर विद्या वत्तीसी संपूर्ण समाप्त लिखत
कन्नु मल सवत् १६२१ वि० ॥

विषय—विद्या की महिमा का वर्णन ॥

सख्या ६ एफ—विद्या वत्तीसी, रचयिता—अजीतसिंह (जैमलमेर), कागज—देशी,
पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ३२, परिमाण (अनुष्टुप) ५०, रूप—
नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१८ = १८६१ ई०, लिपिकाल—स० १६२६ =
१८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामाधार भिन्न, ग्राम—नगर, डाकघर—लखीमपुर,
जिला—खीरी (अवध) ।

सूचना—६ ई के समान आदि अंत । पुष्पिका इम प्रकार है—इति श्री विद्या वत्तीस
मेहता अजीत कृत संपूर्ण समाप्त ॥ लिखते पत्रालाल सत्री विस्वां चाले ख पठनार्थ ॥
सवत् १९२६ वि० ।

सख्या ६ जी—विद्या वत्तीसी, रचयिता—अजीतसिंह, कागज—देशी, पत्र—२,
आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ३२, परिमाण (अनुष्टुप) ३६, पूर्ण । रूप—
जीर्णशीर्ण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६१८ = १८६१ ई०, लिपिकाल—स०
१६४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रतनलाल, ग्राम—मोहारी, डाकघर—सदारपुर,
जिला—सीतापुर (अवध) ।

सूचना—आदि अंत ६ ई के समान । पुष्पिका इम प्रकार है—इति श्री विद्या
वत्तीसी रहेता अजीत कृत संपूर्ण समाप्त । लिखत जीयालाल वैश्य सवत् १९४० । शुभ
मस्तु । राम राम राम ॥

सख्या ७ ए—अमर विनोद, रचयिता—अमरसिंह, कागज देशी, पत्र १७२,
आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप) ११७०, रूप—प्राचीन,
लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—शिवपाल सिंह,
ग्राम—रामनगर, डाकघर राजेपुर, जिला उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ अमर विनोद लिप्यते ॥ दो० ॥ परमानंद पद
वद कै श्री शाकभरिध्यान । गुरु गणेश अरु शारदा ईश्वर जगपति भान ॥ विविध शास्त्र
को देखिके सुगम करौ अधिकार । अमर विनोद जो ग्रथ ही सकल जीव सुप सार ॥ श्री
घनवतर चरण जुग प्रणम धरौ आनंद । शेष फूट इस ग्रथ कौ उपज्यो आनंद कद ॥ इति ॥
निर्वट मते ब्रह्म गुण ॥ अथ जल अष्ट प्रकार विधि लिप्यते ॥ दो० ॥ वर्षा जल पुन नदी
जल अंतरिक्ष पुनि कूप । ऊसर ढाभ तड़ाग जल कहे आठ जल रूप ॥ अथ नदी जल

शुभ । लघु रूपा पुन शोन जन्म भनि पवित्र पुनि साह । बाठ हरम कण का करन भावन
भोरी सोय ॥

भंत—द्वितीय बंध्या चिकित्सा ॥ कर्लीजी हापी का नय बची कर जान में रापे
३ माचन टंक ३ डंड प्रिचने का पानी रई की बची भिगाय दिन ३ भग मे घरे ४,५ में
भनार की बन्नी का पानी अलुमी तेल गुलाब मम भीपपी में पाती कर जान में रही दिन
३।२ बच कानी जीरी कर्लीजी बाबली तिल का तेल वाली करके दिन ३ जान में रापे
पद्मचत संगम करी गर्भे रई सप्तम होय में पेश सिन्धे यत्र माहि नय मोर का पांग इलह
महरी हरती दाढ़ के रम की किरि की का मध्य में नाम लिखी फिर कमर से पांवे सप्तम
होय मिट गर्भे रई इति श्री अमरसिंह विरचित्वाया अमर विनाइ भाषाया प्रथ संपुर्ण
ममाप्तः सिन्धा संवत् १८७० बवार विजयादशमी रूपक मोगीछाम मारुी ॥ श्री राम
मीठाराम श्री सारदापनम ॥

चिपय—१०६

बन्ध्या ७ बी—अमर विनाइ रचयिता—अमरसिंह, कागज—देसी, पत्र
१६० आकार—८×६ इंच, वंकि (प्रति पृष्ठ) २७ परिमाण (अनुदुप) १४५० रूप—
प्राचीन विधि—जागरी सिन्धिकास—सं० १००७ = १८५० इंच, प्रासिग्यान—टाकुर
ओपसिंह ग्राम—मिठलिया डाकघर हुंमानगर, जिला सीरी (अचप) ।

सूचना—आदि भंत ७ ७ के समान है । पुण्डिका हम प्रकार है—

इति श्री अमरसिंह विरचिते अमर विनाइभाषाया पुरप स्त्री बंध्या प्रयोग विधि
उत्तर नंदे प्रायस विधि प्रदे नाम पहाप्याय ममाप्तार्थ प्रथः शुभमस्तु शुभे निपतं शिर
कंद बाबरी संवत् १९०० पारसी १८८४ ॥

बन्ध्या ७ सी—अमरसिंह रचयिता—अमरसिंह कागज—देसी, पत्र ८६,
आकार—८×६ इंच वंकि (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुदुप) १५०० रूप—प्राचीन,
विधि—जागरी, सिन्धिकास—सं० १६१० = १८६२ इंच प्रासिग्यान—५० गयपत हिलरी,
ग्राम—बपागाँव डाकघर—मार्तपुर, जिला—सीतापुर (अचप) ।

सूचना—आदि भंत ७ ७ के समान । पुण्डिका हम प्रकार है—

इति श्री अमरसिंह विरचिते अमर विनाइ भाषाया पुरप स्त्री बंध्या प्रयोग विधि
उत्तर नंदे प्रायस विधि प्रदे नाम पहाप्याय ममाप्तार्थ प्रथः शुभमस्तु शुभ संवत् १६१९
वि० पारसी—१८८४ ॥

बन्ध्या ८ प—अमर विरचयिता रचयिता—अंबरदास, कागज—देसी पत्र—८,
आकार—६×४ इंच, वंकि (प्रति पृष्ठ) १२ परिमाण (अनुदुप) ५० रूप—प्राचीन
विधि—जागरी सिन्धिकास—सं० १७८४ = १७२७ इंच, प्रासिग्यान—५० हीमायाय
मिध, ग्राम—कनेपुर सीतामी, डाकघर—मचीपुर, जिला—उन्नाव (अचप) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अन्ति विरचयती लिख्यते ॥ शुभ भनी होय शु
कीत्रिय रमुचाय यद् जन्म श्रीत्रिये ॥ मोदि मन्त्र बरुबी दीत्रिय । जन्म जन्मा वर श्रीत्रिय ।

तुम दीनवतु दयाल हों तिहू लोकरू के प्रतिपाल हों ॥ तुम राधिकापति रमण हों । परगाम चौदह भुवन हों तुम ज्ञान गोकुलचंद्र हों । हरि वश कंय निकट हों । हम पतित पावन सुनत है । नित नाम निर्मल भजत हें ।

अत—भगत छट सिरावली । गावें सुनै वरदावली । ते मुक्ति फल नर पावहीं । दुप पाप जल भव भाजहीं ॥ वैकुण्ठ उनको वास है सो कहत अम्मर दाम है ॥ इति श्री अम्मरदास कृत भक्त विरुदावली संपूर्णम् । लिखा गगादास सेवक सावन शुक्ला सप्तमी सवत् १७८४ वि० जनारायण की ॥ राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—भगवत्स्तुति

सख्या ८ वी—भक्त विरुदावली, रचयिता—अंबरदास, कागज-देशी, पत्र ८, आकार— ६×४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७९० = १७३३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामरत्न शुक्ल, ग्राम—दरियाबाद, जिला—उन्नाव (अवध) ।

सूचना—आदि अत ८ पृ के समान है । पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री अम्मरदास कृत भक्ति विरुदावली संपूर्णम् लिखत शिवदाकर माधुर नजीवावादी कार्तिक सुदी ६ सवत् १७९० वि० ॥

सख्या ९—खवास खा की कथा, रचयिता—अमोलक कवि, कागज-देशी, पत्र ४०, आकार— १२×६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) १३००, रूप—प्राचीन जीर्ण, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर हनुमान सिंह, ग्राम—गोधनी, टाकवर जैतीपुर, जिला उन्नाव (अवध) ।

आदि—सपियो सपी खवाम खा सब सतिअन पर तू सती । मुप अवल कई पाले सोई वचन जहग सो धरपती ॥ सिर धड़ दियो ममेत कियो हीयो जगदेव को ॥ चलयो सुजस के हेत खा खवास सब आस तज ॥ र व न देप र वनि आ कोमल विध करे विआने ॥ वार वार वारने वरपत श्रुत श्रवन जवाने कमला वानू कुमला गई आपना दी आवली ॥

अंत—अहमद आयो कोपसों सुणयो शाह सलेम । दसत कराय या अवसो टेर कहा मुप मर वाह आसो जो कलु लिपा हुआ सु अहिमद राइ । पाग वाधिये सीस पर चारा हुआ खुदाय ॥ वखशी मिटाट पान तिन क्षिपान सुराय कै लै गयो काधै । तुह चडते कावल दल भजत कोऊ टिक्त दोऊ दल साथे ॥ काम परा अव येही पछाना अकल परी छत्रय आघे ॥ इस सैदन उत शाह अंध लो अहमद पाग काह पर वोधे ॥ जोड़ कटक भटकन के कव तीर तुफंगन बांध लियो है । वाँह गही उतरि पोगड़ ते उन नाम साहब को याद कियो है भनै नरू सिंह लिपी जु लिलाट सुमेटन हार न कोई भयो है ॥ सपी खान खवास रग गये गीही तूही मुइयो जाका बोल गयो है ॥

विषय—दिल्ली के बादशाह सलेम जो शेरशाह का पुत्र था । इनके यहां राजा जगदेव नौकर था । बादशाह की स्त्री ने जगदेव से अनुचित संबंध रखना चाहा परंतु

जगदेव ने इनकार किया। इससे बादशाह की खीने जगदेव को बिराज समझकर बादशाह से जुगली करती जिसके कारण राजा जगदेव सिंह भागकर आगरा के पास बपाना पहुँच कर वहाँ के नबाब खवास खाँ से मिला उन्होंने राजा जगदेव को अपनी दारण में आया जान कर जान बखशी और जब सलेम ने खाँ खवास मन्बाब से राजा जगदेव को भांगा तो नबाब ने इसे से इनकार किया जिसपर खाँ खवास और शाह सलेम दोनों का युद्ध हुआ। खाँ खवास द्वारा और मारा गया। इस कारण से खाँ खवास की खीने राजा जगदेव को अपना पुत्र समझ कर राज गरी पर बैठावा ॥

संख्या १०५—कोक मंजरी, रचयिता—आनंद कवि, कागज-द्वैती, पत्र ६०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३६ परिमाण (अनुच्छेद) १२०९, रूप—प्राचीन छिपि—नागरी, रचनाकाळ—सं० १८२८ = १७७१ ई० लिपिकाळ—सं० १८५९ = १७९२ ई०, प्राप्तिस्थान—छ० शिबरलसिंह ग्राम—रामपुर मधुरा, बाकपर बसोरा, जिला सीतापुर (अजय)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कोक मंजरी लिप्यत्रै शो० ॥ ललित सुमन धनु कल्पि निच टन छवि अमिन्न कंद । मधु रति संग ओ रति रजन है श्री मदन अमंद ॥ वरनी काम अमिराम छवि वरनी मामिनि भोग । मरुल कोक छवि मयन करि । रणो सार सुप जीग ॥ मनुज रूप है अवतरयो तीनि भांति को जोग । दरब उपावन हरि मजन श्री मामिनि की भोग ॥ अगति मली भगवत की भोग तो मामिनि भोग । वह संकट मे युक्त हरन् यह मुच करन प्रयोग । कलित वचन सच कबिन के मुरति करत सब कोव । त्रिग अत्रित सब कामिनी मेद सवन में होइ ।

अंत—अंद ॥ पदि सकल काव्य करि करि विचार बरम्यो आनंद कवि कोकसार सर्ग जो हावस सरति सर अबजे सुने यह छंद । पत पदत रति रंग नव विविधित हित आनंद । इति श्री कोक मंजरी आनंद कृत काम केकि वर्णनम् कोक मंजरी समाप्तम् संबत १८२८ वि रसिकन को सुप देत है कोकसार बहु भांति । लिपत मुन्नु सरल पादक मिटीरा विद्यामी संबत १८५६ बवार मासे कृष्ण पक्षे तिथी बसन्त्याम् दशमी ॥

विषय—पुरुष छियों के गुण ब्यानों के रोग और उसकी औपधिपा और जगों का बर्णन इन पुराण में तीन तरह हैं पहले में जय मंत्र दूधरे में औपधिपा और तीमर में सचित्र आसन बर्णित हैं ।

संख्या १०६—कोक मंजरी, रचयिता—आनंद कवि, कागज-साधारण, पत्र ३६, आकार—६२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३० परिमाण (अनुच्छेद) १२५, रूप—प्राचीन, छिपि—नागरी रचनाकाळ—सं० १६९० = १६०३ ई० लिपिकाळ—सं० १८२० = १८०० ई०, प्राप्तिस्थान—प० गयाहीन मिश्र ग्राम—पंडित का पुरवा बाकपर—समामगढ़ जिला प्रतापगढ़ (अजय)।

संख्या १०७—कोकसार, रचयिता—आनंद कवि (कोटा हिमार), कागज-द्वैती, पत्र ६०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १० परिमाण (अनुच्छेद) ५२५,

रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७० = १८१७ ई० प्रासिस्थान—प० नंदलाल शर्मा वैद्य, ग्राम—मैकूलाल भवन, डाकघर अमीनाबाद, जिला लगनऊ ।

संख्या १० डी—कोकमार, रचयिता—आनंद कवि, कागज-देशी, पत्र ६४, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) ८२२, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९२ = १८३५ ई०, प्रासिस्थान—नैपालसिंह, ग्राम—भौली, डाकघर तालाबवदशी, जिला लगनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ कोक सार लिप्यते ॥ द्रोहा ॥ ललित सुवन धन अलि वचन तन छवि अभिनव कद । मधु रति सग जोरति रवन जै जै मदन अनद ॥ १ ॥ वरनौ काम अभिराम छवि वरनौ भामिन भोग ।

अंत—द्रोहा ॥ स्वर्ग जो द्वादस रति सर मय तेजु ते बहु छद ।

पढ़त पढ़त रति रग नव विधि चित हित आनंद ॥ ४७ ॥ इति श्री कोकमार विरचितो आनंद कवि कृते कामकेलि वर्णन कोकसार समाप्त ॥ लिप्यते श्री चौहान वर आम्मानसिंह भौली के तरफ पठे हैं ।

विषय—स्त्री पुरुष के लक्षण व्याधि आदि के निदान तथा उनसे रक्षा पाने के उपाय व रति केलि आदि का वर्णन ।

संख्या १० ई०—कोकसार, रचयिता—आनंद कवि (हिसार), कागज देशी, पत्र ४२, आकार—८ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप) ५६७, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्रासिस्थान—आंकारनाथ पाडे, ग्राम—स्कूल चचेहरा, डाकघर कोयानौरिया, जिला प्रतापगढ़ (अवध) ।

संख्या १० एफ—कोकसार या कोकमजरी, रचयिता—आनंद कवि कायस्थ (कोटा हिसार), पत्र ७८, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप) ७४६, रूप - प्राचीन फटी, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०८ या १५५१ ई०, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्रासिस्थान टा० रनधीर सिंह जर्मोदार, ग्राम—मौखानीपुर, डाकघर, तालाब वक्सी, जिला लगनऊ ।

आदि—श्री गणेशायै नम अथ कोक साख आनंद कृत लिप्यते ॥ ललित सुमन धनु अलिपनिच तन छवि अतिनव कंद । मधु रितु हितु अति रति रवन जय जय मदन अनद ॥ वरन काम अभिराम छवि वरनो भामिनि भोग । सकल कोक दधि मथन कै रच्यो सार सुख जोग ॥ २ ॥ भक्ति येक भगवत की भो भामिनि भोग । वह सकठ में सुप करन वह दुख हरन वियोग ॥ ३ ॥ मनुस रूप है अव तरयो तीनि वात को जोग । द्रव्य उपावन हरि भजन और भामिनी भोग ॥ ४ ॥ कायथ कुल आनंद कवि वासी कोट हसार । कोक कला इहि रचि करन जिन यह कियो विचार ॥ ५ ॥ रितु वसत सवत सरस रचे जां बहु विधि छद । सोरह सँ अरु आठ । कोक मंजरी यह करी धर्म कर्म कर पाठ ॥ ६ ॥ पंड पंचदश अति सरश रचे जो बहु विधि छद । पढ़त चढ़त अति चोप चित वाइत अति आनंद ॥ ७ ॥ चतुर सुकवि पढ़ित सरश जो जानै छवि छद । भूल्यो कहूँ सवारियो विनती करत अनद ॥ ८ ॥

स्थित बचन सब कविम के सुरत करत सब किये । प्रग श्रीजन सब कमिनी मेह
सबन मो होय ॥ ९ ॥ विगल विन छंददि रच अद गीता विन ज्ञान । कोक परे पिन
रति कर ते मर रच समाम ॥ १० ॥

अंत—अब अपेक्ष पुष्ट बल स्वभाव की दया ॥ वार्ता ॥ अर्धम अरि × × ×
अरि शींग सब शीज बाबरी द्यारि अरि छोहारा की गुटुली निहारी × × × × ×
क भीतर जेतना अंदाइ तेतना मरै तब रूप १ सैर चढ़ाई । छोहारा × × × बापे
छोहारा पाइ रूप विधे अंवेज बहुत हो पुष्ट होय बल होय ॥ ४९ ॥ × × × चोपाई
सिब अरिज अरि कूर मंगधि । सोपा चतियाँ धनि विद्याने । × × पापीं जानि । पुरी
बाधि पानी यह ज्ञानि ॥ ताकी सुप कु तजि जाइ । येह भीय × × इ ॥ जोकि कुवाइ
हरम ॥ र्थापाई मगुर तक नागर छे आरि ॥ त × × × × करा जोनि बाहु अति
होई ॥ तदनी तैस लगाधि सोई × × × × र्थापाई ॥ मोया अद ह्वापची जाकि
मय कचूर पुनि प × × हुआ कोई ॥ अति सुवासु निज तब में होई ॥ ५२ ॥ कैंक सार
× × × पुन्य सर्व शरि कडक विहार वर्णनी नाम पंचदसो पडा × × समाप्त
मार्ग शीर्ष मासे अस्त्र पसे तिबा पं० संवत् १९३२ × × × × भीखी मीखे
पानीपुरके ॥ जैसी × × ह्यीपी मम होयो न शीव × × × × × × ×
इम शुद्ध × × ×

विषय—नं० १०—ईं में वृत्तो ।

संख्या—१० जी—कोइमार, रचयिता—आनंद (कोटा हिंसार), कागज—साधारण,
पत्र ४१, आकार—७ १/२ × ६ ३/४ इंच, वंकि (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुच्छेप) ६४५, रूप—
बर्चीन पत्र, लिपि—नागरी, लिपिकाळ—सं० १९५३ = १८९८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं०
बासुदेवमहाप, ग्राम—इमाम, बाकपर-मार्गीरज जिह्वा-प्रतापगढ़ ।

संख्या—१० पत्र—कोइमार, रचयिता—आनंद, कागज—बदामी बया, पत्र ३४
आकार—८ × ६ ३/४ इंच वंकि (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुच्छेप) ४०४, रूप—बर्चीन
पत्र, लिपि—नागरी, लिपिकाळ—सं० १९५८ = १९०१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण विहारी
मिश्र माडेल हाइस, जिह्वा-रुगनज ।

संख्या—१० आई—कोइमार, रचयिता—आनंद कवि, कागज—दही, पत्र ३३,
आकार—६ × ४ इंच वंकि (प्रति पृष्ठ) ३९ परिमाण (अनुच्छेप) ५९४, रूप—ग्राचीन,
लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२८ प्राप्तिस्थान—आनंद भयम पुस्तकालय ग्राम—
विमर्षी जिह्वा सीतापुर (अवध) ।

संख्या—१० जे—कोइमार, रचयिता—आनंद कवि कागज—साधारण, पत्र ३४,
आकार—७ ३/४ × ३ इंच वंकि (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुच्छेप) ४०२, वंकि, रूप—
बर्चीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भगवती प्रसाद त्रिगुनायन, ग्राम—तराहा, बाकपर
पही, जिह्वा-प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कोक सार ॥

ललित सुमन धनु अलि पनच, तन छवि अभिनव कंद ।

(मधु रितु हितु अति रति रदन जय जय मदन अनंद) ॥

वरणों काम अभिराम छवि, वरणों भामिन भोग ।

सकल कोक वधि मथन करि, रच्यो सार सुख जोग ॥

भक्ति एक भगवत की, भोग सु भामिनि भोग ।

वह सकट में सुख करन, यह दुख हरन वियोग ॥

मनुष्य रूप द्वै अवतरें, तीनि वात के जोग ।

दृव्य उपार्जन हरि भजन, अरु भामिन को भोग ॥

अत—पिय ठाढ़े तिय कटि गहै, लेइ अक भरि वाल ।

तिय उठाय भुज पर धरै, आसन कहाँ मराल ॥ १४ ॥

कामिनि पभ लागि निजु ठाढ़ी ।

कामी गई अलिगन वाड़ी ॥

लेइ उठाय भुजनि पर वाल ।

कटि ताकी गहै यह आसन आय मृणाल ॥ १५ ॥

तिय पाँढ़ि के जंघ उभय पकरै ।

कर उन्नत कत को सीस धरै ॥

पिय पाँढ़ि रहै कुच केलि करै ।

सुख पल्लव आसन नाम धरै ॥ १६ ॥

विमल आसन

... ..

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १३ तक ... प्रथम खंड ।

मंगला चरण, कोक की उपयोगिता, अथ रचने की प्रतिज्ञा, पद्मिनी आदि स्त्रियों के लक्षण, उनके नाम तथा योनि प्रमाण ।

(२) पृ० १६ से पृ० १७ तक—तृतीय तरंग ।

समरति, सामान्य रति, उत्कृष्ट रति वर्णन ।

(३) पृ० १३ से पृ० १५ तक—द्वितीय खंड ।

पुरुष लक्षण उनके नाम तथा लिङ्ग-माप ।

(४) पृ० १८ से पृ० २४ तक—चतुर्थ और पंचम खंड ।

चहुँकला, मदन निवास वर्णन, दवाणि विधि, अंग मर्दनादि विधि, प्रौढा तथा वृद्धा के लक्षण ।

(५) पृ० २५ से ३५ तक—षष्ठम, सप्तम और अष्टम खंड ।

भोजनादि वर्णन, व्यभिचारिणी लक्षण, विरक्ता, अनुरागवती तथा कामवती के लक्षण, कला वर्णन, स्त्रियों के गुण दोष ।

(६) पृष्ठ ३६ से पृष्ठ ३८ तक—नवम खंड ।

जाति वर्णन की का प्रेम परिचय ।

(७) पृ० ३९ से पृ० ३७ तक—दशम खंड ।

श्रीपथिपथी—पौष्टिक, मदन मोदक, कामेश्वर, कामेश्वर ब्रजन की श्रीपथि, (पुरुष व श्री के लिए प्रयुक्त २) कठोर मंहन, सखेशन स्वग्मन, रति पौष्टिक, प्रमेह तथा मद्धर की श्रीपथि, गर्भ निवारण तथा यौन रक्तने की श्रीपथि । योनि वर्णन । आमन विधि—योग तपु आ० रति आ० इन्द्रासन, शासना आमना, विपरीत आसन कवि आसन, हित आसन, युग आमन, परस्पर आमन, महासन, मराल आमन, तथा मुक्त पशुव आसन ।

(८) पृ० ६८ से पृ०

तक सुप्त ।

संख्या १० के—कोक विद्याम, रक्षयिता—आर्यद्वन्द्व, कागद—देही, पत्र—८०, आकार—८ इंच X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३२, परिमाण (अनुपुप) ५२०, रूप—बचीन, स्थिति—गागरी, प्राप्तिस्थान—छासा सीताराम वैश्य, ग्राम—बिमर्चौ, जिल्ला—सीतापुर (जबध) ।

आदि—भंग कोमल विचित्र अति लज्जकन ऊटिणीन । प्रगट इमिनी देह सुति आनंद चंद्र बरजत बदन सदा भंग निर्मळ रहे । आहर विमिप रचित अमल सुविमल रीर केते चहे ॥ सपाबल मी ईम रहे सबही दिन मानु करे अति ली कहु स्पष्ट । सेत सरोज को मेहु धरे अट उज्जल नीर सरीरहि राते । बारिज कम बन्धो गृह काम को बीरज नीरज वास विराष्टि ॥ अथ चिपनी वर्णन ॥ दो० ॥ चिप रूप सम चिपनी अति विचित्र रस रीति । पित काबल सब काम लजि निरपि चिप संमित ॥ भदि भारी दुर्वल महीं छपु वीरध महि भंग ॥ पंद्र ॥ अमल कमल हल बरज मैन चंचल अनि आरे । मधुर मधुर मुप बचन चाह कुंचित कच कर । कपु वीरध महि भंग सब लज गर्ब जनाबत । माया बंत बहू होर पुप्य परमल बहू भाबत । प्रीव ऊपोठ छद भूँडत तुरीय गति गर्पद आनंद गनिहि सीलबंत सुविचित्र अति (इसके आगे महीं) ।

अंत—मदनकुम विधि पुरुष को अति ही होइ विशाल । रद कठोर अति होत महि ब्रवति सुरति उचाम । जाके सुष्टम अतिहि कपु मदि तुसति दे मारि । अंत होइ व्यभवा रिनी स्वीकी अनुर विचारि । जाके सुभ्र कठोर अति तपु वीरध महि होइ तासम उचिम धीर महि जानत रमिक लु कोइ । मदनकुम के मिर सुभर जलत है जाके छाम । प्रथम समागम तीव्र को सरै व तापों काम । करे अतम कामी बरे जलत है जाको छाम । रद बेग भग परमि से तुल्लि व मान भाम ॥ अथ वप हान ॥ कोप जय उर उर उर वंच भंग लज हान उपर कपोक विच अट तीनठ पेठ न जान । उतपनि काम कालि की सुनपु रमिक सब कोइ । १० विद्याम तबही बने तीव्र विचित्र जच होइ । रति विधि । एक ईनि रति वीरिये सोई । जानत रमिक पनुर जो कोई । जो पदि करे घट बल तामु । ई विन तिपहि न होइ दुगाम ॥ श्रीपथ समाप्त । अंत सुभ्र पिथि पौंठि मुंठी प्रदी वच पीपरि परिमाण । सात रती मपु मी भय करे सु विहर गान । मिर्च कुंजिन मम कर सोई पुरव होइ जा भावक

कोई । भधुर अमल कल्लु पाइ न मोई । पिक सम कंठ तासु कर होई । अट्टक भट्टक पीत रस वच वा वच ब्रह्मीस धृत । जो चाहै कोक तिजत्र माय चतुर्दश कृष्ण दिन स्यातवरी करि रापै जल महँ बूढ़ै राइँ । कठ होइ सम किन्नर गाइइह्न किन्नर भाइ ॥

विषय—स्त्री पुरुषों के भेद लक्षण उनके गुप्त स्थानों के रोग व औषधियों, वशीकरण मन्त्र व उनकी विधि वर्णन ॥

सख्या ११ पृ०—श्री हनुमत यश, रचयिता—आनदीदीन, कागज—देशी, पत्र ७, आकार—१३ ३/४" X ७", पक्ति (प्रति पृष्ठ) ७, परिमाण (अनुपट्टप) ४९, रूप—प्राचीन । लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० विष्णुदास उर्फ (पुत्ती महाराज) ग्राम—भाउली, ढाकघर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री जानकी बल्लभो जयति ॥ सोरठा ॥

॥ मो० ॥ श्री वाणी गण नाथ दिन मणि प्रणमौ शिव शिवा ।
हनुमत के गुण गाय तामै कल्लु वरणन चहौ ॥१॥
॥ दोहा ॥ अहिपति व्याम वसिष्ठ गुरु दैत्य पूज्य कवि आदि ।
गाधि तनय अरु घटज शुक्र लोमस मुनि सनकादि ॥२॥
वटि महान सुचारि दम जिन्ह वरने प्रभु गाय ॥
निजु किंकर वपि करि कृपा मोंकह करहु मनाथ ॥३॥
स्वामी राम प्रसाद जस अवध प्रगट जग जान ।
तिनके दासके दास भे करुणा म्निउ वस्वान ॥४॥
मम गुर निजु करि जानियाँ तिनके पाँत्र विनेपि ।
राम तापिनी अर्थ जिन्ह भाषा भनित सुवेस ॥५॥
पाचौ स्वामी मोहि पर कृपा करौ जन जानि ।
आनदी चरणन पन्थी देखि दयानिधि वानि ॥६॥
श्री हनुमत जस विमद शुभ वरनौ तव बल पाइ ।
सिसु अनुगामी मोहि लपि करिये सिद्धि मँहाय ॥७॥

अत—मधुर वचन सुनि पूँछत भयऊ ।
को तुम मोहि परम सुप दयऊ ॥५॥
तवहि पवन सुत नाम बतावा ।
प्रभु किंकर कहि प्रेम ददावा ॥६॥
दीना नाथ दाम निजु जानी ।
भेटे भरत हरप गहि पानी ॥७॥
हिय न समात प्रेम की भीरा ।
गद गद कंठ नैन बहै नीरा ॥८॥
रघुपति प्रिय तव दरसन पाई ।
अति सुप भो मव दुपन x x x

विषय—श्री हनुमान जी का वन वर्णन और उनसे प्रार्थना ।

संख्या ११ बी—प्रार्थना, रचयिता—भारतवर्षीय कागज-प्रेसी पत्र १८, आकार—
० × ५ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुपुत्र) ६०, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी,
प्रातिस्थान—नागरीप्रचारिणी समा कर्मा (बनारस) ।

आदि—अत्रन विना यदि भूक्ति ई बंदे निपदि हानि नहिं सुमत नर ॥१॥

गूढ कुटुंब स्वारथ के साथी कहत बेद भुप संतत डेर ॥

भिसि दिन विपत्ति जाल में बीतत तबहु न बेतत काल गररे ॥२॥

काम श्रेय मद् सोम मोह बस इन्दी करत विप रस बेरे ॥

अंत कसूर जीव पर परि है जान होस जमराज हररे ॥३॥

अंत—सुंदर बाकी छवि छाह रही जबत रभुनदन आये हते ।

मन मोहि कियो हमरो सजनी अलिखौ रसलामि की कोर थिठे ॥१॥

मिथिलेम स्वयंवर दानि सखी बह स्याम दियो नर नारि हिते ।

सिय मानु कहे अप जाग करी हूँ धनु सोच हमार बिते ॥२॥

जिन्ह पाहन ते रिपि नारि कियो तिन्ह को धनुअी मय होत बिते ॥

कहे आयेद हीन विनाक बहे जवहीं रभुमाय न रोप थिठे ॥३॥

विषय—हम पुस्तक में ९ भजन हैं । सब राम के गुन गाव एवं प्रार्थना से परिपूर्ण हैं ।

संख्या १२ ए—भारतवर्षीय जू के कविच रचयिता—भारतवर्षीय जी कागज—देही,
पत्र—८४, आकार १० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ६८, परिमाण (अनुपुत्र) १५.६९,
रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३९ = १८८२ ई०, प्रातिस्थान—
महाराजा श्री प्रद्युम्निह जी, ग्राम—महापुर जिला—सीतापुर (बखर) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री आनंद धन जू के कविच लिप्यते ॥ सधिया ॥ मंत्री
महा ब्रह्म भाषा प्रवीण श्री सुंदरितान के भेद की जानि । जोग विजोग की रीति में कोबिद
भाषना भेद स्वरूप को दानि । आह के रंग में मीमा हिपौ विष्टुरे निरके प्रीतम स्वाति न माने
भाषा प्रवीण सु छंद मदा रहे सा धन जू के कविच बपारि ॥१॥ प्रेम सदाबति बैचो कहे सु
कहे पदि मोति की बात छत्री । मुनि के सब के मन काकच बीरे प बीरै कये सब बुद्धि
जधी । जग की कविताई के धाने रहे ह्यो प्रवीणन की मति जाति बधी । समुझ कविता
धन आनद की हिय आपिब नेह की पीर लधी ।

अंत—नेह मकरंद मर कीर्षी भर हू द हूँ निरपत नमत मकर तापा ही के दे ॥
कीर्षी सुवरन के कफम प मुखा सो मरे स्वाद पाये जगत सबाद सब पीके हैं ॥ कीर्षी अहमुन
जलधर प्रजनाय कहे नव हम रंग बरपत अति ही के हैं । खोर बित बित केकि पीठि बरजोर
दिय कीर्षी बिकमत ये कविच धन जी के हैं । इति श्री धनानंद जी के कविच मपरजम्
संबत १९३६ लिपि गुमान साहमित ग्राम संकरपुर ॥

विषय—वनानंदजी के नवरत्न पर कवित्तों और मयों का संग्रह ।

संख्या १२ बी—आनंदवन जू की पटावली, रचयिता—आनंदवन, कागज—यामान्य, पत्र—१२५, आकार—१० × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्ठप) १७५०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—शारदा प्रसाद, सतना ।

आदि—श्री राधा माप्रभो जयति ॥ अथ श्री आनंदवन जू की पटावली लिप्यते ॥ प्रथम राग भैरव ॥ चौताल ॥ ए जग तारण कृष्णामिन्दु उदार दीन भयभारन लेत भैमार अधम उद्धारन बहु विधि सुप विन्तारण म्वाभी डयाल पर पूरण पारन वत धार ॥ अथ वारन ऋठी रव दारन दुप दल विदारन गुन अपारन को मरन प्रिचार ॥ आनंद वन रम धारन सकल सताप निवारन वमदि विराजौ प्रान पपीहनि पार ॥१॥

अत—भोला कान जी थे कि हों होली पेलौ ॥ आंग का धोपा
सौं गहारी आपनो वृका भेलौ ॥ पराई रहौजी श्य्या
कौण है यानू होमी भेलौ ॥ आठ पहर अमला
रामाता देता टोलौ हेलौ ।

आनंद वन झन्झंड आर्यो कोड गाली टेलौ ॥२॥

इति आनन्द वन जी का पय सपूर्ण × १॥ श्रीरम्भु ॥

॥ कल्याण मस्तु ॥

विषय—पृ० १ मे २२ तक—भगलाचरण, लगन, तरंगि तनूजा, वन, आर्ती, मार्ग, गोरम, बहिर्या पर प्रसंग, स्मरण, वंशी और वात आदि के मयंघ से उपालम्भ वर्णन ।

पृ० २३ से ५६ तक—राधिका के चरण, जमुना, लीला, त्रिलाम, प्राकृतिक शोभा, मन की लगन, रम केलि, जीवन बल, वाद विवाद, कृष्ण छवि, वियोग, दान लीला, मन की चंचलता, पारस्परिक प्रेम तथा वंशी की प्रबलता का वर्णन ।

पृ० ६० मे १३५ तक—महादेव गोपेश्वर मयंधी छन्द, कृष्ण सौन्दर्य, मोह-स्तम्भादि, रति, राधा का अनुराग, प्रेम, धिनय, दर्शन, नृत्य, गोदोहन, उत्सुकता, वियोग, वृन्दावन महिमा, मान तथा कृष्ण के गुणानुवाद का वर्णन ।

पृ० १३६ से २५० तक—भक्ति, स्तुति (बलभद्र) रामजन्म की वधाई, वावन जू के पद, पावस, हिंदोरा, वर्ष ग्रन्थि महोत्सव, ठकुरानी जी की वधाई, साँझी, राम, वसन्त, हिंदोरा, होली, यात्रा, चाँचरि, वियोग होली आदि का वर्णन ।

संख्या १३ ५—भगवद्गीता भाषाटीका, रचयिता—आनंदराम, कागज देशी, पत्र ६०, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुष्ठप) ९५९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल सं०—१७६१ = १७०४ ई०, लिपिकाल—सं० १८०५ या १७४८ ई०, प्राप्तस्थान—पं० गंगापति दूवे ग्राम—नयागाँव, डाकघर सदरपुर, जिला सीतापुर (अवध)

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा टीका भगवद्गीता लिप्यते ॥ दो० ॥ धर्म क्षेत्र कुरु क्षेत्र में मिले जुद्ध के साज । संजय मो सुत पांडवनि कीन्हे कैमे काज ॥ पांडव

सेना व्यूह रूप बुद्धिधन विंग भाव । त्रिन आचारत्र द्यौम सीं बोन्यो भये माय ॥ पांडव
सेना अति बली आचारत्र त् एरि । पृष्ठ सुम्न तप शिष्यते व्यूह रथ्या तु बिरीषि ॥

अंत-अस्मिन् रूप श्री कृष्ण को मुमिर मुमिर ही छादि । हर्ष होत मोझे महा बिस्मय
मानत बादि ॥ जोगीश्वर श्री कृष्ण अर्जुन हैं जा रौर तहां बिस्वय अरु भीति है । रात्र संपदा
भीर संवन दासि रस उद्धृषि मदि क्रांतिक उग्रक माय रवि पचमि पूरण भयो यह गीता
परमाम ॥ इति श्री मद्भगवद्गीता सुपरिणामु ब्रह्मविद्यायां जोग सारत्रे श्री कृष्णार्जुन
संवादे भाषा टीका वां भाक्ष संख्याम जोगा ममाष्टाहसोऽप्याह समाप्तः ॥ लिपत ब्रह्मगिरि
वीरगो संवत १८०५ वि० ईश्वर शुद्ध पूर्णायाम् ॥

विषय—श्री मद्भगवद्गीता का भाषा में अनुवाद ।

सूत्र्या १४ प. दुर्गा पाठ भाषा, रचयिता—अनन्व कवि, कागत्र-देवी, पत्र-१५,
आकार—१२ X ८ इंच, पन्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुपुत्र) ७६०, रूप—शाहीन,
रिपि—नागरी, लिपिद्वय—मं० १९३३ = १८०६ ई०, प्रासिन्धान—पं० ज्ञानरत्न मिश्र,
ग्राम—दांडपुर, हाऊपर बिमबो, त्रिना गीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ दुर्गा पाठ भाषा अर्थात् मुंदरी चरित्र लिप्यते ॥
राम हूत । दो० । मुंदर पद गुरु भाष के मुंदर गुरु उपदेश । मुंदर चरित्र भवानि के मुंदर
सुरय नरवा ॥ (त्रिक्रम) । सुरय परम शठा भया बेबस परम विधान । अक्रम नगर कुल
जन प्रजा पालहि पुत्र समान ॥ पल ॥

अंत—॥ दोहा ॥ गुप्त बरे प्रगटे बह निरुट बंदे श्री बुरि । श्री भवानि त्रिभुवन
विय रही सबनि भरि पूरि ॥ जो त्रिदि भीति भई जहां ताको तहां प्रतक्षि । त्रिभुवन व्यापक
रात्रि निरु श्री भवानि ह्यम स्थि ॥ श्री भवानि तुम कठिनी परम मुंदरी जानि । ताको
मुंदर चरित यह अक्षर अनन्व कथानि । जा यह मुंदरी चरित को पद मुनि मन साय । मन
बोजित पल हैदि तिदि श्री भवानि जग माय ॥ इति श्री मारकंडे पुराणे व्यापनि क मन्वन्तरे
ईश्री माहात्म्ये सुराय ईश्वर वर प्रदान १३ अर्थाय । इति मुंदरी चरित्र संपूर्ण
समाप्तः । लिपनं शीतल प्रसाद ईश्वर बलपुर निवासी संवत् १९३३ वि० ईश्वर शुद्ध राम
नरसी ॥ इति ह्यमम् राम राम राम श्री जन्म माता जगर्षका ॥

विषय—इसी माहात्म्य अर्थक तथा सुराय ईश्वर संवाद कथा ।

सूत्र्या १४ वी प्रेमश्रीरिच, रचयिता—अनन्व, कागत्र-देवी पत्र-२८, आकार—
८ X ५ इंच, पन्ति (प्रति पृष्ठ) ३८, परिमाण (अनुपुत्र) ६३० रूप—शाहीन, लिपि—
नागरी त्रिदिद्वय—मं० १८०० = १८१३ ई० प्रासिन्धान—पं० सर्वोत्पन्न निवासी गंगापुर,
ग्राम—मिथिल हाऊपर-मिथिल, त्रिना गीतापुर (अथय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रम श्रीरिच लिप्यते ॥ कवित ॥ जादी रात्रि बाह
ब्रह्म विष्णु शिव बिना रचि जादी रात्रि बाह गेता परमी परम है । जादी रात्रि पाह भीतार
अर्जुनी बरी जादी रात्रि पाह मानु ठम का हल ह । जादी रात्रि पाह सारदा नगरनि

गुनी जाकी शक्ति पाइ जगत जीवत मरत है । अक्षर अनन्य आनि अमर उपा छाडि ताही आदि शक्ति को प्रनामहि करत है ॥

अंत—॥ छपय ॥ प्रीति इकंगी नेम प्रेम गोपिन को गायो । लीला विरह विहार तरकि सव्दन रस छायो । ग्यान जोग वैराग मधुप उपदेमन भाप्यो । भक्ति भाव अभिलाप मुप्य वनितानन मनु राप्यो ॥ बहुविधि वियोग संयोग सुप सकल भेद समुझी भगत ॥ यह अद्भुत प्रेम सो दीपिका कहि अनन्य उदित जगत ॥ इति श्री प्रेम दीपिका सपूर्ण समाप्त ॥ मिति वैसाप सुदी पठी भृग वासरे लिपत मिदं दित पुस्तक त्रिपाठी राम गुलामेण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण ॥

विषय—श्री कृष्ण गोपियों का नेम प्रेम, विरह लीला, विहार लीला, ज्ञान योग, वैराग्य जो कृष्ण जी ने ऊर्ध्व द्वारा गोपियों को बताया है, भक्ति भाव, संयोग वियोग, भक्ति आदि का वर्णन है ।

संख्या १४ सी. प्रेम दीपिका, रचयिता—अनन्य, कागज—देशी, पत्र—०८, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९७ = १८४० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० विक्रमामिंह, ग्राम—तदवा, ढाकवर इंडा मऊ, जिला उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ प्रेम दीपिका लिप्यते ॥ कवित्त ॥ जाकी शक्ति पाइ ब्रह्मा विशुन शिव विस्व रचै जाकी शक्ति पाइ शेष धरनी धरत है । जाकी शक्ति पाइ औतार करतूति करै जाकी शक्ति पाइ मानु तम को हरत है ॥ जाकी शक्ति पाइ शारदा हू गनपति गुनी जाकी शक्ति पाइ जगत जीवत मरत है ॥ अक्षर अनन्य आनि अमर उपा छाडि ताही आदि शक्ति को प्रनाम हि करत है ॥

छपय ॥ प्रीति इकंगी नेम प्रेम गोपिन को गायो लीला विरह विहार तरकि सव्द नि रसु छायो । ज्ञान जोग वैराग मधुप उपदेमन भापो । भक्ति भाव अभिलाप मुप्य वनितानन मनु राप्यो । वह विधि वियोग संजोग सुप सकल भेद समुझी भगत । यह अद्भुत प्रेम सुदीपिका कहि अनन्य उदित जगत ॥ इति श्री प्रेमदीपिका सपूर्ण समाप्त मिति वैसाप शुक्ल पठी भृगुवासरे लिपतं मिदं पुस्तक त्रिपाठी राम गुलामेण ॥ सवत १८९७ वि० ॥ कृष्ण कृष्ण कृष्ण ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का ऊर्ध्व को ब्रज में भेजकर गोपियों को समझाना और समाधान करना और ऊर्ध्व जी का ब्रज मडल में जाकर गोपियों को उपदेश देना ॥

संख्या १४ डी प्रेमदीपिका, रचयिता—अक्षर अनन्य, कागज—साधारण, पत्र—५१, आकार—५ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुपटुप) ४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला गजाधरप्रसाद, ग्राम—कुराडीह, ढाकवर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री प्रेम दीपिका लिप्यते ॥ कुडरिया

माधो जू हक दिन कयो, मधुकर सो सति भाउ ।

गोपी गोप प्रबोध की, तुम ब्रज मंडल जाऊ ॥
 तुम ब्रज मंडल जाइ प्रेम अतिही उज कीनी ।
 जबते भयी विछोहु सोउ हम कबहुँ न छीनी ॥
 तुम ममपु दरमाइ, हरी दुप सिन्धु अगाथी ।
 कहियो सब सों पहि, वुरि तुमते नहिँ मारी ॥

ऊपी बाब—'यागी हठ नेमु अठ अपासना प्रेम पौंसि
 शान को विचारो मंग्र बेद की उकति की ।
 इन्दी रस बीसि प्रीति बससि अतीरि सूषा
 बेतनि की बीरि ध्यान जोग की उगति की ।
 बिरह विहोसि ब्रह्म आनंद प्रकासि सदा
 अक्षर अकल्प ..

॥

विषय—(१) पृ० १ से २२ तक—कृष्ण का उजब को प्रबोध कर ब्रज में गोपियों को समझाने के किये जाने की आज्ञा देना । अपने बखाबंकार से उन्हें सुसज्जित करना । उजब का प्रस्थान । ब्रज में आगमन, बंदू घोड़ा मिरुप । कृष्ण के वियोग से बुझित इत्यति का उजब क्षेम समाचार पूछना । उजब का ब्रह्म विरूपण करते हुए दोनों को प्रबोधना ।

(२) पृ० २३ से ५० तक—उजब का बमुदा तट पर आगमन, गोपियों का उनसे सम्मेलन, गोपियों द्वारा उजब के बिना कुछ करे ही उनके अभीष्ट का बताया जाना, कृष्ण के छठ कपट तथा कमीर हृदय का प्रभाव देते हुए सपिणों का उपाबंधन, अपने पति मत् त्याग पर पश्चात्ताप ।

(३) पृ० ५१ से ६१ तक—मुरली की श्रुति, कृष्ण का अपने साथ शस-बिलास तथा प्रीति परतीति का कथन, कृष्ण के शत्रु टाट तथा शत्रु महिषी इतिमणी इत्यादि के साथ विहार की वासना का स्मरण कर और अपने भागरिता के सुखधर्मों का अभाव वर्णन कर कृष्ण-वियोग में बुझित होगा । कृष्ण की ब्रज में रुचि न देकर कम से कम उजब को कुसुम क्षेम पर ही सन्तुष्ट रहने का कथन कर उजब को इस कार्य भार केने के किये बाध्य करना ।

(४) पृ० ६१ से—उजब का ज्ञानापदेश कर गोपियों को समझाने का प्रयत्न करना । एक अमर का बर्हो अमर । मीरि के प्याज से गोपियों का अनेक प्रकार से उपाबंधन देना । उजब द्वारा ब्रज बनिताओं को कृष्ण का संदेश सुनाया जाना । जोग के संदेश का गोपियों द्वारा लंघन । बड़े सारगर्भित भाव से कृष्ण के परिवार तथा उनके कतिपय हस्त कर्मों का कथन कर उनके सगा के भाव को उपहाम के योग्य सिद्ध करना । गोपियों को उजब का व्यामोषदेश, उनका अपनी आत्मा का हरि में ही हिरा जाने का कथन निर्गुण उपासना में अपनी अमरदा रिपाकर अपने को कृष्ण में ही अनुरक्त सिद्ध करने का गोपियों का उद्योग वर्णन । 'प्रेम जोग' की विषयना । उजब द्वारा विषय बाधना का निषेध गोपियों द्वारा

इसका प्रतिवाह, माया तथा ब्रह्म, शिव तथा शक्ति आदि से उदाहरण देकर गोपियों का स्त्री तथा पुरुष प्रसंग अनिवार्य सिद्ध करना । गोपियों का अन्तिम कथन । “निर्गुन का खंडन करके हमारी उपासना की यही रीति है” शेष अंश खंडित ।

सख्या १४ ई. सिद्धांतबोध, रचयिता—अनन्य, कागज-देशी, पत्र—३८, आकार—१० × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) ३५५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९१ = १८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला कन्चूमल, ग्राम—गौरियाकली, डाकघर—फतेहपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सिद्धांत बोध लिप्यते ॥ दो० । श्री सतगुर पद उर परम वर सरवस्व स्वरूप । सिद्धांत बोध इमि नाम धरि वरनौ ग्रंथ अनूप ॥१॥ गुरु मिव्य वरणन प्रथम वरनाश्रम जुगधर्म । भक्त जोग सिद्धात सब कह्यो हरन भव भर्म ॥२॥

गुरु वर्णन दृढक ॥ एकै ब्रह्म ज्ञान के प्रमान में भगन होत एकै जोग ध्यान के विधान मह स्त्रे हे । एकै देवतानि की उपासना विलाम जानै एकै जप तप नेम सजमन स्त्रे हे ॥ एकै एक मत ऐसे निमित्त सुपक्षपात आप मत जानै अन जानिवे को कूरे हे ॥ सर्व मत जानै सर्व अनुभव अनन्य भनै सदा सर्वज्ञते परम गुरु पूरे हे ॥३॥

अंत—इहि विधि मय सिद्धांत मय कहि अनन्य यह ग्रंथ । इहि समुझे समुझ सकल लोक वेद गुरु पथ ॥ ७ इति श्री सिद्धात बोध अनन्य कृत संपूर्ण समाप्त ॥ लिपतं ज्ञान दत्त शुक्ल पाँप वदी ११ दशी मघन १८९१ वि० ॥ दसरत ज्ञानदत्त के ॥ इति सिद्धांत बोध समाप्त ॥

विषय—गुरु लिप्य, ज्ञान वैराग्य, भक्ति ब्रह्म ज्ञान आदि का वर्णन ॥

सख्या १५ एफ. सिद्धांत बोध, रचयिता—अनन्य (मेवाहुरा, दतिया स्टेट), कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—१० १/४ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, परिमाण (अनुष्टुप) ३५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९१ = १८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रघुवर दयाल मिश्र, इटावा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सिद्धात बोध लिप्यते ।

दोहा—श्री सत गुरु पद उर परम वर सरवस्व स्वरूप ।

सिद्धात बोध इमि नाम धरि वरनौ ग्रंथ अनूप ॥ १

गुरु शिष्य वरणन प्रथम वरनाश्रम जुग धर्म ।

भक्त जोग सिद्धान्त सब कह्यो हरन भव भर्म ॥ २

अंत—यहि विधि मय सिद्धांत मय कहि अनन्य यह ग्रंथ ।

इहि समुझे समुझे मङ्गल लोक वेद गुरु पथ ॥१६७

मिति पाँप वदी ६ सवनु १८९१ वि० दसरत बोध कृष्ण के ॥ इति सिद्धांत बोध समाप्तः ॥ इति

विषय—शुद्ध १ से ११ तक—गुरु उपासना, गुरु वर्णन, माया और ज्ञान भेद वर्णन, गुरु तक्षण, गुरु महिमा वर्णन,

उंद् १३ मे ३१ तद्—गिण्य लक्षण, गिण्य धर्म, धर्म कथन, वन रीति व धर्म कथन, स्त्री धर्म, पतिव्रता धर्म कथन,

उंद् १२ मे २२ तद्—आश्रम धर्म, महाशारी वनन, गुरुस्य धर्म, बाल प्रणय, सम्प्राप्त वर्तन व निरन्तरि कथन, माता, पिता, पुत्र धर्मि कथन धर्म मर्षांद् वर्तन,

उंद् १३ मे ४० तद्—गुण धर्म व धर्म कारण कथन ४ भद् । ईस धर्म कुल धर्म, गुण धर्म, वेद धर्म, मुण्य मर्षांद् वद् की धर्मन । धर्म—उपायना—गान कंड वनन,

उंद् ३१ मे ५४ तद्—चार वेद धर्मों की निष्ठ उपायना तीन देव व शक्ति वनन, अहीन वर्तन, शिव महिमा, शिव मन्त्रि की पुराता कथन शक्ति म प्रिवेद शक्ति उत्पत्ति वर्तन । उल्ला स्वरूप वर्तन । तीनों शक्तिपों से तीनों देवताओं की उत्पत्ति कथन,

उंद् ५५ मे ७३ तद्—तीनों गुन और उनमे सृष्टि वर्तन । पदा भाव तथा धर्म वर्तन । अलग रूप वर्तन शुद्ध स्वरूप कथन, अज्ञानकी सात दशाओं का वनन । शीघ्र जागृत, जागृता, महा जागृत, स्वप्न जागृति, सुषुप्त, स्वप्न सुषुप्ति वनन तद्,

उंद् ७४ मे ११४ तद्—मन्त्र लक्षण वनन, महा द्वा लक्षण कथन । बाबड़ी मन्त्र मानसी मन्त्र, कायडी मन्त्र वर्तन । अहोम मन्त्रि वनन । अहोम पाग वनन । धर्म, नियम, कामन, प्रणयहार, प्रणयपाम पातना ध्यान, और ममाधि वर्तन पद् पद् वनन ।

उंद् ११५ मे १४१ तद्—ज्ञान वर्तन—धार्मिक होने वा वर्तन । मंत मार्ग व कुमार्ग त्याग वर्तन । निरिहा व द्वा का ज्ञान, इच्छादि की निवृत्ति । विचारना वनन, बुद्धि वर्तन इन्द्रज शाय वर्तन । गन्धार्थ भाव वनन उमदी मानो भूमिपों का कथन । चारि पदार्थ का अभाव ही ज्ञान की पूर्णता है । गुणवा भाव वनन । ज्ञान व मन्त्र बुद्धि विस्त अहंकार संक्षय वनन इनमे ईशान्य की उत्पत्ति वनन ।

उंद् १४२ मे १९० तद्—प्राण्य लक्षण विधि कथन । धर्म निवृत्ति सापना, प्रनाय व मरन कथन । अहोम पाग बबधा मन्त्रि, ६ गुण व मात भूमि पर आहर विरोग प्राप्ति । जगत्पद् मेत्र जीवत मुनिता प्राप्ति । परम ईस गति रमादि भद् दूर हाथ । कथन निरन्तरा धर्मता प्राप्ति मन्त्रों प्रदा की व्यापकता माया मे अन्तग इना । उम ममय पान्तर्हादि मे निवृत्त हा जना । साधारण धर्म विरहित रहकर कथा ।

राज्या १४ अी उल्लिख परिच रचयिता—अमर अर्थक कागज—देगी, पत्र—१०, भाग्य—८ x ४ इंच, परिमाण—(अनुपुत्र) ३६० पूर्ण रूप—उपम पद्य लिपि—कागी, निरिहा—१६४३, धार्मिकपान—प्रधान अशरिदर ज्ञान पगहार दरवार वागगी ।

अदि—अपों की उल्लिख परिच लिप्यन ॥ दादा ॥ उल्लिख वद् गुजरात के उल्लिख गुन उपरेण । उल्लिख चरित अशरिदर के उल्लिख गुणय मोम ॥ १ ॥ गुणय नाम राजा मये वरुन धर्म विनाय देय अग वृत्त उम प्रदा पातर्दि पुत्र ममाथ ॥ २ ॥

x x x x x

राज्या १४ प् विचारमाण रचयिता—अमर-बुगी, कागज—देगी पत्र—१० भाग्य—८ x ४ इंच परि (अति वृत्त) २६ परिमाण (अनुपुत्र) ३६० रूप—प्राचीन

लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२६ = १६६६ ई०, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामप्रसाद मिश्र, ग्राम—जगजीवनपुर, डाकघर ओयला, जिला खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ गीता भारत को मतो एकादश की युक्ति । अष्टा वक्र वसिष्ठ पुनि कष्टुक आपनी युक्ति ॥ नमो नमो श्री राम जू मन्दिदानद मरूप । जेहि जाने जग सून्य वत नासै भ्रम तम कूप ॥ राम मया सत गुरु दया साध संग जव होय । तव प्राणी जानै कष्ट रह्यो विषय रस भोय ॥ पग वदन आनद जुत कर श्री देव मुरार । विचार माल वर्णन करू मौनी ज्यौं उर धार ॥ यह में मम यह नहिं मम सब विकल्प मय छीन । परमात्मा पूरण सबल जानि मौनता लीन ।

अंत—सो० ॥ मन्त्रहै सै छव्वीस संवत् माघव माम शुभ मो मति जितक हुतीम तेतिक चरनी प्रगट कर ॥दो०॥ गीता भारत को मतो एकादश की युक्ति अष्टावक्र वशिष्ठ पुनि कष्टुक आपनी युक्ति ॥ सर्वे इंद्रिय के गुणन को ग्राहक विश्वेवीश । वर्जित सब इंद्रियन सौं अनाशक्त जगदीश ॥ विना ज्ञान ये पंच ही परे फट में जाय । योही जीव अज्ञान ते रह्यो विषय मन लाय ॥ इति श्री विचार माल अनाथपुरी सन्यासी कृत अष्टमो विध्राम समाप्तम् लिपित रामसागर आग्रा मध्ये संवत् १९२९ वि० ॥

विषय—गुरु और शिष्य का आचारिक और आध्यात्मिक विषय पर सवाट ॥

संख्या १५ वी. विचारमाल, रचयिता—श्री अनाथपुरी, कागज—साधारण मिल, पत्र—२२, आकार—१ × ३३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुपट्टप) २००, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२६ = १६६९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला पुरुषोत्तमदास रहंस, कालाकाकर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥

नमो नमो श्री राम जू सत चित्त आनंद रूप ।

जेहि जाने जग स्वपन वत नासै भ्रम तम कूप ॥१॥

राम मया सत गुरु दया साधु संग जव होइ ।

तव प्राणी जानै कष्ट रह्यो विषय रस भोइ ॥२॥

अत—हौ अनाथ केतक सुमति वरनो माल विद्वार ।

राम मया सत गुरु दया साध संग निरधार ॥३॥

× × × × ×

लिपै पढ़ै अति प्रीति जुत अरु पुनि करै विचार ।

छिन छिन ज्ञान प्रकास ते होइ सो रुचिर प्रकार ॥४॥

× × × × ×

गीता भरथरि को मतो येकादस की युक्ति ।

अष्टा वक्र वसिष्ठ मुनि कष्टुक वेद की उक्ति ॥५॥

इति श्री विचार माल अष्टमो विध्राम सपूर्ण शुभ मस्तु ॥

संख्या १६, श्री मद्भागवत दशमस्कंध भाषा, रचयिता—भंगदसाजी (जमामर्षपुर),
 कागज—देशी, पत्र—४००, आकार १०×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण
 (अनुच्छेद) १६५४, रूप—प्राचीन, लिपि—मागरी, लिपिकाळ—सं० १६४२ = १८८५ ई०,
 प्राप्तिस्थान—पं० सुरसीधर बूहे ग्राम—लहरपुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दशम स्कंध भाषा लिख्यते ॥ श्री राजा परीक्षित
 प्रथम करते हैं मुद्रण जी से कि हे महाराज पूर्व नवम स्कंध में सूर्यवंश और चंद्रवंश विस्तार
 पूर्वक कइयो और दोनों वंश के राजान को आश्चर्य चरित्र कइयो । हे मुनिन में छोट धर्महीन
 महाराज यहु को वंश विरंतर अच्छी तरह से कइो तिन महाराज यहु के वंश में परिपूर्ण रूप से
 अवतार लेकर श्री कृष्ण महाराज ने जो सीला चरित्र कर सो हमारे संसुप वर्त्मन कीजिये । संप्रान
 प्राप्तिन के रक्षा करन हारे भगवान ने यहु पत्र में अवतार लेकर जो सीला कही तिनको हमारे
 आगे विस्तार पूर्वक कथन कीजिये ॥ संसार में तीन प्रकार के मनुष्य है एक तो श्रापी द्वितीय
 सुमुष्य । तृतीय विपयी इन तीनों प्रकार के मनुष्यन को उपम श्लोक भगवान के चरित्र
 मिय है ।

अंत—इति श्री मधुसूदनस्तोत्रं भाष्यं श्री शापायन्य विद्यामय गोप जात श्री
 मधुपति जयकेशर देवामय विद्यामय पुराधिप श्री गिरि प्रसाद बर्मोशा जमामर्षपुर
 निवासी पंडित भगवत् शर्मा शास्त्रि विरचितायां श्री मम्महा भागवतार्थ दशम स्कंध पूर्वोच्य
 व उपचार्य सम्पूर्ण समाप्त । ॐ तत सत गोपी जन बहुभारंग मस्तु ओं शांति शांति
 शांति ॥ संवत् १९२६ लिपंत रामगिरि गौसाई कृष्णपुर मध्ये ईश्वर कृष्ण ७ सप्तमी ॥

विषय—दशम स्कंध भागवत का पूर्वार्ध व उपराज का भाषा में वर्त्मन ।

संख्या १७, बारहमासा, रचयिता—भंगनराय उर्फ रसाळ बंदीजम (बिलग्राम)
 कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—९×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११ परिमाण (अनुच्छेद)
 २२०, रूप—प्राचीन लिपि—मागरी, रचनाकाळ—१८८६ = १८९६, लिपिकाळ—सं०
 १६६३ = १६०६, प्राप्तिस्थान—अ० बलवंतसिंह ग्राम—सोमामऊ, हाऊपर संदीला,
 जिला हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ रसाळ कवि रचित बारहमासा लिख्यते । हरिगीति हा
 छंद—बारी असाइ मुगड गादी पीर और बडाबई, तुरि जोरि चहुँजोर नियदे शक शोर
 पवन सताबई । अथि इअपि शप २ पाव करि उन लक्षि लक्षिता ताबई । उन रसिक रास
 रसाळ हरि बिन और भीर न आबई ।

अंत—अतुं बसुं निधिं अदचन्द्रं संबन्धं काठिकं इरामि तिपि । कृष्ण पक्ष मुग
 कन्द बायर जाबु देवगुड ॥ व० ॥ विषय रसाळ कविन सो करत अपार । बिगरो बर्य
 सेवारतु सोधि विचार ॥ इति मुद्रयि रसाळ रचित बिरह बारहमासा समाप्त ॥ शुभ ॥
 गुण रसं निधिं शशिं सारु भाद्र अनाबम सोमदिन भाषि लिख्यो हरिपाळ तुरि निरलि
 क्षमियो मुजन । राज कुंज बलपन्त द्युपि मुधान सोमामऊ । मठ प्रियपर गुणवन्त तिनके
 दित प्राति लिपि कियो

॥ शुभ श्री रस्तु ॥

विषय—इस पुस्तक में कवि ने राधिका का विरह कृष्ण प्रति वारहो महीनों में वर्णन किया है ।

संख्या १८, यूनानीसार, रचयिता—हकीम शेख मुहम्मद असगर हुसेन (फरुखावाद), कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २३, परिमाण (अनुपट्टप) १३२०, पूर्ण, रूप—ढीमक लगी, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—स० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवनारायण, ग्राम—बड़ैला, डाकघर विमवॉ, जिला सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ यूनानी सार लिप्यते ॥ दोहा ॥ अलह नाम छवि देत यों ग्रंथन के शिर आइ । ज्यों राजन की मुकुट तैं अति सोभा सर साइ ॥ परमेश्वर को प्रणाम करके असगर हुसेन रहने वाला फरुखावाद का वास्ते वेह्तरी और फायदे हिन्दुस्तानी भाइयों के यह ग्रंथ सूक्ष्म रचता है ॥ इस कारन की वैद्यक की विद्या तो अव पृथ्वी पर से अलोप हो गई क्योंकि वह विद्या तो परीक्षा की है ॥ और सैकड़ों वरस से वैधों में कोई ऐसा बुद्धिमान मनस्वी तेजस्वी पैदा नहीं हुआ कि वह तजरुवा करके इस विद्या को बढ़ाता बल्कि जब मुसलमानों की अमलदारी हिन्दुस्तान में हुई तब से इसका नाम हो गया । बहुत पुराने और मातवर ग्रंथों का तो नाम भी बाकी नहीं रहा दो चार ग्रंथ जैसे श्रुश्रुत, चरक व बहार करन, भोज, भेद, वागभट, रस रत्नाकर, सारगधर व वहंगसेन व चिंतामणि व माधौ निदान व चक्रवर्त्त रहि गये थे । उनका अव कोई पढ़ने वाला नहीं है यह सब ग्रंथ संस्कृत में हैं ॥ जब तक विद्यार्थी व्याकरण व काव्य व कोप विद्याओं का अभ्यास न करले तब तक वह ग्रंथ समझ नहीं सकता है ॥ × × × × तिव्य यूनानी की रीति व ढवा करना वनिस्वत वैद्यक के आसान है और सुद्ध भी है इस वास्ते मैंने चाहा कि छोटे छोटे ग्रंथों में थोडा थोडा हाल तिव्य यूनानी और डाकरी का भाषा में उल्या किया कि वैदों को इसके पढ़ने से ढवा इलाज करने का अभ्यास हो जावै और रोगियों की जान बचे इसलिये यह सूक्ष्म पुस्तक निदान चिकित्सा स्थान वर्णन निदान मुताविक कायदे तिव्य यूनानी के भाषा में उल्या किया और नाम इसका यूनानीसार रखा ।

अंत—इति यूनानी सार वैद्यक समाप्त । लिखने वाला प० रामप्रसाद आगरे वाला सवत् १९३९ है ॥

विषय—यूनानी वैद्यक

संख्या १९ ए आल्हारपड, रचयिता—अवधविहारी लाल (दिखौली) कागज—सोधारण, पत्र—१७९, आकार—९ १/२ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुपट्टप) ५२३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ब्रजबहादुरलाल, प्रतापगढ़ जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—पानी लै के धावन चलिभा ओ मोहवा में पहुँचा जाइ । क्या गति वरनों में मोहवा की मोसो कलू कही ना जाय ॥ वावन वेंतर की है वेंतर छप्पन वेंतर ऐल सकौइ ।

सागे बजुरी बन भी गिरवा बहुत दिस लागी है सकटाइ । बदन छोरो मलिया गिर के करो नाग रहे लपटाइ ।

अंत—बीर बखानी सठिमन जी का बिनका रोपनाग अबतार । बीर बखानी भारत जी का सब के सिरे बीर हनुमान । पुरी बखानी नगर अहुप्या जई पी रामकिया अबतार । उचर ताके सरगाहारी हाथे बही घाघरा भाइ ।

विषय—आपना ऊनुस की जनेक छवाहणों का वर्णन ।

संबन्धा १६ थी आपना (इंखु इरन), रचविता—अबपविहारी छास (दिखीली मुसतामपुर) कागज—सामान्य, पत्र—२०, आकार—९ × ५ इंच, पछि (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुपुप) १८००, लेखित रूप—नवीन, सिधि—भागी, प्रातिस्थान—अकुर कनेशीनसिंह, ग्राम—पनियागार, हाकर—कटरा मेदिनीगंज, जिला—प्रतापगढ़ (अजमेर) ।

आदि—श्री रामेशायनमः ॥ साक्षरपंड ॥

नगर वर्णन

पाती की पावन बखिभा थी मोहवा में पहुँचा जाइ । क्या गति बरनी में मोहवा की मोसोकसु बही भा जाइ ॥ बाबन बँतर की है बँतर छपन बँतर पे कमफेइ । कागों बजुरी बन भीगिरवा बहुदिसि लागी है सकटाइ ॥ बदन छोरो मलिया गिर के करो नाग रहे लपटाइ । देसू पूमे है जंगल सा मानों घरी अंगारन डार ॥ जैसे जैसे है घन बजुरी तिमके नीचे तार खजूर । तिमके बिच बिच है कटरासी ऊपर दिखी पुरैया बॉस ॥

अंत—बीर बखानी सठिमन जी का बिनका रोप नाग अबतार । बीर बखानी भारत जी का सबके सिरे बीर हनुमान ॥ पुरी बखानी नगर अहुप्या जई पी राम किया अबतार । उचर ताके सरगाहारी हाथे बही घाघरा भाइ ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—नगर वर्णन ।

(२) " ५ से " ७ तक—बैंगला वर्णन ।

(३) " ८ से " १२ तक—समाज वर्णन ।

(४) " १२ से " १६ तक—घोड़ा वर्णन ।

(५) " १६ से " १८ तक—हाथी वर्णन ।

(६) " १८ से " २० तक—जैत वर्णन ।

(७) " २० से " २२ तक—सोप वर्णन ।

(८) " २३ से " २७ तक—मुनवाँ के अंगार का वर्णन ।

(९) " २८ से " ३० तक—तगपू वर्णन ।

(१०) " ३० से " ३४ तक—जोगी अंगार वर्णन ।

॥ साक्षर पंड समाप्त ॥

(२) पृ० ३५ से ४४ तक—जहाइ अर्थात् महारथ । म्बोटा वर्णन, जोगी बीर वर्णन, विवाह समाचार वर्णन ।

(३) पृ० ४४ से ६३ तक—बडाई पंड । बीर वर्णन, बखिता वर्णन, रप छरुवादि वर्णन । बीर अंगार वर्णन, आठों की तीयारी घोड़ा चलने व देवी के समाज का वर्णन ।

(४) पृ० ६४ मे १२१ तक—इंदल हरण पर सोना का विलाप, कंदी वर्णन, सोना चील्ह वर्णन, ऊदल का इदल को खोजना । छोहरिन का खोजना ।

(५) पृ० १२२ मे १४५ तक (विलाप खड) ऊदल के बढी होने पर विलाप, तीनों हाथियों का वर्णन ।

(६) पृ० १४६ से १८० तक—सुमिरन खड ।

(७) पृ० १८० मे अन्त तक—लुप्त ।

संख्या १६ सी वारहमामा, रचयिता—अवधविहारी लाल (दिखौली सुल्तानपुर), कागज—देदी, पत्र—८६, आकार—७ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुपट्टप) ६४५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—ब्रजवहादुर लाल, प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—शिव, श्री गणेशायनम । सौरठा । रसिक शिरोमनि श्याम जय नैट नटन गुन भवन । करहु कृपा सुप धाम मुरली धर राधा रवन ॥ पुरबहु दीन दयाल करीं तिनय कर जोरि मैं । कहत विहारी लाल वारह माया प्रेम का ।

अत—॥दोहा । विद्युरो प्रीतम पाइ धन मन में अति हरग्याति । मिलि मिलि तन मन वारती पिय लखि बलि बलि जाति । मम्यतमर विक्रम सरम नव दम शत सैंतीस श्रावण शुक्ला सप्तमी उत्तम दिन रजनीस । नदी गोमती तट वसै वसै दिखौली ग्राम । धन्य जिला सुल्तानपुर सकल गुनिन को धाम । चित्रगुप्त वशावली का यथा वरन उदार । अवध विहारीलाल कवि अति मति मंद गंवार ॥ पढ़ै गुनै समुझै सुनै जो कवि कुल सिरताज । ताकी सब मन कामना पुरबहिंगे ब्रज राज । इति श्री वारहमाम अवध विहारी लाल कृत समाप्त । शुभ मस्तु ।

विषय—विरहिनी की वारहों महीने की विरह दशा का कृष्णापूर्ण वर्णन ॥

संख्या १६ डी अज्ञात, रचयिता—अवधविहारी लाल (दिखौली सुल्तानपुर) कागज—सामान्य, पत्र—५१, आकार—८ $\frac{३}{४}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुपट्टप) ८४५, खडित, रूप—प्राचीन जीर्ण, लिपि—फारसी, नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० महावीर प्रसाद मिश्र, ग्राम—भैंगवा, जिला—प्रतापगढ़, (अवध) ।

आदि—कहा निज लाली पै विभव मरै, लखे लाल निगारम रा दरियाव । बटे बड़े क्या तु वमण्ड करै, खूबे रोशन ऊ रा बुर्वा महताव ॥ सकट अनित्य तु फूलै झरै, वर खूबिये ऊ बुर्वा बारे गुलाब । सचेत हो जावै विहारी परै, बनगाहदा दावा कुनी चि शराव ॥ ७ ॥ खेहदया डाँड़ सो मलाह पिया प्यारे वेगि, किशितये फिराक-रा व साहिले नजात आर ॥१०१॥ कैसो उत्तम हो अशन लगै फीक दिन लौन, ताते विरची रस लिये, कविता मै गुन भौन ॥

विषय—विरह वर्णन, उपालभ, मिलनोत्कंठा निज देन्यदशा कृपा कटाक्ष की प्रार्थना आदि ।

(३) पृ० १०२—कवि परिचय—ग्रंगा सरजू मध्य में, वसै दिखौली ग्राम । धन्य जिला सुल्तानपुर, सकल गुनन को धाम ॥ कायय श्री वास्तव्य हौं, अवध विहारी नाम । हँ प्रतापगढ़ वास अब, जानहु सदगुन धाम ॥

संख्या १६ ई अक्षर रचयिता—अक्षर बिहारी सासु दिवाली, (सुकठानपुर), कागज साधारण पत्र-१७, आकार—८२ × १३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुपुप) १३२५, पंक्ति, रूप—प्राचीन, बीर्ण, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—पं० महावीर प्रसाद मिश्र, ग्राम—भैरवा बिहारी प्रतापगढ़ ।

आदि—दौलत जाय निमार कुनम जदु बरुँ बिहारी बू मोहपी मूरति । कुमलै गुम इजहार कुनम, जो मिरुँ हँस के जो सँबरी मूरति ॥ ताब के सवो करार कुनम, रहीं कँसी बिजोग में में नून तोरति । हामिल बरुँ विगार कुनम, दिन रैम रहुँ शित मीहि बिसूरति ॥ ५ ॥ × × × बाबु बहार वियाग हरिन्दु कँगि खग बोरुम डारन । रग ब रग बरुँ गरबीद सगे तद पूरुन बास विगारम ॥ हीर सबाब बयाबाँ रमीद, बिसारी बिहारी विया केहि करारम । रुजवते बरुँ हिस्म न जगरीद, अभी किन भाय मिळे गिरिधारम ॥ ६ ॥ हयाते अग्री गर शायद यिका दान्त बैकर । मीत पाम जाओ सदा, ताके बस संमार ॥ मिस्त्र बाफक शुदु बरुँ मा, पि जान सुरत मसास । मिसन दिबम रँबाय भव कीतत रैन जँबाक ॥ मगो बा कसे राज विक बरुँ पिनहाँ हार । प्रगद भये ते हानि है बिदुषे या संमार ।

अंत—बासन बिहग लगे गुंजन सुन्न ग सगे अयदु बहार ईक यारम न हरदर । कोयक भी सुनि कूक हिये में समानी हूक । हरसु लौं शुदुदु बरुँमा हा जि बरुँमतर ॥ बिरदु अनलु दहि रति पति रार सहि । जाब जार बसे शुदुदु बैकरारो मजुतर । इयाम जू के बिसुरन प्राय ते बिहारी अब, लून शुदा जि बरुँ बिरुँ ब पारा पारा शुदु विगार ॥ हम अनुमानी कन्त मिळि है वमन्त मीहि, हासिल न शुदु बरुँ ई न्पास लाम शुदु । मिरुँ भी बीन कई पाती हू पटुई नाहि, नाला धरर ताब शुदु व रफु विगार फाम शुदु ॥ हीन धारी इयाम मरुँ पं न हँ मरुँम मरुँ आसमें शयाब दरीं आरजू तमाम शुदु । मीत हू न अंक सग्या बरि क कलंक सग्या, मुफ्तदर इहक के बिहारी बदनम शुदु ॥

विषय—(१) पृ० १ से ४ तक—बट हो गये हैं । (२) पृ० ५ से ८ तक—संबोग मुन का मून्य । (३) पृ० ८ से १२८ तक—विषय वर्जन तथा कृष्ण भक्ति सम्बन्धी होहावली ।

संख्या २० बीताक पचासा, रचयिता भीरी सासु, कागज साधारण, पत्र १, आकार—८ × १३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १० परिमाण (अनुपुप) १२५, रूप—प्राचीन, लिपि—प्राचीन प्राप्तिस्थान—पं० सायनारायण विपाटी (बीहा बिहारी) बाकपर गदुवारा बिहारी प्रतापगढ़ (अक्षर) ।

आदि—भी गजैशायनमः ॥ बीताक पचामा—सैत्रिया पर सावन हार यार नहिं आये । बैरी सोच करत मनिबन में हमरी सुधि बिसराये । बिरदिनि विया बई नहिं जानत मोहि काम करु डरपाये ॥ पार० ॥ १ ॥ भूपय अरु बसत तत्रि हीन्दो न्नाम पाम बिसराये । अनर गुलाव बाहि नहिं भावत सगि आबज जोर जनपाये ॥ पार० ॥ २ ॥ जोगिन होइ गदिपन में सुमरीं अरु भपून लगाये । ग्योनि जटा चहुँ ओर निहारत विया हमरी

सुधि विसराये ॥ यार० ॥ ३ ॥ नागिन सेज देखि डर लागत काम कला छवि छाये ।
औरी लाल काम नहिं मानत दोड नयनन नीर भरि आये ॥ यार नहि० आये ॥४॥

अंत—शिवशकर जै महादेव शम्भु त्रिपुरारी । चाहन वृषभ दग मन शोभित वसन
विभूषण धारी ॥ जटा मुकुट शिर गग विराजत तुम हौं जनके सुखकारी ॥ शम्भु त्रि० ॥ १ ॥
मुंबमाल कर डमरु विराजत शोभित शैल कुमारी । नाचत शिवगण विनय करतु हैं जहाँ
गावत है श्रुति चारी ॥ शम्भु त्रि० ॥ २ ॥ जै शिवदर्शकर जै बम्भोला जय प्रभुपति मदनारी ।
जाको ध्यान किये दुख छूटत सब होत है जीव सुखारी ॥ शम्भु त्रि० ॥ ३ ॥ करिये कृपा
जानि जन भोपर आये शरण तिहारी । औरी लाल भजुश्याम ललित छवि हरिये शिव विपति
हमारी ॥ शम्भु त्रि० ॥ ४ ॥

विषय—विरह, राधाकृष्ण मिलन, गेंदलीला, गेंद के व्याज से सस्ती से परिहास,
शृंगार वर्णन, रामचन्द्रजी के चरण सरोज की प्रशंसा व शोभा का वर्णन । द्विज भागीरथी
का एक चौताला । वृषभानु किशोरी का (प्रातः काल) सस्त्रियों द्वारा जगाया जाना ।
शंकर विनय । इत्यादि ।

संख्या २१. रघुनाथ सवारी, रचयिता—अवध या अयोध्याप्रसाद वाजपेयी
सांतनपुरवा (रायवरेली), कागज—साधारण, पत्र—२५, आकार—७ $\frac{३}{४}$ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति
(प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुपट्टप) १८६, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्ति-
स्थान—ठाकुर रनधीर सिंह जी जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाय बक्सी,
जिला लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री रघुनाथ सवारी ॥ १ ॥ छंद त्रिभंगी ॥ जागो जग
जीवन शोभा सीधन जननी जीवन धन वारे । वंदी गुण गाये अनुज सखाये बोलन भाये
प्रिय कारे ॥ प्राचीं दिन काली विदित बताली कर कर माली झल कारे । ग्रह दीपक हीके
अंसु सस्ती के लागत फीके नभ तारे ॥ १ ॥

अंत—मम सठता साठी हरि गुन गांठी पूरन पाठी राम कृपा । रघुनाथ सवारी
घरनि सुवारी 'अवध' गवारी त्रपित प्रपा ॥ दस आठ आठ पट कला सरन उट राग सहित
रट शिव संगी । शानी गुन गेहिक भवतिक जेहिक दैविक देहिक तिर भंगी ॥ ६१ ॥ छंद ॥
नृप वर कुमार रघुपति उदार संतन अधार सुदर शिकार ॥ ६२ ॥ इति श्री मन्महाराज
शंकर-चिंता मणि श्री रामचन्द्र आपेटस्य वर्णनो नाम द्वितीयो कला ॥ २ ॥ श्रावन मासे
कृष्ण पक्षे तिथौ पंचम्यां बुधवासरे मिर्द पुस्तकं लिखा शिवप्रसाद खानी पुरस्य सुभम् ॥

विषय—श्री रघुनाथ जीके आखेट और सवारी का वर्णन (त्रिभंग छंदों में) ।

संख्या २२. औपधि संग्रह, रचयिता—वाबूराम पांडे (गोंदा—प्रतापगढ़), कागज—
साधारण, पत्र—७३, आकार—८ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुपट्टप)
२००७, खचित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाछ—सं० १८०२, लिपिकाल—
सं० १८०२, प्राप्तिस्थान—प० भगवानदत्त, ग्राम—वेनीपुर, डाकघर, माधोगंज, जिला
प्रतापगढ़ (अवध) ।

बादि—(पृष्ठ १५) ॥ अथ अहमुष्णदि ॥ एहमुष्णे कर जबा सेर दुरह तिक्त्वाह पसेरी है ॥५॥ सरिसब पसेरी है ॥५॥ सोति बड़ी पीपरि मरिच भनिष्ठा मैथी-पिपरामूर बीरा भजमोदा भीतबाब जबाह्व छोटी पुरासानी जबाह्व कूठ हींगु इकाइची सींग तज पत्रजनाय केसरि हाकीस पांकी कोंब टंक एक एक भवर भीपय टांक तीन तीन जे किया है पहले कपर कइसुन तिक्के तेल में पीसब ती सब भीपय चूरन है है नाइब एहमुष्णे क जबा भोई है पीसब संधि रापब दिन सात • पाउे गंभी दिमाइ के मोबा बापब सिद्धि मबति पैसा भरि पाइ ती सर्व बागु काइ व्याधि सर्व काइ पुष्ट होइ भूप लगी ॥ • ॥

अंत—सीता राम के धर्म सों, रेबती तुम्ह अस होइ । बाहुहि मग में रापिबो, कृपा राबरी सोइ ॥ १ ॥ देवति राम नाम बइ, जानहि नर और ईश । मनीकों मग में रापिबो, इहै मीर बकशीस ॥ २ ॥ रेबति राम तुम्ह अस बड़ो, अब दाया कर मोहि । संतति सपति जगु बड़ो, देहि बिघाता लोहि ॥ ३ ॥ सो विभवा मोही कड़े, जाहु रेबति के पास । मनी के मग में बाधि है जाबि आपणे दास ॥ ४ ॥ × × × सकक सया के जयई कौं । भीपय हम कियि शीन्ह । रेबति राम तुम अस बई, यही हमारी चीन्ह ॥ ७ ॥

अंश क्य व्यापार—सीनि अंश मधि देपि है, पोधी हम सिपि शीन्ह ।

बंगसेवि उखीस औ सारंगपर को चीन्ह ॥

संख्या २३ प. पट पंचाशद रचयिता—बड़ीसाक, कागज-वेशी, पत्र-३४, कागज—८ × ६ इंच, पत्रिक (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुपट्टप) ४२३, रूप—साधारण, लिपि—भागरी, लिपिकर—सं० १८३० = १८४० ई०, प्रासिस्वाब—पं० सिद्धचंद्र वृषे, प्राम—रेववापुर, कागज खीरी, लिप्य खीरी (अवध)

बादि—भी गजेज्ञापनमः ॥ अथ पट पंचाशिका माया लिप्यते ॥ श्री० ॥ श्री रवि को करिके प्रणाम । बाराह मिहर सुत पुत्रुबस नाम । अर्च गहन प्रश्न को सार । कियो अंश में पर उपकर ॥ औ प्रश्न समय इतने प्रश्नस्वान विचारने जिन समय प्रश्न कर्ता प्रश्न पूछे तिस समय कन विचारना और तारकाकिक लग्न से विचारना सो देखना । जब प्रश्न पूछे भुक्त स्थान से विचारना होगा वा नहीं इसअ विचार प्रश्न लग्न से देखना स्थान स्थान से प्रदेस जाना देखना ससम से प्रदेस से आगमन विचारना यह विचार प्रश्नों के बकाबक से कइमा योग्य जो लग्न किये नर लग्न होय और अपना स्वामी बैठा होय अथवा शुभ यह देखता होय तो प्युति अर्थात् विचारना न होय ॥

अंत - अथ लग्न स्वामिना वर्ण ज्ञान माह तहां एक वृहस्पति लग्नाधिपति होय ती आग्न जागिये और सूर्य मंगल होय ती क्षत्री बृहिस्ये । अंशमा होय ती वैश्य कुच होय ती धृष्ट शमिश्चर होय ती बर्षदाकर जागिये हीम वर्ण भी कहिये यह अपनी बुद्धि के बक से विचार करना भी पंडित बड़ीसाक कृत ॥ पट पंचाशक्यां भाया मिश्रक एक प्रश्नाप्याय समाप्तः किये भद्र मुकुंदराम आगरे मध्ये संवत् १८९७ वि० आश्विन शुद्धा •

विषय - ज्योतिष ।

संख्या २३ वी पट पचासिका, रचयिता—वद्री लाल, कागज देशी, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) ६७२, पूर्ण, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० अजयपाल सिंह, ग्राम—सिकौरावादा, डाकघर मुरादावादा, जिला उन्नाव (अवध) ।

आदि—२३ ए के समान

अंत—इति श्री प० वद्रीलाल कृत पट पचासिकायां भाषायां मिश्र फल प्रज्ञाध्याय समाप्तः लिपत गौरी शंकर त्रिपाठी जनकपुर मध्ये श्रावण शुक्ल नवमि संवत् १९३३—वि०७ और अति वृद्ध सत्तर वर्ष से उपर का जानिये ॥

विषय—ज्योतिष ।

संख्या २३ सी. पट पंचासिका, रचयिता—वद्रीलाल, कागज-देशी, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप) ६७२, पूर्ण, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३ = १९७६ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवदुलारे, ग्राम—लखनपुर, डाकघर मगरा, जिला उन्नाव ।

आदि—२३ ए के समान

संख्या २४ प. गोपी विरह छंदावली, रचयिता—ब्रजनाथ (वादशाहपुर) कागज-देशी, पत्र—२८, आकार—९ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २६, परिमाण (अनुष्टुप) ४२८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४, लिपिकाल—सं १९४८, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामपाल सिंह, ग्राम—दातागांव, डाकघर बड़ताला, जिला सीतापुर ।

आदि—अथ गोपी विरह छंदावली लिप्यते ॥ श्री गणेशायनमः ॥ दोहा सत कृपाल समान चित तिनके पद रज वदि । कवि जन तुलसी आदि जे तिन कहं वदि अनदि ॥ १ ॥ छंद हरिपद ॥ वदौ श्री गिरजा सुत गिरजा गिरजा पति गिरधारी ॥ गुरु पद वदि मातु पितु के पद कहौं कथा सुप सारी ॥ सवत वनइस से चौबिस में अगहन दुहज विचारी कृष्ण पक्ष बुध नपत रोहिनी कृष्ण चरण उर धारी ॥ जिला जवनपुर परगन मुगर वादशाहपुर जाऊ ॥ वास हमारो तेहि के उत्तर नौवाढांड़ी ठांऊ । नाम हमारो ब्रजनाथ है विप्र त्रिपाठी हौमै । ब्रज में ऊधौ जेहि विधि आये सो कछु चरित कहौं मैं ॥ जो सब लीला नद लाल को वरनि सकौं मैं नाही ॥ ताते कछुक विरह वरनत हौं समुक्ति सुगम मन माहीं ॥ श्री नद लाल कहेउ ऊधौ सो वृन्दावन को जाहू । हमरे विगह विकल ब्रज वाला देहु ज्ञान सब काहू ॥ अस कहि पाती लिपत सांचरो नद जसोदा जी को प्रेम पियारी मिलन हमारी सपी सपा सबही को ॥ ७ ॥

अंत—यह गोपी ऊधौ की वातें कहेव यथा मति गाई । भूल चूक जो होय हमारी कवि जन लेहिं बनाई ॥ २१ ॥ फिरि फिरि संत चरण वदन करि वर मांगौ कर जोरी । कृष्ण चरण रति होहि अधिक मोहिं जांची इहै निहोरी ॥ २२ ॥ नहिं कछु पिंगल मत मैं जानौ नहिं कविजन संग कीन्है । एक भरोस कृष्ण पद वंदन और उपाय न कीन्है ॥ २३ ॥ तीस वर्ष की उमरि हमारी नहीं वेद अधिकारी । जेहि तेहि विधि हरि चरित वपानौ जान्यौ

निम्न उपश्रुति ॥ २४ ॥ श्री कांड गांधी यह लीला को देखि सुप देखि मुरारी । अबर बड़ाई करि जाई आरि नाम महाठम भारी ॥ २५ ॥ दो० । श्री सिब शिवा समेत पद अर्धरी बारहिं बार । राधाकृष्ण चरण रति चारिं भवनिधि पार ॥ सोरठ श्री काशी में अथ कागुन इसमी जानि कै भाव्यो प्रीय बनाय शुद्ध पक्ष में पाहि पूज ॥ इति श्री गोपी विरहे त्रिपोदशो अष्टाव्य समाप्तः संबद् १९४८ छिपत यथा राम आश्रय सरयूपारी मार्ग सीर्यं ७ मुखक पक्ष ॥

विषय—श्री कृष्ण का उद्भव को ज्ञान में भेदना और गोपियों की विरह कथा का वर्णन ॥

संख्या २४ वीं नाम विहास, रचयिता—वैजनाथ कवि, कागत—सामान्य, पत्र—१४१, जाकार—०२ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ०, परिमाण (अनुपुत्रप) १२५०, अंकित । रूप—मौल, छिपि—जागरी, छिपिकाळ—सं० १९२८ ० १८०१ ६०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्मू लालजी पुस्तकालय, मुरारपुर, गया ।

आदि—जय नाम विहास लिख्यते ॥ श्री कन्नोवर राज बदन, अक्षर सारन इमेस । विष्णु हरन सब मुख करन, सो हूक रदन गयेस ॥ १ ॥ कविच कुम्हिस समान मेघ विष्णु विनासिधे में का कनल अमगळ कुट्टर है विचार है । इति ताप सकळ अनेक सित भानु हूँ कै, अरिठम वासिधे में भानु से गिहारे है ॥ दावानल वारिद बचाइवे में मानो धन, भनै वैज नाव भास रावरी विचार है । परम पुनीत श्री प्रताप मान रयीं प्रताप, सुंदर रदन गन नायक तिहारे है ॥ २ ॥

अंत—मुकुट कमल मुगदर बैबर, चक्र हाक लछवार । धनुषबाण तिरसूल कवि, अंकुश बहुरि कुट्टर ॥ कंकन रसना कूर्म पुनि मोर धरनि पर हाव । पुनि कपाट कवि अश्व गति, त्रिपदी बहुरि पहार ॥

इति श्री मन्मगल जाहिर प्रतापबकी बाबू सीताराम ज्ञान सारेन, मुम्बई दिनेशालय वैजनाथ विरचिते नाम विहासे पंचधा विरह वर्णन नाम पुस्तकदशो उल्लास ॥ ११ ॥ समाप्तः इम मस्तु किपा सूर्य्यं शुक्लाम सिंह सोहनी वासी जिला अठमपुर अज्ञानुसार श्री वरुण मूर्ति वैजनाथ कवि संबद् १९२८ माघ कृष्ण १७ मीमांसासे सापकाळे समाप्ते ।

विषय—(१) पृ० १ से ४४ तक—मंगलचरण राजवंस वर्णनः—'मनै वैजनाथ बाबू सीताराम तीरो ज्ञान गौरव बड़ाई सेस सारदा गनैस से' ।

× × × ×

आठ मुखन सिय राम के आठई बुद्धि अगाथ । दया दान विद्या निपुन, निपुनराम अबरथा ॥ × × × × शुद्ध वकस लाल । × × अति चित दयाळ ॥ × × × ॥ कुन्हाल हरपंद से जानत जग व्यवहार । × × × × ॥ रैयतलाल कृपान सिधे कर जब सखि चढत तुरंग ॥ × × × मीयतलाल निम्न रहे तजब करि उमंग ॥ सहज्ज कहत × × ॥ यस्मिराम लाल × × ॥ मुकुटसहाय × × ॥ शकर दयाळ × × × ॥

पृ० ४५ से २८२ दान वर्णन, नायिका वर्णन नायक छलण इत्यादि ।

ग्रंथ-निर्माण—गुनिये जुग ब्राह्मण सिपा, रसि ससि संका चार । माव शुक्रु श्री पंचमी, भयो ग्रंथ अवतार ॥

सह्या २५. कविता सग्रह, रचयिता—वैजू कवि, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) ६१, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७५ = १८१८ ई०, लिपिकाल १८८० = १८२३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूधे, जिला—गाजीपुर ।

आदि—वैठी सीस मंदिर में सुंदरी सवारें केस मूटि के केवाड़ दोऊ छवि को छकतु है । प्रीतिपट लकुट मकुट बनमाल धरे पीको किये भेषु प्रतिविंवना लखतु है । होति निरशोक उर अंक भरि भेटिवे को भूषण पसारत समेटत जगतु है । चौकत बकत उचकत लचकत क्षम क्षमत छुकत मुख चूमि ना सकतु है ।

अंत—कवित्त—सांवली मूरति मेरे बसी कवि वैजू कहैं पृह लगी रहै सूरति । सूरति स्याम औ राधिका की विसरै न छिनौ मैं उहा रही दोरति । छोड़ि छोड़ाइ पाइ उहा दधि घाते कृष्ण की तान सो पूरति । पूरति प्रेम तू पूरो रहै मन मेरे बसी रहै सावरी मूरति ॥ २ ॥ कवित्त—सांवली मूरति मेरे बसी चित सोहैं न लोग सुहात न गांवरी । गांवरी मे घव कुजन में हरि हाय कहां मैं हूदन जाउरी । तौ कुलकानि बड़ी अब लोग लुगाई घरें सव नाउरी । नाउरी तेरो तिहू पुर में मोहिं आनि बुलाइदे मूरति सांवरी ॥ ४ ॥

विषय—(४) कलियुग में चारों वर्णों द्वारा अपने २ कर्त्तव्यों का त्याग । (५) राम विनय । (६) मित्र के प्रति कविता । (७) शिव का बालकृष्ण के दर्शन के लिये यशोदा से प्रार्थना करना । (८) एक सखी की वार्ता दूसरी सखी से (कृष्ण के प्रति) । (९) शृंगार रस के कवित्त । (१०) कृष्ण की वशी सुनकर गोपियों का आत्मविस्मरण । (११) कृष्ण की दानलीला । (१२) राधा और कृष्ण का सम्मिलन ।

सह्या २६. भापा भरण, रचयिता—त्रैीलाल सारस्वत, कागज—देशी, पत्र—३३, आकार—१२ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २९, परिमाण (अनुष्टुप) ६८७, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२५ = १७६८, लिपिकाल—सं १९४६ = १८८९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णविहारी मिश्र, नयागाँव माडेल हाउस, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः मंगलाचरण दोहा । वेद स्मृति दधि मथन ते मिल्यौ यहौ घृतसार । व्यापक पुरुष प्रसिद्धि जो सकल शृष्टि आधार ॥१॥ चेतन को जो जड़ करै जड़हि करै चेतन्य । ताको पाप प्रसिद्धि नर सुख सो भजत अनन्य ॥ २ ॥ × × × ×

रचनाकाल—शर^१कर^२ वसु^३ विधु^४ वर्ष मे निरमल मधु को पाई । त्रिदश और ध्रुव मिलि कियो भापा भरण सुभाइ ॥८॥

अंत—इति श्री सरस्वती विरचितं भापा भरण संपूर्ण शुभ मसतु श्री राधा कृष्णाय नमः सवत । रस श्रुति निधि शशि अद् अरु आश्विन कृष्ण विहारी जीव तृतीया को लिख्यो भापा भरण सुधारि ॥

सदस्या २७ बैतालरक्षीसी, रक्षयिता—बैताल कवि, कागज-देसी, पत्र—६२, आकार—५ X ३ इंच, पंक्ति (मति पृष्ठ) ६ परिमाण (अनुपूप) ११६, रूप—प्राचीन, लिपि—भागी, मुद्रा मिश्रित, लिपिकार—सं० १०६८ = १७११ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० उमादांकर वृक्षे, गाजीपुर ।

भादि—श्री गणेशायनमः । शो०—सकल सुगत सेपादि वै, मुनि मारव सु कइति । ता घरी पुत्र न जन्मही तसकल बिर्द्ध गर्भति मीमसीनि मुनि चमकीपो मुस प्रह पुत्र न भादि । कैन मुनि क्य सु कहु यवम अन्नरय जाय । मो प्रदि इधम जसनि नूपति पुनि सैस सब । धारा लख ईं गुरी गज दीइ सहस मुदाइक । कासिब कुल उधरय देव सकल गुन मंडन । कोक मोक संत बन महा पाठिक भरि पंडन । इन चरीली मत्र पसे स मुनि जन्म अकारय जाइ मुस । किहि बिधि करुक मुस उतरी सुक पूर्ण भुप राइ तुस । ईई मुनिभि पुनि राइ गयो आतुर मुत्पुर कउ । ज्ञान-विमन महेस ईं भादि बैडे सऊ । अरि भंजन रिपु दहन दीयी आदरसऊ मुनिबर । इंसि संकर संपियो कात्रि किहि भायी पुनिबर । बंदि पम मनि मुस बंध जवि तुम संकर आसान करि । विहमीपो इस जंपी मुइम दीयी पुत्र बरदेव सरी ।

अंत—बिक्कम गरिद बैताल कुं सुहती और बहुज्यो ह्यो । हीर और पट कूल सीग सी गत्र मुकताइक । अरय सहसमयमंत इंसि सोमित मुदाइक । तेजी सहस तुपार पंच सी गांव प्रसिधी ॥ बेच सहित पुरबास ठास बीभी बहुरिधी । अलचन बसन बहु बिविधि पुरि नयो महक बिर्द्ध की पो । बिक्कम गरिद । बैताल कुं सुहती और बहुज्यो दीयो ॥ परचंड दंड मुब मंड मी मुनही कोई बिक्कम जु सरी । गड न छंऊ सम सरिस समहसर नई कोइ साहर । गिरि न मेर सम सरिन प्राइ न कोई समी दिवा हर । कंचन मम नहीं घात पात बैकी बासिगसिर । काम सरी न कोइ रूप देव कोई समी नहीं हरि । मनि बैताक हरि बंद मत अइकार राबनपरी । परचंड दंड मुब मंड मी मुनही कोइ बिक्कम सरी । इति श्री बैताल कवि कृत बैताक पचीमी मंपूर्ण ।

विषय—प्रसिद्ध बैताल पचीसी की कहानियों और भुप बिक्कम की प्रशंसा ।

सदस्या २८. कल्पकुम्भ बंसावली, रक्षयिता—प० बाजीराम राऊ, (कुँदावा, यह सील विसर्वा, जिंदा सीतापुर), कागज-देसी, पत्र—१६, आकार—१६ X १३ इंच पंक्ति (मति पृष्ठ) ३४, परिमाण (अनुपूप) ६००, रूप—प्राचीन लिपि—भागी, रचनाकार—सं० १८६० = १८०३ लिपिकार—सं० १८९८ = १८४१ ई० प्राप्तिस्थान—पं० गयादीन राऊ, ग्राम—मानपुर, बाकबर—उंचौरा जिंदा—सीतापुर (अरब) ।

भादि—श्री गणेशायनमः अथ बंसावली लिप्यते ॥ अथ कल्पय गीत्र को खोरा लिप्यते ॥ कल्पय कश्मीर के बामी । तिनके तनय देवल सुपरामी । देवल प्रथम भद्रावर जाये । राजा अह्वर तिग्रे टिकाये । फिर देवल सुराज पुर जाये । इति प्रीहित कर तिग्रे टिकाये । देवल तनै जामादत्त मये । तिग्रे आसादत्त के मादे हस घर मये । सिबकी सगरोज, गाहरी सुराजपुर उमरी, मनोह, गुदरपुर, बन्ना, हरिबंनपुर पचौर विंशामपुर, मनो है तरह पर मये X X X X X

अंत—अथ खट कल का व्योरा भरद्वाजोपमन्यदच सांष्टिर्यो कस्यो कात्यायन साकृतश्चै व पदैत गोत्र श्रेष्ठ अथ समधिन को व्योरा गमासः क्वचित् ॥ पङ्क्ति हैं पुनीत गगाजल से गंगे सों वाले पोरिवाले परे थाप थाप पासे घर के, तिलक तिवारी चत्तूवाले हैं सुगंध वाले सोभित अवस्थी यामें जानौ प्रभाकर के । छने चपाकर जग जाहिर नमेले वाले वाला के वेलंद न्याउ भेती सौक्ष वर के । वीस चित्वा वीस के वटेधर के हीरावाले उदित उदंद वाजपेई पीत करके ॥ दीक्षित अटेर वाले जाहिर सीकत के और मिश्र धाविहा प्रगट सरवार के । पगट त्रिवेदी हरीवाले नीलकण्ठवाले दुवे धरवाम के निचाम कष्टु घर के आकिन को आकु सिरताज सोठि आये वाले माझ गाव वाले मिश्र ऊंचे वर के गोपिनाथी गरये गभीरे प्रसिद्धि परसू के उदित मिश्र है हिमकर के । इति श्री कान्य कुवज वशावली समाप्त कार्तिक मासे कृशन पठे परेवायां रविवासरे सवत १८६८ लि० प० भैरोप्रसाद शुक्ल ।

विषय—कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की उत्पत्ति और वंशावली ।

संख्या २९ ए. नख शिख वर्णन, रचयिता—वलभद्र, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ४३, परिमाण (अनुपुष्ट) ३००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०२ = १७४५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रघुवीरचरण मिश्र डाकघर—दिल्ली, जिला—कानपुर ।

श्रादि—श्री गणेशायनमः अथ वलभद्र कृत नख सिप लिप्यते ॥ क्वचित् केश वर्णन मरकत सूत किधौ पन्नग के पूत किधौ राजत अभूत तमराज कैमे तार है ॥ मप धूल गुन ग्राम सोभित सरस स्याम काम मृग कानन कि कुहू के कुमार है ॥ कोप की किरनि जज नील की जरी के तत उपमा अनत चारु चमर सिंगार है ॥ कारे सटकारे भीजै सौधे सों सुगंध वास वलभद्र अमे नव चाला तेरे वार हैं ॥

अंत—॥ छप्पय ॥ सुजानता सीलता सुलज्जता सुदरताई ॥ गुन गभीर ग्यानता चतुर गरुवता गुराई ॥ उज्ज्वलता सुचि अंग धीरता चित्त अचलाई ॥ अल्पमान मन विमल कमल मुप पिय सुपदाई ॥ मीठे वयन प्रफुल्लित वदन पट परिमल भूषण धरनि ॥ सो भाग भोग सोभित सरस सुविचित्र विधिके सिपनप वरनि ॥ इति श्री वलिभद्र कवि बिरचिते सिप नप संपूरन ॥ सवत १८०२ वि० हरी पुकारन में गई हरी मिलन की आस । हरी हरी करि टेरती हरी हरीके पास ॥

विषय—नख से सिप तक नायिका की सुदरता का वर्णन ।

संख्या २६ बी. नखशिख वर्णन, रचयिता—वलभद्र, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ४०, परिमाण (अनुपुष्ट) ३१५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०२, प्राप्तिस्थान—प० शिवकुमार, ग्राम—अहनापुर, डाकघर बसोरा, जिला सीतापुर (अवध) ।

आदि—२९ ए के समान ।

अंत—इति श्री वलिभद्र कविकृत सिप नप संपूर्णम् शुभ मस्तु संवत १८०२ वि० जेष्ठ अष्टमयाम सोमवासरे मुकाम विजैपुर सुभस्थान ॥

सुधपा ३० स्वरोदय रचयिता—बालरुचि उर्फ बालरुद्रास, कागज—सामान्य, पत्र—१८, आकार—८ ३/४ × १ १/४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुच्छेप) ३१०, बंधित, रूप—शीर्ष, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० सिद्धेश्वर राम मिश्र, ग्राम—परिपार्षी, जिला प्रतापगढ़ (अजय) ।

आदि—यानी नीच को चर्च, श्रेष्ठ रंग परकाम । बाल राम तेहि क रूप, सीरह अंगुल पास ॥ १३ ॥ रंग हरेरो पवन की, तिरछी बाल प्रमान । अठ सु अंगुल मोचर्च, हर्षसन के अस्थान ॥ १४ ॥

अंत—उंठ—अरि कमल मुख विमुक्त आत्म छोरी शर मरी कटे । हे मूक कठ चढ़ाठ अतम अठ सीतनु के गटे ॥ आदि भनु तदि पादि आत्म मुक्त मग पछिम दिशा । अकि मधुर मन तन पचरि तकि शरिरेषि दिन शत गुर किना गुण खेरी पद रज नयन धरि मय त्यागी प्रियुटी अ बरुल । पाऊ बधि निवेधि धौंटी पागनी कोदिन कम्म ॥ तब पोतु कपट कपाट कर बिनु मेल बिनु निरप्या चहा । तहाँ रचिर अमृत

विषय—स्वरोदय ।

सुधपा ३१ प ब्रह्मबाद रचयिता—यादवराज (जयनगर, रायबरली) कागज—शीर्ष, पत्र ८३, आकार—६ × ३ १/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुच्छेप) ३९८, रूप—साधारण, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—पं० प्रियुबन्ध प्रसाद त्रिपाठी बिसारह, मिथिल स्कूल तिछोई, जिला (रायबरेली) ।

आदि—शे० जबकी आत्म देह में, तबकी सुखदुख होय ।

ताने मोहि अय करि परत, ईमको सुख दुख हाय ॥

गुदबाच—शे० आत्म को सुख दुख यदि, तन को सुख दुख यदि ।

निश्चय करि मन मानिष्ट, सुख दुख मानई यदि ॥

अंत—देह सुमान भूषण, मङ्गल दद के धर्म । गान पात्र पहिरन मिसल, पिछुरन सबों धर्म ॥

× × × × ×

सुधपा ३१ बी विंताबोध रचयिता—धामराम, कागज—शीर्ष, पत्र ८० आकार—८ × १ १/४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुच्छेप) १५४०, बंधित । रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिस्थान—पं० १८२६ = १७६६ ई०, प्राप्तिस्थान—छात्र गंगाबन्ध सिंह, ग्राम—बंगलाबाद, छात्र महमूदाबाद जिला सीतापुर (अजय) ।

आदि—धी गनेनाय अम ॥ अय विंता बोध लिप्यते श्री राम उंठ ॥ ३ गुर महा प्रमू कर्णत धरम धाम ५ । समस्त जय शोचन । समूह पाप माचन । आनंद रूप सोदित । मदेग शेष मोहित पदर बिंद पकर । अत्रादि दपना मज ॥ गमीर प्रप को परी । बिचारि धिरी को धरी । प्रबंध उंठ निर्मित । कपीर गानु को दित । पापाद पुत्र कीजिये । दिशर दान हीजिये । मज्जत पाप दाय वे । प्रबंध जय धामय ॥ × × × × × श्री० पुष्पी के नीच घर करई । जुग जुग अमर रहे नहि मरई । जिदि का

प्राण सिद्धि भा होई । जीवत बहुत दिन जानौ मोई । फिरी रस क्रिया भूचरि माहीं । जासु मंत्र सुमिरत मन माहीं ॥ अथ पेचरि केर सुन वानी । जाकी सिद्धि रहै तर पानी । रवि गति होई दडगत स्वासा चद्र ही की तिथि वार प्रकासा । मत्र अ अं ॥ जापर एह मत्र केरि नित करिये । जब जलतत्व स्वास निरधारिये ।

अंत—यहि विधि साथे पेचरीगुरु चरन चित लाइ । कुजी रापी आपु ते तारा देखे वताइ । मुद्राकहो अगोचरी तामें सर्व हवाल । जोग भोग स्वान उभय वरणि सुनावो चाल । अगिन तब जब चले प्रचडा । तब तत्र देहि भुजंगिहि दंडा ।

विषय—शरीर के साधन और युक्ति के द्वारा चिंता में प्रथक् रहने के उपायों का वर्णन ।

संख्या ३२ ए जानकी विजय, रचयिता—वलदेव, (रतघार, फतेहपुर), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार— 10×6 इ०, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप)—४००, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १६३६ = १८७९ ई०, लिपिकाल—स० १९३६ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० ज्ञानदत्त मिश्र, ग्राम—शकरपुर, डाकघर—बिसवाँ, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री जानकी विजय वलदेव दाम कृत लिप्यते ॥ दो० । श्री वास्तव कायस्थ कुल दीन दयाल प्रवीन । तेहि सुत मत जन महज रत नाम सकटादीन । जिला फतेहपुर परगना है कल्यानपुर नाम । तह दौलतपुर ग्राम एक तहां सो तिनकर धाम ॥ श्री गुरु छात्र दाम प्रभु महाराज गुन गेह । दीन सुमंजुल मत्र तेहि उर उपज्यो सिय नेह । तेहि हित यह उपदेश मन तेहि सहायता पाय । तरउ चहत भव सिंधु जन विनु श्रम सिय गुन गाय । राजापुर श्री जमुन तट तासु निकट खतवार । तह लघु मति वलदेव जन कीन्ह प्रथ अवतार । जानौ कहुँ न कविता गति सिय गुन गावन साध । मादर सुनिहहिं साधु जन छमि अपराध अगाध ।

अत—श्री दुर्गा दुर्गति वलन गिरिजा गिरा भवानि । बुध विद्या वलदेव मोहि सुत सेचक निज जानि ॥ इति श्री अद्भुत रामायणमते श्री मठ जानकी विजय नाम त्रये श्री वलदेव जी विरचिते भाषा सपूर्ण समाप्त लिखत जानी राम कानपूर शहर मध्ये संवत् १६३६ वि० ॥ श्री राम जी की जय ॥ राम राम शिव राम राम ।

विषय—जानकी का दुर्गा रूप धारण कर महिरावन को मारना ॥

संख्या ३६ बी. जानकी विजय, रचयिता—वलदेव, कागज—नवीन, पत्र—२४, आकार— 10×6 इ०, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप) ४३२, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १९३६ = १८७६ ई०, लिपिकाल—स० १९५० = १८६३ ई०, प्राप्तिस्थान—सेठ मगनी राम सौदागर, खीरी लखीमपुर (अवध) ।

आदि—३२ ए के समान ।

अत—कवित्त ॥ पूरण पवित्र और विचित्र है चरित्र यामे माया का प्रभाव आदि मध्य अवसान है ॥ जासु के पढ़ेते औ सुने गुने ति भाए मोद मिलत अर्थ धर्म का निवीन

है ॥ मुंगी धरुदा प्रसाद चेत है सप्रेम जब दास बन्देब लब कीन्हों गुन गान है ॥ जाबकी विजय है नाम परम पुनीत । प्रथ सीता क उपासक को गीता के समान है ॥ इति श्री भद्र मुठ रामायण मठ श्रीमत् जाबकी विजय नाम प्रथ श्री बरुदेब जी-विरचिते भाषा सपूर्ण संवत् १९२० वैसाख सुदी ८ इति ॥

विषय—भद्रमुठ रामायण के आधार पर जाबकी का दुर्गाकव्य धारण कर महिरावन पर विजय प्राप्त करना ।

सप्त्या ३३ कृष्ण खीका, रचयिता—बलदेवा, अगात्र-देशी, पत्र—१६ आकार— ८×१६ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, रूप—साधारण किति—नागरी रचनाकार—सं० १९०१=१८४४, किति—सं० १९३०=१८८० ई०, मासिस्थान—पं० मुन्नीटाक बबस्पी, ग्राम—नारायणपुर, बाकपर—ग्रेका गोकुलनाथ, जिला—खीरी (अवध)

आदि—अब कृष्ण खीका लिखते ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ हो०—महावीर के मंत्र से क्या हमारा ध्यान । बलदेवा आधीन के दे दिरि में ज्ञान ॥ श्री० ॥ वे दिरि में ध्यान ध्यान में धरता तेरा । बीबी मुझे बुध ध्यान रहूँ चरमन का चेरा ॥ प्यारे जी मे हुँ तेरा दास अर्ज पू करता बंदा । बलदेवा आधीन कष्ट तुझों का फंदा ॥ अबाब सहोधी का हूँ देवकी कैद में ठाले दिये बबबाय । जन्माई राजा हुआ पहरे दिये बिठाय ॥ कदा ॥ हुआ कृष्ण भीतारे । ठाले गये सब हूड बैलते नर श्री नारे ॥ बहुत हुआ आनंद हाज रुगे श्री श्री कारे लंके चले बसुदेव गये अमुना के किनारे ॥

अंत—नाचत गावत धेनु संग पर्कुचे गोकुल भाष । यह खीका पूरा मई मुनी मठ चित फाय ॥ इति बन्देबा कृत कृष्ण खीका समाप्तम् संवत् १९०१ आषाढ शुक्ल पक्षे पंच म्याम् । किल्लत गीरीसंकर भरद संवत् १९३७ ईश्वरशुक्ल रामनवमी ॥ श्री राम जी की ॥

संख्या ३४ विरहनी बारहमासा, रचयिता—बलदेवप्रसाद (अमरीषा कानपुर) अगात्र—देशी, पत्र—८ आकार— ६×४ ई०, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३ परिमाण (अनुपुप) ३८, रूप—साधारण, किति—नागरी, रचनाकार—सं० १९३०=१८७३ ई०, किति—सं० १९३६=१८७९ ई०, मासिस्थान—पं० बिष्णु भरोस, ग्राम—बालामठ, बाकपर—जजगीम, जिला—अजाब (अवध)

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अब विरहनी बारह मासा लिखते ॥ ईत विरहनी पों कहत क्याकुक होइ धररात । पीतम परदेमका कको धर अगना व मुहात । जान पाव कीझे रुगी नहिँ बनपरत उपाय क्या करी पुरी सखी मुब बुध गई मुसाय । सार्द भरे निद्रु ई हठ नहिँ छौँइत नेक । जब ईश्वर को मानि ही जो विष काटे टैक ॥ वैसाख ॥ वैसाख निबर नारी कइत मति जाबो तुम कंत । भाग्य किली बग अमिद है क्या कक भगवंत ॥ मात पिता घर त्याग कर विब आई तुम पास । अबला नारि अधीम पति वेगि करी बुल नास ॥ चूक हमन ने जब करी नेक न काये पिय । मंद मधुर मुल प्रीति सों हंमि बोले ही निप ॥

अंत—इति विरहनी बारहमासा बन्देब कृत संपूर्ण समाप्ता संवत् १९३० ईश्वर पूर्वमा ॥ टिला सिबहीन पाठक संवत् १९३६ वि० महीना बवार ॥ श्री श्री श्री श्री श्री राम राम राम ॥

संख्या ३५. अज्ञान, रचयिता—बालगोविंद, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार— ५×३ इंच, आकार— ८×३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ ८, परिमाण (अनुपुष्टुप) २८८, मंडित ।
रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—पं० रमाकांत त्रिपाठी 'प्रकाश', ग्राम—वांदा,
ढाकवर गौदवारा, जिला प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—मैफर्म मप्यच्युत भाव विवर्जितम् ॥ निर कर्महु अच्युत भाव विवर्जित
ज्ञान निरंजन मोभित नाहीं । परि पूरन फेर निगंनर कैमे अमद्र महाशाय ईश्वर माहीं ॥
अति मै जोड् कर्म महा अति उत्तम ताहि नियो सु समर्थन नाहीं । सर्वांतम भावहिते
भजिये नित बाल गुविन्द सदा मन माहीं ॥ १ ॥ वरमान् सुचन् क्वाचिन् समये ॥ विन
वेलहि छोरत है वछरान को औरह मे वरजे मन माहीं । दधि दूध सुराय के म्यात सदा
करि और उणाय जो नीट सदाही ॥ करिके सु विभाग रवावत है रुवि को उनमें पुनि
खात जु नाहीं । तव फेरत है मटुकी विन लाभ मकोप भई वन बाल रवाहीं ॥ २ ॥ बाहु
प्रमार परिरम कराल घोन् ॥

अंत—दोहु बाहु पमार अलिंगन ते सु विनाल दर वरनी विनकाई । कुच मर्दन
नर्मन खात्र निपातन ते बहु भांत सुहात दिटाई ॥ अति केलि सुगेलन हाम विलोकन ते
व्रज सुदरि को अधिकाई । रति के पति के अति वेग वदावत बाल गुविन्द रमावत गाई ॥
सवाग्विमर्गो जनताबु मंग्रवो ॥ सोड् वाग विमर्ग अहे जनता अघ नायन हार सदा जिहि
माहीं । पुनि श्लोक अवद्ध प्रयोगहु में वह योग अमेप विशेष लम्बाहीं ॥ भगवान अनन्त के
नाम अनेक महा जस अफित सादर जाहीं ॥ सुनते अरु गायन को करते स्तुति बाल गुविन्द
सुसज्जन चाहीं ॥

विषय—भागवत के कुछ श्लोकों का अनुवाद ।

संख्या ३५/१. भगवद्गीता, रचयिता—बालगोविंद, दैप्यव (गोंटवा कागज देशी,
पत्र—१५, आकार— १०×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुपुष्टुप) ८३१,
रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०६ = १७५२ ई०, प्राप्तस्थान—
टमाशंकर दूबे, जिला गार्जीपुर,

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्णायनमः ।

दोहा—वर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र में मिले युद्ध के साज । सयय मो सुत पाडवन्ह कौन्ह कैसे काज ।
पांडव सेना व्यूह लखि दुर्योधन दिग आइ । निज आचारज द्रोण मे बोले
ऐमे भाइ ।

अंत—बार २ सुमिरत जहाँ या संवादाहें राज । हर्ष होत मोकों महाँ अति पवित्र
के साज । अद्भुत रूप श्री कृष्ण को सुमिरत मरिहाँ ताहि । हर्ष होत मो कौ बहुत विस्मि
को निरदाहि योगेश्वर श्री कृष्ण जी हे जो ठौर । तहा विज्ञै अजा जोति है अरल
सम्पदा और ।

सन्यासयोगो नाम अष्टादसो ध्याय भगवद्गीता सपूर्णम् ।

संख्या ३६. बालचक्रित्मा, रचयिता—बालकराम, नैनसुख, कागज—देशी, पत्र—४८,

आकर—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अमुप्युप) १०८०, रूप-प्राचीन, क्विपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८३७ ई०, प्राप्तिस्थान—काका रामप्रसाद पटवारी ग्राम—बेहता, बाकधर—जुँबीरा, बिल्ल सीतापुर, (जयध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बाळ चिकित्सा छिप्यते ॥ सरस्वति अंबे आद् भवानी सिन्धु को सिर नाळ । गजनाथक रामक रिचि सिचि के तिनझे आद् भनाळ । भाव प्रकाश और माभव सुसुत चर्मादिक हसीई । लंबद पुराण की बाळ चिकित्सा सो तैरे प्रत गाई । बाळक जल्प पिंड औ झपटा मित्र मित्र मुन लीई । देण काल भी समा विचारै तब कहु जतन करीई । मूढ बँद जावुंगर पंडत बाळक रोग न जायै । सब प्रथम मत सुगम चिकित्सा बाळक रुज परिचारै ॥

अंत—इति श्री बाळ चिकित्सा बाळकराम वीनसुप कृत संपूर्ण समाप्ता संबद् १९१४ वि० विसाप तुषीदसी कृष्ण पक्ष ॥ इति शुभ मस्तु ॥ श्री राम श्री राम श्री राम ॥ संख्या १७ बारहमासा, रचयिता—बाळमुकुंद, टाकुरद्वारा, (मुरादाबाद), कागज देसी, पत्र-३, आकर—८ × ६ इंच, परिमाण (अमुप्युप) ६३, रूप—प्राचीन, क्विपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४७ लिपिकाल—सं० १९२६, प्राप्तिस्थान—प० रामाबाद मित्र, ग्राम—नगरा, बाकधर कलीमपुर, बिला लीरी (जयध)

आदि—बाळ मुकुंद कृत बारह मासा ॥ श्री गणेशायनमः अथ बाळमुकुंद कृत बारह मासा छिप्यते ॥ शुरु असाज अप्य प्यारे । छुई वंगळे जगत सारे । भरे आकाश धन करे । अठुई आना म निरमोही । मिलावै मेरे दिखबर से है बीसा जक्त में कोई ॥ हुजा सावन शुरु अब से । जळे हुजा जिर तब से । न पाया को किसी डब से बपस यों ही सबै कोई । मिलावै मेरे दिखबर से । है बीसा जक्त में कोई ॥

अंत—कीद में मिले गुद घाली । कही सुंदर बारा मासी । कथन की बाळ मुकुंद जसी । है टाकुर द्वार का बानी ॥ के आशा गुरुदेव की पूरन विस्वासीस । वीत्र टाकुर तिवि अहमी संबत सीताळीस । सदा पढ़ते है पी बारे । तुस बिना को दिखबर प्यारे ॥ इति श्री बाळ मुकुंद कृत बारामासी संपूर्ण समाप्ता ॥ किला सिध अपार मित्र रचपठगार्थ संबत १९३६ वि०, भावन टाकुरा ८ अहमी ॥ राम ॥

विषय—विरहिणी बिकाप ।

संख्या ३८ प नलसिल वर्गन, रचयिता—बकबीर कागज—देसी, पत्र-१०, आकर—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ४२, परिमाण (अमुप्युप) २०० रूप—पुराना, क्विपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४६ प्राप्तिस्थान—टाकुर सिबसिंह, ग्राम—हिम्मतपुर, बाकधर सिबोकी बिल्ल सीतापुर (जयध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ जप मिय बर्थां छिप्यते ॥ चरजोपमालंकर ॥ दोहा ॥ पठत से कोमक कमक अंगुली कीस समाज । जाबक पाबक राज गुन भुपव भेद बपान ॥ कथा ॥ दिन मनि मित्र पितु पावन बिरवि जूके सुंदर सुमन सुम सोमित

जमल से । ललित अरुन पर जावक रजो को गुन पावक अरुन सुप धूमसोममलमे ॥ अंगुली अरुन कोम भूपन-अरुन नय वरनत कवि रवि द्वादस अमल से ॥ पल्लव नवीनता रूप रमा परम सारु प्यारी के चरन चारु कोमल कमल से ॥

अंत—॥ दोहा ॥ अलक वरनन ॥ द्यग पुतरिन को किरनि सम कहै कसौटी धीर । मधु कुल माला रैनि सो मछम सी बलवीर ॥ जया ॥ किधौं है मयूप द्यग तारिनि की राही धौं कनक कसौटी पै कसौटी लीक कसी है ॥ किधौं मार मधुकर कंज कमनीय पर हाटक धरित सी किधौं मछम सी है ॥ किधौं बलवीर प्याली बलित पयूप काज उपमा न आवै और याही मति टसी है ॥ प्यारी के वदन पर अलक सुमिल किधौं कलानिधि ऊपर ते तमी धार धसी है ।

(अपूर्ण अंत के पृष्ठ नहीं हैं)

सख्या ३८ बी. नख सिख वर्णन, रचयिता—बलवीर, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८ × ६इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ४२, परिमाण (अनुष्टुप) ३३२, खडित । रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—५० जनार्दन जी, खाले की बाजार, जिला लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ बलवीर कृत नख सिख वर्णन लिप्यते ॥ अथ उपमालंकार नख सिख वर्णन ॥ दोहा ॥ कछुक भेट कवि कहत है उपमा समता कीन । मिहदी जुत करवीर यो जावक पगन प्रवीन ॥ १ ॥ अथ चरणोपमालंकार ॥ पल्लव से कोमल कमल अंगुली कोम समान । जावक पावक राज गुन भूपन भेट वपान ॥ यथा ॥ दिन मनि मित्र पितु पावन विरचि जूके सुदर सुमन सुभ सोभित जमल से । ललित अरुन पर जावक रजो को गुन पावक अरुन सुप दूम सो ममल से ॥ अंगुली अरुन को सभूपन अरुन नय वरनत कवि द्वादस अमल से । पल्लव नवीनता रूप रमा परम सारु प्यारी के चरन चारु कोमल कमल से ॥

अंत—॥ अकल वर्णन ॥ दोहा ॥ द्यग पुतरिन की किरनि सम कहै कसौटी धीर । मधुकुल माला रैन सी मछम सी बलवीर ॥ जया ॥ कीधौं है मयूप द्यग तारिनि की राही धौं कनक कसौटी पै कसौटी लीकसी है । किधौं मार मधुकर कंज कमनीयपर हाटक धरित सी किधौं मछम सी है ॥ किधौं बलवीर प्याली बलित पयूप काज उपमा न आवै और याही मति टसी है ॥ प्यारी के वदन पर अलक सुमिल किधौं कलानिधि ऊपर ते तमीधार धसी है ॥ इति श्री नख सिख उपमालंकार समाप्त लिखा मुझा मित्र कैंधा निवासी सवत् १८७० वि० जेष्ठ शुक्ल दशमी ॥ मम को दोष न देव जैसा का तीसा लिखा । जानत सब हरि भेव समुझि जेठ सय चतुर नर ॥ श्री गंगा जी सदा सहाइ करै ॥

संख्या ३८ सी रससागर (दंपतिविलास), रचयिता—बलवीर (कन्नौज), कागज—देशी, पत्र—५६, आकार—१० × ६इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ४६, परिमाण (अनुष्टुप) १५००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४७, प्राप्तिस्थान—५० मन्नीलाल तिवारी गंगापुर, ग्राम—मिश्रिख, जिला सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रस सागर (वृषति विकास) छिप्यते ॥
 छंद माघा सवैया ॥ सिद्धि सरल गुण वृद्धि करन पुनि विघन हरन सुपदेत अर्चत ।
 गिरिजा नंदन जग के बदन सनु भिर्दहन गनवर कंत ॥ सब सुप हापक सदा सहायक है
 सब सायक अपत सुरस ॥ सरय के सहजा पूरै रहना राज कर वदना जमो गनेस ॥ हो ॥
 कर और विनती करी क्यही को सिर भाइ । रस सागर के बरन को तरनि तिहारे पाइ ॥

अंत—छंद बंद रस भाइका भाइका श्री गोपाल । वृत्तो कयी न दृष्टि मरि कबि
 बरुबीर रमाछ ॥ वृषति क्यो विकास में राये श्री मन्तराज । देह परी जिन जिन जगत में
 बीर मरु के काज ॥ इति श्री वृषति विकास समाप्त ॥ छिपत सिक्कठ तिहारी संवत
 १८४० ईश्वर शुक्ल द्वितीया ॥ श्री गणेशायनमः ॥ राम राम

संख्या ३८ श्री रससागर (वृषतिविकास), रचयिता—बरुबीर (कर्बीज),
 कागज—शैली पत्र—५६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ४२, परिमाण
 (अनुच्छेप) १४७०, रूप—प्राचीन, छिपि—नागरी रचनाकाळ—सं० १७५९ = १७०२ ई०,
 छिपिकाळ—सं० १८८८ = १८३१ ई० प्राप्तिस्थान—अजमेर मन्ना सिंह, ग्राम—सरखतपुर
 डाकघर कुनुबनगर, जिला सीतापुर (अजमेर) ।

आदि—३८ सी के समान ।

अंत—इति श्री रस सागर ज्योत वृषति विकास संपूर्ण समाप्त छिपत मया राम
 मिश्र कार्तिक शुद्ध भितीया संवत १८८८ वि० राम राम राम ॥

संख्या ३८ इ रस सागर (वृषति विकास), रचयिता—बरुबीर (कर्बीज)
 कागज—शैली, पत्र—५६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ४६, परिमाण
 (अनुच्छेप) १३९०, रूप—प्राचीन, छिपि—नागरी, रचनाकाळ—सं० १७५९ = १७०२
 ई०, छिपिकाळ—सं० १८८८ = १८३१ ई० प्राप्तिस्थान—पं० गंगादीन कवि, ग्राम—
 समरहा, डाकघर बाटमपुर, जिला उन्नाव (अजमेर) ।

आदि—३८ सी के समान ।

अंत—इति श्री बरुबीर कृत रस सागर वृषति विकास संपूर्ण समाप्त छिपत
 देवगिरि संवत १८८८ वि० श्री सिक्क तिक्क तिक्क ॥

संख्या ३६ ए. बाबन सतसीका रचयिता—बनारसी दास, कागज—शैली पत्र—२४
 आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३२ परिमाण (अनुच्छेप) ३४० पूर्ण, रूप—प्राचीन
 पद्य । छिपि—नागरी, रचनाकाळ—सं० १९८९ = १९२९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कालिदा
 प्रसाद, ग्राम—रसमपुर, डाकघर रामपुर, जिला उन्नाव (अजमेर) ।

आदि—अथ बाबनी छिप्यते सवैया । इकतीस ॥ ऊं कर मबद् बिहदया के उभय
 रूप एक आत्मिक भाव एक पुदयक की ॥ सुषता विभाव छिये उमी राइ चिदानंद
 अनुभवा विभावण प्रभाव जद बरुकी ॥ प्रिगुन त्रिकाल तात व्यय अप्य पठपाठ ग्यता
 कीं मुहात बात नही तात घट कीं ॥ बागारसीदास जू हृदय उंभर बास श्रीसो प्रकाम सति
 पक्ष मुकुल कीं ॥ १ ॥ निर्मल ज्ञान के प्रकार पंचर लोह तामे सुत ज्ञान परधान करि

पायो है । ताके मूल दोह रूप ३ क्षर अनक्षर अत्र पिठ सयन में वतायो है ॥ वावन वरन ताके अंम ह्यात सनियात तामें नृप ऊकार सर्जन सुनायो है । वाणारमीदास अंग द्वादस विचार यामें अंसो ऊकार कठ पाठ तुहि आयो हे ॥ २ ॥

अंत—हेत वत जेतै ताको सहज उटार चित्त आगे कहौ एतो वरदान मोहिं दीजिये । उत्तम पुरुष रीरीवा वाणारमीदास जस पन्नग सुभाव इक ध्यान मी सुगीजिये । पवन सुभाव विसतार कीजो देस देस भ्रमर सुभाइ निज स्वाद रम पीजियो । वावन कवित्त एता मेरी मति मान भए हस के सुभाव ग्याता गुण गहि लीजियो ॥ इति वानारमी नामा किंत वावनी सर्वैया सपूर्ण ॥

विषय—धर्म सबधी उपदेश ।

सख्या ३६ वी सूक्ति मुक्तावली, रचयिता—वनारमीदास (आगरा), कागज—देसी, पत्र—४७, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३४, परिमाण (अनुष्टुप) १३६०, स्रद्धित । रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६१ = १६३४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कृष्णविहारी मिश्र, माडेल हाउस, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ ।

आदि—सुपुरुष तीन पदारथ साधहि । धरम त्रिशेष जानि आराधहि । धरम प्रधान कहै सब कोई । अरथ काम धरमहि ते होई ॥ दो० ॥ धरम करत ममार सुप धरम करत निरवान । धरम पथ साधक विना नर तिर जंच समान ॥ अथ मनुष्य भवका अधिकार ॥ जैसे पुरुष कोई धन कारन हूइत वीप वीप चढ़ि जान । आवति हाथ रतन चिंता मनि डारत जलधि जानि पापान ॥ जैसे भ्रमत भ्रमत भव सागर पावतनर सररीर परधान ॥ धरम जतन नहिं करत वनारसि खोवत वाहि जनम अज्ञान ॥

अत—दो० ॥ नाम सुक्ति मुक्तावली द्वाविंशतिअधिकार । सत इलोक पर वान सब इति प्रथ विस्तार ॥ कौर पाल वानारसी मित्र जुगुल इक चित्त । तिन्ह गरथ भापा कियो बहु विधि छद कवित ॥ सोलह सैं इक्यानवे रितु ग्रीषम दैसाप । सोमवार एकादसी करन छत्र सित पाप ॥ इति सिंदूर प्रकरण सुचि मुक्तावली समाप्त ॥

सख्या ३९ सी. वेदनिर्णय पचासिका, रचयिता—वनारमीदास (आगरा), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ २४, परिमाण (अनुष्टुप) ३४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८६ = १६२९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कालिका प्रसाद, ग्राम—रुस्तमपुर, ढाकघर—राजेपुर, जिला—उझाव (अवध) ।

आदि—अथ वेदनिर्णय पचासिका लिप्यते । जगत विलोचन जगत हित जगतारन जग जान । वदी जग चूडामणि जगनायक जगत प्रधान ॥ नमो रिपभ स्वामी प्रमुप जिन चौबीस महंत । गुरु चरन चित भापौ मुप भापौ वेद विरतत ॥ सर्वैया इकतीसा ॥ प्रथम पुनीत प्रथम मानु जोग वेद जामे ६३ त्रैसठ सिल का महा पुरुष की कथा है । दूजा वेद करमानु जोग जाके गरभ में वरनी अनादि लोकान्त लोक थिति पथा है ॥ चरनानु जोग वेद तीसरो प्रगट जामें मोंप पथ कारण अचार सिधु मथा है ॥ चौथा वेद दरवानु जोग जामें दरव के पट भेद करम उछेद सरवथा है ॥ केवली उक्त वेद अतर गुपत भए

जिनके सपद में समूह रूप हुआ है ॥ भव त्रिगुण युक्तुर्बेद, माम अर्थात् इन्हीं का प्रभाव जगत में हुआ है । बहुत बनारसी तयारि में कर्तुंगे कष्ट तेई समझेगे जिनका मिथ्या हुआ है ॥ अतवासा मूरुप न माम उपदम ईमे उल्ल जान जाने किहि ओर भावु उवा है ॥ कर्त्तु बेद पयासिक्क जिन पानी प बाम । पर अत्रान जान महीं जो जान सो जान ॥ मल्ल नाम तुगादि जिन रूप अनुमुप चारि समो रातम महान में बेद पयार्थ चारि ॥

अंत—परं दुविष विस्तार त्यों पर बरप जयता । पिन रीरै पिन में हीं ज्यों मदमतबहा ॥ त्यों दुहु बारी मीत्र मीन हाम मंभाहा । समविष्टी सज्जन कर्त्तु दुहु मीं हलमहा ॥ १३ ॥ जाति दुहुं विधि हक उपा मनि पपर उहा । उल विहार मंझव सो कहिउ नह नहा ॥ उजत उल परबाह में ज्यों भीर गुणहा ॥ १६ ॥ दुहुं हा अधिर मुमाह है नहिं कर्त्तु अटिहा । उंख भीच हक मम करै कलि कोम पट्टहा ॥ अथ उपर अथ अधो पिति उपल पुषहा । भर हट हाट विहार में बया उपर तहा ॥ १० ॥ पापा हैव सरीर ज्यों नरु भीर उट्टहा ॥ अथ पूरम करि हीह पया पिरी उरु ज्यों हाहा । पुन पान विच पेह ह धह भेदन महा ॥ ग्याम क्रिया निरहाय है जहं मोप महाहा ॥ १८ ॥ बतन मुमाहा मोह में ज्यों राह रदहा ॥ पिति प्रबाज तुऊनो मया गुग ग्याम तुडहा ॥ अथ पर अंतर पर गह मब भीर सुदहा ॥ परम बाह परगट भह सिय हाहु सुदहा ॥ १९ ॥ ग्याम विबाकर उगिया मति किरिल प्रबहा ॥ ई त मत पड विहंदिपा अम तिमिर पट्टहा ॥ २० ॥ साय प्रतारि मंत्रिया दुरग भिदहा ॥ अगि अंगोर हदिपा ज्यों तुल पदहा ॥ २१ ॥ दा० । यह मरुगुह हा हेमनाकरिअ भवही पाडि ॥ कर्त्तु वैदी मोपदी करम कपादि उयादि । २२ । भवपिति जिहम घटि गहं निरम्य पद उपरंग । कहन बनारसि हाम वों मूह न ममुर्त स्म ॥ इति श्री मात्र मार्ग वैदी समाप्तः इति श्री बह निर्णय पंचांगिका समाप्त ॥

विशय—ईम मतानुसार बहों की ध्यात्या । चारों बह, मरुगुर्त नाम निजय, बनारस मिथ्यात पानी, सर्वोद रीरुह रिपा बलीम पान मोल्ल मार्ग बर्चन ॥

सुसवा ४० ए सामुद्रिक, रचयिता—वर्षकराम हीरिन, कागत्र—वैसी, पत्र—३९, आकर—८ X ४ ३/४, पन्दि (प्रति पृष्ठ) १६ परिमाण (अनुपुप) ३५८, रूप—प्राचीन छिन्नि—जागरी, विविध—पं० १८४६ प्रासिग्यान—पं० रामनाथ गुह प्राय—दवा हाकर—महासा, त्रिस—मीतापुर (अथ) ।

आदि—धी गणैपापमम । धी मरुगुनी ज्ञानमह ॥ धी परमागुने मम ॥ अथ मामात्रक लिप्यने ॥ दा० ॥ गुन अरुगुन गयही अम प्रथम विचारि आह जों मदिना जनु भादिने र्थन हाउ की माह ॥ बात्रन उर परान के जान किउ पक रीर । पहिने दुलह चारिहे जा बंधे मिरमौर ॥ मरुगु अंग परान कर्त्तु गुन अरुगुन क भेद । गुन गुप जीवन मान क रच विपना बह । पहिन भावु रिचारि क लह मय लपन देह । अग्यल अंन बनाहके पीउ धिर उरेह ॥ जा गुनुगुन अह बेद गुप वचन गुर्तु द बान । अउ नमा तेई वचन अंन प्रगट निगन ॥

अन—मना न जर्मी निरिय मम गापी दुई एउह ॥ ना अय मना ना बाम में

तिरिया दुप की पानि । विरस किये चिंता बढ़े रस में जी की हानि ॥ ग्यान घटे दरसन किये काया घटे रति केल । भूलि न अमृत धारिये ताहरि विप की वेलि ॥ तरवरि देपि सुहावना छाया बैठि न भूल । विप फूले विपई करेन विप सर वा विप मूल ॥ जिन जानी तिन परि हरी परे जु औगुन दीठि । वात न पूछी फेर मुप सिछहु ढई जु पीठि ॥ धन पौवै धन कारने काया मानुप सुभाइ । गुन मानै नहिं कामिनी तीरा बैठी आइ । परिहरि सकौ न परि हरौ जनि भूला त्रिय भाउ । सीस काटि देउ वैठका चूकै न अपनो डाउ ॥ इति सामोद्रक लछन सपूरन समापता चैत सुदी ३ गुरौठ सवत १८४६ मुकाम नये गांठ लिपत लाला पदम सिंघ ॥ जैसी प्रति देपी तैसी लिपी भूल चूक सच माफ जौ वांचे तिनकौ प्रनामु ॥

विषय—सामुद्रिक ।

सख्या ४० बी सामुद्रिक, रचयिता—वांकेराम दीक्षित, कागज—नया, पत्र—२५, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ५४०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० रमाकांत शुक्ल, ग्राम—पुरवा गरीब दास, डाकघर—गडवारा, जिला प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—सिधि श्री गणेशायनमः श्री नरस्वती गुर भेन्यः ॥ अथ सामुद्रिक लिपते ॥ रिपि वाच ॥ त्रमंगी गनपति सुप दाइक भक्त सहाइक त्रभुवन नाइक जसवता ॥ बहु दुःप विहंडन भुवपति मंडन सच सुख संतन पतिवता ॥ दुति रूप उजागर सोभा सागर देवन नागर सावता ॥ जनकाज सहाइक अहो विनाइक दुष्ण भगाइक भगवंता ॥ अथ सामुद्रक ॥ दोहा ॥ गुन औगुन सच ही भले, प्रथम विचारै आउ । ज्यों सलिता जुलु नाहिनै । कौन काज की नाउ ॥ वाजे जोरि वरात के । किये सवै इक ठौर । पहिले दूलह चाहिजै । जो सिर वाधै मौर ॥

अंत—चित्रकोट पदमावती । लई छिनाई साइ । जानत यह ससार है । कौन त्रियहि हित पाइ ॥ बढ़ा उपद्रह देस मै । त्रिया जु विप की पानि । विरसु करै चिंता बढ़े । रस में जिय की हानि ॥ ग्यानु घटे दरसन किये । काम घटे रस केलि । भूलि न अमृत धारिये । ताहर रस की वेलि ॥ तरवर देपि सुहावने । छाया बैठि न भूलि । विसु फूलै विसु ही फलै । विप सापा विप मूल ॥ जिन जानी तिन परिहरी । परै जु औगुन डीठि । गुन मानै नहिं कामिनी । तिरनी बैठी नीठि ॥ इति सामुद्रिक रिपि विरचितायां अस्त्री पुरिप लछिन सुभा सुभ संपूर्ण समापता सुभ भवतु मंगल ददातु ॥ १ ॥

विषय—सामुद्रिक लक्षण ।

संख्या ४१ मित्र मनोहर, रचयिता—वशीधर कायस्थ (वसीपुर), कागज—देशी, पत्र—१२३, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुष्टुप) ४०५९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचना ऋल—स० १७७४ = १७१७, लिपिकाल—सं० १८५४ = १७९७, प्राप्तिस्थान—वा० राममनोहर विचपुरिया, ग्राम—पुरानी वस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, जिला—जयलपुर (मी. पी.) ।

धादि—श्री महादेव जू श्री गणेश जू श्री मीताराम जू ॥ अथ मित्र मनोहर
 लिप्यते ॥ छप्यते ॥ धनिय अथ बहु एक वधिय जति रचना अति । सखक अष्ट मह अष्ट
 रथिब मानहु अमुत्त यति ॥ न्यान कत्र सत्रि सीस विविध विद्या मुकतन मय । पद अनूप
 सम रूप हीर आरुख इबठ इय ॥ दिख सुदेस सुई देस सम अथम धर्म मणि कौ करहि ।
 कहि बंसीधर बर बचव तेह प्रजा साज राजहि करहि ॥ १ ॥ बोहा ॥ दीनी बित उपदेस
 मी । सखन हपी जू मोहि । भापा हित उपदे सु पह । प्रथ सुगाय को होहि ॥ २ ॥ कथा
 चार बै मुप्य है । बरनी जया विधान । मित्र काम हित भेद पुनि । विगृहु संघ विदान ॥३॥
 मित्र काम पाठि करत । किभै मित्रता काम । मुद्रद भेद हित रथ मी । जामी भेद के
 हाम ॥ ४ ॥ विगृह जाके लुप्य की । जमा जीम त्रिय होय । संधि कहावति सीक करि ।
 विगरी सुपर सोय ॥ ५ ॥

अर्थ—बंशू सैन छिति पाक के । नंदन बपत विसाल । चारि कथा पूरन सुनी ।
 दत्त बित श्रीकाल ॥ ६० ॥ राज सुवन पाई सुमत । संपति पाई बिर । श्रोता अन संपत
 सुमति । सुमत पाइ ही छिम ॥ ६१ ॥ छप्यते ॥ बहदि मित्र सन प्रीति शीत सखन सह
 बाहदि । बहदि धर्म की बैकि मुकत वीरव तर बहदि ॥ बहदि बुप्य दिन मानु बहदि
 संपत समाग लुत । बहदि अयु बहु बर्य बहदि प्रमु संपन अमुत्त ॥ सखने सर्व अगनई
 मय मान महीप महीप मय । कहि बंसीधर पह गृह पुनि मित्र मनोहर नाम मन ॥३६२॥
 इति श्री हितो पदेस राज नीति छात्रे प्रभाव बंसीधर बानी विरचिते मित्र मनोहर धाम
 प्रतिष्ठतं संखि विप्याय वर्ननं अनुर्थम कथाइ इति गु थ स - १८५४ साके १७९९
 कैह - लिप्यतं साका राम परसाद विजावर राज्य ।

विषय—संस्कृत हितोपदेश का पद्यानुवाद । (प्रथ निर्माण काक) । प्रमु के पंचम
 रूप पर मिलकहु वेद पुरान । सप्रह सी पर बाहते संवतु गर्भ प्रमान । पूष मास राम रूप
 श्री गु थ सरस रम चादि । हरि तिथि रवि सुत सुदिन सुभ शीपव कथो सराहि ॥

सख्या ४२ हरिश्चन्द्र कथा, रचयिता—बेनीयकस, कथा—देसी, पत्र—८०
 अकार—६ x ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २० परिमाण (अनुपुप) १००, रूप—प्राचीन
 लिपि—बागरी रचनाकाक—सं० १८३६ = १७७९, लिपिकाल—सं० १८३१ = १८७४ ई०
 प्रतिस्थान—श्री गथाप्रसाद, ग्राम—भर्नीमा चारुधर महसुदाबाद, जिंजा सीतापुर
 (भवच) ।

धादि—श्री गणैसाय मय ॥ श्री हरिश्चंद्र कथा लिप्यते ॥ श्रीपाई प्रथम देव प्रनवीं
 गननायक । गौरिमहेम तनय सबछापक ॥ मी मतिर्मद कथा कस्तु नार्ही ताते प्रमु विनवीं
 छोदि पाहीं । देहु बुकि बंही छोदि चरना । श्री श्री गनपति भव भय हरना ॥ सुमरीं प्रह
 बिहनु भिपुरारी । आते मियहि हुन अय मारी ॥ सरस्वती मी विनवीं छोदी । चरन
 कमल की आसा मोही ॥ बह कनि दूब वसुध भर नागा । तुव चरनन सुमिरहि अनुरागा ।
 काहु कृपा निज सेवक जानी । अहे कछिमी धादि मवाणी ॥

अर्थ—नूप हरिश्चंद्र समान को भयो न बूसर मरुत्स । सवि मुचरित पावन अमित

भाष्यो वेनी वक्स् ॥ इति श्री हरिचन्द्र पुरान समाप्त सुभ मस्तु लिपतं राम सुप दैसाप
वदी तीज संवत् १९३१ वार सुकर ॥

विषय—राजा हरिचन्द्र के सत्य की कथा ।

संख्या ४३. वारहमासी, रचयिता—वेनी माधव, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—
६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुपट्टुप) ३०, रूप—प्राचीन, लिपि—
नागरी, प्राप्तिस्थान—ब्रज वहादुर लाल, प्रतापगढ़ । (अवध)

आदि—श्री गणेशाय नमः । अथ वेनीसाधो की चारह मासी प्रारभः (कार्तिक ।
कातिक किलोल करें सब सखियां राधा विचार करें मन मेरे । माधो चिमाओ आन मिला
मिलाओ नहीं अब प्रान तजू छिन मेरे ॥ हमको छोड चले वेनी माधो राधा विचार करें
मन मेरे ॥ कातिक किलोल करें सब संख्या० ॥

अत—कुआर—कुआर मास निर्मल भये चन्डा गौरी सोवत अपने आंगन मेरे,
सूरदास तव आन मिले हरि सुखी भई राधा मेरे । हमको छाड चले वेनी माधो राधा
विचार करें मन मेरे ॥ १२ ॥ इति श्री वेनी माधो की चारह मासी समाप्त ।

विषय—श्री राधिका जी का चारहो महीने का विरह वर्णन ॥

संख्या ४४. मूलगोसाईं चरित, रचयिता—वेनी माधवदास, कागज—देशी, पत्र—
५४, आकार—६½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुपट्टुप) ४८६, रूप—
प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६८७ = १६३० ई०, लिपिकाल—स० १८४८ =
१७९१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामाधारी पाढे, ग्राम—मरुवा, डाकघर ओवरा, जिला गया ।

आदि—श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ अथ मूल गोसाईं चरित प्रारभ ॥
सोरठा ॥ संतन कहेउ बुझाय मूल चरित पुनि भापिये । अति सट्टेप सोहाय कहीं सुनिय नित
पाठ हित ॥ चरित गोसाईं उदार वरनि सकैं नहिं सहस फनि । हौं मतिमद गंवार किमि
वरनौं तुलसी सुजस ॥ २ ॥ तोटक ॥ ऋषि आदि कवीस्वर ग्यान निधी । अवतरित भये
जनु आपु विधी ॥ सत कोटि वपानेउ राम कथा । तिहुं लोक में वाटेऊ संभु जथा ॥ दस
स्यदन वेद दसाग मय । स्तुति त्रैविधि तिनैउ रानि जय । श्रीराम प्रनव स्तुति तत्व पर ।
निज असनि श्रुतवर देह धर ॥ इमि कीन्ह प्रवध मुनीस जथा । हरि कीन्ह चरित्र पवित्र
तथा ॥

अत—अंत समय हनुमत द्विये तत्व ग्यान को बोध । राम नामही बीज हे सृष्टि
वृच्छ नयग्रोध ॥ ११६ ॥ पर प्रस्थान की शुभ बड़ी आयो निकट विचारि । कहेउ प्रचारि
मुनीस तव आपनि दसा निहारि ॥ ११७ ॥ रामचन्द्र जस वरनि के भयो चहत अब मौन ।
तुलसी के मुप दीजिये अवही तुलसी सोन ॥ ११८ ॥ संथत सोरह से असी असी गंग के
तीर । सावन स्यामा तीज सनि तुलसी तज्यो सरौर ॥ ११९ ॥ मूल गोसाईं चरित नित
पाठ करें जो कोय । गौरी सिव हनुमत कृपा राम परायन होय ॥ १२० ॥ सोरह से सत्तामि
मित नवमी कातिक मास । विरच्यो यहि निज पाठ हित वेनी माधव दास ॥ १२१ ॥
इति श्री वेणी माधव दास कृत मूल गोसाईं चरित समाप्तम् ॥ श्री ग्राण्डिल्य गोत्रोत्पन्न

पंक्ति पावना त्रिपाठी राम रक्ष मणि रामदानेन लक्ष्मणेन च लिखितम् ॥ मिति विजया दशमी संबत् १८४८ ॥ स्युःवासरे ॥

विषय—गौस्वामी तुलसीदास जी का जीवन चरित्र इनके जीवन से संबन्ध रखने वाली अनेक घटनाओं सहित परिवार छोड़े चौपाइ में वर्णित है ।

सदया ४५- मबरम तरंग, रचयिता—बबी प्रबीन कागज—दूरी, पत्र—६७, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २६, परिमाण (अनुच्छेप) १४५७, रूप—नवीन, लिपि—भागीरी, रचनाकाळ—स० १८७८ = १८२१ ई०, लिपिकाळ—स० १९४१ = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कृष्णबिहारी मिश्र, मयागाँव, माटेरु हाठस सरनरु ।

आदि—श्री गौरीदासनाम ॥ अथ मबरम तरंग लिख्यते ॥ दोहा ॥ गणपति गुरु गीता गिरा गंगाधरि मनाइ । बरगत बेनी हीन कवि बंशीधर के पाइ ॥ १ ॥ ममहरन ॥ अमरु कमळ सम कोमल प्रबीन बेनी ममरु रहत निरलत छवि जाळ के । निमु दिन परम प्रकसित बिकोकियनु बंदन अगर रूप वासित विमाल के ॥ सोमित समूह मनि मामिक सिमारे मरा कसगी किरिट महिपालन के मारु क । दरु दरु दुख हरन करन सुत सैधत चरन ही गोमाई बंसीकाळ के ॥ २ ॥

अंत—कवित ॥ जामे सोम कहरि कर्ग न नमबर माया छाया दया संतन को मंतत मुभाबरे । मोह मद मयर मगर मच्छ कच्छ पूर तिनको कछु न चलि सचति कुदाबरे ॥ मुमप समीर है भगत परबीन बेनी बाद बान बिदित सुसंग धित चाबरे । राम नाम बोद्धि करनधार गुर पाइ भव पाराधार में मगन होत बाबरे ॥ ८० ॥ इति श्री मम्महाराजा विराज महाराज मनि श्री नवल राय आशास प्रबीन बेनी बाबपेई कृतै मबरम तरंग नाम ग्रंथ संपूर्ण समाप्त शुभमस्तु ॥ संबत् १८४८ ॥ गद्यबैद निधि शक्ति बाप एक युग माय सुम्बाम । पूरा प्रीता विचम लिपि भी रम तरंग लक्षाम ॥ १९४१ ॥

विषय—बब रमों का वर्णन तथा उनके उदाहरण ।

सदया ४६ प महर पुराण रचयिता—महरि, कागज—साधारण, पत्र—४६, आकार—७ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १० परिमाण (अनुच्छेप) ३५०, रूप—नवीन, लिपि—भागीरी लिपिकाळ—स० १९१२ = १८५३ ई० प्राप्तिस्थान—रामप्रभाद मुरारु, ग्राम—पुरवा विधाम दास दारुपर—परिवाही, जिला—प्रतापगढ़ (अजय) ।

आदि—श्री रामचंद्राय नमः ॥ अथ पापी महर पुराण लिख्यते ॥ बबक रिपीयर महमी हस्ती के आग कई ई ई तेरे आगे विचार कहीं हो मरु को नक्षत्र को मेह को सुकाम को सुकाम को संडेप को कानिक यदि अमायम को रूप करिके ईशाप ताई जोग इपि रोहिनी नक्षत्र में न परसि ती गत पूरा गया जानी जी रोहिनी नक्षत्र में न परसि ता गन पूरा गया जानी । आ रोहिनी नक्षत्र में बरसि ती गरम गन्ध जानिये ॥ १ ॥

अंत—अधिक नाम कथ । मंगल सनीचर बब होइ ती प्राण के पीवा होइ मंगल सनीचर राहु एक राशि है आदि ता प्रजा का पीवा होइ ॥ अम कर्नरी जोग कहरि तारा उई होत हैपिये हर सनीचर होइ बीच म गुरु होइ उपर मंगल होइ ती मूमक जाग कदिण

अथवा पश्चिम दिसा की तरफ सूर्य अस्त होत वेरिआ नीचे मंगल बीच म गुरु उपर शनी-
चर होइ तौ भी मूसल जोग कहिये ।

× × × ×

वस्तु वेचत जौ छींक होइ तौना वेची आगे महग होई ॥ इति भडुर पुरान सपूर्ण ॥
संवत् १९१२ फागुन सुदी ५ लिपा विश्राम दास ॥

विषय—पृ० १ से पृ० ४ तक—भूमिका, रोहिणी नक्षत्र में वरसने या ना वरसने
का फल । कार्तिक सुदी १२ के दिन गरभादि होने के फलाफल, कार्तिक सुदी पंचमी—
कार्तिक फल समाप्त ।

(२) पृ० ५ से पृ० ७ तक—मार्गशीर्ष फल और पौष फल वर्णन ।

(३) ,, ७ से ,, १२ तक—माघ, फाल्गुन, और चैत्र फल ,,

(४) ,, १३ से ,, २८ तक—वैशाख से लेकर आश्विन तक का विचार तथा
ग्रह नक्षत्र वर्णन ।

(५) पृ० २९ से पृ० ४६ तक—वर्षा के लक्षण, होली का विचार, दिवाली का
विचार, रसालरी शाखा, उन्हालरी शाखा का विचार । जेठ अपाढ़ की पहिली वर्षा का
विचार । जेठ मास की प्रथम पड़िया का फल । चैत्र वदी पड़िया का विचार । पौष मास
की संक्रांति का विचार । संक्रांतियों के पृथक् २ फल । तिथिमास क्षय फल । परिवेष्ट
फल । मडलविचार । अधिक मास फल । पवन विचार । छींकादि विचार ।

सख्या ४६ बी. बृहस्पति कांड, रचयिता—भड्डरी, कागज—साधारण, पत्र—
१०, आकार—९ × ४ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुष्टुप) १०२०,
रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८२ = १८२५ ई०, प्राप्तस्थान—प०
रामनिवास तिवारी, ग्राम—परियावाँ, डाकघर परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ बृहस्पतिकाड लिप्यते ॥ मेघ राशिं गुरुं चैव
तक्षको मेघ उच्यते ॥ चैत्र सम्बत्सरो नाम सोपि राजा भविष्यति ॥ १ ॥ बहुतोयं भवे-
न्मेघा सुर्भिक्ष मारोग्य तथा ॥ सर्वाङ्गं समग्रह कृत्या तुलाभि गरं च कारयेत् ॥ श्रावणे
विक्रि यदि गुणो लाभो भवतु ॥ २ ॥ पार्वत्यौ वाच ॥ मेघ राशि यदा बृहस्पति तदा मेघ
वर्षं हि दिन ७२ जेष्ठ वर्षं हि दिन ७ अपाढ़ वर्षं हि दिन १० श्रावण वर्षं हि दिन २२ भाद्र
वर्षं हि दिन १८ आश्विन वर्षं हि दिन १२ कार्तिक वर्षं हि दिन ३ पूर्व सस्त ॥ पश्चिम
महर्घ ॥ उत्तर पीढ़ा ॥ दक्षिण सुर्भिक्ष ॥ अपाढ़ श्रावण छत्र भङ्ग होइ ॥ भो देवी पार्वती
पृच्छति ॥ भोईश्वर मम कथ्य ता बृहस्पति फलम् ॥

अंत—श्रावण शुक्ला सप्तमी, पुन. जो स्वांती जोग । अंमर वायु वहै पुनि, सुखी
होंहिं सब लोग ॥ अमर वायु वहै विनु पानी । तौ निश्चै कै जानी ॥ तुम तौ जैहहु
मालवा हम तीजा वढ़ हार ॥ कूपौ कौ जल सुपहि पुहुमी परी पभार ॥ स्वांती दीपक जौ
वहै खेळु विशाया गाइ ॥ अँसावोलै भड्डरी तरुनिः फल होइ जाइ ॥ बारह मास योज जिति
मरहु ॥ पूस मास अमावरण कै सुधि करहु ॥ पूस अमावस होहि जवही ॥ मूल विशाया
पूरवति तवही ॥

मेदिनि मम्द मम्द फल्गु ॥ अहस्य बहु पीडने ॥

इति शनिश्चर काण्ड समाप्तः ॥ इति श्री बृहस्पति ऋषिः सम्पूर्णं ग्राम मन्त्र ॥
 सैत्र मासे कृष्ण पक्षे तिथी चतुर्थायाँ चन्द्र वासरात्म्य तार्पणं ॥ संबत् १८८२ ॥

विषय—(१) पू० १ से पू० ३२ तक—बृहस्पति ऋषि । बृहस्पति फलः, वृष, मियुन तथा कर्कादि राशियो के सपथ से ।

(२) पू० ३२ से पू० ६७ तक—साठ सम्बारनों के फलों का वर्णन । अर्थात् प्रमथ, विमथ, शुक्ल प्रमोद तथा अंगिरादि नामधारी सम्बारनों के फलों का कथन ।

(३) पू० ६८ से पू० ८१ तक—द्वादश राशि के संबंध से शनिश्चर का फल कथन ।

(४) पू० ९२ से पू० ९३ तक—सूर्यकाण्ड ।

(५) ,, ९६ से ,, ९९ तक—सूर्य काण्ड । शुक्रास्त फल, शुक्रोदय फल, रोहिणी फल ।

(६) पू० ९९ से पू० १०० तक—भाद्रा प्रवेश फल कृत्तिकादि नाक्षी फल ।

सक्या ४६ स्त्री—सगुनाबली, रचयिता—महदरी ऋगत्र—देसी, पत्र—१९, आकार—१० × ६ इंच, वंश (प्रति घट) २५, परिमाण (अनुपट्टय) ३८०, रूप—मामूकी, तिरि—मागरी, तिरिकाक—न० १९२३ = १८९८ इंच, प्राप्तिस्थान—व० शिवकुमार, ग्राम—गोपालपुर, बाकपर—रुक्मीपुर, जिला—एरी (अजमेर) ।

भाद्रि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ महदृषी कृत भगुना बसी लिप्यते प्रथम छीक विचार ॥ श्री० ॥ प्रथमदि भाषी छीक विचारदि । सकल सुमानुष मति अनुमारदि ॥ छीक पीठ की कुलाड उचारे । बायें करत मथे संवारे ॥ संमुप छीक छराई भाप । छीक दाहिनी मुख बिनाथे ॥ छीकी छीक कहे जय कारी । मीची छीक होय भय मारी ॥ अपनी छीक महा दुखदाई । जैसे छीक विचारो भाई ॥ छीक सूर्यनी एत करि कीन्ही सरही घांस कही फल हीमी ॥ बाई छीकी पीठ की छीक कही सुपकार नीची संमुप दाहिनी अपनी छीक असार ॥ सगुन सोरठ दक्षिन पगते स्वान दक्षिन अंग पुत्रादाई । नैत रूप कर स्वान रिह टहि नै सुप करे ॥ दो० स्वान दाहिने पांचतें यमै पात्र नित्र सीस । राग्य काम अठ उदर सुप कंड गुहा घन हीस ॥ इदय कंध अदर अधिक नाक महा सुप कर । पीठ मुचाहन काम हथे ॥ दोही सुपत्र अवार ॥ दो० । जो हन अगन स्वान पने स्वात्र पग बाम यो । ती फल अष्टम बयान कात्र व कीन्ही अथ सगुन ॥

अंत—अथ चारथ विहरी—

अमार = अशुभ

वृष = पसुली

पत्रे = पत्रुवार

रायभ = गद्दा

सतार = पिरई

२०

गीश्वर = निषार

इदिया = चिरई

सीगा = होमरी

कापी = कोड़ी

बोरण करे = दुबनाक बरुथे

उपल = विनोरी
 रिप = नक्षत्र
 तूर = अवाज
 महार्गी = महगा
 वधावणा = वधाई
 गर्भ सहित = वादल होना
 अवसरिया = हुता
 कोरो = झूरा
 सगला = सब
 गोय = छिपे
 वियाल = हवा
 पाल = मेंढ
 पायल = मंडल
 नील धंस = नीलकठ
 सुसा = खरगोश
 रूपारेलतो = चिरई है
 सागोणी = चिरई विपेस
 मलहारी = चिरई विपेस
 वायस = पक्षी मात्र
 सहुतो = सय
 धडेकीर्याँ = गर्जने से
 पेर्ज = समी
 पण = लेकिन
 प्रथम = पढ़िवा
 अपाढ़ = पूर्वापाढ
 पिरजा = प्रजा
 दुर्भिप = काल
 सुकै = सुपा
 साप = समय
 झमौनी = चमक
 धुर = वदी
 धामधामो = जोर से
 कोर वरी = कहुँ कहुँ

तूर = वाजा
 माह = मपा
 मातसी = अमावस
 औस = अवस्य
 गभ = गर्भ
 ववी = वोना
 झल = जवर
 चाक चहडे = हेजा होय
 वर्ती वीती = होय
 स्याला = जाड़ा
 ऊध्या = गरमी से
 ऊभी = पडी
 सूवी = अशुभ
 खी खांडो = सूर्य ग्रहण
 पूरो = होय
 अदद = अद्रा
 पूडर = पीछे
 चौपदना = चौपाया
 वापदी = गरीवनी
 पाती = कुवार वदी १
 अैलों = पाली
 जोवारी = जिस वार को
 पा लै = ठेपै
 करती = सक्राती
 रस कुसुंभ = गुड
 कति = कृतिका
 सीठ = छुआ
 कोकको = नेवता
 गुरहसो = चिरई
 ऊभै = उसी में
 छावकी = वीस्तुइया
 कर कांन्या = गीर गिदान
 मोधा = वस्तुइया

विषय—शरीर लक्षण, छोक, पशु पक्षियों की बोली आदि से शुभ अशुभ वर्णन

सक्या ४६ डी सकुनाबकी, रचयिता—भद्वरी, कागज—देसी, पत्र—१०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ४६, परिमाण (अनुच्छेप) २७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १९२८=१८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामदत्त तूबे, ग्राम—मुबारकपुर, बाक्यर—कहरपुर, विद्या—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भद्वरी कृत सकुनाबकी लिप्यते ॥ अथ प्रथम छींक विचार ॥ श्री० ॥ प्रथमहिं भार्यी छींक विचारहिं । सकल शुभाशुभ मति अनुसारहिं ॥ छींक पीठ की कुसल उचारै । बाहें कारज सबै सुचारै छींक दाहिनी दृष्य विनासै ॥ जैसी छींक करे जप करी । नीची छींक होय भय करी ॥ अपनी छींक महा बुलवाई । जैसे छींक विचारै माई ॥ छींक सँयनी × × × ×

अंत—श्री० ॥ विहर्ष पीठ पड़े सुप पावै परे कोप प्रिय बंधु मिलावै । कठिके परे वस्तु बहु रंग । गुहा परे मित्र मिलै अमंगल जुगल जाँच पर भयन बौ परइ । धनगज सकल सौभार्य भरइ । परे जाँच नर होय निरोगी । पाँच परे लज जीव विवोगी । या बिधि पछी सरौठ विचारत बहै महुखिया आतिथ सारा ॥ इति भद्वरी कृत सकुनाबकी समाप्त लिप्यते हरदोई निवासी पंडित शासाराम संवत् १९२८ वि०

विषय—छींक, अंग फरकने, १२ मासों के विचार, आदि के शुभाशुभ फल वर्णन ।

सक्या ४६ ई सकुनाबकी, रचयिता—भद्वरी सहदेव, कागज—साधारण, पत्र—१८, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुच्छेप) २३०, रूप—नवीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ पांडे देवमास्टर, प्राइमरी स्कूल, ग्राम—कुरही, बाक्यर—जीठवारा, विद्या—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भद्वर कृत उद्योतिप लिप्यते ॥

सकुनाबकी विचार

प्रथमहिं भार्यी छींक विचार । सकल शुभाशुभ मति अनुसारा ॥ छींक पीठ की सकुनाब उचारै । बाहें कारज सबै सँभारै ॥ सन्मुख छींक उदाई भावै । छींक दाहिनी दृष्य विनासै ॥ जैसी छींक करे जे करी । नीची छींक होय भय करी ॥ अपनी छींक महा सुप दाई । ऐसे छींक विचारै माई ॥ छींक सँयनी छसकर लीन्ही । सररी पाँस करी फल हीनी ॥

अंत—छिपककी और निरमित विचार—

॥ अंग फल ॥

द्वार पे राज्य बदावै भूर । ई ककार देख्यहिं पूर ॥ नासा मोंहि मुदाबदि देई । मुखमपुरो भोजन नित सेई ॥ कंठ मिलावै प्रिय की सदाई । कर्षे पड़े विजय दरसाई ॥ काम और सुगल भुजाइ । गोपा गिरत होइ धन काइ ॥

भनै भगवत पिंग लोचन । ललित सौँहै कृपा कोर हेच्यो विरदैत उचैकर को ॥ पवन को पूत कपि कुल पुरुहुत सदा समर सुपूत वढौ दूत रघुवर को ।

अंत ॥११॥--रोमावली वर्णन ॥ लहरि ललित यों कलान सों कलित अति निंदरत सोभा स्वच्छ सोभा सूत की ॥ चूम्यो पव मान मुप पावन मो प्यार करि देये द्वय मालिका मिहात पुरूहुत की ॥ भनै भगवंत कहा ओर्ज की जुगुति जोति भान मान कैसी प्रभु पद नेह नून की ॥ रापै जन राजी कपितन मे विराजी वह वढौ सुभ म्जाजी रोम राजी राम दूत की ॥ इति भगवत राय कृत हनुमान जी के सुदर कांड के और नय म्पि के फुट कर कविता संपूर्ण सुभ मस्तु सवव १९३० चैत्र शुक्ला द्वादसी ॥ श्री राम जी की जे । हनुमान वाला की जै ॥

विषय—हनुमान जी के ५२ कवित जिनमें उनकी वीरता का वर्णन है ॥

संख्या ४६ बी. हनुमत पचासा, रचयिता—भगवत कवि, कागज—सामान्य, पत्र—२५, आकार—८ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, परिमाण (अनुष्टुप) १५०, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प्रधान जवाहिर लाल पेशकार, चरखारी दरार ।

आदि—अथ हनुमान जू काँ हनुमत पचासा भगुंत कवि कृत लिप्यते कवित्त—सुवरन गिर सौं मरीर प्रभा नित्त तामें छल भलँ अग रग वाल दिवाकर काँ । टनुज गहन वन टहन अमान मानों तेज सौं विराजँ अवतार एक हर काँ । भनै भगवंत पिंग लोचन ललित कृपा कोर सों कलित विरदैत ऊंचे कर काँ । पवन काँ पूत कार्य कुल पुरहुत सदा समर सपूत वढौ दूत रघुवर काँ ।

अंत—इति श्री हनुमत पचासा भगुत कवि कृत मपूर्ण समाप्त सुभ संवत चैत्र वदि ११ भाँमे स० १९५२ गत मुकाम महाराज नगर चरखारी जो कोठ वांचै सुनिं तार्का जै जै श्री राम जी की जै जै श्री लछमन जी की जै जै श्री भरत सत्रहन जी की जै जै श्री हनुमान जी की चौकी नवीस हीरालाल को पहुँचै ।

संख्या ५०. नागर सभा, रचयिता—भागवत, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—६ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ०४, परिमाण (अनुष्टुप) ३०८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल स० १९३२ = १८७५, प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम, ग्राम—दीनापुर संगीत सत्त, ढाकघर—गोला गोकर्णनाथ, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नागर सभा अथ लिप्यते ॥ होली आमद नागर ॥ नागर आता है आज वड़ी सज धज को बनाये । कुंडल कान विच सेली अग भभूत रमाये । काधे कावर हाय में तौंवी डडुआ सीस सुहाये । सव गुन में आगर छवि सुदर दामिनि देपि लजाये ॥ वन जवहीं सय काम तुम्हारे गोविंद के गुन गाये ॥ दोहरा ॥ सुमिरैं गनपत सारदा गुरु गोविंद महेश । वर मागी तुम मे यही दाया करौ हमेश ॥ पैया पर कर जोरि कै चरनन सीस नवाय । कहीं सिपैरा में नया भगवत आज्ञा पाय ॥ सैर में खूब दिखाऊ । तेरी जो मरजी पाऊँ ॥ सवाल पहला सौंटागर का नागर से । दोहरा में ॥ जोगी हो किस देस के कौन तुम्हारा नाम । छाड़ि देश परदेश में आये हो

किस काम ॥ जबाब नागर का ॥ सुन भागर नागर मेरा नाम जगत मसहूर । देना हमारा
कामरू जातू से मरपूर ॥ सबाळ सौदागर ॥ जोगी कुछ देना नहीं सीखा तुमने जोग ।
दुनिया में छाकों पड़े हैं जातू गर जोग ॥ जबाब नागर का ॥ सौदागर तू क्या करे
किधर है ठेरा क्यान । क्या समझा तू दूनी मुझ इतना रे नादान ॥

अंत—अंतर पढ़के जिसाना मोती का । बीच करे बैदाई बंगा करे लुदाई ॥ बीना
मोती का ब कहना । छंद ॥ छे बरु अपने इस को पागर मुझको साथ । बेरी हूँ विन दाम की
विभी तुम्हारे हाथ ॥ जिभी तुम्हारे हाथ संग में छे बरु अपने मुझको । माक मुक भ्रवार
समी कुछ हीना मीने तुझको ॥ गुन में जागर पकू बहाई है तेरी सुंदर नारी । गुरु गोविंद से
से करके मुझको अपनी भी घरबारी ॥ दुमरी जबाबी सुंदर ॥ इस भगरी से काम नहीं है ।
कास बतन को जाना है दुनियाँ हीसत जोग कुटुंब पर ग्राहक जी भटकना है । दिख मिरु के
बले जोगन से फेर यहाँ नहि आना है भगवत भाठ पहर ना भूके हरि को मुँह दिखलाना
है ॥ दोहरा ॥ कहि कर चळना नागर का भीर पडुंचना अपने देस कामरू में ॥ आता हूँ मी
देस को कर सबको प्रलाम । भगवत के परताप से दुआ हमारा काम ॥ गजक मुबारिक बादा ॥
बाम दुनिया में होय बुरु बुळ भीर गुरु की शारी । बागवान देने आता है मुबारिक बादा ॥
मिसल कुछ क्यों न रहे जोग लुभी से लनेदा । बागू आरुम की मर मिर से हुई आबादी ॥
आत्र कळ लिखर के भाविंद सबा आरुम में । गुंजको गुळ को नये मिर से हुई शारी ॥
कसरते बीस से हर गुळ ने किया बस कि हुकुम ॥ मिळ गया सरी गुलिस्ता को जत
आजायी ॥ किस्से सुंदरो नागर जो कहा लुभा मीने सुनके सब दिख में करे अपने निहायत
शारी इति श्री नागर समा संपूर्णम् क्लिया बार छाळ कर ठाळ बासा संवत् १९३२ वि०
श्वेद मास दसहरा दृष्ट पक्षे ॥ श्री राम जी ॥

वियव—नागर का कामरू देना से आकर बंगाळ में पडुंचना भीर वहाँ पर एक
सौदागर का मिलना उसने बार्तास्थप करना मोती का समाप्तर पाना, उसपर आसिक होना,
उससे मिलने के सिधे लोत्र करना, मोती का मिलना, एक दूसर पर जातू करना, मोती का
हारना, आदि फिर मोती को छकर नागर का अपने इस जाने का वर्णन ॥

संख्या ५१ ए. भागवत चरित्र, रचयिता—भागवतदास कागत्र—साधारण,
पत्र—२५६, आकार—१३ × ६६ इंच पक्ति (मति प्रुत्) १४ परिमाण (अनुपुप)
१०७५२, रूप—बहीन, छिपि नागरी, रचनाकाल—सं० १८९३ = १७०९, लिपिकाल—
सं० १८९४ = १७०६ ई०, प्रासिस्थान—राजा अजयेश सिंह, कास्टाकोकर, सिम्प—प्रतापगढ़
(अवध) ।

आदि—श्री भते रामानुजायनमः ॥ अथ भागवत चरित्र लिख्यते ॥ श्लोक ॥
स्यामा बदाचमर बिंदु विस्त्राम नैत्रं बभूव पुष्य सद्ग शोधर पामि पार्द ॥ सीता
महाव मुक्तिं प्रुव चाप बाणे, रामे नमामि सिर सारमणीय वेपं ॥१॥ × ×
छपी—अथ अथ अथ जगदीश, जयति श्री पति सुल सागर ।
अथ मुकुंद छवि धाम, राम रघुपति अति नागर ॥

जय श्रुतीश भव इंश, जयति गणपति मिधि दायक ।
जय नारद सनकादि, सारदा हरि गुण गायक ॥
जय भाग्यकार त्रेलोस्य गुरु, श्री रामानुज धरनिधर ।
भागवत दास्य पद कज रज, चदे मिर धरि जोरि कर ॥१॥

अंत—श्री हरिहर जन गुरु हृदय, पावन विसद अकास ।
रवि मणि सम तहँ नित लसै, चरित भागवत दास ॥
कामिहि नै त्रिय, धनु क्रपटि, पितु मातिहि लघु वाल ।
इमि विह लागहि मोहि नित, हरि गुरु सत कृपाल ॥

इति श्री भागवत चरित्रे पवित्रे हरिजन मित्रे चतुर्थं व्यूहे सुचानिका वर्गनोनाम
अष्टदशाध्यायः ॥ १८ ॥ सपूर्णममम मस्तू सम्भवत् ॥

प्रथम व्यूह

(१) श्री रामनाम महात्म वर्णन । (२) हरिचरण तथा सत्सग का प्रभाव
वर्णन । (३) ग्रथकार का गुरु से कथा सुनना और कथा सुनने का स्थानः—

तीरथ राज प्रयाग अति पावन । पाप तिमिर कह रवि दुख दावन ॥
अथ पट पुष्ट जीव फसि लीन्हे । अट पट फट्टे न कोटिहु कीन्हे ।
दरजी पूव माधव गति वरनी । कतरत सग मति ब्रह्म तरनी ॥
तिथि थल गुरु यह कथा रसाला । भौंहि सुवाई करि प्रति पाला ॥
गूढ़ तत्त्व वरनी सिंसु ताते । समुझि परी कछु गुरु करु नाते ॥
भापावद करा करि सोधू । मोरे मन जिहि होय प्रबोधू ॥
श्री गुरु पद पा थोज मनाई । वरनी भक्ति जन्म चरिताई ॥

भक्ति का जन्म वर्णन, ग्रंथ निर्माण काल तथा ग्रंथ प्रकाशन स्थानः—

अष्टादस सै तिरसठ समत । करौ कथा हरिजन जस रंभन ॥
कार्तिक शुक्ल पक्ष बुधवारा । नौमी तिथि सुभ जोग वदारा ॥
जिहि दिन सत जुग कर अवतारा । तिथि दिन ग्रथ प्रगट संसारा ॥
कृष्ण जन्म धरनी सुचि जानी । नाम मधुपुरी वेद वखानी ॥
त्यहि पुर मध्य कथा विस्तारी । निरखत जाहि मिटहि अघगारी ॥

भागवत चरित्र की महिमा ।

(४) ईश्वर के अवतारों का सूक्ष्म वर्णन । (५) नमुच्य असुर वध वर्णन ।
(६) शकराचार्य जी तथा उनके अद्वैत मत वर्णन । (७) श्री रामानुज महाराज जी का
जीवन चरित्र वर्णन । (८) कृष्णदास तथा उनके शिष्यों, पृथ्वीराज तथा द्विज वैजनाथ
आदि की कथा । (९) नाभा तथा तुलसी मेलाप वर्णन । (१०) नारायण की काम पर
विजय । (११) अर्जुन गर्भ मोचन वर्णन । (१२) प्रेम लक्षण भक्ति वर्णन । (१३) कुल

देखर प्रेम वर्णन । (१४) भगवत शंकर संवाधान्तर्गत भवय वर्णन । (१५) राम जन्म स्वीका वर्णन । (१६) रामचन्द्र जी की बाल मीठा । (१७) राम की बाल स्त्रीका गेद लेखना, पतंग उड़ाना और धनुष संचालनादि । (१८) राम चरित्र वर्णन, शिकार, धनुष भंग से लकर रावण-वध संक्षेप में वर्णन । अन्तर्गत श्री समाप्ति, सेलक काल वर्णन संबन्ध १८९३ लिखा चतुर्विंशत पाँच गीत ब्राह्मण प्रयाग जी में ।

द्वितीय प्यूह

(१-२) नरसिंह पुराण के मतानुसार प्रह्लाद-चरित्र वर्णन हरिण कल्प के दाप तथा राक्षस होने और प्रह्लाद के जन्म तथा राम भक्ति की कथा । प्रह्लाद के कष्टों, राक्षस के वध और नृसिंह जी के जीतार का वर्णन । इस कथा के पढ़ने का फल । (३) गुह भक्ति, भक्ति के प्रकार और गुह द्वारा उसमें सन्नद्ध होने के उपाय । (४) प्रपन्न चरित्र प्रपन्न के दो प्रकार इस और भारतके वर्णन उन दोनों के कथन, व्याख्या की छठे से नैमिल चरित्र वर्णन, नैमिल के लिये मगधम का युद्ध करना और नैमिल के पित्त में भक्ति का माध बनना । (५) मीरा चरित्र । उसका विवाह, भक्ति छोकाचार में अनक्ति, विपणा, पति पितु त्याग तथा हरि अनुरागा का वर्णन । (६) पद्य-कल्प के चरित्र, मद्र गृहि वर्णन । (७) देवदुती कर्म विवाह तथा प्रेम और उपत्री संतति का विस्तार-इति अख्यान । (८) कपम देव तथा उनके तीस पुत्रों का वर्णन और जनक तथा योगिराज के ध्यात्र से मद्र तथा भाषादि निरूपण । (९-१०) भृष जी की जीवनी । उसकी भक्ति, नारायण जी का उपदेश, उमकी ज्ञान गरिमा तथा परमपद्मादि वर्णन । (११) करमैठी, परछाराम की पुत्री का चरित्र, उसके वैराग्य तथा भक्ति का वर्णन । (१२-१३) नरसी भक्त का चरित्र, उसके शिष्यों के दर्शन और भक्ति द्वारा वर प्राप्ति हुंहीकेलन, कम्पा तथा पुत्र के विवाहों की कर्तव्य का वर्णन । (१४) निम्बार्क तथा उनके सम्प्रदाय का वर्णन । भक्ति के प्रभाव से देवी की शिखा देकर लनेक मौस मद्रियों को अपने सम्प्रदाय की कंठी पहिनाकर उक्त पापाचार से उनको हटाना । (१५) पद्मावती जन्ममहात्म्य वर्णन । (१६) विज हरि भक्ति का चरित्र, हरि भक्त का भक्ति में लीन होना और पुरवासियों के अनुरोध से निज पत्नी को मुक्ताने के लिये समुद्रास जाना, मार्ग में उसका चोरो द्वारा मारा जाना और पत्नी की भक्ति के प्रभाव से भगवान का आकर चोरो को निषन कर ब्राह्मण को जीवित कर वर देने को कहना । उसका चोरो को जीवित कर उनको साधु बनवाना । (१७) जन माधव का चरित्र, ईश्वर की उन पर कृपा माधव की भक्ति, बहुकारी पुत्रारियों के अनादर करने पर भगवान का उन पर क्रोध और पुत्रारियों के मत्सर का भंग होना । माधव की कान्ती में शाकाय करने पर विजय, भगवान और माधव का संग । माधव का कई स्त्रियों को उपदेश और परमगति । (१८) गीत गोविन्द के रचयिता कवि जयदेव जी का चरित्र वर्णन । उनके उपरान्त दीय बनाने का वर्णन । पद्मावती के साथ विवाह । एक राजा द्वारा उनका

त्राण और उसी राजा द्वारा उनकी आराधना । भक्ति भाव के प्रभाव से अपनी मृतक पत्नी इत्यादि का पुनर्जीवित करना ।

तृतीय व्यूह ।

(१) वसुदेव विवाह, दोनों का कस के वन्दीगृह में निवास, बालकों का कस द्वारा क्रमशः वध—हरिजन्म । (२) कृष्ण का गोकुल में जाना, पतना वध, कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन । (३) नद गोपादि सहित कृष्ण का वृन्दावन जाना । बत्सासुर, बकासुर, अधासुर, आदि राक्षसों का वध । चतुरानन मोह भग । धेनुक का वध । नाग नायन । प्रलव वध । चीर हरण लीला । याज्ञिक द्विज-पत्नियों का कृष्णप्रेम । गोवर्धन पूजन और इन्द्र का गर्व प्रहार । (४) नद का कृष्ण द्वारा वरण पाय से मुक्त होना । गोपियों के दृढ़ कृष्णानुराग तथा राम रचना वर्णन । कृष्ण और गोपियों के सयोग तथा वियोग का वर्णन । नद का सर्प से बचाना और उसका विधाधर रूप होकर अपने शाप का वर्णन । वृषभासुर तथा केशीवध । (५) अक्रूर वृन्दावन गमन, उनका कंस का सदेश सुनाना और कृष्णादि द्वारा नद का मथुरा गमन । स्वफल्क सुत को हरि का चतुर्भुज रूप से दर्शन देना । उसकी स्तुति । मथुरा वामियों की कृष्ण में श्रद्धा । रजक-वध । कृष्ण का सुदामा के घर जाकर उसमें पूजित होना । कुब्जा को सौन्दर्य प्रदान । धनुष भग । (६) कृष्ण का मल्लयुद्ध । चाणूरदि वध । कंस-वध । देवकी वसुदेव वध मुक्ति । कृष्ण के विद्याध्ययन और दक्षिण में मृतक पुत्रों के ला देने का वर्णन । (७) गोपी उद्भव संवाद । हरि हलधर तथा उद्भव का अक्रूर ग्रह गमन । अक्रूर द्वारा उनकी पूजा तथा स्तुति । (८) कृष्ण जरासंध युद्ध । काल्यवन और मुचरद की कथा । कृष्ण के अनेक विवाह । (९) कृष्ण रुक्मिणी का विवाह । (१०) नारद तथा सुदामा जी की कथा । (११) माधव सप्रदाय का विस्तृत वर्णन । (१२) अवरीष की कथा, दुर्वासा गर्भ मोचन अवरीष की भगवान के चक्र द्वारा रक्षा होना । दुर्वासा का क्षमा याचना करना । (१३) रामानंद के सप्रदाय का वर्णन । आचार्यों का गौण तथा कवीरदास विशेष वर्णन । (१४) पीपा भक्त का वर्णन । (१५) रैदास भक्त का वर्णन । (१६) गज मोक्ष वर्णन । (१७) धनुष भग, श्री परशुराम क्रोध वर्णन । (१८) श्री रामादि चारों भाइयों का विवाह वर्णन, इस अध्याय के लिखने का समय सम्वत् १८६४ लिखा चरणदास पाँडे गौड़ ब्राह्मण प्रयाग जी में ।

चतुर्थ व्यूह ।

(१) परशुराम का धनुष बाण छोड़कर वन को जाना और भीष्म को ज्ञान सम्बोध करना । भीष्म का महाभारत पश्चात् धर्मपुत्र को उपदेश देना । वैशम्पायन तथा जन्मेजय सवादान्तर्गत धर्म पुत्र मोह वर्णन । (२) भीष्म पितामह का धर्म

पुत्र के अति मोह पर गीतमी की कथा सुनाया और उसके अन्तर्गत कर्म की गति को समझाया । (३) सुदर्शानोपाख्यान के अन्तर्गत गृही द्वारा मृत्यु के अतिक्रम का वर्णन । आतिथ्य सरकार की महिमा । (४) एक अनुसामनान्तर्गत भागवत धर्म का वर्णन तथा मेघानी की कथा । (५) सिद्ध उमा सबाद् । तुलसी महात्म्य वर्णन । (६) जे मुनि तथा जनमेजय सबाद् के अन्तर्गत श्री मीन्य पितामह की अनुपम मूर्तु । (७) श्री तुलसी के व्यवहार लेने, उनके अमृत प्रेम से जन्म लेने, तुलसी का भादि शक्ति होने तथा उसके पूजन का फल । (८) तुलसी के कृष्ण में और बालेश्वर से उसके विवाह होने का चरित्र वर्णन । तुलसी का महात्म्य । वृंदापतिप्रद भंग—शाकंभर-वध । वृंदा का हरि को अमिताप । (९) 'राम से अधिक राम कर पाता' इस कथन को हनुमान जी की कथा सुनाकर शिवजी का पार्वती को समझाना । हनुमान का गर्भ प्रवेश उनके जन्म तथा चरित्र का वर्णन । उनकी भगवत्प्रकृति और रामसेवा का कथन । हनुमान जी की महिमा । (१०) श्री कृष्ण स्वामी के अद्वैता ईत बाद मत का वर्णन उनके सम्प्रदाय के प्रसिद्ध साधु ज्ञानदत्त का वेद पढ़ाया । प्रियोचन मन्त्र की कथा । (११) रामदेव की विषया कथा से रामदेव का जन्म लेना । उनके भागवत होने और बाष्पापन में अपने बाल हठ तथा भक्ति के द्वारा भगवान को प्यपानादि करान का वर्णन और अनेक अन्य विस्मय सूचक कार्यों का वर्णन । (१२) बल्लभ स्वामी, विद्वल स्वामी, कृष्णराम और सुरदासादि का वर्णन, विद्वल के पुत्रों का वर्णन (सत्ता चरित्र वर्णन) । (१३) भगवद्भक्ति संपन्न, नृप शृण्डी राज कुस बधू रत्नावती और उसकी भगवान के पावन पदों में अपूर्व भक्ति तथा साधु सेवादि वर्णन । राजा का सिंह को उसके मारने क लिये छोड़ा गया था । उसका रामी की भक्ति बलकर मुक्ति रूप होना । (१४) सत समुदाय वर्णन । (१५) तुलसी दास जी के प्रदनों का उत्तर देते हुए नामादास जी का कवि निरूपण करना । (१६) कवि चरित्र वर्णन । (१७) तुलसी दास जी का चरित्र वर्णन । (१८) नामादास जी का चरित्र वर्णन । प्रेम की सूची का संक्षिप्त वर्णन । हरिपाम तीर्थादि वर्णन । प्रेम के पठन पाठन का फल । भक्ति विमुख लोगों को मर्क पातवाप जी मर्क में भोगनी पड़ती है ।

संख्या ५१ की मन्त्रमाला रचयिता—भागवतदास कागज—साधारण, पत्र—
१९ आकार—१० × ४३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १ परिमाण (अनुपुत्र) २६०, रूप—
प्राचीन फटी लिपि—मागरी, लिपिरूप—सं० १८९६ = १८४२ ई०, प्रातिपद्य—राजपुर
महाद्वार सिंह, ग्राम—दार्जिली, बाक्य—परिधार्वा, लिप्य—प्रतापगढ़ ।

आदि—वार-वार बंदन करी, नामा आमा ऐक । काइपी गामा वेद को, मन्त्र माल
मुप ईन ॥ ७ ॥ मन्त्र माल त्रिन त्रिन पदी, सुनी प्रबन मन हाय । से मब भे अग
होईगी, हरि अनुचर मुप पाय ॥ ८ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ विष्णु न मानिय संत से, स्मरि सेवरी इपपचादि । ऊँचे फल

श्री पति भग्ने, जग्य सजी द्विज वादि ॥ १३ ॥ जन भगवत गुण साधु के, जो सुनि मन
हरखाइ । सुजसु लोक सुप सपदा, नित नूतन अधिकाइ ॥ १४ ॥ इति श्री भागवत
चरित्रे भक्त माल महारामे भागवतदास कृते तृतीयोध्यायः ॥३॥ शुभ मस्तु ॥ संवत् १८९९ ॥

संख्या ५२. राम सावित्री, रचयिता—भागवतदास, कागज—देशी, पत्र—२३,
आकार—९ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुष्टुप) ११९, रूप—
साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२१ = १८६४ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर
नैपाल सिंह, ग्राम—भडली, ढाकघर—तालाब वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम सावित्री श्री भगवः दास कृत लिप्यते ॥
दोहा ॥ श्रीभारायण चरण अस्मद गुरु परजंत । श्री रामानुज आदि ढं वदी श्री गुरु
सत ॥ १ ॥ सावित्री श्री रामकी पावित्री श्रुति मूल । विरची भगवत दास सुनि * * *
* * * मूल भव सूल ॥ २ ॥ ब्रह्माते नारद सुनी वानी घर से च्याम । कही वसिष्ठ
हनुमत ते जग जिमि सुर्य प्रकास ॥ ३ ॥

अंत—रामहि पुत्र समर्पि मिया किय भूमि प्रवेशा । अपुत वर्ष करि राम राज्य
पुत्रन उपदेसा ॥ अमित जज्ञ तप दान धर्म के विप्र लड़ाये । प्रजा वधु पुर सहित हरपि
निज लोक मिधाये । यह श्री राम चरित्र प्रेम जुत सुनै जो गावै । सर्व पाप मिटि जाहि
चारि फल सहजहि पावै ॥ विरची भगवत दास राम सावित्री येहा । सुनै पढ़ हू वार
लहे श्री राम सनेहा ॥ ४३ ॥ इति श्री भगवत दास कृत (सावित्री) राम सावित्री संपूर्णम् ॥
संवत् १९०१ ॥ मारके १७८६ ॥ फाल्गुन मासे सुकल पछे तियाँ अष्टम्या रवि वासरे ॥
मैं विलोकि प्रति पर लिपेठ जानुठ नहि कष्ट भेव । सुध असुद्ध विचारि कै कवि जन
दोष न देव ॥ ०००० (समाप्तम्)

विषय—राम चरित मानसके आधार पर राम, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न आदि की
जन्म तिथि, मरण तिथि तथा वनवास तिथि व लव कुश व जानकी आदि के कार्य
आदि की तिथियाँ ।

संख्या ५३ प. अक्षर शब्द प्रपाटिका, रचयिता—भागवत शरण पांडेय (पुरवा
हरदत्तमिश्र), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—९ ३/४ × ६ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १३,
परिमाण (अनुष्टुप) ८१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प रामनाथ पांडेय,
हेड मास्टर प्राइमरी स्कूल, ग्राम—कुरही, ढाकघर—जिठवारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—अथ अक्षर शब्द प्रपाटिका प्रारंभः ॥ का कलि कालहु मैं कलकी अचतार
कला घरते । खा खल खडित खड नवो पट कर्म पड़ाक्षर को घरते ॥ गा गणि ज्ञान गणेश
गर्न गति ज्ञान गर्न परमेश्वर को । घा घर ये वर भीतर ध्यान धरै घनस्याम छटा रघुनंदन
को ॥ ना नैठ नद रहै भगवंत अनडित रंजन सतन को ॥१॥

अंत—दोहाः—अक्षर भाग प्रपाटिका, पढ़ै सुनै मन लाय । सकल पदारथ परम पद
सत्य देहिं रघुराय ॥ भाषा भणित अनेक गुण अक्षर उपमा जोय । भगवत शरण नवाय शिर
क्षमहुँ चूक मव कोय ॥ इति श्री भगवच्छरण कृत अक्षर भाग प्रपाटिका संपूर्णम् ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—सङ्घों के संघर्ष से उपदेश—कथन ॥

(२) पृ० ६ से पृ० ८ तक—अंधकार परिचयः—

दक्षिण दिशा में जाके तीरथ प्रयागराज पर दश कोम की प्रमाण बतलाई । उधर दिशा में मुत्सरी राम श्रीराधाट, राम कमिराम संतजन मन भाई ॥ तीरथ कोम परिचय दिशा में रुधमजपुर परब पचास कोम काशी जी गनार्थ । राजपुर मध्य दक्षिण मिथ पुरवा में संतजन निवास साईं बास मन गाई ॥ दादा ॥ राम प्रदेस राम देस एहि है प्रतापगढ़ नाम । अनिक पनिक बर बन्ध जई चारिबर्न कमिराम ॥ पाँडे चोचाराज के मुठ शये गोविन्द । गजजन मन रंजन मुमग निज कुठ सर भरविन्द ॥ चरियुत्र तिनके भये अति बरु शीम विनास । पहिली में भगवत शरण, द्वितीय रामगोपाल । रामभरोसे मुठ गृतीब चौप नारायण नाम ॥ मत्स्य पारिज द्विज जनम पाँडे कुम्भ कमिराम । गोत्र हमारी सावरनि जाहर जग ब्रह्मिणार । x x

x x x x

पण्डित जंगी जीन माहक किरणी केरि मय परबन्धन व मध्य गिरताज है । संन्या में तीमरी पतान्त हैं जाहि सय गगागत काजपुर छावनी बिराज है ॥ जामें द्विज पूंर कुम्भ नौकर अंबरपुन बीर रम चाही छे मियाही सुति झाजई । पंच कंपनी को जमादार अंधकार मन दाऊ सरदार की वैबारात काज है ॥

॥ परिण्य एण्ड ॥

सुर मदि सुर हरिजन पर बेरे ई पाकक ई मरे । माम प्रथम की शमामिक नारायण कदि रेरे ॥ लपु बामक वर नाम अन्वयम रामवर्नि नारायण । संतन को दाया गी होयई राम मुचम नारायण ॥

संन्याया ३३ की ज्ञानहीपक (ज्ञानहीपिका) , रचयिता—भगवतकारण पांडव, पुरवा दक्षिण मिथ (राजपुर प्रतापगढ़), बागज—हमी, पय—२३, आकार—११ × १३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३ परिमाण (अनुपुष) ४५० रूप—पार्थीक, किति—काशी, प्राप्तिसाध—१० रामनाथ पहिच, हेदमान्दर माहमरी गृह्य ग्राम—पुरहो, साहपर—त्रिद वारा, त्रिज—प्रतापगढ़ (अक्ष) ।

कादि—श्री मविदात्मन् मूर्तये नमः ॥ अथ श्री ज्ञान हीपक प्रारंभः ॥

दादा—गगननि कजरनि बरभगनि पाली पति पदपानि । बदन ज्ञानहीपक मुमग भगवत निज मनि एण्ड ॥

गईया—अंधकार बामन पण्डित जाकर जीय परापर मादि रईया । बाहर भीतर लदप अन्वयदु अथ अमरप कर्तव्य दराया ॥ भगवत देन विचारि साईं अक्षतार श्री मुनि भार रईया । पण्डित् को अक्षयन कुमार गदा भगवत की भाग पुरैया ॥१॥

अथ—मृतम को बर ज्ञान विरूपन बाग को बाह कपूर सुंगाया । नाम बहा भयी गंग नदये मुर्तय कहा मदी रूप निपायी ॥ भीत विचार छुपा रम वः कइ प्रीति के जागे केनु बजायी । बई भगवत जान विनु भइ कादि गयी गव बेर पयाया ॥१॥

॥ हनि ज्ञान हीपिका अन्वयं ॥

विषय—(१) पृष्ठ १ से १६ तक—भगला चरण, ब्रह्म तथा जीव विचार, राम नाम की महत्ता, कुछ पापियों के तारे जाने के उदाहरण उपस्थित कर अपने तारे जाने की प्रार्थना । चैतन्य विचार, अद्वैत तिमि दूर होने का प्रकार । चैतन्य अथवा आत्मा की भूतादि से विभिन्नता का वर्णन ।

(२) पृ० २० से पृ० ३१ तक—भक्ति महिमा, भगवत का प्रभुत्व (प्रशंसा से, प्रेम से, भय से) माया की प्रवृत्तता और उससे मुक्त होने का उपाय, मनुष्य के अनन्त भेद न मिलने और जीव तथा ब्रह्म अन्तर जान पड़ने का कारण । सत्सङ्ग माहात्म्य, आत्म बोध का उपदेश और उसके लाभ ।

(३) पृष्ठ ३२ से पृ० ५० तक—राम नाम जाप से लाभ, लावनी, पूर्वी में राम-नाम की महिमा एवं ब्रह्मजीव एकत्व वर्णन लावनियों में कुछ भक्ति से भरे वचन । सत माहात्म्य साधु की परिभाषा, संत, परमहंस, योगी, उदासी, तथा सन्यासी आदि की परिभाषाएँ । नर कौन है । द्विजादि के कर्म, रघुनाथ जी के न चीन्हे जाने का कारण तथा मूर्ख की राम में किसी प्रकार की रति न होने का वर्णन ।

संख्या ५४. रचना—पुन्यपचीसी, रचयिता—भगवतीदास, (आगरा), कागज—देशी, पत्र—१२, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुष्टुप) १०८, रूप—प्राचीन, रचनाकाल—स० १७३३ = १६७६ ।

आदि—अथ पुत्र पचीसी लिप्यते ॥ छप्ये ॥ प्रथम प्रणामि अरहित बहुरि श्री सिधन मीजै ॥ आजारज उवझाय तास पदवदन कीजै ॥ साधु सकल गुणवत सत मुद्रा लखि बंदूक ॥ श्रावक प्रतमा धरन चरननमि पाप निकदूक ॥ सम्यक वत सुभाव धर जीव जगत महि होहि तित ॥ तिल तिल त्रिकाल वदत भविक भव सहित सिरनाय निज ॥१॥

अत—दोहा ॥ पुत्र धर्म एकौ करै निहचै भेद न कोय ॥ तातै पुत्र पंचीस का पढ़ै धर्म फल होय ॥ २५ ॥ सत्रह से सैतीस के उत्तम फागुन मास । आदि पपि नमि भाव सौं कहे भगौतीदास ॥ २६ ॥ इति श्री पुन्य पचीसी समाप्तम् ।

शुभम् शुभम् शुभम् शुभम्

विषय—जैन धर्म की स्तुति और सम्यक् दृष्टि का माहात्म्य ।

संख्या ५५. नासकेत कथा प्रसंग, रचयिता—भगवतीदास द्विज, पत्र—३७, आकार—६ ३/४ × ५ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुष्टुप) ६७५, खंडित । रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८८ = १६३१ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर ब्रजभूषण सिंह, ग्राम—झुक्वारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—.. गुन गावै भगौतीदास ॥

चौ० ॥ सोमवंस जन्मे दोठ राजा । तिनके माथे छत्र विराजा ॥ धर्म सुरति औ ज्ञान विवेकी । निरभै भक्ति विष्णु की टेकी ॥ एक वार सहजहि मति आइ । चोलिये विप्रन जग्य कराय ॥ लोग कुटुम्ब प्रजा सुख माना । सुरसरि तीर जो आसन ठाना ॥ विप्र रिपि न कहँ नेवति पठावा । विधिवत् जग्य सुनत सच आवा ॥ आठों तप तपत जो आगी ।

त्रिनके मानम हरि अनुरागी ॥ भाव विभ जे पढ़हि पुराना । स्मृति कई अद बेद बगाना ॥
 वेद शास्त्र त्रिनके हे ध्याना । ते बकि भाव नृप अस्थाना ॥ भाव रिपि रहै यन बासी । कंद
 मूल फल पवन अम्पामी ॥ शैव्य आदि रिपि तहार्थो भाये । अस्तुति के आसन दिअये ॥ सब
 कर समाधान नृप कीन्हा । विद्यायावन को पूछहि लीन्हा ॥

अंत—दोहा नासकेत अमृत कया, सुनि सो होइ दुस्सस । पाप विचर्कित मुनिहि जो,
 कहत भगीठी दास ॥

इति श्री भासकेत कया प्रसंग सङ्ग रिपय संबोधनो नाम अष्टशोध्याय ॥ १८ ॥

विषय—नासिकेत कया ।

सूचया ५६ मच्छिंतामणि संग्रहकर्ता—भक्ताराम (जाळंभर), कागज—शैली,
 पत्र—४२४, आकार—१२ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २१, परिमाण (अनुपुत्र) ४८००,
 रूप—नवीन, लिपि—मागरी, रचनाकाल—स० १८३५ = १०९८ क्रिपिछाळ—सं०
 १९०० = १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर मन्नासिंह, ग्राम—सरबतपुर, शकभर—कुनुवनगर,
 जिन्ना—मीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ श्री विद्वंज विहारिले नमः ॥ दोहा ॥ श्री गुरु श्री
 गोविंद पद मंगल दित करुं ध्याम । मंगल श्री भद्रराज बर पाई जो सप्रमान ॥ गोपी
 श्रीपी जगठ में त्रिनकी उकडी रीति । तिनके पग बदन करुं त्रिन करी कृप्य सो प्रीति ॥
 हाय आर त्रिनकी करुं मुना गरीब निबाज अपनो ही कर जानिये बाँह गदे श्री राज ॥
 मंद राय के हाठके भक्तन प्राण अपार भक्त राम के उर बसो पहिरे फूकन हार ॥ श्री भद्र
 राज कुमार बर गाह्ये आनंद श्री निरपे धर गाह्ये । भक्तन को मन भाव तो गाह्ये
 श्री कदाहली छलन धर गाह्ये ॥ दो० । बर हस में कवियन काओ सरस अधिक शृंगार ।
 ताहू में अति मरस पुनि सो यह राम विहार ॥ नबहि भंग शृंगार के होरी चोरी हान ।
 छरहि करम बन अनु गमन बिरह मिलन भा मान ॥

अंत—मारंग के सुर सों मिछि करी गीत का ज्ञान । तामें पूगे पूरबी राग पूरिया
 जान । आये जी ये राग हे कहे गरीत जन गाय भेद राग अद रागिनी ये सय दिये
 बताय ॥ इति श्री मच्छिंतामणि संपूर्ण समाप्त राग ६ रागबी ३० राग रागनी ३६
 आनेजी राग रागनी ९९९ तानयेन मिषा गाई संवत् १८३५ वीत बदि ९ शुद्धवार लिप्य
 विद्याधर राय संवत् १९०० शुद्ध द्वितीया मास मान करमसिंह पोचदार के परमार्थ ॥

विषय—अनेक कवियों द्वारा राग रागनी में वर्जन । श्री कृप्य जी श्री लीला । अंत
 में राग रागनी का वर्जन ।

सूचया ५७ शक्ति चिंतामणि रचयिता—मीन कवि (बेंती, रायवरली), कागज—
 श्री वाहामी पत्र—३३, आकार—१२ इंच X ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३०, परिमाण (अनुपुत्र)
 ७७३, पूर्ण रूप—नवीन पद्य, लिपि—मागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णबिहारी मिश्र,
 माहेल हाठय ग्राम—गगनी शुक का छात्रप, जिन्ना—छन्ननर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥ गंगा श्री धार अपार लयी मिर

सर्वज्ञ ॥ ३ ॥ उपदेशत शिप मूढ़ कहँ । व्यभिचारिणी दिग वास । अरि को करत विश्वास
उर विदुखहु लहत विनास ॥ ४ ॥

अंत—मोरठा ॥ वक्र दुर्लभ अहि वाम विफल पक्र जनि कटकी । सकल दोष किय
नाश । गुध गुण ते केतकि हित ॥ इति वृद्धि चाणक्य नीति भाषा भवानीदास कृत सपूर्ण
समाप्तः ॥ लिपतं मनोहरलाल कायस्थ सवत् १९०९ वैसाख शुक्ल सप्तमी ॥ शुभम् ॥

विषय—चाणक्य नीति की टीका कवित्त, सोरठा, छंद आदि में की गई है ॥

संख्या ६१ प. अमर तिलक, रचयिता—भिवारीदास 'दास' (टेढंगा , कागज—
देशी, पत्र—१३८, आकार—१३ $\frac{१}{२}$ = ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुपुष्टप)
२५७६, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़,
जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—शुभ सिद्धि । श्री गणेशायनमः । आदि गुर लायक विनायक चरन रज
अंजन सी रजित सुमति टिष्टि करि कै । देपि कै अमर कोक तिलक अनेकनिसी वृद्धि कै
बुधन जो सकल सेस सीर कै । शंशकित नामनि के अर्थनि जानि जानि औरो नाम आनि
भाषा ग्रंथ "....." वही क्रम सब के समुच्चि के कारन प्रकाशो दास भाषा जोग छंद
वृद भरि कै ॥ १ ॥ दोहा । सुगम ठानिवो शशकित "....." ॥ पाहन सुतीय करन चरन
सरन भरोसा एक ॥ २ ॥ दोहा ॥ ज्यों अहि मुप विप सीप मुख मुक्त स्वाति जल होइ ।
"....." वनत त्याही अक्षर सोइ ॥ ३ ॥

अंत—पृथजन के । दोहा, ह्य अभी प्सित देत पृथ वल्लभ और अभिष्ट । इहै
नाम पृथ जन वही भाषा सिंगरो सिष्ट ॥ ९२ ॥ अधम के दोहा, जाथ्यरेक कुत्सित अधम
पेट अवध निकृष्ट । गकूक फम अनक अधम अर्वात्रि दश प्रति किष्ट ॥ ९३ मलिन के
दोहा । मल दूपित कचर मलिन कही मलीम सचारि मलिन नाम गनि लीजि "....."

विषय—कोप-सस्कृत अमर कोप का क्रम वद्ध पद्यमय तिलक है ॥

संख्या ६१ वी. अमर तिलक, रचयिता—भिवारीदास (टेढंगा), कागज—
देशी प्राचीन, पत्र—३१०, आकार—८ $\frac{१}{२}$ = ७ $\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १७, परिमाण
(अनुपुष्टप) ३०८९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी,
प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—के अत्र नाम पुन । पंच जन्य जुमेप को चक्ररि सुदर्शन मानु । गढाकी
कौ मोद की मनि कौ कौस्तुभ जानु । को नदक कहँ पंच पाचैड नाम । विशु के एक चक्र
तिन्हको "....." मन अभिराम ॥ १६ ॥ गरुड़ के नाम दोहा । गरुमान नार्गत कहो
तार्थ्य संपर्न पगोस । वैनतेय अरु विस्तुरथ गरुड़नाम वसु वेस ॥ १७ ॥

अंत—क्ष शब्द रूपमाल छंद । पत्र पासादिव्य काले काम्पान धन समुदाइ ॥
जाति को सरवादि संग्रह आठ कोप गनाइ ॥ कर्प इद्रिय चक्र पासा तुष्ट तुप व्योहार ।
नैन सौ वचले आत्मजे दशो अक्ष विचार ५ । कपू विप पौरूप शब्द ॥ रूपमाला छन्द ॥
चरता करिवो नदी किति मत्रि कर्प होइ । जग तरल विप कहँ जानै सुधी सब कोइ,

पुरूष भावी पुरूष भारि सा पुरूष शक्ति विलास । पुरय कर्मो भारि पौदय पाप्य नाम प्रकाश ॥ २६ ॥ अमिप किलिप बर्ष मेहो सप्य रूप माहा उद् । भोग बस्तु भंडोर पास संभोग अमिप भारि । पाप अपराधी दुकिन्निप नाम के ।

विषय—संस्कृत अमरकोष का हिन्दी पद्य मय अनुवाद पुस्तक ललित है । आदि अंत के पत्र नहीं हैं ।

संप्रत्या ६१ सी उद्दाम्ब रचयिता—मिन्गारीग्राम दाम' (देहंगा), कागज—देही, पत्र—१४२, आकार—११ × ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुप्युप) १४३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य स्तिति—मागरी, रचनाकाल—सं० १७२९=१७४२, लिपिकाल—सं० १८८१=१८९४, प्राप्तिस्थान—श्री यज्ञदत्त काल कायस्थ ग्राम—मीरस्त, टाकपर—दातागंज, जिन्ना—प्रतापगढ़ (अजमेर) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अरु अर्धन मंडित योज अर्धित पूज पंडित ग्यान पर ॥ गिरि मंडित मंदन अमुर निरंजन सुर उर अर्धन अति अर ॥ मूयन मूय लठम बीर पिचक्षण जन पून रक्षण पास धर ॥ अय अय गन नाथक पल गन पायक दाम सहायक विष्णु हर ॥ १ ॥ एक रद् ई न शुभा साया बदि आई स्वोदर में बिबेक तरनी है दाम बेरा को ॥ सुहा दृढ के लव हृष्या रुक है उर्दक यह रायत न लेम अय निमन अनेस को ॥ यह कई भूमि न हरत मुभा दार यह भ्यान भी त ही को टिह हरम उलेम को ॥ दास यह विजय बिचारी तिहुं तापनि को दूरि का करन बारो करन गनेस को ॥ २ ॥

अंत—रागनि के यम बीजिग ॥ ताहि प्रबंध बयानि ॥ छंद लिपु सो पद्य है ॥ गद्य उद् विन आम ॥ ग्यारह ते उगिन्म स्तिति ॥ बरन ध्रुपदु तुक ०क ॥ सो मिर है पद्य उद् दस ॥ धर प्रबंध बिबेक ॥ मद् उद् ईद कनि को । होक पारावार ॥ बरान पद्य बटाह मी दान मति अनुमार । मन्नाद सी मिनाम ॥ मनु बदि नधि कविन्नु दाम करे उद्दाम्ब मुमिर माधरा किन्नु ॥ ७ इति श्री मिन्गारी दाम कायस्थ कृत उद्दाम्बे इटक भेद ग्रंथ संपूर्णता बर्नन नाम पद्य दनाम तरग ॥ ३ ॥ १५ ॥ संवत् १८८१ श्रावणे १७४६ ॥

विषय—विंगल अर्थात् विविध उद्दों क मद् १४ तरंगों में ।

संप्रत्या ६१ सी उद्दाम्ब, रचयिता—मिन्गारीग्राम कायस्थ कागज-साधारण, पत्र ६९, आकार—८ × ५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १७ परिमाण (अनुप्युप) १४०३, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—मागरी, रचनाकाल—सं० १७२९=१७४२ ई०, लिपिकाल—सं० १८७२=१८८५ ई०, प्राप्तिस्थान—यं मर्माकांत तिबारी इंदम, ग्राम—बनुआपुर, टाकपर लक्ष्मीकोठगंज, जिन्ना प्रतापगढ़ (अजमेर) ।

आदि अंत—११ मी क समाप्त ।

ग्रंथ निर्माण काल :—

संप्रद मे विन्नामने, मनु बदि नधि क विन्नु । दाम करे उद्दाम्बे, मुमिरि माधरा इन्नु ॥

को नप संजुत चारु मयूर सिपानि को हार लसै ॥ विचरै पद पानिन अगन में कुलकै किलकै हुलसै विहँसै । अधराधर बोलनि तोतरि बोलनि दास हिये दिन रैन वसै ॥५७६॥

X

X

X

इति श्री भिपारी दाम कृते रस सारांश ग्रंथ संपूर्ण शुभं भूयात् ॥ श्री गणाधि-
पतयेनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्रीमते रामानुजायनम श्री शिवायनमः ॥ X X X

विशेष—(१) पृ० १ मे २४—तक—लुप्त । प्रथ-निर्माण-काल—मंत्रह से इक्या-
नवे, नभ सुदि छठि बुधवार । अरवर देस प्रतापगढ़, भयो ग्रंथ अवतार ॥ लिपि कर्ता का
परिचय :—

ग्रंथ रमनि को सार यह, दाम रच्यो हरपाइ । सो वावू मलतत कहँ, लिप्यो भीप
कविराह ॥१॥ लिपिकाल :—

संवत् विंशि प्रह तेहि उपर, रुद्र और गुन्वार । पाँप वटी तिथि नेत्र कर्त, पुस्तक
भई तयार ॥२॥

संख्या ६१ के रम सारांश, रचयिता—भिपारीदाम, कागज—देशी, पत्र—४२।
आकार—१४ ३/४ × ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुष्टुप १०२४, पूर्ण, रूप—
प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९१ = १७३४ ई०, लिपिकाल—सं०
१६१६ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाहौरे, प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्रीगणेशायनमः । अथ पोथी रम सारस कविताई भिपारी दाम कृत
लिप्यते । दोहा० । प्रथम मंगलाचरण को तीनि आतमक जानि । नमस्कार अरु ध्यान पुनि
आसिरवाद वपानि ॥ १ ॥ नमस्कार आतमक मंगला चरण० ॥ कदनि अनेकनि विचनको
येक रदनगणराउ । वदन जुत वदन करौ पुंकर पुंकर पाउ ॥ २

अत—नव नील मरोरुह अगनि केशरि रग दुकुल प्रभासरसै । उरनाहर को नप
संजुत चारु मयूर शिपानि को हार लसै । विचरे पद पानिन अगन में कुलकै किलकै हुलसै
विलसै । अधराधर बोलनि तोतरि बोलनि दाम हिये दिन रैन वसै ॥ ५८४ ॥ दोहा ।
सत्रह सै इक्यानवे नभ सुदि छठि बुधवार । अरवर देस प्रतापगढ़ भयो प्रथ अवतार
॥ ५८५ ॥ कुमति कुदूपन लाइ है विगारयो वरन सुधारि । सुमति समुझि सुख पाइ है,
विगारयो वरन सुधारि ॥ ५८६ ॥ इति श्री रम सारस भिपारीदाम कायस्थ कृत संपूर्ण
शुभमस्तु । सवत ॥ १६१६ मन् १२६७ फ० अषाढ कृान येकादश्यां गुरु वासरे समाप्त शुभं
भूयात् ० । हरि को बोलत हरि सुना हरि आये हैं धाड हरि टेपत हरि हर गये हरि रहे पिसि
आइ । टीका । हरि नाग हरि मेघा हरि जल ॥ १ ॥ सोवत थी पितु भवन में पिता गोद
पति साथ अचल लुह लुह जात है पुरुष पराये लात । २ । टीका । लक्ष्मी को पिता सुमुद्र
विशु के शृगुलात । हरि से निसरी हरि माह गई हरि की पतिनी हरि केरि सुता । कैसे
करो जैसे नेहरी सजनी सैयाके सैया पिता के पिता । ३ । टीका । हरिनाम समुद्र हरि
भगवान है समुद्र में सयन किहे है ता समय को दोहा है ।

विषय—रस वर्णन, (नायक नायिका भेद)

संख्या ३१ पल मंगारनिर्णय, रचयिता—मिल्लारीदास (प्रतापगढ़), कागज—
 देसी, पत्र—१६, आकार—१४ × २ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण (अनुच्छेप) १००३,
 रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०७ = १८५० ई०, लिपिकाल—सं०
 १८९७ = १८४० ई०, प्रसिस्थान—महाराजा लाहोरी, प्रतापगढ़ (अजमेर) ।

आदि—श्रीगणेशायनमः पुस्तक मंगार निर्णयिपारीदादा हृत लिप्यते ॥ कविच,
 मूले मूलेस बाही वृष बाहन किंकर कीन्हों करोरि तिलीसको । हाथनि में फरसा कर बाल
 पिपुल पर पल पोहये पीम को । जल गुरु जग की जगनी जगदीस भरे मुप देत जमीस
 को । दास प्रकाम करे कर जोरि गणपिय को गिरिजा को गिरीस को ॥ १ ॥

अंत—न सुत करि वरणिण तह रस भंग कराइ ॥ ११८ ॥ यथाथा ॥ मारी न हाथ
 रही उदि मारी के मारि निमोही मनोज महा की । जीवन बंग कहांते रह्यो पर जंक में जंग-
 रही मिलि जाकी । बात को बोखिबो गात को दोखिबो देरि को दास उलांमक धाकी । सीरी
 है भाई तताई मिबाई कइो मरिने में कइा रहि बाकी ॥ ३१६ ॥ इति श्री भिपारी दास
 कृते मंगार निर्णय ग्रंथ संपूर्ण सुम मस्तु मिति जेष्ठ शुक्ल दशम्यां भीम वासर सबत १८९७
 दशम्यत जबाहिरनाल कायस्य लिप्या श्री बाबू भवानी बरुम सिंह के बरे जा प्रति देया
 सो लिप्या ॥ राम० ॥

विषय—श्राविकामेद आदि मंगार रम बर्णन ।

संख्या ६१ पम मंगारनिर्णय, रचयिता—मिल्लारीदास कागज—बादामी पत्र—
 १०, आकार—१२ १/२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २३, परिमाण (अनुच्छेप) १०३२,
 रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०७ = १०५० ई०, लिपिकाल सं०
 १९४७ = १८९० ई०, प्रसिस्थान—सं० कृष्णबिहारी मिश्र, मारहेर हाउस, लगनक ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ मंगार निणय लिप्यते ॥ संख्या ॥ मूस मूलेस
 बली वृष बाहन किंकर कीन्हों करोरि तिलीसको । हाथनि में फरसा करबाल पिपुल परे
 पल नेबरु पीस का ॥ जल गुरु जग की जगनी जगदीस भरे मुल देत जमीस को । दास
 प्रकाम करे कर जोरि गणपिय को गिरिजा को गिरीस को ॥ १ ॥ इंक ॥ मपुट्टे के बेद
 कापी कपुट्टे है रतन काहणी कोरु छे के गीस रद राखी कीन्हों है द्विजेम आदि टिति उप
 नाम है । राम ह् दसमि बंम अगु ह् महारपी बंम बोप छे के कीन्हों त्रिन सापक प्रकाम
 है ॥ कटिही छे राये रदे हिंदू पति पति दे मलेस इति मोरु गति शामता को दास है ॥ २ ॥
 दोहा ॥ श्री हिंदू पति रीसि के समुसि ग्रंथ प्राचीन । दास कियो मंगार को निरणय मुनी
 प्रवीन ॥ ३ ॥ सम्वत् विक्रम भूप को अद्वयद मे सात । मापव मुदि तेरसि गुरी जबर
 पर बिबात ॥ ४ ॥

अंत—यामता यथा—कोरु कहे कर हार के तंत मे कोरु परागन मे उलमानी ।
 इकट्टी मकरद के वृ द मे दास कहे जगजा गुन ज्ञानी । यामता पाइ रमा छे गई परजंक
 कइा करे रापिछ रागी । कील मे राम निबाग किये है तसाम किये हूँ न पावन पागी ॥
 ३२२ जइता दनाल लक्षण दोहा ॥ जइता × × × पुत्रिय ह्म प्रकार है—इति श्री
 भिपारीदास कायस्य हृत मंगार निर्णय संपूर्ण श्री संपत् १९४७ ॥

संख्या ६१ पन. शृंगार निर्णय, रचयिता—भिखारी दास, कागज—देशी, पत्र—
१२८, आकार—१३ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १७, परिमाण (अनुष्टुप) ८८४, रूप—
प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८०७ = १७५० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामबहादुर
सिंह, ग्राम—बढ़वा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि-अंत—६१ पृष्ठ की भाँति ।

संख्या ६१ श्रो. काव्य निर्णय, भिखारीदास (टेंडंगा, प्रतापगढ़), कागज—
देशी प्राचीन, पत्र—५७, आकार—१४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण
(अनुष्टुप) ६४८, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि नागरी, लिपिकाल—सं०
१९१४ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़ (अवध) ।

संख्या ६१ पी. तेरिज रस सारांश, रचयिता—भिखारीदास, कागज—देशी,
पत्र—१८, आकार—१३ १/२ × ५ १/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुष्टुप)
२३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०,
प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़, (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ तेरिज रस सारांश कै । नौरस नाम कथन दोहा ।
नव रस प्रथम सिंगार पुनि हांस करुण अरु वीर । अद्भुत रुद्र विभक्त मय शांत सुनो
कवि धीर ॥ १ ॥ रमके विभाव अनुभाव स्याहं भाव जासो रस उत्पन्न है सो विभाव उर
आनि । आलवन दहीपनी सो दूँ विधि पहिचानि ॥ २ ॥ कहुँ क्रिया कहुँ वचन ते कहुँ
चेष्टा देपि । जिय की गति जानी परँ सो अनुभाव विनेपि ॥ ३ ॥

अंत—सब के कहत उदाहरण ग्रंथ बहुत बढ़ि जाइ । ताते संपूरण कियो बाल
गोपाल हिं ध्याइ ॥ १५८ ॥ इति श्री रस सारांश कै तेरिज सम्पूर्णं शुभ मस्तु सिद्ध रस्तु ॥
संवत् १९१४ ॥ मार्ग मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यां सोम वामरे दशपत दुरगालाल हेतवे
भवानी वक्रम मिह जीव, समाप्ताः

त्रिपय—रस वर्णन ।

संख्या ६१ क्यू. विष्णुपुराण, रचयिता—भिखारीदास (प्रतापगढ़), कागज—
प्राचीन देशी, पत्र—८६२, आकार—१० × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण
(अनुष्टुप) ६०३४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३=१८७६ ई०,
प्राप्तिस्थान—महाराजा लाइब्रेरी, प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ पोथी विश्नु पुराण प्रारम्भः । छप्यै ॥ जो इन्द्रियन
को इंद्र विभवभावन जगदीश्वर । जो प्रधान बुध्यादि सकल जगको प्रपंच कर । परम पुरुष
पूर्वज सृष्टि स्थिति लय को कारण विश्नु पुंडरीकाक्ष मुक्ति पद मुक्ति सुधारण । जेहि
ठाम ब्रह्म अन्न कहिय, जो गुण उदधि तरंग मय । तेहि सुमिरि सुमिरि पायन परिय ।
करिय जयति जय जयति जय । दोहा । विनय विश्नु ब्रह्मादि पुनि गुरु चरणन शिर नाइ ।
वाँत विश्नु पुराण की भाषा कहुँ बनाइ ॥ १ ॥ पुनि अध्यायनि सोरठा क्रिय छप्यै प्रंति
अथ । आठ आठ तुक चौपाई अनियम छंद प्रशंश ॥ २ ॥ चौपाई ॥ वेद पुराण भेद को

जाता । कृपि बसिष्ठ सब जग विप्याता ॥ तिनके मई शक्ति गुन बामर । त्रिन जाये शुभ पुत्र परासर ॥ जामु गिरा सब जग मुल पूरति । सकल शास्त्र विद्या की मूरति ॥

अंत—ईबासप्रथ सद्मवाय पतितः किंवाहरे भूपती ॥ २ ॥ इति विधि मय मजस्य रूपं प्रकृति परात्म मय सनातनस्य । प्रदि सतु भगवान् सेप पुंमो हरि रयजन्म अरादिष्टं सस्त्रिम् ॥ ३ ॥ मुरैतं अह्या मय्यो पूजये ह्यचकं द्विजं । गोभू हिरण्य बंमो मो शला छंकर भोजने ॥ ४ ॥ एवं विप्रार्चनं कृत्वा विचाराद्य विवर्जितं । सर्वां कामान् वाप्योक्ति याति विश्वो परं परं ॥ ५ ॥ इति श्री विष्णु पुराणे परासरीय संहितायां पट् मांसे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ समपूजम् ॥ जादसी पुन्यक एव्वा तादसी किलितं मया पदि शुभं शुभं वा ममदोपो न दीयते ॥ १ ॥ स्वस्ति श्री संवत्सरे १९३३ शके १७२८ फास्युग प्रद मासे पट्म्यां तिथीं ३ क्षमिवासरे द्वितीय प्रहरे समाप्तमिदं ॥ ७ श्री राम ७ किलित मिदं पुस्तकं पंडित शकर दत्त ठिकारी साकिन भीजा करवई तिका प्रतापगढ़ दोहा ॥ यह पोपी शंकर सिंघा सबसों कहत पुनरि । पदिहहु मुजम मुयारी के मम अपराय बिसारी ॥ श्रीराम सीताराम श्री राम श्री श्री राम श्री गोपेन्द्राय नमो नमः ।

विषय—विष्णु पुराण का हिन्दी अनुवाद ॥

संख्या ६१ आर विष्णुपुराण भाषा, रचयिता—मिलारीशम (प्रतापगढ़), अगज—साधारण, पत्र—२३७, आकार—१४ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३ परिमाण (अनुपुत्र) १००००, रूप—जहीम, सिधि—जागरी । प्राप्तिस्थान—पं० महाबीर दूबे, ग्राम—इसनपुर, बाकपूर—परिपार्वा, तिका—प्रतापगढ़ (अजय) ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ उष्यथ ॥ जो इंजिन को ईसा बिहब भावन जगदीश्वर । जो प्रघान पुण्यादि सकल जग को मयंच कर ॥ परम पुरुष प्रबज सिद्धि पिति से को कारन । विष्णु पुंडरीमल मुक्ति प्रद मुक्ति मुयारन ॥ वेदि दास प्रद अजर कहिय जो गुन बद्धि तरंग मय । तेदि मुमिरि मुमिरि पायन्ह परिय करिय जयति जय जयति अब ॥ १ ॥

अंत—॥ दाहा ॥ तुम कलि शल मिलाक को यह ममुर्म हो तात । कहत मुनत यह होइमो कलि कठमय को घात ॥ ३५ ॥ वासी दम जप्याय जो मुनि ई सहित विधान । तिन्ह अनु सामग्री सहित हीमहों कविता दान ॥ ३६ ॥

× × × ×

यह सब अनुपुत्र एन्ड में, द्वा सहस्र परिमाण । दान संमहृत्ते द्वियो भाषा परम सन्यम ॥ १ ॥

विषय—पंरहृत्ते के विष्णुपुराण का भाषा में पयानुवाद ।

संख्या ६२ नरगिरि, रचयिता—श्रीप्य, अगज—साधारण, पत्र—१२, आकार—७३ X ५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुपुत्र) २२५, रूप—प्राचीन पय सिधि—जागरी सिधिवाल—म० १२६६ अगली = १८२८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दुबमचंद अनुबेदी ग्राम—मंडरू गंज, तिका—प्रतापगढ़ (अजय) ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ पोथी नपशिप लिप्यते ॥ कवित्त ॥ आगमन सुनि गिरिनाथ जदुनाथ को, तुरत करिहों को सूत्र कीन्हों फनिराज को । भीपम भनत आगे लीवे को हरप हर, कीन्हों है कोपीन छीनि छाला मृगराज को ॥ आवत पुरारि को निहारि कै मुरारि तजि, चाहत मिलन महाराज पगराज को । तव लोभ यम गन पराने शेष भूतल, गन हर हेरत सगन शुभ साज को ॥ १ ॥ वार वर्नन दडक सुप अरविंद जानि धेरे हैं अलिंद वृन्दु, इन्दु अमी चूमत की पन्नग कुमार है । कचन सिपर के किडार पै सुधा की सींचि, मरकत तार उपजाये करतार है ॥ निसि के कुमार मपतूलनि के तार कैधों, भीपम सरूप सरिता के ये से वार हैं । मार के त्रिपिन की सिंगार के चँवर चारु, कारे सटकारे को तरुनि तेरे वार है ॥ २ ॥

अत—सोरठा—नप शिप लो तिय गात, निरपि निरपि शोभा वरनि । दिन ल्यों वरप विहात, बहु विवि कहि अभिलापहि ॥ ५१ ॥ इति श्री शिप नप भीपम कृत समाप्त शुभमस्तु पौप शुक्ल नवम्यां गुरवासरे सन् १२६६ ॥

विषय—नख-शिख वर्णन

संख्या ६३. बसतविलास, रचयिता—भोगी लाल (कुसुमरा मैनपुरी) कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—७ $\frac{१}{२}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप) १८०५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५६ = १७९६ ई०, लिपिकाल—सं० १८५७ = १८०० ई०, प्रासिस्थान—पं० मातादीन द्विवेदी, ग्राम—कुसुमरा, जिला—मैनपुरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ वखत विलास लिप्यते ॥ कवित्त—सर्म वितरण भव मर्म सतरण सुभ कर्म आचरण धरा धर्म के धरण हैं । दानव दरण सुर मानव भरण छल छोम के छरण यदुकुल आभरण हैं ॥ पक्रज वरण सौहें आभा आवरण हैं अधम उधारण वृज वीथी विहरण हैं । सक्रट हरण है सरण वखतावरके आनद करण बलि देवके चरण है ॥ १ ॥

अत—निर्माण संवत्—संवत रस सर नाग ससि कार्तिक सुदि भृगुवार । सुतिथि पंचमी योग सुभ पूरन त्रय विचार ॥ ५९ जब लगि श्री पति की कथा दीपति है दिनु राखु । तव लगि अटल करौ सकल वखतावर नृप राखु ॥ ५० यथा—जाहिर जहान जानि देखे राजा रान कोई लागत न सान दान मान मजवूती की । गाहत गुननिवार वाहर न माह सवै पौरुप अथाह ता सराहत सपूती की ॥ कूर मनैरम्, यखतेसके निकट योग संपति हमेशा हीं प्रगट पूर हृत्तीकी । मारतंड मंडन अटंड नृप दहन की जाको भुज दडनि घमंड रजपूती की ॥ ५० इति श्री कछवाह कुल सूपन श्री नरुका राठ राजा वखतावर सिंह आनंद कृते भोगी लाल कवि विरचिते वखत विलासे नायका वर्णन नाम नवमो विलासः ॥ शुभं पठनार्थं श्री ५ राठ राजा जी श्री वखतावर सिंह जी शुभम् ॥ संवत् १८५७ भाद्रपद शुक्ल १५ बुधे ॥ इति

विषय—रस वर्णन

संख्या ६४ मिर्जाप श्री महाराजा को काठ साहब से, रचयिता—दोख मुसुब
(मरठपुर राज्य), कागज—चैती, पत्र—३७, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)
२०, परिमाण (अनुच्छेप) २७८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी रचनाकाळ—सं १८०६,
लिपिकाळ—सं० १८७६, प्राप्तिस्थान—प० रामस्वरूप छद्म, सुभाद्रपुर निवासी ग्राम—
सर्रावो, डाकघर—बिमर्वा, जिल्ला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ बिना हृषा भगवंत की ककम न पकरी जाय
सदा भवानी दाहिनी मुकंद सरसुती माय ॥ मिर्जाप श्री महाराज की लिख्यत ॥ दुई सहर
में पवरि यह मुष् स्याम से जारी । सरकार की भंगरेज से मिलने की तवारी । और सहर
मरठपुर में यही सौर है जारी । करते हैं सवी साथ के ससरकर की तवारी । सरकार ने
समकर हूँ हुकुम डेरों का दिया । सेप इसाम बकस को उबके साथ कर दिया । रीधान
बवाहर सस और फीजदार मोदीराम । उन पास जो सरकार के रहते हैं सब से काम ।
महाराज का उकीरु है जानी जी साहूकर । बिसकर छु काठ साहब से जु हैगा बड़ा प्यार ।
कीरु हूँ देपा है बिसने गवर काठ हूँ । देपा है बिसने सबसी फिरगी की जाठ हूँ । सबसे
अपस ओ राब साहब मित्राये । और गुर की मंडी पे डेरे पड़े कराये । यह मेरे पे
राबजी और भागे हैं डेर । कसरकर की पवर देते हैं सब स्याम सवेरे । है बीच में बजार
और फीज है भारी पय पदी के डेर में मिलने की तवारी ॥

अंत—मुद्रामा के छु हमराही ये वे भीने हृष्य बंद । एक पक में एक दरके सब
कति दिये बंद । मैं उबकी मने पानी में कहता हूँ बये छंद तुम भीसे श्री महाराज ही
मेरी मे मेरे बंद ॥ बीसा मिर्जाप जग में हमने कहीं न देपा । बिन पावों में पनहीं नहीं
बिनको दियो गजराज । करि देब राठ छे है मे मी तुम बीसे हो महाराज ॥ हुनियाँ जहान
पडक के सिद्धि करते हीगे काज । हमारी हुमी अरज की है जाप को यह काज । बीसा मिर्जाप
हमने जग में यहीं देपा । बुद्धे जवान करके दिक्कर बयार जारी । राजा अमीर बकरी
हो मुसक अवाहाबी । कंगरु और अदना यह सय हूँ है कइानी वे पुसी रहें वे मुठन
जब तक नहर में पानी । बीसा मिर्जाप जग में हमने कहीं न देपा । इति श्री मिर्जाप
महाराज श्री मजेन्द्र श्री श्री श्री श्री रणधीर सिंह जी भंगरेज की मिर्जाप सम्पूर्णम् ।
श्री राधा रमण जी सहाय श्री हरये नमः मिली काळगुन सुदी नीमी संवत् १८७६
शुभ संवत्

विषय—काठ साहब से मरठपुर के महाराज रणधीर सिंह का मिर्जाप ।

संख्या ६५ शृंगार तिलक भाषा, रचयिता—भूप कवि, कागज—चैती, पत्र ८,
आकार—९ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुच्छेप) ४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन,
पय, लिपि—नागरी, लिपिकाळ—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—यजुर सिधराम
सिंह, ग्राम—श्रीनगर, डाकघर अमीरपुर, जिल्ला श्री (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भूपकवि कृत शृंगार तिलक भाष्य लिख्यते ॥
बाहु हैं शोक सुनास मराज हैं आनन और है मुंदर चाई ॥ आनी है तीर्थ नाका शोक

लोचन मत्स्य है केन्द्र मेवार लपाई ॥ प्यारी के जोवन टांड चक्रोर है काम दह्यां जेहि
वान चलाई ॥ तासु निमित्त वनायो विरंचि सो ताल की सीतल होहि नहाई ॥१॥

अत—पीतम वानिज को परदेस गये जब से न हवाल मिली है । मामु के पूत
भयो चिटिया घर प्रात गई मोट आज चली है ॥ जोग नहीं निमि सैन दृष्टो एमहूँ अवही
अबला नवली हैं ॥ जाहु चटोही रहाँ कहु और ए गाँव अनेहन राह गली हैं ॥१॥ घोर
अधेरी है देग्हु रँन धिरे चहुँ ओर है वाटर मोरे । मोए हैं गाड़ीहि नींद सो प्रीतम कर्म दुखी
सोहें आप निचारे । बाल हैं नारि हैं कांपत हैं पुनि भूप मनोज के त्राम के मारे । फूल फूल
पर ऊपजत सुन्याँ न देख्यो जात । क्यों तिय नव मुग्य कंज पै लोचन कंज लग्यात ॥१०॥
लखीं न नैन तरेरि रूमी ताँ रूमी रहाँ ॥ देहु मोहि मव फेरि चुवन आलिंगन सर्व ॥
इति भूप कृत श्यार तिलक का अनुवाद समाप्तः ॥ लिपते गौरीचरन संवत् १९३३ त्रि०
जेष्ठ शुक्ला १० ॥ राम राम राम राम राम

विषय—श्यार रम के कवित्त सर्वथा दोहा आदि ॥

संख्या ६६. मतस्यया, रचयिता—राजा गुरदत्त सिंह, (भूपति) अमेठी । कागज
वादासी' फुलिस्क्रेप, पत्र-८१, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १९, परिमाण
(अनुपट्टप) ९१४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९१ = १७३४
ई०, लिपिकाल—सं० १९५८ = १९०१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कृष्णविहारी मिश्र, माडेल
हाटम, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः दोहा ॥ विचन विनामन है मदा गण पति को शुभ नाम ।
लोक लोक में धाम है लोक लोक में धाम ॥ मत्रह शत एकानवे कातिक सुदि बुध वार ।
ललित तृतीया में भयो शतसे अवतार ॥२॥ मोर मुकुट गिर पर लसत वसत मवन के
प्राण । तरु न हरि के रूप को नेहु मिलत पर मान ॥३॥ रमे वसे व्रज मे सदा गो गोपिन
के साथ । करत विचार विचार पर हिये वमत व्रजनाथ ॥ ४॥ जाके हिय में वसत हैं आनि
गोपाल लपाइ ॥ तदपि फनुस प्रदीप लौ प्रतिभा परम लपाइ ॥५॥

अंत—सोरठा ॥ अवधि किया नुस वाम ॥ यह वन वध है ओधि वन मेरो इह
निवाम किये वनै प्रतिपाल अब ॥७०१॥ मेरी है अति अल्प मति क्यों करि कहीं स्वरूप ॥
हरि हरि भाँतिन मव कहत नहि पावत तुल रूप ॥७०२॥ इति श्री भूपति विरचितायां
सतसैया समाप्त सुभ भूयात ॥ श्री मवत १९५८ ॥ अधि श्रावण माने कृष्ण पक्षे तिर्यां
पचम्यां सोम वासरे लिखित सिद्धम् पुस्तक बलदेव मिश्रेण मिश्र जुगुल किमोरस्य पाठार्थम्
श्रम भूयात् ।

संख्या ६७ ए. शिवराज भूषण, रचयिता—भूषण कवि (तिकवाँपुरा, कानपुर,)
कागज देशी, पत्र-८०, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनु-
पट्टप) ८०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३० = १६७३
ई०, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामभरोमे विशारद, ग्राम—
मनोपुर, डाकघर इटावा, जिला लखनऊ (अवध) ।

पत्र—१३२, आकार—५ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुपट्टप) ८५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स १८४० = १७८३ ई०, प्राप्ति-स्थान—मुन्शी ब्रजमोहन लाल साहय, ग्राम—टेडआ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गनेशायनमः । शत शैआ विहारी ॥ मेरी भव वाधा हरो राधा नागरि सोइ । जा तन की झाईं परे श्याम हरित दुति होइ ॥ १ ॥ नमस्कारात्मक मंगला चरन । राज तीरथ हरि राधिका तन दुति कहि अनुराग जेहिं वृज बेलि निकुज मग पग पग होत प्रयाग । २ ।

अंत—शोरठा । कौडा आंसू बूद कशि शीकर चरुमी राज । काने वदन निमूद द्यग मलग ढारे रहत ॥ दोहा जौ जलिये भलि पैवनी नागर नद किशोर । जौ तुम नौके कैल प्यौ मो करनी की ओर ॥ इति विहारी शतशईं शपूर्ण शुभ । लिपा फाल्गुन वदि १ शनि । लिपा मनमाराम कायस्थ अस्थान वांगा । शवत १८४० शन ११९१ । जो देपा शो लिपा मम दोप न दीयते । तै लं रक्षति जल रक्षति रक्षन दिग्बंधन । मूर्धं हस्ते न दातव्यं इदन्वदति पठितं ॥

विषय—शृंगार

संख्या ६८ सी. विहारी सतसईं, रचयिता—विहारीलाल, कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुपट्टप) ८७९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६८ वि० = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शीतल प्रसाद जी दीक्षित, ग्राम—सीकरी, डाकघर—तवूरा, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम अय सतसैया लिप्यते ॥ दो० । मेरी भव वाधा हरो राधा नागरि सोइ । जा तन की झाईं परे स्याम हरित दुति होइ । १ । सीस मुकुट कटि काहनी कर मुरली उर माल । या वानिक मो मन वसौ सदा विहारी लाल ।

अंत—इति श्री विहारी लाल विरचितायां भाषा सप्त मतिकयां नव रस वर्णन नाम चतुर्थ प्रकरण परिच्छेद सतसैया समाप्त शुभ मस्तु आसाद मानसे कृश न पक्षे सूर्ज वासरे तिथौ नौमीयाम् दसखत धनीराम तिवारी के गोधनी अस्थान शवत १८६८ वि० ।

संख्या ६८ डी. विहारी सतसईं, रचयिता—विहारीलाल, कागज—देशी, पत्र—७६ १६२, आकार—७ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुपट्टप) ८६४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण विहारी मिश्र, माडेल हाउस, लखनऊ ।

संख्या ६८ ई. विहारी सतसईं, रचयिता—विहारीलाल, कागज—देशी, पत्र—७६ आकार—८ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुपट्टप) ७३६, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भालचन्द्र मिश्र, ग्राम—शीतलन टोला, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—नेक न हुरसी विरह हर नेह लता कुम्हिलाति । नित नित होत हरी हरी परीहाल रति जाति ॥ ९८ हेरि हिडोरे गगन ते परी परी सी टूटि । धरि धाईं पिय वीचहि करी × रस × लूटि ॥ ९९

अंत—रसित बचन अथ पुकित दग कथित स्वदहन बोलि । अरुन बदन छवि मद्छत्री परी कधीकी होत ॥ १६६ ॥ बह किनइहि बहि ना पुकी जन तव वीर विनासु ॥ बचे न बही सखीस हू खीख्यो मुखा सामु ॥ १६७ ॥ रुदि रति मुपु छगिये हिये छपी क्योही नीटि । पुकति न मो मन वधिर ही यह अथ पुकी कीटि ॥ १६८ ॥ कियो सयानी सपिन सो नहि सयान बह मूस ॥ दुरे दुराई पूरु को कोपि X X X ॥

संख्या ६ ए. मानकीका, रचयिता—विसराम, कागज—द्वैती, पत्र—१६, आकार—१ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुपुप) १०८, रूप—नवीन, लिपि—जागरी, लिपिका—सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर गंगासिंह, ग्राम—मसगर्वा, बाक्यर—मोवल, त्रिका—तीरी (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मानकीका लिप्यते ॥ दो० ॥ फूलवरु गुंजत मपुप अत छवि बरनी न जाइ ॥ रसिक कधीलो सांभरो जई बिहरत मुपु पाइ ॥ एक समी बिसि सरद की राम रचयो गेपाक । मुरली बुनि मुनि की सखक बठ भाइ प्रथ वाक ॥ गई सबे मत्र सुंदरी सई सुंदर नंद कुमार । काकेही के कूरु पर कीनी रास बिहार ॥ लीका रास बिनोद मी बंधाबकिहि बुसाइ । सुमन मास काकी हिये छे पहराई ठाहि ॥ बहुरि बिहंसि बीरी बई सुंदर स्याम मुजान ताही छिन श्री राधिअ किचो मान को धान ॥ कबिच ॥ पैरो रिसाय महा सुकराइ के मान को गर्ब सिंघासन काई ॥ बोके न काहू सों उचर बैह मुने कु ना काहू की बात मुहाई ॥ अथे भरी अति अतुर बई अंग ठरेर के भीह चहाई ॥ रूप को गर्म कहा करि कीटी भामिनि भूमि किंसि मुप चंद दुराई ॥

अंत—द्वार के वीरिया वीरि के वीरिया पाहेरजा घर के धनस्याम है । दासिन के दास सखियन के सेवक पार परोसिन के धन धाम हैं । धर कानन भर अति भामिनि मान भरी मुत बानी बास है ॥ एक बई विमराम यही प्रथमान छली की गली के गुलाम हैं ॥ इति श्री मानकीका संपूर्ण शुभं अक्षर लिपिते शिवसेवक दुबे जेठ शुद्ध दशमी संवत् १९०१ वि०

विषय—श्री राधिका जी का श्री कृष्ण जी से रूठ जाना और श्री कृष्ण जी का ममाया ॥

संख्या ६६ धी. मानकीका, रचयिता—विमराम कागज—द्वैती, पत्र—१६, आकार—१ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुपुप) १२०, रूप—साधा रूप लिपि—जागरी, रचनाकार—सं० १९०० = १८४३ ई०, लिपिका—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवचंद्र यात्रपेयी, ग्राम—बुभारा, बाक्यर—श्रीतीर्थ मिश्र-अम्नाय (अक्षय) ।

संख्या ६६ सी मांगीत ईश्वरामजनु, रचयिता—विसराम, कागज—द्वैती, पत्र—१२, आकार—८ X ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुपुप) १९८, रूप—प्राचीन लिपि—जागरी, लिपिका—सं० १८९० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—शं० रामनरेशसिंह, ग्राम—तारापटव-निवाहा, बाक्यर—महिषा बुहर्गा, त्रिका—तीरी (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ सांगीत लैला मजनु का लिख्यते ॥ दो० ॥ सुन खवाम महवूव की विरहा वचन विचार ॥ जा लैली मे अङ्ग कर मजनु डाढ़े द्वार ॥ जो तुम खाम हो इतनी कहे सुनाय । मजनु तालव डीठ का सडा रहै या जाय ॥ चो० । होगा अहसान बहुत मुझ पर तेरा । तन मन कुर वान सभी तुझ पर मेरा ॥ आया हूँ छोड़ माल मुलक खजाना । फिरता हूँ डीठ का मैं विस के दिवाना ॥ लैली से अरज इतनी कीजै । मजनु उम्मेदवार दरशन दीजै ॥ दीजै डीठार मुअं लैला प्यारी । तुम तो हो शाह और मैं हूँ भिपारी ॥

अत—चाँवोला । मजनु का ॥ आशक का विसराम कहां भावे प्यारी । आशक का काम है इक याद तुम्हारी ॥ आशक है श्रेफता गुल आलम जानी आशक पेदावर गुदा आप खजानी ॥ इति श्री सांगीत लैला मजनु विमराम कृत समाप्तम् लिपित प्रमुठ्याल कायस्थ श्री वास्तव छपरा निवासी चैत्र शुक्ल नवमी सवत् १८६० वि० ॥ ओ३म् गगा जी की जय । राम राम राम

विषय—लैला मजनु का प्रेम वर्णन

संख्या ७०. भक्त विनोद, रचयिता—बोधमल्ल (कागड़ी टोला, लखनऊ), कागज—नीला मोटा, पत्र—४६, आकार—७ $\frac{3}{4}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुपुष्प) ४१४, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, लिपिकाल—सं० १९८० = १९२३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पुरे परान पाडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली (अवध) ।

आदि—दो० सत गुरु समरथ साहव, तुम्हरि न मोहिं अलम्भ । ज्ञान प्रगट कछु होय मोहिं, कथा करौ आरम्भ ॥ निज गुरु सत गुरु सत गुरु, तिन्ह गुरु का वलिहारि । कृपा करहु साधन सहित, कीरति कहीं तुम्हारि ॥ छट—जे सिधि दायक, भगतन नायक एक दंत वलिहारी । गिरजा शिव वालक जन प्रति पालक विनती सुनुहु हमारी ॥ मो मन यह आई कीरति गाई तन धारी भगतन केरी । जब होहु सहाई बुधि कछु पाई वार २ कहि के देरी ॥

अंत—दो० बोध केरि यह विनती, भक्त हु सुनि चित देहु । जडताई औ मोह मद, मो मनते हरि लेहु ॥ सो० पढ़हि सुनिहि जो कोय, भक्त विनोद सुअथ यह । भला ताहि का होय, कठिन कर्म कटि जायँ सब ॥ दो० बोध मछ के सतगुरु, कृपा कीन्ह मरपूर । पढ़े सुने चित लायकै, पाप होहि सब दूर ॥

विषय—श्री सतगुरु जगजीवन साहव महाराज जी का जीवन चरित्र वर्णन ।

संख्या ७१. जोग वशिष्ठ, रचयिता—बोधीदाम, कागज—साधारण, पत्र—६१, आकार—५ $\frac{3}{4}$ × ३ $\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ ७, परिमाण (अनुपुष्प) ५३४, खडित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७५ = १८१८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० देवकीनदन शुक्ल, ग्राम—रामपुर गधौली, डाकघर—सप्रामगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—पृष्ठ—८४—८५ ॥ दोहा ॥ ब्रह्म बिलोकि ब्रह्म को ब्रह्म ब्रह्म को पाये ।
 ब्रह्म ब्रह्म सौं बोई ब्रह्म ब्रह्म घर जाय । सौरदा ॥ अस जाग विद्यान, मनसा बाधा धमना ।
 आप होय निर्बान, अपर न जानि ब्रह्म तकि ॥ श्रीपाई ॥ जाठ ही सब को धा मन उर बासी ।
 हम सरबग्य ब्रह्म अभिनासी ॥ आदि अंत हमरा कसु माहीं । हम सब ध्यापीक ठिडु पुर
 माहीं ॥ हम मिरई हम करै सँघारा । हम पाई हम अरुप अपारा ॥ अस विवेक जाके उर
 माहीं । ईसन काल तामु परिछाही ॥ इच्छा रही ब्रह्म को माई । घर-घर ध्यापी रहै सब
 सई ॥

अंत—पृष्ठ—१२१ व १२२ ॥ दोहा ॥ नीमो तन तेब ही सो जान, जोही ही परम
 पद् कीन । बहुरि बिलोकि ठाहिने, जानि परो बपु मीन ॥ किमि नर की पैसै न, सब
 विमरै सुप उलब । तीमि मूक तन मन, समापु अब तनु मो ॥ सौरदा ॥ ब्रह्म कहि को
 ग्यान कहा मकल में गाणैकी पाबहि पद् निर्बान, जो मुन दिष्ट बयाब ही ॥ जोग बरिष्ट
 अपार ई, गुन मी ग्यान निपाव । दास बोधी कसु जया मती कीमती कया वपान ॥ सम्बत्
 १८७२ साल में लिख ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ८२ तथा ८७ से ८८ तक—सुप्त । (२) पृ० ८३
 से पृ० ८६ तक व पृ० ८९ से पृ० १०० तक—सब में एक ब्रह्म के ही होने का कथन,
 सब बस्तुओं को निम्नार समझना तथा ब्रह्म की मार बस्तु मानने का उपदेश, परमात्मा
 के निराकार होने का कथन । ध्यान की महत्ता, भक्ति में प्रेम का प्राधान्य, बुद्ध सुप्त की
 समता का वर्णन, तत्वादि संबंधी रूपक, ब्रह्म के रूपक में जीव तथा आत्मा का संबंध ।
 ब्रह्म विवेक होने का विधान । अहम् ब्रह्मोपदेश । (३) पृ० १०१ से पृ० १२२ तक—
 ईश्वर के केवल एक होने का वर्णन, तन क उद् होने का वर्णन परब्रह्म के रह में होने के
 उदाहरण ब्रह्म तेब का वर्णन बुद्धिवा बिनाया से ब्रह्म में रत होने का कथन ब्रह्म की व्याप
 कता तथा ईश्वर्यता का निरूपण, सत्य का ग्रहण तथा असत्य का त्याग, मन की संबलता,
 ब्रह्म ज्ञान का वर्णन, धंय पढ़ने का फल व प्रथ निर्माण कारण ।

सतया ७२ प, ब्रह्मविद्यास, रचयिता—मद्रासासीशम, कागत्र-साधारण, पत्र ११३,
 आकार—१२ $\frac{३}{४}$ X २ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप)—१००००, पूर्ण,
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—जागरी, रचनाकाल—सं० १८२७ = १७००ई०, लिपिबद्ध—सं०
 १८९५ = १८१८ ई०, प्राप्तिस्थान—अक्षर गपादीन सिंह, जमींदार, ग्राम—जोगीपुर, छाकपर
 रघरा, बिला प्रतापगढ़ (अजय) ।

आदि—धी गणैतायनम ॥ जय श्री कृष्ण चरित्र ब्रह्म बिलाम छिप्यवे ॥ सौरठ ॥
 होन गुनन की फनि, जाके गुन उर गुनत ही । द्वा सो कृपा निधान, वामुदेव भगवत हरि
 ॥१॥ मिठत ताप प्रै ग्राम, जामु नाम मुपन कहत । वंही सो मुख राम नंद मुखन सुंदर
 सुन्दर ॥२॥

अंत—॥ सौरदा ॥ यहि बिधि कही बुझाइ महिमा हूत्र गोपीन की । ध्याय कही
 मोह गइ । पावन बहुरि पुरान को ॥ ब्रह्म बामी गाऊं मरा, जम्भ जम्भ करि नैद । मरे

जपतप वृत यहै । फलदीजै पुनि एह ॥ इति श्री वृज विलासे सच सुप रासे भक्ति प्रकासे
कृष्ण वृजवासी दासे भाषा कृते समस्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्री कृष्णायनमः जो प्रति देपा सो
लिपा मम दोष नदीयते ॥ दसपत गंभीर सिंह वछ गोती सवत् १८९५ शाके १७६०
कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे भौम्यवासरे गते पूरन सुभ मस्तु ॥ हरेनमः ॥

विषय—श्रीकृष्ण-चरित ग्रथ निर्माण काल :—सम्बत् सुभ पुरान सत जानो । तापर
और नछत्र न वानो ॥ माघ सुमास पक्ष उजियारा । तिथि पचमी सुभग ससि वारा ॥ श्री
वसत उत्सव दिन जानी । सकल विश्व मन आनदँ दानी ॥ मन में करि आनद हुलासा ।
वृज विलास करि कियो प्रकासा ॥ ग्रथ कार के गुरु का परिचय :—

श्री मोहन जी नाम गुसाईं । सुदर स्याम स्याम की नाईं । × × × तिन
तीरथ पति मधि दियो, कृष्ण नाम मोहि टान । दीन जानि राप्यो सरन, लगि के मेरे
कान ॥ व्यास तथा सूर की वन्दना, अन्य सन्तादि की वन्दनाएँ ।

संख्या ७२ वी. ब्रजविलास, रचयिता—ब्रजवासी दास, कागज—देशी, पत्र-२९६,
आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ४८, परिमाण (अनुपट्टप) ९६६०, खडित,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—
पं० श्यामविहारी, ग्राम—कवरा, डाकघर—महमूदाबाद; जिला सीतापुर (अवध) ।

आदि—अंत—७२ ए की तरह ।

संख्या ७३ ए जोतिप विचार, रचयिता—बुध (काशी), कागज—देशी, पत्र-२४,
आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुपट्टप) ३३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४० = १७८३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामदुलारे
मिश्र, ग्राम—गणेशपुर, डाकघर मिश्रिख, जिला सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ज्योतिप विचार लिप्यते ॥ दोहा ॥ सुमिरि राम
घन श्याम उरैं धरैं धनुष बुर वान । अव ज्योतिप के ग्रंथ को वरनत बुध समान । काशी
को वासी कहत मैं पडित मति मंद । भाषा जोतिप की करौं सुनौ सकल बुधि वंत ॥ अच-
रज अज कमलज करत कमलज अज ते खर्व । सिंधु बुद अरु बुंद ते सिंधु सुगम सुप सर्व ॥
जोतिप जाको रूप है रेपि निमेष अरु इंद । तिथि दिन जोग नक्षत्र शिर छत्रमड ब्रह्मंड ॥४॥

अत—वल वर्ण ज्ञान ॥ चद होय तन भवन के देपे तन को सोइ तौ गोरो उज्जल
वदन अति सुंदर सुत होय । इति ज्योतिप विचार सपूर्ण समाप्त । लिपतं गंगादीन तिवारी
विसवा मध्ये सवत १८४० कैत्र शुक्ल परिवा ॥ श्री

विषय—ज्योतिप

संख्या ७३ वी. ज्योतिप विचार, रचयिता—बुध, कागज—देशी, पत्र—४०,
आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुपट्टप) ५६०, पूर्ण, रूप—
प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१७ = १७६० ई०, लिपिकाल—सं०
१६२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगादीन मुराज, ग्राम—लक्ष्मणपुर, डाकघर—
मिश्रिख, जिला सीतापुर (अवध) ।

आदि—मंत्र—७३ पृ. के समान ।

सख्या ७३ सी म्यातिप विचार, रचयिता—बुध, कागज—दही, पत्र २४, आकार—
८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुच्छेप) २००, रूप—प्राचीन, पत्र,
लिपि—नागरी, लिपिकाळ—सं० १८००, प्राप्तिस्थान—पं० मन्विषा विहारी, ग्राम—
विजेगाँव डाकघर—कमालपुर, जिळा—सीतापुर (अजय) ।

सख्या ७४ बुध जन सत सही, रचयिता—बुध जन, कागज—दही, पत्र ६४,
आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३०, परिमाण (अनुच्छेप) ६४०, रूप—
प्राचीन, पत्र, लिपि—नागरी, रचनाकाळ—सं० १८९३ = १८३८ ई०, लिपिकाळ सं० १९०२ =
१८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—शाला प्रभूदयाळ, ग्राम—आळमनगर, डाकघर, लखनऊ ।

आदि—अथ बुध जन सत सही लिप्यते ॥ दो० । सबमति पद् सनमति करन
बंधू मंगळ चार । करन बुध जन सत सई जिज पर दित करतार । १ ॥ परम धरम करतार
हो मन्विजन सुप करतार । जित बंधन करवा रहूँ मेर गहि कर तार ॥ २ ॥

अंत—बुध में तो कृत कृत सब भया करण सरण सब पाप । सब कामना सिब
भई हर्ष हिये न समाह ॥ इति श्री बुध जन सतसही जितनी मिछी तितनी लिपी । लिपतं
बाबू राम मिश्र सचत् १९०५ वि० ॥

विषय—इस ग्रंथ में कुल ७०० दोहे हैं परन्तु इस प्रति में ७०० से कम हैं । इसमें
भगवान् श्री महिमा और भक्त के विषय का वर्णन है ॥

संख्या ७५ पृ. आनंद पंड (पृथ्वीराज रासो), रचयिता—बद कवि, कागज—
दही पत्र—१०९ आकार—९ ३/४ × ६ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुच्छेप)
१४३१, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाळ—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—
पं० कृष्ण विहारी मिश्र ग्राम—नवागाँव, माहेल हाउस लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ आनंद पंड लिप्यते ॥ वीहा ॥ कइय बंद गुल छंद
पदि ओषठ वंगळ साह ॥ आहु आन बंधुळ कुळ बंधुळ उपजन होइ ॥ १ ॥ आहु आन
पुण्ड बगदि कीन परस किन माम ॥ कीन बार को तियि मुकषि की बिचार निवास ॥ २ ॥
आह सी चासीस इक जुळ अनुळ भर होइ ॥ आतिक मुदि बुध ओइसी समर सामि क
कोइ ॥ ३ ॥ आठ सहस असचार पत्रि परस्वान गुप कीन ॥ पूरब विसि गमन किय सुआ
बचन मुनि सीन ॥ ४ ॥ छप्पय ॥ सयद् सिधिरि गइ परनि राज विन्कीय विम चहिय ॥
पाठयादि मुनि पवरी धाई विष हीरब मिश्रिय ॥ सचळ सिमिदि मार्गठ चैद कम माम
पुत्रि बर ॥ अहिय बुध चहुवान गहिय प्रभिराज आपुम्बर ॥ राजपूत हट पंचा सरण
मुहिय पर सेवा धनिय ॥ पद्मान साहि इगजार पर जीति बन्धो समर धनिय ॥ १ ॥

अंत—आहु आन दिही नगर कीनी नुपति प्रवेश ॥ घर घर मंगळ गाय हीं अयो
जीति बरेस ॥ मंशिम हाय दुम्भार ये बोळि इजूर नोम ॥ इय गय मनि मानिक बरुमि
अथ आसन अथ देय ॥ १ ॥ और सूरमा मंत्र सब घर इनाम पदुचाइ । इह प्रमथ पैठो
तपन मीढह नमरि राइ ॥ २ ॥ पाद्ये मुनि कछु कीत्रिये यथा सक्ति सनमान ॥ कबहुँ
हारन आचही पांच पचास प्रमान ॥ ३ ॥ जो न देय कछु मुनि मया हाय न कपहुँ जीत ॥

वहु कलेस पीड़ा वढै रहै न चद सुगीत ॥ ४ ॥ आल्ह पड पूरन भयो कएो चंद्र कविराय ॥
पढै सुनै सीपै रहै ताको सुभट सहाय ॥ १ ॥ इति श्री चंद्र विरचितायां आल्ह पंड
सम्पूरन ॥ धैनाप मासे कृष्णपक्षे तिथौ पचमय भृगुवासरे मिदं पुस्तक सवत् १९१६ प्रतियया
देपी तथा लिपित मम दोपो नदीयत्ते ॥

विषय—दिल्लीपति चौहान पृथ्वीराज की महोत्रे पर जीत ।

संख्या ७५ वी. पद्मावती पद, रचयिता—चंद्र, कागज—देशी, पत्र—१४,
आकार ९ ३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुष्टुप) २०२, रूप—
प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्ण
विहारी मिश्र, मु०—नयागाँव, माडेल हाउस, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ श्री राधा रमनो जयति ॥ अथ पद्मावती पंड लिप्यते ॥
दोहा ॥ पूरव दिसि गढ़ गढ़नि पति समद मिपरिगढ़ दग ॥ विजय पाल राजा रहत जादव
कुलहि अभग ॥ १ ॥ हय वितंड जाकै बहुत पातसाहि जिमि चाल ॥ प्रवल भूपमेवन रहत
कहत करत मोहाल ॥ २ ॥ छप्य ॥ धन निगानि बहुसाय नाट स्वर वजत पच टिन ॥
दस हजार हय चढ़त हेम नग जटत साजतिन ॥ गज अनेग सत पाँच प्रवल सेना तहं
लप्यह ॥ इक नायक दलन चल भमामत सुरप्यह ॥ दम पुत्र एक दारा विमल दया
धरम चौकस उधर ॥ भंडार लछि मालिक अधिक पद्म मैनि कुंवर सुघर ॥ दोहा ॥ पद्म
सेनि कुंवर सुघर ताघर नारि सुजान ॥ ताकर (इक) पुत्री प्रगत भइ मनहु कला
ससिमान ॥

अंत—दोहा ॥ घायल परे अचेत रण अरु गुण मजरि वान ॥ भये चेत जेतै उठे
दिल्ली चले विहान ॥ २ ॥ सो मग भूले परि गये वाट महोत्रे माहि ॥ विकल बहुत मोहे
सुनर कट्टु भई सुधि नाहि ॥ ३ ॥ वाग मध्य डेरा कियो राजा वर परिमाल ॥ वरजे
माली ने जहाँ पथर दियो कराल ॥ ४ ॥ लग्यो आइ रजपूत कै रिस करि दीन्ही तेग ॥
गिरयौ शीश कटि धुकि धरा मन्यो सो माली वेग ॥ ५ ॥ इति श्री सुकवि चंद्र विरचिते
श्री आल्हा खड की सूचीका की भूमिका श्री पद्मावती पद सपूर्ण समाप्त सुभ भूयात ॥
संवत् १९१५ ॥ मिति फाल्गुन पप शुक्ले ६ भृगुवासरे तिथि श्री मन्महाराज कुंवार श्री
व्याघ्र वंसावतसे श्री कुमार लछिमन सिंह प्रति लिपयतं ॥

विषय—पद्मावती खड—अर्थात् विजयपाल राजा की पुत्री—कुमारी पद्मावती का जन्म
उसका सखी सहेलियों के साथ वन उपवन में भ्रमण करना । उसपर राजा पृथ्वीराज
चौहान का आसक्त होना उसे हर ले जाना पश्चात् लडाई होना आठिका इसमें वर्णन है ।
यह आल्हा खड की लडाई का पूर्व वृत्तान्त है ।

संख्या ७६. नाग लीला, रचयिता—चंद्र कवि, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—
६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३६, परिमाण (अनुष्टुप) १८०, खडित, रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७५ = १६५८ ई०, लिपिकाल—सं० १८०२ =
१७४५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रघुवीर चरण मिश्र, डाकघर—विल्हौर, जिला—कानपुर ।

आदि—सिद्ध श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वते नमः श्री परमं गुह्यं नमः अथ
 नाम स्वीका लिख्यते ॥ श्री गुण पति गुण विस्तरौ सिद्धि बुद्धिदातार ॥ अष्ट सिद्धि नव सिद्धि
 तुष्टि करिय कृपा करतार ॥ अरिह ॥ वे मुनि गुण गोपयं के गयेँ बिना भाव करि चरन
 मनार्थ सुंदाहक सुमिरन चित्त कार्य । ते अचिम सुपि संपति पार्थ ॥ दो० । सुप सपति ते
 पावहीं हय गय रुधि अपार । सुंदाहक कृपा कर विस्तर मोग मंदाह ॥ अरिह ॥ हेम छत्र
 मुकता मनि तौमिर सौहिधं । नग मुकता बरुहार अनूपम राजहीं ॥ परि हांकुंकन करि सुद
 मुनूपर बावहीं ॥ मुरिह ॥ नूपर सबद अनूपम बाँ अन्वद सबद भार भन गाँ ॥ सुर भर मुनि
 सुप श्रीरुद्र माहक । बाहन हंस बुद्धि बरु दाहक । तुव तव अतिबर दाहका किये मूढ कवि-
 राई । बुद्धि विविध कवि चंद को र्द भव सारद माह ॥ अरिह ॥ संबत सी हय पच कर्म छनि
 सी सही । मुदि सावन तिथि पंचमी चंद कवियों कही । मंदा प्रंय गुण मूढ महा बुध बा
 है परिहां नाग दहन को छंद करयो विस्तार है ॥

अंत—छरो पियाक व्याक सीं तिन्ही तीं काक सों कहीं ॥ जगाव बेगि नाग कीं ।
 प्रचारि लज हीं करीं । पुनं पुनं सहस्र तीं । उतारि विप कीं धरीं ॥ भगंत नाग पुत्रिका ।
 समुत्ति बोल मुख ही गऊ तीं छपर्यं दुर्षं कुं म तंनं बुध ही ॥ हूते साधु बाकिके । रहे
 न कष्ट हाय मैं । मुठम काल क्रोध को । भरी म भम्म बाव सी । पी बाहु ग्रह जापु के ।
 मिस्यं कुट्टव तात के । रमीं लु गाद माहु की । कनो कलोस निच कीं ॥ कही न कान्ह
 मावहीं । भली बुरी न जान हीं । पछारि सेस कीं बरुं । तीं मंद को सपुतई ॥ एं कांविने
 सयी विबाद । मुप तीं न लावहीं । गवारि अति भापु तीं सुबात कील पावहीं ॥ बरुसिये
 हने कला कहीं मुदाय चारि के ॥ पुमी परी सोई करी । पी मुत्ति सीन सोर के । निदान
 लज जो करे ॥ तीं रूँकि देवीं तात को जो हुकुम वे करे ॥ ता अित पत्र पाहही । जरी गौ
 नाम तीसर तर्ष तीं बेगि आहयो ॥ कविच ॥ तप लु पीत्र करि कृप्य रो सरिस करि अदि
 करिय ॥ हीं श्री पति अनुनाय बास मुनि परंग मारिय ॥ एं लु कदे म्रह जाहु कुट्टम पृथि
 फिरि भाईं । तव तहाँ कहीं पद होइ बहुरि सो को कित पाईं बहुरि म समधी कदि हीं
 छा सीं छादि न पीद बहुरि न पंचग मिले किराँ श्रीगान कित गेद ॥ अपूर्ण ॥

विषय—श्री कृष्णजी का जन्म, पतना, अथा बका सकृतामुर आदि का मारवा
 और नाग कीसा ।

संयथा ७७ काव्यामरण रचयिता—चंदन कवि (रायचरोली) कागज—द्वैती,
 पत्र—१४, आकार—१२३ X ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २९, परिमाण (अनुपुष्ट) ३०५,
 पूर्ण, रूप—मबीन, पद्य । कवि—नागरी, रचनाश्रवण—सं० १८४५ = १७८८ ई०,
 कविश्रवण—सं० १९४४ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णबिहारी मिश्र, मादेक
 हाउस, अमरकट ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मंगलाचरण दोहा ॥ महारंज देवी तर्न गजप्रयक
 चरवाणि । पद चंदन विधि आनिष चंदन सब विधि क्षानि ॥ १ ॥ अमरी मुखरी कृच मन्त्र
 अमरी कचरी भार ॥ गौरी पद पञ्च बुरिग बुरी करन विचार ॥ २ ॥

अंत—दोहा ॥ ग्रंथ संस्कृत देखि मैं समुझि अलंकृत अर्थ ॥ जया तथा ही मैं कह्यो
जनिहै बुद्धि समर्थ ॥ ६७ ॥ अधर मधुरता कुच कठिन दृगतीक्ष्णता योग ॥ कविता के परि-
पाक को जानत विरले लोग ॥ १६५ ॥ इति श्री कवि चंदन विरचिते काव्याभरणे
अलंकार निरूपण समाप्तं शुभम् संवत् दोहा ॥ संवत् शशि निधि वेद श्रुति माधव वदि
ग्रह मद निजकर जुगुल किशोर लिखियदा श्री हरि सुख कंद ॥ संवत् १६४४ वैशाख कृष्ण
६ शनी श्री राधा रमण की जै ॥

संख्या ७८ प. अमरलोक निज धाम लीला, रचयिता—चरनदास (देहरा अल-
वर), कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण
(अनुष्टुप) १७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६२८ = १८७१ ई०,
प्रासिस्थान—प० राधा वल्लभ, ग्राम—खैराबाद, ढाकघर—राजेपुर, जिला—उन्नाव
(अवध) ।

आदि—श्री राधा कृष्णभ्यांनम ॥ श्री सुखदेव जी सहाय ॥ अथ श्री महाराज
स्यामचरण दासजी कृत अमर लोक निज धाम लीला लिप्यते ॥ दो० । परणम श्री सुखदेव
कूँ सोहैं गुरु दयाल । काम क्रोध मोह लोभ सौं काटैं मेरे साल ॥ १ ॥ वानी विमल प्रकास
दी बुधि निरम की तात, मोहिं मूरप अज्ञान कूँ नहिं आवत ही वात ॥ २ ॥ अमर लोक चर-
नन करूँ वेही करै सहाय । दृष्टि हिये में योलि के सबही दई दियाय ॥ ३ ॥

अत—प्रेम बढ़ै अथ सब हरै कजह कल्पना जाय । पाठ करै या लोक को ध्यान
करत दरसाय ॥ इति श्री अमर लोक निज धाम निज स्थान पुरुषोचम पुरुष विराजमान प्राप्ते
नरो दुर्लभो ॥ इति श्री सुखदेव जी के दास चरनदास जी कृत अमर लोक लीला संपूर्णम्
लिपितं कार्तिक शुक्ला १५ रविवारे संवत् १९२८ वि० शा० १७९३ ॥

विषय—अमर लोक निजधाम लीला में मनुष्य शरीर की दशा का वर्णन ॥

संख्या ७८ वी. भक्ति सागर, रचयिता—चरनदास, कागज—देशी, पत्र—३१८,
आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३६, परिमाण (अनुष्टुप्) ६४००, रूप—
प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८१ = १७२४ ई०, लिपिकाल—सं० १८४० =
१७८३ ई०, प्रासिस्थान—प० गणपति जी दूवे, ग्राम—नयागाँव, ढाकघर—सादरपुर,
जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भक्ति सागर लिप्यते ॥ श्री त्रिसुवन चंद्रायनमः
श्री सुपदेव जी नमः श्री कृष्णायनमः ॥ प्रह्लाद नारद पारासुर सुक ॥ व्यासावरिक सुक
सौनक भीष्म काद्या । रुक्मा गदारुज विसिष्टि विभीषणाद्या । एतान्हं परम भागवता
नमामि ॥ १ ॥ हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
अथ श्री महाराज साहिव चरनदास जी कृत ग्रंथ भक्त सागर लिप्यते ॥ मथुरा मंदल परम
पवित्र सकल शिरोमन धाम वृजचरित्र वर्नते ॥ श्री सुपदेव गुनाई का गुलाम ॥ अथ श्री
चरनदास कृत व्रज चरित्र वर्नते ॥ दोहा ॥ दीना नाथ अनाथ की विनती यह सुनि लेव ।
मम हिरदे में आयकर, वृज कथा कहि देव ॥ चार वेद तुमको रटे' शिव सारद गन्नेश

भीरन सीया मवाय हूँ । श्री कृष्ण करा उपदेश ॥ श्री गुरु के गाँविके हूँ भक्ति के हरिदास । सब हुन हूँ पूर्व गिर्ने जैसे पुहुप और बास ॥ नारद मुनि और व्यास जू किरपा करके दयाल । अक्षर मूर्खी जो कई कहे मोहिँ तलझाल ॥ श्री सुपदेश दयाल गुरु, मन मरतग पर ईस । किरक बरिचर कहत हूँ तुमहिँ नवाहँ सीस ॥

अंत—॥ दो० ॥ चरनदास हित हूँ किया प्रथम अनेक प्रकार । अष्टादश जी चार को ब्रह्म कियो तलसार ॥ श्री० । संघण सखह से इन्धासी रीज मुदी तिथि पूरन मासी । मुकुल पक्ष दिन सोमहिँ बारा स्तू प्रथमों कियो विचार ॥ तबही हूँ अयापन धरिया कस्तु हूँ बानी बादिन करिया ॥ धीमेही पांच हजार बनाई । नांच गुरु के गंग बढ़ाई । फिर भाई बानी पांच हजार । हरि के नांच अगिन में जारा ॥ सीजे गुरु अज्ञा सो कीनी सो अपने संतन श्री हीनी ॥ अद्भुत प्रथम महा सुपदेश ताकी सोभा कही न जाई । तामे ज्ञान योग बैरागा । प्रेम भक्त जामे अनुरागा निरगुन सरगुन सबही कहिया । फिर गुरु चरन कमल में रहिया ॥ जो कोह पति पति अर्प विचारे । आप ठिरे भीरन हूँ तारे ॥ जामे किया न करनैहारा गुरु हिरदे में व्याप विचारा ॥ चरनदास सुप सी सुप देवा । ज्ञान कहे चारों ही मेवा ॥ इति श्री महाराजा साहेब श्री चरनदास जी कृत प्रथम भक्ति सागर संपूर्ण ॥ दोहा ॥ अरु धूत सों रिया क्यो मूरुप हाय न देख । डीछो कर नहिँ वाँछिये प्रथम कहत यह मेव ॥ कुडकिया ॥ तुक अक्षर को काट कर शब्द बना बन हार सीतो कहिये आपनी महतारी को चार ॥ मह तारी के जार और की साय जुराचै शब्द किसी का होय । आपना भोग छगाने होय बिसन पद भीर का धरे और का नांच । चरनदास कई खोर वै बसै जमपुरी गाँव ॥

श्री चरनदास जी का दास गुरुभगतानंद (मुहर)

विषय—भक्तों का वर्णन ।

संख्या ७= सी भक्ति सागर या ब्रह्म वर्णन, रचयिता—चरनदास (देहरा, अकबर), कागज—गुली, पत्र—३२०, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३८, परिमाण (अनुपुष्ट) १८४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १०८१ = १०२४ ई०, प्राप्तस्थान—पं० कलकत्ताप्रसाद हूँ, ग्राम—अदवापुर, आकबर—मिथिला, विद्या—सीतापुर (अजय) ।

संख्या ७= श्री ब्रह्मज्ञान सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा अकबर) कागज—वेसी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुपुष्ट) २२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८८ = १८३१ ई० प्राप्तस्थान—अकबर रामसिंह, ग्राम—रामपुर, आकबर—मगगाक, विद्या—उम्माव (अजय) ।

आदि—श्री रत्नेशायनमः ॥ अथ ब्रह्म ज्ञान सागर लिप्यते ॥ दो० ॥ जैसे हैं सुपदेश जी ज्ञानत सब ससार । श्रावत मत परगट कियो जीव किये बहुवार ॥ तिन मोहि किरपा करी दियो ज्ञान विज्ञान । सो सिप तुमहूँ कहत हूँ हूँ सब अज्ञान ॥ सिप्य मुनी व्याज कहत ही परम पुरातम ज्ञान ॥ निगुन श्री नहिँ हीत्रियो जाके तप की हानि ॥

अंत—दो० ॥ अनेक गुरु सुपदेश जी चरनदास सिप होय । आप राम ही राम है

गई दुईं सब पोय ॥ ब्रह्म ज्ञान पोधी कही चरनदास निरधार ॥ समुझें जीवन मुक्त हो लईं
भेद ततसार ॥ इति श्री महाराज माहव श्री सुपदेव जी के दास चरनदास जी कृत ब्रह्म
ज्ञान सागर सपूर्ण ॥ कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे छठम्याम बुध वामरं मवत १८८८ वि०
शुभम् ॥ श्री राम जी सदा सहायकरं ।

विषय—ब्रह्म ज्ञान वर्णन ॥

संख्या ७८ ई०. ब्रह्म ज्ञान सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर), कागज-
देशी, पत्र-१६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप्) २२०,
रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८८ = १८३१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं०
देवतादीन मिश्र, ग्राम—सुलतानपुर, डाकघर—थाना, जिला—उन्नाव (अवध) ।

संख्या ७८ एफ. ब्रह्म ज्ञान सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर),
कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप्)
२२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८३६ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री रामदीन काछी, ग्राम—रस्तमपुर कलों, डाकघर—गुलजारपुर, जिला—उन्नाव
(अवध) ।

संख्या ७८ जी. ब्रह्मज्ञान सागर, रचयिता—चरनदास, कागज—माधारण, पत्र—
३३, आकार—५ $\frac{३}{४}$ × ३ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ७, परिमाण (अनुष्टुप्) ३००, रूप—
नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० देवकीनंदन शुक्ल, ग्राम—रामपुर गधौली, डाकघर—
सग्रामगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

संख्या ७८ एच ज्ञान सरोदे, रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर),
कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—७ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण
(अनुष्टुप्) ३२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८६ = १८२९ ई०,
प्राप्तिस्थान—पं० उमाशंकर दुबे, डाकघर—सडीला, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दो० ॥ नमो नमो गुरुदेव जी परिग्रम करो अनन्त । तुम
प्रसाद सुर भेद को चरनदास वरनंत । पुरुषोत्तम परमात्मा धरन विस्वा वीस । आदि पुरुष
अविचल तुही ताहि नवाऊ सीस । ऊडलिया । छर ॐ सौ कहत है अक्षर सोहं जान । निरु
अक्षर स्वासा रहित ताही कौ मनु आन । ताही को मन आनि राति दिन सुरति लगावै
आपा आप विचारि और ना सीस नवावौ । चरणदास मत कहत है अगम निगम सीप ॥
पुही वचन ब्रह्म ज्ञान का मानौ विस्वा वीस । ॐ सौ काया भई सोह सौ मन होय ।

अंत—छप्यं—डहरे मौ मेरो जनम नाम खजील वपानौ मुरली को सुत जानु जाति
धूसर पहिचानौ बाल अवस्था माहि बरुनि दिछी में आयो । रमत मिले सुपदेव नाम चरन-
दास धरायो जोग जुगुति हरि भक्त करि ब्रह्म ज्ञान हठ करि गहो । आत्म तत्व विचारि
अजपा में मन सनि रहो । इति श्री ज्ञान सरोदे श्री चरनदास जी कृत भाषा सपूर्णम् लिपित
मिदं पुस्तक मिही लाले त्रिपाठिन = सवत् १८८६ शक = १७५१

विषय—स्वरोदय ।

संख्या ७८—आर्द्र जोग संदेह सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा, अरुवर),
 अंगार—श्री, पत्र—७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनु
 पृष्ठ) १०२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १८५८=१८०१
 ई०, प्राप्ति स्थान—पं० वैजतापीन मिश्र, ग्राम—सुकुठानपुर, बाकबर—घाघ, जिला—
 उन्नाव (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चरनदास जी कृत जोग संदेह सागर लिप्यते ॥
 हो० । अर्थ बटाबो पंडिता जानी गुणी महांत, जो तुम पूरे साथ ही मन्त्र हरि के संत ॥
 चरनदास पूरे जो अर्थ मेरी होय कही ॥ समझी तौ चरना करी माहीं मीन गही ॥

अंत—अभिष्ट । देयी है तमासो देह समझ के विचार केहु मूरय नर हीय जो या
 बात में हसीगो । अंते जो मारि सृग बप सिप सैं पाय गयो बाधनी को मारि जो एक सिंघ
 को प्रसीगो ॥ बिछी को मारि चूहे प्रेम को बगारो दिवो दासुर हू पांच सर्प मारि के वसीगो ।
 कहे चरनदास ऐसे वेरु से अगार्द आस चिरिबा के सीस टोरी बाज को छसीगो ॥ हो० पग
 लागू सुपदैव के अरि बाने जाव । गुप्त मेद मोसि कही सर्ष नांव अरु ठीव ॥ सी तुमसो
 पूछन करी हू परपन के दांप । या सागर संदेह को वीरि अथ बटाप ॥ इति श्री महाराज
 साहिब चरनदास कृत संदेह सागर संपूर्णम् माघ शुद्ध पंचमी संवत् १८५८ वि० ॥ श्री
 राम कृष्णायनमः ॥

विषय—विष्णु ब्रह्माण्डकथ आदि जो कुछ है उनका वर्णन ॥

संख्या ७८—जे जोग संदेह सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा, अरुवर),
 अंगार—श्री, पत्र—७, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण
 (अनुपृष्ठ) १०५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १८५८=१८०१ ई०,
 प्राप्तिस्थान—अपुर रामसिंह, ग्राम—रामपुर, बाकबर—मगराहर, जिला—उन्नाव (अजय) ।

आदि—अंत—पूर्ववत् । पुष्पिका इस प्रकार है :—

इति श्री महाराज साहिब चरनदास कृत संदेह सागर संपूर्णम् श्री रामकृष्णायनमः
 माघ शुद्ध पंचमी संवत् १८५८ वि० ॥

संख्या ७८—जे जोग संदेह सागर, रचयिता—चरनदास (देहरा, अरुवर),
 अंगार—श्री पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण
 (अनुपृष्ठ) ११०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकार—सं० १८६२=१८०५
 ई०, प्राप्तिस्थान—अगत रामदीन, ग्राम—इस्तमपुर कर्तौ, बाकबर—गुज्जारा पुर, जिला—
 उन्नाव (अजय) ।

आदि—अंत—पूर्ववत् । पुष्पिका इस प्रकार है :—

इति श्री महाराज साहिब चरनदास कृत संदेह सागर संपूर्णम् । श्रीराम कृष्णाय
 नमः ॥ पीप बड़ी तैरस संवत् १८६२ वि० राम राम राम सीता राम०

संख्या ७८—एक पंच उरनिपर अथवच वेद श्री भाषा रचयिता—चरनदास
 (देहरा, अरुवर), अंगार—श्री, पत्र—२८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)

२८, परिमाण (अनुष्टुप्) ३६०, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८८ = १८३१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवगंज शुद्ध, ग्राम—नैतापुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पञ्च उपनिषद् अथर्वण वेद की भाषा लिप्यते ॥ प्रथम हम नाद लिप्यते ॥ वदन श्री सुपदेव कू उनको हिये में लाय । त्रिषो भेद प्रगट कियो परमारथ के दाय ॥ सहस्र कृत भाषा करी ताफे यह दिष्टात । बोल पोल सबही कही समझें छूटै भ्रात ॥ जू कुण से नीर ले बाहर दियो भराय । बिना जतन कोई पियो निरपा वंत श्रवाय ॥ यों दीनी सुपदेव ने में जल कादनहार । प्यामा कोई न जाइ यो देखें वारवार ॥

अंत—जाति वरन कुल मन गया गया देह अभिमान । अपने सुप सू कहा कहूँ जगही करै वपान ॥ रहे गुरु सुपदेव जी में में गठ नयाय । मैं तं तै मैं वही है नप मिय गहो समाय ॥ इति श्री चरनदास जी कृत पञ्च उपनिषद् अथर्वण वेद की भाषा संपूर्ण ॥ कार्तिक मासे शुद्ध पक्षे पचम्या भौम वाग्ने संवत् १८८८ विक्रमी शुभम् ॥ श्री राम जी

विषय—पञ्च उपनिषद् अथर्वण वेद की भाषा । इसमें ज्ञान वर्णन किया है ।

संख्या ७८ एम. पट रूप मुक्ति, रचयिता—चरनदासजी (देहरा, अलवर), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण (अनुष्टुप्) २१०, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४८ = १७९१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बलदेव प्रसाद तिवारी, ग्राम—अटा, डाकवर—ककवन, जिला—फानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ पट रूप मुक्ति श्री चरन दास जी कृत गुरु चेले की गोष्ट लिप्यते ॥ छष्ये ॥ बोध रूप सो पुरप महा विज्ञान उजागर । अज्ञान तिमिर को दूरि करन ज्यों कोटि टिवाकर ॥ मेवि जनक विदेह देह जिन न्यारी कीनी । रहे राज के माहि सुरति कबहुं नही दीनी ॥ जिनके मिय सुकदेव हैं भगवत मत प्रगटत कियो । चरन दास परनाम करि तन मन धन वारन दियो ॥ १ ॥

अंत—॥ दो० । छहू मुक्त का भेद जो भिन्न भिन्न कहि दीन । जाकू ले हिरडे धरो छौना मिय परवीन ॥ चरन दास वरनन करी पठ नुक्तै ततमार । जैसी जाकी ममझ हो तैमी ले वो धार ॥ इति श्री चरन दास जी कृत पट रूप मुक्त गुरु चेले की गोष्ठी सम्पूर्ण समाप्त : लिपित देवगिरि गोसाई नैमिपार मध्ये संवत् १८४८ चैत्र शुक्ला ९ रामनवमी ॥ राम राम राम राम ॥

विषय—सालोक्य, सामीप्य, स्मरूप्य और सायुज्य मुक्तियों का वर्णन ।

संख्या ७८ एन स्वरभेद, रचयिता—चरनदास (देहरा, अलवर), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप्) ३२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—नागरी सं० १८८६ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—शु श्री शिवधारी लाल, ग्राम—ममरेजापुर, डाकवर—ब्रेनीगज, जिला—हरदोई ।

आदि—नमो नमो सुखदेव जी परिणाम करौ अनंत तुम प्रसाद सुर भेद कौ चरन

वास बरनत । पुरुषोत्तम परमात्मना पूज्य विस्वा बीस जादि पुरुष अविच्छुद्ध तुही । ताहि बधार्क सीस ।

अंत—धरती बध सगाइ करि दुसी बाइ को पैग । मस्तक प्राण चडाइ करि करि अमरपुर भोग—पाचौ मुद्रा साधि करि पावै बर को भेद । नारो महु चडाइपै पर बरकर को छद—

विषय—स्वरोदय योग ।

सुबपा ७२ श्री. सरोधय, रचयिता—चरनदास (वैहरा, भरुवर) कागज—दुसी, पत्र—२६, आकार—८×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुपुष्टय) २७३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १८८१ = १८३२ ई० प्रातिस्थान—पं० काकिका प्रसाद शूने, ग्राम—गौरिया रसूलपुर, बाकबर—मिथिला जिला—सीतापुर (अक्षय) ।

आदि—अंत—७८ पत्र के समान । पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री चरनदास कृत सरोधय संपूरण समाप्तः मितौ रीत बही १३ संवत् १८८९ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री हृदयाय नमः ॥

सुबपा ७३ पी. सरोधा, रचयिता—चरनदास, कागज—दुसी, पत्र—२०, आकार—६३×४६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२ परिमाण (अनुपुष्टय) ३६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्रातिस्थान—ठाकुर बानीबाब सिद्ध ग्राम—खरौही बाकबर—मोथाता, जिला—प्रतापगढ़ (अक्षय) ।

आदि—अक्षय चरनदास सरोधा लिप्यते ॥ होहा ॥ ममो नमो मुपदेवदू परमम करौ अर्नत । तुव प्रसाद सुर भेद को, चरनदा बरनत ॥ परमोत्तम परमात्मना, पूज्य विस्वा बीस । आदि पुरुष अविच्छुद्ध तुही, तोहि नबाऊ सीस ॥

अंत—धरति ररे गिरवर ररे । तुवर ररे मुनि मीत । बचन सरोधा ना ररे । गुरली सुत १न जीत ॥ इति ॥ चरनदास कृत सरोधा समाप्त ॥ हामम् ॥

विषय—पृ० १ से पृ० २० तक—गुरु बंदना, स्वरोदय का महत्त्व जाही विचार तथा स्वर भेद, बाहियों का निवास, स्वर स आकार क्रम, स्वर के द्विमात्र से पुष्पक के प्रश्नों के उत्तर, महानादि के द्विमात्र से स्वामोंके फल फल, स्वरोंके संबंध से कार्य करने का विधान ॥

(२) पृ० २१ से पृ० ४० तक—आमबाहि संबंधी कुछ साधनार्थ, स्वरों के द्विमात्र से बासक बासिका होने का विचार, स्वामा संबंधी संयम, मुक्ति वर्णन, ज्ञानी तथा अज्ञानी का भेद । तारों का वर्णन । ब्रह्म का सज्ञग, शरीरादि ज्ञान आत्म ज्ञान, अत्रया आय ॥

सुबपा ७४ स्वरोदय, रचयिता—चरनदास (वैहरा भरुवर), कागज—दुसी पत्र—१५, आकार—६×५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुपुष्टय) २१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्रातिस्थान—पं० रामबिक्रम, ग्राम—महारनगर, बाकबर—बंजर जिला—उन्नाव (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ स्वरोदय चरन दास कृत लिप्यते ॥ भाषा गद्य ॥

प्रथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश	तत्त्व का नाम	१
पीला	स्वेत	लाल	हरा	काला	तत्त्व का रंग	२
सामने नासिकासे १२ अंगुष्ठ बाहर आता है	नीचे होके नासिका से १६ अंगुष्ठ बाहर आता है।	ऊँचा होके नासिका से ४ अंगुष्ठ बाहर आता है ॥	टेढ़ा होकर अंगुष्ठ आठ नासिका के बाहर आता है	नासिका के भीतर रहता है	तत्त्व की चाल का प्रमाण	३
मीठी वस्तु की चाह	सलोनी वस्तु पर	तीखी वस्तु को	खद्ये वस्तु को	धुरे स्वाद को चाहै	तत्त्व की चहना	४
कठिन	सीतला	तृप्त	चर	थिर	तत्त्व की प्रकृती	५
नाभ के ऊपर	मगज	पिता	नाभ	सिर में रहता है	तत्त्व का स्थान	६
मुख	लिंग	दोनो नेत्रों से	दोनो नासिका से	दोनो कान में	तत्त्व का दर-वाजा	७
भोजन	मैथुन	देखना	सुंघना	शब्द	तत्त्व का भोजन	८
रोम	पित्त	नीद	वात करना	दुःख	आकाश	९
सास	विद अर्थात् जल	अंगदाई	हिलना	सुख	वायु	
नस	लोहू	भूख	दौड़ना	लाज	तेज	
चाम	पसीना	प्यास	वढ़ना	लोभ	जल	
हाड	थूक	आलस	सिमटना	भय	प्रथ्वी	

इस यत्र के देखने से बुद्धिमान मनुष्य एक एक तत्त्व की सहज ही पहचान सके है । उदाहरण इस यत्र के तीसरे चौथे कोठे में देखो

तत्त्व ज्ञान का यत्र

अत—कालज्ञान की रीति ॥ प्रथम दाहिने हाथ की मूठी बांध के मस्तक पे लगाय के पहुंचावे दृष्टि कर लिया करै छ' महिने पहिले मुट्टी और हाथ न्यारे न्यारे दीखेंगे ॥ फेर दूसरे हाथ की मध्यमा को मोड़के अंगुष्ठ की । जड़ में लगाय के शेष रही अंगुलियों को धरती पर जमाय के एक एक को उठाय के फिर जहा की तहा स्थित करै २ पहर पहिले मृत्यु काल से अनामिका उठेगी तीसरे दाहिना स्वर मृत्यु काल से २ वर्ष के पहिले २ रात २ दिन

चित चातुर चप चातुरी मुप चातुर सुप देन । कवि कोविद वरनत रहत सुप मुप पावन चैन॥
वाजी सौं राजी रहै ताजी सुभट समरत्थ । रन सुरे पूरेपुरुप लहहिं कामना अर्थ ॥ वाला
पन ते शरन रहि में सुय पाथो वृन्द । शालहोत्र मति देपि के वरनत चेतनचंद ॥ श्री कुश-
लेश नरेश हित नित चित चाह लह्यो । अश्व विनोदी ग्रथ यह सार विचार कथो ॥

अत—(घोड़ों के चित्र मय उनके अवगुणो के) (१) राल ढार घोड़े का संरूप
जिस घोड़े पर स्याह खत पडे हों उमको बुरा जानते हैं (२) सुतर दत घोड़ा (३)
पोपल घोड़े वे दात के (४) गज दांत घोड़े का रूप (५) स्याह तारु घोड़े का स्वरूप
यह अच्छा नहीं (६) फूलदार घोड़ा (७) सिकाल घोड़ा यह बुरा होता है (८) गामची
के पेच में कचरी का निशान (९) कलि का स्वरूप (१०) कुत्ते की जीभ वाले का
निशान (११) जो एक पैर की सफेदी दूसरे पैर की सफेदी का जवाव न रखती हो उसका
पतवार नहीं है ॥ (१२) अर्जुन घोड़ा बुरा है (१३) रकाव की सांपिन का मुंह सवार
की तरफ है (१४) अश्व के मुह पर सवजे का निशान (१५) देवमीन (१६) पैर की
गोम (१७) छत्रभग (१८) जिम घोड़े के हाथ में फूल है कमवस्त है (१९) चपदस्त
घोड़े को उस्ताद बुरा कहते हैं ॥ (२०) चंद सूर्य की भौंरी का निशान । आसू ढार ।
अवलख भौंरी । गर्दन पर सिंग । सूकरी मुख । अगला पैर घोड़े का सफेद है इसको अर्जुन
कहते हैं ॥ (२१) शाखदार घोड़े की पहिचान (२२) एक हड्डी का निशान (२३)
काना घोड़े का निशान (२४) तीन कान वाले घोड़े का निशान (२५) जरदे का सरूप
(२६) यह सुतलय कुम है (२७) पदम घोड़े की सवा का स्वरूप उसकी ईरानी मुराल
बुरा कहते है (२८) तीन कान वाले घोड़े का निशान (२९) यह असल रंग है (३०)
इस तसवीर में सिवाय एक देवमनि के सब नुकस हैं (३१) गावदुम घोड़े का निशान
(३२) जिसके वायें पैर सफेद हो उसको भुतना कुलय सार कहते है ॥

विषय—इस ग्रंथ में घोड़ों की जाति, रंग, भेद तथा ब्राह्मण क्षत्रिय वर्णादि निर्णय
तथा भौंरी आदि सर्व चिन्ह शुभाशुभ और रोगादि लक्षण और चिकित्सा उच्चमता के साथ
वर्णित हैं ।

संख्या ८० वी. शाल होत्र, रचयिता—चेतनचंद, कागज—देशी, पत्र—४६,
आकार—११ X ५ १/२ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपटुपू)—६५५, पूर्ण,
रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्रसिस्थान—ठाकुर वट्टी सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर,
ढाकुर—ब्रह्मसी तालाब, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ शाल होत्र लिख्यते ॥ दोहा ॥ नमो निरंजन देव
गुरु मारतड धमण्ड ॥ रोग हरन आनद करन सुप दायक जपिंड ॥ १ ॥

अत—अथ गोली सौ गुदफ की ॥ सिंगरफ १ । पैर २ । सुमिलखार १ । हिंग २५
मिरच २ । लौंग १२ ॥ सुहागा के फूल २ । पान सौ १९६ अदरप के रस में गोली बाधे
मौताद जरी के वेरकी ॥ अथ औफुतर की ॥ लोट सज तोल २५ । सोहागा फुलै के २५ ।
मनई के पोपरी जारिकै इह इजाज पै वै देइ पैसा दुइ भर तौ घुमर जाई ॥ इति ॥

विषय—विषय अर्थों की जाति लक्षण और चिह्नमा का वर्णन ॥

सख्या ८१ मक्ति विज्ञास, रचयिता—दशोक्तदास, कागज—देही पत्र—१७, कागज—१४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्)—११, परिमाण (अनुच्छेद)—१०६, लक्षित, रूप—प्राचीन, विधि—नागरी, प्रालिख्य—१० शालिग्राम शीघ्रित, ग्राम—जामु, डाक-घर—संहीटा, जिन्हा—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ मूलं प्रम तरोर्विभेक अलये पूर्णम्बु मानन्दः । वैराग्यां जुग मासकरं ह्ययनं ध्यातां चहं तापहं । मोहान्मोहर पूग पाटन विधी स्वसंमर्षं संकरं । बदे महा कुलं क्यक समनं श्री रामनूपमिषं । साम्प्रानन्द पयोद सीमग तनु पीतांबरं सुन्दरं पार्यं वाज सरादानं कटि लसत्पूरीं भारं बरं । रामीवापतकोचनं धृत अय जूटेन संमोमितं सीता लक्ष्मण सयुतं पयि गर्भं रामाभिरामं मन्त्रे । शो० प्रनम्य परम गुण्यद् पटुम नारायण नर रूप । करतु कृपा मति बेहु मोहि वामी चरितं अनूप ॥ १ ॥ दोहा राम प्रनत पुरन सञ्जक काम, बाम सुप सर्व । परम कृपाक कर दतर हसद्दु दुसह मम गर्भ ॥ २ ॥ बेहु कृपा करि मुनगमति जहि उपरै उर माव । मच्छ के बरनी चरित भाष्य बनी यनाव । दो० । स्वर सदा हरि भक्ति रति गावत बेद पुरान । करड कृपा विधि वच्छभा तव पद वचन प्रमान ॥ ७ ॥ सम्त सभा निज भाइ शिर मर्छ भक्ति विज्ञास पुम्व्य पुरानम श्री कवा दिनु चिनु सहित हुसास । १ ॥

अर्थ—क—नव विधि हरि भक्ति अथ हृदय करणं त्रिविधि ताप भाषदा अशेष हारण भव चारित्रि पोत होत हृदय अनामय । राज रोग भोग भाव ईद नुप अथ राग उरग पछियाय सिंह गज अहं तुप्य पंकर पार भाजु तम चह । काम अशेष मुंन धीमिमुंन बल महा आदि सक्ति नाम हेतु भक्ति हरित हा । संक सोक संमय गर्बादि गंजनी वंमद्वयं दुष्ट भाव वेद मंत्रनी । समता मुचि सीक साकि पाक पारिसी । समता मह मोह मान लोभ परन सी हिंसा अंधकवि नाय हीनु सद्यनी । नीतरु ससि सरद कीम भक्त उर छसी शानवर विवेक बर्ष धीरज करनी । दोप भय प्रमाद कलह नासस हरनी सता सन्तोष नर चिराग बर्षनी योग बुक्ति—यहां से पृष् लक्षित हो गया—

विषय—प्रथम अध्याय—रामस्तुति, गुणवन्दना भक्ति महिमा • व्यासायम पर चारद श्री का आगमन और व्यास कोषपत्नीक देवप्रद उनके मन में मोह का उत्पन्न होना । व्यास का अपनी पूर्ण कथा वर्णन करना । द्वितीय अध्याय—भारद् को वैराग्य होना—भगवान के दर्शन के लिये वाकुलता—जाग्रत बाणी द्वारा यह वाच्य होना कि इस शरीर से दर्शन नहीं मिल सकता । प्रज्ञा से चारद श्री उत्पत्ति—सृष्टि सम्बन्धी प्रश्न करना और प्रज्ञा द्वारा यथाचित उत्तर पाना । तृतीय अध्याय प्रज्ञा का चारों मुनों से वैशोबारण । अर्द्धर न सृष्टि रचना का क्रम फैलना । भागा प्रकार के जीवों की उत्पत्ति के संबंध में चारद के साथ प्रज्ञा का सम्भाषण—चतुर्थ—प्रज्ञा द्वारा सम्पूर्ण स्वावर जंगम आदि जीवों की रचना—पंचम अध्याय—शिब पार्वती संवाद—भक्ति वैराग्य और शान के संबंध में शिब का पार्वती को उपदेश करना—अज्ञ की सर्वत्र व्यापकता । जीव का शरीर के साथ

जन्म मरण परन्तु उमकी अनित्यता और अल्प रहने का उपदेश । पष्ठम अध्याय—शिव जी का पार्वती से नवधा भक्ति कहना इममे प्रेम की उत्पत्ति—प्रेम ही ज्ञान का कारण— और ज्ञान होने से समाधि तथा मोक्ष प्राप्त होना । भगवान का अनेकों रूपों में ध्यान । पांखटी ओर सत् पुरुषों के लक्षण, नसम अध्याय—शिव का पार्वती से राम नाम की महिमा वर्णन करना—मय नामों से इसकी उत्कृष्टता—अष्टम अध्याय—श्याम जी की स्त्रीके गर्भ में शुक्रदेव की स्थिति—उमका ईश्वर भजन में प्रेम, बालक की उत्पत्ति की अवधि वीत जाना परन्तु जन्म न होना—श्याम का ध्यान द्वारा विचार करना अत्यन्त सिद्ध तथा योगेश्वर पुत्र का अनुमान होना—श्री मे मय वार्ता कह देना । पुत्रोत्पत्ति में विलम्ब । देवताओं का विष्णु के पास जाना और स्तुति करना—विष्णु का व्यासाश्रम में जाना और गर्भ स्थित बालक के बाहर न आने का कारण पूटना—उदरस्थित बालक का उत्तर—एकान्त में भजन करने की इच्छा—भगवान का उन्हें बाहर बुलाना—शुक्र की उत्पत्ति और वन के लिये पयान । ६—शुक्र का विद्याध्ययन - पाठकों की कथा, कृष्ण से वार्तालाप ।

संख्या २२. राजनीति (हिनोपदेश), रचयिता—द्विनाथ, कागज—देशी, पत्र— १४३, आकार—११ × ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुपटुप) २४१३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० ब्रह्मसिंह जमीन्दार, ग्राम—खातीपुर, डाकघर—बक्सरी का तालाब, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ जो कारज को इच्छा मनु होई ॥ यहि विधि बचनु कहै गो सोई ॥ अरज न करत आपु अलसाई । ताकी सपति रहि न जाई ॥ एक चाक रथ गति नहि होई ॥ पुरिपारथ धन लई न कोई ॥ पूर्य जन्म कियो जो धर्म । सोई भाग कहावै कर्म ॥ ताते भाग चही अनुकूल । जतन करी पुरुपारथ भूला ॥ ज्यों माटी करता कर लेई । कीन्हों चड़े सोई करि देई ॥ यह उपपान लोग सब गावै । जैसा करै सो तैसा पावै ॥ दोहा ॥ भाग भरोसो मन्द करि पुरुपारथ तजि शेष । जतन कियो जो जानि लै तौ हेई निरदोष ॥ १ ॥ पुरुपसिंह जो उद्यमी, लक्ष्मी ताकी चेरि । भाग्य भरोसे रहत जे कु पुरुष भायौ तेरि ॥ २ ॥

अंत—द्विविण वारण ताह वसुधरा सुख युत सतत कुरु नरं । दुर धराति तराति तवैरिणा—सुन यना नयनां चललाल त्रसम ॥

विषय—विष्णुधर्मा के हितोपदेश का भाषानुवाद ।

संख्या २३ ए. विजय मुकावली आदि पर्व, रचयिता—चत्रसिंह कायस्थ (अटेर, मदावर), कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—१६ × ७ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुपटुप) ८२८, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सरी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ वृज रक्षन भक्षण अनल रक्षन गोधन ग्वाल । मुजवर कर वर करज पर गिरिवर धरन गोपाल ॥ १ ॥ हरि दीपक मन सदन धरु कपट

कपाट उचारि । नसे सञ्जल अथ कास्मिना तत्र सां द्युप विचारि ॥ २ ॥ वृक छन्द ॥ इमि
 भूमि भाये श्येपि वासव पद्मये धन धाये दिसि दिसि बिसबासर तरज पर । मेघ की मरोर
 पवमता की सञ्जेर जोर नीरव निपट भार बोसगो गरज पर । रापे मुरपालके क्त्राल श्येपते
 गोपास शत्रु ह्येपाल गोपी ग्वाल की करज पर । हर वर धाह गिरि मूखते उछाह वर छाह
 वृज रापो रापि करधी करज पर ॥ ३ ॥

अर्थ—शेषा ॥ रहत किते दिन तब भये ता अमन के धाम । पुत्र हिंदी की के भयो
 धरयो अटोरकच नाम ॥ ४५ ॥ कीति किते दिन तब गये तयो विविध बहु ठाठ । छारि
 अटोरकच ता धर्यो पद्मये वक्र चक्र गांठ ॥ ४६ ॥ रूपक परि याके सजे रहे एक द्विज धाम ।
 उदिस करि भोजन करै सब संघष गुण प्राम ॥ ४७ ॥ इति श्री महा मारते पुराणे विजय
 मुक्ता बली कवि छत्र विरचिते अटोरकच जन्म नाम दशमोऽध्यायः १० ॥ समाप्त ॥

विषय—इस पर्व में १० अध्याय हैं—(१) राजा शांतपु का गंगा से विवाह प्रण
 करना, आठ पुत्रों का गंगा में प्रवाह ९ वें भीष्म का रत्नता, गंगा का स्वर्गारोहण, पुन-
 मत्स्य गंधा से विवाह (२) मत्स्योदरी से विप्र विविध नामक पुत्र का जन्म व्यास का
 आगमन अंत में भूतराह और पांडु का जन्म । (३) राजा पांडु का वनवास (४)
 दुर्षोभय अन्नतार वर्जन (५) दुर्षोभय आदि और मुषिष्ठिर भीम अतुल मकुछ सहदेव आदि
 की जन्म कथा (६) भीमसेन औरव संवाद (७) अर्जुन विजय वर्णन (८) भीम
 सेन विवाह वर्जन (९) ऐरावत आगमन (१०) सकुनी दुर्षोभय संवाद, मकुछ दुर्षो-
 भय संवाद, भीम द्वारा हिंदी राजस का मरण पूर्व अटोरकच की जन्म कथा ।

संख्या ८३ यी विधे मुक्तावली (पन, विष्ट पर्व महामास्त), रचयिता—छत्रसिंह
 (अरे मदावर), अग्रज—देसी पीठा पत्र—४३, आकर—१६ X ७३ इंच पंक्ति (प्रति
 पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुष्टुप्) ७६३, रूप—मवीन, कियि—नागरी, रचनाकाळ—सं०
 १७५७ = १७०० ई०, प्राक्षिस्थान—अजय चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार, धाम—खानीपुर,
 अकर—शाहबाब बक्सी, शिला—रुज्जमड ।

आदि—जय वर पर्व लिप्यत गीतिका छंद ॥ राम चिन्ह लजे मुषिष्ठिर भूप लप वग
 की चले । अनुष्ठाता संग सींगे हुते सूर मछे मछे । मातु रायी विदुरेक प्रह हेतु बहु विधि
 आनिके । रापी मुमद्रा पुत्र सुत पुत्र हारिक्य मह आनिके । प्रापदी के पंच सुत नृप मुपद
 दिंग से रापियो । पंच संघष नृपद लनपा सहित वन अमिल्लावियो ।

अर्थ—श्री कृष्ण उवाच ॥ मुष्टम महि तुमको नहि देत । उदिस धीन्ही भारत देत ॥
 पिया सुज की कष्ट म दी है । जो रण जीते सो मुह के है ॥ ४१ ॥ इति श्री महामारत पुराणे
 विद्वे मुक्तावली कवि छत्र विरचितायां श्रीः कृष्ण तुर्जोभय संवाद वर्जनो नाम पद्य बिसतिमो
 अध्यायः २६ श्री साताराम ॥ विराट पर्व समाप्त ॥

संख्या ८३ सी. विधे मुक्तावली (भीष्म पर्व) अग्रज—देसी पत्र—६, आकर—
 १६ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप्) १४० रूप—मवीन कियि—
 नागरी, रचनाकाळ—१७५७ = १७०० ई०, प्राक्षिस्थान—अ० चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार,
 धाम—खानीपुर अकर—शाहबाब बक्सी, शिला—रुज्जमड ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ भीषम पर्व लिप्यते ॥ दोहा ॥ पांडु पुत्र कुर राज
रन कोपि चढे रन दोहं, चर्म वर्म तन त्रान कमि बल कत भट मव कोहं ॥ १ ॥

अंत—दोहा ॥ लयो साहना को भार सिर द्रोणाचारज सीस । तिनहि के नंग सबल
दल चढे सकल अवनीस ॥२६॥ इति महा भारत पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विरचितायां
भीषम समोहनो नाम त्रीन्समो अध्याय ॥ ३० ॥ भीषम पर्व समाप्त शुभ मस्तु श्री मीताराम
राधाकृष्ण ॥

संख्या ८३ डी. विजै मुक्तावली द्रोण पर्व, रचयिता—छत्रगिह कायस्थ (अंटेर,
भटावर), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—१६ X ७ १/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—
३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०२, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं०
१७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० चट्टिका वक्सगिह जर्माटार, ग्राम—खानीपुर, डारु-
घर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ द्रोण पर्व लिप्यते ॥ मोरठा ॥ दल पति द्रोण वजाड
चढ़यौ कोपि रन रुद्रमो कटरु मसुद्रहि पाड मोपत देग्यत क्रोध करी ॥ १ ॥ दोहा ॥

अंत—दोहा ॥ धर्म पुत्र जै रन भई गहिरे वजे निमान । करोच भूपति करन तय
दुजोधन जान ॥ ३२ ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विरचिताया
घरुका द्रोण वध वरननो नाम सैतीसमो अध्याय ॥ ३७ ॥ द्रोण पर्व समाप्त ॥ सीता राम
राधाकृष्ण सीता राम राधाकृष्ण सीता राम राधा कृष्ण ॥

संख्या ८३ ई विजै मुक्तावली, गदापर्व, रचयिता—छत्र कवि (अंटेर, भटावर, ग्वालियर
राज्य), कागज—विदेशी, पत्र—१९, आकार—१० X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—
१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७८, खडित, रूप—प्राचीन जीर्ण शीर्ण, लिपि—नागरी,
रचनाकाल—सं० १७५७ = १७००, लिपिकाल—सं० १६३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—
ठा० बंद्रीसिंह, ग्राम—खानीपुर, डारुघर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ गदा पर्व लिप्यते ॥ चौपाई ॥ राजा निपदि
अकेला भयो ॥ मत्र जपन जल भीतर गयो ॥ जपन चारि वडिका जो पावै । तौ अपनौ
सब सैन जिआवै ॥ १ ॥ यह सुधि पाय पाडव घाये । जलमो भूपत हासोप आये ॥ कहि
न कहा डरि फुर पति गयो । सो नहि हभै सामुहे भयौ । २ ।

अंत—जीतो भारत कृष्ण मत तिनहि इक पाइ । एक क्षत्री महि भोगई छत्र जुधि-
प्टिर राइ ॥ २८ ॥ भारथ सुनि भाषा करौ छत्र सुबुद्धिहि पाय । कहत सुनत पातक
नसै । अंग दीरघ दुख जाइ ॥ २९ ॥ चारि वरन मन जो सुनै । तरुनी पुरुष जो कीय ।
प्रगटे हरि की भक्ति उर । मोचन दुख को होय ॥ ३० ॥ छ छ छ छ छ हर हर हर हर
छ छ छ छ । इति श्री महा भारत पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विरचिते गदा पर्व वर्णन
समाप्तो भवेत् सुभम भूयात् कार्तिक मासे कृष्ण पछे चतुरथिया सम्बत् १९३१ साके १७९६
दोहा या पोथी मे जानिये । दोरी सुखमा अच्छ । दो सौ तेहस जानिये जग में अहै प्रतच्छ ।
जो याको पढ़िहै कहै सिद्धि लोक को जाई । जगमों सम्पति लहइयो अत राम पुर आय ॥

सारथ्य ॥ अर्द्धिक मास पुनीठ । अम्ब्र वासरो नीक ई । तिथी चतुर्थी आई । ठबदि समाप्त
यो भई ॥ सिद्ध शिव शिव लिखा मुक्ता बली बही ॥

संपद्या ८३ पद्य विभैमुक्ताबली (यशस्व), रचयिता—कवि छत्रसिंह अयस्व,
कागज—दही, पद्य—१२ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुपदुप्)—१८०,
रूप—महीन, पद्य, लिपि—मागरी, रचनाकार—सं० १७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—
ग्र० अंदिनाबस सिंह, ग्राम—खानीपुर, डारुपर—ठाकाब बकसी, जिला—कन्नड ।

आदि—अंत—८३ ई के समाप्त । पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री महाभारत पुराण विधि मुक्ताबली कवि छत्र विरचितायो राज जूषिन्द्र
राज्य विधि बरना नाम तेजासिमो अर्थात् ॥ ७३ ॥ लिखा मुक्ताबली वी फागुन मासे
मुक्ता पडे जर्तायायो गुर बामर समस्त भई ॥ समस्त १६११ ॥

संपद्या ८३ जी विजय मुक्ताबली (कृष्ण पर्व), रचयिता—छत्र कवि कागज—
देवी, पद्य—६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुपदुप्)—१०७, पूर्ण, रूप—महीन,
लिपि—मागरी, रचनाकार—सं० १७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस्थान—ग्र० अंदिना बस
सिंह, ग्राम—खानीपुर, डारुपर—ठाकाब बकसी, जिला—कन्नड ।

आदि—कर्ण पर्व लिख्येत् ॥ मीरथ ॥ इक्षुपति कीन्हे कर्ण, कुजोचन अपन समर ।
जग जन सब गुण हर्ण पट हरसबको कल्प तप ॥ होहा ॥ चतुर्थी कर्ण रणधीर तब कर कीन्हे
धनुवान । सूरम गमनें ठामुकी पटतर नाही आन ॥ २ ॥

अंत—इति श्री महाभारत पुराण विजय मुक्ताबली कवि छत्र विरचितायो कर्ण बीर
समोहने नाम तेजासिमो अर्थात् ॥ ३६ ॥ कर्ण पर्व समाप्त ॥

संपद्या ८३ पद्य विभै मुक्ताबली (यशस्व), रचयिता—छत्र कवि (अंदि, महा-
वर) कागज—दही पीठा पद्य—१५, अकार—१९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १५,
परिमाण (अनुपदुप्) २८२ पूर्ण, रूप—महीन, पद्य, लिपि—मागरी, रचनाकार—सं०
१७५७ = १७०० ई० प्राप्तिस्थान—ग्र० अंदिना सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर डारुपर—
ठाकाब बकसी, जिला—कन्नड ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सभापर्व लिख्येत् ॥ होहा ॥ धम हुरपर सिद्धि दिनक
धर्म मुबन मुब भूय । कही मधामुर असुर सों कीने धाम अनूप ॥

अंत—इति श्री महा भारते पुराण विधि मुक्ताबली कवि छत्र विर चितायो । कुजोचन
जुषिन्द्र जूष बरगनेो नाम सप्त इक्षमो अर्थात् ॥ १० ॥ सभा पर्व समाप्त ॥

संपद्या ८३ आई विभै मुक्ताबली (सप्त पर्व), रचयिता—छत्र कवि अयस्व
(अंदि, महावर) कागज—दही धादामी पद्य—३, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ९, परिमाण
(अनुपदुप्) ३० पूर्ण रच—महीन पद्य रचनाकार—सं० १७५७ = १७०० ई०, प्राप्ति
स्थान—ग्र० अंदिना बस सिंह जमींदार ग्राम—खानीपुर डारुपर—ठाकाब बकसी,
जिला—कन्नड ।

आदि—अथ सप्त पर्व लिख्येत् ॥ राहा ॥ मद्य सूर रथ जनि रही कर सीन्हे धनु
वान । जीतो चादन पान्ट मुत माजन समर विधान ॥ १ ॥

अत—इति श्री महाभारत पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विरचितायां सुसर्मा गल्प वध वरननो नाम चालिसमो अध्याय. ॥४०॥ गल्प पर्व समाप्त ॥

संख्या ८३ जे दिवैमुक्तावली (उद्योग पर्व), रचयिता—कवि छत्रसिंह कायम्य (अटेर, भदावर), कागज—देशी घाउन, पत्र—८, आकार—१६ X ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप्) १४७, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७५७ = १७०० ई०, प्राप्तिस্থान—ठा० चंद्रिका बक्य मिह, ग्राम—खानीपुर, ढाकघर—तालाव बकमी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ उद्विग पर्व लिप्यते ॥ सुन्दरी छंट ॥ वैठ नभा सुत धर्म महीपति बोलि लये तह कृष्ण महा गति, वधव चारि विराजत ता थल कानु वपानि कहै तिनके बल ।

अंत—इति श्री महाभारत पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विरचितायां श्री कृष्ण भगवता ग्यान उपदेश वर ननो नाम अष्टा विंशतिमो अध्याय ॥ २८ ॥ उद्योग पर्व समाप्त ॥ सीताराम राधा कृष्ण ।

संख्या ८३ कै. विजयमुक्तावली, रचयिता—छत्र कवि (अटेर भदावर), कागज—देशी, पत्र—२४०, आकार—१० X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २४, परिमाण (अनुष्टुप्) ३६००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७५७ = १७०० ई०, लिपिकाल—स० १८९५ = १८३८ ई०, प्राप्तिस্থान—श्री स्वामी नारायणाश्रम, ग्राम—बछना, ढाकघर—दिल्हौर, जिला—कानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ विजय मुक्तावली लिप्यते ॥ टो० ॥ विघन हरन तुम हौ सदा गनपति होउ सहाइ ॥ विनती कर जोरे करौं दीजै प्रथ वनाइ ॥ जिन कीनो परपंच सब अपनी ईच्छा पाइ । ताको हौं वदन करौं हाथ जोरि सिर नाइ । करना कर पोपत सदा सकल सृष्टि के प्रान, ऐमे ईश्वर को हिये रहै रैन दिन ध्यान ॥ येरे मन में तुम वसो ऐये क्यों कहि जाइ । ताते यह मन आप सो लीजै क्यों न लगाइ ॥ जो गुरु गिरि गुरदेव की सुदर दया देखे । गुग सकल पिंगल पडे पगु चहे गिरि मेरे ।

अत—छत्र विजय मुक्तावलि गाये ॥ दोहा ॥ फौज सुदर वीरा लक्षै भूपति सिंह कल्यान । पूरण कीनो छत्र कवि प्रथ सुतिहि अस्थान ॥ इति श्री महा भारत पुराणे विजय मुक्तावल्याम कवि छत्र विरचिताया राजा युधिष्ठिर राज वरणनो नाम त्रिचत्वारिंशोऽध्याय ॥ इति श्री विजय मुक्तावली सपूर्ण समाप्ता लिपत देवनागयण शर्मा सवत १८९५ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा ।

विषय—महाभारत की कथा ।

संख्या ८४. प्रेमपियूप, रचयिता—देीलाल, कागज—आधुनिक, पत्र—१०, आकार—८ X ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ८, परिमाण (अनुष्टुप्) ५०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४४, प्राप्तिस্থान—श्री उमाशंकर दुवे गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ।

कविच—पावस प्रबल आय धन्यो बाहु शोरन तं निरलि विपौगि जन तत्रत सहारे
हैं । येरि मदि मरुत में पावन बाहुधा धाम्यो सिन्ही शय्यमाणो जोबदार सों पुकारे हैं । बाहु
रन दूरे अरु विम्लु चमकन ध्यायीं केकी कीर खोपस पुकारत करारे हैं । धीरज बंपाधि धरक
छरी कहे कीन जिई पीतम विपारे मिले पाकक विचारे हैं ॥१॥

अंत—योवन बड़े है युग बंजुर लड़े हैं युगी फल सों बड़े हैं नहीं धी कळ समान के ।
ज्ञान धी बड़े हैं धारीगरन लड़े हैं मीज मानस मड़े हैं येमे बजब अमान के द्वार धी बड़े हैं
राधवेणू तें बड़े हैं नित येज धी पड़े हैं भरे गजब गुमान के ऊपरी जड़े हैं मानी केरि के बड़े
हैं कळि काजन गड़े हैं मरु रास्यो ना जहान के ॥ बाहु विद्वानि सुधामम ध्यागत प्यारे स्त्री
हमें कीन तुम्हारे निगल मीज न आदि ब्रुवेश के तार गरीं जग बाध विचारे आनन्द पूरण होत
नहीं बिन बाधका पीछ लड़ेकीके मारे कीन बड़े तम ताप डरे मिटे के कळी रामकळी के निहारे ।

विषय—(१) इस ग्रंथ में बापक नायिका के प्रेम सबधी अंगपर इस के फलितों का
वर्णन है । बासुपति के पाने पर नायिकाओं की बर्णों आदि कृत्यों में अधीरता ।

(२) बगमरु कृत की घोभा वर्णन ।

(३) विरहिणी विधियों के विषय की दुधा का वर्णन ।

(४) नायक के प्रति नायिका का मान बर्णन ।

(५) नायिका के अंगों का वर्णन ।

(६) नायक का नायिका के प्रति प्रेम ।

संख्या ८४, दादू की बानी, रचयिता—दादू दयाल कागज—देसी, पत्र—८४
आकार—२ × १३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ—१०, परिमाण (अनुच्छेद)—३८०, अंकित, रूप—
प्राचीन फटी, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १८३४, प्राप्तिस्थान—श्री स्वामी ब्रह्मचारी
C/o बाबू काकता प्रसाद काकांची तहसील सिर्वाली, प्रिठा—सीतापुर ।

आदि—मयजी धारीं आर गति और न जायें ब्येह । सुमिरि सुमिरि रस पीजिये
दादू जानइ होइ ॥ दादू सबही बेन पुरान पदि मेदि नाब निरधार । सब कुछ इन्हीं माहि
है बना करिये विचार ॥

अंत—दादू के साहित्य लेख लिया ही सीस कदि सुमी दिया । मिहर मया करि
किरु किया तीं जीवे जीये करि जीया ॥ इति बिनती कीं अंग संपूर्ण समाप्तम लिप्यंत रामजी
काल बाबुपेयी स्थान मांठ संबत १८३४ वि० कार्तिक शुद्ध ६ । शुभमस्तु ॥

संख्या ८६, प. अलंकार रत्नाकर, रचयिता—इच्छतिराय (बहमदाबाद)
कागज—देसी, पद्य—२९, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण
(अनुच्छेद)—१०६४ अंकित रूप—प्राचीन पद्य और गद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—
सं० १७९१, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी मु०—मस्कापुर किला—
सीतापुर (बबय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अलंकार रत्नाकर लिप्यते ॥ दोहा ॥ बबत सुरासुर
मुहुत मदि प्रतिकिंबित अहिमाक । त्रिये रान मब नीक मणि स्तो मो पह रकपाक ॥ अथ

देश दीप वर्णन ॥ उदयापुर सुर पुर मनो सुरपति श्री जगतेस ॥ जिनकी छाया छत्रि वसि
कीन्हो ग्रथ अमेस ॥ कवित सकल महीपन के राजे सिरताज राज पर उपकार हरी भारी
दुप दूंद के । देव जगतेस धीर गुरुता गर्मीर धरे भजन विपक्ष पक्ष दक्ष फौज फंद के ॥
प्रभुता प्रकाश अति रूप की नेवाम मोह प्रगट प्रकाश भेटे जग दूद वृंद के ॥ भेव ये समुंदर
से पारध पुरंदर से रति पति सुंदर समान सुर चद के ॥ दोहा जदपि नारि सुदरि सुघरि
विपति न भूपन हीन । त्यों न अलकृत विनु लखै कविता सरस प्रवीन ॥

अंत—उदित भयो शशि मानिनी मान मिटावन मानि । मेरी रिद्धि मृद्धि यह
तेरी कृपा वपानि ॥ जहा कारन कारज के लिये कछे होइ तहां हेतु अलंकार जैसे चंद्रमा
कारन मान भेटन कारज के लिये कयो । यथा कवित्त ॥ फैलि रहे चहुँ घोर चिकुर समूह
घन वरपत सुमन सलिल विंदु भारी है ॥ दूटे मुकताहल ते राजत बलाक दल भूपन मवद
मोर घोर अनुकारी है ।

अत—॥ छप्पे ॥ रसवत बहुरयो प्रेम बहुरि उज्जास्त्रि ताहि लहि । समाहितहि
पुनि जोरि बहु भावोदयही कहि । भाव नंधि पुनि लेपि बहुरि कहि भाव सवलता । पुनि
प्रतच्छ अनुमान और उपमान प्रवलता ॥ पुनि शब्दर अर्था पत्ति कहि अनुपलब्धि संभव
साहित । ऐसे हू पच दश जानिये अलंकार सब सुकवि धित । अपूर्ण ।

विषय—कुवलयानंद के आधार पर अलंकार वर्णन ।

संख्या ८६ वी. माया भूषण (अलंकार रत्नाकर), रचयिता—दलपतराय—
वंशीधर (अहमदाबाद), कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—६×१० इंच, पत्ति
(प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य,
लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३४ = १८७७ ई०, प्राप्तस्थान—मुंबई ब्रजबहादुर
लाल, प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ दोहा ॥ नवत सुरासुर मुकुट महि प्रति विभित्त अलि-
माल ॥ किणु रत्तन सवनील मणि सो गणेश रछिपाल ॥ १ ॥ माया भूषण अलंकृत कहूँ
यक लक्षण हीन ॥ श्रमकरि ताहि सुधारियो दलपति राइ प्रवीन ॥ २ ॥ कहूँ कहूँ पहिले
धरे उदाहारन सरसाइ । कहूँ न एकरि कै धरे लक्षण लक्ष्य जताइ ॥ ३ ॥ अर्थ कुवलया
नन्द को वांध्याँ दलपति राइ । वन्सी घर कवि पे कहूँ कवित्त बनाइ ॥ ४ ॥ भेद पाठ
श्रीमाल कुल विप्र महाजन काइ ॥ वासी अमदाबाद के वन्सी दलपति राइ ॥ ५ ॥ जैसे
रीक्षि जवाहिरी लेत जवाहिर पेखि । त्यों कवि जन सब रीक्षिहे अमुत श्रमहि
देखि ॥ ६ ॥ दरवि लोभ कस को न किय नहि विवखि उरमार । अपने चित्त विनोद को
कीन्हो यहै प्रकार ॥ ७ ॥

अंत—॥ तिलक ॥ जहा कारज कारज रूप ठहरावै तहां ऊ हेतु ॥ जैसे कारज
सिद्धि को कारन । तहां शाक्षात रिद्धि ठहराई ॥ कोऊ कोटिक सग्नेहे कौड लाप हजार ॥
इति श्री मद्य दल पति राय विरचिते अलंकार रत्नाकरे ॥ अर्था लंकारे समाप्त ॥ एक
अलंकार के ॥ दूसरे अलंकार की अवस्था न रहे ॥ अरु कोऊ को वाधन हो ॥ अपने अपने

धीर उर उर वर सी ॥ अति निल तनुकु ॥ तहां में भृष्टि १ अद धीर नीर सो मिला
होइ ॥ ३ ॥ तहां मेंकर ॥ ४ ॥ अंग अंगी भाव ॥ सम्बन् १९२४ ॥ कार्तिक मासि अवन
पक्षे तिथी हाइम्याम् ॥ १२ ॥ श्री राम अंदा यमनः ॥

संवत्सा ८७ शान प्रस्तावशी रक्षयिता—इमोदर दाम अगत्र—इसी, पत्र—१०
आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २६ परिमाण (अनुपुष्प) ७८०, रूप—प्राचीन,
लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, लिपि—गाली, मासिस्थान—२० कृपाचंदर दीप,
ग्राम—मुफताबपुर हाऊबर—मिर्घाली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शान प्रस्तावली लिख्यते ॥ श्री० विषय हरम मंगल
करन पून पुन्य प्रथम । माम लेत गजेश का मित्रि काम हो जानु ॥ हमके जानने की यह
रीति है जो पुन्य पंडित के निकर आये उस पुन्य से निर्माकित अत्र पर किसी अंक पर
उंगरी एषाब और पंडित को शिव जी का नाम लेकर प्रदत्त कर देते और उत्तर द्ये ॥

जब हरणक अंक का फल प्रथक प्रथक
लिखते हैं ॥ फल अंक १ कर ॥ हे प्रथम करन बान
जो अर्थ लें अपने मन में विपारा है वह शीघ्र
परमेवर सिद्धि करगा और कुछ एषा मी हाय
रोगा रोगग्र भी किसी के द्वारा रोगा और
मनोरथ सब सिद्धि होगा अगर विधाय न हो तो
देख लो मुद्दहार मुन पर निल है अगर सब सके तो
धैरों जी की पूजा करो और शनिश्चर के दिन काठे कूड़र को पदा निवाको ॥

५	४	३	२	१
६	७	८	९	१०
१५	१४	१३	१२	११
१६	१७	१८	१९	१२

अंत—इति श्री प्रस्तावली दामोदर दाम कृत संपूर्ण शुभ मन्त्रु लिपि शिव नारायण
बाबनेई स्वयंकार्य संवत् १९१६ ईश्वर पूर्णमा ॥ शिव शिव शिव शिव शिव ।

विषय—स्वप्न, ग्यातिव, चारी गई बस्तु सामुद्रिक आदि क प्रश्न ॥

संवत्सा ८८ अक्षिनामा, रक्षयिता—इरियामाह, अगत्र—नवीन, पत्र—४,
आकार—९२ = ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २० परिमाण (अनुपुष्प) ११५, पून, रूप—
नवीन, पत्र, लिपि—ईसी, लिपिकाल—सं० १८२० = १८६३ ई०, मासिस्थान—श्री
मुन्नाक पुन्तछलप मुरापुर जिला—गया ।

आदि—अथ अक्षि नामा भाष्य इरिया साहब । इम उचारन द्या को मात्र ॥

अक्षि असाहम को सरितात्र । अक्षि आगिर बाही कात्र ॥ अक्षि मिदनी
दात्रु है आर । बार बारतें शुभदगार ॥ इरन ईई साहब महपुय । अक्षि मिदनी बना है
लक्ष ॥ आई उनी हायेइ वार । बरी मांग बोही सो बेहीमती मिफन कर माका । ब बे
बाक बहर का नाही ॥

अन—मुप्य—७

शिव गार्धनी पीर ना मान । अक्षि दुवा मिदनी नहि मान ॥ अक्षि कलाम बहर है

जैसा । क्राफु साक है ये लाम गेसा ॥ लाम मी काम डार है भाई । मीम महर वर धंटा पाई ॥ निरखु नाम निजु डलकै सोय । वाह वाह परगट सब होय ॥ है हाजिर रुहिपू वे न्यून । लामे निअरे नहिं नमून ॥ अलफ इलाही मीर है भाई । हमजा जाहिर धंटा पाई ॥

X

X

X

X

अलिफ नामा सपूरन संमत ६० साल सन् १२५१ सागों पर पूरन भई दमस्त परताप सहाय ॥

विषय—पृ० १ से पृ० ७ तक—उर्दू के प्रत्येक अक्षर पर ब्रह्मपूर्णक ईश्वर की मत्ता तथा कर्त्तादि विषयों पर कुछ तुम्हन्दी ।

संख्या ८६ ए. गो० तुलसीदास का चरित्र, रचयिता—द्रामान्यदास, कागज—देशी, पत्र—१२५, आकार—८ X ४ इंच, पन्कि (प्रति पृष्ठ) ३६, परिमाण (अनुाटुप्) २४३०, पूर्ण, रूप—आते जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—म० १६१६, प्राप्तस्थान—पं० मूलचंद तिवारी, मु०—झाबर, डाकघर—धिसवां, जिला—सीतापुर (अजध) ।

आदि—श्री गणेशायनम. अथ गोसाईं जी को चरित्र लिप्यने ॥ चौ० वरनां जग वनन गन नायक । गिरजा शंकर सुवन विनायक ॥ निच्छि दायक दुप दोप नयायक । अच्युत गुन गायक सब लायक । बुद्धि भवन सुप सदन कृपानिधि । जानत रामनाम नहिमा विधि ॥ अग जग जीव वदि सुप पावत । सुनि दशानिदास सुप पावत ॥ शंकर महिज कृपाल भक्ति प्रद । आँठर दानि पुगण वेद वद ॥ सुग नर असुर चराचर वंदित । भियाराम पद सरग अनदित ॥ स्वारथ सपदादि परमारथ । भक्त भाव हित जौन जधारथ ॥ मागत भाय कुभाय निहोरे । देन दयाल द्रवत पुनि थोरे ॥ रामहिं प्रिय मेवक सुपदाई । इनके भजे ते मति गति पाई ॥ हरि गीतिका पाईं न गति किन पतित जन भोरेहु भजे त्रैलोचन ॥ नारी च डारी मो उधारी नृपति हन्या मोचन ॥ स्वानहि दियो धनराज जो सुय तरुरी कृत लोचन । पक्षी कपोत न प्रान क्रिय विधि गीत आमिप शोचन ॥

अत—दोहा ॥ लोहेन की न लोहार की गति नहि जाति विचारि । जो सिर धारै सीप कै ताही की यहि डार ॥ कवित्त ॥ जेई प्रपंची तेईं पच करि मानियत जेईं नर पोट तिन की बोट लीजियतु है ॥ जेईं महा पापी तेईं प्रतापी कीजियतु है ॥ चोरन बोलाइ शिरोपा देत राजा राठ माहन पकरि वंदी पाणे दीजियतु है ॥ असे हाल देपि कलिकाल के कराल ज्वाल रामजी तिहारो नाम लै लै जीजियतु ॥ सत सुर सरद वसंत सुर सापनि को कंतर निरंतर अनत ज्ञान राज को । भानुकुल मुकुट सुमाल मुनि मानिक की पाय बल काल प्रति पालक सुपय को ॥ जातुधान न तम भान देवधान धन कान सुकवि रतन थान मान मथ को । मीन मन फट जग लोचन चक्रोर चट पुन्य तरु कद रामनद दशरथ्य को ॥ इति श्री गोसाईं चरित्र दशानि दश विरचितया तुलसी चरित्र सपूर्णम ॥ श्री कुवैरेश्वर नाथ स्वामी सहाइ । लिपा माधौ गिरि विद्यार्थी स्यान मेवडी पाठनार्थ विशभर गिरि विद्यार्थी संवत् १९१९ जेष्ठ मासे सोम वासरे ॥

विषय—गोसाईं तुलसीदास जी का जीवन चरित्र ।

संख्या ८६ वी भी दुखहीदास चरित्र, रचयिता—दासान्यदास, कागज—इसी, पत्र—८४, आकार—८×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुच्छेद)—१०८५, रूप—गठित, पद्य। छिपि—भागी, प्राप्तिस्थान—महाप्रभा भी प्रकाश सिंह जी, महापुर, त्रिका—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ तुलसी चरित्र कल्पिते ॥ १० ॥ बरनी जग बदन गणनायक। गिरजाशंकर सुवन विनायक ॥ मिथि वायक रुप होय नयायक। जप्युत गुन गावक सय लायक ॥ पुधि भवय सुय सदन कृपा मिथि। जगत राम भाम महिमा बिधि ॥ अग अग सीव बंदि सुय पावत। भुनि दासान्य दास अस गावत ॥ श्री शिवाय नमः

अंत—छपी ॥ समाचार लखि जाग रूप्य को कारुण्य हीन्हो। बिधा कियो सो बिप्र भोळु छी सुकृत प्रबीयो। अगो गोसाईं सुमिरि हिय रघुबर को धारो, गिरो सो तरु ते तरुत माध रघुमाय उचारो। तब कटना कर बिच ही पावन करि सियो साइ हिय। अपमाई दास करि होय मरि राम रूप हू वरस विष ॥ सोरझ ॥ प्रेम पंच अति बुरि अंचो सातो स्वर्ग ते। अगो एक मंसूर धूरी सीरी साइके ॥ छे हरि रस परि पूरि वरस गोसाईं को बडो पम्य पम्य मनसूर नाम सत्य अपनो कियो। करि आदर सनमानि कीन्ह प्रसेसा बिबिध बिधि। यहु प्रकार को ग्याव ई सिच्छर निर करि लिया ॥ इति ॥ ११०१५ ॥

विषय—तुलसीदास जी का जीवन चरित्र और कुछ राम मन्त्रों के उदाहरण।

संख्या १० पं. गोपी विरह महात्म, रचयिता—दात्ताराम या दीना दास (अनुरागर, हकाहाबाद), कागज—इसी, पत्र—१९ आकार—९×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ—२४, परिमाण (अनुच्छेद)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, छिपि—भागी, छिपिस्थान—सं० १९४८८ १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—छापुर रामपाल सिंह, ग्राम—दातारगिय बाँकर—बराताल, त्रिका—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गोपी विरह महात्म कल्पिते ॥ दो० ॥ अछुत अनीह अर्पह अत्र निराकर निरधार। अम गुण बसत हृदय मम माया गुन गोपार ॥ रघु मंदन पद बंदि के बंदी पवन कुमार। बंदी होय गजेस हर अगम निगम भुति पार ॥ अगम सिनु संसार बह महा धार है धार। बोहित तुलसी अरन अदि होत जात मी पार ॥ मी मतिमंद अंध मड कई कगि कई बघान। धारो मई सब जायि हैं। सखन संत महान ॥

अंत—हरिपद ॥ अब मी सबते विनय करत हीं सुभी सफल मन कई। कलुक हाल मी आपन बरनन सबहिं पारन निरलाई ॥ सुदुख बंधा भये जन्म हमारो अनुर नरार है प्राया। आरुह परगल निरुद प्राग के पिता बनाया यामा ॥ पिता हमारे सब बिधि मापू बदन सुकृत जेहि नामा। मी मतिमंद महा अपराधी लोभ अघेय कम कामा ॥ कहीं सदा कपटी बुरन मंग जानी बर्म न दया। कई कगि अयगुन कईं अपनो प्रमेड मोदि जय माया ॥ अबने सबसुय सबई राम के छादि छादि अब कामा। सबते मय सुय निमिदि आइके मदा रहत मम पाया ॥ तुलसी हन पद मन्थि कभूतम बेद शास्त्र मत पाय। ताका कपु मत इंगति करिके राम नाम मय लाये ॥

अत—कवित्त ॥ जमदूत सुनि पाठे जमराज से मुनाठे एक अद्भुत कविताठे
 दैजनाथ जू वनाठे हे । सुप रहे जमराहे मोच उर मे वदाठे शीश नीचे को नगाहे चित्र गुप्त
 को बुलाठे हे ॥ नर्क मूठो सब भाठे अर्वा एक हू न आठे सब गोपी विरह गाठे दैरुठ को
 मिधाठे हे ॥ चित्र गुप्त सुमकाठे भलो लेपनी छुटाठे दैजनाथ से दोहाठे रोक घांठहों में छाठे
 हे ॥ दो० । गोपी विरह महात्म भापेठं मनि अनुमार । दाताराम विप्रवर रघुपति पद
 उर धार ॥

विषय—गोपी विरह जियमें श्री कृष्ण जी का गोपियों को त्याग तुजजा से प्रीति
 करने और गोपियों का श्री कृष्ण जी से प्रेम होने आदि का वर्णन है ।

संख्या ६० वी. कवित्त, रचयिता—दाताराम उर्फ, दीना दाम (चतुर नगर),
 कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—९ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—२३४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८,
 प्राप्तस्थान—५० श्रीकृष्ण, ग्राम—महिगल गज, जिला - सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दो० ॥ अरुल अर्नाह अपठ अज निगशर निरधार
 अम गुरु वसत हृदय मम माया गुण गोपार ॥ १ ॥ रसुनदन पद वटि के चढी पवन
 कुमार । वटौ शेष गणेश हर अगम निगम श्रुति चार । २ ॥ अगम त्रिभु ममार यह महा
 घोर हे धार । बोहित तुलसी चरन चदि होत जात में पार ॥ ४ ॥ मै मति मंद अध मठ कहै
 लगी करौ वपान । थोरै महं सब जानि हैं सज्जन सत महान ॥

अंत—नैनन ते अव जोति गइ अरु दात विना सुप बोलि न आये ॥ जीवन के सद्य
 ठाठ गयो तन छीन मलीन भौ शीप कपावे ॥ केस सफेद भये मिंगरे अरु शब्द कड़ी नहिं
 कान को भावै ॥ श्री राम कहै अव अत अइ भय मात नही हिय माहें लिआवै ॥ इति श्री
 दाताराम शुक्ल कृत कविता समाप्त ॥ सवत् १९४८ वि०

विषय—उपदेश

संख्या ६० वी. मद् चरित्र, रचयिता—दाताराम उपनाम दीनादाम (चतुरनगर,
 इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—९ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—
 ४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—
 सं० १९४०, प्राप्तस्थान—ठा० रामपाल सिंह, ग्राम—दातगाव, ढाकघर—बडताल,
 जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मद् चरित्र लिप्यते ॥ दो० ॥ सिय रघुवीर चरण
 रज सुमिरौ आठौ जाम ॥ जाकी कृपा कटाक्ष ते नाम होत रिपुकाम ॥ सोइ रघुवीर कृपा
 निधि दीनन सदा सहाइ । काम क्रोध मद् लोभ सब सुमिरत सकल नसाइ ॥ अव रघुवर
 पद सुमिरि के सुमिरौ पवन कुमार । शेष गणेश महेश विधि अगम निगम श्रुति पार ॥
 श्री रघुवीर प्रताप ते कहव कछुक कलि धर्म । समुझै सज्जन सत जन कटुक वचन कहु
 नर्म ॥ सोरठा ॥ कलि के भये सुत चारि चहु आमिप मद् जुआ ॥ धर्म कर्म सब मारि

करत जकरक राज जग ॥ दोहा ॥ प्रथम विमलकर की कथा कईहु सबहि समुझाइ । सुरा-
पान त्यागन करी जाहित धर्म नसाइ ॥

अंत—श्रीना बिनके सुपन से निकसत सीताराम । तिनकर सहा गुलाम में सेबक
भाये जाम ॥ होकी ॥ कलितुग लेकत काग राग गावत है तारी ॥ देक ॥ अंतर गुलाम
सुरा को कीन्हे भोतल की पिचकारी ॥ प्याहन के देखो बने हैं कटोरे तकि तकि सब सुप
भारी अडम बेते नर नारी ॥ १ ॥ बमन अनुप रंगे रगन में है नरदम के नारी । कीचद केर
माजूम बनायो परसत भरि भरि वारी ॥ खात है बदन पसारी ॥ २ ॥ आमिय काय बनाव
पान मे जमित मसासन डारी । अति समूह काँग काची भरि बीर रण्यो संझारी । दिने
मिदर अमिचारी ॥ ३ ॥ काग हात हर गलियन गलियन देखहु निज डपारी । कीच मष्यो
अत्र आमो भोजित शीनादास निहारी ॥ शैव से भांसुन डारी ॥ ४ ॥ इति श्री शीनादास
कृत मद् चरित्र संपूर्ण संवत् १९४० वि० लिखा रामनारायण तिहारी चतुरनगर निवासी
कातिक शुद्धि पंचमी ॥ राम राम राम ॥

विषय—आमिय, सुभा, घाराव, चंडू आदि के सेबन से हों नियों का वर्णन ।

संख्या ६० श्री संग्रहीत कठिका, रचविता—दाताराम या शीनादास (चतुरनगर,
इकाहाबाद, कागज—श्रेणी, पत्र—२९ आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २८, परिमाण
(अनुच्छेद) ६६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, छिति—मागरी, लिपिका—सं० १६४८ प्राप्तिस्थान—
मुसी काकाराम, ग्राम—सकामाली, डाकघर—अरंगवाहाद जिस्सा—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ संग्रहीत कठिका लिप्यते ॥ भजन नर तन पाप
कमाया क्यारे । कस्य हृद छाया तर भाया तबहु कछु न पाया क्यारे ॥ गैह देह कठिकै दू
भूख माया में भरमाया क्यारे । जो जाया सो गया अकका तू है कै है माया क्यारे । वा हरि
भजा न साधुन सेवा जीवन व्यर्थ गंवाया क्यारे । गिरधर दास जो मोहन मूला मनुज नाम
कहाया क्यारे ॥ १ ॥ भजन ॥ हरि बिन कोई काम न जायो । रतन जड़ित कंचन कर लंभा
जुनि जुनि महक उठयो । तासे कति बाहर करि शीनों छिनयक रहन न पायो । तिरिया
कई हमई मंग जलिये मूल मूल बहि जायो । चकत बेर हैरी सुप केर है पृथी पगन पठयो ।
हैं घर में सूनी बहि काकत शैली विदगी को तुलसी यह संमार को मोतिपारिंद भयी ॥ २ ॥

अंत—कजरी ॥ मुन मयंक भर्मदु चंद पे अकरीं पूंघरवारी रामा ॥ हरि हरि कोदे
लट मान्य करी नगिनियां रे हरी ॥ साईं नाक नयुनियां लटकै मोती की सटकनिया रामा ।
हरि हरि जियरा मारे कमर परी करननियां रे हरी ॥ मंद मंद मुमकनियां बांकी तिरही
है चितननियां रामा । हरि हरि चकत चारु जैने मर्तग भवतालिनियां रे हरी ॥ गति गर्वद
गामिनिया छम छम बाई पग देजनियां रामा । हरि कुच नितंब के मार लंक सचकनियां रे
हरी ॥ भीईं पत्नी कर्मनियां हार काजू जग मोहनिया रामा । हरि श्री बत्री मारायन पर लूने
पनिबा रे हरी ॥ ३ ॥ तलकति बंति मन्तो माहि मारी रतियां । कदरी कठिका टैकवा तबी
जागना । मुहबां में चूर्मा हूर्मी से है उनके कारवा कदरी कठियां ना कोई गरवा कारीना ॥
प्रियो मियाओ समुझाओ विर नाओ कदरी कर्मो विधि मुहदा रम पागना ॥ १ ॥

इति श्री संग्रहीत कठिका संपूर्णमुद्रित मिति वैशाख सुदी पंचमी संवत् १६४८ वि० ।

विषय—कजली, भजन, ठुमरी, रेसता, दोहा, छंद आदि कई कवियों के संग्रह हैं ।

संख्या ६१ ए. कमलनेत्र, रचयिता—दत्तदास, कागज—देही, पत्र—५, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप्) २७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—५० मन्त्रीलाल तिवारी गंगापुर, ग्राम—मिथिन्व, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—ॐ नमोनारायण ॥ अथ कमल नेत्र लिप्यते ॥ ॐ कमल नेत्रर ऋते पीतांबर अधर मुरली गिरि धरं । मुकुट कुडल कर लकुटिया । गांवरी राधावर ॥ फूल जमुना धेनु आगे सकल गोपीयन मन हरं । पीत वनतर गरुड वाहन चरन सुपनिन सागरं ॥ करत बेल कलोल निम दिन कुज भवन उजागरं ॥ श्री अचर अमर अजोल निश्चल पुरपोत्तम अपरापरं ॥ दीनानाथ टयाल गिरिधर कम हिरनाकुम हर ।

अत—श्री कृष्ण कलिलमल हरन नवक्रो जो भजै हरिचरन को । भगति अपने देह माधो भव सागर के तरन को ॥ जगनाथ जगदीम न्वार्मा श्री वद्वीनाथ विद्याभर । द्वारिका के नाथ श्रीपति केनाव प्रणमम्यह ॥ श्री कृष्ण अष्ट पटी धरत हटै विश्नु लोक सगच्छति । श्रीगुरु रामानंद अंतर स्वामी कधि दत्तदास ममाप्तम् ॥ इति श्री भगवान् कमल नेत्र सपूर्णम् । शुभम् ॥

विषय—इसमें श्री कृष्ण भगवान के कमलनेत्र की अष्टपटी वर्णित है ।

संख्या ६१ बी कमलनेत्र भगवान, रचयिता—दत्तदास, कागज—देही, पत्र—५, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप्) ३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—वैद्य रामभूषण, ग्राम—कामतापुर, डारुवर—इटाँजा, जिला—लखनऊ (अवध) ।

आदि अत—६१ ए के समान ।

संख्या ६१ सी. रामाष्टक, रचयिता—दत्तदास, कागज—देही, पत्र—४, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप्) ३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—वैद्य रामभूषण, ग्राम—कामतापुर, डारुवर—इटाँजा, जिला—लखनऊ (अवध) ।

आदि—ॐ श्री रामायनम् ॥ ॐ श्री गम राम रघुनन्दन राम राम ॥

श्री राम राम भरताग्रज राम राम ॥ श्री राम राम रण कर्कदा राम राम ॥ श्री राम राम शरणभव राम राम ॥ १ श्री राम राम सकलेश्वर राम राम ॥ श्री राम राम मनुजीश्वर राम राम ॥ श्रीराम राम वनजीश्वर राम राम ॥ श्री राम राम शरणांभव राम राम ॥ २

अंत—श्री राम राम शरणं भव राम राम ॥ ७ ॥ श्री राम राम सुकवि प्रिय राम राम ॥ श्री राम राम सुमुनि प्रिय राम राम ॥ श्री राम राम सुज प्रिय राम राम ॥ श्री राम राम शरणंभव राम राम ॥ ८ ॥

रामाष्टकमिदं पुण्यप्रातः कालेयथ. पठेत् मुच्यते सर्व पापेभ्यो विश्नु लोक सगच्छति ॥ ९ ॥ इति श्री रामाष्टकं सपूर्णं समाप्तम् ॥

संख्या ६२ ए. अजीर्ण मंत्रि, रचयिता—वृत्तराम मायुर (मधुर) कागज—
हैसी, पत्र—१८, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपुष्प)—
१००, पूर्ण, रूप—शीमक कगी, गण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२१ =
१८९४ ई०, लिपिकक—सं० १९४५ = १८८८, प्राप्तिस्थान—हाकिम रामदयाल, ग्राम—
मुबारकपुर, बाकबर—कहरपुर, जिला—सीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री कृष्णापनमा ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ अजीर्ण मंत्रि प्रारम्भः श्री
धर्मवर्तरी मंगलान को ग्रंथ श्री आदि में ममस्कार करते हैं जिन्होंने अमृत का पूर्ण कृष्ण घरा
है जो पीठावर के धारण करने वाले सब सिद्धि और सुरेन्द्र के बंध कमल से मैत्र मणि की
भासा को धारण करने वाले हैं , आयुर्वेद विद्या के प्रगट करने वाले तथा स्मर्ण मात्र से ही
रोगों को नाश करे है ॥ श्री कृष्णावन विहारी राधिका रमण को ममस्कार करके वृत्तराम
श्रेष्ठ है पबोव्रत जिसका भीसी इस अजीर्ण मंत्रि की रचना करे है ॥ सर्व रोगों का कारण
अजीर्ण रोग कहा गया है क्योंकि जब अन्न का परिपाक अर्थात् नहीं होता तब तक अनेक
ज्वरादि कुछ रोग इस मनुष्य को संतापित करने हैं इसी हेतु अजीर्ण रोग का पूर्वाचार्यों
के संमत निदान की कहते हैं ॥

अंत—शुद्ध सींगिया विप १ भाग पारा १ भाग ज्ञायकक २ भाग सोहमा २ भाग
पीपक ३ भाग सोंक ६ भाग कौड़ी की मस ६ भाग शींग ५ भाग इन सब को चूर्ण करे
इसे महोदधि बरी कहते हैं यह अग्नि को बढ़ाती है ॥ इति अजीर्ण मंत्रि संपूर्ण
समाप्त ॥ लिपि गंगाराम त्रिपाठी हरदोई मध्ये संवत् १९४५ बैश्व कृती वसमी ॥

विषय—अजीर्ण रोग की उत्पत्ति, भेद सङ्गण पाचन होने के दिवस, कुछ पुत्रे हुए
उपयोगी चूर्ण के बन्धने की तरकीबों आदि का वर्णन ॥

संख्या ६२ वी नाड़ी प्रकटा, रचयिता—वृत्तराम मायुर (मधुर), कागज—
हैसी पत्र—३६ आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८ परिमाण (अनुपुष्प)—
२१६, रूप—शीमक कगी, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, लिपि
कक—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—हाकिम रामदयाल, ग्राम—मुबारकपुर,
बाकबर—कहरपुर जिला—सीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनमा ॥ श्री कुंज विहारिने नमः ग्रंथ के आदि में और अंत में
मंगलधारण करा करते हैं इसी से ममस्कारात्मक मंगल ग्रंथ कर्ता करता है धर्मवर्तरी सिद्धि
धर्मवर्तरी दैवों के राजा और ज्ञान के देने वाले गुरु को ममस्कार करता है ॥ और जो भाव
प्रकटा आदि ग्रंथ हैं तिनका मत दृष्टिके दैवों के बोध के हेतु य भाड़ी प्रकास ग्रंथ वृत्तराम
करके कहा जाता है ॥ नाड़ी के जाने विगट जो दैव द्वा बनता है सो दैव धन और धर्म और
जस को नहीं प्राप्त होता बहुत और बोधे बोध विगटने में पहिंके नाड़ी की परीक्षा करे उस
नाड़ी की अंत आदि और चकार के मध्य में अर्थात् आदि मध्य अंत में जिस रोग पर जने
उसी रोग को जाने ॥

अंत—हे अद्भुतेसने तीस वष मे सेकर ५० वर्षे तक नाड़ी ७५ बार चपटी है और

५० वर्ष के पीछे अस्सी वर्ष तक ६० बार १ मिंट में कपायमान होती है ये जो पछाडी कहि आये नाडी चलने की सध्या इससे कमती चलै तौ सरदी और ज्यादा चलै तौ पिच की नाडी जाननी ॥ (श्लोक) ऋषि धनंजय नन्द शशांक भृत्परमिते विभु विक्रमवत्सरे द्रुपशितेदशमी बुध वासरे धमनिका समगा तरपल पूर्णताम ॥ ऋषि कहिये ७ धनंजय ३ नंद कहिये ९ शशाक भृत कहिये १ अर्थात् १६३७ विक्रम सवत में और आश्विन शुक्ल दशमी बुधवार को धमनि प्रकाश ग्रथ पूर्ण हुआ । इति श्री नाडी प्रकाश सपूर्णम् शुभम् लिखतं राम नारायण सवत् १६४० वि०

विषय—नाडी का ज्ञान विधि पूर्वक विस्तार सहित वर्णन ।

संख्या ६२ सी. नाडी प्रकाश, रचयिता—दत्तराम माथुर (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनु-पुट्टु)—५५०, रूप—प्राचीन फटी, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४६ = १८८९ ई०, प्रासिस्थान—प० शिवरत्नजी, ग्राम—भज्जू का पुरवा, डाकघर—महमूदावाद, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाडी प्रकाश लिप्यते ॥ मंगला चरण मूल ॥ धन्वतरि वैद्य राजनत्वा ज्ञान प्रदं गुरुं नाडी प्रकाश ग्रंथस्य प्रकाश. क्रियते धुना ॥ टीका ॥ ग्रंथ के आदि में और ग्रथ के अंत में मंगलाचरण क्रिया करते हैं इसी मे नमस्कारात्मक मंगल ग्रंथ कर्ता कर्ता है धनंवतरि मिति धन्वतरि वैद्यों के राजा और ज्ञान के देनेवाले गुरु को नमस्कार करिके मैं नाडी प्रकाश ग्रंथ को प्रकाश करता हूँ ॥ और जो भाव प्रकाशादि ग्रंथ हैं तिनका मत देखिके वैद्यों के बोध के हेतु नाडी प्रकाश ग्रथ दत्तराम कहते हैं ॥ नाडी के जाने बिना जो वैद्य दवा करता है सो वैद्य धन और धर्म और यश को नहीं प्राप्त होता ॥ बहुत और थोड़े दोष विगड़ने से पहिले नाडी की परीक्षा करें उस नाडी की अंत आदि और चक्र से मध्य में अर्थात् आदि में मध्य अंत में जिस स्थान पर चले उसी रोग को जाने ॥

अंत—अथ संपिया जारण विधि लिप्यते ॥ अमर वेल लावे उमे हाड़ी में भर सोरा डाल चूल्हे पर चड़ा नीचे आच जरात्रै जब अमर वेल गल जाय तब दो ईंट पजावे की वड़ी वड़ी ले दोनों में रूषे से जादा गड़ा खोटे फिर घिस लेय कि जिसमें दोनों ईंटें आपस में मिल जावें फिर घिस हडिया को कि जिसमें अमर वेल है एक करछी से अमर वेल ले और दूसरे हाय में चमिटी से शुद्ध सपिया की डली ले तोले १ की पकड़े रहे फिर जल्दी से उस अमर वेल को ईंट में डालकर सपिया की डली गाड़ देवे और दूसरी करछी भर कर उसके ऊपर डाल कर जल्दी से ईंट से ईंट को जोड़ कर पकड़ मिटी से कर घाम में सुपावें फिर गज पुट की आच में फूक देवे तो निर्धूम सपिया भरें और तामें को गलाय उसमें एक रसी संपिया की भस्म डालै तो तामा सफेद होय और अनूपान से खाय तौ सेर ५ की भूय लगै और दस स्त्री भोगने की शक्ति होय और ज्वर से आदि ले सब रोग दूर होंय इति सपिया मारण विधि इति नाडी प्रकाश ग्रथ दत्तराम विरचितायां सम्पूर्ण समाप्तम् लिखतं हरिप्रसाद संवत् १९४६ वि०

विषय—इस ग्रंथ में जाड़ी की चारु जीवन मरण रोगी परीक्षा आदि का ब्यवह है ।

संख्या ६० श्री रामसु नवरत्न दर्पण भाषाटीका, रचयिता—दत्तराम भाधुर (कसी), कागज—इसी, पत्र—१४७, आकार ९.२ × ६.३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुपुष्ट्य)—२२७६, कठित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकार—सं० १९१२ = १८२२ लिपिका—सं० १९४८ = १९६१ इ०, प्राप्तिस्थान—प० इयामाचरण ज्योतिषी द्वारा आदित्यप्रसाद पंडे, ग्राम—झरिडिवा टाकवर—इलिया, जिला—मिर्जापुर ।

आदि—श्री सम्वत् ॥ श्री विष्णुत्रिंशत्तारिण मन् ॥ अथ श्री नवरत्न दर्पण लिप्यते ॥ श्री राधिका पति पद्माम्बुज रणुरम्य ॥ नत्वा गुरु स्वजनकं जननी तदीव ॥ श्री रमसु राम नवकस्य करामि टीका ॥ भाषार्थदीर्घि रस प्रभामनज्ज्या ॥

कम्पादरं विन् विनाशन च नाथा महा मृतनयं गजास्यम् । यस्य प्रसादेन सुरासम । स्नास्तिप्यमिदं स्वैस्वैव पदे सर्वय ॥

अर्थ—विष्णुजी प्रमदता से सङ्कट देवताय के गग नित्र नित्र अधिकार पर सर्वत्र स्थित रहते हैं उन्हें कम्पादर विष्णु नागाक पार्वती पुत्र गजायन को नमस्कार कर (अथ इस ग्रंथ को प्रारंभ करते हैं) ॥ १ ॥

अंत—इति श्री रामसु नवरत्न दर्पण भाषा टीका समाप्तं शुभं ॥ मिठी आबय शुद्ध १२ सं० १९४८ विक्रमिय

विषय—नागरत्न बसु चर्च बम्बरे विप्रमार्के कृतयति विसचन्द्रे फलपुणे शुद्ध पत्रे हठ मिह परिपूर्ण, पूर्वाह्मा मुरावेसु धानां हितवर्षिय श्री रमक क्षेत्रां टिकियां सिधावप १२३॥ सीतारामस्य पुत्रेन कृपा देव्या मुतेन च परममुत्पेन शिष्याय प्रथितं नवरत्न कम् ॥ १२६ ॥

सति पुगं नयं चर्चो ईकमे ज्येष्ठ शुद्धे म्हा तियि कधि बारे रमसु रसस्य टीका । सङ्कट जन हितार्थं देश भाषा निबन्धा मसु रियु शुभ पूर्वाहारामेणनम् ॥

संख्या ६३ इयाबाई श्री बानी, रचयिता—इयाबाई (इहरा भलकर), कागज—आपुनिक, पत्र—१९, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १६, परिमाण (अनुपुष्ट्य) २१०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिका—सं० १९२७ = १८०० ई०, प्राप्ति स्थान—बाबा मन्नीराम दास, ग्राम—अरगाँव, टाकवर—इटीवा जिला—सतनाड ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ इयाबाई श्री बानी लिप्यते ॥ इतरा बंदो श्री मुकदेव श्री सब विधि क्री महाय । इरा मङ्कल जग अपवा प्रेम मुधा रम प्याय ॥ श्री श्री परामर्श प्रमु परम रूप अमिराम । अनरजामी हवानियि इया करत परनाम ॥ बह्य रूप सागर मुधा गहरो अनि गंभीर । जान् लहर सदा जडे बरीं धरत मन थीर ॥

अंत—पीया गिरो समुद्र में डूबन लगे शरीर । किरपा करि हरमन दिपो मेठी लन की पीर ॥ मुगपन कीमी मनझी सब बुर न्योन बुन्याय हारे जडे कबीर के। बरदीर्ह उराय ॥ भेटो जय ईशान ई श्रीनी मुखा पमार ॥ हरि लीला रीरी नरीं अचरन कदा अनार ॥ नरमी

मेहता हेतप्रभु माङ्गी आय दुकान । स्यामल मेठ कहाइया द्रीन चउ भगवान ॥ दृति दयावाई
के पद सपूर्ण समाप्तः लिखा शिव लाल वाजपेई बरेली मध्ये पाँप वदी सप्तमी संवत १९२७
वि० ॥ जै राम राम राम राम राम

संख्या ६४. दयाविलास, रचयिता—दयाराम (इलाहाबाद), कागज—साधारण,
पत्र—९१, आकार—६ $\frac{३}{४}$ X ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुदुप्)—
३७२०, खडित, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७९ = १७२२ ई०, प्राप्ति-
स्थान—प० रामदुलारे वैद्य, ग्राम—सरावाँ, ढाकुर—हमीदपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ दया विलास लिख्यते ॥

दोहा ॥ राधापति पद सोम धरि, सीता पति पद दीठि । जिमि काली ऋषि धरणि
छलि वावन वलि पीठि ॥ १ ॥ श्री पति पद उरमें वसो भृगुपति इमि त्रिपुरारि । मधु मर्दन भ्रुव
अटल पद मगल मुदित सुरारि ॥ २ ॥ अष्ट सिद्धि पद गुण सहित, रमा मुदित विधि नाथ ।
शेष वेद शिव विदित जस, प्रणत कज पद माथ ॥ ३ ॥ गण नायक वाणी सदा, दियो देव
मति सार । रची सुभापा मिन्यु मम, रतन जतन उपचार ॥ ४ ॥ सिद्ध करण वल चरण
युग, रखौ सुपद लपटाय । रामदूत अनुकूल ते, जल निधि भुजा तराय ॥ ५ ॥ वैद्य के अज
भनि दक्ष लखि, भानु तात फुनि इन्द्र । श्रोत्रादिक ऋषि अग्नि (वेस) को पृथक तत्र बहु
वृद ॥ ६ ॥

अत—पठ—१८१

अथ गंधकस्य सोभन

हरि गीतिका छंद

छीर हाँदी माहिँ धरि मुख बाँधि पट छिति गाडिये । घृत पलाली मान गधक विछाइ
मुख पर छाँडिये ॥ झरत गधक आँच कि हँत वासि समर आखि हो । गुण हीत चचल राज
शम गम त्रिपुट गदहर भाखि हो ॥

सुगमा-गंधक पाल ४ घृत पल २ किंवा रेदी का तेल पल १ कूटि कै गधक मो साने
दूध के वासन के मुह मे मेही कपड़ी बाँधे तिस कपडे के ऊपर गधक विछाइ देइ गधक सो
ऊँचै द्वै अगुरी भै तीन तवाराखै तावा के ऊपर आँच के तेज सौँ गधक टेघरि कै गिरै ॥

वियय—वैद्यक ।

विशेष—प्रथकार परिचय.—

नदिय व्याधि परसोत जस लक्षराम कुल दीप । दया विलास प्रकास तव इन्दु-
वन्दनी सीप ॥

कविचास वर्णन.—हरिशकर छंद

व वं व व वहत वारिधन अरुन सकल निजु भवन रटत निज भवनीगम समेत श्रं श्रं
झ झंरसोत गतियोत अछै वट पल धुअसेत ॥ तं तं त तीर्थ राजत नारि घट कूल इन्द्र फणि
गणि भणि जेत । फं फं फं फल चदत कुसुम दल धूप दीप छिम विधि पद छेत । तं तं तं

तीर्थरात्र तत्रि प्राण प्राण सत गुण पद चारी । ई ई ई दया बाम बहै संजु गुण माधी
बपुपारी ॥

संख्या ६५ ए. अष्टयाम, रचयिता—देवदत्त, अग्रज—साधारण, पत्र—१४,
आकार—१३३ × ५३ ईंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुपुष्प)—३८०, पूर्ण रूप—
नवीन, पद्य, किरि—नागरी, किरिअक—सं० १९१३ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—१०
शामाधीन मिश्र, ग्राम—नवाबाद, डाकघर—बासपुर, जिळा—प्रतापगढ़ (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ नम देव कृत अष्ट ग्राम लिप्यते ॥

कविच ॥ सराहे सुरासुर सिद्धि समाज त्रिभि कवि छात्र मरें रतिमार । महासुख
मंगळ संय लुई बिली भव भार निवारण हार ॥ विरादि त्रिकोक ओ गाई के थोथ सुदेव
मगौर रूप नपार । सदा बुद्धही रूपमान मुठा दिन वृद्ध श्री हृद्य राज कुमार ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ दम्पति भीकी देव कवि, बरमत विविध विकास । आठ ग्राम थीसठि
घरी पूरण प्रेम प्रकास ॥ २ ॥

अंत—श्री—अह नपदेत म मुन तपन, होत करण रसस्वीम । कहु अपेय कहु ईरपा,
कहु अथिक आधीम ॥ १५ ॥ यया वा अकई को भयो पित वेत फितीति अई दिशि चाय
सो माधी । वी गाई छीय अफाकर की छवि, जामिनि जोहू जनी जम जाधी ॥ बोळत बैरी
विहंगम देव मु सीसिन के धर सम्पति सौंभी । कोहु पिपो सु विभोगिन को सुसियो मुप
अप पिसाकिन माधी ॥ १६ ॥ दोहा ॥ आठ पहर थीसठि घरी, बरनि कहे कवि देव ।
जानत थे अम भोग थे, बने माग के ठेव ॥ १७ ॥

इति श्री देवदत्त कवि विरचिते अष्ट ग्राम सकळ दिन राति दम्पति वेद्य वर्णन ॥
अष्टग्राम समाप्त सुभमस्तु ॥ कुम्भार कुण्ड ३० बुध सन् १९१३ ० ॥

प्यारी विधा पल्ली पर सुते मगौज की बात कदा धे हुईं हूँ । प्यारे के हाथ लगी
कतिवा तहें प्यारी करे कर जोरे उहें हूँ ॥ जान मुजान मु कर कहीं भव जानत ही मसिराम
तु हें हूँ । पाव भरे मुप बोलत माहिन ताते कहे महाराज हु हें हूँ ॥१॥ श्री रामाय नमोनमा ॥
शिवायबमा ॥

संख्या ६५ पी देवमाया प्रपच नाटक, रचयिता—देवकवि (इटावा), अग्रज—
सकेत, पत्र—१११, आकार—७३ × ७३ ईंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण
(अनुपुष्प)—८७०, रूप—नवीन, किरि—नागरी किरिअक—सं० १९८२ = १९२५ ई०,
प्राप्तिस्थान—१० माताहीन त्रिवेदी ग्राम—कुमुमरा, जिळा—मैसपुरी ।

आदि—सिद्धि श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वती नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अंत
रचित अष्ट करिक कपाट मुल सीतक समय देव मुम बनकी बिक्रमु । अंतर मुका जल
विमळ कमकाकर गहीर छवि हीरनि अस्थि तट आस पास ॥ ताके मधि वेदिक विरादै
प्रति मंडळीकी ताहुमें रतन गूढ राजतु महा प्रफुसु । भीतर कुमुम सेज पीरे परिमळ मिळि
छीम्यो कोक संपतिथी रूपति करे बिक्रमु ॥ १ तामदिके द्वारकी नदी माहनी मान । अनुर
राहू वाहूकदि मिळि नाचति जानी जान ॥ पित हारि मोहनी अनुर मुबारि । इति नचे धेई

ततकारी ॥ पूजत सुर मुनि जनेस । उलहत सुख सिद्धि कहत जय जय जै गणेश ॥ ५
एक रदन दुरद वदन । लवोदर दुरित कदन ॥ सुदर वर गवरि नदन । सो भा सुभ सुद्ध
सदन-॥

अत—इति श्री देव माया प्रपच वचके शुद्ध ज्ञानानंद मये नाइके पण्डो अंकः
समाप्तः लिखित दुवे छत्र पति सवत् १८२६ फाल्गुण कृष्ण २ सोम वासरे ॥ तदनंतरं
लिपितं दुवे मातादीन देव कवि वशात्मज स्थान कुसमरा जिला मैन पुरी भाद्रपद शुक्ल पक्षे
प्रति पदायां बृहस्पति सवत् १९८२ इति ॥ छप्पय—दुवे विहारी लाल भये निज कुल महं
दीपक । तिनके भे कवि देव कविन में अनुपम रोचक ॥ पुरुपोत्तमके छत्र पती बावा कृत
लेखक । भये खुशाली चंद्र पुत्र बुधि सेनहु जीतक ॥ तिनके राजा राम सुत पितु हमरे मति
हमरे मति मान । तासुत माता दीन यह दास रावरो जान ॥ तिहिकर ये केशव राम सुत
विप्र वंशका दास । दया दृष्टि की होइ अव पूरन होवै आस ॥ श्री ॥ श्री ॥

संख्या ६५ सी. जाति विलास, रचयिता—देवकवि, कागज—देशी, पत्र—११,
आकार—१२ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०२, रूप—
प्राचीन, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—श्री महाराजा प्रकाशसिंह जी मल्लापुर, जिला—
सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ जाति विलास लिप्यते ॥ सवैया ॥ पायन नूपुर
मंजु वज्रै कटि किंकिनि की धुनि की मधुराईं । सांवरे अंग लसै पट पीत हिये हुलसी वनमाल
सुहाई ॥ माये किरौट वड़े हग चंचल मद हंसी मुप चंद्र जुन्हाईं । जै जग मंदिर दीपक
सुंदर श्री ब्रज दूल्ह देव सहाईं ॥ दोहा युक्ति सराही मुक्ति हित मुक्ति को धाम । युक्ति
मुक्ति अरु भुक्ति को मूल सो कहियत काम ॥ विना काम ॥ विना काम पूरन भये लगी
परम पद छुद्र । साने सिव्वा ससि मुपी पूरे काम समुद्र ॥ ताते त्रिभुवन सुर असुर नर
वसु कीट पतंग । राक्षस यक्ष पिशाच अहि सुपी सवै तिय संग ॥ अथ कामिनी लक्षण
दोहा ॥ कोटि कोटि विधि कामनी तिनके कोटिक भेव । तिनमें माया मानुपी वरनत है कवि
देव ॥ सो नारी बहु नागरी पुर वासित ग्रामीन वन्य सन्य अरु पथिक तिय पट विधि कहत
प्रवीन ॥ अथ नारी भेद लक्षण । देवल राउर राजपुर नागरि तीनि निवास । ताके लक्षभ
भेद सेव वरनत जाति विलास ॥

अत—केरव बधू यथा ॥ चपा के वरन तन चंदन वसायो वन चंद्र से वसन वसे
चंदन के वारिहौ पग मृग मीन जल थल के अधीन होत गुजरत भौर पुज कुंजन विसारि
है ॥ कौन करै सेव कहि देव ताहि देपत ही मोहि मन देवता करति मनुहारि है ॥ जोवन
की जोतिन सो मोतिन के रली हार को किली कुरंग नैनी नारि सुकुमारि है । इति ॥

विषय—विभिन्न जाति की स्त्रियों का वर्णन ।

संख्या ९५ डी काव्य रसायन, रचयिता—कवि देवदत्त, कागज—सिरामपुरी,
पत्र—९८, आकार—१० ३/४ X ९ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—
२२०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६३३ = १८७६ ई०,
प्रासिस्थान—श्री ब्रज बहादुर लाल, प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ पोषी विंगक भिक्वते । इन्द्र कवित मुंदर बदन
मममय मधम विमोदर । गावरबब गिरिजा सुबन बिहरत गोपति गोद १ ॥ देव चरित गुद
देव की महिमा कहि जग भी । अथ अत्रपर स्तीकेततनु त्रियत । मिफरती कौन । २ ॥ श्री
गुद देव कृपाक की कृपा सुपुत्रि समीप । तिमिर मिरे प्रयते इर्दमंभिर अनुभव हीप ॥ ३ ॥
अथ नीच तनु कर्मबस बरयो जात संसार । रहतु मय्य भगवंत जसु नय्य काय्य सुख
सार ॥ ४ ॥ रहत न भरबर बाम भन तरबर सरबर कृप । जम सरीर जगमी जमद मय्य
काय्य रस क्य ॥ ५ ॥ अय्य जीव तिहि अय्य अनुस मी सुजसगरी ॥ बसत बहू जग बंद
गति कर्तकार गंभी ॥ ६ ॥ हरि जस रस की रसिकता सफक रसायनि सार । जहां न कर
तुफदर्मता यह अनय संसार ॥ ७ ॥

अंत—अनुभार बधा ॥ अथ बंद नवार सुरसिर विधि वैद बंध सुति छंद छंभ मी सयं
सार इति भूमि भार बरनिह जय गोप नेप ॥ ४२ ॥ वृत् विष्म सम अर्ध सम मांति
भंति बहुराक प्राकृत संस्कृत माया मुंद रथ ॥ ४३ ॥ तति जगो विभवद् क्षय्य छंद से
बर्षो संक्षेप करि जगत प्रसिद्धि अर्ध ॥ ४४ ॥ मेघ भरकमी पताक नय्य बीरौ वय्य कौतुक
द्वित प्रस्तारहू विस्तारन है श्य्य ॥ ४५ ॥ मानुष भाषा मुख्य रस भाव नायका छंद । अर्ध-
कार पंचा गये कइत सुमल सार्व ॥ ४६ ॥ सत्य रसायन कविल को श्री राधा हरिसेव ।
जहां रसाकर्कार द्यु सप्यो रप्यो कवि देव ॥ ४७ ॥ भाषा प्राकृत संस्कृत देखि महाकवि
पंथ । इव इव कवि रस रप्यो काय्य रसायन अर्थ ॥ ४८ ॥ श्री राधे वृज इव जय मुंदर
नरकिशोर । दुरित हरीं चित के चिती मैक सदै दगदोर । ४९ । इति श्री काय्य रसायने
देवदूत कवि विरचिते गद्य पद्य कृत्य ज्यति निरूप्यन एकादश प्रकाशः ॥ संवत् १९३३ वैशाख
मासे शुक्ल पक्षे नीम्यां तिथी मंगर वासरे छिद्यते श्री मुंसी अथव विहारी नाम मास्तर
महमूदाबाद स्कूल विजे सीतापुर सूबे अथव निवासी श्री अथपपुरी भारतखंडे । नाम
दिल्लीकी जिले मुकतापुर मज्दगरी सर्व यतधारी श्री नारायण दास द्विज दासः श्रुपाक ॥
शुभमस्तुः ॥

विषय—काय्य निरूपण ।

संख्या ६५ ई नकशिल, रचयिता—इबकवि बागज—साधारण पत्र—४,
आकार—१३ ३/४ × ३ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुच्छेद)—१९०,
पूरी, रूप—प्राचीन, पद्य, कवि—गगरी, प्राप्तिस्थान—श्री मुदरानसिंह रईस ताहकैदार
ग्राम—मुजफ्फर, बाकधर—कश्मीरकांतगंज, विद्या—प्रतापगड (अथव) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रारंभ वर्णन ॥ कवित—बोधि मानो सिंगर किं
से कइ छवि देत अपार है । है सरदार कुह के कुमार के, मार के अंग महा मुकुमार है ॥
कैसी प्रप्य फिर पूछ पनाते कि कस गुदे मपदक के तार है । मुंदरता के सरोवर में तुव
सोहत प्यारी सेवार से बार है ॥ १ ॥ लकड—अंक ही जामे बिराजि रही येह अंक धरती
पुगबामि को बिन्दु है ॥ बैमी के म्नाज मुपा रस काज को आइ रही विंग जाके फबिन्दु
है ॥ प्यारे के नयन कर्दरक को दित सीति त्रिगंजुज ही को अरिन्दु है । बीकी कर्मी वृप
भान कभी को किह्यत नहीं यह आदि को इन्दु है ॥ २ ॥

अंत—॥ मैहदी वर्णन ॥ नरे हं नीके कै नेकु निहारि भयो अँपियान को पूरन काम है । देपत ही वनि आवत है वरन्यो नहिं जात कष्ट छवि धाम है ॥ पैवे को रंग मनो मेहँदी कियो प्यारे के हाथ नहिं विसराम है । राते सरोजनि ऊपर आनि किर्धौ भोर के सुरज घाम है ॥ इति श्री नपदिप समाप्तम् शुभ मस्तु ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—प्रत्यङ्ग वर्णन, ललाट वर्णन, भ्रू वर्णन, नासा वर्णन, श्रवण वर्णन, सिन्दूर विन्दु, नेत्र, अधर टल, चिजुक विन्दु, कपोल, कपोलगाढ, धैन, दन्त, एवम् समग्र मुग वर्णन ।

(२) पृ० ४ से पृ० ८ तक—ग्रीवा, वाहु, हस्ता, कर अङ्गुली, लुच, रोमावली, त्रिवली, नाभि, कटि, नितम्भ, ऊरु, पिडुरी, गुल्फ, चरण, चरण अङ्गुली, चरण, दीप्ति, सर्वस्व, एवं मैहदी वर्णन ।

संख्या ६५ एफ. प्रेम चंद्रिका, रचयिता—देव कवि, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुच्छेप)—७५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह जी, मल्तापुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रेम चंद्रिका लिप्यते ॥ सर्वैया ॥ आपिन आपि लगाये रहै सुनिये धुनि कानन की सुपकारी । देव रही हिय में घर कै न रकै निसुरै ॥ विसरै न विसारी ॥ फूल में वास ज्यो मूल सुवासु को है फल फूलि रही फुलवारी ॥ प्यारी उजियारी हिये भरि पूरि सु दूरिन जीवन मूरि हमारी ॥ १ ॥

अंत—कवित्त—देव दीन यधु दया सिंधु सिंधुशदि के सहाइ है अवंधु की मदंधता गुझाई है ॥ जो हिरण्यकस्यप विदारयो नरसिंह है ऊवरयो प्रह्लाद सेना सधु की जुझाई है । रावन को राम है पठायो दिव्य धाम है के चादन पताल गति वलि को दिपाई है देव वसुदेव सुत है के जिन कस मारयो सोई भ्रज दूलह निम वासर सहाई है । इति श्री महाराज कुमार श्री कुवर उदोत सिंह आनद हेतु देव दर्शिते प्रेम चंद्रिकायां सौहार्द वात्सल्य भक्तिभाव प्रेम कार्पन्य चरनन चतुर्थ प्रकाश समाप्त ॥

विषय—साधारण प्रेम, पूर्वानुराग प्रेम, स्वकीया, परकीया, प्रेम विधि, सानुराग रस वर्णन, वात्सल्य भक्ति भाव प्रेम, आदि वर्णन ।

संख्या ६६. राग संग्रह, रचयिता—देवकीनदन, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेप)—७२०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—बावा क्षत्र्यूदास, ग्राम—बादशाह नगर, डाकघर—लखनऊ, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राग संग्रह लिप्यते ॥ प्रारंभ. भजन ॥ नमस्कार तोहि जगदा धारा । तू निष्पक्ष न्याय कर्तारा ॥ अतरा ॥ विन सहाय ब्रह्मांड अनूपम । रचो आप निज शक्ति द्वारा ॥ विशु व्यापक है सचहिं निहारत, रापत सचहिं नियम अनु-

सार ॥ १ ॥ जिन कर पग धारे प्रयच्छोक । जिनहिं जसु निरपत जग सारा प्रयज विज सब
की सुनै जिनती । सर्व शक्ति मन तू निराधारा ॥ २ ॥ प्रगत प्रताप अखल सचही में, कबो
कोलि निज नयन निहारा ॥ जल पक भूमि अकमल चहुँ दिशि तू है प्रकटाक रवि शशि
धारा ॥ ३ ॥ अखल नियम तेरो सब सिर करि भूमत लोक नियम अनुमारा । तू है नित्य
मुक्त शुभ बुद्ध । पावन करन हरन सुख सारा ॥ ४ ॥ निर्विकार निर्दोष विरुपम न्याय
कारी साँधे रक्तधारा । भनि भनि प्रभु बेनी के स्वामी नमस्कार तुम्हें बरबारा ॥ ५ ॥

अंत—इन्द्रा ॥ प्यारे जिन बोरी पाँह गहाँ ॥ मारग में सब ध्येग देखत है पूरी
क्यों न रही । मन में तुमरे कर्न बाध है सोई क्यों न कही ॥ कहि हीं जाय भाज जसुमति
सोँ हमरी बाध रोकत हो ॥ इतने पी नहिं मानत अर्धद धन छरिका हो तुम हो ॥ इति श्री
राग संग्रह देवकी नंदन कृत सपूर्ण संवत् १९३७ वि०

विषय—नामा प्रकार के रागों का वर्णन ॥

संख्या १७ जानकी बिन्दु, रचयिता—देवस्वामी (क्यसी), कागज—साधारण, पत्र—२२, आकार—८ १/२ × १३ १/४, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुच्छेप)—
१०००, अंकित । रूप—बहीन छिपि—जागरी, प्राप्तिस्थान—टाकुर हरिबनस सिंह,
ग्राम—कुम्हिया, राकपर—रुक्माता महावीर्य, जिला—प्रतापगढ़ (जयप) ।

व्यादि—भुति को भयित सार सो निधिस्य प्रगत भई तेहि जसुवन में । सोई
मीपिछी शककि रही है योगि जनन के पदानन में ॥ २ ॥ जीबनमुक्त विदेह दया से के
बिहरत गहर बन में । शिवकी परम ठाक बिदेही जिन भूलहु पक बादन में ॥ ३ ॥ जो
जानुकी सोई बिदेही सोई मीबकी जवन में । एक अनेक भौति से गार्ह देव मही बसि
कोकन में ॥ ४ ॥ ५ ॥

अंत—विद्या मंत्र प्रकटाक, जानुकी बिन्दु मनोहर है । विद्या मंत्र सोई श्री मिथिला
नामं दोहर है ॥ सिद्धि पीठि यह पाको सैबत नहिं कि सुनोहर है ॥ १ ॥ श्री जानुकी
सोई तो कमळ बस्तु धरोहर है । सलि प्रामी रामचन्द्र जू इनधे सोहर है ॥ २ ॥ यह
प्रतिमा तो रही सनातन तईं अम बोहर है । सीता राम मिलत हीं इनको पुस गयो जोहर
है ॥ ३ ॥ मिथिला जा साधारण जानी तो मर छोहर है । देव कई मिथिछा मुबिसन की
पैनी भोहर है ॥ ४ ॥ श्री जानुकी बिन्दु सपूर्ण शुभ मस्तु ॥ आश्वनि कृष्ण रही शुभ ॥

विषय—श्री सीताजी की जन्म विवाह व्यादि काका, कवि का ईश्वर, सीतासुम
की उक्ता ।

संख्या १८. प्रेमलजनाकर, रचयिता—श्रीदीपान, कागज—साधारण, पत्र—१४,
आकार—१३ × १३ १/४, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १०, परिमाण (अनुच्छेप) ३००, पूर्ण,
रूप—बहीन, पत्र, छिपि—जागरी, रचनाकाल—सं० १७७६ = १९८६, छिपिकाक—
सं० १८१५ = १७९८ ई०, प्राप्तिस्थान—साका गजापर मसाद, ग्राम—कुराहीह, राकपर—
परिपार्वी, जिला—प्रतापगढ़ ।

व्यादि—वर्षन ॥ होहा ॥ सोम बंध विप्यात मदि । कियो जनमु गोपाल । ताहीं
को अवताद किरि, भी कलि में गोपाल ॥ ४ ॥ ताको पुत्र प्रसिद्धि मदि, भपति हरिक

दाम । अरि अंधेरु जननेदि कै । रवि लौं कियो प्रकास ॥ ५ ॥ सशुनि कौं सिर सारनौं । मिग्रनि कौं सुप कंट । तिनके घर अवतार लिय । × विन मुकुंद ॥ ६ ॥ तिनके घर सुत अवतारे । छत्रु धर्म को रूप । जुया जगत में जग पर्यो । जग्यो जगमनि भूप ॥ ७ ॥ लियो जगमनि देवके । छत्रपाल अवतार । मोहतु जाहि सुमेर सौं । सोमवंस को मारु ॥ ८ ॥ × × × । तिनके घर में रीझि के लियो धर्म अवतार ॥ ९ ॥

अंत—मिलें तव मीत प्यारे कैमे तव होत न्यारे । कापे जांडू टारे वहा आनि वीच जाँ परै । वेतौं हैं अनीह दहाँ दहाँ और कीन । दोऊ एक है रहैं तिनको न मो करै ॥ जैसे जद रूपनि कौं पहिले मिलावै । नाहिं दहूँ जाँ मिलावै चहे दहूँ न्यारे सो करै मिलै जो हाँ सुधि है सुधि है तो मिलि वोहूँ नाहिं जाँ हाँ सुधि नाहिं ताँ हाँ न्यारे न्यारे को करै ॥ × × × जुग जुग कीरति वदादवे को राजन की सभा में पदावै को आछौं गुण गायो है । प्रेमिन को प्यारौं है कृप्यारौं है न काहू ही कौं जगत भजन सुनौं मवकौं सुहायो है ॥ सुरज के वंस राजा सगर मियरे निमत्य जुग माह सोमवम के सके मपूत भैया । रतन जूनें प्रेम रतना कर बनायो है ॥ ५६ ॥ ये ही प्रेम सानी तेरी नानी अति आदर सौं प्रभुजू के ऐ गुना नवाट कहियो करौं । पाइ ताँ चलत रहौं प्रभुजू के मटिर कौं सुदर करनि जाइ पाइ गहिवो करौं ॥ सीम परनाम करौं वरही जगदी सुरकौं नैन रूप देपि कै सनेह कहियौं करौं । येही प्रेम धर्म पाल जू के रतन पालजू को मदन गुपाल जू कृपाल रहिवो करौं । इति श्री भैया रतन पालजू विरचिते प्रेमरतना करे पंचमस्त रंग ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ यह बानी भद्रसुत तपौं प्रेम प्रीति सुप मोन । जावट प्रेम न मचरै तिनकौं जीवन कौन ॥ १ ॥ संवत् १८१५५ मासोत्तमेमामे शुक्ल पक्षे चतुर्थी ४ भृगु वासरै ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—पृथम तरंग । नृप (आश्रय दाता) वंश वर्णन—नमूने के आदि भाग से आगे;

राजा धर्म पाल का वर्णन—गोत को गुवालु तुहीं दूसरो गुपाल तुही वैरि को काल है । धर्म धनि रापाल तुही तो है वरापाल तुही आदि नरपाल तुही अरि उर साल है ॥ पल घर वात तुही साहिन की दाल तुही छत्र पालावाल तुही न ओं दिग पाल है । कृष्ण कुल लाल तुही विनै जगपाल तुहीं देवीदाम । असौ महाराजधर्म पाल है ॥ भैया

रतन पालजू वर्णन—विवि करि कारीगर नैं सँवारयो सब गुननि को भारो मोल तोलकरि भारो है । हिये धरि राखि वेकें लोचें मृग लोचनी, नृपति राखें सीस ही पर मब कौं प्यारो है ॥ जाचक जाँहरीन की परम तुजी है यह रनधन परप्यो है सबको सहारौं है । धर्म पाल सागर तैं टपज्यो रतनु सपूत ताको जग माँझ भयो जम को टजास्यो है ॥ = रतन पाल जू से दान इत्यादि का कथन । कवि के विप्र होने का कथन ॥ “देवी कौं तौ इन कीनी द्विज जानि आपनो सुभ गति मुकति दीनी दोऊ रतने सने” ।

राजधानी वर्णन—राजधानी जदुवंश की नगर करौरी राजु । जहाँ पंडित अरु कवि न कौं राजतु बडौं समाजु ॥ सितलाई जदुवंस की जा नगरी के माहिं । तुरकानी को तेजु तहाँ नेकहु व्यापत नाहिं ॥ यहो न कलिजुग व्यापि है । वापै जिय धरि हेतु । कीनों मदन

गुणाल जू अपनो तहो निरहेतु ॥ सय करीरी देखिये इन्द्रपुरी के रूप । तहँ मीपा रतनेस को सेवत बड़े बड़े भूप ॥

प्रथम निर्माण कारणः—तहँ जायो 'देवी मुकुषि' देव असीस उदार । रतन पाक मीपा कछो तासँ प्यार अपार ॥ एक दिन ऐसँ कछो साहिब सहित समेटु । हमको पुरन प्रेम को 'रतनाकर' करि देहु ॥

प्रथम निर्माण काळः—सत्रहसँ ब्यरप छाखीस निरपारि + अथनि सुदि द्वादस कियो प्रथ विचारि विचारि ॥

(१) पु० १० से पु० १२ तक—द्वितीय तरंग ॥ प्रेम निरूपण । प्रेम का स्वरूप । प्रेम का रत्नाकर वर्णन । प्रेमसमुद्र के भरविधा । प्रेम के पात्र । साधुओं का ईश्वर प्रति प्रेम वर्णन । प्रेमका मूल्य । सती का प्रेम पति से । सूर का प्रेम बीररस से । पातक का प्रेम स्वाति से ।

(२) पु० २३ से पु० ३७ तक—तृतीय तरंग । चक्रोर का प्रेम चन्द्रमासे । मीन का प्रेम जल से । भीरे का प्रेम भासना से । ईस का प्रेम मानसरोवर से । मर्कट का प्रेम झुड़ी से । मकड़ी का प्रेम अपने बच्चों पर । हिरन का प्रेम नाव से ।

(४) पु० ३७ से पु० ४९ तक—चतुर्थ तरंग । मुग्धा का प्रेम मकनी रबीचा से । दातुर का प्रेम धन से । समुद्र का प्रेम बह्मनि से । पपीहा का प्रेम स्वाति बूद से । पप पानी का प्रेम । पप पानी का प्रेम । परेवा का प्रेम परेई से । जल तथा कमल का प्रेम ।

(५) पु० ४९ से पु०—तक—पंचम तरंग । गंध तथा पवन का प्रेम । गाव तथा बन्स का प्रेम । प्रतंग तथा शीपक का प्रेम । गोपी तथा कृष्ण इत्यादि प्रेमियों का प्रमाण देकर प्रेम का महत्व दिखाना । अष्टाधीर्ष । प्रथम समाप्ति ।

संख्या ३३. पुकार पचीसी, रचयिता—देवीदास, कागज—देवी, पत्र—७, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेद)—६३, रूप—नवीन, लिपि—नागरी ।

भावि—अथ पुकार पचीसीलिप्यते ॥ ७६ तैईसा ॥ श्री जिनराज गरीब विचार सुधारण काज सदा सुखदाई ॥ रीन बकाक बड़े प्रतिपाक इया गुण भाक सदा सरनाई ॥ बुरगति खरन पाप निवारण ही मखि तारन श्री भविताई ॥ बेरहि बेर पुकारण ही जनकी विनती सुनिये जिनराई ॥ १ ॥ अम्भ बरा भरनौ तिरयोप कनो हम को प्रभु काक जताई ॥ तास विधासक श्री तबनाय मुम्बो हम बेद महासुपराई ॥ सी तिरयोप निवारण की तुम्हरे पगु सेवनु हीं चितकाई ॥ बेरहि बेर पुकारण हीं जनकी विनती सुनिये जिनराई ॥ २ ॥ सी इक हो मख की दुप होइको रापि रही मनको समझाई ॥ श्री चिरकाक कुहाक मनो भव सीं कहुं अंत परयो न दिखोई ॥ श्री पर वा जगनाहि कसेस परे हुप घोर सखो नहि जाई ॥ बेरहि बेर ॥ ३ ॥

अंत—सुहन की रस रंगति में हम को कहु जानि परी न विझाई । सेवक साहिब को बुबिधान रहे प्रभु जू करिये सुभलाई ॥ केरि नही सकरीं करि श्री जसु जादिर जनि परै जगताई ॥ बेरहि बेर ॥ २६ ॥ या विनती प्रभु के सरना गत को नर किनु समझ करेगे ॥

जे जग में उपराज करें अथ । एक सभै भरमै सुहरेंगे ॥ जे गति नीच निवारि सदा अवतार
सुधी सुरलोक धरेंगे ॥ देवीय टाम कई कृय गों पुनि जे भवसागर पार तरेंगे ॥२७॥ दोहा ॥
प्रभु तुम दीनानाथ हो मैं अनाथ दुःख कंद । सुनि सेवक की वीनती हरी जगत दुःख फट ॥
इति श्री पुकार पचीसी सपूर्ण ॥ शुभम् शुभम्

विषय—जिनदेव की प्रार्थना के २५ छंद ।

संख्या १००. लीला, रचयिता—देवीटाम सत्नामी (देवीटास का पुरवा, बाराबकी),
कागज—सफेद मोटा, पत्र—४०, आकार—१३ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५,
रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९८३ = १९२६ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी
गुरुदीन कायस्थ, ग्राम—धुरेराणी, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली (अवध) ।

आदि—साधो निर्गुन उपजा ज्ञान कहीं गुन पाइगु । निर्गुन शब्द अधार शुन्य इद
आसन मारा । जहां नदिशा दुवार नाम दीपक तहँ धारा ॥ निर्वाणी सो ज्ञान भा मनषहु
मध्य मुलान । दे उपदेश कियो वन अपने तेहि का और वयान ॥ गैवी सुन्य समान पुरुष
वह इच्छा चारी । को जानै को आहिं कहीं ते श्रष्टि सँवारी ॥ तीन लोक विस्तार भा अंश
दीन छिटकाय । भरै न जीवै गैव पुरुष वह, नहि आवै नहि जाय ॥

अंत—मैं पापी अज्ञान जानि कै मन विमरावा । इत उत कर्म कमात दुःख में बहुते
पावा ॥ मिरजन हार विसारि कै, कुशल कहीं कव होय । चारिहु युगप परिसिद्ध देविगु नर क
सो रह्यो ममोय ॥ नरक निवारन सदा, सदा वे जनहित कारी । जब वे दाया करें, तब मैं
कहीं विचारी ॥ और न मोहिं अधार कछु रह्यो नाम की आस । देविदास के प्रभु जग जीवन,
रह्यो चरन के पास ॥ समाप्त

विषय—भक्ति, ज्ञान और वैराग्य आदि का वर्णन ।

संख्या १०१. कौशल्याजी की वारहमासी, रचयिता—देवीसिंह, कागज—देशी,
पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४, प्राप्तिस्थान—प गयादीन
तिवारी, ग्राम—त्रिलरिहा, डाकघर—यानगांव, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ कौशल्या जी की वारहमासी लिप्यते ॥ कार्तिक कृच
प्रयाग से कीनो कौशल्या सोच करै मन मेरे । राम लपन सिया वन कूं सिधारे दशरथ प्राण
खजे घर मेरे ॥ दरशन देवो मेरे प्राण पियारे तुम विन कोई नहिं और हमारे ॥ १ ॥

अंत—रावण मारि राम घर आये आनट वधाई मो गृह मेरे ॥ दरशन देवो मेरे प्राण
पियारे तुम विन कोई नहिं और हमारे ॥ १२ ॥ देवीसिंह सिया शबुवर को ध्यान धरै घर
वाहर मेरे । तुम विन स्वामी कोई नहिं मेरा पांय धरौं अब मो मिर पैरे ॥ दरशन देवो मेरे
प्राण पियारे तुम विन कोई न और हमारे ॥ इति कौशल्या जी की वारहमासी संपूर्णम् ॥
लिपित गयादीन तिवारी संवत् १९१४ वि० वैशाख सुदी १ स्वपठनार्थ ॥ श्री रामजी सदा
सहाय ॥ भरत जी महाराज की जै वोलो ॥ राम राम राम ॥

विषय—रामचन्द्र जी का वन गमन और कौशल्या जी का उनकी जुदाई के कारण
शोक करना ।

संख्या {०० संगीत बदरे मुनीर, रचयिता—धनपत उर्फ धन्वमाळ, कागज—
बेसी, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इंच, पन्नि (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—
४५६, रूप—माचीन, सिपि—नागरी रचबाकार—सं० १२२८ = १८७१ ई०, क्विपिअर—
सं० १९३० = १८८० ई० प्रास्थिस्थान—झांझा सीताराम, संगीतशाळा, ग्राम—दीनापुर,
बाइबर—गाळा गोइमनाय, ब्रिटा—श्रीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अय संगीत बदरे मुनीर शहजाद परी का क्विप्यते ॥
पो० । सुमिरन कर करतार का हर बम बार् वार । बोही जो चाई कर । जो मग सुरजन
हार ॥ श्री० ॥ त्रिमके आधीन सकळ जळ कळय । तिसकी सरनागत से मुमगत पार्व ॥
त्रिमकी बिन मकि किम् रैन ना पाया । ताकी सरनागत अब धन पत आया ॥ रगाचार
का दोहा ॥ वे मजीर के इश्क का हुआ अवब कसु तार । परी हुई उस पर किदा आय
फसा जा भीर ॥ कदा ॥ कुछ दिन बीत नहीं लुछी ठनकी सो पारी । इश्क हुई में पदा
हुइ ताते अब क्वारी । हुआ कुं में बंद सजा उन जैमी पाई । न अबन निसाकर जोग जाय
फिर उसको काह । वे मजीर का पदा हाना भीर इलकारे का बादशाह को गबर देना ॥
पो० । हाय जोइ आहाय सू कहु मुबारक बाद । सहजाद पदा हुआ भीत्री दिक को शाद ॥
चीबोला ॥ कीर्ति रौरात मला जा जी भाई । वीदी तुम हान जा काह सेने अब । जानी
तुम शाह तुसी दिन है आजा । बीजो तुम हुनम बई दर पर बाजा ॥

अंत—नबबन निसा का दोहा ॥ रैन आख तू लोळ कर व मजीर तू जाव । टा टा
तरे पाम है कपना हाल मुलाव ॥ कदा ॥ करो तुसी भी रैन भूक गम दिक से सारा ।
चाहें भी सा हुआ इक्ष भर आया प्यारा ॥ लार्ड पक गुधम साथ हमके में प्यारी । सो
सहजाना जान परिस्ता त्रिसकी सारी ॥ बुदर मुनीर का दोहा ॥ वे मजीर तुम वे कपल से
गये दिक को छीन । तुम बिन में क्याकुक रही जैसे जळ बिन मीन ॥ श्री० ॥ तबहुं दिन रैन
मुझे मीद ना भाई । रोमे के भीर सिबा कुछ ना भाई ॥ आंगों मे लून मरे अन्न पम जारी ।
मरती हूं पार तर गम की मारी ॥ वे मजीर का दोहा ॥ क्या कहु बुदर मुनीर में कपना
तुस से हाल । जान हमारी बच गई ये बुदरत का क्याक ॥ कदा ॥ ये बुदरत का क्याक
वही जो जान हमारी । रहा चाह में कई रही पर चाह तुम्हारी ॥ ना खान की मिला नहीं
पानी दरसाया । सिबा तुम्हारे इश्क नहीं कुछ हमने पाया ॥ बुदरे मुनीर का दोहा ॥ आनी
जब से तुम गये रहती थी वे रैन ॥ रोप रोप मने यहां काट दिन भी रैन ॥ श्री० ॥
काटे दिन रैन मैन हो रो जानी । लाया ना आज तसक अन भीर पानी ॥ बिपता का हाल
कहो हमने प्यारे । जब से दिलदार हुए हम ने प्यारे ॥ वे मजीर का दोहा । मैं बिपता क्या
क्या कई मैन ना बीबी बात । रहा कई त्रिम रोज मे रोडें या दिन रात ॥ श्री० ॥ पदुंवा
अब माह रूप परी रवों वाली । बीमा है इश्क कहीं लगी लुपी ॥ कितना इकार किया जळ
ना मानी । हाराबिच कई जहां अन ना पानी ॥ श्री० । रंगचार का ॥ कहां छी बर्जन
कीजिये कहुं मैं छाव अलीर । शहजादे क साथ में प्यारी बुदर मुनीर ॥ कदा ।
वे मजीर के साथ गई प्यारी शहजादी । श्रीरोजना हमराह हुई जोगन की शारी ॥
गया शहर मुस्तान संग से करके मारी । गयो मर भर मिसी चाप धेरे सहकारी ॥ इति

बुदरे मुनी सागीत सपूर्ण सवत् १९२८ धन्नुलाल कृत समाप्त लिखा गौरीदासर भट्ट
संवत् १९३७ वि०

विषय—बुदरे मुनीर वे नजीर फीरोजशाह जोगन का सांगीत स्वाग में वर्णन ।

संख्या १०३ प. राम गुणोदय, रचयिता - धनीराम, कागज—देशी, पत्र—६०,
आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१०, सडित ।
रूप—नवीन, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६६ = १८०९ ई०, प्रासिस्थान—
महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम कवित् ॥ जेहि सुमिरत गह जेही सिद्धि गाह्यत आगम
निगम मति सार है । शकर परम प्रिय परम विशालवर वदन गर्यड गति आगम अपार । कहे
धनीराम जन प्रन प्रति पाल करै सकल अमंगल विनाशक विहार है ॥ इत्युरी गजानन चरन
धितु रापि हो कहत वर भापि राम चरित प्रचार है ॥

अंत—प्रमानिका ॥ अनेक वेद वद ही पदे विरंचि छद ही । सुनारदादि गावहीं
चतुर्भुजे रिखावहीं ॥ मधु मार छंद ॥ भूपति प्रनाम बहु भाति कीन्ह प्रभु के कृपा ते वरदानि
दीन ॥ एहि विधि स्वप्न महीप लपि जग्यो मुदित परभात । द्विज तापस परवीन सों
विहसि कयो सब वात ॥ ब्राह्मणदोधक ॥ सोअत में दरमन जिन कीन्हो तो पर नाथ
दया अति कीन्हो । रूप चतुर्भज तो कह दे है भूप तुम्हे निज धाम पठे है ॥ अपूर्ण

विषय—नृप वंश वर्णन, रावण जन्म, राम जन्म, धर्म शिक्षा, शत्रुघ्न शिक्षा,
वाजि मोचन शत्रुघ्न समुद्र मिलन वन कथा, चावन स्थान वर्णन, नीलगिरि वर्णन, रत्न-
श्रीव गमन, शालिग्राम माहात्म, रत्नश्रीव भिक्षु दर्शन आदि कथाएं ।

संख्या १०३ वी तत्वार्य प्रदीप, रचयिता—धनीराम, कागज—देशी, पत्र—८४,
आकार—१० × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्) २५२०, रूप—
प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९६३, प्रासिस्थान—महाराज श्री प्रकाश सिंह
जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ जे राम चंद्र गणपति को रूप ह्वै के गणपति सेवि जे
गणेश हैं । तिन्है फल कहे अभीष्ट फल देत है । और दिन को नाथ कहे सूर्य ह्वै के दिनेस
व्रतधर जे शौर है तिनको फल देत है औ सक्ति देवी को रूप ह्वै के शक्ति व्रतधारी जे शाक्त
हैं तिनको फल देत है और हर अनुसारी जे शैव हैं तिन्है हर महादेव को रूप धरि के फल
देत है या प्रकार जहा कहे पच देवन में ताहू देव पर अथवा इन्द्रादि जा देव पर जाकी प्रीति
है तहां ताही रीति सों तहा ताही देव को रूपधरी के फल देत है अथवा औ जहा जामें
शास्त्रानुसार ईश्वर रूप करि प्रीति है स्त्री कां णति पर शिष्य की गुरु पर पुत्र की पिता पर
इत्यादि तहा ताही रीति कहे ताही को रूप धरि के अर्थ पति आदि को रूप धरि के फल
देत है । श्री गणेशायनम ॥ गणपति रूप ह्वै के गणपति सेविन को नाथ ह्वै के दिन को
दिनेस व्रत धर को । रूप ह्वै के सकति सकति व्रत धारिन को हर अनुसारिन संवारि रूप
हर को । जाकी जहां प्रीति फल देत तहां ताही रीति जानकी प्रसाद नाहिं लावत गहर को

नाम जाकी पूरन करत मन काम बंदियत परधाम निठ राम रघुबर की ॥ न्यूनार्थिक संका
निवारण के लिये कहत हैं जानकी प्रसाद नहिं काबत गहर को अर्थ सब को फल देन में गहर
बिंछन नहीं करत अर्थ जा प्रकार के अवन को फल दत हैं ताही प्रकार हीन आदिन को भी
फल देत है ॥

अंत—दोहा । मिस मृग पावन जीव बहु करे मुक्त रघुराह । कीर्तुक रंजन रवि मनी
गये गगन मधि भाय । १०८ । मध्य दिवस इमि हैपि प्रभु मृगया पेरु बिहाह । करि
सरजू जल न्दान गृह जाये की रघुराह ॥ भूति छत्र ॥ कबहुं मृगया कबहुं जल केलि करै ।
कबहुं गृह बागहिं जा । कबहुं सुतिहास्य पुरान सुनै करि धर्म समा कहुं न्याय बिचार ।
मिगरे अचनी मन मध्य सिंहासन बैठत हैं कबहुं धरि मार । तिहुं बंधु समत छरी मित भी
रघुनाथक को पुर भीपि बिहार । इति श्री जानकी प्रसाद विरचिते मुक्ति रामायण प्रति हारा
मर्ग ७ तिलक । मिसैति रवि गगन मध्य भायो अर्थ दुपहर मयो १०८, १०९ ॥ अथ
संक्षेप सो राम बंधु को निरूपित कहि श्रेय समाप्त करत हैं कबहुं इति गृह पाग को बाद
मुंदर करत हैं अर्थ गृह बाग में जाहूँ के गृहबाग की सोमा करत है ॥ दोहा ॥ तत्कारण
प्रदीप बिब मुक्ति रमाहन जाहूँ जाहूँ तामो धरयो जनक बिधि धरि पदार्थ दसाये । सोरठ ।
तामो छेकर पाहि पुक्ति रामाहनि पैदिपे जाहि अंत निबादि सकळ पदार्थ दपिये ॥ इति
श्री धनीराम विरचितस्य तारुण्य प्रदीपस्य समाप्तः संवत् १९३३ अक्षयि मासे कृष्ण पक्षे
अमावस्या प्रथम समाप्तः ।

विषय—रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र ।

रूपपा १०४ पार्वनाथ पुण्या, रचयिता—धर्मेश (आगरा), कागड—साधारण,
पत्र—१०६, आकार—१२ ३/४ × ६ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३ परिमाण (अणुपुष्प)—
२०५६, लिखित रूप—मनीम पथ सिपि—बागरी रचनाकार—सं० १७८६ = १७३२ ई०,
किपिका—सं० १८५२ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री श्रीमंदिर, ग्राम—इतरा, डाक-
घर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (जयप)

आदि—श्री त्रिबाय ममा ॥ गुरु चरणाभ्यो नमः । श्री सरस्वती नमः ॥ अथ पार्श्व
नाम पुराण भाषा लिप्यत ॥ दोहा ॥ मोह महातम दहनदिन, तप लक्ष्मी मरतार । तै
पारम परमेस गुरा हाड सुमति दातार ॥ १ ॥ बाग्या नंदन कल्प तट, जपो जगत हित
कर । मुनि जन जाही आम करि जाई मिय फल सार ॥ २ ॥

अंत—नमोदाह अरहंत सकळ तत्कारण मामी । नमो मित्रि भगवान ज्ञान भूति
अधिनामी ॥ नमो साध निर वंड बुद्धि परिग्रह परियागी । जया जान छिंग धार बन बने
विरागी ॥ धरि जिनेम भाग्य धरभनेप मर्ष सुप रंभदा । पारम चरित्र तिहुं छोक में करी
ऐम मंगल मदा ॥ इति श्री पार्वपुराण की महिमा अगम अवार । जग में विता मन मरम
मन बांछित दातार ॥

×

×

×

×

विषय—(१) पृ० १ म पृ० १७ तक—मंगला चरण मरमृति के भय का
बर्जन । (२) पृ० १८ से पृ० २८ तक—गङ्गाधर गहन विद्याधरमय विपुल × × रूप प्रथम

देव भव वर्णन । (३) पृ० २८ से पृ० ५४ तक—चौदह रत्नो का वर्णन, सामान्य नरक दुख वर्णन, सागर प्रमान वर्णन, अक सख्या वर्णन, (वजू नाभि अहमिन्द्रं सुत मिल्ल नारक दुख वर्णन) (४) पृ० ५५ से पृ० ८८ तक—वारह भावना सूचन, वाईस परीसा के नाम, क्षुदा तृपादि परीसाओं के वर्णन । परीसह उदय विवरण, सामान्य स्वर्ग विवरण, स्वर्ग स्त्री वर्णन, (आनन्दराय इन्द्रपद प्राप्ति वर्णन) (५) पृ० ८९ से पृ० ११० तक—प्रभात वर्णन, देवांगना प्रश्न तथा माता का उत्तर वर्णन, गर्भ वर्णन । (६) पृ० १११ से पृ० १२८ तक—ऐरावत गज वर्णन, जिनेन्द्र जन्मोत्सव वर्णन । (७) पृ० १२८ से पृ० १४४ तक—भगद्वैराग्यो दत्त दीक्षा कल्याण का वर्णन । (८) पृ० १४४ से पृ० १६६ तक—समोसरण वर्णन, आठ प्रात-हार्य वर्णन, (भगवान ज्ञान कल्याण वर्णन) ।

(९) पृ० १६६ से पृ० २१२ तक—गसाधर प्रश्न, सामान्य द्रव्य जात विशेष मस भंग निरूपण, जीव विपै सातो भग निरूपण, जीव निरूपण, प्रथम भेद, उपयोग वर्णन, कर्ता वर्णन, भोक्ता वर्णन, देह मात्र वर्णन, सात ससुद घात वर्णन, वेदना समुद्धात, कपाद समुद्धात तथा अन्य समुद्धात वर्णन, संसारी वर्णन, एकेन्द्री से असेनी सेनी पंचेद्री पर जंत उच्छृष्ट विपे क्षेत्र वर्णन । जीव समास वर्णन, उत्पाद व्यय द्रौव्य स्थापना, अमूर्ति वर्णन, ऊर्ध्व गमन वर्णन, धर्मद्रव्य वर्णन । अधर्म द्रव्य वर्णन । आकास द्रव्य वर्णन, काल द्रव्य, शिष्य गुरु प्रश्नोत्तर, आकाश प्रदेश, स्वरूप तथा शक्ति, श्रव तत्त्व वर्णन, संवर तत्त्व, निर्जरातत्त्व, मोपतत्त्व, दर्शन प्रतिमा वर्णन, वृत्त प्रतिमा वर्णन, अन्य प्रतिमाओं का वर्णन सात नर्क, द्वादशांग के पद, कवि लघुता वर्णन, ग्रथ रचना स्थान—

पूरन रचित विलोकि के भूधर बुद्धि समान ।

भापा वध प्रवध यह, कियो आगरे थान ॥

ग्रंथकार परिचय—त्रदौ जिनेस भापत धरम देय सर्व सुप सपदा ॥

निर्माण काल—सवत् सत्रहसै समै, और नवासी लीय ।

सुदि आसाढ़ तिथि पचमी, ग्रथ समापत कीय ॥

लेखन काल—सरवान वसु शशि विक्रमार्क गत जान साके सालिवाहन मनेत्र मुनिचंद्रे । ऋतु जो निदाव शुचि मास अलिपछ शुभ तिथि भुज भान वार सुर गुरु अभद है । मेदनीय सिंह नाम कटरा प्रतापगढ़ जै सवाल श्रावक जो वसत सुछद है । चैन सुख अनुज जौहरी लाल हेत हम पारस पुरान लिख्यो धारि के अनंद है ॥

संख्या १०५ ए. वृदावन सतः, रचयिता—भ्रुव, कागज—साधारण, पत्र—२९, आकार—५ x ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६८६ = १६२६ ई०, लिपिकाल—स० १८५१ = १७९४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला गजाधर प्रसाद, ग्राम—कूराडीह, ढाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ श्री वृंदावन सत लिप्यते ॥ दोहा ॥ प्रथम नाम हरिवंश हित, रटि रसना दिन रैन । प्रीति रीति तव पाइयै । अरु वृदावन ऐन ॥ १ ॥

अंत—सोरठा—आपर अर्थ न जाय, धन मिल पद् मनु साधरी । केवल सनु प्रसाद,
नाम भव करव करी ॥ सो यह कथा प्रज्ञोत्तर लंघ्य । स्कंद पुराण विदित नव लक्ष ॥
सिख इच्छा कीन्हेट करि माया । दोहा छंद सोरठ राया ॥ बीपाई छीनप अघ्याया ।
विसद् कथा बरन्धी सिख हाया ॥ कीर्तन प्रबन जो कोट नर करि है । सुखद मोग करि
भव विधि तरि है ॥ नो भव तरं कहु संसय नहीं । संभु प्रताप प्रगट पही माहीं ॥
वंपति बिदुर मंजुका नारी । तिनहि हीन निय पद् विपुरारी ॥ भाषा प्राकृत कष्ट न
बिचारे । ईस सुखस रूपि प्रेम ते बार ॥ काम्य कष्टु सपि है जपराम् । छमा करहि
बिबके मति साधू ॥ छंद—सातु सखन निरयि हरिहर सुखस विमंछ धारही । प्रबन
कीर्तन प्रेम ते करि कोटि पक्ष गन तारही ॥ भाषा रूप्यो मुख काम्यकुम्भ सी नाम दीनानाथ
है । मनु राघु रीती सनु पद् बोह है माय अनय है ॥ इति श्री स्कंद पुराणे प्रज्ञोत्तर
पंढे बर्षनोनां हाबिसोप्यायः ॥ १ ॥ संवत् १८८४ भाके १७४९ मिति कार्तिक सुदी
दशम्याम् । चंद्रवाणभित्ताम् ॥

सख्या १०८ ज्ञान विलास, रचयिता—दूधाधारी, कागज—देशी, पत्र—७५,
आकार—८ × ६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुच्छेद) १८००, लंबित । रूप—
प्राचीन, पद्य छिपि—जागरी, छिपिकाळ—सं० १८७४, प्राप्तिस्थान—व० मुनासर हीब
हीसिल, ग्राम—सीकरी, बाकपर—तंधुटा, जिळा सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ज्ञान विलास छिप्यते ॥ वंदना ॥ (इसके अग्रे
पृष्ठ से पृष्ठ छिपकाई है फटाई पत्रा कर्मि है)

अंत—तहां मयो बहु काळ वृषा धारी को बसत । गीरी गणेशपाल कृपा
करि हरि कर सदा ॥ परसराम तहं तप करे करनी कठिन कराळ । उत्तम कुळ
जम इगि सुत ॥ बुद्ध विज्ञान विसाल ॥ काम धेनु तहं अमित प्रजा लोग सुत पार ।
करहि मम मत सिंघहु मों सत्य बचन स्पोहार ॥ कुटी निरुट सर बर सुमग सीतल जळ
सब काळ । मान सरोवर सम मजहुं बेदि सर बसत मराळ ॥ बरन बरन सरजिस सुमग
बिक्रमे सुमग विसाल । पूजा संकर कर करहि र्षी पूक सिंघ माळ ॥ मुता राह जपमम की
कीन्ह हृदय में बास कथा कर्षे मद्काल की दूधा धारी दास । सोरठ ॥ ज्ञान बिराम की
बाह कीन्ह भवाणी सिंघ जू कवि बल बुधि वे बाह । मजठ राधिक्य रचन जू ॥ राज
धरम रन पूर भया भवाणी सिंघ जी कथा प्रेम भरि पूर राये रचन गोपाल की ॥ इति श्री
दूधाधारी हृदय ज्ञान विषयस समाप्तः शो० ॥ अगहन तिथि त्रियोदसी भासवार (इसके आगे
दोहा पूरा नहीं प्रथक मजठ १८७४ लिखा है) ।

छिप्य—सूर्य की स्तुति, देशी स्तुति, श्री कृष्ण राधिक्य की महिमा धीर भद्रव ।
संख्या १०६ शब्दानक्षी, रचावता—दूमनदास धरमई (रावबरोधी) कागज - सीट
सफेद, पत्र—११३, आकार—१० × ७ १/२, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण
(अनुच्छेद)—३४०० पूर्ण । रूप—सुंदर, छिपि—जागरी, रचनाकाल—सं० १८२५
१८६७ ई० छिपिकाळ—सं० १९१८=१८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—व० त्रिमुन
त्रिपाटी, ग्राम—पूर परान पांडे, बाकपर—तिलोई, जिळा—रायबरोधी ।

मस्तु सवत् १९४३ ॥ दोहा ॥ माव मास को जानि जै, असित पक्ष शनिवार । पाइ त्रयोदशि लिपि कियो गथाणव को पार ॥ १ ॥ दशपत दुर्गाप्रसाद कात्यय शाकीन ग्राम जूही ॥ श्री रामानुजाय नमः ॥ श्री हनुमताय नमः श्री राधा बल्लभो जयति श्री गोविन्दाय नमो नमः । श्री सरस्वतै नमः ।

विषय—पृ० २८५ तक २८ तरंगों में पुरुवा से पाण्डव वंशीय राजा चद्रकेतु तरु का वर्णन फिर चौहान वंश की उत्पत्ति ।

(विशेष—निवास स्थान.—तीरथ राज उदीचि पहुँ, अवध पुरी हरिधाम, तासु मध्य में लसतु है, अरउर देस ललाम ॥ अरउर देश माँहि परगन प्रतापगढ़, तासु के पश्चिम एक उत्तम सुठामु है । मजुल विलास लपि भूपानुज वास किय, नगर सुजापरि में मन्दिर ललामु है ॥ बाबू दुनियाँ सिंह के सुन्दर कुमार चारि, वीर विक्रमी उदार ज्ञाननि को धामु है । लालजू कहत देश देशनि को गुनी आय, पाए सनमान दान भए सु अकामु है ॥ दो० ॥ श्री बाबू दल जीत सिंह धर्म धुरीन महान । साधु द्विजन को दान दे अवरेन को सनमान ॥ दुर्गा वकस प्रवीन मति सुंदर शील निधान । क्षेत्र माँहि जय जस लह्यौ, करिकै युद्ध विधान ॥ कहत अयोध्या वकस जिहि, सवसौ लहरो तात । रूपवंत अति चतुरवर बहु गुण में विप्यात ॥ तृतीय भवानी वकस जू बुद्धार्णव सुपदाम । प्रगटेव शशि के वंश में गुनमय रूप ललाम ग्रथ रचना का कारण व ग्रथकार परिचयः—ऐसो शुभ्र देश जहाँ राजत महेश आपु नाम धुसमेश अरि देश हू को काल है । जुरत हमेश देश देश के नरेश आइ काटत कलेश निज देश प्रतिपालु है ॥ लाल हू वसत तेहि शकर के आस पास पावत सुवास में विलास सब थालु है । पाइ शुभ सासन हुलसि कह्यौ भूपानुज रवो कलु काव्य गुन पोहि जिमि मालु है ॥ सो—एक समै गुण प्राणि लाल भवानी वकस जू । निज मन में अनु मानि मोसन कह अति हर्षि हिय ॥ दो० ॥ मम कुल वंशावरी दीजै रुचिर वनाइ । ब्रह्मादिक ते आजु लौं क्रमते सकल मिलाइ ॥ ग्रथ निर्माण काल.—सवत नव^१ शशि^१ नव^१ शशी^१, भाव नाम अभिराम । पाँप शुक्ल की त्रयोदशी, अरु शृगुवार ललाम ॥ नाम करणः—नाम धरौं यहि ग्रथ को, सुनि जै अव क्षिति पाल । वंशावरी विधान यह, विरचित दुर्गालाल ।)

पृ० २८६ से पृ० २९६ तक—एकोन त्रिंशति तरंग । भूरिवाह वंश वर्णन, विविध राजाओं का विविध स्थान वसना । लल्लिमन सिंह भूप का वंश वर्णन ।

पृ० २९६ से पृ० ३०२ तक—त्रिंशति तरंग । मल्लूक सिंह का वन्दी गृह प्रवेश, वादशाह की पुत्री का उनपर मोहित होकर अपना विवाह करा लेना । मल्लूक सिंह व जैतसिंह का वैर, मल्लूक सिंह का मारा जाना । जैतसिंह का गद्दी पाना, गौहर देव का राजासे (अपने कथनानुसार) बाबू बनकर रहना । उनका छितरौन के बाबू कहाना ।

पृ० ३०२ से पृ० ३१४ तक—एको त्रिंशति तरंग । जैतसिंह के वंश का विस्तार, गौहर देव वंश परिचय । वंशानुसार नगरों का कथन, प्रतापगढ़ का वसाया जाना । प्रतापसिंह व सुजान कुँवरि का व्याह । एक अनूपम सागर का बनाया जाना, उसके बाटादि का वर्णन, जयसिंह की उत्पत्ति ।

पृ० ३१७ से पृ० ३२२ तक—श्री त्रिंशति तरङ्ग । जयसिंह का साहजहाँ को सहायता देना और उससे सम्मानित होना । जयसिंह का वंश विस्तार ।

पृ० ३२२ से पृ० ३३० तक—त्रिंशति तरङ्ग । भूपकुकुर्ण वर्णन, पृथ्वी पतिराज व र्भातराजेश्वर युद्ध । मंसूर का छत्र और राजा का भीरु गति प्राप्त होना ।

पृ० ३३० से पृ० ३३८ तक—चतुर्विंशति तरङ्ग । अजानक के नबाब की पदाई, ईश्वर भाव सिंह आदि से युद्ध वर्णन । बहादुर सिंह बुपति का वर्णन । उनका वंश विस्तार । भूप कुकुर्ण सम्पूर्ण ।

पृ० ३३८ से पृ० ३४६ तक—पञ्च त्रिंशति तरङ्ग । बाबुओं के वंश का वर्णन ।

पृ० ३४६ से पृ० ३५६ तक—षष्ठ त्रिंशति तरङ्ग । भूपानुज वंश वर्णन ।

पृ० ३५६ से पृ० ३५८ तक—सप्त त्रिंशति तरङ्ग काक विक्रमादित्य वंश वर्णन । अंश समाप्ति ।

पृ० ३५८ से पृ० ३७८ तक—अनुकल्पिका ।

संख्या १११ सा । नाम मात्रा, रचयिता—सुर्गलाल काव्यस्य (जूही, प्रतापगढ़), कागज—साधारण, पत्र—१९, आकार १३ × ५ १/२ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुच्छेद)—४२६, खंडित : कर—माषीन, पत्र क्लिपि—नागरी, प्रसिद्धिस्थान—श्री राधे विहारी लाल, प्राम—जूही, बाकबर—सांगीपुर, जिता—प्रतापगढ़ (अजमेर) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नाम-मात्रा लिप्यन्ते ॥ दोहा ॥ प्रथमहि सुमिरी शिब सुवन बहुरि सुमिरि सब देख । मोर मनोरथ मित्रि करु, इनुमत रसुवर मेव ॥ १ ॥ करि प्रथम मारायणहि, अल्पति बुद्धिज महेषा । प्यासादिक मुनि की किया कहि कै करी प्रवेश ॥ २ ॥ शैव गिरा उर रापि कै निज गुरु पद को प्याह । भाम भेद माप्यो सकळ बहु प्रबंध ते क्याह ॥ ३ ॥ श्री मारायण को सुमिरि बरगत हीं पहिचानि । एक टौर करि देत हीं सकळ अम को जानि ॥ ४ ॥ समुमि परी बहिं अर्थ कसु नाम मेव नहिं जानि । तिनके हित में रचत हीं नाम दाम की जानि ॥ ५ ॥

विष्णुनाम

इषीकेरा वैशुष्ट इरि कृष्ण विष्णु भगवन्त । बामुदेव नामम विमळ परमात्मना अन्त ॥ ६ ॥ केसव माधव ईश्वर रिपु, बामोहर केशारि । मारायण गरुड पञ्चौ गिरिबर बहुरि सुरारि ॥ ७ ॥ अप्सुत अक्षमायी कइत मनुमूहन गोविन्द ॥ अरु पाणि नर अन्त की अमला अन्त मुकुन्द ॥ ८ ॥

×

×

×

×

अंत—॥ चतुदश श्ल ॥ धेनु अन्तर्गिरि विप सुरा, मदीमी संल गयन् ॥ पारिजात रम्भा प्रनुप, अमी बात्रि मणि चन्द ॥ ३३६ ॥ सुन्दर नाम ॥ सुभग मनोहर सुमम अर कर्त हृदय कम ।

×

×

×

×

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १० तकः—मगलाचरण, अथ चतुष्टय, विष्णुनाम, गणेश नाम, स्वामि कार्तिक नाम, ब्रह्मा नाम, इन्द्र नाम, देवता नाम, सरस्वती नाम, सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक, शनि, राहु-केतु, अमृत, विष, रमा, पचन, कुवेर, यम, वरुण, अग्नि, घर, सोना, रूपा, जलदी, बुद्धि, मुक्ति, उज्जल, कृष्ण, रक्त, शोभा, किरण, मेघ, विजुली, जल, लहरि, समुद्र, गङ्गा, जमुना, नदी, सर, कूप, कचवन्ध, कमल, आकाश एवं भू नाम वर्णन । (२) पृ० ११ से पृ० २० तक—पर्वत, पाषाण, वन, वृक्ष, पत्र, हस्ती, सिंह, मृगा, ऊट, खर, भैंसा, वानर, शृगाल, शूकर, स्वान, विलार, निटरा, कट्टहा, मेघा, मूप, गरुड, मोर, पपीहा, कोकिला, पक्षी, शुक, सारिक, काक-वक्र, वसन, काम, शरीर, शिर, कर्न, शृकुटी, आँख, ओष्ठ, बाहु, कुच, वार, चरण, पनही, प्रेम, वैर, अहङ्कार, धर्म, क्रोध, राजा, सेवक, जन्म, मानुष, मन, द्रव्य, मीन, शेष, सर्प, अनी, युद्ध, आयुध, वपतर, वान, तरकस, धनुष, तरवारि, चतुर, झूठ, पुनि, बहु, कठिन, कोमल, टाया, ओटर, भयानक, तथा अनादर के नाम । (३) पृ० २१ से पृ० ३० तक—अभिलाष, दिन, मध्या, निशा, तम, प्रात, सुष, लज्जा, स्त्री, पति, पत्नी, पुत्र, पुत्री, सरसी, शत्रु, पाला, उत्तम, नीच, वार, नवीन, पुराना, दैत्य, राक्षस, दिशा, द्वादश सूर्य, एकादश रुद्र, आठ वसु, मतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, चौदह लोक, अष्टादश पुराण, नव-रत्न, पौडश शृंगार । द्वादश भूषण, चौरासी लक्षि योनि, युत, आज्ञा, द्वय, पटरस, पट रितु, वमन्त, पट शास्त्र, पट काव्य, नव रथाकरण, भ्रमर, उपवन, फूल, सीढ़ी, उसीमी, सेज्या, समय, नमस्कार, दर्पण, छुद्र घटिका, घुँघुर, टेढ़ा-वस (मछली पकड़ने की), वेद, जोगेश्वर, वलिभद्र, वेणु, नौनिधि, अष्ट सिद्धि, वसु दिग्गज, सात द्वीप, सात खड, द्वादश द्रोप, द्वादश व्रत, तथा चतुर्दश जरायुज नाम । (४) पृ० ३१ से पृ० ३८ तक—पच जाति स्थावर, मदिरा, अपराध, समूह, अति, सूक्ष्म, शब्द, धूरि, छल, नाव, रुधिर, मुगुध, हरदी, प्रेम, विवाह, लघु भ्राता, निकट, वज्र, पतिव्रता, वेद्या, वीथी, राह, अतर्धान, दीरघ, विद्रुम, चन्दन, वृक्षराज, वरगद, आम्र, महुआ, वेल, अनार, केला, पाडर, किंशुक, तमाल, चपा, कदम्ब, नारियल, सुपारी, पीपरि, हरै, दाप, सोढि, केशरि, चहेरा, केवाक्ष, जूही, राजवेलि, लवङ्ग, इलायची, ववरि (अमर-वेलि) मालती, चचल, चतुर्दश रत्न, एव सुन्दर नाम ।

संख्या ११२ प. लिंग पुराण भाषा पूर्वाह्न, रचयिता—दुर्गा प्रसाद (अलवर), कागज—देशी, पत्र—४८०, आकार—१२ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २७, परिमाण (अनुष्टुप्) ८१६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गठ्बू लाल जी, ग्राम—झाजलाला का पुल, जिला—लखनऊ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिंग पुराण भाषा पूर्वाह्न लिप्यते प्रारंभ । दो० । विबुध मुकुट मणि दीपिका नी राजत दिन रैन । विचन हरै हेरं व के चरण कमल सुपदै न ॥ १ ॥ भजौं नित्य गौरी गिरिश सकल सिद्धि के हेतु । भक्त मनोरथ कल्प तरु भव सागर के सेतु ॥ २ ॥ ब्रह्म विष्णु शिव रूप से सृष्टि स्थिति संहार । करत ताहि जगदीश

को विनयीं बारबार ॥ ३ ॥ पंचानन चतुरात्मनि ध्यासां हि विष्णु समान । बार बार सिर
नाथ के बरनीं किंग पुराय ॥ संवत् १६३१ उनहस सी इकतीसा कहीं कथा हरि पद् धरि
सीसा ॥ भाषा सुखम कहीं में गाई । कसियो कवि जन जानि विटाई ॥ एक समय श्री
भारद् मुनि सीलेम संगमधर हिरण्य गम्भी एवर्षेन अवि मुक्त महा कव रीद्र गोप्रसक्त
पाद्यपत विष्णेश्वर केदार गोमा बुकेवर चंद्रसेपर इसाव विविष्टय और द्युकेवर भादि
उत्तम उत्तम सिव क्षेत्रों में श्री महादेव जी का पूजन करते मये । और संसार का
चमरभर देकते नैमिषारण्य में पहुँचे । बहा सब हीनक भादि मुनि भारद् जी को देल
अति मुदित मये । और बड़ी प्रीति से अगल स्वागत कर उत्तम आसन पर बैस्य उनका
सत्कार से पूजन करते मये ॥ भारद् जी ने परम भक्ति से मुनिओं से सिव जी का महायम
सुनाये को ॥

अंत—हे मुनीश्वरो जो आपने पूजा सो हमने कथन किवा अब एक मुक्ति उपाय
और भी कहता हूँ । जो पुरुष सुबहो की मेषका जर्जोत बछड़ो ईव सुबहो का किंग
कव रीपा लक्ष्मी सुर मपी भाजन कैंधी और जकपात्र ये सब उपकरण सोने चाँदी तबि
के ही बलवाय अपने बिल के अनुसार पाद्यपत ओगी को देवे वह सब पापों से मुक्त हो
अपने ब्रह्म सहित शिवलोक में निवास करता है इस दान से गृहस्थी संसार बचन से
मुक्त होता है ॥ जोगियों को देन से सिवजी बहुत प्रसन्न होते हैं । इस कारण राज्य
पुत्र धन बोधे हमी भादि बाहन अथवा सर्वस्व ही दान करी जो मोक्ष की इच्छा रखता
होव तो इस अमित्य शरीर करके निश्च और संसार सागर से पार करने हारा विष्णु
पाद्यपत काव साधन करना उचित है ॥ हे मुनीश्वरो यह मंत्र कथा सिवजी की हमने
संक्षेप बचन करी इसको जो पढ़े जयवा सुखे वह विष्णु लोक में निवास करी । अंत का
शेष समाप्त ॥ इति श्री किंग पुराण दुर्गा प्रसाद अक्षर निवासी कृत संपूर्ण समाप्त ॥
संवत् १९४० वि०

विषय—अनेक प्रकार की कथा सूर्ति प्रतिच्छ और पूजा का फल पापों के प्रायश्चित्त,
विष्णु के सब अवतारों की कथा और योग साधनादि अनेक विषयों का विस्तार से बर्णन ॥

संख्या ११२ थी किम पुराय माया पूर्वार्ध, रचयिता—यं दुर्गाप्रसाद (अक्षर),
कागज—आधुनिक पत्र—४६०, आकार—१० X ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण
(अनुच्छेद) ८९८०, पृष्ठी, रूप—बहीन, गद्य, छिपि—नागरी छिपिकाळ—सं० ११४१—
१८८९ ई०, प्रासिस्थान—५० रामनुरारे काळ ग्राम—भरपुरवा, बाकधर—दंबर, विद्या—
उज्जवा (अक्षर) ।

जादि—श्री गणेशायनमः ॥ अब किंग पुराय माया पूर्वार्ध छिक्वते ॥ पहिका
अध्याय ॥ शो० ॥ विष्णु मुकुट मभिदीपिका गौराजित दिन रीन । विषय हरि हेरग्य के
बान कमल मुक्त रीन ॥ भर्जी नित गीरी गिरिस सकळ सिद्धि के हेतु । भक्त मनोरथ
कथन तद् मव सागर के मेतु ॥ बह विष्णु सिवरूप मै सृष्टि स्थिति सपार करत तादि
जगदीश को विनयीं बार बार ॥

पुष्पिका—इति श्री पूर्वार्द्ध लिंग पुराण भाषा प० दुर्गाप्रसाद अलवर निवासी कृत सपूर्ण समाप्तः लिखा रामनिवास सवत् १९४६ वि० ॥ श्री रामजी सदा सहाय करै ॥

विषय—लिंग पुराण भाषा वर्णन ॥

संख्या ११२ सी लिंग पुराण भाषा उत्तरार्द्ध, रचयिता—दुर्गाप्रसाद (अलवर), कागज—देशी सफेद, पत्र—२१०, आकार—१२ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४, लिपिकाल—स० १९४६ = १८८९, प्राप्तिस्थान—श्री गन्धूलाल जी, मुहल्ला झाकलाल का पुल, जिला—लखनऊ (अवध) ॥

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ लिंग पुराण भाषा का उत्तरार्द्ध लिप्यते ॥ प्रारभ ॥ शौनक आदि रिप—पूछते हैं कि हेत जी श्री कृष्ण भगवान किस कर्म करके प्रसन्न होते हैं यह आप हमको कथा सुनावें आप सब बातों में चतुर हो यह मुनियों का प्रश्न सुन सूत जी बोले कि हे मुनीश्वरो यही प्रश्न राजा अचरीप ने मार्कण्डेय मुनि से किया था तब मार्कण्डेय ने अचरीप को जो उत्तर दिया हम आपको सुनाते है राजा अचरीप पूछते हैं कि हे मार्कण्डेय जी आप सब धर्मों के पारागामी हैं और पुराणों के रहस्य के जानने हारे हो इसलिये कृपाकर यह कहो कि नारायण के रचे दिव्य धर्मों में परमेश्वर के भक्तों के लिये कौन धर्म उत्तम है ।

अत—यह सूत जी का वचन सुन प्रीति से पुलकायमान हो सब नैमिषारण्य के वासी मुनि शिव जी को प्रणाम कर कहते भये कि हे सूत जी इस पुराण के श्रवण से जो आनंद हमको और तीर्थ यात्रा में प्रवृत्त नारद मुनि को भया है वही आनंद शिव जी की कृपा से सपूर्ण जगत में होय । इस भांति सब मुनियों के वचन सुन नारद जी ने प्रेम से अपने हाथों करके सूत जी को स्पर्श किया और आशीर्वाद दिया कि हे सूत सदा सर्वदा शिव में तुहारी दृढ़ श्रद्धा बनी रहै ॥ और तुम्हारा कल्याण होय इतना कह नारद जी ने कहा कि हे शिव आपको हम वारवार पणाम कर आपके चरणों को हम दृढ़ भक्ति मागते हैं और यह भी चाहते हैं कि आपके प्रसाद से सब जगत में सदा मंगल होते रहें ॥ दो० ॥ रची रुचिर यह शिव कथा तजि मन को परमाद । भाषा माहि विचारि कै बुध दुर्गा प्रसाद ॥ सवत् १९४६ वि० लिपितं रामस्वरूप वैश्य राजा खेड़ा निवासी ॥

विषय—अनेक प्रकार की कथा मूर्ति प्रतिष्ठा वा पूजा का फल पापों के प्रायश्चित्त श्री विष्णु के सब अवतार और जोग साधनादि अनेक विषयों का वर्णन ॥

संख्या ११२ डी. लिंग पुराण भाषा उत्तरार्द्ध, रचयिता—प० दुर्गाप्रसाद (अलवर), कागज—विदेशी, पत्र—१९६, आकार—१० X ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५२८, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामदुलारे लाल, ग्राम—भटपुरवा, डाकघर—चयर, जिला—उन्नाव ।

संख्या ११३ वैद्य विनोद, रचयिता—दुर्गाप्रसाद त्रिपाठी (सक्तेजा, माछवा)
कागज—दही पत्र—१५८ आकार—८३ × ४३ इंच, पत्र (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण
(अनुपुत्र) १००४, छदित । रूप—प्राचीन, पत्र, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं०
जगन्नाथ प्रसाद, ग्राम—ममरेजापुर त्रिसा—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ वैद्य विनोद भाषायां लिख्यते । एक इत्य करिब रत्न कुमति हरन बुद्धिधाम । गौरिनद मगल करन कीर्ति प्रथम प्रथम । १ ॥ मित्र प्राणन को दबता सब कह रहो समाह । गुप्त प्रगट ता की कस्त पक्षी रूप सपाह । ताके रूप प्रताप की उचत सोमा जीन । सहस्र मेस मारद कहे पार न पावै तीन । चारन कमल नप भद्र रूपि कोटिन चंद्र कजाह । विमिष एक के प्यास ते विषन समूह पराह । बिहाह अर्थ सब सखि परे रहे न कपु संदेह । सो बिचारि भाषा करी यथा दीपते रोह । बानी देव मयी करिन । वैद्यक साधु जनार शब्द बोध को सोधि कै भाषा कई बिचार । कश्यप बत उतसा भति राधा कुल कमिराम प्रथम बास मपरेज में बहुरि मकाये बाम । दुर्गापद उपर करी किरि प्रसाद लिपि देह । पांच अंक को नाम मम कृपा सहित लिपि लेह । म्याप तर्क व्याकरण में मम कुल सखे प्रथम । प्रथकार उचूत भये बिद्या बुद्धि निधान ।

अंत—अब स्नहनी बर्षिः—भीरा हर बहोर के बीच मगबो जीन ॥ एक मुगल त्रिष जानिये मानव ताहु तीन । नीर अंस तह देह के बर्षी घरी वनाह । नेत्रभाव भीर बातरत सक अंजन कर मिटि जाय । इति नेत्रभाव हरी बर्षिः अथ रस क्रिया । स्विता योवा स्वर्ग माछिअै समुद्र फेन तहं सार्थी । सैधव भीर जहासा गेरु मनमित्त साल मिहार्थी । मरिच शोष संयुक्त कै पूरन बिहाह करी । मनु पून ते अंजन करी एग के रोय हरी । बर्ष रोग भी कमल्य शुक्र शोष को बासी । मीत मुनी परसाह कहि एग की ज्योति प्रभासी । छेपनी हम क्रिया । बट की झार मगाय कै भीर कपूर मिहार्थी । पीपरि को संयुक्त कै एग में अंजन लाबो । पूर्यो परी छ मास ते हरते तीन घराय । कुमुम रोग की उग्रता मीत जानु मिटि जाय पुन्य हरी रस क्रिया । भीषा सार मगाहै मरिच एक धमि लेह सहस्र शुक्र अंजन करी निद्रा भति हरि दठ । अति निद्रायी ।

त्रिपय—प्रथम अघ्याय (१) अंघकार की भूमिध, (२) युग्मयुग्म विचार, (३) हम, गुम, बीध, प्रभाव कथन । द्वितीय अघ्याय—मूत्र नप, नेत्र, त्रिद्धा, परीक्षा आदि । इत लक्षण । तृतीय अघ्याय—रोगी लक्षण—वैद्य लक्षण । चतुर्थ—श्रीपन पाचन आदि विधियों का वर्णन । पंचम—कस्त आदि तत्व जात का वर्णन । षष्ठम—आहार पाक कुमार पोषण आदि । सप्तम—रोगों की गतता । अष्टम—रमादिकों की कश्यपता । नवम—हिम कश्यपता । दसम—घाट कश्यपता ।

संख्या ११४ प. तथा विद्या, रचयिता—शारदाप्रसाद (हरदोई), कागज—दही पत्र—४४, आकार—८ × ६ इंच, पत्र (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुपुत्र) ४६२, पूर्व, रूप—साधारण पत्र, लिपि—नागरी, नतिविद्याल—पं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—रामदीन काठी, ग्राम—रत्नमपुर कर्वा, दारुपर—गुरुजापुर, त्रिसा—उज्ज्वल (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ राधा विलास लिप्यते ॥ ख्याल गनेश जी का ॥ श्री गनेश महाराज मनाऊ तुमकू । चंदन आँ चावल फूल चढ़ाऊ तुमकू ॥ हाँ तो प्रभु के पूत भक्ति बरदायक । आगे तेरे अरजी करै खड़ा होय पायक ॥ दुपिद्या को सुपिया करी श्री गणनायक ॥ मेरी भी विपता हरो तुम्ही सब लायक ॥ मैं प्रीति रीति की पूजा दिखारकें तुमकू । चंदन आँ चावल फूल चढ़ाऊ तुमकू ॥ १ ॥ तुम एक दत्त आँ चारि भुजाधारी हाँ ॥ गणपति गौरा के लाल सुरा कारी हाँ ॥ जो धरें तुम्हारी ध्यान दुख दारी हाँ । तुम देवन के मिर ताज बडे भारी हो ॥ मैं प्रथम मभा के बीच मैं गाऊ तुमकू चंदन आँ चावल फूल चढ़ाऊ तुमकू ॥ २ ॥ देउ भक्ति ज्ञान अरदास दाम करता है ॥ जो तेरी मिहर ताँ किसी से नहीं डरता है ॥ होय भक्ति तेरे चरणों में सीम धरता है । वो अमरलोक में सुख नित्य करता है ॥ मैं धूप दीप नैवेद्य लगाऊ तुमकू । चंदन आँ चावल फूल चढ़ाऊ तुमकू । है भक्त द्वारका तेरा भक्त कहलावै । सारम्भत ब्राह्मण छन्द निराला गावै । जो पढ़े पढ़ावै अमरलोक फल पावै ॥ वह भवमागर की धार पार हो जावै ॥ हाँ बड़े भाग्य जो कहीं मैं पाऊ तुमकू । चंदन आँ चावल फूल चढ़ाऊ तुमकू ॥

अत—चौमासा रगत वशीकरण । क्या उमड़ घुमड़ धन घोर जोर से चरसे । पीतम छाये परदेस जिया मेरा तरसे ॥ जब लगा मास आमाठ उमर चारी है ॥ जुगुनू चमकै चहुँ ओर घटा कारी है ॥ हरदम नैनो ने मेरे नीर जारी है । कल वादल चरसन की इतिजारी है ॥ मुखे वाली उमर में छोड़ गये पिया घर से पीतम छाये परदेश जिया मेरा तरसे ॥ १ ॥ क्यों कर महीना लगा आन के यावन । साँतिन को हसाया हर्म लगा तरसावन ॥ कुविजा दाम्नी का था वा विन टामन । हो गये खफ़ा वे खफ़ा हमसे मन भावन ॥ ना जानू कौन सी चूक पडी सुदर से । वालम छाये परदेस जिया मेरा तरसे ॥ २ ॥ मैं गेरुआ बख़ रगाऊ नाम भादों में । चहुँ ओर अंधेरी झुकी कौंच काधों में ॥ जब अंग भभूत रमाय जोग साधों में । जगल आँ शहर सब दूटे वेनीमाधों में ॥ हो गई मिहर भगवान मिली गिरधर । वालम छाये परदेस जिया मेरा तरसे ॥ गुरु मनीराम महाराज परम सुख पाते । महाराज द्वारका दाम ख्याल कय गाते ॥ है कुंवा पाकरी पास खास कर रहते । हरदोई की बाजार सदर में रहते ॥ हरदम हमको दरसन दो स्याम सुंदर से । पीतम छाये परदेस जिया मेरा तरसे ॥ इति श्री राधा विलास द्वारका दास कृत संपूर्ण समाप्तः वैभवारे के निवासी श्री राम पंडित ने स्वपठनार्थ चैत्र सुदी दशमी सबव १९२८ विक्रम वृष में लिखा ॥ जै भगवान । ॐ शंकरायनम ॥ ॐ गुरुध्वजायनमः ॥

विषय—गणेश जी, गंगा जी, वैद्य लीला, गेंद लीला, नाग लीला, मालिन लीला, वशीकरण चंद्रखिलौना, विसातिन लीला, दधि लीला, मनहारिनि लीला, दान लीला, पनघट लीला, नाग लीला, पंडित लीला, ख्याल आशकाना, चौमासा, वारहमासा, रावन मदोदरी, शंकर के ख्याल आदि ।

संख्या ११४ वी राधा विलास, रचयिता—द्वारकाप्रसाद (हरदोई), कागज़—

देवी, पत्र—४०, आकार—८ × १ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुच्छेद)—
४५०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—ठाकुर अन्नपपाक सिंह,
ग्राम—सिमलाबाद, हाकर—मुरादाबाद, त्रिषा—उन्नाव (अथवा) ।

संख्या ११४ सी राधा विद्यास, रचयिता—द्वारका प्रसाद (हरदोई), अग्रज—
दही, पत्र—४०, आकार—८ × १ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुच्छेद)—
४५०, पूर्ण । रूप—साधारण, पद्य । लिपि—नागरी प्रासिस्थान—५० शिबदुसरे,
ग्राम—सखनपुर, हाकर—मगरौर, त्रिषा—उन्नाव (अथवा) ।

संख्या ११५ ए तत्त्वज्ञान की बारा मासी रचयिता—द्वारका प्रसाद (मुहम्मदपुर),
अग्रज—दही, पत्र—८, आकार—१ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनु-
च्छेद)—४८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—२० १९३१ =
१८७७ ई०, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७९ ई०, प्रासिस्थान—बाबा मनोहरदास, ग्राम—
बकरार, हाकर—सबई, त्रिषा—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ तत्र ज्ञान की बारा मासी लिप्यत ॥ धैत चिंता
सोच बाढणे मोह माया बस रह्यो । सखि भास तिसुखा में परयो दिन रात बुध्या में गयो ॥
हूँ काम बस कंदु कुंजन के फिरि अग्नि के सेवक मया । जिन गर्भ में रह्यो करी तेहि नाम
पौत्रे ना कछा ॥ मास बीसाप ॥ बीसाप विषय वपारि में सखि भोय जग सगरो भयो ।
गुण बीस बीनदयास जय को नाम अगुल रम दियो ॥ अमिमान करते विष हरयो सुदि चाह
तन निर्मक मयो । गुण शब्द डेक मुजान पिठ को नाम अब हित सों लियो ॥

अंत—मास प्रागुण ॥ फगुन पक्षके रई सब म पद्य गरीं आप में सब आप ते
संताप हृदं बयो अपने हस में ॥ न रीति भाति न रीत न कुल न जाति पति न जगत में ।
पय हरे सब से अलग हूँ मिलि रह अपने पीब में ॥ निर्गुण सर्गुण सब कइत कोई बिरला
करत विषेक हूँ ॥ मैं तुहून के मत बूझि के यह कहे बारह मास हूँ ॥ सी बन्ध जो यह
सुनि गदि तेदि धम्य जननी तात हूँ । जब द्वारका पीप पठित पावन फिर न आवत जात हूँ ॥

विषय—जीव को सिखा ही गई कि जब मनुष्य जन्म के लिये माता क उदर में
जाता है तो उदर में हर एक प्रकार का दुष्प्रयोग कर भगवान से प्रार्थना करता है फिर जन्म
लेकर उन बातों को भूल जाता है और भगवान के मंत्रन का नहीं करता आदि वर्णन ॥

संख्या ११५ बी तत्त्वज्ञान की बारमासी, रचयिता—द्वारकाप्रसाद उपनाम मुकरेव
(मुहम्मदपुर) अग्रज—दही, पत्र—१४, आकार—४ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०,
परिमाण (अनुच्छेद)—४८, पूर्ण । रूप—नवीन पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—
सं० १९३१ = १८७४, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८०८ ई०, प्रासिस्थान—५० रामदुनारे
पाक, ग्राम—तर्ना, त्रिषा—उन्नाव (अथवा) ।

संख्या ११६ चौदह विद्यापति, रचयिता—द्विज गुरुद्वज अग्रज—साधारण,
पत्र—३०, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुच्छेद)—
४९५, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य । लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—५० मगीरप्रसाद,
ग्राम—बरवा हाकर—मुर्पीर, त्रिषा—प्रतापगढ़ (अथवा) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चौताल चिन्तामणि ॥ दोहा ॥ श्री सीता वो राम के गुरु पद धरि निज भाल । अव फाल्गुन की गवनई वरनत हौं चौताल ॥ जानि धरहिं जो कठ महँ चिन्तामणि चौताल । होहिं प्रसन्नित जक्त में सोभा विपुल विसाल ॥ चौताल ॥ गज वदन सकल सुख सदन महेश पियारे । मोद निधान जहान जान जस जासु इन्दु उजियारे ॥ करि निज नयन चक्रोर निहारत सुरस कलनि मेप विसारे ॥ महेश० ॥ ब्रह्मादिक पूजत सिद्धि सराहत हृदय अपारे ॥ दधि अक्षत फल फूल दूध दल मोदक धर वारे ।' महेश० ॥ आठ सिद्धि नव निधि के देत मंगल मय जक्त मझारे ॥ सुमिरि नाम नर सुरपुर पावत जस भनत अमंगल हारे ॥ महेश० ३ ॥ ते सब भये जक्त में जाहिर जेहि करि कृपा निहारे । द्विज लुटकुन कर जोरि मनावत गावत पद करहु सम्हारे ॥ महेश० ॥ ४ ॥

अंत—॥ उलारा ॥ वन भीतर मोहन दधि लटे ॥ ग्वाल बाल सब गंग रहत है निज ग्वालिन को सग छटे ॥ बरवस पकड़ि लेत मग माहीं झक क्षोरन से लर दूटे ॥ X X X ॥ ठुमरी ॥ संवलिया को कौने वन हूँडन जाऊं ॥ गोकुल हूँडि वृदावन हूँड हूँडि फिरी नैद गाऊ ॥ सांवलिया को सूरस्याम मोहि आनि मिलावो चरनन की बलि जाऊं ॥ ठुमरी ॥ मोरा चातुर श्याम सेहि मन अटका ॥ वतावो सरसी कोई जादू लटका ॥ सुलतान पिया विन धैन न आवै मोरा मन रहतु है भटका भटका ॥

— ॥ इति चौताल चिन्तामणि समाप्तम् ॥—

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १२ तक—मंगला चरण, शिव तथा राम की महिमा, जगदम्बा की विनय, विनय के कुछ पद (२) पृ० १३ से पृ० ३० तक—रामचन्द्र जी की विनय, राधाकृष्ण का फाग । राधा, कृष्ण, और गोपियों सम्बन्धी कुछ गीत राम तथा जनकपुर की स्त्रियों के सम्बन्ध के कुछ गीत । (३) पृ० ३१ से पृ० ६० तक—उपालम्भ, रति, परिहास, सौंदर्य, उपदेश, वियोग तथा सयोगादि सवधी गीत । अन्य सुरति दुःखिता नायिका के वचन । जनक को कौशिक द्वारा राम का परिचय कराया जाना । विभीषण द्वारा राम को समझाया जाना । नायिका का पतंग उड़ाना रंग खेलना कुछ प्रेम संबंधी गीत ।

संख्या ११७. मंगल आरती, रचयिता—धानतराय, कागज—साधारण, पत्र—५, आकार—६ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपदुप्)—५०, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री जैन मंदिर, कटरा मेदनी गज, डारुघर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—अथ मंगल आरती राग भैरव में लिप्यते । श्री मंगल आरती कीजै भोर । विघन हरन सुख करन किरोर ॥ अरि हंत सिद्ध सूर उव झाइ । साधु नाम जपियै सुपदाइ ॥ १ ॥ नेमि नाथ स्वामी गिर नार । वास पूज्य चंपा पुरधार ॥ पावा पुर महावीर मुनीश । गिरि कैलास नमो आदीश ॥

अंत—मंगल दान सील तप भाव । मंगल मुक्ति-वधू को चाव ॥ धानत मंगल आठौ जाम । मंगल महा भक्ति जिन स्वामी । मंगल आरति कीजै भोर । विघन हरन सुप करन करोर ॥ ८ ॥ इति मंगल आरती संपूर्ण शुभमस्तु ।

विषय—त्रिन देव की अरती ।

संख्या ११८. अलहा लंड, रचयिता—संग्रहकर्ता सौ. ई. इलियट (कर्नाटबाद)
कागज—वेरी पत्र—२६०, आकार—१२ X ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५३, परिमाण
(अनुच्छेद)—१५६७० पंक्ति । रूप—दीनक कमी छुद्र, पत्र और गद्य, छिपि—भागी
छिपिग्रह—सं० १९३० प्राप्तिस्थान—सासा नारायण दास इलवाह, ग्राम—महोबा, बा-
घर—खीरी खलीमपुर, जिला—खीरी (अजमेर)

आदि—पृथ्वी राज का विवाह ॥ सन् ११४८ वि० माहिष्ठ परिहार उरई वाहे
की बहिन अगमा का विवाह महाराजा पृथ्वीराज से हुआ था और सन् ११६४ में महा
राजा पृथ्वीराज की राजा श्री चंद्र रमईर बंती कबीर के महाराज की कन्या जो हामी से
उत्पन्न हुई थी उस संयोगिनी नाम सुंदरी को अति सुख करते हुए दिल्ली को समय के
विवाह उस समय में रतीमान के पुत्र साकनिराना तीनि बर्ष के थे राजा जयचंद की
स्वयंवर अपनी बेटी संयोगिनी का किया था । उममें सब राजाओं को बुझाया था और
पृथ्वीराज को यही बुझाया था

अंत—साहर बोले सब छत्रिब से तोपन बची वृत्त लगाय । सुभां उदानी दोनो
हल में सूरज रहे सुधि में छाय । गाला जोता के सम बरसे गोली मया बूढ़ भर शाय ।
पूक कोय ही गोसा पहुंचे गोखी २० केल हीं जाय चारि परी भरि गोसा बरसो तोर लाल
बरन बुद्ध जाय ॥ ताप छांवि हुई ज्ञानन ने कर में कई सिरोही काफि । देह कदम को भरसा
रहिगो नरखत बरन सगी तरुवारि । बडे गिरोही भागा साही जो बूढ़ी की असक कटार ।
ठमा गमई का हल भीतर करि करि गिरि सुभर वा ज्वाल । बैसा रागी के दपटनि में कोई
कुंवर न आई पांख भय निपाही साहर बरे अपने चारि चारि इपिचार भादा बड़ापो
तय साहर ने भी बैसा से कही पुकारि सग्हारो बड़ा रण लेनन में तुम्हरो कास रहो
नगिपाय ॥

विषय—महाबे की पहली छानई, संयोगिन का स्वयंवर, महोबे की दूमरी लड़ाई,
मार्वा की लड़ाई, गिरसा की पहिली लड़ाई, मीनागढ़ की लड़ाई, पयरीगढ़ की लड़ाई,
बाँरीगढ़ की लड़ाई, मरवर गढ़ की लड़ाई, रिहती की लड़ाई, प्रसा का प्याह, कसामू की
लड़ाई, मुस्लिमान का प्याह, बुकारे की लड़ाई, पाँच का प्याह बरुन बुकारे की लड़ाई,
इम्बूक हरण, आन्दा निम्नसी पृथी कामरु बैस बंगाका की लड़ाई गज्जर की लड़ाई,
मिरमा की दूमरी लड़ाई औरत सागर मुजरिबों की लड़ाई, आन्दा मर्माबा, मदिवा विठ्ठल
की लड़ाई, बैसा के गीने की लड़ाई, बैसा के गीन की दूमरी लड़ाई बया व साहर की लड़ाई,
चंद्रम बाग कटाने व चंद्रम लंद उगावने की लड़ाई, बैसा के सती हान की लड़ाई, आदि
लड़ाइयों का वर्णन ।

संख्या ११६ ए. अलंदा बदनो, रचयिता—याबा पधेरवाम (नराचमपुर)
बहराज । कागज—देगी, पत्र—१२८, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२,
परिमाण (अनुच्छेद)—१९९६, पूर्ण रूप—बचीम पत्र, छिपि—भागी, रचनाग्रह—

१२३५ फ० = १८२७ ई०, लिपिकाल—स० १६२७ = १८७० ई०, प्रासिस्थान—वावा किशोरी दास, ग्राम—नरोत्तमपुर, ढाकघर—बेहटा, जिला—बहराइच (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ प्रथम गुरु की वदना तिमिर दृष्टि मिटि जाइ । माहेव सब घट भीतर नैनन में दरसाइ ॥ १ ॥ उकार मुल श्री भाल मुकुट मनि रपि सगि गुज विहार ॥ दास फकीर के हिरटै वसी भुनि उपरै नाम तुम्हार ॥ २ ॥

अंत—नैन झलकै जोगी अवल चढय ॥ तन धन ट्रेपि जनि वीरावो करौ भजन अस पैहै न दाव ॥ आसन अघर पवन परभाव । आवत जात सोहै गम गाव ॥ उनि मुनि आगे अग्र अगोचर त्रिकुटी मा बैठि के ध्यान लगाव ॥ तन तकिया मन ताल वजावो पाच पचीम का घेरि लै आव । सुख मन सोधि समुझि घर आवो सूनी मरल लै सेज विछाव ॥ उनि मुनि अगर भई मोह छाही दास फकीर तह बैठि जुड़ाव ॥ इति श्री आनन्द चरनी प्रथ सद्द दास फकीर कृत सपूर्ण ममास लिप्यत रामदास स्वयं १९२७ वि० .

विषय—ईश्वर निराकार साकार जीव आत्मा राम नाम आदि पर शब्द वर्णन ।

संख्या ११६ घी. वावा फकीरदास की वानी, रचयिता—फकीरदास (नरोत्तमपुर), कागज—साधारण, पत्र—१२६, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप्) २०००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१२३५ फ० = १८२७ ई०, लिपिकाल—सं० १६२७ = १८७० ई०, प्रासिस्थान—वावा रामगिरि महत, ग्राम—कैसापुरा, ढाकघर—तर्बारा, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वावा फकीरदास की वानी लिख्यते ॥

अंत—गगन में झरि वरपे वह नूर । विन धन घटा छटा विन वाटर दामिन दमकै दूर ॥ १ ॥ दे द्य भजन देखु निरंजन वाजत अनहद तूर ॥ २ ॥ दास फकीर संत टीठ सोई दूनौ दम हाल जुजूर ॥ ३ ॥ अठरिया छवि झलकै करतार । सगि पर सुर सर पर सीस है सोभा अगम अपार ॥ १ ॥ चांद सुरिज टिवस न रजनी विन दीपक उजियार ॥ २ ॥ सेस महेस विद्वत्र विधि वरनै तेज न पावत पार ॥ ३ ॥ दास फकीर सत डीठ सोई दोनौ कुल उजियार ॥ ४ ॥ इति श्री दास फकीर की वानी सपूर्ण मन् १२३५ फमली लिखा जवाहर दास स्वयं १९२७ वि० जो देया सो लिखा ॥

विषय—ईश्वर भक्ति, साधु के लक्षण आदि वर्णन ॥

विशेष—११९ पृ के समान ही इम्क़ा भी पाठ है ।

संख्या ११६ स्त्री. ज्ञान की गारी, रचयिता—वावा फकीरदास (नरोत्तमपुर), कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १८, परिमाण (अनुष्टुप्) १६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१२४० फ० = १८३२ ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्रासिस्थान—वावा किशोरी दास, ग्राम—नरोत्तमपुर, ढाकघर—बेहड़ा, जिला—बहराइच (अवध) ।

आदि—श्री गुरु जी नम । श्री गणेशायनम. अथ ज्ञान की गारी लिख्यते ॥ सुनौ सुरति सोहागिल हो कि देखौं पिय केरी सेज वनी मोती झालरि झलकति हो कि बंद नेवार अनूप तनी ॥ २ ॥ वाजै सुरग वसुरिया हो कि ललित पिया केरी सेज वनी ॥ ३ ॥

बाह्य जगत् नगरिया हो कि राग छतीसी नाइ बनी ॥ ४ ॥ तई देखा सति सादेव
हो कि भादि जोति कोतबाळ बनी ॥ जई जमल तुम्हारा हो कि पापेठ समय सध्द
बनी ॥ ६ ॥ इजो जगम तुव अटरिया हो कि बाजठ अजहद नाइ बनी सुख बेरु सी
पिन्नरिया हो कि सुनी महक सठ रूप रनी ॥ ८ ॥ पहिरी प्रेम कजरबा हो कि देनु काजर
केरी रख बनी ॥ ९ ॥ मन्वीदास फकीर जन हो कि छे छे पिया छे सज सुनी ॥ १० ॥

अंत—गारी । बिरहा अगिन तन सागि सकल मर्म भागि भागी हो ॥ सुरति
बसी सत छोड मकस मज त्यागी हो ॥ १ ॥ कठिन मीहर के लोग कर सब होसी
हो । हम धन बिरह बियोग प्रेम रस पागी हो ॥ २ ॥ छाई कुळ अजाल छोग परिवार
हो । गुरु के बचन जर छाग इस्फुत गरे माल हो ॥ ३ ॥ कर्म उर्म की मधि किज
धर्म साठा हो । अइ बैली गगन अटरिया जइ पुख्य अफला हो ॥ ४ ॥ जाके रस न
माम हाइ ना बेही हो । पुहुप बास मग मंचर बाबा याहि हो ॥ ५ ॥ पदे रीति कुळ
भक्ति मत जन आनइ हो । कागि बिरह सिधोर ती जानि छिपाबज हो ॥ ६ ॥ छके नगर
के लोग सी जसम मधाती हो । सत गुरु के उपदेश तो मज सपराती हो ॥ ७ ॥ हुरि
गवठ न बहार एक रंग लागी हो । सब को है एक प्रम्यम प्रेम रस माती हो ॥ ८ ॥
पदे रीति पिया मिळइ सत करि मानउ हो । हम धन कीज पुकार जगत मुनि जानउ
हो ॥ ९ ॥ अरि सुगुन बने हार शूठ नहिं भापा हो । सुर्म कोइ हित हमार अंत नहिं
राय हो ॥ १० ॥ हाइना बाबा बरै अर्म जनकार हो । गेर ही मधि पर सोहत पुख्य
हमार हो ॥ ११ ॥ जो सली होइ हितकर तो पिय को मिळाबठ हो । जरा मरन
सुरि नाइ बहुरि नहिं जाबइ हो ॥ १२ ॥ मरिता घाट अनक बीर सब पकइ हो । अम
जो जानु सोहागिल पिया का भेंदइ हो ॥ १३ ॥ मर्म मई जा रूप अरि सब पकइ हो ।
सुहु सपि होइ मयान बई सत साइइ हा ॥ १४ ॥ अने भीर भीर छीर मिळ नहिं वृजा
हो । र्सी पीतम सनेइ सली अहि छागइ हो ॥ १५ ॥ अम जो होइ विराग प्रेम द्विप
जागी हो । माइत दाम फकीर हरे बर मागी हो ॥ १६ ॥ इति ज्ञान की गारी समाप्त
रूपेण रामदास संबठ १९२७ वि० ॥

विषय—ज्ञान की गारी अं खातुओं व महात्माओं के ग्रन्थ के योग्य वर्णन ॥

संख्या ११६ की गरी ज्ञान की, रचयिता—बाबा फकीरदास, कागज—देसी
पत्र—८, आकार—१० × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनुच्छेद)—१३०,
पूर्व, रूप—प्राचीन, पय । छिपि—नागरी, रचनाकार—सं० १९७० प० = १८३२ ई०
लिपिका—१९३० = १८७३ ई० प्राप्तिस्थान—बाबा राम गिरि महत, ग्राम—बेमोपुर,
राजपूर—तर्बारा, विषय—सीतापुर (अजय) ।

अधि-अंत—११९ मी क मयान (केवल आरम में 'धी गुण जी ममा' नहीं है) ।

संख्या ११६ ई होती ज्ञान की, रचयिता—बाबा फकीर दास (बागम
पुर), कागज—देसी, पय—२०, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६,
परिमाण (अनुच्छेद)—४६०, पूर्व । रूप—प्राचीन पय । छिपि—नागरी, रचनाकार—

१२३८ फ० = १८३० ई०, लिपिकाल—सं० १६२७ = १८७० ई०, प्रासिस्थान—घावा किसोरीदास, ग्राम—नरोत्तमपुर, ढाकघर—त्रेहड़ा, जिला—ब्रह्मगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ शब्द होरी ॥ जोगिया तोरे कारन अब जोगिन मईउरे । वर नही चैन चैन नहीं आगन त्रिल विच दरद भई रे । पांच पचीस सगति परि गये पिया सुधि भूल गई रे ॥ १ ॥

अंत—होरी । पिया के सग खेलू री होरी । नैहर नारि पिया पर देसा केहि विधि फाग रचोरी ॥ काह करौ कष्ट वसि नहि मोरे सखी कैये मिंगार करोगी ॥ १ ॥ कनक नादन पिय फाग रचो है छवि रग सुगंध बनोरी । त्यागु मखी कुल कानि लाज सब पिया घर धाड़ चलोरी ॥ २ ॥ विविध प्रकार के वाजन वाजत बहु विधि राग बनोरी ॥ मुर नर मुनि जेहि ध्यान न पावै श्रेष महेया रखे कर जोरी ॥३॥ गाजत शब्द मार मोई माहेव तहा सखी धाई चढ़ोरी ॥ दाम फकीर सरनि मत गुरु की चरनन सीम धरोरी ॥४॥ इति श्री ज्ञान की होरी समाप्त लिखत राम दाम सवत १९२७ वि० श्री शंकर काँ जै श्री गुरु जी की जै ॥

विषय—साधुओं व महात्माओं के गाने योग्य ज्ञान की होरी ॥

संख्या ११६ एफ. होरी ज्ञान की, रचयिता—फकीरदाम (नरोत्तमपुर), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ = ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुदुप्)—४०५, पूर्ण । रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—१२३८ फ० = १८३० ई०, लिपिकाल—१९३० = १८७३ ई०, प्रासिस्थान—घावा रामगिरि महंत, ग्राम—कैमोपुर, ढाकघर—तवौरा, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शक होरी के लिप्यते ठर लागी पिया से कैये मै खेलौ होरी ॥ ए नैहरवा मै आनि भुलानिठ सुधि विमरी पिया तोरी । आंगुन बहुत नहीं गुन एकाँ रहेट मै विषय रम घोरी ॥ १ ॥ पाच पचीस संग होलिहरवा तिन सग निकर न पावठरी । कैये रग पिया पर डारौ अल्प धैम बुद्धि थोरी ॥ २ ॥ पिया मोरे ऊंचे अटा पर बैठे रहेट मै नजरिया जोरी । पल छिन कल न परे विन देखे जगत जेठनिया की चोरी ॥ ३ ॥ अब की निहोर कोर भरि चितवत छूटे ना दड़ डोरी । दाम फकीर दरस पिया फगुवा मागत हौं कर जोरी ॥ ४ ॥

अंत—लागि बमंत सीस दिहेट चरनन नाम सरनि मै पायोरी । कपटी कुटिल कर्म को हीना सीस चरन तर नायोरी । गे सब धोय कर्म केफंदा गुरु दरियाव नहायेउरी ॥१॥ इत उत शकनि सवै विसरायो एक डोरि हिय लावोरी । कुमति की होरी ज्ञान का लका नाम कै आगि निज लावोरी ॥ २ ॥ हिया वैराग और नहिं दूजा प्रेम मृदग वजावोरी नाम रसनि हिय लागि हमारे दुविधा दूरि बहावोरी ॥ ३ ॥ भा भर्म दूरि कर्म काया के लोक लाज विसरावोरी दास फकीर दया सत गुरु की भक्ति अबै वर पावोरी ॥ ४ ॥ इति श्री होरी ज्ञान की सपूर्ण समाप्तः सवत १२३८ फसली लिखा जवाहर दास सवत १९३० वि० जो देखा सो लिखा ॥

विषय—ज्ञान की होली

संख्या ११६ जी शान का बाप मासा, रचयिता—बापा कबीरदास (नरोत्तम पुर), अंगार—बेसी, पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुच्छेद)—२१०, पूर्ण, रूप—नवीन, पठ, लिपि—मागरी रचनाकाक—१२३८ फ० = १८३० इ०, छिद्रिकाक—सं० १९३० = १८७३ इ०, प्राप्तिस्थान—बाबा किमोरीदास, ग्राम—नरोत्तमपुर, सार्वर—बेहदा जिन्ना—बहराहूच (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः जय शान का बापा मामा लिप्यते ॥ प्रथम दम एक उदर प्रथम चंद्र विरिषि बाबादि ॥ होत हरिज कुमति कपर सब सु पर नर वा आबही ॥ १ ॥ मस जुगति कीर लकि सत संगदि ली जाये । आपाइ आमा छोदि ते नाम सांइ लै छाहये ॥ २ ॥ सावन भासन पदुम करि के अक्षय पर बुनि गात्रदि । कोटि दरम मधय वरस कपर मपुर बुनि गति वात्रही ॥ ३ ॥ यम पांरौ ताठ कागे ताहि पर चरि दलगा । सुरति खेरी नैनु मनुकां जान शक्य हिंदीरुका ॥ ४ ॥

अंत—सुख दम सजन के गारी । तहु मोद भावा ठक करी ॥ पीबड अमी मत तेका ॥ एकि पति होइ मतबाका । छनि पति भारग जाई खे सत मध प्रीति लगाई ॥ कइ दास कबीर पुकारी गुन चरन मरन बलिहारी ॥ इति श्री शान की पारह मामी कबीर दास कृत समाप्तः छिद्रित राम दास स्व पठनार्थ ॥ संवत् १०३० वि० श्री राम जी सदा सदाइ ॥

त्रिपय—ज्ञान की पारह मामी

संख्या १२० हरि भक्ति सिद्धांत समुद्र वा भी कृष्ण मुक्ति विरदासजी, रचयिता—जन सिंह वा हितराम (बृंदावन) अंगार—साधारण पत्र—६१, आकार—१३ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुच्छेद)—२०५६, पूर्ण, रूप—नवीन, पठ, लिपि—मागरी, रचनाकाक—सं० १७२२ = १६६५ इ०, छिद्रिकाक—सं० १८९६ = १८३९ इ०, प्राप्तिस्थान—श्री उपपति सिंह रईम, कासाकांडर, जिन्ना—मठावगद (अक्षय) ।

आदि—श्री मतेरामानुजायनमः ॥

×

×

×

श्री हरि भक्ति सिद्धांत समुद्र त्रिपय ग्रंथ लिप्यत । ते नमामि परमात्मा कृष्णकंद मुग कइ । जग कारण कइनामयं त्रिपयानंद मुच्छद ॥ १ ॥ मकर विघ्न हरता हरी मंगल करता मोइ । जग भला घाता महा मजि मन मंगल शाइ ॥ २ ॥ कथित छप्पय—रामन आक्षय बसुरैव दक्षी गर्भ भव । जहु बर सेबक नमा पाप छिप तुरि मुजा जव ॥ घिर बर के मुग हरन महा सोभा सु ममित मुग । मत्र नुर लुचती बृंद तिभई उपजायो काम मुग ॥ साई सदाइ हम कई सदा, हित चित करि निव मन धरन सकल छेक पदिन चरण, जपति कृष्ण अमरन मरन ॥

अंत—इंदे जानि आपो मरन गुन गापो मैदप्यल । नयो बुरा लड शररो । कीरै कृपा कृपाय ॥ जय छनि पनु श्री कृष्ण को रदे लाक के मादि । तबर्षी इद हितराम कृत ग्रंथ रही मच हादि ॥

×

×

×

×

इति श्री रामहित दाम्य विरचिते श्री राधा बल्लभ चरण कमल प्राप्तये सुगमो पायो मीक्षाङ्गरीयसी सव शास्त्र सार श्री कृष्ण श्रुति विरदावली त्रय पूरनतावरन अष्टा-दश लपी । ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्विंश्या रविवार शुभ भवेत् सवत् १८६६ ॥

विषय—श्री कृष्ण की सर्वोपरिता, उनकी भक्ति, वैराग्य, मोक्ष, जीवात्म-तत्त्व, परम प्रेम, नवधा भक्ति, शरणागति, प्रेमाभक्ति, दपति प्रेमोद्दाम, युगल रूप की एकता, वृन्दावन माहात्म्य, अष्टम्पत्नी, राधावर, गोपियों और राधा की वदना ।

विशेष—(१८) पृ० १०९ से पृ० ११० तक—ग्रथकार के गुरु कुल का वर्णन । उदया चल श्री व्यास उजागर, तहाँ प्रगटे हरिवंश विभाकर ॥ श्री हरिवंश सु हरि अव-तारू । प्रगट कियो जिन तत्त्व विचार ॥ अननि भजन जुत प्रेम बतयो । सब हिन को निस्तार दिखायो ॥ चौरासी पद क्रीने पेये । कहे न पुनि कहि है कोऊ जैमे ॥ जुगल किशोर मंत्र ते आही । और मत्र कोऊ ऊपम नाहीं ॥ स्मरण जाप करै केऊ जन । जुगल किशोर लहे वृन्दावन जिनके प्रगटे श्री वन चट । लीला विग्रह निग्य स्वच्छंद ॥ तिनके सुत भये श्री सुन्दर वर । करुणा निधि अगनित केहँ गति धर श्री दामोदर सुत कहि तिनके । पार नहीं अगनित गुन जिनके जिन नर नर नातिन को लीनों । अभैदान सबहिन केहँ दीनों ॥ परम क्रपाल विलास तासु सुत । निज इष्ट साक्षात्कार जुत ॥ अरु जितमै गुन है वन माहीं । सारद पारहि पावत नाहीं ॥ अगनित गति दाता सुख दाता । तत्त्व ज्ञाता जग माहिं विख्याता ॥ तिनके गुन श्री हरि के गुन सम । अवर नाहि दूजो कोद उपम । फते सिंह तिनको भयो अनुचर, मत्र दयो दीनों मिरपर कर ॥ अननि भक्ति दहे राधा वर की । त्रास मिटाई जम के घर की ॥ करिके कृपा आपनो जानौ । सरना लेत अनुग्रह मानौ ॥ तासु कृपा ते भयो उजास । प्रगटत अनुभव वचन प्रगाम ॥ श्री गुरु जम उचार वतायो । तातें मै प्रभु को गुन गायो ॥ कीरत न भक्ति मुखि कलि माहीं । नाम उचारि जगत तरि जाही ॥ मो सौं कहो गाइ हरि के गुन । अरु नित प्रति संतन मुख तैं सुन ॥ इह करि जग तरिहै अनयास । लहि है इष्टदेव को पास ॥ सोई वचन मै लै धारौहि । हरि गुन कथन भयेउ शिव जिय ॥ तिहि लगि मै इह ग्रथ बनायो । जो मत कृष्ण वताओ । इह विधि में निश्चय सुचखानी । जो गुरु ग्रंथ सत पर मानी ॥

×

×

×

×

(२०) ग्रंथ कर्ता का वंश परिचय:—

अति पवित्र सूरज वंस । जिहि जग कीर्ति प्रसंस ॥ तहाँ अवतरे श्री राम । नर निरत लै जिहि नाम ॥ कछवाहि तिहि कुल जानि । धुर धर्म क्षत्री पमानि तिहि मध्य सेखौराव । अति सूर धर्म प्रभाव ॥

पृ० १२०—तिहि वंश श्री जगन्नाथ । पुनि रूप जिनकी गाय ॥ संतन कहे उष भक्त । जगु तैं भये नहिं आसक्त ॥ तजि संसार जानि असार । ब्रज मधि कीन्ह वास विचार ॥ जुगल उपास जिनके रासि । इह लखि वसे वृंदावास ॥ सिष्ट सलावही जिहि संत । पुनि गुमना सके जुअनंत ॥ तिहि सुनि राम साहि नरेस । जस विख्यात अति देस ॥

मित वातार सूर सुजान । सब जस करत आसु बल्लाम ॥ धर्मात्म्य हरि गुण भक्त । पुनि
भी कृष्ण रामासक्त ॥ तिनके फतेसिंह कुमार । मिस दिन एक भक्ति बिचार ॥ पुनि ब्रह्म
रूप्यो प्रथम पवित्र । जार्मि कृष्ण भक्ति परित्र ॥

पुष्ट १२२—प्रथम निर्माण काल —

पुनर्वास सु महत्त्व के, चतुरस्र चरम सुताम । फतेसिंह सु प्रसिद्ध जग, जन्म नाम
हितराम ॥ नयन^२ नयन^२ रिपि^२ बुद्धि^२ अम्बु द्युम अति मंगल जन्म । पुनि पवित्र बैसाक
सुदृढ पक्ष तीव्र अपे तत ॥ तहाँ प्रगट मनो प्रथम कृपा भी जगुबर की करि ॥ परै सुनि
दिय पाँ साम कुक कोरिऊ उजरि ॥

प्रथम क सदैव रहने की प्रार्थना ।

संख्या १२१ अष्टात्मली, रचयिता—गजाधर दास (मूळामठ, सुसुतामपुर),
कागज—सफेद, पत्र—४०, आकार—७२ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १७, परिमाण
(अनुपुष्टु) ४२३, पूर्ण, रूप—अष्टा, पत्र छिपि—जागरी, रचनाकाल—सं० १८८६ =
१८२६ ई० छिपिकाळ—सं० १९८५ = १९२८ ई० प्राप्तिस्थान—पं० त्रिभुवन प्रसाद
त्रिपाठी, ग्राम—पूरे पराल पांडे झाकधर—तिलोई, जिला—रामबरेली (अजय) ।

आदि—सबैया—आदि अंत की बात न कोई कही, सब बीच की बात बयानते हैं ।
बिच जाय बिचै मरि जाय सबै, आदि अंत को भेद न जानते हैं ॥ बहुत भेष अछेक मय
जय में, अपने अपने मत मानते हैं । कही सत्य गजाधर सत्य मता, विरसा कोट संत
पिछानते हैं ॥ जागु २ के जागु अचेत कथा, महा मोह की धींदा से सोकता है । यह
जन्म पहारथ पाय करा, काहे मूरल बादि ही श्रोतता है ॥ अम बीसर फेर मिर्माता नही,
काहे अमृत में बिष बोडता है । कही सत्य गजाधर अम बिना, आदि अंतहु में सब
रोठता है ॥

अत—संबत अठारह सै छिपासी मास बेड बिचारिया । प्राणि पक्ष तियि बबमी सुमित
दुम बार बुद्ध निहारिया ॥ स्यात्र तीरथ राज बिदित प्रयाग अति मुक्त कारिया । तहाँ प्रथ
सम्पूर्ण मनो अकरा बली निर कारिया ॥ यह भेद कथा मझ माया नाम बिरमय धारिया ।
सब प्रथम पंचम की मता, अकरा बली महीं कारिया ॥ प्रलोक्ष्य की उत्पति यामे कहि दिया
बिस्तारिया । कहत गजाधर सत्यमत अकरा बली निर्धारिया ॥

बिचय—योग की शक्ति से भजन करने की विधि ।

संख्या १२३ श्री राधात्मज की के नित्य कीर्तन के पद, रचयिता—गोस्वामी
गस्तु की महाराज, कागज—देसी, पत्र—६४, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति
पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुपुष्टु)—८४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र, छिपि—जागरी,
छिपिकाळ—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभद्र पुजारी, ग्राम—अछा
बवा, झाकधर—मठरवाँ, जिला—उज्जैन (अजय) ।

आदि—श्री राधा हमजो जयति ॥ अथ गोस्वामी श्री गस्तु की महाराज कृत की
राधा हमज कीके नित्य कीर्तन के पद लिखते ॥ तथ मंगला चरम के पद ॥ जय जय महा
प्रभू जगत बंदन की शची मंदन हरे । जय अर्जुन जानंद कंद नित्यानंद मन बांछित करे

॥ १ ॥ जय गौर राधा भाव भूपित श्याम धामल उर धरे ॥ जय पतित पावन दुग्ध नगा-
वन दीन जन अंकन भरे । २ । जय सकल व्राता प्रेमदाता गुलक तन अश्रु धरे । जय
कीर्तिनाभंठ मिथु निम गन मगुन व्रज ते अवतरे ॥ ३ ॥ जय रूप सनातन जीव श्री गोपाल
भट्ट रथु युग वरे । जय वाम चरणन पास मागे मजरी गुण अनुचरे ॥ ४ ॥ जय प्राण धन
रावा रमण श्री गोपाल भट्ट जू के लाडिले । जय श्याम सुंदर अधर मुरली वजत
तानन आडिले ॥ १ ॥

अंत—फूल डोल चंद्र कृष्ण ॥ १ ॥ श्री राधा रमण झूलत हें डोल ॥ हेलो मोर
परव परवा के रस मय जुगुल किशोर ॥ रूप अमल छाके वाके टोक भरि भरि लेत अकोर ॥
कोऊ गुलाल उढावै महचारि गावै तानि रम घोर । फोक चमर दुलावै मजनी निरगि निरगि
तृन तोर ॥ गुण मजरी गुलाबी चागो पहिरे छवि नहिं थोर ॥ अग्रतीज ॥ श्री राधा रमण
लाल अग्रतीज ॥ पहिरे चढन चागो अंग में प्रिया प्रेम रम भीज । १ । देन अनीम मगी
जन जोवत वोवत मुरज के वीज ॥ सारग गावें सुग्य उपजावें पावें सीतल चीज ॥ पलक
पवन की करै परस्पर तोऊ अग पसीज ॥ गुण मजरि जल जंव भरत हें लेत मेवा सुख रीम
॥ ३ ॥ इति श्री गोमाठ महाराज गल्ल जी कृत राधा रमण जी के वर्षोत्पन्न के पद समा-
प्तम् शुभ मस्तु ॥ अषाढ शुक्ल १५ संवत् १९३० वि० जै राधा रमण जी की ॥

संख्या—१२३. वैद्य प्रकाश, रचयिता—गनेसदास, (लवपुर, लाहौर), कागज—
देशी, पत्र—१६२, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनु-
पुष्प)—२६००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७४ = १८१७ ई०,
लिपिकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तस्थान—लाला सीताराम वैश्य, ग्राम—सदार-
पुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ दैद्य प्रकाश लिप्यते । पूर्जा श्री नरसिंह रवि मम
हृदय कमल प्रकाश । देह रोगादि रोग छुटकावो जम फास विचन हरन जग सुप करन एक
दंत गज माय शिव गौरी सुत को नमो सकल शशु गन नाथ ॥ चौ० । प्रथम संभु सुत
चरन मनावो विघ्न दूर कर जग सुप पावो ॥ पूर्जा वहुर सारदा देवी । जिनके चरन कमल
नित मेवी ॥ असुन कुमार मेवो धनवंतर । बुध क्षापन कम भवंतर ॥ वेद प्रकास रचो एक
ग्रंथ । सेवो जगत महा सुभ पथ । लवपुर ते जोजन ग्रंथ जान । कान्हा ग्राम नाम इक
मान तामें कवी गणेश इक होइ । ब्राह्मन दैद्य कहै सव कोइ । वागभट्टादि ग्रंथ जिहि
द्वेषि । सुश्रुत चरक आदि पुनि पेपि । भाषा सुगम ग्रंथ रच देवे । लोकन हेत जगत जस
लेवै ॥ अथ दूत परीच्छा दैद्य बुलावन जो घर आवै । जाके देपि भेद सव पावै ॥ होवै सुंदर
वली प्रवीना । बोले मीठ होइ आधीना ॥ दैद्य हजूर भेंट जो घरै । रोगी तौ नीका प्रसु करै ॥
इति दूत परीच्छा ।

अंत—इति-संवत् कथन—अष्टादश सैह चरप जय वीते विक्रम राज । चौहत्तर उप-
रंत पं भाषा पृह समाज ॥ कृष्ण पक्ष सावनि वदि पड़वा बुधवार लिपो ग्रंथ लवपुर विपै
कवि गनेश रिद धार । मद्र देश में पुरी लाहौर । नृप रनजीत सिंह तिहि ठौर । बल

सो जिन कीते सब देख । रघ्यो प्रथम तिहि राय प्रवेश । रघ्यो प्रथम तिहि काहीर ते बारा
 कीस । काण्डा नाम ग्राम विहोप । जो काहीर ते कुशापुर जाइ । मारग में तिहि को सुप
 पाइ । इति श्री राम सहाइ सुत गनेस दास बीरबिन्दे वैप प्रकास प्रथम नाम नीमे समुदेश
 संबत १९१० फाल्गुण मासे कृष्ण पक्षे तिथी पंचम्याम धनुष्यासरे पुस्तक अबाहर अक्ष देख
 बरहदुर ग्राम बामी लौपते छावनी बंधावा सुम सोमसु जो पढ़ई अथवा चिकित्सा करइ सो
 फल पावै ॥ इति शुभम् ॥ राम राम राम सीताराम सीताराम ॥

विषय—वैद्यक

संख्या १२४ प. पठनप्रकाश, रचयिता—गनेम जी (जागर) कागज—द्वैती,
 पत्र—३०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेद)—१७०
 रूप—प्राचीन, लिपि—मागरी, लिपिकास—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा
 मन्मोहन दास, ग्राम—इन्दौर बाकधर—सबई, बिला—उझाव (अथवा) ।

आदि—श्री धर्मसायनप्रः ॥ अथ पर तत्व प्रकाश चिकित्से ॥ ब्रह्मादिक सब देवता
 जिनको करत प्रथम । सो सिब सुत मेर करी सबही मम के काम ॥ जाके गुण गण गमतहु
 सेव न पावत पार । सो सिब सुत पर ब्रह्म है सब देवन को सार ॥ संसृत तच्छ अपार सति
 माया कई बनाइ । हैदि मुनि के जिन समुसि के अब सागर तरि जाई ॥ जगन्नाथ जाके
 गुह ताको नाम गनेस । रामचंद्र सुत परम बड़ सो प्रसिद्धि सब देख ॥ ताने मन मे यह
 रघ्यो कथा मरु क हैत ताहि प्रसिद्धि करी बड़े जासा जीव सबेत ॥ माहुर जाति मुमुक्षु
 जाति साबक दास प्रसिद्धि ताके अथ बेत मये जाके अतिही रिद्धि ॥ ताको मध्यम पुत्र
 शुभ नथ्या मरु जेदि नाम । सो गनेस पति के चरण शरण गया सुख नाम ॥ जैसे व्याहारी
 सकस जिस दिन मित्र प्योहार मन छगाइ के करत है तिम तुम ब्रह्म विचार ॥ परम जातमा
 ब्रह्म मित्र एक अर्थ अवार । ताके दिन जाके कोठ नहीं होत मच पार ॥

अंत—प्रथम अर्थाधिक यह रघ्यो पर को तत्व प्रकाश ॥ पूरण टूपा जापि भइ सो
 जानै हरिदास ॥ सुहे वाली जा गली नगर जागरे बीच । तहाँ बैठि के यह रघ्यो लोये
 कहि है बीच ॥ इति श्री परतत्व प्रकाश प्रथम गनेस कृत समग्र । लिखा रामदास अग्रबाळ
 सिवपुर बहार बही ७ मी संबत् १९२८ वि०

विषय—भागवत के छठे स्कंध का संक्षेप

संख्या १२५ थी. पठनप्रकाश, रचयिता—गनेम जी (जागर) कागज—द्वैती,
 पत्र—३२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुच्छेद)—१५०,
 खंडित । रूप—बचीन, लिपि—मागरी, लिपिकास—सं० १९३० = १८७३ ई०,
 प्राप्तिस्थान—पं० दीनानाथ मिश्र, ग्राम—कवइपुर चौरासी, बाकधर—सफीपुर, बिला—
 उझाव (अथवा) ।

आदि—अंत—१२४ प के समान । पुष्पिका नहीं है ।

संख्या १२५ प. बुद्धि विहास, रचयिता—गनेमप्रसाद (कदम्बाबाद), कागज—
 विद्वैती पत्र—७२ आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुच्छेद)—

१६०५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गिरिजा शंकर, ग्राम—मोतीपुर, ढाकघर—अलीगज, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बुद्धि विसाल लिप्यते ॥ प्रथम सुमिरि गणपति चरण कृत नवीन इतिहास । वार वार वानी मुमिरि वर्णो बुद्धि विलास ॥ १ ॥ आदि शक्ति महिमा अमित ध्यावत सुर तैतीस शिव रानी जननी जगत करौ बुद्धि वकसीस । सोरठा । बालमीक रिपि व्यास सूरदास तुलसी सुजन । वडो केशवदास आदि सकल कवि सुमिरि मन । वदौ हितहरि वश गुरु पद कोमल कज सम । पुनि माहिदेव प्रसंस करौ कृपा मन पर परम । कुडलिया ॥ राधा कृष्ण अनंत यश धरत सदा शिव ध्यान । ब्रह्मा सुर सनकादि मुनि भापत वेद पुरान ॥ भापत वेद पुरान युगुल वैकुण्ठ निवासी । तारे पतित अनेक नाम जिनको अधनासी ॥ कहै गणेश प्रसाद मिटे सिगरी भव वाधा । कृष्ण कृष्ण दिन रैन रटौ मन राधा राधा ॥ कवित ॥ शहर फरुखावाद काशी के समान शुभ बहत निकट सुरसरि सुपदाई है ॥ राज महंत संत वेद वत विस जप तप दान सनमान अधिकाई है ॥ मदिर महेश रिद्धि सिद्धि है हमेस गुण गाव गणेश लघुमति कविताई है ॥ भक्ति उपजावन वसत नर पावन वजार मन भावन विविध छवि छाई है ॥

अंत—॥ दो० । विटप कल्प जमुना निरुट श्री वृन्दा वन धाम । निरपि निरपि दुति जुगुल मनोहर लजत कोटि रति काम चद्र जुग भामिनि सकल चकोर ॥ हिंडोला झूलत युगुल किशोर ॥ ३ सवन में सोहै वनवारी । अमित छवि श्री राधा प्यारी ॥ परस्पर सुख समाज भारी ॥ मुदित मन हैं सखिया सारी ॥ दो० श्री हित प्रीतमलाल सुत पद पकज धरी ध्यान । गावें दास गनेस देहु प्रभु जुगुल भक्ति वरदान । कृपा करि हेरौ लोचन कोर ॥ हिंडोला झलै युगुल किशोर ॥ इति श्री बुद्धि विलास गणेश प्रसाद कृत संपूर्ण संवत् १९२८ वि० श्रावण शुक्ल पंचमी ।

विषय—गणेश वंदना । ख्याल गंगा जी का, आंखों का, कूंचे का, राम जन्म, कृष्ण जन्म, मंदोदरी का, चीर लीला, वारह माया, रावन मंदोदरी, आदि राम वा कृष्ण आदि की लीला लावनी आदि में वर्णन ॥

संख्या १२५ वी. राग रत्नावली, रचयिता—गणेश प्रसाद (फरुखावाद), कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—१० X ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०८, पूर्ण । रूप—साधारण, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गिरिजाशंकर, ग्राम—मोतीपुर, ढाकघर—अलीगंज, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ राग रत्ना वली लिप्यते ॥ मंगला चरन लावनी रंगत मोहनी ॥ विदित लवोदर जग वदन । भजो गणपति गिरिजा वंदन ॥ सीस राजत मणि मुकुट विसाल । तिलक केसर को सोभित माल ॥ कुठिल भृकुटी जुग नैन रसाल । लसत उर नव रतनन की माल । दो० । गज आनन कुंडल श्रवण अरुण अधर छवि अंग । एक दंत सोभा अनंत लखि लजत अनेक अनंग ॥ अंग राजत विभूत वंदन । भजो गणपति गिरिजा नदन ॥ कपोलन पर धूंवर वारी । जुगुल अलकै झलकै कारी ॥ फवन पीतावर की प्यारी ।

मुदित मन चारि भुजाधारी ॥ हाथेईं देखेँ विरक निरत करत गज राज छम छम छम छम छम
न ना ना ना ना पम चौरासी रहे बाज ॥ सो सख संग साज काइ बन ॥ मजो गणपति
गिरिजा नंदन ॥ गदा हथ सोहे पाणि त्रिसुख ॥ हरत दीनय के मिस दिन सुक ॥ सकक
सुख हापक मंगल मूक करत मछन की अर्ज ककूल ॥

पुष्पिका—इति श्री राग रबावली सपूर्ण समग्रः क्षिप्तं रामदासक पाँचें अक्षुण्ण
वही ३ संवत् १९३६ वि० ॥ श्री राम राम राम

विषय—भागवत द्दशम अे द्दश अक्षर आदि सप्तमी आदि में माया कर गाया

सख्या १२६ प. गग पचीसी, रचयिता—गंग कवि, कागज—द्वैती, पत्र—१०,
आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपम)—२००, पूर्ण ।
क्य—प्राचीन, पय । किति—मागरी, क्षिप्तिका—सं० १८२६ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान—
बाबा शिवपुरी, मुहल्ला कास्मीरी, कलकत्ता (अथ) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गंग पचीसी गंग कवि कृत क्षिप्तये ॥ मृतनाथ
भव भीत विहारण अथ भुज गाधि पहारं । जय जूट गंगावर रजन भरा भर विकसत गारं ॥
ककित कल्पपर ककमसा हक गल ककि कमुच विहारं । सांमू सांमु सदा शिव शंकर महर
बारं बारं । १ । कासी नाथ चरण शरणागत जनिमत बुक विहारं । क्षाति सेपर शिव शिवद
शिवाकर सम दन दमन मुहार ॥ मौरव भुजग विभूषित भूषित भुवना दिय मखहारं । अनांद
वतारण शकर महरो बारबारं ॥ २ ॥ गंग पचीसी में कहीं गीरि गणेश प्याह । शिव विरंभि
को मुमिरी के रसुंदन चिनु छाप ॥ भूपन वरमन में करी सब सुनियो पितु छाह । धर्म
विराई बंग में सकल पाप करि जाय ॥ अर्ज करी महाराज सों चरय पकरि सिर नाय ।
अथ सागर मोहिं पारकर अपनी नाच चढ़ाह ॥ छंद । पापन पीत पाय पोस करि किंकिनी
हीरा जवे । जामा तुसाका पीत बोती रग कुंडुम के परे । दोड हाय पहुंथी मुमिका भुज
नग छो सो सब जग मगे । एक हाय भागिन विराई माल मोठिन की गंर मोठी बंजीरी छय
छूटे तुष्टै कपोकन के तरे । कास अकिर गुसाक सोमित रचाम सिर चीरा पर । सुर सिद्धि
की पह संपदा है अमुर सब वेपथ मर । एक कर ककित को कर गहे एक कर रावे गरे ।
सेस छवि नहिं जात वरमत काम छविजत हैं पदे ॥ अथ गंग साहेब सरन आवे सस जम्म
के पातक हरे ॥

अंत—हाय हमारे तुम्हारी कृपा ते ईकति हैं तुम्हरे धर की । रूपमान
के भीन सो बंध कमी जो है तेरे पुके वही कोयरी की । आकर ही चिन दाम दिये कहर
जोरि हो सगरी नगरी की ॥ तुम आरक नारक कोटि करी सुराही ती परी गहने चुकरी की ॥
तुम बंसी हमारी हर्म विकरायो तुम्हारे में भूपन हाक मिसाई ॥ अपने कर सो तुम धामे
रही अपने सुप सो मैं नेक बजाई जैसी बजी बहि बाग के बीच मो तदाग के नीर की तान
सुबाई । जैसी बची ती कर्ब की छाह मो रैस्नीही राधिक आहु नचाई ॥ जानत ही
मनुरी बतियो धीर सब काह है मेकि गबाई । कोड बावरी है सगर बज में जग पारन
के वर दर विचराई ॥ तोरहु ससा कर्ब के पात अबै बधि भापन हाक पचाई ॥ रूपमान
की सीह करै सिर को पी बिना चुकरी मुरकी न दिपाई ॥ दो० । तन मन सो दया करी

वेह मे कृष्ण मुरारि । राधे जूके झपट के बांह दई गल डारि ॥ राधे जूके कंठ मों बांधी अपने हाथ । तिहि पाठे दुलरी मिली चलीं हमारे साथ ॥ प्रभु पीतावर मे छोरि कै राधे दोड कर लीन्ह । एक सपी सो मागि के प्रभु को मुलीं दीन्ह । उन दुलरी पाई आपनी उन मुरली पाइ आप । कहत सुनत पातक हरे कटे अंग के पाप ॥ सुभं भुयात ॥ मवत् १८०६ वि० आपाद मामे शुक्ल पक्षे चोयम्यां ॥

विषय—श्रीकृष्ण का राधा की दुलरी सुराना दृश्य पर मे राधा का श्रीकृष्ण की मुरली सुराना, दोनों का झगड़ा पश्चात् दोनों का चोरी की वस्तुएं लौटा देना ।

संख्या १२६ बी. गंग पचीसी, रचयिता—गंग कवि, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६८ = १८११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राय लाल जी, ग्राम—रमुआपुर, डारुवर—धौरहा, जिला—सीतापुर ।

आदि—१०६ प. के समान ही, केवल, प्रथम छंद (भूतनाथ वारंवार) नहीं है ।

अंत—इति श्री गंग पचीसी दुलरी मुरली का झगड़ा संपूर्ण समाप्त ॥ लिपा वेनी मार्घो शुक्ल नेरी जिला सीतापुर तिथि मसमी श्रावण कृष्ण पक्ष सवत् १८६८ वि० ॥

संख्या १२६ सी गंग पचीसी, रचयिता—गंग कवि, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८७४ = १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिव नरेश मिह, ग्राम—रामनगर, डारुवर—मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—१२६ बी. के समान ।

अंत—इति श्री गंग पचीसी गंग कवि कृत संपूर्ण समाप्त. सुभंभूयात मवत् १८७४ आसाद मामे शुक्ल पक्षे चौथ बुधवासरे ॥

संख्या १२७ प. लगडी रंगत (लावनी), रचयिता—गंगादास साधू, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राम अधार मिथ, ग्राम—नगर, डारुवर—लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ लगडी रंगत की लिप्यते ॥ राग लावनी ॥ नेह करे मति नारी मे नारी में नय मिय कपट भरा । राजा भर्तरी जोग लेके जंगल का राह धरा ॥ टेक । सोम नाम इक ब्राह्मण था वो ऊज्जैन नगरी का वासी । गेह त्यागि के गया वो वन को वन के सन्यासी । प्राणायाम चढ़ाय समाधी खैच गया वो तौ खासी । देख तपस्या हो गये उस पें अविनामी ॥ नारद जी ने अमृत फल इक लाय के उसके हाथ धरा राजा भर्तरी जोग ले के जंगल का राह धरा ॥ १ ॥ अमृत फल कूं देपि विप्र ने अपने मन में सोच किया । भेरे लायक नहीं है जाय भूत कूं भेट दिया ॥ सो फल लपि भर्तरी भूप का अंतर

से हुल्लास लु हिया । उसी समय में अपनी प्राण पिया कृं तुल्ला लिया । इमने तुम का जाहू सुहरी ये अमृत फल रस कर भरा । राजा भर्तरी जोग लीके जंगल का राह धरा ॥

अंत—त्रिसको र्म दिन रेव नही उसके पित नर्बेदार बसा । नर्बेदार का पित चचल चातुर गणिक से कसा । उस बेइया बेचकूक का दिरु मेरी दोस्ती दरमयाव बसा । मुसकी तो बब आकर धैराग्य रूप अजगर मे बसा । थिरु रानी बेइया नीहर थिक काम मोह बिचकर परा-राजा भर्तरी जोग लीके जंगल का राह धरा ॥ बीसा कर बिचार राजा मे असार सब संसार तजा जाकर बब में मछा एक मन से सीताराम भजा ॥ श्री रामानुज संप्रदाय गुद तुलसीदास चरणों की रजा साधु गंगदास मे इस कोक कपर प्याल सजा । जो कामिनि से बचे जगत में उसका अत-करण ठरा—राज भर्तरी जोग ली कर जंगल का राह धरा ॥ इति साधु गंगदास कृत संगी रंगत काबनी सम्पूर्ण समाप्तः छिन्ना शिरोमणि काल वैश्य विधांकी निवासी संवत् १९२४ वि० ॥

विषय—राजा भर्तरी के जोग सने का वर्णन

संख्या १२७ श्री पय बावनी, छंद चौपाया रचयिता—गंगादास साधु कागड—वैसी, पत्र—२ आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, पूर्ण । रूप—प्राचीन, पत्र । छिपि—वागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राम अचार मिश्र, ग्राम—ग्रामनगर, बाकसर—कलीमपुर, बिष्णु—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राग कावनी छंद चौपाया लिप्यते ॥ अपति अपति अथ अपति अपति अथ अथ रामानुज मुकृत पाळ । अपति पति अथ अथ जग श्रीहर अथ जग कारण करणल ॥ टेक । न्दि अस्मदेशिक गुरु श्री रामानुज निज जन पाळ ॥ जगात जननी पतिराज्य तन करि कृत मुबोध कृत जग आरुम् । विदि विदि शुग विनमत मुबर्म वाग होइ अघर्म अथ विकराळम् ॥ तब तब प्रगट स्वधर्म वापिजन धर्म अथापित तव काळम् ॥ निज आमित तिदि देत अमचपद हुट समूहन कई काळम् ॥ अपति अपति अथ अपति अपति अथ अथ रामानुज मुकृत पाळ १ ॥

अंत—मळ अर्ग आर्ग करन अति अर्नुज सम कोमळ चरम् । चरम मंघ उपदेश करत नव भीत लु जन आबत चरणम् ॥ भुति बिचार आचार निरत अनचार मार ततक्षण हरम् ॥ श्री गुरु तुलसीदास पद आहू विजय पोषण धरणम् ॥ श्री माग्य गुद देव मिले श्री रामानुज मंगळ करम् ॥ इति श्री राग कावनी छंद चौपाया साधु गंगादास कृत संपूर्ण समाप्तः ॥

विषय—गुरु रामानुज की स्तुति

संख्या १२८ सत्यनाथपय कथा, रचयिता—गंगाधर वास्वी (अगारा) कागड—वैसी, पत्र—४८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६ परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, पूर्ण । रूप—प्राचीन, गद्य । छिपि—वागरी रचयिता—सं० १८५४ वि०, लिपिकार—सं० १६२२ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० सहजराज, ग्राम—सिपपुर बाकसर—भौरगावा, त्रिसा—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ सत्य नारायण स्वामी तिनकी अनुति करत हूं ॥ कैने

है सत्य नारायण नवा भोज नेत्र नवीन कमल मे नेत्र जाके लक्ष्मी जी सहित चार भुजा धारण किये सुंदर है शरीर जगत जो समार ताकी रक्षा के करन हारे दैत्यन के नाश करता ऐसे जो सत्य नारायण तिनको नमस्कार करत हू ॥ श्री राम चंद्र लक्ष्मण करके सहित सीता करके युक्त करुणा सहित सात्विक है सुभाव जिनको ऐमे रामचंद्र वैदेही जो सीता तिनको पद्मावत ऐसी जो सुमारविंद ताके ऊपर भवर लुभाय रहे है ॥ ऐमे सीता जी सहित पौलस्त के सहार कर्ता ऐसे जो रामचंद्र तिनको नमस्कार करत हू ॥ वंदे नमस्कार करत हूं ॥ कैमे रामचंद्र के चरणारविंद कमल रूपी हे स्वदेवतान में श्रेष्ठ है भक्तन पे कृपा करनहारे शत्रुघ्न भरत हनुमान इनकाके मेवित हैं रामचंद्र ॥ ३ ॥

अंत—जो या रीति से सत्य नारायण की पूजा करेंगे सो या लोक में सुख भोग करेंगे जब मृत्यु होयगी तब मृत्यु लोक मे विष्णु लोक में जायंगे सर्वटा सुखी रहेंगे प्रसु भक्त के बस हैं सब घट वामी हैं प्रत्यक्ष हैं सत्यनारायण की पूजा कोई करो खी व पुरुष सब को श्रेष्ठ है सब कामना सिद्धि होयगी औ जो कया सुनंगे तिनकी विष्णु रक्षा करेंगे और विष्णु को बहुत प्यारे होंयंगे ॥ और सर्व देवतान के देव श्री सत्य नारायण की कृपा से सब वस्तु सुगम रही आवेगी और या कृत्य के बराबर कोई अंमा यत्न नही है या प्राणी को याने श्री सत्य नारायण प्रत्यक्ष फल देंगे ॥ इति श्री सत्यनारायण कथा भाषा समुच्चय पंचमों ध्याय समाप्त. लिखत नाथूराम शर्मा सवत् १९२२ वि चैत्र शुक्ल पंचम्याम ॥ राम राम राम राम ।

वियय—सत्यनारायण की कथा का संस्कृत से भाषा में अनुवाद ।

संख्या १२६ कमरुद्दीन खा हुलास, रचयिता—गंजन, कागज—देशी, पत्र—५३ आकार—१२ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्ठुप्)—१०६७, पूर्ण । रूप—नवीन, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८५—१७२८ ई०, लिपिकाल—सं० १९४६ = १८८९ ई०, प्राप्तस्थान—५० कृष्ण विहारी मिश्र, मु० नयागाँव, माडेल हाउस, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । छप्पै । करहि प्रथम मंगलन वहुरि यहु बुद्धि प्रकासहि । जगत सुजश कहँ देहि नाम सुख लेत हुलसहि ॥ सिद्धि सिद्धि कहँ करहि उरहि थोरैहि गुण निजुजन । मान देहि अति सुजन का न मानहि भूपति मन ॥ सकर सपूत सुख दाय कुँवहित असरन कहँ अनि सरन बह भाग राग गंजन सुकवि हितहि धरयो गनपति चरन ॥ १ ॥ जमुना वर्णन कुंडलिया ॥ जमुना बहँ गंभीर अति सुखद महा दुहु कूल । कमल मुखी तह न्हाति हैं नर नारी अनुकूल ॥ नरनारी अनुकूल फूलफल चारौ पावँ । प्रातहि सजि श्रंगार धाम ते तठ कह धावँ ॥ धावँ सब सहवास सची सुर पुरते कमुना । रिद्धि सिद्धि सुख लहे जहां दरवे कहँ जमुना ॥२॥ अथ नगर वर्णन कवित्त ॥ दिल्ली कोसो दरखु नगर बुकवेर हू के दिल्ली कैसो सुख न सुरेसै सुख दाई है ।

अंत—अथ नायक के आइये को सगुन लेह यथा । कवित्त । अंगन छीन फिरँ अंगना कहू नेकु न भामिनै भौन सुहावै । गँजन जू चित्तवै चहुँधा विय की अति ही सगुनै

चित्त करे ॥ हाथ उठाय के लोकतियों पिय आवहिने तिय करग उवाहि । बंगन पीपी
 करग उठठे मुती पच्छिउ प्रेम निछावर पावै ॥ १६ ॥ अथ करस छरी ॥ श्रीमति कका
 प्रवीन श्रीपदी विधा जानि । सुंदर सुभर उदार दप सब के मन मानी । स्वामि करज अनुराग
 जदी अति तेज बली है ॥ रस निपान गुन पीर बहो जग माह बली है । मुनि सुजान
 मरदान मनि काजम उजीर सब जग करह । कमहरी पान बवाब सों अट सिद्धि गंजन
 करह ॥ ३२७ ॥ इति श्री मुकुटि गंजन विरचितायां कमहरी पां हुकास संपूर्णम् ॥ दोहा ॥
 रस सुति विधि शक्ति अथ मुनि शक्ति मुदि भावी मास । स्वहित किरयो निजकर सु
 कमहरी पान हुकास ॥ १ ॥ लिपि हत मुमुक्षु किशोर मिश्रण ।

विषय—साब भेद तथा रस भेद का विवरण तथा मुहम्मदसाह बादसाह के बजीर
 कमहरीन का की प्रस्ता ।

संख्या १३० प. विरह बगुन बारामासी, रचयिता—गजराज, कागज—साधारण,
 पत्र—१, आकार—१ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुपुष्प)—७२
 पूर्ण रूप—माचीन पद्य, लिपि—नागरी प्रासिस्थान—पं० चंद्रिका प्रसाद भट्ट, प्राम—
 सऊरीसी, बाकपत्र—माहनगर, मिळा—प्रतापगढ़ (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अब विरह बरनन बारामासी प्रारम्भ ॥ कहीं कहीं
 सियाराम लछमन हैं । तेने पावह दिवो कित बनहैं ॥ पहला महीनारी कगा क्षेत्र का
 मासा ॥ केकई करे सुनु राजा ॥ राम लछमन जी भेज देवो बनबासा ॥ माणो
 पारा बरस के पामा ॥ करै राम जी मरख सतुपन कसा ॥ सब पूरे मन
 की आमा ॥

अथ—॥ दोहा । गजराज कहता सुधी, पीते तेरह मास । सीरी गरी जो मुदि, प्याने
 हाथी बकुंठें बास ॥ वे बर ती जी माई तरसैं जन धन हूँ । १३ ॥ ते नै ॥ इति श्री राम
 बनोबास विरह बरनन बारामासी संपूर्णम् ॥

विषय—(१) पृ० १ से १२ तक—ब्रज से काकुण तक—गारहो महीने की
 अनुभों के कइ के संबध स कौशिक्या द्वारा राम के वियोग का बरनन ।

संख्या १३० पी रामविरह बाणमासी, रचयिता—गजराज, कागज—शुद्धी,
 पत्र—१, आकार—१ × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३९, परिमाण (अनुपुष्प)—४८,
 पूर्ण, रूप—माचीन पद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—श्री शिव सिंह सेंगर पुस्तकालय,
 प्राम—कॉटा, मिळा—उवाह ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम विरह बारामासी लिप्यते ॥ (इसके बाद
 १३० प के समान ।)

अथ—इति श्री राम बनबास विरह बरनन बारामासी संपूर्ण समाप्तः ॥

संख्या १३१ रागमाळा, रचयिता—गरति जय, कागज—मोटा, पत्र—१,
 आकार—८ × १ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—१०४, पूर्ण,
 रूप—माचीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५५ वि०, लिपिकार—सं०

१८५५, वि०, प्रासिस्थान—लाला दिलसुखराय, ग्राम—महोली, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—अथ राग माला लिप्यते ॥ श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ अथ भैरों राग का स्वरूप वर्णन ॥ भैरों शिव छवि मिर जटा श्वेत वसन त्रिय नैन । मुंडन की माला गरे सिंहा रूप सुख टैन ॥ कवित ॥ शिव मूर्ति भैरों को भाव वन्यो त्रिय नैन सुमुड की माला गरे । पट स्वेत सधै तन में पहरें हिरटे भगवान को ध्यान धरें ॥ तिरसूल विराजत हैं कर में सब भामिनी की मति लेत हरें ॥ मुग्य छाव लगी द्युति दूनी भई चित चाहन में छवि जात छरें ॥ दोहा ॥ अथ भैरों की रागिनी भैरवी को स्वरूप ॥ शिव पूजत कैलाश परि दौऊ करन में ताल । श्वेत चीर अंगिया अरुन रूप भैरवी वाल ॥

अंत—मारंग के सुर सों मिलै करो गौड़ का ज्ञान । तामें पूरो पूरवी राग पूरिया जान ॥ आमे जी ये राग हैं कहैं गरति जन गाय । भेद राग अरु रागनी ए मच दिये वताय ॥ राग ६ रागनी २० राग रागनी ३६ ये मिलि के आमेजी राग रागनी ९६६ मियां तानसेन गाईं मवत् १८५५ चैत्र वदि २ शुक्रवार इति ॥

विषय—राग रागनी वर्णन ।

संख्या १३२. गगाएक, रचयिता—गरीवदाम, कागज—देगी, पत्र—२, आकार—६ × ३ इंच, पूर्ण, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—१० विश्वनाथ, ग्राम—कैमहरा, ढाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गंगा अस्तुति लाला गरीवदाम कृत लिप्यते ॥ प्रथम नाम महात्म अष्टक ॥ छंद । घनाक्षरी ॥ देव द्रुम चिंता मनि आम जियते वहाड याही इष्ट देव के सहित श्रद्धा सीस नाऊ ॥ याही को भजन मन अन छादि आन भाड याही को सनेह सुधा चप [के चपक नाड ॥ रैन दिन रसना सों याही की रटन लाड जो पै मूद चाहति है सुप को सधै वनाड ॥ भव सिंउ तारिखे को नार्हीं दूसरो उपाव । छूटि एक गंगा जगदंबा जू को नाम नाड ॥ १ ॥

अंत—गंगाजू के नाम के महात्म को अष्टक जो श्रद्धा जुत प्रेम भाड पढ़ै और पढ़ा इहै ॥ दीनता दुरासा दुर्मति ताकी ह्यै है दूरि ज्ञान सुर तेज मोह तम को नसाइ है ॥ सिद्धि सुप सपदा सो सहज करै गो भेट पाप ताप दहि दाप देह मो बहाइके ॥ कठिन कराल जम जालन फसेगो क्योहुं नाम के प्रसाद ते परम गति पाई है ॥ इति नाम महात्म गंगा जी की अष्टक समाप्त ॥

विषय—गंगा जी की महिमा ।

संख्या १३३ ए. काव्यामृत प्रवाह, रचयिता—गौरीशकर भट्ट (मसवानपुर), कागज—देशी, पत्र—२३४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३४०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५१ = १८९४ ई०, प्रासिस्थान—ठाकुर नरसिंह, ग्राम—भज्जूपुरा, ढाकघर—महमूदावाद, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काव्यामृत प्रवाह लिप्यते ॥ प्रथमांक श्री रघु

माय दातक ॥ मंगल्य चरण ॥ दोहा ॥ एक रदन करिबर बदन विचन हरन सुप कंद ।
सिद्धि सहन मंगल्य करन कै कै गिरिजा नद ॥ १ सवैया ॥ एक ही इंत अर्बंत किये छवि
चंद्र छिन्नार में धारन हारे ॥ गीरी के गोद विनोद करे ॥ बहु कोद जस के पसारन हारे ॥
मोदक छे हित कै नितही कस्तुरि के मुकाज संभारन हारे । होहु सहाय गजाभय नू के धने
विचने के विद्वान हारे ॥२॥

अंत—प्रेम बिन्दु बिन जो हियो सो यों रसिक दुन्दु । पिना मुहर को सनप क्यौं
दफ्तर ना मंजू ॥ प्रेम पिवाछा पी छके तेई हैं हुसियार । के माया भद सो भरे ते बूड़े
मसधार ॥ कहां मुजब तई प्रीति है । प्रीति तहां सुप छर ॥ कहां पुण्य तह बास है जहां
बास तई नीर ॥ चारि बेद को सार यह सुनि राषी सब कोय । झाई अक्षर प्रेम के परी सो
पंडित होइ ॥ इति श्री कल्याणमृत सम्पूर्ण समाप्त छिन्न रामधौतार भट्ट संबत १६५१
वि० ॥ सवैया । श्री शुकुंदल गोकुल चंद के मोद विनोद के भाव को सीन्हो । काय परी
रितु जीग विजोगहु बीर रसौ को क्यू धरि सीन्हो । बीन बहीन प्रबीन कबीन को जीन
कविच हिये मह चीन्हो । आनंद सो हित सखन के कल्याणमृत संग्रह शंकर कीन्हो ॥ दो०
हरि जस रसिक मुदाय हित कियो प्रिय चित चारि होब दाम्प जो दोष छुन कीर्ती सुमति
संभारि ॥

विषय—अनेक कवियों की मरम रचनाओं का संग्रह

संख्या १३३ बी सांगीत रत्नाकर, रचयिता—गीरी शंकर भट्ट (मसवानपुर, कान-
पुर) कागज—देसी, पत्र—१०६, आकार—१५×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०,
परिमाण (अनुच्छेद)—१८५३, पूर्ण, रूप—साधारण पद्य छिपि—मागरी रचनाकार—
सं० १९२८ = १८७१ ई०, छिपिकाळ—सं० १९०० = १८८३ ई० प्रासिस्वाम—पं० देवी
प्रसाद शास्त्री, ग्राम—सकटिया, बाकभर—महोली, ब्रिस्म—गीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अब सांगीत रत्नाकर छिप्यते प्रथम भाग ॥ १ ध्वनि
प्रभाती ताक इच्छताका ॥ (समय प्रातः काल) अब जय गजराज वैच भक्षण सुप करी ।
शंकर मुत सिद्धि सहन सुंदर गज राज बदन हीनबंधु एक रदन कोटि विभन हारी ॥ धोमित
दासि वाळ भाळ राजत गज मुकत भाळ हु ड इंड बळ किशाळ संतन हित करी ॥ बंदत
नित प्रति सुरेश गावत गुन गन भद्रेस ध्यावत तब नाम सेव प्रसा सुप चारी ॥ मोदक
प्रिय मोद करन सुपरा भरण विपति हरन तुच उदार चरण सरन शंकर बलिहारी ॥१॥

अंत—अब होत हीन हीनबंधु के पुकार में ॥ स्त्री उदार दाम परो सुख जार में ।
कीन्ही न बार बार मे भरी पुकार में । कीन्ही न देर देर कहीं बार बार में । हीन कस्तुरि को
दान दया दीक्षि छंद में ॥ कीन्हों न प्रेम क्षेम जानि रामचंद में ॥ अतिरु बदी ३ संबत
१९२८ वि० क्लिप्ता राममुक्त अक्षयी संबत १६४० वि० ॥

राम राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—हर दिन और हर समय के गाने योग्य राग रागिनी ।

संख्या १३४ ए. स्वप्न पदीया, रचयिता—अक्षयाम राय, कागज—देसी पत्र—
३३, आकार—१०×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६ परिमाण (अनुच्छेद)—१७०,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७१० = १८५३ ई०, प्रासि-
स्थान—प० सिवकठ तिवारी, ग्राम—वरगादिया, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ स्वप्न परीक्षा घन श्याम राय कृत लिप्यते ॥ यह
बृहस्पति जी ने स्वप्नाध्याय कहा उसके फल भाषा में शुभा शुभ वर्णन करता हूँ । जो सुपना
रात्रि के पहिले पहर में देखे ताँ उसके फल एक वर्ष में होय और जो दूसरे पहर में देखे ताँ
उसका फल छ महीने में होय और तीसरे पहर में देखे ताँ उसके फल तीन महीने में होय
और जो चौथे पहर में देखे तो उसके फल एक नाम में मिले ॥ और जो प्रातः काल सूर्यो-
दय में देखे ताँ उस दिन में फल होय इस प्रकार समय को विचार के शुभाशुभ फल को
समझना चाहिये ॥

अंत—इति श्री बृहस्पत्यादि कृत स्वप्नाध्यायी की भाषा स्वप्न परीक्षा घनश्याम
राय कृत सपूर्ण समाप्तः कार्तिक शुक्ल चौथ म्वन १९१० लिप्यत अवध लाल ने ॥

विषय—(स्वप्न में देखी हुई चीजों के शुभाशुभ फल का वर्णन) ॥

संख्या १३४ वी. स्वप्नार्थ चिंतामणि, रचयिता—घनश्याम दास, कागज—देशी,
पत्र—३२, आकार—१२ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२८ = १८७१ ई०,
लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्रासिस्थान—श्री राय लाल, ग्राम—रमुआपुर,
ढाकघर—घोरहरा, जिला—सीरी (अवध) ।

आदि—१३४ ए मे अभिन्न ।

अंत—इति रस्तु श्री इति श्री बृहस्पत्यादि कृत स्वप्नार्थ चिंतामणि भाषा घनश्याम
दास कृत सपूर्णम् कार्तिक शुक्ल ४ म्वत् १९३० वि० ।

विषय—स्वप्न के शुभा शुभ फल का समय के महिन वर्णन ॥

संख्या १३४ सी. स्वप्नार्थ चिंतामणि, रचयिता—घनश्याम राय (आगरा) ।
कागज—देशी, पत्र—३००, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण
(अनुष्टुप्)—३२०, पूर्ण । रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०८ =
१८७१ ई०, लिपिकाल—स० १६३४ = १८७७ ई०, प्रासिस्थान—प० श्रीकृष्ण दूबे, ग्राम—
शिवदत्तपुर, ढाकघर—उरताल, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—१३४ ए के समान ।

अंत—इति श्री बृहस्पत्यादिकृत स्वप्नार्थ भाषा कर्ता पंडित घनश्याम राय संवत्
१६२८ वि० ॥ चिंतामणि समाप्त शुभ ॥ कार्तिक शुक्ल श्रृंग वासरे संवत् १६३४ लिपत्
आनंदी लालेन ॥ श्री श्री श्री ॥

संख्या १३५ ज्योतिष की लावणी, रचयिता—घनश्याम व्यास, कागज—देशी,
पत्र—१२, आकार—६ X ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०,
पूर्ण । रूप—साधारण, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२७ = १८७० ई०, लिपि-
काल—स० १६३९ X १८८२ ई०, प्रासिस्थान—प० सिवकठ वाजपेयी, ग्राम—बुआरा,
ढाकघर—जयतिपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री ॥ यातिप की सावणी ॥ श्री राम जी ७५ सावणी ज्यातिप की रासि प्रकास लिप्यत ॥ देर ॥ पत्रकर भर पंडित हो ज्याषी सुग कर रीसी चतुर सुजाण महजात कें जोग बतार्क बारा रासि का बरण ग्यान ॥ देर ॥ मेप रासि ज्यो होय जन्म की जगना कृं हागे प्यारो । सास नय अरु श्येप बंठ नर सुप मे बचन बोखि पारो ॥ गर्म अन्न पर रुचि साग बहु अल्प भात्र प्यने बारो । कामी भर जया होइ पतखी अपने कुक को उत्रिवारो ॥ बारु पने सिर होय गूमदा जल से ली डरपै प्यारो । स्थिर बुद्धि भदि होय जिमुकी कृति मित्रात्र रफले हारो ॥ सुम प्यारो शशी जलुनी हो जाबै, सु० बुध जस कुंभ होत सुहाथै, सु० एक र्दर म बठण पारो सुन० बुधियाँ मे बहुत रिझावै गोक अंग अरु अंचल छठिमी अपने कुक को होय प्रधान ॥ महज्जात कें जोग बतार्क बारा रासि का बरण ग्यान ॥

अंत—कुंभ रासिका रुक्षण वरण सुमाकर कोइ मत करो कहिम । कर मगलो भौर सिखाट छोये वराह का सा कर शक्ये ॥ बदा पर अरु जानू संवा बोधी पीठ अरु उदर वितेप । पारतिरिया पर धन की इच्छा हाय पाप में बुध पर बेस ॥ कदेक धन बध ज्याषी असकै कदक धन को हाय । कलेस दूध अक्षर मकर खब टालो हम पर किरपा करो दिनेस ॥ सुप प्यार अंजन मे दिख अपठारि सुन० पुष्यो की मान् सुहाथै सुन० बहु जन से प्रीति जगान सुन० मग वसुध हार मही प्यारि कृति संवो होय मरि रजिमको कसस रासि का कहिया प्रमाण पंडित ॥ मीन रासि ज्यो होय जन्म की है मोतियन का कीर बिहार बुध खेट को जेर न चारि भिदरि से धन बधि अपार ॥ गुप्त द्रव्य प्रथमी में पारि पर घर धन को होय अधिकार । ज्यो भरतुन कैरब दल जीरपा यूं शत्रुन को रैत बिहार करि कमेटी प्रमदा सेती उरु नासिक को भाकार मय अंग होय वरावर जिमका सीस बड़ो दीपै गुञ्जार ॥ बुद्धिमान बिनेक बिचक्षण होय कटिकी पशुधार सुन प्यार । बुधमा का फरहरसाया सुन० ज्योतिप का पार न पाया सु० कप बिभ राम रिपि गाया सु० बधमत न सीस निबाया धारा नंद क पाम मीप कर प्याम बठायो है धनक्याम पंडित भौर मजूरी ॥ इति कावरी रासि प्रकास संपूर्णम् ॥ दोहा । संबत उनहूम से अधिक सचाइस गिनि छब । माय मान् शदि अष्टमी बिक्रम को कदि दूब सिला राम बिद्यास उरैम निबासी संबत० १९१९ वि० ॥

विषय—ज्यातिप १२ रासियों का चक्र वर्णन ॥

संख्या १३६ पद्यी शिक्षास, रचयिता—पासीराम कागज—द्वैती, पद्य—१६;

अकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुपपृष्ठ)—१८०, पूर्ण

रूप—नबोन, पद्य, सिद्धि—आगरी, प्राष्ठिम्यान—४० कृष्ण बिहारी मिश्र, माहेरु हाडम,

कलकत्ता ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ नागिनि सी केटे कर्वा कैने बर हाय नित्र कैने सुग चंद्र भौर असम मरीन मी । अंजन कृतिन नैन करिये निरंजन कया मरिये ज्ञान जिमुदान सुदरीन मी ॥ पासीराम मुकवि धरिये मेळी कंठ जिमु-कंचन जज्ञाउ वेब उरित तरीन मी । नुरुम मकोने लंक मूची न समात तादि कैमों की यमाथी हम भातु सुदरीन मी ॥ १ ॥ कंचन की छरी सी वियोग विप मरी हम एक बेर यदुरि गाविद् कैरि दिपने । छिरि प्रमु चहने ती विकणु न श्री ते पद चरी की विगामनि कररी पट्टु लिपने । धामीराम मुकवि बना

इस मुखाइ हरि कपट हथोरी की पठामनि के तिपते । मजन हमारे ऊधो अंमन हूते निरमोही भये जैसे वाप वामिनि के सिपते ॥ २ ॥

अत—डारै डारै फिरतु दुवारै झूठ झारन मो उरभि गिरत गिरि उठत दिटाईं मों । कवहूँ विहार वर विहंग विनोद मोट विरछ विराज बहु सपत भलाई मों ॥ घाम्पी राम सुकवि पपेरुन की फौज मो गिनती गनाऊ का तिहारी सुधराईं मों । जरे बरे गात नित मान दरसावै का वडाईं पेहँ तीतुर जो वान तुरकाईं मों ॥७०॥ × × प्रतिकूल भये गुनन गरेरे कहा काम वनि जैह जो जुगति उपजावे रे हे रत सुमेरु त्यो कलंक ठहराइ उहां केतिक विमाति जोन तरन जरावैरे ॥ घासीराम सुकवि विचारि देपु हिरदे में राज को प्रसंग नित रोय के न पावैरे ॥ चौकुजगि चकवा मनोरथ वडाइ निशि चकईं मिलावे जो विरंवि उलटावे रे ॥ ७ । सुग्री उपारि भईं विन पानी वईं मुरझानी है जूठरी वारी । मृग को खेत भयो न भयो अरु धान निधान मृगा चरि डारी ॥ देपियै ठाकुर कैमी करे अथ कयो निबईं धन आनि परा री ॥ येमों के साल सुपाम नहीं बधु याही कपाम लौ आम हमारी ॥ ७२ ॥ श्री राम ॥

विषय—शु पक्षी वृक्षादि विषयक अन्योक्ति संग्रह

संख्या १३७. रामायण का वारहमासा, रचयिता—वाम्भाराम या घासीराम, (भटी पुर, मेरठ), कागज—देशी, पत्र—१२०, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचना-काल—सं० १६२४ = १८६७ ई०, लिपिकाल—सं० १९४४ = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभद्र पुजारी, ग्राम—कलावघा, ढाकघर—मौरावा, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वारह मासा रामायण का लिप्यते ॥ दोहा ॥ गौरी पुत्र मनाय के गुरु को सीस निवाय ॥ वारह मासा राम का कहुँ छद में गाय ॥ सुमिरुं सीताराम कूं सब देवन के देव । जिनके जन्म तारण तरण गाये हर हर देव ॥

अत—दोहा । वारह मासा समाप्तम भाषा दोहा छंद । सारी रामायण कही मन में हो आनद ॥ छंद । सब शायरों से अर्ज है विनती सकल सुन लीजिये । कुछ चूक मेरी रही हो सो सब छमा कर दीजिये ॥ गुनियों में मैं मति मंद हूँ कुछ शायरी ना जानता ॥ गुन ग्यान का घर दूर है हरि के चरण पहिचानता ॥ धनसिंह जी का पुत्र हूँ मम नाम घासीराम है । और जात का मैं जात हूँ रहना भटीपुर गाम है ॥ तहसील कस्बा है मुवाना परगना की ठौर का मेरठ जिला थाना मऊ कुछ दाखलाना और का ॥ उन्नीस सौ चौबीसवां संवत श्री विक्रम भूप का । कथ छंद दोहा मास वारह राम सत्य स्वरूप का ॥ कविताई का है शौक मुझको छंद की रचना करू । कयता भजन होली कडे नित ज्ञान ही मैं चित धरू ॥ फिर स्थाल गाऊ झूलने आल्हा प्रथम मैं गा दिया । सब शायरों का दास हूँ मगरूर दिल मे तज दिया ॥ इसको पढो देखो सुनाओ सज्जनो को गाय के । करना दया मुझ मुझ पर सब चूक को विसराय के ॥ मनसा पूरन हो गई मिच्छ भये सब काम । गुनियों को परनाम है कहते घीमाराम ॥ इति श्री राम चरित्र वारह मासा समाप्तम शुभमस्तु ॥ मितौ फाल्गुन

एक पत्र मीमबार तीज संबध १९४४ वि० लिखा मीमाच्छाळ असोरा वास्य इरुवाहं ॥ श्री
राम राम राम राम ।

विषय—राम चरित्र ।

सप्तया १३२. रामरस, रचयिता—बाबा घिसिदाबनदास (खेल्दभा, रायबरोली),
कागज—सफेद, पत्र—८, आकार—६ X ४ $\frac{१}{२}$ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनु-
पुष्प)—७८, पूर्ण, रूप—बहुत अच्छी, पद्य, लिति—मागरी, रचनाकार—रामरस सं०
१९२० = १८९३ ई०, लिपिकार—सं० १९८५ = १९२८ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी संत
प्रसाद जी प्राहमरी स्कूल तिर्कोई, जिल्हा—रायबरोली (अक्षय) ।

आदि—कविच—बंदी बहारप बारे राम की ककन प्यारे मुनि मख रल बारे
अदिस्था की उधारे हैं । रामु अनु मंग बरे परछ जो के गर्ब हरे, जनक मुता को बरे अक्षय
हैं ॥ तप वैश बनवासी, बिश्र कूट के बिरुसी, माया-भूग इति रव राबनहिं मारे हैं । बही
बिस्वाबन दास ब्रह्म अंतर लीन्हे, मुसली बजाय प्रेम मोहिनी को बरे हैं ॥ सवैया—राम
कहे गनिइ गति पायबू. राम कहे अकसील मुकारे । राम कहे सैबरी मइ पायनि, राम कहे
गजराज उधारे ॥ राम कहे भरही बचे किंगन रामते अंगद पाँच न धरे । दास बिस्वाबद
मज रामहिं, राम अनेकन हुंकारत तारे ॥

अंत—कविच—पई मुनि गुन गुनि मगहि मजन करि, रहे मनन प्रेम रस कक छाप
के । हाट बाट घाट मिटि जाय अक्षय कर । पत्र वस कविच कहे जो निर गाय के ॥ इ जाबै
मिहास मुनि आई जग जाळ सब इसरथ काक पोप मकि माय कायके । जायके बिस्वाबन
दास करे बैकुंठ वास, होबै हरिदास हरि पद मुख पायके ॥

विषय—राम नाम की महिमा

सप्तया १३६. दानवीछा, रचयिता—गिरधर चंद्र कागज—साधारण, पत्र—१०
आकार—६ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुपुष्प)—५५ अक्षित ।
रूप—बहीब, पद्य, लिति—मागरी, प्राप्तिस्थान—महंत मोहनदास ग्राम—सीतामऊ, बाक-
घर—परिपार्वी, जिल्हा—प्रतापगढ़ (अक्षय) ।

आदि—भीपाई ॥ मुनि बात सबै मुमकानी । हम आजु मुना हरि बानी ॥ हरि
पास सबै बलि आई । पहिछान लीन्हे अदुराई ॥ हम कर्म करी के आई । हम को हरि
चीन्हेत नाहीं ॥ तुम गोकुळ की ब्रह्मनारी । तुम हो रूपमान तुसारी ॥ तुम्हरे सिर गोरस
भारा । हम है अमुना पटवारा ॥ कसु दान हमारी सारी । हंसि के मन मोहन भौंठी ॥

अंत—॥ छंद ॥ प्रभु पूरन पंड बजाय । आरति बंदना जो सब करे । गिरधर
इहु प्रसाद पावै, जम्म जम्म को तुष हरे ॥ जो नर गावै दान लीन्हा, सुनि मन
चित स्वय के ॥ कोटि तीरथ को चख पावै, विष्णु लोक सिपारही ॥ इति भी दान
कीला संपूर्ण ॥

सप्तया १४० बहराम कथामृतान्तगत विभुर मीति, रचयिता—गिरधरदास, कागज—
साधारण, पत्र—१६, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३ परिमाण (अनु-

पट्टप्) — ४१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिवमूर्ति शर्मा, ग्राम—गवरी, डाकघर—मार्धागंज, जिला—प्रतापगढ़ (अचध) ।

आदि—श्री गणेशायनम. ॥ अथ बलराम कथामृतान्तर्गत विदुर नीति लिप्यते ॥ दोहा—कर्म लिखी सो होय हैं यह सम्मति निरधार । पे अपने भरि सक करिय कुल रच्छन व्यवहार ॥१॥ तासों चित दे सुनहु नृप राज नीति सह प्रीति । पुनि मन इच्छित कीजियौ जिमि न होय अरि भीति ॥२॥

अंत—दिन में अध उलक है, काक अध निसि घोर । नैन अंध नरपाल तुम, हृदय अध सुत तोर ॥१७३॥ दुर जन मडन कुडिलता, सज्जन मडन प्रीति । मुप मडल कोमल वचन, नर पति मडन नीति ॥१७४॥

इति श्री गिरधर दास विरचित बलराम कथामृतान्तर्गत विदुर नीति समाप्तः ॥

विषय—नीति महाभारत उद्योग पर्व का अनुवाद ।

संख्या १४१. स्वाम विलास, रचयिता—गिरिधारी दास, कागज—मोटा ब्राउन, पत्र—८६, आकार—६ $\frac{१}{२}$ × ६ $\frac{१}{२}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपट्टप्)—१३६५, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५६ = १९०२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पाडे, जिला—रायवरेली

आदि—कवित्त-एकई रदन गज बदन विराजमान, मदन कदन-सुत सदन-सुकामाको, कहे गिरधारी गिरिराज नदिनी को नंद, आनद को कद जगधद वर नामा को ॥ सुणढा दण्ड कुडलीक मडली को मोहे मनु भाल चद्र मडली विशाल गुण ग्रामाको । ऐसे गणनाचक को, बुद्धि वरदायक को पाँय वन्दि कहत चरित्र श्याम श्यामा को ॥ × × × सुयश सुधाकर तिहारो हे प्रकाशमान, पन्यो सुर सतन को साँकर जहाँ जहाँ । कहे गिरधारी जन दीन हितकारी तुम प्रगट्यो हे आय के तुरत ही तहाँ तहाँ ॥ विने कान्ह करौ परिहरौ यह रूप अव, धरो सिशु रूप मेरे चित जो चहाँ चहाँ । देवकी के दैनन में करुणा समोय उठै, रोय उठे बालक स्वरूप है कहाँ कहाँ ॥

अंत—जहाँ जहाँ स्पंदन चलत नद नंदन को तहाँ २ आँद विनोद बीज के रह्यो । कहे गिरधारी फेरि २ मुख हेरि २ मुदित अकूर भूर भागन सों भ्रैरह्यो ॥ यमुना नहाय ध्यान कीन्हो । श्याम सुदर को देख्यो जो उचारि नैन श्यामै श्याम है रह्यो । आगे श्याम पाछे श्याम टाहिने औ वायें श्याम जहाँ देखो तहाँ सब श्यामै श्याम है रह्यो ॥

—:३:—

विषय—भागवत के दशम स्कंध की कथा

संख्या १४२. दोहायली, रचयिता—गिरधरदास, (कुटवा, वारावंकी), कागज—सफेद, पत्र—२६, आकार—८ $\frac{१}{२}$ × ४ $\frac{१}{२}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपट्टप्)—१६५, पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४८ = १७९१ ई०, लिपिकाल—सं० १९८२ = १९२५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पाडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायवरेली ।

आदि—दो० जग जीवन सत गुरु सुनहु, तुम सद्गुरु औतार । गिर वर चरनन

परि बर्दे, नहि भूलीं संसार ॥ जग जीपन जग जीन है, जीव जन्मु मत्र माहि । गिर पर
जान अंत की, परल मुटि मुभाहि ॥

अंत—शे० निम्न पाठ पासी कर, तेहि प्रमु हार्य दुपाल । जग जीवन की कृपा मे,
कई सकल भ्रम जाल ॥ भक्त बिनय होहा बली, अष्टम सत कहि दीन । सकल मनोरथ
होई है, जो फित नित यहि कीन ॥

विषय—कुछ भक्तों की स्तुति ।

संख्या १४३ प. अष्ट जाम प्रकाश, रचयिता—गाकुल कावम्भ, कागज—देसी,
पत्र—२०८, आकार—९ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपुष्ट)—
२९००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, स्तिपि—जागरी, रचनाकार—सं० १९१९ वि०, स्तिपि टांक—
१९२० वि०, प्राक्षिप्यान—बाबू अंकारनाथ टंडन रईम सासुकेदार जानेरी मजिष्ट्रेट, सीतापुर ।

आदि—धी गणैसाय भमः ॥ दोहा ॥ अष्ट जाम प्रकाश सिप्यत ॥ गावन गुन गम
भाय के गरी गरी भाय । रमानाथ दिन भाय पद नमत एतनो भाय ॥ पया सर्व कस्यान
इक ॥ १ ॥ मूप सुग राज नंदी पाहन बिहंग राज राजी कर बाजी प्रज आभा अनिराम
सों ॥ अरसा कनाल करवाल ठिरसून चक्र प्रपल प्रबंध धनु बिठा बिधि घाम सों । बिषय
विनासे नाई दानी दीह दान बान जग प्रति पाई घामे तमठाम काम सों ॥ गरी भंद गरी
गरी भाय कमला के भाय दिवानाथ पद भाय माई पया काम सों ॥ २ ॥ दोहा० देसा
नगर बन बाग नूप सरिता कोट तदाग । कहे बादि है मंध बनु परनी कष्ट विभाग ॥ देसा
नगर वनम ॥

अंत—विष्णु उर्ष ॥ हम अचनार के मीन मधे उस अग निगम गदि भमुर मंहारे
हिरमाच्छ इति बाल घरा कच्छप मिर घार नर हरि हरि जन पीर छार पलि कामन बनु कर
के निछत्र टिति छत्रि करम से परमराम कर हम पदन कंय हम सुति निदुरि राम कृष्ण ह
बीष बल । कहि गोकुल हम जवनार हरि कलि कल्कि कीरति बिमल ॥ मंधन विष्णु मूप
के प्रद मयि प्रद सयि जानि । भाय मान मित पची करि परिपूरन मानि ॥ इति श्री जनगार
पंमावर्तम श्री महाराज अर्जुन विद भागमज श्री महाराजधिराज द्विपत्रय विद का भा
पाम हन अष्ट जाम प्रकाशनी गोकुल कापरय हन मंधूर्णम् लिपन बाधुगम निबारी ॥

विषय—राजा द्विपत्रय विद का अष्टजाम का कार्य वर्णन ।

संख्या १४३ धी द्विपत्रय भूयण (धीरा गदित), रचयिता—गोकुल कापरय
कागज—देसी, पत्र—६७२ आकार—९ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण
(अनुपुष्ट)—९०१४ पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य और पद्य । स्तिपि—जागरी रचनाकार—
सं० १९२२ वि० स्तिपि टांक—सं० १९२५ वि० प्राक्षिप्यान—बाबू अंकारनाथ टंडन रईम
सासुकेदार जानेरी मजिष्ट्रेट, सीतापुर ।

आदि—धी गणैसाय भमः ॥ अथ द्विपत्रय भूयण लिप्यते ॥ ८ ॥ गजगति गीरि
गिरीत गिरा विधि समा रमारति ॥ राज राजनु । राज मस विधि पावन जयपति ॥ राहु केनु
रानि भीम हृष कुच गु । रवि निगिरति ॥ मच्छ काल कहि कच्छ विद नर कामन भूयुरति ॥

सिय राम चंद्र ब्रज चंद्र प्रिय वंश बलकी अव हरे ॥ कहि गोकुल शुभ सब दिन सदे
ये छत्तीम रच्छा करें ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ गणपति गणेश पार्वती शिव सरस्वती ब्रह्मा
लक्ष्मी विष्णु कुबेर इंद्र सप्तरीपि वरुण राहु केतु शनिश्चर मंगल शुक्र बुध ब्रह्मपति सूर्य
चंद्रमा मत्स्य कच्छप वाराह नृसिंह वामन परसुराम सीताराम राधा कृष्ण वृद्ध और कल की
पाप कों हरते सर्वदा शुभ प्रद हूँ ये छत्तीसो देवता रच्छा करें । राजराजो धनाटिप इत्यमरः
सप्त रिपि यथा ॥ मरीच अरुधती । सहित वमिष्ट अगिरा अग्नि पुलस्त्य पुलह ऋतु इति ॥
यह क्रम जिस प्रकार सप्त रिपिमंडल है तैसो लिप्यो है इस आशीर्वादात्मक मंगल में
कवि का यह तात्पर्य है कि गणेश विघ्न हरे । पार्वती मंगल शिव कल्याण सरस्वती
और ब्रह्मा बुद्धि लक्ष्मी निवास विष्णु भक्ति कुबेर सपति इन्द्र राज्य सप्त रिपि आयुर्वल
वरुण बल राहु आदि पाप ग्रह विघ्न परित्याग करि शुभ फल शुभ ग्रह सूर्य प्रताप चंद्रमा
सकल जनाल्हाद दश अवतार रच्छा पूर्वक समार रच्छकता देवै ॥ इति ॥

अंत—कविन ते विनय डंडक ॥ सिंह के समान ठान कैसे करि सकै स्यान कलानिधि
आगे काह जुगुनू कका धरै ॥ गोकुल विलोक ल्योही मेरी है दिटाई यह कीनी कविताई बुध
आदरै तो आदरै ॥ कवि लोग जौहरी है जाहिर जगत जाके रतन पटारथ कवित्त
मुकुता लरै । जहां गुन पोत को न होत मनोमान दान जैसे कोक दीपक दिखावत
दिवाकरै ॥ ५० ॥ दो० ॥ रजकनिका लघु लोग पै करिवो निजै प्रकास ॥ बड़ी नहीं
कष्टु वात है भानु गुनी के पास ॥ ५१ ॥ कवि कोविद गुन वंत सौं विनै करौं कर जोरि ।
विगरो वरन सुधारिये अपनी ओर निहोरि । टीका—कविन सो विनय करत है कि
मेरी कविताई पोत के सम आप लोग मुक्ता वरण वरने हैं ॥ रजकनिका काक है । बाल
में जो चमकता भानु को प्रकास करिवो कुछ बड़ी वात नाही तैसे लघुगुनी पर गुनी नृपति को
आदरव बष्टु वात नाहीं ॥ कवि कोविद गुन वत सौं विनती जो अक्षर अनवनो होय
ताहि सुधार लीजै ॥ इति श्री द्विग्विजय भूषण नामक ग्रंथ कवि प्रोक्तोक्ति अनेक कविन के
मत वर्णन गोकुल कायस्य विरचिते एकोनविंशति प्रकाश ॥ १९ ॥ श्रावण शुक्ल ५
सवत् १९२५ वि० ॥ लिपत नाथूराम

विषय—अलंकार

संख्या १४४. वनपर्व (महाभारत), रचयिता—गोकुलनाथ कवि वटीजन
(बनारस), कागज—देशी पुराना, पत्र—३४, आकार—१५ X ७ इंच, पक्ति (प्रति
पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुपुष्प)—६६९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी,
प्राप्तिस्थान—ठाकुर चंद्रिका बक्स सिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाय बक्सरी, जिला—
लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ जय करी छन्द ॥ इन्द्रादि देपनको करि काम ॥ लोमस
रिपि आये तप धाम । कियो प्रणाम इन्द्र के पास । वैठो देप पार्थ सविलास । जीतो लोक
कोन करि कर्म । इन्द्रासन पर बैठो परम ॥ क्षत्री अल्प इन्द्र के पास । वैठो आसन परगन
त्रास ।

अंत—छोड़ि मोझे गयो पति है बसम भायो करि महां बग में फिरि हूँति हौं न
 पावौं ताहि मरी करमा राज माता ताहि बिलपति चाहि क्यो बसमो निरुद्ध होमें प्रीति
 मोहि उदार क्याईई मम ममुज तैरो हूँतिकै भरतार न तर इत उत फिरत उतही आईई
 करि गने बसत इतही क्योहोगो भरतार को तुम तीन राज मता के वचन मुनि कईं मी
 मी धन करहु निसि निबिध्न पतनी बसि तब छवि घेन उबिह्य भोजन करींगी नहि छोडूँई
 महि पाप बोकिही और काहु पुरुष के दिग बाय और चाहे मोहिबौठ इष्ट बप्प सुतीन
 जाहि मो भरतार हूँउत सुदित प्राइज औं न होय औंसो नियम जो होई सो तुहारे पास
 न तब मेरो बास हम महि होय मोमति रास क्यो तासीं राज माते सुधी हीं इमि
 रैन कइति हीं सो करींगी सब बसह इति छवि पैव राज बननी भी मजासो जातिपो
 भमिराम क्यो सुदिता पास भामेऊ सुनाईं धाम जाहि धीरभी विचारिहु तुस्य ई मति
 गमन सखी बोरी होयगी वह भारी रूप महान मेमी कोस नन्हा गई अपने धाम
 रही दम सुपकित तहां मोहित माम । इति श्री महाभारत कृपि वन पर्वणि छोप प्यामो
 दम प्रसा वैदि पुर प्राप्ति बर्णना नाम श्रतीषोप्याय ॥३॥

विषय—महाभारत के वन पर्व का छन्द बज अनुवाद । इस ग्रंथ में ३ अध्याय
 हैं । प्रथम अध्याय १ से १९ पृष्ठ तक है ॥ परन्तु दूसरे अध्याय का पता नहीं है ।

संख्या १४८, लक्षरान दीपक, रचयिता—शोमती गिरि परमहंस बगवत—देवी,
 पद्य—२९, आकार—८×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुपुप)—
 १०८, पूर्व, रूप—जीर्ण, पद्य, सिधि—मं० १८९६, प्राप्तिस्थान—महाराष्ट्र प्रकृत मिह,
 ग्राम—महापुर, जिष्ठा—सीतापुर (लक्ष्य) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ परमहंस शोमती गिरि कृत लक्ष रत्न दीपक
 लिप्यते ॥ मुमिति गुरु परमात्मा । भव भजन सुप सार । अनापास जाके भजे छईं श्रम
 भय तार ॥ १ ॥ यथा विष्णु महेश गुरु गणपति सक्ति दिनेस । निज माया करि जो मयो
 सो ईस सुरेस ॥ २ ॥ सी है एक अपार सुप सत कित अगुन अनूप । आदि अंत अद मध्य
 करि रहित मो अतुल एप ॥ करि प्रणाम मों मी सईं शत्रु मुक्ति दातार लक्ष रत्न दीपक
 रचूँ प्वात निवारन हार ॥ ४ ॥ पूछत सिध निज अपकृ करि गुरु को परनाम को हूँ
 मी मोमन कईं माय दया के धाम ॥ गुरु बचन दोहा ॥ सुख सुख परमात्मा भविनासी
 सुप धाम शोक माह ते रहित जो सो हूँ केवम राम ॥ ६

अंत—महा गुरु गुरु विष्णु ई गुरु ई दैव महेश । साईं मति निज गुरुन कू जाका
 सत उपदेश ॥ गिरि पद उक्तम शोमती क्रियो द्रव्य कृति बाद सुमुमुक्षुत्पर लत्रि इहां मेवे
 निज उर पारि ॥ इति श्री परम हंस शोमती गिरि कृतं लक्ष रत्न दीपके अष्टम प्रकरणम् ।
 पैह माये छन्द पद्ये नबन्यां गुरु धामर ता दिवं पीतकं सिध्य जीत ईकवार मुभं भवेति
 श्री संवन १८६६ जया दया तथा सिधा मम ज्ञाना न हीयति ।

विषय—गुरु का लक्षणा के बार में अपन सिध्य को जाना प्रकार का उपदेश ।

संख्या १४६, भीमदमागत, रचयिता—गणपति कवि (परतापपुर, गारापुर)
 बगवत देवी पद्य—४० आकार—९×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण

(अनुष्टुप्)—३६७, खडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—स० १७८७ = १७३० ई०, लिपिकाल—स० १८५६ = १८०२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० उमाशंकर दूबे, रिसर्च एजेट, गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशायनम' अथ श्री भागवत लिप्यते श्री गुरु पद हरि पद सुमिरि गौरि गणेश मनाइ । ईस गिरा पद वन्दि पुनि व्यास चरन सिरनाइ कथा भागवत ससकृत बुद्धि न परत अपार । विनु भगवत पर नहिँ समुद रूप संसार समुद रूप ससार को कैन धार यहु जानि । नियुमति को अनुमान करि भाषा चहत वषानि संवत सत्रहु सय ऊपर सतासी सुमवार । चैत्र राम नउभि किय मंगल को विस्तार । कहे गुपाल लाल यहि नामा कथा अवधपुरी मो धामा । दो० गौरपपुर सरकर तह वसे परगना एक । तह नगर परतापपुर वसत सहित विवेक ॥ सुनत भागवत को तुरत उपयत धर्म अखड । छुटम मम ससर को पुटत दुख ब्रह्मड । निगम कल्प तरु ते भये गसित सुकम न पाइ ॥ फल अमृत द्रवसयुत मन मन क्षन क्षन पीयै धाइ । आवनि रसिक यन सरग मिमिनि ममस्त संसार । इस आमृत भगवत सुमिरि पिवत वारम्बार ॥

अत—येह जग कर्म क्षेत्र निज जानी । आये मुनि दलीप विज्ञानी । हरिपद पदुम प्रेम सरसाइ । गेहरि धाम तुरत मनुलाइ । तुम्है सात दिनहिँ ऋपि राज । सब साधन को वनि वनाऊ । संवत् १८५६ सवन मासि कृष्णपक्ष दुइज तिथि वार-सनीचर वारा । श्री गोपाल गुन गन सुमिर वरनत कथा वनाइ ।

विषय—आरंभ से परीक्षित को तक्षक से भय तक की भागवत-कथा ।

संख्या १४७ प चारों दिशाओं के सुख दुःख वर्णन, रचयिता—गोपाललाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—४ × ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—राय लाल जी, ग्राम—रमुआपुर, ढाकघर—धौरहरा, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ चारो दिशा के सुख दुख लिप्यते ॥ अथ पूर्व दिशा के सुख । दो० । रूप विशेष विसेप धन भूमि सुहावन देश । जाय करौं याते आवै पूरव को परदेश ॥ कवित ॥ ताफतारु वाफता मुसज्जर श्री साक्र मखमलरु मुकेसी पर नाना सुपदाइये । सरस कृपाण तरकरु कमाण वाण जरकसी चीरा हीरा जहां जाइ लाइये । सुकवि गुपाल फुलवारी धाम धाम अब श्री फल कदव पौदा पानन को खाइये । बड़े होत केश मिलैं तदुल असेप प्यारी पूरव के देश में विसेप सुप पाइये ॥१॥ पूर्व दिशा के दुख श्री वाच खडन ॥ सोरठा । लगे चोर ठग वाइ पेट चलै पानी लगे कीजै कवहु न जाइ पूरव के परदेश को ॥ कवित ॥ पानी लगि जात बहु फूलि जात गात पुनि पेट चलि जात कछु पाइ जात जवहु । जादू करि करि कै समोग सुप काज पशु पक्षी करि रापै नारि नरन को अवहुँ ॥ ब्राह्मण वनिक मीन माम मधु खात तेल हरद लगाय न्हात नारी नर सबहुँ । फासी दैकै हाल मारि डारै ठग जालु याते जैवे न गुपाल दिशि पूरव को कवहुँ ॥

अंत—उत्तर दिशा के कुछ स्त्री उबाव पड़ते हैं। सदा शीत भयभीत
 बर व्याघ्र सिंह रूप चोर। कीर्ति नहीं पपान दिय उत्तर दिशि की ओर ॥ कविच ॥
 बिन्दु पहार झार धन सिंह स्वार भिरबाह नहीं होत रथ बहुल की जामें हैं ॥ गिळटीरू
 गिस्कर अनेक रोग होत जहां चरिहू बाण जीव हिंसक हरामें हैं ॥ सुकवि गुणाक सदा
 शीत भयभीत सोग बरफ के मारे दुरे रहत गुफा में हैं ॥ राह में न गामें चल्तो जात न
 निशा में याते बहु दुर पावे जात उत्तर दिशा में हैं ॥ इति श्री पुरुष की संवाद चारों
 दिशाओं के मुख कुछ वर्णन संपूर्ण ग्राममस्तु ॥ श्री सक शयनमः ॥

विषय—पुरुष न चारों दिशाओं के गुण यात्रा के लिये दत्तकाये कीर स्त्री ने उन्हीं
 गुणों का पण्डन करके यात्रा में जाने से अपने पति को भना किया ॥

संख्या १४७ थी पुरुष जो सवाद, रचयिता—सुकवि गोपाक, कागज—देसी,
 पत्र—३ कागज—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुच्छेद)—६३
 पूर्ण रूप—भाषीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाळ—सं० १९४४ प्राशिक्षान—प० बरी
 प्रसाद शुक्ल, ग्राम—सिर्वाज, डाकघर—हरगाँव, जिला—मीठापुर ।

आदि अंत—१४७ पृ. के समाप्त

संख्या १४८ पृ. समाप्त महात्म, रचयिता—द्विज गोपाक (मोरमनगर)
 कागज—देसी पीसा, पत्र—२०, कागज—० × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०,
 परिमाण (अनुच्छेद)—१९०, पूर्ण । रूप—भाषीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकार—सं०
 १९०८ = १८९१ ई० लिपिकाळ—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राशिक्षान—डा० चंद्रिका
 कश्यप सिंह वर्माधर, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—ताकमय बकनी जिला—रुनबक ।

आदि—श्री रामायण महात्म ॥ अथ रामायण महात्म कल्पने ॥ होहा ॥ गुरु हरि हर
 गणपति गिरा मुमिरीं तुलसीदास । कस्त गोपाक महात्म श्री रामायण सुय रास ॥ १ ॥
 श्रीपार्श्व ॥ रामायण मुर लद की छाया । दुप भयो दूरि बिकर जो जाया ॥ सप्तकांड अस्वय
 सोहाई । होहा कबु साया छवि छाई ॥ मुनि सारथ्य सीतका सोई पथी बहु श्रीपार्श्व जोई ॥
 लंका की सोमा अति स्त्री । जमु नबीन अंजु छवि पूरी ॥ अष्टम सुमन रहे गहराई ।
 अति जम्बूत सुगय कबिताई ॥ विविध प्रकार अर्थ साई पछ । भोता मुमति रषा जाने
 मक ॥ भक्ति ग्यान देराज सरमरस । बीज हाय निर्गुण सर्गुण जम ॥ मुनि भसुंदि मित्र
 प्रथमदि गाई । मोह गाई जगद्वैत गोसाई ॥ २ ॥

अंत— ॥ हो० ॥ भीमंत सुकमी दाम जी हू प्रमत्त्य बर वेदु । रामायण महात्म
 से हरि जन कदि मनहु ॥ ३९ ॥ सखत पसु^६ मभ बंद^६ एक^६ मार्गं शुभुदवार । एक हती
 कद कीन है अपनी मति अनुमार ॥ ४० ॥ रामघोष श्री औयपुर स्वामी रामप्रसाद । तिनकी
 उरमा क्य क्य विस्व विद्विभ संवाद ॥ ४१ ॥ तिनको गापी पांचहू मो स्वामी में दास ।
 कपन पुरी मम अम छिति राम नगर के पाम ॥ ४२ ॥ मोरम भगर प्रसिद्ध द्विज उषम
 पूरन दाम । लक्ष्मणज गापाक कृत यह महात्म इतिहास ॥ ४३ ॥ इति श्री द्विज गोपाक
 कृत रामायण महात्म संपूर्ण सुभ मरतु सवत् १९४८ भाष मास शुक्ल पडे तिथि प्रति
 प्रदावां क्षत्रियामरे स्थित चन्द्रिका भाषीपुर ग्रामी ॥ राम सीता ॥ ३ रचयिअ रामन ॥

विषय—तुलसी कृत रामायण का माहात्म्य वर्णन ॥

संख्या १४८ वी रामायण महात्म, रचयिता—गोपाल (लखनपुरी), कागज—साधारण, पत्र—९, आकार—९ $\frac{३}{४}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपुष्प)—२००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०८=१८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिव सेवकराम मिश्र, ग्राम—परियावां, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ नमो नमो श्री राम प्रभु, परमात्मा पर धाम ।
जेहि सुमिरे मिधि होत हैं, तुलसी जन मन काम ॥ राम वाम दिस जानकी, लपन दाहिने
ओर । ध्यान सकल मगल करन, तुलसी सुर तरु तोर ॥ ब्रह्म तुलसी के चरण, जे कीन्ही
जग काज । कलि ममाज वृद्धत सकल, प्रगटयो मस जहाज ॥

अन्त—रामायण जब कही गोसाईं । प्रगटनहित कासी फिरि आई ॥ आदर कीन्ह
न पड़ित काज । कहाँ जो हम सो करौ लपाज ॥ श्री आनंद कानन ब्रह्मचारी । हम सिर
साँर सु महिमा भारी ॥ जो याको वे आदर करि हैं । ताँ हम सब लै मीमहि धरि हैं ॥ गये
आनंद कानन यह ततपर । करत प्रसन्न प्रसन्न परसपर ॥ पोथी की चरचा पुनि कीन्ही । देपन
हेत सोलै धरि लीन्ही ॥ कष्ट दिन पढ़ी सहित अनुरागन । गए गोसाईं पोथी मागन ॥ पोथी
दैं अरु अस कहेउ । होई आदर लोक । निज प्रमाण करि लिपि दियो, एक अद्भुत अश्लोक ॥
श्लोक—आनंद काननेऽस्मिन् जगमः तुलसी तरुः । कविता मजरी यस्या राम भ्रमर
भूषिता ॥ धनि धनि तुलसी दास, जिन जग हेत रामायण भनी ॥ महात्म अमित नहि
कहि सकौं, रस विषय महं मो मति सनी ॥ निज बुद्धि के अनुसार कही गोपाल सत गुरु
की दया रचुवौं जस की अधिकता श्री सत जन करिहैं मया ॥

विषय—(१) पृ० १ से २ तक—मगला चरण गुरु इत्यादि की वदना, रूपक
द्वारा रामायण की कविता की प्रशंसा । तुलसीदास जी के रामायण निर्माण का उद्देश्य ।

(२) पृ० २ से ५ तक—कुलचारी इत्यादि के रूपकों द्वारा रामायण का माहात्म्य
वर्णन । रामायण के काँठ तथा उनके विषय का सूक्ष्म-विवरण । तुलसीदास जी को धन्यवाद
तथा रामायण की व्यापकता का वर्णन । रामायण के स्नेही को फल प्राप्ति ।

(३) पृ० ६ से ९ तक—दृष्टान्तों द्वारा श्रोता वक्ता के जमपुर गमन—निषेध तथा
स्वर्ग की प्राप्ति का वर्णन तथा रामायण माहात्म्य ।

(४) पृ० १० से १२ तक—रामायण में स्नेह न रखने वालों की निन्दा ।
रामायण श्रवण करने वाले की मुक्ति का वर्णन । रामायण के कथा श्रवण का विधान ।
विदेशादि गमन तथा अन्य मनो कामना सिद्धयार्थ कुल चौपाइयों का उल्लेख ।

(५) पृ० १२ से १८ तक—तुलसीदास जी का एक कन्या को पुरुष रूप में कर
देने का इतिहास । रामायण के प्रकाशन तथा रचयिता का कथन ।

(६) पृ० १८ से कवि का अपने रचित माहात्म्य में जनता को प्रेम करने का वर्णन,
कवि परिचय तथा ग्रन्थ निर्माण काल वर्णनः—संवत् वसु नभ नद के येक मार्ग शुक्ल
गुरुवार । एकादशी कह कीन है । अपनी मति अनुसार ॥ = ॥ राम कोट श्री अवध पुर

स्वामी रामप्रसाद । तिमही महिमा को कई, बिह्व बिदित मरजाद ॥ तिमते गादी पैचई सो स्वामी में दास । कपल पुरी मम जन्म छिति रामनगर के पास ।

संख्या १४६. शांति पर्व (महाभारत), रचयिता—गौपीनाथ (कपली), कागज—आनुभिक पत्रिका पत्र—६४, आकार—१२ X ४ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुपुष्ट्)—१६०, पूर्ण, क्य—शीर्ष, पत्र, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८०० = १७५० ई०, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर बन्नी सिंह जी, जमींदार धाम—जागीपुर, बाकभर—ठाकुर बन्नी, लिखा—सखत ।

आदि—श्री गौरीपावनमः ॥ श्री कालिका जी नमः ॥ श्री मते रामानुजायै नमः X X X क मत्वा श्री रघुनाथ पञ्चम ज्ञान ॥ सिद्धेश्वरी मन्त्र गौरी पुत्रम X X X तनयं रुद्र ज्योति सुतम् ॥ १ ॥ नारायण ब्रह्मरूपं नरेश्वरं X X X देवी सारस्वतीं ध्यात् ततो जपं मुनीर वैत ॥ २ ॥ सो० ॥ मोर मुकुट बभू माछ X X X पट परस्य पद्म ॥ श्री जमुमति को काल । कृपासिध श्री नम् सुत ॥ अथा शांति पर्व आपदा धर्म छिप्यते ॥ सो० ॥ नमस्वरु नारायणहि श्री नरोत्तमहि नमि । बहि गिरा ध्यासहि रचत भारत भाषा सीमि ॥

अंत—देहि विप्रहि मलि घोट सह करिकै बिदा सप्रम । आप सना बिधि की बिहंग आपर क्यो सनेम ॥ कर्मतमुद्गल के सपन आयो प्राज्ञग सीन । अंत काळ रीरव क्यो कृत कृतम्बी जीवन ॥ पूर्वं कृतम्बी को क्यो बाहर पह उपजाव । भूप हम सा तुम सौं क्यो देसो दुह व आप ॥ सब पापिन ते ओह है । मित्रम जोही दुष्ट । मित्र जोही ते न बिधि देह मित्रता पुष्ट ॥ सो० ॥ मरजादा को नाम, मित्र सिद्धे बिधि देह तिमि । मुझीबहि जिमि राम सिधे पारबहि ज्ञान जिमि ॥ शिवापावन उवाच ॥ सोऽथा ॥ वहि बिधि आपद् धर्म भूपति ते भीखम कहे । सुमिरि ध्यास पद् पर्व भूपसौं हम तुमसौं क्यो ॥ पाह कृपा अनु कृक, सीता पति रघुनाथ श्री । सरस सप्रदा मूक वरनें आपद् धरम इमि ॥ स्वस्ति श्री श्री कपली महाराजा धिराज श्री उदित नारायणस्याशामिगामिनो श्री बंदीजन कपली बासि गोकुल आप कबी स्वरात्मज्ञेन गोपीनाथे न कबिना बिरचिते भाषार्थी महा मार्धे धर्मने शांति पर्व । आपद् धर्म दशमोष्याद्यः ॥ १० ॥ इति सं० १६३३ वि०

विषय—महाभारत शांति पर्व का आपद् धर्म नामक ग्रंथ । इसमें दस अध्याय हैं—(१) कायधर्म का चरित्र । (२) मूयक-निकर संवाद (३) ब्रह्मरूप पुत्रिम संवाद (४) विद्यामित्रस्वपच संवाद (५) ध्याया कपोल पाहन चरित्र (६) मूक अनुक संवाद (७) साम्भकी संवाद (८) प्रायश्चित्त (९) लज्जो सति वर्जन (१०) आपद् धर्म ध्यायवा व मित्र जमित्र का वर्जन ॥

संख्या १५०. दुर्ग प्रकाश, रचयिता—गोरेखाल पुरोहित (मऊ), कागज—दूसी पत्र—६७, आकार—६ ३/४ X ६ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्ट्)—२०१०, अंकित । रूप—प्राचीन, पत्र, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७२ = १७१५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू राममनोहर बिचपुरिया, धाम—पुरानी बस्ती कटनी मुरबारा लिखा—ब्रह्मपुर ।

आदि—(आदि का कुछ भाग लुप्त) जो उर विमल बुद्धि ठहराईं । तौ आनद सिंघु लहराईं ॥ उठै अनद मिध की लहरें ॥ जम मुक्ता उपरह्यौं छहरें ॥ छहर छहरि छित मडल छर्यौं । सुनि सुनि वीर हियां हुलग्यायो ॥ छन्द ॥ दान क्या वसमान भैं, जाके हिये उछाह । सोई वीर वपानियै ज्यौं छत्ता भुव नाह ॥ छन्द ॥ भूमि नाह कौ वंस वपानौं । सवकी आदि कानु कौ जानौं ॥ एक भानु सव जग कौ तारयौं । जहाँ भानु मो देम उजारयौं ॥ सुर नर मुनि दिल अजल वाधे । करत प्रनाम भगत कौ काधे ॥ एक चक्ररथ पै उठ धावै । मकल गधर्चन मडल फिरि आवै ॥ साठ हजार असुर नित मारै । धरम करम प्रति नित विस्तारै ॥ कमल क्यों न मुमव्याहै निहारै । लछि देत कर सहज पसारै ॥ १६ ॥

अत—॥ दोहा ॥ पुत्र जहालौं पाइ है ते लेंहें सब पाइ । मीच कहा ते आइ है तुमसो बहु रूप पाइ ॥ १२६८ ॥ छन्द ॥ अमर न होत समर भैं ठाढ़े । भाजत भमर हिये भय वाढ़े ॥ तपत चतुर मुप तेज तिहारै । मन मुप छत्र न होत निहारै ॥ दुमह त्राय जग मडित तेरो । समु लियौं सममान वसेरो ॥ इक वैकुण्ठ धाम कौ वामी । यह जल थल व्यापौं अभिनासी ॥ साइत चाह देह धरि आयौं । विप्र वेद तप जग्य कहायौं ॥ अथ वक्र वकी त्रनावति केली । ये सेवक सब अपनै देसी ॥ जैसे जहा र्यात उर आवै । तैमे तहाँ रूप धरि वावै ॥ तप जप जज्ञ हौन नहि पावै । जहा हौहि तह विवन उठावै ॥ २३०२ ॥ जथा प्रति और लिपनै रही ॥

विषय—पन्ना नरेश महाराज छत्रमाल का वर्णन ॥

संख्या १५१. सद्भावली, रचयिता—गोसाईं दास (कमोली, वाराणसी), कागज—मोटा हरा, पत्र—४०, आकार—४३ × १०३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण अनुष्टुप्—७५०, पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—लगभग स० १८०० = १७८३ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत श्री कृष्ण दास, ग्राम—कमोली, डाकघर—दरियावाट, जिला—वाराणसी ।

आदि—वारे नाम की धुनि लाउ । और आशा छौंदि इत उत एक की धुनि लाउ ॥ खात पियत औं वोलत डोलत सुरति शब्द मिलाव । पाच और पचीस माया ताहि को विसराउ ॥ देहि जो कुछ सदा सत गुरु ताहि भोग लगाउ । रहनि गहनि सुभक्त की है ताहि ना विसराउ ॥ मान मन त्वे वात साँची, भक्ति भेद लखाउ । आस गुरु की सदा निशि दिन, मन न अनत वहाउ ॥ जिनके तम्बू अलख ठाढ़े, ताहि का गोहराउ । गोसाईं दास विश्वास के वस सदा दर्शन पाउ ॥

अंत—कहरा साँचे सन्नथ साँवरे, मोहि तन नेकु निहारु । भव सागर यह प्रवल है, गहि पिय वाँह उवारु ॥ अमीरस प्याला पीजिदु, विपकी वारि उजारि । चरण कमल की शरण लै, हिय सौं नाहि विसारि ॥ वार वार विनती करौं, सुरति लेहु सँभारि । सब लायक तुमहो पिया, याही अरज हमारि ॥

x

x

x

x

विषय—काशी रसद के १६ अध्यायों का पद्यानुवाद ।

संख्या १५३. वी. शिव विनोद, रचयिता—गोवर्धनधर मिश्र (विल्हौर, कानपुर), कागज—देशी, पत्र—८८, आकार—८×६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९५५, सडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२६=१८६९ ई०, लिपिकाल—स० १६२६=१८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवदत्त मिश्र, ग्राम—फाजिलनगर, डाकघर—विल्हौर, जिला—कानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ शिव विनोद लिप्यते ॥ भजन ॥ चलाई मन अनंत कानन होठ ॥ छोड़ि जगत के काम ॥ जाग्रत को मुर नर मुनि लोचत रहत रहत पसु याम ॥ ता मह मुक्ति भीर भिक्षुक कह देत सदा हरवाम ॥ १ ॥ मगि करणी मुर सरि तट तारक मत्र देत अरि काम । अत काल श्रचणन परि नाशत जन्म बीज को नाम ॥ २ ॥ वैल चदाय भस्म गगासिर चद्र नाग गज चाम । शिव वनाय शिव पद शिव टंके पहुचावत निज ग्राम ॥ ३ ॥ कीट पतग रक पशु पग टुम लगत न एऊो दाम । गोवर्धन भजु विश्वनाथ पद सरुल सुखन के धाम ॥ ४ ॥

अत—प्रभाती ॥ जागहु रदयेश शशु त्रिमुवन घट घोर । निशकर द्रुति छीन भई चकई पिय मिलन गई कुम दिन जिय सोच पोच मलिन भये तारे ॥ १ ॥ मुनिमन आनद होत । भानु भानु के उदोत पकज श्रिय मुदित मन तमसुर दुख भारे ॥ २ ॥ मध्या व्रत नेम धर्म जप यज्ञादिक सर्व कर्म प्रगटे द्विज दोस सुनत पथिक मग सिधारै ॥ ३ ॥ ध्यावत सनकादि शेश नारद हरि अज दिनेश पावत नहि वेद भेट गावत गुण तिहारै ॥ ४ ॥ काशी पद विश्वनाथ निज जन कीजै सनाय गोवर्धन दरदादेहु गिरिजा पति प्यारे ॥ ५ ॥

विषय—शिव जी के १२० भजन होली, वसंत, लावनी ख्याल आदि ॥

संख्या १५३ सी. विष्णु विनोद, रचयिता—श्री गोवर्धन धर मिश्र (कानपुर), कागज—देशी, पत्र—१०७, आकार—८×६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९५२, सडित । रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३०=१८७३ ई०, लिपिकाल—स० १६३६=१८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवदत्त मिश्र, ग्राम—फाजिलनगर, डाकघर—विल्हौर, जिला—कानपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विष्णु विनोद लिप्यते ॥ भजन ॥ ऐ मन मधुवन क्यों न गयो रे ॥ जा व्रज केलि नि कुजन के मग पग मग प्राग भयोरे । १ । इत मधुरा उत गोकुल के विच यमुना नीर वहोरे ॥ २ जा थल में तिहु लोक को नायक गोरस खात फिरोरे । गोवर्धन मोहन छवि लखि के प्रेम पियूप पियोरे ॥ ४ ॥ होरी । मोसो खेलत होरी । हल धर जू को वीर । वरजि रही वरजो नहि मानै पट जमुना जी के तीर १ चोवा चटन और अरगजा मुख पर मलत अवीर ॥ २ । गागरि फोरी वहियां मरोरी रंग में भिगोयो चोली चीर ॥ ३ ॥ गोवर्धन गहि लेहु लला को मन भायो करिवीर ॥ ४ ॥

अत—वसंत ॥ जा दिन ते व्रज राज गये रिनु राज समाज किये ॥ वेला गुलाव

गली में मये मग जाब न देत तिये । सोन सुदी गुलनार होक मब छटत मइ सो पिये ॥ १ ॥ काम कमान गहे सर साये भंवा के वीर छिये । देखि पछास भंगार से कूठ बिरहा बहत दिये ॥ २ ॥ मइ युवती मपुपुर की बाट देखेँ जोबत चित दिये । गोवर्धन गोपाल दाम की धामा छागि त्रिये ॥ ३ ॥

विषय—विष्णु, श्री कृष्ण, राम के विषय में १२० भजन राग रागनी होखी त्पाल लायनी बारामामी आदि में ॥

संख्या १५४ बारामामी, रचयिता—गोविंददास, कागज—देवी पत्र—१६, आकार—६ × ३ इंच, पत्र (प्रति पृष्ठ — ११, परिमाण (अनुच्छेद)— १२, पूर्ण रूप—साधारण, पद्य, लिपि—आगरी, लिपिकार—सं० १९३५ = १८७८ ई०, प्रासिद्यान—पंडित गोविंद काक जी, ग्राम—मिहालपुर, डाकघर—बारायनदाम का रोडा, त्रिका—उम्माव (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ हो० । बारामामी कहत हई श्री गणेश पद बंद । प्रीति मगिन की का कहे जो छागी नंद नंद ॥ रेखा ॥ श्री कृष्ण को जप से करे जम की फोनी ॥ या हुनियादारी को करने दे हांसी ॥ के ज्ञान हाय सोटा जम जा रम पासी । मित्र राम नाम सर माय पारा मामी ॥ ततबीज रीत करके महबत में अह्ये सब से बुरा गम करिये माया नवाह्ये ॥ कोहें सुधर जीब मिले अगर रिक्त मिथाने एक राम नाम सीर साथ परि सुनाह्ये ॥ हा० । रितु बसंत में एक मन्वी सा हमसे बितुर बंध । सब बिरहा के बस भए सुर नर मुनि अद संत ।

भंग—॥ हा० । बारामामी कही हई श्री ममुई नर नारि । थारि पदारथ पाह्ये श्री राधा कृष्ण मुगारि ॥ इति श्री बाराहमामी बिरचिते गोविंद दाम कृत संपूर्ण संवत् १९३५ वि० करित ॥ सायन का धन धोर भटा सुनी मेघ कहे बरसों । हरि राधिके हीरि बूर जाय बुंज में छागी १६ उही रीं बर सों ॥ सीरी ममीर रग लन में तिय पात कहे इमि थों बरसों । पिय अठ का ह्याम भुम्पया न भूछि ई वादि १६ बरसों परसों ॥ इति श्री गोविंददाम कृत बारा मामी ॥

विषय—राधा कृष्ण के पिरह के वारहों महीनों में वर्जन ।

संख्या १५४ परिवार वयानान्तगत त्रिषा अक्षि का भूर मंथी संवाद, रचयिता—गुरु गोविंद मिह, कागज—साधारण पत्र—५, आकार—५ × ३ इंच पत्र (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुच्छेद)—५४, पूर्ण, रूप—जवीब पद्य लिपि—आगरी, रचनाकार—सं० १७३३ = १९९६ ई०, प्रासिद्यान—बाला पुरोचोत्तम दाम, बर्क वाल, बरहा कोडर, त्रिका—प्रतापगढ़ ।

आदि—१ ॥ सत गुरु प्रसादि बुनि राधम का काय सीसा । श्री अमिरेण जगत क ईया ॥ पुरपन विह गगन ते मई । मप्रदिन जान कपाई हई ॥ चम्य-बम्ब लोहन के शाना । हुटन दाह गरीय निराजा ॥ अतिथ भजन के गिरजन द्वारे । दाम जाबि मोदि सेदु उबारे ॥

×

×

×

×

हमारी करो हाथ दे रक्षा । पूरण होइ चित्त की इच्छा ॥ तुव चरणन मन रहै
हमारा । अपना जानि करो प्रति पारा ॥ हमरे दुष्ट भवहि तुम घावहु । आप हाथ दे मोहि
वचावहु ॥ सुप वसै मेरो पर वारा । सेवक गिप्य सवै करतारा ॥ मोर छचा (मोरच्छा)
निज करदैं करिये । सब वैरिन को आज संवरिये ॥ पूरण होइ हमारी आमा । तोर भजन
की रहै पियासा ॥ तुमहिं छोड़ि कोइ अवर न ध्याऊँ । जो वर चाहो सो तुमते पाऊँ ॥

अंत—कृपा करी हम पर जग माता । ग्रथ करा पूरण सुभ राता ॥ किल विप सकल
देह को हरता । दुष्ट देवि पन को छै करता ॥ श्री अमि धुज जब भये टयाला । पूरण करा
ग्रथ ततकाला ॥ मन वाटित फल पावै सोई । दुप न तिसै विआपत कोइ ॥ अदिल सुनै
गुग जो अहि सुरसना पावई । सुनै मूढ़ चितलाइ चतुरता आवई । दुप दरद भो निकट न
तिन नरके रहै । हू जो याकी येकवार चौपाई को कहै ॥

X X X X

इति श्री चरित्रोपप्याने त्रिया चरित्रे भूप मंत्री सवादे चारि सैं चारि चरित्र समापत
सुभमस्तु ॥ ३० ॥ दोहरा ॥ दास जानि करि दास मै कीरै कृपा अपार । आप हाथ दे
राप मोहिं मन क्रम वचन विचार ॥ चौपाई ॥ मैं नंगनेशह प्रथम मनाऊँ । कृष्ण विष्णु
कवहुँ न ध्याऊँ ॥ कान न सुने पहिचान न तिनसाँ । लिख लागी मोरी पगियन साँ ॥
दोहरा ॥ सगल दुआरो छोड़ि के गरयो तिहारो द्वार । बांह गहे की लाज है अस गोविन्द-
दास तुहार ॥

विषय—पृ० १ से ६ तक—देवी की स्तुति । ग्रथ निर्माण काल :—संवत् सत्रह
सहस भांडिजै । अरध सहस पुनि तीन कहिजै ॥ मादव सुदि अष्टमि रवि चारा । वीरस
तुंद्रव ग्रंथ सँभारा ॥

संख्या १५६. रसीले तरंग, रचयिता—गुलजारीलाल रमाले (नरवल, कानपुर),
फागज—साधारण, पत्र—२६, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण
(अनुपुष्टप)—५४६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स०
१९२८ = १८७१ ई०, लिपिकाल—स० १९३८ × १८८१ ई०, प्राप्तस्थान—श्री शोभाराम
धूवे, ग्राम—उनियाँ कलाँ, ढाकूघर—मैगलगाँज, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ रमाले तरंग लिप्यते ॥ दोहा । श्री लचोदर
तुव चरण वन्दि कहौ सत भाव । कर गहि पार लगाइये मेरी अनाथ की नाव । अन पद
हौ मति मंद अति नहिं अक्षर को ज्ञान । कविन की जूटन वीनि कै कीन्ह इक्का आन ॥

अंत—वालम० ॥ अब रदत पिआठ पिआठ सपी जिम प्यासा । सोई गति है उन
विन जिया नहिं रहत हुलासा । पुनि लाग महीना चवार वीत चौमासा । गुलजारी लाल की
पूरन करिये आसा मधु सूदन मदन मुरारी जाजं वलिहारी । वालम विन कैसे कटे निसा
अंधियारी ॥ इति श्री रसीले तरंग सपूर्ण समाप्तः शुभम् लिपत गोवर्धनस्य सारस्वत शर्मण-
त्रिपाठी प्रथम श्रावण वदी ३० संवत् १९३९ विक्र०

विषय—श्री रामचन्द्र जी के जन्म मे वनवास आने तक के भजन लावनी
आदि में ॥

सप्तम्या १५७ ए. गुह्यात् चंद्रोदय, रचयिता—गुमान मिश्र कागज—द्वैती, पत्र—
१००, आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुच्छेद)—१६८८,
पूर्व, रूप—अष्टम, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १८२२ वि०, लिपिकाल—सं०
१८२३ वि०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह, ग्राम—मच्छपुर, बिछा—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुह्यात् चंद्रोदय लिप्यते ॥ दो० ॥ गुह्यत गुह्य
सौरम सम कवि मसिद् रुद्रि मीत्र ॥ मंगल सिय के आभारन गिरिजा चरन सरोत्र ॥ छपी ॥
गुह्यत गुह्य अलि पुत्र मंत्र संगीत गीत रच । पत्रत भीम मिरर्षग चंग मुर संग रंग नभ ॥
उघटत तात रमास रुक्ति गति अलि चरन घट । मोहत मुर मुनि सुन्द पुरि आनन्द धन
जक । सपि मचत तात संग रचत चित बिहंसि अर्ध कुवित बदन गन पाल कृपास रहै । सदा
श्री गुह्यात् संपति सदन ॥ अथ राज वर्गन ॥ दोहा ॥ बीस नाथ पुर पुहमि पे पावन अति
पर मित्रि । इषी देव समाज जहै नारी मर सुप सिद्धि । कबिच । बेदीन गुमति गुन गननि
जुनति पर दोष न गुनति बुद्ध अवती ससत ई । नीत ही नो राज करै कोरिन को काज
जहां सजन समाज श्री सुमेधा सरसति ई । पबल अयामि श्री छयामि छुटनि मिस मानो
भमरावती को हेरि कै हंसति ई ॥ धरम क धाम मरवारी अभिराम धैसी बीस नाथ नगरी
सु बिसयो बसति ई ॥ दो० । राज इयो ता नगर को संपति सहित महेस । सठि बँध भूपन
भयो धानित राह नरेम । धानित राह नरेम के पांथ लमी बरि मंड । राजत मानो कस्य तद
साजत तेज प्रबंध विनमें भूप गुह्यात् चंद्र उदित महा बुधिचंत । सेयत चतुर चक्रैर ज्यो
चाहत संत भर्त ॥

अंत—मय सांत रस कसन ॥ दोहा ॥ मित्रि विभाव भन भावरी चारी भावनि
संग । परि पूरन निरबेद जब बहे सांत रस रंग ॥ अथ विभाव दोहा ॥ ताव न्वाण समाधि
श्री गुन उपदम मुसग मम रस के ये जानिये कही विभाव प्रमंग ॥ अनुभाव दोहा ॥ छुटि
जाह संमार ते मगन ध्यान मन होह करि पूजा उज्जल रहे कदि अनुभाव संज्येह ॥ संचारी
जाय दोहा ॥ पीरज मुमिरम बुद्धि श्री जगत असुया होह । महा स्वच्छ है चरन तह पार मझ
मुर सोह ॥ जथा ॥ दुबन के बनितान के सीस जवाहर जोतिन रजित नीके । मत्त मराल
मनाहर सुन्दर नूपुर मित्रित शक मनी के । अठरु सिद्धि बवा मिथि मेपित जैयित रमुप
पूरन जी के कंज रो बोमस मनु महा पग बंदत वे छपमानु सली के ॥ दोहा ॥ निरपि मरक
मादिय मत्त भात मुर्मम विचार । सीम गुह्यात् चंद्र चंद्र को रचा उर्द बिस्तार ॥ जो
गुह्यात् चंद्रोदय अपसौके चितु छाय रम भारग मन विमल ॥ मोह विमिर मित्रि जाह ॥
इति श्री मच्छ कृष्ण निधान शकमाम दान विधान श्री सास्य आत्मा राम गुह्यात्चंद्र कारित
मिथ गुमान विरचिते गुह्यात् चंद्रोदय समाप्तः मिति रीत वर्षी ६ संवत् १८२३ द्वागता
गत अली पञ्चम के । भागे सुभ ॥

विषय—नायक, नायिका, भेद रस हाय म च धर्मन ।

संख्या १५७ बी गुह्यात् चंद्रोदय, रचयिता—गुमान मिश्र, कागज—द्वैती, पत्र—
१२९, आकार—८ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७ परिमाण (अनुच्छेद)—१३२०,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२० वि०, प्रासिस्थान—
आनंद भवन पुस्तकालय, विग्वार्ड, जिला—सीतापुर ।

आदि—१५७ ए, के समान । पुष्पिका नहीं है ।

संख्या १५८. चाणक्य नीति भाषा (राजनीति शास्त्र), रचयिता—गुमानी,
कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण
(अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२० =
१८६३, प्रासिस्थान—पं० शिववश शुक्ल, ग्राम—जैतीपुर, जिला—ठन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वृद्ध चाणक्य राजनीति भाषा लिप्यते दो० ॥
सुदर सुद गणेश गुरु गिरि तनयारु गिरीश, गुण गभीर भवनीर निधि पार करन नम मीस ॥
नीतिशास्त्र चाणक्य मुनि रच्यो जु स्मृत वानि । भाषा रथ विन व्याकरण दोहा मुप ते
जानि ॥ शंकर देव प्रणाम करि जग गुरु, ब्रह्म वंदि । कहूँ जु संग्रह शास्त्र को नमि सिर विष्णु
विरचि ॥ आप कहो चाणक्य मुनि संग्रह राज सुनीत । सोहू नीके कहत हौं नर बुद्धि
वधै प्रतीति ॥

अंत—पटित और भूपाल ॥ जो होनो तैसे हुवै न हुवै औरँ साचि ॥ या जावै वह
आपही ले जावै के पाचि ॥ नर पावै प्रापति अरध लवे न देवहिं जोर । तहा सो विसमय है
कहां जो अपनो नहि और ॥ वन रण वैरी अगिन जल पर वत मिर अरु मिनु । सुस प्रमत्तर
विपम थल रक्षा पूरव पुन्य ॥ राजनीति कवि विष्णु गिरि यह अष्टम अध्याय । रच्यो गुमानी
पठन हित दोहा । वध वनाय ॥ इति श्री वृद्ध चाणक्य राजनीति अष्टमो अध्याय समाप्त
शुभ लिपित सुपानद ब्राह्मण सवत् १९२० वि० ॥

विषय—चाणक्य कृत राजनीति शास्त्र का भाषा में वर्णन

संख्या १५९ शब्दावली श्रीर दोहावली, रचयिता—गुरुदत्त दास (पुरवा देवी-
दास, वाराणसी), कागज—सफेद मोटा, पत्र—८२, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति
पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्) ४६७, पूर्ण, रूप—अच्छी, पद्य, लिपि—नागरी, लिपि-
काल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्रासिस्थान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे
परान पाडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायवरेली ।

आदि—जै शम्भु तनय अनादि देव सुरादि मुनि सब ध्यावहीं । जै एक रदन गयद
वदन, अनद करन कहावहीं ॥ नैसिद्धि-सदन दरिद्र-कदन, विशाल लोचन राजहीं । जैयती
रूप अनूप हौं तन कोटि रवि छवि आजहीं ॥ जै नाग भूषण लम्ब-उदर अनेक विघ्न विना-
शक । जै उमा सुवन प्रत्यक्ष हौं सत सिद्धि ज्ञान प्रकाशकं ॥ अव धाल मोहि निहाल करहु,
गरीब जानि के भेटहु । गुरुदत्त चरनन परि कहै, गन्नेश सब दुख भेटहु ॥

अंत—दो० नाम देवहित कारने, मुर्दा गाय जियाय । अस प्रताप सति नाम का
कसन भजहु चित लाय ॥ जग जीवन महाराज की, कीरति जग में छाय । अस प्रताप सत
नाम का, कसन भजहु चितलाय ॥

×

×

×

×

हो० झूठे बाबा रामदास बौद्धि रहे जो क्लेश । गुल्दच दास बरु मेव के, बादर जगमा होय ॥ चारि मासि बेसा बरु, आठ मास गुल्दच । गुल्दच दास की बात क, बिरछ सगुसी मेव ॥ संत दरस हरि भजन क, बादा बहुत जगूम । से प्राणी बादा करै, तिनका हिरबय सून ॥ बूब दही मृत गेहु भी, खट्टा मिरछ बौद्धि गुल्दच दास गुर वेसा के, होय न जगमा भौद्धि ॥

× × × ×

विषय—रामनाम की महिमा, ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का वर्णन ।

संख्या १६० स्वरोद्य, रचयिता—गुरु प्रसाद, कगज—देसी, पत्र—१५, आकार—७ × ५ १/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुच्छेद)—४२८, पूर्ण, रूप—महीन, पद्य छिपि—जागरी, छिपिछाल—१९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विष्णुदत्त उपनाम पुत्री महाराज, ग्राम—मौली, बाकबर—ताकन बरसी, जिंला—छत्तनड ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ स्वरोद छिन्त्यते ॥ सुसुम बेदका मेव पद्यामी ॥ जाते रवि सति बरु पहिचानी ॥ होहा ॥ इहिने पाडे भान छर बाबा अगे चंद । सो प्रकृति भान के पांय ॥ बाई चारि आवे दहिने सो प्राकृति चंद के केई ॥ जो पे उसन देह रुप होई ॥ दहिनी चारि बंद करु माई । पहर चारि रवि राखो बरु तुरत उसनते होइ जानंद ॥ बंदन ते होई सितकरुई बाई नासिक बंद करु माई ॥ होहा ॥ राणी रुई नाक में करु पहरौ चारि, चंद कूटे बंदन ते बीसे करु विचारि ॥ बीपाई ॥ तबही सरदी तुरत न जाई । रोग होय बंधनते जाई ॥ आयु आयु भर करे कखोहक गुद प्रसाद सुनि असत बोळ ॥ ताते दुई पवन पुनि यहई ऐसे ठांन सबरि रहई ॥ होहा ॥ यहै मिथुन ऊचे चरि भोजन आचन माह । चंद रवि वृत्तो बहे पते ठबरी माह ॥

अंत—अथ बग्का मुली मंत्र, ॐ ह्रीं बग्का मुली सर्वं बुद्धनाम् बाधम् मुषं हस्त पादौ विधां कौत्स्य मुक्ति विनासय ॐ ह्रीं स्वाहा अथ २१००० सत्रु बल्प होई वाय सीरके मद्र—आकर कुली अकर बकुली कस्य मीत्री राजा मेधी कटी हरि मरि हरि हरियो जान तिक बसन हुयोयो जाने मगट बहो होदस सहेज मारोको पाबा अगस्त मुनि मारे श्री हत्पा आपीनी तथा २१०८ अये विधि कासी के कयोरा में पानी भरये पानीमें मोह डेर हैये जे जाय करे बबैसी प्याय मूस होय बनु जाय, ॐ धरती दिवी मद्र कृपाली कृप्या विरनु अगिल मंह जारी आसा पुतबहु हुत पूरय करहु महेस मूक पूर्ण अन्नपूर्ण कहु सिद्धि देहु गग्नेसः ॐ श्री कमलाक्षी अनुष्ठी मा कर्षय मा कर्षय ॐ कट कुकुम रक्त चंदन कास्मीर अगर करतूरी गोरोचन भोज पत्र ॥ (समाप्त)

विषय—इहा विंगला आदि गाढ़ी व स्वर भेद संग मंत्रादि ।

संख्या १६१ प. गोपी पचीठी रचयिता—गवाककवि, कगज—साधारण पत्र—३, आकार—१३ १/२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुच्छेद)—१२०, पूर्ण, रूप—महीन, पद्य छिपि—जागरी, प्राप्तिस्थान—टाकुर हरी बचम सिंह, रईम, ग्राम—कुट्टरिया, जिंला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री जयदम्बायै नमः ॥ अथ श्री गोपी पचीठी छिन्त्यते ॥ कबिच—श्रीने

कान्ह जान जैमे ऊधव सुजान आये हैं तो मेहमान पर प्राननि निकारे लेत । लाख वार अजन अँजाये इन हाथन तैं तिनको निरंजन कहत झूठ धारे लेत ॥ ग्वाल कवि हाल ही तमालव में वालन में ख्यालन में खेले हैं कलोल किलकारे लेत । ह्याँन परचेरी संग जोग परचेरी ह्याँ भेज परचे हमारे लेत ॥ १ ॥

अंत—उद्धव वाक्य कृष्णसों रावरे कहे तैं हौं गयो ब्रज वालन पै देखत ही मोहि कियो आदर अपारा है । कहतै तिहारी वात गालतै भभूके उठें परत वरूढ की जमाति ज्यों अँगारा है ॥ ग्वाल कवि कहें लागी लपट डवामिनि सी दौरयो में तहां ते तऊ झुरस्यो दुवारा है । गोपी विरहागिनि में जोगउद्धि गयो ऐसे जैसे उद्धि जात पहुँ पावरु में पारा है ॥ २५ ॥ इति श्री गोपी पञ्चीसी सामस्र सुभमस्तु चित्त दृष्टै तेमित्तगों, नहीं दूध के भाव । तुम्हें सोच है पुत्र को, हमें पीठ पर धाव ॥

विषय—(१) पृ० १ से ५ तरु—उद्धव गोपी सवाद । गोपियों द्वारा उद्धव के योग प्रस्ताव का विरोध, विरोध के समर्थन में कुछ प्रमाण । और हास्य तथा उपालंभ मूलक कुछ उक्तियाँ कृष्ण को गोपियों की पत्नी । उद्धव प्रति गोपियों का चाक अंत में उद्धव का वाक्या कृष्ण से (गोपियों का वियोग वर्णन) ।

संख्या १६१ वी. रसिकानंद, रचयिता—ग्वाल, कागज—देशी, पत्र—१५०, आकार—१२ x ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुच्छुप्)—३८५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन कटी, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७९ वि०, लिपिकाल—स० १९४२ वि०, प्रासिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह, ग्राम—मल्लापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसिकानंद ग्रंथ ग्वाल कवि कृत लिप्यते ॥ प्रथम मंगला चरण ॥ कवित्त ॥ कारण हैं ज्ञान के अज्ञान पजारन हैं तारन निदानी भव सिंधु के सदा अनिंद ॥ तारन कलेस के सुदारन सुजल पुंज कीने ही अगारन में धारन महा मुनिंद ॥ ग्वाल कवि पूरित मनोरथ दे जैत पत्र छत्र छवि छावै सीस देव औ अदेव विंद ॥ डारे निद निंद इंदरासन वलिद वर इंद तैं अधिक त्रिगुरु के चरणारविंद ॥ १ ॥ तीनौ तीनों सातौ नव चौदह दशौ हू दश तीन और तैतिस की पंगति रहै जुरी । द्वादस अठारह औ चारि पद गावैं सदा सात आठ नौहू ध्यान लावै करि चातुरी ॥ ग्वाल कवि व्यापक सभी में जोति जागै एक दूसरोन कोऊ की सरन गहैं पुरी ॥ फैलेगी कवी सुरी धरा पै विसै वीसु रीउ नैकौ कहू दीसुरी जु पैसाँ जगदीसुरी ॥

अंत—अथ प्रथ प्रनार्य पूरन संजोग सिंगार उदाहरन वृदावन कुज कार्लिंदी के कूलन पै कोकिल कुहूके सनी वानी सुधाघार में ॥ राधिका रसीली से गुविंद विपरीत मागी प्यारी नटि जात चप चचल अपार में । ग्वाल कवि मद मुसुक्याय इतराय धाय अंक लगी जाय अगाराय हर वार में ॥ छकि रहे छाकन में थकि रहे अग अग जाके रहे दोऊ रूप जार में ॥ अथ भूपति को आशीवाँद ॥ सोभा के सरस सुपदायक समूह साजै सुजस वितानते तनाओ छित जाल पर ॥ दान के दरैरन सौ दारिद दरेन्यो करौ पूरन प्रतापहि वदाओ हर साल पर ग्वाल कवि गुनीनन को मान नित कियो करो आप चिरजीवौ रहौ सज रवि चाल

पर ॥ बुन्दारवन चंद्र चाक बुन्दार वन रानी रानी राजा असंबत सिंघ राव रिया भाऊ पर ॥
 श्री ॥ श्री हमीर सिंह मंद वर श्री असंबत मुंगेस । आयु तनय धन राज सुत वृद्धि करे पर
 मेस ॥ श्री राधा गोबिंद को बुन्दार विपिन बिहार ठामे पित कवि ग्वाल को बसी सदा निर
 वार ॥ इति श्री मम्महाराजाधिराज सुप समाज बख बंत छिति फंत श्री असंबत सिंघ जी
 हेतु ग्वाल कवि विरचिते रसिकानन्द ग्रंथे टीन रस रसन के मित्र सद्गु बरपन नाम ह्रादसो
 मकरा श्री संबत १९४२ बवार मासे ह्यु पड़े तियो पंचम्यो भीम वासर छिपत रहुबर
 दयाल मित्र श्रीरंगाबाद विद्यामी ॥ सिंघ सिंघ सिंघ ॥

विषय—नायिक नाचक मेह, हाव भाव, रस, बर्मन धार प्रथम काम्य
 में निरूपण ॥

संख्या १६१ सी कृष्ण चंद्र नू को मलखिल, रचयिता—ग्वालकवि, कागज—
 साधारण, पत्र—०, आकार—१३३ × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनु
 प्ठुप)—३१२, पूर्व, रूप—महीन पय, छिति—मागरी, रचनकाल—सं० १८८४ =
 १८९७ ई०, प्राप्तिस्थान—डा० हरीबक्स सिंह रईस, ग्राम—कुठरिया, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री जगद्बाय नमः ॥ अथ श्री कृष्ण चन्द्र नू को मल खिल छिद्यते ॥
 कवित मंगलाकरण... कीच कर वर हंस पलित कण्ठविषय श्रीरति सुर गावत मुनीसुरी ॥
 मुनि रूप मुखचंद्र प्र... प्रमानिपत जल जनमाक भृगु कता यिनि... ग्वाल कवि निगम
 पुरान की अपार कई कीरस के को कवीसुरी ॥ बरनि सके... मही है याह
 संपति मरीया महा राधा जगदीसुरी ॥ १ ॥ बातां—पह कवित मित्र पदछेप है । श्री
 सरस्वती जी पल श्री श्री राधा जी पल ॥

अंत—सेवत नर न भास मरन विमिष पर सेवै क्यों न आदि जो रची सभा मुनेस
 की । तिमिर अज्ञान को दिनास्यी चंद्र दीपन से प्याये क्यों न आदि ज्योति इति है दिनेम
 श्री ॥ ग्वाल कवि जाके गुन गन को कई सो कई भीम मत्त घारी ग्यास हारी मति सेस
 श्री । ग्यागी जग विषयक सिप छिति सिलि मेरी निय दिम तुप मिय छपि रिप
 केस श्री ॥

इति श्री मम्महाराजाधिराज मकरा श्री कृष्ण चंद्र नू को मल खिल संपूर्ण
 शुभमस्तु ॥

विषय—श्री कृष्ण जी की मल-खिल शोभा ।

कवि परिचय—श्री जगद्बाय की कृपा । ताकरि मयो प्रकाम । वासी बुंदार
 विपिन के । श्री मधुरा सुत वास ॥ विदित विष परी बिराद । बरने ग्यास पुरान । ता कुल
 सेवा राव की । सुत कवि ग्वाल मुखाज ॥ येद मिडि अहि रीच कर । संबत आदकनिमाय ।
 भयो हमहरा को प्रगत । बरन सिप सरस प्रकाम ॥

संख्या १६२ प काशिद नामा, रचयिता—हैदर (हैदरी) कामज—देसी, पत्र—
 २, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुठुप)—२९, पूर्व,

रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२=१८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—
लाला रामनारायण, ग्राम—नयीरपुर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—तीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ जो हो कामिद तेरा दिल्ली को जाना । खबर उम
केसरी प्यारे की लाना ॥ कई दिन से उसे देखा नहीं है । कि हम मथुरा चले और वह
कहीं है ॥ नहीं है ताप खत लिखने की मुझ को । जवानी हाल कह देता हू तुझको ॥ यह
कहना उस मेरे प्यारे मे नागाह । तेरा आशक मिला था वर सरे रह ॥ घला जाता था वह
सहरा भटकता । कि हर जा हर कदम पर मिर पटकता ॥ कभी वो ना तवा खाता था
टोकर । कभू सहरा में यों कहता था रोंकर । कियारव वो मेरा प्यारा मिलादे । गमों हिजरा
से जल्दी अब छुटादे ॥ कहू मजनु मे गर मैं इस मितम को । वो भी भूल जा लेंली के
गम को ॥ कहू फरहाट से अपनी कहानी । मेरी यह सुन हो शरीरी जवानी ॥ दुवारा फिर
वो अपने तेरा मारे । मुझे सट आफरीं कह कर पुकारे ॥ कहीं मूंसद वराण आग के
पाक । हमेगे गम जदह रहता है गम नाक ॥ यह कह कर हो चला कासिद खाना ।
उसी से पूँछकर उसका ठिकाना ॥ गया वो नागहा दिछी शहर में । दिया हर एक का
खत हर एक घर में ॥ मेरा पैगाम जव वो याद करके । गया नजदीक उस महरू के
घर के ॥

अंत—लगा कहने वो एक से वो सपुन वर । मिया यहा केसरी रहता कहां पर ॥
कह उसने कि उसका है यही घर ॥ वले घर में नहीं है वो मितमगर ॥ यहां दम लेके कुछ
आराम करले । तू आया जिस लिये वह काम करले ॥ यह कामिद की और उसकी गुस्तगू
की ॥ वो आया आप जिसकी आरजू थी ॥ लगा कहने वो मुह से देके दुश नाम ॥ बता
तू कौन है किसका है पैगाम । कहा कासिद ने मैं तो वेगुनाह हूं । जवानी तेरे आशक की
सुनादूं ॥ मुझे पैगाम यह उसने दिया है । कि जिसका तूने दिल टुकड़े किया है ॥ उसे सच
यार समझाते हैं हरदम । मिया तू किस लिये खाता है हर दम ॥ मगर देवेगा फुरसत दूर
मुझ को । मिलेगा कोई परी रू और तुझको ॥ यह सुनकर वो लगा कहने पियारा । हुआ
था किस लिये आशक हमारा ॥ अकेला जो अगर उसको मैं पाऊ ॥ मजा इस चाह का
उसको चखाकं ॥ भला खूबवा किया दिछी शहर में । गली कूचे में औ बाजार घर में ॥
वस हैदर फिरक दिल मे उठादे । नया मजमून और पढ़कर सुना दे ॥ संवत् १९१२ वि०
आदिवन कृष्णा १४ लिखा वल्लेव दास मेरठ शहर ॥ राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—आशिक का अपने माझूका के पास समाचार भेजना ॥

संख्या १६२ वी. कासिद नामा, रचयिता—हैदर (देहली), कागज—देशी,
पत्र—२, आकार—८ X ६इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५,
पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६=१८५९ ई०,
प्राप्तिस्थान—ठाकुर अजयपाल सिंह, ग्राम—गांगीमऊ, डाकघर—सिधौली, जिला—
सीतापुर ।

आदि-अंत—१६२ पृ. के समान । पुष्पिका इस प्रकार है—

संवत् १९१६ आदिवन कृष्ण १४ ॥ इति श्री कासिद नामा समाप्ता ।

संख्या १६३. मुद्रामा चरित्र, रचयिता—हरधर, कागज—साधारण, पत्र—१४, आकार—१२ X १३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुच्छेद)—१४५०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, किरि—जागरी, रचनाकाल—सं० १८०० = १७४३ ई०, किरिकाक—सं० १८८९ = १८२५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कर्णेश्वराल पुजारी की धर्मपाली, ग्राम—विरसागर का देवीमंदिर, त्रिख्य—मीनपुरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री हरधरदास कृत मुद्रामा चरित्र लिख्यते ॥ अथ अकह प्रभु स्वयं मे, देरि मुनायो बेषु । जागु जागु रे हरधरा, अत्र चूड पद रेणु ॥ १ ॥ अत्र चूड पद अथन की, अग स्वपता को देय । अंत कपुड तू अत्र धर, मुधा सरिस मो र्दन ॥ २ ॥ कसक के कवि गज बहुत धरने चरित अर्नत । कई कई सुरस बपानी (?) सरी सरी मे संत ॥ ३ ॥ तू अरिध मो मित्र को, कद प्रसिद्धि ससार । अमु बाहुरी प्रेम तें, हम कीन्ही आहार ॥ ४ ॥ उठे ठठक्षण सम्य मुनि को करन गुन गाम । प्रथम इहे उचार गुण, पूरण मद्य समान ॥ ५ ॥

अंत—महातंत्र रवि कृष्ण पक्ष अथपि न अहू ते सर । तदपि अमी हू के कई ज्ञान भवन हीपक करे ॥ ४ ॥ अत विचार के हरधरा, कपुड मुपरा अर्नन कियो । मानो महा समुद्र ते मुधी अम जल भरि लिखो ॥ ५ ॥ X X X इति श्री पोधी मुद्रामा चरित्र हीन उद्धारकोनाम प्रेमरास हरधर दाम विरचिताया संपूर्ण समाप्ता ॥ शुभम् ॥ संबन् १८८९ का ॥ कार्तिक शुक्ला ७ गुण दिने ॥ लिपित गोपाल प्राज्ञ गीर्वाण्य ॥ शुभ मस्तु मंगलं इष्यात् ॥

विषय—मुद्रामा की कथा ।

अथ निर्माण काक—अथ सहर रस बेबि सतु कुमुमाकर मुदि पंचदश । संपूर्ण पोधी भई हीन उचरण प्रेमरास ॥

संख्या १६४ उचरनुद रचयिता—कात्री हमीन्दुरीन, कागज—साधारण, पत्र—३१०, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुच्छेद)—६२००, लिखित । रूप—जीर्ण, पद्य, किरि—जागरी, प्राप्तिस्थान—अधुम दाहूर, ग्राम—पार्श्वनगर काकपर—पार्श्वनगर, त्रिख्य—पतापगढ़ ।

आदि—(पृ० १६) पेशाहम मोहम्मद के मूर करि । नाम मोहम्मद कर अति मीन । अवतुल ममद मग मुनक यईय ॥ पहिले मूर मोहम्मद भयेऊ । आगिर नबी तीव विधि रहऊ ॥ मुनि हामिम पूरेऊ मग कई । श्री अम आगिर आनि म कई ॥ तब पूरेऊ ७ कथा मुनापदु । मंस हमो दिव केर मियपदु ॥ कैमे आदि मूर र रवि कीन्हा । आगिर मा ई ननुअन हीन्हा ॥ कदमि कि मुनु मूरप अजानी । आदि अंत कर मुनदु कहाबी ॥ दजरत हमीदुन जो कात्री, सर किहिव रब मोह मात्री ॥ बिधि मे पा जगत मर, ठेसाम हई तब कहि हीन । मूर की बाले कई, किताप लिखि हीन्हा ॥ एक मरी रब पुम भयेऊ । बूँद एक मूर छरकि तई मयेऊ ॥ तब बिधि का ईनि अजनी दाय । मुद अयाह लिखिन करि माया तब एक पठ बिधि मे येना । मुनदु एक रवि मूर मो येना ॥ तब विधिना के

मन अस आईं । प्रगतौ नूर रचौ हुनि आईं ॥ अस गुन कर चाँदह पँड साजा । ऐही नूर सों सव उपराजा ॥

अंत—पृष्ठ—६२० से नवीजी कहेउ मुहम्मद सुनि लीजै । रव का शुक्र कहि सिजदा कीजै मोरे दरस जिन्ह सपन निहारा । रव तिनका किहि बोलि पियारा आं जेन्ह कथा मोर सुनु मन लाईं । तिन बहु जग मा टान टिआईं ॥ विहफै जुमा दुम विवहारा । पढ़हु सुनुहु कथा उजियारा ॥ नर नारी जे सुनि मन लाईं । बहुत सवाव लिहेऊ तिन्ह आईं ॥ नेकी लापहि फरद ते, कहहि सुनहि जे लोग । हसर माहि विधि चकसि है । भय तम पावो भोग ॥ जिन ऐह कथा सुनैचित करिहैं । तिहि पर रवि नित रहमति करिहैं ॥ लिपइ फरिण ते बहुत सवावा । नरक न देषु ना परहि अजाव ॥ नवी जी तिनकर करै सिफाता । विधि के दरसन पै रह मुपराता ॥

×

×

×

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक—लुप्त ।

(२) पृ० १९ से पृ० १०८ तक—मुहम्मद के नूर एवम् सृष्टिनिर्माण आदम, हौआ की पैदाइश । शैतान का बंदगी न करना और दुःख पाना गेहूँ खाने पर शैतान द्वारा आदम का निकाला जाना, पारवती महादेव संवाद । महादेव जी का कैलाश जाने का कारण । कुरान का चतुर्थ वेद बनाया जाना । अवतारादि वर्णन । भविष्य वर्णन, आदम और हौआ का वंश वर्णन । कबील-चरित्र, कबील का अलकापुरी गमन । नारद मिलाप विवाह और वंस विस्तार । (नृह आदि जन्म) युत परस्ती का वाहुल्य, अब्दुल्लाह और अमीना का संजोग । अमीना का स्वप्न और गर्भ स्थिति ।

(३) पृ० १०९ से पृ० १९८ तक—मोहम्मद का गर्भ में आना । दशों मास की व्यवस्था । गर्भ के बालक के संबन्ध में पंडितों की भविष्य वाणी (युत परस्ती को बंद करने की बात) पिता की चिन्ता, गर्भ स्त्राव का प्रयत्न । असफलता । जन्म । जन्म काल की सुसीधत । हलीमा दाई द्वारा नबी का पालन । अब्दुल्लाह का मदीना गमन और मृत्यु । नबी का अमीना माता सहित मदीना गमन, माता एवम् दाई का दुःख और दोनों की मृत्यु । चारह वर्ष की उमर में नबी का बसरा गमन, सिद्धि से मिलना, वीवी खुर्दजा की तारीफ । मुहम्मद का खुर्दजा वीवी के यहा रोटी पर ऊंट की सेवा में रहना । और अन्त में मोहम्मद के साथ विवाह संबंध एवम् सुख भोग वर्णन ।

(४) पृ० १९९ से पृ० ३९८ तक—मुहम्मद और खुर्दजा के विवाह का मंगल व गर्भादि वर्णन, अबूवकर की तारीफ । अबूवकर का बालचरित्रादि वर्णन । तवल्लुद मुर्तजा आशिकारा । मुर्तजा अली के जन्म का मंगल । अली का लालन पालन । हुरों की स्तुति । रूप सौंदर्य का वर्णन । इलहाम अली की संतति का वर्णन । कलमा पढ़ाने की ईश्वरीय आज्ञा । अमीर हमजा का वर्णन । अमीर हमजा का कलमा पढ़ना । फातिमा की मृत्यु । हजरत उमर का कलमा पढ़ना अजीज चादशाह का कलमा पढ़ना । मुहम्मद के मदीने जाने की आज्ञा, कावे के चार स्तम्भों का दर्शन । मदीने में रसूल के पहुँचने पर वहाँ

के छोड़ों का मंगलदाधार । रमजान मास का महत्त्व रोजादि रखने का विधान, जंग-अहद जहाँ अमीर इम्ब्रा शाहीद हुये । तुलिकाकार की तारीफ ।

(५) पू० ३६९ से पू० ५०२ तक—अतिमा की नबी की मृत्यु का सूत्र समाचार दिया जाता, उसका जो दासियों के साथ युद्धस्थल में आता । एक दासी का नबी की खबर लेने आता । विसमिताह की तारीफ । साम बैरा के युद्ध का बयान । गढ़ जोवरा के पादशाह युसुफ के नबी के कसमा पढ़ने की आज्ञा में मानने पर युद्ध । अफिरो की मारकर नबी का मकबरे में दाखिल होना । अलीबक़र का इसक़ाम की बरकत देना और माता पिता की इसक़ाम में आना । जंग हुनपन की गढ़तामुय की लड़ाई । उस्मान द्वारा रसूल का सम्मान । बीबी अतिमा द्वारा उनका स्वागत । बीबी अतिमा की अल्लाह द्वारा बर्षाई । बीबी अतिमा के निकाल का वर्णन । अबूबकर के एक सेव करने की कथा । इमामीन की तारीफ ।

(६) पू० २०३ से पू० ६२० तक—महीने का गमन । सुरेपुजाज पढ़ते ही रसूल का दर्द कम होता । नबी की वसीयत का वर्णन । रसूल की दस बीबियों का वर्णन । तारीफ नबी की बख़्त का वर्णन, तारीफ खलीद बिन वोसीद की । तारीफ इजरात बिक्याल सादक की, तारीफ इजरात दिव्याक की ।

(७) पू० ६२१ से मध्य ।

सख्या १६५ ए सुरिहारिन भेय, रचयिता—इंसाराज, कागज—दैरी, पत्र—६, अक्षर—६२ × २ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपुष्ट)—५७, पूर्ण, रूप—शादीन, पत्र, किरि—नागरी, प्रातिस्थान—धी उमारीकर लूके, साहित्यान्वेषक, त्रिभु—हरवार्ड ।

आदि—श्री गजैसाबनमः जय सुरिहारिन भेय लिखने राधा । सो० प्रबमहिं सुमिरि गौसा की बरकत पित्त निहारि । तव कस्तु आगम गाइने शधा कृष्ण पिदार ॥ १ ॥ अन्ध कुर्पर घरि भेय सुरिहारिन पहिरि जनामो गाइने । मिर दैरिया हायन सुरिया उरुन चलो परमानो । कुमुमिअमव का सईगा पहिरे हर कयब की ताई । नुनरी प्यद प्येदब बारी स्वामस तन पर साई । अद पहिरे अतसम की सुलिया तामे गेह दुराई कमि पांचे बंधन होइ भुज पर नब जोबन अधिकाई । बिजिया सुमरन पायन टुनरुन चाल बडे मतपारी । बेह न इनरुन कदि की कचकनि मोइत मुर बर बारी । कर साइत कचन की ककना मोतिन लागी बारी ।

अन—इचन सुरिया जदित सुनिव सा रूप अँठ करोरी । ये पहिरीं वृषमानु लादिनी पुनि ई बहिया गोरी । ममरुन कर पहिराबत सुरिया कमकि कमकि तन तोरी । पिते २ छतिता की ओरन इमिके मुय मोरी । मुंदर राय मलोवे पैना छरुपन मों कर जानी । कागल ई लम्बिता नू हमरु इन्धे करं मरदाना । करि विबनी वृषमान रादनों अद कीरति सों कहिबे । इंदे रई तुम सुदि सुरिहारिन तुमहिं जानन दिं देये । जय सुनि ई वृषमान राद नू बकि ई कीरति पैना । उमरी कर कमनी मरदानो अबाग हुन गावन ईया

×

×

×

×

विषय—कृष्ण का स्त्री रूप धारण करके राधिका को छलने के लिये वरसाने की ओर जाना । (२) गोकुल से मथुरा और मथुरा से वरसाने आना, राधिका का गृह पृथना—ललिता से वार्तालाप । (३) राधिका से चुरिहारिन की भेंट—राधिका द्वारा उनका आदर (४) चूड़ी का पहिराया जाना ।

संख्या १६५ वी. सनेह सागर, रचयिता—बकसी हंसराज (राठ, हमीरपुर), कागज—देशी, पत्र—७७, आकार—१३ × ६३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपट्टप्)—१७३३, खंडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६१ = १८०४ ई०, प्रासिस्थान—बाबू राममनोहर विचपुरिया, ग्राम—पुरानी वस्ती, कटनी मुरवारा (म० प्रां०) ।

आदि—श्री वृषभान कर्म कुल ऊंच तिहि छिन ताह पग धारे । बाबा नंद वरौटे हो करि आदर करि वैठारे ॥ आपने अपने गोपिन बालक तुरतहि बोल पठाये । करि सिंगार करत कौतूहल घर घरते बढ़ि धाये ॥ २४ ॥ कोऊ बांधि लाल सिर चीरा कोऊ बांधे फँटे । आपुस मैं सचही सौ हिल मिल करी अंक भरि भैटे ॥ कोऊ मोर सिपा सिर पोसै कोऊ बैन बजावै । कोऊ लाल काछनी काँछे कूदत नट से आवै ॥ २५ ॥ कोऊ कसि कसि बाघत गाती कोऊ बाघत फँटी । कोऊ अपनी गाइ बुलावति वनते दे दे सैटी ॥ आतुर ह्वे आतुर चढि दारै नद राह की पोरी । कहत वनै कुतूहल पुर कौ लरकन लगी टौरी ॥ २६ ॥

अंत—जौ लागि तजत न नैम निगौड़ी प्रेम पच नहिं पावै । तौ लग परम धाम रस लीला कैसहु नजर न आवै ॥ प्रीति पवन लागि उठती निसु दिन प्रेम समद की लहरें । प्रेमी परैति परम प्रीति सौं नैमी नैकु न ठहरें ॥ ७२ ॥ या सनेह सागर की लीला केसरि कैसौ कंदु । तातै सुनै श्रवन पावत है पूरन परमा नंदु ॥ जो सनेह सागर की लीला सो जन जानौ वातै । मन रंजन हैहि सकलगन की कान्ह मिलन की घाटै ॥७३॥ श्री राधा वर विमल गुनन कौ निसुदिन सुनौ सुनावी ॥ आनँद उदित होत उर अतर मन बाँछित फल पावौ ॥ ७४ ॥ इति श्री सनेह सागर लीलायां श्री बगसी हंस राज विरंचिताया श्री राधा जू सपा भेष वर्ननो नाम न म तरगा ६ ॥ दोहा ॥ कविता कौ परनाम है लिपिता कौ मनुहार । भूलौ विसरौ होइ जहँ लीजौ मित्र समहार ॥ १ ॥ या सनेह सागर की लीला वाचै अरु सुनै ताकौ राम राम लिपितं चैन सुप अगर चारे कुवार वदि १० ॥ सुक्रेकौ ॥ सवतु ॥ ००१८६१ ॥ मुकाम नागौध ॥ रत्नपान ॥ राम राम राम

विषय—कृष्ण लीला का वर्णन ।

संख्या १६५ सी. विरह विलास, रचयिता—बकसी हंसराज (राठ, हमीरपुर), कागज—देशी, पत्र—१७०, आकार—९३ × ६३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुपट्टप्)—३५७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८११ = १७५४ ई०, लिपिकाल—सं० १८४५ = १७८८ ई०, प्रासिस्थान—बाबू राममनोहर विचपुरिया, सु०—पुरानी वस्ती, कटनी मुरवारा, जबलपुर सी० पी ।

आदि—श्री गनेस जू श्री सीताराम जू श्री भवानी जू श्री सिव जू श्री हनुमाजू

अथ विरह बिलास विष्वत खीपई श्री सत गुण सरमुठी गन नाहक । मिय सारदा सर्व
 सुप दाहक ॥ कर तुग अर तुमहि हीं ध्याऊ । गिरदी प्रेम बुधि वर पाऊं ॥ १ ॥ तिम
 तुमरे पद पंऊन खीगरे । तिम कह तुम सिगर सुप खीगरे ॥ क्यु कबिता पै करत बिचारी ।
 कर्म्या तिरिबि यह अरज हमारी ॥ २ ॥ कबिता वहुत मये कलि माही । तिम समान मेरे
 मत माही ॥ कदि पनु क्यु कह बचन प्रक्यम् । ससि समीप तिमि नपत प्रक्यम् ॥ ३ ॥
 जा शीबि दित प्रेम प्रक्यम् । कही प्रिय ती बिरह बिलास ॥ आसिक अर माम्क सुदाणे ।
 दित मिल द्विप मी छवि छाणे ॥ ४ ॥ होदा ॥ महि सेवा महि बुधि पर, महि क्यु ग्यान
 विचार । प्रेम कथा आरमिय नाय बिबाह्य दार ॥ ५ ॥ इस राज प्रज राज के, अर
 कमल उर आनि । प्रेम प्रीति श्री रीति सी, विरह बिलास बपाणि ॥ ६ ॥

अंत—॥ होदा ॥ प्रेम प्रीति सीं बरनिचीं, प्रेम प्रीति श्री रीति । प्रेम प्रतीति सीं
 समुदियो, दिस करि प्रेम प्रतीति ॥ ६२ ॥ छद् गीत क्य ॥ हरि के अरिष बिधिष क्युत
 अति परिष सुगावहीं ॥ मनकादि कुज सुप गिरा जन पतिपार कादि न पावहीं ॥ गंगहीर गुन
 मागर बिसय पै मुह्व दिस मह क्यावहीं ॥ पबदि कदा कगि प्रेम गुण अरनार विदुमि
 ध्यावहीं ॥ ६३ ॥ होदा बिरह बिलास बिलास यह जानहु प्रेम निरेनु । इस राज पराधी
 रबिर, राज रमिठ अनु हेनु ॥ ६४ ॥ हरि गुण सत गुण की कृपा, मयी प्रेम परगास ।
 प्रेम प्रीति श्री रीति सीं, बरम्या विरह बिलास ॥ ६५ ॥ इति श्री विरह बिलास श्री वगमी
 इस राज बिरचिने जागनी लीसा परनं नाम पंचा इमोप्याब ॥ १३ ॥ इति श्री विरह
 बिलास संवर्ण मुम मस्तु ॥ अलं रत्नोत्पलं रत्नं रत्नं सतिष्ठ पंचनं । मूरप इस्ते न इतस्य
 मेवं रत्नं पुलकं ॥ १ ॥ अक्षर परंत्वात्तामि न लिपतं मयाग्द मुपं अमुप्यं पा मम
 होया न हीयते ॥ इति मुम संवतु ॥ १३३ ॥ ईमाय बरि ४ कुप पासरे श्री समाप्त सु परना
 सीताराम नू सदाह्य पाई ताकीं सीताराम विरिने प्रो अत्रय सिप कटी ग्राम बासिना—

विषय—मंगला अरग, मन्नाबना अर आभय दाता क्य वंश परिचय—पद्मावती
 पुरी सुपदाई । महिमा तामु पुरान न गाई ॥ माननाथ अगनाथ सुदाणे । आह तहो अनि
 दित सीं छाणे ॥

× × × ×

तहो तहो हूँ हैम बिदेगा । मिले आह छत्र सारु भोसा ॥ चण्य चण्य जग छा
 भोग् । तार तस्य लीमो उपदम् ॥

× × × ×

कामी मुर पंचम प्ररु । गहिर बार रवि बंम । देपी के वरदान है । बुदिना
 अरतम ॥

× × × ×

तिम मुन नून हिरद मु हूँ । गरी कस्यव कुल भांम ॥

× × × ×

तिम के मुन अनि प्ररु हूँ । ममा विर्य मुर भांम ॥

× × × ×

सभासिंह सुव प्रचल हुव । श्री नृपसिंह अमान ॥ (२) कवि वश वर्णन—
 कस्यप कुल कायस्थ मनि । श्री निवास श्री वास । हुव हमीरपुर वंस वर । वैद सु माधव
 दास ॥ द्वै सुत माधव दास के, जिमि लछिमन खुराइ ॥ जेठे मुरली धर उदित । लहुरे
 केसव राइ ॥ मुरली धर सुत तीन हूव । उदित परम उदार ॥ कासी सुर बुंदेल नृप ।
 गहिर वार दरवार ॥ सुप निकेत पुनि परम सुप । के निधि परम प्रवीन । इंसराज लहुरे
 सवनि । गुरु सेवन जिन कीन ॥ विजै सपा गुरु भाई हमारे । तिनके चरन कमल उरधारे ॥
 (३) ग्रंथ रचना काल.—इंदु इंदु वसु इंदु धरि । सवत हिय निरधार । माव सुहु की
 पंचमी । कीन्हों ग्रंथ विचार ॥ (४) कृष्ण के गोकुल से मथुरा चले जाने पर व्रज वनि-
 ताओं की विरह दशा का विस्तृत वर्णन ।

संख्या १६६ ए. गिरधर जी की मुरली, रचयिता—हरदास, कागज—देशी, पत्र—
 ८, आकार—४ × ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३, पूर्ण,
 रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०,
 लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तस्थान—ठा० गंगासिंह, ग्राम—मझगाव,
 डाकघर—ओयल, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गिरधर जी की मुरली लिप्यते ॥ श्री कृष्ण
 कन्हैया और वनवारी वसता गोकुल नगरी में । गूजर दान दहीलै निकसी नहीं उजेला
 नैनन में ॥ पहिला महीना अपाढ़ लागा जगल हो रही हरियाली । अथ जंगल हो रही
 हरियाली ॥ दम पर दम पर याद तु करती झुरती अपने महलों में ॥ गिरधर मुरली वजी
 कृष्ण तेरी आवाज सुन कर मैं दौड़ी ॥ रिम छिम रिम छिम मेहा वरसे नंद गांव पर
 लगी झड़ी ॥ १ ॥

अंत—जेठ महीना तपे देवता सारद मन किरपा कीजै श्याम सपी हरदास तुम्हारी
 कंठ ज्ञान सुधि बुधि दीजै ॥ वंशीवजावन वशीवजावन वंशीवजावन की लकड़ी । भजमन
 राधे भजमन कृष्ण भजन करौ तुम खड़ा खड़ी । गिरधर मुर्ली वजी कृष्ण तेरी आवाज
 सुनकर मैं दौड़ी रिम छिम रिम छिम मेहा वरसे पनवट पै लग रही झड़ी ॥ इति श्री
 गिरधर मुर्ली की वारह मासी हरदास कृत सपूर्णम् संवत् १९२७ चैत्र शुक्ल नवमी लिपितं
 रामवली माघ मास कृष्ण पक्षे द्वादस्याम् संवत् १९२७ वि० ॥

विषय—राधाजी की विरह की वारामासी ॥

संख्या १६६ वी. गिरधर जी मुरली, रचयिता—हरदास, कागज—देशी, पत्र—
 २, आकार—४ × ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८५, पूर्ण,
 रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—
 सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तस्थान—प० रामनाथ पुजारी, ग्राम—विसवां, डाकघर—
 विसवां, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गिरधर जी की मुरली लिप्यते ॥ श्री कृष्ण
 कन्हैया और वनवारी वसता गोकुल नगरी में, गूजर दान दही लै निकसी नहीं उजेला नैनन
 में । पहिला महीना असाढ़ लागा जगल हो रही हरियाली । अथ जंगल हो रही हरियाली ॥

दम पर दम पर पाद तु करती सुरती अपने महलों में । गिरधर मुरली बजी कृष्ण तेरी
 आवाज सुनकर मैं बीबी ॥ रिम रिम रिम रिम मेहा बरसे मंद गाँव पर छागी झाड़ी ॥ १ ॥
 वृजा महिला सावन कृगिपा मेरा जियरा है रोगी । जोसी पंडित सबही पूजे और पूछा
 रमता जोगी । गिरधर मुरली बजी कृष्ण केरी आवाज सुन कर मैं बीबी ॥ रिम रिम रिम
 रिम मेहा बर से पनघट ऊपर छागी झाड़ी ॥

अंत—जठ महीना तपे देवता सारद मन किरपा कीरै श्याम सयी हरदास तुम्हारी
 कंठ शान मुधि मुधि बीबी ॥ बंशी बजावन बंशी बजावन बंशी बजावन की लकड़ी । मज
 मज राधे मज मज कृष्णा मजन करो तुम पदा पदी ॥ गिरधर मुरली बजी कृष्ण तेरी
 आवाज सुनकर मैं बीबी, रिम रिम रिम रिम मेहा बरसे पनघट पर छाग रही झाड़ी ॥ १२ ॥
 इति श्री गिरधर मुरली की बारह मासी संपूर्ण संवत् १९२० वि० ।

विषय—गिरधर मुरली की बारहमासी ॥

संख्या १६६ सी कृष्ण का बारहमासा, रचयिता—हरदास, कागज—देशी,
 पत्र—१२, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेद)—६०,
 पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—स० १९०४, प्राप्तिस्थान—५०
 रामबाघ शुक, ग्राम—सिबगाढ़, ढाकघर—सिधीली, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कृष्ण का बारह मासा लिख्यते ॥ बारामासी
 कहत है श्री गणेश पद संद । प्रीत सपिन ही को है क्यों छागी नद नद ॥ श्री राम की को
 अपने कटे जम की छासी ॥ कोहें दुनिया जारी को करने दे हाँसी । से जीन हाय सोटा जम
 थोर मयासी । मित्र राम नाम सार बारामानी । ततबीर पणित सब मैं जाई के सचने
 प्रनाम करके मायो नबाह के ॥ गुन बिन सुच रहोह श्री गर दिल मिलाह के बिन राम
 नाम मर से रसु पडाह के । को रितु बसंत मैं ये सयी हमसे बिहुरे कंत । सब बिरहा के
 बम भग मुरार मुनि सब संत ॥

अंत—श्री राधे कृष्ण कृष्ण जपत नाम है । बाराम रहे साधन में काठी जाम है ।
 मन होह ऊजस सगत हरनाम रहत है आसक सराय प्याले मर मर से रे तन मन सो
 छागने मेह बिन तुम की देते छबि छके मिन रूप कहत हरदास है परतीत प्रेम अत्यंत
 महदूब पाय है इति श्री बारामासी संपूर्ण । सिखतें गंगा गणेश मित्र बहर का निपासी
 संवत् १९०४ वैश्र मासे शुक्ल पडे त्रितीचम् ॥

विषय—श्री कृष्ण का बारह मासा और कुपुजा से प्रेम करना राधा का विरह
 आदि वर्णन ।

संख्या १६६ टी भी कृष्ण की बारहमासी, रचयिता—हरदास, कागज—देशी,
 पत्र—८, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेद)—६०,
 रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकार—स० १९२० = १८७० ई० प्राप्ति
 स्थान—५० देवतार्दन मिश्र, ग्राम—मुयतानपुर, ढाकघर—धाना, जिला—उज्जैन
 (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बारह मासी कृष्ण जी की लिखन ॥ हमको

दरम देव नंद लाला । अरज करै सगरी वृजवाला ॥ क्वार माम सांझी सब सखियां पूजत होकर चंदन थाला । हमतो दरस कृष्ण विन देखे भस्म लगाये ओढ़े मृगछाना ॥ सारो वन हर वीन वजा के मानो हम पर जादू डाला ॥

अंत—सावन सखिया झलझला बहियां पीतम के गल डाला । हम दृढ़त फिरती हैं वन वन दृढ़त चरन पडे हैं छाला ॥ पावन करन करन हर ग्रीवा पहिनो गले मुतियन की माला ॥ भादों महीना जन्म कृदन का सुंदर की मिट गई सब ज्वाला ॥ दरसन देख सब आनंद पायो हरीदास हरि हैं प्रति पाला ॥ हमकौ दरस देव नंद लाला ॥ अरज करै सगरी व्रज वाला ॥ इति श्री कृष्ण की वारह मासी संपूर्ण इसके पश्चात एक वारह मासी और भी हरिदास की है जो विलकुल फटी कोई महीना पूर्ण नहीं इसमे नोट नहीं की लिखा जोधामिह संवत् १६२७ वि० ।

विषय—विरहिनी की वारह मासी ॥

संख्या १६७ ए. हरनाम का वारहमासा, रचयिता—हरनाम, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभरोसे मिश्र, ग्राम—बडौली, ढाकवर—नेरी, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ हरनाम का वारहमासा लिप्यते ॥ लगा असाढ़ सुहावना घर गरजत चहु वोर । पी पी करत पपीहरा सो बोलत दादुर मोर ॥ छंद ॥ अब तो सपी असाढ़ मेरी सुध पिया ने ना लई । वन गरज धैरन वादरी मेरी नाँद नैनन की गई ॥ किस्से कहूं अपना करम सपि रितु अगम वालम नहीं । क्यों कर जिऊँ विन पी मुझे वरपा की रितु धैरन भई ॥ विधना ने मेरे कर्म में पिय की जुदाई लिख दर्ह । चकवी की जो गत पत विना सखि सोई गत मेरी भई ॥ सुना भवन हरि नाम विन पी पी पपैया कर रहा । गई भूल सब सुख देख दुख पापी पिया ना धर रहा ॥

अंत—॥ छंद ॥ लगा जेठ उड़ती सी खयर प्यारे की आ कहि एक ने । झट पट मैं उलट किवाड़ के पट से लिपट गई देखने ॥ फरकी भुजा वाई मिले सांई चले परदेस से । चल देखो सखि आये पिया प्यारे रंगीले भेप से ॥ खुसियां भई हैं मुझको भारी नौवतें वजने लगीं । जिसका पिया जिससे मिलै खैरात सब वटने लगी ॥ सुबस वसो वो नगर घर जहा वारा मासी हो रही । विछड़े पिया हरनाम मिले प्यारे के बल बल मैं गई ॥ इति हरनाम का वारामासा संपूर्णम् ॥ संवत् १९१७ जेठ सुदी दसमी लिखा गया प्रसाद कायथ नौवतगंज के बीच ॥ राम राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—एक विरहणी का वारहमासा ॥

संख्या १६७ बी. हरनाम का वारह मासा, रचयिता—हरनाम, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री अजयपाल सिंह, ग्राम—गाजीमऊ, ढाकवर—सिधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री यज्ञेसायनमाः अथ हर नाम का बारह मासा लिप्यते ॥ श्लो० ४ कण्य
असाइ सुहावना धन गरबत चहुं ओर । पीपी करत परीहरा सो बोकत दासुर मोर ॥ छंद ४
अथ सो सखी असाइ आया पिया ने सुधि मेरी भा कई । धन गरव बैरव बाहरी मेरी भीव
मैवम की गई । किस्ते कहु अपना मरम सकि रत अगम बाकम नही । क्यों कर जिठ
बिन पी मुझे बरपा की रिठ बैरव मई ॥ विचन्य मे मेरे कर्म में पिया की सुदाई किच कई ।
बहती की ओ मय पत बिना सपि सोई गत मेरी मई ॥ सुमा भवन हर नाम बिन पीपी
पीहा कर रहा । गई भूछ सब सुप देख दूख पापी पिया ना बर रहा ॥

अंत—छंद ४ कण्य जेठ उठती सी कबर आ कही एक ने । इत पट में उखर किबाइ
के पट से फिपट गई देखने (जागे की कब्रि बही है) फरबी मुज्य बाईं मिले साईं चले
परदेस से । बक देखो सकि आवे पिया प्यारे रगले मेप से । सुसिया मई है सुझके
मारी नीबतें बजने लगी । जिसका पिया जिस्ते मिले शीरात सब बरने छगरी । सुबस बसो
जो नगर धर जही बारा मासी हो रही ॥ बिकड़े पिया हर नाम मिले प्यारे के बक बक में
गई ॥ इति श्री हरनाम का बारामास संपूर्ण समाप्ताः संवत् १९१० वि० ज्येष्ठ शुद्ध
पूर्वमासी ॥

विषय—एक की का अपने पति की याद से व्याकुल होना ।

संख्या १६८ रंगमान माधुरी, रचयिता—हरिदेव (मथुरा), कागज—देसी,
पत्र—१०८, आकार—१ × १ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुपुष्प)—
१०६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, किरिबकर—सं० १८०३, प्रातिस्थान—
श्री रामस्वरूप शुद्ध, ग्राम—सरैया, बाकबर—बिसबाँ, जिला—सीतापुर (बचन) ।

आदि—श्री यज्ञेसायनमाः श्री राधा बहमो लबति ॥ अथ श्री रग भाव माधुरी
लिप्यते ॥ श्लोका ॥ इस मय तिन अर्णद निधि परम मेम के कर ॥ बसी सदा द्विप दास के
गिरधर गोकुल चंद ॥ १ ॥

अंत—कल्प्य ४ ज्ञान जसधि अरु सत मति अनुदिधी सुरित ॥ बादि हृन्द जक
अम्म बरन मुहन मनु बिदित ॥ शोहा ॥ दरसन थो संग्रह कन्यो अपनी मति अनुसार ।
सुद्ध होइ कित बेपि कै कीर्ती रसिक विचार ॥ क्यों सब में इस मान है क्यों ये इस
अस्वसत । रसिकन को अर्णद कर पूरत सब बिधि आस ॥ देपत जति सुप होत है भाव
माधुरी रंग । दरस हई किन्ती करत सदा रहीं ही संग ॥ रग रंग के रूप सपि सब बिधि
पायो रंग । रंग दरस की दीजियो सब रंगनि की संग ॥ इति श्री कर्णोपनाम गोकुलस्य
ज्योतिर्वित हरिदेव महात्म्य हरिदेव अर्णद गुण्डिता रंगमय माधुरी वर्णने कैकि दरसन नाम
इसम अस्वसा श्री राधारमन लिपि कुठ अत्र अरु प्राकरण पटनाई महाराणी जी श्री श्री
श्री कर्मी जी राजा बुजेन्द्र श्री श्री श्री श्री एणपीर सिंह संवत् १८०३ मिति अमाव
बही १३ रविवार शुभे ॥

विषय—हाव भाव, रस, वायिका प्रापक मेह, अंगर आदि ।

संख्या १६९. चारदा स्तोत्र, रचयिता—हरिहर मझा, कागज—साधारण, पत्र—
३, आकार—१३ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुपुष्प)—१०,

रुडित । रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री गंगाप्रयाद् पांटे, ग्राम—
अशोकपुर, ढाकघर—पट्टी, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—दुर्जला मदुलतां कुसुमांबुज पेमला । दशन दाडिम वोज विराजिता हरि
॥ ४ ॥ स्तन विडंबित है मन उर्नती मद् मरोजित कज्जल कुंभ हा ॥ चरण कौंति जिता
रूण पंकजा हरि ॥ ५ ॥ विमल विद्रम पाणि रहा मटा मल्लि मद्भव मालि लम्बुजा
कमल कुंकुम यार्चित चित करा हरि ॥ ६ ॥ प्रकट पाणि करे जय मालिका कमल पुस्तक
वेणु चराधरा ॥ धवल हस समा श्रित वाहना हरि ॥ ७ ॥ कुमुद कैंठभ मान पनोदरी ।
सकल मंगल धूरुह मंजरी ॥ बहु धनार्पित तामृत बहुरी हरि ॥ ८ ॥ कमल कांधमितां
चरणावरा, मुकुट ककन हार सुदगजा ॥ सुकवि मानम मानमिमारना हरति गौरि विगौरि
विगौरिजा ॥ ९ ॥ डरति शैव पतिर्वसु भूधरा सकल धर्म सुधा रम सागरा । मुनिन मानम
जापति मारवी हरि ॥ १० ॥ सु नर रा नर रा नर रा गदा सुयुव मा युध मान दा । सु
कविता कविता कवितारदा हरि ॥ ११ ॥

अत—स्तुतिमिमां पठते प्रति वासरं, जगति ज्योति ग्रह सुप मंपदा । भवति तस्य
सदा वरदायका, न भयो लोक सुप लभते नर. ॥ १२ ॥ मुनि विलोचन वान महेय, मेन
भस्याति चतुर्थी प्रति भुव्रां । द्विज वराण वच न्तवन गिरि सुमनो विबुधो सुमति हरि ॥
इति श्री हरि हर ब्रह्मा विरचित सारदान्तोत्र मपूर्ण :-

विषय—शारदा-स्तोत्र ।

संख्या १७० प. साहित्य सुधानिधि, रचयिता—हरिप्रसाद (रीवां), कागज—
देशी, पत्र—१०५, आकार—१२ × १० इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण
(अनुष्टुप्)—३५७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं०
१९३३ = १८७६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तस्थान—श्री रतिमान
सिंह, ग्राम—रुस्तमपुर कला, ढाकघर—अजगंत, जिला—उत्तराव ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ साहित्य सुधा निधि लिप्यतेः ॥ त्रिविधि ताप
त्रामक विजन स्वजन सुमंगल रास, वटां करन गनेम को करन सुवुद्धि प्रकाय ॥ कवित ॥
पुरुष अनादि आदि अंत नलहत जासु ध्यावत मृजाट सिद्धि सिंगरे भुवन की । वितरत
चारो फूल चारि भुज राजे मजु रापत न त्राम न्त मन में टुवन की । हरिचंद्र विबुध
मिलिंदुळ मकरंद काज उर अभि लाप पद पंकज टुवन की । वालक विनोद वर वलित
विलास भाम छवि गिरिजा के गोद गिरजा सुवन की ॥

अत—ममुक्षि वृक्षि मन रीक्षि हैं कविजन सुमति अगाध, सकल भेद साहित्य
के जिन जानत सुम साध ॥ सुजन सील टकन सहित विगरी लेत सुधार । कुजन कूर
करिका सदस अनुपम देत विगार ॥ यह साहित्य सुधा निधे जो देपे चितु लाइ । ताहि
सकल साहित्य की सब विधि त्रपा बुझाइ ॥ ओनइस सै त्रैतिस विसद सबत माधव मास
कृश्न पक्ष दुत्तिया दिवस पूरन मो रसरज ॥ सोरठा ॥ लहि सासन ईसान समुक्षि वृक्षि
प्राचीन मति । विरच्यो ग्रंथ प्रमान महाराज रघुराज हित ॥ मो मति अति गती हीन रचन जोग्य
कष्टु ग्रथ नहिं । पे जिन सामन दीन तासु कृपा पूरन प्रगट ॥ करि विनती सत कविन सो

यह मांगल हरि चंद्र । अपि अनुचित भाषा अमित क्षीरि सौंभि सुउद ॥ अति अगाध साहित्य मति मुगम किया यह हेत । बहि मुनि गुनि मन रीसि हैं सज्जन मुमुदि निकेत ॥ हरिप्रसाद साहित्य की अमित कठिन मग जानि । सरस हेत यह ग्रंथ में विरच्य विमल विधान ॥ छंद ॥ अब कवि सूरज चंद्र उदधि मरजाद पुहमि पर । अब कवि सुर हुम काम धेनु बर विमल विनुप घर । अब लगी विव स्तिर गंग वसति अर्धग जमनि जग । अब कवि हरि अब विमल प्रगत जानेंद कंद मग । हरिचंद्र भार भूतल सकल सहम मीस तिरपर धरप । रघुराज सिंह रूप मुकुट मनि अचल राज तब कवि करप ॥ दो० ॥ श्री श्री हरि गुन पद पनुम परम परमानेंद । अब अब श्री रघुराज रूप जग कम जानेंद कंद ॥ इति श्री राम राज्य महाराजा विराज राजा बहादुर श्री रघुराज सिंह नू देव प्रसन्नार्थ हरि प्रसाद विरचिते साहित्य मुधा निधि ग्रंथ संपूर्ण । समाप्तः श्री राम राम राम राम संबत १९३३ वैश ॥ दो० ॥ राम यमत्रय निधि मयी मयत सुपद विचार । यह छळ दृतिपा गुरी कवि हरिचंद्र विचार ॥

विषय—साहित्य वर्णन ॥

संख्या १७० श्री साहित्य मुधानिधि रचयिता—हरि प्रसाद जी उपनाम हरिचंद्र, कागज—माधारण, पत्र—३५५, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अक्षुद्र)—५३८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य कवि—मागरी, रचनाकाल—सं० १९३३ = १८७९ ई०, विविक्त—सं० १८८३ = १०२६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रघुवरदेवास विहार अष्टपाक-मुनिमल म्द, कबीरचौरा बनारस ।

आदि—अप सूचीपत्र, साहित्य मुधानिधि—श्रीहा ॥ प्रथम मांगला चरम कवि, पुनि रूप बंध प्रमंग । क्रिय कवि बंध प्रमंग कपु विरचित प्रथम तरंग ॥ कवि प्रबंध काल बहुरि, कविन प्रवाजन जान । हनु रीति लक्षण किर्या, दुती तरंग बघान ॥ यह तीसरे तरंग श्री, मध्य अर्थ विचार । वाच्य, लक्ष व्यंजक बहुरि, तात्पर्य निरधार ॥ कहीं अनुर्य तरंग श्री, अजि को विमल विचार । हाप भाष सुग जतिन जहें, रम के विविध प्रकार ॥ यह पचमें तरंग को, यहविधि करी बघान । गुनी भूत व्यंगदि कहीं मयम, कविता जान ॥

अंत—पृष्ठ १८१—१८२

१—शृंगार शोचद—अंगमुनि मंत्रम अमल बमल पहिरना जाबक केम ममा,न
 मांगमेंदुर अगना भासतिरुड चिनुक निड बनाक मेदही लगाना अगजा
 अंग में भूपनगुन मुगीध लगाना मुपुना हतिरंगना अपर राग काजर लगाना
 मत्तारिचि—इक्षप अदि बनिह विष्वाभिन्न, भारह्राज जमदग्नि गीतम ममीर तीम—
 मीनम मंद मुगीध X X X
 १ १ १

विषय—अलंकार शास्त्र का पूर्णांग विवेचन—विशेष—महाराज रघुराज सिंह की वंश-परंपरा का विस्तार पूर्वक वर्णन है ।

ग्रंथ निर्माण काल—चौनइस से बत्तीस विमल । संवत् अस्वन माम । सुकुपक्ष दसमी विजय, क्रिय प्रारंभ प्रकास ॥ प्रथम मंगला चरण कहि, पुनि नृप वंस प्रसंग । क्रिय कवि वंस प्रसंग कष्टु, विरचित प्रथम तरंग ॥ × × × ग्रंथ समाप्ति काल.—चौनइस से तैतीस विसद, संवत् माधव माम । क्रस्न पक्ष दुतिया दिवस, पूरन को रस राज ॥

संख्या १७१ ए. रत्न मुहूर्त्त संग्रह, रचयिता—हरीप्रसाद (पार्वती अयोध्या), कागज—साधारण, पत्र—४४, आकार—५×३^१/_२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१९ = १८६२ ई०, लिपिकाल—स० १९५१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री जगन्नाथ प्रसाद, ग्राम—अजगरा सुर्द, डाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम० ॥ दोहा ॥

गौरी सुत पद वन्दि कै । निज गुरु पद मिरनाय । कष्टु ज्योतिष वरनन करत । दो मिल होहु सहाय ॥ १ ॥ रत्न महरत नाम यह । भाषा करत विचारि । हरि प्रसाद द्विजवर कहत । बहु ग्रंथन मत डारि ॥ २ ॥

अंत—भरणी कृतिका रुद्रअहि । द्वि देव अरु शत तार । रिक्ता पछी अष्टमी । परिवा कुहु वेकार ॥ द्वादशि शनि कुजवार तजि । याम्या मन को वादि । द्विटा भाव चर लजविनु । स्थापन देवादि ॥

×

×

×

इति श्री हरि प्रसाद मिश्र विरचिते रत्नमुहूर्त्त संग्रह प्रकरण पष्ठम् ॥ संवत् १९५१ ॥

विषय—ज्योतिष (मुहूर्त्त शास्त्र)

ग्रंथ निर्माणकालः—अंक भूमि गृह मेदिनी । सम्बत्सर मधुमास । सित दशमी बुधवार जव । तव यह कियो प्रकास ॥

प्रयत्नकार परिचय—अवधपुरी के पवन दिशि । जोजन एक प्रमान । नद अरु ग्राम पुनीत अति । पारवती जग जान ॥ अलपी के सुत रामधन । ताको नाम उदार । हरि प्रसाद सुत ताहि के । कीन्हो ग्रथ विचार ॥

संख्या १७१ बी. रत्न मुहूर्त्त संग्रह, रचयिता—हरीप्रसाद मिश्र, कागज—साधारण, पत्र—१५, आकार—६×४^३/_४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामशरण उपाध्याय, ग्राम—पूरा अंटा, डाकघर—गडचारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—१७१ ए के समान ।

अंत—हरिप्रसाद मिश्र विरचिते रत्न मुहूर्त्त संग्रह प्रकरणम् पष्ठम् समाप्त ॥

सकल सुजन पद वन्दि कै । विनती करौं बहोरि । जो प्रति देखा सो लिखा । चाँचौ अक्षर जोरि ॥ हस्ताक्षर संत वकस सिंह सोमवसी ॥

विषय—ज्योतिष ।

संख्या १७२. संकट मृत कथा, रचयिता—हरिश्चंकर, कागज—साधारण, पत्र—
३६, आकार—७ १/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुपुष्ट) — २६८,
प्रकृत, रूप—शीर्ष, पत्र, क्रिपि—मागरी, रचनाकाल—सं० १९२१ = १९२४ ई०,
लिपिकाल—सं० १८०६ = १७४९ ई० प्राप्तिस्थान—श्री वासुदेव पंडे, ग्राम—कमास,
बाकुर—माधोगंज, जिन्हा—मत्तापगढ़ ।

अंत—जी या कथा सुनिं परि प्पानु । बाई भाउ (भायु) कपि संतानु ।

रिपु बाकिन्न अह माई सोयु । सवदा करि सर्व सुप मोग ॥

होहरा—हरि संकर हुज ठण्परी । संका करी न कोइ ॥ भोता यकता हुत म्पता ।

मन बडिठ फठ होइ ॥

इति श्री गणेश महादे श्री हरिचंड़ पुराणे । पठित श्री हरिसंकर विरचिते सतहणे
संकट मृत कथा चतुर्थोध्याय ॥ ४ ॥

होहरा—बहु विधि भाषा उचारी । कीन्ही कथा रसाळ । पठत शुक्त मन में फुरी ।
जी सुमिरी गोपाल ॥

इति श्री गणेश मृत कथा संपूर्ण समाप्ता सुभमस्तु मंगलं ब्रह्म कथिक बदी ७
संख्य १८०९ मुकाम मळ जीसी प्रति पादुं हीसी उचारी मम होप न हीपते ॥

विषय—(१) पृष्ठ १ से १३ तक सुस्त । पृष्ठ १४ से २६ तक—गणेश के मृत का
महत्त्व । राजा तथा प्रधान का आद्वान । प्राज्ञग बालकों का अदसे जीवित निकळना ।
गणेश स्तुति ।

(२) पृ० २५ से पृ० ३५ तक—हूसरा अध्याय । संकट हुत । हुत के सुप्त पात
हाने का कारण । राजा सुधिद्वि द्वारा हुस मृत के क्रिपु जाने का कारण । मृत का महत्त्व
तथा विद्याय पाँडवों द्वारा संकटा मृत का सम्पन्न किया जाना और उसमें पाँडवों की
संसप्तता ।

(३) पृ० ३६ से पृ० ४८ तक—तृतीयाध्याय । उद्यापन के पश्चात् धर्मसुत द्वारा
संकट मृत तथा गणेश को धन्यवाद देना । सीता हरण के पश्चात् बतिह जी के आदसानुमार
संकट मृत का किया जाबा और उसके फलस्वरूप उनके विजयी होने का वर्णन । ब्रह्महत्या
के होप का विचारण । सात ही सनाहयोग की स्थापना । मृत का फळ ।

(४) पृ० ४९ से पृ० ७० तक—चतुर्थ अध्याय । बतिह जी द्वारा, राम के अनु
शेष पर मृत का इतिहास सुनाया जाना । राजा हरिचंड़ का आद्वान, नारद के उपदेश
से हरिचंड़ का मृत रचना । गणेश जी की उत्पत्त्यादि का विवरण तथा मृत का फळ वर्णन ।
और उसके द्वारा एक राजा की कुदशा के अन्त होने का वर्णन । इस कथा वर्णन का
इतिहास । प्रस्तुत मृत के निर्माता तथा गुप का उल्लेख—

“अदि ‘हरिचंकर’ सुभ मति रुई । गुपचर जोर मिथ सों करी ।” कथा मत्तयादिका
फस । प्रथ समाप्ति के पश्चात् इबत करमे की विधि ।

संख्या १७३ प. भाषा गीता शान, रचयिता—हरी बल्लभ, कागज—देसी पत्र—
८४, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुपुष्ट)—८४०५, र्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७१ = १७१४ ई०, लिपिकाल—
सं० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राम भरोसे, ग्राम—केवलपुर, जिला—पौरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री राम कृष्णायनमः ॥ अथ हरिवल्लभ कृत भाषा गीता
ज्ञान लिप्यते ॥ दो० ॥ उँकार जु ब्रह्म यहँ असि गरंथ के नाम । सोभा मन जू श्रेय है ।
मन मन्ननि माला धाम ॥ सप्त पड गुन विश्नु हँ । वेद व्याम रिपि जानि । अनुष्टुप छद सु
जाति है परमात्मा सो मानि ॥ सोच वस्तु अनसोचिहँ पठित वचन न होय, भक्ति वंत सर्व
धर्म तजि सो सरनहि रहि सोइ ॥

अत—यह गीता अदभुत रतन श्री सुप क्रियो वपान । वार वार निरधार के परा
भक्ति को ग्यान ॥ भक्त वस्य श्री कृष्ण जु है यह कीन्हो निरधार । करि भक्ति इच्छा सबे
यहँ वेद को सार ॥ श्री मथुरा मडले श्री आप्रे भू देव । यह जु कही गीता अर्थ बुधि सिधि
जग हित भेव । यह गीता अर्थ में सबै अनुष्टुप छद । हरिवल्लभ दूदोहा रचे याते भरि
आनद ॥ हरि वल्लभ भाषा रच्यो गीता रुचिर बनाय । सदाचार निरनै भयो अष्टादस
अध्याय ॥ सत्रह सै जु एकोतरा माव मास तिथि ग्यारसै । गीता को भाषा करी हरि वल्लभ
सुप सार सँ ॥ इति श्री भगवत् गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया जोग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन
सवादे मोक्ष सन्यास योगो नामष्टादसोध्याय ॥ भगवत् गीता परम जो पदत सुनत चित
लाय । वाढ़त भक्ति अपंड सो हरि श्री हरि सदा सहाय ॥ जो कोट चाहत भव तन्यो कृष्ण
चरन में वास और सकल विधि छोडि दे करि गीता अभ्यास ॥ गीता का टीका जु यह श्री
हरिवल्लभ कीन्ह मोसे अति मति मंद को सुगम ग्यान कहि दीन्ह । वेनी सी पावन सदा
देनी है फल चारि । स्वर्ग नसेनी हरि कथा नर्क नेवारन हार ॥ गीता लिप्यते रिपिनाय
त्रिपाठी सद्दरावाद के सवत १९०४ कार्तिक मासे शुक्र पक्षे तियौ पौर्णमास्या चद्रान्तरे
शुभभूयात सीता पति रघुपति महाराज धिराज श्री कृष्ण जदुराय माधव वृदावन चंद जै जै
करुणा अँन ॥

विषय—भगवद्गीता का भाषानुवाद

संख्या १७३ वी. तगीतसार सुधाध्याय, रचयिता—हरिवल्लभ, कागज—साधारण,
पत्र—१४, आकार—१० $\frac{३}{४}$ × ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—
२५०, खडित । रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रामप्रसाद मुराज, ग्राम—
पूरा विश्रामदास, ढाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री राम चंद्रायनमः ॥ श्रीमते रामानुजायनमः ॥ छंद इंडा ॥ छायति है
छवि ठीकहु ते लपि जोगिनि जूह तहाँ जय दंपति । भारी दिये द्रुतिया हरिवल्लभपानिरपेते
अजो रति कंपति ॥ लाल विसाल लसँ अति ही शिव भाल को नैन करौ सुप सपति ।
सौ प्रगट्यो अनुराग हिये जू अलिंगन कीन्हों जवँ मिलि दंपति ॥ १ ॥ दोहा ॥ गीत वाद
यो नृत्य ये, कहियत है सगीत । सो सँगीत द्वै विधि कहे, मारग देसी रीत ॥ २ ॥ देपरायो
जो विरचि ने, वई भारकर प्रीति । शिव जू के आगे नच्यो, सोई मारग रीति ॥ ३ ॥ देस
देस की रीति में, रीमत्त याहि सुजान । सो सँगीत देसी कहत, जानहु ताहि प्रमान ॥ ४ ॥

भंग—दोहा सारो सुर प होठ है सुत ते विनि क्य नाम । पदक रूपम गंवार अरु,
पुनि मध्यम अमिराम ॥ ८१ ॥ पंचम धैरल और पुनि, कइत निवाधि सोइ । ठिमकी
संगा वूसरी, सारि गम पचमरी हाइ ॥ ८२ ॥ पदक सुरदि केही कइ, रिप भइ घातक
आनि । छागर कइ गंधार को मध्यम अंगेच पयानि ॥ ८३ ॥ पचम सुर कोकिळ कइ, धैरल
हादुर भाइ । माठी गज बोले सुदा, सुर निपाद पादार ॥ ८४ ॥

X X X X
कदम अदना है पुनि घात उपबत गइ । तारी गहत मि ॥

विषय—संगीत शास्त्र (१) पृ० १ से पृ० ७ तक—संगीत चरन, संगीत की
परिभाषा, संगीत के भेद, धारों भेदों की परिभाषा, गीतादि का प्रभाव प्रथम का अति सूक्ष्म
विषय विवरण, गीत का नाद मय होना । नाद से बाद आर इन धारों से मृत्योत्पत्ति का
वर्णन । नाद भेद—जादोत्पत्ति । १४ प्रसुप्त जादियों की नामावली । ग्राम रूपानादि वायु
के स्थान, सुरभेद । (२) पृ० ७ से पृ० १० तक—त्रिविध सुर की उत्पत्ति के स्थान,
इन सब की रूप माशिक्षा ध्रुति के वाह्य भेदों का रूपम प्रत्येक सुर के प्रथम प्रथक
सुप्तियों का विभाग, सुर की परिभाषा बारह विकृत सुरों का वर्णन । उनके व्युत्पादिक भेद,
पृथक् विकृत में दूसरे के निकले से उनके उच्चीस भेद होने का वर्णन । पुनः ध्रुति के चारों
व्युत्पादिक बार भेद । (३) पृ० ११ से पृ० १६ तक—चारों तथा विचारों व्युत्पादिक की
परिभाषा, इक्की संज्ञा, ग्राम की परिभाषा, ग्राम के तीन भेद, ग्रामों के कुछ का विभाग,
जगती याति, मूर्छना क्या होती है ? मूर्छना का आरंभ, सप्तस्वरों से मूर्छनाओं का उदय ।
पञ्च ग्राम की मूर्छनाओं की नामावली, मध्यम ग्रामादि मूर्छना । मूर्छनाओं के पञ्चाक्षर
काकली, वर्णन, तान का विभाग, तान विभक्त रूपम । मध्यमादि के तान । (४) पृ० १७
से पृ० २५ तक—कुछताम "पञ्चसहस्र चारोस" का कदम, पादवादि भेद उमकी संख्या,
चार स्वरों के भेद में निपादादि भेद सुरादिक की तानों का प्रमाण । सुरों की प्रस्तार में
गणना । नष्ट उचित और अष्ट भेद का दिग्दर्शन । (५) पृ० २६ से पृ० २८ तक—कुल-
वरण भेद, उभय प्रथक प्रथक छद्मन, धारों की रचना की अक्षर संज्ञा बताता प्रत्येक
मूर्छना के अक्षर । अक्षर छद्मन । स्वरों की पक्षियों संज्ञाना । अन्वय का भंग तथा
प्रत्येक का सूक्ष्म परिषय—आधा हरिश्चन्द्रम रूपो सब संगीत की सार । तानों में प्रत्येक
मयो, सब संगीत विचार ॥ सप्त स्वरों का अंग भेद । रागाध्याय आरंभ—आगे संक्षिप्त ॥

संख्या १७३ स्त्री श्रीमद्भागवद्गीता रचयिता—हरिश्चन्द्रम, कागज—द्वी
पत्र—३५ आकार—६×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ —३० परिमाण (अनुच्छेद)—
१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र छिति—नागरी छिपि अक्षर—नं० १९३१ म १८७४
ई , प्राक्षिपान—लासा रतनदास, ग्राम—मोहारी बाइपर मदारपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—धी गमैसाय नमः ॥ अथ मगवद्गीता लिप्यते ॥ त्रिपदै की कृष्ण और
भर्तृन् का संपाद है ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ धर्म क्षेत्र कुरु क्षेत्र में मिर्ले तुद के मात्र कथय
मो सुत पोट्यपि धर्म कौने कथ ॥ अथ उवाच ॥ पांडव मेना इपूह छपि दुर्योधन दिव
३८

आइ । निज आचारज द्रोण सों बोले जैसे भाइ ॥ पांडव सेना अति बढ़ी आचारज तू
देपि । घृष्टघुमन तव शिष्य ने व्यूह रच्यो जु विजेपि ॥

अत— हरि बल्लभ भापा रच्यो गीता रुचिर बनाइ । सदाचार वरनन कियो अष्टादश
अध्याय ॥ इति श्री भगवत गीता सुपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन
संवादे मोक्ष सयास जोगोनाम अष्टादशो अध्याय १८ ॥ इति श्री भगवत गीता संपूर्णम्
श्री संवत् १९३१ वि० २२ फरवरी सन् १८७५ ईसवी लिपत रामलाल पाठक जैतीपुर कलां ॥

विषय— गीताजी का संस्कृत से भाषानुवाद ।

संख्या १७४ ए. रसिक विनोद, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—२४,
आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०००, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२३ = १७६६, लिपिकाल—
सं० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री अमरनाथ, ग्राम—दातापुर, ढाकवर—मिथिख,
जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रसिक विनोद हरिवंश कृत लिप्यते ॥ चाहत
पंगु पहार चढ़यो विन पावन होति है रीति जु ताको ॥ नाटं न सूधो कढ़ं सुप सो चहै
वावनो वातन की बहुता को ॥ जात हंमेई सवै जग में यह जानि कहु न भयो टर ताको
भापत हौं शिशुसों अयान पै न्यान निवाहि वे सैल्य सुता को ॥ वरननि नायका नायकनि
लछन लच्छ समेत देपि मतो सय कविन को भेट कहुक कहि देत ॥

अंत—सज्जन लपि के ग्रंथ को करि है मन में मोद । रसिकन को हरिवंश कवि
कीन्हो रसिक विनोद । राम नयन वसु इंदु के कातिक पहिले पाप । दसमी मगर को रच्यो
पूरन रस को टाप ॥ इति श्री रसिक विनोद समाप्तम् सुभमस्तु संवत् १८४५ वि० आश्विन
मास कृष्ण पक्षे तिर्या सप्तम्याम् चद्र वासरे लिपत इद पुस्तकं श्री गणेशाय
नमः ॥ श्रीः ॥

विषय—नायक नायिका भेट और उनके लक्षण व उदाहरण ।

संख्या १७४ वी. रसिक विनोद, रचयिता—हरिवंस, कागज—देशी, पत्र—२४,
आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२३ = १७६६ ई०, लिपिकाल—
सं० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—से० गोविंदराम भगताराम, ग्राम—अमिलिहा,
जिला—उन्नाव ।

आदि—अत—१७४ ए के समान पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री रसिक विनोद
समाप्तः शुभमस्तु संवत् १८४५ आश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिर्या सप्तम्याम् चंद्रवासरेन्वितायां
लिप्यतं इदं पुस्तकं ॥

संख्या १७४ सी. रसिक विनोद, रचयिता—हरिवंस, कागज—देशी, पत्र—२४,
आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२३ = १७६६ ई०, लिपिकाल—

सं० १८४५ = १०८८ ई०, प्राप्तिस्थान—श० शिवसिंह, ग्राम—दिल्लतपुर, डाकघर—
सिधीली, जिला—सीतापुर ।

आदि-अंत—१०४ प के समाप्त । पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री रसिक
विनोद समाप्तं शुभमस्तु संवत् १८४५ आदिपन मास कृष्ण पक्षे त्रिंशो सप्तम्यां ७ अक्ष
वासरे क्षिपत इदं पुस्तकं ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री ॥

संख्या १७५ प, भगवद्गीता, रचयिता—हरिबंसराय, कागज—पेसी, पत्र—८५,
आकार—८ x ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपुष्प)—१०१९, पूर्ण, रूप—
मशीन, पत्र भीर गद्य । लिपि—भागरी, लिपिकाळ—सं० १९३३ = १८०६ ई०, प्राप्तिस्थान—
शिव रामसूपग, ग्राम—कामठापुर, डाकघर—इटीका, जिला—कन्नड ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भगवद्गीता माया कल्पिते ॥ धृतराष्ट उवाच ॥
धृतराष्ट नै संशय से यह प्रश्न किया कि हे संशय धर्म क्षेत्र धर्म धर्म के अल्पसिस्थान
कुर्येभ में हमारे और पौंड्र के जोडा सुख की इच्छा से मिले हुए क्या करते हैं ।

अंत—॥ शो० टीका ॥ यदि ग्रंथ में संस्कृत की विस्तार । आदि हेति अति
विमल भवितुंजन सुजनहु पाठत पार माया की टीका सु यह मूल्हि के अनुमार किय
मुंसी हरिबंस त्रिमि होय अस्त सब सार ॥ किया सिव भजन काळ तुहे ईशै गाँव के वासी
संवत् १९३३ वि० त्रिंशो सप्तमी कृष्ण पक्षानु ॥ सिव महा सहाय करी ॥

विषय—गीता ज्ञान ।

संख्या १७५ वी भगवद्गीता माया, रचयिता—हरिवंश (बनारस), कागज—
पेसी, पत्र—११७, आकार—८ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण
(अनुपुष्प)—१३२९, पूर्ण रूप—मशीन, गद्य, लिपि—भागरी, रचनाकाळ—सं०
१९२८ = १८७१ ई०, लिपिकाळ—सं० १९२९ वि० = १८०२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मुंसी
वर सूबे, ग्राम—सहरपुर जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री कृष्णायनमः ॥ ॐ अथ श्री भगवत गीता माहा मंत्रस्य श्री भगवान्
वेद् व्यास ऋषिः ॥ श्री कृष्ण परमात्मा देवता जसोप्यात्मवरी अस्वर्ष मज्ञा वायो
अभाषस इति श्रीकर्म ॥ हम श्री भगवद्गीता माहा मंत्र के टी भगवान् वेद् व्यास ऋषि
हैं और श्री कृष्ण परमात्मा देवता हैं ॥ यह मंत्र है अर्थ इसका आगे किया जावेगा यह
हम भगवत गीता माहा मंत्र का भीर है यह मंत्र हम माहा मंत्र का सक्ति है यह मंत्र
हम माहा मंत्र का भीरक है ॥

अंत—हे धृतराष्ट शिबर श्री कृष्ण योगेश्वर और गार्गीय धनुषधारी अर्जुन हे उपर ही
राज लक्ष्मी जय शक्ति और नीति भुव है यह मेरा मठ है । मोक्ष योग पामक १८ अक्षाय
समाप्त हुआ । माया टीका सु यह मूल्हि के अनुमार किय मुंसी हरिबंस व् होय न बहु
विस्तार । इति श्री भगवद्गीता संपूर्ण समाप्तः लिपित ईशनाय तिहारी सहरपुर मध्ये संवत्
१०२९ ईश कृष्ण अष्टमी ॥ शुभम् ॥

विषय—भगवद्गीता का माया ।

श्री धरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर (३००)

संख्या १७६. कोविद भूषण, रचयिता—हरिविलास, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—१० X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तस्थान—श्री वद्रीसिंह जर्मोदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब वक्शी, जिला—रखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ कोविद भूषण लिप्यते ॥ दोहा ॥ जाके सुमिरे सिद्धि सब होत सुफल सब काम । हरि विलास सिर नाईं तेहि प्रथम इहि करिय प्रनाम ॥ १ ॥ पुनि वदौ निज गुरु चरण निमिदिन सदहि कृपालु ॥ असुभ विनासन सुभ करण हरण सकल भ्रम जालु ॥ २ ॥ पद्मासन श्री सारदा त्रिभुवन देवि प्रधान । हरि विलास की रसन बस कीजै वचन प्रमान ॥ ३ ॥ वदौ पग अज विशु हरि जिन प्रगट्यो सुति अथ ॥ ४ ॥ अथ वर्ष ग्रह फल ॥ वर्ष पेट फल भाव सब पद्म कोम अनुमार । हरि विलास वरणत सुगम जातक विषे विचारि ॥ ५ ॥ प्रथम सूर्य फल । दोहा । वात पित्त मिर पीर द्रव नारि पीर सब देह । जन विवाढ चिन्ता हृदय जोरि विभूरति गेह ॥ १ ॥ पसु भय धन दुप उदरगढ कुडव कलह नृप भीत, जो कलिंग ग्रह दूररे ॥

अत—पान लाभ पुनि चाण जामे नगल मंदिर होई, दसमेचर सुर भानु जो नर पति सम नर सोई ॥ १० ॥ उरभी सुरभी लान धन पट भूपन गज वाजि, जो मयक अरि ग्यारहे नृप समान सब साज ॥ ११ ॥ जटर करण द्रग सीस गदमान भग धन हानि । इन्दु शत्रु जो बरेह भीत कलह गत प्रान ॥ १२ ॥

इति श्री हरि विलास विरचिते कोविद भूषण वर्ष ग्रह फल कथनं नाम प्रथमो तग १ शदा सीव की जय ॥ पहिले दुसरे तीसरे पचये नवये जानु दशये गेरहे सुभ सदा मुंथा की गति मानु ॥ १ ॥ चौथे अष्टये वारहे छठये सप्तम होइ सुया सम्पति सुप हरे कहत गणिक सब कोय ॥ २ ॥ देवा राधन द्विज कृपा गृह दानादि विलेप करै शदा सुभ अनुभ को रहे न ताको रेप । ३ । पाँच मासे सुकृ पछे तीर्था अष्टम्या शनिवासरे श्री सम्वत् १९३० में पुस्तक लिखा देवी ॥

विषय—ज्योतिष का यह ग्रंथ है इसमें—(१) वर्ष ग्रह फल, (२) प्रथम सूर्य फल, (३) चन्द्र फल, (४) भूमि फल, (५) बुध फल, (६) गुरु फल, (७) शुक्र फल, (८) शनि फल और (९) राहु फल वर्णित हैं ।

संख्या १७७ ए गाने के पद, रचयिता—हरिविलास, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तस्थान—वरगदिया वावा, मुहल्ला—हिंडोलाने का नाका, जिला—रखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम हरि विलास कृत गाने के पद लिप्यते ॥ राग कालंगड़ा ॥ देखि सखी छवि नद नदन की ।

निरपत झलक पलक नहीं लागे भेदि गई उर चोट मदन की ॥ १ ॥ सुकट लट कुडल की आभा भाल विराजै खौरि चदन की ॥ २ ॥ मुख मुसक्यान विलोकत सजनी भूलि

गर्भ सुधि अपने सदन की ३३॥ कटि पट पीत माक ६जती नूर सुनि राखीव पदन की ॥४॥
हरिबिद्यास हरि अंग अंग सोमा गिरा यकी कहि सहस वदन की ॥ ५ ॥

अंत—राग काम्माच ॥ मोहि इति अचाकक रोकि डगर हरि लिपट बिपट गयोरी ॥
आवत ही जमुना बछ भरिके आंचक भाव गयो छक करिके घट पट क्यों मई कीच घरनि
मम चरन एपटि गयो री ॥ १ ॥ पट उधारि सव अंग निदान्यो वरबदा पकन्यो हाथ हमारो ।
मबरी हरि हरि छात्र भासि रबि तमया छट गयोरी ॥ २ ॥ अनुमति पूत अनौखो जापो
बलत पंच मोहि कंड लगावो । हरि बिद्यास दिन रैनि खरकि उर नागर बट गयोरी ॥ ३ ॥
खीका राधा कृष्ण सुनि मरुमें होत बिद्यास । गावत निदादिब जगत में राधा कृष्ण बिद्यास ॥
हरि बिद्यास बरनन करी सुनी रतिक महाराजवंदत निरदिन मुब चारन राखी मेरी छात्र ॥

इति श्री हरिबिद्यास कृत पद राधा कृष्ण संपूर्ण संवत् १९३४ वि० श्री श्री शंकर
पारवती । श्री श्री बाबा महाद्वज जती ॥

बिषय—गाने के पद समय समय के वर्णन ॥

संख्या {७७} श्री हरिबिद्यास संग्रह, रचयिता—हरि बिद्यास (कन्नमणपुर, कन्न-
नड), कागज—देसी, पत्र—२४ आकार—१×४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२,
परिमाण (अनुच्छेद)—३८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य । छिपि—नागरी, रचनाकार—
सं० १९१९=१८६२ इ०, छिपिकाळ—सं० १९२७=१८७० ई० प्राप्तिस्थान—श्री
दयामनोहर सिंह, ग्राम—मुबारकपुर, बाँकर—मगराहर, जिला—उज्जैन ।

भाव—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हरि बिद्यास कृत छिप्यते ॥ बसादा पून माग
निदान ॥ देख देख सुत चरित मनोहर अथंइ उर न समान ॥ कबहुँ बान कृपाव गइत
हरि कबहुँ रूपम बिलाव ॥ कबहुँ हरि मुख रैत अंगुरी परसत कबहुँ कृपावु ॥ अति
अनुर अनवी उठि आचत पर बस पकरत पाव ॥ हरि बिद्यास द्विज बोक पड़ावत सुत द्वित
रैत सुवान ॥ १ ॥ राधे मेरी शकली प्यारी मेरी ओर दू देख । मैं तो पराई पैम मैं प्यारी
कामर की सी देख ॥ राधा जी के बदन पर बँधी अति छवि देख । माना पूरुकी केतकी मंबर
बासना संत ॥ २ ॥

अंत—गोपी अंगार नवक किशोर तन गोरी नय नागरी ॥ मरब बड़ी जमुना जल
गागरी ॥ नीक पट नय रात्री कोरि रति काम काँरी गत्र श्री गवब मुख बिभु सो उजागरी ॥
दग रतनार कोर सबल अंगार धारे कोमल कमल गात गुन गन जागरी ॥ अरुकेँ कपोल
दूरी मानी कबि राम लूरी संग मैं सहैली मब सुभग सुभागरी ॥ हरि की बिद्यास सोमा
देव देव मन सोमा रबिजा किनार बारी अनुरागरी ॥ अंक अंइ प्रह ककर दग बर्य मार्गं ठम
जीव ॥ शिपि तिथि पूयो ग्रंथ बर अंग सुख हेत अतीव ॥ इति श्री हरि बिद्यास कृत
संपूर्ण समाप्तः संवत् १९२७ सिंघा ॥

बिषय—श्री कृष्ण की का और राधिके आवि सन्धियों का प्रेम भावि वर्णन ॥

संख्या {७७} श्री भेगाकरपंच, रचयिता—हरिबिद्यास (कन्नमण-
नड), कागज—
पदी पत्र—१४, आकार—१×६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६ परिमाण (अनु-
च्छेद)—१०० पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । छिपि—नागरी रचनाकार—सं०

१९१६=१८६२, लिपिकाल—सं० १९२६, प्राप्तिस्थान—श्री जयती प्रसाद, ग्राम—
गोसाईंखेड़ा, डाकबर—चामयानी, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनम. जय जय गुरु पद पद्म रज वदौ वार वार । भव भेषज
वर रज समन दमन शोक संसार ॥ पुनि वंटी सिंघुर वदन संभु सूनु गण राज । विघन
हरण सब शुभ करन राखत जन की लाज ॥ वदौ धन्वतर चरण औ अध्वनी कुमार ॥ विश्व
रोग भय हरण को लीन्हे जिन औतार ॥ सकल सुरन वदौ बहुरि विधि महेश वनग्याम ।
कवि कोविद पुनि विपक गण सबको करौ प्रणाम ॥ गात ताप हिमकर हरत भव भय हारक
राम । सब गद गजन ग्रथ यह रोगाकर्षण नाम ॥ शारंगधर माघव सहित लोलिव राज
समेत । इन सब को मत लै रच्यौ हरि विलास जग हेत ॥ नाडी परीक्षा ॥ हस्त अंगूठा
मूल थल धमनी धाम प्रधान । टामोदर सुत जिमि करौ सो भैं कहत वपान ॥ वात नाटिका
गति प्रथम द्वितीय पित्त की होय कफ की नाडी तीमरी हरि विलास कहि सोइ ॥

अत—गोली नाग बेल रम रूपण । खातहि हरत शीत को दूपण ॥ पर्पट जलद
राय जो संगी । ज्वर प्रचड को कीजे भगा ॥ गोली राय तक्त पुनि पाना । सग्रहणी गद
तनु ते हाना ॥ लाज समेत वटी जौ खावै । वमन उकाई नशा नशावै ॥ अतीसार गद वेग
निपातहि । बटि कुटज युत खाय प्रभातहि ॥ रक्त पित्त गद जाके होई । वृष युत गोली
खावै सोई ॥ जाके रहत कठिन गुद रोगा । वटी ग्याय पावक सजोगा ॥ कृमि समूह हें
जासु शरीरा वटी विरंग हरै तनु पीरा ॥ या भेषज मे सब रुज जाई । जिमि जोगी सब
राग नशाई ॥ सोरठा ॥ जो या भेषज खात । ता तनु रहत न कोइ विथा । ज्यो द्विज धर्म
नमात पिपे वारुनी वार इक ॥ छंद ॥ भुज महम भजन भृगु शिरोमनि कनक कश्यप
नर हरी । तनु ताप ग्रीषम विद्यु असुर हरि तर मर वी अघ सुर सरी । रुज अखिल मत
मतंग नाशन ग्रथ भेषज केशरी ॥ कृत हरि विलास निवाम तट शुचि गोमती लक्ष्मण पुरी ॥
दो० । अंक चंद्र गृह काक दृग वर्ष मार्ग तम जीव । रिपि तिथि पूज्यो ग्रथ वर जग सुख
हेत अतीव ॥ इति श्री हरि विलास विरचितं रोगा कर्षण नाम पचमो विलासा. ॥ ५ ॥
समाप्त. ॥ शुभ मस्तु ॥ पाँप सबत् १६२६ वि० शुक्ला १० ॥

विषय—वैद्यक वर्णन ॥

संख्या १७२. भक्तामर भाषा टीका, रचयिता—हेमराज (आगरा), कागज—देशी,
पत्र—८४, आकार—९ ३/४ × ६ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्ठुप्)—
७१४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री धर्मचंद्र
जैन—चूड़ी वाली गली, चौक लखनऊ ।

आदि—अथ भक्तामर भाषा टीका लिप्यते ॥ काव्य ॥ भक्तामर प्रणत मौलि मणि
प्रमाणा ॥ सुघांत कंडलित पाप तमो वितान ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन पाठ युगं युगादा ॥
वालं वन भव जले पत्तनं जिनाना ॥ दोहा ॥ आदि पुरुष आढीस जिन, आदि सुविधि कर-
तार । धरम धुरधर परम गुरु नमोआदि अवतार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुरनर मुकुट छवि
करै । अतर पाप तिमिर सम हरै ॥ जिन पद बंदो मन वच काय । भव जल पतत उधरन
सहाय ॥ १ ॥

अंत—॥ किर्त्तय ॥ इह गुण माल विद्याल गाय तुष गुण मिसबायी । विविध बर्ण कं पुष्प गृह मी भगति विवारी ॥ से नर पहिरे कं भावना मन मी भावै । मान तुंगते निजापीन सिव कश्मी पार्व ॥ भाषा भक्तमर दोहा ॥ भक्तमर टीका सदा परै सुने जी कोइ । हेमराज निव मपक है तस मन बंधित होइ ॥ इति श्री भक्तमर टीका उक्त कार्तिक समी हेमराज कृत संपूर्णम् ॥

विषय—शैव भक्तमर स्तोत्र का भाषानुवाद ।

संख्या १७६ पं. चौपसी पद, रचयिता—हितहरिबंस, अग्रज—दुशी, पत्र—५२, आकार १ x ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपद्य)—१४, परिमाण (अनुपद्य)—५०१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र लिपि—नागरी, लिपिकाळ—स० १८९६ = १८४२ ई०, प्रासिम्बान—प० सिवकट बाकोपेयी, ग्राम—जुसारा, बाकपर—श्रीतीपुर किरा—उषाय (बरघ) ।

आदि—श्री राधाचतुसो जपति । हित हरिवंस चत्रा जपति ॥ अथ श्रीरासी पद्य लिप्यते ॥ राग विभास ॥ जोइं जोइं प्यारो करी सोइं मोहिं भाषै भाव माहिं जाई सोइं करी प्यारे ॥ मोको ली भावती हीर प्यारे के निननि में प्यारो भया चाहे मोरे निननि के तार ॥ मेर तन मन प्राण प्राणहू ते प्रीतम प्रिय अपन कोनिक प्राण प्रीतम मोसों हार ॥ ॐ श्री हित हरिवंस हस हंसनी मोचक गौर कहीं कौन करे बल तरगनि प्यारे ॥ १ ॥ प्यारो बोकी भासिनी आहु बीकी कामिनी । भेदि नवीन मेघ मों कामिनी ॥ मोहक रसिक राह रो माई तासों तु माण करी असी कौन कामिनी । ॐ श्री हित हरिवंस अचन मुनत प्यारी राबिअ राव सी मिळी गज गामिनी ॥ २ ॥ प्रात समय बोळ रस लंपट मुरत तुइ जे तुन अति बूक ॥ अम बारिज धन बिंदु बदन पर भूपन भंगहि भंग विपुल । क्यु रहो सिधक सिधक अलकाबलि बदन कमल मानी अलि भूख ॥ ॐ श्री हित हरिवंस मदन रग रंगि रहे निन निन कठि सिधिस बुद्ध ॥ ३ ॥

अंत—आहुक देपियत है ही प्यारी रंग मरी मीरप न दुरत खोरो घुपमान की कियोरी । निपल कटि की खोरो नंद के हाकन सों मुरति सरी । मोतियन सर हूटी बुचिकुर चक्रिका हूटी रहसि रहसि बखुटी गंडन पीक परी ॥ निननि आलय नम अचर बिब नि रग पुलक प्रेम परम । ॐ श्री हित हरिवंसरो राजत परी ॥ इति श्री श्रीरासी सपूर्ण । अल अम्पुति ॥ ७७ ॥ मय जक निधि को नाव काम पावक की पावी । प्रेम अलि को मूल मोद गंगक सुपदात्री ॥ निगम सार सिदात सत विद्याम मजुर बर । रसिकन को रस सार सऊस अछर रस को घर ॥ श्रीरामी श्री हित हरिवंस कृत परै सुने निसि भोर छुटे श्रीरामी अमनिठ निरपे जुगुल कितोर ॥ निरपे जुगुल कितोर भोर जरै नि न जानै । पिये रूप रस मल मयी क्यु मगहि न भावै । प्रम लक्षण अलि होइ दिप आनद करी । अठ बृहाबल बाल मयी सुप को अथिकारी ॥ कुज महल की टरल सुप संपति इंपति पाइ है ॐ श्री रूप लाल हित प्रीति सों जो श्रीरासी ग्यह है ॥ कबित छपद विमाळुमाळ सत विभावत मी बोदी मी अनु भासावरी मी है बने मल है । अनामिरी में जुगुम बरगत केकि देप गंधार पंच राइ मुर मी भवै ॥ सारंग में, सुपावस है चार ही मकार एक गीह में मुहापो नव गौरी रम सी मन ॥ पद कल्पान निधि कान्हरो केदारो वेद वाली हित ॥

की सब चौदह राग में गने ॥ इति श्री सपूर्णं स्ववत् १८६६ साध मायं कृश्न पक्षे १० शुभ
मस्तु दः रामवक्त्रस दुःखर दार ॥ राम राम मीता राम ॥ ॐ नमो ॥

विषय—हित हरिवंश के चौरासी पद राधा कृश्न पर ।

संख्या १७६ वी. प्रेमलता या चौरासी पद, रचयिता—हित हरिवंश, कागज—
देशी, पत्र—३६, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—
५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३०=१७७३,
प्राप्तिस्थान—राजा अमर सिंह, ग्राम—महरिया, टाकवर—वि/यां, जिला—सीतापुर ।

आदि—१७६ पृ के समान ।

अत—छाडदे मानिनी मान मन धरिवो । प्रगत सुंदर सुवर प्राग बल्लभ नवल
वचन आधीन सों इतौं कित शरिवो ॥ जपति हरि विवमि तव नाम प्रति पद विमल
मनसि तव ध्यान तें निमप नहिं टरिवो ॥ वदित पली पली सुमग नरद की जामिनी भामिनी
सरस अनुराग दिन टरिवो ॥ हौं जु रघु कहति द्रक वात सुन मान नपी सुसुप दिनु काज
वन विरह दुख भरिवो ॥ मिलत हरिवंश हित कुज किशलय से न करत केलि केलि सुप
सिंधु में तरिवो ॥ २ ॥ आजु जब देखियत हें हौं प्यारी रग मेरी । मो पै न दुरित
चोरी ब्रजमान की किशोरी सिथिल कटि की डोरी नद के लाल सों सुरति दैरी ॥ मोतिन
लर टूटी चिकुर चंद्रिका टूटी रहमि रहमि लट्टी गंडन पीर परी । नैननि आलस बम अधर
विंव निरसि पुलक प्रेम परस जै श्री हित हरिवंसरी राजत परी ॥ इति ॥ श्री मत परम
रसिक श्री गोस्वामी श्री हरिवंश हित कृत चौरासी पद समाप्तम् ॥ लिपित गौरी चरन
कायस्थ स्वपठनार्थं संवत् १८३० वि० जेष्ठ शुक्ल तृतीयाम् ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय—भक्ति से परिपूर्ण ८४ पद ॥

संख्या १८० हनुमान नाटक, रचयिता—दय्यराम, कागज—साधारण, पत्र—
१०५, आकार—६ $\frac{३}{४}$ X ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—
४४१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८० = १६२३ ई०,
लिपिकाल—स० १९४४ = १८८७, प्राप्तिस्थान—श्री रावोराम, अध्यापक प्राइमरी स्कूल,
आममठ, टाकवर—गडवारा, लिजा—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामचन्द्रायनमः ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ
श्री हनुमान नाटक भाषा प्रारंभः ॥ प्रथमांक ॥ कवित्तः—तीनो लोक पति प्राण पति प्रीति
ही में रति अगिनत गती के चरन सिर नाइ हौं । सदा शील पति सतपति एक नारी व्रत शिव
सनकादि पति यश सुनाइ हौं ॥ सुर पति हू के पति जानुकी के पति राम नैन कोर और
कवहुँ तो पर जाइ हौं । पुने वाक पति सुनो संत साधु मति तव ऐसे रघुपति के कछुक गुन
गाइ हौं ॥ १ ॥ सदैया—काहू को सारस्वति वर पूरन काहू को हौं सिव से वर देया । काहू
को हौं चतुरानन को वर कौक गजानन आस वसैया ॥ कान सुने पहचान न काहु सों साच
कहै कवि राम कहैया । जानत श्री रघुवीर के नामहि जो सुनि ए सब होहि सदैया ॥ २ ॥
कवित्त.—श्याम घन देह सो मैं चातक ज्यों नेह बाँधो देह प्रेम बूँद हौं जपैया ताही नाम

की । चरण मरोत्र रस भरे ताओ भयो अलि जादिन पराग पाई ताही छिन काम को ॥
 राममुन्य पुन मुन भयी भूग ताही छिन रूप सिन्धु मीन करे न काळ घाम को । बि
 उदार राय ही मन्दि भील मोगी पैतो रामचन्द्र चन्द्रमा बसोर मन राम को ॥ ३ ॥

अंत—मईया ॥ राम के पॉइम को दार पाइ में बाकी सों मार क देम लपो । अर
 राम के पॉइम ले बस ते कपि मंडळ में कपि राम भयो ॥ अत राम क पॉइम में अबही
 पित श्योप मिष्ठाइके पैम ह्यो । तब हीं सब पूरन काम भये कपि राम ह्री श्रिय जानि
 लयो ॥ १४१ ॥ सोरठा ॥ गिब बिरंधि मुर ईश बेद ब्रह्म सेवत चरन । देन बशिष्ठ असीस
 सना महित रघुधीर को ॥ १४२ ॥ उप्यय ॥ तंवरु बिक्रम मृपति सहम पट सत असहि
 बर । ईत्र चाँदनी दूष छप्र जहाँगीर सुमर पर ॥ सुम कृष्णन बृष्णन सुरेस करिराम”
 विबण्डन । कृष्ण दास तबकुन प्रकाम जय दीपक रघुन ॥ रघुपति अरिभ्र तिन यपा मति
 प्रगत कर्षी सुभक्तगम गन । देता भक्ति दास निरभय करहु जय रघुपति रघुबंश मयि ॥
 इति श्री कबिबर इद्रय राम कबि बिरचिते भाषा हनुमाञ्चटकै श्री रघुनाथ राग्यामिषेकाणाम
 चतुर्थशोकाः ॥ शुभ सकल १९४४ विद्यमी लिपत गणेशराम पाण्डेय ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० २३ तक—प्रथम अंक । यालू कांड की संक्षिप्त
 कथा । मंगल्य चरण, कथा की अति संक्षिप्त अनुक्रमिका, राम का विद्यामिश्र का पत्र
 पूर्ण कराना तथा ताडिछ घघ, अनुप बरु, सीता का विवाह, परशुराम सबाद ।

(२) पृ० २४ से पृ० ३१ तक—द्वितीय अंक । अयोध्या कांड की संक्षिप्त कथा,
 राम क राग्यामिषेक की ईष्यारी, केऊई कोप, राम वन मगन । ह्यारष प्रागल्पाग ।

(३) पृ० ३० से पृ० ५३ तक—तृतीयाङ्क । भरत आगमन ह्यारष साव दाह,
 भरत का वन में राम न मिलना, राम-पॉबरी ककर भरत का सीटना, पचवटी बर्नब,
 मृपनगा की कथा राबण का सीता हरण का विचार करना, भीर मद्दोदरी अ समझाना
 राबण का न मानना, कपट भूग आगमन ।

(४) पृ० ५४ से पृ० ५७ तक—चतुर्थ अंक । रावण का सीता जी के पाम मिष्ठा
 मोगिने अना, सीता हरण ।

(५) पृ० ५० से पृ० ९८ तक—पंचमाङ्क । राम मिष्ठाप, जयपुरावत्र पुत्र,
 जयपु उबार राम की विषोग दना, हनुमान मिलन मुग्धीब मीप्री, बालि कप सीता को
 राबण द्वारा समझाया जाना सीता-मंताप ।

(६) पृ० ९९ से पृ० ८६ तक—षष्ठमोङ्क । सीता की राज के किये हनुमान का
 लडा जाना, मुग्धी की प्राप्ति से सीता का संताप, जिम्बदा-मंबाद, बालिका बिनान, हनुमान
 का बापा जाना, लडा दहन हनुमान का लीटना भीर सीता का मेरु दुष्ठा संदेश देका ।

(७) पृ० ८७ से पृ० ९१—सप्तमाङ्क । कडा पर चडाई के लिये सीता समेत
 राम का प्रस्थान करना समुद्र पारन ।

(८) पृ० ९२ से पृ० ११० तक—अष्टम अंक । राम जी के दन का कडा में
 प्रवेश करना रिमीपत्र रावण मंबाद, विमीपत्र अरमान, राबण भंगद मंबाद, भंगद का
 सीटकर राम को मंबाद देना ।

(९) पृ० १११ से पृ० १२६ तक—नवमोङ्क । मन्दोदरी का रावण को समझाना और रावण का न मानना, मन्त्रियों के साथ रावण का मन्त्र-विचार ।

(१०) पृ० ६४७ से पृ० १४२ तक—दशमोङ्क । रावण प्रपञ्च वर्णन ।

(११) पृ० १४३ से पृ० १५४ तक—एकादश ऋङ्क । दोनों दलों में युद्ध सम्बन्धी गर्वोक्तियों एवं सामग्री का एकत्रित किया जाना, कुम्भकरण वध ।

(१२) पृ० १५४ से पृ० १६४ तक—द्वादशमोङ्क । रावण विषाद वर्णन, मेघनाद का धैर्य देना, मन्दोदरी का उपालम्भ, मेघनाद वध ।

(१३) पृ० १६४ से पृ० १८७ तक—त्रयोदश ऋङ्क । रावण सताप वर्णन, लक्ष्मण सहार, संजीवन वटी प्रयोग द्वारा लक्ष्मण जी का पुनर्जीवन ।

(१४) पृ० १८८ से पृ० २१० तक—चतुर्दश ऋङ्क । रावणवध, मन्दोदरी विलाप रस, ता की अग्नि परीक्षा, राम का अवध को आगमन, भरत मिलाप, अयोध्या के उत्सवादि, ग्रथ निर्माण का काल ।

संख्या १६१ प्रभाती, रचयिता—हुकुमराज, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—९ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुपुष्प)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राममनोहर विचपुरिया, पुरानी वस्ती, कटनी मुरवारा, जिला—जबलपुर ।

आदि—॥ प्रभाती ॥ अकथ कहानी कहत हों, सुनो सत दे कान ॥ सत गुरु चरन प्रसाद तें, प्रगतयो दिन कर ग्यान ॥ १ ॥ ब्रह्मा नंद सत गुरु हैं सोई ॥ पर परा सुप दाता जोई ॥ अछर सूत्र सिपा ईनते परे ॥ पद परसोतम सेवन निज करे ॥ २ ॥ चिदानंद हे गोत्र हमारा ॥ परम किसोरीई ईष्ट अपारा ॥ साधन परम धाम चित्त धारो ॥ सरव धाम ते जो अति भारो ॥ ३ ॥ सुप विलास गोकुल ब्रदावन ॥ अत वधु ते कहत सनातन ॥ जुगल सरूप जाय जीय रोचक ॥ भय जल ताप सकल विधि मोचन ॥ ४ ॥ विप्र ब्रह्म निज देवी ॥ निगम चार जाको नित मेवी ॥ गोकुल साला निज आला ॥ दिव्य ब्रह्म पुर परम विसाला ॥ ५ ॥

अत—जगमति मारग देपि के ॥ प्रगत भयो अवतार । तिन थे ए पधति मै ॥ भो भ्रम टारन हार ॥ ९ ॥ प्रगटे आचारज परम ॥ श्री देव चढ जी नाम ॥ तिनथे पधति संप्रदा । परम हंस निज काम ॥ १० ॥ श्री प्राण नाथ तिन थें भए ॥ महामती परम उदार । प्रगत पमारथौ तिन कीयो ॥ सो निज द्वार हमार ॥ ११ ॥ हुकुम राज तिन आपनो दिओ सकुडल सीस । पवति ब्रजं भूपन लही ॥ चरन कमल वगसीस ॥ १२ ॥

विषय—धामी संप्रदाय का मूल तत्त्व और उसके संस्थापन का अति सूक्ष्म वर्णन ॥

संख्या १६२, स्वप्न परीक्षा, रचयिता—हुलास राय वैद्य (आगरा), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुपुष्प)—९०४, खडित । रूप—फटी, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२० = १८६३ ई०, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिव नरेश सिंह, ग्राम—रामनगर, डाकघर—मटलापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ स्वप्न परीक्षा लिप्यने ॥ रोगी को यह स्वप्न आवे तो अच्छा नहीं । रागी स्वप्ने में बंगा और सिर मुंडित हाथ और काया पक्ष पक्षि आदमी हथ तथा अपने को हथ और बजकटा बूबा बाना रोगी हथ तो ब्रह्माप्य जानिये ॥ और मेया तथा ऊँ गथा पर सवार दक्षिण दिशा का जाता हथ ही रोगी अच्छा नहीं होय और ऊँ से शीघे गिर जब में हथ तथा आगि से जल जाय और सिंह मेही आदि में पाया हाय तथा हीपक कुमन हीय तथा लेल जयया हार पीठा हथ और काद को छता हथे अथवा पडबाम पाय हथ में यह भीना स्वप्न रोगी का हीय ही अगाप्य जानिये और हन स्वप्नो का जा कोई हीयें तो कुमर न कहे नहीं और प्रमाण उठि भग्नादिक सगाय रनाम कर ही स्वप्न हाय हूर हाय ॥

अथ—हम मंत्र का हतपार क दिन गौरोधन से भोजनपर पर जिये और त्रियक बनामीर हाय उमके कमर में बांधे ही चाखीम दिन में पचामोर जाला २६

३४	४१	२	७
६	३	१८	३७
४०	३५	८	१
४	२	३६	३९

अथ चार प्रकार के १५ के चंद्र की विधि ॥ त्रिम मनुष्य का प्रिया मित्रात्र दो मा उमी प्रकार के पथ का भेषम करे और मेपादि पाह रागि चारि प्रकार के मित्रात्र पर बांटी गई है सो अपनी रागि मित्रात्र मित्रात्र पदिबाने ॥

१ गाडी

८	१	६	हथ
३	५	७	कथा
४	९	२	मकर

३ आशी

२	७	६	कटं
१	५	३	तृविच
४	३	८	मीन

२ वाही

८	३	७	मिपुष
१	५	६	तुला
६	७	२	कुम

४ आहारी

४	९	३	पन
३	२	७	मेग
८	१	६	गिट

विषय—अध्याय (१) स्वप्न के बुरे भले फल (२) चिढ़ियों का यात्रा समय बोलने से शकुन या अपशकुन (३) जंत्र मंत्र तथा स्वप्न के बुरे फलों की शांति के यत्न आदि ॥

संख्या १८३ ए. शालिहोत्र, रचयिता—हुलास कवि, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—११ X ५३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपुट्टु)—२८६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्री सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव बक्शी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा शाल होत्र हुलास कृत लिप्यते ॥ सोरठा ॥ बटौ गणपति पांय, विधन विनाशन शुभ करण । याको बुधि बल पाय गृन्थ विभव विस्तर करन ॥ (चौ० ?) कुंद हंडु सम देह उमा रमन करुना यतन । हरि हर विधि सतत दीन्हे मन ॥ स्वैताम्बर बीना कर राजै । कमलासन गति हंस विराजै ॥ दोहा ॥ बानी विनवौ प्रेमसे मातु मुदित मन तोहि । सालि होत्र भाषा रचौ होइ बुद्धि बल मोहि ॥ चौ० ॥ श्री अम्बा हुलास मुख बानी । त्रपुर सुन्दरी आदि भवानी ॥ प्रफुलित अर्चन कमल तन जासु । अरुण किरिण सम आस्य प्रकासु ॥ अरुण बसन अभरण शृंगारा । अरुण सुमन सुन्दर उर हारा ॥

अंत—अथ पेशावचद की औपध ॥ तोता पानी करै सुजान । ताकी जतन सुनहु मन मान ॥ पूछि दड उलटो करि लीजे । छिन यक ताते पानी भीजे ॥ भीजत जल होयै वेताव । तेहि छन टारै छुटे पेशाव ॥ अथ चुलिष्टरिस्त उपचार ॥ वेरी को फल आनि कै मीजे फेन जो होइ । लावै फेन परिस्त में घोडा निर्मल होइ ॥ मेहुवा चूरण सेर भरि सज्जी आधी आनि । फेदि आगि परसो चुरै मीजे बल सो जानि ॥ चौ० खारी लोन औ परी मिलावै ॥ पीपर पात बड़ पात जरावै ॥ अजीर पात ताफो रस लेइ । माप में वे सवे मिलाय ॥ सो बाजी कै अग लगवै ॥ चुलिप रिस्त नास को पावै ॥ मंदाग्नि उपचार ॥ दो० ॥ तीन तीन कडु दाखी हरै हिंगु चोपार । चतुर पानि कै पिंडि दै; मदाग्नि उपचार ॥ इति श्री सालि होत्र मते कवि हुलास कृत अश्व मदाग्नि उपचार व जहर वातादि औपध वरणनो नाम नवमो प्रकाश ॥ ९ ॥ शालिहोत्र ग्रंथ हुलास कृत समाप्त सुभ भूयात ॥ पौष मासे कृष्ण पक्षे तिथि उ द्वतीया यां गुरुवासरे सवत १६४८ वि० लिपत चन्द्रिका खानीपुर के लिखा निज हितार्थ ॥ शिव शिव कृष्ण कृष्ण ॥

विषय—इसमें ९ प्रकाश हैं जिन में अश्व चिकित्सा वा शुभा शुभ लक्षण आदि का वर्णन है ॥

संख्या { ८३ बी. वैश्विलाम, रचयिता—हुलास पाठक, कागज—साधारण, पत्र—५८, आकार—८ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुपुट्टु) ६२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७९=१८२२, प्राप्तिस्थान—श्री रमाकांत त्रिपाठी, ग्राम—बदा, डाकघर—गदवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ चौपाई ॥ प्रथमहि गनपति चरन मनावो । जेहि प्रसाद

पुत्रि पल्ल सुप पावो । पुत्रि वानी के चरण हृदय परि । बेहि उर मुमति बेहि भाषा करि ॥
 पुत्रि नेत्र कुलम सुप बानी । त्रिपुर सुन्दरी भादि भवायो ॥ रक्त बसन उर द्वार बिराई ।
 पग मुरुर किंकिण करि भाई ॥ भगन अद्वित कुंकुम कर मलका । कुम कुम कलित मुचवित
 बसया ॥ अग्रज किरवि सम जन्म प्रशामा । भृगुटी कुटिल मनोहर नासा ॥ पद्म प्रिसूक
 चक्र को बंधा । शान संप जद गदा प्रबंधा । श्री सुमति कर मण्ड सँचारे । समर जीति
 विन्दु विसिन्धर मार ॥ पद्म स्वरूप उर जो नर भादि सुप सोभा बैरी करि जार्नि ॥

अंत—मीमांस्य मुंठी ॥ हररै जंगी कइरा मिगी सताचरि ॥ पीपरि पिपराभूळ ॥
 जहाइम जीरा कृपन जोरा ॥ मोचरथ गुण पल्ल के जरि ॥ गाहर के जरि ॥ चंदन देवदाद ॥
 हररी बंन शोचन । सीक भाग कमरि ॥ केमरि चिरींजो बराम । गरी डोहरा सासिम
 मिथी मस्त की वृंती कपूर जटाभासो ॥ असर्गप सींज जायकर जाबिरी ॥ सोनि ॥ २५ विट
 बीनी तीन पाव ॥ अमरप १ रांगा १ तापा १ काहा १ गाइके सुष कर पोवा करव तप
 ओपधि दारव ॥ इति मीमांस्य मुंठी पाठ ॥

विषय—चिकित्सा ।

सतया १८४ प. अहहम नामा, रचयिता—इमाही बहम, अग्रज—साधारण
 पत्र—१२, आकार—१३ × ४ इंच, पकि (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुच्छेप)—
 २४० पूर्ण, रूप—जडीम, पद्य, लिपि—अरबी रचनाकाल—१९८९ हि०, प्रासिस्थान—
 मुहम्मद मुहम्मद अन्वयक इस्लामिया मद्रास, ग्राम—पादकनगर, जिला—प्रतापगढ़ ।

भादि—अहहम नामा । विसमिप्साह उरइमाहे रहीम । पे अस्ताह तोर नाम
 अस्तयहा । त् मअहद जग साहा ॥ सुमिरीं नाम मदा रब तोरा । बीदह मुबन तोर अंजोरा ॥
 हाइ व अहद जीम सुप मोरा । जरा मिफ्त करि सक्त न तोरा । स्युष कोठ बेहि मरम
 पतारा । आइ नाई कोइ अडे तुम्हारा ॥ गुन गन मात बनु भाइ सँबारा । कोइ पिराग
 धूर देविपारा ॥ जल पर मूमि जो फरस बिछाई । करै अराम जगत जई ताई ॥ अस
 रग्याइ का जद विघाता । सखइ जिइ बेइ दिव राता ॥ सखइ मति उपाठई, जार्नि
 मइक जदान । नाम तुम्हार गफूर है, कई सीं करी बन्वान ॥

अंत—इमाहिम तब अस कहा, मीय उमइ जी हीम । भाइयो मोर दुआइ सों,
 पून तदवि विठ हीम ॥ देगा शोग तअगुब आय, काब मीं संम का रैन बग्राण ॥
 इमाहिम रय पर भिन लावा । संम गुमस है र्नाक मिलावा ॥ पया नेह करी सब कोई ।
 शानिठ जगत भर्खाई हाई ॥ इमाहिम अम बली पियाश । अहहम क कुष कीन्द देजारा ॥

×

×

×

×

इन्द्रही बदरा ग्रीव अपीना । अहहम के कया सुपा लिय बिन्या ॥ बाहा ३ मबी भाद
 जयहाय कहा शत्रु पगार । मा तमाम यदि उपर मबई मोर तुहार ३ तम्मत बिसरीर

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १ तक—मंगलाचरण प्रतापना, अहहम का बसन्त
 पाहर की शाहजादी पर आगच्छ दाना, उमकी लशाबी, बाइसाह मे दसक—प्रार्थना । इठ
 कइरि अहहम का शाप और शाहजादी की स्युष ॥ (२) पृ० ६ से पृ० १२ तक—

शाहजादी का समाधिस्थ होना, अदहम का उसे रात्रि में निकालना, एक काफिले के साथ वाले हकीम द्वारा उसको चेत होना और निरुह। (३) पृ० १२ से पृ० १६ तक—शाहजादी का गर्भाधान, पुत्रोत्पत्ति, बालक का लालन पालन और पठन पाठन। बादशाह का बालक के रूप पर प्रमत्त होकर उसे घर को टे जाना। शाहजादी आदि की भेंट। बादशाह का अदहम से क्षमा माँगना, और उसके पुत्र इब्राहीम को तर्त सौंपना।

(४) पृ० १७ से पृ० २० तक—इब्राहीम का विवाह, उसका शिकार को जाना और गोरखर से उपदेश ग्रहण कर कावे को जाना, गडरिये की पोशाक ग्रहण करना, बोहित पर चढ़ना, हजाज के अमीर के साथ होना और भाँड़ों द्वारा पीटा जाना, इब्राहीम को गैव से शाप देने का कथन, उसका सबको बली करा देना। उन लोगों की क्षमा प्रार्थना।

(५) पृ० २१ से पृ० २४ तक—इब्राहीम का हज करना और उसका कबूल होना। इब्राहीम के बालक का ३० वर्ष की आयु में अपने पिता को खोज कर उसके पास पहुँचना, उसको देखकर बालक पर प्रीति उत्पन्न होने के कारण खेद होना, दुई के इल्जाम से न्याय करके अपने अथवा पुत्र के प्राण हरण की प्रार्थना। पुत्र की मृत्यु। इब्राहीम का इबादत में लग जाना। ग्रथ निर्माण काल—सन् चारह सौ नवासी हिजरी। अदहम की कथा कहा जो गुजरी ॥ माह मुहर्रम सुन ले भाई। और तारीख ग्यारह आर्डे।

सख्या १८४ वी. हश्रनामा, रचयिता—इलाही बक्स, कागज—साधारण, पत्र—५१, आकार—१३/४ × ८ १/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुपट्टपू)—१०२५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—फारसी, रचनाकाल—१२५७ हि०, स० १८९५ = १८३८ ई०, प्रासिस्थान—मुहम्मद सुलेमान इस्लामिया मकतब (पाठशाला), ग्राम—पाइकनगर, डाकघर—पाइकनगर, जिला—प्रतापगढ़।

आदि—हश्र नामा। तिस मिल्लाह उर्रहमाने रहीम। सुमिरों आदि तोहि करतारा। वरनक तोरहि सबसे न्यारा ॥ परघट गुस दीन दुनियाई। जो तैं चहसि करसि सब साई ॥ गुन कै खेत सकल जग साजा ॥ वरन वरन तहँ गुन उपराजा। कीन्हसि सहसन लाख करोडा। चाँदह भुवन साँज आँ भोरा ॥ यह सब कीन्ह मनुप के लाई। का वरनों जस दीन्ह मिटाई ॥ वह रव एक जगत उपराहीं। वरनन जोग और कोइ नाहीं ॥ अस्तुति करत थकै मन देवा। का मोर गात जो वरनों सेवा। सकल जगत जहँ तक रहे। वहाँ भगत का मोहि। वरन वरन जस तैं दिहा। तस का वरनों तोहि ॥ एक से एक उत्तम तैं कीन्हा। सवमे उत्तम एक तहँ दीन्हा ॥ जिहिसे भा उँजेर सब राहा। नाम मुहम्मद सल्ले अल्हा ॥ उनके वारेउ वस दुलारे। तिरिया आँ असहाव पियारे ॥ कहौ दरूद इन सब पर भाई। परघट गुस जो भेद वताई। कयामत कर उन्ह कीन्ह बखाना, हदार हिसाव कहन सब जाना ॥ जिहि विधि करनी तोल सब जाई। मुख्य शफाअत सब जम पाई। दोजख बहिश्त जहाँ लौं होई। अस खोलन जानस सब कोई ॥ नेम धरम भग पाप की, नवी कहा समुझाय। जो जस करई जगत मों। सो तस हश्र माँ पाय ॥

अंत—नवी के पथ देउ पगु। सदा रहौ भरपूर। कुफ्र शिरक रौअत। इनमे भागौ

दूर ॥ था हसा कही धम्साहा । कहीं मुहम्मद रसूलरहिष्दा ॥ सदा रद रूप गुमने राजी ।
 पाँच बूत कर होहु ममाजी ॥ एक मास का रोजा राम्बो । वैठ जकूत हय रस चान्बो ॥
 सत गुरु चरम ब्रह्म के श्रीश्री । ती पगु प्रेम-यथ पर श्रीश्री । बिना गुरु कोठ भेद न पाई ।
 सत गुरु मिले ती सूट कई ॥ जाप शगुत जस गुरु बताया । बरै सी प्यास भयपत सक
 पाया ॥ भोग सपाद का जामे भोगी । के जामे बसु प्रेम बिरोगी ॥ गुप्त भेद जो चाहो,
 सुखिंदै सत गुरु पास । रब का नाम पियार है हूँ छिये जाहु हर साँस ॥

विषय—(१) पू० १ से पू० २५ तक—मंगला चरण, प्रस्तावना ग्रंथद्वार
 परिषय—जोभा पुरा सबहि जग जाना । देस देस मई भेद बलाना ॥ इकाही यत्न कया
 यह सुभा । सन्त भेद यह मन मों गुभा ॥ कयामत के भेद बहिधान, दोखत तथा बहिस्त के
 अधिकारी कयामत संबन्धी बहिष्य, कयामत के पूर्व कश्म, उसकी मध्यम पक्ष् भक्तिम
 बवस्था ।

(२) पू० २६ से पू० ६० तक—सूर का शब्द और उसका प्रभाव कयामत
 लज्जती, परमात्मा का आदेश, इस्लाम धर्म की परिभाषा, इस्वीयन्माय, ईश्वरीय भाषा,
 काफिरों को इद, दोखत की भाग, दोखत के खान, कुर्बो तथा नही आदि की बिकरासत,
 नारकीय जीवन, काफिर तथा मोमिनों की स्थिति ।

(३) पू० ६१ से पू० ९२ तक—ईश्वरी हिसाब का विधान । रोजा, ममाजादि
 धार्मिक कृतियों का वर्णन, धार्मिक दृष्टा का सार, मोमिनों के छिये बहिस्त का विधान,
 नबी श्रेय और उषकी उम्मेतें, बहिस्त का वर्णन, बहिस्त का पेशवर्ष, बहिस्त भेद ।

(४) पू० ९२ से पू० १०१ तक—पैराऊ का वर्णन रयापात का वर्णन, ग्रंथ
 का आषाठ—इय कया जो फारसी । हिन्दी भाषा कीम्ह । इकाही यत्न मूलक हक भयो
 जगत कर हीम्ह ॥ पहिलों से ग्रंथकार की बिनपा—और ग्रंथ निर्माणकाक—सद् बारह
 सी सत्ताबन हिजरी । इय कया मई पूरन गिगरी । मास शबास तारीख गियारह ।
 रबि पुरायुब सुमा के बारा ॥ कया भवन कक, मन को आन्वासन और उसको इस्लाम
 की प्रवृत्ति का उपदेश, गुरु महिमा ॥

संख्या १२४ सी सुरौद बेनबीर, रचयिता इकाही यत्न (इकाहीगंज),
 कागज—माधारण, पय ३६, आकार—२३ X ४२ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६,
 परिमाण (मनुष्यपू)—७२०, पूर्ण रूप—बहीन, पय, छिपि—फारसी, रचनाकाक—
 १२९४ हि० = १८७५ ई०, प्रासिखान—मुहम्मद मुलेमान, इस्कामिया मकतब (पाठ-
 शाला), ग्राम—पाहकनगर, जिल्ला—प्रतापगढ़ ।

आदि—बिममिस्साह उरहमाने रहीम । सुरौद बे नबीर । कहीं सिफत कही
 रब तारा । मायुप जम्म बीन तुम मीरा ॥ भसे पयु नहि पंटी कीम्हा । बी मुँहि नबी सुरतफ
 हीम्हों ॥ जई सी जगत सब हई । सिफत तोर लिख मकह न कोई ॥ अम गुनवंत तह
 करतारा । तुन से खीरह तबक सँबारा ॥ पहले नबी मुहम्मद साजा । उनकी प्रीत से जग
 उपराजा ॥ जो न होत नबी ईशियारा । उम्मत दीब कीम्ह सरदारा ॥ नबी भी आक
 जगदाब पर, सय काठ परी इम्ह । उमके तावे हो रदो । रब के कौ सखूर ॥ उमर घोद

औं बुधि नहि मोर्ही । इहि कारन विधि विनयीं तोर्ही ॥ एक उराटा सो अई हमारा । तू पूरन करदे करतारा ॥

अंत—बेहद सिफत सना रव तोरा । किर्ही इराटा सो पूरन मोरा ॥ एक अरज रव सुनो हमारा । वरुण गुनाह मोर तुम सारा ॥ औं औलाद आल जो मोरे । चलें हुजम पर सब केड तोरे ॥ जय यहि जगत में करु पयाना । सावित राख्यो मोर इमाना ॥ औं जय हशर के आवै वारा । तहँ मुँह फिहो मोर उँजियारा ॥ मय मुक़ाम मे टै छुटकारा । पुल सुरात से कैदे पारा ॥ बहिउत मा मोका देहु मजाना । जहाँ नयी कै अहे टिकाना ॥ जीका नवी मुस्तफा कलोकें । उनकी रिदमत माँ रह्यौं ॥ नाम मुहम्मद मुस्तफा । होइ जग मेंह उँजियार ॥ सबे नवन मे तेहिका । बहुत करौं तुम प्यार ॥ मैं निर गुन कछु गुन नहिं पाया । दौनों जगत खालिकु तोर आया ॥ मात पिता कुल एक वारा । सावित कुनल रामु करतारा ॥ जाँ गुन पैगुन जगत महँ करकें । वरुण गुनाह जिहि से मैं तरकें ॥ जय मुन्यौ हथ के वाता । सुन के प्रान काँपे दिन राता ॥ ऐ करतार मैं का अव करकें । जिहि से दोहनकें जग में तरकें ॥ × × × इलाहि गज बाजार महँ । किम्पा भया तमाम । पदे सुनै जाँ कोडक । तिहिका मोर सलाम ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १५ तक—मंगला चरण, प्रस्तावना, ग्रथ निर्माण का कारण—अब्दुल रहमान जो कान्ह सवाला । कहिन कि अब कछु कहो हवाला । यमन शहर के सुल्तान महमूद शाह एवम् रूपनगर के सम्राट् अमीनुद्दीन की अचानक भेंट, मंत्री, दोनों के पुत्र पुत्रियों के उत्पन्न होने पर सबध स्थिर होने की प्रतिज्ञा । दोनों की वेगमो की गर्भाधान होना, महमूदशाह के शाहजादा बेनजीर और अमीन उद्दीन के पुत्री का होना, दोनों का निजि संतति की सचित्र सूचना देना, अमीनुद्दीन की मृत्यु, वजीर का राज्य पाना, कुमारी का विवाह योग्य होना, हवशी राजकुमार का उसकी भंगनी मांगना, राजकुमार की शादी मंत्री की पुत्री के साथ होना ।

(२) पृ० १६ से पृ० ४३ तक— राज कुमारी को राज कुमार का चित्र दर्शन, दाईं मे सपूर्ण समाचार जान मोहित होना, शत्रु सवारों द्वारा राजकुमार को अपनी विरह व्यथा एवम् विवाह संबंध का समाचार देना, क्रमशः वजीर द्वारा ६० सवारों की गिरफ्तारी । दाईं के लडके द्वारा राजकुमार को समाचार जाना, राजकुमार का प्रस्थान, राजकुमारी की विरह व्यवस्था, एक मेवा फरोश के चहा टहरना, बेप बदलकर राज कुमार का राजकुमारी से मिलना, हवशी की वरात आना, दोनों स्त्री-पुरुष का भाग निकलना, वजीर का खेद और अपनी पुत्री के साथ विवाह करना । राज कुमार का वदमारों को परास्त कर बीबी के सहित एक नगर में पहेचना ।

(३) पृ० ४४ से पृ० ६१ तक—तमोलिन के जावू में बेनजीर का फँसना, खुरशैद का बादशाह को प्रसन्न कर उसकी पुत्री को वरना, फौतवाल बन कर शाहजादे को छुड़ाकर चम्पावती से भेंट करना और सारा हाल बताकर बादशाह को समझाना, वारह मासी, विदा ।

(४) पृ० ६१ से पृ० ७२ तक—नगर प्रवेश, उत्सव, खुरशैद व बेनजीर का

निष्काह । नख-सिद्ध, सुराशंभ की विनय विवाह की रात्रि, आनन्द उरसव, राजकुमार का चम्पावती और बजीर-मुनी को आश्वासन देना और मोग विद्यास में दिवस वितावा ।
 भ्रम निर्माण काका—बारह सी चौरावने हिजरी सन् परमाण । जो कुछ पाए सो किछि
 दिया इच्छाही बस निदान ॥ ईश्वर विनय, भ्रम पूर्ति का मास—मास जिन कबह जान
 से माई । भी तारीख अक्षरह आहें दिन सोमवार पुरब मका । भी पुरम मासी फागुन आवा ॥

संवया १८८ की रमजान नामा, रचयिता—इच्छाही बक्स, कागज—साधारण,
 पत्र—८, आकार—१३ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुच्छेद) १६०,
 पूर्व, रूप—नवीन, पद्य छिपि—फारसी, प्रासिस्थान—मुहम्मद मुहम्मद, अध्यापक
 हस्सामिया मकतब (पाठशाळा), ग्राम—पाइकनगर, जिल्हा—प्रतापगढ़ ।

आदि—सुमिरी एक आदि करतात । जिन जिन चीन्हे कीन्हे संसारा ॥ अब
 लौहीद करीं रब तोरा । कही जो रैन की दिवस बैजौरा ॥ कीन्हे चरती ऊपर मेरा ।
 मॉक पंस जो कीव यौरा ॥ बचपन गैगल बाद परप यवा । कीने बिनु पुरी के लंभा ॥
 बचपन ऐसा कि हीरुत नाहीं । तबकी हीरु होत कहुं माहीं ॥ सिफ्त तोहार करीं करीं
 ताई । कुदरत तोर कई कई ताई ॥ तिहि मह चाँद सुरज बिधि साजा । सी सव अठ
 बगत के अजा ॥ अब कसु सिफ्त नबी के कीन्हे । छतर सो छाक सीस बिधि चीन्हा ॥
 नबूत दिन पर खस है, नाम मुस्तफा जान । जिहि को रब कीं काक कह, को करि सकह
 बधान ॥ नबी के आळ असहाब पियारा । के बग मँह हसकाम सचारा ॥ पार मीत
 बिभि ने संग चीन्हा । तिन्के सिफ्त नबी बहू कीन्हा ॥ अब में करीं जो हाल इमाना ।
 करीं यमान माह रमजाना ॥

अंत—मोहम्मद नबी रसूल के । जो माने करमान । रब की होब पियार सो ।
 जघत मिले मकान ॥ रबी करीम तुम बहुत दयाळ मॉगहु तुमसे करहु [निहासा ॥
 इच्छाही बक्स कई करबीरे । समी कष्ट तुम कायो मोरी ॥ मुहिं निज कई भरोसा तोरा ।
 सब गुनाह अप बक्ती मोरा ॥ हुद भयर्टे अब मौत तुझाना । साबित राखो मोर इमाना ॥
 कम अजाब करीं कीऊ । किही बचाय माहि रब पीऊ ॥ तुम राही सबडै उपराही ।
 तुम्हरे आस दीवो जग माहीं ॥ दोबल जगिन कीं अंधेर खौरा । दोबल आग है कठिन
 क्यौरा ॥ तिहि से बचाव मोहिं अब । जरज मुनहुं रब मोर । भा तमाम पदि कपरा ।
 है रब बहिस्त बैजौरा ॥ तमामदया ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—मगसचरख, प्रस्तावना, रमजान का महत्त्व,
 विवराह द्वारा रमजान का बुकाया जाया और रोजादारों के लिये बहिस्त देने की आज्ञा ।
 (२) पृ० ५ से पृ० ८ तक—रोजादारों का बहिस्त में जाना, खाना खाना बखामूपन से
 सुसज्जित होना और सुराक पर चढ़कर बड़ी छान से बहिस्त को खाना । इतों की प्रासि
 प्रबन् रमजान की वापसी । (३) पृ० ९ से पृ० १२ तक—रमजान के मकरों के-सौन्दर्य
 का वर्णन, इतों का सौन्दर्य वर्णन, भोग विद्यास, लुदा का वर्णन, रोजादारों की बेहोशी,
 चेत तथा विनय । (४) पृ० १२ से पृ० १६ तक—सरियत पर साबित कयन रहने का

आदेश, ग्रथ निर्माण काल—सन् वारह सौ नव्वे हिजरी । करुं वयान अच कुछ सुनरे ।
माह शवान जो लाग्यो आय । तव हजरत जो कहो गोहराय ॥ रोजा रखने और पानी
पिलाने और दावत देने का फल । ग्रथकार की विनय और ग्रथ समाप्ति ।

संख्या १८४ ई०. सदा फकीरी, रचयिता—इलाही बरस (इलाहीगंज), कागज—
साधारण, पत्र—२, आकार—१३ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण
(अनुपुष्टुप)—३०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—मुहम्मद
सुलेमान, इस्लामिया मकतव (पाठशाला), ग्राम—पाइकनगर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—हर दम रव नाम का जपना । खुदा विनको कोऊ नही अपना ॥ ये जिंदगी
जान ले सपना । करो सिजदा तू पंचगाना ॥ हुकम हरू का बजालाओं । निही मे दूर तुम
जाओ ॥ जो माया लोभ सब छूटे । तो दिल की रोशनी फूटे ॥ कि ये दिन बीत सत्र जैहँ ।
कयामत के जो दिन ऐहँ ॥ कहँ सच अकिया नफसी । करँ फरियाद ये रव से ॥ मुहम्मद
मुस्तफ़ा अफ़्मर । शफी आसियाँ महशर ॥ जो जाहिर माल हो पाम तेरे । जकृत उसमें
से अदाकर भाई मेरे ५

× × × ×

इलाही बरस नादाना कहीं ऐ मन भूल मत जाना ॥

अंत—जो तू रव की रजा चाहे घनेरी । जहादो हज़ की अच कर तयारी ॥

× × × ×

गाँठ से दाम जात, अगों से काम जात । हिरदँ से ज्ञान जात, तिरिया पर संग से ।
अपनी तो हानि होइ, वरगदत ईमान खोइ । वैरी संसार होइ, ऐसे सरभग से ॥ साँचे से
करिये प्रीति । जग में नहीं कोठ भीत । जन्म जात योहीं बीत, वचाय चलो फट मे । कहत
रमजान शेर (उर्फ इलाही बरस), मन में विचार देख । जीना ई सपन लेख चलिये
सरनाय के ॥

× × × ×

विषय—कुछ उपदेश ।

संख्या १८५ स्वरगा रोहनि पर्व (महाभारत), रचयिता—इश्वरदास, कागज—
देशी, पीला । पत्र—२२, आकार—१६ × ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण
(अनुपुष्टुप)—४२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स०
१९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री ठा० चन्द्रिका बकश सिंह जर्मीदार, ग्राम—खानी
पुर, डाकघर—तालाब बकसी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ स्वरगा रोहनि लिप्यते ॥ राम प्रसाद कहै कर
जोरी । जनि कोठ जानै मति भ्रम मोरी । सुनहु कथा कछु कहौ बपानी, अमृत कथा मेरा
वहु वानी ॥ मैं न पगा कछु गूढ पुराना । मति उपदेश राम देहि ज्ञाना ॥ अछर सुधि
कै आदि न जाना ॥ यल पौरुष का करहुं बपाना ॥ दोहा ॥ अक्षर तीनि बपानौ भारथ मन
चित लाई । कड़े सुनै जे सादर ताकर पातक जाई ॥ १ ॥

अंत—॥ श्री० ॥ कही कृष्ण रात्रि समुझाई । श्रीनि रात्रि बर मुजहु जाई ॥ सोराग पुरी तह मयो नेबासा । तेंतिम श्रीदि बचताह बासा । सोरह रोहिनी कथा जो गाथी । होम अज बहुते फळ पाथी ॥ जो नर मुनि सदा मनुछाई पाकर पाप पुरत छप जाई । जो नर मुनि बिल धरि ध्यामा अनु सो श्रीगोह कंचम दाना ॥ जो नर मुनि सु बिल मन काई । अनु तेहि मेंडेठ बाळ कडाह । जो नर मुनि पई मन लाई । जनि श्रीमान वैकुण्ठि जाई ॥ दोहा ॥ सोराग रोहिनी कथा यह ध्यास रिपि हाई । जनमेजय सुप पापड ईश्वर दाम कथि हाई ॥ ८० ॥ इति श्री महा भारते स्वराग रोहिनी ऋते भाषा वैकुण्ठ गमनो रामा श्री कृष्ण मिलयो सर्व माई मिलना वैकुण्ठ बास पचमोष्पाय ॥ ५ ॥ सोराग रोहिनी कथा समाप्त सुम मस्तु । कथा श्री फास्युन मासे शुद्ध पाडे सीमा दसम्या श्री सम्बत् विक्रमादिने १६१५ साके साका बाहन १७७९ राम ॥

विषय—महामात के स्वर्गा रोहण पत्रे की कथा ।

संख्या १८६ यमविज्ञात रामायण, रचयिता—इसुरी त्रिपाठी (पीरनगर, सीता पुर), आगत्र—देशी, पत्र—१५०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्ट)—४६२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—जागरी, रचनाशाल—सं० १९१६, प्रासिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह, मरुकापुर बिका—सीतापुर ।

बादि—श्री गणेशायनमः श्री सरस्वत्ये नमः । कथित ॥ अहत सकळ रिड सिद्ध सुप सपदहु विद्या बुद्धि मुमिरि गलैस गौरी नंदन ॥ सिधुर बदन मुठि साहय तिकळ काल चंद्रवाल माळ नीम देत है अर्नंदन ॥ एक दैन मुझा विमूषण परसु पाणि चारि मुज कमय करत दास हुम्न ॥ सुंदर विमाल तन इसुरी समाह मन ह्या धन हरम विधन हुप इंद नी ?

अंत—यह कथा श्री रघुनाथ की रिपि बाळ्मीक जो गायक । ध्यासादि मुनि वहु भांति कथि सिव ताबा सा मनुजापक ॥ तेहि बरनि भाषा छंद ने कश्यप कुलोद्भव द्विज बरे । इसुरी त्रिपाठी बसत मारावती सरि तह सुप भरे ॥ कश्मिम पुर ते पंच जोवन परि नगर निवास है तह बरनि रामायन कथ्यु हर नाम राम बिकस है ॥ रस^१ चंद्र^१ नव^१ शशि^१ अश्व^१ मनु मुनि राम नीमी मानिके इति प्रेनाते प्रगट करि अति बळ हित विज जानि कै ॥ दोहा ॥ रामायन भाषा बरनि इसुरी मठि अनुरूप । शीशि देव भादि राम मिय निज पद भक्ति अनुप ॥ इति श्री राम बिकास रामायणे उमा महा संवादे इसुरी द्विज भाषा कृते उत्तर चरित्रांतर गत रामा स्वर्गके वैकुण्ठ बास बरबन समाप्त ॥

विषय—सातों काण्ड रामायण की कथा

संख्या १८७ ए. दोहाबली, रचयिता—जगदीवन दाम (कोटवा बारापंके), आगत्र—बादामी मोटा पत्र—४८, आकार—१३^३/_४ × १०^३/_४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपुष्ट)—३७५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, छिपि—जागरी, रचनाशाल—सं० १७८५ = १०२८ ई०, छिपिकाळ—सं० १६४० = १८८३ ई०, प्रासिस्थान—महंत गुद प्रसाद दाम प्राम—दहीगांव, आकार—जोगेरांज, बिका—मुस्तानपुर (अजय) ।

आदि—दोहा० विश्वेसर पुरी, गुरुसदी, तहाँ समाधि स्थान । मते मत्र उन दीन मोहिं, लागेठ अंतर ध्यान ॥ जग जीवन मन रोदा कर, सुरति रँसु फमान । कर चितमों लागी रहै, निरखहु नाम निसान ॥

अत—जग जीवन दाम ये दोउ कठिन, कामों कहीं सुनाय ॥ चाद विवादिहिं तज हु तुम । मन होइ चलहु अधीन । जगजिवन दाम जग गुप्त है । रहहु नाम ते लीन ॥ औरहि ज्ञान सिखावहिं समुदत मन मँह नाहि । जग जीवनदाम ते प्राणी । भटकि के भर्म भुलाहि ॥ इत्यादि ॥

विषय—उपदेश, भक्ति, ज्ञान, तथा वैराग्य संबन्धी दोहे ।

संख्या १८७ वी. लीला, रचयिता—जगजीवन दाम (कोटवा चारावकी), कागज—मोटा सफेद, पत्र—९, आकार—१३ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८८३ = १६२६ ई०, प्राप्तिस्थान—मुशी गुरुदीन जी, ग्राम—रानी का पुरवा, ढाकवर—तिलोई, जिला—रायवरेली (अवध) ।

आदि—साधो राम नाम जपु जानिकानि मन आनुना । लोक राज दे त्यागि । त्यागिदे मन मरजादा ॥ हानि लाभ नहि मानु । त्यागिदे चाद विवादा ॥ (१) दीन लीन अन्तर रहो, सबै आसरा त्यागु । ज्यों चींटिहि गुर हित अहै, ऐसि युक्ति गहि लागु ॥ मीन जलहि मा रहे जलहिते बहु सुख पाये । जल ते होत विछोए प्राण बहु तुरत भँचाये ॥ ऐसो वह मिरगा अहै, हुँदत कस्तुरी वास । पारप तजि तन मुरछयो, गोहे वास कि आस ॥ (२)

अंत—लोक लोभ की कानितें पुत्री वे मारहिं । थिर नाही वे रहहिं कर्म ते सब हिं विगारहिं ॥ नर नारी करि कर्म अस, कुगति ताहि के होइ । राम कहैं नारदते, वृथा न मानहि कोइ ॥ जो कोऊ अस करै । परहिं ते नर्क हिं माही । नाही वा निस्तार समुझु । अपने मन माही ॥ जस पुत्री तस पुत्र है । दोऊ यक सम जान । दया धर्म मुक्ति गति । अस कछु मन मँह आनु ॥ जो २ मोरे भक्त विसारो तिन्हका नाहीं । धरहि कतहु वे देहै, रहौं मैं तिनही माहीं ॥ जो जन भक्त मोर है, तिनते अन्तर नाहिं । जग जिवनदास भव सागर तजिकै, चरन भजन मन मांहि । इति ।

विषय—भक्ति, ज्ञान और वैराग्य वर्णन ।

संख्या १८७ सी. शब्द सागर, रचयिता—जगजीवनदास (कोटवा चारावकी), कागज—देशी, पत्र—२३४, आकार—१३ × १० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपुष्टप)—३६१५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८५ = १७२८ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महत गुरु प्रसाद दास, ग्राम—हरीगांव, ढाकवर—जगसराज, जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—मनरहु आसन मारि मठी ते न डोलहुरे । राते माते रहहु प्रगट नहि खोल हुरे ॥ निरखत प्रखत रहहु बहुत नहि बोलहु रे । रजनी दीन के चार सुमत कुजी ते खोल हुरे ॥ तेहि उ जशारे बैठि निर्भय होय खेलहुरे । गुरु के चरण दे शीम आस सब त्यागहु

रे । जहाँ २ तुम रहे वहीं कर मँगवूरे ॥ श्रीक बनी श्रीगान बद्धम की शक्तिरे ॥
रवि शक्ति छवि तेहि वारि हंस तेहि गाम्बे रे ॥

अंत—पिपते रहु कर्माप्य मुनहु सखि मोरी । कहीं सौंखि समुद्राय कहीं नहिं खोरी ॥
छोक लाज कुल कामि प्रीति नहिं तोरी । मैं त्वी देसलि स्वामि सचेत हो बारी । पाँच
प्रदंबहिं त्वागि वारि इन्ह सब कर होरी ॥ करि पचीस बहु रग लेकत हँ होरी । ये सब
रसदि रसाय बाँधि के एक दि खोरी ॥ बदि के गगन टकराय नवन रहु खोरी । जगबिजन
दास सत सेज सूति युग २ तेहि केरी ॥ × × × इत्यादि ।

विषय—भक्ति की महिमा, मजन की विधि, वैराग्य और ईश्वर के प्रेम आदि
का वर्णन ॥

सख्या १८८. सुगुल किशोर की बाराहमासी, रचयिता—जगन्नाथ, कागज—देसी,
पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपुष्प)—२०,
पूर्ण, रूप—प्रार्थन, पद्य छिपि—आगरी, छिपिकाव—सं० १९१४, प्राप्तिस्थान—प०
गयाधीन तिवारी, ग्राम—बिछरिहा, टाकपर—घाबगाँव, जिला—सीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुगुल किशोर की बाराहमासी लिख्यते ॥ आपदा
आशा करोहु पूर्य करो कृप्य ऐरी । काखी पद्य सुमीव बदि छाईं पचय चई सीरी ॥ बिजली
बमके दिपरा करी थीरज मदि घरती बिबा भीर जैसे मीन लकड़ी बुकिया बुल भरती ॥ १ ॥
साबन समुसि परी मय मरे आपेगे बलमा ॥ साधी कहीं पिपा घर आबें रिगु आईं बरमा ॥
जीवन खोकि धरौं उन आगे अतर मदि रखना । माही कहीं पिपा घर आये के रस की
बतियाँ ॥ २ ॥ माहीं गहर गंभीर पिपा नहिं आये री माईं । सुभी सेज लकड़ि रही कामिनि
बिरह बिपा छाईं ॥ जक बल भीर भरयो नदियम में जातक मरै प्याये ॥ अयमे सुप को
लोग बहुत है कुतूब सामु समुर ॥ ३ ॥

अंत—छेठ मास में पूर पई है ली कठिन भारी । येम में कोई गिठ बसगा छाई
कई गहरी ॥ १२ ॥ जगन्नाथ की बाराहमासी गार्ब सुगुल किशोर ॥ सोरी सुनि परम पत्र
पदि खीर कड़े जम कासी ॥ १३ ॥ इति श्री सुगुल किशोर की बाराहमासी संपूर्णम् ॥ श्री
सीताराम चंद्रापन मस्तु लिखतं गयाधीन तिवारी संवत् १९१४ वि० ॥ दिमान् सुहु १ ॥
श्री राम राम राम राम राम ।

विषय—सुगुल किशोर की बाराहमासी ।

सख्या १८९ प. गुद की महिमा, रचयिता—जगन्नाथ, कागज—देसी, पत्र—५,
आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपुष्प)—८२, पूर्ण, रूप—
प्रार्थन, पद्य, छिपि—आगरी, रचनाकाव—सं० १७०८ = १६५१ ई०, छिपिकाव—सं०
१८८० = १८२३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० बिजय स्वरूप शुद्ध, ग्राम—बसोरा, जिला—
सीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री मने रामामुद्राय नमः ॥ श्री मरकदे नमः ॥ श्रादा ॥ अठ अंग सो ईश्वर
प्रबम कीन्ह परनाम । जगन्नाथ गुद करि हँ मय पिपि पूर्य काम १ ॥ श्री० श्री गुद देप
चरम चिन जायो । इदय प्यान घरि मीम बबार्की । करि अगुक्ति परिक्रमा कीर्ति । तन मन

धन समर्पन कीजै ॥ गुरु है ब्रह्मा सुर तेतीसा । गुरु विन को जानै जग दीसा । गुरु है नेम वर्म सब केरा । गुरु है आवागचन निवेरा ॥ गुरु है ग्यान ध्यान मम स्वामी । गुरु है सब के अंतर जामी । गुरु विन सब सूझत है धंधा । गुरु विन जग भटकत जिमि अंधा ॥

अंत—ग्यारसि वा वारसि अमावस पून्यो । वटे पुन्य फल पावै दून्यो । सात समुद्र करै मसि पानी । लेपनी भार अठारह आनी । कागड भूमि समस्त वनाई । सकल पात ब्रह्म के लावै । वरमै सेस सारदा माई । लिपे कोटि चतुरानन धाई गुरु महिमा को पार न पावै । जगन्नाथ जन कछु एक गावै ॥ संवत मत्रह सै अरु आठै ॥ माघ मास उजियारी आठै । भरनी रवि अरु मंगलवारा । गुरुचरित्र भाषा विस्तारा ॥ दोहा ॥ भूल होइ जो हरि जन मात्रा विदु विचारि । हाथ जोरि विनती करै लीजै सकल सुधारि ॥ स्वामी तुलसीदास के सेवक अति ही हीन । जगन्नाथ भाषा सरन गुरु चरित्र गुरु कीन ॥ जल ते थल ते रापि पोदी लो बधन पारि । मूरप हाथि न दीजिये कहै चरित्र पुकारि ॥ इति श्री गुरु की महिमा संपूर्ण शुभमस्तु । संवत १८८० भादों मासे शुक्ल पक्षे चार मनिवार । ब्रह्मावर्त भगीरथ तटे पं० वयाराम जमाति मध्ये लिपित गगाराम देण्यव ॥ श्री श्री श्री श्री श्री । सीताराम राम राम राम राम ।

विषय—गुरु की महिमा ।

संख्या १८६ बी. गुरु चरित्र, रचयिता—जगन्नाथ दास, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—८ $\frac{१}{२}$ × ६ $\frac{१}{२}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्) ७०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०७ = १६५० ई०, प्राप्तस्थान—प० गजाधर तिवारी, ग्राम—चांदा, ढाकवर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ ओं अष्टाग दंडवत करि, प्रथम करि परनाम । जगन्नाथ गुरु सर्व विधि, करिहै पूरण काम ॥ १ ॥ चौ० ॥ गुरुदेव चरन चित ल्यावो । हीय ध्यान धरि सीस नवावो । स्तुति कर प्रकर्मा दीजै । तन मन धन सब अरपन कीजै ॥ गुरु हैं ब्रह्मा सुर तेतीसा । गुरु विन को जाने जगदीसा । गुरु है नेम धर्म सब केरा । गुरु हैं आवागमन निवेरा ॥ गुरु विन सूझत है सब धन्धा । गुरु विन जग भटकरत नर अन्धा । गुरु हैं तप तिथ वृत पूजा । गुरु विन अवोर नहिं हर दूजा ॥ गुरु को त्याग और गुन गाव । सो सूधो जमपुर को जाव ॥ गुरु मत्र को करै त्यागा । निकस कोद मरि जाय अभागा ॥

अंत—सकल भूमि तीर्थ करि आवे । सो फल गुरु चरित्र पढ़ि पावे ॥ ग्यारस वारस मावस पूण्यो । पाठ पुण्य फल पावै दूनो ॥ वरणे सेस शारदा माई । लेपे कोटि चतुरानन धाई ॥ वर्णो इन्द्र मंगल वारा । गुरु चरित्र भाषा विस्तारा ॥

×

×

×

×

गुरु महिमा को कहि जावै । जगन्नाथ किसके गुन गावे ॥ दोहा ॥ मुल्यो होय हर-जन मात्रा विदु विचार स्वामी तुलसी दाम जी के सेवक जगन्नाथ दास अधीन ॥ भाषे सरन गुरु चरित्र गुरु कीन्ह ॥ जलते थल ते रापियो, ढीले वन्धन पार । मूरख हाथ न दीजिये, कहै चरित्र पुकार ॥ इति श्री गुरु महिमा गुरु चरित्र ॥ संपूर्ण ॥

संख्या १६०. वारहमासी, रचयिता—जगन्नाथ (महाराजपुरा, कानपुर), कागज—

विद्वती, पत्र—२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुच्छेद)—१४, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—भागरी, लिपिकाळ—सं० १९३७=१८८० ई०, प्राप्तिस्थान—कासा मन्तराम, ग्राम—बनहस्प, डाकघर—गुलजारापुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वारह मास लिप्यते ॥ अब न जानद कंद रघुकुल बंद तिरहुत आइ है ॥ ११ ॥ अथ जनक बोलाय सुत को वचन सुनि भैसे कछो । है तात जनाय मुनाय विनती राय दूसरय पद गद्यो ॥ पाय अनुसासन वृषति को सकल सुत के आवह ॥ मानु महलन स्थाय भोजन बेगि आव करावह ॥ नारि नर नुर राज कन्या दाम सो सुग पाइहैं । अब न जानद कंद रघुकुल बंद तिरहुत आइ है ॥ १

अंत—आगुन ॥ आगुन पुरे नव पूर आय भरौस जो मेरो करै निरुट ताके वास हमरो कम तेहि पूरे सरैं ॥ कम कमिनि कीन बिधि पर तोप तुम पूरी सपे । पास मोझे आनिये अब पाइ मिय पूरी बसै । जगजाब सुप्रीत प्रभु सो सब पदाराय पाइहैं । अब न जानद कंद रघुकुल बंद तिरहुत आइ है ॥ १२ ॥ दो० । सब सपियन पर बोय करि बहु बिधि धीरज हीन । जगजाय जनदाम को गीन राम तप कीन्ह ॥ इति श्री वारहमासी जगजाय कृत संपूर्ण संवत् १९३७ वि० ॥ श्री रामजी की ॥

विषय—श्री रामचंद्र जी का बनरपुर क्लृपा करना और सरहज आदि के साथ हास्य विनाय करके प्रसन्न होना । फिर मानु सुर्नमा के पहाँ पर चारों भाइयों का भोजन करना और प्रसन्न होना आदि वर्णन ॥

संख्या १९१ ए. भीष्म जी का बायमासी, रचयिता—जगजाय, अंगर—देवी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेद)—१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—भागरी, लिपिकाळ—सं० १८१० = १७५३ ई०, प्राप्ति स्थान—नागप्रदीप मुराब, ग्राम—सहमणपुर, डाकघर—मिथिल, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री कृष्ण जी की वारहमासी लिप्यते ॥ प्रथम महीना असाढ़ लाग्य वर्षा रितु आइ । प्रीतम हमरे स्वाम स्वधेने पाठी मित्रपाई । कही बे कीसे नहिं आवे भैसे चतुर मुजान स्वाम बेरी मे बिक्रमाये ॥ बाल गये जानू की कामी ॥ श्री राधा गापी त्याग करी घर वारी कुबिजा सी ॥ ११ ॥

अंत—बेद नाम अब मिले कृष्ण जी राधा गापी से । प्रथम बापिन जानद भयो छुटे सब बाधा सो । कृष्ण की यह वारहमासी । परं सुनि ईशुंड मिपारै छुटे कम पंसी ॥ सांच यह मेरे मन आसी । श्री राधा गोपी त्यागि करी घर वारी कुबिजा सी ॥ इति श्री कृष्ण चंद्र की वारह मासी संपूर्ण समाप्त ॥ लिपनं शाही राम ईश्वर शिपपुर बहोद निवामी ॥ संवत् १८१० वि० परिमाण कृष्ण धयादसी श्री रामानुजायनमः ॥ श्री राम राम राम राम राम ॥

विषय—श्री कृष्णचंद्र जी का कुटुंबा हासी से प्रथम करना और उनके पास चले जाना वहाँ राबिडा जी का श्री कृष्ण चंद्र जी के विरह में ११ मान खनीत करना १२ बें

मास में श्री कृष्ण चंद्र जी का आना और राधिका और गोपियों को बहुत आनन्द होना आदि वर्णन ॥

संख्या १९१ वी श्री कृष्णचंद्र की वारहमासी, रचयिता—जगन्नाथ, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपुष्प)—३०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मैठ गोविंद राम भक्तराम मारवाड़ी, ग्राम—अभिलिहा, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ श्री कृष्ण जी की वारामामी लिप्यते ॥ प्रथम महीना असाढ़ लागा वर्षा रितु आई । पीतम हमरे त्याम सलोने पाती भिजवाई ॥ कहौ वे कैसे नहीं आये अँसे चतुर सुजान त्याम चेरी ने विलमाये ॥ टाल गये जादू की फांसी श्री राधा गोपी त्याग करी घरवारी कुविजामी ॥ सावन में मन भावन हमतौ दामन सौं लागी । जय तीं हम सौं प्रीति बढ़ी हरि अब काहे त्यागी ॥ सुनौ तुम ऊधौ मेरी सौं लाज शरम कित गई प्रीति जय कीनी चेरी सौं ॥ यही मोहि आवत है हामी ॥

अंत—चैत चिता में जरीं वरौं में गिरती कुड्या में । कहियो मदन गोपाल सग कुविजा को लै आर्म ॥ कष्ट इन वातन को डरना । हम गोपी दरमन की प्यामी और नहीं करना ॥ खबर मेरी लीजै ब्रज वामी ॥ श्री राधा गोपी ॥ लागत ही वैसाग्य साख सब ही के घर आई । उधौ जी ने जाय कृष्ण सौं अँसे समुझाई ॥ पैज तुम हक नाहक रोपी । हाड मास गलि गये वावरी है गई सय गोपी ॥ लेहिंगी कर बट हू कामी । श्री राधा गोपी ॥ जेष्ठ मास में मिलै कृष्ण जब राधा गोपी सो ब्रजवासिन आनद भयो सब छूटे बाधा मे । कृष्ण की यह वारह मासी पढ़ै सुनै वैकुण्ठ सिधारे छूटे जम फासी सांच यह मेरे मन भासी ॥ श्री राधा गोपी त्यागि करी वर वारी कुविजा सी ॥ इति श्री कृष्ण चंद्र की वारह मासी संपूर्णम् ॥

विषय—राधा कृष्ण की वारह मासी में श्री कृष्ण जी का राधा को छोड़कर चला जाना फिर उधौ जी के हाथ मँदेसा भेजना वर्णन ॥

संख्या १६२ ए. जगत विलास या रसिक प्रिया की टीका, रचयिता—जगतसिंह (राजा साहेब गोंडा), कागज—देशी, पत्र—२२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुपुष्प)—५६००, खडित । रूप—अति जीर्ण, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह, मझापूर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ जगत विलास यानी रसिक प्रिया की टीका लिप्यते ॥ अरुण क्षिपा सित पद पदुम पद पद तलनप रूप । हरत पाप सब जगत के हरिपद प्राग अनूप ॥ १ ॥ मूल छप्यै ॥ एक रदन गज वदन सदन बुधि मदन कदन सुत । गौरि नंद आनंद कंद जग वद चंद जुत । सुपदायक दायक सुकृत गण नायक नायक । पल घायक घायक दरिद सब लायक लायक ॥ गुन गन अनत भगवंत भव भक्ति वत भव भय हरन ॥ जैसे केसवदास निवास निधि लंबोदर असरन सरन ॥ टीका वार्तिक एक रदन गज वदन अयवा एकै रदन ही है और सब रद हैं । यहा पद श्लेष । अयवा दुरद नाम हायी

को तारों एक रत्न माहीं अतएव एक इन्द्र है ॥ गजबदन ॥ इह ऊपर इलेय कस्तूर दोहा ॥
प्रमाण सतसीया तिस के ॥ दोहा ॥ एक सव्य के अर्थ जई भापत माइ अनेक । पद इलेय
को कहत तिन द्विय बुद्धि विवेक ॥ बुद्धि सदन कंसो है इत बुद्धि को सदन है यान पर
है वा गज बदन बुद्धि को सदन वा पर है ॥ मदन कदन सुत ॥ मदन काम ताको कंदन
नाम नास कर्ता सिव महादेव को सुत ॥

अंत—अप्य भारती लक्षण मूल दोहा ॥ बरन जामी पीर रस भद्र अद्भुत में हास
कहिके सव सुम अर्थ जई सो भारती प्रकास ॥ टीका बीर, अद्भुत हास सों भारती जानो ।
अप्य जवा मूल कवित्त ॥ कावन कनक पत्र पत्र अमकत चाइ पत्र शिख मिलि झलकत
अति सुप दाइ । केसव छबी लो छत्र सीस पूछ सारथी सो केसरि की आइ अप राधिक
रथी बनाइ । नीकेही नकीब नाक बीको नक मोठी सोई एक ही बिसेक नि गोपाळ ती गये
बिजाइ । कोचन बिनास भाऊ अरिठ जराय छल मानो ज्यो मीन के स्व रथ मय मय
राइ । टीका ॥ कावन में ये हैं कनक पत्र तेई पत्र कहे पहिया भी कावन में शिखमिछी के
हैं तेई पत्रका नाम पताका है ते झलकत अप्यत सुपदाई अर्थ केसव कवि नाम भी सीस पूछ
को है सोई छबीलो छत्र भी केसर की आइ को है सोई सारथी नाम बहुलवान भी नक मोठी
को है सोई नकीब है । तहां एक बिसेकनि में गोपाळ ती बिकाय गये । भी कोचन बिनास
नाम सुंदर भी भात में अरिठ जराक काक सोभा मानी भीव के रथ पर मन मय कहे काम
सो ज्यो है । बिक्राइये मो हास सूचित भी ज्यो राघु बीर सूचित बरनन सो कविग में
आभियो अद्भुत काम कदन सो प्रमाण समुद्र्य कीर्षी महाबीर मार काटि अवि भाभितं पुनि
पत्र शायक कनक दखिर कांति । बीर सूचित ॥

विषय—रस वर्णन । केसव हास कृत रसिक प्रिया की टीका महाराज जगत सिंह
ने की है ।

संख्या १३२ थी छारिल मुधा निधि, रचयिता—जगतसिंह (गोरा ग्राम),
कागज—बादामी नवीन, पत्र—१०, आकार—१२ x ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३१,
परिमाण (अनुच्छेद)—०१२, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य छिपि—बागरी, रचवाक्य—
स० १८५८ = १८०१ इ०, छिपिकाळ—सं० १६४३ = १८८६ ई०, प्राष्ठिरयान—प० कृष्ण
पिहारी मिश्र, मातेत हावस, बिका—सरतमड ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ उंद् बरदै ॥ शिव सुत एक रदन अप छवि उद्योत ।
त्रिकर्षी मनी भेद ते मुर सरि पोत ॥ १ ॥ सीम मुकुट भुति कुंडल केसरि भाऊ ॥ पीत
बसन तन मुरली कर उर माळ ॥ २ ॥ जाते भीर व दूसर धारिहु अंत ॥ नति भेति कोहि
गावत निगम निरंत ॥ ३ ॥ चरन कमल रज बंदी अष्ट मूरि ॥ बासु कृपा करि पार्षी
कवि मति मूरि ॥ ४ ॥ श्री वृन्दावन पावन श्री वृत्र कुज ॥ श्री जमुना जख बिकसित सरमिज
पुंज ॥ ५ ॥ श्री शुभ चरण सरादइ पुनि सिरनाथ ॥ रचत भेद मादिरायक कवि मत पाव
॥ ६ ॥ श्री सरत के उपर गोरा ग्राम ॥ तेहि पुर बमत कवि गनन आटी पाम ॥ ७ ॥
निलमें एक अष्ट कवि अति मनि मंद ॥ जगत सिंह सो बरनन बरदै उंद् ॥ ८ ॥

अंत—या विधि दोष भगम है कहेउ उदार । तारों सुप्य आभिये सत कप विचार ॥

विनु माहित्य सुधानिधि करी कविच । हसी ताहि कवि वंविट जे रम मित ॥ काव्य गृथ
अग्नि नित मत करि एक ठौर । कहि साहित्य सुधानिधि कवि मिर मौर ॥ जो प्राचीनन
काव्य मग क्रिये उदार । ताते होन और कष्टु क्रियो विचार ॥ दग्धाक्षर गन दूपन छटक
रीति । मेरे छट गृथ ते जानो मीत ॥ नायकादि सचारी स्याति भाव । रम मृगांकने जानो
जानो मव कविराय ॥ भरत भोज अरु मम्मट श्री जय देव । विङ्गनाथ गोविट भट दीक्षित
मेव ॥ भानु दच आटिक मत करि अनुमान । त्रियो प्रगट करि निपाट कविच विधान ॥
कई छाई छंत्रिसमयधुनि चरवै वीनि । टम तरंग करि जानो गृथ नवीन ॥ ० ॥ इति श्री
मन्महाराज कुमार विमेल वंशाव तप्त दिग्विजं मिहात्मज जगत सिंह कवि कृते माहित्य
सुधानिधि सकल दोष निरूपनो नाम सप्तमस्तरंग ७ श्री मन्वन् १६४३ आपाद शुक्ल सप्तम्यां
गुरुवासरे समाप्तं सुमंभूयात् ॥

सरया १६३. धर्म सवाद, रचयिता—जनटयाल, कागज—साधारण, पत्र—३०,
आकार—८ $\frac{1}{2}$ × ७ $\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०८, पूर्ण,
रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३३ = १७७६ ई०, प्राप्तस्थान—
मोहनदास, स्थान स्वामी पीतावर दास, ग्राम—सोनामऊ, ढाकुर—परियावां, जिला—
प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गोपाल जी सहाय ॥ अथ धरम सवाद लिप्यते ॥ दोहा—श्रीराम
कृष्ण क्रपा करै, गुरु संत होइ सहाय । कर जोरे करना करै, गनपति लेहि मनाय ॥
चौपाई—गुरु गोविट की आज्ञा पाकं । तो क्या पुरातन कहि समुझाकं ॥ राजा धरम
हस्तनापुर गाकं । उत्तम कथा भई तिहि ठाकं ॥ टापर ये टतपति भई कथा । नग्र हस्तनापुर
जानहु जया ॥ गुरु कौ पूछै ग्यान की गली । जनमेजय मुराजा वली ॥ ब्रह्म स्वरूप तुम
कच्यो गुसाई । धरम जाति जुधिष्टलराई ॥ एक आतमा देह वताई । कृपा वंत होइ कहि
मुनिराई ॥

अंत—धर्म सवाद सुनै चिनु लाय । मुचै पाप सत ही जिय थाय ॥ परलोक कीरति
पावै सोई । सुकति होइ न समो कोई ॥ पिता पुत्र की सुनि कथा, मुद्रित होय मव कोय ।
जन दयाल सहजै मिलै, चारि पदारथ सोय ॥ धर्म सवाद सुनत ही, सब तीरथ फल होय ॥
धरम वडै अरु पाप छय, हरि दरम टिपावत सोय ॥ इति श्री महाभारते धरम जुधिष्टर
संवाटे जय वरननो नाम चतुर्थोऽध्याय समापता ॥ श्री ॥ सवत् १८३३ ॥ पाँप सुदी ४
सोमवार ॥ पठनारथ श्री महाराज कुँवारि श्री वेटी विचित्र कुँवर जू देव ॥ लिपित पटित
चरन दामेन गोहर नगर मध्ये । श्री रमत् ॥ श्री ॥ कल्याण ददातु ॥ श्री परमेशुर जी सदा
सहाय रहै ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—धर्म का चाण्डाल रूप धारण करके राजा जुधिष्टर की परीक्षा लेना और
उपदेश देना ।

सरया १६४ ए. होली संग्रह, रचयिता—जन जगन्नाथ, कागज—देगी, पत्र—
८, आकार—१६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५६ ।

पूर्ण । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—बागरी, रचनाकाळ—सं० १७७३ = १७१८ ई०, लिपि काळ—सं० १८८५ = १७२० ई०, प्राप्तिस्थान—ग्र० सूरत सिंह, ग्राम—सिवरा, बाकपर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर (अजय) ।

भाषि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ होली संग्रह लिख्यते ॥ हो० । प्रथम राजानन को सुमिरि शरद को सिर भाय । होली की रचना करी जगन्नाथ जन गाय ॥ होरी १ पहिली ॥ आठ मोहन बंसी बजाई हो । बंसी जुनि मुनि सब मंत्र बाका आई प्रभु परं पाई भई हि बिहाऊ भूपम की मुधि नहीं कंगल पग में सजाई मुधि मन की बिसराई ॥ इधि के बहाने पर से बिकरि के प्रभु के निकट बलि जाई । जमुना किनारे हरि बंसी बजावैं दीन मनुकिया गिराई । इही सब शीम लुग्यई । हे असोदा भाई बरभयो मोहन को भंसो बतुर कन्हाई । मनुकी फोरि सकल इधि सुख्यो धैसी भूम मचाई । सो कर्मतुम बरधि न जाई ॥ हे मंद बंदन हे मय माहन सीता अधिक बजाई ॥ जन जगन्नाथ शरण में तिहारो बरनन पी सी काई । कनक कल्या जगुराई ॥ आठ मोहन बंसी बजाई हो ॥

अंत—बसिरी डर कुंवर कन्हाई हो ॥ जिन मथुरा में जन्म लियो है गोकुल माह सिपारी कंसामुर पुनया को पश्ययो वृष विभावन आई इत्यो क्षम में जगुराई ॥ श्रीधर विप्र बहुरि मंत्र आयो पंडित रूप बजाई । जीहा शीम मरोरि सुगुलि बर रोबत मथुरा जाई । कंस से इत्यु जगुराई ॥ मारि अपामुर आदिक मोहन कुंज में कीला बजाई । राधा कलितानिक गोपिच से छीनि इही इधि पाई । चरित सब बरनि न जाई ॥ मथुरा में जय कंस को मान्यो मातृ पिता को छोड़ाई । कुंडिनपुर दकमिथी को विवाहो सोमा बरनि गई जाई । पुरी हरिक्रम को बसाई ॥ रहत सदा ब्रज में कुरुनंदन सीस्य कृत सदाई । जन जगन्नाथ भनि मंद जमोदा क्रिई हरि चरित विजाई । सोई बरपन बलि जाई । बसिरो डर कुंवर कन्हाई ॥ इधि पी जन जगन्नाथ छुट होरी मंग्रह संपूर्ण समाप्तः छिपतं मुग्ध ब्राह्मण आरे विवासी निधि बवार शरद पुनो संवत् १८८५ वि० श्री नारायण जी सदा सहाय । बोको इमुमान बाबा की श्री ।

विषय—श्री कृष्ण और शक्ति के प्रेम से पूर्व होली वर्णन ।

संख्या १३४ वी, मोहमर्द राजा की कथा, रचयिता—जन जगन्नाथ, कागज—देसी, पत्र—८, आकार—८ X ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुपुष्प)—४९२, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—बागरी, रचनाकाळ—सं० १७७६ = १७१९ ई०, लिपिकाळ—सं० १७९० = १७३६ ई०, प्राप्तिस्थान—ग्र० सूरत सिंह, ग्राम—सिवरा, बाकपर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर (अजय) ।

भाषि—श्री गणेशाय नमः अथ मोहमर्द राजा की कथा लिख्यते ॥ चौ० ॥ गुरु चरन बधि बहू निधि मंत । मुनी सापि त्यो गाके मित ॥ जो मुनि मोह ग्रीह नई व्यापि । गार्ह निरबंध राम को जाय ॥ कहीं तु परम पुरान की साथी । जो श्री पति मारद सो साथी ।

अंत—श्री तुलसीदास जो धरयो मिर दाब । यह माह भरद कथा कही जन जगन्नाथ ॥ परम मंत मत इम कथो बिचारो । पुरातम कथा परम सुप कथी ॥ संवत सम्रह पी उपाया । अथ यह माघे करि बहुत हरथ ॥ अतिक बरी हादनी दिने । सीमवार

यह गिनोतर गिनै ॥ इति श्री मोह मरद राजा की कथा संपूर्ण ॥ श्लोक ४२५ ॥ लिपतं गगा दयाल मिश्र शंकर पुर निवासी सवत १७६० कार्तिक वद्री दीपमालिका को संपूर्ण हुई ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय—मोह त्यागी राजा का वृत्तत (राजा की रानी और राजकुमार और राजकुमार की पत्नी दासदासी और सारी प्रजा सब मोह त्यागी थे) । इसकी परीक्षा के लिये नारद जी ने अपनी माया से राजकुमार को मृतक समान कर सबकी दशा देखी परन्तु किसी को भी शोक नहीं हुआ । यह देख नारद जी बहुत प्रसन्न हुए राज कुमार को जीवित कर दिया और राजा की बहुत प्रशंसा की ॥

संख्या १६५, शिव स्तोत्र, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—मुंशी शिवधारी लाल, ग्राम—ममरेजापुर, ढाकघर—बेनीगंज, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः असतोत्र । संकर देवहि जोरि कर हियो विमै करि वृद । जनक सुता पूजत शिवै करियै मोहिं अनंद । हे आनंद धर छविचंद धर गुण वृंद धर सिर गंगधर । भस्मांगधर सुभरग धर अरधग धर त्रिय सग धर दीन दान धर चरदान धर । दो०—दाता सिवशंकर विपेसुर गिरिजारमण । रापौ मेरी लाज तुम तजि जाचौ और केहि देवन के महराज हे राजधर सुप साज धर मणि मालधर द्यग ज्वाल धर छवि जालंधर रस शूल धर तन अवर धर वाघमर धर कर सुलधर सुख मूलधर अनूकूल धर वरदे विसेसुर अव घण दाता रापु प्रण मोरी अव की वार । राम चंद्रवर मिलै मोहि देवन के सरदार ॥२॥ हे दारंधर अवतारं धर अव शरंधर कर डमरुधर विभूतिधरं जट जूटधर गल सेप धर वट भेषंधर ।

अंत—हे दान धर विज्ञाणंधर जगमाणंधर ससिपडधर श्री पंडधर ब्रह्मांडणधर सुपलंछंधर कमलछंधर तन अक्ष गति सुसधर जनिवंधर दीजै वर रघुवर मंगल कर कवि नाथ के हरन दोष दुख रोग करौ धनुष लघुता प्रभु श्री रघुवर के जो ४ हे जोग धर भवभोगधर कैलाशंधर मुदवा सधर मेना संधर विपग्रीवंधर सुपसीवधर धुर धर मंधर सुप करमधर गजचरमंधर मम सरमंधर सममडालकर ससि गग भस्मांग रग अरधग गोरी कुद इंद्रुतन अति अनंद अरविंद न्यनसर डग्रत हंग्रत कर डमरु डिंदिं मिलिं डिम डिम वजै । तीन लोक वरदान सदादासन मुप साजै कहत जान की जोरि कर मोहि वर रघुवर दीजिये थान सुपवि वृदावली रापि जगत् जस लीजिये । इति श्री जानकी मंगल अमृतधुनी शिव अस तोत्र संपूरण ।

विषय—महादेव का स्तोत्र ।

संख्या १६६ ए. भगवती विनय, रचयिता—जानकी प्रसाद, कागज—साधारण, पत्र—२८, आकार—६ X ५ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—ठा० कृष्णपाल सिंह 'वीर' कवि, ग्राम—तिवारीपुर, ढाकघर—सागीपुर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री वेण्यास्तुतिः ॥ हरि गीत छन्द ॥ महात्त तैज
प्रकाश अम्बे पूर्ण अंक विचारि कै । जोग विधि इन्द्रादि गणै वेद हृ तन पारि कै ॥
शिरुय रूप अभादि माया सर्व आदि सदा अये । पूर्ण इन्दु सुपार विन्दु अनन्त इन्दु प्रमा
मये ॥ १ ॥ श्रीसाम्ब अति स्वरूप सुन्दर सर्व सीमागमहि किमे । ये खोचने सब मोचने
अथ खोच्य अत्र ज्ञाता अये ॥ दीर्घवर परब्रह्म दद उर्ब्रह्म एक दक आसिअ । प्रमा मन्दल
वीर द्वै कुच अत्र दीप्त प्रकाशिम ॥ २ ॥

अंत—॥ हरिगीत छंद ॥ शुभ अचल भक्ति विवेक विद्या ज्ञान बुधि सोई दीजिए ।
जेहि मिहहि दर्शन देवि तेरो पबिऊ पब निज कीजिए ॥ हार अपने को सहाहि अवीन दीन
गवीजिए । हे बननि अतुलित कृपा करिके तुरत सुधि जन लीजिए ॥ चौपाई ॥ विमल
अम्बिके पूरण चम्बा । सर गुण सरिस भर बरवि सुखन्दा ॥ असरज सरण चरण चित
हायो । दास जानुअी विनय सुनायो ॥ इति श्री भगवती विनय पवार संतोषमय भवाणी
प्रसादात्म्य श्री रामचन्द्र पादातुरागी जानकी प्रसाद कृत समाप्त ॥ शुभ मस्तु ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ११ तक—देवी की स्तुति—अङ्गों की शोभा, शक्ति,
धाम, अस्त्रादि के संबंध से, विविध नामों, अस्कारों, दास के प्रत्येक अङ्ग की रक्षा का
रिषी के संबंध से ।

(२) पृ० ११ से पृ० ४० तक—मार्गराजा, बगका सुखी, संपूर्णादि नामों के
संबंध से स्तुति, कबि का वर्णन करते हुए देवी की स्तुति । नाम प्रभाव, भक्ति का बर
स्तोत्र पाठ का फल, स्तोत्र की प्रशंसा तथा प्रभाव । महाकस्मी का स्तोत्र सुर्ग स्तोत्र ।

(३) पृ० ४१ से पृ० १६ तक—उपासक स्तुति, बैदपुराणादि संपूर्ण पदावों
की मुटि दृष्टि से स्तुति । देवी के अनेक नामादि के संबंध से स्तुति ।

संख्या १६६ वीं यमनवदन, रचयिता—जानकीप्रसाद (जमींदारपुरा, बकमर),
कागज—देहा, पत्र—४४, आकर—१२ x ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण
(अनुपुष्ट)—१६०८, पूर्ण, रूप—माचीन, पद्य, कवि—नागरी, रचनाकाक—सं०
१९०८ = १८११ ई०, लिपिकार—सं० १९२१ = १८१४ ई० यासिम्वात—पं० उमाशंकर
शुभे साहित्याम्बेपक ।

आदि—श्री राम ॥ श्री गणेशाय नमः । अथ श्रीराम नवरत्न विषय किम्पले अथ
गणेश एक इव महा अथ खोच निवारण । विष्णु हरण सुपराशि पतित कोटिगृह सब तारण ॥
कंडव्य कर शशिहार मनो रिधि सिधि बुधि दाबक । महा बाद गज दीर्घ मनो तिहं लोक
विनायक । अथ परछ पाणि सिंघर घर कम्बोदर अचर करण । बरबुधि विवेक विद्या
सहित वैकु कृपा करि मुद करण ॥ १

अंत—सिद्धग ३ कर सति छन्द सुहाये । विषय पूरबी मध्य बलाने । १२० । बाग
शुभना छंद—कहे अष्ट से छन्द इक्ष्वाकर्न सर्व मी हृ विनि मध्यगती प्रतीता महा सिद्धि वा
जानकी मिह अम्बों विधि राम नवरत्न विनती विनीता । भई पूर्ण अ्यों पूर्वमा चंद जानहुम
अति श्री राम निर्भेद गीता । दिधी अतिकी पूर्वमा विप्रमादिष बनीस से अष्ट सम्बलुमीता
॥ १९०८ ॥ १२१ ॥ नाम विहालमिह अग्राहिर । श्राक सिद्ध तानु सुत माहिर ॥

तासु भवानी सुवन सुजाना । ताके मैं मति मंद अजाना । पत्री यह करि नेम पाठ करहि
जे नर सुजन । लहैं सो हरि पद प्रेम सिद्धि मनोगति प्रभु कृपा ॥१२३॥ इति श्री रामनवरत्न
विनया पवार वसोदभव भवानी प्रसादात्मज श्री रामचन्द्र पादानुरागी जानकी प्रसाद कृत
पूर्वी भाषाया नवम विनयः ॥११॥ इति श्री ॥ राम नवरत्न विनय. समाप्त. शुभमस्तु श्रीरस्तु
लिपित मिद पुस्तक जानकी प्रसाद निज हस्तेन माघ शुक्ल पंचम्यां भौमे सम्बत् १६२१ ॥

विषय—प्रथम विनय—इसमें अवधी भाषा में २५१ छन्दों के अन्तर्गत देवी देव-
ताओं की वन्दनायें और स्तुतियाँ हैं । जैसे शंकर, पार्वती, गणेश, सरयू नदी आदि की ।
द्वितीय विनय—नाम की ओर चित्ताकर्षण करनेवाले ५१ छंद हैं । तृतीय विनय—इसमें
राम नाम का माहात्म्य ५१ छंदों में वर्णन किया है । चतुर्थ विनय—भगवान कृष्णचन्द्र के
विलासों का वर्णन १०१ छंदों में किया है । पचम विनय—१०१ छन्द चित्रों के रूप में
राम तथा कृष्ण आदि के विनयों पर लिखे गये हैं । जैसे कमल दल चित्र, शंख चित्र, हस्ति
चित्र । छल चित्र आदि । षष्ठ विनय—भ्रजभाषा में स्तुतिया । सप्तम विनय—५१ छंदों
में श्रीरामचन्द्र की स्तुति । अष्टम विनय—पजावी ढग पर 'वाह गुरु' की वन्दना । नवम
पूर्वीय भाषा में १२३ छंदों में रामभक्ति का वर्णन ।

संख्या १६६ सी. श्री राम नौरत्न विनय, रचयिता—जानकी प्रसाद पवार
(जर्मीदारपुरा), कागज—देशी, पत्र—१३२, आकार—११ X ६३ इंच, पंक्ति (प्रति
पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुस्टुप्)—२३७६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी,
रचनाकाल—सं० १६०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—मुं० चतुर विहारी लाल जिलेदार,
ग्राम—सधवा चंडिका, डाकघर—अटी, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—अथ श्री रामनौरत्न विनय लिप्यते ॥ (इसके बाद १६६ वी के समान)

अंत—॥ सोरठा ॥ धन्य धन्य श्री राम, धन्य धन्य रघुपति हरे । पुरण्डु मो मन
काम, दुहुँ लोक प्रभु धन्य तू ॥ ११५ ॥ चौपाई ॥ प्रथम विनय रस अमृत सानी । अवध
पुरी भाषा मृदु वानी ॥ इन्दु वान कर छंद पुनीता (२५१) । वरनि विनय भगवत सुभ
गीता ११६ ॥ नाम चैतावनि विनय द्वितीया । छंद इंदु सर विच कथनीया (५१) नाम
महातम विनय तृतीया । ससि सर छन्दनि विच वरनीया (५१) ॥ ११७ ॥ कृष्ण
विलास चतुर्थ वपानी । यक सत एक छंद मृदु वानी (१०१) पच विनै चित्र विच
भाष्यौ । यक सत एक छन्द रचि राष्यौ (१०१) ॥ ११८ ॥ यक सठि छंद सुधारस
चापा ६१ पष्टम विनै वर्णि वृज भाषा । सप्तम विनै इदु सुर छंदहि (५१) वरनि सुनायो
रवुकुल चदहि ॥ ११९ ॥ पुनि पंजावी विनै वपानी । एक सठ छंद वरनि मृदु वानी ॥ ६१ ॥
शिव द्यग कर ससि छन्द सुहाने । विनय पूरनी मध्य वपाने ॥ १२० ॥ वरन झूलना छद
कहे अष्ट सै छंद । इक्यावने सर्व नौहैं विनै मध्यगंती प्रतीता । महा सिद्धिदा जानकी
सिंह वन्यौ विनै राम नौरत्न विन्ती विनीता ॥ भई पूर्ण ज्यौ पूर्णिमा चद आनंद मैं जैति
श्री राम निर्भेद गीता । तिथौ कार्तिकी पूर्णिमा विक्रमा दित्त वन्नीस सै अष्टसम्ब-
वपुनीता ॥ १२१ ॥

X

X

X

X

पत्नी यह करि नेम, पाठ करिहि के घर सुजम । छहैं सी हरि पद प्रम, सिद्धि मनो
गत प्रभु हृपा ॥ १२३ ॥ ८५१ छंद या बिन मध्य सब है ॥ इति श्री राम नव रत्न त्रिनिर्घो
पचार बंसोद भवानी प्रसादात्मज श्री राम चन्द्र पादापुराणी जानकी प्रसाद कृत पूर्वी भाषार्थो
नवम विनयः ॥ ९ ॥

प्रबन्धर का निवास स्थापन—राम कृपाते पदरत माते जिमीदार पुर जो हथी । इक्षित
संग देह कोस है परगन बरुमक सो हथी ॥

प्रबन्धर परिचय—राम मिहाल सिंह जग जाहिर, झाऊ सिंह सासु सुठ माहिर ।
सासु भवानी सुवन सुजाना, ठाके में मति मंद अजाना ॥

संख्या १६७ मुक्ति रामायण, रचयिता—जानकी प्रसाद, कागज—साधारण,
पत्र—१०१, आकार—९३ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अक्षुप्त)—
१४३५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, छिपि—नागरी प्राक्षिस्थान—राजा अजयदेव सिंह रईस
सासुकेदार, रमेश काइवेरी, कलकाकांकर, ब्रिह्म—प्रतापगढ़ (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ गन पति रूप है के गनपति से बिन को माय छे के
दिन को विनैम मय पर को । रूप छे के सकति सकति अठ धारिम को हरि अनु सारिम सँवारी
रूप हर को ॥ जानकी यहाँ प्रीति करु दत्त तहाँ ताही रीति जानकी प्रसाद माँहि लावत
गाहर को । नाम जाको पूरन करत मन काम वंदियत पर नाम नित राम रघुबर को ॥ १ ॥
बर्षत सिद्धक छंद—महादि द्य गन छोंदि समे विचारे । सीप्यो सिपे अमल वृद्धकाम्य
भार ॥ तामो द्विपो मम सुरामय रीति जोड़े । साँदिस्य बंस प्रति प्रीति पर सौँ है ॥ दोहा—
सकळ देव पुनि छंकर मई । सपि सीय दित पीन । तऊ कहेही अमल के, प्रभु प्रमान करि
कीन ॥ गीति का छंद—बेहि वास तें रिपि संग को तप तज पूरन बों विप्यो बिनके को
अप लग्न आप अजग्न भूपति मे छिबो ॥ जहँ धारि के अति बेप माय ह्यो अराति करास
है ॥ तिदि धंग बेर पुरी मही मोहि भूप कीन्द कृपाछ है ॥

अंत—दोहा—मिस भूग पावन जीव बहु करे मुक्त रघुदाह । कीमुक देवत रवि
मर्षो गये गगन मधि आह ॥ मध्य विचन इमि देखि प्रभु भूगवा पेक विहाह । करि सरजू
जल न्दान पूह जाण श्री रघुदाह ॥ वृत्ति छंद । कर्णू भूगवा जल केकि करै कर्णू पूह
बागादि काय ॥ कर्णू भुति क्षाम्प पुरान सुने करि चर्म समा कइ न्याव विचाह ॥ सिंगो
अबची पन मध्य सिंहासन बैसत है कर्णू धरि भाद । तिहुँ बनु समेत छरी नित श्री रघु-
नाथक को पुर भीषि विहाद ॥ इति श्री जानकी प्रसाद विरचित मुक्ति रामायन सप्तम
प्रतिहार ॥ ७ ॥ श्री गणेशायनमः ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ५१ तक—प्रथम प्रतीहार—सब देवताओं का एक
राम के रूप में आरोप, अयोध्या तथा राजा दशरथ का ब्रह्मचर्य । राम जन्म, बाल
श्रीदा, विश्वामित्र-दशरथ संवाद रामतदिकादि इनन । राम विवाह वर्णन । (२) पृष्ठ
५२ से ६६ तक—द्वितीय प्रतिहार—वर्मतादि वर्णन राम बच रामन राम का विविध
स्थाओं पर निवास करना (३) पृष्ठ ६७ से ७४ तृतीय प्रतिहार—अग्नि आज्ञम

निवास, विराध-वध, सूर्पणखा का जाल, खरदूषण विनाश, सीता हरण, वध-वध, पपा-सर वाम, सुग्रीव से मित्रता, (४) पृष्ठ ७५ से ८५—चतुर्थ प्रतिहार—बालि वध, शरद वर्णन, सीता का खोजा जाना । (५) पृष्ठ ८६ से १०७—पचम प्रतिहार, हनुमान रंका गमन, लका दहन, हनुमान कीर्ति, सीता संदेश, रावण की सभा के सभा सदों के विजय संबन्धी विचार । विभीषण पर रावण का कोष (६) पृष्ठ १०८ से १६७—षष्ठम प्रतिहार युद्ध वर्णन, रामचन्द्र कीर्ति वर्णन, रावणादि वध विभीषण राज तिलक (७) पृष्ठ १६८ से २०५—सप्तम प्रतिहार—राम अयोध्या गवन, अयोध्या का वर्णन, सभा का वर्णन, अन्य वर्णन, राम मृगया वर्णन । रघुनाथ जी की सभा की कीर्ति, त्रय समाप्ति आदि वर्णन ॥

संख्या १६८. भजन विनोद, रचयिता—जानकी सहाय, कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—७ X ५.३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१३, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८३ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० उमाशंकर दूवे साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ राग वसन्त । वन्दौं जदुपति आनन्द धाम जातें छूटत जगदंभ ठाम । जदुवंग कुमुद सुपदानि इन्दु सेवत विधि शिव चरनार विन्द १ सोहन सरौर वर नीलकज अगमित अनगसम् दीप्ति पुज । नयना विशाल सत अरुण कज क्रोमल कृपालु सुपरासि पुंज । २ । केसरि पुनीत तिल कावलीय सुरसत चित्र वर मोहनीय । सुचि मुकुट क्रीट कुंदल सुडोल । सत कोटि सूर छविलेत मोल । ३ ।

अंत—वीती वैसन तृष्णा वीती । लोभ गगरिया अजहूं रीती । देस विदेस फिरे वीन जारा पोटे रतन न पूंजी हारा । मन को सोचो भयो न कवहूं । नई सम्पदा सोचत अवहूं । मूरपु मन को को समुझावै बूढ़ा तोता कहा पढ़ावै—

विषय—कृष्ण जी, राम, शिवजी के, रामनाम की महिमा, मुकुट, अलक नप, भाल, भृकुटी, नासिका आदि का वर्णन, ब्रह्म, जीव, ससारिक सुखों का भोग, ईश्वर का भजन, जीव की तृष्णा, माया आदि विषयक भजन व उपदेश ।

संख्या १६९ प. गनक आहादिका, रचयिता—जन रामहित, कागज—साधारण, पत्र—१६५, आकार—९.३ X ६.३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४१३, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८६ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—रामप्रसाद मुराव, ग्राम—पुरवा विश्रामदास, ढाकधर—परियावां, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—॥ भाद्रपद ॥ २७ ॥ रेवती ॥ २८ ॥ इति नक्षत्र नामानि ॥ अथ नक्षत्र चरण विभाग लिप्यते ॥ चूचे चोला ॥ अश्वनी ॥ लली लेलो ॥ भरणी ॥ आई उणे ॥ कृतिका ॥ वोवा वीवू ॥ रोहिणी ॥ वं वो ककी ॥ मृगसिरा ॥ कू घ ड छ ॥ आद्रा ॥ को को हही पुनर्वसु ॥ हू हे होडा ॥ पुष्य ॥ डीहू डे डो ॥ श्लेषा ॥ मामी मूमें ॥ मघा ॥ मोटा टीटो ॥ पूर्वा फाल्गुणी ॥ टे टो प पी ॥ उत्तरा फाल्गुनी ॥ पू ख ण ठ ॥ हस्त ॥ पे पो रा री चित्रा ॥ रूरे रोला ॥ स्वांती ॥ ती तू ते तो ॥ विशाखा ॥ ना नी नू ने ॥ अनुराधा ॥ नो या यी

पू ॥ घेडा ॥ जे जो मा मी ॥ सूट ॥ मूया अज ॥ पूजापाड ॥ जे मा ज जी ॥ उत्तरापाड
 श्री सू जे जो ॥ अक्षय ॥

अंत—अक्षयकला सुत्र सर्म का विचार ॥ दोहा ॥ अक्षय नपत ते श्रीजिये । अक्षय
 कल्प पर जोय । अक्षयस जो नपत है । अक्षय मरिये सोय ॥१७॥ अक्षय नपत का मनुज
 को । परे मध्य तिरसूक । चारों दिशि जो विहित है । सो श्री जनि भूक ॥ १८ ॥ दोक
 अक्षय विसूक के, मुनय नपत गत पाव । सुत्र करम जनि जाव दे । गये छागिई पाव ॥
 १९ ॥ अक्षय रीर जो नपत गत, कक्ष संदिह न होय । पंठित अक्ष विचारि कै इमि गापत है
 कोय ॥ २० ॥ इति श्री अक्षयस हित विरचितांर्यो गणक आख्यादिकार्यो सामान्य वितेप
 सीता चारादि अक्षय विचार सहित वर्जना नाम नवमो विग्राम ॥ समाप्त ॥ संवत् ॥
 १८८६ ॥ वैश्व सुदी ॥ ९ ॥

संख्या १३६ श्री गणक आख्यादिका रचयिता—जन रामहित, अक्षय—द्वैती,
 पत्र—१७, आकार—१७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुच्छेद)—
 १९७५, पूर्ण, रूप—माषीम, पद्य भार गद्य । छिपि—बागरी, अक्षयकला—सं० १८८४,
 विपिकाळ—सं० १९१२, प्राप्तिस्थान—श्री अक्षयजी विद्यापीठ, ग्राम—मानपुर, तहसील
 विसवा, जिळा—सीतापुर (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अक्षय ज्योतिष पोषी गणक आख्यादिका जन राम
 हित कृतम् छिप्यते ॥ दोहा । ज्योतिष पति कुल कमल पद बदि सुमिरि द्विजराज रचत
 गणक आख्यादिका कालक बुद्धि के काज ॥

अंत—इति श्री राम अक्षय हित विरचितायाम् गणक आख्यादिकार्यम् समाप्त
 वितेस्वसी चार वाजादि अक्षय विचार सहित वर्जना नाम नवमो विग्रामः संवत् १९१२
 मास नाम घेडा मासे कृष्ण पक्षे रवि वासर द्वादश्याम समस्त दिन गत चाक्षी ईश्व समाप्त
 सुभमस्तु कल्याणस्तु वसन्तत वितेस्वर विद्यार्थी के स्थान गाधीपुर गंगा तटे अक्ष देवा तस
 क्लिया मम होय न श्रीजिये ॥

विषय—ज्योतिष ।

वितेप—१९९ पृ. से अक्षय ।

संख्या २०० पृ. वैश्व रत्न, रचयिता—गो० अक्षयदेव मह, अक्षय—द्वैती, पत्र—
 ४२, आकार—७ × ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुच्छेद)—५१२, पूर्ण
 पद्य, छिपि—बागरी, विपिकाळ—सं० १८८९ = १८९९ ई०, प्राप्तिस्थान—र्य० उमासंकर
 बुधे साहित्याभ्येपक, अक्षय—संजीविका, जिळा—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अक्षय वैश्वरत्न छिप्यते श्री—नारदादि सेवत त्रिभुं
 पारद बस्तु प्रकास । सारद बिभु बयनी करी द्विये सारद भास । रीप करत अक्षय करत
 बयो प्रभ अक्षिराम । तिनकी यह छेये करत वैश्वरत्न पृष्टि नाम । अक्षय नाथी परीक्षा—
 मूये प्यासे सीम सुत तेक सगाये कोइ । कैयेम्हा प्यु रीही भाषी ज्ञान न होइ । इक्षय अंगूठ
 निम्न ही नाथी जीवक मूल । तामों पंठित देह की जानत दुप सुप सुक ।

अंत—मास करक को देदि करि सेकि पाइ सौक बहित । मदिरा सु मीठ सगाथी

अहित कर चगुली को मास चित । निवुया रस कपूर पीर पिचरी जुत त्योंही । तेल साथ सु अफीम वंति वासी अति त्योंही । सुचर सबसे सो सिंध मासु वगुला को डारहू । धृत मधु वस जल तेल मिले सब चिव ते डारहु । घृत आदिक सो विप वहुँरि मिलो दौय । इति श्री वैद्यरत्न सम्पूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ श्री राम ॥

विषय—प्रथम अध्याय—(१) नाडी परीक्षा, नाडी की स्थिति, भिन्न भिन्न दशाओं में उसकी भिन्न २ प्रकार की गतिया—जैसे सांप कवृत्तर, मेढ़क, लवा, इत्यादि के सदृश (२) जिह्वा परीक्षा—वात प्रलोप में जिह्वा का टरकी हुई पीली या खरखरी होना, पित्त के कारण लाल व काली तथा कफ से पिच्छिल होती है—(३) नेत्र परीक्षा—वात रोग में आख का रुखा, चंचल व घूमरा होना । इसी प्रकार पित्त व कफ में पीले और स्वेत रंग का होना (४) ज्वर के निदान व प्रकार तथा उनके निवारक लंघन आदि उपचारों तथा औषधियों का वर्णन । ज्वराकुश ताली शादि चूर्ण—वीर मद्र रस—तथा नारायण तैल आदि औषधियों के गुण तथा उनकी वनावट ।

द्वितीय अध्याय—संग्रहणी का निदान अतीसार से मन्दाग्नि और अग्नि के मन्द होने से अन्न का परिपक्व न होना जिससे संग्रहणी की उत्पत्ति । गंगाधर, नागरादि चूर्ण अजीर्ण रोग की उत्पत्ति । हिंवाष्टक चूर्ण । विग्रुचिना रोग का कारण और उसकी निवारक औषधियाँ—कृमि रोग की उत्पत्ति, हृदय रोग, कास रोग और अतीसार आदि दोषों से होती है । कास रोग ।

तृतीय अध्यायः—दोषों के कुमार्ग में जाने से उन्माद रोग का उत्पन्न होना—मृगी रोग का वर्णन—वच का चूर्ण प्रातःकाल खाने से अपस्मार रोग दूर हो जाता है । इसका पथ्य दूध और भात ।

चतुर्थ—वात व्याधि, हृद्रोग, गुल्मरोग, तथा प्लीहोदर आदि रोगों का वर्णन ।

पष्ट—मूत्र कृच्छ्र, अश्मरी, पथरी, आदि व्याधियाँ । त्रिफला का चूर्ण सहत के संग चाटने से प्रमेह रोग दूर होता है । व्रण श्लीवड उपदंश मेढरोग आदि । स्त्रीरोग—प्रदर, सूतिका, क्षीर वर्धन । रसों का वर्णन जैसे चन्द्रोदय । लक्ष्मी विलास आदि ।

संख्या २०० वी. वैद्यरत्न, रचयिता—जनार्दन भट्ट, कागज—साधारण, पत्र—५९, आकार—१० ३/४ × ४ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१५ = १८५८ ई०, प्राप्तस्थान—प० देवकीनंदन शुक्ल, ग्राम—रामपुर गधौली, ढाकवर—सम्राजगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—२०० पृ के समान

अंत—अरिल्ल ॥ मासो १ ॥ टका ४ ॥ सुअक्ष ॥ १६ ॥ विलु चित्तु ल्याइजो । कइवा ॥४ ॥ प्रस्थ ॥ १६६४ ॥ अरु रास ॥ १६६४ सुगुनी ॥ ८८८४ वताइजो ॥ पारीतोल प्रमान ॥ ८८३८ ॥ सो यह विधि जानिजो । परि हाहाजी उतर उतर लेपी चतुर मन आनिजो ॥ १६४ ॥ इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचितोयां भाषा वैद्य रत्न नाम सप्तमो प्रकास ॥ ७ ॥ संपूर्ण सुभ मस्तु ॥ संवत् १९१५ ॥ की साल ॥ जस प्रति देपा तस लीपा ॥ मम दोषो न दीयते ॥

सुरया २०० सी वैद्यरत्न, रचयिता—जनादन मह, कागज—इसी, पत्र—६६, आकार—१४×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, लिपिकाय—सं० १९१२=१८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० बन्नीप्रसाद ग्राम—नवीनगर बाकधर—सहरपुर, त्रिका—सीतापुर (अक्षय) ।

आदि—२०० प के समान

अंत—हाय अजीरन मरुल फल लाह ॥ चिकनाई रूपे को पाह आपद् पही परम्पर जानो मुनि जन क्य यह बचन प्रमानी ॥ नात बार तातो करि सा भी केर बुझाय । यह पानी पीधि तर्ध मीर अजीरन जाह । जब साने क नीर को फर अजीरन होय । खाये तब मोबा सहत मुनि जन क्य मन जाह । गुणमु अजीरन पंड कहीं मुनि मुनिर्भ सच कोह । मली भांति जानी सो यह वह नर रुप म होय ॥ इति अजीर्य ॥ इति भी गोरवामी जनादन मह विरचित भाषा शैव रत्न ग्रन्थ सम्पूर्ण समाप्त । शुभम् भवति ॥ कैसी प्रति पृषी शैवी शिपी उतारी भूळ पूळ जान की लेवी आप संमार संवत १९१२ शाके १७७७ मन्मिय प्रथम आषाढ मासे शुभे शुक्र पक्षे तिथी त्रयोदश्याम गुरवामरे लिप्यते मीरो पठित मिश्र ।

संख्या २०१ प. अनरोक्ष सिद्धांत, रचयिता—जसवंत सिंह, कागज—इसी, पत्र—६७, आकार—५×३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८९६, संक्षिप्त । रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, लिपिकाय—सं० १७८४, प्राप्तिस्थान—श्री विद्यालय, ग्राम—कमहरा, बाकधर—सहरीमपुर (अक्षय) ।

आदि—(प्रथम पृष्ठ बर्हि है) ॥ सिध्या जानि प्रपंच भयो रुप पुन । बिषय सुपन में रुप वहु सुप अति भूम ॥ घर कुटूब महि मेरे आवत काम । मोह त उनको मही जानि बिराम ॥ बिषय सुप ममता तै भीझे होय । यह सच सूटी हागत ममता मोहि ॥ अरिस्त ॥ सुकु चिरिया घर माह पुण्य के रहत नू ॥ मुबा मेरे रुप होह चिरी बर्हि दहत नू ॥ ममता हा रुप दप मोहि यह भाग ही ॥ परि हा काक सरबे जाऊं कान मोहि राप ही । बरि ॥ इन बातन हुन उपर्य अचिरज कान । मरत नही में बरि ये जानत हीन ॥ काम छोप अर काम मोह ये जान । मद् मरु य सर्ब है रुप की पान ।

अंत—गुद उपरमद सिप्य पुनि सत रज तम बिलार । भीष ऊंच भी मम बिषम पहे घम निरघार ॥ घण्ट अचन उपमान अरु हि अनुमान अपार शैव होत प्रणिठ सो वही घम निरघार ॥ सय धर्मि धर्मि सर्ब मचही कुठ बा माह प्यारे हात अजान तं तऊ प्यार जाह । यह निरचय करि जान तुब कहिय पाहि विवरु । एक एक यह एक ही एक एक यह एक ॥ कान्को जयवत मिहा यह आतम तण बिचार अर अपरोक्ष सिद्धान्त यह धन्वो नाम निरघार या अपरोक्ष सिधात क्य अर्थ घर मन माह एडे सो संमार में फिर फिर अर्थ जाहि ॥ इति भी महाराजा भी जयवंत मिहा जी बिचरिता उपरोक्ष सिद्धान्त ग्रन्थ समाप्त ।

बिषय—अपमत्तय का चिरक ।

संख्या २०१ पौ मारा भूपय, रचयिता—महाराजा जयवंत सिंह राईर, कागज—

देशी, पत्र—११, आकार—१० × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनु-
प्टुप्)—२७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८४, प्राप्ति-
स्थान—श्री ब्रजभूषण जी, ग्राम—दानयालपुर, डाकघर—तंतोर, जिला—सीतापुर
(अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा भूषण लिप्यते ॥ विघ्न हरण तुम हौ सदा
गणपति होहु सहाइ । विनती कर जोरे करौ दीजै प्रथ वनाइ ॥ जिहि कीन्हों परपच सब
अपनी इच्छा पाइ । ताको हौ बंदन करौ हाथ जोरि सिर नाइ ॥ करना कर पोपक मदा
सकल सृष्टि के प्रान । ऐसे ईश्वर को हिये रहै रैनि दिन ध्यान ॥ मेरे मन में तुम वसौ
ऐसी क्यों कहि जाय । ताते यहु मन आप सो लीजै क्यों न लगाय ॥ रांगी मन घन
स्याम सो भयो न गहिरो लाल । यह अचरज उज्जल भनी तज्यो मैल तेहि काल ॥

अंत—सब्द अलकृत बहुत हैं अक्षर के न्योग अनुप्रास पट विधि कहे जे है भाषा
जोग । ताही नर के हेत यह कीन्हों प्रथ नवीन । जो पडित भाषा निपुन कविता विपे
प्रवीन ॥ लक्षण तिय अरु पुरुष के हाव भाव रस धाम अलंकार संजोग ते भाषा भूपन
नाम ॥ भाषा भूषण प्रथ को जो देपै चित लाइ । विविध अर्थ साहित्य रस समुझै सबै
वनाय ॥ इति श्री मन्महाराजाधिराज राठौर वंसावतंस जसवत सिंह कृतो विरचिताया भाषा
भूषण समाप्तः सवत १७८४ वि० लिपित गंगादीन पडित मल्लापुर शुभमस्तु ॥

विषय—नायिका नायक भेद, शब्दालंकार, हावभाव रस आदि वर्णन ।

संख्या २०१ सी. भाषा भूषण, रचयिता—जयवंत सिंह, कागज—देशी, पत्र—
१५, आकार—७ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुप्टुप्)—२७०,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१७, प्राप्तिस्थान—श्री सिव-
रतन सिंह, ग्राम—गंगा पुरवा, डाकघर—औरंगाबाद, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—२०१ वी के समान ।

अंत—भाषा भूपन प्रथ को जो देपे चितुलाइ । विविध अर्थ साहित्य रस समुझै
सबै वनाइ ॥ भाषा भूपन के पढ़े भाषा रहै न भूप । गुन प्रकास औसो लहै जैसे पानी
रूप ॥ इति श्री भाषा भूपन अलंकार विपे समाप्त सुभमस्तु ॥ इति श्री मन्महाराज
कुमार राठौर वंसावतंस जसवत सिंह विरचिते भाषा भूपन अलंकार विपे समाप्त ।
अस्त्रन मासे शुक्ल पछे तियो सप्तमीयां रवि वासरे संवत् १९१७ वि० लिखत गंगादीन पांडे
जैपुर निवासी श्री सीताराम जी सदा सहाइ करै जै अविमाई ॥

संख्या २०१ डी. भाषा भूषण, रचयिता—राजा जयवंत सिंह (जोधपुर),
कागज—साधारण, पत्र—२३, आकार—९ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण
(अनुप्टुप्)—३३६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४१ =
१८८४, प्राप्तिस्थान—श्री राधा कृष्ण शास्त्री, अध्यापक किठावर पाठशाला, ग्राम—पूरव
गाव, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—अंत २०१ वी के समान

पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री मम्महाराज श्री सिरमौर बंसावतस श्री मन्मथपति जसवंत सिंह विरचिते
भाषा भूपन शब्दाष्टाङ्गर संपूर्णम् नाम पद्यो प्रथमो प्रकामः इत्थं पुस्तकं लिखात्वा बह्मदाय कबेरि
यम् शुभमस्तु न० १९७१ वि०

संख्या २०१ ई भाषा भूपण, रचयिता—जसवंत सिंह (जोधपुर), कागज—
देसी, पत्र—३२, आकार—१० × ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुच्छेद)—
२५६, अंकित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाळ—१८९० = १८३३,
प्राप्तिस्थान—बाबू जयमंगल राम बी० प० पृष्ठ० टी०, गाबीपुर सिटी ।

आदि—अंत—२०१ श्री के समाग ।

पुष्पिण्ड इत प्रकर है—इति श्री मम्महाराजा जसवंत सिंह राठौर विरचिते भाषा
भूपन संपूर्ण संवत् १८९० आद्यय मामे कृष्ण दशम्यां श्रुत्वासरे दुतिपा प्रहरे क
स्यामथ ६ ६ ६ ६ १६

संख्या २०७ शृंगार शिरोमणि, रचयिता—राजा जसवंत सिंह कागज—देसी,
पत्र—१०६, आकार—१२ ३/४ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुच्छेद)—
१६००, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकांत—सं० १६४३ = १८८६ ई०,
प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण विहारी मिश्र, माकेल हावस, कलकत्ता ।

आदि—श्री शैलपाव नमः अथ मंगला चरण्य कंद मन हरण ॥ पंच तद अमर
प्रगट पचवटी सामे पंच प्रेत आमम पे राजत प्रद्यसिनी ॥ पंच बाज भूप पंच लक्षण पुराण
रूप पंच छुट्टि अंत के प्रपंच पंच कामिनी ॥ पंचाशुत पंचगम्य पंच कन्या पंच माता
पंच प्राज रूप पंच पायक बिभासिनी ॥ पंच अंग मंत्र तंत्र पंच अंग पंच वर्ग पंच वर्य
रूप पंच पंक्त विस्तारिनी ॥ १ ॥ दोहा ॥ श्री गुरु चरण सरोज रज रजित करि अतिपानि ।
वरसि बुरो जुगुनी वहुत परे मंच यदि जानि ॥ २ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ यदि लिपि बरने हाव दूग मंच रीति यशवंत ॥ पद्य हरिक
जन जानिके यदत प्रमोद अर्थ ॥ २६ ॥ इति श्री व्यास बंसावतस श्री मम्महाराजा-
भिराज श्री राजा यशवंत सिंह विरचिते शृंगार शिरोमणी विविधि भूपण भूपिठे दोब अर्थम
न्याय पद्यंग ॥ ६ ॥ समाप्तोर्ष गुणा शुभमस्तु ॥ श्री सचद् १९४३ मिति ज्येष्ठा कृष्ण
तिथी प्रति पद्यायां बुधी ॥ लिपितमिर्ष पुस्तकं स्वार्थम् ॥ शुभ ॥ श्री शिवाय ।

संख्या २०३ नासकेत पुपन भाषा, रचयिता—जयचंद (दिल्ली), कागज—
साधारण, पत्र—६४, आकार—९ ३/४ × ६ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण
(अनुच्छेद)—१०००, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाळ—सं० १६३२ =
१५७५ ई०, लिपिकाळ—सं० १८३३ = १७७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री लूधमाथ सिंह, ग्राम-
उर्मावा, हाकर—परिपावा, जिला—प्रतापगढ़ (जयच) ।

आदि—सिधि श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री नासकेत कथा लिप्यते ॥ र्वापाई ॥
पार प्रह परमेसुर स्वामी । तुम घट घट हा अन्तर जामी ॥ परम आतमा परम निर्जन ।
परमार्थ नकळ रूप मंत्रन ॥ १ ॥ सचद् श्याद् र्थ रूप न कोई । सच सु तुमही सी पुनि

होई । स्याम न सेत पीत नहिं राता । कौन वर्ण वरनियं विधाता ॥ २ ॥ सुजय वेद
वंदीजन गावहिं । नेति नेति कै अंत न पावहिं ॥ चंद्र न सूरज पवन न पानी । अनहद वात
जु वेद वपानी ॥ ३ ॥ उतपति करहि ताहि जस जाने । प्रलै करहि तिहि पाप न लागहि ॥
जो कीजे सुविचार तुम्हारा । तुम्हें न कोऊ वरजन हारा ॥ ४ ॥ गिरजन हार चितमन धरी ।
यह सृष्टि रचना जव करी । ऐसी गति तुम ही करि आवै । वरौ ताहि जुके टिपरार्थ ॥ ५ ॥

अत—त्रिया चरित्र चहुँत रम्य होई । अति गुन कौं गाहक मच कोई ॥ जे धर्मिष्ट
धर्म धन मचाहैं । दुष्ट पाप दूरतन वचहि ॥ यह महिमा तेई नर जाचहि । निहचै वेद
पुरान जु वांचहि ॥ जो फल गया बनारम न्हाणें । जो फल अस्वमेध के धायें ॥ जो फल
ग्रहन सकट करि मारौ । सो फलु यह पुरान सुनि जानौ ॥ इकचित सुनै देह कष्टु टाना
तिहि फल जनु गगा अमनाना ॥ इति श्री नाम्नेत पुरान भाषा समापता ॥ ॥ श्रीः ॥ ॥
सवत १८३३ माघ कृष्णो चतुर्थ्यां ४ सोमवार ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—मंगलाचरण, ईश्वर के ऐश्वर्य का कथन,
धर्म की महिमा, कवि परिचय—दीपचन्द्र काष्ठ भटनागर । तामु भयो जैचंद्र उजागर ॥
तिन पुरान सुन्यो सुर वानी । सत्रनि ममक्ष हित भाषा टानी ॥ नगर भिकटा मोंझ वसेरो ।
रहिवौं डिछी सुनो निज मेरो ॥ ग्रथ निर्माण काल—सवत् सोरह मी वत्तीना । तवहीं कृपा
करी जगदीसा ॥ गुरु वाग्म्य रेवती नपत गुनि । माघ मास सुकला सातै सुनि ॥

(२) पृ० ७ से पृ० ४४ तक—कथा प्रसंग वर्णन, जन्मेजय की प्रार्थना पर
वैशम्पायन का कथा सुनाना, उद्यालक मुनि के तप का कथन, पिप्पलादि का उनके पाम
आकर सतानोषति के लिये विवाह का प्रस्ताव करना, उद्यालक का ब्रह्मा के पाम जाकर
अपना अभीष्ट वर्णन करना, ब्रह्मा का विवाह में प्रथम ही उनके पुत्र उत्पन्न होने की कथा
वर्णन करना । मुनि की शका और विधि द्वारा उसका निराकरण, मुनि का लौटकर पुनः
तप निरत होना, स्त्री सयोग सुख स्मरण द्वारा उनका वीर्य रखलित होना और उसका कमल
पुष्प में रखकर सुरसरि में छोड़ा जाना, रघु की पुत्री का सखियों सहित सुरसरि के तीर
स्नानार्थ जाना, सखियों का पुष्प देखकर पकटने का प्रयत्न करना तथा विफल होना,
चंद्रावती का उसे पकड़ना और सुंदरा चन्द्रावती को गर्भ रहना और शनैः शनैः उसके
अक्षरों का प्रस्फुटित होना, सखियों द्वारा रानी राजा को इसका पता लगाना, चंद्रावती का
निकाला जाना, एकऋषि का उसे आश्रित रखना, समय पर प्रसव पीड़ा में चन्द्रावती
का पीड़ित होना, नाक में नासकेत की उत्पत्ति और मजूसे में रखकर उसका बहाया जाना,
ऋषि (उद्यालक) द्वारा उसका पाला जाना, चन्द्रावती और नासकेत का मिलाप, राजा
रघुद्वारा ऋषि की प्रार्थना पर चंद्रावती तथा उद्यालक का विवाह ।

(३) पृ० ४५ से पृ० १०५ तक—पुत्र सहित दम्पति के सुख भोग का वर्णन,
एक दिन उद्यालक का पुत्र को अनिहोत्र की सामग्री शीघ्र लेकर लौटने की आज्ञा देना
और पुत्र का जाना, एक सरोवर की शोभा देखकर स्नानादि से निवृत्त हो कर नासकेत का
समाधिस्थ होना और पट मास व्यतीत होने पर लौटना, पिता का क्रुद्ध होकर पुत्र को

शाप देना और जमपुरी गमन का कथन करना, पुनः श्लेष शक्ति होने पर चिंतामयक होना, पुत्र का पिता को समझाकर दिग्ग मंत्र द्वारा जमपुरी जाना, धर्मराज के दर्शन तथा स्तुति, चिन्मग्न के दर्शन तथा स्तुति जमपुरी का निरीक्षण करके लौटना, सब मुनियों का यह परित्र जानने क किये एकत्रित होना, नासकेत का पुण्यदाता तथा परपात्मा के सुक्त हुलादि का बयान और जमपुरी की सम्पूर्ण स्थिति समझा कर वहाँ के प्रत्येक विभाग का विस्तृत वर्णन सुनाना ज्ञाना प्रभर के वानियों के फलादि का वर्णन स्वर्ग के विभागों का वर्णन, विष्णु इत्यादि के अर्थों के फलादि का वर्णन, उनके लक्षण इत्यादि का वर्णन ।

(५) पृ० १०६ स पृ० १२८ तक—जमपुरी के पंपादि की गाथा, दुर्गम पंक्तों को ही करने के लिये विविध पुण्य दानादि का कथन शैतरीणी आदि मयियों का वर्णन । धर्म राज की समा का वर्णन, अनेक भयिषों सहित नारदादि का कथन, इन्द्रादि देवताओं का कथन, धर्मकीर्ति की कथा—राजा जनक की पतिव्रता की के तैज के न सह करने के कारण यम का अंधर भागना, अनेक पापियों का दर्शन मात्र में तरना देनाकर नारद की सहा होना, यम द्वारा दस शंका का निवारण नासकेत के जमपुर से अपने लौटने की कथा का वर्णन । कथा अलग कर सब मुनीश्वरों का अपने-अपने धाम को जाना । कवि का दीव्य वर्णन, कथा के अन्वयादि का फल ।

संख्या २०३ प. गर्म चिंतामणि, रचयिता—अयकाक, फागज—देसी, पत्र—२, जाकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ —२५, परिमाण (अनुच्छेद)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—जागरी लिपिकाक—सं० १९१४, प्राप्तिस्थान—श्री गद्यादीन तिवारी, ग्राम—विकरिहा, बाकभर—बानगांव, जिंला—सीतापुर (मकप) ।

आदि—श्री गनेतापनम ॥ अथ गर्मचिंतामणि लिप्यते ॥ प्रारम्भः कावली ॥ कपो अम्भ गंवाको रटो राम रसुराई । मानुष देह बारबार सहज नहीं पाई ॥ धर नारी के संजाग गर्म में आबो ॥ मरु मूत्र मास को पिंड होय ईशबो ॥ पाग ऊपर तक में शीघ्र रहो सख्ययो । हुल गर्मबास को दप बहुत घबहायो ॥ पढ़ै ही पिंड में बीच तनिक मुधि भाई । मानुष देह बारबार सहज नहीं पाई ॥ १ ॥

अंत—रई जीव नरक में हुयी कहीं नहीं जाये ॥ करणी के भोगी भोग कदा पछ-ताये ॥ फिर सुगत नरक को चरारसी में जाये ॥ देह वह में मरके जीव कोटि दुख पाये ॥ यदि भीति दुर्गशा प्राणी को होइ जाई । मानुष देह बारबार सहज नहीं पाई ॥ ११ ॥ हरि विमुपन की यह वसा होत होखत में ॥ श्री काठ रटो मित्र राम धाम हरदम में ॥ गुह पुढपोत्तम कर याद गर्म प्रज घर में । कर जाय जगमन फंद तैरा चटपर में ॥ है तारक मंत्र परी देह मुक्ति पाई । मानुष देह बारबार सहज नहीं पाई ॥ १२ ॥ इति गर्मचिंतामणि संपूर्णम् लिप्यते गद्यादीन तिवारी स्वपटकार्य संवत् १९१४ वि० ॥

विषय—जीव के गर्मबास के दुःख और जन्म के बाद कर्मों के अनुसार सुख दुख आदि तत्त्वज्ञान की बातें ॥

संख्या २०४ वी. गर्भ चिंतामणि, रचयिता—जयलाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९१३ = १८५९ ई०, लिपिकाल—सं० १९४१ = १८८४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवकठ तिवारी, ग्राम—दरगादिया, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—२०४ ए के समान ।

अंत—दोहा—रस शशि ग्रह शशि जानिये सवत विक्रम राज । क्वार सुदी दशमी तिथे । पूरण कीन्हों राग ॥ लिखा शिवरतन सिंह उदवापुर निवासी सवत् १९४१ वि० । राम राम राम ॥

संख्या २०४ सी. शिव जी की विनती, रचयिता—जयलाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामभरोसे, ग्राम—खदकी खेडा, डाकघर—चमयानी, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री शकराय नमः ॥ अथ शिव जी की विनती लिप्यते ॥ महादेव कासी के वासी । हेम कन्या पति अविनासी ॥ टेर ॥ जटा विच गग सीस राजे ॥ चद्रमा मस्तक पर छाजै ॥ व्याल गल मुंड माल राजै ॥ देख भय रूपकाल भाजै ॥ भस्म अभूषण अति घना भूत नाथ विकराल वृष वाहन वाघवर साजै लिये मेरु करताल ॥ वनो छवि गिरजा कैलासी ॥ महादेव कासी के वासी ॥ १ ॥

अंत—चढ़ै मिर कस्तूरी चदन ॥ विगंवर वाघंवर अंगन ॥ करै सुर तैंतिसौ वदन ॥ धतूरा आक भोज व्यजन ॥ वभोला पदवी नवै हाथ जोड़ जेताल ॥ पलक खोल प्रभु दर्शन दीजै कीजै मोहिं निहाल ॥ काट देउ जमपुर की फासी ॥ महादेव कासी के वासी ॥ हृत्ति श्री शिव विनती सपूर्ण समाप्त ॥ चैत्र कृष्ण तृतीया को लिख पाहू टः राम भजन तिवारी सवत् १९२४ वि० जै राम जी की जै शकर की ॥

विषय—शंकर जी की स्तुति ॥

संख्या २०४ डी. श्री कृष्ण चंद्र की विनती, रचयिता—जयलाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला रामभरोसे, ग्राम—खदकी खेडा, डाकघर—चमयानी, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री कृष्ण जी की विनता लिप्यते ॥ श्री कृष्ण चंद्र महाराज वेप नट वर धारी । वशी वारे श्याम सुरारे लाज अब हाथ तेरे मथरा वारे ॥ टेक ॥ गिर वर लियो उठाय राख ली लाज विरज की मतवारे । सब मेघ विचारे । हार चले इंद्र लोक में पुकारे ॥ आदि पुरुष अवतार सांवरो इनसे ती हम सब हारे ॥ खाली कर दारे ॥ नीर जल वरस रह गई छारे ॥ जव हृद्र गयो धवराई ॥ कहौ कीजै कौन उपाई । मैं करी बहुत लरकाई ॥

सप बात हाथ बिगाराह । पहुँ भव पाँच साथ छे परिवारे ॥ इयान मुरार साह्र भव हाथ
तेरे मपुरावार ॥ १ ॥

अर्थ—सोम मुकुट पीठावर बांधे । कान्त कुंडल कर बँसरी । लक्ष्मी कर्दय तर सखा
संग ग्वाल बाल गर्भ ईसरी ॥ ई आपार सीला जग क्षारी को गाँव कबि मति घोरी ॥ ई
गुण गुणपावम हास त्रै लाल कई पों कर जातो ॥ ई हूँ मतिमंद अभागी निशि दिन कुर्म
सो छागो ॥ अब करी कृपा पर मांगी हा कुमा पाप की भागी ॥ भास कर दुख हरिद्र बापारे ।
इयान मुरार ॥ साह्र हाथ तेरे बँसो वारे ॥ इति श्री जलाल कृत श्री कृष्ण चंद्र जी की
विनती संपूर्ण समाप्त ॥

वियय—कबिछा जपनी साह्र रत्नने के बाल्य श्री कृष्ण चंद्र जी से प्रार्थना

संख्या २०४ ई श्री राम नाम की महिमा, रचयिता—जयलाल, कागज—द्वैती,
पत्र—३२, आकार—८ × ६ इंच, पन्दि (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुपुष्प)—
१४४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य किति—जागरी, सिविकास—सं० १९२८ = १८७१ ई०,
प्राष्ठिस्थान—पं० रामदुलार लाल, ग्राम—मथुराबा, हाइपर—अधरा, जिहा—उज्ज्वल,
(अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ प्रियलाल कृत लिख्यते ॥ श्री राम चंद्र जी को राज
तिलक ॥ रंग रचनी केसर साधार ॥ देर ॥ साधा चंद्रन केसर लखा कुंडल अरगज मुगीप
मगावो ॥ टोल पयावत्र बँसुरी बीन मृदंग बनारुहा शृंग की मुक्ति बनावा रे ॥ रंग रचनी
कमर लावा रे ॥ १ ॥ गज यातिन के बीक पुरावरे । केसा कर्ण क लंम लगवारे ॥

अर्थ—ई कइ लग वर्मन कइं तेरी चतुराह । ई जम मंडल पाताक तेरा पदा
छाई ॥ हुं अपम नीच अज्ञान पूर्ण कुटिनाई ॥ सरग गत बामल ज्ञान बीनती गाई ॥ ही
हाथ जोर श्री लाल तेरा जम गाँव ॥ कइ जाय काल चंद्र फेरि जन्म मई पाव ॥ १ ॥ इति
राम नाम की महिमा ॥ इति श्री जयलाल कृत संपूर्ण संवत् १९२८ वि० ॥

वियय—रामचंद्र जी का राजतिलक, राम नाम की महिमा, श्री कृष्ण जी की विनती
और तिलक जी की विनती आदि ॥

संख्या २०५. मण्डिहारिन लीला, रचयिता—गुनी जयलाल मासती, कागज—द्वैती,
पत्र—१, आकार—६ × ४ इंच पन्दि (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपुष्प)—१८,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, किति—जागरी सिविकास—सं० १९१४ = १८६७ ई०, प्राष्ठि
स्थान—श्री गणेशाय नमः, ग्राम—बिकरिहा, हाइपर—पानगाँव, जिहा—सीतापुर
(अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मणि हारिन लीला लिख्यते ॥ साहसी ॥
श्री कृष्ण चंद्र जी क चंद्रन धरा भय मणिहारिन का । आप हरी जई गये तहाँ पर
बहुन मुँद मन्त्रहारिन का ॥ देर ॥ पहर जवाना भय हरी मे रचि रचि के भंगार करा ।
इसनी धार इसल गाँव दिख इलमन इलकन पनादरा । उठ गुजराती मन्त्रा धीपरा
अदहन इधिसी थीर वरो । रवि मणि आदि चंद्रन की सोभा येया हरी मे रूप धरो ॥ कुमा

वनाय के भाटी चोली और कुरता फुल क्यारन का आय हरी जह गये तहां पर बहुत झुंड
 ब्रजनारिन का ॥ १ ॥ श्री कृष्ण जी फिर पूछते कोई सुरिया पहिनोगे सरी । काली पीली
 जरद जंगाली सुरख सोसन्या और हरी ॥ एक सखी यू वदरर चोली अरी आव तू मणि-
 हारी । सुरिया मोती चूर कडा वद ल्याई तो पहिना ज्यारी ॥

अत—अनेक छल बल किये कृष्ण ने सब सपिया छल ने सातर । कहा लग कोई
 सिफत करेंगे तुकन्नगिरि कहते चातुर । लछिमन ब्राह्मण धर्मा कहते देखे मयार मत होय
 चग पर आतर । जसू लाल के चग के ऊपर निरत करै पद पायातुर ॥ कई गुणी जय राम
 भारती तुरा तारन का ॥ आप हरी जहा गये तहां पर बहुत झुंड ब्रजनारिन का ॥ ४ ॥
 इति मणि हारिन लीला समाप्त ॥ लिपत गया दीन तिवारी स्वपटनार्थ मंचत १९१४
 चैत शुक्ल १ ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का मनिहारिन का रूप रचकर ब्रज युवतियों में
 आनद करना ।

संख्या २०६ ए. ज्ञान गीता, रचयिता—जयसुख, कागज—देशी, पत्र—३२,
 आकार—१० × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००,
 खंडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—शिवदयाल, ग्राम—भीमपुर,
 डाकघर—सफीपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ ज्ञान गीता लिख्यते ॥ गणेशस्तुति ॥ विनय
 विनायक को करौ विघन विनाशन हेत । हरि द्रुप जन को राखि सुख गज सुप सब
 सुप देत ॥ १ ॥ छप्पय ॥ देहु ज्ञान धरि ध्यान रहौ चितु देह गजानन । एरु दत्त
 बलवत हेत विघनन के कानन ॥ भाल चंद सुप कद शील तनया के नदन । वंदन आरत
 जानि काटु भव भय के फदन ॥ सब पीन अघन को छीन करु सदा दीन करुना करन ॥
 वर लंबोदर सुमिरत चरन कहि जै सुप सकट हरन ॥ २ ॥

अत—कहुं बैठि वठ की छाह । ब्रज बचन की धरि वाह ॥ कहि दान मेरो देहु ।
 यह चहत मैं नहिं नेहु ॥ उन दान के कहि कौन । रुप रहौ लालन मौन ॥ यह बात सुनि
 हंसि देत । मन सवन के हरि लेत ॥ कहु गोपिन सौं फाग । विच गलिन खेलन लाग ॥
 उत अविर कुवरि किसोर । तकि वदन मारै क्षोरि ॥ (अपूर्ण)

विषय—श्री गणेश वंदना, गोपिका विरह, गोपियों का कृष्ण लीला वर्णन, कृष्ण से
 ऊधो का सवाद और ऊधो का ध्यान में कृष्ण चरित्र देखना आदि वर्णन ॥

संख्या २०६ बी राधा विलास, रचयिता—जयसुख, कागज—देशी, पत्र—२८,
 आकार—१० × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२०,
 खंडित । रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री शिवदयाल, ग्राम—
 भीमपुर, डाकघर—सफीपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राधा विलास लिख्यते छप्पय ॥ भक्ति शक्ति के
 तनय मोहिं दीजै गुन गाऊ ॥ ललित पदन को रचौं पदन तेरे सिर नाऊं ॥ जय जय जसु
 जग मगै विनय जै सुख की लीजै ॥ दून दरनि विदारन भूषण पूषन कीजै ॥ भरि उदर

वदत छल कतकरन प्रगट करीं रम परनि हीं ॥ वृकि हरन वुरिष वर शुभ करन सिद्धि वरन
शुभ सरन हीं ॥ १ ॥

अथ—मुक्ति गमनत यदि बिधि तप निरुं नंद किपोर । खास महक की पीरि पर
छरीवार धी—शोर ॥ झूटमा ॥ गरी चहु खोर है गोरी । कृष्ण के रग में घोरी ॥ गरी और
ना जाने । बुझुम सरकर का मानी ॥ तिरिउ केरि के नोकें, गुणाले रक में रोठे ॥ खबर
बंदर गई जानी । मपोरी भीह महाराणी ॥ उडी कलिता सकक भर है ॥ सगी पर बांक
नासर है ॥ सिधो तब लेखि के कर सो ॥ छय यो नेठ ना मर मी ॥ फिरै एक जे काम में
काम सारमे । कर्म मदि करे सत्रि बाप भर में ॥ पुने जा न देखे पर बीच पदे हलें पाधि होर
चई नैव मरे ॥ बन बीन कार सुधीना बजावे ॥ सिध तार आसावरी में सुमाने ॥ तहां
गहने गावती बाह तानि ॥ गुन में रिहावे बुझवे सुजाने ॥ कउ कं से राग बीसी घरे है ॥
पसीय मिखा कोकिस्य मे गरे है ॥ सुबिधा विमाले सब सर्वनी है ॥ ति कंदूर सी बाह
नौबिनी है ॥ छागी एक वाने हगे जो कछी में घिरी है चहुवा अछी—॥ इति अर्ण ॥

विषय—श्री गणेश वंदना राधा बिहार वर्जन, बाग शोभा, राधा भजन शृ गार
वर्जन, सखियों का वर्जन, वृत्त समाचार, कृष्ण शोभा, कृष्ण राधा मिछन, राधा के स्थान
की शोभा, राधा कृष्ण बिहार, रति सखियों का संबन्ध और हास्य आदि वर्जन ॥

संख्या २ ७ प नरसी मेहता की हुंठी रचयिता—जेठमक (नागपुर), कागज—
देशी, पत्र—५, आकार—८ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुपुष्प)—
८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, कृति—नागरी रचनाशक—सं० १७१० = १९५३ई०
सिविकाळ—सं० १८१४ = १७३७ ई० प्राप्तिस्थान—गंगावरस सिंह, प्राम—बगाछी खोर
तहसील विमर्ष टाकर—मुहमूहाबाद, विमर्ष—सीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ नरसी मेहता की हुंठी लिख्यते ॥ श्री० ॥ श्री
गणपति का पहिले ध्यायीं । उब नरसी की हुंठी गाबीं परम भक्त गेता है नरसी ।
राम भजन में मुनि है सरसी । जिस दिन राम कृष्ण पित घरे । शूठी वंठ कया नहिं करे ।
जाओ है नृपयय पास । राम भजन में रहे हुसाम । जहं भाये साधू जन दीप । वामो
केहर इष्टिया माय । प्रात जाग पूछत है तहां । कौन कियत है हुंठी यहां ॥ एक मसखरे
कीमती होमी । मुन उवा हो तीरप का घासी । पर गेता नरसी के जाओ । चाहे जितनी
हुंठी लिखाओ । उनके पन को टेहो बाहीं । बहुरी कइमी पर माहीं ॥

अथ—रा० ॥ नगर नागपुर नाम नाम चैठ मम जागिये हरि भक्तन को बात संबत
मतारानी रग ऊपर । ममये वेद गुह्यार जेठ शुकु पय अछमी । हरि गुन कियो उचार जो
बांचे हीये सुयं । इति श्री नरसी मेहता की हुंठी गंपूर्ण समाप्त विमर्ष धरमाय बुने कपटी
वाणी संबत १८१४ वि० धी राम जी ॥

विषय—नरसी मेहता की हुंठी नागुओं को श्री सायन्याह (कृष्णजी) द्वारा
नदारी गढ़ ।

संख्या २०७ यो नरसी मेहता की हुंठी रचयिता—जेठमक (नागपुर) कागज—
देशी पत्र—६ आकार—१ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुपुष्प)—

१३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७१०, लिपिकाल—
सं० १८४८, प्राप्तिस्थान—श्री भिवरतन सिंह जी, ग्राम—रामपुर मथुरा, डाकघर—
बसोरा, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—२०७ पृ. के समान ।

अंत—इति श्री नरसी मेहता की हुंडी संपूर्ण समाप्त ॥ लिपत नारायण दास
धैरार्गी । सवत १८४८ शुक्ल जेठ दशहरा ॥

संख्या २०७ सी नरसी मेहता की हुंडी, रचयिता—जेठमल (नागपुर),
कागज—माधारण, पत्र—१९, आकार—६ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८,
परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—
१७१० = १६५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रमाकांत शुक्ल, ग्राम—पुरवा गरीबदाम, डाकघर—
गढ़वारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—२०७ पृ. के समान ।

अंत—इति श्री नरसी की हुंडी सम्पूर्ण शुभम् ॥

संख्या २०८ प. रामायण पिंगल, रचयिता—भामराम, कागज—देशी, पत्र—
२८, आकार—१४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००५,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०१ = १८४४ ई०,
प्राप्तिस्थान—श्री शिवदत्त वाजपेयी, ग्राम—मोहनलालगंज, डाकघर—मोहनलालगंज,
जिला—लखनऊ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः जय जय रघुपति चंद्रकी चरित चंद्रका पूरि । हरे
कलमल आतप मदा करै मोह तम दूरि ॥ १ ॥ वंदौ श्री रघुवीर के पद पकज मकरंद ।
मुनिवर वृद्ध मिलिंड जहं मदा चर्म सानंद ॥ २ ॥ अहिपति रूपी राम के चरण नररोज मनाइ
छंदो भेट अमेद हौ भाषा चाहल गाह ॥ भाषा प्राकृत संस्कृत छंदो प्रथ अनेक । क्रमते
हरि जम पूर हौं भनि हौं मोई एक ॥ ताने सज्जन संसदिहि पठन पठावन जोग । रघुपति
चरित पियूषते पूरे हरै अयोग ॥ महाराज रघुगज के सासन सुदर पाइ । अब पिंगल के
भेद हौं न्यारे न्यारे गाह ॥

अंत—अथ गद्यस्योदाहरण ॥ श्री मन्त्रे ब्रह्मांड मंडल मण्डन धुम न्या पंड प्रताप
पडल दुर्वो प्रपंडन द्रगकंधर दौर्द उडने महा दक्ष स्वक्ष ब्रह्म चारिणम प्रथले स्वरावताग
संसार भारा पहारिणम महावीरगधि वीर धीर बुधंधर धवल ध्वज धवली कृत जगचरित्रो
देनां जना नंदन जग दृढन चंदन ग्युनंदन वत्सज्जनानंद कारिन्न मस्तु म्यम् इति श्री
मन्त्रामगम कृत गद्य पद्य संपूर्णम् ॥ १ ॥ लिपत शिव विहारी शुक्ल आश्विन सुदी तेरसि
संवत १९०१ वि० ॥

विषय—अनेक छंदों का वर्णन और रामायण की कथा लेकर उनके उदाहरण ।

संख्या २०८ वी. पिंगल, रचयिता—भामराम, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—
१४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२०, पूर्ण, रूप—माधारण,

पठ, सिपि—नागरी, सिपिच्छक—सं० १९३६ = १८०९ ई०, प्रासित्पान—वं० शिवईद
बादपयी, ग्राम—जुहारा, डाकघर—जपतिपुर, मिला—उद्याव (अक्षय) ।

आदि—२०८ पृ. के समान ।

अंत—इति श्री मत् काम राम विरचिते विंगळ गद्य-वद्य सपूर्णम् ।

विषय—विंगळ गणन ॥

सुखयो २०९ पृ. अनमय ग्रंथ या एकारस पुण्य, रचयिता—स्वामी ज्ञानदासजी
(बाराबंकी), कागड—मया, पत्र—५६४, काठार—८२ × ३२ ईंच, पन्दि (प्रति पृष्ठ)—
११, परिमाण (अनुच्छेद)—३४३० रूप—प्राचीन पद्य, सिपि—नागरी, रचनाकाल—
सं० १९२० = १८७० ई०, प्रासित्पान—बाबा साहेबदास, ग्राम—गणेश मंदिर मयाबी
देवी, डाकघर—महादुर्गा, मिला—एलनड ।

आदि—दोहा ॥ अथम मेद् मुन्मद्मे मुनहु गुरु मति धीर । तत्र ज्ञान परगद
क्य कोबी मरुत् सरीर ॥ पांच पचीस उरुसार ई कया अथम मेद् । तैहि कर मेद्
मुनाहण मो पद् कर्षा निवेद् ॥ र्चापाह ॥ गानी बचन कदा कर जोरी । बिद्वनाय मुनु
विनती मारी ॥ ४१ ॥ ईमा जोग अर्णड तुग्दारा । केहि विधि जाग करौ निरधारा ॥ ४२ ॥
अदि विधि जोग समुत्ति हम पाहं । कबहु मरुत् गुद पठ समुत्तार्ह ॥ कया पर के मेद्
पलाबा । मित्र मेद् गुन कहि समझावो ॥ ४४ ॥

अंत—र्चापाहं ॥ मजुरी बचन कही पक पाठा । मुन मय अमर जोग मत्
आता ॥ १३२२ ॥ पहि विधि भद् कदा समुत्तार्हं । मय मत् मेद् सुर्षा चित्तार्हं
॥ १३२३ ॥ दोहा ॥ एक काक तीतीस सहम तीम सी तीतीम जोग । सुय ग्रहन कल जुग
पर मुयो बीरगी जोग ॥ ४७७ ॥ गरा स बंवास गठ भये जव सी ककहुग हाग । सूर्य
ग्रहन मा जानिये मुयी जोग बीरग ॥ ४७८ ॥ एक हाथ बलिस महस एक सी र्चारासी
पर जाय । तत्र कसड जुग पूत्रिये तोहि कदा समुभाय ॥ ४७९ ॥ सूर्य जोग फरुत् प्रयाग
१३३३३३-१—तेहिमा बसुत् कर्ष ११४९-२—तेहि मा बाबी रहे १३२१८७-३—दोहा ।
चैत्र ग्रहन कर जोग ई चारि छाल परमात्र । ककड जुग कर मेद् यह बीरगी पदिचाव
॥ ४८० ॥ तीन हजर चारि सी तीताकिस मी जोग । चैत्र ग्रहन सी जानिय सुर्षा बीरगी
स्वग ॥ ४८१ ॥ तीनि हाय छानव महम तीनि स तीतीम परी जोग तत्र ककड जुग पूत्रिये
मुयी बीरगी जोग ॥ ४८२ ॥ चैत्र जाग ककड प्रमात्र ४०००००-१—तेहिमा बसुत्
कर्ष ॥ ३४४७ ॥ तेहिमा बाबी रहे ३९९५ × ३३ = ३ = अपूर्ण

विषय—दुर्षा गुण विषय क ५० संवाद ई । विजमें आगमेद्, पंच तत्र क्य स्वाह

रुचया २०३ यी पंजरतन ग्रंथ, रचयिता—स्वामी ज्ञानदास, कागड—दुसी,
पत्र—६५, काठार—१० × ५ ईंच, पन्दि (प्रति पृष्ठ)—९ परिमाण (अनुच्छेद)—२८३,
पूज, रूप—प्राचीन, पद्य, सिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३३ = १८०६ ई०, सिपि
काल—सं० १९३३ = १८०६ ई० प्रासित्पान—बाबा साहेबदास, ग्राम—गणेशमंदिर
मयाबी देवी मिला—कागड ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु अक्षय अग्रदामद साहेब की दाया । नत गुद

नारायण अचल अपठ जोगी विदेह वाला अमर निम्नानं ॥ चरनार विनदारी समुक्ति पावती
 ज्ञान जोगंग ॥ दोहा ॥ पच रतन यह ग्रंथ है जोग अर्षंड विचार । अचल ब्रह्म सोइ आदि
 है वोई सवके करतार ॥ चौपाई ॥ चारिउ जुग कै कहीं वपानी । सत जुग त्रेता द्वापर
 जानी ॥ १ ॥ कल जुग पुरुष त्रितर खेला । चारिउ जुग मां पुरुष अकेला ॥ २ ॥ वोई पुरस
 देह धरि आये । जुगन जुगन हंसा समुझाये ॥ ३ ॥ गुरु दयाल भयो आपे आपा । मेटेऊ
 सकल दोष सतापा ॥ ४ ॥ अचल अखंड मिले अविनासी । कहै लागि निरगुन इतिहामी
 ॥ ५ ॥ सुनु ज्ञानी यह जोग हमारा । अमर पुरुष भेटो करतारा ॥ ६ ॥ सुन भवन में
 पुरुस विदेही । विना तत्तु के परखो देही ॥ ७ ॥ सावल रूप येक है ज्ञानी । दोसर शुक्र
 वरन पहिचानी ॥ ८ ॥ सावल वनपुर है पृका । सुकल वरन के कला अनेका ॥ ९ ॥

अंत—सत गुरु कवच को विचार । वेडापेइ लगावहु पार ॥ ८७ ॥ साहेव है
 तुम्हरे हाथ । सुमिरी चरन पर धरिमाथ ॥ ८८ ॥ सोरठ । इति श्री रामचंद्र दूत महा
 हनिवत कवच सुमिरै जेनरा । अमित तेज बलहोइ हनिवत भक्ति सुधारिये विप्री सेतरा
 ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ जे नर पाठ करे नित सकल सपति दायकं । सर्व देव वसि होय वाके
 महा जोगी वसी कर ॥ ९० ॥ साहेव अचल विदेह पथ आपठ चलाइ गुरु ज्योतिह मिले
 ज्ञान दास सुधारि भज गुरु चरनपकज उर धरे ॥ ९१ ॥ पच रतन यह ग्रंथ है भये आय
 भरपूर । ज्ञान दास सुनि हि मिले जोति वरी भरपूर ॥ ९२ ॥ जोति वरी भरपूर परम पद
 के पार पद सोइ विदेह सरूप जेहि परमे सो अमर पद ॥ ९३ ॥ निरंजन के पार सार
 सवट जेहि लखि परै । वई दसौ अवतार आदि जोति अनर्भा वरै ॥ ९४ ॥ अचल अखंड
 अपार चारिउ जुग पूरन रहै । रई सवके करतार ज्ञानदास धारा वहे ॥ ९५ ॥ इति श्री
 पचरतन हनिवत कवच पाठ सपूरने समापते सुभमस्तु मित्ती पूस सुर्वी १३ सन् १२८३
 संवत् १९३३ × × ×

विषय—इस पचरतन ग्रंथ में ५ देवों के कवच हैं—सतगुरु कवच १ से ११ तक
 श्री गणेश कवच ११ से ३३ तक, दुर्गा कवच ३४ से ४४ तक, भैरों वली कवच ४५ से ५३
 तक और हनुमानजी का कवच ५३ से ६५ तक ।

संख्या २१० शब्द पारखी, रचयिता—ज्ञानीजी, कागज—साधारण, पत्र—५,
 आकार—५ ३/४ × ४ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपुष्प)—६०, पूर्ण,
 रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—गजाधर प्रसाद, ग्राम—कूरडीह, डाक-
 घर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—अथ शब्द पारखी ज्ञानरू की लिख्यते ॥ अत्रेप देपे शब्द विचारै । आप
 तरुँ औरन कू तरै ॥ पपा पपी की पपन झालै । लोक वेद सँ उलटा चालै ॥ आतम तत का
 करै विचारा । कहै ग्यानी सो गुरु हमारा ॥ १ ॥ अजन माही निरजन धावै । अतर गत
 मैले मन लावै ॥ सत गुरु सवद्वै लागा रहै । काम क्रोध में देह न दहै ॥ आशा तृष्णा सूर
 है न्यारा । कहै ग्यानी सो गुरु हमारा ॥ ३ ॥ वहाँ चेला का सगु निंवारी । सांचा साहेव
 हिरदे धारै । आपा उरधव ध्यान सब पोवै । शब्द देप्य घट अंतर जोवै ॥ देपै नहीं
 धन्या आकारा । कहै ग्यानी सो गुरु हमारा ॥ ३ ॥ एकाएकी अरु बहु संगी । सदा उदासी

अरु बहुरंगी ॥ प्रहं न रहित बन पंड वामा । अहंवाद का जा घट नामा ॥ मोमा वृी
नामा नीरा । जन ग्यानी का गुरु कबीरा ॥ ४ ॥

०८—भक्त सो ज भव सैं दूरी । अनर्म मागा रह दूरी ॥ भानदि ताक यहू
वहोँ शक्ति । आत्मा मूं परमात्मा सार्थ ॥ भक्तम संत की जानें मूरी । जन जामी ता चरण
की वृी ॥ २३ ॥ दस आ ज मय सूं दीन । हरि क लम रह आपीन ॥ इतानन में रहे
समाया । कई ग्यानी सो दाम कहाया ॥ २४ ॥ अतर गत की जानें सार । ता अर नाम
बीहात बिचार ॥ पा घट कूं पोत्र जो कोइ । कई जामी ताहू आबागमन न होई ॥ २५ ॥
इति श्री दास्य पारपी ग्यानी जी की संपूर्ण ।

विषय—दास्य विचार । माहादि त्याग का उपदस । जामी की परिभाषा । इन्द्री
इमन का रूपन । आनिनी त्याग बर्नन । पंडित माहनन जन हिन्दू, मुसलमान, मुत्ता,
जैदीर, सैयद और भक्त की परिभाषा ।

संख्या २११ उगुलदास श्री धानी, रचयिता—शुभनाम, कागज—दशी, पत्र—
१६, आकार—८×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुच्छेद)—४१६,
मूल्य—रुप—प्राचीन, पय लिपि—नागरी लिपिसंज्ञ—स० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्ति
त्याग—नेह अगनीराम व्यापारी, छप्रीमपुर, ब्रिह्म—खीरी (अक्षय) ।

कादि—भी गणैसायनमः ॥ श्री राम चन्द्रायनमः ॥ पंथी श्री गुरु पद कमल अमल
भक्ति उर हैन । जामु कृपा लक्षिप उगुलदास क हेत ॥ वधाई धम्म अहमी की । भयो है
जगुल के बाहक जन प्रति पातक करि उर साहक र । अरे बलि मुर पुर वरहि विमान
परम सुप साहर रे ॥ उदित मुदिन मन गोपी प्रम रम शोपी चाह बित शोपी भूपन लोपी
है रे ॥ अर बलि गावत मंगल गीत महुरि जायो छोहर र ॥ प्रह प्रह तै बलि गोरी रग रंग
बारी हारि कितातोरी गमन द्विषो भांति भली । मर्नी रप मुनिषा बहु एति ली पिञ्जत तारि
पयो ॥ पाति कर्म करवाये मुनीग धानाय दिये मय माण ता पित्रक बेह पड़े । अरे बलि
बरापत सुमन मुरम सा प्याम विमान बन ॥ कृत त्याग उछाहन बलि उर साहन भयो
बिच चाहन छिरकन हरर दही । मर्नी बरपन मेम अरुह मो गात्रम परित बही । बाजत
त्रिकिपि कपाई बरनि बहि जाई उठ मय गाई लक्ष्य निशु उदरपन । त्रिभुवन बाध महेश
महेश लक्षण छिप गार यन ॥ शैल मंद जी को गारी मझन मन्वारी जै पूंघट वारी ते परम
उपायि रूपे मर्नी उदित मई पद्म रसिग कादि तिमिरि मय वृि भये ॥ (इगके आग का
पृष्ठ नहीं है)

अंन—उपन बुद्ध अतिदि श्लेष । सुकि सुकि आगन कपाल । विष अवर कामा
अन्दर । दधिपर रवानि मुन रप भूर ॥ बार बार मय मिय रिपाकि । जामु दिये में रापु
राकि । उगुल दास कम अटि अ ग कृप्य मुमिरि हा कृप्य रंग ॥ (यह इतना ही है) ४८
शारेख यग प्रीत रप्या यमन । सुख सुख मय यपू अलन ॥ कृप्य बन बन रात्र रात्र ।
सोमित शमित यह समात्र ॥ आग पीन मित पुरव बैति । महक रही बहु दिनि
पमेति ॥ बरन बरन पट पहिरी कारि । रनन प्रतिन भूयन मंवारि । कृप्य कृप्य मिमि करन

राग । वरणि सकै को तिनके भाग ॥ गोप चोप चित धरत चोप । मो कट्टु आवत कहिन मोप ॥ गावत गारी हरपि अंग मृग मद केशरि छिरीक रंग लट्टत सुप वृट्टत गुलाल । वाजत डफ मृदंग ताल । वीन वासुरी रव रसाल । हो हो होरी कहत ग्वाल ॥ छविलि छटा सी आधै धाड् । घन मूरति तन लपटि जाड ॥ आंपि आंजि मरजाड नापि । अघर मरुर रस रूप चापि ॥ ब्रह्माटिक कडै धन्य धन्य को गोपिन सम कहिये अन्य । ब्रह्म मनातन सहित प्रेम । जुगुल क्रियो वयविनिहिं नेम ॥ ४९ ॥

विषय—श्री कृष्ण जी की लीला और महिमा वर्णन

संख्या २१२. तिल शतक, रचयिता—जुगत राय, कागज—देगी, पत्र—११, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुष्प)—१४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विक्रम सिंह, ग्राम—रायपुरा गायन, ढाकुर—तौरा, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ तिलक शतक जुगत राय कृत लिप्यते ॥ टो० । गोरे मुप पर तिल लसै ताहि करौ परनाम मानौ नमि लै हांय मै राख्यो शालिग राम ॥ छत्र तरांना लट चिवर चिवुक सिंहासन माज ॥ तिय कपोल छवि पेत लपि ते पाच अरुर उठै पियतन में केहि हेत ॥ नथ हेत दुति रमनी चिवुक सुतिल छवि हेत ॥ मुप वोट तिल चावली नैन ववाइ देत ॥ मुप तिल लिप्यो वनाइ विधि ताहि न जानै कोइ । एकै अक्षर प्रेम को पठै सो पडित होय ॥ काजर कजरौटिन में लीजे दगनि लगाइ ॥ यह तिल काजर चिवुक में वाह लगै दग आइ ॥

अंत—छठे रोग मन को भयो करि थाके सव मूरि । मोनी जरयो मृगाक तिल तामो ह्वै हँ दूरि ॥ तिय को मुप सुदर बन्यो देखत लागै सेल ॥ अय औपड को चाहिये वाही तिल को तेल ॥ ज्यो ज्यों तिल को वरनिये त्यां अक्षर परमान । मनो जोर ते प्रगट ही हीरन हू की खान ॥ ज्यों तिल को वरनन करत वडै अर्थ अपार । इहा मेह ज्यों उनयो वरसै अमृत धार ॥ चिवुक निवासन पर लमे तिल धौं शालिग राम । वानी पुरायां जालि में कहाँ लाहि परमान ॥ इति श्री कवि जुगत राय कृत तिल शतक मपूर्ण ममाप्त लिपित राम विलास पुत्र श्याम विलाम वैश्य निवासी अपूरा पुरा जिला इटावा सवत् १८९० वि० चैत्र शुक्ला नवमी ॥ इति श्री राम राम राम राम राम ॥

विषय—तिल पर १०२ दोहे वर्णित हैं ॥

संख्या २१३. प्रश्न विचार, रचयिता—ज्योतिपराज, कागज—साधारण, पत्र—५, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुपुष्प)—६६, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य । लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राम स्वरूप मिश्र, ग्राम—अर्जुनपुर, ढाकुर—अतू, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—अथ ॥ श्री गणेशायनमः ॥ मेप मीन लग्न में स्त्री प्रसूता होय तो पाय दुई स्त्री कहना और कुम वृष में होय तो चार स्त्री कहना तथा कर्क धन में होय तो पांच स्त्री कहना तथा मकर मिथुन तुला कन्या वृश्चिक सिंह लग्न में होय तो तीन स्त्री जानना ॥

अंत—तपि चार मङ्गल युक्त करिये । राजकी पति से गणना करिये ॥ शशि मांजव
वेद पुत्रनहीं रिपु तीनि बर्ष मिति के टरिये ॥ बुद्ध सुनि बर्ष बमसान बर्ष विधि बीच परै
तमहुँ कथिये ॥ कवि ज्योतिपराज विचारि बड़े विधि अष्ट टरै फल ना टरिये ॥

विषय—ज्योतिष (मङ्गल से फल कथन) ।

संख्या २१४ प. आशुपति, रचयिता—कबीरदास, कागज—साधारण, पत्र—
७७, काकर—५ १/४ × ३ १/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुपुष्टु)—४११,
पूर्व, रूप—गभीर, पद्य, छिपि—नागरी लिपिअक्षर—सं० १८७५=१८१८, प्राप्तिस्थान—
श्री देवकीनन्दन शुक्ल, ग्राम—रामपुर गधरौली काठहर—संगरामगढ़, मिस्र—प्रतापगढ़ ।

श्राद्धि—श्री गणैसाय नमः ॥ श्री राम बीच दाहाय ॥ श्री प्रिय आपराधति क्षिप्यते ॥
रोहा ॥ सत्य नाम निज सार है, सत गुण के उपदेश । सुमहुँ संत सत भावते, हई मुक्ति
सन्दिता ॥ सोरख ॥ काग हूमति गति परिहरो नाम सनेही होय । ईस होये सत गुण मिळे,
कुल का कर्म सब पोष ॥ चौपाई ॥ हाथ छोड़ की अठ्य कहाणी । सोइ निज सत गुण
सहि दानी ॥ रूप बरन नाहि देसा । लोग के अचरक सुनहु सबसा ॥ नाहि तहाँ पणि तत्व
की माया । बहीं तहाँ तीव प्रकृप निरमाया ॥ नहीं प्रकृति पणि सो होइ । बरा मरन जाये
नाहि कोइ ॥ दस इन्द्री नाहि पद कर्मा । वरन भेद नाहीं कुल धर्मा ॥

अंत—॥ सापी ॥ विनु अक्षर सब छूट ईं पाई अक्षर माह समापे । अक्षर भेद
की पावपे सो ईसा मा रंग होय ॥ सोरख ॥ कहे कबीर गुर नाहीं संत बचन प्रतीति क्य ।
गहु ईस राख की बाह विहई जग मी अरु छरे ॥ इति श्री जप्तरावति प्रिय पूर्व ॥ श्री मुप
बामि ॥ जो देया सो छिपा मम दोस न शीघते ॥ संख १८७५ साक में छिपा संत ज
(गो) से बिगती मोरी दूटक अक्षर केव सम जोरी ॥

विषय—नाम और सतगुरु की महिमा ।

(१) पृ० १ से पृ० ३९ तक—प्रतापना, नाम सनेही होने का उपदेश, सत्य
लोक निरूपण, सत गुरु महिमा, सत नाम महत्त्व, 'अक्षरावत' निर्माण कारण, मूल अक्षर,
निज अंग-बीन्हने वाले का फल, अज्ञपा आप वर्जन मन्नादि खंडन, मम एकीकरण की
महिमा, 'नाम' जपने का उपदेश और उसका फल, ब्रह्म बीन्हने का विधान, अक्षर का
महत्त्व प्राणायामादि क्रियाओं का बिना मुक्ति के व्यर्थ होने का कथन, योग की परिभाषा,
सतगुरु के उपदेशों पर चरने का फल, सतनाम में समांगे की विधि ।

(२) पृ० ३७ से पृ० ७५ तक—परबी का अंग शब्द के सार के जाने बिना
मनुष्य के भ्रम में पड़े रहने का कथन, महासागर की अगमता और उद्यमे पार होने की
विधि, पुगादि की केवल कल्पनामात्र होने के कारण निस्मरता और नाम का सागर, कम
जाड़ का विस्तार तथा उससे छूटने का विधान मम की अचकता तथा मूल नाम का निरैक-
ज्ञान दृष्टि तथा निरहय के ज्ञान का परिचय, प्रथीय संत की पद्धिचान, मुक्ति संदेश, पंच
तत्व तथा गुणादि का वर्जन, त्रिविध रूप की भक्ति में बारम्बार रूप रत्नकर भ्रमने का कथन
तथा नाम से मुक्ति पाने का कथन ।

(३) पृ० ७५ से पृ० ९४ तक—सत नाम की व्याख्या, कथाटि की निष्फलता तथा अकथ कथा (सत गुरु द्वारा कही) का महत्त्व, मूल मंत्र ग्रहण करने वाले अधिकारी का वर्णन, सत गुरु से उपदेश ग्रहण करने वाले शिष्य के ही मूल तत्त्व जानने का विधान, आत्म राम जानने का विधान, जब तक ध्यान विदेह न आवे तब तक जीव के भङ्कने का विधान, दुविधा के मिटने तथा केवल एक सत नाम की महत्ता का वर्णन, अपरावति का सार, फल । अक्षर ज्ञान का महत्त्व । गुरु, सतो के वचनों में प्रतीति करने का उपदेश ।

संख्या २१४ वीं ज्ञान सरोद, रचयिता—कवीरदास (बनारस), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—५२, आकार—७ × ५ $\frac{१}{२}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२=१८५५ ई०, प्राप्तस्थान—श्री कृपानारायण शुक्ल, ग्राम—मुन्शीगज कटरा, ढाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ मत्स्य नाम सव गुरु की वीर की दया ॥ ते लिप्यते ग्रंथ ज्ञान स्वरोदं ॥ सापीः धर्मदास विनती करै मत गुरु दीन दयाल । ज्ञान स्वरोदं भाषिये हमको करहु निहाल ॥ सत गुरौ वाच ॥ प्रयोचम ॥ प्रभाचम पूरन विस्वावीम । आदि पुर्म अविचल तोहि नवावाँ शास ॥ क्षरवो हग सो कहत है अक्षर सोहग जानु । निह अक्षर स्वामा रहित ताही को मन आनु ॥

अत—सापी ॥ भेद स्वरोदं बहुत है सुक्षम कहाँ बुझाइ तेहि का समुझि विचारि ले अपने मन चित्तुलाइ ॥ सापी ॥ धीर दरं गिरचर दरं धूह दरं सुनु मीत । न्यान स्वरोदं ना दरं कहै कवीर जगजीत ॥ सापी ॥ रामानंद गुरु की दया सबै दया सो जानि । सत गुरु सति कवीर है कयो सरोदं न्यान ॥ सापी ॥ जोग जुगति दिग थंकि करि वृह्य न्यान दिग होइ । अजपा तत्त विचारि कै सत्त गुरु पशु तिस मोइ ॥ इति गृथ न्यान सरोदं समाप्त सवत १९१२ ई० शु० १ मे लिपित देवीदीन दुवे मलिहाबाद महंत रामदीन के विद्यार्थी ।

विषय—कवीरी ज्ञान (स्वोदय) ।

संख्या २१४ वीं कवीर जी की माइयो, रचयिता—कवीरदास, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—३ × १ $\frac{१}{२}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, खंडित । रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३४ वि०, प्राप्तस्थान—श्री स्वामी ब्रह्मचारी जी द्वारा वावू लालता प्रसाद खजाची, तहसील-सिधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ कवीर जी को कृत माइयो ॥ प्रथम गुरुदेव को अंग ॥ कवीर सत गुरु सवान को सगा सोधी सबीनटाति । हरि जी सवान को हितू हरि जन सबी न जाति ॥ कवीर बलिहारी गुरु आपसीं घों हाडी कै वार । जिन मानिय तैं देवता करत न लागी वार ॥ कवीर सत गुरु की महिमा अनत अनत किया उपगार । लोचन अनंत उघाडिया अनंत दिपावण हार ॥ कवीर राम नाम को रदत रे देवे को कुट्टु नाहिं । क्या ले गुरु संतोपि ये हाँस रही मन माहिं

अंत—माळा पहिऱ्यां हरि सिद्धी ती बरहह की गळि देप ॥ कबीर माळा पहिऱ्यां
 कुळ नहीं रुम्पा मुहबा इदि मारि । बाहरि टोल्यां ही गळु मीतर भरी मंगारि ॥ कबीर
 माळा पहिऱ्या कुळ नहीं काबी मन के साथ । जब रुगि हरि प्रगटे नहीं तब रुग पतहा
 हाथ ॥ कबीर माळा पहिऱ्यां कसु नहीं गांदि हिरवां की पोह हरि चरको चित रापिये ती
 भमरा पुर होइ ॥ कबीर माळा पहिऱ्यां कुळ नहीं भगति न आई हाथ । मारी मूळ मुंडाय
 करि चला जगत के साथि ॥ कबीर साईं से ती सब चळि बीरो सो मुचि भाइ । भावे रुपे
 केस करि माथै पुहरि मुहाइ ।

विषय—सबे गुरु की महिमा, मजन की महिमा, ज्ञान महिमा, चिताबकी आदि ।

संख्या २१४ की संतो की गाथो, रचविता—कबीरदास (बनारस) कागज—
 साधारण, पत्र—३, आकार—८ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—७२, पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य कियि—नागरी प्रासिस्थान—की सत्य
 धारायण त्रिपाठी, ग्राम—रांदा, बाकबर—गोडबारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—गारी राम चमकत कर चित चाची तुम्हारी, उनहूँ के दम स्थावार जब
 चित चेत करो चित चेतु कठ मूर्ख गबौर डेह ॥ डेह ॥ गिर बुधिया ई फुक् तुम्हारी,
 पोछिया बोध्य बनिहार ॥ १ ॥ मान कुँवर मम्मडनि तुम्हारी जिन रजे बळि बैराग ॥ २ ॥
 काम श्रेय वृत्तो ननु वज्रियु, सोबति पाँच पसार ॥ ३ ॥ बौद्धि घर के पति कैसे
 रहतु ई गदि के पाहि दिनार ॥ ४ ॥ सादेव कबीर पदि गारी गाबे सन्तो केहु
 विचार ॥ ५ ॥ १ ॥

अंत—जोरा जोर जगथै प माया परपंचनियों ॥ १ ॥ ई रुत बनथै एक कंचन एक
 कामिनियों ॥ २ ॥ एक लाये चिरुथै एक संति दे मारनियों ॥ ३ ॥ ताको करिये कैसा
 सन्तो करहु विचारनियों ॥ ४ ॥ गहु सत गुरु सरण जायेके करहु पुकारनियों ॥ ५ ॥
 समर्थ मुनि कीरी, भर बन माया कागनियों ॥ ६ ॥ समर्थ चळि जाये जीव क्य कियो है
 उबारनियों ॥ ७ ॥ गुद जत्र ईबाये काम काय दूळ मारनियों ॥ ८ ॥ एल क्येई न वंचे
 संधि सोग सघारनियों ॥ ९ ॥ पद दे होम वाली, कर ईहीं निम्हारनियों ॥ १० ॥ सत कहे
 कबीर गुद बहरिब सबजस आबनियों ॥ ११ ॥

गारी समाप्त विषय—गाथी कबीर दास रचित (उर्बानार, सारी ईछी होने क्य
 कचप, समथी को गाथी आदि) ।

संख्या २१४ ई ठम गीता, रचविता—कबीर दास (बनारस) कागज—नेली
 पीका पत्र—३४, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०४ अक्षि,
 रूप—प्राचीन पद्य, कियि—नागरी, प्रासिस्थान—१० कृपानारायण टुड्ड, ग्राम—मुहरीगढ़
 कटरा, बाकबर—सखीहाबाद, जिला—कन्नड ।

आदि—सत मुक्ति जाइ अरुछी अजर अचित पुने मुनिज कटना मी कबीर मुर्त
 जोग संतावेन धनी धर्म दाम मुक्त मनी राम मुन्दर सन्त नाम कृकपत नाम प्रमोद गुद
 बाका परि नाम कचक नाम जमोम नाम सुर्त सनेही नाम इक नाम साइब की दावा चारि

गुरु वस व्यालिय की दाया सो लिप्यते । श्री गर्य उग्र गीता सापी । करै दूरि अज्ञान को अंजन ज्ञानी जो देई, बलिहारी जो गुरु की हम उचारि जो लेई, सापी उग्र गीता निजु सार है । सुकृति ठिये लपाये करै दूरि अज्ञानता अंजल ज्ञान, समाये मोरठा । अजन सार है ज्ञान रहै मंही अज्ञानता तेहि गुरु की बलिहारी मोर मठा प्रणाम है ।

अंत—दुडिस्टिल गये धर्म अस्याना । धर्म पुत्र धर्म ठिकाना ॥ भीम जाई पवन समाई । पवन पुत्र जो कहिष्ट भाई ॥ अर्जुन इष्ट पुत्र जो कहिया । इन्द्र लोक मा वामा करिया ॥ नकुल सहदेव दोनों भाई । असुनि कुमार पुत्र हिय लाई ॥ ऐमे सर्ग लोक किय वासा । पुन्य दृष्ट भौ सागर स्वासा ॥ धर्म दामौ वचन ॥ धर्म दाम कहै सुनौ गुमाई । पादौ मित्र कृष्ण के आई ॥ गीता भगवत वेद पुराना । दरम प्रसु के निकट समाना ॥ ताकर आवा गमन न होई । सुर नर मुनि मय भावै लोई ॥ साध मंत मय मिलि कोई गावै । जो कोई हरि दर मन पावै ॥ ताकी मोछ मुक्त होइ भाई । सुरा मरन का बीज नसाई ॥

×

×

×

×

विषय—कवीर और धर्म दास के आत्मिक विषय पर प्रश्नोत्तर ।

संख्या २१५ ए. छविरत्नम्, रचयिता—कालीदत्त 'छवि नागर' (टरई), कागज—देगी, पत्र—३०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५२ = १८९५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रशेखर दूबे, ग्राम—बहननेवा, ठाकुरधर—धिसवाँ, जिला—मीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ छवि रत्नम् प्रभा नाम टीका सहित लिप्यते ॥ दोहा ॥ छकत जहां गोपीन के भ्रमर विलोचन गुंज । बिलसत रहें मुकुंद की हमन कुंद की कुंज ॥ टीका ॥ मुकुंद जो कृष्ण है तिनकी कुंज की कुंज के समान जो हमन है सो वह सदा शोभित रहै । जो हमन में गोपिन के नेत्र रूपी मीरा गुंजार करके छकते हैं (यहां प्रियतम की सुसक्यान गोपिन के मनोरथ सिद्धि की सूचक है यातें छकवो कहाँ) आशीर्वांगल उपमा-लंकार ॥ बेणी लक्षण ॥ दोहा ॥ पावम रैन अचन्द्रिनी मसि मलिन्दनी माल । रवि नदिनी फनिंदनी वेनी वरन विशाल ॥ वर्षा रितु की अचन्द्रिनी कही चादनी रहित रात्रि, मसि कहे स्याही मलिंदनी भवरी रविन्दनी जमुना फगिन्दनी नागिन ये सुंदर बेणी के वरण के उप-मान है ॥ मालोपमाऽलंकार ।

अंत—सवांग मूर्ति लक्षण ॥ दीप दीपा चंपक लता स्वर्ण मलाका सार रति रंभा रामा रमा सौदामा उचहार ॥ सौदामा = विजुली, उदाहरण = आज छकी छवि रूप के लखडु छवीले लाल छातन पर छमकत फिरत कनक छरीली वाल ॥ आज हे लाल तुम्हारे रूप में छकी छवीली सोने की छडी सी छयो पर छमकती है ॥ उपमालकार ॥ कवि काली छवि रत्न में निज मति के अनुरूप । वरण कहे वनितान के नय सिप अग सरूप ॥ काली-दत्त कवि ने यथा मति नायकों का अग वर्णन किया ॥ इति श्री मा काली दत्त कवि नागर

विरचितं छवि रतनम् रसिकानामुदे मूयात् सबत १९२२ वि० ॥ दा रामदयाल पाठक । सीता राम श्री सीताराम ॥

विषय—आयिका के मख से सिल्ल तक सब भंगों के लक्षण तथा उदाहरण और उनकी गण में टीका ॥

सूक्या २१५ बी रसिक विनोद, रचयिता—कालीदस नागर (उरई) कागज—
नवीन सकेत, पत्र—१८, आकार—१३ $\frac{१}{२}$ × ८ $\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण
(अनुपुष्प)—४३२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य और गद्य । छिति—मागरी, लिपिकाळ—
१९२१ ई०, प्रातिस्थान—श्री रघुवरदयाल मिश्र, त्रिसा—इटावा ।

आदि—श्री गणैसायनमा ॥ रसिक विनोद वर्णन अथ नायका भेद, नायक—सुन्दर
चतुर सुबहो सो नायक । नायक भेद—स्वकीया, परकीया, गणिका । (१) निज पति में
प्रेम सो स्वकीया अवस्था भेद से मुग्धा मर्या प्रीति । मुग्धा—अंकुरित पीबना सो
मुग्धा, मुग्धा के भेद—अज्ञात पीबना, ज्ञात पीबना, नबोदा, विग्रह नबोदा । अज्ञात
पीबना—पीबनके आगमन न जानी । ज्ञात पीबन—पीबनागम जानी । नबोदा-कसा
मपसों पराबीन रति करी । विग्रह नबोदा-पतिमें कुछ विश्वास करी सो विग्रह नबोदा ।

अंत—प्रश्न—मुग्धाका मान नहीं कही सो क्य कारण ? उत्तर—अपराध सूचक
प्येछ करजतें माहीं कर सकत प्रियके अपराध सूचक सो मान । यह मान करी मुख्य
कल्प है केशव रामने मुग्धाके मान कहा है सा इनकी बात ही विराजी है । जो तो
शृंगार रस जाका क्य धर जानते है । प्रश्न—पीरा और खण्डितमें क्या भेद है ?
उत्तर—पीरा कोय प्रकट करत है । खण्डिता बुझित होत है । प्रश्न—यम शृंगार समरति
और विषय रति से दा प्रकर को । संयोग वियोगसे चार, फिर प्रच्छन्न प्रकाशसे आठ प्रकर
है सो तुमने क्यों माहीं कही ? उत्तर—विषय रति सो संयोग शृंगार हो ही नहीं सकता ।
रहा वियोग शृंगारमो पूर्वांशुनाग कदि चुके हैं और प्रच्छन्न प्रकाश भी प्रारंभमें नहीं हो
सकते । हमकिये कि जहां लज्जा है या अपवाद मय है तहां प्रच्छन्न है जहां ये नहीं तहां
प्रकाश है ॥ इति

विषय—आयिका भेद ।

सूक्या २१५ सी रसिक विनोद, रचयिता—कालीदस नागर (उरई, जालीन)
कागज—श्री नवीन पत्र—२०, आकार—१० × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२,
परिमाण (अनुपुष्प)—३३०, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य और गद्य । छिति—मागरी,
लिपिकाळ—सं० १९३४ = १८०७ ई०, प्रातिस्थान—साधु कस्तुरमल, प्राम—शीरिया कसौ,
काकर—कौहपुर, त्रिसा—दम्नाव ।

आदि—अंत—२१५ बी के समान ।

पुष्पिका हस प्रकार है—इति श्री रसिक विनोद काव्य कालीदस नागर उरई
निवासी कृष्ण मंपूर्ण ममातः ॥ आरभ्य कृष्ण पत्र द्वितीया संवत् १९३४ वि० ॥

सूक्या २१५ बी रसिकविनोद, रचयिता—कालीदस कवि नागर (उरई)
कागज—साधारण, पत्र—१, आकार—१३ $\frac{१}{२}$ × ८ $\frac{१}{२}$ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२,

परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—श्री रघुवर ट्याल मिश्र अध्यापक मिडिलस्कूल कवीरचौरा, बनारस सिटी ।

आदि-अंत—२१५ वी के समान ।

पुष्पिका इय प्रकार है—इति श्री मरकाली दत्त कवि नागर निवासी उरई विरचिते रसिक विनोदे वियोग श्रंगार वर्णनोनाम सप्तमानन्द । ममाप्तोय रसिक विनोदे प्रथः ॥ शुभम्

संख्या २१६. रतन विलास, रचयिता—कालिका सेठ (ग्राहजहाँपुर), कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—१२ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१० = १८५३, लिपिकाल—स० १९१९ = १८६२, प्रासिस्थान—श्री गणपति दूये, ग्राम—नयागाँव, ढाकघर—सरदारपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रतन विलास लिप्यते ॥ श्री सरन्वती जी सहाय ॥ यह पुस्तक को नाम है कई रतन विलास यामे कुछ कविता करी नाम धरो गुन देप याको समझ विचारि के मय गुनियन के भेग ॥ जो जहु पायों सो धगे प्रागदत्त को लेख संवत् १९१९ दियो ज्ञान महेम ॥ सप सुनो लोग चित डेठ भापा कुछ उर्दू जिनको चित भगवान में उन चरनो लवलीन । जात पात वृझों नहीं उन भोजन भोको दीन ॥ प्रागदत्त मुदरिस बराणे तहसील घोरोड जिला कर्नाल पजाय ॥ वाशिन्दा कानपूर विल्हौर तालीमयाफ्ता देहली ॥ गनपत सुमिरि सरस्वती शंकर भोले नाथ । कर जोरे अस्तुति करों लाज तुम्हारे हाथ ॥ शपि लेठ तुम लाज करों कारज सारे शिव के हों तुम पुत्र हरो सब संकट हारे ॥ मगल उस्ताड जिनका अपाड़ा ब्राह्मण हैं गौड़ गुरु वंगी हमार कालिका सेठ सरन सिव की रहें ते सहजहाँपुर स्वाग वालकाड का कहैत भज सीता पत राम ॥

अत—सीताराम ॥ मिया स्वयंवर स्वांग है मुक्ति पदारथ देड । बहुत श्रम में अब कियो लिखो ज्ञान को जान रघुनदन किरपा करी दियो मन विच ज्ञान । टीना जन ग्यान स्वाग पूरन कीना दैसाप वटी चोथ को सब लिप लीना सबत् ऑनइस सै भोनइस आयो तव दाता ने यह ज्ञान बतायो प्रागदत्त ब्राह्मण कानपूर का ॥ इति श्री रतन विलास यानी स्वांग वालकाड मिया स्वयंवर का संपूर्ण समाप्त ।

विषय—मिया स्वयंवर का अनुवाद स्वांग में ।

संख्या २१७ प. कृष्ण क्रीडा, रचयिता—कालिकाचरन, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—९ X ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९००, प्रासिस्थान—श्री शिवरतन सिंह, ग्राम—रामपुर मथुरा, ढाकघर—विसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ कृष्ण क्रीडा लिप्यते । वसत तिलक -छंद वसत तिलक छंद ॥ मातंग मालि मन हेम किरिटी भारी, श्री पंड पौरि सभि वदन बुध धारी । अंभोज अधिरज विधन समूह हारी । जै वरु तुड जन मगल मोट कारी । विद्या विवाह श्रुति-नारद विलास लीके वीना विचित्र कर पुस्तक जुक्त कीन्हे चन्द्र प्रभा वसन भूषण भूरि

गता ॥ हरि धर हरधर धरवि धर मुक्ति विहीन मुक्ति हीन । सहस्र बदन बंदी पदन प्रभु गुन
बदन प्रवीन ॥ कवि कोविद मुर कमुर नर सकल बंदि कर जोरि । कर्षी कृष्ण मीमा
कजन बुधि विवेक रस जोरि ॥ बसंत तिलक छंद ॥ जो कळ पामि गदग ध्वज सिंघु बासी ।
सोय प्रकास सत चित्त जगद रासी ॥ श्री चंद चूच चित्त पंकरु को प्रकासी । सोई इष्ट
देव मम है हृद को विसासी ॥

अंत—बारम देर मुनी जवहीं तव श्रीम्ही न देर न हीम्ही सवारी । भूप मुता दित
बीर बने वुर बासा की साप गरे गहि बारी । केरि कये गुण बाळक ज्यों भदमीत सुदामा की
प्रीति समारी । कछिअचरन कृपा करि के हरि तेमे हौ हिय पीर हमारी ॥ इति श्री कछिअ
चरन कृते कृष्ण मीमा नाम प्रथ समाप्तम् छिपतं मोला पाय राव संवत् १९२० वैश
शुक्ल ५ पंचमी ॥

विषय—श्री कृष्ण की की सीख्य बीर महिमा ।

संख्या २१७ थी कृष्ण मीमा, रचयिता—कछिअचरन अगत्र—देसी, पत्र—
२३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुच्छेद)—९२०,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—जागरी, छिपिअक—सं० १६२५ वि०, प्राप्तिस्थान—
श्री निवरान, ग्राम—भगवू अ पुरवा, आकार—महमूदाबाद, विषय—सीतापुर ।

आदि—२१७ के समान ।

अंत—इति श्री कछिअचरन कृते कृष्ण मीमा नाम प्रथ समाप्तम् सं० १६२५ छिपतं
गोपीनाथ पांडे निवृत्तार्थ । इरीअ पुरवा मे ।

संख्या २१७ सी कृष्ण मीमा, रचयिता—अलीचरन, अगत्र—देसी, पत्र—
२८ आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुच्छेद)—१०७०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—जागरी, छिपिअक—सं० १६३२ = १८७५ इंच, प्राप्तिस्थान—
श्री देवीदयाल, ग्राम—सलेमपुर, आकार—पैरा स्टेट, विष्ठा—खीरी ।

आदि—अंत—२१७ के समान ।

पुष्पिका हस्त प्रकार है—इति श्री कछिका चरन कृते कृष्ण मीमा नाम प्रथ संपूर्ण
समाप्तम् छिपतं वैशवाय सिंह संवत् १९३२ वि०

संख्या २१८ दसूर माछिका, रचयिता—अमल, अगत्र—पाधारन पत्र—१४,
आकार—१० × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुच्छेद)—३०५, अंकित, रूप—
नवीन, पद्य छिपि—जागरी, रचनाअक—सं० १८३७ = १७६० इंच, प्राप्तिस्थान—काठ
गयाप्रसाद, ग्राम—किन्ही, आकार—परिबार्ध, विषय—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री रामचंद्रायनमः ॥ संवत् विद्या वेद सत ऊप सैतालीस । साधन
कृष्ण प्रबोदयो अनुचार दाम ईस ॥ ११ ॥ प्रथम अंक ते बरन लेपन सहित मुद्रान ।
कोर जमा अट पत्र को न्यारो करी पयान ॥ १२ ॥ (छी) प्रथम कस्त मथत अटकतर
अगद को जार्गी । अहर छिपि मुदेप दृक सम सयन बागानी ॥ बिरही अंकि मुदेप हीर्ष
कपु को पहिचार्गी । काना माया लागि सोइ हर्ष में हर्ष कयनी ॥ कदि कमका जव

लेपन सहित समुद्र वज्र अरु सोध वर । सोई जमा पवुं पधति सहित लिपहि जाहि जवहि काइस्य नर ॥

× × × ×

अत—जै रुपैया तोला विकै, मामे को का देइ । सब गुनि आना करै । दाम पच गुने लेइ ॥ एक रत्ती के दस गुनै, टीजै दाम वपानि । एक चाउर के सवाये दाम सो कीजै जानि ॥ एहि प्रकार लेपा करै स्याहा गुन गन लेइ । आना दाम जु साठि को भाग काटिके देइ ॥ १ रुपैया १४) को ताके सवाए १७॥ दाम पच गुनै ७० दरि ६० मामे एक के १) १) = ॥ १— ताको अर्थ—तोला एक रुपैया १४ को दम गुनै १४० दरि साठि की ६०) = १४ तोला तोला १) रुपैया १४) ताके सवाए दाम १७॥ चाउर एक के) । : २॥ एक रुपैया कीजै रती सोन भाठ जाँ होइ । मासो तोलो कहि टीजै कहि जै सोइ ॥ ताको अर्थ—रुपैया की रती ६॥ तोलो ६॥ रुपैया की रती ६ के भये रुपैया ६६) मामे के रुपैया ८)

विषय—पृ० १ से ८ तक—हफों का सौंदर्य तथा लेपन विधि, कायस्थ की लेखन कला की महत्ता, बत्तीस तरु अक्षरों के लगमात्रा का वर्णन, गिनती का परिमाण, जोड़ की पद्धति, सौ से अधिक गिनती का परिमाण । दफ्तर और दस्तूर । फर्द रोजनामचा, स्याहा का क्रम तथा वही बनाने का विधान, वही लिखने की विधि । कचा कागज तथा स्याहा की रीति । खतौनी का विधान । जमा—खर्च की पद्धति ।

(२) पृ० ९ पृ०***तक—विगहा, गाठो, विसुवा की परिभाषा । बीघादि से विस्वादि बनाने का विधान । जत्र कोदरी का विगहा । लगान लगाने की रीति । वाकी, वासिल और फाजिल की परिभाषाएँ । गोदावारह से स्याहा लिखने का विधान । मिवाय का परिमाण । विराठ का दस्तूर । हिसाब लगाने के गुर । पाया तौल का दस्तूर । दर दस्तूर । गीनी का हिसाब । प्रमाण सहित चक्की पद्धति वर्णन । कोड़ी इत्यादि का परिमाण । गज इत्यादि का विवरण । पोशाक का हिसाब गजों के हिमाव के गुर । खरीद दस्तूर वर्णन । मासा और तोलादि के हिसाब का विवरण ।

संख्या २१६ प. ज्ञानमाला, रचयिता—कमलदास वैष्णव (शिवगज), कागज—साधारण, पत्र—५१, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपुष्प)—६७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८० = १८२३, लिपिकाल—सं० १८८० = १८२३, प्राप्तिस्थान—श्री महादेव प्रसाद तिवारी, ग्राम—परियावाँ, डा० परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री मते रामानुजायनमः ॥ अथ ज्ञान माला लिख्यते ॥ एक दिन राजा परीक्षित राज गद्दी पर बैठे थे ता समय श्री व्यास जी के—श्री सुखदेव जी आये राजा देखते ही सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और ऋषि के चरणारविंद में गिर के साष्टांग कीनी फिर आदर और सत्कार सहित उनको सुन्दर स्थान में ले जाके रतन जटित सिंहासन पर बैठाय दोऊ चरण कमलों को धोय के चरणोदक लिया और विधि पूर्वक पूजन करके नाना

प्रहार की श्वाभिप्री भोजन करवाहें ॥ जब श्री सुकृष्ण जी प्रसन्नता से घंट तब राजा ने हांक कर जोड़ि बिबली कीगी ॥

अंत—हे अर्जुन जो मनुष्य हूँ हीनों वातन का अपने पित सो कमी न्यारी नहीं करे तो इस लोक में परम सुख पावे प्रथम स्वामी की सेवा में हंसमुख और निर्दोष रहे दूजे आइयों के मन को दुखी न राखी तीजे क्रोध न करे ॥ इति शान मासा समाप्तम् सम्बद्ध आमीराय मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदश्यायां सिद्ध गंत्र मध्ये पुस्तक संपूर्णं लिखितं ६८८८ अक्षरानाम् ॥

विषय—भीति सदाचार के नियम ।

सदया २१६ वीं शानमासा, रचयिता—कृष्णक कमलदास, आगज—देसी, पत्र—०५, आकार—० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुपुष्प)—५२५, पंक्ति । रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८० वि०, प्रासिखान—राज पुस्तकालय प्रतापगढ़ राज्य । आकार—प्रतापगढ़ ।

आदि अंत—२१६ प के समान ।

पुस्तिका नहीं है ।

सदया २२० प. गोत्र प्रहर दर्पण रचयिता—कमलाकर भट्ट, आगज—देसी, पत्र—११६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपुष्प)—१३००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, छिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १०३० = १८०३ ई०, प्रासिखान—श्री जीयसिंह, ग्राम—मिचलिया, आकार—ईसानगर, लिख—कीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ गोत्र प्रहर दर्पण लिख्यते ॥ प्रारंभः श्री परमात्मने-नमः ॥ नारायण के पुत्र राम कृष्ण जी के कमलाकर नामक पुत्र संपूर्ण श्रुतों का विचार कर गोत्र और प्रहरों का निर्णय करते हैं ॥ विशुद्धों की प्रीति के निमित्त ॥ उसमें अब कहते हैं कि समान गात्र के निमित्त कन्या दान न पूछ । क्योंकि असमान प्रहर वालों के साथ विवाह करना चाहिये श्रेया आपस्तम्ब और गीतमादि आचार्यों ने कहा है ॥ क्योंकि विवाह विषय में समान गोत्र और समान प्रहर वाले बर्जित हैं ॥

अंत—और स्मृत्यर्थ मार में भी कहा है कि विवाह के जीम्य जा स्वगोत्र की वा संबंध की कन्या के संग गमन करे ती जितना गुण की स्त्री से गमन का प्रायश्चित्त होता है उतना ही कन्या के गमन में भी होता है और फिर अंगायनादि मत करके भोग छोड़ के उसको माता के तुल्य रक्षा करे और कश्यप जी करते हैं कि अज्ञान से जो कन्या गमन करे ता तीन बार जन्म लेकरके और तीनों जन्मों में मनादि करता यदि तो दुख होय है ॥ और वेदाश्री की पत्नी गमन में आचार्य की गमनवत ही प्रायश्चित्त जानना चाहिये ॥ इति श्री गोत्र प्रहर दर्पण भट्ट नारायणायाम्भ भट्ट रामकृष्णायाम्भ भट्ट कमलाकर कृतो संपूर्ण समाप्तः ॥ लिखनं सिद्धहृत् पाया सरवा मीर आचन मासे कृष्ण पक्षे षष्ठादश्याम् संवत् १६३० वि० ।

विषय—माझन, क्षत्री, दैत्य आदि के गोत्र प्रहर और विवाहादिकों के नियम ॥

संख्या २२० वी. गोत्र प्रवर दर्पण, रचयिता—कमलाकर भट्ट, कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—८×६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७५, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४२, प्राप्तिस्थान—श्री याज्ञ दत्त शास्त्री, ग्राम—भानपुर, ढाकवर—महिगलगांज, जिला—सीतापुर ।

आदि-अंत—२२० ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री भट्ट नारायणात्मज भट्ट रामकृष्णात्मज भट्ट कमलाकर कृतो गोत्र प्रवर दर्पण समाप्त। मवत १९४२ वि० माघ शुक्ला एक शनिवार ।

संख्या २२१. ववुर वाहन कथा, रचयिता—कनकसिंह, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—८×४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०२, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूवे साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई ।

आदि—राम १ श्री गणेशायनम । लिखी ववुर वाहन कथा दो०—ववुर वाहना कथा पृष्ठ पंडव कुल के भूप । कनिक सिंह कवि भापा कथा कीन्ह अनुरूप ॥ चौपाई ॥ सारठ कठ प्रकासक कीजै । दीव्य ज्ञान दे दुरमति छीजै ॥ हांगु लाज हिय करहु सहाई । कथा ववुर वाहन सुखदाई ॥ सुची पुची जालपमव तोरी । मन इच्छा पुरवहु कछु मोरी ॥ राय दुद्रीष्टिल जग्य सुठाना । सारथी भये सीरी भगवाना । कटक जोरि अर्जुन संग दीन्हा । साव कर्न घोरा पुनी लीन्हा । दो०—अस्वही पुजी छाड़ी दीहु । संग पारय अरु सैन । गुरुकै चरन वढिकै । कनक सिंव कह दैन । नी छुटा तुरै वेगी सोधावा । इच्छी देस का वरु आवा ॥

अंत—वहुतै वेगी खगेश्वर धाऊ उड़ही पीछे पखन्ह के वाक । गरुड मसान वेगी नियराई । महाभयावन रन जेहि ठाई । ववुर वाहनै धनुष चढ़ावा । अर्जुन केरी सैन जनु आवा । पुत्र पुत्र कै कुतै रोवा । धनुष लडाइ नृपति मुख जोवा ॥ गदा हाथ लै भीम प्रचारा । मोर भाइ अर्जुन केई मारा ॥ तेकरे मासक भोजन करऊ । नत साथ ही अर्जुन के मरऊ ॥ दो०—कुतै भीमही वरजा छन एक सोकनिवारि । जौ नही जीयहि आर्जुन । पाछे करी हहु मारिं । ववु वाहन नृप ससै आइं । मनी आवै तव रहै वडाई । ववुर वाहन मव अर्थ सुनाई । पुन्य रीखै से कहा बोलाई ॥ वेगी पतालहि जाहु गोसाई । वासु की नृपसे कहेहु बुझाई । मनी दीजै नागन्ह के राई । बहुत भाति मे कहव बुझाई । जौ न देइ नागन्ह कर राजा । नत में आइव करव अकाजा ।

विषय—(१) कवि की चंदना (२) राजा युधिष्ठिर का यज्ञानुष्ठान करना और अश्वका छोड़ा जाना (३) अश्व का मनीपुर आना । (४) अर्जुन से ववुवाहन की उत्पत्तिका प्रसंग—ववु वाहन द्वारा घोड़ा पकड़ा जाना । उसे छोड़ देने के लिये माता का उपदेश । मंत्री की राय से ववुवाहन का अपने पिता को रत्नो हाथियों द्वारा मनाने का प्रयत्न । अर्जुन द्वारा फटकारा जाना । युद्ध की तैयारी ।

सूक्त्या २२२ कन्धैया एतमन्वरी, रचयिता—कन्धैया बक्स पाक (बानपुर),
 कागज—देवी, पत्र—८५ आकार—१० १/२ × १२ १/२ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण
 (अनुच्छेद)—१३५५, लिखित रूप—भक्ति प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी प्रासिद्ध्याय—
 श्री रामनाथ पांडे प्रभागाध्यापक कुमहरी, बाकधर—बीठवार, मिठा—प्रतापगढ़ ।

भावि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री कन्धैया एत मन्वरी लिप्यते ॥ अथ मगला
 चरण ॥ श्री गणपति वारन बदन सिद्धि सदन मुख मूल । बेहि सुमिरै तुरती मिटे श्री तापन
 को सुख ॥

× × × ×

सीस में जरा बिमाक छोचन है छाक काल भाक चंद बाक माक मुंड उर धारे हैं ।
 अंग में लई प्याक जसन है प्याक काल कमरु के सपुं ताम सुनि मन हार हैं ॥ प्रीबा
 में गरक सास पस ही में है ह्यास काम भागलई बाक चंद छवि बारे हैं । कइत कन्धैयापास
 मेरो हरो दुग्ध जाक दीनन पी है कृपाक दारिद बिदार हैं ॥ १ ॥

× × × ×

अंत—दोहा ॥ निपट छबीसो छोट कब, बावन बनो बिलोड । चक्रित भयी चहुंघा
 सबै त्रिपद करी श्री छोक ॥ साप्त वर्णवन् । चाई निर बेदादि तई साप्त सुरम सरसाव ।
 वन तप संगति सत श्री सूतक समान बिभाव ॥

× × × ×

विषय—पृ० १ से जाठ तक—प्रथम तरंग । मंगला चरण तथा कवि बंश वर्णन—
 सूर्य बंस जग विदित जानि त्रिप तेहि सउप बलाबी । मारतक मुनि तेज प्रकासित देखत
 ज्ञान अजानी ॥

× × × ×

श्री हृसाकु नरेण चरकथै रविबंसी प्रतधारी । त्रिबनी छप्यन मूप मूपता करि
 अचचपुरी सुपधारी ॥ तेहि कुक में मूप दसरच प्रगटे सहा सत्य प्रत धारी । राम कण्य मारत
 रिपुसूदन दसरच मुत मे धारी ॥ राम भादि सब अगतन के द्वी द्वी मुत मन भावै ।
 पुष्कर नाम मरत मुत जादिर जानु प्रताप प्रभावे ॥ रामचन्द्र सब मुतन को
 द्विपो राज अलगाय । पुष्कर पदिचम द्विसि रथी नगर कुमाई जाव ॥ पुष्कर
 राज कुमाई में किबो राज बडु काल । नयन वेद रस पुसित मूप प्रगटे मुज बिसाक ॥
 ते कुक में तब मे प्रगट अरुलदेव महिपाक । तिलक देव अता सुभग, मूप मुकट मनि
 माल ॥ देहली साहि मुजान पी, चहपी कोप कोक हीर । तब कपुड कइत बन्धी भदि
 तिकथी पत्र करि गौर ॥ प्रबल चम् रिपु और मुनि देहली पति डर मान । तिकथी कुमाई
 को तुरति अरुलदेव के मान ॥ तिलक देव होठ जाने, तुम होठ मेरी बाँह । होन कइत साही
 अमक, सदा तुम्हारी छाँह ॥ चकि पत्र अता होठ, तुरती किथी सलाह । चलो देहली रात्रि
 के, जहां पुत्राई बाँह ॥ अनुज तनय की दी तिलक अरुलदेव महिपाल । तिलक देव अता
 सहित मात्रिचम् बिकराल ॥ धायो देहली नगर की रवि बंसी रन धीर । अदि गण

उदगन सो भजे, लखि रवि किरन गंभीर ॥ विजय पत्र लैकर चल्याँ, गंगा कियो नहान ।
 विविध भाँति दीनों द्विजन, दान मान सनमान ॥ तहँते नृपन चले सुभग देवे सुभ सरवार ।
 सव देमन की सीस मणि हरत न लायौ चार ॥ राज रहाँ रजभरन काँ छोरि लियौ नृप
 वीर । अति विचित्र तहँ लखि रच्यौ महुलीगढ़ गंभीर ॥ छन्द चौपैया—मम्बन् वाण^५
 व्योम^१ गुण^३ निशकर^१ फागुन सित नामी को । आयौ सहित आत अवनी पति अलखदेव
 महुली को ॥ कियोँ राज बहु काल नृपति तव मह्यौ नगर सुहायो । भयो जोरावर पाल
 प्रगट नृप ग्राम वानपुर आयो ॥ दोहा—अलख देव नृप सौ भयौ द्वादश पुस्त रमाल ।
 उग्र प्रतापी तव प्रगठ भयौ, जोरावर पाल ॥ भूप जोरावर पाल तव, ग्राम वान पुर आय ।
 रच्यो राजधानी सुभग, दुज देवन सिरनाय ॥ वत्सर मुनि वसु^६ नग मही, मार्ग शुक्र
 गुरुवार । पूर्णा तिथि शुभवानपुर । कियोँ प्रवेदा विचार ॥ छट चौपैया—अति अराम सुभ
 धाम सरित सरजू तट राजै । उमगि कुआनो मिलि मजु मनवर छवि छात्रे ॥ करि करि
 जगत अन्हान चारि फल लटत लगामे । तहाँ विराजत ललित वानपुर नाम सु ग्रामे ॥
 नृपति जोरावर पाल सो भयौ वश विस्तार । वर्णन क्रम सौँ तेहि करत वशावली विचार ॥
 छंद चौपैया—श्री रणजीत पाल सुत ताके अति रणधीरा । तासु तनय सुव सन्तपाल भो
 समर जीत बलवीरा ॥ श्री शिववक्म पाल सुत ताके प्रगटे अति छवि धामा । हरि गोविन्द
 तासु आता भो प्रगट जासु जग नामा ॥ तिनके तनय उदार मति जालिम पाल भुआल ।
 तासु तनय प्रचंड भो नाम जानकी पाल ॥ माधव पाल सुधर्म रत, तिनकाँ तनय प्रवीन ।
 दूर्जा जोपन पाल भो अति अतोल जम कीन ॥ श्री युत जोपन पाल को तनय कैपैयापाल ।
 करत काव्य रचना रचिर रसिकन हेतु रसाल ॥

(२) पृष्ठ ८ से पृ० ४२ तक—द्वितीय तरंग । शिव विनय, भूमिका, अनेक भाँति
 की नायिकाओं के लक्षण तथा उसके उदाहरण ।

(३) पृष्ठ ४३ से पृ० ८५ तक—तृतीय तरंग ।

(४) पृ० ८६ से ८८ तक—चतुर्थ तरंग । उत्तमा, मध्यमा, तथा अधमा
 नायिका वर्णन ।

(५) पृष्ठ ८९ से पृ० १०० तक—पंचम तरंग । नायक लक्षण तथा उदाहरण ।

(६) पृष्ठ १०१ से १०५ तक—षष्ठ तरंग विभाव लक्षण, आलंबन, (श्रवण
 आलम्बन, चित्रा आलंबन, स्वप्नालंबन, प्रत्यक्ष दर्शनालंबन ।

(७) पृष्ठ १०६ से पृ० १०८ तक—उद्दीपन विभाव (सप्तम तरंग) पीठमर्द,
 चिट, केट, विदूषक ।

(८) पृष्ठ १०८ से पृ० ११९ तक—अष्टम तरंग । सखी (मडन, शिक्षा,
 उपालभ, परिहास,) दूती—उत्तम मध्यम, अधम—विरह निवेदन, सवटन, स्वप्नदूतिका ।

(९) पृष्ठ ११९ से पृष्ठ १२७ तक—नवम तरंग । अनुभाव, साखिक (स्तम्भ
 साखिक, स्वेदमाखिक, रोमाँच साखिक, कम्प, वैवर्ण्य, स्वरभंग, अश्रु, प्रलाप, जम्भा ।)

(१०) पृ० १२८ से पृ० १४१ तक—दशम तरंग हाव वर्णन, लीला, किलकिंचित,

फलित विहित हाम विद्यास, विद्योक, मोयाहृत् कुडमित, विद्वित, विद्मम, कीतृहृत्,
हेला बोपक,

(११) पृ० १४१ से पृष्ठ १७० तक—०कादस छरग ।

संख्या २२३ पृ. पद रामायण, रचयिता—बाबा कान्हारदास (आगरा), कागज—
देसी, पत्र—६४, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति—(प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—
१२०२, पूर्ण, रूप—भपड़ी धीर सही पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाह—सं० १९४०=१८८३
ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा अमरदास, ग्राम—हुनेतगाँव बाबकपी, जिला—छटाकक ।

आदि—श्री गणेशायनमो श्री मते रामानुजाय नमो ॥ राम मीरो तिस्ताका धंकोदर
गज बदन विनायक श्री श्री गणपति गवरी नंद । गणनायक सब संत महायक मंगल मूर्ति
जाबद बंद ॥ ०क वंद मद् मच मनोहर प्रफुलित बदन अटन करविंद ॥ सुखि पुखि वापक
सब कायक पूरण मुमति सरोवर बंद ॥ सुप्र सारद नारद बस गाबत अगम विगम विमल
भुति बंद ॥ शंकर सुवन चरन रज बंदत कान्हार मिटत मकळ हुप्र इ इ ॥

बंध—भारती

बकि सकि मंगल भारती देल । बीबन जग्म सुकळ करि लेल ॥ मंगल राम सिया
को रूप । मंगळ कौसळपुरी अल्प ॥ मंगळ रतन सिंहासन शक्ति । मंगळ जनहृदनीबत बाँधी ॥
मंगळ चंवर छत्र श्री छाँह । मंगळ भरत ककल श्री छाँह ॥ मंगळ श्रीर मुकुट चर सोदे ।
मंगळ अनुप बाण मन माहि ॥ मंगळ सुमग सुमिप्रा माय । मंगळ शुकुल वसरथ राय ॥
मंगळ महळ खबासी बास । मंगळ नुप कौशल पुर बाण ॥ मंगळ कछय लिये पुर भारी ।
मंगळ सरजू बक भरि कारी ॥ मंगळ भारती प्रसु श्री गावि ॥ सो कान्हार मंगळ पद पावी ॥

इहि श्री कान्हार दास बाबा कृत पद राम जी के संपूर्ण समाप्त कियत बंधीहाम
संवत् १९४० वि० ॥

विषय—श्री रामचंद्र जी के पद ।

संख्या २२३ वी पद रामायण, रचयिता—बाबा कान्हारदास (गोकुळपुरा, आगरा),
कागज—देसी पत्र—६०, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण
(अनुपुष्प)—१२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाह—सं०
१९४३ = १८९६ ई०, प्राप्तिस्थान—काका शायबंद बेह्य ग्राम—पीरिया, बाकभर—पपी
पुर, जिला—उधवा ।

आदि बंध—२२३ पृ. के समाप्त ।

पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री बाबा कान्हार दास कृत पद रामायण संपूर्ण समाप्त ॥ लिपित राम दास
योसाई संवत् १९५३ वि० शैव शुद्ध नवमी ।

संख्या २२३ वी पद रामायण, रचयिता—बाबा कान्हारदास (गोकुळपुरा, आगरा),
कागज—सफेद पत्र—६५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण
(अनुपुष्प)—११९०, पूर्ण, रूप—बधीन पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर
प्रसाद शर्मा, ग्राम—किरोबाबाद, जिला—आगरा ।

आदि अंत—२२३ पृ के समान ।

पुष्पिका नहीं है ।

संख्या २२४. रामचरित्र, रचयिता—कपूरचंद्र (देहली), कागज—देशी, पत्र—
६२, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३३,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५४ = १६६७ ई०, लिपि-
काल—सं० १८८५ = १८२८ ई०, प्रासिस्थान—श्री चतुर्भुज जी, ग्राम—भोजापुर,
ढाकवर—गडद्वारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चंद्रकृत रामचरित्र लिप्यते ॥

गुरु गनेम अरु गौरिजा, सुमिरत होत अनंद । क्यू हकीकत राम की, अरज करत है
चंद्र ॥ १ ॥ आदि अनादि जुगादि है, ताहि जयै मय लोय । राम चरित अद्भुत क्या, सुनै पुन्य
फल होय ॥ २ ॥

अत—रावन का टाहा देय, मीका आना मदेम । कवहुं न रही वात अपने गुमान
की । मजीवन कू धाय पल में पहार लाया, करी थी वडाई वारावरे के वान की ॥ जाँन
होता पवन सुत तेरी सौं, हमारे हाथ आवती न जानकी । जहाँ जहाँ परी भीर, तहाँ तहाँ
धरी धीर । कहा लौं बडाई करौं, वीर हनुमान की ॥ १८८ ॥

X X X X

इति श्री चंद्र कृत राम चरित्र सपूर्णम् ॥ लिपितम मिश्र मेटे मह नौद वाले पटनाय
लाला भवानी प्रमाद मित्ती ज्येष्ठ शुक्ल ३ श्रुगु दिने म० १८८५ वि० ॥

वियय—रामायण की कथा ।

संख्या २२५. वलभद्र प्रकाश, रचयिता—करनेस (महापात्र), कागज—देशी,
पत्र—६०, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०६०,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६६ = १८३६ ई०,
प्रासिस्थान—महाराजा प्रकाशसिंह, ग्राम—मछापुर, जिला—सीतापुर ।

श्री गणेशायनम । अथ वलभद्र प्रकाश लिप्यते ॥ भाषा भूपन का टीका । मूल ॥
विवन हरन तुम हौं सदा गनपति होहु महाइ । विनती कर जोरे करौं दीजाँ ग्रंथ बनाइ ॥
टीका । विवन विनासन हौं सदा गनपति तीनों काल आदि मध्य अरु अंत मों पुरवौं ग्रंथ
रमाल ॥ मूल । जेहि कीन्हो परबंच मय अपनी इच्छा पाइ । ताको हौं वेदन करौं हाथ जोरि
मिर नाइ । टीका । जेहि सिंगरे जग को रच्यो निज मन वाक्षा पाइ । जोति जगै जो प्रभु
सदा तेहि वंदौं बहु भार ।

अत—लक्ष्मण तिय अरु पुरुष के हाव भाव रम धाम अलंकार संजोग ते भ.पा भूपन
नाम । भाषा भूपन ग्रंथ को जो देपे चित लाइ विविधि अर्थ साहित्य पर समुझै सर्व बनाई ।
इति श्री मन्महाराज धिराज राठौर वसावतस जसवत सिंह विरचिताय भाषा भूपन समाप्त.
इति श्री भाषा भूपन टीका श्री मन्महाराज रैकवार वसावतस वलिभद्र सिंह कृत करनेस
महापात्र विरचिता यसुजस प्रकाश भाषा भूपन टीका लक्ष्मण लक्ष्मण युक्त समाप्तः आमाइ मासे
शुक्ल पक्षे पून माया तिर्या संवत १८६६ साके १७६१ शुक्रवार ॥

विषय—नाबिक, भायक, छल्लम, हाथमाच रम, कर्कशर आदि का वर्णन ।

संख्या २२६ ज्योतिष भाषा, रचयिता—काशीराम, कागड—देसी, पत्र—४०, आकार—१६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ —३२, परिमाण (अनुच्छेद)—८१० पूर्ण, रूप—बही की भाँति, पद्य आर गद्य । छिपि—नागरी छिपिकाल—म० १७८४ = १७२०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवईंट बूने, ग्राम—देवदरपुर, बाकपर—खेरी, बिसा—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ ज्योतिष भाषा लिख्यते ॥ दा० ॥ यजपति गिरा गिरीश गुरु गंगा माह गोपाल । इन सब देवन को प्रथम मो पर होहु दयाल ॥ ज्योतिष भाषा कहु करी अपनी मति अनुसार । छिमहु गुनी कवि ज्योतिषी मूर्खहि लेउ मुधार ॥ ज्योतिष समुद्र अयाह है मो उर सीप समान ॥ स्वाति बुद्ध मन साह है मुन्ध मय मुनि दान ॥ मेप बूषी जद कर्क भन मकर लस ए बाज । जन्म होहु इनके दिधि पूष्टि उदय तिदि खान ॥ कम्पा सिंह बुदिबक गुहा कुम कस ओ होह । सीप उई तिदि जानिये मिधुन मीन सो जोई ॥

अर्थ—अथ मीन । मीन लगन गिर उचर करी आर कपटे बीपक समुद्र करी । श्री मस तिन में एक गर्भ सा तिदि के एक पुत्र होह । दाई उचिम जाहि बालक को पिता परही पॉष बर्य बीते बालक की अल्प होह । आँस को बूब घोरो । बालक मात कट सी रहै । इति श्री कसी दाम कृत भाषा छत्र समाप्त ॥ लिपय गीरी प्रसाद पंजित संवत् १७८४ वि० अश्विन मासे कृष्ण पक्षे द्वादश्याम् ॥

विषय—ज्योतिष तथा लक्षण का वर्णन ।

संख्या २७ प. गंगा सहरी, कागड—देसी, पत्र—१, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुच्छेद)—१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, छिपि—नागरी, छिपिकाल—म० १६१६ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गवाहीन बिपारी, ग्राम—बिलरिहा, बाकपर—घानगौर, बिसा—मीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ गंगा सहरी लिख्यते ॥ सागर की गिनी जाँव सहर गिने जाँव तारे । नहिँ जय गिने श्री गंगा जी के तारे ॥ पर शाय गिने जाँव गिने जाँव नर नारी । इस दिशा गिनी जाँव मुष्टि गिनी जाँव सारी ॥ सिध साथ गिन जाँव गिने जाँव अचारी ॥ राजा शमी गिने जाँव अकक मरकरी ॥ गिने जाँव साह साहानी गिने हककरे ॥ नहिँ जाँव गिने श्री गंगा जी के तारे ॥ गिने जाँव नरी नद सिधु गिने जाँव नासे । गिने जाँव खैन रंग ठाक गिने जाँव काके ॥ दरगत छाली जाँव गिनी गिनी जाँव दासे ॥ उचीम राग रागिनी मकल गिन दासे ॥ गिनने गिनने कई हजार सापर हारे ॥ नहिँ जाँव गिने श्री गंगाजी के तारे ॥

अर्थ—इति श्री गंगा सहरो मपूर्ण समाप्तम् ॥ त्रिपलं प० गवाहीन बिपारी ग्राम बिलरिहा मध्ये बैठकर अर्जुन मे इसको पूरा किया यह गंगा सहरी अति उत्तम बनाई गई है ॥ श्री गंगा माई की ॥ श्री सामीरय जी महाराज की ॥ श्री श्री श्री ॥ वेद छत्र २ संवत् १९१४ वि० ॥

विषय—गंगाजी की महिमा का वर्णन ।

संख्या २२७ वी. लावनी (मरहटी ख्याल), रचयिता—काशी गिरि (बनारस)
कागज—देशी, पत्र—१२०, आकार—१ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण
(अनुष्टुप्)—२१६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६
इं०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण, ग्राम—महिगलगांज, डाकघर—महिगलगांज, जिला—साँतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ लावनी (मरहटी ख्याल लिप्यते) ॥ हृदय में हैं
हिय लाज करै काज लाज रमने वाली । नयना देवी नैन में वसैं हंमैं दे दे ताली ॥ सीम
में सीता सती विराज सावित्री सकटा रानी ॥ नस्तक में रहैं आय श्री महाविद्या औ मह-
रानी ॥ भृकुटी में करै वान भैरवी भय मानै सब अभिमानी । ब्रह्म में अपने विराजै विंध्या-
चल और ब्रह्मानी ॥ वसै नायिका में नव दुर्ग नगर कोट लाटै चाली । नयना देवी नयन में
वसैं हंमैं दे दे ताली ॥ १ ॥

अंत—करकट ग्रीवा नयन शीश मुख नीचा करि दुख सहै सुजान । ये लक्षण हैं
लेख के पंडित जन करते है वरदान जो कोई सज्जन सुनै सुनावै सुन समझै मन में रख
ध्यान ॥ परम दृष्टि से कामना तिनकी पुजवै श्री भगवान ॥ पढ़ा सकल हरि भक्त पियारे
राधा कृष्ण करता परनाम । हरि के भरोसे तदा मैं अहर निदा करता विश्राम ॥ ४ ॥
इति श्री लावनी श्री काशी गिरि बनारसी कृत सपूर्ण शुभम सवत १९३६ राम श्री सीताराम
लक्षण की जे बोली ॥

विषय—देवी देवताओं की न्युति, ब्रह्म उपासना, ब्रह्मज्ञान उपदेश ॥ हरि भक्तों के
ज्ञान की दृढ़ता के कारण, श्री कृष्ण चंद्र परब्रह्म की बाल क्रीड़ा आदि का वर्णन ।

संख्या २२८ ए. शीघ्रबोध, रचयिता—काशी नाथ भट्टाचार्य, कागज—देशी,
पत्र—८०, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—
१२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३०,
प्राप्तिस्थान—श्री रामभज, ग्राम—बेनी माधवपुर, डाकघर—दिसवाँ, जिला—साँतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शीघ्र बोध लिप्यते ॥ वार्तिक भाषा में लिप्यते ॥
दो० ॥ विचन कदन वारद वदन सिद्धि सदन गुण धन ॥ करहु कृपा गिरिजा सुभन दीजै
वानी दैन ॥ मैं काशीनाथ शीघ्र बोध को संग्रह करत हँ । सूर्य देव को नमस्कार करिके
तिनकी शोभा करिके जगत शोभायमान है ।

अंत—अतीत जो सौम्य ग्रह अतिचार पाप ग्रह वक्रा होइ तौ जगत में हाहा कार
परं । जुद्ध सै रुड मुड गिरैं इत्यति चार वक्र ग्रह फल मत्र मिति जो चैत्र में दीक्षा लेइ तो
बहुत दुख पावै । वैसाय में रत्न पाप होइ । × × × सूर्य शुक्र बुध एक मास भरि
रामि में रहत हैं अरु चंद्रमा २। दिन रहत है मंगल १॥ मास रहत हैं अरु बृहस्पति वर्ष
पर्यंत रहत है शनिद्वार अडाहें वर्ष रहत है । राहु केतु १॥ वर्ष रहत है । इति ग्रह सुक्तं
वाहु के ८ सुप प्रद है गर्भ के ५ नाश प्रद सुज २ भोग चरण २ नाश ये सुहली निर्मित
दिन नक्षत्र ताई विचारिये । इति काशी नाथ कृत शीघ्र बोध सपूर्ण समाप्त । लिपितं गंगा
गणेश शुक्ल स्वपटनार्य ओयल मद्धे सवत् १८८७ वि० श्रावण शुक्ल ५ ।

विषय—उद्योतिष ॥

संख्या २८८ की शीम शोष वार्तिक, रचयिता—झासीनाथ वृषे कागज—देसी, पत्र—६६, आकार—१ × ४२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुप्युप)—२११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गण्य । कृषि—भागी, कृषिकाल—सं० १९११, प्राप्तिस्वान—सं० समाकृत शुद्ध ग्राम—पूरा गरीब दास, डाकघर—गढ़वारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शीम शोष वार्तिक लिखक मूल गर्भित लिप्यत ॥ काशी नाथ जो है आचार्य ने सूर्य की बमस्कार करि के ॥ कैसे सूर्य जिनकी आमा जो है सोभा ताहि करि जगत जो है संसार प्रद्विधित है ॥ बहुरि कैसे है सूर्य मण्यय कहियै अवि नासी ॥ की ताहि है विनाश काळ ॥ असे सूर्य को प्रणाम करि उद्योतिष शास्त्र के अनेक प्रम्पांतरन की मत से करि शीम शोष श्री गणेशायनमः ॥ मास परत जगद्भासा नत्वा भास्वत् क्रियते काशिनानेन शीम शोषाय संग्रह ॥ १ ॥ रोहिरासुचर रेवत्ये मूळ स्वाति मृगो मया ॥ अनुराधा हस्तश्च विवाहे, मंगल प्रदा ॥ मघ कोसुसंग्रह करत है ॥ १ ॥ रोहिणी उपरा तीनों रवती मूल स्वाती मृग सिर मया ॥ अनुराधा हस्तपी सारह (ग्वारह ?) मङ्गल विवाह की मंगल के दाता है ॥ २ ॥

अंत—इति श्री कासि नाथ भट्टाचार्य कर्ता शीम शोष भाषा टीकायां सनामिकं चतुर्थं प्रकरणं समाप्तम् ॥ सवत् १९११ ॥ माघ शुक्ल ४ रवि वासरे ॥ इरताहर बकम दास के ।

संख्या २८८ की शीम शोष रचयिता—झासीराम, कागज—देसी, पत्र—८८, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुप्युप)—८४७, लिखित, रूप—प्राचीन, गण्य कृषिकाल—सं० १८७० वि०, प्राप्तिस्वान—श्री अन्नमपाकसिंह, ग्राम—गागी मऊ, डाकघर—सिधौली, जिला—सीतापुर ।

आदि—जो वर का ४८११ सूर्य होय ती विवाह न करे और जो करे ती खुल्यु होय । जो वर की राशि ते सूर्य । १।२।५।७।९ होय ती परिहार वाच्य सूर्य की पूजा करे से विवाह शुभ है और जो ३।६।११।१० रवि होय ती विवाह शुभ है ॥ कल्याण का दाता है इति रवि बरल ॥ जो कल्या को वृहस्पति ४।८।१२ होय ती विवाह मये प्राण की घातक है जो कल्या को वृहस्पति ९।१।१३।१० होय ती विवाह में बड़ी पूजा शुभ है जो कल्या को ११।२।७।५।१२ होय ती विवाह मे शुभ होय इति शुभ बरल ॥

अंत—जो वर के नाम में वीक्षा से तो बहुत दुख होय जो वीक्षा में वीक्षा से ती राय, धाम हो । अष्ट मे वीक्षा से ती मरण होय । अज्ञान में वीक्षा से ती आता को गरा करे । आका में वीक्षा सेय ती भेद है । भाई मे वीक्षा सेय तो प्रजा का नाश करे । आदिन में सब को सुप होय । कार्तिक में वीक्षा सेय ती धनहृति होय अगहन में शुभ होय । वीष में ज्ञान न होय । माघ में ज्ञान बूझी होय । फागुन में सुप सीमाय्य हो ॥ इति वीक्षा ग्रहणं ॥ सूर्य शुक्र बुध ये तीन ग्रह एक महीना एक राशि पे चरते हैं अत्रमा

सवा दो दिन मंगल १५ महीना बृहस्पति २ वर्ष शनिश्चर २॥ वर्ष राहु केतु दोनो ग्रह १॥
वर्ष एक राशि में रहते हैं इति श्री काशी नाथ भट्टाचार्य कृतौ शीघ्र बोध भाषायां चतुर्थ
प्रकरण शुभ भूयात् श्री रस्तु शुभ अस्तु निपतं वनवारी लाल दुवे संवत् १८७० वि० चैत्र
मासे राम नौमीयां ॥

विषय—ज्योतिष

संख्या २२८ डी. शीघ्र बोध, रचयिता—काशीनाथ, कागज—देशी, पत्र—३६,
आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८००, उचित,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४६, प्रासिस्थान—श्री प्राग
नारायण, अध्यापक दुर्गापुर, डाकघर—भौली, जिला—उन्नाव ।

आदि—२२८ सी के समान ।

अत—प्राप्त नहीं है ।

संख्या २२६ ए. भरतरी चरित्र, रचयिता—काशीनाथ, कागज—देशी, पत्र—
२४, आकार—६ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८७८ = १८२१ ई०, प्रासिस्थान—
श्री गोविंदलाल, ग्राम—निहालपुर, डाकघर—नारायणदासे खेडा, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ भरतरी चरित्र लिप्यते ॥ दो० ॥ इंदर के नाती
मय गंधर्वसेन के पुत्र भाई विक्रमाजीतु के मैनावती के भेन ॥ जाटिन जनमे हैं राजा
भरतरी वाजे हैं तबला निसान ॥ हरे हरे गोवर मगाय के अंगना वेठी लिपाय । मोतियन
चौक पुराय के कचन कलश धराय ॥ सधरू सहेली बुलाय के चदन चौकी विछाय । ब्रह्मा
वाचत अपने वेद को मुझा हरफ़ किताव ॥ नाम तो निकला है भरतरी करम लिखा है
वाला जोग ॥ जारौ वारौ थारे वेद को पुत्रिहि दोप लगाय कंचन देउंगी दछिना लौटि धरौ
इसका नाम ॥ उलटि पलटि ब्रह्मा देवता क्या रची है करतार । लिखने वाला सोई लिख
गया को हे मेटन हार ॥ कागड होय रानी वांचिये करम न चाचा जाय । ब्रह्मा जिकर
क्या कर दिया वालक बुद्धि सिचाय ॥ एक वरस के राजा भरतरी दूजी तीजी जुलाग ।
चार वरस के राजा भरतरी माता तजे हैं परान । पाच वरस के भरतरी कपड़ा पहिरे रगाय
छठे वरस के भरतरी वेद पढ़न को जांय । सात वरस के भरतरी पढ़ उतरे चट साल । नवें
वरस के भरतरी व्याही अनूप देसी नारि । दसवें वरस के भरतरी व्याही पिंगल नारि ॥
ग्यारह वरस के भरतरी व्याही चपादेसी नारि । बारह वरस के भरतरी व्याही श्यामदेसी
नारि । तेरह वरस के भरतरी वांधे तीर कमान ॥

अंत—घोली रानी ते दिन श्यामदे सुनौ राजा महाराज । ओछे गुरु के तुम वालका
ओछा लाये भदार । सोलह सौ थार परोसती सप्पर भर गया नाहिं । कायल भई रानी
श्यामदे राजा को देती अखीस ॥ पूरे भिक्षा डालता लजा वीर मत अतीत । लेकर भिक्षा
राजा रमि चलेइ आसन पड़ी है भभूत ॥ धूरि मंदिर धूरि वाग है बोलन लागे है कारे
काग । धन्य घड़ी जामे जन्म लियो धन्य पुरषु थारे भाग ॥ मेरी मेरी कहि रमि गये रानी
खड़ी रोवै द्वार सांची वनी काया कौठरी झूठा जग ससार ॥ नदी किनारे रूपड़ा जव तव

होषे बिनास । मेरी मेरी कृष्टि के ते रमि गये अर्जुन खोधा से भीम ॥ पढ़ी रही झारपंड में गढ़ कनेज के सा नाम ॥ सुग सुग खीबे मेरी नागरी परजा रई गुडजार । सुबस बरी मेरी नागरी भीपर खगी बाजार । बारे से वृन्दी अज्जड़ में मिरु गये गोरपनाथ । बका बनाडे बाबा जपना सेवा करैगे वनपय ॥ भूमी धारी बाबा हम करै सग फिरै बारे साव ॥ बोडे बाबा गोरक नाम जी सुन बधा मेरी बात ॥ तुमको बेका बका ना करे तुम हो रामबुमार ॥ पान फूल के तुम भोगिया ना सधि तुमसे भोग । पान फूल बाबा सब तजे सुन गुरु गोरकनाथ । छोड़ा ठैचे कर धैठना छोड़ा माह्यों का साव ॥ जोग बुरा बीहर मका जो अठ पहर संग्राम । आठ पहर के बीच में त्रिमको राखे भगवान ॥ सुटिया अठ बेका क्रिया क्रमों में हीमी है फूक । पीठ छेक वीमी गोरप नाम जी जोग अमर हो जाय ॥ कृष्टि में अमर राजा भरतरी जी ॥ इति श्री कृष्णनाथ विरचिते भरतरी राजा का चरित्र संपूर्ण समाप्तः सं० १८०२ वि० श्री राम राम राम राम राम राम राम श्री गणेशाननमः ॥

विषय—भरतरी को जन्म व्याह अंत जाग का वर्णन ॥

संख्या २२६ वीं भरतरी राजा का चरित्र, रचयिता—असीनाथ, कागज—देसी, पत्र—२४, आकार—८ X ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण, रूप—शीर्ष, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाळ—सं० १८३२ = १८७३ ई०, प्रातिस्थान—श्री रघनसिंह, ग्राम—भरवा, डाकघर—विसवां, जिळा—सीतापुर ।

आदि-अंत—२२६ पृ. के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री कृष्णनाथ विरचिते भरतरी चरित्र संपूर्णम् संबद् १८३२ वि० लिखत गौरी दयाल खत्री ॥

संख्या २२६ वीं भरतरी चरित्र, रचयिता—असीनाथ, कागज—देसी, पत्र—२२, आकार—६ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाअंश—सं० १८०५ = १७४८ ई०, लिपिकाळ—सं० १८३२ = १८७५ ई०, प्रातिस्थान—श्री सिबकुमार, ग्राम—गोपाकपुर, डाकघर—कपीमपुर जिळा—घरीरी ।

आदि-अंत—२२६ पृ. के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री कृष्णनाथ कृत भरतरी राजा का चरित्र संपूर्णम् प्र मुनी ६ संबद् १८०५ वि० जिळा एबनारायण बुबे सधिमनपुर निवासी संबद् १९३२ वि० । नाम शुद्ध पंचमी ॥

संख्या २३० पृ. कोपियारा, रचयिता—केषवप्रसाद (आगरा), कागज—देसी, पत्र—३७८, आकार—८ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७८० पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य लिपि—नागरी रचनाअंश—सं० १९३० = १८७३ ई०, लिपिकाळ—१९३९ = १८८२ ई०, प्रातिस्थान—रायकाळ ग्राम—सुभ्यपुर, डाकघर—धीरहरा, जिळा—सीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ज्योतिष सार लिप्यते ॥ अथ शक प्रकरण

प्रारंभः ॥ शालि वाहन शक में जिस सवत् सर का नाम जानना हो उसकी यह रीति है कि शक की संख्या लिखकर उसमें १२ मिलावे और ६० का भाग देवे जो शेष बचे उसे संवत्सर का नाम जानिये ॥ सवत् परिज्ञान । जो शालि वाहन शक में १३५ मिलावे तो वही विक्रम का सवत् हो जाय जो रेवा नदी के उत्तर तट में संवत् नाम से प्रसिद्धि है ।

सवत् सरों के नाम प्रभ्रयः वृषः मन्मथः सौम्यः रुधिराद्रारी विभवः विपूभानुः दुर्सुप माधारणः रक्ताक्षी शुक्रः सुभानु हेमलंबः विरोधक क्रोधन. प्रमोद. तारण विलंबो परिधावी क्षयः प्रजापति पार्थिवः विकारी प्रसादी अगिरा व्ययः शार्वरी आनंदः श्री सुप सर्वजीत ह्रुवः राक्षसः भावः सर्वधारी शुभ कृत नलः युव विरोधी शोभन पिगलः धाता विकृति क्रोवी कालयुक्तः इंद्रा परः विस्वावसु सिद्धार्थी बहुधान्य नंदन पराभवः रोद्रः प्रसार्थी विजयः प्लवंग. दुर्गसिः विक्रम जयः कालकः दुंदुभिः

अंत—अंतरंग वहिरंग नक्षत्र ॥ सूर्य नक्षत्र चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इस प्रकार वर्तमान नक्षत्र तक चारचार गिने तो विक्रम से अत रंग वहिरंग संज्ञक होते हैं उनमें लाना और पठवाना आदि कर्म करे ॥ सूतिका स्नान ॥ हस्त जेष्टा पूर्वा फाल्गुनी स्वाति धनिष्ठा खेती अनुराधा मृग अश्विनी और तीनों उत्तरा रोहिणी इन नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री का स्नान शुभ कहा है परन्तु रिक्ता तिथि में न करे ये सुनीद्रों का कथन है ॥ इति श्री शुक्रदेव विरचिते ज्योतिष सारे समाप्त संवत् १६३९ मार्ग मासे सिते दले विधि तिर्यो भानुचारे शुभे ॥

विषय—ज्योतिष ।

संख्या २३० घी. ज्योतिष सार, रचयिता—केशवप्रसाद (आगरा), कागज—नवीन, पत्र—१८४, आकार—८ X ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७६०, पूर्ण, रूप—जीर्ण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३०, लिपिकाल—सं० १६३०, प्रासिस्थान—श्री मन्नीलाल तिवारी गंगापुर, ग्राम—मिथिख, डाकघर—मिथिख, जिला—सीतापुर ।

आदि-अंत—२३० पृ के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है.—इति श्री केशव विरचिते ज्योतिष सार भाषा ग्रंथ समाप्त. संवत् १९३० लिपतं क्षेमकरण गौड सवत् १६३६ ॥

संख्या २३० स्त्री. मयूरचित्रम, रचयिता—केशवदेव (आगरा), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—६ X २ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५९४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२६ = १८७२ ई०, लिपिकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, प्रासिस्थान—श्री रामनाथ पुजारी, ग्राम—विसर्वा, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मयूर चित्रम लिप्यते ॥ केतुका उदय अस्त गणित से प्रकाशित होता है इस ग्रंथ में केतु का फल कहा जाता है और केतु के जो भेद मुनियों ने जो कहे हैं वे भी कहे जाते हैं ॥ उत्पात तीन प्रकार के हैं आंतरिक्ष दिव्य और मौम इन तीनों के भेद एक सौ एक हैं ॥ और दूसरे आचार्यों ने महस्र भेद कहे हैं ॥ नारद मुनि

कहते हैं कि एक भी अनक प्रकार का होता है उन्हींके जो फल मुनियों ने कहे हैं तिनको कहते हैं ॥ जिसने दिन तक कष्ट देये उतने महीने तक केतु का फल जानना चाहिये अन्य मुनि कहते हैं महीने महान फल जानना ॥ अर्थात् जिस महाने में उदय होता होय तो उसी में उसका फल जानिये ॥

जत—पांच ग्रह जो एक राशि पर होंय तो पशुओं का नाश होय और छः ग्रह जो होंय तो राजाओं का नाश होय । और सात ग्रह जो होंय तो सब देशों का नाश होय । आठ ग्रह का कूट जोग होता है ॥ रिशु विपर्य नहीं हाय पवन कठोर नहीं होय और सब ब्रह्मण शुभ होंय तो सहा शुभ होय ॥ इति श्री मयूर विजय माया सोक्त्या अध्याय संपूर्ण समाप्त ॥ लिखत रामनाथ असाह शुक्र १३ संवत् १९२६ वि० शुभम् ॥

विषय—ज्योतिष, बारहों महीनों के शुभ अशुभ फल का वर्णन

संख्या २३० श्री मयूर विजय, रचयिता—कदाचप्रसाद (आगरा), कागज—विद्यावती, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनु पृष्ठ)—०२०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—जागरी, रचनाकाल—सं० १९२६ = १८६९, लिपिकाल—सं० १६३१ = १८७४ ई० प्राप्तिस्थान—श्री परमेश्वरप्रसाद तिवारी, ग्राम—भंडा, बाकधर—कडकन, जिला—कानपुर ।

आदि-अंत—२३० सी के समाप्त ।

पुष्पिका हम प्रकार है—इति मयूर चित्रे पोहपोध्याय समाप्तोर्ष प्रया आचन शुक्रा अष्टमी रबी संवत् १९२६ वि० लिपत सिवकाल्य माई स्वपटनार्क संवत् १९२६ आचन शुक्रा ५ पंचमी भाग पंचमी श्री संकर सहा महाय करे ॥

संख्या २३० ई० पध्यापध्या, रचयिता—केसाव प्रसाद वृजे (आगरा), कागज—दसी, पत्र—११६, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनु पृष्ठ)—११६०, पूर्ण रूप—साधारण पद्य और गद्य । लिपि—जागरी रचनाकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—सं० १६३२ = १८७५ ई० प्राप्तिस्थान—श्री कुंजलाल ग्राम—सफीपुर बाकधर—सफीपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ पध्या पध्या लिप्यते ॥ श्री गणपति गिरजा मुबन सोपर होठ कपाल टीका पध्या पध्या श्री माया रबी विराक ॥ विदित आगरा नगर है श्री कालिंदी तीर । तामे जो माला रबी हंगमिह पति गंभीर ॥ जामे बारक पदत है दस दस ते आन । अंशुत्री अरु परसी अरबी संरकृत जान ॥ तामे पंडित प्रथम है संरकृत विद्या माई केसाव पूर्ण प्रसाद पद नाम प्यात जग माई ॥ अत्र पन्दि नब अंशु मित विजय संवत जान । अत्र नाम में प्रथ पद पध्या पध्या प्रधान ॥ माया में पाते द्विपो जाने जग उपचार । होय गरी मुप मो कर्ते पध्या पध्या विचार ॥

अंत—अथ हेमंत रिनु में पध्या ॥ गरम जल अत्र धी का पीना उपनाद । रूप । धरी बन्धु । आग का संजन । इध्या पूर्ण अंशुवन श्री संग दे सब मुनियों ने दिम रिनु में पध्या कहे टे । अपध्या ॥ पुरा भोजन भोजन न करण । दिन में मोवा । पुराना अन्न । ननु पात्रा अन्न । हीनमना पात्री । मान । रानिक जप मे महाया । ये सब मुनियों ने

हेमन रितु में कुपय्य कहे हैं ॥ श्लोक । त्रिदोपतः पङ्क्तुकं वयावत् पयः कृतं केशव शर्मणे
 टम् । गथांतरा द्वैद्य मुटे द्वि राम नन्दाऽञ्जुकेऽन्दे मधु पूर्णिमायाम् । टीका । तीनों त्रोंपों से
 छह रितुओं तक अन्य ग्रंथों से संग्रह करके केशव शर्मा ने दैत्यों के आनन्द निमित्त श्लोको
 में मंत्र १९३० में चैत्र की पूर्णिमा को बनाया ॥ इति श्री महिषेदी पाहू पंडित परम सुख
 तनय केशव प्रसाद विरचिते पथ्या पथ्य समाप्त ॥ मंत्र १९३० वैशाख पूर्णिमा ॥

विषय—प्रथम ईश विनय, ग्रंथ कर्ता का निवास स्थान, सवत आठ पश्चात् पथ्या
 पथ्य का वर्णन है ॥

संख्या २३० पफ. पथ्या पथ्य विचार, रचयिता—केशव प्रसाद दूत्रे (आगरा),
 कागज—देशी, पत्र—१४०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—१०५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—
 स० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्रासिध्यान्—श्री राम-
 दुलारे लाल, ग्राम—भटपुरवा, ढाकवर—वधर, जिला—उन्नाव ।

आदि—२३० ई० के समान ।

अंत—तीनों त्रोंपों से छह रितुओं तक अन्य ग्रंथों से संग्रह करके केशव शर्मा ने
 दैत्यों के आनन्द निमित्त सवत १९३२ में चैत्र की पूर्णिमा को बनाया । इति श्री पथ्या पथ्य
 विचार सपूर्ण समाप्त ॥ वैशाख मंत्र १९३२ लिखत गंगा विष्णु त्रिपाठी आगरा निवासी
 बेलन गंज ॥

संख्या २३१. वैद्यक (मुक्ति विलास), रचयिता—केशव, कागज—देशी, पत्र—
 ५२, आकार ८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७२, पूर्ण,
 रूप—जीर्ण, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, प्रासिध्यान्—श्री कृपा नारायण शुकु,
 ग्राम—मुशीगज कटरा, ढाकवर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री × × गणेशाय नम ॥ अथ सूर्या × × इ लिख्यते ॥ अथ वृद्धि
 आगम × × करम ॥ राज पदवी दुर्तीया करम ॥ प्रारम्भ्यते सुभकरमें यथा ॥ = ॥ छट ॥
 जहं साधन नाधर्हि जग माहि निश्चे सिधि कहावै ॥ काया अमर अमर पुर वासा सिद्धि विरट
 सो पावै ॥ जहा सिद्धि तथा वृद्धि वयेरा, ऋद्धि सिद्धि द्वै भाई ॥ एक जोति दोर्नी घर वरते
 चंद्र सूर्यनाई ॥ रवि की ज्योति वसै शशि अदर एक जोति दुह माही ॥ एक प्राणदौ गाठ
 दिखावै यथा पिंड परछाह ॥ केशव सिद्धि जानिय कैमै द्वै वाते जिह माह ॥ न्यारा करै
 शीश काया सो भेद बतावै नाहि ॥ ऐसे सिद्धि विना जग जानै चरन कोन विधि परमे ॥
 जिन जाना तिन आप पिछाना दरस अपूरव दरसै ॥ देऊ बताई सिद्धि जगमाहीं ॥

अंत—चूर्ण पुष्टि की ॥ पीपर छोटी इलायची ढाल चीनी छर कुलीजन पीपर बढ़ी
 जायफर जावित्री नागकेशरी तमाल पत्र साँफ अकर करहा केसरि लौंग, ए सव पांच पाच
 मासे लेय पंतीस तोले सहितु, सहतु को गर्म करे उफान आवे सव औषध पीस छानि सहित
 मा डार सिताव दतारि मिलावै द्वै मासा खाइ ॥ व्योरा वच्यः तेल होला को इलाज ॥
 घतूरा आक आन अजीर कनेर मीठो पैसा भरि पीपरि की छाली अडाई सेर तेलु मीठो अडाई

सेर सब भीषधि तैल में मिलाई पाताल जह सा तैल कई भांघ रोत्र सात मद्यम करे ॥ १ ॥

विषय—बहिले प्रार्थना । गुरु मदिमा, प्रथ रचने का हेतु, तामेइवर मारन विधि, जस्त मारन विधि पारा मारन विधि, हरतार विधि बंग मारन विधि, धानु शोधन पौर की विधि, साना—मारने की विधि, हेम विधि, रूपे की विधि, झुषा बंठ पारा, मीमलिह रुज करने की विधि, हीरा मरम करने की विधि, रान मारन विधि, कस्याल सार करने की विधि ॥

संख्या २३२, गणेश मंत्र कथा, रचयिता—केशवदास कापारय, कागज—दही, पत्र—२१, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्) ३४४ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, विधि—मागरी, लिपि—सं० १८४० = १७८३ ई०, प्राप्ति स्थान—श्री तिब्बतपुरे, ग्राम—बरनापुर, काहर—बिमर्षी, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ गणेश मंत्र कथा लिप्यते । दा० । सुमिरन करि गनेस को गुद चरगन चितु स्पष्ट । संकट भीषि कथा कई सुनी सखे चितु जाइ ॥ सुधिष्ठिर उवाच ॥ मृग प्रत्यक्ष श्री कृष्ण को अथम सुनत पक्ष रीति । के जै रापर सधु है ठिनहि कथन विधि कीति ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ कृष्ण कहेउ मृग राय मुनु करी धम यह चित । हातुन की शप होयगी करि गणेश को मंत्र ॥ सधुम से संकट कहे रिजि सिजि धन धाम उमा पुत्र को सेइये दुदरे पूज काम ॥

अंत—बहिले कथा पुरानन सुनी । ता पाडे चीपाई गुनी ॥ मन ई अथम सुन जो जानी इहि विधि प्रगटी श्री विधि बाबी जो यह कथा सुनी सुनाई साइब की चरणोदक पाषी ॥ गजपति सेवन सब करे और हाम उपदेश । ण्हि विधि सेवन करत है वडे देव गजेश ॥ सुप संपति के लागि ई काडे सङ्कट कलेस । केसाब नू सेवत रहे निठ चरनन गजेश ॥ इति श्री स्कंध पुराने गणेश अनुषी मंत्र समाप्त ॥ ईत नाम निठ पक्षे पठमचाम मीम बासर संवत् १८४० वि० लिप्ये नाम दुप ॥

विषय—गणेश अनुषी मंत्र की कथा ।

संख्या २३३ ए. पारदमासा रचयिता—केशवदाम, कागज—दही पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य, विधि—मागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राजाराम ग्राम—बराहा जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पारद नाम लिप्यते ॥ अथ ईद चरन ॥ उष्य ॥ पृथी सतिहा सक्ति तदन तन अये तदपर कृते सरिता सुमग सरिम सब पृके सरवर । कृती कामिनी नाम रूप करि अंतनि दुर्गादि । सुक सारो कुन केसि कृक कोकिल कुल कृजहि कदि केमव अमी कृष्ण महि कृष्णि मृग न लाइ पेदि । गिय आप चरन की को कदे चित म रीन चत्वारये ॥ १ ॥

अंत—अथ कागुन बर्जन उष्यी ॥ सोक ल्यज तजि राज रंज विरमंज विराजत ॥ जोइ आयत माइ कदन करत पुनि ईमन न लजत । धर धर सुवती जननि आर गदि गात्रन आरहि । बमन एीनि मुप मोजि आत्रि सावन तद तारहि । पद धाम सुधाम अग्राम उदि

सुव मडल स्व मडिये । कहि केमवदाय विलास निधि सुफागुन फागुन छाडिये ॥ इति वारहमास केर्नादास कृत सपूर्ण समाप्त ।

विषय—एक स्त्री अपने पति को वारह महीनों का सुख दुरा वर्णन कर परदेम जाने से रोकती है ॥

संख्या २३३ वी. कविप्रिया, रचयिता—केशवदास (ओरछा, बुंदेलखंड), कागज—देशी, पत्र—११६, आकार—१४ $\frac{३}{४}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६५८ = १६०१, लिपिकाल—स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—राजपुस्तकालय प्रतापगढ़ राज्य, ढाकघर—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ कवि प्रिया । दोहा । गजमुख सन मुख होत ही विद्युत विमुख है जात, ज्यों पग परत पराग मग पाय पहार विलात ॥ १ ॥ वानी नूके वरन जुग सुवरन कन परिमान सुकवि सुमुप कुरु पेत परि होत सुमेरु समान ॥ २ ॥

कवित्त ॥ सत्त सत्त गुणको की सत्य ही की सत्य सुभ सिद्धि की प्रसिद्धि की सुबुद्धि वृद्धि मानिए । ज्ञान ही की गरिमा की महिमा विवेक ही की अँसे ही दरस ही को दरस उर आनिए ॥ पुन्य को प्रकास वेद विद्या को विलास कीर्धा जग को नेयाम केर्नादास जग जानिऐ । मदन कदन सुत वदन रदन कीर्धा विद्युत विनामन की विधि पहिचानिऐ ॥ ३ ॥

अत—अर्थ सर्वतो भद्र । काम अरे तन लाज धरे कव मान किए गति गान गहे रूप । वाम नरे गन साज करे अव कानि किए प्रति प्राण दहे रूप । धाम धरे धन राज हरे तव वानि विद्यु मति टान लहे सुप । राम ररे मन काम सरे सब हानि हिए अव आनि कहे मुप ॥ दोहा । यहि विधि केशव जानिये एहु चित्र कवित्त अपार । वरनन पथ वताइ में दीन्हे बुधि अनुसार । सुवपर जठित पदारथ भूपन भूपित मान कवि प्रिया ज्यों कवि प्रिदा कवि सजि वनि जान, पल पल प्रति अलोकियो । गुनिवो सुनिवो पित कवि प्रिया ज्यो राक्षियो कवि प्रिया को मित्त अनिल अनल जल मलिन ते विकल पलन ते वित्त । कवि प्रिया को रक्षियो कवि प्रिया के मित्त । केशव सोरहु भाव सुभ सुवरन मय सुकुमार कवि प्रिया को जानि एहु मोरह ए श्रंगार ॥ इति श्री विविध भूषण भूपिताया कवि प्रिया या चित्रा लका वर्णन । नाम पोटशः प्रकाशः १६ ॥ इति श्री कवि प्रिया केशवदास विरचिताया समाप्त शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु ॥ सवत १९१० सन १२६२ दशपत दुरगाप्रसाद कायस्थ हेतवे बाबू गुलाब सिंह जी वा पौप मामे कृष्ण पक्षे पंचम्या शनिवासरे श्री रामायनम श्री हनुमतायनम. श्री रामानुजायनमः श्री सीताय नम श्री राधा कृष्णायनमः ॥

विषय—नायिका भेद और अलंकार वर्णन ।

संख्या २३३ सी. कविप्रिया, रचयिता—केशवदास (ओरछा), कागज—देशी, पत्र—१०४, आकार—८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६५८ = १६०१, लिपिकाल—स० १७३७ = १६८० ई०, प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय, ढाकघर—बिसवाँ जिला—सीतापुर ।

आदि मत्त २३३ बी के समान ।

संख्या २३३ डी कविप्रिया, रचयिता—केशवदास (भोरछा), अग्रज—साधारण, पत्र—११०, आकार—८ $\frac{१}{२}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपुष्टु)—२१०६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, छिपि—मागरी, रचनाकाळ—सं० १६५८ = १६०१ ई० छिपिकाळ—सं० १९०६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री श्रीहरिनाथ पांडे, अष्टापक संस्कृत पाठशाळा, ग्राम—चबेहरा, डाकघर—भोवडीरिया, जिल्हा—महाराष्ट्र ।

आदि मत्त—२३३ बी के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—अथ कवि प्रिया संपूर्ण ॥ संवत् १९०६ मिति भादों सुदी २ पोथी छिपी किमुन बंदू जपने पढ़ने अर्थ ॥

संख्या २३३ ई रामचंद्रिका, रचयिता—केशवदास (भोरछा), अग्रज—वैसी, पत्र—८८ आकार—१० × ६ $\frac{३}{४}$ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुष्टु)—८६०, संविद्ध, रूप—प्राचीन पद्य, छिपि—मागरी, प्राप्तिस्थान—सं० नुर्गाप्रसाद ठिबारी, ग्राम—पाडघा (बरीपाक) जिल्हा—उत्तराखण्ड ।

आदि—... अस्ति चादिका सुमंग लक्ष्मी कर्षं अग्रे । जान तानि राम रूपे नानि जानि छांदि जाइ ॥ दोहा—मुखा बिरोधनकी इती वीरव विद्या नाम । सुर नावक बह संवरी परम पापिनी नाम ॥ जपनी कवि माता नाराइन सी इती चक्र चिंता मनि दाता नाराइन सोइती । सकल द्विज रूपन संवत र्यो अथ त्रिमुवन चादिका छारकु स्यो मुत्त ॥ १० द्विज दोषी न बिचारिये कहा पुरिय कह नारि । राम विराम न कीजिये वाच चादिका नारि ॥ सोरछा—करम करत अति भोर विप्रव की बसहु दिसा । मय सहस गज बीर नारी जानि न छोडिये ॥

अंत—इच्छित कर्कक अंक केतु अस्तु सेतु गत बोग बोग की जयोग रोग ही की मलसो । पूर्यी ही की पूरन पी प्रति दिन कूनी कूनी छिन छिन छीन छपि छीकरकी अलसो ॥ अंतसे बरवत राम चन्द्रकी सुहाई सैई मति मंद कवि के सब कृतकसों । सुंदर सुवास अति अमेठ अमल अति सीताजी को मुख सति केवल कमलसो ॥ ४१ अन्वोरच—एक कई अमल कमल मुख सीता रूपे एक कई चन्द्र मय अर्जुन की बंदरी । होइ बीटी कमल ही रीन मांस सकुषी री बंद जोती वासर हु हो ली दुति मंदरी वासर ही कमल रजवि ... इति ।

विषय—रामायण का वर्णन पृ० १ से ८८ तक ।

संख्या २३३ पक्र. रसिकप्रिया, रचयिता—केशवदास (भोरछा), अग्रज—वैसी पत्र—७९, आकार—८ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२ परिमाण (अनुपुष्टु)—१८९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य छिपि—मागरी, रचनाकाळ—सं० १६५८ = १६०१ ई०, छिपिकाळ—सं० १७३७, प्राप्तिस्थान—आनंदमन पुस्तकालय, डाकघर—विसर्वा जिल्हा—सीतापुर ।

आदि—सिद्धि की गणेशाय नमः ॥ अथ मंगला चरणम् । एक रत्न राजबदन सदन बुधि मदन कदन मुत्त । गवरि बंदू अर्जुन बंदू अगर्ब बंदू मुत्त ॥ सुप दायक दाइक मुकृति

गन नायक नाइक । बल धाइक धाइक दलिद्र सत्र लाइक लाइक ॥ गुर गुन अनत भगवत भव भगतिवत भव भय हरन । जय केमवद्राम निचाम निधि लचोदर असरन मरन ॥ १ ॥ कौतुक राधा रमन के सुनहु रसिक दे चित्त । नवरस वरन नवर वरनो कविच ॥

अंत—यहि विधि कैसे वाग रम अनरम कहे विचारि । वरनत भूल परी जहां कवि कुल लेहु विचारि ॥ जैसे रसिक प्रिया विना देपिये दिन दिन डीन । त्योहीं भाया कवि सवै रसिक प्रिया करि हीन । वाढ़े रति मति अति पदे जानै मय रम रीति । स्वारथु परमारथु लहै रसिक प्रिया की प्रीति ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार दृष्टजीत विरचितां यां रसिक प्रियाया रम अनरस वरनन नाम पौदसो प्रभावाः सवत १७३७ चैत्र स्वामि पक्षे द्वादसीय ॥ बुधे दिते लिपतं शिवदामेन बलि भद्रान्मज सुधी ॥

विषय—नायक नायिका हावभाव रम अनरम शृंगार आदि का वर्णन ।

संख्या २३३ जी. रसिकप्रिया टीका, रचयिता—केशवदाम, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—१० X ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९३, खण्डित, रूप—साधारण, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४८ = १५९१, प्रासिस्थान—श्री उमाशंकर दूबे, साहित्यान्वेषक ।

संख्या २३३ पद्य. विज्ञान गीता, रचयिता—केशवदास (ओरछा), कागज—देशी, पत्र—८८, आकार—८ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६७२, खण्डित, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६७ = १६१० ई०, लिपिकाल—सं० १७०५ = १६४८ ई०, प्रासिस्थान—श्री रामप्रसाद मिश्र, ग्राम—जग-जीवनपुर, ढाकघर—ओयल, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री परमात्मने नम ॥ छप्पे ॥ ज्योति अनादि अनंत अमित अद्भुत अरूप गुणि परमानन्द पुहभि प्रसिद्धि पूरन प्रकाश पुनि ॥ निर्गुन नित्य निरीह निपट निर्वाण निरंजन ॥ राम सर्वग सर्वग्य सर्व चित्त चिंतत सिद्धिन ॥ वरनो न जाइ देपो सुनो नेति नेति भापत निगम । ताको प्रनाम केशो करत अनु दिन करि सजम नियम ॥ संग सोहति है कमला चिमला अमला मति हेतु तिहू पुर को । भव भूप दुरंत अनत हतैं दुप मोह मनो जम हाजुर को ॥ कहि केशव केहू वनै न निवारत जारत जोर नहीं गुर को ॥ अति प्रेम ते नित्य प्रनाम करौं प्रमेश्वर को हर को गुर को ॥ केशव तुगारन्य में नदी वेतवे तीर । जहांगीर पुर बहु वस्यो पडित मडित मीर ॥ सवैया ॥ ओइछे तीर तरंगिन वेतवे ताहि तरे रिपु केशव को है । अर्जुन बाहु प्रवाहु प्रबोधि तरेव ज्यों राजन को रजमो है ॥ सूर सुता सुभ सगम तुंग तरंग तरंगित गंग सी सो है ॥ नाग सरूपनी । तहां प्रवास सो निवास मिश्र कृष्णदत्त को अरे मेव पडिता प्रणी सुदासु विष्णु भक्ति को । सो काशि नाथ तस्य पुत्र विज्ञ कृष्णनाथ सौं ॥ सनाढ्य कुम वार वंश मूं सुदेव व्यास को ॥ तिनके सुत केशव राइ भापा कवि मतिमंद । करी ज्ञान गीता प्रगट श्री परमानंद कंद ॥ मूढ़ लहै ल्यों गूढ़ मति अमित अनंत अगाध । भापा करियाते कही छमियो बुध अपराव ॥

अंत—सवैया ॥ चित्तु सुताल के अग्र वसै बहु कंटक कष्ट विलास विलामे । कारज कोमल पल्लव केशवदास सतोप सुवास निवासै ॥ अस सग की तीसरी भूमि मिलै अलि

अद्भुत मांति मु संसृति गर्भ ॥ पद्य विवेक दिव सरसी मह निव विचार प्रकाश प्रकरी ॥
 रोहा ॥ प्रथम भूमिका अंकुरे खूबी होती प्रकाश । फली तीसरी भूमिका फल अद्भुत
 कवितास ॥ भाषण है उद्योत उर ईतु नसे अकुलाह । लोक विघ्नेके स्वामनु भूमि
 यनुर्वा पाह ॥ भित्तिका ज्ञापत सा र्थी र्थी स्वम समान । ज्ञानि सुपुत्रक पांचई भूमि
 विभाग प्रमाण ॥ हुरि जाति है आप ते प्रथि सबै अनपास ॥ सुपद् सप्तमी भूमिका विश्वक
 चित्त विकास ॥ चित्र दीप र्थो ज्योतिषनु पुरम परम प्रकाश ॥ अतर बाहिर हीन है पुरम
 बाहिर जत सुपद् सप्तमी भूमिका सदा होती अति सत ॥ अंत सन्धो बहि शून्यो शून्य
 कुमह बाबरे । अतः पूर्णावधि पूर्ण पूर्ण कुंमह बारावि ॥ हो० ॥ पाह सप्तमी भूमिका भक्ति
 होती सबि देह । देव रूप स्वर्ण्य बग रहत विपिन अरु गेह ॥ हमको देवी करि कृपा करी
 देव के नाम । त्रिबको करि उच्चार पुनि पल पल करत प्रमाण ॥ (हमके भागे के
 पृष्ठ गयी हैं) ।

विषय—विज्ञान गीता का माया पद्य में वर्णन ॥

सूच्यया २३३ अर्ध विज्ञानगीता, रचयिता—केसवदास (ब्योरछ), कागज—देसी,
 पत्र—१८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेद)—
 १८२०, पूर्ण, रूप—माचीन, पद्य, कवि—नागरी, रचनाश्रवण—सं० १९९० = १९१० ई०,
 छिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४ ई० प्राप्तिस्थान—श्री संकट प्रसाद अचरणी, ग्राम—
 कोटरा, बाकधर—कोटरा जिला—सीतापुर ।

आदि—२३३ पद्य के समान ।

अंत—विद्वान्मह मन्नाया विज्ञान गीतायां परिहार सूत्राज्य अर्धकर राम नाम
 समाप्त सवत १९०१ कुबार सुदी महस्वति १३ ॥

सूच्यया २३४ ए बाणमासा, रचयिता—श्रीरा शाह, कागज—देसी, पत्र—१९,
 आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुच्छेद)—१५०, पूर्ण,
 रूप—माधारण, पद्य, कवि—नागरी, छिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्ति
 स्थान—श्री रामनरैसर्मिह, ग्राम—वाराणसि का निवादा, बाकधर—भक्तिपा कुठुर्ग, जिला—
 खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्रीरा शाह का बारह मासा सिप्यते हो० । आसाइ में
 चित्रती करी श्रीरा शाह भाषीन । तुम विन प्याकुल मिन है अल विन जैसे मीन ॥ आसाइ में
 सोई परी सब स्वाब देखी कामिनी । अबर मे विजयकी शक्ति हुए देत दोनों कामिनी ॥ हर अल
 मत्त उठ बोक कोपल पी बिना मीन धुरै । कसकी धय चहुं ओर छाई । पठन पुरवाई ॥ अति
 फली बन मोर बाले सुख गुक सुन के अचरु दिपरा करे को सार उभे इच्छ की उभकी बकायें
 सिर पढ़ें । तेरी सुहाई स पिया जब मान मरे गर गये ॥

अंत—बड कहे तुमे हीयगा हरशान जगके मास । चढ़ रहो मुख्य बिन समत का
 होय उशम ॥ जब यह मुझको जैठ आपा वीरान को भी हू त्रिपो लसब वीदार की उभकी
 की आसा पुत्रियो देग कर पा के चरन को काज भय न्यो जीव के । मीन बरप हो गये

वाले जो टिव लेगी वक्रे दुम्य द्रद मेरा मिट गया मिलते ही उस टिलदार के दौलत मुझे अमी मिली सब मिल गई घर वार के । खैरा कहै सब साह के हम कदम की खाक हू । गुन तो मेरे मे हैं नहीं और मेरे लाख हैं ॥ दो० ॥ जो समझें टिल पाक कर पाक जात हो जाय । आगुन तुम में जो पिया रहाँ सग लपटाय ॥ इति वारामामह खैरा साह समाप्त शुभं सवत १९२७ वि० ।

विषय—विरहिनी का वारह मामों का वर्णन ।

संख्या २३४ वी. वारहमासा, रचयिता—खैरा साह, कागज—साधारण, पत्र—८, आकार—१० × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—श्री शिवसहाय खत्री, ग्राम—नवावगंज, डाकघर—परियावा, जिला—प्रतापगढ़ ।

संख्या २३५. पक्षी चैतावनी, रचयिता—खेमकरण द्विज, कागज—साधारण, पत्र—४, आकार—६ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—श्री यदुनाथ मिह, ग्राम—महेरी, डाकघर—कटरा मेदनीगज, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—वाग पचवा १६

नीलकण्ठ	सरहस	मामा	चिलहोरि
कपोत	भैना	पनिहरा	पेढुक
चोचा	तीतरा	जोरा	कोइल
हंस	खंजन	हारिल	खेमकरनी

दोहा । आणु मास अमाद सपि । स्याम गणु परदेम । पिअ पिअ रतत पपीहरा । को लै आव सदेस ॥ १ ॥ सावन आणु हे सपी, स्याम घटा चहुँवोर । दादुर सन्द सुनावही, नहि आणु पिअ मोर ॥ २ ॥ भादौं रइनि भयावनी, नहि भावै मुहि सेज । पिअरोइआ पिअ विनु भई, विहरत नाहि करेज ॥ ३ ॥

अत—कमल कली सू कसुकी । चंपादल सी गात । खंजन ऐसी नयन जुग । पिय विनु निकसा जात ॥ २७ ॥ पिअ मोहि सेज बोलावही । विनति करों कर जोरि । केहि विधि भापो हे सपी । जैसे झपट चिलहोर ॥ २८ ॥ सब मपि गृह गृह सुप करदि, जाको गृह है नाह । वै क्रीड़ा बहु विधि करत, जस पनिहारन जल माँह ॥ २९ ॥ सगुन विचारहु हे मपी, गावहु भगल चारु ॥ बहु विधि जोरा पहिरि कै, तव पिय अँहै आजु ॥ ३० ॥ कहत खेमकर द्विज समुझि, पेम करनि विश्राम । नृपति सभा मह चित्त टै । चिरहँ चेतन नाम ॥ ३१ ॥ इति पोयी पक्षी चैतावनी सम्पूर्णम् ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—पक्षियों के हृदय तथा मांस व जल जादि संवन्धी इकट्ठीस होहों का संघ ।

संख्या २३६ प. वैद्य प्रिया, रचयिता—लेखसिंह, कागज—देसी, पत्र—१७०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुच्छेद)—३८२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी, रचनाकार—सं० १८८० = १८२३ ई०, लिपिग्रह—सं० १८९२ = १८३५ ई० प्राप्तिस्थान—श्री रामभूषण वैद्य, ग्राम—अमतापुर, बाकपर—इटीका, जिन्ना—कन्नड ।

जादि—श्री गणेशायनमः । जब वैद्य प्रिया लिखवते ॥ श्री गिरजा सुत सदन गनपति बुद्धि गंभीर । तुव दरसन अथ घर हरै जायद होत सरीर ॥ बंधु सारद मानु पद जो कक मति दातार । ताहर सुमिरन करतही । बाई बुद्धि अपार ॥ अथ सधिमि अस्तुति प्रदन सकळ गुण ईम कमल नवन घन एवाम प्रनु । बुपटारन जगदीस । सुमिरहि सुरम अमक के ॥ श्री सधिमि कमल रमा सिंधु मुता जिन्न धर्म । बंधु सुप दाइक सदा सकळ सिंधु सुप कर्म ॥

अंत—गुरु श्री कृपा कटाक्ष से कहा प्रंय गुन धाम । तिनि त्रिगुरु के चरन श्री बार बार प्रनाम ॥ महका छिमा करि आहराई प्रंय सकळ जभिराम ॥ कपुना चातुरता कही बुद्धि कपु नहि जाई प्रंयनि से औपधि धरी कहा अचिन्ता मोरि ॥ ताते मीं विवती सुनी कृक मूल सब पोह ॥ मनमा बाबा कर्मना सेबक जायी मोहि ॥ पर पिन्ना पर ईरप परतुप सदा सहाहि ॥ तिनई बनु विवती करी दाय सा इरी सगइ ॥ ईव कोटि तीतीम पुनि त्रिन सब रचे सा पप । तिनको उर करी ध्यान रचि वैद्य प्रिया यह प्रंय ॥ इति श्री वैद्य प्रिया प्रंय पवित पेत सिब विरचितायां संपूर्ण समाप्त ॥ छिपत शिब सेबक निन्न वैद्यपुरा वाले कार्तिक दीपावली दिवस मगत १८९२ वि० ॥

विषय—वैद्य ।

संख्या २३६ वी. वैद्य प्रिया, रचयिता—लेखसिंह, कागज—देसी, पत्र—१७९, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी, रचनाकार—सं० १८८० = १८२३ ई०, लिपिग्रह—सं० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामरत्न बाजपेयी, ग्राम—सिरापाह, जिन्ना—सीतापुर ।

जादि—२३६ प क समाप्त ।

अंत—इति श्री वैद्य प्रिया प्रंय श्री पवित पेतसिंह कृत संपूर्ण सुभ कुमार सुहो १२ संवत् १९०४ वि० पुनक श्री दारी श्री लिम्बी व मुम्नु लाल जेसवार गोपाचर(क) श्री परमेशुर रादा सहाय जी ॥

विषय—वैद्य वर्णव ।

संख्या २३७ प. अक्षय्य परित्त शतक, रचयिता—मानकवि (गद्गर्भ, चरगारी राजव), कागज—बादामी, पत्र—४०, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुच्छेद)—२४० पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—मागरी, लिपिग्रह—सं०

१९५२ = १८९५ ई०, प्राप्तिस्थान—प्रधान जवाहरलाल पेशाकार, चरखारी दरवार, ढाकवर—
चरखारी ।

आदि—दो० श्री गोविदाचार्य अज श्री मद्राम कुमार । रमा राम रामानुजहि वंदौ
पवन कुमार १ श्री वागी सुर पद पदम मनमों परमि पवित्र । मेघनाद के जुद्ध को वरनो
लखन चरित्र । २ । श्री रामानुज मनुज नहि धरनी धारन धीर । वंदौ जन दुग्य अक्षमन लक्ष
लक्षमन वीर ३

अंत—जय लक्षमन रनधीर वीर वीराधि वीर वर । जय उदद भुजदद चद को दद
दद धर । जय अमद अनद कंद खज फद निकदन । कृत वृंदा रक वृंद चरन अरविंदन वंदन ।
जय जय समर्थ दसरथ्य सुत हथ्य मथ्य दस मथ्य सुत । जन वान जान कविमान मिर
धरहु पान वर दान जुत ॥ १२८ ॥ इति श्री कवि मानसिंह विरचित श्री लछमन चरित्र मतक
संपूर्ण । सुभ मस्तु । सवत १८७८ के लिखी भई पोथी से दतारी संवत १९५२ में पटनाथ
श्री रामानुज दामाना । श्री मते रामानुजाय नमः चौकी नवीम हीरालाल की जै जै श्री ।
रा० लक्षमन जी की जो वाचै सुनै ताकौ ॥

विषय—तुलसी कृत रामायण की कथा के अधार पर मेघनाद और लक्षमण जी के
युद्ध का वर्णन ।

संख्या २३७ वी. लक्ष्मण सतक, रचयिता—सुमान या मानकवि (चरखारी),
कागज—साधारण, पत्र—२६, आकार—१०^३ X ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण
(अनुपट्टप)—४७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४४ =
१८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गुरुवत्ससिंह रईस, ग्राम—कुठरिया, ढाकवर—लवानाभवानी-
गज, जिला प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ लक्ष्मण सतक लिप्यते ॥

॥ दोहा ॥ राम रमा रामानुजहि, प्रणवों पवन कुमार । श्री गुरु गणपति चरण भजि,
श्री मत् शम्भु उदार ॥ १ ॥ श्री वागेश्वरी पद पदुम, प्रणवों परम पवित्र । मेघनाद के युद्ध
में, वरणों लपन चरित्र ॥ २ ॥ श्री रामानुज मनुज नहि, धरनी धारन धीर । वन्दौ जनदुख
अच्छमन, लच्छ लच्छमन वीर ॥ ३ ॥

कवित्त—प्यारो सीताराम को उज्यारो रघुवश हूं को अनियारो जव पैज महारूरो
रनको ॥ रवि कुल मंडन प्रचंड बल बढ वीरचढ भुज दंडन सौं खडन खलन को ॥ समाधान
रच्छक अपच्छ पच्छ लछीमन अच्छमन लच्छिमन कृच्छ दीन जनकों ॥ सिंहन को सर्भ गर्भ
वंतन को गर्भ गंज अर्भ अवधेश को सगर्भ शत्रु हनको ॥ ४ ॥

अत—जम लछिमन रनधीर वीर वीरधि वीरवर । जय उदंद भुज दंद चंड को दंद
दंद धर ॥ जय अमद आनंद कद पल फद निकदन । कृत वृन्दारक वृन्द चरन अरविन्दन
वन्दन ॥ जय जय समथ्य दशरथ्य सुत हथ्य मथ्य दशमथ्य सुत । जन वानि जानि समधान
सिर धरहु पानि वरदान युत ॥

इति श्री चरपारी नगर बुंदेल पंड वासी पुमान कवि वदीजन कृत रामामंडल पर्थ
शिवा शिव सँवादे लक्षिमन शतकं समाप्तं ॥ सवत् १९४४ ॥

विषय—मेघनाद से लक्ष्मण का युद्ध क्षणिक समाप्त, फिर सुषेन वीर्य का आना, इन्द्र-
मान की का संजीवनी आना, लक्ष्मण का मच्छा होना, मेघनाद-वध ।

संख्या २३७ सी नरसिंह चरित्र, रचयिता—मान कवि (चरखारी), कागज—
साधारण, पत्र—४४, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनु-
पुत्र)—२६४५, पूर्ण रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकार—सं० १८३८ =
१७८१, छिपिकाळ—स० १९५४ = १८९७ ई०, प्राप्तिस्थान—प्रधान जवाहर कार, पेशकार
चरखारी बरवार, डाकघर—चरखारी ।

आदि—होहा—ई ई श्री प्रह्लाद प्रभु ई पावन पन सिंह ई हिरभा कुस वर मछन
की जे श्री नरसिंह । छद् मवय सुखद् । ई जे वीर श्री नरसिंह । पाकत प्रनत जन प्रनरिह ॥
ई जे ज्वाळ माळ लुळत । शुकुटी विकट तट मटकंत । २ । ई ई हिरन करमप कारु धर
धर कपत कारु कारु ॥ ई ई तुरत बंगहा कार । तीजन नखन उदर विदार ॥ ३ ॥ ई
ई हीन जन प्रतपाळ । जिन सठ जडर फारी हाळ ई ई वरुन इनु सुत भूप । ई मय हरन
नरहर रूप ॥ ४ ॥ छद् जीतकर ॥ भय हरन नर हर रूप की बिरदावसी धर भापिये । जेहि
रहत संकट कटत शट नर मिरुत जे भमिसापिये ॥ सुख हरत दारिद नहत उबहत भक्ति
नहत सुपायकी । रिपु तपत पातक कपत जग जन जपत नर हर नाम की ॥ ५ ॥ छद्
संकेत ॥ जन जपत नर हर नाम की पावे सकळ मन काम की । जग बळधि रुहि विभाम
की ॥ पदुर्ष परम पद् धाम की ॥

अंत—पार्ली पदुम श्री प्रह्लाद । विसदिन रहित हर्ष विषाद । जद्विप अक्षयित
महिं चादि । कीने नाप हुकुम निबाह ॥ ५९ ॥ यह श्री नरसिंह चरित्र मंगळ परम पुष्प
पवित्र । भाये हीन कवि मान । वैई मखि मित्र मगवान ॥ ६० ॥ नरहर चरित चाद
उदीत । बांचल मुनत मंगळ होत । सुमिरत सकळ मय भक्ति जात । मुळ सरसात दुख
हर जात ॥ ६१ ॥ प्रति दिन करी पाठ तमाम । ताके सिद्ध सब मन काम । जिनसतरोग
कष्टविषाद, प्रगट हि नरसिंह प्रसाद ॥ ६२ ॥ सुधि विसाज खीदस मज । अज बान ध्याव
निबज ॥ कर उपवास बाहस पाठ नर हर वैई सिद्ध अठ ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ संघत नय गुण
बहु हुमुद बंध निबंध पवित्र । नरहर खीदस को मयो श्री नरसिंह चरित्र (१८३९) ।
इति श्री मन्मथरायण दास मान कविरचित नरसिंह चरित्र समाप्त संवत् १९१९ विसाख सुदि
१४ को छिन्नी प्रति से उठारी गई संवत् १९५४ में =

विषय—१ हिरण कस्पयु का राज्य वर्जन, २ शिक्षा कांड, ३ ज्ञान कांड, ४ परीक्षा
कांड, ५ रक्षा कांड, ६ पद कांड ७ स्तुति कांड ।

संख्या २३७ डी रमणसे, रचयिता—सुमान (मान कवि लक्षा गांध,
चरखारी), कागज—बाहामी पत्र—१३१, आकार—१३२ × ७२ इंच, पंक्ति (प्रति
पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुत्र)—११३७ पुर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी,
रचनाकार—सं० १८६५ = १८०८ ई०, छिपिकाळ—स० १९७६ = १९१९ ई०, प्राप्ति
स्थान—श्री हरिदास सिंह बैवार, ग्राम—धनुषधारी मंदिर के निकट, चरखारी राज्य ।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री राजा कृष्णाम्बा नमः अथ श्री राम दासो मान कवि

कृत लिप्यते ॥ दोहा ॥ व्रद्धौ सीताराम के चरण कमल अभिराम । तिनकाँ सुमिरन करत ही
होत मिद्ध सब काम ॥ १ ॥ छपै मूक होंय वाचाल पगु गिरि गहन टलवैं । जव तुम होहु
दयाल परम आनद पर संवैं ॥ पुरु रूप अच्यक व्यक्त संसार विहारौ । निर्गुन सर्गुन रूप भूप
रंकन मँह धारौ । अद्वैत अमल आतम पुरप सुसुप भये संसार सुप । ससार लीन आपुन
विपे करत करत तव पुरुप रुख ॥ २ ॥

अत—दोहा ॥ ब्रह्माटिक ध्यावत सदा रघुकुल कमल दिनेस । पारीछत महाराज की
रच्छा करे हमेस ॥ ५०८ ॥ पारीछत महाराज के राम भक्ति वसु जाम । हुक्म पाय रघुवर
चरित वरनों सीताराम ॥ ५०९ ॥ कविता सत कवि मान की सारद सुद्ध निवास । ता विच
सीताराम कृति ज्यों तार का प्रकास ॥ ५८० ॥ वर्ष अठारह से अधिक पैसठ भादौ माम
सुकल पच्छ तेरस गुरौ रघुवर चरित प्रकास ॥ ८१ ॥ इति श्री मान वंशावतंश प्रजा जन
मन रजन श्री मन महाराजाधिगज श्री महाराजा रामचन्द्र जू देव वहादुर कौ राम राय सौ
श्री मान कवि कृत संपूरन समाप्त । मामोत्तमे मासे सुभे कातिक मासे सुकल पच्छे गुरु
वासरे तिथी ७ संवत १९७६ ता० ३० अक्तूबर सन १९१९ ई० : मुकाम महाराजनगर
चरखारी ॥ भूपति मणि जाहिर जगत गंगा सिंह नरेस : तिन कर राधा कृष्ण जू रच्छा
करे हमेस ॥ श्री गंगा सिंह नरेस के चरण कमल उर धार लिखो राम कौ राय सौ दर्याव
सिंह ने कार ॥

विषय—तुलसी कृत रामायण के अनुगार लका काण्ड का अंगद वाद से राम जी के
अयोध्या पहुँचने तक का वर्णन ।

संख्या २३७ ई. हनुमान जू को नख सिख, रचयिता—मानकवि (खड़ागाँव,
चरखारी दरवार), कागज—वाढामो, पत्र—१७, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति
पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, लिपि-
काल—सं० १९५२ = १८९५ ई०, प्राप्तिस्थान—प्रधान जवाहर लाल पेशकार, चरखारी
दरवार, ढाकघर—चरखारी ।

आदि—अथ श्री हनुमान जू कौ, सिख नख लिप्यते । कविच दरस महेस कौ गनेस
कौ अलम समा सुलभ सुरेस कौन पेस है धनेस कौ पूज दार पाल वर पाह प्रजापाल दिग
पाल लोकपाल पावै महल प्रवेस कौ । वेर वेर कौन दीन अरज सुनावे तहाँ यातें विनय
वान हौं नरेस अवघेस कौ मान कवि सेस के कलेस कटिवे कौ होइ हुकम हटीले हनुमत पै
हमेस कौ मंडन उमठ तन मंड खर रंडन कौ ॥ दोर देठ दाहनाँ उठायो मर हान है—चोटी
चट काकी चारा जुटकी चपेट महिरावने दपेट पग दाचै बलवान है भने कविमान लसे विकट
लगूर वांय चरन सौं कुट चापी भार का महान है ॥ साकनी डरत डरें ढाकनी डर महंक
हाँकनी हरन काकनी कौ हनुमान है ॥

अंत—वाचै देइ मासा सोक संकट विनासा तपै तप कौ तमासा वासा मंगल अनत
कौ । विभव विकासा मन वांछित प्रकासा दसौ आसा सुख सयत विलासा कर संत कौ ।
महावीर म्गमा वृज वीरा औ वतासा करै वियति को ग्रासा तन त्रासा अरि अंत कौ ।
सिख नख खासा रिद्ध सिद्ध कौ निवासा यह दाम आस पूरक पचासा, हनुमंत कौ । इति

हनुमान् नू कीं सिद्ध मन्त्र सम्पूर्णं शुभमस्तु संबत् १९५२ शुद्ध १० रवि वातरे लिप्यते
 श्री श्री नवीस साक हीरा साक जो वीर्य ताको श्री श्री श्री श्री हनुमान् नू कीं पङ्क्तिः—८ ॥

विषय—आरंभ में तीन छंदों में महावीर जी के सर्वाङ्ग का वर्णन और चौथे छंद से
 अन्त तक मिकल नाम वर्णन ॥

संख्या २३= ८, वातक मात्रा, रचयिता—मुसाक कवि कागज—साधारण,
 पत्र—८, आकार—१३ × २३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुपुष्प)—
 ५१०, खंडित, रूप—प्राचीन पद्य छिति—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री बासुदेव सहाय,
 ग्राम—रुमाय, ढाकपुर—मार्धागज, जिला—प्रतापगढ़ (जवब) ।

आदि—अथ आतक भासा लिप्यते ॥ दोहा ॥ मेघ सीस रूप सुप वसै, मिथुन
 जानु भुज पंड । कर्क इक्षुप केहरि उदर, कपि प्रमदा सुप पंड ॥ १ ॥ तुला भरित मह
 जानिए, सुखिक गुण पयायु । उर में बन (का) वास है ओषिद कर (त) बयायु ॥ २ ॥
 बमत सदा विंदुरी मकर, कुम तिली सुप पाय । सदा अंग में पूरै वसै भापत पंडित
 राय ॥ ३ ॥ जहा सो भूर मह परे, प्यया करै तेहि रौर । उचम सुपद शरीर कीं, भापत
 कवि मिर रौर ॥ ४ ॥

अंत—अथ श्री जानिबो, तन अद सीस के बीच में, जिते परे मह आइ । तितनी
 श्री जानिये, भापत पंडित राइ ॥ सतपु ते अद पत्रकीं, परे जिते मह आइ । सी श्री
 बाहिर घरहि, भापत है मुनि राइ ॥ अथ शीपक कीं मेह जानिबो, चौथे इसये म्यारहे,
 ससि होये शनि साय । सात शीप के जानिये, कहे अपिन के वाब ॥ परे आइ ससि पिर
 सगन, शीपक जानी ताप । कछे दिन कर होइ ती, शीपक हावहि भाप ॥ सगन बीति
 बैठी गई तेती घरिदि पित । तेतनी बाठी जानिये, अरी शीप के निच ॥ ० अथ या “

विषय—ज्योतिष (आतक)

संख्या २३= श्री भवनसार संग्रह, रचयिता—मुसाक (देवसरिहा), कागज—
 हैती, पत्र—३२, आकार—८ × ९ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुपुष्प)—
 ५१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, छिति—नागरी, छिपिछाक—सं० १०००=१८३३ इंच,
 प्राप्तिस्थान—श्री गंगाविष्णु ज्योतिषी, ग्राम—बंवर, जिला—उत्तरांच ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ भवनसार संग्रह मुसाक कवि कृत लिप्यते ॥ दो० ॥
 विषय हरम तुमहो सत्र गजपति दीन दयाल ॥ करी प्रगत मम बुद्धि को करिकै चित
 विशाल ॥ शैव धर्म मुनि जइ बसै वैठमार है मुन धाम । ठहति दिव सरिहा सुबे रवि की
 प्रमा समान ॥ अथपप भुव अद अथि हैं ग्यप्रहिं तीनि बपान । अथि अनेक अनेक सब एकै
 एक समान ॥ तिनते जगमें दुब कवि भये देवक रूप ॥ जिनका दरसन भगवती हीन्ही सरय
 स्वरूप ॥ तिनके पुत्रपोचम भये तिनते उत्तर सास । सरय मुनीति उदार बहु जग में सुयस
 विशाल कवि मुसाक तिनके तनय रचत ग्रंथ की रीति । पढ़ी सबै करि करि हृषा सुयस की
 निज प्रीति ॥ या जग में जन मुसप है पावत जन्म जनत होत बारही बार है मुख तुल
 कइत फलत ॥ मुख्य संस्कृत जोजिविन बरन कहे बहु मति । तिनके वैपि प्रबंध में नापा
 करत मुभाति ॥ आदि ममुभा सब छेहिगे निज मति के अनुसार । वैशि कुंदनी चक्र कीं अन्त

कहाँ संसार ॥ प्रथम लग्न ज्ञान माह ॥ रवि के उदय जबै भव आवै । आंगुर तीनि शंकु सो लावै ॥ छाया सकै देह मिलाइ । चतुष्पष्टि मै भाग हराइ ॥ लख वरी में सो पल मानै कवि खुशाल यह रीति वपानै ॥ वही उदय की होय जो सोई अर्थ करंत, सूर्य ऋक्षते ज्ञान करि लग्न गुनी भापत ॥

अंत—अथ केतु फलम् । तन में केतु विधा तन कारे । वाम और की चिंता धरै ॥ धन को केतु धनै को नासै । सत्य वचन मुगते नहि भापै । करै विरोध सबै जन भारी । होय सुग्रही अति सुप कारी ॥ तिसरे आइ भवन जो परै । भैदया शत्रु नाश तन करै ॥ धन ऐश्वर्य सदा सो सोई । मन में चिंता व्यापै लोई ॥ चौथे केतु मातु पितु नासै । उच्च होय तौ सुपही को भापै । पचम केतु बुद्धि को नासै । पुत्र अलाम वात को भासै ॥ सष्टम केतु विराजै सबही । मातुल भान भग कर जवहीं ॥ पशु वा रिपु को सदा न जानै । शरीर मदा नाम यं व्याधि भानै ॥ शिखी सात ये लाभदा मार्ग चिंता कलित्रादि पीड़ा कहै चारि भिन्ता ॥ अष्टम केतु विराजै जाके । गुदा पीड़ शिर रोगे ताके ॥ वाहन दृश्य हरै सुप नासै । कवि खुशाल यह रीतहि भापै ॥ धर्म भवन में केतु विराजै । सुत श्री भाग्य उदै तम छाजै ॥ देह रोग तप दान ते हास्य बहुत उपजाइ । कवि खुशाल यह सरस मत कह्यो ग्रंथ में आइ ॥ दसवें भवन पिता को नासै ॥ अंग कष्ट बहु रोगे भासै ॥ वाहन दुखिय सुता होइ ताके । कहै खुशाल सुनौ हित वाके ॥ एकादश मे लाभ अधिक विद्या को पावै । होइ उदर में पीर सतति दुभर्ग ज्यावै । भवन वारहे केतु तन पीर गभीर कराय । राज्य तुल्य जस कोल है कवि खुशाल यह गाइ ॥ कवि खुशाल के पुत्र द्वै अंगद बुद्धी लाल तिनमें अगद के तनय अति सुप बुद्धि विशाल । लिख्यो ग्रंथ जातक सही निज बुधि के अनुसार पढ़े पढ़ावै ग्रंथ के है है ज्ञान अपार ॥ इति श्री भवन सार सग्रह कवि खुशाल विरचिते सपूर्ण समाप्त . सवत १९०० वि० ।

विषय—ज्योतिष-वर्णन ॥

संख्या ३३८ सी भवनसार सग्रह, रचयिता—खुशाल (देवसरिया), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ × १० इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपट्टप)—५७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदीन जोशी, ग्राम—पतरासा, डाकवर—कैरावाट, जिला—सीतापुर (अवध) ।

संख्या २३८ डी. भवनसार सग्रह, रचयिता—खुशाल दूवे (देवसर), कागज—विदेशी, पत्र—७६, आकार—८ × ४ $\frac{१}{२}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुपट्टप)—४७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वट्टीसिंह जर्मीदार, ग्राम—खानीपुर, डाकवर—तालाव वक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या २३६. सुभाषितावली ग्रंथ की भाषा, रचयिता—खुशाल, कागज—साधारण, पत्र—८०, आकार—८ $\frac{१}{२}$ × ६ $\frac{१}{२}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुपट्टप)—१३००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६४ = १७३७ ई०.

किपिकाळ—सं० १८६० = १८०३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, ग्राम—कडरा मेदिनी
गंज, बाकबर—प्रठापगड, शिळा—प्रठापगड (जयप) ।

आदि—अथ श्री सुभाषितावली ग्रंथ की माया लिप्यते ॥

॥ श्रीपार्श्व ॥ श्री सख्यपन मुंभित खार । गुद सुमिहं विर ग्रंथ सुभाष ॥
जिन बाणी प्याडे तिरकाळ, सदा सहार्द्र मजि गण ठार ॥ १ ॥ ग्रंथ सुभाषित जिन यरणी ।
ठाकीं करण कणु इठ सर्पी ॥ मित्र पर दित कारण गुण यानि । मायू भाया सुनहुं सुजान ॥
सीप एक सद गुठ की मार । सुनि रोया निज विच मछार ॥ मजुपि, जनमसुप कारण पाप ।
पृती जिवा करहु मन लाय ॥ धर्म धरो मुर सिच करतार । पाप तजी जो निपु अपार ॥
सम्यक सुप दाता मजि भात । तजि मिप्या जो कुमाति भमात ॥

अंत—आदि किमंद् सु आदि करी जिन कर्म विचारि सुम्बान उपाया ॥ भूत भवप्ल
काळ विप प्रभु तपि सखि हसकैम निरुमा । अंतर महात्त सखि हसने मन लाया ॥ अंतर सहात्
सखि सिच नेह मुनिंद् महा जिनि आतन माया ॥ ये परमबुध भावत ही निति धीमन पोव
गुण समुहाया ॥

श्रीपार्श्व—ग्रंथ सुभाषित यह अति सार । सुनतयेईं ग्रंथ ई अविचार । अस बीराग
भाव उपजात याते पार्श्व पङ्क्तु विप्यात ॥

× × × ×

इति श्री सुभाषितावली ग्रंथ की श्रीपार्श्व सुभाष चंद्र काका हृत संपूर्ण लिप्यतं मुद्र
चंद्र बेसबाळ वेधु सुठ मबानी हीनछ छोट भाइ कसमजपुर में काइसंपुस्तकं छहवतांश्रितं
लिखितंमयादे शुभं च शुभं ममदीपोन हीबतै सुभं मबहु—मिती कतिक सुदि २ सं०
१८६० ॥

विषय—(१) पृ० १ से ५३ तक—संगकभरण । पाप त्याग कथा, सम्यक कथा ।
सम्यक भद्र, ग्यावंसय । चरित्र कथन । इण्डीजय श्री जयस्या, श्री त्याग कथन, नारी रूप
विचार, काम त्याग गुह सेवा अविचार, निर प्रेय गुह सेवा, तप जिह्वा बस करने का उप
दक्ष, द्वेष त्याग रागभाव त्याग क्रोध त्याग, मान त्याग माया त्याग, क्रोध त्याग, संतोष
का आवेश, आराधना कथा की समर्थक अहिंसा धर्म की कथा । दया सत्यासत्य कथना,
अद्वैतादान त्याग ।

(२) पृ० ५४ से पृ० १२० तक—शीक आख्याय, परिग्रह त्याग, जयकुमार की
कथा, बीराग्य कथन, गुण संगति कथा, सारसंग महिमा, जिन पूजा, दान पात्र पात्र पात्रदान
महिमा, कुपार वान त्याग जिन पूजा भरवा तथा दान कथन, इव गुद शाक अविचार,
धावका की प्रसंसा, राशि मोहन भिन्ना, ग्रह त्याग, बीराग्य भाव, संसार-सागर कथन, बीराग्य
ग्रहण, शरीरका निषेध, भाग त्याग धर्म ग्रहण, शोक त्याग, स्थान त्याग शरीर सत्क होये
के उपकरण ।

(३) पृ० १२० से १६० तक—विमोक्ष त्याग, निविज्य मत्त पाकन, आशा त्याग,
कुटुम्ब त्याग, कुटुम्ब स्वरूप, कर्म त्याग, चार भद्रनामों का वर्णन, पंच ममस्कार महामंत्र,
महामंत्र प्रशंसा, धर्मोपधी, पृच्छान्तु कथन (धर्म शरण) एकरव चिंतन, जनित्य भावना,

विवेक दुःख्या, मद्य त्याग, वेदया त्याग, सप्त व्यसन त्याग, योग्य आचार, मुक्ति सुख महिमा, वीत राग का स्वरूप, अथ के पठन पाठन का फल ।

निर्माणकाल—सत्रह सौ चौरावने, श्रावण मास मङ्गल । सुदि चौदसि पूरण भयो, इह श्रुति अति सुपकार ॥

अथ निर्माण कारण—सबल सिध पाडा तणौ, नंदन राजाराज । तिन उपदेसे में रच्यो, श्रुत खुश्याल अभिराम ॥

संख्या २४० ए. नदोत्सव लीला, रचयिता—रयालीदास (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६२३ = १८६६ ई०, लिपिकाल—सं० १६३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—रतनसिंह, ग्राम—भरथा, ढाकघर—बिसवां, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ श्री पति चरण मनाय के गणपति कौ धर ध्यान ॥ हृदय धार गुरु के चरणस्तव कीजे गुण गान ॥ झूलना ॥ भार्दो तिथि आठें वार लियो कृष्ण ने आंतर वरसे नन्नी फुआर वड़ी आई है खुश्याली की ॥ ब्रह्मा की मति खोई वेद वावे था वहा बोई गये पहर दार सोई गीत लखी न प्रति पाल की । आजे बुद्धि देवी की विचारी वसुदेव करो त्यारी गोकुल पहुँचावो गिरधारी जान वच जायगी गोपाल की । वृन्दान चढ सपी भजते गोविंद हुगु नद के आनद बोलो जै कन्हैया लाल की ॥ १ ॥

अंत—झूलना ॥ करता निर्त काना ताता येई येई थिरके ताल सपियां करै घात हेरे । थिरके ताल करताल अरु खंजरी ही थिरक रही सारंगी साथ हेरे । करनिन निन कस्तान गाता झलक रखा नारंग सा गात हेरे ॥ रचा रास कान्हा कटें दास प्याली आज चंद आनद की रात हेरे ॥ इति श्री नद उच्छ्रव लीला संपूर्ण मथुरा निवासी रयाली दास कृत समाप्तः संवत् १९३२ वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का जन्मोत्सव ।

संख्या २४० बी. नद उच्छ्रव लीला, रचयिता—रयालीदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, लिपिकाल—सं० १९३५ = १८७८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगासिंह, ग्राम—मझगाँवा, ढाकघर—ओथल, जिला—खीरी (अवध) ।

संख्या २४१. गोपी बलदाऊ की वारामासी, रचयिता—किंकर प्रभू, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४, प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन तिवारी, ग्राम—बिलरिहा, ढाकघर—यानगाँव, जिला—सीतापुर (अवध) ॥

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गोपी बलदाऊ की वारामासी लिप्यते ॥ जो बलवीर गये जब ते हरि आप न आये न पाती पठाई । छल बल कान्हो हरि बहुतक हमसौं

बाब बसे हैं समुद्र तट माहीं ॥ जप तप नेम किनो हरि सों हम माध इनाप हरि बर पाये ॥ १ ॥ फागुन फाग छठी हरि हमसों कीन्ही प्रीति कुबिजा मन मानी ॥ मामा कर्म महुपुरी मों सिपार दुहन को प्रभु मारि गिराई ॥ २ ॥ रीच रचमनी पत्र किल मेजो देखत पत्र हृदिप पुर जाई ॥ हकिमनी प्रिय कति छगी हरि कूं प्रेम प्रीति कपु कही न जाई ॥ ३ ॥ मणि के कागज मे बैसाप मों कामबत सो कीनी कदाई ॥ कामवंती मेट करी हरि के तप सब संकोच हीन मिटाई ॥ ४ ॥

अंत—अगाहन तिहुक अनिन्द्य को दीन्हो सीप आप अपनी प्रभुताई । राज पाद सब ही मुख हीनो आनंद मगल हर्ष बचाई ॥ ११ ॥ पूम हरी हम सों जन् भेटे कुक्षेत्र को ग्रहन इनाई ॥ बार बार मन हर्ष भयो अति किंकर प्रभु गुन करत बदाई ॥ १२ ॥ इति किंकर प्रभु कृते गोपी बलदाक की बारामासी संपूर्ण ॥ श्री कृष्णायनमः ॥ श्री राम की श्री सीताराम की ॥ लिपतं विहरिहा निवासी गयादीन त्रिपाटी संवत् १९१४ वि० बीसाल सुदी ३ ॥

विषय—गोपी बलदाक की श्री बारामासी ।

संख्या २४२ राजनीति भाषा, रचयिता—श्रीतिसैन, कागज—पैसी, पत्र—४४, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुच्छेप)—२६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी, लिपिकार—सं० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्ति स्थान—रूप रामभूपन, ग्राम—कामतापुर, शकभर—इटीजा, जिजा—लखनऊ (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राज नीति राज भाषा लिप्यते ॥ श्री प्रभवत हूं श्री विदु को जा विनोकी को राई ॥ ब्रह्मा कीर सरस्वती गरापय हाव सहाई ॥ दोहरा ॥ बहुत साक भवकाक की सुंदर बचन निकार ॥ राज नीति सम्भूह को वर्णन करो विचार ॥

अंत—अंजन आश्रय चतु विवेक । अथ परत छत्रे मूक जात । साने ज्ञान हरि जप हरिवात ॥ दाहा ॥ साक सकक विचार के मप कही यह सार ॥ नारायण मन्त्रिये सदा करिषे पर उपकार ॥ गुक गोविंद के समा ही लेख कपि मुजान ॥ जानकी भाषा की कीति सब बति मान ॥ इति श्री ब्रह्म चागिक्य राज नीति साखे भाषायां गोदसोभ्याय संपूर्ण समाप्तम् शुभम् ॥ संवत् १८७० ईश्वर प्रति पदा कृष्ण पक्ष ॥

विषय—राजनीति आश्रय कृत की भाषा वर्णन ॥

संख्या ४३ रामाय विचार, रचयिता—कोविंद, कागज—पैसी, पत्र—१९२, आकार—१० × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेप)—१५३६, पूर्ण, रूप—मौलिक, लिपि—मागरी, लिपिकार—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगा विष्णु क्वीटिपी, ग्राम—अधर, जिजा—उज्जैन (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रामक विचार कोविंद कृत लिप्यते ॥ दो० ॥ अंबोदर गज सुप मुमिरि भाक अंज पक वृत ॥ ता अरणम हिरदै बहने मंगलः होय जनत ॥

जा कीनो ब्रह्मांड ही अपनी इच्छा पाइ । ताके सुमिरन करता ही भव संकट कटि जाइ ॥
जादि रूप जग शक्त है सकल सृष्टि को भार । ताहि ध्यान उर धरत ही उतरत भव
के पार ।

वृत्त—॥ चौ० ॥ जामो सकल हवाल चताओ, जो हो रूप प्रकृति जतलावो । इमी
क्रिया से पुनि पुनि कीजे ॥ पंद्रह दिन गिनकर कहि दीजे ॥ सुद्ध जायच्छा नामे होई । यों
वी महत कवो मत लोई ॥ ८ अष्टम घर मों देखे दूगरे में चर होय । आठवें में थिर होय तौ
करज से छुट जायगा मम और चर दूगरे में थिर होय तौ चौथे में चर होय तौ नहीं
छुटेगा ॥ जो यो पृष्ठे में करज दू सुभ्रको नफा होगा या नहीं तब दूगरे आठवें को जरव
करे सकल निकाले जो सुभ स्थिर होय तौ लाभ होयगा जो स्थिर असुभ होय तौ जमा
जायगी जो स्थिर होय तौ थोड़ा मिले द्वि स्वभाव होय तो द्विविधा कहिये ॥ यत्र ॐ नमो
भगवतो कृष्णमाठनी सर्व निमित्त प्रमादानी पृष्णहिस्वर वर दे हिल हिल मात गिनि ॥ तत्त्वं
ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा ॥ इति श्री रमल विचार को विष्ट कृत सपूर्ण समाप्त लिपते जयगम दास
पाड़े गौरी करन मध्ये कार्तिके दीपमालिका म्वत्त १९३३ वि० ॥

विषय—ज्योतिष रमल ॥

संख्या २४४ लगन पचीसी, रचयिता—स्वामी कृपा निराम, वागज—साधारण,
पत्र—२०, आकार—८ ३/४ × ५ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—
२२०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६८ = १८४१ ई०,
प्रास्थान—रामप्रसाद मुराट, ग्राम—पुगवा विश्रामदास, डाकघर—परियावां, जिला—
प्रतापगढ़, (अवध) ।

आदि—श्री मीताराम ॥ अथ श्री लगन पचीसी लिप्यते रागधनाश्री मूल ताल ॥
लगन की चोट दिन मन गिरत न ऊंचो कोट ॥ भरत गरध है दरद लगे मृत्परवस गर
पर पोत ॥ १ ॥ मन मयंट मानो विषम टिरा फोड हाथ न आवे ॥ ताको लगन महा अकुश
ले प्रीतम पाय नवावे ॥ बांधि बोकरी मृग—लौं ऊटरे मिघ सबल नहिं टरि है ॥ लगनि
वीन की भनक सुनै कहाँ दिन मारे मन मारि है ॥ फनिप रूप तौ जहर मरयो मन गढे
कौन भय कीरी ॥ लगन मत्र बल प्रवल निवल है सेवत परपो पितारी ॥ उग्यौ फिरत जग
ठग मन पग लौं कोट न सकै विरमाय ॥ लगन वाज की झपट परे जब छूटन को अकु-
लाय ॥ नारि अमानी सील सयानी रापी भवन दुराय ॥ लगन कूटनी सों चतरावति मन
पर हाथ विताय ॥ मान चड़ाई भये कुल स्यानय तवलौ मन में मीर ॥ कृश निवास लगन
रावव की जब लागि व्यापी न पीर ॥ १ ॥

अत—राम लग्यौ जाको और न लागै ॥ नव ग्रह भूत प्रेत दिव दानव ऊत पित्र
जम किकर भागै ॥ कर्म काल कुल क्लेश कुमारग काम क्रोध कोइ आवै न आगे ॥ चोर
चुगल चिंता छल जादू जत्र मत्र जग कवहुं न जागै ॥ दगा दोष दुवदि दूत दुष दाग दरिद्र
दूरतै त्यागै ॥ ठग ठाकुर काँकरि कटु कंटक संक पंक पर अंक न पागै ॥ लाज लोभ लालच
अप लक्षण पाप पीर पापंड न दागै ॥ अनिल अनल जल थल पे के चर गोचर पर चर
विवन विरागै ॥ जाग्रत सुन्य मनोरथ मनोरथ सादक माया मोह की सुरि गढ़वागै ॥ कृपा

बिनास कई मोहि मार्या जानकी बर पायी अनुरागी ॥ ३० ॥ इति श्री लगन पचीसी श्री महाराजाधिराज महाराज स्वामी जी श्री कृपा बिनास जी कृत संपूर्णम् ॥ ग्राम मस्तु ॥ संवत् १९९८ गिती सावन बदी ४ छित्तित चरबदास पाँडे गौड़ प्राहण्य प्रयाग जी में ।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ११ तक—लगन की महिमा और उसकी महाराज का वर्णन । लगन के निर्बाह में किसी प्रकार के चबाव आदि की परवाह न करना । उनको पूर्णतया निर्बाह करना । अथवा कुछ सौंदर्यादि की सदीब अपेक्षा करते रहना और प्रीतम के दोषों का परिहार करना । (२) पृ० १२ से पृ० २० तक—लगन का प्रभाव, लगन की पीड़ा तथा अमुकता का वर्णन । विरह वर्णन । प्रीतम के सम्मेलन में संसार का त्याग । प्रेमोपदेश । पालक विद्याया, राम की स्मरण में अथवा मृत-प्रेतादि की लगन के विषय का वर्णन । कवि द्वारा राम से उबकी लगन लगन का बरहान मार्गना ।

संख्या २५५ प. भाषा भागवत एकादश स्कंध, रचयिता—कृपाराम, कगज—द्वैती पत्र—१५३ आकार—८ X ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८ परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५४ रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—मागरी, छिपिकाव्य—सं० १८०९ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—आर्षदसबन पुस्तकालय, बाकबर—बिसबाँ, जिना—सितापुर (अवध) ।

आदि—श्री मते रामानुजायनमः । बही श्री रघुबीर कृपासिंधु संतत सुपद्म प्रगतया (अगो दीमक ला गई है) श्री० ॥ कलिमत हरम करम सब बीना बिदु किये मुनि सकल प्रवीण विद्यामित्र असित सुगुन्यानी बुरयासा कस्यप सनभानी ॥ नारद कछो भंगिरा साधू । बामदय मत्त अथि अगाध ॥ और बसिन्ठ आदि मुनि बेट । बिदा मये पूजित हूँ ते ते पिछारक बक तीरथ राम् । तहाँ गये मुनि सहित समान् ॥ येकन पनुम सार तहाँ भाये । गाबलि बलिता भेप बनाये ॥ अति किर्तीति सब चरणन सारीं । पूछहिं प्रदम ये अनुरागी । यह अथका पूछे द्विज राम् ॥ गर्भवती लग्गी यहि कान् । निरुत प्रसुति भई पृथि केरे । कहा होय मो कइहु निबेरे ॥ गुम अमोघ दरमी मू देवा । कहिब कृपा करि यहि कर मेवा ॥ मुनि मुनि कपट पुण्ड्र जब बानी । अये सहित बोले गुप ध्यानी ॥ मूलक बनहिं मंह मति धानी ॥ जदु कुक नास सकल बहिं मार्गी ॥ सुमत मप कपति सब बाळा ॥ उदर पोकि देप्यो ततकाला ॥ भूसल हैपि सगे पछिठाना । कहा कियो हम करम अयाता ॥

अंत—पंये कृष्ण कृपासु प्रमु सव पर पूरन काम । सोह मम श्री गुर में प्रगट बास कृष्ण अस नाम ॥ तैहिं पर पंकर परसि रज चिरज कृपा रग जानि ॥ सांइ प्रेरक हिय महु सजन भाषा सुमग वषानि ॥ श्री शुक कही परीक्षितहि ध्यास कही शुक पास । समुक्ति परे यहि संसहत मोमक अधिक दुखस ॥ कटिन अर्थ भागवत गूर । अस्प बुद्धि में अति में मूढा ॥ तपवि निज बुधि के अनुमारा भाषा रची न बहु विस्तारा ॥ सज्जन मुनय बहु जनि पायी ॥ विषय करी में शग कर जोरी ॥ हरि गुन कहत प्रेम हिय पूरी । अस्प मुनि उपरै गुण मुरी । पृथितें में यह बीन गासा ॥ जामी बहिं में कुठ कबितादं ॥ यहि मंह होइ मूल कस्तु कीर्त । लेख सुधारि मजन सप सोई ॥ पुनि मम कृत मानहु कनि जाही । बरब अत्यादि अल की जाही ॥ हरि गुन सहित सुभग सोइ भाषा । सुनि पुरान कारण अस राषा । यह गुन

मै नहि अमृत अलापू ॥ कहत सुनत नहिं रह गतापू ॥ अशुचीं मोहि मंद मति जानु ॥
 तौ यह वरण अशुचि जानि मानहुं ॥ ज्यों मालीहर सुमन संगीवा । अशुचि न होइ नेति
 अम गावा ॥ मो प्रसु चरण चढ़ै जेहि भाती । तिनि मम कृत पद मजन सोहानी ॥ पुनि
 पुनि कहौ नाइ पद सीमा । यत यभा मद सब मम हंसा ॥

विषय—भागवत के कृपावत संघर्ष की कथा अथवा भूमल की कथा ।

संख्या २४५ वी. समयबोध, रचयिता—कृपाराम, कागज—देवी प्राचीन, पत्र—
 ३२, आकार—१३ × ४३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६६,
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७२ = १७१५ ई०, प्राप्तिस्थान—
 वायू जयसंगलराय वी० ए० पृ० टी०, गाजीपुर मिठी ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ समय बोध लिप्यते ॥ दोहा मिद्धि गुद्धि रिधि की
 देत है एक देत त्रिभु भाल । प्रथम गनाधिप की सुकवि करिपदन किर पाल ॥ १ ॥ छं ।
 श्री स्वाई जयरिंह नाव जौ द्वित पुग किले । दान कृपान मिथान याधि सब प्रिधि जय
 लींशो ॥ जाकी प्रवल प्रताप मनि पुर मान रहेते । सीम नवावत आनि नृपति भुव मडल जेते ।
 तिन कृपाल हे हेत करि राख्यो दिग ई मान । कृपागम कवि महनागर विप्र निदंन ॥ २ ॥
 दोहा । वरपावनवरपा मर्म दुर मठ और सुफाट । होत बोध यातें कसो ममें बोध किरपाल ॥३॥

अंत—उदै होन रवि र्चाकनो भूम वरन जय होय जल वरपे दिन पांच लग कही
 प्रथ मति सोट ॥ ६६ ॥ कायल वरन वरपे पीत वरन जल पूर ॥ चित दै देखहु गन कर
 ऐमे मनि स्वर ॥ ग्रंथ विद्युत लक्षण ॥ सर्वया ॥ ज्योतद्विता तिमि पूरय करं वरपा वरनी
 मुनि मानो । उत्तर की जल होय अपार जुयोर तजो घन बीच प्रमानो । वाय थलावत
 वात विपे घरू पच्छिम की जलटा उर धनि । नैरित्त की जल हीन मही कुरि दछिन गाहि
 न प्रानि वराना ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ मेघ विविध वरने सुनिन काहु लहो न पार । कौनो ग्रंथ
 कृपाल कवि अपनी बुद्धि अनुमार ॥ इति श्री कवि कृपाराम कृत समयबोध समाप्तम् ॥
 शुभम् ॥ लिपिरिम कृतनद्वय स्वार्थ परार्थच ॥

विषय—नायिका के सुन्व से नायक प्रति वादल और वायु तथा विजली की चमक
 आदि में बारहो महीने पक्ष और तिथि तथा समय को लेकर वर्षा और उमस्ये होने वाले
 समय का भला बुरा परिणाम आदि वर्णन ॥

संख्या २४६. सर्व संग्रह, रचयिता—कृष्णविहारी (बठरका, उन्नाव), कागज—
 देवी, पत्र—५, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—
 ६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६३६, प्राप्तिस्थान—
 श्री रामअधारमिश्र, ग्राम—नगर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ पुरांपकारार्थं पशुबुद्धि ॥ जय करी छंद ॥ सिंह, वकुल,
 कुक्कुट धर काग । श्वान गीर्दभी की बुद्धि विभाग ॥ क्रमशः गुण इनके लेंलेहु । गुण ग्राही
 अवगुण तजि देहु । एक गुण है उत्तम वनराज । सब विधि सारत आपन काज ॥ प्रवल शशु
 पर मान्त धावा । क्रन जोग पर विलंबन लावा । वकला मे उत्तम गुण एक । सीखहु सज्जन
 तजि अविवेक ॥ सब इद्रिन कर सज्जम करो । देस काल बल हृदय धरो । वकुल समान

बाज को साधो । मीन मिथुन द्विद शुष्पी बांधो ॥ कुम्भक्य चारि बाठ सिरताज उचित समय
 जागत रम गात्र ॥ बैभुन भाग देत सुप पाई । आप बाक्रमभि करि करि लाई ॥ काया से
 लीकहु गुण पच । छिपकर मीधुन संग्रह रच ॥ सावधान निशि बासर रहि । पर विधास
 हाक मरि रहि ॥ कुम्भ पर गुन माहि प्रदान । स्वस्वकु मिळि संतुष्ट रहाहि ॥ गाढी निजा
 सत्यर जागत । मुत्र पुरीष मक्खिन मुत्र त्यागत ॥ लीनि बाठ गार्हभ से लेहु अति भम परमी
 बोझ सपेहु । शक्ति उच्च पर छटि न रापत । अति बंगुह बिचर बन राजत ॥ दो० ॥ कृष्ण
 विहारी मुहु क्य वे गुन २० प्रदान । जो नर मिश्चय उर धरे सो विदयी जगजान वृत्ति ॥

जंत—सामुद्रिक कक्षण कर्पण ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ सामुद्रिक कक्षण किप्पते
 ॥ दोहा ॥ हस्त पदुच बंतर विषे मीन मेप जो देप ॥ सो प्राणी ज्ञानी धनी पुत्रवत ह्यन वेप ॥
 तुका ग्राम अर वज्र जो कर मध्ये बरसाहि सुपि होय बाणिज्य मे पामे संसय माहि ॥ २ ॥
 पच चापकर वाककर अट अट कोय दरसाव नरगारी सुप पावहीं जीवन सकल कराव ॥ ३ ॥
 संल चक्र चक्र नासिका जो कर मध्ये होय । सो पटित जानहु अवसि जनीवत ली होहि ॥ ४ ॥
 कर मध्ये निपुल जो परे भाग्यवध आय । राज्य विग्रह यह प्रगट है मिश्चय राज्य कराव
 ॥ ५ ॥ अंकुश कुंडल चक्र जो पाणि मध्य परिजाय मिश्चय मोरी राज्य सुप वचन अल्पया
 बाव ॥ ६ ॥ गिरि कंकड नर मुंड सम पाणि पाणि मध्य परसाव ॥ राज्य मंत्रि कर बिन्दु है
 मिश्चय मुक्त सर साय सूर्य चंद्र गय अथ गृह कता नेत्र भय कोन । एकहु सङ्ग कर परी
 सुखी होय नर लीन ॥ ८ ॥ दोरे छंद ॥ चक्र एक बाबाळ द्वितीय गुणवत कराई । लीन चक्र
 प्यापार माहि सक्षमी नर पावै । चार चक्र निर्घनी पंच सर्वांग विख्याता । छत्र चक्र रस काम
 सत बहु सुप की आता ॥ अट चक्र लनु रोग नवन मूपतों कर लाई । परे चक्र दस हस्त
 निज पदवी सो पावै । कृष्ण विहारी मुहु कयो सिव मे जो गाया ॥ नरक्य पहिला हाथ
 मारि बायां बतकाया ॥ (हार चौरन लीका) कहु राधा नवहि हार चौराचो मज पुवती सबही
 में ज्ञानति धर पर है है नाम बतायो । श्यामा कामी, रमिका चतुरा, नवसाप्रसाद गारि ।
 सुपमा लीका अथच अर्जुन कुन्दा जमुना सारि ॥ कमला, तारा, विमला, चरा, चंद्रावलि
 मुकुमारि भमला, अरला, कुंभा मुख, हीरा नीला, प्वारि ॥ सुमका बहुला चंपा छहिला
 सावा, भावा, माम । मेमा रामा ईसा रया रंगा हरया नाम ॥ हुमिका रंसा कृष्ण ध्याना
 मीना मीना रय रका कुमुदा मोहन करुण्य छलता कीमात्प ॥ इतनेच मे कहु कीने लोभेच
 लाको नाम बताव । कृष्ण विहारी चार तुम्हारे में ज्ञानति सब दाव ॥ इति ॥ कियते सर्व
 संग्रह कृष्ण विहारी ह्य मनोहर बाजवेई सबत १९१६ वि० ॥

विषय—बीमासा, विरहिनी विद्याय सामुद्रिक, हार चौरन आदि बर्षक ।

संख्या २४७ ए. दानत्रीशा, रचयिता—कृष्णदास, कागज—साधारण, पत्र—१४,
 आकार—६ × ४२ इंच, पछि (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुच्छेप)—८९, पूज,
 रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, सिविकारु—१२६३ फ० = १८५९ ई० प्राप्तिस्थान—
 प० श्री बामुदेव पहिय, प्राम—कमास, डाकघर—मार्दीगंज, त्रिका—मतापगड (अथच) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ पोपी दान लीला ॥ दोहा ॥ श्री गुरु गनपति पद
 ४२

सुमिर । कहीं क्या नन लाट्ट । श्री कृष्ण लीला रचिर । परमानंद गुन गाट ॥ चौपाट ॥ प्रसु पून ब्रह्म अर्पडा । जाके रोम कोटि ब्रह्मण्डा ॥ जब मर्गुन ब्रह्म ब्रह्मा । मधुरा ते वृन्दावन बाए ॥ जहाँ देव लोक मय जेते । नय गोप गुवाग्नि तेने ॥ देवकी सुत नाम धराये । वसु देवहि रूप देवाये ॥ तब गोकुल दृष्टा कीन्ही । वसु देवहि धाजा कीन्ही ॥ तिन्ह नन्द भवन पहुंचाय । तहं नंद के लाल कहाए ॥ उट ॥ जन्म लीन्ह वसुदेव के ब्रह्म नंद के लाल नये । छपन कोटि जदुवंग माया ज्यू गोपी ग्वाल के ॥ श्री कृष्ण के नग बहुत बालक गौ चरावन गये । हरपि गावहिं दान लीला सुनहु सज्जन कान दे ॥

संत—॥ छन्द ॥ जन्म हनारो सुपन कीजे हरपि हरि चरन्ह परै । तुल की लाज गैवाडे अपने जन्म जन्म सेवा करै ॥ रहे मोहन मंग हिलि मिलि दीप ननि मानिक बरै । दृश्य राधा ज्यू ग्वालनि कुंवन जीवा करै ॥ उहुं गन मंडल प्रसु दाना । कन गंध धूप टै जाना ॥ तहं राधा पान पिआये । उनि धारनि मंगल गाये ॥ गान गीता नृतक नृदुवानी । रम कौतुक करै विधानी ॥ कोट ताल नृदंग बजावै । बोट नाथे चौर दुनार्ये ॥ तेहि मध्य क्रिसोर क्रिसोरी । टोट कृदन राधिका जौरी ॥ कीन्ह बंट बजाट आगि जोति बंद सब करै । गिरिजा इन्द्र प्रसाद पारै जन्म जन्म के दुप ठै ॥ जो नर गावहिं दान लीला सुनहि जो चिनलावही । होहि तीरय कपे को फल त्रिसु लोक निधावही ॥ इति श्री पंथी दान लीला कृष्ण कीड़ा सपूरन शुभमस्तु लिपा मित्ता वैमाप सुर्दा १३ मन १२६३ साल फामिली ।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १४ तक—यसुनातट के नर्मापत्य वन से गमन करने वाली गोपिकाओं से कृष्ण तथा उनके साथियों द्वारा दान का मांगा जाना । गोप वधुओं का प्रेम गर्भित चर्चा द्वारा कर्म रूप का भय दिखाना, तथा कृष्ण को दान वाली अर्नाति से रोकने का प्रयत्न करना । कृष्ण के द्वारा उनके प्रस्ताव का विरोध और अपना महत्त्व दिखाना । ब्रज वनिताओं का आत्म समर्पण तथा कृष्ण की स्तुति करना ।

संख्या २४७ वी. दानहीडा, रचयिता—कृष्ण दाम, कागज—देगी, पत्र—१६, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६३० = १८७३ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री भिन्नविहारी द्वै, ग्राम—नाजामक, टाकवर—रातेपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दान लीला लिप्यते । दो० । चलो सपी तहाँ जाइये जहाँ बसत ब्रज राज । गोरन वैचत हरि मिलै एक पथ ठो काज ॥ चौ० ॥ प्रसू पून ब्रह्म अर्पडा । जाके रोम कोटि ब्रह्मण्डा ॥ जब स्वर गुण ब्रह्म कहाये । मधुरा से ब्रंदावन आये ॥ जहाँ देवलोक सुनि जेते । तहं गोपी ग्वाल न तेते ॥ देवकी सुत नाम धरायो । वसुदेव ही रूप दिखायो ॥ जिन गोकुल इच्छा कीनी । वसुदेव ही आज्ञा दीनी ॥ जहं नंद भवन पहुंचाये । तहं नंद के लाल कहाए ॥ छन्द ॥ जन्म लियो वसुदेव के गृह नंद के लाल नये छपन कोटि जदुवंग माया ज्यू गोपी ग्वाल के ॥ श्री कृष्ण के संग बहुत बालक गौ चरावन वन गये । हरपि गावहिं दान लीला सुनहु सज्जन कान दे ॥

अंत—॥ श्री० ॥ जहाँ राम मंडक प्रमु टामा । सत गोपिन के मय माना । कोई
 गंध भूप र्क क भाषि । कोई वैवेच की सुगति बतावे ॥ काई ताक मृगुग बजावे कोई पुनि
 आरति मंगक गावे । किउ गीत नृप्य मनुबानी रास मंडक कृप्य बपानी ॥ जहाँ राधे कितोर
 कितोरी । हाक कृष्ण राधिका जोरी ॥ जहाँ राधे की पाव लखवि । कोई मावे खंवर तुरावे ॥
 छंद ॥ जहाँ रात्रेप्रसाद पार्व जन्म जन्म क हुक कट । राम स्थाम अपार जग में सेत
 नाम सबसागर तरे । आ नर गाव दान छीया सुनि और मुनाबही । बिशु लोक
 में धाम पावे कोटि जाय फल पावही ॥ इति दान छिष्य सम्बत १९३० बी० शंकर जी
 की शै—॥

विषय—श्री कृष्ण जी का स्वास्तिन से पाठ शोक कर दान लेना

संख्या २४७ श्री दानछीया, रचयिता—कृष्णदास कागज—शैली पीर्य,

पत्र—४, आकार—१×९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपुष्प)—६०,
 पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, किरि—बागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण मारापण छुट्ट, ग्राम—
 सुंशीरगंज बररा, बाकबर—मछीहाबाद, प्रिस्त—छतरगड ।

आदि—अंत—२४० की के समाप्त ।

संख्या २४७ श्री दानछीया, रचयिता—कृष्णदास कागज—साधारण पत्र—४,

आकार—१०×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुपुष्प)—२४ पूर्ण, रूप—
 प्राचीन सिपि—बागरी प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचरिणी समा, काशी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दान छीया ॥ चौपड़े प्रमु पूरज महा अर्लंज पाके
 रप कंट भड़े मंग जब मुर गुन मछ कइये मजुरा बदाबन भाये १ जहाँ दब काक मुनी
 केते सब गोपी गवान तेते देवकी सुत नाम बराधे बसुव्व ही एव इपाये १ प्रमु योडुरु
 इच्छा कीनी बसुव्व ही अया हीनी जब मन्द भवन पहुचाये बाबा नद के बालक भये
 कृष्ण कोट जनुबंस माया गुब गोपी गवाल के श्री कइन संग बहुत चालक रागु बराबन बन
 गवे हरप गावे दान छीया सुनी सदन काम दे ।

अंत—छंदः कृष्ण धंट बजाय भारती सार्व सत जोत बईत करे कृष्ण दास प्रसाद
 पारु बनम बन के मुख हरे । ज्यो गरुष दान छीया सुनै कित लगय के राम नाम अपार
 जग में ग्राम से भों सागर तिर ३५ इति श्री पोहारी किसन दास विरचिता दान छीया
 सम्पूर्ण ॥ १ ॥

विषय—कृष्ण जन्म, उनका गोकुल आना गाचराबन, गोपियों से इति कर दान
 मांगना । गोपियों का कंस की धमकी देना, कृष्ण की निर्मयता दिखाने हुए अपनी सक्ति
 का परिचय देना और गोपियों का उनका ईश्वर रूप में पूज्य करना ।

संख्या २४७ ई दानछीया, रचयिता—कृष्णदास, कागज—साधारण, पत्र—१०,
 आकार ३३×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुपुष्प)—८०, पूर्ण, रूप—
 प्राचीन, पद्य, किरि—बागरी, प्राप्तिस्थान—महत मोहनदास द्वारा बाबा पीतांबर दास,
 ग्राम—संतामरक, बाकबर—परियाबा, प्रिस्त—मतापगाइ (अथय) ।

संख्या २४८ ए: विहारी सतसई सटीक, रचयिता—कृष्णदत्त, कागज—देशी, पत्र—१९६, आकार—१२ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८०२, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२४ = १७६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नारायण सिंह, ग्राम—हुसेनपुर, तहसील—दिसवां, ढाकघर—पैतेपुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विहारी सतसई सटीक कृष्णदत्त कृत लिप्यते ॥ करम अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥ दो० ॥ मेरी भव वाधा हरौ राधा नागरि सोइ । जातन की झाई परे श्याम हरित धुति होइ । यह मगला चरन है तहां ग्रथ कर्ता कवि श्री राधिका जी की अस्तुति करता है राधा और हू है याते जा तन की झाई परे श्याम हरित धुति होइ । या पद ते वृषभान सुता की प्रतीति भई । सर्वैया ॥ जाकी प्रभा अवलोकत ही तिहू लोक की सुदरता गहि वारी । कृष्ण कहीं सरिसीरुहु नैन को नाम महासुद मगलकारी । जातन की झलकैं झलकैं हरिता धुति श्याम की होत निहारी । श्री वृष भानु कुमारी कृपा कै सुराधा हरौ भव वाधा हमारी ॥

अंत—लीला जुगुल किशोर की रस को होय निक्केतु । राजा आया मल्ल को ता कविता सों हेतु । माथुर विप्र ककोर कुल कह्यो कृष्ण कवि नाव । सेवक हौं सब कविन को वसत मधुपुरी गांव ॥ राजा मल कवि कृष्ण परि ठन्यो कृपा के ढार । भांति भांति विपदा हरौ दीनी लछि अपार । एक दिना कवि सो नृपति कही कही को जात । दोहा दोहा प्रति कहौ कवित बुद्धि अवदात ॥ पहिले हू मेरे यई हिय में हुतो विचार करौं नायका भेद को ग्रंथ सुबुधि अनुसार ॥ जे नीके पूरव कविन सरस ग्रंथ सुपदाय । तिनहिं छाड मेरे कवित को पढ़ि हें मन लाय । जानि यई अपने हिये कियो न ग्रंथ प्रकास । नृप को आयसु पाइ कै हिय में भयो हुलाम ॥ करैं सात सौं दोहरा सुकवि विहारी दास । सब कोऊ तिनको पढ़ै गुनै सुनै सविलास वडो भरोसो जानि मै गह्यो आसरो आय । याते इन दोहान संग दीनो कवित लगाय । उक्ति युक्ति दोहान की अक्षर जोरि नवीन करै सात सौं कवित में पढ़ै सु कवि परवीन ॥ मै अति ही डीढ्यो करौ कवि कुल सरल सुभाय । भूल चूक वधु होय सो लीजो समुझि वनाय ॥ इति श्री सतसई टीका कृष्णदत्त विरचिते संपूर्ण समाप्त । शुभम लिपतं शिवदास ब्राह्मण मथुरा निवासी संवत् १८२४ फाल्गुन कृष्ण ११ दशमी ॥ श्री राम राम राम राम ।

विषय—विहारी लाल की सतसई की टीका व्याख्या सहित कवित्त, सर्वैया, आदि में की गई है ॥

संख्या २४८ धी. सतसई टीका, रचयिता—कृष्ण कवि, कागज—देशी, पत्र—१३५, आकार—८ X ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४५५, पूर्ण या खडित । रूप—नालित, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प्रकाशसिंह जी महाराजा, ग्राम—मछापुर, ढाकघर—मछापुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—२४८ ए के समान ।

पुष्पिका नहीं है ।

संख्या २४२, भगवद्गीता भाषा, रचयिता—कृष्ण मणि, अग्रज—देवी, पत्र—
४३०, आकार—४×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुच्छेद)—८००,
पूर्ण रूप—मार्चीन, पत्र, छिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७६ = १८९८ ई०, छिपि
काल—सं० १८७५ = १८९८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गणेशविहारी मिश्र गोपालगंज,
लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ घृतराह उवाच ॥ दोहा—घर्म क्षेत्र कुह क्षेत्र में मिले
पुत्र के मात्र, संभव मो सुत पांडवन कीन कैस काज ॥ १ ॥

अंत—अनुभूत अस्ती है कई समय चालिस तीन । एक कद्यो दो उदि मिकि एक
घृतराह प्रवीन ॥ इति भगवद्गीता महात्म समाप्त संक्षेपी ॥ गीता की महिमा कोठ कदि न
सर्क जग मादि । कृष्ण कृपा स पाह्ये कृष्ण कृष्ण मणि गाह ॥ शुभ संवत्सरे श्री कृपति
विक्रमादित्य राम्ये १८७५ साके सालि बाहनस्य १७४० ॥ मासोत्तमे मासे मात्र पद पंच-
म्यायां शुभ वामरे शुभ मस्तु ॥ केवल पाठक विरायु रस्तु ॥ शुभ वहातु ॥ श्री कृष्णार्पण
मस्तु ॥ शुभ विप्र प्रसादात् ॥ श्री कृष्णायनमः ॥ श्री सीता रामाय नमो नमः ॥ इति

विषय—भगवद्गीता का भाषानुवाद ।

संख्या २५० प. रस रहस्य, रचयिता—कुरुपति मिश्र (अग्रज), अग्रज—
बाबामी देवी, पत्र—९५, आकार—१२×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण
(अनुच्छेद)—१९२४ पूर्ण, रूप—मार्चीन पत्र छिपि—नागरी, रचनाकाल—सं०
१७२७ = १९७० ई०, छिपिकाल—सं० १९४४ = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण विहारी
मिश्र, माहिल हाउस लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसरहस्य लिख्यते ॥ कविच ॥ धीसेहं कुंज बने
कवि पुत्र रहे अलि गुंजत पों सुत्र कीर्ति ॥ मंत्र विपाल यह बर माछ बिलोकत रूप सुबा
मरि पीरि ॥ आमिनि काम की कर्न गने जग आतन जानि मे ज्यो छिन छीने ॥ आनंद
पों उमग्योहं रहै विप मोहन को सुक देखिबो कीर्ति ॥ १ ॥ दोहा ॥ कुमति निरा क्रिय की
जरनि मंथत धीरठ धाम । सुमिरत फूँक कवि कमक बचरम पति धनस्याम ॥ २ ॥

अंत—दोप किते सूपननु के न्यारे कहेदि न जादि ॥ के कृपण पहिके कहे उनही
सोदि नमादि ॥ २८ ॥ वसत आगरे बगर में गुन लप सीक बिलसत । विप्र मधुरिया मिश्र
हे हरि चरमन को दास ॥ २९ ॥ अमू मिश्र छिन बंग में परस राम किमि राम । छिनके
सुत कुरुपति किमो रस रहस्य सुक धाम ॥ ३० ॥ किते साज है कविच के ममरत कहे
बछामि । ते सब भाषा में कहे रम रहस्य में अमि ॥ ३ ॥ सबत सबह से बरस कीये सधा
हैस । अतिक बढ़ी पकड़सी बाह चरनि चारीस ॥ ३३२ ॥ इति श्री मिश्र कुरुपति—
विरचिते रस रहस्य अर्थात्कार निरूपण नाम अष्टमो वृत्तः ८ शुभ संवत् १९४४ कार्तिक
शुद्ध-दशम्यां बुधे ॥

विषय—प्रथम गणेश आदि के बंदना के पश्चात् कसक सक्षण उद्यम काव्य मेह,
हठ सङ्घण विभाषानुवाच, अनुभाषानुवाच, संचारी भाषों की कारिका, रीत रम लहाँ

विभाव अद्भुत रस तहां विभाव, सांत रस तहा विभाव, राजरवि भाव, रमा भास भावा भास लक्षण, अलकार वर्णन, भाव को अंग व्यंग करिके प्रकट, सुन्दर लक्षण प्रकट, न्यून पक्ष लक्षण, शब्दार्थ प्रभद लक्षण, धर्म लुप्त, धर्म वाचक लमुज्वा । द्वितीय अध्याय में शब्दार्थ निर्णय ।

तृतीय अध्याय में ध्वनि, रस और रसाभास आदि का वर्णन । चतुर्थ अध्याय में व्यंग । पंचम अध्याय में दोष कह गये हैं । छठे में गुणों का वर्णन । सातवें शब्दालंकारों का आठवें में अर्थालंकारों का वर्णन है ।

— — —

संख्या २५० वीं रस रहस्य, रचयिता—कुलपति मिश्र (आगरा), कागज—देशी, पत्र—१५०, आकार—११ $\frac{३}{४}$ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुपुट्टुप्)—२६२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२७ = १६७० ई०, लिपिकाल—सं० १६५२ = १८६५ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाहौरेरी प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि-अंत—२५० पृ के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री दास कवि विरचिते रस रहस्य अर्थालंकार निरूपणं नाम अष्टमो वृत्तात् समाप्त शुभ मस्तु संवत् १९५२ जेठ सुदी ४ भाँमवार ॥

संख्या २५० वीं रस रहस्य, रचयिता—कुलपति मिश्र (आगरा), कागज—साधारण, पत्र—७५, आकार—१३ $\frac{३}{४}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुपुट्टुप्)—२४९५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२७ = १६७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री महादेव प्रसाद पाडे, हाई स्कूल अध्यापक, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि-अंत—२५० पृ के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है :—

इति श्री मिश्र कुलपति विरचिते रस रहस्य अर्थालंकार निरूपण नाम् अष्टमांशुत्तान्त सम्पूर्णम् । समाप्तो ऽय प्रथ शुभमस्तु ।

संख्या २५१. रामायण महात्म्य, रचयिता—कुटनप्रसाद, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—३२, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपुट्टुप्)—३३०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१३ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृपानारायण शुक्ल, ग्राम—मुंशीगंज कटरा, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ सरस्वत्यै देव्यै नम ॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः अथ रामायण महात्म्य लिप्यते ॥ दोहा गणपति गुरुगोविन्द गो गिरिजा गिरिजा नाथ ॥ सुमिर आन पद कमल पुनि पुनि नावहु माथ ॥ १ ॥ दोहा ॥ रामायण महात्म्य को पूरण करता जान ॥ ताते दिन बहु फारती मानस कायक वानि ॥ २ ॥ सोरठा ऐसी सुमति न लेस

दीजो ॥ मिलत सजन के वट घुटे । कितनी करौ सुमार । ब्रह्मा विष्णु महेश कहि । भोजन करौ कुमार ॥१॥ इति पातरि छुटावन संपूर्ण समाप्तं ॥ सवत् १६१५ ॥ वैशाख वदि माव-
स्या, मंगलवार लिपितं मिश्र छेदीलाल ॥ पठनार्थ इमर्त लाल ब्राह्मण सुभं ॥

विषय—(१) पृ० १ मे पृ० २२ तक—पत्तल छुटावन—म० सु, राम तथा लक्ष्मण के जनकपुर आगमन समय से धनुष भग, जयमाल धारण । वरात आगमन, चारौठी । विवाह तथा भांवरि पर्यंत विषयों का साधारण वर्णन । ज्यौनार के समय स्त्रियों द्वारा वांधे गये पकवानादि को टुट्टाकर स्त्रियों के वस्त्राभूषणादि को वांधकर वरातियों को भोजन करने की आज्ञा देना ।

पृष्ठ १ में पुस्तक निर्माणकाल :—एक सहस्र पर आठ सै । संवत् सुभ तेतीस ।
दुतिया सुदी वैशाख में । कृपा करी जगदीस ॥

संख्या २५२ वी. ऊपा चरित्र बाराह खरी, कागज—साधारण, पत्र—१८, आकार—
८ ३/४ × ५ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपटुपू)—२००, रूप—नवीन,
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—लाला गजाधर प्रसाद, ग्राम—कूराडीह, ढाकघर—
परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ऊपा चरित्र बाराह परी ॥ कुज जन की लिप्यते ॥
कके ॥ कृष्ण कुवर गोविंद मनाऊं । सकर गवर गजानन धाऊं ॥ नव दुर्गा धौलागढ़ रानी ।
देहु मातु मोहि निर्मल वानी ॥ सब तीरथ मुनि सहस्र अठासी । बढों नाय-शिक्ष चौरासी ॥
ब्राह्मादिक सनकादिक धाऊं । मेस सहस्र मुप कूसिर नाऊं ॥ सिंध सुता जगदीस के । वेद
चरण चितलाय । कठ बसों जन कुज के । सुप निधि सारद माय ॥१॥

अंत—छत्रपती रथ सों रथवारे । पायक सों पाय करन मडे ॥ श्रोणित नदी वही
अतिभारी । मच्छ कच्छ गज सुदि प्रचारी ॥ भूत प्रेत गनलाय पिसाचा । भैरव संग सदा
सिव नाचा ॥ भूत प्रेत जोनिन इतरावें । भरि भरि उदर ईम गुण गावें ॥ मुठ मलेकर
ताल वजावें । जयुक गिद्ध विद्ध गुण गावें ॥ रन बाजे बाजे चहुं ओरा । गरजें सूर चिंधारे
घोरा ॥ डिमिगि डिमिगि धरनी कपें मेस सहस्र मुप हरिहर जपें ॥ भयो कुलाहल सचद
जहें । भिरत वान सुंवान । सानों दामिन गरजिकें । गिरति धरनि पर आन ॥

विषय—ऊपा और अनिरुद्ध के प्रेम और विवाह की कथा ।

संख्या २५३ ए. सागीत बालचरित्र, रचयिता—कुवरसेन (दिह्यी), कागज—देशी,
पत्र—१४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपटुपू)—
१७५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९६=१८३६ ई०,
लिपिकाल—सं० १६०२=१८४५ ई०, प्राप्तस्थान—लाला सीताराम, संगीतशाला, ग्राम—
दीनापुर, ढाकघर—गोला गोकर्ननाथ, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सांगीत बाल चरित्र कृष्ण जन्म दशम स्कंध भाग-
वत का लिप्यते ॥ सदा भवानी दाहिनी गौरीपुत्र गणेश, पांच देव रिच्छा करैं ब्रह्मा विशुन
महेश ॥ गुरु को सीस नवाय के अपनी मत अनुसार । लीलाकरूं मैं श्याम की पूरण ब्रह्म
औतार ॥ पानी में औ पवन में चद्र सूर्ज में जोता जग भग सब संसार में । तेरा रूप

जन्म ॥ जो पाको चित्त स पड़े हरि से कबे प्याम । वापर कृपा करेंगे श्री कृष्ण भगवान् ॥
 इयाम् वरूप मगक करन सिर पर सोई ताब । दाता सकल बहान के श्री कृष्ण महाराज ॥
 प्रभु जी श्री कृष्ण भगवान् आप संसार के दाता । तुमी गरीब निवाज निवाळ तुमझे माया ॥
 प्रभु जी हाब । तुम्हारे खाब तुम्ही को जोइ हाया ॥ तुम सबके सिर ताब और सब के
 पिनु माता ।

अंत—इसी तरह जाते तहाँ धनका श्री बनइयाम प्रात सभै सब पेनु छै और
 आते नित इयाम ॥ गाव जो कोई बाकपन नित पाये आराम । रहे बस उसभ सदा इया
 करें श्री इयाम ॥ करें परीक्षित अर्थ पों मुनिये हीन इयाळ । नत्र बबता के मन बसे
 कृष्ण बद् गोपाल ॥ स्वामी जी कृष्ण चंद्र गापाल प्रीति जो इयाम स आई । कइको से
 बीइ नेइ प्रीति भरतारन भाई ॥ स्वामी जी नहीं कुबे का मोह प्रीति संसार इटाइ । ईगी
 यही मुराव मिछि हई कुंवर कइआई ॥ कृपा करके मुझमे क्यो जल्की ताइ बह हाइ ।
 ई सैकक हूँ आपका मुनिये हीन इयाळ ॥ जवाब ॥ कहां रहा करबंदु फिर कहां रही फिर
 नारि । मन आकर बस गया जब प्यारा दिसवार ॥ इति श्री सांगीत बाळ चरित्र कृष्ण
 चंद्र भगवान् संपूर्णें संवत् उबीस सौं छामाठर फागून कृष्ण दुईज जति सुंवर मंत्र कियो
 संपुण्य नाम कृष्ण चंद्र ने पूरी भास ॥

विषय—कृष्ण जन्म (गीतों में)

संख्या २५३ थी. सांगीत गोवर्धन लीला, रचयिता—कुंवर सेन कवचस्य (जिह्वा),
 कागज—देही, पत्र—४०, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण
 (अनुपुष्प)—६२३, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य छिपि—नागरी, रचनाकाळ—सं०
 १८९४ = १८३० ई०, छिपिकाळ—नं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—साका सीता-
 शम, संगीतधाका प्रांम—दीनापुर, बाकबर—गोटागोकरबनाय, किता—श्रीरी ।

अधि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गोवर्धन क्लिप्ता छिप्यते ॥ हो ॥ कई श्री गुरु-
 देव श्री मुनिये प्रया पाळ । मोती की बरपा करें प्रभे । हीनइयाळ ॥ प्यारे जी ऐसे हीन-
 इयाळ मास कवचि का जाबा । बुधा भगन संसार जइान गुंजवार बनाया ॥ राजा जी
 श्री नंद महाराज प्यान ठनके यह आया ॥ सब ही नत्र के लोग यही मन भाई समाया ॥
 जय्य करें हम नत्रमें सब ही हुए सवार । बड़े बुजबासी सब ही समा करी गुंजवार ॥ प्यारे
 जी समा बनी गुंजवार मन ही जसबाब मंगाये । कृष्णचंद्र महाराज लोग आदर से बिछाये ॥

अंत—प्रभु जी कृष्ण चन्द्र महाराज करी कृष्णसत श्री स्वारी । राब कर सिर पर
 ताब करी हस्ती पै सवारी । प्यारे श्री काम पेनु छे संग और साथी सिर बारी । कई
 जमुना की सहर आई का बाइ बहारी ॥ अथागमन से सृटे बही हो नत्र सागर पार ॥
 बरप्य कबस का कुंवर आसरा रये नंद कुंवार ॥ इति श्री सांगीत गोवर्धन लीला कुंवर सेन
 कृत संपूर्ण समाप्त संवत् १८९४ वि० छिप्ता कुंगौराम पंडित भवानीगंज संवत् १९३१
 काठिक शुक्ल १३ मंगलवार शुभम् ॥

विषय—गोवर्धन पूजा की राजा ईंद्र के किये होती थी तो पूजा भी कृष्ण चन्द्र जी
 ५०

द्वारा बंट कर देने पर इन्द्र का कुपित होकर ब्रज पर अग्यड मेह का वरमाना श्री कृष्ण जी का वृज की रक्षा करना इन्द्र का मान मर्दन होना भगवान श्री कृष्ण जी का इन्द्र आदि की स्तुति करना आदि वर्णन ।

संख्या २५४ प. गीता, रचयिता—कुमलसिंह, ढागज—साधारण, पत्र—४९, आकार—९ ३/४ × ६ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३१, पूर्ण, रूप—जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—म० १६२० = १८६५ ई०, प्रास्तित्यान—श्री गयादीन सिंह, ग्राम—नौहर हुमैनपुर, ढाकवर—रग्गहा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेश जी महादे । श्री रामजी महादे । श्री पोथी गीता लिप्यते ॥ श्री X X X ॥ चौपाई ॥ श्री गुरु विभु के चरन मनार्थी । जेहि प्रमाद गोविंद गुन गावों ॥ श्री कृष्ण अरजुन रस वानी । गुरु प्रमाद कहाँ कष्ट जानी ॥ एक मर्म श्री जाई राई । अर्जुन साय भए इक टाई ॥ धूप दीप लै भारत कीन्हा । चरनोदक लै मर्थ दीन्हा ॥ हाय जोरि अर्जुन भौ टाढ़ा ॥ प्रेम भगत हिरटे में वाढ़ा ॥ टोहा ॥ नदलाल के चरन जिव, पावत पद निरवान । मरुल उटै बल लाण्ड, सुनाँ जो चनुर सुजान ॥ अरजुन कहे दुवो कर जोरी, परमल सुन विनती मोगी ॥ मंथ एक अहे प्रसु मोरे । कहत ही टाँनाँ कर जोरे ॥ श्री कृष्ण बोले विहँसाई । अरजुन कहाँ कहाँ समुझाई ॥ टोहा ॥ राम नाम गीता कहै, अरजुन की उनमार । सकल सिष्ट सुनु चित्त दे, मुक्ति होइ समार ॥

अंत—साधु चरन मनहिं मी रापा । प्रगट होण मन बहुत न भापा ॥ तवहीं तन मन भए उदासा । साधु चरन करौ मैं आसा ॥ एहि जो रापे सब चित्त लाई । तव दया मय कीन्ह गोसाई ॥ जब कष्टु ज्ञान हटै मह आवा । अर्जुन गीता ते मन भावा ॥ एहि विधि गुरु दया तव कीण्ड । समे छुटि निरमल तन भणऊ ॥ टोहा ॥ गुरु देआल मो कहँ, छूटि गये मव प्रान । राम नाम चित पावँ, और न हिआ मैं आन ॥

इति श्री पोथी गीता संपूरनम् ॥ समाप्तं ॥ शुभ मन्तु ॥ सिद्धिरस्तु ॥ संवत् १६२२ ॥ मितौ चैत्र सुदी ॥ ११ ॥ गुरुवार ॥ हस्ताक्षर लल्लूग्राम पंडित ॥ श्री मधुरा जी मध्ये बलदेवजी के मठिर के पीछे वैठक दुकान ॥ श्री रामजी ॥

विषय—(१) पृ० १ से १५ तक—मंगलाचरण, मानव योनि की सर्व श्रेष्ठता, उत्तरोत्तर उसका श्रेणि विभाग, तपस्या के काठिन्य का वर्णन, राम नाम माहात्म्य, भक्त माहात्म्य मोहन नाम की व्याख्या, भक्ति भाव वर्णन । भक्त के कष्ट से प्रभु का परिताप ।

(२) पृ० १५ से २६ तक—गुरु करने आदि का विचार, गुरु से प्राप्त नाम की महिमा ।

(३) पृ० २६ से ४४ तक—पाप विचार (हत्या तथा क्रणादि वर्णन) पापों के फल, धर्मात्माओं का जीवन, प्राणी के चण्डाल होने का कारण, दान फल वर्णन ।

(४) पृ० ४५ से ५६ तक—भजन के लिये आसन विधान, जप विधान, माला विधान, भोजन में छुआवृत का विचार, भोग लगाने का विधान, जापक भक्त का महत्त्व, नाम का प्रधानत्व, पाप पुण्य का भेद ।

(५) पृ० ५९ से ६६ तक—वंचरज, ज्ञान ध्यान प्राप्ति का उपाय, भगवान के मन पर अधिकार रखने वाले भक्तों का वर्णन, पवन विचार ।

(६) पृ० ६६ से ९८ तक—स्वाप्त जन्म की कथा, महाब्रह्म-पुराण का चर्चारा, संकटों के भास होने का उपाय, गज-माह आख्यायक अन्य भक्तों के संकटों के दूर होने का वर्णन, पुना नाम श्री महिमा अर्जुन की विनय, प्रिय की उत्पत्ति का कथन व मम वर्तमान भाषा, प्रिय का रचयिता—“ब्रिंह पृ भाषा कुसल सीध नामा । श्री गुरुदेव श्री सीता रामा ॥”

संक्षेपा २४४ वी अर्जुनगीता, रचयिता—कुसलसिंह, कागज—साधारण, पत्र—
४०, आकार—२३ × १३ इंच, पंक्ति (मति पृष्ठ)—२, परिमाण (जपुष्प)—१०८०,
पूर्ण, रूप—श्रीवर्ण शीर्ष, पद्य, लिपि—मागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामवराम, अध्यापक प्राहमरी
स्वरू, ग्राम—भाममठ, बाकबर—गडपारा त्रिका—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री अर्जुनगीता प्रारम्भा ॥

हे वादव गोपी रमण नील अक्षर तनु स्वाम । अर्जुनगीता रचत हीं । करिके तुमहिं
प्रणाम ॥ १ ॥ विष्णु हरण सब सुख करण, गणपति प्रथम मन्त्राय । छन्द बद्ध गीता करहुं
भाषा मई सुप दाय ॥ २ ॥ मोक्ष हेतु है साध करहुं, गीता करौ विचार । अक्षयनीय है हेतु
जस । कहीं बुझि अनुसार ॥ ३ ॥ गुरु के पद पंक्त निहाइ । तिनहीं को चरि ध्यान । सर्व
विष्य पावन करन । भार्या गोता ज्ञान ॥ ४ ॥

अंत—श्री गोविंद श्री पार्थ मित्रि, परम गुरु यह श्रीगुरु । तिनके चरण कमल चित
कुसाळ सिंह चित हीगुरु ॥ श्री मुख गीता जगुत बानी । गुरु प्रसाद भाषा रस जानी ॥
बुझि ज्ञान गुरु हमको हीगुरु । उत्तम प्रिय देखि के हीगुरु ॥ नाम मेह हम गुरु से पाया ।
दया हीगुरु ज्ञान माहिं आया ॥ तुमरे हीगुरु साधु की सेवा । तिमही दया पायई सेवा ॥
देखइ बुझि जो इत्ये माही । राम नाम से आन न आही ॥ अध्या माया मिथ्या जाना ।
पुनि पाये शंकर कर ध्याया ॥ देखैतैं जग कोठ पिर माहीं । मिथ्या करि जानेतैं चित माहीं ॥

× × × ×

गुरु द्वाळ भो मोहि पर । छुडि राया सब भर्म । राम नाम चित जामेई । अबर न
कीगुदेई कर्म ॥ सब पोत्रे ना मिलि सकै । ना कोठ पाये बास । पाये अर्जुन मठ जे । छुटी
भीर की जास ॥

इति श्री कुसलसिंह विरचित अर्जुन गीता समाप्ता ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—संगल्पचरण, अर्जुन का प्रश्न सबसे बढ़ा
कीन है ?—भगवान का उत्तर मेरा नाम जग्ने वाला, नाम की महत्ता का ब्यथ ।

(२) पृ० ९ से पृ० ३४ तक—भक्त के गुणों का वर्णन । भक्तों की महत्ता और
उनके परमात्मा के सामीप्य का वर्णन, गुरु की महिमा, भक्तिभाव का वर्णन, गुरु बनने का
विधान, गुरु की स्तुति, पापों का वर्णन और उनमें मुक्त होने का उपाय ।

(३) पृ० ३५ से पृ० ५६ तक—बृह विधान, पाप पुण्य उतपत्ति, प्राणी के चंदाक

होने का वर्णन, दान विधान, ध्यान करने के आसनादि का विधान, वंदनाश होने के कारण, पंचरत्न का वर्णन, पवन-गवन, आदि कुछ योग संबंधी प्रयोग, व्यास की उत्पत्ति का वर्णन ।

(४) पृ० ५७ मे पृ० ८० तक—व्यासकृत अष्टादश पुराणों के नामादि का कथन, संकटों से भक्तों की रक्षा का विधान और गज ग्राह की कथा का सूक्ष्म वर्णन, अन्य भक्तों के संकट मुक्त होने का वर्णन, अन्य कर्म धर्मों का विवेचन, ग्रंथ के पठन-पाठन और श्रवण-मनन का फल ।

संख्या २५५ ए. गोपीचंदलीला, रचयिता—लछिमन दास, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—६ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, रूप—प्राचीन, दुर्बोध, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०५ = १८४८ ई०, लिपिकाल—सं० १६१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभरोसे, ग्राम—केवलपुर, जिला—खीरी ।

आदि—दो० ॥ हुकुम हमारा मानिये तुम क्यूँ होत अवेर । लावो कुवर बुलाय के सो न्याव करेंगे फेर ॥ प्यारे जी न्याव करेंगे फेर अरज एक सुनो हमारी । भोजन भये तयार भरी सोरन की झारी ॥ प्यारे जी क्यों ठाढे दल गीर । करौ क्या सोच विचारी वो मेरे भरतार नारि मैं उनकी प्यारी ॥ दो० ॥ हम नौकर सरकार के दई नौकरी राय ल्याउ कैमे बुलाय के सो राजा बहुत रिसाय ॥ रानी जी राजा बहुत रिसाय वैठि जहं न्याव चुकावै ॥ लेकर चावुक हाथ मारि मेरी राल उड़ावै ॥ रानी जी तुम हो राज कुवारी हुकुम तेरा री बजाऊं । चार घड़ी गम खाउ बोल राजा को लाऊं ॥

अंत—दो० ॥ गुरु जालंधर सुमिरि के गये मढ़ी के पास लछिमन की आधीनता पूरन हो गई आस ॥ प्रभु जी पूरन हो गई आस मिले जब सत गुण खासे ॥ सुनो सभा चितलाय रहे ना भूखे प्यासे ॥ माता धन्य सरस्वती माय सोई हिरदे परगासे । लछिमन है आधीन मिट गये संकट सासे ॥ इति श्री गोपी चंद लीला संपूर्ण शुभम् सवत १९०५ वि० कृष्णएकादस्याम श्रावण मासे लिपत शंभूदयाल वाजपेई सवत् १६१५ वि० ॥

विषय—गोपीचंद की कथा ॥

संख्या २५५ घी. गोपीचंद भरतरी, रचयिता—लछिमन दास, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०५ = १८४८ ई०, लिपिकाल—सं० १६३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम, संगीत शाला, ग्राम—टीनापुर, ढाकघर—गोलागोकरन नाथ, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनम् ॥ अथ गोपीचन्द भरतरी लिप्यते ॥ शुभ घड़ी वर्णन करू धर देवी का ध्यान । गोपीचंद लीला कथू सुधारा नगर सुथान ॥ चौबोला ॥ प्यारे जी धारा नगर सुथान भये गोपिचन्द राजा । तपे धर्म के राज करत हैं सब के काजा ॥ प्यारे जी हस्ती हस्ती धूम द्वार वजे तेरे नौवत बाजा । लछिमन हैं आधीन प्रभू मेरी राखा

राजा ॥ जबाब रानी का समयसिंह डोयीनी सन से ॥ रतन कुंवर रानी कई सुनी समयसिंह
बात । तुम जाबा दरबार में ती राजा छिवाबो साथ ॥ प्यारे जी राजा छिवाबो साथ कई
कामनी रंग भीनी । राम रसोई त्पार आज ई मीने बीनी ॥ प्यारे जी जगना तुम्ही जकर
आज तुम सू कह बीनी । रिश्रि आये परसाह रैन मोहि भई बिहीनी ॥

अंत—॥ चौबोला ॥ देस देत रमते किरें सात द्वीप सब पंड । फिर कर पीछे देल
स्त्री तो अगिन भई परचन्द ॥ बाई जी अगिन भई प्रचन्द महक की जगत भठारी । राजा
बहुत रिसाप भई सय कंचन करी ॥ प्रभू जी बहन छे कैरी पीट किये ऐमे कल भारी ।
रोषत छोड़ी बहन मिट्टी होकर सूरत प्यारी ॥ होहा ॥ गुरु जारुंधर को सुमिरी छे गये
मटी के पास । छठिमन की आधीमठा तो पूरण हो गई नाम ॥ चौबोला ॥ प्रभू जी पूरण
हो गई आस मिछे जब सतगुरु खाते । अंत सनु सची फित काप रहे भा मूये पिप्यासे ॥
माता जी बन्ध सरम्बती माय साईं हिरदे पर गामे । छठिमन है आधीन मिटे सब संकट
सांमे ॥ इति ॥ छठिमन दास कृठ राजा गोपिचन्द भारतीय बीला संपूर्ण समाप्तम्
स० १२०५ वि० छिछत देवी राम पंडित मबानी गंज सम्मत १९३१ कार्तिक शुद्ध १५
संगकरवार शुभ ॥

विषय—राजा गोपीचन्द की लीला वर्णन ॥

संख्या २३५ सी प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—छठिमन कागड—देसी, पत्र—
४८, आकार—९×६ इंच, पन्डि (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेप)—२२२,
पूर्व वा अंकित । रूप—साधारण, पद्य, छिपि—जागरी, रचनाकार—सं० १२०० =
१८४३ ई०, छिपिकास—सं० १९१३ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—५० गंगा शनैदा, ग्राम—
कुर्गापुर, बाकपर—भोयक, त्रिमा—खीरी ।

आदि—कुम्हारी वाक्य प्रह्लाद से ॥ पैदा कर पारुन करे करे जगत प्योहार
जलप पुष्ट कोई ना करै आधी जोत अपार ॥ प्यारे जी आधी जोत अपार रबी जिन जग में
माया । पानी से नर देह रची जिन कंचन काया ॥ प्यारे जी सब घट रहे बिराज पार जिनका
महि पाया कोइ राम नाम रह गया मे सेब को लाया ॥ प्रह्लाद बचन कुम्हारी से ॥ क्यों
छोटी झक मारती कई बचन नमस्ताय भगव बईये भा बई तुरत मस्म हो जाय ॥ कुम्हारी
री तुरत मस्म हा जाय बचने बाई बचाये तोह कई अपराध जीवते जगन पढ़ाई ॥ कुम्हारी
री क्या हमकी पुनिपाद नाम बचने कहछाये । ये बचन के बाई करु के निर्यदि आये ॥
कुम्हारी का बचन प्रह्लाद से ॥

अंत—प्रभू जी राज रिये प्रह्लाद तपस्वा पाछी बीनी ॥ स्मृती घर रिये हाब
जानेने अस्तुति बीनी ॥ अस्तुति करिके देवता सब गये निज निज स्वान । प्रह्लाद सीखा
पूरी भई हरि भये अंतर प्यान ॥ प्रभू जी हरि भये अंतर प्यान रूप नरसिंह दिवा के
सची मबी मुन सेव कही मी लीला गाई ॥ प्रभू जी कई छठिमन कर जोर भजो हर सीस
बबा के जम की कट जाप प्राप्त बगो ईशु में जाके ॥ इति श्री प्रह्लाद बीला संपूर्ण समाप्तम्
संवा १९०० कृष्ण अनुईसी माघ माये छिपन शम्भुपाल बाजपई नंबन् १९१५ वि० ।

विषय—प्रह्लाद जी की ईश्वर भक्ति ॥

संख्या २५५ डी. प्रह्लाद सागीत, रचयिता—लक्ष्मिन टाम, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपट्टप)—१००२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०० = १८४३, लिपिकाल—सं० १९२९ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—लाला मीताराम, सागीत-शाला, ग्राम—दीनापुर, टाकघर—गोला गोहरन नाथ, जिला—सीरी ।

आदि-अन्त—२५५ सी के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री प्रह्लाद लीला संपूर्ण समाप्त' लिप्ता भैरोंसिंह विसेन १९२९ वि० ।

संख्या २५६. शकुंतला नाटक, रचयिता—लक्ष्मण सिंह (आगरा), कागज—देशी, पत्र—१३५, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपट्टप)—१९९४, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१८ वि०, लिपिकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री ज्ञानसिंह, ग्राम—वरगाँव, टाकघर—नीती, जिला—सीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ शकुंतला नाटक लिप्यते ॥ प्रस्तावना ॥ रगभूमि में ब्राह्मण आशीर्वाद देता हुआ आता है ॥ छप्पय ॥ १ ॥ आदि सृष्टि इकनाम नाम इक विधि हुत वाहन । वहुरि नाम जजमान जोटि द्वै काल वतावन । एक सर्व व्यापीक श्रवन गुन जात पुकारा । भूत प्रकृति फिर एक जनति अग जग संसारा ॥ गनिग जु जीव आधार पुनि अष्ट मूर्ति इनते कहत । संकर महाय तुम्हारी करै नित प्रति तिनहीं में रहत ॥ अर्थ ॥ जिसको करता ने सृष्टि की आदि में रचा अर्थात् जल और जो विधिपूर्वक दिये हुए हव्य को लेता है अर्थात् अग्नि और जो जल करता है अर्थात् होत्री और दोनो जोति जिनमे समय विधान होता है अर्थात् चंद्र और सूर्य और वह विश्वव्यापी जियका गुण शब्द है अर्थात् वह आकाश और वह जियकी प्रकृति बीज की वृद्धि है अर्थात् पृथ्वी और वह जो जीव का आधार है अर्थात् पवन इन आठ मूर्तियों मेमे जो ईस प्रत्यक्ष है अर्थात् महादेव जो सोई तुम्हारी रक्षा करै ॥

अन्त—शिखरनी—प्रजा काजे राजा नृत सुकृत पै उद्यत रहैं । वड़े वड़े सानी हित सहित पूजैं सरसुती । उमा स्वामी शंभू जगत पति नीलोहित प्रभू । छुटावै मोह को विपति अति आवागवन सों । कश्यप तथास्तु सब वाहर जाते हैं । १९९ का अर्थ राजा लोग अपनी प्रजा के सुख निमित्त अच्छे काम करे वेद पाठी ब्राह्मण सुरसुती की सेवा करते रहैं और नील लोहित रंग महादेवजी सुझे आवागमन की पीड़ा से छुटावै ॥ इति श्री अभिज्ञान शकुंतला नाटक राजा लक्ष्मणसिंह कृत संपूर्ण समाप्त । लिपतं ठा० ज्ञानसिंह वटेश्वरं निवासी निज पाठनार्थ सवत १९२३ वि० ॥

विषय—शकुन्तला और राजा दुष्यन्त का आश्रयान ।

संख्या २५७. श्रीकृष्ण रत्नावली, रचयिता—लक्ष्मीपति, कागज—देशी, पत्र—१३३, आकार—९ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुपट्टप)—१५९६,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सम् १७३८ (स० १८९३),
लिपिकाल—स० १८६०, प्राप्तिस्थान—श्री सिद्धपीठ बाजपेठी ग्राम—भीरगाबाद, बाक-
घर—भीरगाबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री कृष्ण रत्नावली लिप्यते ॥ श्री गुरु परण
सराज रज पर धरौ सीस धर जोरि ॥ कृपा सिन्धु गुण ईमि है छद्मी पति के बारी ॥ करन
चर्ही भाष्य विमल हरि अहून संवाद । कृष्ण रत्नावलि नाम धरि केवल गुण परसाय ॥
श्री० ॥ बन्दी व्यास देव कृपि चरणा । विमल विवेक दन मय हरणा ॥ जाके चरण छडज
जगपावन । गीता अर्थ सुपास सुभावन ॥ नामा चरित केसर कलि सोपन । हरि गुन कथा
बिहित संवाचक ॥ सगजव पद पद गुञ्जत पासा । दिन दिन पावत परम बुलासा ॥ ऐसे मारत
कमल प्रगासा । पुष्य करन जग पाप विनासा ॥ बसुदेव सुत सीं देई अपारा । जो चाई
मुष्टिक को मारा ॥ देवकी हृदय आनंद के करता । बर्ही कृष्ण जगत गुरु भरता दी० ॥
मूक बहू पड़िबो करं वंगु सियर बदि जाय । जाके कृपा ते होत है छछम ताहि सिरमाह ॥

अंत—श्रीहा ॥ जहाँ कृष्ण जोगेश्वर । जहाँ पारय धनु धीर । तहाँ विजय श्री
संपती मम मति यह सुनु धीर ॥ मंत्रय कथा सकल कथा समुझाई । घुतराटक से कथा
जुझाई ॥ ईश्वर परम पुरुष मय सेह ॥ करता कारन कारन हेह ॥ नेति नैति कहि भुति
जेहि गाई । माहादिक जेहि अंत न पाई । उठपति पाठन मरन अमेपी ॥ जरा मरन सबसे
ज्यो म्यारा । अहून कैसी बड़ो विपारा ॥ रय हाकहि प्रभु आपहि जाके । को जीते कहु
जग में हाके ॥ निज मुप से जो गीता गाई । मक्ति भादि करि जोगु मुनाई ॥ कर्म अकर्म
विचर्म विचारी । ग्याम अग्याम न विद्याम विचारी ॥ दो० ॥ हीन बंधु निज बदन से
गीता ग्याय मुनाय ॥ जो जानै जग जांग यह बंध मुक्ति हुइ जाय ॥ इति श्री गीता कही
हरि अहून से गाय । अष्टादश अध्या विमल परमाधि समाप ॥ हर भूपन हर बदन बर
हर ठक हर सिर रूप । येते अंक मिरुप के भीते साके मूप ॥ हर रिपु तिथि हर नयन
मुम माम पछ सनिवार । लखन कृष्ण रत्नावली पोयी कियो तियार ॥ नाम जग सुर श्रीमा
येते अंक बीपाई । भूत भूत पर ते बिई शोहा मान जनाई ॥ दोहा २३५, श्री० १७८८
ज्यायेकर २०४३ ॥ छिपट श्याम लाल संवत् १८९० मिठी माह सुहु पुनिमा शुक्रवार सप्त
११४० साक माह २८ ॥ समाप्त ॥ श्री राम राम राम ॥

विषय—श्रीहा भाषा बीपाई में गीता वर्णन ।

संख्या २३८ वैद्यक सार, रचयिता—कश्मीरसाह तिबारी (सरायराजा, प्रताप
गढ़) अंगर—साधारण, पत्र—३४, आकार—८ × ६, इंच, बंधि (प्रति पृष्ठ)—१८,
परिमाण (अनुच्छेद)—१९४४ पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री
शायीराम, अज्यापक प्राइमरी स्कूल ग्राम—जाममऊ, बाकघर—गीठबारा, जिला—
प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक सार लिप्यते ॥ मुहरसन चूरन ॥
अचरा ॥ हरा ॥ बहेरा ॥ हरदी ॥ बाक हरदी ॥ अटकटका ॥ कचूर सौंड़ी बड़ी ॥
मिरिच ॥ पीपरि ॥ पीपरामूल ॥ मुर्छ ॥ गुग्गुलि ॥ जवाहा ॥ कुट्टी ॥ पीतपापरा ॥

नागरमोथ ॥ वनपस्टा ॥ सुगन्ध चाला ॥ नीम के छाली ॥ पुहकर मूल ॥
जेठी मधु ॥ कुण्डेप्रा के छाल ॥ जवाहनि ॥ इनर जमा ॥ भारगी ॥ सहजन
का विभा ॥ फीटकीरी (फिटकिरी ?) फुलर के ॥ घच ॥ तज ॥ कमल
का विभा ॥ राम ॥ चदन सपेद ॥ अतीम ॥ वरि आरी के जरि ॥ सग्गिन ॥
पिथीवन ॥ चावभिरग तगर ॥ चीत ॥ देवदारु ॥ चाव ॥ तेजपात ॥ परवर का पता ॥
विलरा कद ॥ लगोग ॥ वमलोचन ॥ कमल का फूल ॥ असगध ॥ जावित्री ॥
तालीम का पता ॥ चिरायता सब दवा कर आधा होइ चाही ॥ इति सुदरमन चूरन
सपूरन ॥ यह सुदरसन चूरन मव जर के नाम के दे या जैमे, सुदरमन चक्र राक्षम की
नाम करत है ।

अंत—सोप काटे की ट्या और मत्र ॥ नौमादर तीन मामा जल में घोळ कर
पिला देवे थदि रोगी अचेत हो गया हो तो धुरी आदि मे दांत उभाढकर पिलावे और
नौसादर व चूना सुवावे तो होश होगा मगर गिर पर पानी वरावरि दारि और सोने न
देवे ॥ मंत्र ॥ उत्तर दिशि कारी वाढरी तेहि मध्य टाढ़ कालपुरुष एक हाथ चक्र एक हाथ
गदा चक्र मारो शत सड जाई गदा मारे मातों पाताल जाइ हर हर निर्पिप शिवाज्ञा ॥
नीव क्री टेरी से वारवार सिर से पीर तक फेरै और काटे हुए स्थान पर फूकता जाइ तो विष
दूरि होई ॥ इति ॥

विषय—वैद्यक ।

संख्या २५६. हनुमान पैज, रचयिता - लाल कवि, कागज—साधारण, पत्र—१३,
आकार—८ १/२ × ५ १/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२५, पूर्ण,
रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री कुवर वहादुर, ग्राम—पढरिया, ढाकवर—पट्टी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—॥ दोहा ॥ प्रथम भानु कवि लाल भनु, धरि गुरु पद पंकज पक । वरनों
हनुमत पैज बल, जात वीर गढ़ लंक ॥ १ ॥ छंद ॥ चरन चड उदित उदंड करियत
प्रचंड भुज दंड चंड खल संड सड आखंड दड धर सुन्ड मुन्ड घटनं भुसड सुरसत वंत
आनत सतवर संवतं वोहि कवि लाल भनु अष्ट सिद्धि वरदायकं हनुमतं पैज वरना चहों
देहु बुद्धि गण नायक ॥ १ ॥

श्रंत—चलत वीर वरवंक हक लंका पर दीन्गो । गिन्यौ गर्भं सब केर गवन उत्तर
दिशि कीन्झौ ॥ नभ मारग घटकात सिंधु पारहिं कपि आयो । गरजि उठै गभीर सव्द
सब कपिन सुनायौ ॥ कवि लाल अंजनी के सुत, कूटि पन्यौ कपि फौज में । मिल्यो भालु
सा मृगन, चलयौ राम जहँ मौज में ॥ = इति = हनुमान पैज सपूर्ण (सवत १९४० वि०) ।

विषय—हनुमानजी का लंका दहन और सीता का सदेश लाना ।

संख्या २६०. जयमाला, रचयिता—लालचद, कागज—साधारण, पत्र—५,
आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण,
रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, ग्राम—कटरा मेदिनी-
गंज, ढाकवर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्रीमत् श्री जिन राज जन्म समये इन्द्राक्षरकुपेक्षता । इत्यादि रूप विराज
मान समया पूजा निष्ठा शायनम् ॥ इन्द्राणी परिवार श्रुत्य संहिता इषां गण्य श्रुयता ।
गाना गीता विनोद मंगल विधी पूजा जमेरी कृता ॥

छन्द ॥ जन्म जिन राज को जबहि निज जानियो । इन्द्र गुरभेन्द्र सुर सफल भक्त
साक्षिणी ॥ देव देवार्गमा शक्ति जप करती । सचिप सुर पति संहित करत जिन
भारती ॥१॥

अंत—अप्य जन लोग जिन हो छो करे । भागल जन्म क सफल पाठक हरे ॥
भक्ति जिन देव श्री पार उतारती । सचिप सुरपति संहित करत जिन भारती ॥ जिनवर
पद पूजा भाव पूर्ण कृतामो । स्वपद निज जहाँ सी माय पूर्णो ज बंधो । जिनवर वर
मासा । माननीया समर्थः ॥ सजपनु जिन चन्द्रो । रूपल चंदः विनोदो ॥

विषय—श्री जिन देव श्री श्री भारती ॥

सूत्रपा २११ प. मागवत महापुराण, रचयिता—बालचराम, कागज—देसी, पत्र—
५८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुच्छेद)—१२००
रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—भागी, रचनाकाळ—सं० १५८५, प्राप्तिस्थान—भारतभवन
मुम्बई, डाकघर—बिसबाँ, जिला—मीठापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमो ये नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रथमई चरन मनाबीं ताके
सर्व कीक बोधर बस जाके । गनपति के मे चरन मनाबीं ॥ सर कथा गोपाल गुण
गारीं ॥ प्रथम पितामह शृष्टि ठपाइ । तुव प्रसाद गुण बाध गोसाइ । संकर सुर देववत
श्रीगुरु भक्त बना कितवन श्रीगुरु । जय मुकुट शिब सदा उदासी । तुव प्रसाद पावेठ
अविनासी ॥ उतपति प्रलय जाहिते हाई ॥ गहइ संवारी मंत्री सोई ॥

अंत—अचरम अति सिंगार बनाए । पठिन्ह अति मंत्रीक रगाए ॥ कहि न जाइ
नय छोति अपारा । अगुरिगु उरै भए लुभतारा । मूपुर सवाइ भए झंनकरा सोबत मदन
जगावत द्वारा ॥ कटक रही कटि कपर बंधरी । अलक धनि जनु दोऊ बंधरी ॥ विधि गीति
हीन्ह विधि मोरी । अति गंभीर नामि सुठि घोरी ॥ भीमै पयोधर सुर्गाव सुहाई । कनक
ककस जनु भैत बोटाई ॥ कनक पम जनु मुजा निवार । जनु बिसकुमी शिष्य संवारी ॥ रवि
रवि शिष्य विधिब्र बनायो साइ विभूति हेम तर जाए ॥ दो० भगम पंथ बलि जाइब ।
भंग विभूति रगाइ । भोग लुगति के पाइब पाइ अजाइ बराइ ॥ सो रुप वैपि सपी विष्णु-
यात्री ॥ कमल लपन को अयह कहानी ॥ गापिन हैइ बना बिसराई । अस जक हीन मीन
श्री जाई । इत्या सकल पद अंतरजामी । संतत विकट भीर तर सामी ॥ लुभती खान
ध्यान मन कए । भगति करत प्रभु हरम दियाण ॥ तब हरि मुन्दर बदन दियावा ।
जन्म करम प्रभु दोष बनावा । भगति करति जग जीवन पाए । भगति करति प्रभु लुवति
चिन्हए ॥ दो० ॥ भगति भावत चपत कठि के व्याधि नपाइ । श्री हरि कथा सजीबनि
पीपट्ट संत मन कएइ । इति श्री हरि चरित्रे दमम न्दये श्री भगवते महापुराणे रहस श्रीरा
चरनो नाम एकतीसवो अध्याय । दोष अर्थ (भागे के पृष्ठ नही)

विषय—भागवत की भाषा छंदों में अभिप्राय केवल श्री कृष्णजी की लीला और क्रीड़ाओं का वर्णन ।

सख्या २६१ वी. भागवत भाषा दशम स्कंध. रचयिता—लालचराम (राय-वरेली), कागज—देशी, पत्र—१४१, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुपुद्गु)—४५५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचना-काल—स० १५२७ = १४७० ई०, लिपिकाल—सं० १८५८ = १८०१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा प्रकाशसिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री सरस्वती नमः श्री गुरु चरनभ्यो नमः श्री महा गनाधिपतये नमः ॥ श्री हनु चरनभ्यो नमः ॥ दोहा ॥ प्रथम गनेस जलज पट नाड सीस कर जोरि । घटे बढे प्रति ते नही मंत्राक्षर दे जोरि । गन नायक गनेस प्रभु तुम सर्वज्ञ सुजान हरि चरित्र लालच कथा कृपा करहु कल्याण ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश अव गनेसादि सुर सर्व कथा समापित होइ जेहि जानि दीन कृपा कर । चौ० ॥ वदी ब्रह्मा विष्णु महेशा । बहु प्रकार ते देउ उपदेशा । तीनि लोक तुम तीनिउ सच कह । होहु प्रसन्न आजु तुम हम कह ॥ दो० ॥

अंत—॥ दो० ॥ जन लालच बलि जाऊं प्रभु सोधि भागवत सार । वेद पुरान न जानी माया गुण विस्तार ॥ इति श्री हरि चरित्रे दयमस्कंधे महा पुराने श्री भागवते द्विज पुत्र प्रसादो नाम नव्ये मों अध्याय समाप्त शुभ मस्तु संवत् १८५८ के साल में माघ वदि नौमी बुध कह पुस्तक लिपी महाराज दुर्गा सिंह । श्री महाराज कुमार श्री बाघू दिनकर साहित्यासुत श्री महाराज कुमार लाल गोपाल सिंह ।

विषय—श्री भागवत दशम स्कंध की भाषा ।

सख्या २६२ प. अथर्व विलास, रचयिता—लालदास, कागज—देशी, पत्र—१२८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुपुद्गु)—४३५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०० = १६४३, लिपिकाल—स० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामदुलारे मिश्र, ग्राम—गणेशपुर, ढाकवर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अवध विलास कथा लिप्यते ॥ सोरठा ॥ वन्दौ हरि अवतार भक्त काज जे वपु धरेउ । दूरि किये भूँ भार असुर मारि सुर सुप दये ॥ दो० ॥ पगु चरन गूने वचन नैन अंध लई लाल । बंध्या सुत वधिरे श्रवण जो हरि होहि दयाल ॥ २ ॥ स्वेत वसन धर चद्र सम सुप प्रसन्न भुज चारि । विवन हरन मगल करन लाल विशनु उर धारि ॥ लाल भक्ति भगवत की कृपा कछु जो होइ । सज्जन मन रंजन कथा कहौं सुनै सब कोइ ॥ ४ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ वन तरु गिरि सर वास करि सिय लछिमन सग साज । बालि मारि हति रावनहि राम करत है राज ॥ वन लका की बात को जानत सब ससार । याते लाल कहे नहीं असुरन के सवार ॥ इति श्री अवध विलासे बुद्धि प्रकासे पाप विनासे सब गुन रासे मक्त हुलासे कृत लाल दासे राम वन चित्रकूट गमनो विंशति विश्राम संवत्

१९३४ मार्ग शीर्ष पंचम्यां शंभुवासरे अत्रोप्या नगरी मध्ये छिपत् बिहारी साक हुये ॥
इति शुभम् ॥

विषय—श्री राम चन्द्र जी के बंस का वृत्तान्त अयोप्या नगरी का वर्णन, राम चन्द्र जी के जन्म का कारण, मारु जी का राक्षस को सूचना देना कि राम जन्म हुआ और तुम्हारा बच मे ही करेगे आदि वर्णन ।

सप्त्या २२२ पी भरत जी की बारहमासी, रचयिता—रघुनाथ, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेद)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र और गद्य । छिपि नगरी, रचनाकाल—सं० १९१० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राम अंधार मिश्र, ग्राम—ग्रामनगर, काठपर—कछीमपुर, जिला—भीरी ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ भरत जी की बारह मासी छिप्यते ॥ ईश पिछ्छे पाप राम बबसी को जन्म कियो । अक्षय पुरी सुप याम सपिन मिछि मंगल धारि कियो । खबरी जब हमरय ने पाई । दिव दान गत्र बाजि गाइ दिव धारे की प्याई ॥ सभा सप प्रपुलित हुं बाई । कर्म देखना मिटे करी कोई सापन चतुराई ॥ १ ॥ अगत ही बैनाय केरुषी बाबरी करि छारी । भुक जीवन धिक्कार भई जब तुमसी महतारी । हुप तने नगर को हीनो हीनि कोइ के राम राज को बनबासी बीनो । कूरमति कैनी बनि प्याई । कर्म छेप नहिं मिटे करी काई अपन चतुराई ॥ २ ॥

अंत—माइ महीना मानि राम ने सुप पायो मत्र में । जमक जनपुर को पहुँचायो । भरत अयोप्या में । खदाई गात्री धरि दीनी । रामचन्द्र ते कठिन तपस्या भरतहु मे कीनी । बदाई बाही में पाई । कर्म देखना मिटे करी कोई सापन चतुराई ॥ ११ ॥ अगुन केर हरी सीता जब राखन बस कीयो राखन मारो राम राज्य तु विभीषण को हीनो । आति अक्षय पुरी जाये शिव मन्त्रादिक आदि यज्ञादिक दरघान को धाये । राम कूँ गाही टदराई ॥ कर्म देखना टरे करा कोई सापन चतुराई ॥ १२ ॥ जम्मे मालु कौंह की भापी अगहन गहन पयो । बांय घरसी के फाल राम ने राम नाम उचरयो भरत की पद बारह मासी । गावे सुन परम पद पावे कटे जम की पौसी । बेद मिछि बीसेही गाई । कर्म देखना मिटे कराकोई कावन चतुराई ॥ १३ ॥ इति श्री भरत जी को वारामासी मन्त्रुर्ण समाप्त ॥ राम राम राम राम राम

विषय—रामचन्द्र जी के जन्म म बनबाम ठक का वर्णन ।

सप्त्या २६३ प, इतिहास छार सत्रुखप, रचयिता—काल राम वैश्य (भरतस, कागरा), कागज—देसी, पत्र—३६, आकार—६ × ९ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुच्छेद)—७९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र छिपि—नागरी, रचनाकाल—१६७३ = १५८६ ई०, छिपिवाल—सं० १७२३ = १६९६ ई०, प्राप्तिस्थान—छाळा रामदयाल, ग्राम—नंदा पुरवा, काठपर—मेरी, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री परम गुह्यो वमः ॥ दा० ॥ भरत प्रीति हरि मगत सों कदना सिंधु कृपाक ॥ धर्म विरोधनि दूष मुनि तादि परे उर काल ॥ श्रीमो बाच ॥ रावधान हाव

सुनियो वात । अवहूँ तन छांडत हौं धान ॥ अति रहस्य भारत आगार । सांती पर्व मध्य सो सार ॥ धर्म महत मन बुधि महेड । सब इतिहास सार सुनि लेइ ॥ सावधान हुइ समझौ वीर ॥ सो तुम कथा कही गभीर ॥

अंत—संसायनोवाच ॥ व्यास वचन यों पर उपगार ॥ ज्यों पट्यो जय मय समार ॥ कहै इतिहास जनमेजय राय । सुनत पाप सकल छय जाय ॥ जो नर सुनै कथा इतिहास । होय सकल अकर्म को नाम ॥ सब भगवत की कृपा मनाऊं । चार चार गुरु को सिर नाऊं । लाला दास कहै कर जोरि । सुनि कवि गुनी होहिं जिन पोरि ॥ अस्तल नम्र आगरो गांव ऊर्ध्व दास पिता को नाव जात वानियो लालादास । भापा करि वरन्यो इतिहास ॥ दोहा ॥ लाल सरस इतिहास को व्यास वचन धरि सीम । धर्म बड़े अरु ज्ञान जस सुनत क्या वत्तीस ॥ सो फल सुने अठारा पुरान । जो फल गोदावरी गंगा स्नान । जो फल होय केदार प्रसंत । सो फल इतिहास क्या सुनत ॥ सब फल प्राप्ति होइ सुनि क्या । भगति विना नर जीवन त्रया ॥ अश्वमेध जग्य तीर्थ सनान । सांफल सुनत इतिहास पुरान ॥ इति श्री महाभार्य इतिहास सार समुच्चय वर्त्तमान मो अध्याय ३२ लिपतं माहव राम पठनार्थी माना स्वामी लछमन दास की सिपि सवत् १७२३ वि० ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय—आदि—महाभारत का सार वर्णन ॥

संख्या २६३ वी. मानसी तीर्थ महात्म, रचयिता—लालदास वैश्य (अस्तलनगर, आगरा), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८४० = १७८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन सिंह, ग्राम—साहपुर, डाकवर—नेरी, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ राम सति ॥ अथ मानसी तीर्थ महात्म लिप्यते ॥ बुधिष्टिर उवाच ॥ केहि विधि सर्व तीर्थ फल पाड । क्यों श्रम रहत धर्म मनु आन तुम सू सुनि सब तीर्थ फल लहूँ । मनमा तीर्थ मोमो कहाँ ॥ भीष्म उवाच ॥ राजा सुनो हो पुरातम कथा । रूमाचक कही जनक सौं जथा ॥ रूमाच सर्व तीर्थ जब नहायो । अर्भे कृत जव जनक के आयो ॥ पूजा करी बहुत महुारी । बोले मीठे वचन विचारी ॥ जव यह जनक चलाई वातै ॥ जो कष्ट मोहि बतावो तातै ॥ तुम स्वामी जानत सब भेवा । मुनसा तीर्थ सो कहिये देवा ॥ चाहौं सुनौं अब यह धर्म । मोसो करो महा मुनि मर्म ॥

अत—॥ श्लोक ॥ शुद्धा भगवत भगताविपादे सुपचस्तथा प्रकृति जाति तामामि संजाति अधमांगति ॥ सतोपी दैक्षणव जो होई । विष्णु रूप करि पूजै सोई ॥ तीर्थ और भूमि घर जेतै । धर्म सहस्र जो पूजे तेतै ॥ तौं लागि तीर्थ फलै न राजा । निरफल वेद क्रिया तप साजा ॥ निर्मल मन प्रसन्न नहीं होई । तौं लागि त्रया श्रम करै कोई ॥ सुनि यह कथा सुध मन होई ॥ बुधि निहचै प्रीति सौं सोई । मन तीर्थ कहा वपानी । तै छवीस कथा लै जानि ॥ इति श्री मनमा तीर्थ कथा सपूर्ण समाप्ति । सवत् १८४० वि० क्वार सुदी दशमी ॥

विषय—किन्ती तीर्थ के जाने में कुछ नहीं है अपने शरीर और इन्द्रियों को धरा में ही रखना तीर्थ यात्रा करवा है ।।

संख्या—२६४ इरकरग, रचयिता—सहनपिया (कर्दघाबाद), अगत्र—देसी, पत्र—२०, आकार—८×९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—३००, पूर्ण, रूप—महीन पद्य, लिपि—भागरी रचनाकाल—सं० १९३० = १८०३ ई०, लिपि कास—सं० १०४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सिवभारायण, ग्राम—बईका, आकर—विश्वी, जिह्वा—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अगका चरम लिप्यते ॥ दो० ॥ आदि देव आदिदि मुमिरी गनपति चरमपुनीत । विषय अथन जूजन हरम मंगक चरम सधीति ॥ श्री सारदा मुमिरत तुर्दी बंद चरम मिर माय कंड विराज्जु कलम के हित चित रस उपजाय ॥ श्री० ॥ श्री श्री श्री महेशा मन प्याबी । गारी कम्मक चरम चित स्याबी ॥ श्री सुरदा अवधेशा चरमया । पवन पुत्र हनुमंत जगोसा ॥ दो० ॥ बदा हरि राधा चरम मुमति हरम पस चार । अर्थ काम धम मोक्ष गति जन मन मुपदाताय ॥

अंत—दादा जोड़े का रागनी राम्माच ॥ बरत मग दार गयो सधी टोना ॥ अंतरा ॥ पसक झकक दिन्वराय सियो मन किदुर नंद को छोना ॥ १ ॥ चित लों दार न पसु छिन सजनी मुंदर स्याम सस्येना ॥ २ ॥ श्चु मुसिकाय सुमायो कलम पिया अथ जिय जात रहे ना ॥ दादा जोड़े का रा० घा० ॥ प्रबक दुग्ग दीग्ग लगाकर मंग रैन हर स्याम अंतरा ॥ नई प्रतीत मीत कइ पर चन प्रपमहिं जियरा कीन्हि ॥ १ ॥ मी नहिं जानत थो यह विप मरी मूल मुधा हित पीग्ग ॥ २ ॥ सलम पिया किदुरा न की वतिपां हर विषयको वीग्ग ॥ दादा जोड़े का रा० राम्माच ॥ कलक यह कैमे जाय जिय को रे ॥ कगत मली मीकी म मीकी मीकी रे ॥ अंतरा ॥ पिया निरहई न मोहिं बुकावत छप जीवन उमग रहारे ॥ १ ॥ छतियन छप रग रस टपकत मध बिन पिय जियरा जरोर ॥ २ ॥ रमिक भये बंचल रग चितवन मगहु महंग भयोरे ॥ ३ ॥ छापनात सूधी सिञ्चिया सधी सारी सारी रतिपां जगोरि ॥ ४ ॥ विरहानल पज छिन कस दूत न मन- मध धर पारे ॥ ५ ॥ बाबुल स्याहदई पैसक धर लेय न छोरी लवरि ॥ ६ ॥ गय पर बहनाई निगोड़े स गया मगुन समपारे ॥ ७ ॥ बई की मार पर बहना पर जिन यह स्याम सोपारे ॥ सलम पिया अथ कैस मिहव मुप पर यम प्रान बंगारे ॥ इति सलम पिया कृष्ण मंगुल समाप्ता ॥ मिसी माय शुद्ध १३ अक्षरार मबत् १९४० वि० ॥

विषय—गामपिया के अनुसार विविध प्रकार के गीत ।

संख्या २६५ अस्तमंड (रामायण), रचयिता—कलिका प्रयाद अगत्र—देसी, पत्र—३८, आकार—९×९ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—५५०, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य लिपि—भागरी, रचनाकाल—सं० १९३०=१८६० ई० प्राप्तिस्थान—श्री ब्रजवहापुर माल, आकर—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः । रामायण मुंदर कई कर्दा गइ । श्लोक विधि वीति

मनोरथाः स्मरण तो यस्या शु विन्नालयम् योग क्षेम मवाप्य सौख्य निवर्हैः संप्रोपितः
स्वालयम् ॥ श्री मद्राम चरित्र बोध विधये सप्रार्थ ये ह मुदा । श्रीमन्तं प्रणतार्तिहं
गणपतिं सर्वादिपूज्यं सदा ॥ १ ॥ वन्दे प्रचद खल ता...तदेव यूय त्रागार्तिहं परमनन्तं
गाध वीधम् ॥ दैत्याधिपन्य हृदयेऽर्पितं तीक्ष्णवाणं रामं लक्ष्मणप्रियान्वितमिष्ट सिद्ध्यै ॥२॥

अत—सुनि के वाते रघुनन्दन का बोले लपण जोरि टोट हाय ॥ करौ तयारी
अव लंका की रण मा हनी वेगि दसमाथ । यई मत्र कपि पति मन मायो अंगद जामवंत
हजुमान ॥ सब मिलि बोले रघुनन्दन ते अव नहीं करो देर भगवान ॥ सुनि के चानी
मनमानी यह बोले रघुवर वचन उदार । हुकुम लगावो कपि राजा अब सत्रिया होय फौज
तय्यार ॥ माय नवावों रघुनन्दन को ह्याते करों काण्ड को अन्त । राम रमा मिलि दर्शन
देवो इच्छा यही मोर भगवत ॥ सर्वैया । युग भर अक मयेरु सु सम्बत माधव मान्य शशी
सुतवारा । हरण सुन्दर काठ भयो ऋषि नायक के अनुमारा ॥ कानुक वादु कुमार अपार
क्रियो गढ़ लक में जाँन पसारा । तौनहि गान क्रियो ललिते कवि घाटि हृदय औधेश
कुमारा । चतुर्यस्त तरंगः ४ ॥ समाप्त ।

विषय—सुंदर काठ रामायण की कथा चार तरंगों में आल्हा छन्द में वर्णन क
गई है ।

संख्या २६६ प. माधव विलास, रचयिता—लल्लू जी लाल कवि (आगरा),
कागज—देगी, पत्र—७६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण
(अनुष्टुप्)—११४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१६ =
१८५६ ई०, प्राप्तस्थान—श्री लालताप्रसाद दूबे, ग्राम—जादवपुर, डाकघर—मिश्रित्त,
जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ माधव विलास लल्लू जी लाल कवि कृत
लिप्यते ॥ तालध्वज नाम नगर तामें चार वरण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र और छत्तीस जात
रहें । रजपूत जाट गूजर गौर अहीर तेली तमोली धोवी नाई कोरी चमार चूहरे खटिक
कुंजर लुहार टंठरे कपेरे चुरहेरे लखेरे सुनार छीपी सूजी धीमर खाती कुनवी वढ़ई कहार
धुनिये धानुक काळी कुम्हार भटिआरे वरियारे वारी माली अरु मलाह आप अपने धर्म कर्ममे
अति मावधान वरन कोऊ कोऊ उनमें चौदह विद्या विधान हो तहां विक्रम नाम राजा सो
कुलवान अति रूप निधान महाजन सबगुण खान राजनीति में निपुण प्रजा पालक यशस्वी,
तेजस्वी हरिभक्त गौ ब्राह्मण को हितकारी औ सब शास्त्र को जानन हारो हो ॥ वाको
हारा बलिनाम महासुंदरी अरु प्रतिव्रता ही ॥ सबैया ॥ कुट्टन को रंग फीकौ लगै झलकै
अति अंगन चारु गुराई । आपिन में अलसान चित्तान में मजु विलासन की सरसाई ।
को विन मोल विक्रात नहीं मतिराम हमे मुमकान मिठाई । ज्यो ज्यों निहारिये नीरे हैं
नैनन ल्यों ल्यों खरी निखरी सी निकाई ॥ राजा रानी में ऐसी प्रीति कि जैसी शिव
पार्वती में है । एक दिन वह राजा भोरि उठि ठिसा जाय हाथ मटियाय दंतधावन में
निश्चित होय कंचन की चौकी पर धँडि सुगंध उवटन लगाय निरमल नीर सो मलमल

बहाव भंग अर्थात् मुषरो गुजराती पीठावर काछि उपरीगा भीड़ि रत्न जड़ित खदाक प्रथम गी दरशन करि आसन दे बैठायो ॥

अत—माधव जब तुकसी की माझ पहिरि भंग में गंग की पंक स्नाय अर्थात् बरु में साय कर जोध गंग सों कइनि कियो कि हे मा बाबूजी पतित पावनी मन बाँधित कइ देनी बैकुण्ठ नसेनी ही तरे प्रबाह में प्राण त्यागतु हीं अरु मन वच कर्म करि बार बार यही घर मांगत हीं कि वा जन्म में सुखोचना को पाऊ और तेरे सदा सर्वदा अस गाऊ और इतनी बात पाके भूप सो कयी त्यो रखबारे ने संसार पर बैठे चौकी बैठ है कि कोऊ सागर में डूबन न पाई ते याकी हाथो हाथ पकरि कै थीर बर के समुप ले गये पाऊ देखि थीर बर ने पूछे कि तुम को ही कहाँ से आये कहाँ तिहारो नाम है अरु काक जीव हैत हा ये तुम मोसे सत्य कहाँ भाषव बोच्यो की महाराज की ताल भवत नाम बगर वहाँ को बिक्रम नाम राजा ताके हीं पुत्र हीं अरु मेरो नाम है—माथी इतनो कहि बाने पंजकथा की बात ते छे गंगासागर की अँये की सब अवस्था छीक छीक ज्यों की त्यों को बापे बीती ही त्योरि समेत रोय रोय कइ सुनाई ॥ पुनि कछो चर्मावतार में या तुक सों प्राण त्यागतु हीं कि या जन्म में न पाइ तो जगके जन्म बाधे पाठंगो याकी आदि अंत की सब अवस्था पुनि थीरवरि इसि के बोच्यो कि जो तुम मरिबे चाहत ही ती आज यहाँ बसि रात्रि जागरन करी अरु कति जो तिहारो मन माने सो करियो जैसे कहिके एक सेवक बाकी सेवा में राखि आप राजमंदिर में गयो अरु नारी बन ग्हाय जीव अंजन मंजन करि सब बस्त्र पहिरि सोकह सिंगार द्वावस आभूषन साबि ॥ शी० ॥ वनि ठनि सजी सुखोचना ज्यों कइमी को रूप औ सखी पठाई मुषर एक कावन माधव भूप ॥ माधव को बुझये सखी बहो के गई । जहाँ सुखोचना सिंगार किये बैठी ही । देखत ही दोनो परस्पर प्रसन्न भये पाछके मुख बौद्धन के गये ॥ श्री० ॥ गंवर्य विबाह तहाँ तिन कियो । अपने मन को सब मुख हियो ॥ दोऊन ने अपनी अपनी बिपत जो जो विधोग में उठाई सो सब कइ सुनाई । थीर राति भुप संजोग में भीग करि बिठाई ॥ मोर भए होउन ने मिल राजा मुषन से आप भेद सब जनायो जब पुनि अति भुप पायो अरु कियो दोऊ विधि पूर्वक माथी को दान करि दई पुनि आयो अपनो राज माथी को दापेज में दिवो अरु ताके साथ एक मंदिर महा सुंदर उनके रहिये कोइ । माधव सुखोचना थीर जयन्ती की छे वहाँ आप रही अरु राज काज धर्म नीति सों करन लाग्यो एक दिन वा सेवक को बुलवाव सब समा के लोगनि सों इतनो कहि कि संसार में भरो सहु इतपनी महापापी बिद्वानपाती येनो हमरो नहीं हैं यह कहि भीठ में जुनबाय दिवो अरु बिद्यापर को अपने निकट बुलाय अति सिद्धाचार करि बहुतेक धन दे बाके दैन को बिदा कियो अरु आप धर्म विवेक सहित राज करन कियो । काके देश में राजा राजप्रजा सुपी वा ग्रंथ को जो ज्ञान करि पई सुमीगो सो संसार में क्यहुं न जग्य है ॥ अरु गृहस्थाश्रम में अति मुख पाय है ॥ इति श्री कबिलाठ विरचिते जी माधव बिदास संपूर्ण संभव १९१९ वि० मिते माघ शुक्ल त्रीन ४ ॥ छिपत बन्देब दैव्य धूर ।

विषय—माधव और सुखोचना की कथा ॥

संख्या २६६ बी. राजनीति (मित्रलाम), रचयिता—लल्लू जी लाल कवि, कागज—
 टेंगी प्राचीन, पत्र—५०, आकार—११ $\frac{१}{२}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—५५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६९ =
 १८१२ ई०, प्राप्तस्थान—राज पुस्तकालय, प्रतापगढ़ राज्य, डाकघर—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ राज मुग्य मुग्य दाता जगत दुग्य डाहक गगइंश । पूरन
 अभिलाषा करी शंसु सुन जगदीश काहू समय श्री नागयण पडित ने नाति शास्त्र निते कथा
 निको सग्रह करि ससृष्ट मे एकु ग्रय बनाया बाको नाम हितो उपदेश भाष्यो स्ववत ॥१८६९॥
 मे श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवटीच आगेरे वारे ने बाको आसय है
 ब्रज भाषा करि नाम राजनीति राष्यो ॥ दोहा ॥ पडिन है ते जानि है कथा प्रसंग प्रवीन ।
 मूरख मन मो मानि है लाल कहा यह कान ॥ ब्रज भाषा भाषत सकल सुग्यानी यम तूल ।
 ताहि वपानत सकल कवि जानि महा रम मूल । या राज नीतिक पड़े सुने ते मनुष्य ब्रज
 भाषा में निपुन होइ । अरु जितके सगार के व्योहार की वादें है तिन माहीं प्रवीन ॥

अंत—सों रहे उनके मनोरथ पूरे भये ॥ इननी कथा कहि विष्णु शमां बोल्यो महा-
 राज कुमार सुनो या कथा के सुने ते सज्जन ने मित्रता होइ मन में संतोष अर्थ घर माहि
 लक्ष्मी वाढ़े राजा राज नीति सो चलै । प्रजा की रक्षा करै । यह मित्र लाम प्रथम कथा
 कही या में जाकी रचि होइ सो कवट्टं ठगायो न जाय सदां निर्मल बुद्धि ते संसार के सब
 काज साथे वक्ता स्रोता को श्री महादेव जू कल्याण करै ॥ इति श्री मित्र लामो नाम प्रथम
 कथा संग्रह सपूर्ण ॥ राज नीति प्रथमहि कथा मित्र लाम है नाम ॥ बाको पढ़ि है जौन जव
 सो हूँ है बुद्धि धाम । श्री राधा कृष्णाय नमः । टगपन दुर्गालाल को श्री बाबू भवानी वक्स
 सिंह जी हेतवे मुकाम करीदागंज अंत्रवेदी श्री रामश्री हनुमान जू साइ करै ॥ ६६ ॥

विषय—हितोपदेश को मित्रलाम का ब्रजभाषानुवाद चंदना ग्रंथ निर्माण संवत् ।
 ग्रंथ कर्ता नाम जाति स्थान वर्णन नाम पुस्तक ।

संख्या २६६ सी. सभा विलास, रचयिता—लल्लू जी लालकवि (आगरा),
 कागज—टेंगी, पत्र—१५७, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—९८१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७० = १८१३
 ई०, लिपिकाल—सं० १८७३ = १८१६ ई०, प्राप्तस्थान—पं० रामस्वरूप शुक्ल, ग्राम—
 सुमानपुर, वर्तमान निवास सरैयाँ, डाकघर—विसर्वाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सभा विलास लिप्यते ॥ सोरठा विघन हरन गन राज
 मूपक वाहण गज वटन । गनपति चरन मनाय तवै काज कछु कीजिये । आन न भावत
 स्वाद् हमि पन्यो गह्यो सुम विंड । कृष्ण चरन अरविंड को पियत मदा मकरंड ॥ भमता
 अम ताके मिटै उपजै समता ज्ञान । रमै जु रमता रामसो जमता गहै न मान ॥ साध सक्यो
 न तू साध सग सुलै न सक्यो ममाध विपे विपाद् उपाधि तज हरि पल आध अराध ॥
 निगम रूप गीता ने कह्यो परम पुनीता नाम ॥ वीच्यो जन्म जुजात है भजले सीताराम ॥
 मन की मिटे मलीनता होय लीनता साथ । नीकी यई प्रवीनता भजिये दीनानाथ ॥

अंत—अथ रागिनी स्वरूप शोदा ॥ मृगाम्नी विरहिन परी केसर बार खीर । मयो विरह की ज्वाला ते पीरो सरी शरीर ॥ विरह म्बरा तन गूबरी रोबत छुटे केस । कामदेव कामन हनो तिनहिं पियो उपश्रम । हम बार कंचन बरन गरुड पिय क संग हिय हुआस ई काम को चढ़यो जो सावन अंग ॥ बीन गहे पापत पाहुन रोवति ई जस बार तन दुखळ पिरहा २६ पिर हनि कारि मन्मार । सेर बिजाजू कमल हल छरि रही मन मारि सेति उमास उमीयरी तनक बिभोगनि मारि । इति हिय हुआस ॥ समह करि कवि लाम न रण्या काम्य रम राम । धाम्या नाम प्रथ को पातें सभा बिभास । यद्यपि काम्य मूपन महित दुर्जन बेपत तादि विगर वन वनाप ई मज्जन सातु सरादि । ग, रिपि बभु, चंद्रदि, गर्नी मवत की पर मान माय शुद्ध बीमी रबा क्रिया ग्रंथ निर्माण । इति श्री लक्ष्म जी श्याम कवि प्राधान्य गुण शार्दी सद्य अक्षरीय आगर बासी हृत ममा विद्याम संपूरन समाप्त ॥ लिपतं प्रससाळ प्राधान्य सन् १८७३ वि० पाटनार्थ महाराजी जी म्गामी जी क ॥

विषय—ममा में बातचीठ करन पाग्य शाना प्रभर के बाह प्रश्नोत्तर पहेली, पुस्तिका आदि का संग्रह ई ।

संख्या २६३ की समा विद्या, रचयिता—प्रह्लादी शार, आगर—श्री, पत्र—३१, आकार—१३ × ६ इंच पन्नि (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुच्छेद)—२५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पय, लिपि—नागरी, लिपिकर—श्री सं० १६१४ = १८५०, प्राप्ति स्थान—महाराजा प्रकाश मिह जी, काठपर—महापारा, शिला—प्रतापगढ़ ।

आदि अंत—२६३ सी के समान ।

पुस्तिका हम प्रकार ई —

इति ममा विद्याम सन्पूर्णा ॥ शुभ संवत् १९१४ शके १७७० ॥ जेठ मासे सुभे पधे शिनीया चक्र धारण ॥ जो प्रति इया मा लिप्य मम हायो न हीयत ॥ स्वाममुद्गरपाय नमः राम राम राम राम राम राम ॥

संख्या २६७ गंगारण, रचयिता—सेगरात्र मिध (विधीली), आगर—भापु विह, पत्र—४२ आकार—१० × ५ इंच, पन्नि (प्रति पृष्ठ)—३६ परिमाण (अनुच्छेद)—११३४ पून रूप—प्राचीन, पय, लिपि—नागरी लिपिकर—स० १९३९ वि०, प्राप्ति स्थान—महाराजा प्रकाश मिह जी, काठपर—महापुर, शिला—मीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गंगा मत्त लिप्यने मंगलाचरण पया ॥ अंग अंग मामा की तरंग ई सुरंग रंग खीर ई उर्तंग रंग राजन महन के । पत्र कर चण्ट हलन दुग राक आदि चट मै अमत भीर रीर णक हैम क । णक रू धारे ई बिहार ई विषय मून् जम मुच कंद कंद चार महियेय के । टंग राज केन पारि बय रीजना मे पंग संन इमेरा पद गगा भी गंगेन के ॥ अथ जय प्रार्थना ॥ सीमन हारि विहारि गुदा कल शब्द न गारि कदो मनकारी ई ॥ सींग पुगरी विहारी हरी पद पुगिदि पारि मरी गुन गारि ई ॥ पाटी विचारि पुकारि बई सेगरात्र मदा दिव पारि विहारि ई ॥ वृत्त प्रचारि के मून् उचारि ई गारि क्रिया कवि क बुन् हारि ई । मारि विहारि दया जम वृत्तन दुग भी होयन गारि

जमारि है ॥ डारि कहै दुर को लेप राज लपौ जल जालन फारनि हारि है ॥ पापन पारि है दासन तारि हे गगा को वारि है सो सुप कारि है ॥

अत—पुकाक्षर चित्र यथा दोहा ॥ गगी गी गो गोग गे गुगी गो गो गुंग । गंगा गंगे गंग गा गगा गगे गग ॥ स्मृति । दोसहु तोहि औ कोसहु तोहि औ रोसहु तोहि सो कै भन तातो ॥ गावहु तोहि औ ध्यावहु तोहि औ पावहु तोहि सो मैं सुप साता ॥ सोई विचारि छमौ लेपराज की चूक सवै अवै जन्हु की जाता ॥ पूत कपूत लपे जन कोटिन पेन लपी सुनि कहुं कुमाता ॥ दो० ॥ गंगे शानन गग मग निधि दीन्हे शशि गग । गंगा गति गनि अंक की संवत लिपहु सुडग ॥ मास पक्ष तिथि वार गुरु कै उमगि कहि गग । गगा गगा भरण को जन्म भयो एक सग ॥ इति श्री गंगा भरण समाप्तम् श्रावण कृष्ण दसम्यांम सोमवासर सवत १९३६ वि० ।

विषय—गंगा जी की महिमा का वर्णन ।

संख्या २६८ पदार्थतत्त्व दीपिका, रचयिता—लेखराजसिंह, कागज—देशी, पत्र—२६०, आकार—५ $\frac{1}{2}$ × ४ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८८४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्रासिद्ध्यान—श्री चतुर्भुज, ग्राम—भोजापुर, डाकवर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेश जी सहाय ॥ पूजि गनेस मनाऊं महेश, निर पति गोपाल गरुड़ धाऊं ॥ होउ सहाय सरसुती माय, महा सुत अमृत वाना वनाऊं ॥ दुख न दूरि कै सुखन पूरि पुरातन भूषण भाषा वनाऊं । वैद अकाश मही पर जेतिक तैतिक कीमत कै मत ल्याऊं ॥ गुरु को गनेस को शीश नवै रसन पर सारधा तोय बसाइय । साध की संगति भगति मिलै परवाह न ल्याइय ॥ हरि दाऊ चर्ण वसैं हिरदै निज वासर जानुकी नाथ लडि ल्याइय । लेख राज सिंह जपै प्रभु नाम को चित्त चलै तौ कवित्त सुनाइय ॥

X X X X

लिखा हुआ वरसों रहै । जो रख जाने कोइ । लेखन हारा वावरा । गल गल मिट्टी होइ ।

अंत—चाँवलो में बराबर घी लग जावे उसकी तरकीब अच्छे पुराने चावल धो साफ कर बटलोई में घी ढाल चावलों को अकारे कर दूसरे त्यार अधान में ढाल पकावै जब पक जावे यानी पसाने की हाजति न रहै इस अंदाज के पानी में पकावै वादिहू चहारम मावा अर्थात् खोया देकर घी मजकूरेवाला देकर मिला दे घी जज्व हो जावेगा । अगर वाकी रहै तौ थोड़ा सा मावा और मिला दो इसी तरकीब से दाल बगैरह में जज्व हो सकता है ॥ दूसरी रीति (१९४ स०) दो राशों के योग और अंतर का वर्ग योग और जोग जानकर राखें लेने के दो रीतें ब्यान करो (ज० १९४) योग और अन्तर के वर्ग..... ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १२ तक—मंगलाचरण, ग्रंथ का नाम तथा ग्रंथकार का वंश परिचय:—

आठ गगा तट तीर है, लेखराज निजु धाम । शिव वरदानि नगर है, नगर खुशहाली गाम ॥ करहरा को नगरा हतो, वसहिं बहुत सुख वास । रोटी कपड़ा सब सुखी, निस दिन

मोय बिलास ॥ कदम वृक्ष जहाँ बहुत हैं, आठ गंगय तर तीर) कदहरा गाम अनूप है, तो मोर द्वेव वरु वीर ॥

×

×

×

×

देवराज सिंह को गुन यह जानो, राजुर सदासुख को सुत पहिचानो, राजुर सुतदास सिंह के माती पहिचानो, अत्रि गोघ बंज्र है बंसी । समया बैदाव वीतिन की जानो आदय कुरु की करो न धामी व पीतांबरी भुजा पहिचानो । सिपा राँतुरी मरी बिबेपी । रात्रधानी घूली बडे मुर आन प्रबीपी ॥ मुख बास मपुरा पुरी इारका, मजमाय से जदकुरु प्रति पासिका ॥

(२) पृ० १३ से पृ० १०६ तक—कार्य कारण नियम और परीक्षा संसार के व्ययों की नियमावली, तारागण नाम, तारों की गणना, तारों में न्यूनाधिक प्रकाश का प्रमाण, तारों की स्थिरता सूर्य का वर्जन, बड़े बड़े ग्रहों के नाम ध्यास तथा उनको सूर्य से दूरी, चंद्रमा का वर्जन, जमीन की गांढाई का प्रमाण अतु परिवर्तन, रात्र दिन होने का प्रमाण, ग्रहण, चंद्रमा के बढे बढने का कारण मीतिक पदार्थ और परमाणु । पदार्थ मेद, स्थिर स्थायक शक्ति । मीतिक पदार्थों के गुण, आकर्षण शक्ति, द्र पदार्थों के गुण, हवा के गुण, बरु, बीतोमीटर, वायु मापक यंत्र, वायु, लक्ष शब्द की चारु, प्रति ध्वनि व गुंज । गर्मी व गर्मी का प्रमाण उष्णमापक बंज्र बनाने की तरकीब, प्रकाश, प्रति बिम्ब, इन्द्रधनुष, बिजली चुम्बक बनाना, तत्व, रसायनिक संयोग, अघात रुम तर, घात रूप तथों के नामादि ।

(३) पृ० २०७ से पृ० २५८ तक—माणा चाँदी आदि धातुएँ, पानी के सूखने का वर्जन हवाले बलने का कारण हवा के मेद, आँधो तथा तूफान के बिम्ब, माफ तथा धोसादि वर्जन, बादलों का गगन आलों का वर्जन, वर्षा के न्यूनाधिक का कारण, सूक्ष्म, जाग, चाँदी आदि का पपी बनाने की तरकीब मय धातुओं का पानी और अमक बनाना आदि, तेजाव, पौष्टाम बनाने और पकाने की रीति वाकू पानी साक करने की तरकीब, लाहे के मीक नू करने का हाल पार का कटोरा बनाना, त्रिपासकाई आदि की तरकीब, सोबा कास्मि करने की तरकीब, रंगे की कलई रंग सात्री, गिखस, हॉडी, कनूय पर बेल बूटा बनाने की तरकीब सुबहरी रोगन, रेशमी कपड़े को साक करना, मोमजामा बनाना । अन्य रोगन, रंग बनाना, स्वाही बनाना, इरत में मासिम फल फूल बाने की तरकीब, पास बुझाक की स्वाही बूर काने की तरकीब चातल के नीतर अक्षर छिपाना चातल के तराशने का कायदा, सींग मोहन की तरकीब, चाकू व तलवार पर द्वारत लिखना पत्थर के ऊपर छिपाना, मीठी का स्वाही बूर करना, मोती बनाना, परद को करना इच्छी का तराशना, (पृ० २५८ से पृ० २९० तक) जमेक होडाबसी, अनूपण, गंधार, दिग्याक, अवनार द्वीप वेद तथा कतु बूर या निमक का कटोरा या गिखस बनाना, चाँदनी में पी लगाना, पीमाहम सम्पन्नी नियम (पृ० २९१ से सुत ई)

सदया २६६ प. जानकार्लकार माया, रक्षयिता—सोचनसिंह (मगरराज अत्रि मरु), अग्रज—पुराना देगी, पत्र—४६ आकार—११ × ७३ इंच, पन्दि (प्रति पृ०)—

२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचना-काल—सं० १६१० = १८५३ ई०, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—राजपुस्तकालय, प्रतापगढ़ राज्य, प्रतापगढ़ ।

आदि—अथ जातकालकार भाषा दोहा आदि चौपाइ में लिख्यते ॥ दोहा ॥ वदो चरण सरोज युग श्री गुरु गणपति नाथ ॥ हरि हर विधि गिरिजा गिरा जोरि हाथ नय माथ ॥ १ ॥ सीत सुभग स्वभाव सुभ द्विज कुल श्री रघुलाल जिनके मेवक अधिक प्रिय लोचन सिंह विसाल ॥ २ ॥ तिनके शुभ उस्थान प्रभु नगर राज मल दीन । सुप समाज को विद कवी गुण गण गणिक प्रवीन ॥ ३ ॥ श्री गुरु अनुसासन करी कृपा दृष्टि सुख केतु । भाषा जातक कीजिये सकल जगत के हेतु ॥ ४ ॥

अंत—गिनो सु पारा सर मत ते लही ॥ १ ॥ अत्पायु दिन नाथ शत्रोर्लंगनाधिपे यदि । समथे मध्यमायु स्यात् मित्रे पूर्णापुरादिशेत् ॥ इति श्री भाषा जातकालंकार सपूर्णम् ॥ शुभ भूयात् ॥ लिखित मिदम् पण्डित शकरदत्त चतुर्थ अध्यापक पाठशाला सरकारी मुकाम जिला प्रतापगढ़ श्रीयुक्त क्षत्री कुल भूषण सत्य वादी सदगुण गाहक बुद्धि लागा दीन टयाल प्रमन्न चित्त श्री वावू अजीत सिंह प्रसन्नार्थ उक्त पण्डित प्रेम युत लिखा ॥ फागुन सुदी २ गुरुवार सवत १९३० तथा १८ तारीख माह फरवरी सन १८७४ ई० दोहा ॥ तीरथ राज सेयवत दिशि दश योजन है ग्राम राज तिलोई मे वसूं विराज मौजा नाम ॥ १ ॥ अब प्रतापगढ़ वाम है रहन अनद हमेश ॥ सीता पति रक्षा करै हरै कलेश गणेश ॥ २ ॥

त्रिपद्य—ज्योतिष ।

संख्या २६६ वी. भाषा जातकालंकार, रचयिता—लोचनसिंह ज्योतिषी, कागज—देशी, पत्र—४२, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, लिपिकाल—१९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री लालताप्रसाद दूबे, ग्राम—जटवा-पुर, ढाकवर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

आदि—अंत—२६९ ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री भाषा जातकालंकार समाप्तम् शुभम् लिपितं जानकीराम ब्राह्मण चैत्र नवमी कृष्ण पक्ष संवत् १९३२ वि० ॥

संख्या २६६ सी. जातकालंकार भाषा, रचयिता—लोचनसिंह, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—१० X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदयाल, ग्राम—कफारा, ढाक-वर—ईसानगर, जिला—खीरी ।

आदि—२६९ ए के समान ।

अंत—अथ विंशोत्तरी दशा लगाने की विधि ॥ छप्पै ॥ कृतिका सूर्य पद वरारोहिणी

धीरा वृक्ष जागो । मृग मगल कहि सात राहु सिख दशमानो । बिति गुरु खोलह बर्य पुष्प
 शनि कहि उन्नाई । सब बुद्धि की दसा बर्य सत्रह सुप ईश । महा केत बर्य सात की
 पूर्वा मृग विशति कही । क्रम करि बिचार खेचन गिनो सुपराधार मत ते कही ॥ इति
 श्री ज्ञानबालराम माया समाप्त ॥ सबत १९४० वि० लिपित रंगारानी मिश्र ॥

संख्या २७० बहबत प्रकाश, रचयिता—शेकर्सिंह, कागज—दैसी, पत्र—११,
 व्याकरण—९ × ३३ ईच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—०, परिमाण (मनुष्य)—१५ रूप—
 नवीन, पद्य, लिपि—भागी, प्राक्सिस्थान—श्री रामप्रसाद मुराक, ग्राम—पूरा बिभाम हास,
 बाकपर—परियाबौ, ब्रिह्म—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री रामचन्द्रायनमः ॥ अथ श्री बसवंत प्रकाश कथा लिप्यते ॥ सुमिरि
 हरे श्री राम पद, श्री जानकी मनेत । कहत विविध इतिहास बरुवत सिंह के देत ॥ १ ॥
 प्रगत भयो बसवंत मुख, राम पुराणिप राव । छात्र धरम शून नीति बह, सब विधि पुष्प
 प्रभाव ॥ २ ॥ शेकर्सिंह ते प्रश्न क्रिय, तिन बिचारि मित्र बूज । कहे तिहार हाइगो, सकक
 मनारथ सिख ॥ ३ ॥ पिता पितामह संग तुम, सुने बनेक विधान । गुनि सिद्ध कष्ट हमसे
 कहे, नीति भक्ति त्रुत ज्ञान ॥ ४ ॥ संत संग महिमा अमित, कहे सबनि बहु गाय । ताह
 को कष्ट भेद गुनि, हमते कहे बुझाय ॥ ५ ॥

४१३—१ कवित ॥ रैया राय स्वाम सिंह जाकी तप तेज झार सागत ही कते अरि
 विपिन मुपाये है । केत गुनि धीसा की पुकारि पहारनि को है है मित्र बारनि को दिन ही
 पराने है ॥ केते छोरी जाने बचे ईकरि पजाने कोने छाधि के घमंड भाय पाँय रुपयाने है ।
 मामे से बही है गही त्रिय के पराने ताहि चढ़ि बीर पतनि में पयामि से माने है ॥ कर्पी—
 स्वाम सिंह नर नाह बीर वारन की बहमति । मित्र मित्र घर अरि तदनि छपि भरत
 नसन बहमति कतहि बदतुवत बीर कतहि सागत महि पयगहि । नहि कर्पत तिन्ह हृष्य
 क्यक रसभा सप पयगहि ॥ श्रीत्रियन सोरठु जमोर जेहि तत्रिय गय सब अहरनि । कत
 सत्रिय मज्जिय तुरत रिय सत्रिय थक गिरि कंत्रनि ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ वंच पुष श्री स्वाम
 के, त्रिमि पंडव अबतार । त्रिन बालायन से क्रिया, नीति सबर्म विषय ॥ तिन्ह सच में
 कैठे भयो, श्री संग्राम ॥ ॥

विषय—अंगलाचरण, कवि दीप्य प्रकाश राम गुज, तुकमी हाम की वंदना । बलवंत
 के कुम का नाम तथा निवास, उनके रामपुर जाने का करण, उनके राज साज तथा गुर्जों
 का कथन । उनकी बीरता तथा दानादि का कथन, विमल वंश की उत्पत्ति, राय "होम"
 का प्रयाग आगमन और उनकी माता का उन्हें अपने घर लाने तथा राजा मानिक चंद
 की उन्हें अपना दाहिने समस्त मानिक पुर का राज्य देना और होम द्वारा उन राज का
 प्रस्तार । हाम का वंश विस्तार । "क्याही" द्वारा मिंगपय और 'वेमकरय' द्वारा हिरवा
 राज्यों का स्थापित हुआ । आसकरन सुत "रुद्रप्रताप" द्वारा रामपुर राज्य की स्थापना,
 हुनी वंश में राय हरिवंश का हाना और उनका वंश विस्तार । श्री सिंह का प्रयाय वर्जन,
 स्वाम सिंह का प्रभाव कथन ।

संख्या २७१ स्वगणिते, रचयिता—शेकैदास, कागज—भापुनिक, पत्र—३०,

आकार—८ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३६, पूर्ण, रूप—
प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री वट्टी प्रसाद जर्मादार, ग्राम—मानीपुर,
ठाकुर—तालाय दक्की, जिला—मदनत ।

आदि—श्री गयेनायनम ॥ दोहा ॥ जाके रूप न रेप कधु अमल अनादि अनंत ।
सो करणा मैं रूप धरी करि चरित्र भगवत ॥ छर्प ॥ पुरूप परम प्रसिद्ध सिद्ध मुनि कई
जासु गुन । धरत ध्यान योगीस ईम टर वमम गुप्त धन ॥ महिमा कहन पुगण वेद मारद
फगीन मनि । पारन पावत कई जासु गुन गन गनेन गनि ॥ अंग अति उदार पर ब्रह्म
जेहि लागि जतन योगी करहि । मोह महज रूप मम टर वमं जासु ध्यान शंकर धरहि
॥ २ ॥ पारवत्युवाच ॥ झलना ॥ नाथ श्री रघुनाथ को अव गान कहाँ जुजाइ ॥ जा मांति
मे री आधि लै निज लोक श्री रघुराइ ॥ जानि पावन प्रइन उचम प्रिया की रचि देपि ।
कहन लागे कथा पावन शैल नाथ विपे ॥ ३ ॥

अंत—मोरदा ॥ चले वेगि रघुराइ मगत मयुहन मिययुत, भरतहि प्रभू ममझाइ
वीन्ह गज तप लोक को ॥ १०० ॥ गहो मयुहन भाइ तिन्ह प्रबोधि क्रम यतन । महालोक
सुप दाइ राज करौ तहँ हर्ष हिय ॥ १०१ ॥ दोहा गये आपु वैकुण्ठ कंह मिया महित सुप
पाइ । देपि देव नव आइ कै विनती करत बनाइ ॥ १०२ ॥ मल्लिनी छन्द ॥ जै रघुवर
सीता शक्ति निर्लेपकारि । त्रिगुण रहित गीता वेद वरनै परारि ॥ सुर पुग सुपदाइ चिन
मृयान रूपं । सुमिरति मुनि राइ सर्वदा देप भूप ॥ १०३ ॥ दोहा ॥ करि विनती नव
देवता सुमन बरिष सुप पाइ । वमे लोक निज हर्षि कै हुंदिनि सुदित बनाइ ॥ १०४
दंडक छन्द ॥ रवपति चरित सुनत हुचम ताहिय । पुलक पुनि पुनि सुपद नयन जल ।
विनयत शिवहि हर्ष जग मातु हिय प्रभु कर स्वर्ग गयन वरनेहु फल । सुनत अमित सुप
लहहि जगत नर रघुपति पदरति वदव नवल डल ॥ लोने निरपत प्रभु चरण सरन तव धव
दधि बहत सुलेहु निज कर वल ॥ १०५ ॥ दोहा ॥ न्वरगा रोहिणी की कथा पढ़ै सुनै चित
लाइ । पार्व मक्ति अनपावनी अत देव पुर जाई ॥ १०६ ॥ इति श्री लोने दाम विरचिते श्री
रामचन्द्र न्वर्गा रोहनि गयन कथा वरनों नाम समाप्त सुम मन्तु ॥ राम । सीताराम ॥
सीता राम । सीता राम ॥

विषय—इम पुस्तक में शिव उमा का मवाद है—रामचन्द्र को अकंतक राज्य करते
देख स्वर्ग में देवों ने काल को राम के पाल भेजा । काल विप्र का रूप धारण कर राम के
समीप पहुँचा रामचन्द्र ने उममे यह कह कर वापस जाने की आज्ञा दी कि तुम्हे बसी दस
सहस्र वर्ष (संवत्) तक और इम लोक में रहना है । यह जानकर पुर वासी प्रमन्न हुये ।
एक दिन रामचन्द्र जी ने गुरु ब्रिष्ट जी से गुरु ज्ञान की शिक्षा की । समय बीतने के पश्चात्
काल पुन. आता है तब श्री रामचन्द्र भाई के समेत न्वर्गा रोहण करते हैं इमका इममें नव
विन्मार मे वर्णन ॥

संख्या २७२, विनय पत्रिका, रचयिता—मदनगोपाल सिंह, कागज—देशी,
पत्र—५२५, आकार—८ X ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनु-

पुत्र) — २५८, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—बागरी, छिपिकाक—सं० १८९६ = १८९९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० उमासंकर वृषे सैरपुर त्रिसा—गाथीपुर ।

आदि—अथ राग मकर चउथे पास का निव्यते । आसी घटा बुनवि रहिकारी । अगुत्र सखित रघुनाथ गये बन अरु की जनक हुकारी । कोकिल कुङ्कुत बाबुर बोधत रात मई बंध्यारी । दामिनि हमक हमक हृदयमे पैरा मदि पय वारी । कहु तव तक कहु संत कृती यमि पाबै प्रसु हुन्त मारी । सिंह मदन गोपाक के कर्म अस क्यों कित बिचारी । अथ राग परं ठारु जति छिप्यते । प्रथम बिप्यु पद्य मनाबै । सारव के गुन गन मन बसिये नुति करि चरित राम के गावै ॥ गुण पद पंकर रज हग अंजन करि कछि असक पदरय पाबै । बिना मुमिर, ब किय हनके पद रवाई से जधिक बिमूड कहाबै । बिप्यु सारवा गुण सम तीनो विघन हरन सुर जेठ बताबै । सिंह मवन गोपाक भांगते बुकि बिपुळ घन मिधि ह्यम पाबै ।

अंत—अथ अतुर मासा दुसरे बाळ का छिप्यते । स्पाम सबोने निज असाङ्ग में सकि कस नहिं परती घटा बुनइ गर्भत नम चपछा चमक चमक कराती । पवन बरुं पुष्पांमु सुंसवनन सुवनन सिंगुर करै । मदन वदन में छाप रहो है क्यों करि बीर धरै मोहन खोहन मन में बिहरत कैसी करी प्यारी आनि मिभा का यदुबन्धन को रसिक सुबन चारी । आबण रिमिक सिमिकि जळ बरसे कोकिल कुङ्कु करै । मदाहुं असी चकि मबळ छिसोरहिं क्याचह पिर परै । निदुर स्पाम क्यों करि हूये अब तवफ्त हौं आळी । आबण मास रंगीसे को धर आबै बन माळी । यह मम काज क्यों मन धरि करि मै तुम पर चारी आनि मिळाबो यदु बन्धन को रसिक सुबन चारी । वादव रैनि भया बन भीरा पाँकारी चारी । बतपत मेघ प्रचण्ड करी क्या नहिं धर गिरिचारी चातक मोर घोर करि दादुर अरु पक्षी बिचरै । विरह विबोगिन धोगिन उनविन बयब व नीर झुरै ।

बिषय— १—राग मकर में श्री राम चन्द्र का जनक नन्दिनी के साथ वन वाया धीर बन के दुःखों का वजन । २—राग परं में बिप्यु गुणपद, राम हनुमान आदि की बंदना । ३—कुमरी परं में राम, बिप्यु कृष्ण आदि देवों की स्तुति । ४—राग विहाग में विगुंज पद्य, जीव का माया बंधन, मज्जन की महिमा शरीर की क्षण मंगुरता आदि का वर्णन । ५—राग अथ जाबन्ती में कृष्ण राम आदि अवतारों के शारीरिक शोभा का वर्णन । उनकी कीर्तियों का कथन करते हुए मज्जन के छिमे उपदेश । ६—राग मीरबी में श्री रंगी जी की महिमा भीर उनकी अब हारक भक्ति का वर्णन । ७—गणेश विषय धीर श्री कृष्ण का काळीदह चरित्र । ८—राग राम कश्यप में कछियुगी प्यवहारों का वर्णन । ९—बर्ष अगु के महीनों का वर्णन करते हुए किसी प्रेमिका का कृष्ण के प्रति अपना बिधोग प्रकट करना ।

सूचका २७३ प. मदनविनोद निरपट, रचयिता—मदवपाल कागज—बेरी, पत्र— १८० आकार—१० × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अक्षुद्रपू — २११०, पूर्ण रूप—प्राचीन, गद्य, छिपि—बागरी छिपिकाक—सं० १९१२ = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाका बीगनाथ, माम—कुसहरी, बाकबर—पोहान, विद्या—अप्राय (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मदन विनोद निघंट भाषा लिप्यते ॥ अथ निघट भाषा प्रारंभ ॥ प्रथम हृद् के नाम शिवा और हरीतकी और पथ्या चेतकी, विजया जया, प्रथ्या, प्रमथा, अमोया, कायरथा, प्रणटा, अमृता, जीवनया, हेमवती, पृतना, वृतना, अभया, जवस्था नदनी, श्रेयमी रोहिणी यह २१ नाम हृद् के हैं हृद् में ५ गुण हैं । मीठा और कसेला, खटा कड़वा तेज रूखी है गर्म है दीपनी है बुद्धी की बढ़ाने वाली है और पचने के समय मीठी है । रसायनी है बुद्धि की दाता है और आयुर्दा को बढ़ाती है । वल को बढ़ाती है हलकी है दमा खासी प्रमेह ववासीर और कुष्ठ और जठर रोग और कृमी को दूर करती है सप्रहणी कच्च विपम ज्वर गोला पेट के अफोर को खोती है । फोड़े छीरे हुचकी और पाज हौल टिल कमल वाय शूल ताप तिल्ली मीठे और खट्टे स्वाद से तो वाय को दूर करती है । और कसेले स्वाद से पित्त को हरती है और कड़वे और तेज से कफ को हरती है हृद् मे यह तासीर है इतने रोगों को हरती है ।

अंत—प्राण दाता छ. वस्तुओं का वर्णन ॥ ताजा मास नया नाज छोटी स्त्री, दूध पिवना, घी खाना, गरम पानी से नहाना, शिताव ये छ' वस्तुओं से प्राण पालन होता है ॥ प्राण हरता छ: वस्तुओ का वर्णन ॥ सड़ा मास, बूढ़ी स्त्री, वालाकं दही, प्रभात का मैथुन, भूखा सोना, ये छ: वस्तु शिताव प्राण को हरती है ॥ छ' वस्तुओं के आठ गुने गुण अन्न से अठगुना वल पिसान में पिसान से अठगुना दुग्ध में दुग्ध से अठगुना मास मास अठगुना घी में घीसे अठगुना तेल मलने में है लघन कफ को चरवी को आम को ज्वर को हरे है ॥ हलका है पाचन है दीपन है वाय को पंदा करता है शूल को अतिसार को जीते है ॥ परन्तु वालक को गर्भिणी स्त्री को दूबले मनुष्य को शोक में काम में भय में क्रोध में राह से थके को पुराने ज्वर वाले को इतने को मने है ॥ पूर्वी वायु के गुण ॥ पूर्व की वायु भारी है मीठी है चिकनी पित्त को लोहू को बढ़ावै है रोग पैदा करती है विप को कुष्ठ को जखम को फोड़े वाली को बुरी है । विदाही है शीत को कफ को शोक वाले को गुण करती है ॥ इति श्री मदन विनोद भाषा मदन पाल कृत संपूर्ण समाप्त लिखत ज्ञानी राम पसारी क्वार वदी ७ संवत १९१२ वि० ॥

विषय—१००० से अधिक वस्तुओं के अनेक नाम और उनके गुण वर्णन ॥ तथा प्रत्येक ऋतुओं के सेवन वा न सेवन करने योग्य वस्तुओ के नाम ॥ तथा प्राण दाता, प्राण हरता वस्तुओं के नाम आदि वर्णन ॥

सख्या २७३ वी. मदनविनोद निघट, रचयिता—मदनपाल, कागज—देशी, पत्र—१८०, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्ठुप्)—२११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२२ = १८६५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवदुलारे, ग्राम—लखनपुर, डाकघर—मगरैर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि-अंत—२७३ ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री मदन विनोद भाषा निघट सपूर्ण समाप्त. लिखत देवनारायण मिश्र वैद्य
क्षेत्र पूर्णिम्यां संवत १९२२ विक्रमी ॥

सख्या २७३ सी मदनविनोद निपट माया, रचयिता—मदनपाळ, कागज—देसी, पत्र—१६४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपुष्टुप)—२१२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, छिपि—नागरी, लिपिकाळ—सं० १९२६ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—सेठ गार्गिंदराम भगताराम नारबाही, ग्राम—अमिलिहा, जिला—ठणाव (अक्ष) ।

आदि अंत—२७३ प के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री मदन विनोद माया विनोद मदनपाळ कृत सपूर्ण समाप्तः छिन्नत वैशी-मार्गी मासी संवत् वैश्व कवी अहमी सं० १९२६ वि० ।

संख्या २७३ डी निपट माया, रचयिता—मदनपाळ, कागज—देसी, पत्र—२१८, आकार—११ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्टुप)—२७२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, छिपि—नागरी, लिपिकाळ—सं० १९२१ = १८०४ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाहोरी, प्रतापगढ़ (अक्ष) ।

आदि-अंत—२७३ प के समान ।

सख्या २७४. रेख बर्यन, रचयिता—माधो कवि, कागज—देसी, पत्र—१०, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपुष्टुप)—३१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य छिपि—नागरी रचनाकाळ—सं० १९३६ = १८७९ ई०, लिपिकाळ—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—प० उमाचंकर कृष्ण, अन्वेषक हरदोई ।

आदि—अक्ष श्री गणेशायनमः ॥ राम ॥ धन तो बहराति भी उदात्त हाहाकार करि पात पाठ पानी बुबा छबो ध्यसमान है । बीरु वाहार देरा इत्तम सो भेंट हो बीसी कह रात भागो अर्जुन को बान है । मार्गी कवि कहे नेरु पाइके बपान करी छापन मन सावि सेठ जानत बहान है ॥ बान है सुबान बाठ बूमरी न बान मारी रेक मेरी बान तो कुबेर को विमान है । गजसालि की सवारी सीप तुरग सवारी रथ में फरु सावारी ह्य तुग मुतल सवारी है । बान गयी की सवारी बेग बपी की सवारी तामदाम की सवारी सो बबीरी मन मानी है । माबब कहत कडा कौ बर्जन करी पती सब सवारी देश वैसन बपासी है । अकिदास की सवारी विज माया की बबाई विना जानकी सवारी देखि दपी रेल असवारी है ॥

अंत—असु की सवारी भी सवारी पू प्यारी होत जाके पुर बारम पहारन गरद है । मन्द मन्द चलत गपन्द मतबास करे दुरु के सवारे अति धोर के मरद है । कही कवि मार्गीदास सुप को सुपद पाठ रथ जासो न निहाळ होत मन दरद है । भीर की सवारी असवारी सबै न्यारी २ रेख की सवारी वै सवारी सबै रद है । इति रेख बर्जन समाप्तं शुभमस्तु ॥

विषय—रेख का बर्जन ।

संख्या २७५ ए. कदवाचपीठी, रचयिता—माधोदासजी, कागज—देसी, पत्र—६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुपुष्टुप)—१२७,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२, प्रासिस्थान—ठा० शिवसिंहजी, ग्राम—विक्रमपुर, डाकघर—ओयल, जिला—खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ करुण वत्तीसी लिप्यते ॥ कवित्त ॥ गिरि को उठाय ब्रज गोप को वचाय लियो अनल ते उवान्यो पुनि वालक मजरी को । गज की अरज सुनि ग्रह ते छुटाय लीनो राप्यो व्रत नेम धर्म पांडव की नारी को । राप्यो गज घटा तर वालक विहगम को राप्यो प्रन भारत में भीषम ब्रह्मचारी को । त्रिविध ताप हारी निज संतन सुपकारी मोहिं तो भरोसो भारी जैसे गिरधारी को ॥ १ ॥

अत—करत अपराध भारे साझ तर कारै निति अति ही कठोर मति वौर कौन काम हौं ॥ आतुर अधीर ताते धीरज धरत नाहि ऊच नीच वोलि गति वकूं आठौ जाम हौं ॥ अरचान जानौ कष्ट चरचा न वृझत हो कष्ट होत प्रात से न लेत हरि नाम हौं ॥ सब तकसीर बलवीर मेरी माफ करौ कहै माधौदास प्रभु तोरही गुलाम हौ ॥ दो० ॥ या करुणा वत्तीसि को पढ़ै सुनै नर नारि ताके सब दुप दूद को भेष्टे कृष्ण मुरारि ॥ इति माधौदास कृत करुणा वत्तीसी संपूरणम् ॥ लिखी हजारी लाल कायस्त पटवारी वेले गांव वाले ने अपने पाठनार्थ संवत् १९३२ वि० श्रावण मासे शुक्ल पक्षे द्वितीया ॥ ३

विषय—कवि ने ३२ कवित्तों में श्रीकृष्णजी की विनय की है ।

संख्या २७५ वी करुणावत्तीसी, रचयिता—माधो दास, पत्र—१३, आकार—६ X ४½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—रमाकात शुक्ल, ग्राम—पुरवा गरीब दास, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि-अत—२७५ ए के समान ।

संख्या २७६. सारस्वत सार मधुकर कलानिधि, रचयिता—माधवजू, कागज—देशी, पत्र—५४, आकार—९ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५३; पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्रासिस्थान—पं० कृष्णविहारी मिश्र (नयागाँव)—माडल हाउस, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सारस्वतसार मधुकर कला निधि . लिप्यते ॥ सवैया ॥ वानी जुहौं जगरानी सही पद पकज रावरे जो नर ध्यावे ॥ ते नर उपम थूप पियूप सनी मृदुकादि कला वरसावैं ॥ मान भरै गुन ज्ञान भरै पुहिमी मधु वानन कौं ते रिझावैं ॥ कीरति चंद्रिका चद्र समान सभान मै तेइ कविंद कहावैं ॥ कवित्त ॥ अरथ अमोल मनि सुवरन अलंकार ग्रथनि को राजही के गुननि गह्यो करै ॥ मानि सन मानि दान दुजनि सुदामा किय एक मनि लछि लपि सदा उल्हयो करै ॥ सरस सिंगार कल्प भ्रमकनिवनि राजै छवि छाजै छत्र चौर निलह्यो करै ॥ साधु वधु कृपा सिंधु सत्य संधु माधवजू रावरे कौसरे सुति सेइ वी चहयो करै ॥ २ ॥

अंत—भूमि भरतार माधवसे असदार होत विरचि विचारनि चकित चत्र चक्र सक्र भौ ॥ मनहु कविंद ते गती छन प्रताप तेज असनि समान सवि धैरिन पर वक्र भौ ॥ रुधिरि दिस निरज धुध रिस वित रथ विय के गगन पय सिंधु सौनक्रभौ ॥ कुंडली है वैठ्यौ

कुंडली सखीं सहस्र सीस मणि छिन गीय सी सकल कीं सीं चक्रमी ॥ २१ ॥ कुकुर मनि-
हार बिरचै सिगार हेत मयो मूमिभारत को बीरे फल सेस कीं ॥ सरसुति बिधि हरिहर
सुरनाथन के सुरम के साधन के सुपनी हमेस कीं ॥ बापगे चकोर हस कस्तुर कीं अंस मिरयो
फरती अचर्यस सी सुजस माधवेश कीं । गिरि गिरिजा क गोह गीये गीत मंगल के देखि सुजी
बूठ उखड़ो गनेस कीं ॥ २३ ॥ दाहा ॥ ये कींई हूँ रस कवित्त अपनी बुद्धि अनुसार ॥
सौधि कींबियो छमा करि माधवेश अवतार ॥ २४ ॥ इति श्री सारस्वत सारे मनुकर कला
बिधि संपूर्णम् समाप्त ॥ शुभमूयात् ॥ संवत् १८३९ ॥

विषय—कविता के नवों रसों का वर्णन और मायकथाविक्रम भेद ।

संयथा २,७७ पं. केदारमार्ग (स्कंद पुराण का ब्रह्मोत्तर खंड), रचयिता—
माधवानंद भारती, कागज—दूरी, पत्र—६६, जाकार—१२ x ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—
१०, परिमाण (अनुपुष्टुप)—२८८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचना
काक—सं० १९२९ = १८६९ ई०, छिपिकक—सं० १९२८ = १८०१ ई०, प्रासिम्बान—
रामगोपाल द्वैय ग्राम—बीहड़ा बाइमल—महमूदाबाद, बिका—सीतापुर (अजमेर) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गौरी शंकरायनमः ॥ श्री गुरु चरनायनमः । श्री राम
चन्द्रायनमः । श्री सरस्वती नमः ॥ अथ कैलास मार्ग अर्थात् स्कंद पुराण का ब्रह्मोत्तर पंड
विसंज्ञे श्री स्वामी राम कृष्ण भारती सिष्य माधवानंद भारती ने बोहा अर्थात् कच्छ रीति
से काशी जी में माया कला संवत् १९२९ में अतिताप्रसाद सराफ ने लिखा ॥ इच्छेक ।
मन्त्या सता विष्णुहरं गणेशमुमात्मजं देव पतिं दिनेशं कृपारविं वैश्वरं रमेशं यद्दे सुहृदक्षय
तर्हं महेषा ॥ शौरदा ॥ बिनबी गिरिजानंद मगधपतम राज बदन गुन मय धानंद कंद
सिद्धि मदन कल्याण पद । विश्व रूप भगवान सत चित्त आनंद ज्ञान मय । देव अर्धत
प्रभाव गिरा गोचर ध्याचहूँ ॥

अंत—सौ० ॥ यह तब चरित उदार जे गवर्हि अरु जे सुवर्हि । तिनजो मोद
जपार उमक कोरु मह तब कृपा ॥ शंकर सुजस अनूप गाथो मायक भारती । रहै सदा
सुप रूप पई सुनै जे नारि नर ॥ इति श्री मत्परमहंस परिषदाज्यचार्य श्री ७ स्वामी राम
कृष्ण भारती सिष्य माधवानंद भारती प्रवर्तिते बीकाग्रमाने कथा आरंभ बिधि निरूपण
परोक्ष विधातितमो विधानः समाप्तं शुभमूयात् माय मासे शुद्ध पक्षे जपो दसि छिपतं
संवत् १९२८ वि० अतिताप्रसाद द्वैय बकुर निवासी । बीसी प्रति देपी हती ठैसी छिपी
विचार । भूक बूक होई जहां कींको सुजस सम्हारि ॥ श्री राम सिध शिब सिध

विषय—अध्याय (१) शिवपंचासरी मंत्र महात्म और मथुरा के राजा की कथा
(२) शिवरात्रि व गोकर्ण क्षेत्र की महिमा तथा अयोध्या के राजा का इतिहास (३)
शिवरात्री अथ व गोकर्ण धारा से जोडाखी का मोक्ष (४) प्रति मास उमक पक्ष अनुपूर्वा
के दिन शिवपूजन का महात्म (५) अनि प्रदोष में शिवपूजन श्री महिमा (६) प्रदोष
काक पूजा महात्म (७) शिव पूजा प्रकार तथा द्विज पुत्र राजकुमार के मनोरथ सिद्धि की
गाथा (८) मोमचार अथ रात्री सीमंतमी की कथा (९) रात्री सीमंतमी व द्विज पुत्र

के प्रभाव से स्त्री हो जाने का चरित्र (१०) भद्रायकुमार का जन्म मरण व उसको ऋषभ देव से प्राणदान प्राप्त (११) भद्रायु को ऋषभ देव ने सदाचार का उपदेश किया (१२) शिव ऋच (१३) भद्रायु की विजय व व्याह की गाथा (१४) भद्रायु की धर्म परीक्षा और शंकर गौरी का दर्शन व वरदान देना (१५) विभूति महिमा वामदेव जोगी तथा ब्रह्म राक्षस की कथा (१६) कालाग्निनाथ व सनकादिक सवाद (१७) सर्व कार्य सिद्धिप्रदा श्रद्धा है इस अर्थ में चंद्रनाम शंकर का इतिहास (१८) अंध मुनि व शारदा का सवाद उमामहेश्वर व्रत विधि (१९) व्रत प्रभाव से शारदा को सुप तथा पुत्र लाभ होना । (२०) रुद्राक्ष महात्म काश्मीर नृपति नयवानदनी गणिका की कथा (२१) रुद्राध्याय महिमा तथा राजा पुत्र के मृत्यु से छूटने की कथा (२२) कथा श्रवण की विधि विहुला ब्राह्मणी की अति रुचिर गाथा ॥ उपरोक्त २२ अध्यायों में त्रय समाप्तः ॥

संख्या २७७ वी. शंकर दिग्विजय, रचयिता—माधवानन्द भारती (काशी निवासी), कागज—देशी, पत्र—१७५, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुच्छेद)—५२५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६२७, प्राप्तस्थान—संकटा प्रसाद अवस्थी, ग्राम—कोटरा, तहसील विसवाँ, ढाकघर—कोटरा, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ [माधवी शंकर दिग्विजय लिप्यन्ते ॥ श्री गुरु परमानन्दं दक्षिणमूर्तिं रुषिणं ज्ञानानन्दप्रदं शातं कृपासिंधुमहं भजे ॥ श्री रघुपति पर्यायमुदारं कृष्णं नाम सहितं गुणसारं भारतीतिप्रथितं सुपं द्वारं नौमि गुरु संसृतिभयहारं ॥ सत्यं ज्ञानमततमादिविशुरं नित्यं विसुं निषेकलं शांतानन्दं पयोधिं मन्त्रियं जे श्रद्धं तुरीयं समं पस्या नन्दलं वेन सर्वं मनिशं प्रातरि धात्रादिकं यो वाग्बुद्धिं भिरप्यगम्यं नितरां ध्याये मतं सर्वगं ॥ चौ० ॥ मंगल मूरति सिद्ध विधायक विनवहु प्रथमहिं श्री गणनायक ॥ श्री गिरिजा गज जननि भवानी चरनि वंदि विनवों सुप खानी ॥ वन्दौ दिनकर जासु प्रकासा । सब जग कर तम करै विनासा ॥ ब्रह्मादिक सब देव मनाई । ऋषि मुनि कवि लोगन सिरनाई ॥

अंत—छंद ॥ श्रुति सेस सारद जासु जन्म महिमा अपार वपानहीं । अति अतुल तासु प्रभाव केहि विधि छुद्र नर पहिचानहीं । सो परम पावनि शंभु कीरति सुनहिगे जे गाइ है ते चंद्रभाल प्रसाद ते मन काम सब विधि पाइ है ॥ सो० । जो पायो है मोर यह मैं माधव भारती । तैसो लई प्रमोद संभु कृपा से लोग सब ॥ इति श्री मत्परमहंस परिव्राजिकाचार्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवा नन्द भारती विरचिते श्री शंकर दिग्विजय समाप्तः ॥ शुभ मस्त ॥ सवत १९२७ वि० ॥

विषय—शंकर प्रादुर्भाव, ब्रह्मादिक देवता औत्तार, शंकर के आठ वर्ष अवस्था से पहिले के चरित्र, शंकर का संन्यास ग्रहण, ब्रह्म विद्या संस्थापन, श्री व्यास समागम, श्री शंकर मठन शास्त्रार्थ सरस्वती है साक्षी जिसमें ऐमे सर्वज्ञ भाव का चिंतवन, योग द्वारा शंकर का राज शरीर में प्रवेश, भैरव नाम कपाली की पराजय, हस्त मलक तोटकाचार्य, दोनो का शंकर का शिष्य होना, वार्तिक पर्यंत ब्रह्म विद्या का पहचाना पद्य पाद की तीर्थ

यात्रा का निरूपण, श्री शंकराचार्य के द्वित्रिजय का कीर्तुक, श्री शंकर का शारदा पीठ वास वर्णन, शारदा स्वामी शंकराचार्य का जीवन चरित्र ।

संख्या २७८ प रामाश्वमेध, रचयिता—मधुसूदन दास, कागज—देसी पुराना, पत्र—८९६, आकार—११ X ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुच्छेद)—११८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—मागरी, लिपिकाळ—सं० ११२४ = १८९७ इंच, प्राप्तिस्थान—श्री श्रीसिंह जमींदार, ग्राम—भाठखी खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—हरदोड ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री मते रामानुजाय नमः श्री रघुनाथाय नमः ॥ दोहा ॥
 बंदि प्रथम गुरु पद सुखमु निव मिर धर मुख पाय । प्रविधि ताप तम दहन कहु दिन
 कर सरस मुनाय ॥ निव देमिक गुरु कंथ पद बंधन करहु सजीति । विनु प्रयास जिन की
 कृपा महा मोह दस जीति ॥ २ ॥ प्रनवि सकळ गुरु पद कमळ पुनि बति राज कृपाल ।
 जिनक पद बन्धन करत मिरत सकळ भव बाळ ॥ ३ ॥ बदि परीकुस चरण जुग सुर तप
 सरस मुनाय । मुमिरहु पापुनि पद कमळ, मरणागत सुखदाय ॥ ४ ॥ राम मिभ पद प्रन
 विकरि कमल नयन पद कळ । नाथ मुनि सही बंदि पुनि सळ गजब सब मज ॥ ५ ॥ सकल
 गणनि सिर मारु श्री विजययेन कृपाल । जिनके मुमिरन के करें निददि महा
 भव बाळ ॥ ६ ॥

शंठ—छन्द ॥ उर छाव परमानन्द पुनि कर छोरी बहु बिनती करी मनु कीन्ह कृपा
 अपार मोपर राम करिनि विस्तरी ॥ अथ अष्टम पाठ उदार कल्प्या सिंधु महि जन जानिये ।
 मयो धन्य बनाय सकळ प्रकर मन अनुमानिये ॥ दोहा ॥ पुककि गत इदि भांति बदि,
 कीन्हों चरण प्रभास ॥ हरये प्यास उदार तव पर्ये कृपा के भाम ॥ मी जइ मनु मखाय तन
 संतत कुमति निषाम । बरम्यो राम प्रसाद वह शंथ सुमति अनुमान ॥ सोरख ॥ छिमहु
 सस्त समुदाय, कीन्ह विटाई विपुल मी । कीर्ती कृपा बनाय अनुप जानि निज दिनि
 निरति ॥ इति श्री पद्म पुराणे पाठाळ पदे शेषा वास्त्यापन सम्बोद मधु सूदन दास हते
 श्री रामाश्वमेधयो ग्राम अष्टमोऽध्याय १८ संवत् ११२४ माघ मासे शुद्ध पक्षे त्रिपि
 णका दश्यां मीम बामने पुस्तक लिप्या देवी मकान ताल के मीळी मीजे खानीपुर ॥ सति
 राम पार्वती शिष ॥

विषय राम का अश्वमेध यज्ञ ।

संख्या २७८ श्री रामाश्वमेध, रचयिता—मधुसूदनदास (इटिअपुरी, इटावा),
 कागज—देसी कागज पर, पत्र—७३०, आकार—१७ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११,
 परिमाण (अनुच्छेद) १०३४, पूर्ण, रूप—माधारण, पद्य, लिपि—मागरी, रचमाकाळ—
 सं० १८३१-१७८२ इंच, लिपिकाळ—सं० ११३३ = १८७८ इंच, प्राप्तिस्थान—बिष्णुदास
 उर्फ पुत्री महाराज, ग्राम—भडखी, डाकघर—तालाब बक्सी, जिला—हरदोड ।

आदि—शंठ—२७८ पृ के समान ।

पुष्पिका इम प्रकार है—

इति श्री पद्म पुराणे पाठाळ शंठे शेष वास्त्यापन संवाद मधु सूदन दास हते श्री

रामा स्वमेधयो नामष्ट पठितमोऽध्यायः (६८) मवत् १९३५ धावण मामे शुक्ल पक्षे तिथ्यां
एका दस्यां गुरु वामरे लिः आनदीदीन पठित ॥

संख्या २७८ सी. रामाश्वमेध, रचयिता—मधुसूदन, कागज—देशी कागज पर,
पत्र—६४८, आकार—१० × ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुपट्टप्)—
८५०५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३९ = १७८२ ई०,
लिपिकाल—सं० १९६८ = १९११ ई०, प्राप्तिस्थान—रामचन्द्र छीपी द्वारा भगीरथप्रसाद
दोक्षित मठें बटेद्वर, जिला—भागरा ।

संख्या २७९. सामुद्रिक, रचयिता—महादेव, कागज—देशी, पत्र—८६, आकार—
८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुपट्टप्)—१०३२, पूर्ण, गद्य,
लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामप्रसाद
दूबे, ग्राम—भरोमेपुर, टाकघर—चमरौली, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ सामुद्रिक महादेव कृत लिप्यते जां चरण मदा
नही पमीजते जिनका तलवा बहुत कोमल रंग कमल के भोतरी भाग के तरह
का टगलिया एक दूसरे से जोड़ी हुई नप सुंदर तथा तावे के रंग के समान पँदी सुंदर
जो चरण मदा गर्म जिनकी नमे निकसी नहीं है गाठें ढवी और जो चरण घूम की पीठि
की भाति ऊचे हैं उनके घुमे जिसके चरण होते हैं मो पुरुष राजा होता है जिनके चरणों
के नप सूप की नाईं रूपे और मटिया जिनके चरण टेढ़े जंची नसवाले और सूजे जिनकी
अंगूठी एक दूसरे से अलग अलग हों वह मनुष्य दरिद्र होता है ।

अत—जिस नारी के दोनो चरण स्नेहयुक्त सुंदर उन्नत तावे के रंग के नपों मे
युक्त हैं और मत्स्य अकुस पद्म चक्र हर आदि चिन्हों के सहित हैं वह स्त्री शुभ कारिणी
होती है ॥ जिस स्त्री के पैरा के तरवा कोमल और पसीजते हैं जिनकी जाव रोमा मे हीन
है × × × सम वक्ष भोग वान; और निम्न वक्ष जन निर्धन होता है महादेव रचित ह्य
सामुद्रिक शास्त्र को पढ़ने सुनने व गृह में रखने से मनुष्यो को शोक नहीं रहता ॥ इति
श्री महादेव कृत सामुद्रिक संपूर्ण समाप्त. लिखते रामचरनराम संवत् विक्रमी १९४० चैत्र
शुक्ल नवमी राम राम राम राम ॥

विषय—सामुद्रिक वर्णन ॥

संख्या २८० ध्रुवलीला, रचयिता—महादेव (भैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—
४०, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपट्टप्)—३६०, पूर्ण,
रूप—बहुत निकृष्ट, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९५० = १८९३ ई०, प्राप्ति-
स्थान—प० राममद्र पुजारी, ग्राम—कला वगहा, टाकघर—मौरावाँ, जिला—उन्नाव
(अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ ध्रुव लीला लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री गणपति को
सुमिरि के वदौ पवन कुमार वल बुधि विद्या देहु मोहिं हरी कलेश विकार ॥ ध्रुव लीला
प्रवठ करु भक्तन को सुख सार । लज्जा मेरी राखि ये हे प्रभु कृदन सुरार ॥ बुद्धि हीन

मति मय मैं तुम करता संसार । मय ऊपर किरपा करी संतन के रलवार ॥ तुम प्रभु दीन
दयाळ हो मेरी ओर निहार महादेव पार्थ वरदा हीना नाथ तुम्हार ॥

अंत—सर्व लोगों का अस्तुति करता ॥ धन्य करता धन्य स्वामी धन्य प्रभु भुव राय
को । धन्य आकी प्रेम भक्ति धन्य भिमूषण राय को ॥ धन्य प्रभु मोहि वरदा दीम्हों भक्त
के बस भयपके । धन्य भुव श्री मात को हि धन्य अस सुत पाव के ॥ धन्य हम सब नाम
वासी धन्य प्रभु दरशन भयो धन्य है महादेव को जिन धन्य कहि पद पद कही । बिशुन
मगबाब का भुव जी को आशीर्वाद इकर अंतर ध्यान हो जाना देवताओं का पूज करसाना ॥
श्री० ॥ पुष्पन श्री बर्ष करी दहन धैठ बिमान । श्री श्री सख्द उचारि कै करै अपसरा गान ॥
इस पुस्तक के पढ़त ही उपजत हृदे उपजत हृदे ध्यान । लीला । सखित विनोदबी भक्तन
श्री मुख खान ॥ महादेव परसाद मे बहुत किबो परिभ्रम । भुव लीला के कहत ही हृद
जात सब भ्रम ॥ इति श्री भुव लीला समाप्तमिति भावण सुरी १५ संवत् १९५० वि० ॥

विषय—भुव जी की कथा जन्म से लेकर मगबाब श्री कुण्डा चंद्र तक के दर्शन तक
का वर्णन ॥

संख्या २०१ नीति संदीप, रचयिता—महादेव (सहिजापुर इलाहाबाद),
आय—देशी, पत्र—६४, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण
(अनुच्छेद)—६४० पूर्ण, रूप—बचीन, पत्र, लिपि—नागरी, रचनाकार—सं०
१९२४ = १८६७ ई० लिपिकार—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्रातिस्थान—प० जयती
प्रसाद, ग्राम—गोसाईं खेडा, डाकघर—चमपानी, विद्या—उच्चाव ।

आदि—श्री गणैसायनमः ॥ अथ नीति सदीप छिप्यते ॥ श्री० ॥ संतोहर रामोदर
हिं बरीं सुर मंदोह । बदि अमुर गुरु गुरु विदुर रवीं नीति संदोह । है फल करम जमीन
जुक्ति करम अनुसारि । सोमि सुजन जन कसु करै अरज अत्राज विचारि ॥ जतन करै ती
धन मिर्छि पै ईव जमीन न होय । अरज सिद्धि न जतन करि ती तेहि दोष न कोइ जतन
करै अरज सरै क्रिये मनोरथ नादि । कबहुं न साबत सिद्ध के मुख में घृणा समाहि ॥

अंत—परगुण तम कहुं छलत ही सुजन सराहत ताहिं । बालक बोल बिलोकि ज्यों
मात पिता हरपाहिं ॥ १ ॥ बसत सबै निज बाप में धया नद नरी गंग । सुरजन बई पर
बाप ज्यों सति कसि सिंधु बरंग ॥ २ ॥ सुजन सुकवि मुसक्याइ हैं सम जन कलि हरपाइ
जुर्जन हसिय अग्रह के मम हृत सबहिं हंसाइ ॥ ३ ॥ महादेव मति मय है रण्यो नीति
संदोह ॥ नाहिं अचरज जो पै कियो कृपा कृप्य संदोह ॥ ४ ॥ उत्तम उत्तम नीति द्विग मम
हृत कीकटु भीक । सगी मिठाईं छाइ के ज्यों कटाइ मछ कीक ॥ ५ ॥ महादेव बहु प्रिय
की बीच बीच के भाव । होहा छदन में धरयो कसु निज सुक्ति प्रभाव ॥ ६ ॥ नीति सहित
चित में रली चिंति नीति सदाइ । मति सुपरीं मुख सों भरै हरै विपति संदोह ॥ ७ ॥ ठमइस
के नीबीस मे सास मास भादोई ॥ बदी हाइमी में भयो पूरण नीति संदोह ॥ ८ ॥ सोरह
कोस प्रयागु है पश्चिम वंगा तीर । बसत प्राम सहिजापुर महादेव न थीर थीर ॥ इति
श्री मत कृप्य कृपा पाव कधी बरोइ भव भदन गोपालामज महादेव हृत नीति सदीप
संपूर्ण समाप्तः ॥ लिप्यतः । राम पिछास अदिबन राहा इदं संवत् १९३० वि० शुभं ॥

विषय—नीति के दोहे । छंद, आदि और हर एक प्रकार के मनुष्यों के लक्षण और राजा लक्षण, मंत्री, मेनापति, सूर, महारथी, अति रथी, रथी, कायर, कामदार, भंडारी, सभामुद्र, दानाध्यक्ष, उपरोहित, दूत, मेवर, मारथी, नास्तिक, दाराग, धत्री, शत्रु, द्राघ-चारी, गृहस्थ, वानप्रस्था, सन्यासी, त्रिदंडी, कायक कर्म, वाचक कर्म, मानसकर्म, धर्म, अधर्म, इंद्रवर, जीव, माल, स्यात्तिक, राजस्य, तामस्य, सुक्त, परम, हंस, जोगी, भोगी, भाई, खी, पुत्र, सुपूत, पूत, अपूत, कुमूत, मृत, मित्र, पत्र, मातृ, मज्जन, वृज्जन, मठ, धूर्त, और पदित इत्यादि के लक्षण ।

संख्या २२२. सुदामा चरित्र, रचयिता—महाराज दाम, कागज—देशी, पत्र—२६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६३, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६१६ = १८६२ ई०, लिपिकाल—सं० १६५४ = १८९७ ई०, प्राप्तिस्थान—ग्रामती लाल मुकरीमनगर के, ग्राम—जोर्वाटोला, ठाकुर—हसन गंज पार, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ सुदामा चरित्र ॥ दोहा ॥ विचन विदारन विरद्वर वारन वदन विक्रास । वर देवहु वाई विशद वागी बुद्धि विलास ॥ चौपाई ॥ मादर मारद वदन करिके । चरण रैन निज माये धरिके ॥ गनपति जननी शंभु प्रिय वामा । करिये मानु मम पूरण कामा ॥ दोहा ॥ गनपति चरन मनाइ के विनै द्वारिकाधीश ॥ जेहि सुभिरति मिधि बुधि मिलत नामत विचन क्लेश ॥ ऋषिच धनाक्षरी ॥ सुदर सुवर श्याम नील अरु विन्द वत वदन प्रकास चरु चन्द्र माल जात है । लोचन विमाल कीर्षी कज रज मीन जल कुरग विहाल लखि चाल भूलि जात है ॥ मान मनमान भरे पूग्न प्रमान भुज बल के निधान सुचि सोभा सर सात है । दीन पै दयाल सोई महज कृपाल प्रभु दाम महाराज प्रेम हाट न विक्रात है ॥ दोहा ॥ पति सुनो हमारी वात द्वारिका जाओ ॥ सुख करो स्याम सौ मिलो दरिद्र मिदाओ ॥

अत—विभे मान महाराज की महाराज की दीन वंशु श्री राम । निमुदिन हटै वसौ कौ मदा सुभ काम ॥ मोरठा ॥ पत्री यह करि नेम, पाठ करं जे नर सुजन । लहै सो हरि पद प्रेम, सिद्धि मने गति प्रभु कृपा ॥ दीजै दीन दयाल मोहि वदो दीन जान । चरन कमल को आसरो गत सगत को वान ॥ इति श्री सुदामा चरित्र महाराज दाम कृत समाप्तम् ॥ संवत् ॥ १९५४ ॥ मीती भादो सुदी ७ ॥

विषय—सुदामा जी का चरित्र ।

संख्या २२३. सोने लोहे का झगडा, रचयिता—महावीर, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० देवतादीन मिश्र, ग्राम—सुलतानपुर, ठाकुर—थाना, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सोने लोहे का झगडा लिप्यते दोहा चरचा सोने लोहे का अति सुदर सुखदाय । नौरा झौंका दुहुन की सो वरनत कविराय ॥ शौर ॥ मोना पुनि कहें लोहे चाकर मेरा । हमसो परिवार कुद्व वसत धनेरा । समुझत हम दान

पुनि वैद भक्ति में । हमारी सबमान करत जक में ॥ राजा भय साह साह करें हमारी ।
 परै बीन खीर हीन सुंदर बारी ॥ साह सब जग में करें हमारी बेती छेरी मुन जरे कोह
 ताकत बेती ॥ बबाब छोड़े का ॥ छोहा पुनि कड़े सुनरे सोने । मोहि देखि तोहि फिरत
 गाइन छोने ॥ तोहि पहिरि पारि परै पांख सैज पी । मोहि बाबि सूर बीर कई सेत पी ॥
 तुमसे हमने सुहाय बहुतक सीन्हा अपना कर छोड़ करकन भीरन का सीन्हा । सूबा उमराव
 वांघ कीन्हे बेरी । सो तू किया चड़े समतर मेरी ॥

अंत—गल्प यदि कृष्ण जाये किया निर्वाता । सोना छोड़ दोऊ अंग हमारा ॥
 महाबीर धरि तपसी दोऊ । जाके घर देव छोड़ सोना दोऊ ॥ कहे वेद चार बात बीन के
 सोना भरु छोहा दोऊ सिरेहीन के ॥ इति श्री सोना छोड़े का श्रृंगार महाबीर कृत संपूर्ण
 समाप्त संबत १९३० वि० कृपा शिव कंठ बाबपेई मुदरिस फासी सक्तीपुर श्री गंगा की
 की जय : ॥

विषय—सोने बीर छोड़े की अपनी अपनी पचाई करना ॥

संख्या २८४ ए. श्री कृष्ण गीतावली, रचयिता—संजनबकर्ण महाबीरप्रसाद (बाँस
 गाँव गोरखपुर) कागज—भाबुनिक, पत्र—११२, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति
 पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुच्छेद)—१४४० पूर्व, रूप—युक्तक के समान, पद्य, छिपि—
 नागरी, छिपिकास—सं० १९३० = १८८० ई० प्राप्तिस्थान—राज्य अमरसिंह, ग्राम—
 महारिया, बाकुर—बिसबाँ, जिला—सीतापुर (अबध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री कृष्ण गीतावली लिप्यते ॥ दो० ॥ गणपति जी
 के चरण धरीसीध भित काह । बिनै करी करि जोरि कै शारद होहु सहाय ॥ भक्ति पदारथ
 मोहिं मिलै कृपासिंधु मज राज । सदा बसो उर बिरज मणि कृष्ण चंद्र महाराज ॥ अथ
 वंदना विषय मजबाबली प्रारंभ । गणपति विषय विचारन हारे । मंगल करन अमंगल
 वासक सुप के सदन उमा के वारे । एक दत्त गज सुप कंबोदर सेंदुर तिकक मीन रतथारे
 होहु मसह मनोज वहन सुत अम अथे के नाथान हारे । आकर प्यानचरत सुर भर मुनि
 छोड़हु वेद विदित संसारे । मम हृष्टा तुम जानत ही प्रभु तापै सेबीं चरण तिहारे ।
 तुकसिदास जानद अब होय राम सिया उर वसत हमारे ॥ १ ॥

अंत—॥ दो० ॥ गणपति जी की कृपा से मयक सुमंथ समाप्त । मजब माब की
 रीति सों सुप मो अद्भुत प्राप्त ॥ जो मज निश्चय कीक दी करै मजब नित मेम । ताके
 हरि हिरदी बडी कागी मज सम प्रेम ॥ जो माया से रक्षित है कमों से बडवान । सो प्राणी
 के बध रहै सदा कृष्ण मगवान ॥ भास मनुप तियि दशमी कृष्ण पक्ष रबिबार संबत सीतिस
 विक्रमी मी पुस्तक छेपार ॥ हे बासुदेव कुमार मासम पठित न भीर छोह । अंत काक
 विस्तार तुम्हरी कृपा अदरते ॥ इति श्री कृष्ण गीतावली समाप्त ॥

विषय—कुछ कवियों के मजब मंगल किये गये हैं ॥

संख्या २८४ वी श्री कृष्ण गीतावली, रचयिता—महाबीरप्रसाद (बाँसगाँव
 गोरखपुर), कागज—नवीन पत्र—११०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४,
 परिमाण (अनुच्छेद)—१८२०, पूर्व, पद्य, छिपि—नागरी, रचनाकास—सं० १९३० = १८८०

ई०, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८८२ ई०, प्रासिस्थान—प० त्रिवहुलार वाजपेयी, ग्राम—भीषमपुर, टाकघर—नोमगाँव, जिला—गंगी (अवध) ।

संख्या २८४ सी. श्री विष्णुगीतावली, रचयिता—महावीरप्रसाद (योगगाँव अवधपुरी), कागज—देशी, पत्र—१८८, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३७ = १८८० ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्रासिस्थान—सं० कुंदनलाल, ग्राम—सफीपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—ओ निश्चय मन टीक है करे भजन चितलाय । लरे ज्ञान सुप सपटा पाप पहाड़ विलाय ॥ गुणावाट गोविंद को काटत भव जंजाल । जाफ़ी ठूपा अनंत ते नहिं व्यापत कलि काल ॥ जो विष पी तजि ज्ञान बल करत भजन में भग । यो जमपुर दुग्य पाह है जैसे कीट पतंग ॥ मव याधन से मूल धन भजन भक्ति भगवान । अतकाल हरिपुर लहे पाते पद निर्वाण ॥ महावीर मति हीन अति सुत हीं देविदयाल । सदा ब्रह्मांड में मेरे रघुवर दीन दयाल ॥ बांग गांव एक नगर है । अग्रधपुरी परधान । गोरगपुर के निकट ही जन्म भूमि अस्थान ॥ महागज गज तहमील में हीं स्थाह नसीम । छर्मां डिटाहें मोरि अति वृषा करी जगदीश ॥ विष्णु गीतावलि नाम धरि अथ क्रियो परचार । रघुवर पार लगाइयो अपनी ओर निहार ॥ रागी वागी रतन पारपी नाडी और निवाय । इन पहुचन के गुर मही पे उपजे अंग सुभाव ॥ संवत उनइस से पीतिया । करी गंथ परकाम पुनीता ॥ माघ मास एकादसि जानो शुक्ल पक्ष मन में परिमानो ॥ पढ़िहै सज्जन चतर सुजाना । सुनिहै हर्षित चित है काना ॥

अंत—नमो नमो महा तत्व अहंकार कारनी नमो नमो वायु तेज नीर नभ विहारनी ॥ नमो भूमि धारनी नमो जगत कारनी ॥ नमो नमो त्रिरकालनी नमो याम यामनी ॥ नमो नमो चांद्रमा । प्रचंड रूप चंद्रिका ॥ नमो नमो जालिपा । नमो स्वरूप कालिका । नमो नमो लक्ष्मी । त्रैलोक्य याम वृद्धीन रामी ॥ नमो नमो नम हरो कष्ट रक्षणी । दो० ॥ राम नाम सुमिरन करो । तव होइ है निस्तार । नाहिं तौं परि हां कूप में जाय अति अधियार जग में जाके सुपन ते धोके निरुमत राम । ताके पग की पानहीं मेरे तन की चाम ॥ इति विष्णु गीतावली समाप्तम् लिखत राम स्वामी धैरागी संवत १९४० पोष मकर शुक्ल पक्ष ५ ।

विषय—रामचन्द्र जी की स्तुति और अन्य शिक्षा प्रद भजन

संख्या २८५, अटारह पुराण और पचीस श्रवतारों के नाम, रचयिता—महेशदत्त, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ × ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ = १८८२ ई०, प्रासिस्थान—प० रामविलास, ग्राम—मटारनगर, टाकघर—बंथर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अटारह पुराण और सख्या लिप्यते ॥ घनाक्षरी ॥ ब्रह्म है अयुत पद्म पचन त्रिंविंश विष्णु चतुर्विंश शिव पंच विश नारदीप है ॥ अष्टादश भाग-

बत पतही बीबत ब्रह्मकिंग पृथ्वीरु अमुत वामनीय है ॥ इन्द्रस ब्रह्मांड चतुर्विंश वाराह
स्वयं पृथ्वी सै पृथ्वी सहाज सावनीय है ॥ १ ॥

पंच शत श्रीवृह सहास है भविष्य अग्नि पंच वृह सहास भी चारि सत मानिये ॥
इन्द्रके पृथ्वी किये पद्य स्वच्छ कृष्ण चारि हात हैं विचारि विरपारि त्रिप आनिये ॥ सुनत
सुभाषत भी गावत बतावत के हरि कोक पावत कदाबंतन आनिये ॥ बन मनाप सनुसाप के
महेसायच कहत सुभाष मन भाष ती वधानिये ॥ इति अथरह पुराणों की नामावली
संख्या समाप्त ।

अंत—विष्णु के २५ अवतारों के नाम भी चरित्र लिखते ॥ वामनावतारी । वामन वाराह
पृथ्वी कपिक कुमार पृथ्वीवृह बरु रिपम नरसिंघ इंस टानिये ॥ मत्स्य कूर्म हरि हय मुल
व्यास हृष्य बुद्ध मोहनौ परशुराम रामचन्द्र मानिये ॥ कश्यपी नारायण जनार्दनरि भी भुव
पृथ्वी पंच विंश गाये पी अस्तव्या कृति आनिये ॥ गाव त्रिन गुन पार जातन गणेश शेष प्रजनेम
भी महेश कर्ण महेश मानिये ॥ बकि जाडी वामन नरसिंघ प्रह्लाद पाछी हरि गज साक्री
राम धाक्री कंक नाहु को ॥ मत्स्य वेद उजारी भीर कूर्म पृथ्वी गिरिधारी कृष्ण कंस दारी मोह
नारी मारी राहु को ॥ बुद्ध वृषा क्यारी बराह महिधारी कपिल बाग संचारी राम मारी सहास
बाहु को ॥ कश्यपी स्नेह दारी व्यास वेद विस्तारी रिपम ज्ञानहिं पसारी प्रभु भूमि गारी
कान्हू को ॥ २ ॥ ह्यास्य वेदीपचारी इंस भक्ति जोग चारी प्रबंध मारी बरु भुव उच कोक
धारी हैं ॥ नारायण तपधारी कुमार आत्म तप्य पारी अश स्नेह मारी वृष जोग विस्तारी
हैं ॥ कोक रोम दारी वैद्य राज उपकारी सब कर्णों की पुकारी बकिहारी हैं ॥ बुद्ध अपकारी
द्वितकारी निजवास के महेश अपहारी भी अनक कार्य करी हैं ॥ विष्णु के २३ अवतारों के
बन चरित्र संपूर्ण ॥ दसस्तम्भ मापाराम प्राह्मण शिवपुर निवासी साद्रपद कृष्ण अष्टमी संवत्
१९३६ वि० राम राम राम राम ॥

संख्या २२६ मकसूद चारुभासा, रचयिता—मकसूद, कागज—दही, पत्र—१०,
आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपुष्ट)—२१०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, किये—भागी, कियेकास—स० १२६० वि० = १८७३ इ०,
प्राप्तिस्थान—अ० रामनरेश सिंह, ग्राम—तारापत क्य मेवादा, डाकघर—बहलिया दुहर्ग,
जिला—बीरी ।

आदि—भी गणेशायनमः ॥ सुधा क्य नाम अठह चौकटा है । कुपुके अपनी जबा
क्य कोकटा है ॥ कई जबा कया मैं उसकी कियरि आई । उसी की दो जहां मैं है सुदार्ह ॥
किय् गुलमात ये सब नूर पैदा । किया अरको समाते पूर पैदा ॥ किय् रोशन ककक कपर
सितारे । किये श्रीवृह तबक थक थक निम्बर ॥ किय् क्य् जमी कपर समंदर अथरह गडि
हरिया जिसके अंदर ॥ किय् बाग जहां मैं सुन्दर गुलजार । झहर बसलो चौखारा
मिन्न कंधार ॥

अंत—गरज हुई उसके दिन को शावमापी । रू कर मकसूद आसिर कहानी ॥
पर अब न रो को आई को सुबाधे । यही मित्रत है मरा मुस्तफ़ से ॥ फिर दिन खरक
मैं उसके मीज से मिके बिछने इकाही सच के बीसे ॥ इति श्री मकसूद क्य चारा साहा

समाप्तः लिखा सन् १२९० हिजरी लाला प्रभूदयाल कायम्य ॥ जैसीताराम जैसीताराम
जैसीताराम ॥

विषय—विरहिनी का थारहमामा ।

संख्या २८७. हंस जवाहर, रचयिता—मगदूम ग्राह (दरियावाद), कागज—
देशी कागज पर, पत्र—११६, आकार—१ × ५३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण
(अनुष्टुप्)—१८५६, संहित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—सं०
११४६ हि० = १७३६ ई०, प्राप्तिस्थान—हथीबुला, ग्राम—रघवावाजार, टाकवर—खाम,
जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—धरती मेरु टोट विधि साजा । ताके बीज मन्त्र उपरजा ॥ मिरजा विप
अंभृत भुंइ माँहीं । सिरजिट दूध जो दुइ नोट राही ॥ मिरजे ऊप अनेक मिठाई । सिरजे
फूल सुवाम बसाई ॥ वनपद कीन्हा औ मेरु पटारी । कहुँ उजार कहुँ फुलवारी ॥ पप
पतग बहुत विवि कीन्हा । भोग विलाम यवै सुख दीन्हा ॥ सवजा सिंघ हस्ति औ
चिटटी । सवका भोग आपु विधि वांटी ॥ एम मारि पुनि एक जिआवा । वोही कर भरम
जानि को पाया ॥ जो चाँई यो विधि करै । अँई यो आपु अकाम । गगन फिरै भुइ थिर
रहै । मे अम अचरज धाम ॥

अंत—हुलसी नारि निरपि पिठ, हिये न हरप समाइ । अग अंग भयो हुलाम,
सब दुप गये पराइ ॥ लपि पिठ नारि गइ घर माहीं । हिये हुलास भे सुप मा छाही ॥
आइ वरात जो पहुँची वारा । लागे होन द्वारा के चारा ॥ नप तन वरन नपी परगामी ।
मानाँ कली × × ॥ अछत कर कचन वरसावै । मगलचार लोग सब गावै ॥ मोहीं
देपि सपी वर लोना । रहिगई निरपि ठगी जनु टाँना ॥

× × × ×

विषय—

पृष्ठ १ लुप्त ।

(१) पृ० २ से पृ० ८ तक—ईश्वर के मृष्टि कर्ता होने एवम् सर्वशक्ति मान होने
का वर्णन । (२) पृ० ९ से पृ० ३० तक—इजरत रसूली की तारीफ, पीर अशरफ़ एवम्
सुहम्मद शाह सुल्तान की वड़ाई । ग्रंथकार का परिचय—

लखनऊ अवध केर मझारा । दरियावाद नगर उजियारा ॥ जहा मखदूम केर
अस्थाना । मोहम्मद अवजल जगत वखाना ॥ इन मखदूम नाम जिहि दीन्हा । तेहिते नगर
श्रचल विधि कीन्हा ॥

× × × ×

अमनशाह पिता कर नाऊँ । दरियावाद माँझ तिन ठाऊँ ॥ प्रस्तावना, पंडितों के
विनय, ग्रंथ निर्माण काल—सन् ग्यारह सौ वनचाम जौ आए । तब यह कथा प्रेम करि
गायै । बलख बुखारे के नुप का निस्सन्तान होकर धूमना और एक साधु से आशीर्वाद
पाकर आना ।

(३) पृ० ३१ से पृ० ६५ तक—हंस के जन्म का वर्णन, उत्सव, बाल्यकाल,
तथा सौख्य वर्णन, सुलतान का देहावसान, हंस का बन्दी होना तथा वहाँ से मुक्त होकर

दृष्टततः बनादि में स्वर्तप्रतापूर्वक भ्रमण करना । (४) पृ० ६६ से पृ० ७९ तक—
मुक्ताब्जत नंद । वन में रुक्मी से मुक्ताब्जत और उसका आश्रयमान विद्याना । भीम के
मुक्ताब्जत से मुक्ताब्जत और उसका इस को रामपाद देना, (५) पृ० ८० से पृ० ८४ तक—
ईम का स्वप्न, एक स्त्री के दर्शन उसने प्रेम और विरह बना । (६) पृ० ८५ से पृ०
९० तक—भीम में उस स्त्री के होने का वचन, उसके रूप गुणादि का वर्णन । (७) पृ० ९१
से पृ० १०० तक—मुक्ताब्जत नंद, मणियों सहित कुमारी का उद्धार, सौहार्द, बलश्रीका
पद्म शृंगार वर्णन । (८) पृ० १०१ से पृ० १०७ तक—कुमारी का वाग निवास और
वराहाप । (९) पृ० १०८ से पृ० ११६ तक—भौगमी का वचन । (१०) पृ० ११७
से पृ० १३२ तक—मुकुष पद्म कलमती वचन, शुक्र-संवाद । (११) पृ० १३३ से
पृ० १५८ तक—शृंगार मंड वर्णन । शुक्र द्वारा राज कुमारी का मन्त्र सिद्ध वर्णन ।
(१२) पृ० १५९ से पृ० १७० तक—विषोय वर्णन । (१३) पृ० १७० से पृ० १७५
तक—मुकुष के बंशी हान का वर्णन । (१४) पृ० १७६ से पृ० १८५ तक—स्वप्नवर्ण
वर्णन । (१५) पृ० १८६ से पृ० १९० तक—कर्मवर्ण वचन । (१६) पृ० १९१ से
पृ० २०४ तक—इम गमन पद्म विषोय वर्णन । (१७) पृ० २०५ से पृ० २३२ तक—
विवाह वर्ण वर्णन । वराह पद्म उल्लस शतकुमारी की उद्धार पद्म उद्धार, (१८) पृ०
२३३ से पृ०— X तक सुप्त ॥

संख्या ००० पृ. मागवत दशमस्कंध, रचयिता—महात्मकाल खत्री (बनारस)
कागज—देशी, पत्र—४१२, आकार—१४ X ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण
(अनुपुत्र)—१४००८ पूर्ण, रूप—प्राचीन पत्र, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं०
१९०३—१८४६ ई०, मिरिकाल—सं० १९११—१८५४ ई० प्राक्सिखान—प० रामभाष
शुद्ध, ग्राम—सावतण, वाकर—सिर्षीही, विषय—संतापुर (मध्य) ।

कादि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दशमस्कंध भाषा मागवत मकरान खाल कृत
लिप्ये ॥ श्री कृष्णवतार की खीला व कथा ॥ १० ॥ जन्म मरण से रहित है नारायण
कर्षार । हरि मन्त्र के हत सा लेत भूमि अवतार ॥ जब पृथ्वी पर होत है अपिह पाप
विन्तार । तबहीं मगुर्से वरत है एक रूप अवतार ॥ तुम हापर के अंत में कर्म कियो जय
राज । सातु रिषीवर बुग मया शैरपन बने समाज ॥ जग्य होम की हाति करि परमा को
बुग हीन । श्रिया पाप विचार कर भूमि भई आर्षीन ॥ जब सब देवन जाह है श्रीगुही पदुत
पुकार । तब परि मगुन रन को दूरि कियो महिमार । पहिका मग्याप, ४ राजा परीछिन का
मुगदबरी से श्री कृष्णवतार की कथा पुछत ॥ राजा परीछिन ने हाप जाकर मुकरप
स्वामी से विनयी की कि हे महाराज आपन कथा सूर्यवंशी व चंद्रवंशी पिछले राजा व रिषी
वरो की जो काग परमपर क तप व पवन में जन्म करना विनाकर कैकुंड में गप ई बही कह
कथा व श्री नारायण जी की महिमा मुज्ज मर मन का बोध हुआ अर कथा जनुवंशियों
की त्रिप कुप में श्री कृष्ण जी महाराज त्रिभेदीनाथ ने अवतार लक्ष्म जनेक खीला मंगार
में वास्तु मुक्ताब्जत ननुप के मुप रन हरि मन्त्रों के की थी । मुक्ताब्जत ननुप ॥

अंत—दादा ॥ अष्टनायक आदि व मय नारिण के माय । श्रीनी विधि श्रीदा करि

माखन प्रभु जटुनाथ ॥ श्याससुन्दर की संतान इतनी पढ़ी थी कि तीन करोड़ अड़तालीस हजार तीन सौ ब्राह्मण उन लड़कों को विद्या पढ़ाने के लिये रहते थे इसलिये यदुर्वशियो की गिन्ती नहीं हो सक्ती देखो जो श्यामसुंदर अपने वंश की रक्षा वास्ते नित्य असंख्य द्रव्यव गौ ब्राह्मणों को ढान दिया करते थे वही त्रिभुवन पति इतना प्रेम रखने पर भी दुर्वासा रिपिश्वर के शाप के सब जटुवंशियों का नाश कराके वैकुण्ठ में चले गये ॥ श्री कृष्ण जी के वंश में केवल ब्रज नाम अनिरुद्ध का घेटा जीता वचा था सो मथुरा व इंद्रप्रस्थ का राजा भया उसके कुल में व्रतवाहु व सत्य सेन आदिक सब राजा वड़े प्रतापी व हरि भक्त व धर्मात्मा हुण् थे इतनी कथा सुना कर सुकृदेव जी ने कहा हे परीक्षित जो मनुष्य दशमस्कंध की कथा सच्चे मन व प्रीति से कहता व सुनता है उसको बड़ा भाग्यवान समझना चाहिये वह मनुष्य समार में मनोकामना पाकर अन्त समय मुक्त होता है ॥ इति दशमस्कंध भाषा भागवत संपूर्ण समाप्तः लिपित शिवधार मिश्र सवत् १९११ क्वार वदी ८ अष्टमी इति शुभम् ।

विषय—श्री कृष्ण जी के अवतार से लेकर सब लीलाओं का वर्णन ।

संख्या २८८ वी. भाषा भागवत दशम स्कंध, रचयिता—मखनलाल पञ्चाची (बनारस), कागज—देशी, पत्र—८७६, आकार—१४ X ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुपुष्प)—२७०००, पूर्ण, रूप—प्राचीन टीमक लगी, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३ = १८४६ ई०, लिपिकाल—स० १९११=१८५४ ई०, प्राप्तस्थान—प० त्रिपुभरोस मिश्र, ग्राम—जयपालपुर, ढाकवर—गगागज, जिला—सीतापुर (अवध) ।

पुष्पिकाः—इति श्री भागवत पुराण भाषा संपूर्ण समाप्त काशी वासी मखनलाल कृत श्री कृष्णायनमः लिपित गौरीशकर निज पाठनार्थ सवत् १९११ वि० चैत्र वदी १० को पूर्ण ॥

विषय—संस्कृत भागवत का हिन्दी अनुवाद ।

संख्या २८८ वी. गोरुर्ण महात्म, रचयिता—मखनलाल (बनारस), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१४ X ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुपुष्प)—५१०. पूर्ण, गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०३ = १८४६ ई०, लिपिकाल—स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तस्थान—प० रामनाथ शुक्ल, ग्राम—खेदवा, ढाकवर—मिहोली, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गोरुर्ण महात्म लिप्यते ॥ पहिला अध्याय ॥ भक्ति व ज्ञान, वैराग्य की कथा ॥ शौनकादि अट्ठासी हजार रिपीश्वरों ने बीच अस्थान नैमिशा-रण्य तीर्थ के सूत पौराणिक शिष्य वेद व्यास जी से कहा कि तुम कोई कथा व लीला पर-मेश्वर की असी वर्णन करो जिममें भक्ति व ज्ञान वैराग्य अधिक हो ॥ इस घोर कलयुग मे ग्यान मसारी आठमियों का राक्षस के समान हो गया है इस लिये कोई सुप से न रहकर सब किमी को असा क्रोध व मोह व लोभ उत्पन्न हुआ है कि आठो पहर उसी दुख में व्याकुल रहते हैं कि कोई असा चरित्र भगवान का वर्णन कीजिये कि कलयुग वासियों को

हरि चरणों में भक्ति व प्रीति बरनब होकर सुप मिले यह बात सुनकर सूत जी बोले तुम स्वीगो मे बहुत कष्टी बात कष्टसुग बासियों के उबार करने वाले पूछी जी कफ कपी साप के मुँह में पड़े हैं सो वह कथा श्री मद्भागवत है जी दुःकदेव जी महाराज मे राजा परीक्षित से कही थी जिस समय राजा को अंगी रिथिके आप देने के उपरान्त रिपीश्वर न सुमीश्वरों की समा में दुःकदेव जी ने गंगा किनारे आनकर कथा श्री मद्भागवत सुनाया दुःक किया ॥

अंत—जिस समय दुःकदेव जी धौठा छोड़ो से यह बात कर रहे थे उसी समय कैकुत्साज ब्रह्मा व बल्लभ व कुवेर देवता प्रह्लादादिक भक्तों को साथ लिये सपताह जग्य मे आये उनको देखकर जितने लोग समा में उस समय भैँडे थे सबों ने उड कर दूबधत व कब जपकर किया । और भारत मुनि भार हर्ष के नाचने और गाने और प्रह्लाद जी करताक व उडब जी भक्त मंत्रीरा और राजा इंद्र मूर्धन बजाने लगे । उस समय चारापण श्री त्रिस्तेयी नाथ मे सब किमी को अपने प्रेम मे छीन देखकर उनसे कहा जिसके मन में जो इच्छा हो सो बरदान मायो । सब बारदादिक हाय जोड़ कर बोसे आप के दर्शन हमको प्राप्त हुए इससे अधिक कर्म बस्तु है का मार्गे अपने चरणों की भक्ति हम छोड़ो को हीजिये । इयाम सुंदर यही बरदान सबको देकर वहाँ से अंतर ध्यान हो गये और सप्ताह जग्य दूसरा संपूर्ण हुआ इतनी कथा सुनकर सौमन्यदिक अष्टासी हजार रिपीश्वरों ने सूत जी से पूछा कि दुःकदेव महाराज मे यह कथा राजा परीक्षित को कब सुनाई व गोर्ण्य व समत कुमार जी मे कब कही थी । इनका हाट बतकाह्ये । सूत परीक्षित मे कहा जब श्री कृष्ण श्री महाराज हारका पुरी से कैकुत्स को पधारे उसके तीन सी वर्ष उपरान्त भारी महोत्सा बरमी के दिव दुःकदेव महाराज मे यह कथा राजा परीक्षित को सुनाया आरंभ किया और सात दिन में वह चारापण संपूर्ण हुआ इसके द्वा सी वर्ष पीछ गोर्ण्य ने सप्ताह कथा कही थी उसके तीन सी छः वर्ष अंत समत कुमार जी न भारत को सुनाया सो कथा हमने तुमसे बर्नब किया । यह असूत रूपी कथा आहर व प्रेम करके जो सुने व पढ़े उनको सब कफ मिलते हैं इति श्री गोर्ण्य महात्म्य संपूर्ण समाप्त लिप्या सिचचार मिश्र स्वपाठनार्थ संवत् १९१० जेष्ठ वरी प्रतिपदायाम ।

विषय—भागवत के छे अध्यायों का उस्सा किया गया है । भक्ति ज्ञान, वैराग्य, व भारत जी को भक्ति का बोध, भारत जी का भक्ति के लिये किसी साधू का हूँदना, समत कुमार का श्री मद्भागवत सुनाया और सुनने वालों को श्री कृष्ण जी के दर्शन, ज्ञान देव ब्राह्मण का इतिहास जिसकी की बड़ी कर्मका भी व वैश्या के फाँसी छगाने से मुँधकारी का मरना व असक्य सप्ताह सुनकर मुक्ति होना, समत कुमार से भारत जी का सप्ताह की पूजा विधि पृथ्या आदि वर्णन ।

संख्या २८३ ए. कदापनाम, रचयिता—महिक मुहम्मद, कगज—नेसी पत्र—१२, आकार—६ X ४ इंच, पकि (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुच्छेद)—२१६, पूर्व, रूप—प्राचीन, पत्र लिपि—नागरी, लिपिकाक—सं० १७७० = १८२७ ई०, प्राप्तिस्थान—भारत भवन पुस्तकालय बिसबाँ, जिडा—सीतापुर (अवध) ।

हृदय ने जानी ॥ अंमर को अमार लगाये । भगत हेतु प्रभु द्वारे आये ॥ भीष्म द्रोण बहुत पछताने । पट्टी छोडि कृष्ण के वाना । सो तौ तीनि लोक मैं ह जाना ॥

× × × ×

अंत—जाति पाँति पृष्ठे मति कोइ । हरि का भजे मे हरिका होइ ॥ जाति पाँति पृष्ठे जन सोइ । नाहक गरव करै नर मोइ ॥ देव कुरी लीपत हाथ सिआना । तव लै कुरमा मारिसी राना ॥ देव पित्र पूजै मति कोय । मंसै भूत होत हे सोय ॥ सूरदास को दरमन दीन्हा । दरस दिग्याय सो धैये कीन्हा ॥ रूप मगत की ऐसी पियामा । नगर महित वैकुण्ठहिं मिला ॥ परमेसुर कहँ भगति पिआरी । जो कुल करै सोई अधिकारी ॥ जवते सरन राम के आण । दास मल्लको तव सुख पाण ॥

मलुका पापी पेट का, सपनेहु जानत नाहिं । भगति लिखी कोइ अवर काँ, धोखे दीन्ही (मोहि) राम ॥ चलने चलने सब कहँ, मेरे मन में और साहब मे परचे नहीं, जइहौ कवने ठौर ॥ × × × भगत चहल सपुरन सुभ. ॥ मत्तुः ॥ श्री सवतः १८८७ भाव वडी त्रीयदसीको सोमापती ॥ दिन मंगरवारः ॥

विषय—पृ० १ से पृ० १६ तक - नारद, सनक सनंदन, व्याम, पाँडव, द्रौपदी, ध्रुव, प्रह्लाद, अवरपीप, मोरध्वज, तुलसी, नाभा, मीरा, आदि भक्तों के प्रसिद्ध चरित्रों के संबंध के प्रमाण सहित भगवान की वत्पलता का वर्णन ।

संख्या २६१. नेमचन्द्रिका, रचयिता—मनरंग (अतर्वेद का), कागज—देशी कागज पर, पत्र—२४, आकार—१० × ६.३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनु-पुष्प)—६३०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर (कटरा का), ठाकवर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—ऊं नमः सिद्ध ॥ अथ नेम चन्द्रिका लिख्यते ॥ प्रथम नमः जिन चंद्र पद, नमः होत आनंद । शिव सुखदायक सकल हित, करत हरत जग फंद ॥ तत्व लपावन तसु गिरा, प्रगटी भव हितकार । प्रनमो ताहि अनन्त सुव, देड सुमति सुप सार । पुनि गणेश क्रम जुगत जलज, रज लीजै द्यग आंजि । अलप लपावत जुगति बहु, मिथ्या तिमिरहि भाजि ॥ भगल करता त्रिन कष्ट, होत न कारज सिद्धि । ताते इनको प्रणामि कर, कहीं कष्ट हित वृद्धि ॥ सोरठा—सुनहुं भव्यक जन एक, कहीं कथा जो जग विदित ।

अंत—सुनत मिदत भव टैंक, होत सकल कल्याण भुव ॥ पुत्र होय धन होय होय कित्ति अवनि पर । चक्र वरिं पद होय इंद्र पद होय भवातर ॥ होय शरीर अतेग्य होय निरवधि तजि । अति प्रिय वनिता होय होय पडितधिपणा सजि ॥ इन आदि अनेकन संपदा होय सत्य मन रंग तसु । जे पढै पढ़ावें सुनहि नित नेम नाथ जिन राज जसु ॥ १८ ॥ सोरठा ॥ नेम चंद्र जिन राज, मित्र सहित कस मम सुपित । अहो गरीव नेवाज, त्राहि त्राहि मम दीन पर ॥ १९ ॥

× × × ×

इति श्री नम चंद्रिका संपूर्णम् ।

विषय—नेमिनाथ के जन्म से लेकर विवाहादि समेत उनके जीवन ज्ञान का वर्णन ।

संख्या २६२ पृ. रस रखावली, रचयिता—मंडन कवि, कागज—देसी, पत्र—

१८ आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुपुष्प)—१६०,
पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—भागी, सिधिसाल—सं० १००० = १०१३ ई०,
प्राक्षिस्थान—बाबा सिधपुरी, ग्राम—काश्मीरी मुहल्ला, बाक्यर—सखवड, मिठा—सखनड
(जयप) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रस रखावली लिप्यते ॥ दो० ॥ गुरु गोपाळ मे
सीध के गये मुमिरनी नाह । कवि मंडन गढ़े गढ़े रसिक राह के पाह ॥ १ ॥ कर कर मण्यो
रसारणी कवि मंडन द्विज राज । कपरी रस रतनावली माया कवि के काम ॥ २ ॥ कवि
जन्म जानी चाहिये से रस कवित को सार । कवि मंडन यह जानि के रण्यो धंज विस्तार
॥ ३ ॥ विपद् बोगन के सहु उपरै हरि सों प्रीति कवि मंडन यह जानि के बरनत है रस
रीति ॥ ४ ॥

अथ—मय होइ ॥ कामरूचता जानियो कमकादिकस म भाव । सचारी मय
आदि ई मय रस यह कहि गाठ ॥ बाहिर कई जनि जाठ सुवासु डिबाह कला इत भाव ॥
बोटन जानि कई अपने पर परन कौ तुम हो गाठ ॥ गदि केहि सरी सरिका कहि मंडन
द्वै मुनि बबली जनि काठ माई री भासु बड़ बड़े मुदिन हुंइनि सुदन भाये हाठ ॥ अथ
रस रखावली मंडन कवि कृत् संपूर्ण समाप्त छिप्या गुमानसिंह प्राज्ञ उमोछिपा स्थान स्या
मण्ये माय कृष्ण ७ सखत १००० वि० वैमा देवा विसा लिप्या ॥

विषय—कवियों के बरन ।

संख्या २६२ पृ। रस रखावली, रचयिता—मंडन कवि, कागज—देसी, पत्र—
२८, आकार—६×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुपुष्प)—१००,
पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—भागी छिपिकाल—सं० १८०२, प्राक्षिस्थान—
१० रघुवीर बरन मिश्र, बाक्यर—बिहारी मिठा—अनूपुर ।

आदि—दक्षिणा ॥ दो० ॥ दक्षिण नाहक जानिये रापे सब की कानि ॥ सीध
मुमायनि करि सके काहु सों रस पानि ॥ उदाहरन ॥ र्वाक्यिन गोप सुई बहुरी जमुना में
उतारत ही रस काई । मंडन जनि बड़ी मिगरी सु मई मन मोहन के मन भाई ॥ अपने
अपने घर कौतकि पाठ संधि चित चाहि के दैत दुहाई ॥ है मंडलाळ दिखोरनि के मिस
आपट नाथ लीम कगाई ॥ सख हाहा ॥ मंडन जानी प्रगट ही सठ नाहक की रीति ।
बहु नाहक है आर है कई कपट कई प्रीति ॥ उदाहरन ॥ दित सी हमसी पित लीहके
मितर्ये मिलर्ये उदाहरन ही ॥ मुदिने दिन भीति गये कवि मंडन बाठन ही बहरावत ही ॥
अप बसों अपराध विना इनके रिमके भंमुबा बहरावत ही ॥ रंगि लाल मये कर लालन
के पग मामिनि के मरण ही ॥ अथ दूनिन क भेद ॥ दूनी तीन प्रकार की दक्षिण
मण्यम जोर । मंडन दिन के बचन सों कई दिन के रीर ॥ उचम दूनी ॥ उचम दूनी

आदि ही सबन लेति अपनाइ । अन सिपटं वातें कहै अपनी जुगति घनाइ ॥ उदाहरनं ॥
 आपे देपिवे को रस रिम ही अनावे तोहि आपुही मनावे यह मोहन की वानि है ॥ वार
 वार अहै झड़ी वातनि झुके है आनि तव तव वावरी तू भेती हृष्ट दानि है ॥ मडन ललाओ
 कछु हासी पेल जानति न मेरो कछो मानति न अंतहु तौ मानिहै ॥ आपु को झुकावै ताहि
 आपहु झुकेवै ये तौ सयानय की वातन में हानि है ॥

अत—निरवेद ते सांत रस को ॥ आइ सम रंते टेम देमनि जवाहरन हैं । भय
 को उदाहरन ॥ पी गये ठवारि भारी गोकुल दुपारी देपि व्रामन भिपारी देपि भीतर ते
 आये हैं ॥ मंडन रसिक राइ पारथ महाइ भये सेवक चमीठ सपा सारथी कहाइ हैं
 राज के समाज माझ महाराज राखी लाज द्रोपटी पुकार काज द्वारिका ते आये हैं ॥ मेरे
 जान आपुने के आगे ही रहत हरि आंगुरी सी गहि प्रह्लाद जू वताये है ॥ सुप्रीति को ॥
 वारी ये वेर गवारिनि के सुप तेई पं पात जिन्है कछु होनो ॥ मंडन लाल कहा इनको
 ललचावत ही अपनो तन लोनो ॥ मेवा जु चार्हा तो लेहु बलाइ ल्या दान्यो जु टाप
 विकात है कौलो ॥ सो अपने कौं टै टै हों करौ जिहिं पोचनि हरा औ जदावती मोनौ ॥
 इति श्री मन्मडन महा कवि विरचिता यां रस रत्नावल्यां भाव विभाव सयोग वियोग
 वरननं नाम चतुर प्रवध इति रम रत्नावली संपूरनम् समाप्त । शुभ सुभ ॥ लिपतं गौरी
 शंकर सवत १८०२ वि० ॥ दोहरा ॥ आदिहै अतरदहे मखि रहै यह वात । तुव दासन
 विनु रहतु है तुव दरसन ते जात ॥

विषय—नायक, नायक दूती भेद हाव भाव विभाव संजोग वियोग आदि का वर्णन ।

संख्या २६२ सी. रस रत्नावली, रचयिता—मडन कवि (जैतपुर), कागज—देशी,
 पत्र—१८, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—
 ७४०, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८०७ = १७५० ई०, प्राप्तिस्थान—
 श्री रामभरोसे सिंह, ग्राम—सुलतानपुर, ढाकघर—राजेपुर, जिला—उन्नाव ।

पुष्पिका—इति श्री रस रत्नावली काव्य मडन कवि कृत संपूर्ण समाप्त लिप्यते वेनी
 माधौ मिश्र पटकापुर निवासी चैत्र वदी ६ भा संवत १८०७ वि०

संख्या २६२ डी. रस रत्नावली, रचयिता—मंडन कवि, कागज—देशी, पत्र—
 १८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३४०,
 पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४६ = १७८६, लिपिकाल—
 सं० १६२४ = १८६७, प्राप्तिस्थान—श्री विधाम सिंह, ग्राम—धरानगरी, ढाकघर—धौर-
 हरा, जिला—सीतापुर ।

संख्या २६३ ए. श्रौषिक पर्व (महामारत), रचयिता—मण्डिदेव भट्ट (बनारस),
 पत्र—२८, आकार—१६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन
 कमजोर, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—
 श्री वद्री सिंह, जमींदार, ग्राम—खानीपुर, ढाकघर—तालाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ ॐ ॥ हरि तत्सतसिचो जयेति ॥ अथ औषिक पर्व

लिप्यत ॥ दोहा ॥ नमस्तकार नारायणहि करि नरोत्तमहि नीमि ॥ बदि गिरा व्यामहि रचत
 मारय भाषा सीमि मूकत मूछत मू मरल मूस्वामी भगवान । तेहि भारतहि भत्र मरत यह
 भाषा मरत महान । वेदि रघुवर प्रभु के चरित बहु सत कदि अनंद । ताहि सुमिरि मारय
 रचत भाषा बिरचि सुठंइ ॥ पारय के स्वारय भये मारयि परम अनूप । तेमे रयि रचि
 देदि यह भारत भाषा रूप ॥ सौरभ ॥ बंदी कवि वर बीर राम रमा प्रिय पार कदि ।
 मंगल मूरति धीर भारत स्वस्य प्यत्र स्ववर ॥ सुमिरिउ छनिभ X X उदधि उदधनि
 समी की । भारत समुद्र प्रतप भाषा करि चाहत रच्यो ॥ वैशम्पायनी वाच ॥

अंत—राम कृपा अनुज्ञल मति शोषति । राम कृपा कुमतिह भव रोषति ॥ राम
 कृपा तन राग न भावत । राम कृपा बहु औद बहावत ॥ राम कृपा यह सुवधि सुस्वामी ।
 राम कृपा पालनि प्रग भारी । राम मति ही चरणन हारी ॥ X X X ॥ दोहा ॥ राम कृपा
 सत सग्य को भिम निचाहत जाम ॥ राम कृपाते सुजन के स्पून होत नहि नाम ॥ राम
 कृपाते मयन इत कर्म योग प्यबहार राम कृपा ते मिलत उत उतम सुपद उदार ॥
 स्वस्ति श्री कासिराज महाराज पिराज श्री उदित नारायण स्वाम्याय गमिना श्री
 बंदिजन कापी बामो रघुनाथ कवि स्वरात्मज गोकुल नाथ स्वाम्यज गापीनाथ स्व सिष्येन
 मनि देपेय कविता बिरचिते भाषायी महाभार्ये दुर्पणे भौषिक परं जयवी जय्याय समाहं
 हा म भूपात ॥ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे सदास्यां हई पुस्तक लिप्यते बहूी संवत १९१३
 सके १७९० सन १२८३ ५०

वियय—महाभारत भौषिक परं (पिशोक परं) वर्जन ॥

संख्या २६३ वी दप विद्याक परं, रचयिता—मनिद्वय मह बंदीजन (बनारस),

कागज—आनुनिक, पत्र—१५, आकार—१२ X ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण
 (अनुपुत्र)—१९५, पूर्ण, रूप—प्राचीन कमजोर पद्य, छवि—जागरी, प्रासिरपान—श्री
 बहूीमिह जमींदार, धाम—गानीपुर, काठपर—ताकाब बरसी जिहा—छरणक ।

आदि—श्री गयेनायनम ॥ दोहा ॥ नमस्तकार नारायणहि करि नरोत्तम हि नीमि ।
 बदि गिरा व्यामहि रचत भारत भाषा सीमि ॥ मूकत मूछत मूमरल मूस्वामी भगवान
 तेहि भारतहि भत्रि नय यह भाषा मारत महान वेदि रघु वर प्रभु के चरित बहुसत कदि
 अनंद । ताहि सुमिरि भारत रचत भाषा बिरचि सुठंइ ॥ पारय के स्वारय भये सारयि
 परम अनूप ते मारय रच देदि यह भारत भाषा रूप ॥ सौरभ । बंदी कवि वर बीर राम परम
 प्रिय पारपद मंगल मूरति धीर भारत स्वस्य प्यत्र स्ववर ॥ सुमिरि उच्छल नि अष्ट उदधि
 उदधन रामय की । भारत समुद्र प्रतप भाषा करि चाहत रच्यो ॥ जनमेजय उवाच ॥
 जय करी उंइ ॥ मुनि कुत्रे बल का वप भेद ॥ किये कदा भूत राठ मनेइ ।

अंत—व्याम के उच वचन मुनि नृप बदे करि अनुमान । जापका मत मयुक्ति
 भय सद्य के साक अमान ॥ धरि धरि के समुति बिधि गति करय पारल धान पूरं इत इत
 कर्म को कर्म अयो धीर न भाव ॥ दोहा ॥ भूपति के ये वचन मुनि व्याम मुनीय महान ।
 कदि नृप सौ नित्र आचरन मे ह अन्तरध्यान ॥ स्वनि श्री काटी राम महाराज पिराज

श्री उदित नारायण स्याऽज्ञा किं गामि ना श्री वन्दी जन काशी वासि रघुनाथ कवी श्वरात्मज
गोकुल नाथ स्यात्मज गोपीनाथ स्य द्वायेण मणितेवेन कविना विरचि ते भाषाय्या महा
अरत हर्षं विसोक पर्वणं प्रथमो अध्यायः समाप्तः सुम्मा ॥ १ ॥ अश्लोकः ॥ राम च लक्ष्मणौ
चेः मरथौ समूहोपिव ॥ जनक जाम्यौ तथैवत नमस्कर तथैव तंम् ॥ १ ॥ रामा वा
रावणं हतो लजयाशौच मेधवे मरथो या मरथो याम भक्ततो यां नहि हतोन करको ॥

विषय—महाभारत विशोक पर्व ॥

संख्या २६४. भगवद्गीता की टीका, रचयिता—मजू मिश्र, कागज—देशी कागज
पर, पत्र—५४, आकार—९ × ४ $\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९१८,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०७ प्राप्तिस्थान—पं०
गजाधर तिवारी, ग्राम—चदा, डाकघर—गड़चारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भगवत गीता भाषा टीका लिप्यते ॥ धृतराष्ट्र
उवाच ॥ इश्लोक ॥ धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता जुजुंसवः ॥ मामका पाण्डवाश्चैव किमकुर्वति
संजय ॥ अरथ ॥ तव राजा धृतराष्ट्र पूछत है संजय मौं ॥ अहो सजय कुरुक्षेत्र में हमारे पुत्र
अरु पाण्डवा जुद्ध करिवे को जाई करि येकर भये हैं सो टोक कहा करत भये सो
हम सौं कहौं ॥ सजय उवाच ॥ तव सजय राजा धृतराष्ट्र सौं कइत है अहो राजा धृतराष्ट्र
तुम्हारे पुत्र जो हैं जिरजोधन ॥ सो पाण्डवन की सैन्या देखि कै द्रोणाचार्य सौं यह
कहत है ॥ अहो आचार्य पाण्डवन की यह वडी सैन्या है सो तुम देखौं ॥ अरु तुम्हारे
सिप्य द्रुपद को पुत्र धृष्टदमन सो सैन्यापति कियो है ॥ अरु या सैन्यामह इतने महारथी
हैं तिनके नाम कहिजतु हैं ॥

X

X

X

अंत—इश्लोक ॥ जत्र जोगेश्वरे कृष्ण जत्र पारथी धनुर्धरः ॥ तत्र श्री विजयोभूत्वा
ध्रुवनीति मतिर्मम ॥ संजय कहत है कि अहो राजा धृतराष्ट्र ॥ जहाँ जोगेश्वर तहा श्री
कृष्ण जू हैं ॥ अरु अर्जुन सौं धनुर्धारी है ॥ अरु तहाँ श्री लछ्मी जू है ॥ तहई की जव
है ॥ निह चै तुम जानिजौं ॥ मेरे मधि तौ यैसी है ॥ अरु जो तुम म X पूछ्यौ ॥ सो
मै तुमसौं कुरुक्षेत्र कौ कौरवन की अरु पाण्डवन की बातें सब कही ॥ इति श्री महाभारते
सत सहस्र सहितायो वै आसक्य X पर्वनि भगवत गीतायाँ जोग सास्त्रे सूर्य निपत्सु श्री
कृष्णार्जुन सवादे सन्यास जोगोनाम अष्टादसो अध्याय X ॥ १८ ॥ समाप्त शुभ मस्तु ॥
सवत् १८०७ के श्रावण सु X पंचमी शुक्रे कह ॥ लिप्यते श्री पाटप मीताराम सुत
जूझारामेन ॥ लिखा श्री मिश्र मजू अर्थ ॥

॥ श्री कृष्णायनमः ॥

विषय—भाषा गीता का अनुवाद ।

संख्या २६५. वेदातत्रयी, रचयिता—मन्नालाल (आध्र), कागज—देशी, पत्र—
५२, आकार—१४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री रमाकांत मिश्र, ग्राम—मुद्रासन, डाकघर—लहरपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—ग्रहण । समाधान क्या है । उत्तर । विद्य की पञ्चाप्रता ॥ यही पर संपत्ति है ॥ ग्रहण । मोक्ष होने की इच्छा क्या है । उत्तर ॥ मेरी मोक्ष हो जाये देसी हठ इच्छा ॥ यही चारो प्रकार के साधन चतुष्टय कहते हैं ॥ ये जिन पुरुषों में हैं वे सब विवेक के अधिकारी होते हैं ॥ ग्रहण ॥ तब विवेक किन्ने कहते हैं ॥ उत्तर ॥ आत्मा सत्य है इसने निश्चय सब सत्य है जैसे ज्ञान को तब विवेक कहते हैं ॥ आत्मा क्या चीज है ॥ उत्तर ॥ स्पष्ट सूक्ष्म कारण शरीर से विभक्त तीनों अवस्था का साक्षी सत चित्त आनंद स्वरूप जो बस्तु है वही आत्मा है ॥

अंत—जो सब विचारों से रहित परम हंस विसा देस काल इतकी अपेक्षा न करके बुद्धादिक का मास करने वाला सब जगह में स्थापक विषय सुप स्वरूप भवाने आत्मा रूप तीर्थ को मीवता है वह सबको जाननेवाला सब जगह स्थापक भीर मुख हा जाता है । इति श्री वेदान्तप्रदीप भाषा महाकाण्ड पंडित श्रीमत् देसीय रचित संपूर्ण रामायण छिपठ गिरि राज किशोर संवत् १९२५ वि० शिव दृष्टि पंचमी ॥ श्री राम राम राम ॥

विषय—आम बोध, तब बोध, मोक्ष आदि वर्णन ।

संख्या २६६ पृष्ठ परिचय, रचयिता—मनोहर दास, कागज—देसी कागज पर, पत्र—५, आकार—६ ३/४ × २ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुच्छेद)—६३ पूर्व, कृष्ण—कभीन, पत्र, छिपि—भागी, प्राप्तिस्थान—श्री बामुदेय जी, ग्राम—कमास, काक्यर—भारतगंज, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ १ पुरपति प्रीतम जानिकै । तब मन जोषन दीन्ह । जीवन धन आसक बलाग सर्व विहारी कीन्ह ॥ २ बीरद दग धन दत्त है सहि मर्दि सके सरीर । सहि न सके उठि उठि लर्के कमल दर आस नीर ॥ ३ बाग बिरह के पृ सखी, बेहि छागी सो जान । केठिक भीरज में धरो छन छन निकसत मान ॥ ४ आप भयन ती जग मला चित्त जन करी अदास । हर सिंगर के नारि मुनु रागु पिधा पर भास ॥

अंत—१०—वाक्यापन बीठत भण, रहेक बुद्धापन छाड़ । रूप भंजरो होइ जब, पिब बिनु उठै न आइ ॥ ३१ पृष्ठ परिचय के मेर सब, कहे मनोहर दास । सब मिलि होइ हय कंदरा, पिब बिन वारह मास ॥

पदा	हाथकंदर	रपमंजरी	गुलाब
पंमन	ईसकवेचा	ईरुपन	कोई
"	सू०सू० बडहल	कुमुम	जटापारी
मालती	"	नागपत्र गुलदाठती	गुलदास

(४)

कंबला	केठकी	कैईकी	सेवती
कनईस	चंदा	चमेही	हय कंदर
ईसकवेचा	जटापारी	सेमर	छुरी
गुलदाठती	कोई	रपमंजरी	गुलाबाम

(१)

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—पुण्यों के नाम क संबंध से बिरह भीर संयोग गंगार संबंधी ३१ होइ ।

(२) पृ० ७ से १० तक—४ कोष्ट जिनमें फूलों के नाम अंकित हैं ।

संख्या २६७ ए. ज्ञान दोहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा), कागज—साधारण, पत्र—७, आकार—१० ३/४ × ५ १/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनु-पुट्टपू)—१०५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३=१८४६ ई०, लिपिकाल—म० १९३१=१८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कुचैरदत्त शुक्ल, ग्राम—शुक्ल का पुरवा, ढाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ज्ञान दोहावली लिप्यते ॥ ईश्वर गति । रन वन व्याधि विपत्ति मों । वृथा डरै जनि कोय । जो रक्षक जननी जहर । सो हरि गयो न मोय ॥ मनुज त्रिविध भेषज करत । व्याधि न छोंडत साथ । खग मृग वसत अरोग्य वन । हरि अनाथ के नाथ ॥ जो जाके वस मों परे । तामो कहा वसाय । ताको सुख दुख देत मो । ईश्वर एक सहाय ॥ वात बहत रवि तपत वन । वरसत तरु फल देत । इच्छा ते जेहि ईस की । करहु ताहि ते हेत ॥ जाकी रक्षा जाहि विधि । हरि तैसी मति देत । दे चपेट वढ़ वालकहि । लघुहि गोठ सब लेत ॥

अंत—कहा करै बहु रूप गुन । जासों मन नहिं लीन । राखै मधु घृत दूध मों । जल विन [मीन मलीन ॥ देश मोह रुज आलस भै । तिय सेवा सतोप । सह जहि लहै महत्त्व जो । पृह न होंय पट दोष ॥ गुन औगुन तम लखि परे । जस जासों मन लनी । कमल मुदित रवि तापहू । निरखि सुधा करि दीन । पुत्र चीन्हिये वृद्धई । कुटिनि परे कलत्र । काज परे सबको लखिय । विपत्ति चीन्हिये मित्र ॥

× × × ×

इति दोहावली समाप्ता अपाढ़ वदी पचमी

× × × ×

संवत् १९३१ लिखितेय नागर ब्रह्मण मुरलीधर ॥

विषय—ईश्वर, काल, कर्म, स्वभाव, और नीति की गति के ७२ दोहे ।

ग्रंथ निर्माण काल—संवत् एक सहस्र सहित, नौसौ तीन समेत । रची ज्ञान दोहा वली चैत पचमी सेत ॥

संख्या २६७ बी. ज्ञान दोहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरागांव), कागज—सफेद, पत्र—२६, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपुट्टपू)—१०५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०३, लिपिकाल—सं० १९३१, प्राप्तिस्थान—श्री नानकराम, ग्राम—भोजपुर, ढाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ज्ञान दोहावली लिप्यते ॥ दो० माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर । सब प्रभुता को पद गन्ये । दरयो अरज पग नेर ॥ अथ ईश्वर गति ॥ रन वन व्याधि विपत्ति मों वृथा डरै जनि कोय । जो रक्षक जननी जठर सो हरि गयो न सोय ॥

अंत—ब्रह्म करै बसु रूप गुण जासों मन बहिं छीन । राये मनु वृत्त वृष मों एक
 बिनु मीन मळीन ॥ दूत मोह दूज अलल मय तिय सेवा संतोष सहजहिं कही महक
 जो पुन होहिं पर दोष ॥ गुन अवगुन वस लखि परै अस जासों मन छीन । कमल मुदित
 रवि तापहुं निरति मुधा कर वीन ॥ पुत्र बिन्दु ये ब्रह्मई दुरदिम परे करुत काज परे सब
 की कविय त्रिपति बिन्दुये मित्र ॥ एक एक अक्षर परे एक एक तत्रि रैप । आदिहि दोहा
 नाम कुक देन ग्राम कलि छेप । संबत एक सहस सहित भष सी तीनि समेत रषी ज्ञान
 दोहा बकी रैज पंचमी स्वत ॥ इति बौद्धावस्थी समाप्ता विरहा मरु ज्वाळते बाळ बिहाक
 मुने ठेहि काज जो हाक करी । कियि सेवा महेसबुतासन हबेन विशाखर पूजन ध्यान धरी ॥
 मुनि के बसु भीर धपी गरई मसमासुर वारिह ध्याय हरी । कहि हीन प्रवीन सो
 कर्ष करै जिनकी जग मों भति बुधि करी । इति संबत १९११ छिपल रामधन सिंह ॥
 विषय—ज्ञान उपदेश आदि वर्णन ।

संख्या २१७ स्त्री रामगीता अष्टक, रचयिता—माताजीन छुड्ड (अन्नगरा),
 कागज—साधारण, पत्र—१, आकार—१० इंच × ५ इंच, पछि (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण
 (अनुपुत्र)—१५५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य स्ति—मगरी, छिपिकाक—सं० १९११—
 १८०४, प्राक्षिप्तान—श्री पं० कुबेरदत्त छुड्ड, ग्राम—छुड्ड का पुरवा, बाकधर—अन्नगरा,
 विषय—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री रामेसाय नमः ॥ अयराम गीता अष्टक छिप्यते सौरठी रागे ॥ रघुवर
 आस छेसि बनि जाबै । शबनि जतन मुनि रत जन तन धरिसो मपनेहु बहिं माबै ॥ १ ॥
 सहजगीस सन्तोष दया हरि भजन मस्यो मुनि गाबै ॥ कोह करुता मोह मोह तन पोह
 बहिं प्याबै ॥ २ ॥ उबर अवर विसि गमन जबर विसि गमन अबह विसि कबन मचन
 पहुँचाबै । निज अचरम विपरीति वैरि पद रीति भीति संताबै ॥ ३ ॥ निवन हीन मम भीर
 निरति मुनि के बिहोर अपचाबै । कौतुक तोर मोर न पार दित जव प्रभु मोर न छाबै ॥ ४ ॥
 अस मंत्रस सी माति पाप करि दाय ताप तिहुँछाबै श्री रघुनाथ अनाथ भाप बिनु को
 हिय तपन बुझाबै ॥ ५ ॥ किये तीन मति हीन हीन को विगरी हीन यवाबै ॥ ६ ॥ अगुन
 गीप गुह गज गनिअ गति मुनि भरोम हइ जाबै । रघुवर पद जइता बुझावई विषय कवि
 निज हानि जानि त्रिपतदपि ताहि निठप्याई ।

अंत—काज बसुड न मरत सक हइ करत पुनि चित काय । निरुज टजत न नैकु
 किरि गाय गीतहि गाय ॥ पाप करत न करत हरि । इर पत्तर बहराय । कर्ष मनि कर्ष
 ओस बन । कर धरन जो वदि जाय ॥ करन बसुड न तरबशाचत सरबमुख अपिधाय ।
 हाक पसुआ तेह मदि । कहे नीति तोर विधाय ॥ अबहि के अनुकलत गी । जय जासती
 निपराय । ईरपी ब्रह्म बिनु मेइ राये । पास पहुँची जाय ॥ अचित समदम दान जय । तप
 निगम ज्ञान गाय । आपु सम सब लोके जानहुं । सहज शोक नसाय ॥ अजहुं मरु हे
 अजहुं पित ई । तजहुं जग की वाम ॥ हीन जनि मुसीन करि ई । कबहुं कौशल राम ।
 इति संबत १९११ छिपल आगर मुरली घर ।

विषय—राम माहात्म्य, चित्त की गूढ़ाग्रता तथा संयमादि विषयक भजन ।

संख्या २६७ डी. रामगीताष्टक, रचयिता—माताजीन शुक्ल (अजगरा गांव), कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९९ वि०, लिपिकाल—सं० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री नानकराम, ग्राम—भोजपुर, ढाकवर—मिश्रिग्र, जिला—सीतापुर ।

पुष्पिका—इति संवत् १९३१ लिखा मुरलीधर नागर ब्राह्मण ।

संख्या २९७ ई. रामायण माला, रचयिता—मानाजीन शुक्ल (अजगरा), कागज—देशी कागज पर, पत्र—१३, आकार—१० इंच × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कुत्रेगदत्त, ग्राम—शुक्ल का पुरवा, ढाकवर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—टोहा । श्री गोपाल चरन सरन विघ्न हरन हिय आनि । हरि गुन गन चरनन करौ होय सकल अवहानि ॥ चौपाईं । मनु शुचि ग्रह तिथि अदित बलीना । दशरथ ग्रह नर तन हरि लीना । घर घर वाजै आनंद बधाये । अमित दान महि देवन पाये ॥ टोहा । कांशल्या के राम सुत । भरत फेन्थी जात । लछिमन अरु शत्रुहन दोऊ स्नही सुमित्रा मात ॥ रामचंद्र अरु लपन से । वाढ़ी प्रीति अपार । भरत अरु शत्रुहन ते । पिंड भाग अनुमार ॥ करि विवाह आये अवध । चतुर वडु मम दाम ॥

अंत—मूल—हरि बलीन सुग्रीव मुख । कुंभ करन घन शोर । अंगत सहित विभीषना । नील वीर दोड ओर ॥ टीका—याही टोहा में दूनऊ सेना का वर्णन है । राम पक्षे हरि जो वानर है सो बलीन का । नाम बली रहे के रहे सुग्रीव मुख । नाम सुग्रीवादि कैसे रहे । कुंभ करन । कुंभ नामघट ताको सय करन । जिनको फिर । घन-मोर । घन मेघ । तीसो है सोर । नाम-नार्जन जिनको, औ अंगत सहित वो विभीषन रहे । वो, नील, वो, वीर अर्थात्, नल औ, कै ओर रह, दिविद १ मंदिर इति राम पक्षे ।

रावण पक्षे—हरिनाम सिंह ताके तुल्य बलीरहे राक्षस औ न सुग्रीव मुख, न सुग्रीव औ न सुमुख—राक्षस कुरूप होते हैं, के रहे, कुंभकरन रहे, वो घनसोर भेवनाद रहे, कस रहे, अंगत सहित अंग दश जो रावन ताके हित, नाम, हितकारी, अंगन में प्रधान । शिर है सोहैं दश जाके यातें अंग दश रावण है वो विभीषन नाम भयानक रहे सव वो नील नाम दानव रहे वो वीर अर्थात् नरान्तक रहे वो, दोऊ ओर रहे, के । कुंभ औ निकुंभ पड़ैं वीर दोऊ ओर रहे या पुकार ते सक्षेप ते दोनों सेना का वर्णन है । विस्तर भयते सव नहि कछो, इति ॥ सवत् १९३१ जेष्ठ १३, १५ लि० नागर ब्राह्मण मुरलीधर ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० २२ तक—रामायण तुलसी कृत का संक्षिप्त वर्णन ।

(२) पृ० २३ से पृ० २६ तक—इतिमार्थं वर्णन । प्रथमकार परिचय—प्रयाग से उत्तर अक्षर प्राप्त । तामु दून है अक्षर से दक्षिण कई मजघाम ॥

संख्या २६७ पक्ष. समापपमात्रा, रचविता—मातादीन शुद्ध (अक्षर गॉय, प्रतापगढ़), अक्षर—आधुनिक, पत्र—२४, आकार १ x ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपुष्ट)—२१०, पूर्ण, रूप—मार्थान, पत्र, लिपि—मार्थी, रचनाकाल—सं० १८९९, लिपिग्रन्थ—सं० १९३१ प्राप्तिस्थान—श्री रामदुसार कृषे ग्राम—रामनगर, हाऊषर—भारंगवाह, त्रिस्ता—मीतापुर ।

संख्या २६७ जो खसाराही, रचविता—मातादीन शुद्ध दीन (अक्षरगता), अक्षर—दीनी अक्षर पर, पत्र—९, आकार—१० इंच x ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपुष्ट)—२७५, पूर्ण, रूप—मार्थान, पत्र, लिपि—मार्थी, रचनाकाल—सं० १६०३ = १८४६ ई०, लिपिग्रन्थ—सं० १९३१ = १८०४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कुपेरदत्त जी शुद्ध, ग्राम—शुद्ध का पुरवा, हाऊषर—अक्षरगता, त्रिस्ता—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ मदन कदन सुत गज कदन । विष्णु हरम जन पाठ । एक ददन गुनगन सदन । पादि पाठ शशि माऊ ॥ उदहरन संश्लेष अति, कार्य कई म प्रथ । पाठ हेतस मारिही, भाषा रची सुपंच ॥ अक्ष मय रस—रम मंगर हाम्य कदि, करण, शोड पुनि कीर । मयानये बीमस्य कदि, अदुत धान्ति पीर ॥ उदहरना मरमी टपि ता भी जोई । हुंसत निगम की देगि । सीक करत मय पद्यन का, अथिठ अत्रिन देगि ॥ पुनकिठ रत कपि शकबदि । कपि अरत अति मीति । म्हेक पधिर तुत लिपि दगन, सा मुदाय पर पीन ॥ रम प्रधान अक्षर है । कई भद कतु तामु । आकर्मत उदीपती । ई विमाच बुद तामु ॥ कुपित मारि शमी करी । मीक मई है सोय ।

उंठ—काम तत्र क कतन मी । पा पंक्ति बिट मीप ॥ विष कायक संधान प्रथ । पटक जानु तादि । जो अंशादि विष्णु रचि । इति विष्णुक आदि ॥ ई प्रकार अंगार रम । तुगल मिक मभीग । बिट रम है विरद मी । इत वस्या को जोग ॥ विरद की इत अक्षर्या अमितायाविष्ठा म्मरन गुन कीर्तन उद्देन । अद प्रकाय उम्माद पत्र । जपता निपन अनन ॥ त्रिदंड पुर्जन जाति है तद्वि कदा अदि गोप । पठ पर शुद्ध चरन अक्षर कृषी तज्जन अदि काय ॥ इति रम मारणी पूति मंगर । अथाइ कही १३ लिपिगोप रम मारिनी सङ्ग इमांतामिस विष्णु पर चरम मेवक अक्षर प्राकृत मुरहीपर १९३१ ।

विषय—कायक नाबिहा भेद । प्रथ रचना काल । एक महान अत्र ती त्रिभुत मिनि (मंग) गुदि जेह । गेसम निधि रनि दिन रपी । रम मारिनी सुअह ॥ प्रथकार का परिचय—मार्था ता। दीन मर, सुनी पुत्रस का देर । सब प्रभुता का पर शम्पा । टम्पा आइ पगनर ॥ एक एक अक्षर प ॥ एक एक तत्रि देर । एक दीदा मी काम पुन । देन प्रम रनि लेर ॥

संख्या २६७ एच. रस सारिणी, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा गाँव, प्रतापगढ़), कागज—सफेद, पत्र—३६, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३, लिपिकाल—सं० १९३१, प्रासिस्थान—श्री रामदुलारे बूवे, ग्राम—रामनगर, डाकघर—औरंगाबाद, जिला—सीतापुर ।

पुष्पिका—इति रस सारणी पूर्तिमनान सवत १९३१ असाढ़ वदी १३ ॥

संख्या २६७ आर्इ. संग्रहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा, प्रतापगढ़), कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१५, पूर्ण । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२५ = १८६८ ई०, प्रासिस्थान—राज पुस्तकालय, प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ संग्रहावली । कविलं । शान्त रस. बालवटी करै वादि सदा पितु मानु तऊ भरै गोदनि माँही । बूर कशूर करै पशु भूरि तऊ तऊ पालक पालिवो नाँही । हे रघुनाथ तिहारही हाथ अनाथ हों दीन कहो केहि पाँही । मैं जइता वशि तोहि तज्यो जिमि मोहि वरावरि होहु वृथा ही ॥ १ ॥ पाहन ते तौ कठोर नहीं शवरी गुह ते कहु कौन कुजाती । वानर गीघ निशाचर ते जग माँ नहीं आन कोऊ । जइ जावती देपि अहेतु दया हनपै तजि साधन चैठ अहाँ दिन राती ॥ दीन अनाथ तजो रघुनाथ तौ तो सम को विसवास को घाती ॥ २ ॥

अंत—करी रैन मन भवि जो ॥ १६ । केसरी । माधो तारो दीण नर सुनी कुशल का देर । सब प्रभुता को पद गन्यो ठरयो अरज पग नेर ॥ १०० ॥ एक एक अच्छर पढ़ै एक एक न तजि देह । यहि दोहा माँ ताय कुल देश ग्राम लपि लेह ॥ १०१ ॥ सेवर साज घरा वक चावरी मृग वरी रिक चोँछ विमारै । कौंद परोर छुँई तो रई कहुँ श्राग भैरा कठहार कौं टारै । पोवा औ पांड पराय करे दधि दूध मही लहि कौन विचारै ॥ दीन सुधारि अरार कौं डारि द्वैचारि जाँ आम टिकोरहि डारै ॥ इति नानार्थ नव संग्रहावली सम्पूर्णम् । संवत १९२५ वि० माघ शुक्ला तृतीया श्रृगुवामरे समाप्ति मरामत ।

विषय—फुटकर कवियों का संग्रह ।

संख्या २६७ जे नानार्थ नव संग्रहावली, रचयिता—मातादीन शुक्ल (अजगरा-गाँव, प्रतापगढ़), कागज—देशी, पत्र—३२२, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४७ । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९९ वि०, लिपिकाल—सं० १९३० वि०, प्रासिस्थान—बाबू आँकार नाथ टंडन तालुक्रेडार, जिला—सीतापुर ।

आदि—कीन्हे न जो उपकार कछु तौ कहा घरवार के कार मरेते । दीनन दीन न दान कछु तौ कहा धन भार अगार मरेते । सेयो न संत सभान न तन्यो तौ कहा विषयी जन संग धरेते । जौन विके रघुनाथ के हाथ तो काह अनाथ होय धाय मरेते ॥ ४ ॥ तन सुंदर औ मनि मंदिर मोतिय चंद्र मुपी बुध पुत्र सही । कर जोरि निहोरि खड़े चहुँ ओरिनि थोर महीप जिन्है मडही ॥ मठ मत्त मतग जतीख तुरंग बंधे बहु रंगन जात कही ॥ जन जानकी

बाह के गेह बिना वहु ब्यंजन भोजन छोडु नहीं ॥ ५ ॥ परि बारहिं धाकत पाकत हे तुम्हरे कोऊ काम न आवेंगे । अपराध करी जेहि हेतु तुम्ही कमलोक सो हीन बसावेंगे । नहिं देह न गेह न मेह कहु तब कर्म सबै संग आवहिंगे । तबि फँद भञ्जी मति मँव भञ्जी भक्षयेषा बंदिषा नसावहिंगे ॥

अंत—ग्रह ६ ग्रहे ६ मंड भू १ युक्ते बरें पीप सितै तरि पके कुड्डु तिथी सूर्ये विर्मिता वृत्त बीपिका ११६३ ममादी मंगल श्लोके पूर्वकाक्षरकान्तरात् वाचनीयं प्रमान्ताम नातिर्होपिभापया इति संक्षेपतो वृत्त प्रस्तार सक्यावहोदिहमेव पतः

		२	१	१	
		३	२	१	
	४	१	३	१	
	५	३	४	१	
६	१	६	५	१	
७	४	१०	६	१	
८	१	१०	११	७	१

इति

१३५ ३३२ २८	१२४४८ १११११
------------------	----------------

विषय—सब अतुषों का वर्णन । रामायणमाका, राम गापाइक ज्ञानदोहाबकी रस-सारिणी में रस वर्णन विधिबोध, विंगल आदि वर्णन ।

संख्या २१७ के मानार्थ नव संग्रहावली, रचयिता—मातादीन द्युल्ल पीन (अजगरा), कागज—दोसी कागज पर, पत्र—१९, आकार—१०.३ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुच्छेद)—३००, पूर्ण, रूप—मधीन पत्र, क्विपि—नागरी, क्विपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्रासिध्दान—श्री कुबेर दत्त पुड्डु, ग्राम—धुल्ल का पुरवा, बाकभर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़ ।

प्रुपिका—इति भावार्थ नव संग्रहावली संपूर्ण—संख्या १६३१ मिती क्षेत्राज द्युल्ल ५ किञ्चित्त नागर लाळा मुलींवर छान ।

संख्या २६७ परल संग्रहावली, रचयिता—मातादीन द्युल्ल (प्रतापगढ़), कागज—दोसी, पत्र—७९, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुच्छेद)—४००, रूप—माधीन पत्र, क्विपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३ वि०, क्विपिकाल—सं० १९३१ वि०, प्रासिध्दान—श्री रामदुसरे वृक्षे, ग्राम—रामभगर बाकभर—भीरगाबाद, जिला—सीतापुर ।

पुष्पिका—इति संग्रहावली सपूर्णं संवत् १९३१ मिति वैशाख शुक्ल ५ लिपत शिव गिरि ब्राह्मण शुभम् ॥

संख्या २६८, रामायण (लकाकांड), रचयिता—मथुरादास, कागज—देशी, पत्र—५१०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४१=१८८४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राजदुलारे मिश्र, ग्राम—मानपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः रामायण कृतिवास कृत ॥ लंकाकांड ॥ श्लोक ॥ सर्व स्थूल तनु गर्जेद्र वटनं लंबोदरं सुंदरं । प्रस्यन्दन्मदगंध लुब्ध मधुप व्यालोल गण्ड स्थल ॥ दन्ता घाति विदारि तारि रुधिरैः सिन्दूर शोभा करं । वन्दे शैल सुता सुतं गणपतिं सिद्धि प्रदं कामदम् ॥ १ ॥ शारदेन्दु वदना वरदाद्या शारदा शुनिज मेविजनानाम् बुद्धिमान्ध-मपमा ज्येदवातु निर्मला म्मति मती व प्रसन्ना ॥ २ ॥

अंत—हरि गीतिका छट ॥ रघुवर विजय आनंद मय फल चारि दायक पावनी । शुभ कर मनस तिमिरांध हर अरु त्रिविध ताप नशावनी ॥ सुर सिद्धि शंभु सुनीन्द्र नारद जाहि निदि दिन गावहीं । पर राम चरित अपार पारावार पार न पावहीं ॥ रामायणहिं सो सकल वसुधा वासि हरि जन कहं सदा ॥ आनंद मनकामदा सुत वित्तदा अरु मोक्षदा ॥ श्री मान भोला नाथ सुत काली प्रसन्न यह धरि हिये कृति वास कृत रामायणहिं अनुवाद भापा मह क्रिये ॥ दो० ॥ सो सिय पति पद आस करि द्विज मथुरा अज्ञान । छन्द वद्ध करि मुदित चित करत राम गुण गान ॥ समाप्ताचेय जुद्ध कांड लीला कथेति ॥ लिपत मुन्नालाल दुबे गोला निवासी सवत् १९४१ जेष्ठ शुक्ल दशमी ॥

विषय—रामायण लंका कांड यह वाल्मीकी रामायण का वंग भापा अनुवाद कृतवास कृत का मथुरा ब्राह्मण ने भापा अनुवाद छट वद्ध किया है ॥

संख्या २६६, वैद्यक सार (सर्व) संग्रह, रचयिता—मथुरादास कायस्थ, कागज—देशी, पत्र—५७२, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७२०, पूर्ण, रूप—जीर्ण, गद्य, लिपि—नागरी कैथी मिश्रित, रचनाकाल—१७२७ = १६७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्रीमती श्रिद्धा कुँवरि देवी अध्यापिका कन्यापाठशाला, डाकवर—हर्दाभा, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री राम श्री राम ॥ १ ॥ सरसुती मरस बुधी वागपते हंस वाहनै । निमस्कार अहं कररं बुधि दें वाक वाहनै ॥ लिपतं पोथी दैद्यक सव संग्रह । लछन सिर विया के जो वादी से पीर होई । तो रातदिन सिर दुपा करी तिसके ओपद ॥ कूट रंक ५ काई फल ५ देवदार ५ अरुनी का तेल ५ सव ओपध एकत्र कर काजी सुपीम माये पर लेप करो दिना सात नीक होई ॥ जो कफ सो पीर होई तो दिन को पीर होई रात को नीक रही तीम की ओपद ॥ अरु के जड़का छिलका रंक २ ॥ रखन २ ॥ कूट २ ॥ छर छरीला २ ॥ वच सुरामानी २ ॥ यवी के फूल २ ॥ मोचरस २ ॥ ई सव ओपद पानी सो पीस तात कर लगावें दिन सात नीक होई ॥ जो पित्त से पीर होई तो ...

अंत—अपतानक बाह के छणन ॥ मूरछा रहे पृक ही भोर की ध्यान सा धरि रहे
 पेट से कठिनार्ह बाहु वरि पसी मी कबहीं कबहीं जाये शुरभ्य अंसु सा जारी में पाया आह
 कुछ अप समार सा माखन होइ बात पित इसमें अष्ट होता है उपचार इसका कस्याग
 पूरन वा कस्यान भरत सुवित है परुमपिरतस धाम दिया चाहिये इहा पतानक बाहके
 लच्छन ॥ अंगिरार्ह बहुत आये मीध मो जानी की मारे ऊनर कुछ भार बहुत सा रपा है
 बुद्धमा उठै उर बहुत लग्या रहे सोइ बस है किंकिर मंदसार है कपडुक करेया कीये कपडुक
 करने पेसा लगी इसमा बहोप अष्ट होता है । पारसी मी इसका नाव अपूम कहते है ।
 छह महीने तांइ आंसरभि है ॥ इति समाप्त ॥

विषय—यह ग्रंथ वैषक का है—पड़िये १ से ७७ तक भूमिका है उसमें मी कुछ
 मुसरो है जिसमें (१) ज्वर विक्रिया (२) सन्निपात लच्छन (३) शरीर का गर्म
 निर्णय (४) गर्मनाल परुत (५) पर रितु पण्या पण्य बद्धीर्न आदि २ सिर पीडा
 के उपचार, जुहाम के (लच्छन) लेपभास, केत बढ़ाने का धूल, सिर के प्योरे का उपचार,
 आधा सीसी के उपाय । इसी प्रकार प्रायः प्रत्येक रोग की निदान व उपपधियाँ हैं ।

संख्या ३०० पृ. अक्षितसह्याम, रचयिता—मतिराम, कागज—देसी, पत्र—७४,
 आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—८९६, पूर्ण
 रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—जागरी छिपिकाळ—सं० १८३४ = १७७७ ई०, प्राप्तिस्थान—
 श्री कृष्णविहारी मिश्र, माहल हावस, उत्तरकड ।

आदि—श्री गणेशायनमः होहा ॥ सुपद साउ जन की सदा गज सुन दानि
 उदार ॥ बर्ननीय सब जगत की बाग माया मुकुमार ॥ १ ॥ कवि मतिराम गनेम की
 सुमिरत सुखद अन पीन ल्याग विघ्नन लूक लूक बुरि जात ॥ २ ॥ मद् रस मर्लिद् गन काम
 सुदित गन माय ॥ सुमिरत कवि मतिराम ते रिखि सिखि निधि हाय ॥ ३ ॥

अंत—होहा ॥ अंत करी सी समनि में सोइ सुनि अमिराम । सकल निषम संसार
 हित कविता कलित कलाम ३२९ ॥ इति श्री कवि मतिराम छिपाटी कृत अक्षित सह्याम
 ग्रंथ अर्द्धकार समाप्त सुमं म्याय भाद्र कृष्ण प्रति प्रदायां श्रीगी सं० १९३४ छिपित मिर्
 पुस्तक बलदेव मिश्रन श्री कृष्णाय नमः ॥

संख्या ३०० पृी अक्षित सह्याम, रचयिता—मतिराम (सिक्की, काजपुर),
 कागज—देसी, पत्र—१९०, आकार—८ X ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—१६००, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—जागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामभरोसे
 पूरे, ग्राम—माणपुर, बाकुर—इटीका, जिला—कन्नड ।

आदि—अंत—३०० प के समाप्त । पुष्पिन्न नहीं है ।

संख्या ३०० सी अक्षित सह्याम, रचयिता—मतिराम, कागज—देसी, पत्र—
 १२१, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८७,
 पूर्ण, रूप—प्राचीन कटी, पद्य, छिपि—जागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण विहारी मिश्र,
 नया गाँव बाटे, माहल हावस जिला—कन्नड ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अर्द्धकार ग्रंथ अक्षित सह्याम छिप्यने ॥ होहा ।

तामें प्रति विवत मनो समति जुत सुर लोक । घर घर नर नारी लसैं दिव्य रूप के ओक ॥ १ ॥ चंद्र मुपिनि के भौंह जुग कुटिल कठोर उरोज । वाननिःसौं मनकों जहां मारत एक मनोज ॥ २ ॥ जहा चित्र चोरी करै मधुर वदन मुसिक्यानि । रूप ठगत है दगनि कौ औरन हू जो जानि ॥ ३ ॥ ता नगरी को प्रभु बड़ो हाड़ा सुरजन राठ । रच्यौ एक सय गुननि कौ विरंचि समुदायु ॥ ४ ॥

अंत—रुचिर अरथ भूपन जिते रचि जाने मतिराम । ताकी वानी जगत मै विलसि अति अभिराम ॥ ३६२ ॥ जव लगि कछप कोल सदस मुप धरनि मार धर । जव लगि दिपनि दिचि सोहत दिग्गज वर ॥ जव लगि कधि मतिराम सगिर सागर महि-मंडल । अनिल अनल जव लगि जोतिमंडल आपंडल ॥ नृप सत्रु साल नदन नवल भाव सिंह भूपाल मति जग चिरंजीव तव लगि सुपित कहत संसार धनि ॥ ३६३ ॥ कंठ करै सो सवनि मैं सोभै अति अभिराम । सकल भयो ससर हित कविता ललित ललाम ॥ ३६४ ॥ इति मतिराम कृति ललित ललाम अलकार ग्रंथ समाप्त ॥ शुभम् भूयात ॥

विषय—कविता के नियम ।

संख्या ३०० डी. रसराज, रचयिता—मतिराम, (तिकवाँकर, कानपुर), कागज—देशी, पत्र—१०६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०९१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०७ = १६५० ई०, लिपिकाल—सं० १८०९ = १७५२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नारायण जी, ग्राम—तरसुरारपुर, ढाकषर—मौरावाँ, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मतिराम कृत रस राज लिप्यते सर्वैया ध्यावै सुरासुर सिद्धि समाज महेसहि आदि महासुनि ज्ञानी ॥ जोग में यत्र में तंत्र में गावैं सदा कृत शेष भवानी । सकट भाजन आनन की द्युति सुदर देऊ उदेउ सो जानी ॥ ध्याय सदा पद पकज को मति राम तवै रस राज वपानी ॥ १ ॥ दो० श्री गुरु चरण मनाइ के गणपति को उरध्याई । रसिक हेतु रस राज किय सुकविन को सुप दाइ ॥ २ ॥

अंत—अथ जड़ता लक्षण । दोहा उत्कंठा ते जो हूवै अचल चित्त अरु अंग तासो जड़ता कहत हैं जे प्रवीण रस रंग ॥ अथ उदाहरण कवित्त ॥ सूधौ न सुवास रहै रंग राग ते उदास भूलिगई सुरति सकल खान पान की । इक ठक अन विपे नैन वृक्षे न कहत वात अरु समझे न आन की ॥ थोरी सी हसनि ओर गेसि अैसी डारी ठग वौरी करी गोरी तैं किशोरी वृपभान की । नवते विहारी वह भई है वपान कैसी जव ते निहारी रुचि मोर के पखान की ॥ दो० ॥ अन मिल सोचन वाल के याते नंद कुमार । मीच गई जरि बीच ही विरहा नल की झार ॥ समुक्षि समुक्षि सब रीक्षि है सज्जन सुकवि समाज । रसिकन के रस को कियो नयो ग्रंथ रस राज ॥ इति श्री रसराज मतिराम कृत संपूर्ण समाप्तः । लिपते गोपी बल्लभ गूजर गौड़ ब्राह्मण करोरनी निवासी संवत् १८०६ वि० भाद्र पद कृष्ण अष्टमी ॥

विषय—नायक नायिका भेद वर्णन ॥

संख्या ३०० ई. रसराज, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—४३,

आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुपुष्टु)—१०७५, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, क्विपि—नागरी, क्विपिकास—सं० १८३४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री
सिवासिंह जी, ग्राम—रायमरडी बाकधर—संभार, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ नायक नायक मेद रमराज क्विप्यते ॥ दो० ॥ होत
नायक, नायक आर्कित सिंगार । ताते बरनी नायक नायक मति अनुसार ।

अंत—अनमिप होचन बाल बह पाते नंद कुमार । मीनु गई जरि बीचही विरह
अनल की शार । समुसि समुसि सब रीसि है सगजन मुकवि समाज । रसिकन के रस को
कियो भयो ग्रंथ रस राज । इति श्री चरण कमल बीचरीक बित्त मुकवि मतिराम विरचिते
रस राज समाप्तः दमकत रतन चद सैठ के संवत् १८३४ ॥ शुभ मस्तु ॥

विषय—आशिका नायक मेद वर्णन ।

संख्या ३०० पद्य रसराज, रचयिता—मतिराम, कागज—देसी, पत्र—०२,
आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुपुष्टु)—८६४, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, क्विपि—नागरी सिपिकास—सं० १८६७-१८४० ई०, प्राप्तिस्थान—
राज पुस्तकालय, प्रतापगढ़ राज, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—३०० ई के समान ।

पुष्पिका इम प्रकार है—

इति श्री कवि मति राम विरचितायों रस राज ग्रंथ संपूर्ण मस्तु ॥ लिपित अषाढ़
मासे कृष्ण पक्षे सप्तम्यां रविवासरे ।

संख्या ३०० श्री रसराज, रचयिता—मतिराम (तिकवापुर, बनपुर), कागज—
देसी, पत्र—१२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनु
पुष्टु)—११३४ पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, क्विपि—नागरी, सिपिकास—सं० १९२० =
१८६३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जसकरन सिंह, ग्राम—बिजनौर, बाकधर—बिजनौर, जिला—
कन्नड ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रस राज मति राम कृत क्विप्यते ॥ दो० ॥ श्री
गुरु चरण मगद के राजपति को जर धवाह । रसिक हेत रस राज किय मुकविन को मुप-
दाह ॥ कवितार्थ जानी बरी कमुक मयो संबाध ॥ भूखो अम ते को कमुक मुकवि परीगे
सोचि ॥ बरनि नायक नायकनि रप्यो ग्रंथ मति राम । कीक्य राधा रमन की सुंदर जस
अमिराम ॥ होत नायकई आर्कित अंगार । ताते बरनी नायक नायक मति अनुसार ॥

अंत—इति श्री मतिराम कृत रस राज ग्रंथ समाप्तः सिप्यते गौरी चरण काला
कायस्त वैजे गांध बासे संवत् १९२० वि० माघ शुक्ल सप्तमी ॥ श्री राम जी की संकर बैलास
पती की अथ ॥

संख्या ३०० पद्य रसराज, रचयिता—मतिराम, कागज—देसी, पत्र—३२,
आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुपुष्टु)—४३७, रूप—
नवीन, पद्य क्विपि—नागरी, क्विपिकास—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री
हरिहर बजरा सिंह, ग्राम—ममरोबापुर, बाकधर—देवीगंज, जिला—दरहाई ।

आदि—केलि भवन की देहरी परी वाल छवि नौल । काम कलित हिय को लहै लाज कलित द्यग कौल ॥ अथ प्रौढ़ा लक्षण । निज पति सों रति के लिये सकल कलानि प्रवीन । तासौं प्रौढ़ा कहत हैं जे कथित रसलीन । यथा ॥ प्राण प्रिय मन भावन संग अनग तरंग निरग पसारे । सारी निशा मति राम मनोहर केलि के पुज हजार उधारे । होत प्रभात चल्यो चहे प्रीतम सुदरि के हियरे दुखभारे । चढ सो आनन दीपमो दीपति श्याम सरोज से नैन निहारे ॥

अत—अनसिप लोचन वालेके याके नन्द कुमार । समुञ्जि समुञ्जि सब रीक्षि है सुकवि समाज । रसिकन के रस को कियो भयो ग्रंथ रसरज । इति श्री सुकवि मतिराम विरचित रसरज ग्रंथ समाप्ति । सवत् १६४० ॥ आश्विन मासे कृष्णपक्षे तिथौ दशम्या बुधवासरे लिपितो रसरज ग्रंथो मेघ वर्ग मिश्रेण श्रीमतः खुशहाल सिंह नर्मणे जनवार ठाकुर के पठन्यर्थम् ॥

विषय—नायक नायिका भेद ।

संख्या ३०० आर्इ. रसरज, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८९०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री परमात्मा शरण, ग्राम—ठ्योंगा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—हास । प्रौढ़ा धीरा जानियों सो निज सुमति विसाल ॥ ४० ॥ उदाहरण । वैसहीं चितै कै मेरे चित को चुरावति हे । बोलति हे बोसे हीं मधुर म्रदवानि सों । कवि मतिराम अक भरत मयंक मुपि वैसें ही रहति गहि भुज लतिकानि सो । चूमति कपोलें पानक अधर मधु वैसिये निहारि रीति सकल कलानि सो । कहा चतुराई छानियति प्रान प्यारी तेरौ मानु जानियतु रूपे मुरि मुसुक्यानि सों ॥ ४१ ॥ दोहा । ढीली वाहनि सों मिली बोली कछु न बोल । सुंदरि मानु जनाइयों लियौ प्रानपति मोल ॥ ४२

अंत—प्रिय भूखन वचनादिकी लीला करै जी वाल । तासो लीला हाव कहि वरनत सुमति रसाल ॥ ३५५ उदाहरण ॥ प्यारी पगी पगरी पिय की घर भीतर आपने सीस सवारी । एते मै आगुन तें उठि कै तही आइ गयौ मतिराम विहारी । देखि उतारन लागी पिया पिय सौं हनि सो बहु रचौ न उतारी । नैन नवाइ लज्जाइ रही मुसुक्यलई उर लाई पियारी ॥ ३५६ गमन नमन वचनादि में होत कछु जु विसेख । वरनत ताहि विलास कहि रस मय ।

विषय—नायक नायिका भेद ।

संख्या ३०० जे. रसरज, रचयिता—मतिराम, कागज—देशी, पत्र—१६८, आकार—९ × ५ इंच, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री कृष्ण विहारी मिश्र, माडल हाउस, लखनऊ ।

आदि—३०० ई के समान ।

अत—मोरी वाली बनाइ तै रूप ॥ ४१५ ॥ काम पीर तै पीर इति ताप दूवरी होइ । तासो व्याधि वपान नहीं कवि कौविद सव कोई ॥ ४१६ ॥ उदाहरण ॥ वरपा सी

आगे भिन्नि बासर विसाचनि बाई परबाह भयो ना उन उठरिबी । सह्यो जानु कीन पे
मुझ्चि मति राम जति विरह भनिल ज्वाळ जालनि की आरिबी ॥ बीयतु समीप की उचैपतु
उसासनि सी हमकी हो हेरति उठ हेरति हहरिबी ॥ भिन्नि कदा चाहति सो कही न हुबर
काम्द रही अब बाकी उप बरनि की करिबी ॥ ४१७ ॥ दोहा ॥ देखि परै बहिं बूबरी मुनिपे
स्याम मुबान । जानि परै परजंक मी—

संख्या ३०० के मतिराम सतसई, रचयिता—मतिराम (विक्रमपुर, तिर्हवा,
बनपुर), कागज—दैती, पत्र—१४४, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४,
परिमाण (अनुच्छेप)—८०४, पून रूप—प्राचीन पद्य, छिपि—नागरी, छिपिकाळ—
सं० १८३२ = १७७१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जसकरपसिंह, ग्राम—बिजनीर, जिमा—
रुतनर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अब मतिराम सतसई लिप्यते ॥ बंदना । मी मन तम ते
मदि हरी राधा की मुप च्च । बई आदि सपि सिंधु की मंद नन्द आर्चन् ॥ मुंज मुंज के हार
उर मुहुउ मीर पर मुंज ॥ कुंज बिहारी बिहरिये मरेई मनु कुंज ॥ रति नायक साबक सुमन
सय जग जीतन बार । कुविसय वर मुकुमार तन मन कुमार जय मार ॥ राधा मोहन कल
बं आदि न भावत नेह । परियो मुयी हकार द्य ताकी भोपिन पेह ॥ भागरी देव कमान सर
करत न भनी पीर । पीमे करिति गंवारि क दग घनुही के तीर ॥ तन रोचित रोचन नई
रचन कंचन गोनु पिया पिया बासो दिया छिया छिया जग होतु ॥

अंत—भोगनाथ नर नाथ की रीझयो लीझ अनूप । होत भिलारी भूप ई भूप
मिपारी रूप ॥ मुरधीपर गिरिधरन प्रभु पीतांबर बनस्याम । बधी बिहारन कंम भरि पीर
हरन अमिराम ॥ पीत इंगुळिया पहिरि की काळ लकुटिया हाव । धूरि मेरे पेछत रहे जत्र
बासिन मजनाथ ॥ तिरछो चितबनि स्वाम की कमति राधिका ओर । भागनाथ को हीजिये
यह मन मुप बर जोर ॥ मेरी मति में राम ई । कबि मेरे मति राम चित मेरो आराम में
पिठ मर आराम ॥ इति श्री मति राम सत सई संपूर्ण ममासाः छिपतं बनीराम बाब्रपई
संवत् १८८६ वि० माघ शुक्ल सप्तमी ॥

विषय—राधा हृत्प के ७०४ दाहे ॥

संख्या ३०० एका सतसई रचयिता—मतिराम, कागज—दैती, पत्र—११३,
आकार—८ X ३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुच्छेप)—२९०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्ण बिहारी मिश्र, माहल हाबन,
राजमंड ।

संख्या ३०१ कविच - सवैरा, रचयिता—मेनेसाळ (बिर्साँर, बनपुर)
कागज—दैती, पत्र—८, आकार—८ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण
(अनुच्छेप)—१३६ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी रचनाकाळ—सं०
१८१० = १८५३ ई० छिपिकाळ—सं० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री साधनरहा
मिह, ग्राम—रामनगर, हाबनर—महापुर जिजा—पीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । श्री गौरी शंकरायनमः । श्री मद्रा शिवायनमः ॥ श्री रामायननम ॥ अथ कवित्त वा पद मेदेन्नाल कृत लिप्यते ॥ गज तुंड गणेश गुणागर सागर सिद्धि उजागर औनि नमो । वपु लाल कला निधि भाल चतुर्भुज माल हिये दुप जात दर्मा ॥ सुत गौरि सो लायक मपति दायक मत महायक निर्दपिमो ॥ पितु रावर को जन मेदे गहे पद दीजिये श्री सिद्धि बुद्धि मर्मा ॥ १ ॥

अंत—कवित्त ॥ जत्र मे निय ज्याहि राम कामधाम आइ मेदे धामनि प्रति व्योम औधि आनठ वधायो है ॥ दग्गर्थ्य राज राज काज मव मीम धारि प्रेम पालि पुर जनहिय हरप बढ़ायो है ॥ मुनि मंत्र सुनत अविभेष नृप सबै कीन्ह टोन्ह वर उभै निगि के कै मन भायो है ॥ वन जात प्रान प्रिये सपे सुरधाम राठ कौमिला किंचित चिंता भरथ बुझायो है ॥ इति श्री मेदे लाल कृत कवित्त मर्वया आदि देवी देवताओं कृत संवत् १६१० चैत्र शुक्ल ९ इति श्री शुभम् ॥

विषय—गंगा जी, हनुमान जी, देवी जी, श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्ण जी, भरत जी आदि की महिमा और शंकर जी और रामचन्द्र जी का व्याह वर्णन ॥

संख्या ३०२. मेघमाला, रचयिता—मेघराज (फगुआरा, जालघर, पजाव), कागज—देवी, पत्र—४१, आकार—७ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१७=१७६० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनाथ पाठे, प्रधानाध्यापक हिंदी स्कूल, ग्राम—कुरही, डाकघर—जिठवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मेघमाला लिप्यते ॥ टोहा ॥ परम पुरुष घट घट रम्यां, जोत रूप भगवान । सकल रिद्धि सुप देन प्रभु, नमत मेघ धरि ध्यान ॥ १ ॥ वा हत जाको हस सित और सिंधु दिव तीय । शिवा भवानी सारदा सकल एक नहि वीय ॥ २ ॥ चरनन मो युग ताम के आगम वानी दाइ । तिम प्रसाद हम ग्रथ कौ रचौ सकल सुप थाइ ॥ ३ ॥

अंत—अदिल ताते मेघ माल इहु कीनी । जो गुरु के सुप ते सुनि लीनी ॥ इसकी पढ़ सु मोभा पावै । सो जग में पंडित कहलावै ॥ ६४ ॥ सवि कविता सौं विनती कहत मेघ कर जोर । करौ सुद्ध हम ग्रथ कौ अधिक कलौ जिहि डोर ॥ ६८ ॥ वाल कहत जो वात कौ पडित करत विचार । कर्ता असुद्धहि होइ कष्ट, लीजो कविन सुधारि ॥ ६९ ॥ इति श्री मेघ माला मुनि मेघमाला मुनि मेघराज ऋषि विरचिते सगुण नाम चतुर्थधिकार ॥ ४ ॥

विषय—पृ० १ से पृ० २० तक—मंगला चरण, गुरु वन्दना—ग्रय निर्माण प्रतिज्ञा, कवि दैन्य वर्णन, ग्रंथ निर्माण हेतु, कार्तिक से लेकर फाल्गुन तक प्रत्येक मास की विशेष विशेष तिथियों में मेघ होने, वायु चलने आदि के विचार से समय कुसमय होने का विचार । होली विचार (होली जलते समय पवन की गति के अनुसार) चैत्रफल—चैत्र वदी पड़िवा का फल, चैत्र सुदी मेघ संक्रान्ति में जल दरसने का फल वैसाख मास फल । ज्येष्ठ तथा जेष्ठ सुदी पड़िवा का फल, असाढ़ मास फल, अषाढ़ में काली रोहिणी का फल,

रोहिणी नक्षत्र होने के दिन लगन में सूर्य बाधे उसका फल, मघा सुदी पूर्विमा को पञ्चा की पवन का विचार सावन मास फल, भादों मास फल, आश्विन फल (प्रथम अधिकार समाप्त)

(२) पू० २० से पू० ४२ तक—द्वितीय अधिकार । ग्रह नक्षत्र वर्षा लग्न, चारों स्तंभों के समय का विचार, रोहनी फल ग्रह राशि फल, मूसल योग, अंगारा योग, मृत्युयोग ग्रह उदय फल, शुक्र उदय फल, शुक्र-बल सञ्जाति विचार पौष संक्राति फल, फल संक्राति फल, शैत्र संक्राति फल, संक्राति सुहूर्त फल, सञ्जाति सोती बैदी व रादी का फल, त्रिपि क्षय फल, त्रिपि अधिक फल, अधिक मास फल, एक मास में पौषवार होने का फल, रवि राशि कुटिल परिवार फल, दुकाल-छद्मन शुक्राल लक्षण, बंधमा उदय फल, बंधु बंधे के रंग का फल, मंडल फल, वायव्य मंडल फल, बाहणी मंडल, महेन्द्र मंडल फल, चारों मंडलों का फल, संक्राति मध्य मंडल में स्थित राशि का फल, समय के राजा का फल, मंधी फल, प्रहय विचार, भूमि कर्षण क्षण फल ।

(३) पू० ४३ से पू० ६३ तक—तृतीय अधिकार । ग्रह बन्दी अतिथार फल, राशि ग्रह विचार, चौकयोग, कर्तरीयोग, वर्षा कुयोग, अर्ध कौंड, बृहस्पति कौंड, नक्षत्र राशि कूर्म फल, चारसी के मतानुसार सुहूर्त के गुरों का विचार, सोमवार गुरों का फल, मंगल वारे गुरों का फल, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवार तथा रवि गुरों स्वामी फल, गृहस्थिति ।

(४) पू० ६४ से पू० ८२ तक—चतुर्थ अधिकार । (सगुणाध्याय)—उत्पात फल, वर्षा कर्षण, ईश्वर चतुष फल छीक का सगुन, गर्म सगुन, भंग सगुन, प्रमाण, रासभ शम्भु फल, काक भाषा पूर्व पहिले ग्रह का फल, अग्नि कोण फल, इक्षिण फल, निक्षुप फल, पश्चिम फल, वायव्य फल, उच्चर फल, ईशान फल, जंबूतक फल सब दिशाओं के विचार से, राशि काक दिन ज्ञान फल द्वितीय तृतीय ज्ञान फल, तीनों ज्ञान का फल, चौथे ज्ञान का फल, राशि के चारों ज्ञान के फल, किरछी सगुन, सात बार फल, नक्षत्र फल, भंग फल, भ्रंष पटन पाटन फल, कवि के गुह का परिचय—(दोहे और चौपाई में) कविकाम वर्णन—(दोहा और चौपाई में) गृप वर्णन—(दोहा और चौपाई में) पक्षियों से विनय ॥ भ्रंष समाप्त ॥

सुख्या ३०३, मीराबाई के पद, रचयिता—मीराबाई, कागज—हैती, पत्र—२४, आकार—८ x ६ इंच, पन्कि (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुपुष्प)—३१४, रूप—बनीम, पद्य, लिपि—मागरी, प्राक्षिप्तान—बाबा मगिराम श्याम, ग्राम—बरगोब, डाकघर—महोबा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मीराबाई के पद लिप्यन्ते । श्री गुरु जी नमः जसे पिपा ज्ञान म दीये है । जहो री सखी मिठि रापिये मिननि हस पीये हो ॥ स्वाम सखोवे सांपरो मुज देखत जी जी हो ॥ ओइ जाइ भेष सौं हरि मिले साईं सोईं कीये हो ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर वध भागत रीये हो ॥ १ ॥ वेसी लगन खगाय कहां हू जामी ॥ तुह देखे बिच फल न परत है तलकि तलकि बिच जामी ॥ तेरे खातिर जोगिन हुंमि करवत हूंगी करती ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण बंधक की दामी ॥ २ ॥

अंत—जावा टेरी जावा टे जोगी किसका मीत ॥ सदा उदामी मोरी सजनी निपट
अटपटी रीत । बोलत वचन मथुर अति प्यारे जोरत नाहीं प्रीत ॥ हू जाशूँ या पार निभैगी
छोड़ चला अधवीच ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर प्रेम पिआरा मीत ॥ ४ ॥

विषय—श्री कृष्ण भगवान के भेम रम मे भरे हुए मीरायाई के भजन पद आदि ।

संख्या ३०४. व्यजन प्रकार, रचयिता—मीर पनाहअली (देहली), कागज—
देशी, पत्र—६५, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपट्टपू)—
६००, रूप—फटी, गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—मं० १९४५ = १८८८ ई०, प्राप्ति-
स्थान—ब्रेनी सुराऊ, ग्राम—करारामऊ, जिला—सीतापुर ।

आदि—पाने की क्रिस्मे ॥ रगोई ३ तरह की होती है एक निपरी दूसरी सपरी
तीसरी फलारी ॥ आगे तरकीब समेत लिखता हू जिसमे सहज में जाना जाय ॥ निपरी
पकावान घी या तेल में तले बनाये जाय जैसे पूरी कर्चारी वड़े लड्डू खुरमा जलेबी आदि
जानो ॥ सखरी ॥ कच्चे भोजन को कहते हैं जेमे ढाल चावल कड़ी खिचड़ी आदि जो घी
या तेल में न तली जाय और वाजे हल्दी ढालने की कच्चा मनते हैं ॥ फलारी ॥ फलहारी
भोजन उमे कहते हैं जो दूध और कद या शकर से बनता है जैसे पेटा वरफी मलाई रवड़ी
दूध के लड्डू और जो पदार्थ सिघाडे या कूट के चून मे बना है वह भी फलहारी भोजनों
में गिना जाता है ॥ चाशनी बनाने की तरकीब । एक मन राड को पहिले कड़ाई में ढाले
फिर उसमें २ सेर पानी ढाले तब आच दे आच मे उफान आवेगा । तो उस समय २ या
३ सेर पानी खडे होकर घड़े से ऊंचा हाथ करके ढाले तब उस राड का मैल फूलेगा
उसको टीप कहते हैं । उस मैल को पानी से उतार दूसरे पात्र में ढाल दे दूध और मिला
हुआ मिलाकर ऊंचे हाथ से खाड की कड़ाई में ढाले ॥ दोवार करने मे रहा सहा मैल फूल
कर आ जाता उमे निकाल ढाले अगर खांड साफ न हो तो सज्जी पीसकर ढाले मैल साफ
हो जावेगा ॥ फिर दूसरे किसी पात्र पर टिकटी धर उस पर ढलिया रखे उसमें सफेद
कपड़ा लगा कर भिगोवेवे उस कपडे को छाना कहते हैं फिर डोरी से निकाल कर उस कपड़े
की लगी हुई ढलिया में ढालकर छान लेते हैं उस छने हुए शर्वत को वक्खन कहते हैं
वही वक्खन हर एक मिठाई की चासनी करने में दिया जाता है ॥ चासनी कई तरह की
होती है हर एक चासनी की पहिचान जुदी जुदी है ॥

अत—आम की घटनी बनाने की तरकीब । आम पांच सेर ले उसको छीलकर
गुठली फेंक दे और आमों को पीस ले और मसाला यह ढाले ५ छटांक नमक साभर और
अदरक १ छटांक लौंग तोला भर मिर्च लाल दखिखनी चटांक भर धनिया पिसा हुआ सूखा
दो पैसे भर दालचीनी छदाम भर पोदीना सूपा दो पैसे भर सेधा नोन छटांक भर मिर्च
काली पैसे भर जायफल जावत्री छदाम छदाम भर नीवू का रस सूपा जाय तब ढाले और
दम नीवू का रस पहिले चटनी में ढाले ॥ और धूप में आठ १० रोज रखे । जब सूख जाय
तब अर्क नाना ढाले ॥ चाशनी में ॥ आम वे जाली के सेर भर ले और उनको छीलकर
गुठली निकाले और पीस ढाले और नमक छटांक भर धनिया दो पैसे भर लौंग छदाम भर
पोदीना ३ पैसे भर अदरक आधी छटांक वादाम की मीगी छिली हुई २ पैसे भर पिस्ता पैसे

भर विशामिता व्यप पाव छोहारा भाव पाव बीन सँजा २ पीसे भर इन सबों को चटनी की भाँति पीस डाले आप सेर खाँड लेकर चासनी कर ले और किन्तमिता को घोड़ पी में भून के चासनी में मिलाएँ और नुरपी से चलादे फिर उतार दे भरत धान में उढाकर रखे इसी चटनीको भी रथम करते है त्रिचरी दाल भात के साथ बड़ा स्वाद दती है ॥ इति ॥

विषय—म्यंजनो के बवान की तरकीबें ।

संख्या ३०५ ए, आदि शक्ति के कवित्त, रचयिता—मोहन कवि, कागज—दूरी पत्र—१४, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुच्छेद)—१८०, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी प्राक्षिप्पान—भी रतिमान सिंह, ग्राम—रतमपुर कर्को, हाकर—बजगाव, त्रिका—उषाव ।

आदि—महल मनी के बने पीक अति नीके तामें कमल कनी के पीर कोरन में सारे हैं ॥ ताके बीच सरमसिपासन सपीमच अटी मन न कवीश्च ताके बीच छत्र छत्रे हैं ॥ मोहन भक्त आर्षी द्य पाव सासन के व्यसन अनूप ही विरूप अति छत्रे हैं ॥ ताके मध्य प्रांठ हैं अनूप भाव सच भाव जाके व्यस पास नव कोट सक्त रात्रे हैं ॥ १ ॥

अंत—प्राचीं द्विसि रच्छा कर भ्रामरी मुख्य सर्व शक्ति की चमूय जो अनूप पर हाक का । दक्षिण में रोज ही रत्नाके जस छत्रे देखि बंदिब सभूह सब सहुन की साक का ॥ मोहन प्रतीची में प्रभावती मपाल का उचर में ईसुरी सुरी सुरी कपाल का । उन उन धारि धारि पहर पहर निमि नहर हमारे हैं मन्मनी रच्छ वालका ॥ २ ॥

विषय—आदि शक्ति की देवी जी की महिमा ॥

संख्या ३०५ ई इनुर्मत विनय, रचयिता—मोहन कवि, कागज—दूरी, पत्र—१६ आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२९ परिमाण (अनुच्छेद)—१५६, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी प्राक्षिस्थान—हाकर कस्तूरमल, ग्राम—गीरिया कर्को, हाकर—फतेपुर, त्रिका—उष्माव ।

आदि—बहुल अनूप कर गुन गन भूप, कर सुंदर सरूप रूप टवि की छत्र देत । कर कर छम साथ हीन विच भये गये कर प्रत प्रेम प्रेम प्रतियै पय दनु ॥ मोहन भक्त कछ पात के छिमाव पित्त तर के विपाव ज मूर से मियाइवेतु ॥ वनकर पुष्ट मन कर के संगुठ और सुष्ठ मह जोग दुष्ट रोग की हयाव दनु ॥

अंत—तिथि दोष बार दोष नपठ दोष बफ्त दोष जाग दोष करन दोष लगन द्यप रास दोष दुष्ट मह सिद्ध दुष्ट मह की आह दुष्ट आह जग कष्ट महा दुहन की दुष्ट रोप । मोहन भक्त तीन तारा को त्रिदोष तीव्र चंद्रमा को दोष तीन दापन को दोष चोप ॥ हरै सब दोष करै अठरी अदोष इनुर्मत बमर्बत हरै दुप और त्रिदोष द्यप ॥

विषय—सर्व प्रकार के रोग दुप दर्द अत्र मंत्र अत्र अरिष्ट मह आदि भी इनुमान जी विनय करने से दूर होने का बयान ॥

संख्या ३०५ एफ कनीन विनय, रचयिता—मोहन कवि, कागज—दूरी, पत्र—१४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेद)—२१६,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—वाघा झब्बूडाम, ग्राम—वादाशाहनगर, डाकघर—लखनऊ, जिला—लखनऊ ।

आदि—अकल अनूप कर गुन गन भूप कर सुदर सरूप रूप छवि की छटा देतु । कर कर छैम साध दीजै नित्त नेम नेम कर प्रत प्रेम प्रेम प्रीत में पढा देतु । मोहन भनत कफ वात के फिसाद, पित्त जूर को विपाद जर मूर सो मिटाय देतु ॥ तन कर पुष्ट मन करके सतुष्ट वीर दुष्ट ग्रह जोग दूष्ट रोग को हटाय देतु ॥

अन्त—तन मन ताती पूतनायुत वाती जुर जोगवी जमाती दुष्ट कल्या मदमाती जे ॥ डाकनी और साकिनी पिमाचिनी पिसाच ब्रिंद जिंद औ ममान प्रेत प्रैतन की पाती जे ॥ मोहन भनत वीर वेलि या विताल जान कोटरा सुरंढे येचरी जे भौत भाती जे ॥ लप भज जाती छिप जाती और सकाती भूर भूतन की पाती कप जनको डराती जे ॥ अपूर्ण ।

विषय—हनूमानजी की विजय की महिमा का वर्णन ॥

संख्या ३०५ वी. नृसिंह जू को अष्टक, रचयिता—कवि मोहनलाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—देवनागरी, प्रासिस्थान—ठाकुर रतीभान सिंह, ग्राम—रुस्तमपुर कलाँ, डाकघर—अजगैन, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री नृसिंहायनम. अथ नृसिंह जू कौ अष्टक लिप्यते । दोहा—जै जै जस जालन करत जै पालन प्रन रिंहे । रच्छक जन मच्छक कुजन जय जय श्री नरसिंह । १ ॥ कवित्त ॥ वजू तन वजू महा वजू नख वजू वजू अयुध दरज्ज छज्ज पाल प्रन चेलाकौ ॥ वक्वर वज्ज महा राँद्र रस रज्ज सज्ज अति बल गरज्ज देख असुर हुवेला कौ । मोहन भनत चाय चरन चपेट मार लपट लपेट हिरना कुस ववेला कौ । गुन गन गाठं मन मगन मनाठं उर धर धर ध्याऊँ श्री नृसिंह अलवेला कौ ॥ २ ॥

अन्त—। छप्पय । जय जन प्रन प्रत पक्ष वक्षहिरना कुस भक्षक जय प्रह्लाद प्रसाद साद सरना गत रक्षक ॥ जय अद्भुत अवतार धार धारन भुज चारन । जय अनग अर जग जीत भव भीत निवारन ॥ जय अनुल तेज रवि रेज कर जय जन मोहन उहरन । भय भक्ष भक्ष पर तच्छ प्रसु जय नृसिंह निर्भय करन ॥ ११ ॥ इति श्री मोहन लाल सुकवि विरचिते श्री नृसिंह जू कौ अष्टक सम्पूर्ण सावन सुदि ११ बुध वासरे सवत १९५३ सुकाम महाराज नमी जो कोई वाचै सुनै ताकौ चौकी नवीस हीरालाल की जै श्री नृसिंह जू की पहुचै =

विषय—नृसिंह जी की स्तुति ।

संख्या ३०५ सी. श्री राम अष्टक, रचयिता—मोहन, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७६ = १८९६ ई०, प्रासिस्थान—श्री रतिभान सिंह, ग्राम—रुस्तमपुर, डाकघर—अजगैन, जिला—उन्नाव ।

आदि—जय हां मुजय तप तप सी सुतीरव में सपर भागीरव में ग्यान गुण गन है ।
 बिरद मुनाबतो रिशाबतो बहुत मुम्है उर प्याबतो मनाबतो सुमन है ॥ मोहन मनत पाप
 करतो न नेक पुण्य करय रिक विपत्त चापुरी सो बुनकै ॥ मायी मैन पापके ॥ प्रताप की सुताप
 राम जयम उकारन तुम्हारे नाम मुनि है ॥ १ ॥ सैस भी सुरेस वजुजैस भी दिनेस मन
 मग मनेस जपे संसु सेपमान रे । जग जग हुंड जरी भगत मसुंड जपे सुंड घर सूर जपे मनम
 महान रे ॥ मोहन मुम्है जरी सुरगन बिंदु जपे चंद जपे चंदते पुपुंड घर बाबरे ॥ जाको
 जय जान में कहीं हु मन मान और नाम रामनाम की समान नहीं जान रे ॥ २ ॥

अंत—हेगुम मंदिर हुंदर स्वाम मनौहर मूरति मापुरी मोहन । बीच प्याळ प्रेम प्रत
 पाळ इले सुरसाळ निहाळ क्रिये जन ५ केंज से पान परे पनुवान सु भाव बिपो मुद मान
 मुनीसन ॥ श्री हत साजुव माजुज रूप मुई मन में बली जानकी जीवन ॥ इति श्री राम
 अष्टक संपूर्ण ॥ दो० ॥ पई राम अष्टक हु यह तब मन मेह लगाइ । ताके उर अंदर बसी राम
 रूपन दोड भाये ॥ १ ॥ कीट तरा मन में कर उक्ति सुतुक्ति अनेकउपाय के जाको ।
 कीने गुहायो । बनायो मुपो सजबायो मुर्पाळ बछायो निभाकी ॥ मोहन मैं मन मोह रही
 गुन गोह रही करिये हु कहां को ॥ छाल तुम्हारे दिने में हरा पहिरायको बाँके उदारिको
 बाँके ॥ संवत १६२६ वि० मित्ती विसाय सुरी २ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

बिषय—श्री राम जी की बंदना ।

सद्यया ३०५ श्री बामुदेव अष्टक, रचयिता—मोहन, कागज—दही, पत्र—२,
 आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ — ३२ परिमाण (अनुपुद्गु)—२८ रूप—
 प्राचीन पद्य किरि—नागरी, किरिकाल—सं० १८०६ = १८१९ ई०, प्रासिखान—श्री
 रविमान सिंह, प्राप्त—इस्तमपुर कर्को, आकार—अजीम, जिजा—उबाव ।

आदि—श्री गणे नू सदा सहाय ॥ जय छीपते बासदेव अष्टक ॥ कवित ॥ परम
 प्रकामी कर्ण जाकी जीतिपासी पर पुर को निबासी अविनासी अज ये है ॥ पिर
 चर जीवन की सजग सजीवन को सब जग जीवन को जानी सब मेव है ॥ मोहन मनत
 जस जग तस नाम को जय जय नाम जाका सब जग सेव है ॥ हेत्य इल नामी रमा
 जाकी दिव्य दामी सोई सब सुप रासी विश्ववासी बामुदेव है ॥ १ ॥

अंत—कवित ॥ कामठा सरस प्रागराज को परप बिन्दु बासनी दरस क्यसी बास कर
 जाये ते । गया गजामर पद् पावब पे परबैठुनाय नाथ कर हर हर पर पाये ते ॥ मोहन मनत
 सापी साप है गुपाळ भारी उतर अद्वारा पुरी परवन पचाये ते ॥ पावे मुक्ति ईसे निग-
 मागम असीसि दग वीस जगदीस की नरीस के बहाये ते ॥ संवत १८०६ वि० सैत्र शुद्ध
 पंचमी को लिपा शिव वालक राम ॥ राम राम राम ॥

बिषय—बामुदेव जी की महिमा वर्णन ॥

सद्यया १०६ पवनविजय स्वरोद्व, रचयिता—मोहनदास कपण्य (कुरासत,
 कर्नाट), कागज—देसी पत्र—२६, आकार—९×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२,
 परिमाण (अनुपुद्गु)—६९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, किरि—कैथी, रचनाकाल—सं०

१६८७ ■ १६३०, लिपिकाल—स० १८६९ = १८१२ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेशमिंह
रईस तालुकदार, ग्राम—कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गनेस जी सहाये श्री सरस्वती जी सहायु ॥ अथ पवन विजय स्वरोदय
भापा निवध लिप्यते ॥ दो०—प्रथम चरन गुरु वटि कै सुमिरौं पावन नाम । अल्प दास
सुप टेन जन मोहन करत प्रनाम ॥ १ ॥ गंगा सागर गभीर अति मोहन रंग उतंग ।
कुल मर्यादा कूल विवि सकत न लंघन पंग ॥ २ ॥ ग्यान हीन नर पंगु मय विनु सत
गुरु सुज दोइ । तरो जु चाहे तरनी नीधि अधिक अचभो होइ ॥ ३ ॥

अत—धरि पदमासन मूल पवन को ऊरध खेंचि पवन को फेरे । नासिका पवन
पूरक करि तंतद्धिन । हडा पिंगला उधहि उतरे उतरे ॥ अरध उरध पवन ग्रंथि तहाँ वैठि
करि नाडी सुख मना मध्य वसेरे । सत गुरु क्रिया समाधि लाइ तव मोहनदास काल को
फेरे ॥ ३६२ ॥ दिवस समस्त चन्द्रस्वर वाहे । कर निशा दिवाकर को प्रवाहे । करि
अभ्यास क्रिया दिद कजे जुक्ति सदा यह संत निवाहे ॥ नव लागि गगन चद्र अरु तारागन
इहि प्रकास रवि तमक्री दाहे । तव लागि आयु वडे साधक की लीला रूप काल को
ग्राहे ॥ ३९३ ॥

X

X

X

X

इति श्री स्वरोदय पवन विजय त्रय भापा लिप्यते लेपक पाठक यो शुभ संवत्
१८६९ पाउप सुदी १५ सानि वासरे ॥

विषय—स्वरोदय और योग ।

त्रय निर्माण काल.—

संवत् सोरह सै रचौ, ऊपर अस्सी सात । विष्णु भते वीती वरण, मारग सुदि
तिथि सातमी ॥ इति ॥

संख्या ३०७ ए सनेह लीला, रचयिता—जनमोहन, कागज—देशी, पत्र—७,
आकार—६ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री
राम अघार मिश्र, ग्राम—ग्रामपुर डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सनेह लीला लिप्यते ॥ एक समै ब्रज वास की
सुरति करी हरि राय । निज जन अपनो जानि कै उद्धव लिये बुलाय ॥ १ ॥ कृष्ण वचन
भैसे कही ऊधौ तुम सुनि लेहु । नंद जसोदा आदि है जा ब्रज को सुप देहु ॥ २ ॥

अंत—गोपी अरु ऊधव कथा भूपर परम पुनीत । तीनि लोक चौदह भुवन वंदनी
क शुभ गीत । नासत सकल कलेस औ सुप उपजत मन मोद श्री जुगल चरण मकरद मन
पावत परम विनोद ॥ श्री मुकुंद मन मधुप जहं सकल सत अनुराग । जसुदा प्रेम प्रवाह
में पडे रहत वडु भाग ॥ इति श्री सनेह लीला जन मोहन कृत सम्पूर्ण समाप्तः लिपत
गोपी नाथ बाजपेई निज पठनार्थ संवत् १६४० वैशाख मासे कृष्ण पक्षे दिन बुध वासरे
श्री कृष्ण जी की जै वोलो ॥

विषय—गोपी कृष्ण का प्रेम वर्णन ।

सन्तया ३०७ थी सनेहरीडा, रचयिता—जनमोहन दास, कागज—साधारण, पत्र—१, आकार—१३ X ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेद)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्णी नारायण मिश्र, ग्राम—पूरा श्रीकाहल, डाकघर—माधोगंज, जिला—पठाणगढ़ ।

संख्या ३०७ सी हनुमान जी के कविच, रचयिता—जनमोहन, कागज—दौरी, पत्र—१, आकार—२० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुच्छेद)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, छिपिकाहल—सं० १९३६=१८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सिद्धिदास, ग्राम—बरिबारा, जिला—कन्नौज ।

आदि—श्री महावीरादि वीराय नमः ॥ कृपा कोर कर हेर हर भवन देर उर आन । जन मोहन जन जानि के सुन बिनती हनुमान ॥ छपी के जन मन बरदाव आप सुन करन बिलंबा । जै रसन कपि वीर वीर गजन सुप दंदा ॥ जे जनिन जित सैन सैन निदधर निपात छिय । जे सुपैन सुप दन बंध सिय राम प्राप्त छिय ॥ ज जन मोहन पालने सु प्रमु जस आरुन आरुन करन । जय जयति अंजनी नंद हर महावीर श्रीहर करन ॥

शंत—जे जै जस आठ जे जै जन प्रत पाऊ जै जै बदन बहाऊ जै जै अंजनी के रूपक हो । जै जै राम दास जे जै पालन सुदास जै जै अरुन दास जे जै दास प्रत पाऊ हो ॥ जै जै जग भंग जे जै जीते जीर जंग जै जै सुरज सुरभ जै जै रंगण रसाक हौ । कीजिये न देर हर कीजिये सचेर वर हीजिये मुहेर कृपा । कीजिये कृपाऊ हो ॥ १ ॥ मोहन हमारे हैं न वीर को मरासी नाथ अर वीर को सौ हमें पोसो पीन पूत नू ॥ संवत् १९३६ विक्रम वर्ष श्रेष्ठ शुद्ध रविवार ॥

विषय—हनुमान जी की विनय ॥

संख्या ३०८. उपाधी श्री सखितासखी का बाणमासा, रचयिता—मोहन सुरत कवि कागज—दौरी, पत्र—२, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुच्छेद)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, छिपिकाहल—सं० १९३६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री गणेश्वर तिवारी ग्राम—बिकरिहा, डाकघर—बाबगंज, जिला—सौरापुर ।

श्री गणेशायनमः ॥ जय राधा जी का बरहमासा लिप्यते ॥ सावन विभा गिरधारी सुधी ई सेज अटारी ॥ हो० ॥ सावन में सब सावरी झूझत पिय के संग । हमरो तो बंदकाल बिन करो जात सब भंग ॥ १ ॥ मारो भवन ना भाई नित रंजि बिरहा सताई ॥ मारो में मोहि कंध बिन घर अंगना ना सुहात । जेमे माछी साहद की कर मछ मछ पछितात ॥ २ ॥

शंत—बहुता सखी का बरहमासा मोहन सुरत कृत ॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्रीन उपाव करी मारी आखी इयाम भए कुबरी बघा जाई ॥ शैत मास मोहि मदन सताई । बीसास मास बहुते हुल पाई ॥ जेठ मास तनु तपि घाम ज्यो अंग वीर मोहि पूकी न सुहाई ॥ अनाद मास धन चोरि भाये बहुरा सावन मास बई पुरबाई ॥ मारो अगम रंज मरिई सुई जल न मरिगाई लाऊ लकाई । क्वार मास इयाम मरि भाये कपटिक

दिखना अकाश वराई ॥ अगहन अग्न सनेह श्याम वश को पतिचां हमारी ले जाई ॥ पूस मास मोंहिं शीत सतावत । माघ विना पिय जाड़ न जाई ॥ फागुन फगुवा खेलव केकरे संग विना श्याम अरु विन बलराई । इति ललिता सखी का वारहमासा संपूर्ण ॥ इति श्री श्री राधाजी व ललता सखी का वारहमासा संपूर्ण शुभ मस्तु लिखतं गयादीन त्रिपाठी स्वपठनार्थं संवत् १९१४ वि० जेठ शुक्ल ७ विलरिया मध्ये ॥ श्री श्री श्री श्री श्री राम राम राम राम राम शंकर सदा सहाय करै यह वारामारी उत्तम है राम राम राम ॥

विषय—राधा और ललिता सखी का वारामासा ।

संख्या ३०६, गणेश पुराण, रचयिता—मोतीलाल, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामकरनसिंह, ग्राम—ढकवा, ढाकघर—ओयल, जिला—खीरी ।

आदि—श्री ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ गणेश पुराण लिप्यते ॥ दो० ॥ एक रदन गज वदन के पग वंदौ कर जोरि ॥ कृपा करहु शिव नदन बुद्धि बढ़ै जेहि मोरि ॥ १ ॥ व्यास आदि नर पुंगव । नारद आदि मुनीश । दिनकर ब्रह्मा रोप गुरु सब कह नावौ शीश ॥ २ ॥ चौ० ॥ (राजा युधिष्ठिर उवाच) सुनौ स्वामि तुम मदन गोपाला । सदा करौ संतन प्रति पाला ॥ विपति हमारि विलोकहु स्वामी । कृपासिंधु उर अतर जामी ॥ छल कीन्हो दुर्योधन राजा जीति लीन्ह मम राज्य समाजा ॥ वनहिं निकारि दीन्ह दुख दाई । कानन फिरौ दुसह दुख पाई । तेहिते प्रभु विनवौं करजोरी । केहि विधि पावौं राज्य वहोरी । कृष्ण कहा सुनु वचन नरेशा । तुम हित लागि कहौ उपदेशा । पूजौ गणपति मन चितलाई । तेहि पूजे सब दुप मिटि जाई ॥ विघ्न हरन है जाकर नामा । तेहि पूजे पैहहीं विश्रामा ॥

अत—दोहा ॥ श्री गणपति की कथा यह । संस्कृत मध्य विसाल । यथा बुद्धि भाषा रची जड़मति मोतीलाल ॥ इति श्री गणेश पुराणे संपूर्ण श्री गजाननापणि मस्तु ॥ श्री जो प्रति देया से लिपा गंगाराम पेंतेपुर वाले भाद्रपद मागे शुक्ल पक्षे ऋषि पंचम्याम संवत् १८७५ वि ॥ श्री श्री श्री श्री

विषय—श्री गणेशजी का जन्म और उनके व्रत की कथा । वारह मासों के व्रतों का विधान जो श्री कृष्णजी ने युधिष्ठिर से वर्णन किये थे ।

संख्या ३०९ वी. गणेशपुराण, रचयिता—मोतीलाल, कागज—आधुनिक, पत्र—५६, आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रोसिंह जर्मादार, ग्राम—खानीपुर, ढाकघर—तालाव बवसी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ शमुप श्वैक वंत्त ॥ कपि लोगज करणकः लवोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः धूम्र केतु गणा ध्वक्षो भाल चन्द्रो गजानन द्वादशै तानि नामानि यः पठे ह्येष्टो या टपि विद्या रभे विवाहे च पर वेशे निर्गमे तथा सग्रामे शकटे चैव विघ्नं तद्व न जायते ॥ १ ॥ गज वदन भ चित्त ब्रह्म दंत विनेत्रम् बहु दुर विशेष मृतं

राजं पुराणम् ॥ अमर बरस्य पूर्व्यं एक बरासिरेषां पद्य पठि सुत मीमान विष्णु राजं
वमामि ॥ २ ॥ बरु तुं महाकाय सुर्वं श्वेदि समग्रमम् अविष्णु कुस्ते देव सर्वं कार्ये सु
सर्वदा ॥ ३ ॥

अंत—दोहा ॥ राज नाथक की कथा यह सफस्य विमल विसाल । यथा बुधि माया
रचितबद्धमपि मोतीसाल ॥ नाथ नगर को परगना नब बस्ना शुभ प्राप्त । सुर सरि तदि
के बसत है यह है कवि को प्राप्त ॥ इति श्री गणेश ब्रत कथा समाप्तं शुभ मस्तु संबत १९३२
श्रावण मासे कृष्ण पक्षे शुभ तिथी श्रावण्यां चन्द्रबाधरे ॥ लिपिल्ला दुर्गा मिश्र धरौ
प्रसाद पाठ्यार्थे ॥

संख्या ३०६ सी गणेश पुराण, रचयिता—मोतीसाल, कागज—आधुनिक,
पत्र—१३२, आकार—५२ × ३२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुच्छेद)—
३८० पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६७१ = १८८४ ई०,
प्राप्तिस्थान—राज पुस्तकालय प्रतापगढ़ राज, प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री गणेश पुराण लिप्यत । दाहा । एक रत्न
गजवरन को पगु बर्हा कर आरि । कृपा करहु सिव बंदन बुजौ बहैकैदि मोरि ॥

अंत—शुभ मि० माघ बदि ९ संबत् १६७१ समस्त । इत्याक्षर कुंज
विहारी मिश्र ।

संख्या ३०६ श्री गणेश पुराण, रचयिता—मोतीसाल, कागज—दूसी पीछा,
पत्र—२६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुच्छेद)—३७०, १ रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९७६ = १८८६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृपा
नारायण शुद्ध प्राप्त—मुंशी गंज कटरा बाकधर—मझीहाबाद, ब्रिह्मा—कलकत्ता ।

पुष्पिका—सम्पूर्ण बरस्यम तासा बारी ॥ ३० जनवरी सन् १८८६ ईस्वी ॥

संख्या ३०६ ई गणेशपुराण, रचयिता—मोतीसाल, कागज—दूसी कागज पर,
पत्र—३४, आकार—६ × ४२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुच्छेद)—
३४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रमाकांत शुद्ध, प्राप्त—
पुराण गरीबदास, बाकधर—गढ़वाता, ब्रिह्म—प्रतापगढ़ ।

संख्या ३१० शुद्ध विहान, रचयिता—मूकबंद, कागज—देसी पत्र—१,
आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुच्छेद)—२७ पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ प्राप्तिस्थान—श्री गणेशीब
विहारी प्राप्त—बिकरिहा बाकधर—भानगोब, ब्रिह्मा—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ श्री शुद्ध विहार कावली प्रारम्भ ॥ आधी रात के
बिदे कृष्ण राधे के मजन जाते मरु कर सरोज से हार क पद कपाट खटकाते मने ॥ देर ॥
भीक डडी रूपमन नंदनी कौन मेर हारे जाया । भयम बतावो अथकर मुमको भींद से
अपना ॥ परस्पाव म घने ध्यान तुम जरा न मन घासत लाया ॥ किरो दिवाना दिवाना
हो किती का भरमाया मपुर बचन मुन के राधे के श्री कृष्ण समझाने मज । कर सरोज
से हार के पद कपाट खटकाते मज ॥ १ ॥

अंत—कृष्ण कृष्ण श्री कृष्ण चंद्र ने तीन वेर उच्चार किया । उठि राधिका दिये पट पोलि गले का हार किया ॥ मूलचंद्र परका करोरी जियने ये वीहार किया ॥ भक्त जनों का हरी ने छिन में पार किया ॥ तुरा के सुन जवाव कलगी के होम उड़ जाते भये ॥ कर सरोज से द्वार के पट कपाट खटकाते भये ॥ ४ ॥ इति श्री जुगुल विहार लावनी संपूर्ण समाप्तम् ॥ लिपतं गयादीन तिवारी स्वपटनार्य संवत् १९१४ वि० चंद्र शुक्ला श्री श्री श्री ॥

विषय—कृष्ण जी का राधिका जी के पास रात्रि समय जाना और राधिका जी का न पहिचानना आदि लावनी में वर्णन ॥

संख्या ३११. संतान कल्प लतिका, रचयिता—मुन्ना, कागज—देशी कागज पर, पत्र—१७, आकार—८ ३/४ × ७ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०४, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री रघुराज सिंह, ग्राम—मैंदरा भयान, डाकघर—गिथवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पोथी सन्तान कल्प लतिका प्रारंभः ॥ श्लोक ॥ वंदे गुरुं तं वसरा पात्ता विष्णुः शिवः वृल मयः सप्व ॥ पदं धिरे ण्क धारा च धीरां कुर्वन्ति गो वत्म पदं भवाधिम् ॥१॥ दोहा ॥ गगपति दिन पति, रमापति, गिरिजा पति पद ध्याय । देपि वद के भेद कहु । जग हित कहत उपाय ॥ कविच ॥ देखि तंत्र साररुद जामल वो दत्तात्रय । काम रत्नहु की जल को रचिका है । सुश्रुतादि ग्रंथ वाग्भट अं निबंटु देपि । धन्वन्तरी की कही औपधी जो नारि पत्तिका है ॥ औपधी विधान आनवे की पान पान हुकी । शास्त्र विहित सोइ नहि कीनो निज मत्ति काहे वाल तत्र मत्र ज्योतिष सब ने मत्त करि मुन्ना ने कीनो सन्तान कल्प लतिका है ॥

अंत—पीपरि औ वच्च भगराहुला तीनि ॥ अमलक प्रमान गोली कृष्टि छानिकी नारितु काल बाल गोलियाँ उजुह में धरै ॥ एक एक रोज तीन कभी बीच न परै ॥ अवर जोगराज गुगुल बनवाइ पाइ वाल । कहते हैं लोक मान फिरि आगे सुनो हाला ॥ सूकर को तेल में लस्त लेप करै ॥ रतिराज करै पीतम नाटे टरै उर धरै ॥ एहि भांति जक्त जुक्ति नारी पुरप जो करै ॥ होइहै सुपुत्र निश्चै सुरवाक्य न टरै । इति श्री सतान कल्प लतिका मुन्ना कृते चतुर्थी गुच्छः ॥ दोहा ॥ आगे हम अब कहत हैं । अनिला चौथी नारि । ताके अवगुल दोष सब । सुनिये शैल कुमारि ॥ १ ॥ सजम जो लिय देह को । करत यह भांति । दिवस वाम तन तल्प है । सीत सहे है राति ॥ २ ॥ घाम सीत दिन राति सहि । रति भिनु सारा राति । करत लाय लो गोला उदर । होस तासु एहि भाति ॥ ३ ॥

विषय—सतान होने के उपाय, वध्या-चिकित्सा ।

संख्या ३१२. गुरु महिमा, रचयिता—मुरली, कागज—साधारण, पत्र—३, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२६—१७७२ ई०, प्राप्तस्थान—श्री नागरी प्रचारिणी सभा, जिला—काशी ।

आदि—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ ओंकारा जै जैकारा सब संतन मिलि कीया विचारा ॥ गुरु की महिमा अपरंपारा गुरु वीसभर गुरु परम निधान ॥ गुरु विन बहूँ न

होए कस्यान ॥ गुरु महाराज गुरु दहन के देव ॥ गुरु कामधेनु गुरु कल्प व्रत ॥ गुरु
कितामणि गुरु अक्षय तुरम ॥ गुरु पर से परमेस्वर मीछे ॥ गुरु कंचन मुरत करमीमरे ॥

अंत—गुरु परताप भव सागर तरै । संकर कई सुनो पारबती । गुरु को शोही सो
हरि को शोही, ताको सुप देसो मत कीह ॥ सुप देव्या मुरखी कहे । जाही त्वे कलंक डर
मति डर बधरिबे ॥ श्रीजिये हरि गुरुन को सग, गुरु की महिमा परै अरु गाबै जीमी
संकट बहोर न आवै ॥ गुरु की महिमा अपरंपारा, सिख सनकाधिक गाबै सारा ॥ गुरु की
महिमा बरणी न जाई, श्री सुपदेव मुनी अपने सुप गाई ॥ इति श्री गुरु महिमा संपूर्ण
संवत् १८२९ ।

विषय—गुरु महिमा वर्णन ।

संख्या ३१३ रास पंचाध्यायी, रचयिता—भागरीदास, कागज—देसी, पत्र—५,
आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुपुष्प)—१०५, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, किवि—भागरी, लिपिकार—सं० १८४४, प्राप्तिस्थान—पं० श्रीकृष्ण,
ग्राम—महिगलमाज, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणैसापनमा ॥ अथ रास पंचाध्यायी लिख्यते ॥ शीघ्रा—इन्द्रावन
बंसी बजी मोहे सीनो सोक । बे सीनो मोहे नहीं रहे कौन से कोक ॥ नहो बांस की
बांसुरी है तप श्रीनो करन । अजर मुखा पिप की पिपो हम तरुपत बिन मीन ॥ अरी
कमा कद मुरलिया परत तिहारो पाप ॥ बरै सखी सुन होत सब महा दुखी हम हाय ॥
कड़ी न करिये क्यों नहीं पिय सुहाग को राग । अरी बाबरी बांसुरिया मुह रुपी
मति गात्र ॥

अंत—भागरीया कई कवि कई कवि मति मंद प्रकृत तिनमें भीह बिरास में
कोरि कोरि है रास ॥ श्रीबोका व जात्रु अति अमित बिरहा रैन जाति ॥ ताँदव नृत्य रास
मंदक में डर परि प्यारी आनि । अम अक पौछत कर पंकज सों बीज अंकक पारनि ॥
बीरी देत दनाय बनुन बिनु प्रेम बनुर अमिमात्र ॥ पीहत किसरुप तरुकरहि इयाम
नित्र डर अपर आन । हरि बहम मीजत पद स्वेत आकी सहित इयाम । शीघ्रे गले बाहीं
गति छेत होके मडल में बौकत तत येई मुक रूप कलकी छे । गये विचर मन अमल भये
रीत नलि से फूक सीस सिपिक भई अलक । इत किंकरी सु छुटी उत बनमाळ हूटी
छोका हार कुंडल कपोल छाई शरकें । नागरी दास राधा मोहन माचत देवि भूषी सखी
ग्रम धाम रुगत न पसकै ॥ इति श्री रास पंचाध्यायी समपूर्ण समाप्तः संवत् १८४४
पंच शुद्ध ० सप्तमी श्री राधा कृष्ण की है । बिराया सखी की है ॥

विषय—श्री कृष्ण जी की रास लीला ।

संख्या ३१४ साक्षिहोय, रचयिता—नकुल, कागज—देसी, पत्र—५६ आकार—
११×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपुष्प)—५६०, पूर्ण,
नवीन, पद्य, किवि—भागरी, लिपिकार—सं० १८३१ ॥ १८०४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री
बही सिंह की जमींदार, ग्राम—बायीपुर, बाकबर—ठाठाव बरसी, जिला—
उत्तरप्र ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ जयति पांडव नाथो धर्मनिधानो युधिष्ठिरो नृपति
 भीमाङ्गुलमहदेवान्यदनुचये वाजिगाम्भतत्त्वज्ञाः ॥ १ ॥ दृष्ट्वा सम्यङ्गनकुल कृत कृत्स्न
 शालिहोत्रीयं ॥ द्रुते शास्त्र कृत्वा समासेन ॥ २ ॥ सपक्षा वाजिनः पूर्वं सजाता व्योमचारिनः
 गधर्वेण यथा कर्म छिन्न चित्त समन्विताः ॥ ३ ॥ त दृष्ट्वा जव सपन्ना निच्याध्वो वाह
 चित्तान ॥ शक्र प्रोवाच पाद्वस्यं शालिहोत्रं मुनीश्वर ॥ ४ ॥ दोहा ॥ प्रथम सपक्ष तु
 जो अंबर कीन्टो वास ॥ ब्रह्म धाम सुर धाम जो डोलत फिरें अकाश ॥ ३ ॥ गंधर वरि
 अगते भयो अश्व आकार ॥ टेपि मचीपति तव गये शालि होत्र आगार ॥ ४ ॥ श्लोक
 नास्त्वसाध्य मुनेः किञ्चित् तवात्र भुवनत्रये ॥ तस्मात्कुरु यथाहर्न्ये योग्यामेते महोत्तमा ॥ ५ ॥
 दोहा ॥ शालि होत्र मुनिर्मां कक्षो हो तुम कृपा निधान ॥ अश्व पक्ष छेदन करौ कीजे म
 हित जान ॥ ५ ॥

अंत—चौपाई ॥ उत्तम भूमि जहां अवरैपी । पूरव उत्तर जल पुनि पेपी ॥ शु
 दिन तहां साल वनवाहं । दृढ़ कीजे दस हाथ उचाहं ॥ दोहा ॥ कोठा करि तहं घासुव
 उच्च हाथ हें टेपि । सात दिना गाई वृषभ वाधै तहां विनेपि ॥ ४ ॥ चौपाई जया जोग त
 होम करावै । देह दक्षिणा विप्र पवाधै ॥ ५ ॥ अलंकार_सां भूपित करै । गध धूप तहं व
 विस्तरै ॥ तह प्रवीन रप धनवार । उचम दिन तहं वाधै घोर ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ निक
 शालिहोत्र गृह कीजे । बहु विधि सां तेहि कां धन दीजे ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ अश्वस्यागे प्रलीयं
 हरिद्रया विश्वगं गजा दोपान् । मंगल्यार्थं च कुर्यात्त्वद्रोपैर्किं भूपयेदलकारैः ॥ १० ॥ इति
 श्री नकुल कृते अश्व चिकित्सिते शालि होत्रे अश्व शाला विधानो नाम चतुर्दशः अध्यायः १४
 संवत १९३१ साके १७८६ पाप माने कृत्स्न पक्षे तिर्यां द्वादस्यां १२ चंद्र वासरे लिपत देवी
 समाप्त भई ॥ श्री श्री सीता राम श्री राधाकृष्णाय नः क्रौ शिवाये ॥

विषय—इस शालि होत्र में विविध अश्वों की जाति, लक्षण और चिकित्सा का
 वर्णन है । इसमें निम्न लिखित १४ अध्याय हैं :—(१) अश्व चिकित्सा प्रारम्भ, उत्पत्ति,
 (२) जाति लक्षण, (३) जाति लक्षण_अधूरा है (४) आवर्त (५) भेद (६) भेद
 के लक्षण (७) अश्व वाहन (८) धातु परीक्षा, (९) सिरों मोक्षण, (१०) ऋतु चर्या
 (११), (१२) चिकित्सा पिंड प्रकरण, (१३) क्वाथ विष प्रयोग, (१४) अश्व
 शाला विधान ।

संख्या ३१५. सुखमनी, रचयिता—गुरु नानक, कागज—साधारण, पत्र—६७,
 आकार—५ × ३½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२५, रूप—
 नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री पुरुषोत्तमदास जी रहंस व्यापारी, ग्राम—
 कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—प्रभु कै सिमरनि तीरथ इसनानी । प्रभु के सिमिरन दरगह मानी ॥ प्रभु
 कै सिमरनि होइ सु भला । प्रभु के सिमिरन सुफल फला ॥ से सिमरहि जिन आप
 सिमराये । नानक ताकी लाग उपाये ॥ प्रभु कै सिमरनु सभते ऊंचा । प्रभु के सिमरनि उधरे
 सूचा ॥ प्रभु कै सिमरनि त्रिस्ता बुझै । प्रभु कै सिमरनि सभ किछु सुझै ॥ प्रभु कै सिमरनि
 नाहीं जग त्रास । प्रभु कै सिमरनि पूरन आस ॥

अंत—समोक्त (श्लोक) पूरा प्रभु आराधना पूरा साक्य पाठ । नामक पूरा पाइया पूरे के गुण गाढ ॥ असत वही (अष्टवरी) पूर गुह का सुभ उपदेस । पार ब्रह्म निकट करि पिय ॥ सासि सासि सिमिरहु गौबिंद । मन अंतहि की उठरै बिंद ॥ आस अति आगुनु तरंग । संत अमाकी पूरि मत्त मंग ॥ अयु छेदि बिजली करहु । साथ संगि अगनि तसि सागर तरहु ॥ हरि धन के भरि सेहु संहार । नामक गुह्युरे नमकर ॥ १ ॥ × × × जिस मनि बसै सुनि छाइ प्रीति । तिसु जन आर्षि हरि प्रभु चीत ॥ जनम भरन ताका रूप निहारै । बुरखम देह ततफाल उधारै ॥ निरमक सोभा अहित ताकी बाणी । येहु नाम मन माहि समानी ॥ बूस रोग बिनसे धी भरम । साथ नाम निरमक तातै करम ॥ सम ते अक्ष ताकी सोमा बनी । नामक हृद गुनि नाम सुपमनी ॥

विषय—(१) पृ० १ से ४०—प्रभु सुमिरन का महत्त्व, भगवद्भक्ति की महत्ता, इन्द्रियादि का महत्त्व । भक्ति करने का आदेश । प्रभु का प्रभुत्व, साथ संग महिमा ।

(२) पृ० ४१ से ८०—ब्रह्मज्ञानी के कल्याण, भक्त तथा पवित्र के कल्याण जीवन्मुक्त के कल्याण, प्रभु की आज्ञा प्रकार की रचना का कुछ विवरण, भगवान के एक होने तथा व्यापक होने का कथन, उसके सर्व संचाकक तथा कर्णों बर्णों होने का कथन, प्रभु की शक्ति तथा भक्त के लिये सर्वस्वदान का विधान, संत के निवृत्त आदि का दंड विधान, एक प्रभु की व्यक्त रहने तथा उसके स्मरण का आदेश । हरि के गुण गाणों का महोभाष्य । भगवान और भक्त की एकता का कथन ।

(३) पृ० ८१ से १११—साथ संग में हरि कीर्तनादि करने का विधान, मन में गुह की प्रतीत होने का चक । प्रभु के विगुण तथा निरंकर होने का वर्णन । साथ नाम की महत्ता, सेव्य संबन्ध व्यवहार कथन, प्रभु के आज्ञानुसार लक्ष्मी बाकों की बर्णना । हरि सेवा संबंधी कुछ उपदेश तथा इतिहास करने की आज्ञा और उनके काम, सत्गुरु से निर्मल उपदेश लेन का आदेश ।

(४) पृ० ११२ से ११३:—प्रपंचादि रचयिता स्वयं परम ब्रह्म के ही होने के कारण अपना लैल आप ही देखने इत्यादि के कई वर्णन । ईश्वर से मित्र कुछ भी न होने का कथन । प्रभु के अमर्त्यामी होने का कथन, देह दुर्कर्म होने तथा ईश्वर भजन का उपदेश, प्रभु नाम अपने के कामों का वर्णन । प्रभु की अनेक कलाओं का कथन और उसके आकार तथा इन्द्रियादि रहित होने पर भी सब कार्यों के करने का विधान । मर्त्यों की स्तुति, गुह की नमस्कार, नाम सुमिरण का उपदेश, ब्रह्म की स्तुति, गुण गोबिंद नाम पुनि बाणी के स्मरण का कथन, एक नाम ही के मन में निवास करने पर संपूर्ण रोग, दुःखादि के विनाश होने का कथन ।

संख्या ३१६ पं. अनेकाय, रचयिता—बंदास, कागज—देसी, पत्र—१४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुपटुप)—२००, पूण्य रूप—प्राचीन पद्य, छिपि—जागरी, छिपि ज्ञान—सं० १८२७, प्राप्तिस्थान—विश्वनाथ जी, ग्राम—बैमहरा, जिला—सीरी (बघय) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अनेका अर्थं लिप्यते ॥ टो० जौ प्रभु जोती मय जगत कारन करन अभेव । विघन हरन सय सुप करन नमो नमो हरिदेव ॥ एकै वन्तु अनेक हूँ जगमगात जग धाम । जिमि कचन ते किंकनी कंकन कुंडल नाम ॥ उच्चरि सकत न संस्कृत औ सवहिन अममर्थ । तिन हित नंद सुमति जथा भापि अनेका अर्थ ॥

अंत—रसनाम ॥ रस नव रस रम घृत रम रसर्वा औ रस नीर रम रस की रम प्रेम रस जाके वस बलवीर ॥ सनेह नाम ॥ तेल सनेह सनेह घृत बहुरो प्रेम सनेह सो निज चरनन गिरिधरे नट्टाम कवि येह । जौन अनेका अर्थ को सुनै गुनै नर कोइ । ताहि अनेका अर्थ को पुनि परमारथ होइ ॥ इति श्री अनेका अर्थ समाप्तं मिती आसुन वटी १५ बुधवार सवत १८२७ ॥

विषय—गांनाम, सुरभी, मउ, कलि, आत्मा, धनुर्जय, पत्र, पत्री, वरहि, काम, वाम, भव, कंनाम, पनाम, कल्प, कर, दर, वर, वृष, पतंग, दल, बल, पल, अल, वय, जीव, मान, सार, कलम, नभ, वसु, पट्ट, तुरंग, अत्मज, कबंध, हस, पयोधर, वान, वरुन, गोत्र, तन, बाल, जाल, काल, ताल, जलज, तम, गुन, अवि, घन, वन, पोत, बुध, अनंत, छप, राजिव, लोक, सुक्र, पग, कलाप, ब्रह्म, उदुप, मंद, चारन, स्पंदन, मयी, कौषिक, पुष्कर, अवर, शंवर, कमल, नाग, करन, अज, शिव, विरोचन, बलि, वृक, राजा, कुस, कंबुसुवन, कूट, पर, कुजजम, हरिनी, धात्री, मिवा, रसना, रंभा, माया, इला, जोति, सुमना, इद्रा. निमभजा, विधि, जिह्वा, हस्त, क्रतांत, मित्र, सारग, हरि, ध्रुव, विटप, दान, रस, सनेह, आदि शब्दों के अनेक पर्याय अर्थ हैं ॥

संख्या ३१६ वी अनेकार्थ, रचयिता—नंददास, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९९, प्राप्तिस्थान—श्री शीतला प्रसाद दीक्षित, ग्राम—सीकरी, डाकघर—तंबोर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि-अंत—३१६ ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है:—

कातिक मासे सुक्रु पक्षे तिथौ सत्पस्मोयां बुध वासरे पुस्तक लिखते धनीराम तिवारी गोधवी अस्थान समाप्त सुभ संवत १८९९ वि० ॥

संख्या ३१६ सी. अनेकार्थ, रचयिता—नंददास, कागज—नवीन, पत्र—७, आकार—६ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री वट्टीसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ३१६ डी अनेकार्थ, रचयिता—नंददास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—७ x ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर दूवे साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई ।

संख्या ३१६ ई अनेकार्थ मंत्रो, रचयिता—नंददास, अंगर—देसी, पत्र—१७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुच्छेद)—२१०, रूप—मार्धान, पद्य भीर गद्य, लिपि—भागी, लिपिकार—सं० १८१३ = १७५६ ई०, प्राप्ति स्थान—स्वामी अक्षरारी जी द्वारा बाबू स्मरतप्रसाद खत्रीजी, तहसील—सिर्षीली, जिला—सीतापुर (भवध) ।

आदि—अग्नि सप्त ॥ अग्नि धर्मत्रय कृत कवि पवन धर्मत्रय आह । कृत धर्मत्रय अर्जुनहि जिनके रूप्य सहाह ॥ अर्जुन सप्त ॥ अर्जुन हुन अर्जुन प्रबल अर्जुन कंचन दाह । सहस बाहु अर्जुन भयो अर्जुन पांडव सोह ॥

अंत—अनेकार्थ मंत्रो परी मुनि भर कोह । अर्थ मेह जाँने सकल पुनि परमारध होह । इति श्री अनेकार्थ संपूर्ण संवत् १८१३ भाग शुक्ल तिथी एकादश्याम गुरी ॥ पाठस पोस्तकं पद्य तादृशी लिपिने मया पदि शुभम शुभं वा मम दोषो नदीपते ॥ कति श्रीबा जी चतु कर परा रूप सहत मुजाप । तुलसी लिखिषो कतिन है सह जानत आसान ॥ श्री गंगा दर्श नमः ॥ श्री रामायनम ॥

संख्या ३१६ एफ. अनेकार्थ मंत्रो, रचयिता—नंददास, अंगर—देसी, पत्र—७ आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुच्छेद)—१७६, रूप—मार्धान, पद्य, लिपि—भागी, लिपिकार—सं० १८१३ वि०, प्राप्तिस्थान—बाबू साहिता प्रसाद खत्रीजी, तहसील सिर्षीली, जिला—सीतापुर (भवध) ।

आदि—अत—११९ पृ—के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री अनेक अर्थ संपूर्ण समाप्त मुनिमन्त्र ॥ पौषी राहुम स्पष्ट अवस्वी के पठनार्थ संवत् १८१३ शिवरत शिवसंकर स्वस तुमे बेह-हरिया बासी ॥

संख्या ३१६ श्री अनेकार्थ नाम मात्रा, रचयिता—नंददास, अंगर—देसी पीसा, पत्र—१८, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुच्छेद)—३८८, लिखित, रूप—मार्धान, पद्य लिपि—भागी, लिपिकार—सं० १७७९ = १७२२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जमींदार, ग्राम—साथीपुर, बाक्यर—तासव बहसी, जिला—कलकत्ता ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दाह ॥ सं ममा म पद् परम शुभ किस्न कमक दृक धिन । अग करान करमार्जक गुरुस जाओ धीन ॥ कचरि सकत नहि संसकृत जानो चाहत नाम । तिब सगरी नंद मुमति जया राष्यो नामदि दाम ॥ २ ॥ गुणित नाम भादि को जमर कौक के भाये । भाव मर्ती के मान मिरु अथ तब बाहू ॥ ३ ॥

अंत—मन्त्रनाम हरिको अः पिमु दिम और न प्याव । जाओ पद् मगवानको मिकिदि तु काविधि माम ॥ ११९ ॥ इति नंद अण अनेकार्थ ॥ समाप्तः मन्त्र १७७९ ॥ पत्र पति नाम ईसापूर्व प्रति पदा तिथी × × सक अमि गिरि विधानि वृजा मणौ तस्नात पुस्तर्ध ॥

संख्या ३१६ एच नाममात्रा, रचयिता—नंददास, अंगर—अनुनिद, पत्र—

६२, आकार—६३ × ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वद्रीसिंह जर्मीदार, ग्राम—खानीपुर, डारुघर—तालाब बकनी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाम माला लिप्यते ॥ दोहा ॥ तत्र मामि पद परम गुरु कृष्ण कमल दल पेन । जग कारण करुणा रवन गोकुल जाको अँन ॥ १ ॥ उचरि सकत नहि शंसकृत जानो चाहत नाम । तिन लागि नन्द सुमति जधा रच्यो नाम की दाम ॥ २ ॥ गुथित नाना भाति को अपर कोश के भाय ॥ मान वनी के मान मिले अर्थ सब आय ॥ ३ ॥

अंत—जुगुल नाम ॥ जमल जुगुल जग हृंद टोक भै मिन्युन द्रय वीय । जुगुल किशोर वसो सदा नंद दास के होय ॥ २५४ ॥ इति श्री नन्द दाम कृत नाम माला सम्पूर्णं सुभ भूयात् ॥ मार्ग शीर्ष माने कृष्ण पक्षे तिथौ त्रयो दस्या गुरौ दिने पोथी लिखा चद्री सुध पाठनार्थं वरैली के मौजे खानीपुर में ॥ इति श्री नद दास कृत नाम माला सम्पूर्णम् ॥ मार्ग शीर्ष हरि त्रयोदश गुरु रस^१ राम^२ गृह^३ इन्दु^४ । तामें पोथी शुभ भई नददास कविन्द ॥ इति

विषय—नामों के अनेक अर्थ ।

संख्या ३१६ श्राई. राजनीति, रचयिता—नंददाम, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—२७४, आकार—८३ × ६३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा लाहौरैरी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा । सिद्धि साधु के काज में सो हरु करै कृपाल । गग फेनकी लोक सम शिव ससिकला विशाल । सुत हित हित उपदेश यह देत वचन रचनानि । देवन की वानी लई राजनीति पहिचानि । अजर अमर की भाति है विद्या धनहि चढ़ाठ । मौचु मनो चोटी गहै देत विलंब न लाउ ॥ विद्या भन सब धननि मय सत कहत सर दारु । मोल बढ़ी नहि घटत घर धँपे किए न मारु । विद्या देति विनीति कै विनै बढ़ाई देत । बढ़े भए धनु पाहए दान भोग सुप हेत । सख शास्त्र विद्या दुविध धनु अरु भर्म न जाइ । विरधाई पहिली हसी दूजो मदा सोहाइ ॥

अंत—मंत्री मंत्र सदा मन धरै । महाराज सुप अनुभव करै । दोहा । जौलौ गौरि गिरीस की बढ़त धार अति नेह । जौलौ लछि मुरारि उर लगी तडित जौलेह । जौलौं सुर धर कनक गिरि फिरि सूर्य औ चंद्र । तौलौ नारायन कथा सुनो सुजान अनद । इति श्री हितोपदेशे श्री नंद दास कृत चतुर्थ कथा समाप्त । सुभ मस्तु ॥ संवत १९३३ साके १७६८ मित्ती पूस कृष्ण पक्षे ॥ ११ ॥ सम्वार लिपित जो प्रति देपा सो लिपा मम दोप न देवते । श्री राम राम राम श्री राम दूस हनिवताय नम । श्री रामचद्रा राम राम राम ।

विषय—राज नीति अर्थात् हितोपदेश की कथाएं पद्य में ।

सूक्त्या ३१६ जे राजनीति, रचयिता—बंदास, कागज—देवी प्राचीन, पत्र—
१८६, आकार—१४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुच्छेद)—२००५,
खंडित, रूप—प्राचीन, पत्र, क्विपि—मगरी, प्राप्तिस्थान—महाराजा काहमेरी प्रतापगढ़,
त्रिहा—प्रतापगढ़ (जयप) ।

आदि—३१६ आई के समान ।

अंत—तब इसल सुनि भापी ऐसी । ऐलो धरी आगीकी कैसी । कैसी । कूरम सुनि
माप्यो मय नीत । मिय कहत बह बनत म नीत । होहा । सुली अम साची सदा जरु
तछन मति जीन । भाबी भाप्ये दीं गहें र्दीं पानी कोझोन । सीपाई ॥ इतिनि कही कथा
पह कैसी । कूरमक

विषय—राजनीति—

सूक्त्या ३१७. सत्यनारायण कथा, रचयिता—नरकिसोर (सत्यनारायणपुरी), कागज—
देवी, पत्र—८, आकार—१५ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुच्छेद)—
४४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र, क्विपि—मगरी, रचनाकाळ—सं० १९०५ = १८४८ ई०
द्विपिच्छक—सं० १९०० = १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—सं० सिवहुसुरे, ग्राम—वरनापुर,
बाकबर—बिसवां, त्रिहा—सीतापुर (जयप) ।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री राजा कूर्वा वमः जय श्री सत्यनारायण मत कथा
लिप्यते ॥ श्री सत्यनारायण पूजा ॥ विधि ॥ अती संकटती पीरमास्थां धैर्यादृश्यां पस्मिन्क
स्मिन्मिथैवा सार्यं काले स्थायं कृत्वा पूजा स्नान भागत्य जासन उपविश्याचम्य पश्चिम
धारणं कृत्वा गणेशायै नमः कथं कथं स्थापित गणपत्यादि पंच लोक पास देवता सूर्यादि
मंत्रमह देवतानां प्रतिष्ठा वाहन कृत्वा संकल्पकुपाद् ।

अंत—ओ ॥ प्रेम भारि धैर्यनि मन्यो विमल हर्ष अति हीन ॥ पुरुकित तन रोमा-
वती साधु इंदबत कीन ॥ श्री ॥ भोजन किन्नन ममकि कराये । मंभी बंधु स्वजाति
त्रिमापे ॥ सुनि अपने सब गजनि समेत् । पायो हरि प्रसाद अति हेत् ॥ बन पुत्रादिक द्वे
सठ्ठपी ॥ करि या लोक सर्व सुप मुच्छी ॥ अंत गयो पारायण भामा । साधु सुगति पाई
अभिरामा ॥ या विधि से जो भक्ति सहित मय । करे सत्य नारायण जपारन ॥ लई काम
सो सवे सदाहीं । करे चितवन को मन माहीं । जयवा यह इतिहास पुनीता । सुनि जो
कोक भक्ति सहरीता ॥ सोक होइ विद्युत को प्रियतर । काम भक्ति पाये बांधित बर इति श्री
इतिहास सप्तम्य श्री सत्यनारायणोपाख्याने साधु चरित्र वर्णनो नाम अनुसंध्याय ॥ ४ ॥
हो० । सत्यनारायण श्री कृपा नरकिसोर मुहाम आपा करि बरन कथा पुरी सत्यमय भास ॥
विधा सुनि न बरु कइ कविता गुण सो हीन । सुप जन होप म काहमे जे ॥ हरि चरित प्रवीना
वर्ष पंच उधीस शत दिन बाचन जवतार । सत्यनारायण मत कथा पूर्ण मई सुमझर इति
श्री सत्यनारायण मत कथा संपूर्णम् ॥ संपत् १९०० आबन कृत्न ६ मंगळ ॥ राम राम
राम राम राम ॥

विषय—सत्यनारायण मत कथा ।

संख्या ३१८. पनघट की रगत लगड़ी, रचयिता—नंदलाल, कागज—देशी, पत्र—
२, आकार—४ x ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, पूर्ण,
रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्रासिस्थान—
लाला रामभरोमे, ग्राम—एटकी रोडा, ढाकुर—चमयानी, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पनघट की रंगत लगड़ी लिखते ॥ चल झट
पटरी वशी वटरी कृष्ण खड़े पन घट री ॥ नागर नटरी वजायें वंदो आय जमुना तटरी ॥
देर ॥ शिर धर वटरी ॥ ह्याग कपट री संग हो झटरी तज हटरी ॥ प्रगटे घटरी ॥ विराजे
जो जीवन के घट घटरी ॥ चलो निकट री ॥ त्वरित सटकरी मीम मुकुट पीले पटरी ॥ लिये
हाथ लकुटरी दरस से सर्व कटेंगे मंकट री ॥ तज एट पटरी चल झट पटरी मान कही मेरी
सटरी ॥ नगर नटरी ॥ १ ॥

अंत—मेरे घटरी ॥ विविध मुकुट री रामचंद्र पटरी कथं ग्याल गत अट पटरी ॥
भागे झटरी सखी सट देखि अपने पे पट री ॥ नद लाल कई सुन गट चरं ना रहें निकट
फड़ में वटरी ॥ नागर० ॥ इति श्री पनघट की लगड़ी रंगत संपूर्ण समाप्तः लिखतं शिव
चक्रम ठाकुर जै गंज के आश्विन द्वितीया शुक्ल पक्ष संवत् १९३६ वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण जी की पनघट लीला ।

संख्या ३१६. राग प्रबोध, रचयिता—नंदलाल (मलीहाबाद), कागज—देशी,
पत्र—५२, आकार—९ x ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—
६१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४४ = १७८७ ई०,
लिपिकाल—सं० १८६५ = १८०८ ई०, प्रासिस्थान—महंत जनार्दन दास रामशाला मलीहा
बाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राग प्रबोध लिखते ॥ सुभिरत जाको नाम होत
सुलभ मंगल सकल । गणनायक गुणधाम वरदायक कीजै कृपा ॥ १ ॥ वंदौ पद जल
जात, कवि मन अलि गन वसत जह । करहु अनुग्रह मात, सारद गुण दायक विसद ॥ २ ॥
गुरु पद कमल अनूप रापि सीस वदन करौ । विमल ज्ञान सुप रूप, प्रगटत उर जाकी
कृपा ॥ ३ ॥ गुरु प्रसाद ते ग्यान होति भक्ति हरिहर सुपद । नासत मद अभिमान मोहसूल
सत्ताप प्रद ॥ ४ ॥

अंत—अथ परंपरा वर्णन ॥ रागार्णव की रीति सों भाव विनोदहिं पोपि ॥ राग
दर्पन संगीत औ मान कौतूहल देपि ॥ ६५ ॥ इन अथन को लै मत्तो वरन्थो राग प्रबोध ॥
जहां चूक सो छमा करि बुध जन लेहे सोधि ॥ ६६ ॥ राधावर अनुचर सदा मलिहाबाद
निवास ॥ उपाध्याय नद लाल यह कीन्ह यो अथ प्रकास ॥ ६७ ॥ सत अष्टादश जानिये
पुनि चालिस औ चारि ॥ विक्रम मान नरस के सवत लेहु विचारि ॥ ६८ ॥ अगहन मास
पुनीति अति शुक्ल पक्ष श्रृगुवार ॥ सांसाराम वेवाह तिथि भयो अंतर ॥ ६९ ॥ इति
श्री नंद लाल कृते संगीत विद्याया राग प्रबोध समाप्तम् शुभ मस्तु ॥ दोहा ॥ एक सहस्र
औ अष्ट सत पैसठि सबतु जानि । फाल्गुन शुक्ल एकादशी रविवासर सम भातु ॥ ७० ॥
भाषा यह कृत नदलाल कृत मलिहाबाद निवास राग प्रबोध हितमो लिप्यो दीक्षित ठाकुर

दास ॥ ७१ ॥ संवत् १८६५ ॥ साके १०३० फास्युन सुदी ११ रविवासरौ ॥ छन्द संख्या ॥
 दोहा ॥ ३७१ ॥ कवित्त ॥ १२ ॥ छन्द ॥ ३३ ॥ कुडलियां ॥ ६ ॥ सर्वे ॥
 ॥ ४२२ ॥ इति ॥

विषय—यह पुस्तक राग रागनी के संबन्ध में लिखी गई है इसमें ६ राग व ३६ रागनी का वर्णन है ।

संख्या ३२० नारायण कृत पद्य संग्रह, रचयिता—नारायणदास, अग्रज—देसी, पद्य—२७, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुपुष्प)—३१० संवित्त, रूप—मधीम, पद्य, कवि—नागरी, लिपिकार—सं० १८९६ = १८९९ ई०, प्राप्तिस्थान—नारायण बाबा, मुहता—हिंदोलाने का नाका, आकार—कलमक, त्रिका—कलमक, (अक्षर) ।

आदि—राग बेमल ॥ ए है मुख चंद चबोरी मोरे बचवा ॥ पकड़ न लागे पकक विन हले भूखि अंगन गये पकड़ु खीना ॥ अर्धरात मिठिये को मिथि विन धिस मिठि मानो क्यहुं मिठिया ॥ नारायण रस की यह वार्ते ॥ रसिक बिना कोऊ समुधि सके ना ॥ सखी शबाबर कैसा सखीका, देखोरी गुह्यां नजर नहि कागी कैसा सुखा सिर खीरा छबीका । बारि करि जळ पिबो मोरी सबनी मत देखो भनि भयन रगीका ॥ नारायण मरि छेहु बडीयां अंगुरिन करि बज काट सुटीका ॥

अंत—(राग अष्टा काकिगदा) कोको मोरो गीरु भाही गारी में सुनाऊं गी ॥ और व के बोके कहुं मोते न करदो जवहीं अनुमति पे पकरि छे जाऊगी ॥ पहिले ही सों अपनी वडाई कदा करी ये देखीरौ ती कैसे तुम्हे भाव नचाऊंगी ॥ जो तुमै सुयो न वनाऊं नारायण ॥ ती मै निज बाप की न आज से कहाऊंगी ॥ इति श्री नारायण कृत सम्य संपूर्ण मिठि बैठ बही अनामस्था संवत् १८९६ तिथी राज कुमार बैसवार बाछे मे ॥

विषय—राजा कृष्ण के पद्य ।

संख्या ३२१ ए. राजनीति भाषा (वाचस्प नीति), रचयिता—नारायण अग्रज—देसी, पद्य—४४, आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुपुष्प)—३००, पूर्ण रूप—मधीम पद्य कवि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल सिधारी, ग्राम—मिथिल, आकार—मिथिल, त्रिका—सीतापुर (अक्षर) ।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ जो जय राज नीति शास्त्र भाषा लिप्यते ॥ जें प्रभवत हीं श्री विशु को जो त्रिकाऊ को राई । जहा और सरस्वती होइ सहाई ॥ दोहा ॥ बहुत शास्त्र अबछोकि के सुंदर बचन निहार । राज नीति सम्य को बरपन करो बिचार ॥ छयं छयं ॥ जो इह शास्त्र पई सो नर चानुरता पावै । जो यह शास्त्र पई पई धर्म उपदेश दारवै । जा यह शास्त्र पई सो बिना कथा अनुकरणा ॥ जाने शुभ अशुभ करना रहना नद करना ॥ बहि माहिं बुध की हृद है बहु शास्त्र भाषा करो । सर्वग्य होइ नर जो पई रतन बचन पारो परी ॥ तज कुपुत्र कुमारो तजो कुमित्र कुदेश । तजो कुमाज कुमंत्र तज इह सांघी उपदेश । पुत कुपुत्र कुमार तिय मित्र कुमित्र कुदेश । भूप कुभूप कुमंत्रता ये पद महा कसेया ।

अत—॥ छट ॥ वाणी वर्णा मन्मथ एक चदन ब्राह्मण चंद विवेक । अथ मद्ग
क्षेत्र एक जात ज्ञाने ज्ञान हरि जन हरि वान ॥ दोहरा ॥ शास्त्र सकल विचारि कै मथ काडी
यह साग नारायण भजिये मदा करिये पर टपकार गुरु गोविंद के मभा में लेपकार्यं सुज्ञान
चानक की भाषा की दूक निर्मं नपति माम । इति श्री वृद्ध चाणक्य नीति शास्त्रे भाषायां
पडमो ध्याय । सपूर्णम् ममाप्तम् शुभम् ॥ १६ ॥

विषय—चाणक्य की नीति ।

संख्या ३२१ वी. राजनीति शास्त्र, रचयिता—नागयण, कागज—देशी, पत्र—
४४, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०, पूर्ण,
रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री मीतारामसिंह, ग्राम—महाराजनगर, डाकघर—भंगलगाज, जिला—मीतापुर (अवध) ।
आदि-अत—३२१ प के समान ।

पुष्पिका दृम प्रकार है ।—

श्री वृद्ध चानक राज नीति शास्त्रे भाषायां पोटमोध्याय. सपूर्णम् ममाप्तम् शुभम्
लिपन रामवली कार्तिक सुदी ११ दशमी सवत् १९२३ वि० ।

संख्या ३२२ प. हितोपदेश, रचयिता—नारायणभट्ट, कागज—देशी, पत्र—२३०,
आकार—८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०७०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८१८ वि०, प्राप्तिस्थान—आनद
भवन पुस्तकालय, डाकघर—विस्वा, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ हितउपदेश लिप्यते ॥ दो० ॥ मिद्धि साउ के
काज को सो हर करै कृपाल ॥ गग फेन की लीक सी सिर समि कला विमाल । सुनु हित
हित उपदेश यह देत वचन रचनानि । देवन की वानी लई राजनीति पहिचानि ॥ अजर
अमर की भाति त्यों विद्या धनहिं वदाय । मीचु मनो झोटी गहे देत विलंब न लाव ।
विद्या धन सब धनन ते संत कहत सरदार । मोल बडो नाहीं बटत दिन दिन होत उदार ॥

अत—राजपुत्र बोले जियजानी । विस्न सर्म को आदर मानी । द्विज बरजो राजन
को चही । सोई कया आपु यह कही । जो भा जन्म और अवतारा । सुनिये राज अंग
व्योहारा । एक बहुरि फिरि अब भल भयक । सुप समूह पायो दुप गयह । विस्न सर्म
तव देत अमीसी । संधिकरी सुमधरी अमीसी । विपति दूरि माघन की जाई । दातन
कीरति सदा सुहाई । नीति नई नारी लौ जगै । जुवन करै मित्र सुप लगे ॥ मंत्री मंत्र
सदामन धरै । महाराज सुप आपुहिं करै ॥ दो० ॥ जो तगि गौरि गिरीस को वदत जात
नित नेह । जौं लगी रिच्छ गंधर्व है जय लगी धरती मेंह ॥ जौं लौं सुर गुर गगन है मुनि
सूरज और चढ़ । तौ लौं नारायन कया सुनै स्वजन आनद इति श्री भट्टनारायन विरचिते
हित उपदेश समाप्तं सवत् १८१८ दमखत पान अली पठान के ।

विषय—राजनीति ।

संख्या ३२२ वी. हितोपदेश, रचयिता—नारायण, कागज—देशी, पत्र—११२,
आकार—१२ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८००, पूर्ण,

रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—मागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८८५ ई०, प्राप्तिस्थान—
संस्कृत प्रमाद अक्षरस्थी, ग्राम—कोटरा, ढाकपुर—कोटरा, तहसील बिसर्वा, जिला—
सीतापुर (अजय) ।

आदि—अंत—३२२ ० के समान ।

पुष्पिका—इति श्री नारायण विरचित द्वितापदेम सं संधि वर्यं चतुर्थमो अध्याय
श्री संवत् १९३२ आषाढ मास कृष्ण पक्षे मास वामरे तीज्ज्या अक्षय पक्षमें समूर्त्त ।

संख्या ३२० सी द्वितीयादिस, रचयिता—नारायण, कागज—द्वैती, पत्र—१२६,
आकार—७ X ४ १/२ इंच, पन्थि (प्रति पृष्ठ)—१३ परिमाण (अनुच्छेद)—२४५०,
बंधित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी, लिपिकाल—सं० १८८९ = १८२६ ई०,
प्राप्तिस्थान—श्री ब्रजमोहन काल साहित्य, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—३२२ ० के समान ।

अंत—श्री पायी संधी कथा संघ्ट द्यमं मस्तु म मेन श्रीरुद्र मुहूर्त्त १४ संबंध १८८३
वद् समीचर स्वीकृ प्रति प्रमथ स्वीकृ मम इत्यं न श्री श्री । दाहा । जैमी प्रती आगे इती तीसी
कई कठारी ॥

संख्या ३२३ विंगल छंद, रचयिता—नारायणदास, कागज—द्वैती, पत्र—७,
आकार—१२ X ६ इंच, पन्थि (प्रति पृष्ठ)—२६ परिमाण (अनुच्छेद)—२६९, बंधित,
रूप—शीर्षे शीर्षे, पद्य, लिपि—मागरी, लिपिकाल—सं० १८४५, प्राप्तिस्थान—सिवातन
पादे, ग्राम—रामनगर ढाकपुर—मिथिल, जिला—सीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री प्रथम विंगल पीगल नारायण दास कृत छंद
तिप्यने ॥ दाहा ॥ श्रीमन्त्र चारो भक्त रामत श्रीवरो विचारि । कचित आदि है शोत्रिये येन
शोत्रिये चारि ॥ छन्द के लछन गन जाने का उदाहरन ॥ मग तीनी गुण होदि तीन छन्दु से
गन गन दे । मगन आदी गुण होदी आदी रूपु मगन बनेणे ॥ जगन मध्य गुण होदी अंत छन्दु
तगन बपानी ॥ कही तेज श्री श्री चारी मुम । मगन इ गन मगनु गन । गन तीनी परन
चारिद पर मुम जगन गन सगन तगन ॥ २

अंत—मुमग छंद का लछन ॥ दाहा ॥ मुमग मंत्र चाळिस इम तापर विरति
रति विशेष । मुमग छंद छेदि कहत है विंगल मति कबरेपि उदाहरन । अर परत इतरप्य
मुन रामाय्य बक श्रुति मिथि इष्यि मतेग रजेन पर मुंछ कुंभर श्रीवादि गुण मुनि चतु
दंभर मार्भत रय च्छ पाहरान वर चात्रि पद रेनु उठी मूर कपत ॥ मट पर ककके सपर
पय्य दिग । जल सपरतः चरी सेप कनी कमाइ कापंत ॥ बयंत तिल क । अयुन गति को
लछन ॥ शो० ॥ तगन जगन अर गुण मो बगंत निवछादि गनन वंन गुण चरन प्रति कहत
अयुन गति सादि ॥ उदाहरन ॥ गोविंद नाम मनु मूरुन म् मुकुंद आनंद कंद अग बंदुन
त्रिय मंद ॥ सर्वग्य ईम सरजागन मोद कंठा प्रहादि कौट परजेन मुक्तिम्य भर्ता ॥ अत्र
गति के लछन ॥ उदाहरन ॥ रायव गोविंद जी ० फलन का सग तत्रिये निव निव मंगति
करिण । मब मब मिमुदि तरिये (अगे पृष्ठ नही है) ।

विषय—छंद बनावे के नियम ।

संख्या ३२४ ए. सुदामा चरित्र, रचयिता—नरोत्तम कवि, कागज—देशी, पत्र—
१६, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०८,
पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७० = १८१३ ई०,
प्राप्तिस्थान—श्री गोविंदलाल दूबे, ग्राम—निहालपुर, टाकघर—नारायणदास खेड़ा,
जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुदामा चरित्र लिप्यते ॥ दो० । श्री गणेश
सुमिरन करौं उपजे बुद्धि प्रकास । सो चरित्र वरनन करूं जाते दारिद्र नाम ॥ श्री कृष्ण
मित्र के जन्म को ताको वर्णन कीन्ह ॥ सुप सपति माया मिले उपदेश जु दीन ॥ ज्यों
गंगा जल पान ते पावत बुद्धि निर्वाण । त्यों सुदर सुप वात ते मूढ़ होत बुद्धिवान ॥ विप्र
सुदामा वसत है सदा आपने धाम । भिच्छा करि भोजन करें हटै जपै हरि नाम ॥ तानी
घरनी पतिव्रता वाहे वेद की रीति सुजल सुशील सुबुद्धि अति पति सेवा सो प्रीति ॥

अंत—दो० । उठे पहिर अब रचित सिंघासन पर आय । बैठे प्रभुता दिव्ये कै भर
पूर रह्यो लजाय ॥ कै तौ वो ओषधी सी छानहु ताके तौ कचन के मव धाम सुहावत ॥ कै
पग को पनही न जुरे कै लिये गजहु ठाढ़े महावत ॥ कै जुरतो नाह कौ वो समा के अमेना
असीसम अन्न लड़ावत । या विधि रक विरक भयो द्वज राज प्रताप सदा सुप गावत ॥
दो० ॥ धन्य धन्य जटु वंस मणि दीनन पै अनुकुल । धन्य धन्य सुदामा सहित तिय
कहि वरपहिं सो फूल ॥ इति श्री सुदामा चरित्र नरोत्तम कवि कृत सपूर्णम् सवत १८७०
पोष कृष्ण १२ द्वादसी ।

विषय—सुदामा की कृष्ण से भेंट ॥

संख्या ३२४ बी. सुदामा चरित्र, रचयिता—नरोत्तम दास, कागज—साधारण,
पत्र—११, आकार—८½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—
२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९२ = १८३५ ई०,
प्राप्तिस्थान—श्री भगीरथ प्रसाद (उस्का), टाकघर—कौधौरा, जिला—प्रतापगढ़
(अवध) ।

आदि—३२४ ए के समान ।

अंत—विप्र सुदामा की कथा कहै सुनै चित लाई । ताते श्री यदुनाथ जू, सब दिन
होत सहाई ॥ इति श्री राम चरित्र मान से सकल कलि कलुप विनास ने विमल वैराग्य
इति श्री सुदामा चरित्र सुभ मस्तु संवत १८९२ ॥

संख्या ३२४ सी. सुदामा चरित्र, रचयिता—नरोत्तमदास, कागज—देशी, पत्र—
२०, आकार—६ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८८, खडित । रूप—प्राचीन, पद्य,
लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—उमाशकर दूबे साहित्यान्वेषक, हरदोई ।

आदि—दोहा ॥ यह सुनि कै उठि साध्वी गई येक त्रिय पाश ॥ सेर पाउ कुचावर
लै आई सहित उलाश । सिद्धि करी गनपति सुमिरि त्रांघि दुपटिया पूट मांगति पाति
चले गये सो मारग वाली बूट ।

अत—दो० ॥ घोरत सकुचत गांठि को हेरत प्रयु तेहि भ्येर छोरति पर जीरत
कटेक विपुर परे तेहि ओर । एक सूखी हरि भरि सई बई सो मुपमें बरि । सबत बबाध
करने सो सो अनुराजन विपुरारि ॥

संख्या ३२५ रंगभूमि, रचयिता—नाथकवि, कगज—साधारण, पत्र—५६,
आकर—३३ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पद्य)—१०, परिमाण (अनुच्छेद)—१३३०, पूर्ण,
रूप—शीर्ष शीर्ष, पद्य, छिपि—बागरी, रचनाकाळ—सं० १८६७ = १८१० ई०, छिपि
काळ—सं० १८६८ = १८११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनिवास तिबारी, ग्राम—परिपार्षी,
काकर—परिपार्षी, जिला—प्रतापगढ़ (जबख) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ एक इदन करिवर बदन धाळ काळ सिंदूर, विघन
हरण संकट हरण सिधि बुधि दैत अरु ॥ १ ॥ ऐसे गणपति को सुमिरि छुनि सारदा पौढ,
रंग भूमि बरनन करी सुमिरि सिधा रघुराज ॥ २ ॥ शिव को व्याह प्रनाम करि सिधा
चरन सिर नाथ, सेम सुरेस विनेस विधि सब निधि होहु सहज ॥ ३ ॥

अंत—सोरटा—ओ करि किय बिहार रंग भवनि की कथा की । तेन्हु सन सिधा
चार, रखिई समान हरपि हिय ॥ ८ ॥ दोहा—जनक मंदनी जनकपुर, जबते प्रगटी भाप ।
कजि सिधि सुख सपदा, रही जबक गृह छय ॥ ९ ॥ रंग नाम रंग भूमि यह, राम
बानुकी व्याह । ओ गावहि मन मुवित अति, तिन्हु कहीं सदा उछाह ॥ १० ॥ तुळसी
हुत की कथा यह, ताको उछाहा कीन । मन, बुधि बित इंकर की, रघुपति भयसु दीन ॥ ११ ॥

× × × ×

इति श्री में का करी, नहि करिने के बोग । कविता छंद प्रबंध विनु, हँसी करिने
कोय ॥ १३ ॥ ताते भाय बिपारि कै, अपनी छुनि की कीन्हु । रीसत राम सगेह सों, यह
निहने करि कीन्हु ॥ १७ ॥

इति श्री रंग भूमि सीताधम बिबाह उछाह परि पूर्ण मस्तु, श्री रामचन्द्राय नमः ॥
संख्या १८६८ ॥

विषय—राम चरितमावस के अनुसार रंगभूमि की कथा ।

संख्या ३२६. रामायणमेव, रचयिता—नाथ गुकाम (रामपुर), कगज—
साधारण पत्र—३२१, आकर—१३३ × २ इंच पंक्ति (प्रति पद्य)—२२, परिमाण
(अनुच्छेद)—७०००, पूर्ण, रूप—मधीन, पद्य, छिपि—बागरी, रचनाकाळ—सं० १८
६८ = १७०७ ई०, छिपिकाळ—सं० १८९५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा जयधेश
सिंह, रमेरा काइमेरी, काकाकांवर, जिला—प्रतापगढ़ (जबख) ।

आदि—श्री मते रामनुजाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामचन्द्राय नमः ॥
श्री हनुमते नमः ॥ श्री सरस्वतीय नमः ॥ श्री रामायणमेव विषयते ॥ इकोक ॥ सानोही
देवकीकोत्यक दखि दधि मार्गजो ज्वास पानि कछागो तुलीर बाराद्वयतमधि गितोमानु
जास्वत् किरियम् । सीता मामिन्न पार्श्वसरसि इद्वसं देवदेवं नमामि ॥ १ ॥ × ×
प्यात्वा मूर्ध्नि मुहुरन्न पित्रामासं विसाक धिया । स्वप्यर्त्वं तुरस्वसं गल तके सरकल

कूट द्युतिम् ॥ चंचच्चंद्र मरीचिवीचि विलसद्भाल जगत्पालिकं । भाषामिर्वितनोमि
 रामचरितं रामाश्वमेधा दहम् ॥ ५ ॥ दोहा.—चंद्रौ गणपति परम छवि, द्रायक
 बुधि अभिराम । विघ्न विनासन द्युति करण, सरण सुमंगल धाम ॥ सुंदर वदन मदन मट
 गंजन । तासु प्रताप ताप त्रय भंजन ॥ भाल चट सिद्धर विराजै । तीनि नयन पकज छवि
 छाजै ॥ वक्र तुंड कुडलि तसु श्रुंटा । पाहु रदन नग वलित रुददा ॥ अलि घमंड मडित
 कल गाना । भ्राजत मद सुगंध विष नाना ॥ बाहु दंड ऊदंड विराजै । विघ्न खंड कर खंड
 सुराजै ॥ दुष्ट वि झुंड अमुंडन करही । भारतद शत ओजन धरही ॥ गिरिजा नंद अनंद कंद
 वर । भजे दूंद पद पदुम फंड हर ॥ प्रथम भगला चरन जासु करि । ध्याये संतत होत मोद
 मरि ॥ दोहा.—चंद्रौ गुरु पद वनज वर, तासु पाँसु धरि शीश हेतु ज्ञान सो अजि चप,
 दिव्य दृष्टि कर नीश ॥

अंत—सोरठाः—जो यह कथा सनेम, कहै सदा सादर सुनै । सिया राम पद
 प्रेम, होहि जगत भगल सदन ॥ दोहाः—जम प्रताप भव सिंधु में, विरच्यो सेन नवीन ।
 सोई कृपा करि यह कथा, भाषा पूरन कीन ॥ इति श्री मद्राम चंद्र पादार विंद दूंद मकरंद
 मधुव्रत श्री तृपाठी नाथ गुलाम भाषा प्रबध रामश्वमेध विरचितायां अश्वमेधि समाप्त नाम
 अत्र पठितमो अध्यायः ॥ ६८ ॥ सुभंभूयात् । मामाना मामोत्तमे मासे वैमाप मामे कृष्ण
 पक्षे अमावस्यां बुधवाशरे लिषा रामदयाल हनुमान गढ़ी मध्ये संवत् १९२५ ॥ पोथी श्री
 राज्य हनुमत सिंह बहादुर जीव की ।

विषय—रामाश्वमेध—कथा प्रयकार का निवास स्थान तथा वंश परिचयः—
 सूत्रे तीर्थराज प्रधाना । तामह मानिक पुर जग जाना ॥ वैरीसाल महीप विराजै । राज्य
 विधौ न नीति नय आजै ॥ परम धर्म में जासु प्रकासू । विप्र चरण रत निश्चै जासू ॥
 सोरठाः—बांधव पति अभिराम नृपति राम जग में विदित ॥ मगरौरा वरगाम दिथौ
 त्रिपाठिन पूजिकै । तहाँ त्रिपाठी वसत वसु विद्या धर्म उदार । मम पुरवा संवध वस वमे
 भानि सरवार ॥ तहँ ते आइ भवानी शंकर । कीन्हों सोई राम पुर में घर ॥ तिनके जुगल
 कुमार सत्य व्रत । बालकृष्ण जेठे रघुपति रत ॥ तासु कनिष्ठ कुमति को धाम् । नाथ गुलाम
 असनाम् ॥ ग्रंथारंभ काल.—अष्टादश सत वासठी, संवत् आश्विन मास । विजै दशै तिथि
 लग्न वर कीन्हों कथा प्रकास ॥ प्रबन्ध प्रकाश स्थान—शृंगवेरपुर रुचिर विराजै ॥ रामघाट
 सुर सरि तट आजै ॥ तहँ प्रबन्ध यह कीन्ह प्रकासा । सुमिरि राम पद मजुल भासा ॥

संख्या ३२७ प. ज्ञान सरोवर, रचयिता—नवलदास (उमानपुर), कागज—
 मोटा, पत्र—१३७, आकार—८ $\frac{३}{४}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण
 (अनुपट्टप)—३१०५, पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स०
 १८१७ = १७६० ई०, लिपिकाल—स० १९६० = १९०३ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिमुचन
 प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पाडे, डाकघर—तिलोई, जिला—राय बरेली
 (अवध) ।

आदि—सो० सुमिरिं सत गुरु पाँय जो परसन करि घर वदन । दुरमति दूरि

पराय करहु कृपा शिव शक्ति सुर ॥ रहे भवन मरि पूरि, सत गुण साहेब जग विदित ।
नाम सबीबनि भूरि, दास नेबक सुमिरहु कस न ॥

अंत—७६—सुर सिद्धि मुनि गौबर्ष किबर पक्ष के सब भावई । इन्द्रदि औ सन
कादि मारद शेष सहित बलानई ॥ प्रह्लादि इनुमत भादि संकर सकल सुर मुनि गावई ।
नर धन्य हरि पर सखता पर ज्ञान सर जो पावई ॥ तरिजाप पाप पराय पीठत ज्ञान सर
सत जल सही । बीहुंड पावै चरित गावै । सोग दुख संसय नही ॥ जो सुबहि ज्ञान
प्रमाय भोता राम तेहि प्रिय मानि है । मरजाद अरु मुकस्वाद बछत्र, प्रेम सहित बखा
निर्दि ॥ दो० यह सब चरित पुराण के, ज्ञान कामि अथ ज्ञानि । दास नबक भोता तेरे
सुनि जो निश्चय मानि ॥

× × × × इति ।

विषय—भागवत भादि पुराणों की कुछ कथाएँ ।

संख्या ३२७ बी गुण सामर, रचयिता—नबक दास (उमानपुर), कागज—
मोटा, पत्र—१२४, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनु
पुष्ट)—१२७०, पूर्व क्र—अति प्राचीन, पद्य, लिपि—जागरी कौपी, रचनाकाल—
सं० १८१७=१७६० ई०, लिपिकार—सं० १८८६=१८२९ ई०, प्राप्तिस्थान—
मईत अंत्र भूपय दास, ग्राम—उमाव पुर, बरकपुर—मीरमक, जिका—बाराबंशी ।

आदि—दो० गुरु गम पति शिव शक्ति सुर बंधा रमा रमेन । दास नेबक हरि
चरित रत, करहु कृपा उपदेश ॥ गुण मागर सत जल विमल कलि मल ब्रह्म प्रमान ।
दास नेबक स्नान करु होय सदा कम्पान ॥ लीकर गुण पद ज्ञान रज, गिन ऐन जिन हीन्ह ।
सुखी कैंबारी मोह के भीतर बर्षन कीन्ह । भीस नलिख गुण चरण पद्य, जग मनि
माविक जाति । दास नबक सुमिरन क्रिय, दिग्ग दृष्टि अति होति ॥ दास नेबक आधीन
मे, राम नाम की भाष । मोह हरन दाया करन गुण जग जीवन दास ॥

अंत—७६—जो भक्ति करन ज्ञान करि बरु सुनहि चरित सुहावना । अथ हरन
करन चरित्र पावन प्रह्ला शेष नयावनी ॥ अति अमल ज्ञान प्रसम्भता पर चदि बंधान
सिपावही । बीहुंड नाम अराम अति, गति परम सुंदरि पावही ॥ जई नितहि भोग विद्यास
अमृत अमर पुर खाता गयो । हरि हरन पावहि विधि मनावहि सुखी अति बछा भयो ॥
बह भक्ति मूल विराग सुंदर, सुबहि के सुख सागर । सुखद सब दुष्ट भोर तापी, होहि
ज्ञान जगगा ॥ दो० पाप हरनि पावनि करनि, भोतहु सेहु नदाव । सुख सागर माया हृत्ने,
अह इकदस अघ्याय ॥

× × × × इति ।

विषय—पुराणों के आधार पर ज्ञानोपदेश व कथा ।

संख्या ३२८ नवरंग विद्या रचयिता—नवरंग अक्षरय, कागज—साधारण,
पत्र—२१, आकार—६×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपुष्ट)—
५१९, लिखन रूप—जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि—जागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मन्मथस पुस्त
अक्षय मुगार पुर जिका—गया ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ सोभित वैजंती गरे, सीस चद्रिका चद । सुमिरत नन्द किसोर छवि, हुलसत हिय आनद ॥ १ ॥ (कवित्त) कचन लकुट कर मुकुट सुघारे सिर होत तहां इत उत चमकनि लाल की । नव रंग कुंडल की ललित झूलक पर चारि वारि जैए चारु लटकीली चालकी ॥ पीत पट चटकनि भांहनि की मटकनि राजि रही लटकनि तैसी वनमाल की । सर सिज त्याम मनरिज से मपुर सदा वसै उर मेरे पुसी छवि नद लाल की ॥ २ ॥

अंत—काम ही के ग्यान ध्यान रति के कथा वपान मेरे जान पाए प्रान वातन जहा सुरै । हाइ भाइ दैन चाइ जानो ज्यो लियो जिवाइ मिलाप कै हाहा पाइ छात में जैन फुरै ॥ सुंदर विराम नहे साकरी गली में कहुँ आपुन में दोऊ मुसुकाइ कै चलै सुरै । परगट माहू वैसे रस कहा पाइ यतु जैसे रस चोप चाहत होत है दुरा दुरे ॥

वैसिकच.—

जो नायक गनिकानि सो, करै सदा संभोग । वैसिक तामों कहत हैं, वीर गुनी सब लोग ॥

यथा —

कुदन से तन चट से आनन कानन..... ।

विषय—नायक-नायिका-भेद ।

संख्या ३२६. श्री मद्भगवद्गीता के प्रश्न, रचयिता—स्वामी नवरंग, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—९ × ५ $\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनु-पट्टम्)—३३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य । लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—बाबू राम मनोहर विन्चपुरिया, पुरानी वस्ती, ग्राम—कटनी मुरवारा, जिला—जबलपुर ।

आदि—श्री सच्चिदानंदों विजयते ॥ अथ श्री भागवत गीता के प्रश्न—श्री स्वामी नवरंग कृत लिप्यते ॥ श्री उक्तच भगवत गीताया ॥ जामिमा पुष्पिता वाचा प्रवदत्य वि पश्चिः त वेद वाद रता. पार्थनान्य दस्तीति वादिन. ॥ ४२ ॥ कामात्मनः स्वर्ग पराजन्म कर्म फल प्रदाँ ॥ क्रिया विशेष बहुलां भोगै इचर्य गति प्रति ॥ ४३ ॥

×

×

×

×

अवजा प्रश्न कौं अर्थ जो कोई अरंम विवेकी साध होई सो विचारी कै दैपे ॥ जो वेद नैस-काम कर्म है ॥ तुला आदि दै करिके सबै रान ॥ अश्व मेघ आदि दै कै सर्व यज्ञ ॥ वणारसी आदि दै कै सर्व तीर्थ ॥ चद्रायन आदि दै कै सबै व्रत ॥ वैद आदि दै कै सर्वे पाठ और तपस्या और सर्व देवता की पूजा करै ॥ ए सर्व कर्म करै सो स्वर्ग में भोग्य करै ॥ जब पुन्य छीन होए ॥ तव तौ जीव फेर चौरासी में पड़ो ॥

अत—अव या प्रश्न की अर्थ जो विवेकी साध होय सो विचारि कै कहे ॥ जो प्रति पुरुष आदि दैकै सब पिंड ब्रह्मांड तौ क्षर पुरुष कह्यौ ॥ अरु दूजै अक्षर पर ब्रह्म पुरुष कह्यौ अव कह्यौ जी अवतार पुण आपकू कस्यौ ॥ सो क्यू करकै ॥ और ईश्वर पुण आपुसौ कह्यौ सो कौन सरुप ॥ अरु हुन कौ स्थान क कौन ॥ और अक्षर यु आपकौं कह्यौ सो कौन सरुप है ॥ अरु हुन कौ स्थान कौग और अक्षर से न्यारौ उचम पुरुष कह्योरे सो कौन सरुप ॥ अरु

इस को स्वामिक कीम कीर सबके पीछे क्यो के ए सय सदप को भाव धरि के मोर्खे ही पर
सोतम करि मत्री सो कीम सनमध करिके ॥ कीर जब महा प्रछे होय गी ॥ तब ए सदप
कीम कीम स्पर्शनक बिपे रहैगे ॥ जो पाई जपार्थ पाई व सी परसीं तम सदप की प्राप्ति होये ॥
अरु अपंडा बंध सदप की सुपुत्री साक्षात कर होय ॥ १० ॥ संपूर्ण ॥

विषय—श्री भगवद्गीता के कुछ प्रश्नोत्तर ॥

संख्या ३३० ए, शृंगार शतक, रचयिता—जबीन कबि, कागज—देसी, पत्र—४०,
आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुच्छेद)—३२०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पय क्विपि—भागी, क्विपिकर—सं १८३५ = १७७८ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री शिवरतन सिंह, ग्राम—धीनगर, बाक्यर—सखीमपुर, त्रिका—सीरी ।

भाषि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ शृंगार शतक-कल्पते ॥ दोहा ॥
श्री राधा राधा कई बाबा रहि न कोइ । यही मंत्र निज विज करि कृष्णचंद्र बना होइ ॥ १ ॥
रस शृंगार के फूल है उलित छाडिकी छाक । तिम चरजन बंधम किने मनसा होत
रसाक ॥ २ ॥ सोही चरण बसत सदा श्री गुर द्विज सुपुत्र नाम । श्री गुरु चरण कमक बसे
मेरे द्विज अमिराम ॥ ३ ॥ जिहि सरसाईं लहि भई रसबा रस मय मोर । कसे भाव तिह
अप ने बिफरीं सुगुण किशोर ॥ ४ ॥ हे शृंगार अद हास मे मुरत बंत प्रधीन । इनही
रस निजि दिन मगन हूय पानिप के मीन ॥ ५ ॥

अंत—अतुर्प साक्षात दर्शन नायका की उक्ति सची सों कबित ॥ बंसीबट तद बट
देव्यो मी बबीन मीन पाठक प्रधीन के ज्यो पंकर पलुरिया । गरे गुंजमाल कीर केसर की
भाक छवि जाक छके हुरि जात जीगिन की डुरिया ॥ सुकृष्ट सुकीर्ती कांज ककृष्ट अगामे
खरो मंद मंद रश्मि पे चक्रन बंगुरिया ॥ जाने अंग रंगते अनंग निजुरधोही परे कलित
प्रिर्मग है बजावत बंसुरिया ॥ इति कुंडल कपीस पे कवि पद पीत सो है । बरनी न जात
मोर्प रूप की बिकाईं है ॥ यह पुत्रकर कबित की कविता सितकर केतक मे छोबरी है ॥
इति शृंगार शतक संपूर्ण ॥ क्लिष्टं पासीराम बजाज स्वपठनार्थं मिती बजार मुदी ७ ससमी
संवत् १८३५ वि०

विषय—शृंगार रस कीर नायक नायिका भेद ।

संख्या ३३० पी शृंगार शतक, रचयिता—जबीन, कागज—देसी, पत्र—३२,
आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुच्छेद)—४४०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पय क्विपि—भागी, क्विपिकर—सं १८३० = १८०३, प्राप्तिस्थान—
श्री चंद्रोत्तर कृष्ण, ग्राम—बम्हनेवा, बाक्यर—बिसबाँ, त्रिका—सीतापुर ।

भाषि—३३० ए के समान ।

अंत—इति श्री जबीन कृत शृंगार शतक संपूर्ण समाप्तः सिपतं गिरधर काठ मुदमी
जेठ शुकु पडवा संवत् १८६० वि० ॥

विषय—नायिका भेद ॥

संख्या ३३१ सांगीत मुख चरित्र, रचयिता—जयबसुन्ध, कागज—देसी, पत्र—४०,
आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेद)—७८०, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२० = १८७२ ई०, प्रासिस्थान—लाला सीताराम, सर्गीत शाला, ग्रामी—झीनापुर, ढाकरुवर—गोला गोकरानाथ, जिला—सीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ जय ध्रू लीला लिप्यते ॥ अध सांगीत रंगा चार अस्तुति लिप्येत ॥ दोहा । हेसरस्वती हे भगवती हे अंवे हे मात ॥ हे दुर्गा हे ज्वालापा तेरा मही अनाथ ॥ कड़ा तेरा मही अनाथ लाज मेरी तेरी हाया । कीजों मुझे सनाथ लाज राग्य लीजों माता ॥ तुम हो अंतर जामी आप बट घट की जानो । मैं यरनागत लई छूट इसमें मत मानो ॥ जब पाळंगा दरस नैन सुरस होंगे मेरे । जै ज्वाला जै लये वालि जै जै मातरे ॥ अवध पुरी के राव उनी की अकय कहानी । जो गार्भ जो सुनै होयगी निर्मल वानी ॥ रगाचार ॥

अत—रगाचार दो० घर धैठे श्री रामने दरसन दीने आय । दरसन पाये नैन सुग्य दूर हुणु सव पाप ॥ दूर हुणु सव पाप सभी के छिन में उमसे । धुरु कौमिल गये राम एक पलक में जैये ॥ करी ध्रूने भक्ति आप तिर सव को तारा । जो सुमिरे भगवान क्यों ना हो भव पारा ॥ पांच वरस की उमर धुरु ने सेवा कीनी ॥ हरि होके परसन्न अटल की पदवी दीनी मन इच्छा फल मिलै राम के जो गुण गावे, अँसी भक्ती करै अटल रजधानी पावे ॥ इति सागीत भाषा धुरु चरित्र समाप्तम् लिखा हरीलाल संवत् १९२६ कार्तिक शुदी ७ बृहस्पति वार ॥

विषय—भक्त ध्रुव का चरित्र ।

संख्या ३३२ प. वैद्यक के नुसखे या (वैद्य मनोत्सव), रचयिता—नयनसुख, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—७ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्,—३६७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४९ = १५९२ ई०, प्रासिस्थान—प० भालचंद्र मिश्र, ग्राम—सीतलन टोला, ढाक-घर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—अज मूत्र सिउ पीसि करि कर अजनु नैनाहि ॥ अपस्मार उन्माद भ्रम सन्निपात न रहाहिं ॥ २ ॥ तिमिर रोग शि अंध फुनि भूत दोष सिर वर्ति । वैद्य कखो विचारि के एते करै निवर्ति ॥ ३ ॥ अथ सन्निपात कहु क्वाथ ॥ वाग्भटात् ॥ मोथा सॉठ चिराइता कहु गिलोइ मिलाइ । क्वाथु करि के पीजिये सन्निपात न रहाइ ॥ ४ ॥ अथ सन्निपात कहु औपधि ॥ आत्रे मतात् ॥ कुकुम लवंग जुपी परे अकरकरा जु मिलाई ॥ ५ ॥ आद्रक रस सिउ पीसिकै टकु एकु जव पाई ॥ सन्निपात उन्माद कफ तंद्र मारुत कास । शीत शूल भृम मोह ज्वर इह को करै विनास ॥ ६ ॥ इति ज्वर चिकित्सा ॥

अत—वैद्य मनोत्सव ग्रथ महि कहिओं सकल निज आनि । दुप पडन पुनि सुप करन आनद परम निधान ॥८॥ परमित ग्रंथ समुद्रसम मम मति पोजत पार । औपद रत्न जुते गहै कीणु प्रगट ससार ॥ ९ ॥ केश राज सुत नैन सुप कियो ग्रथ अमीकंद शुभ नगरी सीहरद महि अकवर राज नरेंद्र ॥ १० ॥ अक वेद रस मेदनी शुक्र पक्ष सुचि मास । तिथि द्वितीया भृगु वार पुनि पुष्य चन्द्र सुप्रकास ॥ ११ ॥

विषय—ईषड ।

स्यया ३३२ यो वैष मनोसव, रचयिता—नयनमुल, कागज—देसी, पत्र—
४८, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुपुष्प)—१८७,
संक्षिप्त, रूप—गलित, पत्र अंतर गद्य, क्षिति—नागरी, क्षिपिकाल—सं० १७३५ = १९०८
ई०, प्राप्तिस्थान—प० श्रीहरमन्नी, ग्राम—बलगाँव, बाक्यर—बालगाँव जिला—सीतापुर ।

आदि—अथ नाड़ी परीक्षा ॥ दोहरा ॥ कर अगुट नू मूल ही इषी नसा अकार
मुप बायी बेहि बाय को पंडित करी विचार ॥ आदि पित पुनि मध्य कण्ड अंत पवन मु
प्रधान । त्रिबिधि नसा कल्पन कहीं जानव ईष सुजान ॥ ८ ॥ मैदुक काब हृदिग गति
पित नसा एहि म्यप । इश मपूर कपोठ कण्ड भाग जर्कीअ बाप ॥९॥ चठे मंद कपही
कचई वेग करेई । सुगम शोप जो क्य पसनि अतर करी मोरेई ॥ १० ॥

अंत—महा न्वरीकुना वायु की अर्थपथ ॥ कुप १२ गंधक १२ पारा १२ त्रिफला ३७
विप १२ एकप्र करि धमरा के रस में परस करे पहर चारि मृग के प्रमान गाली बाँधे छींग व
पान में पाइ री न्वरकुना मारस ॥ अथ अंजन सार गंधरात फटकरी को छाया १ कौंगवड़ी
१ मोठी अम तुये १ कौच की चूरी १ पिरली के बीज १ रसबतु १ सिरसा के बीज १ इल्ल
बर्न सीला बापा १ अमेसी की कली १ पररिया १ मींग मसरु १ ये सब कोषी कोषी
मरि छेइ सब बस्तु पीस मीवा करे अमेसी सफरी मिर्चि चरे फूल के बासन में धांटे पहर
लीनि बडी बंधी चरे माफा जाय नकरा कठे मूल सों सों घसि लगार्ब ठो फूनी जाय अक्षी
के दूध मों छाबे पुनर्मबाके रसोचर्नी होइ सार्ब चीमपी जाइ बमरा के रस सो बहानी जाइ
पुन मे बासार बंधी जाइ श्वेरा के रस सों बुधि जाइ ग्ते रोगचार्य ॥

विषय—ईषड ।

स्यया ३३२ स्त्री वैष मनोसव, रचयिता—नयनमुग, कागज—देसी पीसा,
पत्र—१९८, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुपुष्प)—
१२९८, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य अंतर गद्य क्षिति—नागरी क्षिपिकाल—सं० १८६३ =
१८०६ ई० प्राप्तिस्थान—श्री भाउचंद्र मिश्र ग्राम—सीतलनयोछा, बाक्यर—मलीहाबाद,
जिला—कलकत्ता ।

स्यया ३३३ प. इंसनामा, रचयिता—बकीर कागज—देसी पत्र—२, आकार—
७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुपुष्प)—२२, पूर्ण, रूप—नवीन,
पद्य, क्षिति—नागरी, रचनाकार—सं० १९१८ = १८६१, क्षिपिकाल—सं० १९२७ = १८००
ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवचंद्र बूबे, ग्राम—दरदारपुर, जिला—बीरी कलीअपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ इंस नामा लिख्यते ॥ अथा या इिरी घहर से
एक इंस विचारत । एउ पेइ पि घहरा के किया इंसने गुमरा ॥ रहते ये बहुत जानवर उम
पेइ के अर । उमने भी किमी शान् पे घर अरमा मंभरा ॥ देना जा उस ताबुरों में हुन
में सुश ईय । बहु इंस कगा नबकी किगाहों में प्यारा ॥ बाजो लग रीबा सें छांटे हुए
आकार । शकरो में भी शहर से किया उमस्य महारा ॥ जागो जगना ह्नि को ताक्रम
कबूतर । नब करने लगे उंसमे मोहप्रत का इशारा ॥ कुउ साल चिड़े पोइने विरी न की

पाय अचल भा मन सतोपी काम क्रोध मद करि संग्रामा ॥ मम गुरु भीषम कर्म विदेही सदा अपन्थ सौ गुणान अक्रामा ॥ ब्राह्मण मूरति घल्ल कै सूरति सदा भगन निज अपने नामा ॥ निधि दासी कलिकाल योग मह सालिक राम येत चदि रामा ॥ दो० । निधि दासी सब गुणन ते हीन भई संसार । मोहि अय अधम अनाथ को मालिक राम अधार ॥ इति श्री राम मिलन ग्रथ संपूर्ण समाप्त. लिपतं भोलानाथ आज्ञा रानी श्री महाराज गिरिजा वख्श सिंह जी तहमील रंजीत पुरवा जिला उन्नाव निवासी स्वर्गनाथी की भार्या शुभ मस्तु संवत् १९४० ध्रावण शुक्ल सप्तमी राम राम राम ।

विषय—मुक्ति के लिये गुरु और राम जी के भजन ।

संख्या ३३६ प. श्री राधा कृष्ण हिंडो ॥, रचयिता—निहालदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं १९२५ = १८६८ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री घनश्यामदास, ग्राम—चौराही, डाकघर—गोलागोकरननाथ, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुजयति ॥ आतक छप्यै ॥ श्री राधा कृष्ण के रूप ध्यान की ॥ नंद नदन घन श्याम सुभग नृपमान किशोरी । विलसत विविधि विलास परसपर प्रीति न धोरी ॥ सकल जक्त अभिराम धाम वृन्दावन पावन । बोलत चातक मोर कोकिला परम सुहावन । हरित सकल द्रुम चहु दिसन विविधि कमल फूले सरन । ऋतु वसंत राजत सदा परम सुभ्र मुनि मन हरन ॥ १ ॥ कवहु हंसत घन श्याम राधिका मुख छवि जो है । कवहुं चजावत वीन मथुर सुनि मन मुनि मोहै ॥ कवहुं कथु करते गान मथुर वसी विच गावै । कवहुं लेत उर लाई परमपर अति सुख पावै ॥ राजत राधा सग प्रभु कृष्ण चंद्र कृष्णा करन । मरकत मनि कुदन मनहु श्याम गौर सुंदर वरन ॥ २ ॥

अंत—निस दिन दास निहाल सुयस गावहु प्रभु केरो । गुरु पद पंकज ध्यान जनि करहु अवेरो । हृदय कमल तव सुल होय परकास बलैरो । यथा तिमिरि की हानि उदय रवि भयठ सवेरो । तव श्री राधा कृष्ण जाहि मुनि सकत न पाई । लहौ परम विश्राम होइ उर विच दरसाई ॥४॥ इति श्री निहान्त चंद्र विरचितयाम् श्रीराधा कृष्ण हिंडोरा लीला वरनों नाम संवाद समाप्तम् शुभ फागुन मासे कृष्ण तिथी पक्षे पंचमयाम गुरु वासरे संवत् १९२५ बि० श्री श्री श्री श्री श्री

विषय—श्री राधा कृष्ण का हिंडोला पर झूलना ।

संख्या ३३६ वी. श्री राधा कृष्ण रामलीला, रचयिता—निहाल दास, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०४, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं १९२५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री घनश्याम दास, ग्राम—चौराही, डाकघर—गोलागोकरन नाथ, जिला—खीरी ।

आदि—जै जै जै जै जनवारी, जै सतन हित तन धारी । जे देव सुपद असुरारी । जे वृन्दा विपिन विहारी ॥ दो० जै जै श्री राधा रमन । जै जै नन्द कुमार । जै गोपी जन मन सुपद जै छवि रूप अपार ॥ चौ० ॥ जै गोपी पति वृज राई । जै मोहन कुवर

क्याहें । श्री दासत के सुपदाहें । ज हरम शोक समुदाहें ॥ दो० । श्री सर्वोपरि जगत पति
कल्याणसिन्धु कृपाल । श्री सुर मुनि सम्जन सुपद श्री सुदृग उर शाळ ॥ श्री० । पुनि गुरु पद
पंकज प्याड । रस रास भरित कछु गाड । हरि राधा पद सिर गाड ॥ सब संसै सोक
नघाऊ ॥ दो० । राधा माधव पद कम्मक बंदी सत सुप शैव । ब्रह्मा सबकाधिक मकक बे
संदत दिन ईम ॥ श्री० । ब्रज गोपिन भति ठप कोन्हीं । हरि पावर्हि पति प्रत सीन्हीं ॥
हरि भंतर जामी चीन्हीं तब हूँ प्रसन्न बर पीन्हीं ॥

अंत—॥ दो० ॥ जगत सौवत स्वप्न में निज दिन तीनहु काळ । नट बर बपु मम
उर बसहु श्री राधा नद काळ ॥ इति श्री रस रास कविका श्री राधा कृष्ण प्रीति कर्पे दास
निहाळ बिचिताचाम् मममस्तु ह्यम मस्तु सिद्धि रस्तु बेसाल दुष्क ३ इतिदासरे संबद्
१९२५ वि० क्लिपट शिवकाल पाठे ॥ श्री संकर ठातुमाम बोड्म् राम राम राम जानकी
जीवन राधारमन श्री श्री ।

बिषय—मठवासी दास के ब्रज बिकास श्री रास कीला का राग रागिनी में वर्णन ॥

संख्या ३३६ सी संग्रह, रचयिता—निहाळदाप कागड—देसी, पत्र—१
आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५४ पूर्ण
रूप—साधारण, पद्य कवि—नागरी क्लिपिकास—सं० १८९८=१८९९ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री रामनरसिंह, ग्राम—तारापल का विवादा, बाकपर—भलिपा बुठुर्गा, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ पद ॥ भजुमन राधिका पति चरम । सुरमिबि मुनि
समझदि नारद रहत जिनकी मरन ॥ देक । दुख दाह धारिद दाप अब गुन पाप संभित हरन ।
गुन ज्ञान भक्ति विराग आनंद सकळ मंगल करन ॥ १ ॥ दिन पगन सुरसरि प्रगड भई तिहुं
भ्यक पावन करनि । बिहि धरि संतत श्रीसु सिर भयो भाम गंगा भरव २ ॥ जे किरत कृष्ण
बिपिन चारत धनु ब्रज घर धरन । जाक तीर जमुना नीर निरमळ बहत तारन तरन ॥ ३ ॥

अंत—सकळ सिंगार संभारि बनाया बेप मनोहर नारी । बधू बधू कहि कहि सब
गावत । राधा विग बँठारी मुदित सब ब्रज की नारी ॥ ६ ॥ छवि पिपा बेप प्रान प्रीतम
का श्री कृपमान दुसारी । निज कर कमल पान के बीन्हे हँमि जायो गिरधारी । मुदित सब
कलि ब्रज नारी ॥७॥ दाम निहाळ स्वाम अद स्वामा जन मन जानकरी । सुप सागर सब
गुनव जगायर । नागर मबल बिहारी मदन रति बकि बलि हारी ॥८॥ इति श्री निहाळ दास
कृन संग्रह संपूर्ण समाप्ता क्लिपट बनीमार्था दृष्ट संग्रह १८९८ कार्तिक वशी धीपावकी ॥

बिषय—श्री कृष्ण जी के पद होरी, बारहमासी आदि ॥

संख्या ३३७ कृम पत्रम्, रचयिता—निवाबंद, कागड—देसी पत्र—८,
आकार—५×३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—
प्राचीन, पद्य कवि—नागरी रचनाक—सं० १८८३=१८९८ ई०, क्लिपिकास—सं०
१८८९=१८९० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर कृष्ण, साहित्याभ्येपक, जिला—हरदाई ।

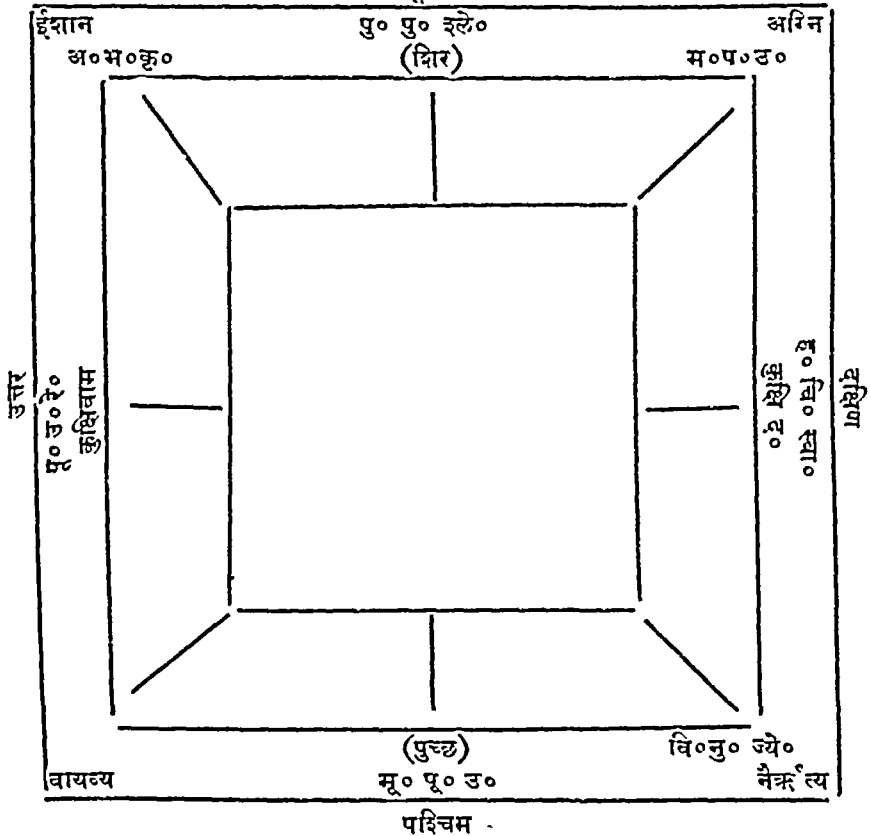
आदि—जय सब मनुष्यों के गृह कृतांत यवाकार्ये कूर्म चक्रम् । (बोहा) अति
प्रति जनप्रति भूप सरस मुक्तपाल अपन चक्रपर चक्र पुनि कबहु कूर्म मे सात । भूमि कूर्म
इति आदि मे देवा मगर गृह अंत । ताके नाम मझध मे गनहुं कूर्म चक्रहेत सोरदा—ठीनि

तीनि नक्षत्र मध्य पूर्व भग्न्यादि है । धरहु सर्व दिशि तत्र लग्नहु मनश्चर वास तंह । गृह के मध्य सूर्य सुत जानेउ । शोक और सन्ताप वरानेउ । द्वार माहिं यदि सनि कर वामा । मेघ आदि सों तहा कछु नाम्ना । दिसि अग्नेय अग्नि भय सरसी । दक्षिण माहि मृत्यु दुख करमी । पुनि नैऋत्य राक्षस भय राख्यो । सुभद्र मंद वारुण दिसि भाप्यो । स्थिति वायुत्रि फलसून्य अमेपु अर्थ लाभ प्रद उत्तर देसु । सर्व निद्रि प्रद ईशान राख्यो । कूर्म चक्र सन फल इमि भाप्यो । दो० ॥ होत वलाधिक दुष्टसनि स्वल्प वीर्य सुभकार । जहं निवाम तंह विघ्न बहु पीडा दृष्टि अगार । जौन देस जह लपत है भौम सनैश्चराहु । तहैं होत पर चक्रभयं अग्नि अकाल अगाह ।

अंत—कुडलिका—गृह में कूर्म बनाय के मुख में करि गृह द्वार । गृहाध्यक्ष नामर्क्ष्य सों मध्य पूर्व क्रमधार । मध्यपूर्व क्रमधार अग्नि आदिक में करि करि । तीनि तीनि नक्षत्र यथा क्रम सब दिसि धरि । कहैं सर्व फल हेत वाग्य जह सनि को टेपेट । कहां नष्ट स्थान वेधतह अधिक निमेपेट ॥ नगर नगर नक्षत्र सों करि प्रथमै मय लेखि कहौ सुभासुभ मद फल कूर्म चक्र मधि देखि । चन्द्रहोय जो पुष्ट यत्न करहु शान्ति मन मानि । जामल तत्र विलोकि के सर्व विघ्न हर ज्ञानि ।

कूर्म चक्रम्

पूर्व



विषय—(१)—कूर्म चक्र द्वारा बृष्टि, अमाबृष्टि, सूप सप्तम आदि सात बातों का ज्ञान । (२) गङ्गा, भूमि, सेतु और नगर के अनुसार कूर्म चक्र की रचना । (३) चक्र के सिद्ध स्थानों पर शनि, रवि आदि ग्रहों की स्थिति से शुभाशुभ फल का निर्णय करना । (४) बृष्ट स्थलों पर स्थित ग्रहों की शक्ति का विधान ।

संख्या ३३८ पं. गंगासहरी, रचयिता—पद्माकर, अंगरज—साधारण, पत्र—१० आकार—४ ३/४ × ३ ३/४ इंच, पैकि (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुपुष्प)—२४०, पूर्ण, रूप—बहीन, पद्य, किरि—बागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामाधीन मिश्र, ग्राम—बबाबाद, बाकबर—वासपुर, ब्रिह्म—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पोपी गङ्गासहरी कवि पद्माकर कृत लिप्यते ॥ शोहा ॥ हरि हर विधि को सुमिरि कै । काटहि कमुप कहेस । कवि पद्माकर रचत है । गंगासहरी बेस ॥ १ ॥ कविप ॥ बपती किरिपि भई नामन पगव पर, कैंकी कैकी किरि ईस सीस पं सुगव की । आह के बहौन जगु बंधा सपटाय किरि शीमन के छीन्दे वीर कीन्ही लीम पय की ॥ कहे पद्माकर सु महिमा कहीं लीं कहीं । गंगा नाम पापो सहरी सबके भरप की । चारुणी फल फरवी फूलो गह गहो बह बहो, लह कही कीरति सता है मगीरप की ॥ १ ॥

श्लोक—योगहू में योग में वियोग में सैयोगहू में, रोग हू में रस में न मेरी बिसराहये । कहे पद्माकर पुरी में पुष्प सीछन में, कैलन में कैल डैल गिलन में गाहये ॥ वीरिन में बन्धु में विद्या में बंस बालन में, बन में बिदे में रन हू में जहाँ जाहये । सोचहु में सुप में सूरी में साहिबी में कहे, गंगा गंगा गंगा कहि जनम पिताहये ॥ ५३ ॥ गिरिसगजानन गिरि मुठा, प्थाय समुद्रि मुति पंथ । कवि पद्माकर ही कियो, गंगा सहरी प्रथ ॥ ५४ ॥ श्री गंगा कहरी जो जन कहे सुनि मुति सार । ताको गंगा दति है सदा मुमग फल चारि ॥ ५५ ॥ इति श्री पद्माकर कृत गंगासहरी समाप्त छान मस्तु ॥ माय शुकु त्रयोदस्ता गुरुवासरे ॥ सन् १२१९ ॥

विषय—(१) पृ० १ से ११ तक—भंगलाचरण, प्रबंध प्रतिज्ञा, गंगा की महिमा गंगा की स्थिति, गंगा बस पान की महत्ता, पापी का निस्तार और विभ्रगुप्त का व्याकरण, यमराज का विभ्रगुप्त को आदेश । गंगा की तरंगों से पापियों का विष्णु समीप पहुँचना पाप को फटकर, रत के उड़ने के स्थान तक पापों का उड़ जाना, बहुत से पापियों के तरने का कथन, गंगा की महत्ता, कवि का गंगा से झूल मैठ देने की प्रार्थना, गंग के सर्वत्र से ही शिव की महत्ता का कथन, गंगा की देवुक्त का प्रभाव, गंगा के प्रभाव से तरे पापी को ले जाने के लिये विष्णु की उरकथन ।

(१) पृ० ११ से—गंगा की प्रसंसा, यमराज की गंगा जी से जुगली और पापियों को न तारने की प्रार्थना यमराज की राजबाबी पर विपत्ति, पापियों का अन्नपास लगाना कोही का तरना, बहुरों की तरंगों की प्रसंसा, गंगा का गुणगान, गंगा चरित्र अथवा से पापियों का तरना । गंगा नाम, गंगा की बार, बरु, सहर, आदि की प्रसंसा, गंगा ९ कहे जन्म स्वर्गीय करने की आकांक्षा । पुस्तक पाठ करु ।

संख्या ३३८ वी. हिम्मत बहादुर विरदावली, रचयिता—पद्माकर, कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६०६ = १८५२ ई०, प्रासिस्थान—श्री गुमान सिंह अध्यापक, ग्राम—सूपा, बुदेलखड, डाकघर—मुलपहाड़, जिला—हमीरपुर,

आदि—अथ हिम्मत बहादुर विरदावली, लिप्यते ॥ श्री गणेशायनम जय जय जय ब्रज जलधि चंद आनंद बदावन । जय जय जय नंद नद जगन दुख दद घटावन ॥ जय जय केसी कंस वच्छ वक्र रच्छम दडन । जय जय गिरिवर धरन मान भववा मन पडन ॥ जय पद्माकर भारथ समर पारथ सप पर भिच्छि धनि । नित नृप अनूप गिरि भूप कहं विजय देहु थदु वंश मनि ॥ १ ॥ नित देहु जय जदु वंश मनि अवतंस नौऊ पड को ॥ गिरि राज इन्द्र नरेंद नंदन भवन तेज अपड को ॥ प्रथुरित्ति मित्त सुविच दै जग जित्ति कित्ति अनूप की । वर वरनिये विरदावली हिम्मत बहादुर भूपकी ।

अंत—॥ छप्पै ॥ जय जय जय धुनि धन्य धन्य गरिजय छित्ति छज्जिय ॥ फहरत सुजस निसान सान जय दुंदभि वज्जिय ॥ सोभहिं सुभट सपूत खाइ तनु धाइ अतुरलै । विमल वंमवाहिं पाइ मनहु कल किंसुरु फुल्लै ॥ तहं पदमाकर कवि वरनि इमिं रन उमग सफ जग किय ॥ नृप मनि अनूप गिरि भूप जह सुप समूह सुफतह लिय ॥ सुभ सुप समूह फतूह लिपहिय मजु मोदन सो भरै काली कपाली निस दिन नित नृपति की रक्षा करै ॥ प्रथुरित्त नित्त सुविच दै जग जित्ति कित्ति अनूप की वर वरनिये विरदावली हिम्मत बहादुर भूप की ॥ इति श्री हिम्मत बहादुर विरदावली सपूर्ण समाप्तः लिपत श्री पालासिंह स्वपठनार्थं सवत १९०९ वि० माघ शुक्ला पचमी ॥

विषय—हिम्मत बहादुर गुसाई के बहादुरी की प्रशंसा ।

संख्या ३३८ सी. जगद्विनोद, रचयिता—पद्माकर, आकार—६ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४५ = १८८८ ई०, प्रासिस्थान—श्री हरिहर वक्त्रा सिंह, ग्राम—ममरेजापुर, डाकघर—बेनीगज, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ जगद्विनोद पुस्तक लिप्यते । दो०—सिद्धि सदन सुंदर वदन नंद नंदन मुद मूल । रसिक सिरोमणि सावरे सदा रहहु अनुकूल । १ जय जय शक्ति शिला मयी जय जय गढ़ अमर जय जय पुर सुर पुर सदश जो जाहिर चहु फेर २ ॥ जय २ जाहिर जगपति जगत सिंह नरनाह । श्री प्रताप नदन वली रवि वशी कछवाह ॥ ३ ॥

अंत—दो०—वन वितान रवि शशि दिया फल मै (मख) सलिल प्रवाह । अवनि सेज पखा पवन अव न कछू परवाह ॥ २१ ॥ सव हित से विरकत रहत कछू न शका आस । विहित करत सुवहित समुद्धि दिशुवत जे हरिदास ॥ २२ ॥ इति नव रस निरूपणम् ॥ दो० ॥ जगतसिंह नृप हुकुम तें पदमाकर लहि मोद । रसिकन के वश करन को कीन्हो जगत विनोद । इति श्री कूर्म वशावतस श्री महाराज राजेन्द्र श्री सवाई महाराज

जगत सिंह अग्रज्या कवि पद्माकर विरचित जगत विनोद काव्ये अष्टमो अध्यायः समाप्त सं०
१९४५ अथ मासे कृष्णपक्षे तिथी प्रयोद्दया शुक्रवार तिथितं जगद्गिनोद् पुस्तकं मेघ वर्ष
मिथेण ४० लुघाहाससिंहस्य पठ्यार्थम् ।

विषय—वायक नायिका रस इत्यादि ।

सूत्रया ३१६ द्वितीयेष्ट, रचयिता—रघुमनदास, कागज—साधारण, पत्र—१३१,
आकार—१×१ ईंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अक्षुष्टम्)—२५०० पूर्ण,
रूप—नवीन पत्र, लिपि—मागरी, रचनाकास—सं० १७६९ = १७०६ ई०, क्रिपिकास—
१८७४ = १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्महास पुस्तकालय, मुरारपुर, गया ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ गुह गिरीम गिरजा गिरा प्रह नायक गन ईरा ।
पनुमनि विष्णु प्रनाम करि आप्यौ इहे जप्तीस । १ ॥ होके सुफल प्रारंभ मम कोठ करै
अनि हास । साठा भक्तिा को सदा मुंह भगक परगास ॥ २ ॥ विष विष्णु रामी भक्ति
द्वित उपदेस विचित्र । मुक्त चाब प्रस्ताव मय भूपति निरव पवित्र ॥ ३ ॥ सुर भाषा पनु
हीन तें कयो चहै प्रस्ताव । सिर्ष दलेस महीपतहि हेतु किया द्वित चाब ॥ ४ ॥

अंत—गीच करायो मोंद तिन नृप संभाषन कीन्ह । अक्रम ई पूछयो हुसक जया
बचे को कीन्ह ॥ २४३ ॥ मेर भयो तहि बर नृप चक बाक पहिराय । मान पाव पंखा हयो
मंजी के मत पाय ॥ ५४४ ॥ चक बाक को करि विना विनय गोप तब कीन्ह । सुम कीजी
अब हैस को, मुजय विघातें हीन्ह ॥ ५४५ ॥ बंध दे आयो बूच को, ततिखल चले बहेरि ।
राम राम नृप हस सी, कहि बेजो तेहि बेरि ॥ २४६ ॥

X X X X

इति श्री पद्मन दास विरचिते महाराजा वलेस सिंह कारिते द्वितीयेष्ट संधिनाम
पनुषो कथा समाप्तः ॥

विषय—(१) पृ० १ से ५ तक—संगसाधरण श्रेय निर्माण कारणः—सिंह
दलेस महीपतहि हनु कियो यह चाब । वायव पद्मन दास को, प्रेम सहित सपुमान ।
रचन करी सब दाहरा, पचन सुधा मय जान ॥ घृष बंस वर्णना—तरा पूर्ण निचासते
पेर बार भइ एवाति । बेनु बंस विकबात जग, जानि कधी जाति ॥ वायदव भूपाठ भूमि
मुज, बस जिन्ह कीन्हो । कीर्तिसिंह तनु तनव सिंह विक्रम जिन्ह कीन्हो ॥ रामसिंह तप
निष्ठ बुद्ध अष्टिष्ठ गप दिज । माधव सिंह महीप भयो तनु नंद महाभुज । तनु नंदन
जगत जहाज नृप हेमठ सिम तनु धर्मपुर । श्री रामसिंह मुज तनु पुनि नीति निपुन जनु
पचनपुर ॥ कुंजर करे शोषपुपितु कृष्ण सिंह मतिमान । प्रेमी सिंह वलेस को जिन्ह के
सरि सर जान ॥ सरस पितामह ते पिता रामसिंह रनपीर ठिन्ह के पुष पवित्र मुचि,
सिंह वलेस रानीर ॥ करन सिंह वलेस की बरबी जाति न काहु । धरणी तलमें घम्य
तम गुन गव सिपु जगापु ॥ तिन्ह श्री पद्मन दास को कीन्हो बहु बिधि हासु । सापन
भीर सिहात है निरत्रि जासु पनमानु ॥ कवि बंश परिचयः—दामोदर कायव बरन जिन्ह
के धर्मप्रकाश । चारि पुत्र तिन्हते मष्ट, बेदे संकरदास ॥ मध्यम पद्मन गुन गदक तथा
सासमनि जान ॥ अनुज कृष्णमनि गुनवि ठे जयजइ अविमान ॥

ग्रंथ निर्माण कालः—सत्रह सै अड़तिस सजन संवत विक्रम राह । मित पाँचें मधु बुध दिचस रच्यो गनेश मनाह ॥

(२) पृ० ५ से २६१ तक—मित्रलाम-काक, कूर्म, मृग तथा मूसे की कथा । हित भेद, विग्रह तथा संधि आदि संस्कृत कहानियों का पंचतत्रादि द्वारा भाषानुवाद ।

(३) पृ० २६२—ग्रंथ पूर्ण होने की सूचना तथा अन्य ज्ञातव्य विषयः—इति श्री पदुमन दास वरनि परिपूरन कीन्हो । रुद्रसिंह जुवराज जिओ जिन्ह हित करि लीन्हो ॥

× × × ×

मूपति सिंह दलेल के, रुद्र सिंह जुवराज । जिओ जुगुल जल गग, अठ सभु सीस ससि छाज ॥ सत्रह सै छासठ^{१०९६} जवै पूप पंचमी सेत । पदुमनि लिखि पूरन कियो, रुद्र सिंह के हेत ॥

ग्रथ लेखन काल.—

संवत् शुक्ति^५ सागर^७ सहित, वसु^८ वसुधा^१ सुभ जानि । शुक्ल दसमि मधु मास के, ससि वासर अनुमानि ॥ तेहि दिन लिखि पूरन कियो, उकील देवचंद्र हेत । चारि कथा उपदेश हित, पढहु समुक्षि चित चेत ॥

संख्या ३४० प. अरिल्ल, रचयिता—पहलवानदास (भीखीपुर, रायवरेली), कागज—सफेद, पत्र—१४, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, पूर्ण, रूप—अच्छी, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १९२३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पाड़े, डाकघर—तिलोई, जिला—रायवरेली ।

आदि—सो० सत गुरु तुम समरस्त, श्रुति भापत चारिहु युगन । देहु नाम सत कस्त पहलवान दास विनती करै ॥ अरिल—कर्ता ते नहि छपै, सर्व घट पैठ है । रोम २ वझाण्ड, कहाँ नहि दैठ है ॥ जल पावक में रमि रक्षो, आपुहि छिति असमान है । अरेहाँ, पहलवानदास ले वृक्षि यही ब्रह्म ज्ञान है ॥ १ ॥ केते भेप वनाय जगत को लट्टते । चातक नाटक देखि जियारत जूटते ॥ वृक्ष हलावत झरि परै लौंग सुपारी देत हैं । अरेहाँ पहलवान दास यह दुनिया तेहिते दिक्षा लेत है ॥

अंत—ये दुइ वाना वाँधि के लरै मरै जो खेत में । सत—सूर है सोइ जो । ठहरै समय सकेत में ॥ तरवारिहु ते कठी कठिन, बडे मरद का काम है ॥ अरेहाँ पहलवानदास सब कुछ वनै । जेहि घट साँचा नाम है ॥ राम नाम विन और सब । यंत्र मंत्र आराधना । इन्द्रजाल उड्डीस पदि । की वीसा को साधना ॥ नरसिंह भैरव पूँजि, गयो भरि अंतका ॥ अरेहाँ पहलवानदास सब भठिक के । पथ निवहिगा सत का बहुत गुरु ससार । देन कहँ दीक्षा पूरे । हृदय नाम विन सून, कहाँ क्या है अव भूरे ॥ अमिप अहारी शिष्य सब । गुरु यह कहि के मूडते अरेहाँ पहलवानदास गुरु, चेला, दोऊ नर्क महाँ वूडते ॥ इति

विषय—ईश्वर की भक्ति, ज्ञान, त्रैराग्य और संसार की आसारता आदि का वर्णन ।

सुयया ३४० वी मुक्तापन, रचयिता—पद्मस्नानदास (मीरपुर रायबरेली), कागज—बादामी, पत्र—८४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपुष्प)—८६२, खंडित, रूप—प्राचीन सरी, पद्य, क्विपि—मागरी, रचनाकारक—सं० १८३५ = १७६८ ई०, प्राप्तिस्थान—महत्त चंद्रमूपन श्री, ग्राम—उमानपुर, ढाकपुर—मीरमऊ, जिळा—पाराबंकी ।

आदि—दोहा—तुव द्वापाते काज सब । सिद्धि होत तेहि हेत । मैं अपराधी रहित मति तुमहि न वेरी हेत ॥ सो० भाष सेत तुव नाम, काम सिद्धि सब तादि क । सिधि दायक सिद्धि धाम । रूप रासि भारत हरन ॥ पद्मस्नानदास अति हीन । तुम द्वापल कल्पना पतन । काहिन कल्पना कीन । कृपा करहु बारन बदन ॥

अठ—दो० धर्म जात सिर पर घरा । अमक सरोरुह पाँव । सहमा अदि तनु सुदि गग । जम हरि भजन प्रभाव ॥ हरि के जन हरि एक ययु, वर्णत वेय पुराय । बहुप मोसहि गति मिच्छी । उतरेज गगन विभाव ॥ × × × × इतिव दिशा कहि द्बसरि । पात्रन पाँच प्रभाव । पुद्व दिशा छिति योजन अरि सत गुद स्थान ॥ अथ सात योजन गिरा । पुद्व उतर के कोन । भीपी पुर परिचानिउ, पद्मस्नान दास को मीन ॥ × × × समाप्त ।

विषय—ईश्वर के भजन की सरल विधि इंग्रियों के साधन का प्रचार तथा गुण की आवश्कता का वर्णन ।

संख्या ३४० स्त्री उपलान विवेक (मठज्ञानप्रदा), रचयिता—पद्मस्नानदास (मीरपुर रस्तामऊ) कागज—सोय, पत्र—२०, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपुष्प)—७३०, पूर्ण रूप—नवीन, पद्य, क्विपि—मागरी रचनाकारक—१८५५ = १८०८ ई०, क्विपिपुस्तक—सं० १९०० = १६१३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विमुक्त प्रसाद विपाठी, ग्राम—पूरे परान पाँडे, ढाकपुर—तिस्सेह, जिळा—रायबरेली ।

आदि—दा० महाद्व गम पति गिरा, गिरजा सुरन समेत । बंदी सुरपति फव पति हि राम मक्ति क इत ॥ सुरसरि, भूमरु सभ मुनि जगत पिता रचिबन्ध । पवन तनय तुमते चिन्प, पद्मस्नान दास मति मन्द ॥ करहु कृपा जब जानिक । देहु सुमति सत ज्ञान । नाम रदनि कागी रहे, अत्रया सुमिरन स्थान ॥

अंत—दा० नाम भजन युग चारिहु, कर्म करवा जाय । जहँ सुमिरन संतोष तहँ, पद्मस्नान दास मठ भाव ॥ श्री कृपा जगत सुख नाम बिसारी, पैठ न मारिय सोन कटारी । अहँ वेनु बुझ गच्छि मय । का फरिअ करिक के गय ॥ सुमिद सबेरे द्विय-पद सुदि, का पाठे यदि बदन सुदि । सुमिद सुखी हो हरि का ताहुं । शोवे राज न पावा काहुं ॥ हरि जन पास तरे बहुनेरे, अत्रन होत मई गिरि नरे । जो अमृत अरिज का बरके, अरिज मे उठे तुह जन चरि ॥ को न मान जग हरि के बाकहि । इत उत हाँका दूट कमानहि ॥ धर्म राज गन तादि देराही । अरि कीट केहि लेने माही ॥ दो० धर्म राज गन करत है । हरि को बाका द्वेषि ॥ पद्मस्नान दास हरि भजन कद बारहु बार बिनेपि ॥ इत्यादि ॥

×

×

×

×

विषय—लोकोक्तियों के प्रयोग के साथ भक्ति आदि का वर्णन ।

संख्या ३४० डी. विरह सागर, रचयिता—पहलवानदास (भीकी पुर,

स्तामक), कागज—सफेद, पत्र—७०, आकार— ८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—

१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७००, पूर्ण, रूप—अच्छी, पद्य, लिपि—नागरी,

रचनाकाल—स० १८५१ = १७९४ ई०, लिपिकाल—स० १९८० = १९२३ ई०,

प्रासिस्थान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पांडे, ढाकघर—तिलोई,

जिला—रायबरेली ।

आदि—दो० गुरु कर्ता कदौं प्रथम जोरि पाणि सिर नाथ । लोहा ते कंचन करै,
प्रीति प्रतीत द्वाय ॥ सो० चारि वेद मंह लीक, पद सेवत कल्याण मय । कबहु परं नहि
फीक । द्दमान हि परतीति जे ॥ सत गुरु तुम समरस्त, श्रुति भापत चारिहु युगन ।
देहु नाम सत करत, पहलवान दास विनती करै ॥ चौ० जै जग जीवन सन्त्रय सांई । को
जग दूसर तुम्हरी नाई । निज जन जानि दया प्रभु कीजै, विरह सार सुमिरन मोहिं दीजै ॥
वदौं दूलन दीन टयाला । सत मणि तिलक जासु के भाला ॥ जेहि की कृपा भजन कछु
होई । उपजै विरह नाम कै सोई ॥ सत गुरु सिद्धा विनय सुनाऊँ, देहु ज्ञान कछु कीरति
गाँऊ । गुण अवगाह अहैं प्रभु तोरे, नाहिन ज्ञान बुद्धि कछु मोरे ॥

अत—दो० कथा संपूर्ण कृष्ण रव, मोर ध्वज को ज्ञान ॥ सुन अजुंन ध्रमराज सों,
हृदय कीन परमान ॥ सो० निज पुर गे ब्रम राय । कृष्ण चरण उर राखि कै । दूतन कथा
सुनाय, विविधि भौंति समझाय कै ॥ चौ० सुनि मन दूतन कीन विचारा, नृपहिं सराहत
चारहिं वारा । शुभ कीरति अध मंदर नाशनि । गिरजा सुनहु सुज्ञान प्रकाशनी ॥ कुमति
विधंसनि सुमति सुधरनी, जन मन भावन भव सरी तरनी । मगल करन अमंगल हरनी,
मोह नशावनि पातक हरनी ॥ उपजै ज्ञान सुनत सत वानी । श्रोता वक्ता हृदय भवानी ।
हरि कीरति हर उमा ते वरनी । राव मोरध्वज कै जस करनी ॥ सुनत कथा गिरि राज
कुमारी । हृदय हर्ष चख भरे सुवारी । धन्य २ तुम धन्य सैन अरि । कहत प्रेम रव उमा
चरन परि ॥ हरि कीरति हर उमहिं सुनावा । पहलवान दास सुनि निज मति गावा ।

X X X X

दो० दीपक टिनकर, चन्द्र छवि, जेहि घट एकौ रूप । पहलवान दास ते ब्रह्म सम,
हरि भक्तन महं भूप ॥ इत्यादि ॥

X X X X

विषय—नाम की महिमा तथा भक्तों की कथा का वर्णन ।

संख्या ३४१ ए दधिलीला, रचयिता—परमानंद, कागज—देशी, पत्र—५,

आकार— $६\frac{३}{४} \times ५\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १८७५ = १८१८ ई०, प्रासिस्थान—

श्री रमाकांत त्रिपाठी 'प्रकाश', ग्राम—बडा, ढाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गनेस जी सहाई ॥ दधि बेचन चली ब्रज नारी । जहँ जुड़व कदंब की
छाहीं ॥ बँटे प्रभु तेहि मग मांहीं ॥ सखीरी गेइरी पेलति आइ ॥ तव कृष्ण जी मुरली

बजाई ॥ इति बेचन बन्धी प्रथम बासा । तहाँ बीच भिके नैव काल ॥ बँदरी गुजरिया इति
 पाना ॥ गहि अन्दस रोखई काना ॥ तँ छौंदि गुमान गँवारी ॥ पारौं कंच कंचडी सारी ॥
 सब भूपन सेवई पुनारई । मरकी इति बई सुनई ॥ तुम बहुत किये लंगराई । छोरुं
 गहि नैव दुहाई ॥

अथ—जो चाहो सो कर कीजै । प्रभु बिपा अपनी कीजै ॥ हरि देवि गुजरी रति
 मानी । ईसि बोले सारंग पानी ॥ छंद ॥ ईसि बोले सारंग पानी सुंदरि मान रति बस में
 रही । बेरी केसी कुंम कसोती कौन्हा सहम रंग रम भरि रही ॥ करत श्रिया महन मोहन
 कमल भोचन राज ही । दास परमानन्द सोभा सुनत कलिमल भाज ही ॥ इति श्री इति
 स्वीसा संपूर्ण समाप्तम् ॥ मास पदप बही ७ सनत धामर संबत् १८७५

विषय—कृष्ण की इति काल आवांत गुजरियो का इति बेचने जाना, कृष्ण का
 मार्ग में निकला और दान मँगना बाद विवाह होना, अन्त में गुजरियो की विषय ।

सुनया ३४१ वी दबिहीना, रचयिता—परमानंददास, कगज—दूती बादासी,
 पत्र—४ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पद्य, रूप—प्राचीन,
 पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री कृपानारायण शुक, ग्राम—मुंसीगंज कटरा,
 डाकघर—मसीहाबाद, मिठा—कलकत्ता ।

सुनया ३४१ वी दानकोशा, रचयिता—परमानंद दास, कगज—देही, पत्र—
 ६, आकार—८ x ४ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—
 नागरी, लिपिकार—मं० १८८९ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सीतला प्रसाद शिखित, ग्राम—
 मीकरी डाकघर—तंबौर, मिठा—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः भव दान छोला लिप्यत ॥ एक बार राधे जी देवी
 मरियम साथ । बड़या प्रेम उमम्यो द्वियो मुमित्यो मम सुनाव ॥ दो० ॥ कहीं लपी तई
 जाइये जहाँ बसत ब्रजराज घोरस बेचन प्रेम रस एक पंथ तुह कज ॥ भूप भातु
 मुठा मुकुमारी इति बेचन बन्धी विचारी । हिरदे परि अठर प्याना कलि सुमिरत सो
 मगबाबा ॥ जई भूरी कदम की छाही । तह बीटे प्रभु मग माही संग न्वाछ बाछ बहु
 स्मई । तई कलहि कुंवर कम्हारई । नितही प्रति करहि कसोटा । प्रभु देवि ह्मई मन
 घोसा ॥ सपिया दम बारह संग । रूपमान मुठा मुजनीगा ॥

अथ—तय राधा निकट कलि भाई । मुनि कीर्ति चिनि गुवाई । हम दामी अई
 तुम्हारी । तुम अरुन बयनि बनिचारी । धनि जीवन जन्म हमारा । जो पावा वरस तुम्हारा ॥
 एक बेठि बपारि दोकाने । एक बीरा पोकि पवान । जो चाहिय सो भव सोई प्रभु कृपा
 आपनी कीर्ति ॥ हरि देवि गुजरि रति मानी । हरि बास सारंग बानी ॥ छंद ॥ हरि बोले
 सारंग बानि सुंदरि मानि रति रम हई रहे करि कलि कुंजनि छोस कौन्ही सहम रंग रम
 भरि रह । करई श्रिया महन मोहन कमल भोचन राज ही । दास परमानंद सोभा सुनत
 कलिमल भाजही ॥ इति श्री दान छोला समाप्तः संबत् १८८९ साके १७४६ ।

विषय—राधा का कृष्ण के प्रेम में रही बेचने के पहान जाना और राधे में कृष्ण
 जी का ग्वाथों के साथ मिमकर इति दान रुना आदि ।

संख्या ३४१ डी. दानलीला, रचयिता—परमानंददास, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१८, आकार—६ × ३३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्रासिस्थान—श्री उमाशंकर दूवे, साहित्यान्वेषक, जिला—हरदोई ।

आदि-अंत—३४१ सी के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—श्री कृष्ण श्री कृष्ण मित्ती वैष्णव वदी १ संवत् १९३१ साके १७६६ लिखी सीताराम सुकुल । राम राम राम ॥

संख्या ३४२ ए परमानंद विलास, रचयिता—परमानंद (संभल, मुरादापाद), कागज—देशी, पत्र—१५६, आकार—८ × ६ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्रासिस्थान—वावा मनोहरदास, ग्राम—डकरोर, डाकघर—मवड, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ परमानंद विलास लिप्यते ॥ सतो कृष्ण धरम अवतारा लीला वेद प्रकारा । चोर भक्त को चित्त चुराव काम हरन सुख धारा । अग्निरूप अवतार कृष्ण तन छुधा त्रपा धर्त सारा ॥ १ आलम हरन नींद के हरता मिथुन प्रचुत घट दारा । प्रक्तपती कृष्ण हैं जगपति कामिनि के भरतारा ॥ २ ॥ जेती कामिनि कृष्ण पुरुष वर इच्छा रास विहारा । अग्निकुठ में सवही उज्जल जोति पतंगा कारा ३

अंत—खेलत वारह मास छक ऋतु लागी है मेरी औ तेरी ॥ खेल फाग कुरंग रूप वत कामिनि करत वरजोरी । इनसे भाग वचो कोळ गुरु जन ब्रह्म रग डिगरोरी । परमानंद वसु गगन गुफा में शब्द ने शोर करोरी मचाई जग में नित नई नई होरी ॥ इति श्री परमानंद विलास संपूर्ण समाप्त. संवत् १९३० वि० ॥ जै भगवान की राम राम राम ।

विषय—कृष्ण आदि के भजन वा ज्ञान की वारहमासी ॥

संख्या ३४२ वी वहरंगी सार या परमानंद विलास, रचयिता—परमानंद, कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६० = १८३३ ई०, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्रासिस्थान—श्री दीनानाथ मिश्र, ग्राम—फतेपुर चौरासी, डाकघर—सफीपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वहरंगी सार अर्थात् परमानंद विलास लिप्यते ॥ सतो कृष्ण धरम अवतारा ॥ लीला वेद प्रकारा । चोर भक्त को चित्त चुरावे काम हरन सुप धारा ॥ अग्निरूप अवतार कृष्ण तन छुधा त्रपा धर्त सारा ॥ १ ॥ आलप हरन नींद के हरता मिथुन प्रचुत घर दारा ॥ प्रक्त पती कृष्ण हैं जगपति कामिन के भरतारा ॥ २ ॥ जेती कामिनि कृष्ण पुरुष वर इच्छा रास विहारा । अग्निकुठ में सवही उज्जल जोति पतंगा कारा ॥ ३ ॥

अंत—॥ डोरी । मचाई जगमें नित नई नई होरी । सुनके कोळ देव न पोरी ॥ काम क्रोध के कुड वने हैं ममता को रग भरोरी । मचाई ॥ लोभ मोह सवही को गहि गहि वोरत हैं वरजोरी । आमा लप्या जग फगुहारी पीछे फिरत दौरी दौरी ॥ इनसे भाग वचो

यह कि कोई छेद है प्राण विचारी लेखत बारह मास ऊरु भरतु छागी है मेरी भी तेरी ॥
 लेख प्राण कुरग रूप वच कामिनि करत बर भोरी । इतसे भाग बचो काक गुद बच हृत्न
 रग द्विगोरोरी ॥ परमाण्व बसु गगन शुद्धा में शब्द ने शोर करोरी । मछाई जगमें गित मई
 नई होरी ॥ दो० संबत शक्ति निधि बसु गगन शुद्ध बही मनुमास पाहु रंगी भजनाबली,
 परमाण्व प्रकाश ॥ इति श्री परमाण्व विद्यास । चकुरगी सार संपूर्ण समाप्त राम राम राम
 राम श्री स्फुरापनमः ॥

विषय—श्री रामकृष्ण आदि के भजन और होरी ।

राज्या १४३, सोनारी विद्या, रचयिता—रसमदास पाँडे (मगरसी, फैजाबाद),
 कागत—साधारण, पत्र—९, जाकार—१ × ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण
 (अनुष्ठान)—११९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—भायरी, रचनाकार—सं०
 १९०० = १८४३ ई० लिपिकार—सं० १९४६ = १८८९ ई०, प्राप्तस्थान—श्री गवाहीन
 सिंह, ग्राम—बोहर हसनपुर, बाँधर—रत्ना, जिला—प्रतापगढ़ ।

अधि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ गनपति कृपा विधान के, पद बन्धी कर
 जोरि । कृपा करी गिरिजा सुभय, बुद्धि बई यह मोरि ॥ १ ॥ गुदर सदा श्री मर्ण पद,
 बन्धी सहित दुकास । स्वर्णकार विद्या करी, पाँडे परसन दास ॥ २ ॥

× × × ×

तवाहँ रम्ही यह ग्रंथ में, सबकी छपि उपकार ॥ जो पढ़ि गुनि पित चारिहँ, बन्धी
 तिगहँ सुभार ॥ १ ॥ उत्तम मध्यम बीच जो सोना चोरी होय । चादि पई समुसी गुनी,
 ज्ञान सङ्ग सब कोय ॥ २ ॥ उत्तम सोना सुदय है, ताको बुद्धि जानि । मध्यम सोना
 बरद है, मोह राना परमान ॥ ३ ॥ दोषम सोना हस्तु है, बरद शक्ति कहि नाम । सबते
 बीचो स्वेत रग, जाहि रैरामी नाम ॥ ४ ॥

श्लोक—बारह पाई का आभा करै । यही हिसाव रती पर धरे ॥ बई पडदरी अपपाई
 परै । काहेक छेपा करि करि मरै ॥ १०८ जो पृह बीच जो पढ़ि के सोनार से कुछ पाइ
 मिच्छे ती हिन्दू को गंगा की कसम है सुसहमान का कुरान की कसम है ॥ हिन्दू गी पाइ
 सुसहमान सुभर पाइ ॥

दोहा ॥ पढ़ि गुनि समुक्ति विचारि के, कीन्हों पर उपकार । नैक मलिबता के किन्हे,
 मिळ नरक की द्वार ॥ १०९ ॥ सोनारी बोली आना पाई के कइत है वेप्र) राय)
 फौक १) सुय १) कुसक १) शैत १) मुक्ति २) कोन २) सहाय २) एक सहाय २) दुकाय २)
 उपसाय २) फौकलव २) सुयलाय २) धान १) मान / सोहन / एक
 बाई) बजबा १) इति सोनारी विद्या समाप्तम् शुभ मस्तु सम्बत् १९४६ ॥ सन् १९४७ ॥
 धिमाय बही ११ लिप्यते बलिबन्त प्रसाद विधायी श्री कृष्ण के है ॥

विषय—(१) पृ० १ से २ तक—मंगलाचरण ग्रंथकार परिचय ।—

गुदर सदा श्री मर्णपद, बन्धी सहित दुकास । स्वर्ण कार विद्या करी, पाँडे परसन
 दास ॥ उत्तर दिशि एक भय मई, पंथितपुर तदि जान । बैंगस्य की परिचय विद्या, पंच

कोश परमान ॥ ठीक परगना मगरगी, जानत है मव जोय । तहां हमारो वाग है, निरुट
अवच पुर जोय ॥

अथ निर्माण काल :—

संवत् नभ मो नट विउ माच कृष्ण तिथि काम । दिन बुववार विचारि के, चौथ
जाम अभिराम ॥ तवाहें रच्यो यह अथ में, मवको लगि उपकार । जे पदि गुनि चित
धारिहें, वन्टं तिनाहिं सोनार ॥ स्वर्ण भेद, चांदी भेद, मिलावट की पहिचान, माल मो ताने
च सुलाखने का विधान मोनारों की मिलावट सर्ववी चालाकियो ।

(२) पृ० ६ से पृ० १८ तक—स्वर्ण में मिलावट अर्थात् टाके का विचार, स्वर्ण
गलाने का विधान, चांदी के गलाने का विधान, मोने में रंग देने की विधि, चांदी शोधन
विधि । सोनारी बोली, सोना चांदी की अन्य विधिया । चांदी का प्रमाण बचन, आना
पाई की सोनारी बोली ।

संख्या ३४४. ऊपा चरित्र, रचयिता—परशुराम, कागज—देशी, पत्र—५०,
आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुपट्टप्)—६५०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७२ = १८१५ ई०, प्राप्तिस्थान—
मनियनमिश्र बंध, सुभानपुर जि० कानपुर, वर्तमान ग्राम—गगापुर, डाकवर—लहरपुर,
जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ ऊपा चरित्र लिखने ॥ चौ० ॥ चंद्र मास गौरी व्रत
होई । मकर त्रिया पूज सब कोई । वाना मुर की राज दुलारी । ऊपा नाम मो प्रान पियारी ।
विधि संजोग ताके मन आई । सो चलकै रानी पे जाई । मोको विदा देहु जो माता । हीं
पूर्वो संकर सुपदाता ॥ रानी विदा कुमरि की कीनी । पुष्य कमरु सामिग्री दीनी ॥ दो० ।
धूप दीप नैवेद्य लै सग सपा दल साथ । फूल दल पती फल जती केशर वटन हाथ ॥

अत—दो० । परशुराम की वीनती जौन ध्रवन सुनि लेइ । परम दयाल कृपा करै
प्रभु इतना फल देइ । पुन ले अपनो हकहो अलपे मतले मोइ । गुन जन सभै सुधारियो
हीन जहा बन्धु होय ॥ इति श्री अनुरुद्ध ऊपा स्वपन प्रसंग समाप्त. संवत् १८७२ जेष्ठ कृष्ण
९ गुरु लिपिते नंद राम ॥

विषय—ऊपा और अनिरुद्ध का स्वप्न और विवाह वर्णन ।

संख्या ३४४ प. रामकलेवा रहस्य, रचयिता—पर्वतदास (ओरछा), कागज—
देशी, पत्र—२०, आकार—१२ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुपट्टप्)—
६६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७२७ = १६७० ई०,
प्राप्तिस्थान—श्री शिवदत्त वाजपेयी, ग्राम—महरानिया, डाकवर—मिश्रिख, जिला—
सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राम कलेवा रहस्य लिप्यते ॥ रागिनी काफ़ी
सुनिये रहस्य या श्री रावो सुपदानि । प्रात सभै रवि उदित भये सति नौवा जनक पठावो ।
चारिउ कुंवर राय दूसरथ के तुरत बोलि लै आवौ ॥ गवनिन चौबा गा जनवासे नृप दूसरथ

के आई । चारिड कुंवर महा कीसठ वर चले कलेवा प्ये ॥ मुनि मृग सपा अनुज हठ
 रामहिं आनुर स्थिय उर काई ॥ जाठ सकल मिथि पाम कलेवा पठये जनक बोलाई ॥ पितु
 अनुसासन पाप कृपाविधि चधिभे चारिड भाई । सम बे राज कुमार टबीसे ते सप चले
 सिवाई ॥ कोठ स्वदन कोक तुंगन आयु रचिर मुप पाठा । अनुजन सहित कसत रघुनेहन
 कोटि मद्रक मद्र पाठा ॥ स्वदतादि मद्र भ्रायत अनुमुठ परम विपित्रित कीन्हे । जग
 मगात सब जदित जवापन विपकर परत न चीन्हे । गोमुप भादि बुबुमी बाजत पम्ब
 सरम सहलाई ब्यवत जानि राम कई सपिवां गधी सुगंध सिचाई ॥ येके चही अद्यारिम
 वेरे येके मुभग बुरोबां । येकन लुचति बुबारेन झाँके हरसन भास अपारा ॥

अंत—मृग श्रवतास आदि रघुवर लघु विधि हीन्हे ग्यारी । गुरु बलिष्ठ कौमिक समेत
 मृग भ्रम ताप सब भारी ॥ बहो विविध रूप्यो हमी मृग उन कैसे के जाग्यो । हम कपु
 जानत कपु तिछ तिछ उनसो सकक बपानी ॥ कोठ बहु लुति सर्वश करे कोक सतामद
 ठब पायो । बघों कई परम कौनुकी मारद तिन सब भेद बतायो ॥ भापित राति मुनि मृग
 कौनुकी आनुर तिन्हे बोसक ॥ चित्र चिन्ह ततकरक मिरे मई जपपि चोप छोड़ायो ॥
 रचना रुपि हमे समा मुनि अरु सब सकक बराता मचो हांस आनंद काकाहल समुसि
 परे नहिं बाता ॥ यहि प्रकार आनंद हुहु विनि परम विरास सोहावा सजन समुसि केव
 अपने मन यथा स्वमति में गाबा ॥ अस मन इहे प्रेना करि अरु अस मन मतिहिं लथायो
 परबत राम संत यह रज सिर रापि भरित यह गायो । दोहा ॥ जे मुनि हिं करि प्रीति यह
 यं कहि हिं कहि भाब । तिनका राम विरास यह करिहे सुरत प्रभाव ॥ सीताराम रहस्य यह
 भक्त रसिक मुप मूळ प्याव मनन करिहे बेइ तिन्हे वंपति अनुकूल ॥ मति हरस्य श्रंगार
 रन थव रस मिथित स्वाद जे यहिे जधिई तेई सिय रघुबीर प्रसाद ॥ कई मुन जे प्वाह या
 साबधान करि साब सांत होप सबों सुन दिन दिन मंगल आव ॥ इति श्री राम कलेवा
 रहस्य सपूर्ण समाप्त संवत सप्रहरी सपाहस बवार शुक्र बुधवार छिया राम रस जानियो
 साबु मंदक आगार ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय—श्री रामचन्द्र जी का जपन समुद्र के पहां कलेवा करता ।

संख्या ३४५ थी रामकलेवा रहस्य या जनक राम संवाद, रचयिता—पद्यतदास,
 कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१६×४ इंच पकि (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनु-
 प्दुप)—४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, छपिकारक—सं० १९११ = १८५४ ई०,
 प्राप्तस्थान—श्री गंगादीन मुराद, ग्राम—कछमनपुर, बाकुर—मिथिल, विरास—सीतापुर ।

आदि—श्री गणैसायनमः ॥ जब राम कलेवा रहस्य जबक राम संवाद छिप्यते ॥
 जनक आदिजन प्रनाम कीनि प्रमु मुनि द्विज गन बंदे । तेहि प्रकार भरतादि सपन सब
 क्रियो अन्य समिबंदे ॥ यहि अचनर पुनि सबहिं यथा चित बैदाये महिपाळा । आदर
 भाव कीन बहु साठिन यथा विहित जप काटा ॥ फिर रघुवर सति बदन विच्छोकत भरि
 जाये दग बीरा । कइम छोने कपु नहिं कहि भायो जायो बृद्धि सरीरा ॥ औरी सब समाज
 अनुरागी सबहिं दद भद्र मोरी । एक जनक अनु अमित जनक भये रघुवर रूप
 बहीरी ॥ तनुपरि सतामद मन टनि करि कयो मुबहु रघुराया । विन जप तप भव दान मुकम

भणु राम सर्वे निज टाया ॥ अहो भाग्य हम अहो भाग्य सय मय जे तत्र द्रमन पाये ॥
ना तर तुम्हे सिवादिक जोगी बहु विधि हृदय हुरायो ॥

अंत—पुनि रघुवर कर जोरि वचन कहे आयमु होइ तो जाई बडी विलंब भई
ह्यां आये गुर मुनि पितु न रिसाई ॥ सुनत वचन नृप मन मुमकाने मसुझि राम यह
लीला । ते वड़ ते बड होय सकल विधि तेहि अनुहरत सुसीला ॥ जो जम काल मृत्यु
मय दायक ब्रह्मादिक भयकारी । सो डेरात गुरु पितु भिपि सुत इव यह अचरज अति
भारी ॥ पुनि समुझे रघुवीर चिरट की परपरा श्रुति गावैं । भक्त विवम ह्यै सब कुछ
करते भजन प्रभाव टिपावैं ॥ तव नृप विहंसि कगो रघुवर सों तुम्हें कहैं किमि जाऊ ।
कव तन चाई जीब विटोपन पलकांति रोकिय काऊ ॥ अथ श्री राम कहेवा रहन्य जनक
राम संवाद संपूर्ण समाप्तः लिपतं भूरे मुमर्हा पटनार्थ मीतल प्रसाद दीवन । संवत

१९११ श्रावण शुक्ल बुधवार तिथि त्रितिया ॥ श्री राम राम राम

विषय—राम कलेवा के समय जनक और श्री रामचन्द्र जीका वार्तालाप ।

संख्या ३४५ सी. पटरहस्य या रामचरित्र, रचयिता—पर्वतदास, कागज—देशी,
पत्र—३५, आकार—१४ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—
१०००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९११=१८५४ ई०,
प्राप्तिस्थान—श्री विष्णु भगोमे, ग्राम—फफारा, ढाकुर—धौरहरा, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ पट रहस्य लिप्यते ॥ प्रथम ज्योति रहस्य ॥

लाल इन देविन के लागी पाय । कर जोरों पद जोरि लाडिले विनै करों मिर नाय । ये
हमारी कुल पूज्य भवानी तुम्हे उचिन ह्या आये । परमानद होय दोनों टिसि इनके पूजि
पुजाये ॥ ना यह रीझ जप तप संजम ना कहु गाये बजाये । केवल विनै मात्र कर जोरे
ते द्रवती सरल सुभाये ॥ सर्वो विघ्न प्रमत्त मोट प्रद कहनिहि वनि मति भाये । वेगि
पाय परि दीन भाव धरि करिहै क्रोध विलमाये ॥ प्रसु हंसि कहा कैसी है देवी दैती वदन
दुराये । क्रोध प्रसन्न जानि कम परि है विना स्वरूप लपाये ॥ यह हमारि ग्रह गोचर माया
द्रवहिन अंग देपाये । दूरि रह्यो जनि छुयो धोखेहु तुम हौं विना नहाये ॥ बरवस राम
गह्यो धूवट पट हमरी पटुप चोराये । इन देविन के भाग्य मराहौं ह्यौं पद लेत चढ़ाये ॥

अंत—अब मैं पाइ चुक्यो ठकुरैइन्यो जो हमका इन चीन्हा । सुंदर वदन
सुकुमल नैनन मोंहि चितै हंसि दीन्हा ॥ अब चहूँ तव मागि लेहौं मैं मोर कहु नहिं
जाई ॥ जस जय इनकी वृद्धि होइगी तस वर वड़ा सवाई ॥ सदा अचल अहिवात रहै
अरु होय पूर धुरधारी । प्राण ते अधिक पतिन का प्यारी होय अमीस हमारी ॥ जन
पर्वत जे परम उपासक रस मायुर्जहि जाना । रहस्य ध्यान ते जनित पाव सुप होइहि
मगल ताना ॥ नीताराम विवाह सुभग यह सबका परम हुलासा ॥ राम कृपा सो रहस्य
कह यह सो जन पर्वतदासा ॥ इति श्री चतुर भगिनी रहस्य समाप्त स० १९११ वि०
श्रावण शुक्ल बुधवार तिथि द्वितीया लिप्यते धूदेराम मुसही ॥

विषय—श्री रामचन्द्रजी का व्याह ॥

संख्या ३४५ डी पट रहस्य, रचयिता—पर्वतदास, कागज—देशी, पत्र—२५,
आकार—१२ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२५, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्म, सिद्धि—नागरी, सिद्धिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री सिद्धरत्न सिंह जी, ग्राम—रामपुर मजुरा, बाक्यर—बसोरा, जिन्हा—सीतापुर ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ पद रहस्य लिप्यते ॥ सात हन वैपिन के स्वर्गी पाय ।
कर जोरों पदजोरि काटिके विनै करी मिरमाय १ ये हमारि कुक पूज्य भवानी तुम्हें उचित ह्यो
आये । परमानन्द होय दोर्नी विस्ति इम्के पूजि पुजाये ॥२३॥ मा पे रीसी अथ तप मंत्रम ना कछु
गाये बजाये केबल विनै मात्र कर जोरत दबलि सरल सुभाये ॥ ३ ॥ सर्वोक्तिम प्रसन्न मोद
प्रद कइ तिह दनि सतिभाये बेगि पाय परि हीन भाव धरि करहि श्लेष विस्रमाये ॥ ४ ॥

अंत—सदा अचक अहिवाल रहे अथ होय पूर बुखारी प्राय ते अधिक पतिम का
प्यारी होय असीस हमारी ॥ अब पकत जे परम अवामक रस माबुर्हि जाना । रहस्य
प्याय ते अनित पाव सुप होई मंगल छाया ॥ सीता राम विवाह सुभग यह सबक परम
हुम्माया रहस्य रहस्य कइ साजन पर्वत बासा ॥ इति पद रहस्य संपूर्ण ॥ दोहा ॥ संवत्
बोमईम सूर्यगारह आबज द्युः सुखवार । तिथि दितिया सोइ जानिये किया गुंजबधि अगार
किप्यने पूरे मुसरी पटनाय पं० प्यानदप के ॥

विषय—रामचन्द्र के समुराक में विवाह के समय के रहस्य ।

संख्या ३४५ ई० पद रहस्य, रचयिता—पर्वत दास अगार—दही, पद—२५,
आकार—१४ x ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुपुष्प)—६९०, पूर्ण,
रूप—नवीन, पद्म, सिद्धि—नागरी सिद्धिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—
याबा सिद्धपुरी, काश्मीरी मुहल्ला, कलकत्ता ।

आदि अंत—३४५ ही के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री चतुर्भुजाय रहस्य समाप्त पद रहस्य संपूर्ण समाप्त संवत् १९११ आबज
द्युः सुखवार तिथि दितिया मो जानिये किया जुबली अगार कियते पूरे मुसरी ॥ पटनाय
हीबाम सीतलक्ष्मणाद ॥ राम राम राम ॥

संख्या ३४६ पद अगार अंत गहरण गुण, रचयिता—पठितदास (गिरिपुर
पिसर्वा सीतापुर) अगार—दही, पद—१३ आकार—१२ x १ इंच, पंक्ति (प्रति
पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुपुष्प)—५००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्म सिद्धि—नागरी,
रचयिता—सं० १९३५ = १८८० ई०, सिद्धिकाल—सं १९४८ = १७९१ ई०, प्राप्तिस्थान—
महाराजा श्री प्रकाश सिंह, ग्राम—मन्दापुर, जिन्हा—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पोषी पठितदास कृत अंदा अंत गहम गुण
लिप्यते ॥ दोहा । अम राहु न अंत पारम्ये बेधारयो सात सारदास पठित प्रमु काम बक
जीवन के उचार ॥ श्री० । अब कहीं मय तरंग की धानी । सो सुने गहे होवे जामी भी
धानी । एक मर्म भई अरुण की लीला । रूप बटाही धी बैठे धर्म सीला ॥ पोसे मुसाफिर
सो मग माहीं । कही प्रकृत यह अर्थ कहांहीं ॥ ब्रह्म बीज रूपे बुकिया भई भारी । असे
अर्म तर्क उर में धारी । बाटे बटोही जानि कै ईसा । निमक दधि बरती अगदीमा ॥ यह
सय मम छात्रावी भाषा । बार बार पाबी सो पद भाषा ॥

अंत—श्रीमा नाम अयानई मानी है अब ईम । राम पठित भल धैरियो आयु कहेव

जगदीस ॥ सोरठा । जग को प्रद हे लाज चाल कुचाल जो वनि परं । ज्ञानी धर्म सुभ साज नाही जन्म-भकार्य कियो ॥ दो० । सियाराम के होइ रहै तौ सब कछु छिपि जाय । स्वादु हेत नपरा करै सो पर सूकर स्वानो आय ॥ इति श्री पतितदास कृत अंशा अंश गुण दोष गुरु चेला पतिपतनी पिता पुत्र छल त्याग संग्रह वर्णन शुभ मस्तु सबद १९४८
विषय—अंशा अंश, गुरु चेला, पितापुत्र, पतिपत्नी, छल त्याग ।

संख्या ३४६ वी. देवी जी की स्तुति, रचयिता—पतितदास (गिरधरपुर), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१० X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुपट्ट)—१५०, पूर्ण, रूप—गलित, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाळ—स० १६४९ = १८६२ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी, ग्राम—महापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । श्री देवीभ्यो नमः । अथ पोथी देवी अन्तुति की लिप्यते ॥ दो० ॐ श्री अस्तुति देवी जी सो दाम पतित गुण गाय । अगम अगोचर आदि तू निरपे सब सुप पाय ॥ सोरठा । जननी सब सुप पान वरणि सकै को रूप गुण । सुक्षि करौ वपान सुजन विवेकी हेत निज ॥ चौ० ॥ बुधि बल मातु मोहि कछु नाही । मोपर करौ निज कर की छाहीं ॥ बालक जानि चूक सब मेटौ । सब दुष्टन का बहुरि लपेटौ ॥ मर्दि दुष्ट मोहि रक्षा कीजे । या वकसीस मातु मोहि दीजे । सुक्षि अन्तुति भापौ तोरी । मेटव चूक मातु सब मोरी । अंत—अथ मंत्र पूजन का । ॐ क्लीं मौं उँ षुँ ह्रीं सौं स्वाहा ॥ चौ० ॥ यह सब

मधुमत्ये नमः ८		नटिन्ये नमः १	
जगन्मैत्रेये नमः ७			शक्तिन्ये नमः २
महादेव्ये नमः ६		भद्रायै नमः ३	
	५	४	विमलयै नमः ८
कामाक्ष्यै नमः		विमलयै नमः	

साधन करी सुप रसा प्राद्विती पञ्चमी नर्क को रसा विन स्पन्न कीन सुराठा लाई ई नरक
द्विजो केरे करार्ई ॥ तासा साधन सब सोधि करार्ई गुण इष्ट बस परम पद् पाई ॥ सो
मय ठे कनक कीर्त मीयुष मिये ह्रीं स्वाहा । बरण रुम्बाय सब केरी महाबर्ज पञ्चत मज्ज
देरी । छल पार्जड सब तत्रि जासा । क्रिये पावे सुप हाय निहाका पुनः सो मय ॥ ठे सर्व
जब मना हारिष्य नमः स्वाहा ठे अगण्डि कामहरि स्वाहा ॥ पुनः मय ठे ह्रीं पद्मिनी
स्वाहा । अनेक मय की ई यह बाता । मन्त्र सिद्धि फल इति विवाता । इति श्री पतित
दास कृत इषी अम्युति सन्पूर्णम् शुभ मन्त्रु संवत् १६७९ मिति जेठ सुपरी ५ ॥ श्री श्री
श्री श्री शंकर कृष्णम पती ॥

विषय—देवी जी की स्तुति ।

सुख्या ३४६ सी दोहावली, रचयिता—पतितदाम, कागज—देसी, पत्र—१७
आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुच्छेद)—५००, पूर्ण,
रूप—पंक्ति, पय लिपि—नागरी, लिपिबद्ध—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—
महाराजा श्री प्रकाश मिद जी, ग्राम—महापुर, जिला—मीठापुर ।

आदि—श्री गणैसायनमः ॥ अय दोहावली पोधी पतित दाम कृत लिप्यते हो० ।
मन आनंद रागिये धीरन धर्म विचार । दास पतित सय सायक पार करे कठोर ॥ गर्भदास
के रक्षक सा भबहुं काम ठेपार । दास पतित बोसा माड के बेगि करे प्रभु पार ॥ धर्म
द्विप मय व्याधि हरे यह शोच अरु दास जाय । मय सुप संपत्ति मिसे जबर अमर बर
पाय ॥ धर्म उप साय भजे गुण मय ना भीद उपाय ॥

अंत—महा कमरुबेरीमी धीरहर के रजपूत । सुकर स्वान काग मयो ईशे बगुणे
अवपूत ॥ इति दोहावली पतित दास कृत सन्पूर्ण शुभ मन्त्रु संवत् १६४८ मिति पूम
बरी ६ ज्य मिति इषी सा जियी सेपक का हाय न संक्रिये ॥

विषय—गीति उपदेश आर ईश्वर भक्ति ।

सुख्या ३४६ सी गंगा जी की स्तुति, रचयिता—पतितदाम कागज—देसी, पत्र—
५, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुच्छेद)—१२०,
पूर्ण, रूप—हीमक लगी हुई, पय, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १८९७ = १८४०
ई०, लिपिबद्ध—सं० १९४८ = १८९१ ई० प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश मिद जी,
ग्राम—महापुर जिला—मीठापुर ।

आदि—श्री गणैसायनमः । अय पायी गंगा स्तुति पतित दाम कृत लिप्यते ॥ हो० ।
यह मय जं दिद हाय ततकाल चम पाय । श्री गंगा राधे सरस्वती में भद्र मर्म नहिं
राय ॥ मोरछ । तादी मे शिब धारो नीम जन्क करे अरधनी ई । माई सुनी बरुमीम
चम परिश्रमो भगम से । मो मय ॥ ई ह्रीं श्रीं नं गंगाये नमः हुं च्छु स्वाहा होहा । नर
पति स्वर पति अदि पति बदि चराचर के प ब । दाम पतित प्रभु ह्या गंगा अम्युति अम्यु
गाय ॥ मोरछ । के मज्जम मदिन विचार ग्याय स्वान जो दान गरी । एक बन् तत्रे विचार
कार पार प्रभु पद् बरी ॥

अंत—मुमति मुमीक मुभाब गुण मद्य बई निज मानु । भक्ति पीड गहिरे साधो

मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं
मृगिणं भयान् यथा कालः । विद्युत्तं मन्त्रो विद्युत्तं विद्युत्तं मन्त्रं च । उदकं च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।
मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।

विषय—श्रीरामः श्री रामा मृगिणि ।

संख्या ३४६ छंदः, श्लोकः १०, रचयिता—पद्मिनी, कालः—श्रीरामः, पद्य—३६,
पादाः—१० × ६ छंदः, पद्य (मीरं पद्य)—४८, पद्यमान (अष्टपद्य)—३३६, पद्य,
मन्त्र—श्रीरामः मही भयान्, मन्त्र, श्लोकः—१०, पादाः—६०, छंदः—१० × ६ छंदः, पद्य,
मन्त्र—श्रीरामः मही भयान्, मन्त्र, श्लोकः—१०, पादाः—६०, छंदः—१० × ६ छंदः, पद्य,
मन्त्र—श्रीरामः मही भयान् ।

भाष्य—श्री रामा मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।
मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।
मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।
मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।
मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।
मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।
मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।
मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।
मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।
मृगिणा मही भयान् । तेषां चोदकं पादनि च खडकं मीरं च । श्री रामा मया मृतं मीरं ।

विषय—श्रीरामः मृगिणा मही भयान् ।

संख्या ३४६ पद्य, छंदः—श्रीरामः मृगिणा मही भयान्, रचयिता—पद्मिनी, कालः—
श्रीरामः, पद्य—३६, पादाः—१० × ६ छंदः, पद्य (मीरं पद्य)—४८, पद्यमान (अष्टपद्य)—

१३६, पूर्ण रूप—प्राचीन गणित, पद्य, सिपि—मागरी रचनाकाल—सं० १९३०=१८८०, सिपिकाक—सं० १९४८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रद्योतसिंहजी, मन्सापुर, जिला—सीतापुर ।

भादि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पोषी नक्षत्र राशि बरन बुद्धी कलाफल जोलित श्री स्वामी पतितदास कृत लिप्यते ॥ बोद्धा ॥ गज गंधव सारदा सरस्वती सब देव मनाय । बर्षी माय सिद्धि चौरासी सिपि मुनि से मिह्ला पाय ॥ श्री गुरु प्यास श्री सुपद्व पद पासनीक मिरनाय । श्रुगु भादि कालिदास तपगुज मो पर होहु सहाय ॥ सारदा ॥ ह्रीं गुणबुद्धि ग्यान से हीन करौ कृपा पार्वी बर यह । अक्षर अर्थ बर्ष प्रथीन ग्रंथ लिप्यो जीवन सुप दिव ॥

अंत—श्री० ॥ काव्य नहीं सारा अर्थ अक्षर के हेत । जहां जितो मेर मिह्ला तहां ठमही मो लिपियेत ॥ मत्तकव नय सिपा चर्ही ग्रंथ होय बहु मोर । बाही से अक्षर यदि बनेना पतिता की कपु पेर ॥ श्री० ॥ संदेह एक भारे मई अति भारी । कृपा करिके सो अथ छेव विचारी । बाही नक्षत्र राशि में भये बहु तरे कृष्णदिक भीम भीष्म पवरे उमकी उमरी खोर प्रताप छाया । कहत गुनत भुति वेद अज्ञाओ ॥ सोई रामि नक्षत्र के अथ मई । प्रताप जार उमरी सबे बर्ष न पार्ह । इति श्री स्वामी पतित दास कृत बुद्धी ज्वर पात्रा मुम संपूत । सवत १९४८ मितौ अगहन सुदि १४ जी प्रत देय मो सिपी लेपक को होय न दीजिये ॥

विषय—श्लेषि अथ-भाषा का फलकल भादि ।

संख्या ३४३ जी चोत्रिष्ठ राशि दिन रजसला विचार, रचयिता—पतितदास (गिरपपुर) अगज—दसी, पत्र—४ भाद्यर—१२ × ९ इंच पकि (प्रति गृह)—४८, परिमाण (अनुपुत्र)—१५०, पूर्ण, रूप—हीमक छगी दुई, पद्य, सिपि—मागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, सिपिकाक—सं० १९४८ × १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रद्योत सिंह जी मन्सापुर, जिला—सीतापुर ।

भादि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री पोषी पतित दास कृत लिप्यते अथ जोलित राशि दिन रजस ला विचार लिप्यते ॥ दादा । सुप बुप जग बोहारे निज हेत मेव किया भल के किओ सगहार दाम पतिता प्रभु दियो ॥ भाये गुग अथम अथोरबेर विचार विवेक गये । तेहि सुप मुम ग्यान सिपी न गये जगम अकारय भये ॥ श्री० ॥ रामि लगन के जगम विचारी । ताहि सनपेय से होये सुप भारी ॥ प्रथमहिं करिही लगन विचारा । जगम कर्म के करी सगहारा ॥ मेव लगन के संपाभारी । बुपेहु मुन कामिनी विपारी ॥ मिपुने तु भग मु ग्योही ज्ञानी । कर्म ते बिस्वा चकलता हानी । दादा ॥ विदे पनु पुपबंती कम्पा सुंदरि मुमीछो रूप । मुर्क मर्ष स्वापनी मो बुधि के घने घनपाय्य अनूप ॥

अन—अथ जाके कृत होता ही नहीं अद होइ क बंद होइ गया हो तामी हवाई ॥ सोवा के बीज की गूरी जवापार दूधनि की जर पीपरि वेह बोज की गूरी पुराने गुर मो गोत्री के पाप ता बदा सुप पार्य श्री छः छः मासे मर्ष हवाई लेना भी तीनों के बीज मो

भग लीपनी करे तो ओर वढ़ी गुन हे औ यह जंत्र लिपि पूजि बाधे और बहुत ततधीर

४	७	९	७	०
६	७	७	७	०
९	७	७	७	७

धैदिक मत गार में हे देपि लेत्र ॥ अथ सिट गार
दूल के मत्र ॥ हमेम जपे गुर मत्र सम हे मो मत्र
के श्रीं हुं हां स्वाहा ॥ इति श्री पतितदाम कृत
सर्व ग्रंथोक्ति भोग औ राशि लग्न जन्म विचार
औ पहिल रजस्वला त्रिचार मंपूर्ण सुम मन्तु मंत्रत

१६४८ मित्ती पूस सुदी ६ मी ॥

विषय—भोग राशि, लग्न, जन्म विचार, प्रथम रजस्वला होने के गुण दोष विचार,
कुछ रजस्वला की औपधियाँ तत्र मत्र सहित ।

संख्या ३४६ पृच. रजस्वला रोग दोष, रचयिता—पतित दाम्य, कागज—देसी,
पत्र—८, आकार—१२ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—
२८८, पूर्ण, रूप—दीमक लगी हुई, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—स०
१९४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रसाद सिंह जी मझापुर, जिला—
सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रजस्वला रोग दोष लिप्यते ॥ दोहा ॥ गुर मरण
धर्म व्रत मजम के मिटे जीव के दोष । दाम्य पतित विन छल तजे कौन करे मतोप ॥ पट
तरह से बाझ के दोषा गहि के करी छोडि सब रोषा ॥ भली बात यह कहीं चुडाई ॥ जीवन
का सुप अपनि वडाई ॥ अथ नारी के उलटा कमल होई । तेहि से बीज गहत नहि कोई ॥
सो पारिप रदन औ सीम पिराई । रजस्वला समे में मो लपु भाई ॥ मो स्नान के रोज व्रत
करे प्यारी । वेदोक्त व्रत और पूजा धारी ॥

अत—गुन दोष औ सुप दुप भल के कहव विचारि । दाम्य पतित धर्म व्रत गहो
रक्षक श्री सुरारि ॥ अथ कैसे नसूर घाव गलत होइ ताकी दवाई ॥ कटीलो वन चौराई औ
नोन पीस गरम के के धरे रोज जब लौ न अच्छा होय तौ सही नीक होइगा ॥ इति श्री
सर्व रोग औ बाझ के गुन दोष रोग सुक्षिम और पूजा पर निदान दवाई व्रत विधि संपूरन
शुभ मस्तु सवत १९४८ मित्ती पूस सुदी ११ ॥

विषय—बाझ गुन रोग और उनकी औपधियाँ, पुरुष रोग और उनकी सूक्ष्म औप-
धियाँ, रोग पर पूजा और मत्र आदि ।

संख्या ३४६ आई. रजस्वला रोग दोष, रचयिता—पतित दाम्य, कागज—देसी,
पत्र—८, आकार—१२ × ८ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—
२८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६४८ =
१८६१, प्राप्तिस्थान—श्री विष्णु स्वरूप शुक्ल, ग्राम—बसोरा, जिला—सीतापुर ।

आदि—अंत—३४६ पृच के समान ।

पुष्पिका में 'पूस सुदी ११' के स्थान पर "माव सुदी ११" हे ।

संख्या ३४६ जे रजस्वला विधान रचयिता—पतितदास कागड—देही, पत्र—८, आकार—१२×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुच्छेद)—२६०, पूर्ण, रूप—दीमक लगी हुई, पत्र भीर गय। लिपि—नागरी, किरिमाड—सं० १९४८=१८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृपारामर द्वेष, ग्राम—मुकतामपुर, बाकुर—सिर्घाही, जिम्मा—सीतापुर।

आदि अंत—३४६ पृष्ठ के समान।

पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री सर्वरोग श्री वासु के गुण दोष रोग मुक्ति भीर पूजा पुण्य दान इवाहं प्रथम विधि रजस्वला विधान प्रथम संपूर्ण समाप्त। संवत् १९४८ मिति पून मुदी पकादमी तिथत राम मज्ज दास गुराकिया ॥ श्री गणेशाय नमः सह्याय ॥

संख्या ३४६ के. रमण, रचयिता—पतितदास, कागड—देही, पत्र—१५, आकार—१२×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुच्छेद)—४००, पूर्ण, रूप—प्राचीन गणित, पत्र, लिपि—नागरी, किरिमाड—सं० १९४८=१८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाशसिंह जी, मल्हापुर जिम्मा—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पोषी श्री पतितदास कृत इह इह बल विचार पत्राच्छल सगुर्गीठी शत कामधेनु लिप्यते ॥ अथ मंत्र ॥ ओं ऐं ह्रीं श्रीं म्रीं ह्रीं बद् बद् वाग बानी भगवती सर्वस्व नमा स्वाहा ॥ वाह ॥ पंचो पचार पूजि के मंत्र आ वे के हजार ॥ विशेष ग्रन्थ ई पृष्ठिपे कई पतित शत सार ॥ भडा भस बीचार सब अक्षर से निकरि न्याय गय संघर्ष भीषम पतिधि कृपा माद साप ॥ ऊ उमके सोन है आ उसके है नित्र पास। सेस गणेश अत्रनि मुत् संकर कर हुआम ॥ उहाँ चमी ती सब पने लेई मियार स्वांम। इक्षिण मगध र्यागिये पूर हाय सब काम ॥

अंत—गदी कुमरो भीर है आ कई पू विसराड। दास पतित भावा भाव में सकल पान मुप राड ॥ नाम परे कपु जाय नहीं समाप्य पर कई प्यान। दाम पतित प्रमु महिमा को करि कई पपान ॥ उपके अष्टम निम दिन तइका करु मुक्ति विधास। दास पतित अत्र अमर होय अरुन में दाम ॥ इति श्री पतित दास कृत दोहा छंद कवित्त विचार रमल श्री राह में लिप्या शुभ मन्तु सं० १९४८ मिति अगहन मुदि ४ आ प्रति देही सा ज्यी सपक को दाय न सीत्रिये ॥

विषय—देव, इह बल विचार, पत्राच्छल सगुर्गीठी शत काम धनु, अर्थात् राम बर्षन।

संख्या ३४६ पून शिव रतुति, रचयिता—पतितदास, कागड—देही, पत्र—५, आकार—१२×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुच्छेद)—१२० पूर्ण रूप—गणित, पत्र, लिपि—नागरी, किरिमाड—सं० १९४८=१८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी मल्हापुर, जिम्मा—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः। अथ शिव अमृति लिप्यते। दो०। श्री शंकर श्रीलाम चने अथ पति शर्षी मारि। दाम पतिश श्री बीजनी या मुनियो बही छार ॥ मारम। ई।

गुन बुवि मे थोर मरण आवे की लाज करौ । मानव विनय निहोर अपनी ओर लपि रहे ।
 चौ० ॥ जं जं चढौ सर्य सुर गुर ईशा जावत सृष्टि लो पठ धै मीग । शिवशंकर अस्तुति करौ
 कर जोरी । विघ्न उपाधि हरी सब मोरी । जं जं शंकर संकट के हरना । पाप ताप दुस
 मारि निररना ॥ जं बैलामपती त्रिभुवन स्वामी । सुरागुर मव करय नमामी ॥ जं महादेव
 देवन के देवा । हाँ मति हीन करौ करय सेवा ॥

अत—प्रथमं शिव पूजा अरंभ की मव कहीं विचार । लाभ लाभ मव
 फल टायक मो सुनु निरधार ॥ चौ० । जो तिथि होय सो दूनी कीजं । पंच भी जो
 जित और के दीजं । सो मव जोरि सात के भाग देई । जो वचै ताकर फल सो कहई ।
 एक वचै कैलास में जानी । दुइ में गौरी संग ही में वपानी । तीजे मग में वृषभे मवारी ।
 चारि वचे सभा मत्य मभारो । पंच में भोजन सुप सोभा मानी । पष्टे व्याधि अच्युत
 पीडा धानी । अस्मसाने सप्तमें कुरो गाई । सुनि अस्थाने सुने सब पाई ॥ कैलास में
 जवही शिव होई । सो पूजा सुप समह करोई । गोरिठ समीप सुपी वताई । वृषभा रुद्धे
 सबहि मिलाई । मभा दैठे सतान ही लीजे । भोजन भोजन फल मो दीजे । व्याधि समै
 शिव पूजा जो धारी । होवै दुपी सुप अफल कहारी । दो० । मव विचारि शिव पूजा करौ
 मानी कही सुरारि । कहै पतित प्रथ मत सब रक्षा होइ तुम्हारि ॥ इति श्री पतितदास
 कृत शिव अस्तुति पूजा विधि सम्पूर्णं सुभ मस्तु संवत १६४८ मिति पूम सुदी ६ ॥

विषय—शिव स्तुति और पूजा विधि ।

संख्या ३४६ एम. तत्र मत्र जंत्रावली, रचयिता—पतितदास, कागज—डेगी,
 पत्र—४४, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—
 ११५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन गलित, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४९ = १८९२
 ई०, प्राप्तस्थान—महाराज श्री प्रकाश सिंह जी मत्लापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ पोथी पतित दाम परमानन्द—कृत पद्य प्रयोग सर्व
 तरह के जंत्रावली मत्र तत्र की लिप्यते ॥ श्री पोथी जन रक्षक सार ॥ चौ० । जैसे पूजि
 तिआ वनि आई । प्रेम प्रीति परतीत दिवाई ॥ सो फल मिलि हई बहु भाती । सिट सिवा
 वाक्य झूठ नहिं जाती ॥ गहाँ हैं याही बहु फल टायक । विविधि प्रकार पूजै सो लायक ।
 दो० गुरु इष्ट सत ध्यान करि अरु दुविधा छोंडि पापड ॥ निस दिन रक्षक सदा धै विघ्न
 उपाध्य पेदैलें दंड ॥

अत—दोहा ॥ जथा शक्ति जहं लैबुधि रही सो लिपि कीन पदार । श्री गिड मातु
 कृपाते सेवक को करई उवार ॥ गुनी वही अंगुन में गुन मन्ये गुन में अंगुन कंते इहं कूर ।
 मले वृद्धि जल गहि करै ते हैं सायर ममरय सूर ॥ दाम पतित प्रसु सब से कहिता आठौ
 अग कर जोरि मले मम्हारि के कीजिये चूक छिमा के मव मोरि ॥ सौरडा । कारन कारज
 फर्त्ता के हाय । जो किमान से बोवत वनै सुफल करै सब रघुनाय दाम पतित वेदन मत
 भनै । इति श्री अयरवन वेद श्री रुद्र जा में लै सर्व ग्रंथोक्ति सर्व मुनिन मत श्री शंकर
 पार्वती संवादे पतिचदास परमानन्द कृत संपूरन सुभ मस्तु संवत १६४९ मिति चैत्र सुदी
 ११ । श्री राम श्री राम श्री राम ॥

विषय—मंत्र, मंत्र, तंत्र बणव ।

संख्या ३४६ एन वैद्यक कल्प, रचयिता—पतितदास अगत्र—साधारण, पत्र—
५८, आकार—१० ३/४ × ६ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११ परिमाण (अनुपुपु)—
६५७, रूप—बहुत प्रार्थनी, पत्र और गद्य, किरपि—नागरी, किरिकस—सं० १९३९—
१८८२ ई०, प्राक्षिप्तान—श्री छद्मी नारायण मिश्र, ग्राम—पूरा कोकनहर, बाकपर—
माधोगंज, बिछा—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पतित दास कृत वैद्यक कल्प सिद्धते ॥ श्रीपाई ॥
लीनो सुग रीषि मुनि मे देवा । सत्य धर्म अथ गुणधर्म के सेवा ॥ काम धामि बोसधि नित
धारे । पाही से मुक्तस मये ज्यारे ॥ आयू तेज और बरु भारी । मे बज्रांगी न क्येई सके
माती ॥ सत्य गायत्री शुद्ध तप करता । सर्वे धर्म रूप सेवा करता ॥ दाहा ॥ ह्रीस कल्प धारै
पकात है, बहु विधि करै विचार ॥ संक्रम के आत्म परमात्म करी, अह करै संसार ॥ १ ॥

अंत—वार्तिक ॥ दुई गहरी बहुषी कटुदितो, कृष्णा स्वर्गधा वाळा पट्टी बाग
बला विद्वारि भूसली कृष्ण और कंस कुशी राम रिचा ॥ ये सब समझी सेह ॥ ठाहि हूनी
पीड सीं दे देई ॥ कासा तिरु सम के पाई ॥ विजया अक सोधि मिश्रई ॥ सबकी बरोबरि
सककर गेरि शुद्ध के पाइ मानि छे मेरी ॥ दिन दिन गुन गुण देपारई ॥ विजया अक्षय
रूप है माई ॥ रक्त विकर सबोगि रोग ॥ बचासीर आदि भागे रुप के योगू ॥ मरुभुमी
बई बीष्य बरु मे भारी ॥ मूत्र कर्क प्रमेह छर्ष निहारी ॥ हर हनेस जे पह पाई ॥ दास
पतित गुण कइत सजाई ॥ भागार्थन प्रन कंसो कावो ॥ मये अजीत रूप बरसायो ॥ दोहा ॥
पचापुत्रई शुक्र मिहै, गहन गही श्री महाराज । दास पतित नमार्थन के सुधरि गय
सब काज ॥ ११७ ॥

× × × ×

दित दास पतित भाषा कृत वर्णिते संप गुनी संपन्न संजमी होइ है सी
संभारि सुधारि है मम होयो माई विहिते ॥ छम मस्तु ॥ मिती वार्तिक कृष्ण ॥ ८ ॥ शुक्र
बासरे ॥ संवत् १९३९ ॥

विषय—(१) पृ० १ से ६३ तक—बीपथि के काम भीपथि जाने की विधि,
मंत्र और स्वावादि का निर्णय, ज्योतिष्मती मंत्र, पुनर्नवा कल्प, एक पलास कल्प, सेत
पलास कल्प, कृष्ण हरिद्रा कल्प, रोहिणी की विधि स्वामय विधि, मंत्र, धाकमली कल्प
एक सैमक गुण, काक जंघा विधि, क्षीरक्षिप्त कल्प, करंज हुर्मर्ष पचायी, मिर्गुंही करप,
जाई मादमी कल्प, मगरे कल्प, भूमसी कल्प, मुंठी कल्प, विप्रक मंत्र, अमलक्री कल्प ।

(२) पृ० ६४ से ९३ तक—रक्त गुंजा कल्प, श्वेत गुंजा कल्प, मुंड कल्प, रोहणी
विधि, अतोड कल्प, कटु लंकी कल्प, परंड कल्प ।

(३) पृ० ९४ से ११६ तक—नयम मयूर विलाके महाईंधी कल्प, प्राक्षिता विधि ।

संख्या ३४६ झो. निरुत्तर विनय, रचयिता—पतितदास, अगत्र—देसी,
पत्र—२० आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुपुपु)—

७२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन गलित, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी मल्लापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पतित दाम कृत पोथी विश्व रूप विनय लिप्यते ॥ गणपति इष्ट मन्वावी फल दाता मिरदार । दास पतित तौ सरन हे कर गहि करौ गहार ॥ गुरु आदि सब श्रिष्ट को विनै करौ परनाम । भूला विमरा अक्षर पूर करौ मम काम । मम मति स्वल्प अगाध पद अस कछु दीजै रग । भाप्यो विने जु ग्रथ की पठ न होइ कहु भग ॥ चौपाई ॥ निरकार के चरण मनाई । जाकी शक्ति रही जग छाई ॥ है साहेव वह अजब पेलारी । कारण करता फिर है न्यारी ॥ आप सुधरमो फिरि अपकारी आपुई चेतै फेरि विसारी ॥ उसके पेल है अैसे अजूवा । लपि के पावै अति बहु पूवा ।

अंत—जो कछु है नाय कर अरपन सहित सरीर । दाम पतित कछु वस नहीं जानै श्री रघुवीर ॥ अस्तुति अरजी अगम है हारै नैम महैस । मति बुधि हीनी मोरि है भई गो गुरु उपदेस ॥ भूला विसरा अक्षर अदल वदल जो होइ । चूक हमारी छिमा करि जोरि मिलावै सोइ । जितनी सृष्टि चराचर विनै करौ सिरनाय । दास पतित पर दया करि सब या चूक मिटाय । जथा परति पोस्तक लिपे सो अक्षर अस जोरि पढ़न हार को अरज है मोहि न दीजै पोरि ॥ जो पढ़ि यहि मत चलै अजर अमर सो होय । रूप सरूप में सदा अंत अनंत में जोय ॥ गिरधर पुर इटीया वस ले होइ गयो वीज विकार साधूत्वा गर्द मल सम इनसे न कवहु उपकार । इति श्री स्वामी पतित दास कृत विश्वरूप विनै संपूर्णम सुभ मस्तु संवत् १९४८ मिति पूस वदी १४ जो प्रति देपा सो लिपा हमै न दोष दीजै ॥

विषय—भगवान की महिमा और विश्व स्वरूप जगन्नाथ जी से पतित दास की प्रार्थना ।

संख्या ३४६ पी. जात्रा गुण, रचयिता—पतित दास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५२, परिमाण (अनुपट्ट)—१९०, पूर्ण, रूप—गलित, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४९ = १८९२ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा श्री प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ जात्रा गुण लिप्यते ॥ दोहा । अब जात्रा जोग गुण सब भापौ गाय । चलै पनै भूठो नहीं दास पतित समुझाय चौ० ॥ दिन तिथि दिशा लगन निहारी । चद्रमादि सत सर्व संहारी । आनद जोग आनद देई । पक्ष एक में लक्ष्मी मिलई । अस्वादि शगुन जो मग पाई । सर्वों कार्य सिद्धि कराई । काल दइ कछु हानि करावै अष्टादश दिन ग्रथ यह गावै । कछु द्रव्यउ जात हेराई अब तीसरे कै यह गाई । धून्ने वीस बरी में दुप जानी । कितौ दिन सचाइस में मानी । धानी सुप फल बहुत देई । दिन सचाइस थाह धरेई । देवता सुजन के दरशन पावै कार्य सर्वों सिद्धि करावै ॥ सौ में सुप सांति प्राप्ति होई । दिन इकइस में सिद्धि मिलोई । ध्याक्षे रिद्धि विनास ही जानो सिद्धि काज सोउ होवै हानी ॥ दिन इकान १ वीस गाई । प्राप्ति सुप सोउ हेराई ॥ धुजा राजा आदर कराई । दिनान्प्रशम वी से गनाई ॥ लक्ष्मी वस्तु दोऊ कछु पाई श्री वसे श्री सुप दोऊ लेई ।

मंत्र—अथ आर्षद्वयं विना मन्त्रव्ययं योगं युज ॥

	पथ	सुमन्त्र	उत्तपत्त	सुसु	काग	सिदि	सुम	असुत	सुसु	गद	सार्थग		
शदि	म०	पू	उ	ह	मि०	स्वा	वि०	उसु	ये	मू	पू०		
सु०	भा०	पू	पु	अस्ते	म	पू०	उ	ह	वि	स्व	वि०		
सुह०	म	ह	से	ह	भा०	पू०	पु	अस्ते	म	पू	उ		
पु०	पू	उ०	रे	अ	म	ह	रो	सु	भा	पू०	पु०		
मं०	अ	अ	प	म	पू	उ	रे	म	म	ह	रो		
सो०	ये	मू	पू	उ	अ	म	प	शा	पू०	उ	रे		
रदि	वि०	स्वा	वि०	असु०	ये०	मू०	पू०	उ०	अभि	अव	प०		
	आर्षद्वयं	काकईष	भूम	पाठा	सीस्य	प्रांस	हृदु	अभिसाक्य	बजू	सुहृद	अथ	मित्र	मायस
समि	स०	पू०	उ०	रे	अ	म०	ह	रो०	सु०	भा	मू	पु	स्ते
सुह	उ०	अ	म	म	शा	पू०	उ	रे	अ०	म०	ह	रो	सु
सुह०	सु	ये	मू०	पू०	उ	अ	मय	प	शा	पू	उ	रे	अ
सुप	ह०	वि०	स्वा	वि	सु	ये	मू०	पू०	उ०	अ	म	प	स०
मं०	स्ते	मा	पू०	उ०	ह०	वि	स्वा	वि०	सु	ये	मू०	पू०	उ०
सोम	पू०	भा०	पु०	पू०	स्ते	मा	पू०	उ	ह०	वि०	स्वा०	वि०	सु
रवि	अ०	म०	ह०	रो०	सु	भा०	पु०	पू०	स्ते	म०	पू०	उ०	ह०

इति श्री परित्त नाम ह्यत आशा फल सम्पूर्णं सुम मन्त्र मंत्र १९४९ वि० ।

विषय—आशा के ह्यत अह्यत अह्यो का विचार ।

संख्या ३४७ ए. भवरागीत, रचयिता—प्रागनी, कागज—त्रेथी, पत्र—३५, आकार—५ X ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६५ = १८०८ ई०, प्राप्तस्थान—आनन्द भवन पुस्तकालय, यिमवाँ, जिला—मंतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनम राग धनामिरी ॥ आयसु दीन्हो सपा सुजानहिं स्यंदन चढ़े सिधारे ब्रज को सुधि रावरे आनहिं । कैमे है जसुदा जननि जिन पालि कियो परवीन । मोहि अछत वह होत होहिगी पर पूतन आधीन ॥ गहियो पांय नंद वावा के कहियो पूहे सदेसो जो तुम कियो महाकृत हमको गनि न सकल गुन मेसो । समाधान कीजो गोपिन को दीजो निर्मल ज्ञान । कहियो जोग जुगति सो प्रागन त्रिकुटी सजम ध्यान ॥

अंत—राग केठारा ॥ ऊर्ध्व तोसो कहाँ निरतर निज भगत मोहत है ॥ वेदातीत कोई नहि जानत यह हमारो मत है । हीं निलेप निरंजन निगुन कारन में वधु धारो ॥ कर्म रहित अपनी दृष्ट्या ते प्रगतत हीं जुग चारो ॥ देह अदेह तकन है मेरो ज्ञान दृष्टि कै कोऊ त्याग देह बहुरि नहिं पार्थ जनम जगत में मोऊ ॥ यह मत है देवन को दुर्लभ गुप्त हिये सो रापि प्रागनि तोसो बहुरि कहूगो दये पृकटदमि नापि ॥ इति श्री भौर गीता समापितं भवत १८६५ आसाढ़ मासे सुकल पठे पृकटदस्यां सोमवासरे ।

त्रिपय—श्री कृष्ण का ऊधव द्वारा ब्रज में सदेसा भोजना, गोपियों को जोग जुगति और निगुन ध्यान की शिक्षा आदि । ऊधव का सदेसा कह कर लौटना और श्री कृष्ण से ब्रज की दशा बतलाकर उनको ब्रज जाने का आग्रह करना । श्री कृष्ण जी का अपना और गोपियों का भेद बताना और ऊधव को ज्ञान उपदेश ।

संख्या ३४७ बी. भ्रमर गीत, रचयिता—प्रागन, कागज—साधारण, पत्र—३३, आकार—५ ३/४ X ३ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६३, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र, ग्राम—पूरुग कोलाहल, डाकवर—माधोगज, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ प्रागन कृत भौर गीता करना विरहा लिप्यते ॥ श्री मरस्वती देव्यो नमः । विश्नुपद ॥ राग आसावरी ॥ त्रिप निज गाढ़े कै गहियो ॥ पालागन दोट मैया को मैया सौं कहियो ॥ हमतो तिहारो पय के पोपे सुरति करति रहियो ॥ जोग संदेस सुनाइ त्रियन को प्रीति रीति लहियो ॥ कहियो न कटुक टुक उनसो तुम कहै स्व सधु सहियो ॥ सीतल वचन सींचियो रसही दही न फिरि रहियो ॥ देपि दसा उनकी हमको तुम दोस डियो चाहियो ॥ प्रागन ब्रज वासिन के हिये को प्रेम सिंधु थहियो ॥ १ ॥ पुन ॥ आसावरी ॥ आयसु दीन्हो सपा सुजानहिं, स्यंदन चढ़ी सिधार्वा ब्रज को सुद्धि रावरे आनहिं कैमे है जसुदा जननी जिन पालि किये परवीन ॥ मोहि अक्षत वै होहिगी पर पूतन आधीन ॥ गहियो पाँइ नट वावा के कहियो यहै सँदेसो । जो तुम किये महा कृत हमको । गनिन सकल गुन से सो समाधान की जो गोपिन को ॥ दीजो निर्मल ज्ञान कहियो जोग जुगति सो प्रागन त्रिकुटी सजम ध्यान ॥ २ ॥

अंत—राग कदारा ॥ ऊर्ध्व तोमों कदा निरंतर निज भजन मोहतु है । वैदवीत कोड मदि मानत परे हमारो मतु है ॥ ही निर्मेष निरंजन निर्गुण कारण ते बसु धारी । कर्म रहित अपनो हृष्या तहाँ सुग चाही ॥ देव अवेह तऊत है मेरो ज्ञान हरि के कोई । रदागे इह बसु मदि पाषी जोष जक में सोई ॥ यहु मत है एषम को तुर्कम गुप्त हिये मो शरि । प्रागम तोसी बहुरि कहीं गो दाबक हम सापि ॥ ५३ ॥ राम राम राम राम ॥ इति श्री पागन ऋत श्री गीता श्रीराम निज भजनी गंत्र के ॥

विषय—(१) पृ० १ मे २० तक—कृष्ण का उज्ज्व को संदेशा लेकर बुद्ध को भेजना, उज्ज्व गमन, गोगन का ईश्व दर्शन, यशुदा मिथन, यशुदा का उपाम्भन, मंदु मिथन—कुसाळ पृथगा, और बजन उज्ज्व का रूपमानु ग्रह गमन, उज्ज्व द्वारा कृष्ण का सम्देशा कहना और सुरा न मानन की प्रार्थना ।

(२) पृ० २१ से ४६ तक—गोपियों का सुरा न मानने का कारण बताना गोपियों का उपाम्भन उज्ज्व को फटकार गोपियों का सम्देशा, गोपियों द्वारा निज दशा का वर्णन, बेदास्त ज्ञान कथन, यशुदा का पुनः संदेश देकर अगमन की प्रार्थना ।

(३) पृ० ४७ से ६६ तक—गोपियों द्वारा योग का निवेध तीन दिन की आशा हावे हुए पद भास स्पतीत हा जाने का उज्ज्व को शोच आशा मांगकर और प्रेम गह्वर होकर गोपियों से बिदा माँग उज्ज्व का मथुरा को गमन, उज्ज्व का निज घर पहुँचना और कृष्ण द्वारा उनका बुकाया जाना, कुसाळ क्षेम प्रथम, उज्ज्व द्वारा मत्र दशा वर्णन उज्ज्व को बिदुस ईश कृष्ण का भंक छगाना, और निज प्रमुख वर्धन कर गोपियों का अपने में अद्वैत भाव प्रकट कर हम रहस्य के गुप्त रखने का उपदेश ।

सत्यया ३४= प. मोहनी परित्र, रचयिता—प्राय किशन (देहली) अगत्र—देशी, पत्र—१८०, आकार—१२×८ इंच पत्रि (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनु-पुष्ट्—४६८० पूर्व, रूप—प्राचीन गण, मिथी—भागी, रचवाक्य—१०२१=१८९४, तिथिमाह—सं० १९२०=१८७० ई० प्राक्षिस्थान—श्री शिवदुखारे, प्राय—उत्तमपुर, डाकघर—मर्गाँर जिला—उज्ज्व ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मोहनी चरित्र लिखयते ॥ कपहत आबाद नाम का एक गाहर था और अउ अउ प्यार प्यार लोग उसमें रहते थे वहाँ की हवा दिल की मबराहत कर करती थी और जमीन आमामान पर पांव धरती थी वहाँ के बादशाह का नाम श्रीराज वन्द था उसकी दीवान क्या कहना मुस्क में और का नाम नहीं बट मार राहगीरों को बचाने थे मय तरह का आराम था मगर बादशाह की बेटे का बड़ा दाग था रात दिन इसी किन्न में धुलता था देपी दबता पीर पैगम्बर पाने आत्रिरी को मनो कामना पूरी हुई साह वरस की उमर में एक बेरा पैरा हुआ । बादशाह न उसका नाम जान आक्रम रगा ॥

अंत—जाव आसम ने तमाम गलकत को गाहर के दरवाज पर बुझाया और सब के सामने को बहरी का बरपा निजाम तमाम हाल कहा और हुकम दिया कि हमके दूकने कर कर नील कीचों का हाल हो हाग बरौ गब और उस बंदमान पर घू घू करे

लगे । अब रोज जान आलम ट्वार करता और जान आलम कोने में बैठ कुरान पढ़ता । मानो कामना पूरी हुई और जान आलम, मलका, अजुमन आरा, और माह तलत खूब धम्मा चौकड़ी मचाते । दुश्मनों को जलाते जब तक दुनिया है उनका नाम चला जावेगा किसकी रही और किसकी रहेगी जिस तरह उनकी मुराद पूरी हुई उसी तरह हमारी और तुम्हारी मुदकिल से सुगम हो और वेदा पार है । ४ प्रानकिशन जेठ शुक्र दुइज संवत १९२१ वि० लिखा प्यारे किशन कोल सवत् १९२७ वि० ॥

विषय—जान आलम का किस्सा २७ कहानियों में ॥

संख्या ३४८ वी मोहनी चरित्र, रचयिता—प्रानकृष्ण (दिल्ली), कागज—देशी, पत्र—१४६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३६७, संदित, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२१ = १८६४, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कुटनलाल, ग्राम—सफीपुर, जिला—उन्नाव । आदि—३४८ प, के समान ।

अत—वजीर पहचानते ही पाव पर गिर पड़ा जान आलम को गले लगा लिया फिर वजीर घर झपटा और वादशाह को मुवारक वाद दिया । और कहा कि इस शहर के नमोव जागे हमारी दुआ कुबूल हुई (वादशाह ने कहा मेरे को मारे शानदार) क्यों मेरे जखमों पर नमक छड़कता है ॥ ये वाते हो ही रही थी कि जान आलम महल में आया वदा रोना पीटना मचा औरतों ने गुल मचाया या वाप ने चेटे को गले लगाया दोनो की आखें खुली वादशाह उसी वक्त मवार हो कर वहुवों से मिलने आये शहर वाले साथ आये सवारी उलटी फिरी दोनों लड़कर अटली में थे मलका और अजुमान आरा के ढोले पर जवाहर और अशर्कियां लुटाई हजारों कंगाल सेठ साहुकार वन गये जान आलम की माने जो मलका और अजुमन आरा को देखा तो बलायें लेनी लगी ।

विषय—जान आलम की कथा यह ग्रंथ उर्दू से हिन्दी में किया गया ॥

संख्या ३४९ ए. घनी जी के चेले की चौपाई, रचयिता—प्राणनाथ (पन्नाराज्य), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—९ × ५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राम मनोहर बिचपुरिया, ग्राम—पुरानी बस्ती, ढाकघर—कटनी मुखारा, जिला—जबलपुर ।

आदि—श्री घनी जी के चेले की चौपाई ॥ अब सुनों तुम मो मिनो । देपो अपने कदम । साथ चला जिन भौंति सों देखो नसीयत आतम ॥ १ ॥ कूच कीया वाई जी ने आगे जी साहेव । नीत चली सब साथ में सब धन धन कहे भव ॥ २ ॥ संवत सत्रे पचास में वैसाप सुदो अष्टमी । वार बुध पौहैर दिन चढ़ते ठोर अपने जाय जभी ॥ ३ ॥ संवत सत्रे क्यावन असाद के महीनें । दिन चौथ पिछली रात कौं घनी पोहोचे धाम अपने ॥४॥ वार सुकर जुमें कां पिछली रात घडी दोग ॥ पोहचे अरस अजीम को दारूल वका कहा सोए ॥ ५ ॥

अंत—सवत संतरे वरस एकावः, कुआर वदि चतुरदसी के दिन । परनम कर सब साथ कौं । पोहोचे हक मोमिन ॥ १८ ॥ मैं कहू नाम जिनके । जिन्हें सुनते होइए

पाक । उद्यापा बन्दूक अपना ये हक कर्मों पाक ॥ १९ ॥ बलमहास एक इन में हुआ
के सब दास । तीसरा था मयुरा ए तीनों मोमिन खास ॥ २० ॥ भीर था जो साहिबान
पंच मानसिंह दास । संत दास जो इन संग ये इन्हू पासक पास ॥ २१ ॥ राम कुमर
के सब संग पर साही हकके संग । हमीरा इरशी इनकी ये धाम धनी के भंग ॥ २२ ॥
पूरबाहू और परगो और के सर बाहू नाम । कासी चला तीसरे दिन चला पीछे जस उड़न
राम ॥ २३ ॥ मेहे मत कहें ए मों मिनी धरो कर्म पर कर्म । तुम जाये धाम में अब
सोचो अपनी आर्तम ॥ २४ ॥ संपूरन ॥

विषय—भी रैच बंदूको के अर्सा अजीम पर पहुँचने का इतिहास ॥

संख्या ३४६ चौ कुमान, रचयिता—महामति प्राग्नाथ (पञ्चा) कागज—
देसी, पत्र—५, आकार—६ इंच × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुच्छेद)—
३८५, पूर्ण, रूप—माचीन, पद्य, छिपि—आगरी, प्राप्तिस्थान—भी राम मनोहर बिचपुरिया,
ग्राम—पुरानी बस्ती, बाकपर—कटनी मुरबारा, जिला—जबलपुर ।

आदि—पुर मान मेरे महबूब का ॥ १ ॥ थापा जस सेँ रसूँ ॥ भग्या अपनी
अरबाहीँ पर ॥ साहिब हुये सबकूल ॥ १ ॥ मोईँ पोछे अपनी हुँमार सेँ ॥ जो अरम की
अर बाहि ॥ पेही परीप्या आहिर ॥ और काहू न पोल्या जाये ॥ २ ॥ बरकत इन कदन
की ॥ मिस्त एसी सार्नन ॥ के दहि साब फजर कू ॥ से चक सी रझे बर्तन ॥ ३ ॥ मुम
मेन्या कासह कर ॥ में क्यावा पुन मान ॥ पेही जाणों तुम तह कीक ॥ दिक मुभा की
न मॉन ॥ ४ ॥ मी देत हूँ पुस पवरी ॥ यो रंवाणी अर जाये ॥ मे पतरे अरस अजीम से ॥
सोहे हमेस गीईँ अजाये ॥ ५ ॥

अंत—जिन प्रिया किल्ला सेवया ॥ भांगू आना सेँसा तिन ॥ हुनी अरम पोचें
दिवकूँ ॥ तो प्रापर कही अकन ॥ ३३ ॥ इन विषय पुर मान कुमरा बही ॥ आहिर देन
बतायें ॥ अंदर बेग ज्यो बुसमन ॥ सो देत माईँ मे पस हाये ॥ ३४ ॥ अरक कदाहें
जाय हूँ ॥ हायें बुजरक मोईँ बीन ॥ कया हादीअरंद करे ॥ धूँ पोबत हूँ अफरीन ॥ ३५ ॥

विषय—बुदा का कर्मान भीर उसके न मानने बाधों की बुराई ।

संख्या ३४६ सी अंभूर कलस हिंदुस्थानी, रचयिता—प्राग्नाथ भीर इन्द्रावती
(पञ्चारात्र्य), कागज—देसी, पत्र—८३, आकार—६ इंच × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—
१५, परिमाण (अनुच्छेद)—११७६, पूर्ण रूप—गलित पद्य, छिपि—आगरी, प्राप्ति
स्थान—भी राममनोहर बिचपुरिया, ग्राम—पुरानी बस्ती, बाकपर—कटनी मुरबारा, जिला—
जबलपुर ।

आदि—किताब कछम छिपने ॥ निज नाम भी अकल जी ॥ अयाह अहिरा अतीत ॥
सो सो अब आहिर भण सब विषय बर्तन सहित ॥ भी धनी जी के गुन बीये है ॥ गुन केते
कहूँ मेरे पीठ की हंम सं किणूँ हें अनेक की ॥ ये बुध इन आमार की ॥ ए पूँ केरे ठवा
विबेक जी ॥ १ ॥ माया मांगी तो देया एकेँ ॥ धनी ए भानी सो मंन की भ्रांत जी ॥ सब सुप
हीए जगाये कें ॥ की बीय के प्राल्हात जी ॥ २ ॥ मज के सुप ईत आपूँ कें ॥ इंसतु अकैये
ही ॥ राम के सुप ईत देवके ॥ जाय—कीए जी ॥ ३ ॥ कहे बीच बीच के सुप चाम के ॥

जो हम कुर्दाण्डे इंत जी ॥ तार तमकर के रोमन ॥ के वीध करी प्राप्त जी ॥ ४ ॥ सेहे जल मुपमें मीलते ॥ माह दुपन सुन्यो नाम जी ॥ सो माया में इत आये के ॥ सुप अपंडदि-पाया धाम जी ॥ ५ ॥ केहे इन्द्रावती जाती उछरंगे अती उछरंगे ॥ हम कुला डल डा गेजी ॥ निरमल नेत्र कीण्डे जो आतंम ॥ वरटे दीण्डे उदाण्डेजी ॥ ६ ॥ आप पेहेचान कराइ अपनी ॥ लै, प्रपने पाम जग ऐजी ॥ वटी वड़ाई टै आपधे ॥ लै इन्द्रावती कठ लगाण्डेजी ॥ ७ ॥

अत—क्रीण्ड विलास अकुर थें घरके अनेक प्रकार पीया सुदर वाई अग में भाण कीयो विस्तार एवी जव चंन दो एक पीया के चोण्ड कीयो प्रकास अंकुर एसा उठीया सव कीये हांस विलास—ससि सुर के कोट कह नूर तेज प्रकास ए सवद सारे मोह लो ओर मोह को तो नास अच इन जुवां में क्यों कहनि जव तन विस्तार सवद कोई पोहो चनही मोह मिने हू आ आ कार मोह सो जो ना ऋण्डु इंत थे अमंग वेहद सत को असत नौ पोहोचही या विधि ना लगे सवद वेहद को सवहवां तो क्यों पॉहचे दरवार एक लुगानां पोहोचे राम लो त्तिने पार के भी पार ॥ ४० ॥

X

X

X

X

एना भी में तो कछा जो साथ को भर लें का घेहेन वचन कयों विधोग तें टालु सो दूती या चे हेन साथ के सुप कारने इन्द्रावती को भी कछा ताथे सुप इन्द्रावती के कलस सवन का भया श्री श्री कित्ताव जंबुर^{४६} कलस^{२४} हिदुस्थानी^{७६९} समाप्त पुर न भया ॥

विषय—आत्म ज्ञान तथा भक्ति का वर्णन ।

संख्या ३४६ डी. लीला नौतन पुरी, रचयिता—प्राणनाथ (पन्ना), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ X ५^१ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनु-पुष्प)—१२६, खडित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री राममनो-हर विचपुरिया, ग्राम—पुरानी वस्ती, डाकघर—कटनी मुरवारा, जिला—जबलपुर ।

आदि—(आदि का भाग लुप्त), साथ तत्व संवधी सार लीला नौतन पूरी विस्तार लीला ब्रेज जीवन की जेती हुइ नौतन पुरी मे तेती ॥ २ ॥ लीला रास केरी सुपकारी ॥ नौतन पुरी भै ते सारी ॥ ३ ॥ लीला मूल सरूप की जेही ॥ नौतन पुरी नै जोतेही ॥ ४ ॥ पच सरूप परगट पर कासी । लीला नौतन पुरी विलास ॥ ५ ॥ लीला वाल पुगड किसोर । होइ नौतन पुरी में जोर ॥ ६ ॥ ब्रज जीवन नट वर नाथ । विलमे नौतन पुरी जो साथ ॥ ७ ॥ दूध दधी मापण कोड भाग, कहा लो लेइ आवे साक्षात ॥ ८ ॥ महि मंदि अनेक विरोले । धंम धम माहा सूर बोले ॥ ९ ॥ धरे ऊपर चड़ते लोक जो पेपे । सव दसूने पर द्रष्ट ना देपे ॥ १० ॥

अंत—अंग देप जो अगी उलसैं । एसे भोगे भोगता विलसैं ॥ ९३ ॥ तव मूल समध पहचाने ॥ अगे प्रेम सेवा त त्व मा ने ॥ विना समंध भाव ऐ नांही ॥ ९४ ॥ जीवे क्यौ ऐना उपजे कांही ॥ ९५ ॥ ए तत्व संमधी एदरसैं । जीव कोड विधि नाहीं परसैं ॥ ९६ ॥ ए पक्ष पर सौतम जी तैं । धनी देवचद जी नी रीतैं ॥ ९७ ॥ एकही

घनी की में बही । घड़ सेंहो छवे पसही ॥ १८ ॥ श्री मुंदर इन्द्रावती संग । वित मयसे रंग नर रंग ॥ १९ ॥

विषय—नीलम पुरी की छोटा का वर्जन ॥

संख्या ३४६ ई प्रकरस सगल का, रचयिता—ग्रामनाथ और इन्द्रावती (पत्नी), कागज—हत्ती, पत्र—४, आकार—६ ३/४ × ४ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुपुत्र)—४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, विधि—जागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राममनोहर विष्णुरिया, ग्राम—पुरानी बस्ती, बाँकर—कटनी मुरबारा, ब्रिजा—ब्रजपुर ।

भादि—सैंहरी मुप सागर की सें सीदह भरम । बाके सरूप बाको द्य पसी जाहें भरम परस ॥ १ ॥ ये जो स्वल्प स्वपन के असल नजर बीच हन । हम हेंपें हिन लबाब में वे अमल हमारे तन ॥ २ ॥ उन अंतर आपें जब पुलें जब हम हेंपें बह नजर । बप ही याद भाचरें जबहि लही बेटे बरम पर ॥ ३ ॥ मुरत उनों की हममें पेजो लुदे लुद हुप हम । मो बातें करें हम पैक में मो कराबत हक हुकुम ॥ ४ ॥ इन विधि हक का हुकुम हमको जगाबत ॥ इमम जिस्ती हमको हई बिन मिबाका द्वार पोलत ॥ ५ ॥

अंत—जो मुप आपन को महीं, जा विधि करत में हईवान । नातों के मँहेर आपन । पर करत है रहें मान ॥ १३ ॥ श्री महामत कहें मेरे रदक की । रुद आपें पेक मजर । ता लबही रात को मँहें हैं । जाहिर कीं कजर ॥ १४ ॥ सें दरपन मुप रेपिण, करहुं न दीप वित भंग ॥ सत गुरु परतार इमम को । पद्मा चई मपाजा रंग ॥ १५ ॥

विषय—शामोपदेव ।

संख्या ३४६ एक. रमत रदय की, रचयिता—ग्रामनाथ और इन्द्रावती (पत्नी), कागज—हत्ती, पत्र—४, आकार—६ ३/४ × ४ ३/४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुपुत्र)—४२ पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, विधि—जागरी, प्राप्तिस्थान—श्री राममनोहर विष्णुरिया, ग्राम—पुरानी बस्ती, बाँकर—कटनी मुरबारा, ब्रिजा—ब्रजपुर ।

भादि—रामत रहम की मार बालिपें की जर्मग, सपीको लरें सेही मंग । रामादन बनावें रंग ॥ अहमुन स्टीला अजही मगिजा मियी संघात । सोमित चाँदनी रात, तेज मूचन आपी भात ॥ मँडे मुरडे बाजरी, जोतां जात बिजार्जन । रंग रग उत रंग वित वित, मार्ममी मपी जीवन ॥ उप जावें अनी जीवन । नबमें सवें माजरी ॥ अगे मँहरे अमकेल । करेरे हाँग रैस । बिसानी विबाह हाँमी येन लापी रंमे लाजरी । बावें बावें बाप बँह रंग रम वित वित ॥ उपजावें अठि जीवन पुरवा पूरन काजरी ॥ बापी ना बावें मपूर बरमें मही अपूर । पीवें बाली भरपूर रावें हई मँहरी ॥ ७ मत हिन्द्रावती मातों घबरी व्यापनी । बावें जो मन मावती ॥ मूहें मां मरजाहूँ ही ॥

अंत—सोमा हन मुप बपों कहों । जा विधा बीच में बावें करत हन लाम कम बोल की ॥ बपूँ कीं अपूर दोड लाल रंग सोमित मुप मोरत । बूँची बाहिन हन मिमास लाक बजिन दोड रंग विधि । बीही मई मुप अंगुरी नरम सोमा हन मुप क्लों कीं ॥

अति सुंदर सुप सरंभ नेकं मूढ अधर सुप बोलत । कर प्यारी वातें कर प्यार जो सुप देत
हैं आसिकों तिन कों नाहीं सुमार ॥

विषय—रहस्य वर्णन ।

संख्या ३४६ जी. तारतम्य, रचयिता—प्राणनाथ (पन्ना), कागज—देशी, पत्र—
८, आकार—९ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३६, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—श्री राममनोहर विचपुरिया, ग्राम—
पुरानी वस्ती, ढाकघर—कटनी मुरवारा, जिला—जबलपुर ।

आदि—तार तम्य लिपोह श्री राज जी ॥ जब पांच तत्व तीन गुंन ॥ चौंटा लोक
पिठ बछांट ॥ ए ससार में जब कष्ट न था ॥ तब क्या था धाम और परम धाम ए द्रोड
ठिकाने अखड है ॥ और अपनी बोली मे के हेते हैं ॥ के असोर ओर अपोरा तीत ॥ ओर
कुरान की भाषा में केहेते हैं ॥ के अरस ओर अरम अजीम ॥ ओर नूर जमाल ॥ ओर
नूर जलाल ॥ तोई हाम रप कैसो है ॥ अप्येर भगवान जी कोमरुप ॥ के जे से वरस सात
को हे ॥ ओर लपमी जी को सरुप कैसो है ॥ के जैसैं वरस पाच को हे ॥ और ओर चार
चार वरस की खूब पुसाली आ हे ॥ सो अप्येर भगवान जी वाल लीला करत हैं ॥

अत—कुलपेत्र में ब्रज के ॥ लोग बुलायु भेजे ॥ तहाँ लपिमी जी कूँ दरसन
कराए ॥ दूर वासा को परसाद भेजा ॥ फेर सन दीपन के लरिका लेन गए ॥ तहाँ ब्रह्मा
जीसों कोल कर आये ॥ फेर आये लरकन कों उपजाई ॥ लोहडा बंधायु ॥ दूर वासा के
पास सराय दीवाई ॥ फेर परवा भास पांडन पधारे ॥ एक सो चारे वरस ॥ मधुरां हार
का ॥ राज करौं ॥ राजकर जावै अस्ट ही कर ॥ वै कुंड को आए ओर प्रथी की भार
उत्तारन आए थे ॥ सो प्रथी को भार उत्तार कें ॥ वैकुंड को श्री कृष्ण जी पधारे ॥ १२० ॥
तार तम सं पुर्न ॥

विषय—धामी संप्रदाय का सार ॥

संख्या ३४६ एच. तीनों स्वरूपों की वृत्तक, रचयिता—प्राणनाथ, (पन्ना), कागज—
देशी, पत्र—१६२, आकार—९ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—
६८०४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५२ = १७६५ ई०,
प्रासिस्थान—श्री राममनोहर विचपुरिया, ग्राम—पुरानी वस्ती, ढाकघर—कटनी मुरवारा,
जिला—जबलपुर ।

आदि—निज नाम श्री जी साहेव जी ॥ अनाद अछरातीत ॥ सोतो अव जाहिर भये
सब विध व्रतन सही ॥ १ ॥ तीन्यो सरूपों की वीतक लिप्यते ॥ सो सुरु भई भविष्य पुरान
में ॥ राजा कहे जुग चार ॥ वचन हैं जो व्यास के ताको करो विचार ॥ १ ॥ सत्रहे राजा सत
जुग में ॥ एक कखो राजा क्रत ॥ तिन आपनी भुगती ॥ तापर भयो क्रतदिक ॥ २ ॥ ता
ऊपर अंत भयो ॥ फेर मचकुंड भा होए ॥ ता ऊपर भेखानंद ॥ राजा कखो सोए ॥ ३ ॥ ता
ऊपर आदी भयो ॥ फेर हरनाकुश कखो नाम ॥ ता ऊपर ताके टोर ॥ प्रह्लाद भयो ऐस
ठाम ॥ ४ ॥ ता ऊपर बल लोचन ॥ तापर बलि भोगत ॥ एनों आपनी भुगती ॥ लौचन
बल गते ॥ ५ ॥ ता ऊपर वानासुर ॥ ता पर कपिलाळ नाम ॥ कपिल भइ तापर भयो ॥ जरा

सरी येम काम ॥ १ ॥ तापर भूमरिपी कछो ॥ ये सप्रह सत जुग के ॥ अब कई चेता के ॥
 उचतीस काम मण्ड ॥ ७ ॥ प्रथम तो महा मयी ॥ तापर मारिच काम ॥ ता ऊपर कसिप
 भयो ॥ फेर मुरज येम ठाम ॥ ८ ॥ तापर तब छत्र भया ॥ तापर भउभायाम ॥ ता ऊपर
 भान्भ भयो ॥ बेहवा मित्र एक काम ॥ ९ ॥ फेर महीं मित्र भयो तापर भयो किर्मन ॥ ता
 ऊपर राजा भयो ॥ नाम बन ॥ १० ॥

अंत—मिहीं वख पहनन के ॥ प्रेमदाय स्वाये ॥ आखिर की पत्र पि बंदराम पासे
 जाये ॥ ११ ॥ काह फेर बरुन पास ॥ पाये सब सेवा कीस ॥ जो होत मेहनत पून करी ॥
 सब सेवा की जोर ॥ १२ ॥ महाबडी भाई मसकत के ॥ आपे पुरबंहर से ॥ सेवा बनार
 रापये की ॥ और पत्री लिपिने की सेवा में ॥ १३ ॥ अस्तबाह सेवा समे ॥ अगत हे चरन ॥
 राज हेत कर बुकावत ॥ प्रस होए क मन ॥ १४ ॥ श्री महामत केहे प्रीपमों ॥ ए सेवा
 के कहे साय ॥ एही तेही पहे रहे ॥ जाके चनीप पकये हाथ ॥ १५ ॥ ॥ परकन ॥ १२ ॥
 बीपार्हू जूमक ॥ १६ ॥ बीतक के प्रकन ॥ ५८ ॥ बीपार्हू जमा ॥ १५२० ॥ सब जमा पर
 कन ॥ ७० ॥ बीपार्हू सब जमा ॥ ४३१७ ॥ प्रति श्री तीर्थों सरुओं की बीतक ॥ संप्रम
 समासि ॥ साके श्री बिजयपे ॥ बंधी के रूप ॥ ११४ ॥ सति ॥ १२०४ ॥ मुक्यम आगरे ॥
 श्री श्री श्री बीतक तमाम में ॥ असात बही ॥ २ ॥ बार ने सत ॥ संबध ॥ १८५२ ॥ श्री
 श्री श्री बाबा बेनी दास नू के सेवक श्री श्री बाबा कालदास नू ॥ तिनके चरन रज सेवक ॥
 काई स्वाम शेष क्षिपित श्री श्री स्वामी ॥ प्राह की चरन रज हमेमा चाहत ॥ जो कोई भाई
 बांध या सुने तिनकी कोटान कोट धंभत प्रनाम प्रनाम प्रनाम ॥ अबिधाह सो भूक नूक होह
 तो माफ करके ॥ सुबार कीजो श्री श्री प्र० मि समस्त ॥

विषय—श्री श्री महाराज के तीनों रूपों की विविध कथायें, धामी सप्रदाय के
 सिद्धान्त और अन्य मत मतान्तरोंपर विचार और श्री चनी नाम नू की अह प्रहरी
 सेवा का वर्णन ।

संख्या १५० मोक्ष माग निरुत्थ, रचयिता—महाप, अग्रज—देगी, पत्र—२०,
 आकार—१४४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपुष्टि)—१८०, पूर्ण,
 रूप—प्राचीन, पद्य, कवि—नागरी, कविकाल—सं० १८२८ = १७७१ ई०, प्रासिस्थान—
 श्री राधावल्लभ, ग्राम—रिराबाद, बरकपुर—राजपुर, विषय—ब्रजाव ।

आदि—श्री गणेशायनम—बीतरागायेकम ॥ पूरु सासु हैपें मूल सासु न रहत उर
 मन पैम हैपे मान जाये महामानी को ॥ बेनी क बिस्कोके भाप बेनी परबेदी होत निरबेध पर
 पाये पाते है कदाही की । कोट के निरुत्थ गये कोटक कसत मिटे परताप परताप जिन बानी
 की ॥ बाब्रि देव बाब्रि मुन होहि रिप राज मुनि बाजे पाई राज जिन राज राजधानी की ॥ १
 माने जान देव आम देव कोऊ देव रिजि जान फल सिद्धि साम रूप में गिरत है । ताते
 परताप से न जानि परताप भाप करे महापाप जाके भेड ना बिरत है ॥ मोह की अपर सों
 न पम्दे पयोग जाओ उसटी सी बात कई काहे की बिरत है । नदबी सी रीति छिये
 नदबी सी बुधि दिये घटकी खबर बिना मरक्या छित है ।

अत—शुष्यं छंद ॥ धन्य धन्न ते साध साध साधन साधज है आध ध्याध न उपाध मोछ आराधन मन है ॥ अपने ही रम लीन लीन पर वसु विधि जेती जाते पर वस वास गड परवसु बुधि लेती । धिर भई सुद्ध अनुभूत की ग्यान भोग भोगी भयो । अनुमाग वधु निज भाग सै भाग राग दारद गयो । इति मोक्ष भारग निरूपन समाप्तः संवत् १८२८ वि० अपाद् पूर्णमा ॥ श्री ॥

विषय—जैन मतानुसार मोक्ष प्राप्त होने का वर्णन ॥

संख्या ३५१ ए. काव्यकला विलास, रचयिता—प्रताप साहू (बुंदेलखंड), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—११२, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८६ = १८२६ ई०, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री जनार्दन जी, मुहल्ला रेले की बाजार, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काव्य कला विलास लिप्यते ॥ दो० । लंबोदर वरनहु प्रथम पुनि सरसुति जग माय वहुरि दृष्ट निज हृदय धरि सुमिरि गुरुनि के पाय ॥ मत लहि काव्य प्रकाश काँ काव्य प्रदीप सजोइ । ताहित दर्पन चित समुझि रम गगाधर सोइ ॥ समुझि परै माहित्य को जाते परम प्रकाश । सुकवि प्रताप विचारि चित कीनो काव्य विलास ॥ प्रथमहि लक्षण काव्य को वहुरि प्रयोजन रापि तापाटे कारन कहाँ प्रगट सुभाषा भापि ॥ दो० गुन जुत सब दूपन रहित मन्द अर्थ रमनीय । स्वल्प अलकृत काव्य कौ लक्षण कहि कमनीय ॥ दोप रहित पूरव कहाँ मम्मट लक्षण माहिँ तिनके लक्षण लक्षि सब प्रथमन कहि किमि नाह ॥

अत—दोहा । गहिर वार कुल जग विदित जाहिर जंवू दीप । प्रगट भए औतार इक छत्र साल अवनीप ॥ पुनि प्रगटे ता वंश में नृपति विक्रमा जीत तिनको महज सुभाव यह काव्य कला पर प्रीति ॥ निकट रहे तिनके सदा कवि पंडित पर वीन । कोस व्याकरन साख पुनि काव्य कलानि प्रवीन ॥ नृप अरु सुकवि निदम लहि पाइ सुमति अवकास ॥ लघु मति सुकवि प्रताप ने कीन्हों काव्य विलास ॥ काव्य प्रकास प्रदीप लरि साहित दर्पन देपि । सुकवि प्रताप विचारि चित कएो सुमति अत्र सेपि ॥ रतन साहि सुत जग विदित अर सिरोदिया भाट । नृपति विक्रमा जीत के हुकुम सुपाइ निराट ॥ संवत ससि वसु वसु वहुरि ऊपर पट पहिचानि ॥ १८८६ वि० सावन मास त्रयोदसी सोमवार उर आनि ॥ इति श्री कर्वाँद्र कुल भूपन रतन साहि आत्मज सुकवि प्रताप साहि विरचिताया काव्य विलासे काव्य दोप वर्णनों नाम सप्तमं विलास । मिति चैत्र सुदी १० संवत १६०१ वि० लिपत श्याम मनोहर पंडित । जै सिय राम ॥

विषय—भाषा काव्य वर्णन ॥

संख्या ३५१ वी काव्य विलास, रचयिता—प्रताप साहू (चरखारी, बुंदेलखंड), कागज—देशी, पत्र—१३६, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—

सं० १८८६ = १८२९ इ०, क्विपिकाळ—सं० १६०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री
कन्मूसल ग्राम—गीरिया कळों, डाकघर—छतेहपुर, त्रिकळ—उड्याव ।

आदि-अंत—३५१ प के समान ।

पुष्पिका—मिती बेड सुदी ९ संवत् १९०२ वि० क्विचित् सिध कुमार महाराज
नगर निवासी ॥

संवत् ३५१ सी काम्य विद्यास, रचयिता—प्रतापसाही (चरकारी, बुदिकवंड),
कागज—साधारण, पत्र—१०६, आकार—१३३ × ४३ ईंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२,
परिमाण (अनुपुष्ट्)—२८०८, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य और गद्य, क्विपि—नागरी,
रचनाकाळ—सं० १८८६ = १८२६, क्विपिकाळ—सं० १९९५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री रघुबर द्याळ मित्र इत्याव ।

आदि-अंत—३५१ प के समान ।

पुष्पिका—मिती अमुनि सुदी ८ भीम संवत् १८८६ ॥ मुकाम महाराजनगर
क्विचित् भीम प्रताप सिद्धेन पुस्तक श्री कुंवर गुलाब सिद्धेन अचलोकरार्थे ॥ इति

संवत् ३५१ सी काम्य विद्यास, रचयिता—प्रताप साही, कागज—देसी, पत्र—
५६, आकार—१२ × ८ ईंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुपुष्ट्)—
६९९, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, क्विपि—नागरी, रचनाकाळ—सं० १८८६ = १८२६ ई०, क्विपिकाळ—
सं० १६४८ = १८९१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्णविहारी मित्र, नवाम्येव बाळे, माडळ हाडल,
त्रिका—कलमठ ।

आदि-अंत—३५१ प के समान ।

पुष्पिका—इति श्री मुकवि प्रतापसिंह विरचितायां काम्य विस्तये होप निकोपता
वर्णन नाम पद्यो प्रकाश ३ ९ समाप्तं शुभ मस्तु आकष्य नवम्याम् गुरी श्री संवत् १९४८
समाप्तं श्री रामोदयति श्री कृष्णाचमनाः ॥ १८८६ वि सं०

संवत् ३५१ ई काम्य विद्यास, रचयिता—प्रताप साही, कागज—साधारण
पत्र—३५, आकार—१३३ × ८३ ईंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुपुष्ट्)—
२४०, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, क्विपि—नागरी रचनाकाळ—सं० १८८६ = १८२९,
क्विपिकाळ—सं० १९८६ = १९२६ ई०, प्राप्तिस्थान श्री रघुबरद्याळ, अध्यापक मित्रिक
स्वूर, कबीर जीरा, बनारस ।

आदि-अंत—३५१ प के समान ।

पुष्पिका इत प्रकार है :—

इति श्री कबीर बुद्ध भूपय रतनसाहि तत्सामत्र मुकवि प्रताप साहि विरचितायां
काम्यविलासे काव्यदोष वर्णनो नाम सप्तम प्रकाश ॥ मिती अमुनि सुदि ८ भीम सं०
१८८६ सु = महाराज नगर । क्विचित् श्री मध्यताप सिद्धे ने पुस्तक श्री कुंवर गुलाब सिद्धेन
अचलोकरार्थे ॥

संवत् ३५२ प अमृतसागर, रचयिता—महाराजा प्रतापसिंह पहादुर सवाई
(बघपुर), कागज—देसी, पत्र—१३००, आकार—१२ × ८ ईंच, परिमाण (अनुपुष्ट्)—

१८७६०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३६ = १७७९ ई०, लिपिकाल—सं० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—ये० गोविंदराम भगनराम मारवाड़ी, ग्राम—अमिलिहा, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अमृत सागर लिप्यते ॥ श्री मन्महाराजा धिराज महाराज राजेन्द्र श्री १०८ श्री सवाई महाराज प्रताप सिंह कृत ॥ सवत् १८३६ पौष मास में विचारि करि मनुष्या का रोगा दूर करवा वास्ते परम करुणा सुश्रुत वाग भट्ट भाव प्रकाश अनेक ग्रथ वैद्यक आदि लेके वैद्यक का सर्व ग्रंथों तें वाको सार काढ़ अति संक्षेप से सर्व रोगी की निदान पूर्वक अमृत सागर नाम ग्रथ की वच निका करिके औपधां के अनेक प्रकार का अजमाया जतन विचार पूर्वक है ॥ अथ प्रथम रोग विचार रोग कहे जे कहा कई तरह की पीड़ा ने रोग कहिये ॥ सो दोम प्रकार के छै: एक तो कायक दूसरो मानसक ।

अत—वालक की औपद देवे की मात्रा लिप्यते । महीना एक को वालक होय तो रत्ती १ औपद दीजे दूध सहित मिश्री घी पानी के साथ । ज्यों ज्यों घाल बढ़े महिना मे रत्ती रत्ती बढ़ावे ॥ औपद को एक वर्ष ताई पाछे मासा एक दीजे वरम १६ ताई पीछे औपद की मात्रा इतनी रापिये वर्ष ७० ताई पाछे वालक की सी नाई औपद दीजे मात्रा घटाय के यह तौल कलक चूर्ण को है और काढे को तौल या सौ चांगुणों जान लीजे और वालक को ताही के जल में उबटनो स्नान करानों जान लीजे चाहिये ॥ इति श्री मन्महाराजा धिराज राजेन्द्र सवाई प्रताप सिंह कृत अमृत सागर नाम ग्रथो सपूर्ण समाप्तः लिप्यते गुरु मया राम पंडित झरनूवाले सवत् १८४५ वि० ॥

विषय—वैद्यक ॥

संख्या ३५२ वी. अमृतसागर, रचयिता—महाराजा प्रतापसिंह (जयपुर), कागज—देशी, पत्र—२००, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१८०, खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३६ = १७७९, लिपिकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामभूषण वैद्य, ग्राम—धनकौली, डाकघर—मवई, जिला—उन्नाव ।

आदि-अत—३५२ ए के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री मन्महाराजा धिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रथे रितु वर्णन नाम रितु चर्या रात्रि चर्या, शरीर सर्व अंग सयुक्त वर्णन नाम पंच विंश तम स्वरंग सवत् १८७० वि०, कार्तिक वदी मृतिया । लिखा छोटेलाल ब्राह्मण जाम नगर जमशेद पुर ॥ श्री राम राम राम राम राम ॥

संख्या ३५२ स्त्री. अमृतसागर, रचयिता—महाराज श्री प्रतापसिंह (जयपुर), कागज—देशी, पत्र—४२६, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—९५७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री देवीप्रसाद शास्त्री, ग्राम—सकटिया, डाकघर—महोली, जिला—सीतापुर ।

आदि अंत ३५२ ए के समान ।

इति श्री मम्महाराजधिराज महाराज रादेन्द्र श्री सवाई प्रतापसिंह जी विरचिते
अमृत सागर नाम प्रथे त्रिंशत्तमस्तवः २५ संवत् १८८७ कार्तिक वदि तृतीया क्विपत्तं रामजी कस्वर
स्वपदनाथं मध्ये गोकुलपुरा अकबरवाद् ॥ श्री रामजी सदा सहाय करी ॥

संख्या ३३२ डी. अमृतसागर, रचयिता—महाराज प्रतापसिंह (जयपुर)
कागज—द्वैती, पत्र—४२८, आकार—८×९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण
(अनुपुष्प)—१००३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, क्विपि—नागरी, लिपिकाल—सं०
१९२३ = १८९६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गणपति मूले, ग्राम—नयागांव, डाकघर—सादपुर,
जिला—सीतापुर ।

आदि अंत ३५३ पृ के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री मम्महाराज धिराज महाराज रादेन्द्र सवाई प्रतापसिंह जी विरचिते
अमृत सागर नाम प्रथे त्रिंशत्तमस्तवः २५ संवत् १८८७ कार्तिक वदि तृतीया क्विपत्तं राम
जिंशत्तमस्तवः ॥ २५ ॥ संवत् १८२३ कार्तिक वदि तृतीया क्विपत्तं राम
जिंशत्तमस्तवः ॥

संख्या ३५३ प्रयाग विज्ञानविजय, रचयिता—स्वामी प्रयागदास (बेसप्रयाग)
कागज—साधारण, पत्र—१६, आकार—९×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण
(अनुपुष्प)—१८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य क्विपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मुंदरप्रसाद
नाथक रजिस्ट्रार, ठहसीछ सदर, जिला—प्रयाग ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रयाग विज्ञान विजय छिठपते ॥ ठरबर वदिगा
मीन प्राग क्विपि अथ में । मार शब्द की मक्ति मुक्त मना जाय में ॥ १ ॥ राम रमा संसार
में राम करी को राय । राम करी वदि मूल है सर्व भूल में राम ॥ २ ॥

अंत—मया भेष क्विपिअर अगत क फोनी छाई । झूठी वस्तु दित्वाय आत्मा ना
बरसाई ॥ दास प्राग अब लुप मया अंत अरन है वीस । निवृत्तसाद दाम गुड कृपा मे मोदि
मिमो जगदीस ॥ इति श्री प्रयाग विज्ञान विजय समाप्तं शुभं मूषात् ॥

विषय—आत्म ज्ञान, और महामहिषेड ।

संख्या ३५४. काशीपत्र बंधारखी, रचयिता—प्रयागदास पाठक (बिस्हीर),
कागज—द्वैती, पत्र—१८, आकार—१२×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण
(अनुपुष्प)—५००, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, क्विपि—नागरी, रचनकाल—
सं० १८३० = १८७३ ई० क्विपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बर्मदा
प्रसाद पाठक, ग्राम—मेठुरा, डाकघर—बिस्हीर, जिला—काशीपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दो० । चारि मुखा गत्र बदल मुक्त सर्व द्वेष यद
आदि । बंधारखी बर्मन करी करी प्रणाम सिरादि ॥ बहो दुष्ट बचन पद मय तन बचन
समेत क्विपिअर बंधारखी पुरबहु आम निचेत ॥ सर्वथा । निरुपे विहारी नर हरि
रूपधारी प्रभु माध पै मुकुट प्रय पुंहर कमनु दे । एक पद चापि के असुर को जो जानु

गुल्फ फारि डारो पेट आंते हाथों में दिसतु है टोऊ ओर खंभ फारा सोहति असीन पाद उर्द्ध सोहै हाद सो प्रहलादुहू हैं । मातु हू सभू मिमा मुकुट परो सभा मांझ हनत दुंदुभी देव सुमन वरपतु हैं ॥ यहि कलयुग नगरा धिप भाई । पृच्छत मे निज गुरुहिं बुलाई । गुरी खेर युद्ध केहि कीन्हा राजहि मारि राज्य ब्यहि लीन्हा । ठाकुर कौन कहाँ के रहई । जिन मम पुर समीप पुर अहही गहिलवार वशावलि कहहू । सब हम तुम पर पूछन चहहूँ ।

अत—यहि कर पाठ जपे नित जाई शिव कर आसन जहां सोहाई । दो० । नेम धर्म आचार युत करहि भाव सुत तात । तुम चद्रिका विचार दृढ़ सुनहु जो तुव बहु आत ॥ चौ० अब मैं कहाँ शेष जो रहई । गाहल सुत पस सुप सब लहई । द्वादस गाव भदईचा माहीं । पास भिपारी पुर समुदाई । वसै गाव वनबीच उजारी । रहहिं कुरूप नीच नर नारी ॥ कृपी निरावहि वोवहि धाना । राखहिं सब टकुरन कर माना । मंदिर कृपा राम समीपा । भये सो पहिले ते कुल दीपा । वाग चाटिका तेहि लगावाई । इनके जिये न एकौ भाई ॥ गगूसिंह केर सुत नामी । खखरापूर को है यहि स्वामी । नाम हजारसिंह विराजा । सीलवत बहु कीन्हेट काजा ॥ बहु पुत्रन को पिता कहायो बहुतक कन्या राम जिआयत । करै सदा विप्रन पर प्रीती । गहिलवार कुल की यह रीती ॥ विद्या विप्र पदावहिं वाला । वसहिं ग्राम मह बहु रैयाला ॥ रचि रचि धाम बनायो जी को । वाप से भयो पुत्र अति नीको ॥ इति श्री काशिराज वंस्यावल्याम नदात्मज साखा कथनं नाम पष्ठम स्तरगः ॥

विषय—काशी के राजा ने अकाल के समय काशी में चलकर महाराजा जैचंद के यहाँ कन्नौज में आकर कुछ रोज़ वास किया इसके पश्चात् राजा जैचंद ने अवध में उनको रहने के लिये कहा और कहा कि आप हमारे विरोधी राजाओं को जीत कर उनके राज्यों पर राज करें । इसपर महाराजा काशिराज ने कन्नौज के राजा के विरोधी राजों को परास्त कर के अपना राज्य बनाया ॥

संख्या ३ ५ प विसातिन लीला, रचयिता—प्रेमठास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—ग्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९७=१८४० ई०, प्रासिस्थान—श्री इयाममनोहर सिंह, ग्राम—मुवारकपुर, डाकघर—मगराहर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री रामानुजाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ विसातिन लीला लिप्यते ॥ दो० । वेप विसातिन कौ कियो जेहि प्रकार जटुनद । श्री राधा के संग रमें कहाँ तौन रचि छद ॥ एक समय ब्रज चंद्र नद सुत मन में याहि विचारी । धरि के भेप विसातिन जी कौ छलियो राधा प्यारी ॥ कीन खाप को लहगा पहिरे अरुण जरकसी सारी । अंगिया लाल स्याह वृद्धन की अति छवि देत किनारी ॥ मोतिन की पहिने नग वेसर झालरदार बनाई ॥ मानहु रति पति रची आप कर कहि न जात सुचराई ॥

अंत—अरस परस राधे सौं करिके नयन सो नयन मिलाये ॥ नंद कंद आनंद मानि के नद गाठ चलि आये ॥ जसुदा कही सुनौ मन मोहन सब दिन कहाँ गंवायो ॥ बल के संग कलेवा करिके तब अद फिरि आयो ॥ खेलत रहेटं संग ग्वालिन के वंसी बट की

छाहीं ॥ काह कहीं मेरी मातु जसोदा लेसक जाइ कि बाहीं ॥ भली-बही मेरे प्राण पिम्पारे
 भव बल करी बिपारी ॥ घटी महरि तुम्है परपई परसु घरी है धारी ॥ भंघ भंग हरि
 भोजन कीनो बीरा मुख में नाई ॥ सोइ गये परसिगा के ऊपर निरसि मातु बलि जाई ॥
 प्रमदास बकि बलि चरमन की लीस्य गाइ सुनाई ॥ जो कोइ मुनि कान बित दईतरि बिकुटे
 जाई ॥ इति श्री बिसातिन कीस्य प्रेमदास कृत संपूर्णम् ॥ इत्यन्त कान् साक तवारी
 बचोर सुग्री ससमी मंघ १८९७ वि० ॥ श्री राम जी सरा सहाइ पुस्तक की किलार्ई एक
 भाष्य । शिव शिव शिव ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का बिसातिन के सेप में राधा के घर आना और उसमे
 मिथ्या, राधा जी का मगवान को पहिचान कर प्रार्थना करना और मिथ्या के वास्ते स्याम
 बताना । पुनः श्रीकृष्ण जी का घर आना और भंघ के साथ भोजन करना ।

संख्या ३२५ श्री बिसातिन कीडा, रचयिता—प्रेमदास, कागज—इसी, पत्र—४,
 आकार—१५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२ परिमाण (अनुपुष्प)—१३२, पूर्ण,
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—गगरी, छिपिकाह—सं० १६२४ = १८६० ई०, प्राक्षिप्तान—
 काका भक्त राम, प्राम—धर्मदास गणिक शकपर—दुलजारपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बिसातिन कीस्य लिप्यत ॥ हो० । सेप बिसातिन
 का क्रिया जेदि प्रकर जुहुंइ । श्री राधा के संग रमें कहीं लौं रथी उंइ ॥

अंत—इति श्री बिसातिन कीस्य संपूर्ण क्लिप्ता नामक चंइ बंधुव गणेशायनाइ
 विद्यामी संवत् १६२४ बिसात कृष्ण द्वितीया ॥ राम राम राम राम राम जी की
 वी होय ॥

विषय—३५५ पृ के समाप्त ।

संख्या ३२६ त्रैमिनी पुराण, रचयिता—प्रेमदास (यवगाय, गोरखपुर),
 कागज—इसी, पत्र—२९२, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण
 (अनुपुष्प)—४७२७, लिखित । रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—गगरी प्राक्षिप्तान—श्री
 जगन्नाथ शास्त्र, प्राम—टेडगा जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः । पोथी जब मुंघ पुराण लि कील ॥ बरनी मुंघर बुंघरु ईन ॥
 संघि कीलत प्रोभ सामित निव ॥ कदि किंकीनी नेपुर चरन ॥ धीतुर्न बीन संघ परंतप
 हंगन ॥ सचोदरा बंरु मंघना हरी ही जने बनी कहीं बटु बीचरी ॥ अंध कर्नात कदि उंइ
 पीचर ॥ जह भंघो तह करु बीस्तर ॥ मुंघर इंसन बीतु सम मोड़े ॥ लंघी मुंघ देवगन
 मोड़े । सुधी संमुद अंतमी मन इदेक ॥ गरी लने सुभ संदधीन पेक ॥

अंत—आर्त्तार्गन ई साह जब मेह ॥ चंइहंम... न आनु मन ॥ संघि ये हमरे मन
 मन ॥ तेहो भज धी करो अन्ह ॥ मई ॥ धोर की राज्य पडई ॥ आर्त्तन कही गमी हम
 मुमई । ... मुंघई हम कीं आही सुप अण्ड ॥ होहा ॥ तुह मील केम ॥ ...

विषय—महाभारत के अंत में पांडवों के अज्ञानसेप पत्र करन और बल का घोड़ा
 देग इस्तिनर में बिजय के लिये भेजना तथा जमी प्रमग को जनमत्रप न त्रैमिनी आपि से
 पूटना और उनका मविस्तार से बर्नन करना ॥

संख्या ३५७ कव्या पचीसी, रचयिता—प्रेमनिधि, वागज—याधारण, पत्र—६, आकार—७३ × ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९१ = १८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री लक्ष्मीकांत कोठीवाल, ग्राम—यमुषापुर, टाकसर—लक्ष्मीबागमंडल, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेश यन्त्रा ॥ अथ वरजा पचीसी लिपि ॥ श्लोका ॥ विश्व रूप परमात्मा । ये ई रूप अनन्त । हीं वरनत र्ति प्रेम निधि । १ । श्री भगवन्त ॥ १ ॥ जब जब पल कृपन धरा । तप तप करत महाद । भुग वर भार उगाय प्रभु । आपुन प्रगत आदु ॥ २ ॥ कवित्त ॥ विश्व रूप आनमा अनन गति ध्याई मंभु, नेति नेति भेदु पिधि घेउन घतायो हे । पोपन भरन विश्व नाथ वय दायन वे । परम सुख परि पूरन मनयो हे ॥ भर्त निधि प्रेम भगवत के भजाय विनु, कृपां नर देह ग्यान सूवर मयायो हे । पायी अत्र मयाय को पार जिनि मरुज मै, रमला के वन वी गिमन उमु गायो हे ॥ ३ ॥

अंत—रमना यही हे राम नाम के रंगो हे रम । रगति यही हे रंग सेवन वरन री । नैन अन चेहा छवि छाके घन म्याम तन । रीयो हरि हेन वनि आरि जो वरन री ॥ भर्त निधि प्रेम दिरी मोहे जिहि वरि भक्ति । कौतिये विचार नहीं वय भवतन री ॥ जीपन मरन नर देह को सुफल जोहे । वरिही गनेह रीनागम के वरण री ॥ २७ ॥ पुव ईसी धारन हे तारन शिर्षनी जिनि । रीन वी उधान ज्यो वरन वी रीमी हे । गंग वी गरम अंग पावन विनामिये की । नरहरदास की प्रतिजा वरनो री हे ॥ भर्त निधि प्रेम रीतागम की कृपा की मूल, दुष्टन वी मूल पोट जनम तापीमी हे । आगत वरन मरना गत वी मुनी संत, करनानिधान जू सी कर ना पचीमी हे ॥ २८ ॥

इति श्री करना पचीसी सपूर्ण समापना ॥ भगहन यदी अमाउम री लिप्यते संबद्ध ॥ १८९१ ॥ सुकाम इन्द्र गढ़ ॥ श्री गणेशायन्त्रा ॥

विषय—कवि की निज दीन दया वा वर्णन और इंधर की वाग्यलता के उदाहरण व परिचय देते हुए उक्त वरना की प्रार्थना ।

संख्या ३५८ कुवरी सग विहार वर्णन चारामासी, रचयिता—प्रेमयागर, वागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रायादीन तिवारी, ग्राम—विलरिहा, टाकसर—धानगाँव, जिला—सीतापुर ।

आदि—अथ कुवरी सग विहार वर्णन चारामासी लिख्यते ॥ श्री गणेशायनम. देर ॥ कृष्ण अकेले गये द्वारका छाँड़ि गये मय व्रज वाला ॥ कुवजा दासी कमराय की मोहन पर जादू डाला ॥ आयाद आशा करूँ जो मुग्धारी नारि अकेली कुवजन में ॥ हमकु छाँड़ि वसे जाय कुवजा सग माधो वन में ॥ दासी सेती प्रीति लगाई मोहलिया धरण छिन में ॥ रीत हमारी जनम की धरिन विलसाया हरि नैनन में ॥ पतियां लिखती मतलय गरजो कैसे लिखूँ दे गये डाला ॥ कुवजा दासी कम राय की मोहन पर जादू डाला ॥ १ ॥ ध्रावण आवन कटि गये मज्जन हमसे मोहन वचन किया ॥ मैं खड़ी देवती राह सखीरी अजहुँ न आये कृष्ण

विया ॥ लीजम को त्योहार नगर में सब सखियां अंगार किया ॥ काकलु लीको दिये सीम पर
बस्तर जाते क्या क्या ॥ स्वाम बिना मेरी सुधी सेज अख्खी बागम में हूख डाल्य कुचरी
दासी कंसराय की मोहन पर जावू डाका ॥ २ ॥

अंत—अधिक महीने कृष्ण पक्षारे रावे कूं हीना वरदान ॥ कस अगिया ही को लूट कर
सुधी कुई मन में परमने ॥ स्वाम पक्षारे धाम सखीरी सब मज हो रही है धन धन ॥ बटे
क्याई हो रही सुना बखी सबही के मन ॥ प्रेम सागर में बसूत वरसे तनुकी गुपा मिटी
ज्वाका कुचका दासी कंसराय की मोहन पर जावू डाका ॥ १३ ॥ इति श्री कुचरी संग विहार
वर्णन चारामाली प्रेमसागर कृते संपूर्ण समाप्तः सवत् १९१४ वि० शैशाख सुदी ७ ॥

विषय—कुचरी के संग श्री कृष्ण का विहार वर्णन ।

संख्या ३५६ पद पंचासिका श्लोठिय, रचयिता—गृष्ठीकम कागज—ईसी, पद—
७२ आकार—१६ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५६, परिमाण (अनुपुष्ट)—१४४२,
पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, छिपि—बागरी, छिपिकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०,
प्राप्तिस्थान—श्री विधाम सिंह, ग्राम—पारानगरी, डाकघर—वीरहरा, जिन्हा—सीरी ।

आदि—श्री गवैशासनम ॥ जब पद पंचासिका छिप्यते ॥ अथ किम दृष्टा पदं ॥
रवि दिन बीछ सुपे नहि पाई । अंत पक्षारे मरे जिजाई । सीम अट्टास कर धन हरे
॥ ५६ गुण महा निधि करे ॥ सनि ३६ कुठ कछह दिपाई गुन अट्टावन राज कराई ॥
राहु केतु म्यासीस मधि हरे ॥ दासरी शुक्र महानिधि करे ॥

अंत—इसोक ॥ अंतकाळ आयते जेव्ये स्वार्जे स्तरकरा स्पृता रासिम्बा काक
दिगवैसोब योग नृतिइच्छमवात् ॥ अंत जी होय नबांस को ताते ज्येय जानिये हइ काठ
ते चोर जानिये ॥ राशि ते दिसा जानिय बरी कस अद जाति छग्न के स्वामी ते जानिये ॥
इति श्री बराह मिहिराप्रज गृष्ठी जस विरचितार्वा पद पंचासिकावा मिभिन्न पर पाटी
का प्यापः मसं शुभमस्तु सर्वत् १९१८ ई० मासे शुक्र पक्षे अनुप्या रवि वासरे संख्या के
समय शुभमूवात् छिपते मबानी प्रमाद् तुजे भारत हेतवे ॥ श्री महादेवायनम ॥

विषय—श्लोठिय ॥

संख्या ३६० अन्तरि स्तुति, रचयिता—गृष्ठी काम, कागज—साधारण, परि
माण (अनुपुष्ट)—७०, रूप—मधीम, पद्य, छिपि—बागरी, रचनाकाल—सं० १९१९ =
१८६२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विचारतन पाई, ग्राम—भिरारी, डाकघर—परिवाबा, जिन्हा—
प्रतापगढ़ ।

आदि— म निगम जानहि गुन गूहा । क्वा सिपु हेंदि बुधि अगूहा ॥ १ ॥
हरि विरधि हर कइत पपानी । सुर सारइ मुनि कहि वरवानी ॥ रवि मसि पवन पहार
गग्दीरा । सेबहि चरन अमुर बरबीरा ॥ २ ॥ पूरम पुरव अनादि अनता । अज हर कइत
तुमहि गुणवंता ॥ महिमा अघट बेद बर बानी । सुर सारइ बानी तुम करभी ॥ ३ ॥
अब दु(ः) वादन कठिन बलेना । अंजन कतु लनिमय मद बैना । रोग विहित प्रमु मिथ
समान्य । अंजत नुरत महा बलवाना ॥ ४ ॥

अंत—आदि पुरख हैं जगत में, धैदि सुरनि सुग्र दाइ । असुनी कुमार सुद्वार प्रभु, वरनि कई रिलि राइ ॥ २४ ॥ प्रात ममय मध्यान में, सूर्य अस्त गुन गाइ । यह अस्तुति चित धरिकै, ध्यान करें मन लाइ ॥ २५ ॥ धन्वंतरि को ध्यान धरि, करें रोग को नास । नर पावै सुग्र सर्वदा सुग्र को होइ प्रकाम ॥ २६ ॥

इति श्री धन्वंतरि अस्तुति रोग हरन समापत् शुभं नमस्त् पठनारथ भगत वरि आर खचाय निव्रंत लिखी ।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १४ तक—श्री धन्वंतर की स्तुति, स्तुति पढ़ने तथा श्रवण करने के फलाफल का वर्णन । ग्रंथकार परिचय, ग्रंथ निर्माणकाल :—

प्रथम देव वानी यह गाई । भृगु व्रक्षा कई जाय सुनाई ॥ सो यह कथा श्रवण सुनि पाई । 'प्रथी अ' भापा करि जु सुनाई ॥ दोहा ॥ सिरी वाम्य काइस्त कुल, धाकन लालहि अंस । प्रथीलाल सु नाम है, अमर दास के वस ॥ वसत भदावर देस में, भिडनगर सुग्र धाम ॥ अस्तुति यह भापा करी, हरन रोग गन ग्राम ॥ मामन वदि एकादमी, गुरु वामर सुखदाई । सवत् उनहस ये वरस, ऊन इय ऊपर आई ॥

संख्या ३६१ प. भक्तमाल भक्त रस बोधनी, रचयिता—प्रियादास, कागज—साधारण, पत्र—१७०, आकार—६३ X ६३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६९ = १७१२ ई०, लिपिकाल—सं० १८६५ = १८०८ ई०, प्राप्तिस्थान—मुन्नी चतुरविहारीलाल जिरेदार, सधवा चंद्रिका, ढाकघर—अंत, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भक्त माल टीका सहित लिप्यते ॥ भगलाचरण ॥ महा प्रभु कृप्य चैतन्य मनहरन जू के चरन काँ ध्यान मेरै नाम सुप गाइयै ताही सभै नाभा जू नै आजा दई लई धरि टीका विस्तार भक्त माल काँ सुनाइयै ॥ कीजियै कवित्त वध छंद अति प्यारौ लगै जगै जगमाहिँ कवि पानी विरमाइयै । जानै निजु मति अँवै सुन्यौ मागवत सुक द्रुमनि प्रवेसु कीर्यौ अँमेही कहाइयै ॥ टीका काँ नाम सरूप ॥ रचि कविताई सुखदाई लागै निपट सुहाई औ सचाई पुन रुक्तलै मिटाइयै । अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमकाई अति छवि छाई मोट क्षरीसी लगाइयै ॥ काव्य की वदाई निज सुपन भलाई होति नाभाजू कहति ताँतै प्रोढ़ कँ सुनाई है । हई सरसाई जो पँ सपी यै सदाई यह भक्ति रस बोधनी सुनाम टीका गाइयै ॥ २ ॥

अत—नाभाजू काँ अमिलाप पूरन लै कियो में तोता की साखि प्रथम सुनाइनी के गाइकै । भक्ति विसवाम जाके ताही साँ प्रकास कोजै भीजै रंग हियो लीजै संतनि लडाइ कै । सवत प्रसिद्ध दस सात उनहत्तर फागुन मास वदि सप्तमी विताइ कै । नारायनदास सुपरास भक्तमाल लँके प्रिया दास दास उर वस्यौ रई छाइ कै ॥ अग्नि में जरावो लँके जल में बुझावौ भावै सूरौ पै चढ़ावो छोरि गरल पियाइवी । वीष्ट कटायो कोटि माँप लपटायो हाथी आगे डरवावो पती भीति उपजाइवी ॥ मिह पै जवावौ चाहे धहि भूमि गढ़वावौ तीखी आति विधवावो मोहि दुख नाहिँ पाखी ।

मत्र जय प्राप्त कई बात इही काम करौ भक्ति सी विमुक्त नाकी मुक्त न दिखावी ॥ १३३ ॥
 X X X इति श्री भक्त मात भक्त रस बोधनी टीका सपूर्ण ॥ प्रथमस्कंध ॥ ३२५ ॥ सुम
 सरस्क श्री स्वयं संबत् १८६३ साके १७३० मार्ग शिर मासे—शुद्ध तिथी ८ मृगशिरा
 तिपत्त कृष्णराम साहज्य बासी भदक पठनार्थ जगराम पटक बासी बराठनप्रका ॥ X X

विषय—(१) पू० १ से पू० ५० तक—कृती का मंगला चरण तथा आज्ञा
 निरूपण, टीका की नाम स्वरूप भक्ति स्वरूप, मृगार, भक्ति पंचरस, सतसंग, नामाजीका
 वर्णन, भक्ति मात स्वरूप, टीका का विशेष लक्षण, लक्ष्यतार वर्णन, संत विद्व, हरि के अंतरंग,
 हाहा प्रभाव भक्त शिष्य, अज्ञानि, हरि के बहुभ इनुभाव, विभीषण, शिबरी, अंबरीष,
 विदुर, सुदामा, चंद्रहास, कुम्भी, वास्मीक, सत्यमत, बलि की द्वारा, मोरध्वज, रतदेव, गुह,
 परीक्षित, शुक्रदेव, प्रह्लाद, अक्षर, बालि, भुव आदि भक्तों की कथा ।

(२) पू० ५१ से पू० १५२ तक—स्वैत दीप बासी, बहुतर सिद्ध, आचार्य के
 जामात, रगज, पंहारी, गम देव, जी देव, विद्वमंगक, ज्ञान देव, शिरोचन बहुभाषार्थ,
 रतिबंध बाईं पुरुषोत्तम बासी राजा, बाईं करमाज, मामा-मानजे, ईस प्रसंग, महाजन
 सदाधती, सुवन श्रीहान, रुद्र चतुर्मुख कामध्वज, कैमाल, खास भक्त, श्रीधर जू, साक्षी
 गोपाळ, रामदास, नंददास दीनज, अम्ह, बरामुनी, हरिभक्ति भूप मागवत, अंतरनिष्ठगुणाळ,
 ईवास, कबीर, पोपा, पन्ना, सेवजी भक्त आदि वर्णन ॥

(३) पू० १५३ से पू० २५४ तक—नाम साहाय्य, तरबाजी, माधो दास द्विज,
 सुभाष गुसाई, कित्पानंद, कृष्णरत्नमहाप्रभु चूर, कैशोमह, हरिध्यास, मोकाराम,
 विद्वलनाथ, त्रिपुर दास कायस्थ, गोकुलबाय, कृष्णदास, ब्रह्मिनाथ मयळ, हरिराम इटीसे,
 कमलाकर मह, नारायणमह, श्री सनातन जू, हरिबंस गुसाई, गोसाईं गोपाळ मह, अक्षिभग
 बाब, कोकनाथ गुसाई, मधुनंदी कृष्णदास ब्रह्मचारी, भृगुभंसई बिहारीदास, रसिक सुरारि,
 सद्वा कर्माई, लोको जू, राजपय कुंवार जू, अक्षयभक्त तिळोक सुभार, चिन्तामणि, चतुर
 दास, प्रतापराज, विद्यापति, गविंद स्वामी, सीता सुमति आदि क्षिपी, मरबाहन, मुकपूजा
 संत, गापाल भक्त, कापा नाम भक्त, नरसी नंददास, माधो, भगव, हीरा, चतुर्मुख गुपति,
 मीरा, पृथ्वीराज, श्रीपाळ, मनुकर साह सेपाळ रतन रावीर, विरभय अनम्य, महज मोहन
 सुरदास, और कात्यायनी आदि का वर्णन ॥

(४) पू० २५५ से पू० ३१४ तक—सुरारिदास, तुलसीदास, रघुनाथ, गोकुल
 नाथ रसिक रंगीलो, नारायण मिश्र, अक्षराय रावळ जोगानंद स्वामराय रंगी, कल्याण
 सिंह गदाधर मह, वैशीदास, करमानंद नारायण दास, कौंवापति, रत्नावली, भावसिंह के
 अनुज माधो सिंह की श्री, मृतक—नारायणदास, राजाविदुर स्वामी चतुरी, प्रवाग, विनादी
 आदि, परमानंद, विष्णुदास, जयवंत का गुद भाई, चतुर दास, सिवाहुत गुप के पुरोहित
 की देटी, ग्वाली, प्रेमनिधि अम्हदास, नरवर, आदि आदि भक्तों के वर्णन ॥

(५) पू० ३१५ से आगे—भक्तों का महत्व वर्णन, प्रबोधनंद, लालदास,
 गदाधर साठ पिहारी भगवानदास, कल्याण आदि की कथा, मातु भक्ति वर्णन रामदास
 की कथा, हरि गुपस वर्णन, कवि ईम्य वर्णन, हरिजन गुजगान का फल, टीका कर का

दृष्ट गुरु वर्णन, ग्रथ के टीका का काल —संवत् प्रसिद्ध दस मस मत उनहस्तर फागुन मांस वटि ससमी विसाह के । नारायन दास सुप रासि भक्तमाल लैके प्रिया दास दास उर वस्यो ठहै छाड़के ॥ अभक्त से विमुख रहने की प्रार्थना, श्लोक सरयाः—मूलरु टीका मिल श्लोक जुमत पैतीस । ऊपर पञ्चावन प्रगट भक्तमाल अववीस ॥

संख्या ३६१ वी. भक्तमाल की भक्तस बोधनी, रचयिता—प्रियादास, (अथोध्या), कागज—आधुनिक, पत्र—५६८, आकार—१३ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७६२, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६९ = १७१२ ई०, लिपिकाल—सं० १९१३ = १८५६ ई०, प्रासिस्थान—श्री प्रभु दयाल अवस्थी, ग्राम—मुंशी गंज, ढाकघर—मलीहावाद, जिला—लखनऊ ।

३६१ पृ. के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार हैः—

इति श्री भक्त माल रस बोधनी टीका सपूर्णन सुम चैत्र पाये असिन पत्रे तियि नौभ्या रविवासरे लिखित रघुनाथ दास राम सनेही । कंप् अनवर गंज रामजी की दुकान पै राम रचन भगत के इहां श्री स्वामी देवी दास ग्रे । स्वहित ॥ १९१३ सम्बत् ॥ श्रीराम ॥ श्री राम ॥

संख्या ३६१ सी. प्रियादास संग्रह, रचयिता—प्रियादास, कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१३ = १८५६ ई०, प्रासिस्थान—श्री जयती प्रसाद, ग्राम—जोशी खेड़ा, ढाकघर—चामयानी, जिला—उन्नाव ।

आदि—रेखता—रस लीला ॥ रस रहस मे रसीलो नाचत नवल विहारी ॥ अद्भुत श्रगार कीने संग सोहै की रति कुमारी ॥ वाजत मृदंग वीना मुरचग वजै न्यारी ॥ वाजत करताल झाँझ मुरली को शोर भारी ॥ गाती हैं गीत गोपी शुभ राग को उचारी ॥ लेती हैं ताल सपै देती हैं सवै तारी ॥ हँ कै त्रिभग कवहुँ वंसो मधुर वजावै धुर पद मलार ठुमरी सुदर सुराग गावै ॥ कर कोप करकेँ कवहुँ नाचन प्यारी सिखावै ॥ यहि भाँति से मगन हो रस रहस में वड़ावै ॥ प्रिया दास भास पास सोहै गोप की कुमारी ॥ तिन मभ्य सुभग राजत वृषभान की दुलारी ॥

अंत—फूल विनन लीला ॥ राग पट ॥ फूलन के हित सखिन सग चली श्री वृष भान कुमारी है ॥ अति सुकुमार रूप निधि श्यामा वा छवि पै वलिहारी है ॥ लहगा लाल रेसमी सोहै अति छविदेत किनारी है ॥ तापै सोहै रंग वैजनी केरि सुंदरी सारी है ॥ कठ सिरी दुलरी औ तिलरी कौस्तुभ मणि उर न्यारी है ॥ दमकत जुगनु उभय कुचनु विच सोभा कहि वृषि हारी है ॥ जात वतात मध्य गोपिन के कीरति राज कुमारी है ॥ गज गामिनि सुकुमारि छवीली हसत वजावत तारी है ॥ प्रियदास आनंद रस लट्टत ललितादिक

प्रवृत्तगारी है ॥ इति श्री प्रियदास कृत ग्रंथ संपूर्ण समाप्तः छिन्ना राम रावण वसंत रितु संवत् १९१३ वि० वैशाख शुद्ध त्रयोदशी ॥

विषय—रास लीला, छन्द, द्वात्रिंशत् श्लोक उदाहरण, रसता चंपक छटा, गृह गमन, पंडित लीला, वैद्यक गोरी, गणक, नरवर, द्विदोला, पूरु विनय, सांसी श्वादि लीलाओं का वर्णन ॥

संख्या ३६२ प. बायीं भूषण, रचयिता—प्राय, अग्रज—भ्रातृनिष्ठ, पत्र—०२, आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, रूप—नवीन, क्विपि—आगरी, प्राप्तिस्थान—श्री सिवकंठ बाबूपेयी, ग्राम—हुमार, बाकपर—कैतीपुर, मिथ्या—उदाहरण ।

श्लोकादि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बायीं भूषण लिख्यते ॥ काव्यालंकार की व्याख्या । कविच ॥ छन्द आके चरन चरन स्वच्छ दक्षिणत पानिय करय चमकत ध्वंग भीर है । उक्ति शुक्ति वसन नवीन बहु रंग के राजत गिरामी खरी निपट गमीर है ॥ गुणन कवित्त छम सङ्गनि सरस माध भूषण उचित आकां सङ्कल शरीर है ॥ कवि विच करण को नष्ट जनक छने कविता कवीन की अथाकी तसबीर है ॥ आठकार छन्द आठकार वाग्द जल = समर्थ, भूषण भीर हू = करमा से बना है अर्थ उसके आभूषण के हैं । काव्यालंकार के दो भेद हैं वाग्द लंकार, जल लंकार ॥ वाग्द लंकार के दो भेद हैं अनुप्रास, जमक ॥ अनुप्रास के पांच भेद हैं ॥

अंत—दृष्टालंकार ॥ जब किसी कविचित विषय को स्पष्ट करने के लिये । दृष्टंत व उदाहरण हैं । इस प्रकार से कि दृष्टंत विषय यथा कवित्त विषय का प्रति बिंब स्वरूप हो भीर दामों विषयों में धर्म की मित्रता हो तब दृष्टालंकार होता है उदाहरण ॥ बिशुओं की मरुडी में मूर्ध घोमा नहीं पाता जैसे हंसों के बीच में बगुल ॥ यथा उभय बीच मिथ सोहृति कैमी । अथ जीव विच माया कैमी । यहाँ केवल माध प्रति बिंबित किया है । उपमा वा धर्मकता से अभिप्राय नहीं है ॥ अर्थ ॥

विषय—काव्यालंकार की व्याख्या, साहित्य वर्णन ॥

संख्या ३६२ वी बायीं भूषण, रचयिता—प्राय अग्रज—साधारण, पत्र—१६, आकार—१६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००, रूप, रूप—नवीन, पद्य, क्विपि—आगरी, प्राप्तिस्थान—श्री रघुवर दयाल मिश्र द्वारा श्री भागीरथ प्रसाद ईशित, बाकपर—इदाबा ।

संख्या ३६३ द्वितीय पुण्य, रचयिता—गुरुधरम द्वात्रिंशत् (दादर), अग्रज—द्विती, पत्र—२९०, आकार—१५ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८००, पूर्ण रूप—अधंत जीर्ण, पद्य, क्विपि—आगरी, रचयिता—सं० १८१२ = १७१५ ई०, निपिदास—सं० १८५८ = १८०१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्रीकृष्ण विहारी मिश्र, माडलहाउस, लखनऊ ।

श्लोकादि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ द्वितीय लिख्यते ॥ दोहा ॥ गज नाक गिरि पति गवरि गुमई कर्षी कर जोरि । इति गुन गम चरमी कष्ट विमल करहु बुधि

मारि ॥ १ ॥ चौ० प्रथमहिं प्रनवौ पुरुष पुराना । आदि मध्य दुर्गम अवसाना ॥ निर्गुण सगुन जानि नहिं जाई । भूप नरेप जासु कहु भाई ॥ ब्रह्मादिक ज्यहि पोजत रहई । सुमति पुराण जासु गुण कहहीं ॥ महा प्रलय मह रहे निदाना । जाकर अंतण कहु न जाना ॥

अंत—चौ० जयमिनि कथा जाहि मन भावा । सो जनु धरा प्रद छिण लावा ॥ तव राजा जयमिनि ते बोला । नाथ कृपा तव भयों अढोला ॥ सुनि मुनि जन्म सफल भा मोरा । जवहिं दरस मुनि पायों तोरा ॥ जयमिनि जन्म जैसे कहे । गजपुर राम युधिष्ठिर रहे ॥ पाचौ पांडव कुति समेता । सेय चरण हरि के अति हेता ॥ विद्या पर पुर सो तम दासा । राम भक्ति कै उपजी आसा ॥ जो कोई सुनै राम गुण ग्रामा । तिन कह करौ दंड परनामा ॥ सुकृती जो संस्कृत वपानै । भाषा करै जो काऊ जानै ॥ जय मुनि कथा संस्कृत रही । सो भाषा पुर सोतम कही ॥ मै अव निज गुरु के परसादा । राम नाम कर पायो स्वादा ॥ चरण कमल प्रसाद मैं पाऊ । हरि गुण छांढि औरि नहिं गाऊं ॥ दो० ॥ पुर सोतम जण भिक्षुक टाला श्री भगवान । जन्म जन्म हरि सेवक यह वरदान न आन ॥ १ ॥ इति श्री महाभारते अश्वमेध के पर्वनि राजा जग्य संपूर्ण वरणंन नाम पट पाचसमोऽध्यायः ४६ इति श्री जय मुनि कथा समाप्तम् सवत् १८५२ चैत्र मासे कृश्न चतुर्थी चद्र वासरे लेपनीर्थी पितवर भाट अस्थान विरनाठ ॥

संख्या ३६४ सुंदरी तिलक, रचयिता—पुरुपोत्तम शुक्ल (काशी), कागज—देशी, पत्र—५८, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—९१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२६ वि०, लिपिकाल—स० १९३० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री ओंकारनाथ टडन, तालुकेदार, ढाकधर—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री आनद कद नद नद नायनम सर्वैषा ॥ छहरै सिर पे छवि मोर पपा उनकी नय के मुकता लहरै ॥ फहरै पियरो पट वेनी इतै उनकी चुनरी के झवा झहरै ॥ रस रंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस प्याल चहै लहरै ॥ नित जैसे सनेह सों राधिका स्याम हमारे हिये में सदा ठहरै ॥ १ ॥ सराहैं सुरा सुर सिद्धि समाज जिन्है लखि लाजत है रति मारमहा । मुद मगल सग लसै विलसै भव भार निवारन वार विराजै ॥ त्रिलोक निकरई के ओक सुदेव मनो भवरूप अपार । सदा दुलही वृषभान सुता दिन दूल्ह श्री ब्रजराज कुमार ॥

अंत—मानुष होहुं तौ वहीँ रसखान वसौं मिलि गोकुल गोप गुवारन । जो पसु होहुं तौ कहा वस मेरो चरौं नित नद की धेनु मझारन । पाहन होहुं तौ वही गिरि को जो कियो ब्रज छत्र पुरदर धारन । जो खग हो' तौ वसेरो करौ वही कालिंदी कूल कदंब के धारन ॥ इति श्री राधा कृष्णायनमः संग्रहीत पुरुपोत्तम शुक्ल सवत् १९२६ वि० ॥

विषय—बहुत से कवियों की कविताओं का संग्रह ।

संख्या ३६५. सतसैया टीका, रचयिता—राधाकृष्ण, कागज—देशी, पत्र—२०८, आकार—१० × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७४९,

संज्ञित, रूप—जीर्ण स्तंभ, पद्य, कवि—नागरी, कविकाव्य—सं० १८७७ वि०, प्राप्ति
स्थान—श्री संकट प्रसाद जी अक्षयी, ग्राम—खेदरा, जिला—सीतापुर ।

[आरंभ के १ पृष्ठ नहीं हैं]

आदि—दोहा ॥ सोचति कवि मन मानु धरि हिय सोयो ध्यो भाइ । रही सपन
की मिळनि मिळि पिय हिय सो कियदाइ । टीका । यह नायक प्रोढ़ा मानवती है सोई है ।
भाइक दिग भाइ सोयो सो सपने की मिळनी को मिशु करि छपदाइ गई । मानहु राप्यो
सो सपी सपी कहति है ॥ कविच ॥ मानु कियो लिय माने न क्योंहुं जाली रही बहुत
मनाइके ॥ सोइ गई रिस ही त्रिब में धरि सोइ गयो दिग मोहन भाइके । येगहु में
सरसाबो रस्ते कहते न बने जो रही कवि छइके बालवधू सपने के सुभाव रही पिय के हिय
सों कपदाइके ।

अंत—दोहा ॥ सबै हंसत करतार दे नागर ताके नाई ॥ गयो गरब गुन रूप को
बने गबिडे गाठ ॥ टीका ॥ यह अन्वयिष्ठ परस्ताविक कवि की उक्ति ॥ कविच ॥ को
समुझे रम रीति के भेदहि क्यनु मुनि रस रीति उचारि ॥ ज्ञान की क्यनु करि चरणा अइ
भूट लके हित सों पनु पारे । नागर ताई को नाठ गुने सब दे करतार हंसि किरकारि ॥
बुरि गुमान गहे गुन रूप की बानु मयो अब यांन गंवारो ॥ ७०० ॥ दोहा ॥ दुसह दुराज
प्रजाति की क्यों न बने पुप हूइ । कविक भंयेरो जग करति मिलि मावस रवि चंद ॥
(इसका कविच नहीं है) ॥ अपूर्ण है इति श्री सतसीया बिहारी काव्य कृति दोहा वा
राधा कृष्ण कवि हठ टीका समाप्तः मिठी कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी संवत् १८७७ लिपत
राम बकम तिबारी ॥

विषय—बिहारी सतसई के दोहों पर टीका कवियों में है ॥

संख्या ३६६ राधकचेतावनी प्रश्न, रचयिता—राधक, कागज—दूरी, पत्र—३२
आकार—५ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्ट)—३२० पूर्ण
रूप—प्राचीन, गद्य, कवि—नागरी, कविकाव्य—सं० १८७४ = १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री हगवाल सिंह, ग्राम—महुआ बघ, बाकधर—महुआबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गजेशायकमः ॥ अथ राधक चेतावनी प्रश्न लिप्यते ॥ श्री गुर इष्ट देव
मुमिरि के ह्म ईया मूमि मो कैंके जीन परीक्षा मो जे ईया चित परै तौन आचार्य पंगति
परीक्षा साथ मिलेगी मुम श्री ज्ञानायकमः ॥

चित फिता की परीक्षा

- (१) बछ राज के पूछे
- (२) नर बाहन का पूछे
- (३) भगीरथ का पूछे
- (४) स्वाम कार्तिक के पूछे
- (५) राजा नगर के पूछे
- (६) नर घोषण के पूछे
- (७) चित्रीगढ़ का पूछे

उचार दूजे की परीक्षा

- (१) अग्र रिपि के पूछे
- (२) अगस्त रिपि के पूछे
- (३) प्रहस्यद के पूछे
- (४) बखिनाह के पूछे
- (५) श्री भगवान के पूछे
- (६) मरीच का पूछे
- (७) बमिन्द के पूछे

कह कहीं दैया । जेहनि गेहनि गोरम चोरी को राति करै उतपात कन्हैया ॥ ७२ ॥ जो कोट लौटगी सीर्या चहुँ ओ मिय नंद नंदन मो मन भायो मानत है वरज्या नहिँ काहु को आप करै सब काम अठायो ॥ पाति है मानी कहा जसुटा रघुनाथ की सौँ हर्मँ माच सुनायो । कल्ल परी की तो वात कहा चली आजु ही गोरम लटि कै न्यायो ॥ ७३ ॥

अत—मेरे लिये उन गेह को गाँव को मान्यो नहीं मर्हो वर घनेरो । मेरे मनोरथ के मिथ को रघुनाथ उपाइ कियो बहुतेरो ॥ औरट आगँ कहालों कहीं पर पृतिरु अक्ष प्रतक्ष हाँ हेरो । गोति मन्याँ अपने अँग को अँग में तिनके अँग को रँग फेरयो ॥ दोहा ॥ भक्ति भाव गोपीन को, ऊधो को समुझाइ । वसो वाम मथुरा कियो, नेत्र नंदन सुप पाइ ॥ इति श्री कान्ही वामो रघुनाथ दाम कृत बाल गोपाल चरित्र संपूर्ण सुभ मन्तु ॥ संवत् १८४१ ॥ ज्ये० शु० १५ गुरौ लेपनी ये कान्याँ मध्ये चाँदे बाल कृष्ण जो काहँ पटै सुनै ताको नमस्कार अर्थात् ॥

विषय—श्री कृष्ण की बाल्यावरधाकी लीलाएँ ।

संख्या ३६६ वी. काव्यकलाधर, रचयिता—रघुनाथ बंटीजन (वनात्म), कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०२ = १७४५ ई०, लिपिकाल—१९१० = १८५३ ई०, प्राप्तस्थान—श्री गंगाचरण भट्ट, ग्राम—परसहटा, डारुवर—मँगलगंज, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ काव्य कलाधर रघुनाथ बंटीजन कृत लिप्यते ॥ दो० ॥ विघन हरन दुरमति टरन करन सकल कल्यान । शिव सुत श्री गणनाथ को मव सुपदायक ध्यान ॥ सुफल होत मन कामना मिटत विघन के दुद गुन सरगत वरपत हरप सुमिरत लाल मुकुट ॥ २ ॥ कवित्त ॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष कहै कवि रघुनाथ चारिहू पदारथ सहज ही में लहिये । रिद्धि मिद्धि बुद्धि की विरिद्ध होत दिन दिन विद्या और बल वेद साजे तो चहिये । संपति बढ़त जग कीरति पढ़त मुप पानिप चढ़त चारु मोद महा गहिये । नरिन के सुत की विसाती है न कष्ट जहा गुरु के चरन की सरन जाय रहिये ॥

अंत—मोटाइत लछन ॥ सकुच हिये गुरु लोग की । दरदान चाहै चित्त ॥ प्रीति भीति संग वरनिये भाव सो मोटा इत्त ॥ चेरी हँ तेरी रहींगी सदा अर तो संग खोज के ऊपर लेपौ ॥ तेरी कही मैं कलुगी सदा अर तापर का रहिये अवरेपौ ॥ जातु रह्यो न सुन्यो जवमो रघुनाथ हो पत्र के ग्रामन भेषौ ॥ ताते उपाय कष्ट करिये हरि मेरी गली हरि आवैं मैं देपौ ॥ इति श्री कवि रघुनाथ बंटीजन काशी वाशी विरचिते काव्य कलाधरे विभाव अनुभाव संचारी अस्थायै नवोरस वरनन नाम पत्र दशमो मयूप लिपतं रामवली पाठक दीनद्वार नगर संवत् १९१० चैत्र शुक्ल नौमी ॥ श्री राम जी सदा सहाय ॥

विषय—नायक नायिका मेद ।

संख्या ३६६ सी. काव्य कलाधर, रचयिता—रघुनाथ बंटीजन (काशी), कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—५०

१८०२ वि० द्विपिकाक—सं० १९१६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री धिमुचन नाथ जी अबरपी, ग्राम—कोटरा, जिन्ना—सीतापुर ।

आदि अंत ३६६ बी के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री कवि रघुनाथ बंदीजन काशी वासी विरचिते काव्य कलाधरे विभाव अनुभाव संचारी स्थाई नेत्रा रस वर्णन समापत्तं किपत्तं रामनाथ विहारी संवत् १९१६ चार सुदी १० वृशमी ।

संख्या ३६३ बी काव्य कलाधर, रचयिता—रघुनाथ बंदीजन (काशी), कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—१२ X ८, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुपुष्प)—२८०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, रचनाकार—सं० १८०२ वि०, द्विपिकाक—सं० १९१३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री नरेशसिंह, ग्राम—मन्डू, पुर आकर—महमूदाबाद, जिन्ना—सीतापुर ।

आदि-अंत—३६९ बी के समान ।

पुष्पिका—इति श्री कवि रघुनाथ बंदीजन काशी वासी विरचिते काव्य कलाधरे विभाव अनुभाव संचारी अन्वार्थ नवो रस वर्णनम् ग्राम पंचदशमी मयूपः ॥ संवत् १९१६ किपत्तं सुदी द्वीन अयस्त मरेरा विवासी ॥

संख्या ३७० प मानस दीपिका, रचयिता—रघुनाथ दास (जयोपवा), कागज—देशी, पत्र—५२, आकार—१२ X ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुपुष्प)—१३००, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, द्विपिकाक—सं० १९३० = १८०३, प्राप्तिस्थान—श्री जयराम सिंह, ग्राम—महमूदाबाद, तहसील बिसवा, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मानस दीपिकां विप्रियते ॥ मानस दीपिका ॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्लो० ॥ गणपति सिध पति गौरि पति गौरि प्रभा पति पाय ॥ बंदी बंदन जगन के बंदन हों सुखदाय ॥ दुरित शोष कूपन इकन जानु नाम भव सेतु ॥ ताहि सुमिरि दीप्य रचित काशिराज मुद्द हंतु ॥ १ ॥ या सभा में विचार भवो पंडित अरु कविष सों श्री गोसाईं जी दान्य कृप रामायण प्रथ बहुत विप्रियात है अरु पाद्यो ठिकक बहुत महारामो ने किया है ॥ बाबा राम चरण दास जयोपवा विवासी । संत सिंह जी काईर ॥ रावत गोपाल लाल सिंह बकार अरु स्वामी जी महाराज वर्तमान काशी जे निज गुरु जी विद्यालय तीर्थ स्वामी जी क नाम से रामायण परिष्कार बनाया सो अति संक्षेप मे सय को ज्ञान पूर्ण होत ताकी भाषा ठिक्यात किन्वो जाय अरु प्रथम उपाध्याय में रामायण का द्वि प्रकार को संदेह वर्जन किया आदिये एक सत्यरथ में दूसरो प्रलंग के भेद में एक बाधयता पूर्वक ब्रूम में आरु अरु स्थिति श्रुति प्रभावतर का प्रमाण व किन्वो जाय हेतु किया प्रथ को सब कोऊ वैरिण यातें श्री गोसाईं जी के धंधन को प्रमाण दिवो जाय ।

अंत—नाछ बंध—द्वय परस मंत्रन अरु पावा हरे पाय कहे वेद पुराणा ।

विष्णु ५४—भव भव विभव परामव आदि ।

अत—वार्ता छटे प्रकाश में कोप अंग करके विपम पदन को सुप्य अर्थ उच्चार कियो सप्तम प्रकाश में विश्राम अंग करके नाटक रीति भाव प्रधान ने रामायण जू कथा भाग ते सगुण प्रति पादक आ अतर आसय तें परमारथ पक्ष मत्त्यत्व प्रति पादक यह निरूपण कियो आ प्रसंग के भेद में देवतन को अमेद जनाय के अनत शक्ति प्रभु में सब अविरुद्ध जानी चाहिये और कलयुग व्यवस्था इत्यादि सम दरम्यायो और प्रथम लिख आये तो सुप्य अर्थ है सो यही अक्षरन सों ज्ञात है और जो शका करत है यह जो सप्तम अंग लिख आये याते प्रगट बोध होइगो । येतहु में जो शका करै तहा प्रमाण ॥ चौ० ॥ एतहु पर जो करै शकामोहिते अधिक ते जड़ मति रंका ॥ इति ॥ दो० ॥ करि प्रसंग के अंग ते हरि यथा हेतु जनाय । यथा ॥ भानु समता लिपि रख्योतो गति जाय ॥ रामायण मरसिज सरिम चाहियनु भानु प्रकाश । यह प्रसंग खद्योत डब किमि करि सकत विकारा ॥ रामायण के अर्थ को को समर्थ मतिवत यथा सिंघु पग चोच भरि ताही लहत नहिं अत ॥ को तुलसी भाषा कवन कौन वेद को सार । कौन कोप तिहि तिलक को चाही करत गवार ॥ मत्सर मद माया मदन मारे मान मरोर । रामायण जाने कहा परधन पर तिय चोर ॥ कवि कोविट रघुवर भगत मागत मान सुजान । की सन सिंघु गंभीरता मटिर गिरि पहिचान । मानस परावार को पार तार को जान । मटिर गिर वृद्धत जहा मम मति की परमान अष्टादश पठ सहिता या मल तंत्र विचार धर्म नीति श्रुति सागरहिं तुलसी कृत विस्तार ॥ इति श्री रघुनाथ दास कृत मानस टीपका टीकाया विश्राम अंग सप्तम ७ प्रकाशः सवत १९३० कार्तिक शुक्ल एकादशी शनिवासर ॥

विषय—शरीर को रामायण और शरीर से स्वध रखने वाले काम क्रोध मोह लाम अहकार ज्ञान वैराग्य मन आदि राम रावण कुभकर्ण भैवनाद आदि मानकर रामायण का नाटक वर्णन किया है ॥

संख्या ३७० डी. भक्तमाल महात्म, रचयिता—रघुनाथदास जी रामस्नेह (तुलसीदादा अयोध्या), कागज—आधुनिक, पत्र—८, आकार—१३ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री प्रभुदयाल अवस्थी, ग्राम—मुंशीगज, टाकघर—मलीहावाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री भक्ति माल को महात्म लिप्यते ॥ दोहा ॥ श्री श्री पति निज सुप कहे भक्तन के गुन गाई । दुर्वासा प्रनि जगत्त में ररयो सुजसु सोई छाई ॥ १ ॥ मैं जन के आधीन हौं सुनु दुर वासा वात । साधुन उर माहि । मोविन अपरन जानते हमहू तिन विन नाहिं ॥ ३ ॥ येक सत महिमा अधिक को कहि पावै पार । अब नाख भला रची ताहि सुनहु उरधारि ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ माला भक्तन की सुरदाई । रचीनारायन दास सो हाई ॥ लागी स्यामहि बहुत पियारी । गोविन्ददास कंठ निजुधारी ॥ भक्ति माल जो सुनै सुनावै । सो रघुनदन का भक्ति भावै ॥ अच्युत कुल जाकी मति रागी । भक्त सुकृत सो होत विभागी ॥ भक्ति माल जो पोथी पावै । ताकी सकल अविद्या जावै तेहिपर एक सुनहू इतिहासा , द्वीज यक रहै नर्वदा पासा ॥

अंत—दो० वकता जो सुप ते कहै श्रोता माने सोई । तव पावै रस कथा को नाहित

सुप नहि होइ ॥ १ ॥ हरि हर जन गुनना सुने जो जन नर तनु पाइ । ते नर पसु समाज
 हैं कृपा घरी नर काइ ॥ १ ॥ हरि हर जन गुन कइत में विघन के जो कोइ । कहे संत
 रघुनाथ ठेहि इहै ज्वाकंधर होइ ॥ १ ॥ बाल विरध नर नारि को सुनि कृपा मनु काइ ।
 इहां रहे भानव में कोहम जमपुर जाइ ॥ १ ॥ श्री गुरु दबी दास के चरण कमल धरि
 माय । माळ महारम की करी भीपाई रघुनाथ ॥ दोहा ॥ भक्ति भाव का ॥ हरि प्रापति की
 भास ही हरि जन के गुन गाइ । मातङ्ग मुहुत मूखे बीज ज्यो जन्म जन्म पछिताइ ॥ १ ॥
 भक्ति दास संग्रह करै कथन भजन भनमोद । प्रभु की रपारो पुष ज्यों बेटे प्रभु की
 गोद ॥ १ ॥ इति श्री भक्त माळ महारम संपूर्ण ॥ सबत ॥ १९१३ ॥ लिप्यन्ते रघुनाथ
 दाम रामसन्दी जो बाधि सुभे ता को सीता राम ॥ श्री सीता राम ॥ राम राम ॥ राम ॥

विषय—भामादास कृत भक्तमाळ महारम वर्णन प्रथम पुस्तक का महारम पृष्ठ १
 एक दिव्य सुमर छत्र का इतिहास जो मर्बदा जी के तट पर रहता था उसका वर्णन है । यह
 विषय द्वारिका से वापस आकर सक्ता में रहा । वहाँ अमदास नामा जी रहते थे । उसस्थान
 पर गोविन्द दास माळा कहते थे वहाँ पर उस द्वालय में उनसे भक्त भाव पढ़ा बड़ेकर
 अपने स्थान को बस्य मार्ग में एक मील के उससे मार कर पोषी छीन ली । पोषी के
 प्रताप से उसे शान हुआ तब छोड़ि ब मामी बह मील हुगयी होकर भक्तमाळ बाणी के
 उपदेशानुसार उस मूल ब्राह्मण की कोष को छुकर और उससे मक्त माल सुना कर
 जीवित करता है इस प्रकार इसमें भक्त माळ की महिमा (महारम) आदि का वर्णन है ।

संख्या ३७१ प अर्नाशम्भुनिधि, रचयिता—राजा रघुनाथ सिंह (तीर्थ)
 कागज—साधारण, पत्र—१९९, आकार—१३ × ९ ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५,
 परिमाण (अनुपुत्र)—५३३८५, पूर्व रूप—श्रीमं श्रीमं, पत्र, लिपि—भागी, रचना
 काळ—सं० १९१३ = १८५४ ई०, किपिग्रन्थ—सं० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—
 राजा जयदेव सिंह रईम तालुकदार (रमेश पुस्तकालय), बाक्यर—असाहस्य, जिला—
 प्रतापगढ़ ।

पद्यि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सिद्धि श्री महाराजप्रियात्र जी महाराजा श्री
 राजा बहादुर श्री कृष्ण चंद्र कृपा पापघिघरी रघुनाथसिंह नू दूब कृत आर्मदर्थनु निधि
 लिप्यन्त ॥ सारथ ॥ अथ हरि पद भर बिंदु भक्तपू ग जगन्मद कर । अथत मुजस मकरंद,
 कुमति कूरता ताप हर ॥ १० ॥ एतं—श्री मन्व मंत्रय कर्म पू मन कर्म जनन के । तीर्था
 न्यद् विधि संसु संय सुनि जोग्य मुनन के ॥ प्रथत पाळ भव सिधु पोत केहि मुर पुनि
 गाबे । आही मेवा एंदि मन्वजन मुनि न रगबे ॥ कुलि कुमति अमरन सरन मक्ति भरन
 सुप मद् रण । अज्ञान एतन आपद् हरन रंरीं श्री अनुबर चरन ॥ दोहा—उक्ति मुर बुर्लम
 संपदा विनु स्यामन धरि सीम । जिन कीर्यों बन को गवन जयति राम जगदीम ॥

मन्व—भागीरत दशम ईदप, पूर्वार्द्ध, पृष्ठ १०७ प १०५ नीचे का ब्याप सीस
 लोड मरि स्वान लेन। मृगिये अथर विव करन को दे गात । बैन जतपार बहि उर कति
 आव हात कुंडुम को पंड करि तन ताप मे मुन्नात ॥ जाली बिरह जगन् टापी मीन मन्व
 मन्व पमती अरनि पग नय दुप अधिदान । भागो कहे मही माई मग इ ममाव जाय प्यारे

को विहाय नहि अनत वनत जात ॥ १ ॥ सुधारम माने मटा वचन वपाने जिन तिनके
 घदन सुनि निक्की फटुक वानि । करतीं विचार प्रान प्यारो नट जो कुमार जाही के लिये ही
 हाय छोड़ि दीनी कुल कानि । रघुराज सो तो मज मपिन ममाज मध्य धैन की न लाज
 कीन्हीं उर निटुराईं आनि । तिनके तरुत ताते तरनि तनुजा नीर ग्यागिं; तलकिं तन
 तीपन तपहिं तानि ॥ २ ॥ दोहा—मीजि एगन गदगद गरो पुनि वणु उर धरि धीर । गोप
 सुता अनुराग भरि घोली गिरा गभीर ॥ गोप्य ऊचु कविच संधिया कोनल अजुज आननग्यो
 अस धैन कटोर पुलै यहि कालन । छोड़ि मय कुल कानि गहे हम शरर के पद पंज न्या-
 लन ॥ स्वामि हूँ मेवक की रूप रापत तू कम त्यागत नद के लाउन । वेनु वजाय बोलान
 छली अच देत दगा सिगरी मज पालन ॥ ३ ॥

अंत—द्वादश न्कथ, पृष्ठ ८६ पितु विमुनाथ चरन सुग गाथा । चटहु हाथ जोरि
 धरि माया ॥ जिनके चरनन रही सदाहीं । मही महोप सुगुट मनि छाहीं ॥ कपि कौचिउ रल-
 पद्मम जोई । सज्जन गरमिज मविता मोई ॥ धरनी में ध्रुव धर्म अधारा । नीनि निपुन धर्मज
 उदारा ॥ ज्ञान विज्ञान पार निधि मांचो । रघुवर चरन कमल रति रोंचो ॥ टीनन टारि दचन
 को पावक । विरचक उक्ति जुक्ति सर नावक ॥ ईम सरिस पालक परिवारा । अधरम उरन टैर
 धुनि धारा ॥ सुगुट कुसुद-गन ममि सुप छावन । सरित दूत मन मेल सुहावन ॥ रघुपति
 रस रतनन को आकर । जन अज्ञान नभ एरन दिवाकर ॥ सुभगत जल चर जल विधि
 भारी । दातन तर कानन सुग्य कारी ॥ सुर पुरप गिरि मध्य सुमेरा । मील विरंग को
 धान वमेरा ॥ कीर्ति चन्द्रिका चार चद्रना । दुर्ता मिघातक करन भद्रमा द्रु सुग्य में
 किमि कहि सकीं । पितु विमुनाथ प्रभाउ । जासु कृपा ते मोटु मम, रच्यो प्रप भरि
 चाउ ॥ सुन्द असुन्द भयो जो होई । सुमति सुधारि लेहु मज कोई ॥

×

×

×

×

जय रघुपति जदुपति जयति, रघुनट जदुराज । सो मन धापने वन करहु, विने
 करत रघुराज ॥ इति सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज श्री वीधवेश विन्वनाथ मिहात्मज सिद्धि
 श्री मन्महाराजाधिराज राजा बहादुर श्री कृष्ण चन्द्र कृपा पात्राधिकारी रघुराज सिंह कृते
 आनन्दाबुनिर्धा द्वादस अक्षुत्रे त्रयोदसस्तरग ॥ १३ ॥ समाप्त । सुभमस्तु ॥

विषय—भागवत के बारहों स्कंधों की कथा जिसमें बीच बीच में हरिचंद्र, महा-
 भारत आदि के भी आख्यान जोड़े गए हैं । यह १९९८ पृष्ठों का विशाल ग्रंथ है ।

मंगलाचरण, कृष्णरामादि स्तुति, सत वंदना, कुठ संतों की कथा राम प्रपन्न का
 रीवाँ नगर आगमन, रामानुज का रीवाँ नगर आगमन तथा रघुराज को दीक्षा देना । “रीवाँ
 नगर नरेस प्रभु, नाम जासु विसनाथ । सो चाहत दरसन करन, चलि तहँ करिय सनाथ ॥
 सुनि रघुवर प्रपन्न के धैना, आयसु दियौ नाथ सुद धैना ॥ नृपति नगर गमनहुँ मैं नाहीं,
 पै नृप प्रेम सोच मन माहीं ॥ रीवाँ नगर विसेपि सिधैहों, भक्त भूप को दरसन दैहों ॥ अम
 कहि कर दाया मम नाथा, आय सवन दीन्हों सुद गाथा घर हरि मदर लछिमन चागा वसे
 तहा श्रुत हरि अनुरागा ॥ पित गम जाइ दरम तहँ लीन्हे, मम हित विनय वचन कदि

हीने प्रभु प्रमत्त है कइ सुभवाणी । तुव सुत कहैं यदि धरु मलु खानी ॥ विधि पूर्वक पत्र
 भिह करिहो । ई हरिमंत्र मोद उर भरिहो ॥ सबगु अहादा सती अष्टावहि को साल ।
 कातिक सित पत्राददी दिय मोहि मंत्र रसाल ॥

प्रयकार के गुह प्रयाण का समय —उद्ग पद् सभि संबै माचर मास अर्जुन ।
 अक्षय तृतीया को गये, श्रीहरि गुह वैकुण्ठ ॥

प्रयकार बंश परिचय :—ग्यारह छ पुस्ति मे अहा ते मम वंस । सो विस्तृत बंसा
 बरुी मी कवि क्रियो प्रसंस ॥ मी संक्षेप कहि कहत हो प्रभु मंगल होत । जिनके पुण्य प्रताप
 से पायो मोदु निरेत ॥ बीरध्वज व्याम करुन मोहाग देव संगराम सिंह भा विष्णुस देव
 जानिये मोमक बनीक देव बरुदेव दूध केंद्र मरुक्षय बुहार बरियार मानिये ॥ सिंह देव
 नैरेदेव भरहरि मोदु देव ली साकि बाहन बिर सिंह दूध गानिये । बीरभान रामसिंह बीर
 अद्ग विष्णुस अ बमर अनूप भावसिंह को ब्यापिये ॥ दोहा—भावसिंह महाराजके अनुदुषसिंह
 सुजान । श्री अनुदुष महाराज के श्री अवबुल महान ॥ महाराज अवबुल के श्री अश्रीत बरु
 बान । श्री अश्रीत महाराज के श्री जवसिंह सुजान ॥ फररातो जेहिधर्म को अवर्सी सुजा महान ।
 जेहि गवमत गौर्विन्द पुर गंग स्थियो अगवाव ॥ महाराज जयसिंह के धर्म ज्ञान जय धाम ।
 महाराज नूप सुकर मभि बिरबनाप प्रदक्षम ॥

× × × ×

प्रंथ कर्ता के पिता के प्रंथों की सूची :—राम सुजम वरुन मन काये । ये ते सुन्दर
 प्र ब बनाये ॥ विभी मालु अर्जुन रत्नावन । गीताबली नादकी चामन ॥ कृष्णावली सुमारग
 टीका । सांत सतक कृष्णाविक कीका ॥ श्री रघुनंदन गीत सुभासा । ठार प्रकासदु ध्वंग्य
 प्रकासा ॥ प्रंथ बिद्व भोजबहु प्रकासा । वैदिक बिद्वनाथ परब्रमा ॥ धर्म शास्त्र अरु
 धीत्रक तिलक, राजनीति हू विरप्या अर्कट ॥ इतुमत पेंतीसी रप्यो बीर बिचार सुचार ।
 धनु बिधा आराम विधि साकबोत्र सुपवार ॥ नाटक परम प्रबाध बिधि ये ते माया प्रंथ ।
 बिरधि कष्यये पदुमि पर के सिगर सत पंथ ॥ ये ते प्रंथ संसकृत आनो । प्रथम सर्व
 सिजांत ब्याना ॥ राधाचछम भाष्य सुहाई, रामाविक विरप्यो सुपदाई ॥ अति सुंदर
 संगीत रघुनंदन नाटकदू अर्जुन रघुनंदन ॥ रामायन कष्याय दितलेक, तिकक वाहाबीकी
 किय भक के ॥ तिकक भागवत को अति भारी, विरप्यो वरुनत निरु बिहारी ॥

× × × ×

“बोनहस छ वेडावै सबगु कतिक मास ।” महाभागवत जनक मम जो मम
 जवक सुजान । जिनक बरु प्रताप बरु प्रंथदि कसो ब्यापि ॥



प्रंथ के निर्माण में सहायता देनेवालों की कृतज्ञता प्रकट करना भी उनके नामादि
 का निर्देश :—रुचिन जयवादि के वासी । अति मुसीक सुंदर मति रासी ॥ जिबक नाम
 अर्नता चारी । जिनके पुत्र सुसिदा चारी ॥ रंगाचारज पुत्र ईं जिनके । मील सुभाज अप्पम
 जिबक न्याप वेदांत व्याकरण अदिक । मरुस साधु न्याता मरजादिक ॥ अति बंदावतार

परकाला । तिनके पुत्र सुबुद्धि विशाला ॥ करि दाय्या रीवा पगु धारे । भये महायक आय हमारे ॥ मोहनार्ज के मिय्य महाना । रामचद्र पादार्ज सुजाना ॥ तामु मिय्य श्री अवध निवासा । नाम तामु रामानुज दामा ॥ वी० :—रतन सिहागन के विमल, मोई महंत परचीन । रामायन अरु भागवत, मोहि पदाय जो दीन ॥ वेदान्त शास्त्र के ज्ञाता । शील सुभाउ प्रभाउ विरयाता ॥ तेऊ कृपा करि भये महायक । मोको अति आनद के दायक ॥ जिंदा राम नाम जिन केरो । सकल प्रधान प्रधान निवेरो ॥ टाकुर सम पुत्र भो तिनको । रामनाथ नंदन भो जिनको ॥ राम भक्ति सुभ बुद्धि उदारा । करत सकल रम काव्य अपारा ॥ मेरे पितु को तीजो मत्री । विद्यमान है धर्म निजत्री ॥

लेखक परिचय .—हैं ताको नदन हनुमाना । मोई लिग्यो यह ग्रंथ महाना ॥

ग्रंथ निर्माण काल .—संवत औनइम सै ग्यारह को माला । पूय माम गुरवार विसाला ॥ कृष्ण पक्ष दसमी सुखदाई । धन की जय मक्रातिहु आई ॥ आनंदायु निधिहि सुभ ग्रंथा । जो सतत गंतन गत पथा ॥ तव यह ग्रंथ समापति भयऊ । मन बाँछित पूरन है गयऊ ॥

ग्रंथ निर्माण का म्यान:—भयो समाप्त ग्रंथ वड़ भागा । बँटे सुभयल लछिमन वागा ॥

ग्रंथ वर्द्धन कथन :—हरि वंसहु अरु भारत आठी । औरहु बहु पुरान मरजाठी ॥ गर्भ सहिता अगिदक केरी । कथा रची जो जो मति मेरी ॥ कहुँ कहुँ तेहि संबंध विचारी । सुनहु सुमति यह विनय हमारी ॥ मैं अति करिके मनहि टिटाई । जो कहु वन्यो मो दीयो बनाई ॥ वस अन्य मन में अहै भरोसू । हरि जय गन कोट करी न रोसू ॥ ग्रंथ पढ़ने वालों को अनुवादक का प्रणाम कथन ।

—इति—

संख्या ३७१ वी. रामस्वयंवर, रचयिता—रघुराज सिंह, कागज—आधुनिक, पत्र—४८०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४००, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, लिपिकाल—सं० १९५० = १८९३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री दिवदयाल, ग्राम—कफारा, टाकवर—ईसानगर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री ॥ अथ राम स्वयंवर लिप्यते ॥ श्री गणेशायनम ॥ दोहा ॥ परते पर कारणहुँ कर कारण पुरप प्रधान । पर विभूति पर विभव प्रभु जय यदु पति भगवान ॥ जग सिरजत पालन हरत जाकी मृकुटि विलास । वसत अचंचल जेहि रमा जय जय रमा निवास ॥ सुर गण नर गण मुनिनगण हरत विघन गण जोय । एक रदन शुभ सदन जय मदन कदन सुत मोय ॥ कवित्त ॥ तेरई भरोस भरो भव में न सोति भाऊं भापि भापि भूरि भाव रसना न हारती ॥ भेद ल्यों अभेद हाव भावहू कुभाव केते भावक सुबुद्धि यथा मति निरधारती ॥ तेरिये भलाई ते कविताई भाई माई मति पाई कौन जापै ना निहारती ॥ हारती न हिंमत पमारती सु किंमति संभारती सुममति जे वदे तोहि भारती ॥ सोरठा ॥

इह दृष्यते शुकद्वयं व्यास सुवनं वीरान्ध्रं वपुः । अंजनं कृत्वा तुभ्यं सैवस्तिनहिं परामव भव न
भव ॥ प्राचेतसं वाक्यमीकं जगतं सुकविं रविं शशिं ॥ कविः, शतत काव्यं वेदिं लोकं चतुरानन
ते भावुः सौ ॥ अथ अथ तुलसीदास रामायणं दिनं निर्मयोः । आसु प्रभावं प्रकृतं रसिकं
होतुं वाच्यं अथ ॥ कृष्णं चरितं रसं पूरं मनो मुरं कविः सूरं कविः । आसु भवितं रसं मूरं
होतुं दूरं मुनिं कूरता ।

अंत—भरो राज मद् गर्भं अति चंचलं बुद्धिं कुसंगं ॥ जो कष्टु होव मलो कवहुं
सो प्रभावं सत संगं ॥ श्री० ॥ मोहिं अथ जाति परत जग माहीं । राम सरित कृपालं धंड
माहीं । मोहिं सम अथी अपायनं मुपति । राम स्वयंवर बिरभ्यो मुप ते सज्जनं सुमति
मुसीलं सुजाता डमहु मोर अपराध महाता ॥ कहीं सत्य करि राम दोहाई । रच्यो प्रथ
केवल रजुराई । आनंद अे बुद्धि प्रथ सीहावन । मो मुप रच्यो पतित के पावन । रसिक
बली मु अति विलासा औरहु प्रथ सुधर्म विद्यामा । संयु सतक जगतीस दतक वर सुमग
सतक रघुपति भृगवाकर ॥ सुंदर सतक सतक पुनि गंगा । शीघ्र चरुपति शतक प्रसगा ॥
विद्यभूट महिमा अति मारी । लो रुक्मिणि परिषय मन हारी ॥ पद्मावती रघुराज विद्यामा
विनय पत्रिका विनय प्रकाशा ॥ ६ पिर राज रंजन मुर वाणी । कपु बद् अष्टक जीवन अवाणी ॥
जानहु महि मम रचितं सुजाता निर्माणयो यदुर्बल प्रधाता ॥ यो० ॥ पतित बीम मोहि
जाति । अति पावन पतित ह्याक । मो रसना ते नाथ ही निर्मं प्रथ रसाक ॥ सौरभ ॥
अथ अथ अथ अनुनाथ साधे नाथ अनाथ के । मोहि करि दिवो सनाथ रापि माथ मई हाथ
निज ॥ दो० ॥ राम स्वयंवर प्रथ जो जो वांछी मति धाम । परसि चरण तिनअे अरत जन
रघुराज प्रनाम ॥ इति श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा बहादुर रघुराज सिंह नू वैव कृत
राम स्वयंवर समाप्तः संवत् १९५० वि० आश्विन कृष्ण पक्षम्याम् ॥ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

विषय—“रामस्वयंवर”, अंत में कवि ने उन उन प्रश्नों के नाम लिखे हैं जिसकी
सहायता से प्रथ रचा है ।

सूक्तया ३७२ प विधाममानस, रचयिता—रघुनाथदास (अयोध्या), कागज—
दही, पत्र—७, आकार—१४×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण
(अनुच्छेद)—१९६, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य और पद्य, छिपि—अगरी, छिपिकास—
१६३ वि, प्राक्षिप्तान—१० राम चरण जी, ग्राम—मुहुरापुर, डाकघर—महमूदाबाद,
जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गनसाय नमः अथ भावस विधाम छिप्यते ॥ विधाम नाम धरयो
ताको हेतु । दोहा । विषय आप आश्रयत मई मग भरक विनि रंग । यहि भू उधर विचार
मग प्रेरक कर विर अंग ॥ अथ रामायण के परमार्थ पद्य की विचार ॥ दोहा ॥ रामायण
हुम मोक्षक गायत्री गड बीज राम सुरक्षा अंकुरित अंभूमूळ सुमबीज वेद अथ पर पुण्य
की हारण तन बह धारा । वाक्यमीक्ये वैद मा रामायण अचतार । कुंमज मुनि निज
संहिता माहीं कयो अनूप । रामायण अर वैद की मित्र मजाना रूप । अष्टमास अरप्रथ
में कीन्हों बह निरधार । वाक्यमीक तुलसी मये कुटिल बीज निस्तार । वैद मूळ द्रव्य से
अली कया भूमि के द्वार । अतम ज्ञान तरंगिणी धाम अरत सुपमार ॥ वाता ॥ याने गूढ

अंत—प्रथम काल एकै रह्यो बहु विधि किमि हूँ जाइ । जुग सूदन स्थूल सुत सुत एकै दरसाइ ॥ आयगत अरुन देखो एकै नवीन गिन जाइ दशा फिरि शून्य परेपो , डोल यत्र इति वेद जुग कालहि अतर खोल पितामह एक में कवहु जुगुंतर । श्री स्वामी जी कपट त्रही प्रभु चार जुगुन के सतजुग ब्रह्मा चहु मुप चारो वेद रहे । त्रेता द्वापर विष्णु जीव आनंद लहे ॥ रुद्र आइ कलि हूँ कै चौदह भुवन दरहे । जीव लहा विश्राम जहा अस भाव अहे ॥ मुपते विनु साधन जे निर्मल ज्ञान चहे सो कलि के दोदन को नित मन लार गहे । गुण में कलि को रूप लोक विपरीति कहै । देव दया विन कैसे वेऊ गुणहि गहे । अव कलजुग आवा घट घट पातक छावा । कलि को प्रथम चरण जिन जानों द्वापर अघ को हे चरण वपानों ॥ प्रथमहि को तिसरो करि मानों चौथो दट पजावा मूठ पपड अकर्म अटायो । पाप चरण को चौवल खाया । चरण धर्म को एक बचाया । साईं बीज बनावा । ज्ञान जोग जिव लेह पराने धरम करम के रूप हेराने ॥ कलिके उर साधन कह राने । नाम पार लगावा ॥ नाम प्रताप क्षेत जाग । जाके उर कलि को तम भागा ॥ वादत देव चर्ण अनुराग ॥ जासो यश श्रुति गावा । बहुत जन्म इत्यादि लिख आये जीव के जन्म नार्हा होत और चारि अवस्था में जन्म रूप भेद पाया जान है । लक्ष योनि जन्म परमित कियो सो संस्कार को काल को धर्मन को मुप्य जानवो साम आयो । दो० । मान युक्त मानस सुपद शक्रा रहित उदार । बोध रहत निज मोह वस शक्रा करत उदार । मानस मान अनेक युत मानी मनगम आहि मन साहस संकावली छमव साधु महि माहि । इति सप्त कांड शब्दावली सक्षेप सवत १९१० लिखत जै नायण मिश्र राजवाट बनारस जेट दशहरा । शुभम्

विषय—रामायण के बहुत से पदों में जो शंका उत्पन्न हो जाती है उसका समाधान किया है ।

संख्या ३७३ बलभद्र प्रकाश, रचयिता—रामकवि (जगदीशपुर), कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुच्छेप)—९००, पूर्ण, रूप—गलित, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९३ = १८९६ ई०, लिपिकाल—स० १८९९ वि०, प्राप्तिस्थान—महाराजा प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ सर्व संग्रह लिप्यते ॥ दोहा ॥ कारन सब सुप दास के वारन वदन तुम्हार । विनती मन बहु ग्रंथ रचि करियो सुमति विहार ॥ आयसु श्री बलिभद्र करि मल्लापुर आधीश । रैकवार कुलकलस सो नित राजत विस्वावीस ॥ सर्वे संग्रह सस्कृत भाषा भाषत राम छमि अपराध हमार यह कवि कोविद अभिराम ॥ इतै वरनि प्रभु वश पुनि बहुरि राम कवि वंश । सर्वे संग्रह ग्रंथ पुनि करहि मनीष प्रसंस ॥ सकल वश वरनन कियो रैक वार को राम । श्री दल जीत प्रकास में जानत मति अभिराम ॥ छमि अपराध हमार यह कवि कोविद अभिराम । रैकवार कुल कलस द्वै राउ जो वस्ती सिंह भैरव हें पानि छानि बहु धरा धरम की रीह तासु सुवन दल जीत भौ जग में अरि दल जीति । पृथ्वी को प्रति पाल करि जानत सब मै रीति ॥ तासु सुवन बलिभद्र भौ बलिभद्र अवतार गुण गण आलंकृत सकल जगत विदित सरदार ॥ कवित्तु ॥

जतीरुप पद ॥ तबहि कमल मुदि जात कीस कुदि जात न उर पुर । तबहि राम नरु
 मारि कमल बस होत न घर घर तबहि रहे पग बोलि होकि गहि बसत मुबन बन । तबहि
 मदि सब होकि होकि बहि आतु सु कम कप ॥ तबहि समुद्र बल उछळत कमल सूर तर
 कई बस्यो महा राव बलिमद्र नू तब जब रिम करि ह्य बर कस्यो ॥

अंत—तेहि के आस पास का कानु लोक परकानु बल नाम परंत जान भागवत
 मत परधान । जो होत सूर्य प्रकाम सो लोक कहि कवि बास । अलोक कहत मुजान
 रवि तैज रहि असमान ॥ तेहि के मध्य बती ये इतनाइ उब गनीय तितनोइ चाकल
 जान । भागवत मत परधान ॥ तिहि नाधि कै गीह जाति सूर्यादि कै की कति पर अंत
 भुव का जान तई जान किरनि न मान । सुमुमेर क चहुं ओर । साठेइ बारह कोटि बीजन
 मु कहि कवि कोटि तितनोइ चाकल जान । तेहि केइ ऊपर मान । चहुं दिसन माई
 बपान । दिनु दिगात्र कह अ्यान एक रिप मलामस ईद पुष्कर द्वितीय अंत पुनि अंद
 तीजे जान । बार्गन शीय बपान । अपराधिता कहि और । भागवत मत सिर मरि ॥ स्वेक
 बतै परबतहि के ऊपर हिम हम भाहि । तिहिके आस पास । भागवान बिष्णु बिछास ॥
 हे ब्या सहित मुजान नब भोक रक्षा मान ॥ वी० ॥ स्वेक लोक मु अरुहि पर बबहुं नब
 बुधिशान । जगत्वरनि बिगुन गति है यहि सकल पुरान ॥ अंत मध्य गति सूर्य बपान
 स्य बपान देवा भूम्य परंतर मान ॥ सूर्यो अंत भोल इमि जान मध्ये कोमस्तु बुधमान ॥
 पंच बिसति अधिक मुजान ॥ श्री भागवते मत पर मान ॥ समग्र सर्वनाम यह धन्यो ।
 संस्कृत तै माया कन्यो इलोक अंत मध्यगतः सूर्यो देवा भूम्यो सद्गन्तर सूर्योहि गोकपी
 मध्य कोसः सु बिसति । सूर्योऽहि बिर्मभते दिसन चोर्महीमिज वा स्वपीन बग्यो निरकार
 ती कीसक सर्वना इति श्री बिबिधि त्रिभि भूयतावा ईकवार बंसावतंस मल्लपुराणीस
 सकल गुण गणालंकृत श्री महा राव बलिमद्र प्रकास सर्व संग्रह ग्रंथ राम कवि विरचितावा
 समाप्त ह्यम मस्तु संवत् १८९९ कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे नवम्या तिथी शुक्रवारे महाराज-
 कुमार मिया मगवंतसिंह पठन वर्ष लिप्यते ॥

विषय—अध्य, पृथ्वीलंड, वेद, पुरान आदि परिमाण प्रत्येक प्रत्येक वर्धन ।

सदया १७७ वैद्यक सार संग्रह, रचयिता—राम आनरे, कागज—दूरी, पत्र—
 ११७, आकार—१३२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेद)—
 २२२७, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—बागरी लिपिका—सं० १९१० = १८५३ ई०,
 प्राक्षिप्या—श्री सिद्धिनाथ वैद्य, ग्राम—हुनेन गंज बाबली, जिला—रुलनाड ।

आदि—श्री गौरीनाथ नाम । अथ वैद्यक सार संग्रह लिप्यते । अथ टीस प्रमाण ।
 जो छिद्र में सूर्य की आभा से राजन कण देल पड़ते हैं उसके तीसरे भाग को परिमाण कहते
 हैं । छ' बंसी की एक मरीचकः मरीचक का एक राई ३ राई की एक सरसों जाठ सरसों का
 एक जी चार जी की एक रची सु रची का एक मामा ४ मामे का एक हाण इसको घारण
 और टक भी कहने हैं २ टक का एक कोस इमी को धुन, कबड, वंसत कहते हैं २ कोस का
 कर्प हाता है इसको पाणि, मड़िका, भी अण्ड, पिनु पाणि तक किंचि त्याग बिदुक विहाक

पदक शोर्ष कर मध्य हस पद सुवर्ण कवल ग्रह और उदर कहते हैं ये मय कर्प के पर्याय हैं दो कर्प का अर्ध पल सुक्ति अष्टम का भी कहते हैं दो सुक्ति का एक पल और सुष्ट अन्न चतुर्विंश प्रकुच पोटमी त्रिल्व कहते हैं ये पल की मय पर्याय हैं और दो पल की एक पृष्टति दो पृष्टति की एक अंजली कक्ष अर्ध शगव कहते हैं और अष्टमान भी कहते हैं दो कुडव की मनि का शराव अष्ट पल कहते हैं दो शगव का एक पृष्ट संज्ञा दो प्रस्य वा आठ मरवा वा ६४ पल की आठवीं मज्ञा है इमे भोजन ओर कांस पात्र भी कहते हैं ४ आटक का एक द्रोण इसके मात नाम है कलश, नलखल, प्रग, उन्मान, घट, रामि, और द्रोण का एक सूर्य कुम चौमठी शराव कहते हैं दो सूर्य की एक द्रोहणी और बाहू और गोणी भी कहते हैं ॥

अत—स्वेत कुष्टपर । पीरी चमेली कमीम वाय विटंग मैन मिल गौरोचन मेधा नोन ये सम भाग गौमूत्र मे पीम लेप करें तो स्वेत कुष्ट जाय वा गौरोचन वच कूट पीपरि पंवार के बीज इनको बलिया के मूत्र में पीम गोली चार्थे और पशाच ही में लगाये स्वेत कुष्ट जाय ॥ वा वकुची अमल वेद लाख कठ गुल्पर पीपरि रसांत लोह चूर्ण करे तिल ये गौके पित्ता में लेप करें तो स्वेत कुष्ट दूर होय ॥ अथ पेट पीर पर नाभि लेप । मैन फल कुटकी काजी में पीस कुष्ट गर्म करि नाभि पर लेप करें तो पेट पीर हर् ॥ इति श्री वैद्यर सार संग्रह राम आयर कृत सपूर्ण समाप्त लिपत शिवराम तन वैद्य स्वपनायें संवत १९१० वि० ॥

विषय—वैद्यक ।

सख्या ३७५ प. कादंबरी, रचयिता—रामचंद्र बसु, कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुपृष्)—२०७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस্থान - श्री हनुमंतमिह, ग्राम—दुनिया कलौं, डारुवर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

जाति—श्री परमात्मने नम ॥ श्री गणेशायनम. अथ कादंबरी लिप्यते ॥ अमा-धारण धी मान और अतुल श्रीमान सूडक नाम एक प्रवल प्रतापी राजा थे और विदिशा नामी नगरी (जहा वेन्नवती नदी बलवती मे वेग वती है) उसकी राजधानी थी राजा ने अपनी बुद्धि और बाहु बल मे ममागरा धरा को बस में लाकर समग्र राज्यों पर सत्राज्य लाभ किए थे । एक दिन महाराजा जो अपने प्रचलित नियम से मंत्री कुमार पालित और देश देश के नरेश और बड़े बड़े प्रजा प्रभन्ति लोगों को लेकर सभा में बैठे थे कि उसी समय में द्वारपाल ने आकर कहा महाराज दक्षिणा पय से एक चांडाल कन्या कि जिमके साथ एक शुक्र पक्षी सुवर्ण पिंजरे में बंद है द्वार देश पर आई और कहती है महाराज को यदि महारनों की ज्ञान कहां तौ भी वज्ञान नहीं होती इस कारण यह विहग रत्न को उनको प्रदान करुगी राजा ने आज्ञा दी अच्छा उसके तड़ लेते आओ । तब प्रतीहारी तुरंत ले आये ॥

जंत—चंद्रापीड सीधे काष्ठ गमर्ब नगर में अवस्थान करके किसी समय में उर्ज्वीनी गमम का प्रार्थना किया ॥ गणधर्षि पति महाराजा विजय से अपने तपस्या काष्ठ को समाप्त जानकर जामात चंद्रापीड को राज्यदान करके आप महिषी के साथ वैवाहिक के पास जाकर तृतीय आश्रम अंगीकार किए ॥ महाराजा ईस में भी राजा विराज्य का कार्य देख कर राज्य पाठ जामान वैशंपायन को देकर सस्त्रीक जाप भी तपस्या परायण हुए । तीनों राजा ने अगाध बुद्धि और अनुरक्त ज्ञानी एक मंत्री शुक्र बास के सहवास स्वर्ग बास प्राप्त कर परमार्थिक संतापोचना में परम सुख से समय वापन करते रहे ॥ पुत्रराज चंद्रापीड कभी उर्ज्वीनी कभी हेमकूट कभी गुरु जनों का आश्रम भ्रमण करते हुए सुख और सुख्याति के साथ दोनों राज्य का शासन करने लगे ॥ कादंबरी की सवृगुण और सद्गुणदेश से अधिकतम सुखी हुए ॥ एकदा कादंबरी विषयण बन से चंद्रापीड को पूछा जाप अति संपात के अवमान में जाप सब बुद्धारा प्रण पाये परंतु हमारी सपी पत्र लया कहां गई ॥ चंद्रापीड बोले प्रियसौ अमिशाप से जब हम अजीन पात हुए तो रोहमी हमारे परिषप के लिये पत्र लेखा होकर आई थी ॥ चरम की चंद्रसोक में संदर्शन होगा । कादंबरी सुमकर आर्बदित हुई ॥ शुभराज चंद्रापीड राजा विशाज बनकर राज्य कार्य संपादन करते हुए कादंबरी महादेता और वैशंपायन के सहवास में हास्यमात्र और कौतुक प्रसंग में परम सुख से समयवाति पाति करन लग ॥ इति श्री कादंबरी रामचंद्र बसु कृत संपूर्ण समाप्तः अक्षर गिर्धारी हाक पंडित बंसपुर वाले संवत् १९२७ चैत्र दशहरा को संपूर्ण किया ॥ श्री श्री श्री श्री राम जी कृपा सहाय करें ॥

विषय—कादंबरी की कथा ॥

सख्या ३७५ बी कादंबरी, रचयिता—रामचंद्र बसु, कागज—दही, पत्र १३२, आकार—१२×९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२ परिमाण (अनुपुष्प)—२१०८, पूर्व, रूप—माचीन गद्य, छिपि—जागी, छिपिकास—सं० १९२८=१८७१ ई०, प्रासिद्यान—श्री रामनारायण शास्त्री, ग्राम—शानपुर बाकधर—दलीम पुर, जिला—मीरी ।

आदि-अंत—३७५ प के समाप्त ।

पुष्पिका—इति श्री कादंबरी संपूर्ण समाप्तः क्लिप्त नन्दे मरु ग्राम इत्यादि संवत् १९२८ माघ पक्ष तिथि ० मसमी कृष्ण पक्ष ।

संदर्पा ३७५ सी कादंबरी, रचयिता—रामचंद्र बसु, कागज—दही पत्र—१३२, आकार—१०×८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुपुष्प)—२५४१, रूप—जीवन, गद्य, छिपि—जागी, रचनाकार—सं० १९२४=१८९७ ई०, छिपिकास—सं० १९३२=१८७५ ई०, प्रासिद्यान—श्री बच् सिंह ईस, ग्राम—असिम पुर, बाकधर—मछरहटा जिला—सीतापुर ।

आदि-अंत—३७५ प के समाप्त ।

पुष्पिका—इति श्री कादंबरी रामचंद्र बसु कृत संपूर्ण समाप्तः संवत् १९२४ वैश कृष्ण प्रतीपाम् । क्लिप्ता राम सिंह रसपदमार्य संवत् १०३३ वि० माघ शुक्ल पंचमी ॥

संख्या ३७५ डी. कादंबरी, रचयिता—रामचंद्र वसु, कागज—देशी, पत्र—
१६०, आकार—१० × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—
२६४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४ = १८६७
ई०, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विष्णु भरोसे, ग्राम—वाटम-
पुर, जिला—उन्नाव ।

आदि-अत—३७५ ए के समान ।

पुष्पिका—इति श्री राम चंद्र वसु विरचिते ऋतवरी नाम ग्रंथ सपूर्ण सभास-
लिपत शिवदीन पाठे सवत १९३६ वि० ॥

संख्या ३७६. उपदंश चिकित्सा, रचयिता—रामचंद्र (आगरा), कागज—देशी,
पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००,
पूर्ण, रूप—दीमक लगी गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०,
लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—हकीम रामदयाल, ग्राम—मुथारकपुर,
ढाकघर—लहरपुर, जिला—मीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ उपदंश चिकित्सा अर्थात् आतशक का रिसाला
लिप्यते ॥ अथ आतशक रोग के उत्पत्ति के लक्षण ॥ मसार में गर्मी को इन नामो से बोलते
हैं । कोई आतशक कोई उपदंश को पिरग कोई चीतारी कहते हैं ॥ यह आतशक राग
उपदंस वायु का भेद है सो बहुत गर्मी वाली स्त्रियों के सग से अथवा उसका सग किसी
और ने क्रिया हो वह पुरुष जहा मूते वहा यह भी मूते अथवा उसका किसी तरह भोजन
या पाणादिक में सग करे तो वायु अपने कारण से क्रोध को प्राप्ति होकर इस रोग को
प्रगट करती है ।

अंत—आतशक पर मरहम ॥ छोटी इलाइची कत्या पापड़ी शीतल चीना सुपारी
जली हुई ये सब बराबर ले परतु शीतल चीनी ड्योड़ी हो इन सबको खूब बारीक पीस
कपड़ छन करके फिर गाय के मक्खन को कांसे की थाली में २१ दफा धोवे फिर उस पिसी
हुई दवा को इसमें मिला के चोटों पर लगावे तो विलकुल आराम होगा कैसा ही धाव हो
सब तीन रीज में सूखकर साफ हो जावेंगे ॥ पुन दवाई ॥ अजवाइन दोनो मिलावे टोपी
दूर किये हुए ग्ररी पुरानी पारा गुड पुराना वायविडग ये सब एक एक तोला ले पहिल इन
सबको पीस छान गुड़ में डाले पीछे पारे को मिला दो पेसा डबल भर की गोलियां बांधे ।
१ गोली सुबह दही के साथ खाय आतशक जाय यथा उर्द की धुइ दाल आम का अचार
गेहूं की रोटी मूग की दाल दूध नहीं खाय ॥ (तौला के नाम उनका हाल) वहलोली दाम
यानी १४ माशे टंक = ३ मासे या ४ मासे वांक दवांज १ दाग यानी ३ ॥ रत्ती और ॥
चावल दिरहग = ४८ जांभर मिस्कान = ३ माशे ६ रत्ती वा ३ माशे २ रत्ती वाकला आधा
दिरम १ ॥ माशे दाम = १ तोला ८ माशे व १ तोला ९ माशे दिरम = ३ माशा व ३ ॥
माशा व २ माशा २ रत्ती माशा = ८ रत्ती व ६४ जाँ का व ६४ चांवल का इति उपदंश
चिकित्सा सपूर्ण सवत १९४० लिपतं रामलाल गुजराती ॥

विषय—उपदंश रोगकी चिकित्सा ।

सूत्र्या ३७७ ए. रामविनोद, रचयिता—रामचंद्र, अंगर—देसी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुपुष्प)—२४००, रूप—माचीन गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाळ—स० १८७६ = १८११ ई० प्राप्ति-स्थान—श्री मनिषा मिश्र, ग्राम सुभायपुर, जिला अजमेर, वर्तमान ग्राम—गंगापुरा, डाकघर—कहरपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम विनोद लिप्यते ॥ श्री राधाकृष्णायनमः ॥ श्री शिवायनमः ॥ श्री धर्मंतरायनमः ॥ गंध कर्तायनमः ॥ प्रथम ही गणेश जी की मस्तुति लिप्यते है ॥ कैंने गणेश जी है रिजि सिजि के इन द्वार है ॥ गौरी के पुत्र है विष्णु के दूर करने वाले है ॥ हर्य घरी के गणेश जी हैं नमस्कार करूं हूं ॥ अथ धर्मंतर जी कू पमस्कार करू हू । धर्मंतर के चरण तुगुळ हू नमस्कार है किम है धर्मंतर जी बीच जिनके नाम सेती रोग दूर होय फिर कैंने है सकळ जोकों को सर्व सुख के देने वाले है । अथ ग्रंथ करने वाले पंडितों से विनती करै है नाग प्रकार के बीचक के साक्षों में देखकर राम विनोद यह ग्रंथ अधिक सुगम करूं हूं सकळ जीकों के सुख की देने वाल्य है राम विनोद नाम ग्रंथ ॥ अथ रोगी के बास्ते जिस बीच के भर बुझवन जाय तिस पुढ्य का बीसा लक्षण होय । बिचक्षण हाय पंडित होय सुवर होय सजान होय बिचयवत होय ऐसा पुढ्य होय सो रोगी के बास्ते बीच हू बुझाने जाय बीच के आगे जाय हाय जोइ नमस्कार मंठि बचन कइता भरज करै बीच के आदि श्री फळ रुपया वस्तु प्रसन्न हूं की घरी बीर यह कइ कि आप कृपा करिये । बीच हू बुझाने बाळा पुढ्य दाखी हाय न जाय मुशी होय बीच अपने घर सू एक पुढ्य के साथ जाय रोगी के घर दो के साथ न जाय ऐसा भय्य सगुन होय सो बीच रोगी के घर जाय ॥

जंत—बाबि शुद्ध का उपाय ॥ छोटा बैगन लेय गऊ के भूत के बीच तीन फाड़ करै तिस पीळ आंबसा सार गंधक पीस जाइ में बुरकाव देने कैर भग पी बांबिये ३ दिन सोनि शुद्ध होय । पुन उपाय बीच सर्वस्वात् ॥ भांग के चीज अनवेध मोती ७ मोर सिपा उंट कटेटी जापच्छ जीरा सफेद २ टंक लोई ये बांपधि पीस छान कर पुदिधा ७ बराबर की बांधि कतु स्नान के पीठे ७ दिन ताई स्त्रीके गाय के बूध सेती अखोना खाय पीर बूर जोजन हीं प्रुत्र निरंधि होय ॥ इति राम विनोद ग्रंथ संपूर्ण समाप्त शुभ मस्तु लिप्यंत गंगा गिरि गोमाई ब्रह्मावर्त मध्ये संवत् १८७६ मिति १३ विसाव सुदी ॥

लिप्य—ईचक ॥

सूत्र्या ३७७ बी. रामविनोद, रचयिता—रामचंद्र, अंगर—देसी, पत्र—१४५, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुपुष्प)—२८९२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७२० = १६६३ ई० लिपिकाळ—स०, १६०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री स्वामी नारायण शर्मा, ग्राम—बछारा, डाकघर—विस्द्वार, जिला—काबपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दो० ॥ सिद्धि बुद्धि शायक हिये मधरीपुत्र गणेश । विष्णु विद्यारण मुप करन हरपि घरी प्रगनेस ॥ श्री धर्मंतर चरण मुग प्रयाई घरी

आनन्द । रोग नशाय जसु नाम थी सत्र जन को सुप कट ॥ विविध शास्त्र देपी करी सुगम करी अधिकार । रामविनोदय ग्रथ यह सकल जीव सुपकार ॥ अथ पुरूप लक्षण चतुर विचक्षण दिव्य नर सुदर रूप सुजान ॥ दैव बुलावन आवही मिष्ट वचन कई वाणी ॥ फल वस्त्रादिक लै करी धरै जो वैद्य हूज्ज । रिक्त पाणि नधि जाइये दल गिरी तजि दूरि ॥ दौक पुरप मंग वैद्य कै नधि लै जाइ बुलाइ । एक पुरप मंग होइ चलै तो दैव बुलायो जाइ ॥

अंत—दोहा गुन अनेक इनके अटे तिमकाले लवलेम प्रगट भापा ए रची बहु प्रकार सु विशेष ॥ अद्भुत ग्रंथ सु एह रच्यो राम विनोद एह नाम । व्याध निन्दन सुप करन कुसल सदा अभिराम ॥ परोपकार किहा किन हुँद किहां किन धर्म निमंत । किहा किन पुन धन मित्र ही किहा किन मोभा चित्त ॥ कर्माभ्याम किन सही किहा किन काम मनेह । करौ चिकित्सा चतुर नर निरफल न हुये ऐह ॥ उत्तर दिशि पुरमन भइं वनु देस प्रधान । सजल भूमि ई सर्वदा सक्ति महर शुभवान ॥ परदुप भजन के लिये कियो ग्रंथ सुप कंद । चिरं लिंग ऐ रह जो सदा जालिया में रहि नद ॥ इति श्री रामविनोद ॥ मदनमोदन कामेशुर गुटका । कामकुतूहलं गुटी । पुरूप स्त्री स्तम्भमन्त्र गुटा बेल बंधेज कौवल वीज नाम गुटी ॥ सिंह वाहनी गुटका धातु छीन कौ उपाय । पुन नामर्द कौ लेप । गत वीज कौ गुटका । हस्त कर्म का उपाय । पुन वीज बंधेज कौ लेप । स्तम्भन को ऐप, लिंग को दृढ़ करन कौ लेप । विंद कुम्भावन कौ उपाय । लिंग स्थूली करन उपाय । भग सकोचन कौ उपाय । योन पानी करै तिस का उपाय । योन दुरगध ताको उपाय । योन सूख उपाय कुच कटिन प्रफुल्लत उपाय । कष्ट विलाई थनैला ॥ स्त्री पुण्य आवन का उपाय । रितु गमन उपाय । स्त्री गर्भ धरै छवौ विवि उपाय ॥ मृत बछा उपाय । नाला परावर्त उपाय । सन्तान उपाय । पुन शास्त्र धिकार ससम मसुदेम ॥ श्लोक संख्या ३८६३ इति श्री केशवदास सुत रामचंद्र राम विरचिते सिप पद्मरग राम विनोद समाप्त सवत १६०२ वि० लिपि

विषय—वैद्यक वर्णन ।

संख्या ३७८ ए. अष्टयाम सेवा विधि, रचयिता—रामचरन, कागज—साधारण, पत्र—३२, आकार—१४ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४४, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री विष्णुदत्त उपनाम पुत्ती महाराज, ग्राम—भौली, डाकवर—तालावत्रकसी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री सीताराम ॥ सुतीक्षण उवाच ॥ हृदय मानसी पूजा की दशी वावद प्रभो ॥ उपचारैः कति विधै पूज्यते रघुनदन ॥ १ ॥ अगस्त उवाच ॥ रामं पद्म पलासाक्षं नीलाबुद समप्रभ ॥ स्मित वक्त सुपासीनं चिंतये चितित पुरं ॥ २ ॥ रागादि क्लुख चिरं वैरागेण सुनिर्मलं । कृत्वा ध्यायेत सर्वो रामं भव वध विसुक्तये ॥ ३ ॥ प्रात श्रद्धं तनुभूत्वा सौचादि भिरतंद्रितः ॥ विविक्त देस माश्रित्य ध्यानं पूजा समारभेत ॥ ४ ॥ एवं यः कुरुते

पूजा बहिरां हृदयेति वा ॥ सकृत् पूजन मात्रेण राम एव नवेन्नरः ॥ ५ ॥ चंचरीक छंद ॥
 बरनां बाह्यांतर सिध रघुवर सबकाई ॥ सीप राम एक पर कृत कोटिन सुप बरमठ मित कदि
 न सकदि सारद विधि सिध भुति अहिराई ॥ मी नित्र मति हित विरूपस पियत हरीं त्रिय
 पियास वातक ज्यो जानद एक शक्ति बुध पाई ॥ जाम एक अठि सवार शुभ करे भूतहार
 वैठिके धकांत राम मंत्र परी भाइ ॥ मावनाति नित्रा सिंगार करे अवय मध्य सार सीप राम
 सेवा तन बचन मन कगाइ ॥ सठि हल सुरंग कज मनि मी लखत रंज ताप रसै मंडल ॥

अंत—सीत क्रियो पिय प्यारी सेज सुप विविध रंग मनि मी मदिर छे अग मगाति
 उत्रिपारी ॥ मदन मंजरीकी जायसु सपि प्रथमाई सेज संचारी । दिव्य सुगंध सुमन बहु
 विंग रवि विविध रंग पुच्छारी । सीता राम भराम कीन्ह सपि टापी नीर भर झारी ।
 अनुर सली पद् धनुम पलोदहि राहसबात उचारी ॥ बीर पीक दान सपि स्त्रीन्ह सीत
 भोग भर धारी बाजन पंच बजावत पंच मनि सत म्वरन्ह रसझारी । भाई नीद सुख साइ रहे
 रघुनंदन जगठ दुसारी । रामचरज सनि बहु र्भीष्टी रहि बहु नित्र महल पधारी ॥
 ॥ १२५ ॥ झाडा ॥ यह सेवा भी जानकी राम प्रसादहि र्भी । महाराज त्रिय र्भी
 छपि मादि कृपा कतु बीन ॥ मम क्तम बचन लगाय त्रिय अति सबा कद जाई ॥ १२६ ॥
 सीता राम प्रसन्न तेहि लई परम सुख सोई ॥ १२७ ॥ मूरति प्रेम कगाइ करि लोक रीति सब
 मोई । राम चरण सोई रस लई सतगुण बिना न होइ ॥ १२८ ॥ सत्री सपा अर दास जो
 भाव विमा नहि सोइ । तीनों को अधिकार यह भाव भाव मच सोइ ॥ १२९ ॥ इन्मान मित्र
 मम ई तीनों धर्म करादि । चाही छेहि अस्थान जस तह ठैसे इइ जादि ॥ १३० ॥ प्रिय भाव
 रागा परम राम चरण मति बीन । राम उपामक वे रमिक ममुक्ति होदि ये बीन ॥ १३१ ॥
 इति भी अष्ट नाम सेवा विधि संपूर्ण शुभ ॥ संवत १६३२ माघ सुदि ६ र्भीम पामरे ॥

विषय—यह अष्ट नाम सेवा विधि श्री राम जानकी क आठे प्रहर का वर्णन है ।

संख्या ३७= श्री मानसी पूजा (अष्टनाम सेवा विधि), रचयिता—रामचरण
 कागज—साधारण पत्र—५८, आकार—९×५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण
 (अनुच्छेद)—४०६, उद्धित रूप—प्राचीन, पद्य छिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरी
 प्रचारिणी सभा काशी ।

संख्या ३७= सी राम जानकी चरण विद्व, रचयिता—रामचरण कागज—
 साधारण, पद्य—३०, आकार—१७×७ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७ परिमाण
 (अनुच्छेद)—२२३ पूर्ण रूप—साधारण पद्य, छिपि—नागरी, सिपिछात—सं०
 १९७१ = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा काशी ।

आदि—श्री सीता रामांभ्यां नमः चंचरीक छंद—सब तत्रि प्रति स्वोय राम नाम
 बयो न कई ॥ राम नाम जोग पार राम नाम संघ सार राम नाम अक्ति भार येदु मार परै ।
 राम नाम परम जान राम नाम परम ध्यान राम नाम जवन जीव नित्र म्वरुप रहे ॥
 चारि मुक्ति राम नाम राम नाम परम धाम राम नाम कदत धेगि सर्व पाप रहे । राम
 नाम समन जान जांचइ सब भुक्ति पुरात नाम नाम गनु जोप जो अवन मरु चरै ॥
 राम नाम छोदि मूढ अवर धर्म मी भरइ रामनाम पारमकी तत्रि गुंजाओ गरे । जप तप
 धत जोग दान परिषो जप मेम ध्यान जांचत नहि राम नाम बयो कृत्य सई । सुव्य मत

वेदांत सत शिब विधि श्रुति शुक अनंत कहत सर्व नास एक राम नाम रहै । राम चरण मंत्र तंत्र साथै बहु स्वास जत्र जाने विनु राम नाम सश्रित गरि वहै ॥

अत—चचरीक छंद ॥ सीय राम चरण चिन्ह मंतन मन भाई ॥ जेते सव चिन्ह लसत जानकी के नयन बसत जामु की कटाक्ष विनु न मिलत प्रभु गुसाई । निगमागम विधि महेश नारद शुभ सनक शेष राम चरण चिन्ह सदा नेति नेति गाई ॥ छोड़ि सीय राम चरण जाच जो अवरि शरण गुंजाको गहत मूढ़ पारस मनि डाई । दंपति पद पद्म रूप होर रहु चित अवि अनूप छोडु वक पर्यंत रहु विवेक हंस नाई । श्रुति टटार कहतु तोहि आपन सपि जानि मोहि जानकी निहारु नेकु चरण सरण लाई । राम चरण मन वरोर मानत नहिं कहा मोर भारत मोहिं विनु गुनाह जानकी दोहाई ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ रामचरन सव अंक गुन रंक साथे फल होई । चित्रकूट चितमें वसै जागि रहै की मोई ॥ ५९ ॥ चित्र कूट चित अंत प्रभु लपत प्रेमकी वाढ़ि ॥ राम चरण तेहि सतको भक्ति गोद लिहै ठाठि ॥ ६० ॥ परभाषा को काटि कै अपने जसहि वढ़ाइ ॥ राम चरण ते स्वान कवि बचहुं न पेट अघाइ ॥ ६१ ॥ श्रुति गिरि कदर में रहत कहत अनूठी वात ॥ राम चरण ते सिंह कवि नव गर्थद ते पात ॥ ६२ ॥ इति श्री 'राम जानकी चरण चिन्ह' कविच समाप्त संवत् १९४१ चैत्र कृष्ण ३ तृतीयायां शृगुवासरे लिखि आनंदी दीन पंडित निज पठनार्थ ॥

विषय—इस पुस्तकमें श्री राम जानकी के चरण में नाना प्रकार के (चंचरीक छंद, सदैया दोहा आदि में) छंदों में भक्ति भाव पूर्वक रचयिता ने अपने मनः संकल्पों को साधु भाषामें प्रकट किया है ।

संख्या ३७८ डी. पटपचासिका, रचयिता—रामचरन (चित्रकूट), कागज—साधारण, पत्र—८०, आकार—९×४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनु-पुष्प)—६३०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४२ = १७८५ ई०, लिपिकाल—सं० १८६६ = १८०९ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह जी, तालुकदार, कालाकांकर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री राम चंद्राय नमः ॥ दो०—नाम भक्ति कैवल्य मुर तुलसी गंग हरि संत । हरि उछिष्ट नव सम सरन राम चरन नव अंत ॥ १ ॥ श्री भरत महाराज भय सदा चार सोह न यति । तामु दास को दास हौं जैति जै जयति ॥ २ ॥ अवध पीर निधि ससि उदित प्रेम सुधा परि पूर । उदित सदा जस एक रस साति तोप मृग रूर ॥ ३ ॥ कोक सुखद कुल सोक नहिं सत हंस अति प्रीति । सत समाज पयोधि हरि, रमा राम पिय नाम । राम चरन भा प्रचुर दै मुनि दीपक की रीति ॥ ४ ॥ ग्यान विसद आनंत प्रज राम चरन विश्राम ॥ ५ ॥ तीरथ पति पद पाइ पद, पाय जासु भव अंत । दुरित दुरावत जगत तेहि, दुरित दुरत लखि सत ॥ ६ ॥ सुर सरि मृग कुसुम अनल मलै सुगंधरु संत । नीचौ मिलि निज सम करत सत देत भगवंत ॥ ७ ॥ जोग ज्ञान अध्यात्म करि, मिलहि जाहि भगवंत । राम चरन रस नहिं रह्यो, विना समागम सत ॥ ८ ॥

अंत—वर घरनी घर छोड़ि वन, मन मनसिज के हेतु । तुव पति घर वन क्यों फिरै विभचारिण मन चेतु ॥ ७० ॥ पर पति छम पुनि सोक वन निज पति धनद दिमाक ।

राम चरन पति मत्त भरनि पिप विपूरत भी प्यक ॥ ७१ ॥ बूँदा पति मत्त सीस पर जवसूया
सुत कीन । राम चरन पति राम है पति तन जो पति कीन ॥ ७२ ॥ हरि जस सुर सरी
गीर ज्यो कोठ बहु कोठ छुपु पाइ । मति माकिऊ सब विवत कहि सुर पुर हरि पुर जाइ
॥ ७३ ॥ इति श्री सत पंचासिका विवेक शान बर्ननी नाम पंचमो अक्षरस संबद्ध । १८६९।
किपी राम सेवक पठि ॥

विषय—(१) पृष्ठ १ से पृ० १७ तक—प्रथम अक्षरस संत संगति महत्त्व, तत्र
गुण तथा इन्द्रो मेह विर्णय ।

(२) पृ० १८ से पृ० ३४ तक—दूसरा अक्षरस । पंच तरवों के गुण तथा अर्ध
करादि वर्णन, जीव का तन्वों से संबंध, शरीर वर्णन, जीवों के विविध शरीरों में रहने का
वर्णन, चारों अवस्थाओं का वर्णन । इन्द्रोपति—तत्र बानी प्रवाग वर्णन ।

(३) पृ० ३५ से पृ० ५१ तक—तृतीय अक्षरस । सब अवस्थाओं की व्याख्या,
ब्रह्महृत्, अनुमंत्रण पदर सांख्य ज्ञान मेह वर्णन ।

(४) पृ० ५२ से पृ० ६८ तक—चतुर्थ अक्षरस । अर्ध ब्रह्मांड चरामी, त्रिगुणा
तीत क्षरा प्रखर विस्तर, आध्यात्मशास्त्र, परमात्मा विवेक मेह वर्णन ।

(५) पृ० ६९ से पृ० ८० तक—पंचमो अक्षरस । विवेक ज्ञान भक्ति, अंग
कायन रस, विरहो, मक्ति मीमांसा वेदांत व्याप वर्णन शास्त्र अक्षर पति मत्त मेह वर्णन ।

ग्रंथ परिचय—'विग्रह' में ईश्वर पद छपे, इतल अंग पाप । शोहा सत पंचासिका
पदहि साधुमा आप ॥ संबद्ध सत अष्टा दर्श आकिसि बुद्ध रितुराज । कृप्य पद मनुमास, बुध
श्रीपी संत समाज ॥

प्रथम समाप्ति—इति श्री सत पंचासिका पंचमो अक्षरस । संबद्ध १८६९ ॥
किपी राम सेवक पठि ।

सद्यया ३७८ ई इष्टांत बोधिका (मिरह ग्रंथ), रचयिता—रामचरण दास (अबोध्या),
कागज—साधारण, पत्र—१९, आकार—१२ ३/४ × १ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८,
परिमाण (अनुच्छेद)—१४४, पूर्व, रूप—मशीन पत्र किपी—नागरी, किपीकाल—सं०
१८९९ = १८४२ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा अक्षयसिंह सिंह रईस, तालुकेश्वर, काछाकांकर,
जिला—मठापग ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ शोहा ॥ रामचरण पदपु सतक राम सख्य रस
वेह । शोह नाम्द है रज मिस ज्यो बुंकर गहि केह ॥ १ ॥ राम चरण दृष्टोत यह जो समुंरी
मन काइ । बस है राम हिय मगन सोइ मूक स्वाद जिमि पाइ ॥ २ ॥ राम चरण बिनु
विरह प्रसु मिसुन कस्य ककि काइ । गऊत सीरागा प्रथम जिमि तव कंचन मिकि
आइ ॥ ३ ॥ विरह अगिनि निम दिन जरि सदै ज्ञान जसि पार । राम चरण रघुवीर तन
सती सुर हुक बार ॥ ४ ॥ राम विरह हिमि मन जरि मूल बीज जरि काइ । राम चरण
अं ज्ञान अद दावामिनि हरि आइ ॥ ५ ॥ बिच विरह को अगिनि बुइ, राम चरण सो
विचार ॥ बिता जराथि सुतक को, विरह त्रियत नित जाइ ॥ ६ ॥

अत—राम चरण जग वासना । तव लग सुद्ध न होइ । ज्यों मट के घट भरै । कट्टु पावन केहि विधि होइ ॥ ९८ ॥ लोक लाज अभिमान सुप, तव लागि हृदय न राम । राम चरण नृप क्यों वसै, जहं मलीन लघु धाम ॥ ९९ ॥ लोक मान की आगिन में धम कर्म जरि जाइ । राम चरण रघु नद की, करुणा वारि तुझाइ ॥ १०० ॥ अस करुणा करि हँ कवहुँ, राम चरण पर राम ॥ तव सरूप जल मीन मे, मरो विछोहत नाम ॥ १०१ ॥ यह दृष्टांत प्रबोधिका, सत्तक विरह को अंग । राम चरण तेहि समुझि रहु, राम न छोड़हि संग ॥ १०२ ॥ इति श्री दृष्टात बोधिका विरह अंग वरनन नाम पचम सतक समाप्त ॥ संवत् १८९९ ॥ लिपा विश्रामदास । पोथी लाल हनुमत्त सिंह जीउकी ॥ लिपा काले कांकर हनुमान गढ़ी भीतर में ॥

विषय—रामचन्द्र जी के विरह संबंधी दोहे (दृष्टान्तों और उदाहरणों के साथ) ।

संख्या ३७८ पृष्ठा. दृष्टात बोधिका (विशेष लक्षण), रचयिता—रामचरनदास (अयोध्या), कागज—साधारण, पत्र—१६, आकार—१२ ३/४ × ५ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४, प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह, तालुकेदार, ग्राम—कालाकाकर, जिला—प्रतापगढ़ ।

संख्या ३७८ जौ काव्य शृंगार, रचयिता—रामचरनदास (अयोध्या), कागज—वादासी मोटा, पत्र—१६९, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८२ = १८२५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जगदंबा सिंह, जमींदार ग्राम—धनुहा, ढाकधर—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि०—वदि चरन सिखि प्रश्न करि, करहु गुरु निर्वाह । सुमिरि राम सुचि सत्त के, सुनु रहस्य अवगाह ॥ अधिकारी कहि अंग जे, विषय राम सम्बन्ध । दास प्रयोजन भजन दृढ़, राम चरन, चौ संघ ॥ छप्पय—अवध क्षीर निधि उदय चद श्री राम प्रसादस । पूरण प्रेम प्रकाश, नेम यम युगु कुरंग वस ॥ सुयस प्रकाश मयूप, वचन कुमदनि चकोर जन । संत गुरु भगवत, भाव यक सम शीतल मन ॥ आपु सरस सब विधि उभय, श्री रघुनाथ प्रसाद गुर । प्रभु युगल पदम पद वदि रज, रामचरण, जो कहाँ पुर ॥

अंत—घनाक्षरी—लक्षण गुण संत के अनेक वेद गावत है, आठ गुण महा मुख्य तामे वह जानिइ । एक गुण श्रद्धा वेद सत्त गुह वाक्य फुर लय राम चरित में अनुभौ वसानिए ॥ दूजो सु विवेक माया ब्रह्म सत्य सत्य जानौ, वद्ध भोक्ष कर्म जीव ईश्वर पहि-चानिए । तीजो संतोष वृत्ति क्षमा, ज्ञान दया शान्ति, सत्य निर्वैरदम संयम अमानिए ॥ चौथो ब्रह्म ज्ञान जीव चराचर रमेराम, देखै सर्व भूत सत्य नित्य निर्विकार है । क्रीदित लखि माया मध्य पाचो गुण दया दीन कोमल सुहृद शील करुणा उदार है ॥ मेरो प्रभु निर्मल अपठ आपु लीला करै, ताको सनमान परमार्थ छोठे प्यार है ॥ जामे जो प्रसन्न सोई करै देश काल पाय । वाक्य मन कर्म धर्म तन जन तुम्हार है ॥ सातो भाव चराचर राम सस्कार नेकु । देखै सुनै ताको तटाकार हरि भावहीं । आठो भक्ति आठो लाम सुधापान राम नाम

मेम मय प्रमानन्द सीह राम पावहीं राम रूप भीर मीन रामधन पपीहा हीन, राम मुक्त
 खंभुमा बखेर बिच छावहीं । भाद्री गुन छीन्दे राम चरम राममक्त होय, ताको गुन बिग
 मागम नति २ गावहीं । इति ।

विषय—श्री रामचन्द्र जी के जन्म से बिबाह तक की सम्पूर्ण कथाएँ ।

संख्या ३७२ यद्य रामायण बाह्यक्रीड की टीका (पूर्वांश), रचयिता—रामचरम-
 राम (अयोध्या), कागज—माधारण, पत्र—६८, आकार—१२२ × ५३ इंच, पंक्ति (प्रति
 पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२५, पूर्ण, रूप—मबीन, लिपि—भांगरी,
 लिपिबद्ध—सं० १९०५ = १८७८ ई०, प्राप्तिस्थान—राजा बबनेश सिंह रूस, ताहुकेदार,
 काहाकाबर, जिछा—प्रतापगढ़ ।

अति—दोहा । पद बर बीस तरंग में, रूप रानी रूप श्याम शय बचन पर प्रभु
 दरस सोमा सिनु निघाम ॥ २६ ॥ हे भारद्वाज हे गुरु श्री महादेव बोलत मय हे सीरु
 कुमारी आपनी बुद्धि शिष्य करी श्री राम चन्द्र के तीन हेतु ताँ मी कहि आठ हैं जखी प्रकार
 से अपर हेतु मुनहु जो बिप्र बिचित्र कथा बिस्तार समेत करी जो सो पित रुगाइ के मुनहु १
 हे पार्वती उन बनो कारण मुनहु कहि कारण अत्र अगुन अनूप पर ब्रह्म अवतीर्ण मय कोशक
 पुर भूप मय सो कारण मुनहु अत्र कहि अद्यत्मा । अपर हेतु मुनु सीरु कुमारी ४ करी बिचित्र
 कथा बिस्तारी कहि कारण आज अगुन अनूपा, ब्रह्म मण्ड कोशकपुर भूप ४ जो गर्भ में
 नहीं आई अरु जाको अवतार हुको तात पर्व नहीं है आपने अष्टाकका विभूति करिके पृथ्वी
 को मार उतारते हैं ताते अत्र करी पुनि अगुन करी तीनी गुन रहित रस रूप सच्चिदानन्द
 विग्रह परम त्रिमय ब्रह्म मय गुन ज्ञान विज्ञान मोक्ष कल्पना वास्तव्य सौखीन्य इत्यादिक
 स्वामादिक जिनमें है ताते अगुन करी पुनि अनूप करी जिनके सहा कोई नहीं है जिनकी
 उपमा को न सो अम है न ता कोर्द मगबत अवतार है न ता बिष्णु नारायण है न तो ब्रह्म
 व्यापक है अपर की कथा करी ना स्वरूप आग कहत ही है अरु बीपाई के अंत में अनूप
 ही पाठ है पर कोई इठ करिके अथय पाठ करते हैं तहाँ अल्प कही जा अ प्राकृत रूप
 नहीं है तीन गुन पांच तय्य अबिधा माया रूप रहित है पर ब्रह्म मय रूप है जिनको
 ताते अरुप कहत हैं ज्ये जो पर ब्रह्म सो केशरपुर भूप भय ।

अठ—इति प्रसंग श्री महा रामायणे दोहार्थ समाप्तम् ॥ दोहा ॥ अति पुनोत को
 अर्थ स्तुपु बालिक कर्ष्य प्राण । राम चरम गुरु कृपा से कृत पूर्वार्थ समाप्त ॥ २५ ॥ इति श्री
 नीताराम चन्द्र त महाराज र्पत्नी बरदान दर्शन नाम मठ विंशति तरंग ॥ २७ ॥ दोहा
 बसु अरुविम तरंग में मानु प्रताप प्रसंग । राम चरम ताप मिमज पुनि । सरिर बर
 भंग ॥ १ ॥ अंतत १९०५ मिति आबन बही ११

विषय पृ० १ से—३३ तक—ब्रह्म के श्रीशङ्करपुर भूप होने की शंका का निवारण ।
 पार्वती का सिद्ध का रामावतार का विषय में समझाना छुटि निरूपण मनु भीर रानी सतपथा
 की तपव्या त्याग ईश्वर, ज्ञान । अतिक भीर परम पुरुष प्राप्ति तथा दर्शन ।

२६ वां तरंग (२) पृ० ३५ से ६८ तक—राम के स्वरूप की प्रशंसा, राम रूप

देखकर टपति का मोहित होना, भूमि पर गिर जाना, भगवान का उन्हें उठ कर हृदय से लगाना और वर माँगने को कहना, उनका भगवान जैसा ही पुत्र माँगना भगवान का तथास्तु कह कर उन्हें सुर पुर भेजना और अयोध्या में अपने अंशों सहित अवतार लेकर उनका पुत्र होने का वचन माया का सीता रूप धारण करके आगमन । इस प्रकार उमा के संदेह का शिव द्वारा दूर किया जाना ग्रंथ समाप्ति

२७ वा तरङ्ग—ग्रंथ कारका परिचय—(पृ० ६६)—“मे रो नाम श्री रामचरन है और महाराज श्री रामप्रसाद जी तिनको श्री रघुनाथ प्रसाद जी तिनके में हों जिनको श्री अयोध्या जी मे परम अस्थान है । तहां श्री मद्राम चद्र की सत्य संकल्प वेद वसते है ताते एसे स्वामी के परमानन्य शरन है ते सवै सव्य जयार्थ वादी है ।

संख्या ३७६. कालज्ञान, रचयिता—रामचरन दास साधू (राजपुताना), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७६१ = १७०४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सूरतसिंह, ग्राम—शिविरा, ढाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ काल ज्ञान लिप्यते ॥ दत्तात्रेय उवाच ॥ सावधान हरि दास रहाई । जो रैनि दिना करै हरि सों मित्राई ॥ मृत्यु काल को सदा विचारै । देपि उपद्रव वेगि सभारै ॥ जानि मृत्यु पहिले ही हरई । जोगेश्वर न्यारा होइ रहई ॥ देह गेह ममतादिक त्यागे । निरालंब होइ कहीं न लागै ॥ लागै तहां जयां ते आयो । हो अलटक वेद भागवत गायो ॥ पार ब्रह्म सरिणै चलि जाई । जो अरिष्ट देपि सावधान रहाई ॥ सो अरिष्ट तेहि कहि समुझावत । जितने मृत्यु को समै लपावत ॥ जो शुक्र अरुधती ध्रुव नहिं देपै । तथा देव मारग नहिं पेपै ॥ अथवा ससि छाया ससि माहीं । सो वरस ते ऊपर जावै नाहीं ॥ जाहि किरण हीन सूरज दरसावै । अग्नि सर्व समान लपावै ॥ सो तौ जीवै एकादस मासा । विचार पहिले ही होइ उदासा ॥ जो छादै मूते विष्टा कराई । सोवर्ण रूपै पै मन जाई ॥ प्रतच्छ अथवा सपने माहीं । सो मास दस जीवै आगे नाहीं ॥ भूत प्रेत पिशाच को देपै राई । अथवा गंधर्व के पुर भाई । कै देपै कनक के वृक्ष उदारा । सो तौ मरै नव मास मझारा ॥ जो मोटा से दुरबल हुइ भावै । दुरबल से मोटा दरसावै ॥ प्रकृति स्वभाव पलटि पुनि जाई । साधु असाधु असाधु साधु भाई । अकसमात अलरक ततकारा । सो सो आठ मासे अधिक न जीवै लगारा ।

अंत—जब देव ब्राह्मण निदै राई । अथवा गुरु की निंदा कराई ॥ कै माता पिता की निंदा धारै ॥ कै महात्मन की निंदा विस्तारै । जे जे पूज्य होहिं विश्व माही । तिन तिन को जब मानै नाहीं ॥ ताके मृत्यु काल के लक्षण आये । मृत्यु काल समै दरसाने ॥ ते पुनि नरका सूधे जाहीं । जिनके पर निंदा उपजे घट मांहीं ॥ इतौ उपद्रव सदा विचारै । रात दिवस छिन छिनहिं संभारै ॥ ये घोर उपद्रव दरत छु नाही मत कोइ एक पुन्य करि टरि जाहीं ॥ किसई एक पुन्य के बलराई । कोई एक अरिष्ट टरि जाई । परि हरि रति झड़ों सतकरि धावै । काल की गति लपी न आवै ॥ जिस उपद्रव को जितनो परिमाना । मास दिवस पप तिनौ निदाना । जब लग रहै एक शुभ अस्थाना । निरालंब होइ साथै

प्यामा ॥ तब मृत्युच्छक की जन्मर आये । तब साच भाव होइ तपु छिटकर्य ॥ शौ० ॥
 तपु छिटकर्य साचवान होइ सब से उरदाय । प्रेम प्रीति सरभाबंत खोगी हरि सन हेत
 कग्याय ॥ इति कासु ज्ञान भाष्य ग्रंथ सार्वर्ण समाप्तः । संवत् १७६१ कार्तिक मासे शुद्ध
 पक्षे द्वादश्यां कृष्णं श्रीपुर शुभस्वान तिथि कृष्णांशं शिवनाथ गोसाईं स्वपठभार्यं हस
 पुस्तक की कैसी प्रति देखी कैसी तिथि अष्टक का मम शोप नाहीं ॥ श्री गणेशायनमः ॥
 श्री गुरुजी महाराज की है ॥ राम राम राम ॥

विषय—अपने की मृत्यु ज्ञान किस प्रकार से होवे और उसमें किस प्रकार के स्पष्ट
 और प्रत्यक्ष में क्या २ चीजें दिखाई देंगे आदि का वर्णन ।

संख्या ३८०, तीय महात्म्य, रचयिता—रामदास, कागज—देसी, पत्र—७,
 आकार—६×४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुच्छेद)—३५, पूर्व,
 पद्य, लिपि—नागरी, लिपिका—सं० १८९३ वि० प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर शूरे,
 सैबपुर, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः असमान का होई पुरी को कैये । प्रथमी प्रयाग राज को
 कैये मुंढम जाय करैये । गंगा जमुना और सरस्वति संगम जाह अर्धये । कासी पुरी मुक्ति
 की दाता तेहिमा कुछ दिन रहिये पांच कसेसु परिकरमा करिके बीसुनाम सिरमिये । अस मन
 होइ पुरी को कैये ॥ यथा आहूके रामसिद्ध पर पंडि पीताकिस करिये । हाथ बंधाह गया बर
 के फल पाठ डार भरीये । हरहार तें बस मर सीये बाबा बीजनाथ को चरिये । अष्टत चन्दन
 बेल पत्र ही प्रेम सहित जन्मिये । असमान होइ पुरी को कैये । मुक्ति और बरसन पाये कलि
 चन्द सिर मिये । नार अठर है पार उतरि के तन के पाप बरिये । असमान०

अंत—अंबर दास बाब श्रीरासी देकमि देकमि गुन गये । रामदास कहे कर जोरे
 मक्ति खीन होइ रहिये । अर्थात् मंडला कारं स्यात्तं यैव चराचर । तत्पदं दर्शित यैव तसमी
 श्री गुरवे नमः ॥ गर्भ परीठित रक्षा कीन्दी हती नहिं बन बाको मेही पौर परम परसो
 तम बुद्ध दाहि है का को समा मास शोपति पति रापी है पति पावन कुछ ताको । बसन
 बोर करि कीट बिसंभर परबन दीन्दीज्ञाको ।

विषय—१—प्रयागराज की महिमा संगम स्नान । २—मुक्ति दायिनी कासी की
 महिमा पंच श्लोक का वर्णन । ३—यथा के विंढ दान हरहार से जल काकर बीजनाथ को
 चदाना । ४—रामेश्वर-बड़ीनाथ जयोप्या और मपुरा आदि तीर्थों का माहात्म्य । ५—
 भगवान की मन्त्र रक्षा ।

संख्या ३८१ गंगा विवाह या विवाहला, रचयिता—रामदास, कागज—देसी,
 पत्र—१२, आकार—६३×५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुच्छेद)—
 १६५, पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री चतुर्भुज, ग्राम—भोजपुर,
 बाकबर—गडबारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अब गंगा विवाह लिप्यते कृष्ण बचन ॥ कंड सरस्वति
 सुमिरि प्रेम आनंद मनाई ।

मातृ पिता दंडित सीस साधुन को नाऊ ॥ आन बुद्धि घट भये गुरु गजेश मनाय ॥
गंगा विवाहला जो सुने सुनत पाप कटि जाय ॥ कृष्ण वचन ॥ १ ॥ वनते जभू चलौ तीर
गंगा के आयो ॥ पानी पियौ अवाय कूटि गंगा में न्हायौ ॥ मूँछ मरोरे सर धुने कर मीडे
पछिताय ॥ देख रूप गंगा महरानी के जंझ गयो लुभाय ॥ कृष्ण ॥ २ ॥ जब गंगा ने ऋही
सियार तू वन वन डोले ॥ तेरे मन में कहा आय नित हमसें बोले ॥ भिरत लोक पाताल में
निकट वही बैकुण्ठ ॥ जो तेरे घट भीतरह यह हमसे कहाँ निसरु ॥ कृष्ण ॥ ३ ॥

अत—दे दे हर कहँ माँग गंगा महरानी । सो माँगौ सो देत है धर्म की वढ़ी
विचारी ॥ सो माँगौ सो और सिरजन, घड़ी ताँहार । नदियन में गंगा वड़ी तीरथ वढ़ौ
प्रयाग ॥ ७५ ॥ कृष्ण ॥ गुरु मार वन खंड में डारे । भैया मारि द्वार प्रकारे ॥ पर वर तौरा
भोय के पर घर चोरी जाय । इनको पाप काट देउ स्वामी जी ऐसे नर मो में न्हाय ॥ ७६ ॥
दौलत धन और मन बहुत गंगा तोय द्यौ । सुवनत राजा वढ़ौ आज हमनें कर दीयौ ॥
कर गंगा विदा जो हरनें मान हमारी सीख । गंगा सुवनत राजा संग मजोग कुमर घोडा
दीयौ ॥ सुवनत तौ हाथी चढ़े दुरे चोर घराय । हथना पुर के रेत में दई वच घुराय ॥ कृ०
॥ ७८ ॥ दीये हीरालाल चढ़वे कूँ घोड़ा सुवनत के सग करौ । गंगा को डोला दीन वन्नु
ऐसी करी धरनी भई सहाय । रामचन्द्र के चरण कमल में टाम रामा बलिजाय ॥ कृष्ण ॥
७९ ॥ इति श्री गंगाजी व्याहला संपूर्णम् ॥ श्रमम् ॥

विषय—पृ० १ से पृ० १२ तक—मंगलाचरण, जवू का गंगा के प्रति विवाह
प्रस्ताव, गंगा जवू सवाद, जवू का शरीर त्याग, भगवान का जंबुक को वर देकर मृत्यु
लोक को भोजना, सप्त ऋषियों द्वारा जंबुक का राजकुमार होना, उसका नाम सूवातन होगा,
गंगा का मोहित होना । (२) पृ० १२ से पृ० २४ तक—जम्बुक के पूर्व रूप स्मरण होने
पर गंगा की कुरुचि, पुनः भगवान के पास जाकर उसका उलहना देना । भगवान का गंगा
के साथ उसका विवाह कराना । देवादि द्वारा विवाहोत्सव मनाया जाना । गंगा का वर पाना ।

संख्या ३८२. दानलीला, रचयिता—रामकृष्ण, कागज—साधारण, पत्र—५,
आकार—६३ × ६३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुपुष्प)—४५, पूर्ण,
रूप—नवीन, पद्य, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—श्री वावू राम विथरिया, सिरसागज,
जिला—मैनपुरी ।

आदि—अजब महवूव गोकुल में हुआ घर नद के रोशन । धरे सर मुकुट सुवरन का
जडाऊ रत्न से कुडन ॥ रवाँ शुर ओढ़ पीतम्बर सुवह दम सूये विन्द्रावन । अजायव
नौजवाँ सुन्दर खुलार जुल्फ वर कानन ॥ सखे ले गोप के पालरु, लीहँ धेनु आगे धर ।
अनूठी वाँस की सुरली, वजावत माधुरी तानन ॥ फिरत हैं कुज-कुजन में, पहर गर माल
फूलन की ॥ धरे सर मोर के पखवा, चरावत वछरु कानन ॥ गयो जब साँकरी खोरन,
चरावत धेनु घर में की ॥ मिली वह ग्वालिनी आवत, करत भूपन छनाछन ॥ सहैली साथ
की चहँ मुक लखीं जब जादह का हदनो । डगर को घेर हँस बोले चुकाओ दान मन
भावन ॥ गई हो वेच दध सब दिन दगा दे दे पियारी तुम । मगर इमरोजु पाई हो न
छोड़ू वे लिये दानन ॥ उठी हँस बोल यक ग्वालिन माँदक असाँ हुए लालन । कहा इत

रात पैर में सुना नहीं दाम दूध गायन ॥ न हम पर लेप मोतिन की न खदे लख की
हीरा । न केसर मुद्रक की गादी न लखे जात है साकन ॥

अंत—अनोखो आज हैं प्रकटयो भुजाने बंध को फोटा । लगावत दान है पथि को
भरत है कर व काकन ॥ बराबो गायेँ छौंरो तुम नहीं यह बात हो लेरी । कछेंगी कम सों
बन हम छिरेंगो मागतो मागत ॥ सुनोरी ग्वालिनी बोरी करगो कंस क्या मेरो । कहा मुँदि
कर दिजावति हो किंकिर सुद अपनी आपन ॥

X X X X

पथी बप हार के जानो, बधे न विन दिये हासिख । छल है खोल कर धूध की नीन
विन दूरत के ठाकन ॥ मर मैन कबहीं किये पदिसे परल कर दूरत हैं । करी हैं ग्वालिनी
दुखसत खडे है रंग पर्युचावन ॥ भरत हैं दान पथि कीसा मगत होइ राम किसन भाजिन ।
हुँवर जो इनाम सुन्दर पर करत हूँ मान लन बारन ॥ तमाम युवा

विषय—गोपी कृष्ण के प्रेमाहाप का वर्णन ।

संख्या ३२३ रामदास, रचयिता—रामरंज, कागज—साधारण, पत्र—८, आकार—
१५ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुच्छेप)—२३, पूर्ण, रूप—गाचीन
गद्य, शिषि—नागरी और गुप्तुकी मिश्रित, शिपिकास—सं० १८८४ = १८९७ ई०, प्राप्ति
स्थान—श्री साक्षिग्राम वीक्षित, ग्राम—जानू हाकरपर—संहीला, विद्या—हरदोई ।

भाषि—श्री क्लेशाप नमः ॥ संख्या तापनी मर्ब दोप निवारणी संप्या करति धर्म
न री पिंड प्राण की रक्षा वाच निरंजन के ज्ञान सुपमन पुण्य ईश्री पञ्च कृतात्मन जना
वाप समाधि पूजनमो देव पितृजना ॥ ॥ सं अर्थ मंडलनिराकार X X X X X X

तास्तोक संतोप भई श्री रामदास दीप ॥ अरा आगवा पंच तत्व पचीच प्रकृति कां
भूत आत्मा पचाई स्पाम इष्टि स्पाम परिति भाई पात अपाम समाज उदान जसमान मिलि
भनइय आपद की पचरिपाई ७ उकडि या सरगूह डंक छेदन किया । पेपि या पंथ तिहां
कहा सारी श्रीन प्रगट ही जारा व्याधा करि उंकनी संकरनी बेरि मारी ८ धरणि अक्रास
बीच पंच बहला किया भूत मेत ईत हाथों न संपारे मत्र की कडरी पत्र का इहलै बत्र के
पङ्कगह मुद्रक मारा गदक पंधी । उवा नागणीइस्या विपक्षित हरि में निद्रा न क्षरि ८-
पिंड निरमल मया पिंडरो पैड सुवा रोग विषा मघना न व्याधि ॥ रोमरोम रंकर उचरत
बापी १०१

अंत—बाद नाद सुप भासा जाके सात्र सात्र १०- लेचरी मूचरी चाचरी अयोचरी
उमपरे बाई—यह बाठ बाप बाधिनी कसुमुद्र रोपे चरा मचरा पंन पास अप किधों
बाई किरितार है निराकर निरंजन के चक्र जो बाढ़ बागा इष्टि अस्तुष्ट एक छिद्रवीर
बैठाकना गूह सुहमापे उदाका पंच में धोर में चार में सोर में घर में बहेर में हेमपादेन
रात्र के तेज में ईद ही उठनी सोचतों जागती पेकती मासती पाबिती पीबती नासती
धोयती सांकर पीड पी उठी अगि अक्रास में श्रीराम रघु करे संत के सीस पर हाम दिया
रहे पराण अदनीस ही अपराठा करें गुल का आप ही गुल से बंध सूर्य होइ कपार इदिबो
करे जीति या कदमन जी सुनते जानकी जी सुनते हनुमान जी सुनते पापन किरंत तुम्य

तासु हरेते संध्याकाले प्रातकालेनरा पठते सुनंते माळ मुक्ति परम पावते । इति श्री राम रक्षा गुरु रामनद जी कृति सपूर्णम् सं० १८८४ कार्तिक मास्ये क्रत्णे पक्षे दिने गुरुवारे ।

विषय—आत्मरक्षा हेतु रामचंद्र की स्तुति कविता तंत्र रूप में लिखी गई है ।

संख्या ३८४ ए. दानलीला का वारामासा, रचयिता—रामनाथ, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ X ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६२७=१८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जयतीप्रसाद, ग्राम—गोसाईं खेडा, ढाकघर—चमयानी, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दानलीला का वारा मासा लिप्यते ॥ टेरे ॥ श्री कृष्ण को ॥ तू देरी दधि को दान गुजर मतवारी । टेरे गोपी की ॥ अजहुं न लाग्यो ह्यान दान गिरधारी । तू सुनहुं ग्वालनी खड़ी हमारी वात । दधि वेचन को नित आवत नित जात ॥ लागेदान हमारो सो तू चोरे जात । बहुत दिवस हो गयो है तो कू खैर हमारी खात ॥ तुम दान देती नहि हमको हमे दान लियो चात ॥ जो नहि देती दान हमारो तो होई उतपात ॥ हे गु० ॥ १ ॥

अंत—आज कहु आदर नहिं तुमरो सुनो जगत के राय ॥ उस दिन याद हमारो मोहन भूलो मत चित लाय ॥ साखन चोर लियो घर भीतर । लरे यशोधा धाय । हाथ जोड़ तुस हमसे बोले ग्वालिन वेग छिपाय । जरा ढील हमको लगी मोहन धुसे विवर में जाय । ज्यो अगहन मे नाग देवता धुसे जिमी के माय ॥ जी मान्गी ॥ १४ ॥ मैं हूँ कुवर लाडलो उनको वह है भरी माय । मारै कूटै माता जानौ तिनकी क्या दरसाय ॥ वही ताड़ना समझत नार्हीं यामें सूफल पाय ॥ मात पिता के विना लाड़ना वालक भय नहिं खाय ॥ मात पिता से प्रीति पुत्र से माता रखै सिवाय । रामनाथ कर जोड़ कहत है करो सदाह सहाय ॥ १५ ॥ आप कहौ विन ताड़ना वालक भय नहिं खाय । जिनसे जाय पुरी हौ सोई देई सवै सुनाय ॥ ज्यों तुम रीति करी सव हमसे कहि हौं सवै चनाइ । देहै तुमको पूर ताड़ना तेरी जसुमति माय ॥ मैं भी जानू ग्वालिन ऊपर राखै प्रीति सवाय । रामनाथ कर जोड़ कहत है करी है मेरी सहाय ॥ इति श्री दान लीला को वारा मास रंगत खेल की संपूर्ण समाप्त ॥ सवत १९२७ वि० चैत्र शुक्ला सप्तमी ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का गोपियों से दान लेना ॥

संख्या ३८४वी. यशोदा श्री कृष्ण का भगवा, रचयिता—रामनाथ, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—६ X ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६२७=१८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री श्याम मनोहर सिंह, ग्राम—भुवारकपुर, ढाकघर—मगराहर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ रगत खेल में ॥ टेरे ॥ जसोदा की ॥ आछें उजागर जनम्यों लाडला तू मेरे कन्हैया ॥ टेरे ॥ कृष्ण की ॥ कैसी उजागर गायो लाडलो जसोदा मैया ॥ कुलहि उजागर पुत्र जनमि कै आछो नाम कढ़ायो । दूध दही की कमी न तेरे द्यो

सुद सुद इषि न्याया ॥ बड़े धरम की जायो बाई जग में खोर कहायो ॥ मन्त्री उसहमो दे
 गई मोझे पसा बचन मुमायो ॥ बन में तेज कम्पेया तेरो शिष्ट सुरज उषो गायो ॥ तू
 मान ॥ १ ॥ सखिपन तज सुरज ज्यो गायो बा तैरी पुम्पाई ॥ तुझक उखाना दे गई ।
 सखियां सबी नाच बरसाई ॥ अब हम तुमको बना करे माता जो पमकी दिकराई । एक
 भरज मुन लेरी मेरी माई पाओ जरा मर गाई ॥ घेरा गऊ बराबत मोको सब मिळि भसे
 आई ॥ ईसे नदी जघान जसाई पूर हैम की भाई ॥ हे मुन ॥ २ ॥

शंत—सांच कहुं फिरि बांध मुमायो मोहि जमुना के तीर ॥ सब सखियां मिळि
 बहु सुर काया गैना बरबनो तीर ॥ तव में क्षीर क्षीर कर द्वारा सब सखिपन के भीर ॥
 सखियां जर बतहायो तेरो मन मे मेर भीर । मेरे पाप तुमरो माता फेर मरी पीर ॥ ज्यो बैसाख
 घूप में पोपण लघु बृहन्न को मोर ॥ हे मुन माता ॥ १२ ॥ तरे पीप हमरो काख सुती
 सो बन म जाओ । सदा संग सब केव तुमारी बाछी वेनु चरओ ॥ शिजे बर के छारा
 बाओ बैसी सोमा बना ॥ प्यारे सगो समी बिरज को उछहव तुम मत खबो ॥ सखियां
 बरस कारले ध्येई हनी पुयी बतहायो रामनाथ कर और कहत हैं आछी महर रताओ ॥
 रेतुमा ॥ १३ ॥ तैर हुकुम से बन मे जाके एक भरज मुन कीजे ॥ सांच हृद की लखर पड़े
 बिन बासे विच म दीजे ॥ सखियां फेरि बात बनारै सौ सबही मुन कीजे ॥ विना सबर
 विच दिये जसोदा अछ बत दिख में छोडे ॥ जैमी महर भाज तुम रात्री बैसी कर रलीजे ॥
 रामनाथ कर जोइ कहता है साब सदाई कीजे ॥ हे मुन ॥ १४ ॥ इति शगदा जसोदा बा
 श्री कृष्ण क्य वारा मासा संपूर्ण समाप्त ॥ श्री गण्डा सप्तमी संबत १६२७ वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण और यशोदा का शगदा श्री कृष्ण का गोपियों का वही छटकर
 घाना गोपियों का यशोदा से उखाहना देना जसोदा का श्री कृष्ण को समझाना और श्री
 कृष्ण जी का जसोदा से गोपियों की शिक्षापत करना आदि बर्णन ॥

संख्या ३८५, कालीदसन, रचयिता—य० रामनाथ (पादसाहयुर, अंगपुर),
 कागज—माधारन पत्र—२, आकार—१३ × ४ ३/४ इंच पैकि (प्रति पृष्ठ)—१८,
 परिमाण (अनुच्छेद)—७२, पूर्ण, रूप—मर्भान, पद्य, लिपि—भागी प्राक्षिप्तान—
 श्री रमाकान्त शुक, धाम—पूरा गरीयदास, हाकर—गढ़बारा, बिछा—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ श्रीमान् प० रामनाथ हृत् कालीदसन लिप्यते ॥
 उष्य ॥ तिळक रमाक भाळक तमाक बिलम्बित । बटकटि लट पट पीत कटक छट मुकुट
 करम्बित ॥ अदित भील मणि ललित कमरु बुठि बरान मुहाबन । पीत बसन इहराम मपुर
 सुरती सुर गापन ॥ सुर बरगबत सुदु बचन धन हर गायन मदि भण्ड जम । मन राम
 नाथ यह रूप धरि कालिय हमन चरित्र भन ॥ १ ॥

शंत—इसो भया कादि के कलिन्दी से कलिन्दी कीमि, करिके कलिन्दी गीर
 मुषामी मिहाई है । धरि के अपर वेनु कामना की कामपेनु, रामनाथ स्वाम मुषा धाम
 सुर गाई है ॥ सुमत जीये मे सगा धाय मिले दे जायन, गापन प्रमादि के बरायन चमाई
 है । सम्त तव रजन कलिन्दी मद् गजन, इमार बुन भजन बिरजन कहाई है ॥ इति श्री
 रामनाथ कृष्ण काकी दसन चरित्र ॥ समाप्तम् ॥

विषय—कालिय नाग दमन लीला ।

संख्या ३८६ ए. रामकलेवा, रचयिता—रामनाथ प्रधान, कागज—साधारण, पत्र—२०, आकार १२ $\frac{१}{४}$ × ९ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२०. पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राधाकृष्ण शास्त्री अध्यापक, किथावर पाठशाला, डाकघर—पूरव गाँव, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ राम कलेवा ॥ रहस्य ग्रंथ प्रारंभः ॥ छट-चौपाई ॥
जै गणपति गिरिजा गिरिजा पति जयति सरस्वति माता । जै गुरुदेव केशरी नटन चरण कमल सुख दाता ॥ १ ॥

× × × ×

अहं प्राप्ति की रीति अष्टपदी में केहिं भाति वताऊं । ताते सानुज राम कुँवर कौ रहस कलेवा गाऊँ ॥ जेहि विधि जनक सदन रघुनन्दन कीन्है रुचिर कलेऊ । सुप दीन्है सारी सरहज को सो सब कहि हँ भेऊ ॥ ३ ॥

अंत—इयि आनद जनकपुर वासी नित प्रति पावत लोगू । कोटिन्ह इन्द्र नजर नहिं आवत निरखत बहु सुख भोगू ॥ राम कलेवा रहस चरित ये हम लघुमति किमि गावैं । शेष महेश गणेश शारदा तेऊ पार न पावैं ॥ जो कोऊ प्रीति रीति उर चाहैं सो ग्रथहि इहि वाचैं । पूरण पावैं प्रेम राम कौ पुनि जग नाच-नचावैं ॥ राम कलेवा रहस्य ग्रंथ यह रसिक जनन अधिकारा । जाके श्रवण परत सब वातै हिये न उटत विकारा ॥

× × × ×

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचिते राम कलेवा रहस्य ग्रंथ अष्टमोध्याय ॥ ८ ॥
इति श्री राम कलेवा सम्पूर्ण ॥

विषय—(१) जनक की आज्ञा से लक्ष्मी निधि का रामादि राजकुमारों को कलेऊ के लिये बुलाना, (२) मार्ग में घोड़ों आदि का वर्णन, (३) दर्शनेच्छु स्त्रियों के हाव-भाव, (४-७) सारी-सरहजों का हास्य-परिहास, (८) विदा लेना ।

ग्रंथ के आरंभ तथा अंत की तिथि.—जेष्ठ दशहरा ते आरंभ करि क्वार दशहरा काहीं । राम कलेवा रहस्य ग्रंथ यह पूरण भरे मुद माहीं ॥ ग्रंथ समाप्ति के समय कवि की आयुः—निज पैतालिस वर्ष की, उमर जाति परमान । क्रियौ कलेवा ग्रंथ यह, रामनाथ प्रधान ॥

संख्या ३८६ वी रामकलेवा रहस्य, रचयिता—रामनाथ प्रधान, कागज—साधारण, पत्र—२८, आकार—८ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२५, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १०९२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राघवराम, अध्यापक प्राइमरी स्कूल, ग्राम—आममठ, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि ३८६. ए के समान । अंत खंडित है ।

संख्या ३८७. कोकसार, रचयिता—बाबा रामनाथ सहाय जी, कागज—आधुनिक,

पत्र—६९, आश्रय—८४ ६३ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुच्छेद)—
१३२० पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, प्राप्तिरूपान—मुष्ठी शिबसंकर शक,
प्राप्त—देवनाग, शिवा—प्रतापगढ़ ।

आदि—ईं सो हीं सौरख । श्री रस रसिक गोपाल बृज नायक बृज बंद परर बदन
परम अनुराग । आमु कृपा बहु गुन लहकं ॥ दोहा ॥ काम रूप गुण सुमिरि हिय । बंदी
सोमन काम । आमु कृपा बहु सुरबक है रति बिच बड़ बिसराम । सीपाई । प्रथम कोक
को रूप बठाई । काम रूप पुनि बहुरि जगार्ड । ताके प्रीसत मंत्री हुते कोरु प्रथम प्रथम
नितरते ॥ प्राची बामदस दिन राजा । मरी सपन बसी मुये साजा ॥ एक बार यह राज
कहायो । कर्नाटक बाज छेत सो गपक । तहाँ जाय बहुदुख्य गँबाई । संगतदुनि बहु काळ
रमाई ॥ बिना बाज बहुरि सो आयक । राजा कारनगर पदयक ॥ ताही समय जोगिनी एक
आई । रति को रूप मनो तिन पाई ॥ मगिम रूप गुबचा बहु बाधे । बेस बयारि कांथे सो
साथे ॥ कहे प्रचारि मोहि नहीं जी ली । ता गुबचा बाधे पगरी ली ॥ पुनि
अनुदुख्य राजा जस कहेक । नयो काहु सो जीतन गपक ॥ मरुन मान मंत्री तय बोका ।
सुन राजा मम बचन अयोध ॥ सोरख ॥ यह ई रति भीतार । मुना बृज लोगन कयो ।
कोक काम करतार दहकी ली भीर न महीं

अंत—नाम सरस गुन बड़ हित कारो । रीश रहे पार्य बनकारी ॥ पा कष्टु वर्ष दिने
छसु पावै । काम ठमिक नित्र अमते पार्ये ॥ थाक भरो मोठी म बँस । नाम मरो गुन
हिय में बैसे ॥ नाम स्वरूप कर्नाबन द्वारा , नाम छेत भागवन ही बँसे ॥ मा घट
पूरन रस संसारा सांति मरो किमि पद करतारा ॥ श्री राखोखो गुन हिय राखो । ईस नाम
हरि न प्रियापात्री ॥ दोहा ॥ भाषा भर इत तुच्छत सेछते काम महाराज ॥ बरन पति एक
तर किये । नाम प्रसिधते काम ॥ इति श्री शुभ कोक शास्त्र भास्कारां मुक वीर्य हृत शुभ
रमाप्तः ॥ इति—

विषय—कोक शास्त्र वर्णन ॥ बँदना, कोक का रूप वर्णन, कोक शास्त्र का नाम,
प्रकरण, विषय की उत्पत्ति का कारण, योगिनी का जाना कोक के पास राजा द्वारा मेजा
जाना, बरन, कोक का बंदी से पुटधारा पान्य, योगिनी का मान मर्दन । योगिनी का
सज्जाशील हो राजा के पास जाना । योगिनी और कोक का स्याह वर्णन, राजा का कोक
से मान मर्दन मेघ पूटना, कोक का कोक शास्त्र वर्णन करना, पृ० १-४ कामरूप वर्णन ।
रतिरूप वर्णन प्रिया रूप वर्णन छक रति विवर्जित नारी भूपय वर्णन । पृ० ४—१६
पनुमिनि विप्रती लक्षण । शंभिनी ब० क० इस्तिनी छ० ब० । नारी संघ मेक वर्णन समधा
लक्षण और समुद्र वर्णन, विरविद्या वर्णन प्रिया धर्म बचन, पति धर्म बती लक्षण, स्वप्रि
चारिणी छ० कामानुर लक्षण, अनुराग धारी छ० कुमारग गत छ० पृ० ६—१४, अवस्था
वर्णन अवस्था का राग वर्णन, पुष्ट, प्रसंग ब०, पुण्य रहत बचन विय मिलन योग कामी
अवस्था ब०, वृत्ती का वर्णन पूर्ण प्रसन्न प० मृगामेह वर्णन । प्रथम छिपि वेद वर्णन पृ०
१४—२२, केक रति रूप वर्णन रति छेत शुभ लक्षण राजा प्रसन्न श्री रहन बचन पुण्य
रहन प्राहुन विषयी योग वर्णन शुभानुराग वर्णन, सामुद्रिक पर्व समाप्त । पृ० २९—३० ।

भोग पर्व वर्णन रति योग वर्णन, नारी सवलन अवस्था वर्णन, गर्भ स्थित लक्षण, योनि विचार मदनार्कुम विचार, खलित करावन विधि लिंग धाम प्रवेश विधि, रति का रमण विविध व० २७—३१, प्रकाश तराने मञ्जे रति ज्ञान वर्णन रति समय नारी हर्षित लाभ नारी विरोध हानि, नारी अवस्था रति वर्जित, पुरुष चरित्र नारी चरित्र व० भोग स्वभाविक वर्जित नारी अनुराग उत्पत्ति विधि व, नारी वैराग्य विधि वर्णन, उत्तम टपति रहन व, रस पर रहन व, पुरुष कामातुर काल ज्ञान, प्रतिभूल रति दोष वर्णन परसु योग वर्णन, व, योग को उपाय, कामिनी कामातुर ज्ञान वर्णन, पृ० ३१—३६, पुरुष काम निवास, कामिनी काम निवास वर्णन । पृ० ३६—५०, आसन विधि वर्णन, पद्मिनि प्रिया आसन वर्णन, चित्रिनी प्रि० । संखिनी प्रि० । हस्तिनी प्रिया सन वर्णन, पृ० ५०—५६ ।

संख्या ३८८ ग. करुणाष्टक, रचयिता—रमणेश, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री रामअधार मिश्र, ग्राम—ग्रामपुर, ढाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ करुणाष्टक लिप्यते ॥ छंद मत्त गजेन्द्र ॥ नाथ विनय सुनिये जु दया निधि जानि स्वदास कृपा करिये जू । ज्यो जु विभीषण पै जु ढरे रमणेशहु पै अवत्यो ढरिये जू ॥ कीजिय नाथ अजामिल की सुधि मो अघ करे न हिये धरिये जू ॥ मैं अघ मोचन जानि गह्यो पद सो करिये अघ को हरिये जू ॥ १ ॥ छट द्रमिला ॥ शवरी पर नाथ करी करुणा वह कौन कुलीन कहाँ किन जू । तुम वानर भालु निहाल किये कित वैदिक याग किए तिन जू ॥ गति गीधहि दीन सु कौन किया नितही नित मास भय्यो जिन जू ॥ रमणेश पुकारत आरत हूँ सुनिये बहु वीति गये दिन जू ॥ २ ॥ जिहि पाप हत्यो हरि वालि वही अघनाथ सुकट करै नित जू । पुनि मोह विभीषण कीन्ह कुचाल कृपालु न नेकु धरी चित जू ॥ नहि दासन को अपराध गिन्यो तुम दीन दयाल कियो हित जू । अति आरत दीन पुकारत है रमणेश की वेर गये कित जू ॥ ३ ॥

वंत—राग धनाश्री ॥ रघुवर रापहु विरट तुम्हारी ॥ मैं अति अधम अधम अधमनते आयो शरण तुम्हारी । वालमीकि अदिक भापत हरि शरणागत अघहारी ॥ जो मैं पाप कीन्ह अघ मोचन शारद सकै न उचारी ॥ ताते अव शरण आयो श्री वर रमण विहारी ॥ ४ ॥ इति श्री करुणाष्टक रघुनाथ विनय सहित सम्पूर्ण शुभ मस्तु लिपित छोटे लाल ब्योहरिया स्वपाठनार्थ । इति शुभ । श्री राम जी ।

विषय—रमणेश जी का अपने मोक्ष के लिये प्रार्थना ।

संख्या ३८८ वी श्री राम मल्ल लीला, रचयिता—रमणविहारी, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१४ = १८५७ ई०,

प्राप्तिस्थान—श्री गणेश्वरी तिवारी, ग्राम—विष्टरिहा, टाकबर—धानगाँव, जिला—सीतापुर ।

आदि—अप राम मल स्त्रीका लिप्यतै ॥ श्री कर्मजो विजयते ॥ अंश प्रिभंगी ॥ मुत मृप दशरथ के अति समरथ वीर सुरज क सुर घारी ॥ रघुनेदन बाके छवि बल छाये अनुग्रह आके मत घारी ॥ कर्मज पद पंदन मरत अनंदन शत्रु निर्दंन शत्रु हनै ॥ कछनी शुभ अडे वीर भु बाडे दधि दधि आडे बने डने ॥ १ ॥ अब हँडे काई अनंद काई मद्य मपाई भन दरी ॥ बैठबी करहि अब बिच हरै तब रग परहि जब कर पासै ॥ बंदी गुण गर्ब ठमगि बगर्बि गाप सुनारि वीर रसे छलि रमण बिहारी छवि सुप क्यारी प्रेम सुकारी गित बरसे ॥ २ ॥

अंश—इहि भाँति आगेर सुलब अपारे निरखन हारे सुप पाषी ॥ मी बरणी कई सी जिमि मति कई की प्रभु गुण तई की ते गर्ब ॥ यह मल मु स्त्रीका अति प्रिय शीका रंग रगीला लेक कहाँ ॥ रोखत अनुग्रही अक्षय बिहारी रमण बिहारी कलत तहाँ ॥ इति श्री कवि रमण बिहारी कृत राम मल स्त्रीका समाप्तः ॥ लिपत गणा श्रीम तिवारी स्व पदनाय संवत् १९१४ बैश्व शुक्ल १ ॥ श्री राम राम राम राम राम श्री सीता राम सहाय करे ॥

विषय—श्री रामचन्द्र जी का मलपुत्र ।

संख्या ३८८ सी श्री राममल स्त्रीका रचयिता—रमणबिहारी, कागज—ईसी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुष्प)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—मागरी, प्राप्तिस्थान—सेठ गोविंदराम भागतराम, ग्राम—अमिच्छिहा जिला—बघाव ।

संख्या ३८९. आनंदरस कल्पदह, रचयिता—राममसाद् (बेतिपा), कागज—साधारण, पत्र—८६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुपुष्प)—१८५० पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—मागरी, रचनाकाल—सं० १८७७-१८९० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्मथल पुस्तकालय, मुरापुर, जिला—गया ।

आदि श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रथम आनन्द रस कल्पदह लिप्यत ॥

श्लो०—अप जप जपति गलेदा तब, पुन्व पबोधि उदार । जाबक अभिमत दान प्रद, सद आनंद अगार ॥ १ ॥ छर्पे—तुगल चरण जक जात पीत पट कटि छवि छात्रति । जग्यादर कर डंम उपर मनि माल बिराजति ॥ बाद अनुभुंन दह कमलकर कल्प उर्बगति । दयाम पाँदु कुंरुधित शुंठ मद् गच्छित गंड अति ॥ बर भात मय्य शत्रुयी कुटिल पुट सुकुट सिर सुग मरत । शत्रु गीन भान तिहूँ ताव हर समकि प्रमकि शप शप करत ॥ दोहा ॥ अधित राममसाद् श्री यह विनली मुनि छद्म । मूलन प्रथम अनंद मय, रचत बुद्धि बर ईदु ॥

थि	र	के	र	प	र	ता	र
प	व	कु	ग	तु	क	भ्यो	प
क	हुँ	न	र	को	क	री	सु
वी	हौँ	ज	हा	ह	ये	न	सी
द	हौँ	वी	क	म	म	गु	वा
प	त	वं	नी	ज	भू	त्य	जु
सा	सु	ल	ली	रा	रा	अ	म
तो	धा	जा	वा	को	प	हि	का
र	न	श	र	नी	ल	ना	र
पु	सौँ	ज	की	की	सो	छो	ध
प	र	आ	सु	धु	नी	ग	ग
ही	प	उ	वा	सौँ	पि	ति	धु
म	व	ई	त	ति	ति	र	न
को	स		स	जा	रा	ति	ध
रा	क	भा	सु	ना	ना	प	पा
ल	घा	सौँ	पा	ज	पि	श्री	श्री

अंत—

राम भक्ति रस मय सुपद या कवित्त को अर्थ । अतर वरन सुचित्र है जानत सकल समर्थ ॥
विषय—रस, नायक-नायिका भेद ।

ग्रंथ कर्ता का नाम, राज्य स्थान वर्णन—तिलक सकल सुवानि को सूवा बृहद विहार । प्रगट मझौना परगनौ चपारन सरकार ॥ तहाँ वैतिया नगर वर विदित राज अस्थान । सुखी वसहि चारों वरन यथा योग्य धनवान ॥ राज्य वंश वर्णन.—श्री श्री श्री नृप मणि महाराज उद्धित प्रताप जिनेँ जानत जहान है, ज्ञान मान साहसी सुजान उग्रसैनसिंह ताके गजसहि भये जीत्यो जिन दानु है ॥ फौलि रही कीरति चहुँधा चन्द्र चाँदनी सी जाके गुन

आज हूँ श्री गार्बे गुन मानु है । शाकेवन्त मये ताके भूपति दक्षीपसाहि सुवस सम्भू जम्मे
वसहु विद्यायु है ॥ १० ॥

छर्पा:—प्रगट मये सुवसाहि भूपति तिनके सुवसारी । देग तैग में पूर प्रवक विन
सनु संभारी ॥ सुगल किशोर महीप मये तिनके गुन जागर । तिनके वीर किशोर सीरु सागर
नवनागर ॥ जगविदित जासु अस कल्पतद दावक बौध्दित जति भमछ । सुत सुगल प्रगट
तिनके मये भूपति सारोमणि कुक कमल ॥ X X X X श्री श्री श्री भूप सुकुट मनि
महराज शिर मीर । श्री आनंदकिशोर श्री बाबू भवककिशोर ॥

ग्रंथ निर्माण काळ:—सम्बद् दिन मुनि जागमहि १८७७ बेरु कृष्ण शुभ पाप ।
पीला तिभि क्वि दिवस तिन कियो प्रथ जमिकाप ।

ग्रंथ निर्माण कारण:—सूर बेसी मंडन विहारी अकिदास ब्रह्म चिंतामणि मतिराम
भूपन सुभाषिये । श्रीरामर सेनापति विपदे निबाज निधि नीसकंड मित्र सुलदेव देव मानिये
आत्म रहीम रसवान सुन्दरादिक अनेक सुकवि मये कर्होली बखानिये । इन भाषा हेतु
जितनी नायिका करी है तेते नायक हू होत इहाँ आदि होते जानिये ।

ग्रंथ निर्माण काळ:—सिद्धि सति १८७७ मास मिश्रापठदार । रात्र रज्यायसु पाहूँ
छियो ग्रंथ अचठार ॥ संबद् दिन मुनि जागि महि १८७७ कातिक मास सुपंच । शुक्ल अष्टमी
वार रवि भो संपूरक ग्रंथ ॥

संख्या ३६० पं, बजुरबाहन की कथा, रचयिता—रामप्रसाद, कागज—देसी,
पत्र—३५, आकार—८×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुप)—५८५,
कथ—प्राचीन, पत्र, सिपि—भागी, किरिफक—सं० १९२५=१८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री त्रिभुवन सिंह ग्राम—साइपुर, बाकबर—जेरी सिध्द—सीतापुर ।

आदि—सूर कथा गावत सुत जावहीं । सुरम्ह जै ही मिळि पहिरावहीं ॥ चरबहि
चंदन चढ़े विमाना । अपुदि जायु उगग बर उखा ॥ एक वरै एक छे आदि छोड़ाई ।
एक छे आइ विबाध चड़ाई ॥ उग्र पंड बर कौतुक होई । तर समान बहि चीन्हे काई ।
सब मोहे देपत सुर मारी । बजुरबाहन कै अहभुत मारी ॥ तर मसान ऊपर रंघवा ।
छांदि सर्ग मोहे तर मर्बा ॥ देपि कीतुक सुर मुकाने । पवन देये चढ़े विमाने ॥ मरक
बसु सही भूत बैठासा । सुरम्ह कसत ही रंघ बिसाहा ॥ पय जग जो सुरंग छे
आवा । सुरवर सुनी सब देये पावा ॥ प्रधुमन सहित रहे सुत बीर । सब के बेये बान
सरीर ॥ अस अहभुन सुबा जागे पाडे । अर्जुन पुत्र समान जोषा को होई ॥

अंत—प्रधुमन सहित त्रिपुत्र सब बीरा । बर्ये पंड प्रति अमृत पीरा ॥ बेरु
आइ मपड रग मरना । सब जीव गार्दि टैकहिं हरि चरना ॥ देपहिं पक छिये मनी सेसा ।
जागे बजुरि पुंरुद मेमा ॥ पुहुप हृदि संप जुनि हाई । जावदित सब कोई होई ॥ अज
अप पंडु जायो मिले यहि चरना । मिले भीम सब के रुप हरना ॥ सबै बीर उदि जाय
तहवा । कृष्ण भीम देवनी जहवा । इति श्री बजुर बाहन कथा रामप्रसाद कृत संपूर्ण
किपंत माधोराम तिबारी सुकुट पठ इममी भाद्र पद संबद् १९२५ ॥

विषय—अर्जुन के पुत्र वधुवाहन की कथा जिसमें अश्वमेध यज्ञ में अर्जुन से युद्ध कर उनका सिर काटा था अंत में शेष नाग के यहां से मणि लाकर जिलाया था ॥

संख्या ३६० धी. वारहमासा, रचयिता—रामप्रसाद, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्ठुप्)—१४४, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६६ = १८१२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवविलास, ग्राम—वरियारा, जिला—उन्नाव ।

आदि—भांदों में भम दूर करि अव गुरु सरन भये जाइ के । गुरु शब्द सुनी सुद रूप जान । ओइ दिन पदवी पाइके ॥ जोग जगी जप दान करे नहिं अव गुरु दाया कीनी आनि कै । अनेक जन्म के कर्म छुटे अव अनंद भये प्रभु जानिकै ॥ राम तकि राम सब विच देपा अव प्रीति की न मनु लइके । ग्यान दीपक जरत हिय विच सो अग्यान भागि पराड कै ॥ राम प्रसाद देपी राम सोभा सो रहे कोटि भान प्रकास कै । क्वारं कर्म जो करहि ग्यानी सो सुभासु कर्म मानै नहीं । निंदा अस्तुति आइ करै कोउ सो एक सम करि जानहिं ॥ रहित व्रत सतोप जिनको तेइ इंद्रो स्वाद जानत नहीं । लगाइ सुरति जै रापै ब्रह्म परसो आपन आय भूले नहीं ॥ तेइ अलमस्त हैं नमों राम में उने जगती गती व्यापि नहीं । मन वासना ना रापै कवहुं तेइ उद्र जोनि आवै नहीं ॥ अव जेहि लागै सो जानहि सो कहन को कलु गम नहीं रामप्रसाद प्रभू निरवान है सो कहन में आवत नहीं ॥

अत—जेठ जत्र तत्र माहि प्रभु है सो अव देपु जइ चैतन में । सुन असुन में ब्रह्म जानहु वो रहै व्यापी सब घटन में । अव मोह ममता त्यागि जरि सो भजन करै आठौं जाम में ॥ गुरु प्रताप ते पोज पावे अव कौन फिरें तीरथ धाम में । देपि रूप निहचत भए अव सो पहुँचि गये निज धाम में जो पदु पदु लपि जान बैठा ब्रह्म जानि लेउ सोइ भाप में । तिल धरने को ठौर नाहीं सो प्रभु व्यापि रहे ब्रह्माइ में । रामप्रसाद करि सत संगति सोइ लीन भये नमो राम में । दोहा ॥ रामप्रसाद गाउ वारामास तेतु सो समुझि भये भव पार । अव लीन भए ब्रह्म सरूप में सोइ पहुँचि गये दरवार ॥ इति वारामास पूरन सबत् १८६९ वि० क्वार शुद्धो दसमी लिपा चैतराम पसारी ॥

विषय—ज्ञान की वारह मासी और सत संगीत गुरु के वचन का मानने से आनंद वा मोक्ष पद वर्णन ॥

संख्या ३६० सी. ज्ञान वारहमासा, रचयिता—रामप्रसाद, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—६ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्ठुप्)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६०३ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला प्रसु दयाल, ग्राम—आलमनगर, डाकघर—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राम प्रसाद कृत ज्ञान वारह मासा लिप्यते ॥ आये असाइ जग पेत माया सोई कर्म बीज जमते भये ॥ जस करी करनी सचि रापी सोई फल लागत भये ॥ तेइ कर्मन ते सुरक्षै नहीं सोई माया जाल में नस्वती भये । सुभ असुभ कर्म जे मानि रापे अव सोई फल प्रापति भये । तिन के न लागा राम रंग वे त्रिलोक में

अमती भये । अब त्रिनके गुण पूरे मिले तेह ब्रह्म पद पावत भये ॥ विस्वाम करि सव जास छपड़ी सोह राम जस गावत भये ॥ रामप्रसाद त्रिन ब्रह्म जानौं तेह कर्म रेप भेटत भये ॥ १ ॥ साधन सुरति छौन प्रभु में सोई उन मनि कगि रहे । जो प्याग जाती विचार धेरे सोई भागि से ब्रह्म पद है रहे रूप से सोई विरि न कबहुँ अब अपन भापु जाने रहै । अगा है त्रिनके राग रंग तेह सुख सनेह होह रहे ॥ पाह सुर तुसँम पवारथ अब और पद नीच रहे । गोपमठ त्रिन जान रापो तेह प्रभु गुन गावत रहे अब पैप छाका क्वाल प्रभु के तेह जानि मन सोह हुइ रहै ॥ राम प्रसाद ब्रह्म तव जानौ तेह गुन से प्यार रहे ॥

अंत—बैसाय ब्रह्म जाना नहीं पामे सो नित्र भाम प्रभु के जाति है ॥ अब नाम कर विस्वास त्रिनके ते जम पुर नहि आठरै ॥ ब्रह्म मूरति देपि द्विप विच सो प्रभु कहु न भावो जातिरे ॥ करि विचार विक्माहि बैरी अब मन मयको पातुरे ॥ तुम अघेप धर इरपा न त्यागी । सो रहत अग बधि भातिरे । अमा द्या संतोष रहे सदा सो भजन करु पहि भाति रे ॥ तरह नाम उनका सोह सुरति कगि दिन राति रे । रामप्रसाद बैठि महासागर सो विह हरिभब न हठी रे ॥ बैठ अत्र तप माहि प्रभु है सो अब पैपु अब वैतन में सुन अनुन में ब्रह्म जानहु को रहे व्यापि सब भजन में ॥ अब मोह ममता त्यागि करि सो भजन करि जाये काम में । गुण प्रताप ते जोड पाये अब जीव किरै तीरय काम में ॥ देपि रूप निहचित मद् अय सो पहुँचि गये नित्र भाम में । जो पद पनु छलि जान बैठ महम जानि केड सोई जापु में ॥ तिरु भरने को डेर नहीं सो प्रभु व्यापि रहे ब्रह्माड में ॥ रामप्रसाद करि सत सगति सोई जीव मद् नमो राम में ॥ बारा मासी पूरव त होहा ॥ राम प्रसाद गावौं बारह मास संतु सो समुधि भये भवपार ॥ अबजीन भये ब्रह्म सख्य मे सोह पहुँचि गये बर बार ॥ इति श्री राम प्रसाद कृत नाव बारह मासा समाप्ता ॥ संवत १९०३ वि० ॥

विषय—१२ मासा छड मनुष्य की ज्ञान उपदेश कर्मन ॥

संख्या ३६० बी ज्ञान की बापमासा, रचयिता—रामप्रसाद, अगत्र—देसी, पद्य—
८, आकार—८ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुच्छुप्)—६०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, कवि—भागरी, प्रातिस्थान—काका कस्तुरमड, ग्राम—गौरिया कर्सा, बाहर—कनेपुर, त्रिका—अज्ञात ।

संख्या ३६१ ए. काव्य प्रभाकर, रचयिता—रामरात, अगत्र—देसी मंडा, पद्य—
३२८ आकार—११ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुच्छुप्)—१२३०, पूर्ण रूप—बहुत प्राचीन पद्य कवि—भागरी, रचनाकार—सं० १८८०-१८२३ ई०, किति अज्ञ—सं० १६०४-१८४० ई०, प्रातिस्थान—व० कृष्णविहारी मिश्र, माडक हाउस, कानन ३ ।

आदि—श्री गणेशायनम होहा ॥ सिद्धि सदन गज वर वदन विषय विवासन प्याह । तिहक रूप उलका करी काव्य प्रकास बनाह ॥ १ ॥ अरे ससकृत अति निपुण रामरात महिवाक । भाषा के कवि जनन पर सो अति भयो द्यारु ॥ २ ॥ बाध्य कल अह ध्याय मुनि वृति सष्ट धनि मेह । भाषा कवि जानौं सकल समसी सकल जनेदु ॥ ३ ॥ मडल सूत्र उकपा कर्सा जाय जया रथ जाहि । उलका की के वृत्ति को जापुनु रीश्वरी

मोहि ॥ ४ ॥ व्योमं, सिद्धिं, सिद्धिं चंद्रं गुरु तिथि पंचमी वत । कस्यौ त्रय प्रारंभ हो सुमिरि हिये भगवंत ॥ ५ ॥ ग्रंथारंभ मो विघ्न निवारन कौ प्रथम हूप देवता सरस्वती को कवि नमस्कार—करत है ॥ रहित नियति कृत नियम एक आनद मई स्वतंत्र । करै सृष्टि नवरस रुचि २ जय भारत कवि यंत्र ॥ १ ॥ नियति कृत नियम रहितां हार्दैकमयी मनन्यपरतंत्राम् । नवरस रुचिरानिर्मित मादधती भारती कवेर्जयति ॥ १ ॥ विधाता की सृष्टि नियति जो भाग्य है ताके बल सौं नियमित है चौरासी लक्ष योनि युक्ति प्रथम जा प्रकार कस्यौ है भाग्या धीनता सौं ता प्रकार से अन्य प्रकार नहीं है सकतो भाग्य जो है सो जीवन को आपने अनुसार लेति नहीं योनित्र में उत्पन्न करत है औ कवि भारती की काव्य रूप सृष्टि भाग्य कृत नियम सौं रहित है—

अंत—कहू वक्ता औ प्रबंध की अपेक्षा चिन वाच्यार्थ की योग्यता सौं रचनादि को है वो यथा ॥ रामवान भिन्न कुभ करन बली को बुहु व्यौम तै गिरत उत मांग अति भोरा है । घोर उपघात उदभट उच्छलन वेग पतन गभीर भीत लोचन निहस्यौ है ॥ राहु को पतन मन मानिकै तुरंग मोरि रवि रथ अरुण तिरोछो करि टारो है ॥ ग्रीव कुहरन में प्रविष्ट यत्र मानि व्याज रशुवर बलहि कहुत अति भारी है ॥ यामै वक्ता वैतालिक है औ प्रबंध अभिनय जोग्य नाटक है तासौं उद्भूत रचनादि दुहुन को प्रतिकूल है वाच्य जो कुभ करण है सो रचनादिको है व्योयथा ॥ कादवरी आदि आख्यायिका में जहा शृंगार रस व्यंग्य है औ वक्ता कहवी आदि अनुद्धत हैं तहां ऊ प्रबंध की योग्यता सौं उद्धत ही रचना है औ नाटकादि में रौद्ररस हू में दीर्घ समास नहीं है दीर्घ समास में विलंब सौं अर्थ प्रतीत होति है तासौं अभिनय को ज्ञान नहीं हो तो भाई । विधि अन्यचहू जानियो ॥ इति श्री सकल विद्याविनोद मानसराजु हंस सांडिल्य वंसावतंस भूमिपाल वृद विख्यात तरणि वंश तरणि जल जात श्री राम राज विरचिते काव्य प्रभाकरे अष्टम प्रकाशः ८ । श्री संवत् १९०४ मीति कातिक वदी ३ वार मग के काव्य समाप्त हुआ ॥

संख्या ३६१ वी. काव्य प्रभाकर, रचयिता—रामराज, कागज—देशी, पत्र—२२०, आकार—८ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८० = १८२४ ई०, लिपिकाल—सं० १९६३ = १९०६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाशसिंह, मल्लापुर, सीतापुर ।

श्लोक ३६१ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है—

श्री रामराज विरचिते काव्य प्रभाकरे अष्टम प्रकाशः आपाद् शुक्ल नौमी संवत् १९६३ लेप समाप्त श्री कृष्ण शर्मा कवि भ्रम भट्ट मिश्र मझौली असनी जिला फतहपुर निवासी ने श्री मान को मेंट किया ।

संख्या ३६२ ए. राम वारहखड़ी, रचयिता—रामरतन, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—४ × ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९३ = १८३६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जयंती प्रसाद, ग्राम—गोसाईं खेडा, ढाकधर—चमयानी, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम चारु खड़ी लिख्यते ॥ चौपाई ॥ कथा ॥
 कदनामय रघुबीर कृपाका ॥ अत्र जदिभासी हीन दवाला ॥ मंत्रज अमुर भूमि के मारा ।
 प्रगट भये रघुबीर कुमारा ॥ खला ॥ केकट दशरथ आगल माहीं । बाळ ह्य छवि बरनि न
 जाही ॥ कछिमन भरत दशुघन मईया । निरकठ जननी सेत बर्षिया ॥ गगा ॥ गौर स्वाम
 सुंदर होड जोरी । जो कसु कहुँ सो उपमा घोरी ॥ कर धनुही कंकर कसे निरंगा । बदिई
 नचरी अपत तुरंगा ॥

अत—शाशा ॥ सोमित कमक सिंघासन रामा । सिर पर छत्र मिया तय बामा ॥
 मरत कपन दोऊ नमर सुराई ॥ अथ मुर करत सुमन बसोई ॥ पया ॥ विजयत करै प्रीति
 दर साई संत चरन में चित कगारि ॥ कछिमन आदि भरत रिपु सूदन । करहि सेवा रघु
 पति पद पूजन ॥ सत्ता ॥ सानु कुळ जिन पर रघुआई । श्री रघुचर करित अधिकाई ॥ इति
 श्री राम चारु खड़ी समाप्तः श्री रामचन्द्रार्पण मस्तु ॥ लिखा गौरी गणेश कौरतपुर निवासी
 बेड शुद्धा दसनी संवत् १८९३ वि० ॥

विषय—चारुखड़ी में राम अम्बर से लेकर ब्रह्म से घर हींठे तक का वर्णन ॥

संख्या ३३२ थी राम चरितावली, रचयिता—रामरतन, कागज—साधारण,
 पत्र—३ आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुपुष्प)—६३,
 पूर्व, रूप—शाचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—श्री ब्रह्मभूषण सिंह, ग्राम—हुक
 बाटा, साकर—परियार्थी, जिन्हा—मठापगाढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ रोहा ॥ राम रतन भव तरन नृ, जतन राम गुण
 गाई । मत्र सागर के तरन नृ जाहिन जान उपमा ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कथा कदनामय
 रघुबीर कृपाका । अत्र जदिभासी हीन दवाला ॥ मुर हित हरन भूमि की मारा । प्रगट
 भये रघुबीर कुमारा ॥ १ ॥ खला ॥ केकट दशरथ आगल माहिं । काळरूप छवि बरनि न
 जाई ॥ निरकठ^१ जननी सेत बर्षाई । सछमन^२ भरत दशुघन माई ॥ २ ॥ गगा अर
 स्वाम सुंदर होड जोरी । जो कसु उपमा कहुँ सो घोरी । कर धनुपदि कटिक से निरंगा ।
 बदे नचाबत अपक तुरंग ॥

अंत—हा हा हिरदै जो बरिबे हिर ध्याना । तिन्ह मित्र अम्म सुकळ करि जाना ।
 लोनि कोक में भयो जनन्या । अथ जय करत सकळ मुर बुरा ॥ ३३ ॥ रामरतन त्रिन्ह
 श्री रति पाई । इहने निय पति सद्य मुहाई ॥ संत जवन मिळि कीरति गाई । सुकळी
 द्विप बनि निय रघुआई ॥ ३४ ॥ यह रघुचर चरित्र मुख दाई । सारद सेन बति सुति गाई ॥
 जो यह परी सुनें अद गावे । राम कृपा मन बांछित पावे ॥ ३५ ॥ दो० :—रामरतन परि
 करि कृपा, यह हींठे श्री राम । सदा रहत सत मंग में, चित चरनन मुख राम ॥ ३६ ॥
 इति श्री चारु कांड श्री राम चरितावली ॥ ॥

विषय—रामचन्द्र की का चरित ।

संख्या ३६३ प खेबा मजदू, रचयिता—रामराय, कागज—बेदी, पत्र—१५,
 आकार ६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपुष्प)—१८०, पूर्व,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९० = १८३३, ई०, प्रासिस्थान—
श्री देवतादीन मिश्र, ग्राम—सुलतानपुर, डाकघर—धाना, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ लै लै मजनु लिप्यते ॥ जवाव मजनु का ॥ दोहा ॥
जा दिन मजनु जन्मयो जिम दिन क्रिया करार साहव तूही सब हँ झूठा मव मंगार ॥
पुरे सुस्तानी दिलवर जानी तन मन आग लगाय गई । ऐसी खूबी चंदर वदनी नाजुक वदन
दिपाय गई ॥ शाल दुशाले मोहन माले लटक लटक लटकाय गई ॥ आशक मजनु हुए
दिवाने हाय हाय लै लै क्रिधर गई ॥ १ ॥ दो० ॥ जादिन से विद्युरन भयो फिर नहिं देखे
नैन । जैसे घायल नीर विन तल फत है दिन रैन ॥ झड़ा मुलतान देम कायुल सारी । पूरव
गुज रात देम दछिन नगरी ॥ झड़ी लाहौर शहर मवे निहारी । पाई महवूव नहीं लै
लै प्यारी ॥

अंत—॥ कवित्त ॥ सूखी सी सुरत पै जान कुरुवान करुं माहेव सरूप मुझ देखेन
को दिया है । जहां जहा जाती हूं कहाती हूं उम्मी की और कहा चाहते हो धन्य मेरा दिया
है ॥ कहत राम राय कोई लाख बुरा मान रहो जैसा यार चहाती मैं वैसा दहू लिया है ॥
हुए है दिवाने लोग दिल की न जाने कोई मजनु ने काम मेरे चश्मों पर किया है ॥ दोहा ॥
इश्क उसी की झलक है ज्यों सूरज की धूप ॥ बिना इश्क पावे नहीं कादर नारद रूप ॥
इश्क करै सो वावरे करि छाडे सो कर इश्क चमन के बीच में पहुचे मजनु नूर ॥ इति श्री
मजनु लै लै सम्पूर्ण समाप्ताः संवत् १८९० वि० लेखक राम भजन मिश्र सुकाम पाली ॥
राम राम राम ॥

त्रिपय—लैला-मजनु की प्रेम कथा ।

संख्या ३६३ बी लैला मजनु, रचयिता—रामराय, कागज—देशी, पत्र—१२
आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१७ = १८६० ई०, प्रासिस्थान—
श्री राममरोसे मिश्र, ग्राम—बटौली, डाकघर—नेती, जिला—सीतापुर ।

शेष ३९३ ए के समान ।

संख्या ३६३ सी. लैला मजनु, रचयिता—रामराय, कागज—देशी, पत्र—१०,
आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१७ = १८६० ई०, प्रासिस्थान—
श्री अजयपाल सिंह, ग्राम—गागीमऊ, डाकघर—सिधौली, जिला—सीतापुर ।

शेष ३९३ ए के समान ।

संख्या ३६४ प. वृत्तरंगिनी (वृत्त-तरंगिणी), रचयिता—राम सहाय कायस्थ,
कागज—देशी, पत्र—७६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४६, परिमाण
(अनुष्टुप्)—४१२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स०
१८७३ = १८१६ ई०, लिपिकाल—स० १९०० = १८४३ ई०, प्रासिस्थान—श्री राधावल्लभ,
ग्राम—खैराबाद, डाकघर राजेपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वृत्त तरंगिणी लिप्यते ॥ मन हरण । सिंदुर बंदन एक रत्न बंदन मुनि सुंदर मुसुंड मध्य सिंदुर प्रभा छसी । मुडा बंद उन्नत कै कुंडली के परसत प्रनव स्वरूप रूपि विद्यन महा बसी ॥ जागत के खान कीने सुदे जम जातन ते भाक बाळ बंद देपि पाप हाप जै प्रसी । सिव जगदंब बारी मर द्विप धाय राम ससिधि सदा बसी ॥ १ ॥ अर्परथ ॥ कनक कमल मध्य बलक अमल छसी सीपि चप चंचला सी सुपमाहु प्रकासिनी ॥ संप बाळ यह अह अमय करन वीच बंद करन कलित छसित छवि रासिनी ॥ राम भुज आमरन भंगद उर सिंहार कुंडक अवन पग पायळ बिछासिनी ॥ अस्तुति सुरेंद्र आदि करहि मयंक मुपी हुहुवा सुगेय सुपी ध्याकों किपु बासपी ॥ २५ वी० ॥ सिधि करहि सो देव बर निधि निज जम मन काम । असन मंग सिर गंग अरु चंद्रकला छवि धाम ॥ सो० ॥ श्री गुरु प्रसन्न स्वरूप चिंता मीन चिंता हरन । तिनके चरन अनूप धमो जोति निज कन हनुक ॥ कविता श्री रचनानि को नैकु व जाती भेद । श्री गुर पद भरदिंद को केवल मोहि उमेव ॥ हायक लिप्यांबंद के श्री चिंतामनि चित । सो मो पे अनुकूल अति । पाते रपी कबिच ॥ सोरख श्री चिंता मनि पाय चिंता मनि पायहि बीस्यो । चिंतत चिंता ज्ञाप जिदि सा निव मोचित बसी ॥ चंपया मुधि सिधि बिहु बरप नी ? तिपि मुदि उबी मुरा चार्ज बासर सुपद अरु पर में गत सूब ॥ सो० । गणपत गीरी सिध व्याप अरु गुर के पद पदुम परि । ता दिन राम सहाय वृत्त तरंगिनि की रची ॥

अंत—सबैया ॥ राम सहाय करै उनको नति जो गुन को छवि होय निहारि हैं । श्री सपनेहुं जिदि बहि ज्ञान अवान बने बरमानि बिगारि है ॥ पावहिं के सुप सोई बिसेप मन विधि जो इहि वृत्ति बिचारि है ॥ है इतनी परतीठ बनी अवनी कविता कनि सातु सुचारि है ॥ सो० ॥ होय रहित कविताम श्री सविता की है कृता पाते कवि बिहाव मो उपहास न कीजिये ॥ इति श्री भवानी दासात्मज राम सहाय दास अयस्क ज्ञाना कृता वृत्त तरंगिणी समाप्तम् श्री संवत् १९०० भाषण कृष्ण पक्षे द्वितीया भां शुक्ल वासरे क्रिस्तौ हीरा चक्र पाठक अगस्त कुंड पर ॥

विषय—विधिय वृत्तों के कल्पजोदाहरणादि ।

संख्या ३६४ वी वृत्त तरंगिणी, रचयिता—रामसहायदास अयस्क, कागज—पुराना दिल्ली, पत्र—१५०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुपुष्ट)—२३०२, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—बागरी, रचनाकाल—सं० १८७३ = १८९६ ई०, किरिकाळ—सं० १९०० = १८७३ ई०, प्रासिस्त्याब—श्री कृष्ण बिहारी मिश्र, माडक हाउस, कलकत्ता ।

आदि—३६७ पृ के समान ।

पुष्पिका—इति श्री भवानी दासात्मज राम सहाय दास अयस्क ज्ञाना कृता वृत्त तरंगिणी समाप्तम् श्री संवत् १९०० भाषण कृष्ण पक्षे द्वितीयां भां शुक्ल वासरे क्रिपित हीरा चक्र पाठक अगस्त कुंड पर ।

संख्या ३६५. मंगलचक्र, रचयिता—श्यामी रामसक्से, कागज—साधारण, पत्र—२, आकार—७ ३/४ × ५ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपुष्ट)—४३, पूर्ण,

रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९८ = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री रामप्रसाद मुराव, ग्राम—पुरवा विश्रामदास, टाकघर—परियावा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री रामानुजाय नमः ॥ अथ मंगल अष्टक लिख्यते ॥ कवित्त ॥ घटिका
द्वै निशा अवशेष जानि जूथ जूथ साजि कै मिंगार आई नागरी नवीनी हँ । प्रिया मन भाव
न जगावन कौ आतुर हँ द्वादश सहस्र राज कन्या रम भीनी हँ ॥ क्रीडा रति कुंज के
सु अगन में रंग भरी चुटकी वजायें मद अति ही प्रवीनी हँ गान कला चानुरी गंधर्व
कन्या चंद्र मुखी सत्य स्वर जील की अलाये मृदु कीनी हँ ।

अत—अद्भुत अष्टक महा मंगल स्वरूप राम मंगल सिया जूसव मंगल पटरानी
हँ । राम सखे मंगल सुहृद प्रिय नर्म सखा मंगल चार शीलो आदि सखी सुग दानी हँ ॥
मंगल प्रमोद वन मरजू तट रत्नाद्रि चिंतामनि भूमि अवधमंगल की खानी हँ । मंगल मधु
पर्क भोग धरे पिया प्यारी को करँ मंगल आरती महेली हरपानी हँ (१०) प्रात ध्यान
सिय लाल को, मंगल अष्टक नाम । पढ़े सुनै तिन पै मदा, द्रवै जानकी राम ॥ (११)
इति श्री महाराजा धिराज महाराज स्वामी रामसखे कृत मंगल अष्टक समाप्तम् ॥ शुभ मस्तु ।
संवत् १८९८ लि० चरन दाम पाडे ॥

विषय—(१) पृ० १ मे ४ तक—द्वैवटी निशि अवशेष रहने पर सखियों द्वारा
सीताराम के जगाने का आयोजन । स्त्रियों के नृत्य वाद्यादि की ध्वनि श्रवण कर राम
द्वारा सीता को विवोध किया जाना, शैथिल्य तथा आलस्यवश्य जमुहाइ लेते दम्पति का
जागृत होना । दम्पति के सुखकर, मनोरंजन कारी तथा आनंद वर्द्धक वस्तुओं का सखियों
द्वारा उनके नित्य-कृत्य के पश्चात् लाना और गानादि द्वारा उनका चित्त प्रसन्न करना ।
(२) पृ० ४ से—राम, सीता, सखा, मखी और प्रमोद वनादि के मंगल कारी होने का
वर्णन । अष्टक के पठन पाठन और श्रवण का फल ।

संख्या ३६६ ए मनमोहन भक्ति विलास, रचयिता—रामसिंह (नरवर, ग्वालि-
यर), कागज—प्राचीन देशी, पत्र—१६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—
१६, परिमाण (अनुपट्टप)—१२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचना-
काल—स० १८३० = १७७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भालचंद्र मिश्र, ग्राम—सीतलनदोला,
टाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री राधा कृष्णार्थ्यां नमः ॥ श्री मन्मोहनों जयति ॥ अथ मन्मोहन भक्ति
विलास लिप्यते । दोहा । विवन हरन हरि रावरी सरन गायो मन लाय । हँ दयाल असरन सरन
निसि दिन रखो रहाय दामोदर सुन्दर वदन गुन मदिर गोविन्द ॥ वदन तुव अरविदपद
वदिन कलिंद ॥ २ ॥ वदन वनै न सीस सौ रसना सौ गुन गान ॥ अरचन वनै न करन सौ
मन सौ वनै न ध्यान ॥ ३ ॥

अंत—कथा रावरी कौ श्रवन सदा करी मन लापू ॥ वृज नायक विनती ये
वृथा कथा न सुहाई ॥ १०० ॥ दो इस हस रस नानिसौ वरनि सकै नहि सेस तुव
गुन रसना एक सौ कै सैं कहां रमेश ॥ १०१ ॥ श्री मन्महाराजाधिराज महां राजा राम सिंह
जी कृत मनमोहन भक्ति विलास सपूर्ण मिति ॥ शुभ मस्तु । श्री कल्यान रस्तु ॥

विषय—दूध आराधना ॥

३६६ वीं जुगसविद्यास, रचयिता—महाराज रामसिंह, (नरवर, ग्वालियर),
 अक्षर—देसी पत्र—५०, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण
 (अक्षुद्रपुष्प)—४५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, छिपि—वागरी, रचनाकार—सं०
 १८३६ = १७७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भाऊचंद् मिश्र, ग्राम—सीतलनटोला, डाकघर—
 मन्डीहावा, जिला—कन्नड ।

आदि—श्री मम्मोहनो जयति । श्री राधा कृष्ण म्यां नमा अयं जुगुठ विद्याक
 किप्यते कवित्त्व ॥ राग गीतौ । सोहात मुकुट सीस कुंडक अथग सोई मुरकी अघर भुनि
 मोई प्रमुचन कीं । कोचन रसाक बंक भृकुटी विद्यास सो ई बन माळ गरी हरें छेति मन
 कीं । रूप मन मोहन न पित तीं विद्यातौ वारीं सुंदर वदन पर कोरि मदन कीं । जगत
 निवास कीं श्री सुमति प्रकास मेरे ठर में हुकास है विद्या विद्यास वरनन कीं ॥ राग कन्हरी ॥
 वागरी बनेकी बखबेकी अलबेकी भांति संग सपियौनि छिपि कोरै ही कृतानि में निरुमे
 तहां हूँ आनि तहां मन मोहन परम प्रवीन बस कीं बेकी कृतानि में ॥ मुरकी वरी के बने
 गये मेह बीज बंकी चिरी कीं चितै मोहि सुसिन्धानि में ॥

अंत—राग गीतौ ॥ कीरत कुंमारी अयं मन्द कीं कुमार सदा करत रहत ही बिहार
 बुझावन में । राधा मन मोहन के रूप कीं निभई सम कहिनो कीं सुन्दर राई वारीं जिमुचन
 में गोपिनि के गण में विराडी दौड ऐसैं सोहत है रोहिनी रमन ताशगन में । अमुना के तट
 बंसी बरके रमन बरे नील पीत पटवारे बसीं मेर मन में । राग सोरड ॥ नर वर नाय
 अत्र सिंह सुतरामसिंह दरिबर बचायी प्रम रस कीं निवास है ॥ गाँधी जो गांधावे सुनै
 प्रेम में भगव हूँ ताके उर राधा मन मोहन को वास है । सम्बत अठारह सौ बरस छठीस
 पुनि सुदि तिथि पार्वीं गुदवार भाष मास है । रसिक हुकास कर सुमति प्रकाश करव बख
 प्रगर मयो जुगुठ विद्यास है ॥१०१० श्री मम्महाराज विराज महाराजा राम सिंह कीं कवित्त
 सतकृतगुण विद्यास संपूर्ण मिति सुम मस्त । श्री : अस्तु ॥

विषय—राधा कृष्ण के संगार विषयक वर्णन ।

संख्या ३६६ वीं रस सिरोमनि, रचयिता—महाराजा रामसिंह (नरवर ग्वालियर),
 अक्षर—देसी, पत्र—१२२ आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण
 (अक्षुद्रपुष्प)—८१५, पूर्ण रूप—प्राचीन, पत्र छिपि—वागरी, रचनाकार—सं०
 १८३० = १७७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भाऊचंद् मिश्र, ग्राम—सीतलनटोला, डाकघर—
 मन्डीहावा, जिला—कन्नड ।

आदि—श्री राजा कृष्णाम्यांनमः । श्री मम्मो ह्यो जयति । अयं रस सिरोमनि अंश
 किप्यते ॥ दोहा ॥ विषय हरन अबाँद करव राधा मन्द कुमार ॥ सिन्धे परसपर होत है
 बाँकेचित संगार ॥ १ ॥ नायका कछन ॥ पित बिच रसकी भाव अति उपजत हैतै आदि ।
 कविजन रसिक प्रवीन के कृत नायका तादि ॥ २ ॥ उदाहरन ॥ अंग सखीने अरे कवि
 सीं नि से कोमल गार किंई अदनाई । नैन ऊके सेरसो कोधि सो निवसै सुसिन्धानि सुबानी

मिटाई । दैन सुने सरस सुप श्रोननि है मन मोहन चारु निकारु होत निहारत मै न
अवानि लसै छवि औरही और सुहाई दोहा ॥ त्रिविध नाटक होति हैं प्रथम म्यकीय वाम ।
द्वितिय पर क्रिया त्रितिया कौ कह्यै गनिका नाम ॥

अत--दोहा ॥ दृग दरसन रसना रुद्रा कहत रहौ गुन गांव । म मन मोहन रावरौ
धरत रहौ नित ध्यान ॥ ३३० ॥ कूरम कुल नर वर नृपति क्षत्र सिंह परवीन ॥ रामनिह
तिहि तनय यह वरन्यौ ग्रंथ नवीन ॥ ३३१ ॥ चौपाही । वरन वरन विचारि नाकै समक्षियों
गुन धाम, सरल ग्रथ नवीन प्रगट्यौ रस सिरोमनि नाम । माघ सुदि तिवि पूरना पग युप
अरु गुरु वार । गिनी अठारह सै वरस पुनि तीस संवत मार ॥ ३३२ ॥ श्री मन्महाराजा
धिराज महाराज राजा रामनिह जी कृत रस सिरोमनि ग्रथ सम्पूर्ण मिति । शुभ मन्तु ।
श्रीकल्यान रस्तु ।

विषय—नायक नायिका भेद तथा शृंगार रस आदि का वर्णन ॥

संख्या ३६७. धर्मादर्श, रचयिता—महाराजा रणजीत सिंह, कागज—देशी,
पत्र—१८२, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपट्टप्)—
३८२२, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३९ वि०, प्राप्तस्थान—
श्री शिवदयाल, ग्राम—कफारा, टारुवर—ईसानगर, जिला—खीरी ।

आदि—शुक्ला तृतीया श्रावणी मनुश्रवा है नाम पर विद्धा सो काट की स्नान दान
जय जाय ॥ श्रावण शुक्लाचतुर्थी पूर्व जुता जब होइ । सो उत्सव गणनाथ को जजन दान को
सोइ ॥ श्रावण शुक्ला पचमी नाग पचमी नाट । पष्टी विद्धा सो करी नाग जजन सुभ ठाक ।
श्रावण शुक्ला द्वादशी दधि घृत मय्या ताहि । तहा पवित्रा रोपिणै विष्णु हेत करि जाहि ॥
चतुदशी शिव का करै शुक्ल पक्षिमा जानि उपा नर्म सुदर करै फाल विहित सो मानि ॥

अत—सुछित हुइ कै गिरि गई कीन्है दृढ प्रहार । उरत भई
फिरि कै चलौ कष्टुक दूरि तेहि वार ॥ ग्रामै यद्यति खाति है पिअति जटपि भै
वार । आदि कर्म चढाल ते प्राश्चित सो न प्रकार ॥ निधन क्रियो गो पिंडका एक चरण
वृत्तकार । गर्भ हते द्वै पद करै पूर्ण प्रजा प्रति कार ॥ × × × दृढ हनै पापान वा
गाई करै प्रहार । श्र ग भग वृत्त चरण है द्वये नेत्र साकार ॥ चरण कृपालागूल में अस्थि
भग करि दोइ । तीनि चरण है करण में पतत पूर्ण है सोइ । श्रंग भृ ग अरु अस्थिका होति
भई कटि भग । जीव जो पट माम भरि प्राश्चित सोन प्रसग ॥ जाइ मरी दावानलै अथवा
वधन पास । कंठ परी जो कठनता मरण जाइ का जासु ॥ गेह मरै वा वन मरै वाधत
वा मरिजाइ मारै नाका जानि कै विनु जाने मरि जाइ । हलमा अथवा सकट मा गोपति
पीडित पीठ तौन मरण है जानि कर जोपि परत है ठीठ ॥

विषय—व्रत, उपवास, प्रायश्चित्त आदि वर्णन ।

संख्या ३९८. ग्रानद मजरी, रचयिता—रायरान करन, कागज—देशी, पत्र—१६,
आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपट्टप्)—१५०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८२८ = १७७१ ई०, प्राप्तस्थान—
राधा बल्लभ, ग्राम—खैराबाद, डाकघर—राजेपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ आनन्द मंजरी राहू रात करन हुत छिप्यते ॥ श्री आनंदी आनंद मंडू के चरन कमल चित लालं ॥ कहीं बिमल आनंद मंजरी अति अर्पण उपजाक ॥ १ ॥ तामे कहीं वनाय सबै सुय सुय भाषान हित शिवके ध्यान विचारस और ह्यम असाइक ॥ गुरु रहस्य सुमन के ॥ दो० ॥ देव चरित को भेद कहु मोरे समुति परै न । ज्यों ब कहत कवि मंत्रदा मी हूँ कही सुपेन ॥ जप तप संजन सौं बमत कहुं पान कहुं पान ब्रह्म ग्यान पुनि मुक्ति फल पहां एक हरि ध्यान ॥ ३ ॥

अंत—तीरी एक अन्न कपु छोटी श्री न मीठी गभी छोटी एक कारण चाही । चौदाव कू पाछ के ॥ मरग चारि पंच सूत्र उप्प सुख जया शक्ति एक होइ शक्ति आदि शक्ति मुंड मारु क ॥ शिवा कइ ध्यान हरन मग्न रहो अहो गिसि मी ती गित प्रति पर्ती चाहत कृपारु के ॥ तर द्वार भाये बिना पाइ ती न जात कोक होइ के प्रसिद्ध भादि देहि वैपि काल के ॥ ४१ ॥ छप्य—उंठ ॥ पड़े सुनि आनंद मंजरी कमल्य आनं । पड़े सुनि आनंद मंजरी शिष पइ पाषी ॥ पड़े सुन आनंद मंजरी क्यक न परसै । पड़े सुनि-आनंद मंजरी स्वामा दरसै ॥ अस हंस कबो साईं मुजस मुकवि कानि पुनि इमि कइ सुनि पइ सु आनंद मंजरी भक्ति मुक्ति विरथे कहे ॥ इति श्री आनंद मंजरी भापूर्ण शुभ भूपय संवत् १८९८ वि० महा बर्दा लेकन बार बुध बार ॥

विषय—प्रथम दही मगबटी की बदना पुनः अपना जीवन आनंद से व्यतीत होने का वर्णन ॥

संख्या ३६६. तोता मैना की कहानी, रचयिता—रंगीलाक (भागरा) कागज—साधारण, पत्र—४८ आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७ परिमाण (अनु प्ठुप—१४४०, पूर्ण, रूप—वर्णान, गद्य, छिपि—नागरी छिपिकाक—सं० १९०७=१८५० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामा मुराव, ग्राम—वधमीरपुर, टाकसर—मौरावा, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ तोता मैना की कहानियां छिप्यते बंदना ॥ प्रथमै मी उस पर मछ परमेश्वर की बंदना करता हूँ कि जिसने इस अनुसुत मुष्टी को अपनी शक्ति भाव से ही रचा है और मनुष्य से लेकर खीरी तकको बनाया और उनका पाठक पोषण किया इसलिये उस सबे ध्यायी सविदाबद् का स्मरण कर इसिक जनों के चित को बहलाने के छिये गभीन मग हरन कहानी तोता ब मैना की अपनी मति के अनुसार पाठक गणों की सेवा में अर्पण करता हूँ । रमणीक हीय के विकट एक अति उद्यम और शोभावमान उपवन कछ पुष्पों से सदा हुआ और अनेक प्रकार के मन हरन रंग बिरंगे पंथी कोयक मोर चयोर ईम सारस आदि से सुसौभित अनेक तासाब और मरोबरो से परिपूर्ण इन्द्र के मंदन बन के समान हीन्यमान या उसी उपवन के अमक सभन पुष्पों पर प्रत्येक पक्षियों ने अपना विवास स्थान बना रखा था ॥ ईव योग से एक दिवस एक तोता जाही मेह का मार अति व्याकुल एक वृक्ष पर अपनी विपत्ति की बैरा कर्मण के लिये आ बैठा ॥ और उसी वृक्ष पर एक मैना का वास था ॥ अब मैना ने अपने वृक्ष पर तोते को बैठा देला तो आने बढक बड़े कोय के साथ बोली कि ये तोते तु मेरे दरस्त पर क्यों आन बैठा है । वहाँ से उठ किनी और दरस्त पर बसा जा । मैना की ये बातें सुनकर तोता बोला कि हे मैना हम तेरा

क्या विगारते हैं एक डाली पर आज की रात विता कर सुबह उठकर अपने स्थान को चले जावेंगे ॥

अंत—जब टग आया तब मदन पाल पेड़ पर चढ़ गया और टग उसके पकड़ने के लिये पेड़ पर चढ़ा मव टग की बेटी ने वहाँ साड़िनी पर मवार हो गुटे के नीचे ले गटे मदन पाल उम पर कूद पड़ा और दोनों वहाँ से चल दिया और टग देखते ही रह गया । दोनों चलते चलते कई दिन में एक बड़े शहर में पहुच और वहा दोनों आराम से रहने लगे ॥ टग की बेटी मदन पाल को प्यार करके साथ रखती थी । जब देश निकाले के दिन पूरे हुये तब मदन पाल ने मन में विचारा कि अब तो अपने बतन को जाना चाहिये परन्तु एक बात कठिन है कि इस टग की बेटी को लेकर कैसे चलें जो पिता इसे देखे तो क्रोध करके फेर देश निकाला कर देगे यह बात मन में विचार कर जब रात को टग की बेटी सो गई तो मदन पाल ने तलवार निकाल कर उसको मार डाला और कोठे में बठ कर मव माल अमवाच लेकर घर का रास्ता लिया मना बोली कि हे तोता टग की बेटी ने मदन पाल के संग कैसा सलक किया कि उसके प्राण बचाये और इसने उमे जान से मार डाला ॥ सो हे तोता मैं इसी सबब से मरट की जात से नफरत खाती हूँ तब तोता बोला कि हे मैना सब मरट और औरत एक मे नहीं होते अगर तू सुने तो एक वास्तान और सुनाकं सुधको याद आगई है ॥ इति तोता मैना की कहानी संपूर्ण समाप्त ॥ लिखा गोपी नाथ तिवारी अपने पठने के लिये संवत् १९०७ भाद्र पद जन्माष्टमी के दिन ॥

विषय—तोता और मैना की प्रसिद्ध कहानी

संख्या ४०० वैद्यक जराही, रचयिता—पं० रंगीलाल (मधुपुर), कागज—देशी, पत्र—१२४, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—१६२०, पूर्ण, रूप—गलित, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवनारायण, ग्राम—वटैला, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक जराही लिप्यते ॥ द्वितीय खंड मंगला चरण ॥ दो० ॥ श्री धनवंतर के चरण रज निज मस्तक धार । जराही परकार ये रच्यो ग्रंथ सुपकार । पुनि गुरु चरण सरोज रज मस्तक तिलक च्छदाय रोगिन के उपकार हित पूरण कियो बनाय ॥ नाना ग्रंथनको रतनु अरु निज मति अनुसार लिपी चित्रिन्मा देह की सुप पावै संसार ॥ अथ मस्तक के फोड़े का यत्न ॥ जानना चाहिये कि एक फोडा मिर के ताल पर हाँता है सूरत उसको यह है कि पोस्त के टाने के बराबर होता है ॥ और उसके आम पास ह्येली के बराबर स्याही होती है और वह स्याही हवा के मद्धा दौड़ती है ॥ और जहरवाट से संबंध रखती है । यहा तक ये स्याही फैलती है कि सब शरीर स्याह हो जाती है और वह रोगी चार या भाठ पहर पीछे मृत्यु को पहुच जाता है परंतु परमेश्वर की अनुग्रह से कोई अच्छा जराह चिकित्सा करने वाला मिल जाता है तो निम्नदेह आराम हो जाता है और चिकित्सा करनेवाले को चाहिये कि जो वह स्याही कंठ से नीचे न उतरी होय तो चिकित्सा करने से आराम हो जाता है और

जो स्याही कठ से नीचे उतर आई होय वही इस्त्राज करना न चाहिये हम छोड़े का तिसारा नीचे खिन्नी तस्वीर में देख लेना (तस्वीर बनी है) ।

अंत—बाजे मनुष्यों को फस्त का अभ्यास पढ़ जाता है फिर वह फस्त न सुलबायें तो एक न एक रोग मत्ताता रहता है ॥ और वर्षाकाल में रुधिर मातृदिक हो जाता है ॥ उस रित्त में फस्त सुलबायें योग्य नहीं और जो इकीम की सम्मति हो तब सुलबा लेने और दिन दिनों में रुधिर कम होता है तब सुलबा के कारण कई रोग हो जाते हैं और पीड़ा भी हर एक प्रकार की होती है जब फस्त सुलबायें की बहुत ही आवश्यकता होती है उस समय दिन तारीख रित्त आदि का कुछ भी विचार नहीं किया जाता है ।

इति जर्नाही बीषक रंगीकाक कृत् संघहीत ग्रंथ द्वितीय खंड संपूर्णम् शुभम् संबत् १८१९ विक्रमी ॥

विषय—पौड़े पुनसियों से बचना और उनकी औपधियों के बचाने की तरकीबें । फस्त सुलबायें न सुलबा लेने का समय आदि ।

संख्या ४०१ बारहमासा निपट नादान, रचयिता—रंगीकाक, आगज—साधारण, पत्र—४, आकार—८ × ५२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुच्छेद)—४५, पूर्व, रूप—जर्नीय, पद्य कवि—मागरी, प्राप्तिस्थान—सहा पुस्तकालय, कलाकाकर, शिक्का—प्रतापगढ़ ।

आदि—अथ निपट नादान की बारहमासी ॥ खबरनी ॥ कहीं में किसी दिख का ध्यान । मिला सखी पीतम निपट नादान ॥ कया प्रथम अपाद आधी । धरा छर्कि काली काधी ॥ अमकती अपला मत्ताकी । हुई मब जंगक हरियासी ॥ रोहा ॥ धन धर्मक की गरज से अति छरजे मब मोर । मिला निपट नादान पिया तन धरत मनुष्य मोर ॥

अंत—हुआ पूरा सुनर का साक । कहा नादान पती का हाक ॥ बुरी ये पड़ी जगत में बाल । इस्ते अति हुआ पाती हैं बाल ॥ दो० ॥ कम्बि बाल कछि फाल में, देखो नैन पसार । धर देखें बर बरिं देखते, येमे निपट गमार ॥ अकल बिनकी दरखी मगवान । मिला मली पीतम निपट नादान ॥ १३ ॥ छन्द ये कहा आज हम गाय । समझ को सब बन बिल कगाथ ॥ करो सब मिलके कपु उपाय । जिससे ये बुरी बाल मिदि जाय ॥ दो० ॥ कहा हमने दित का धरा । बारह मासा गाय । सोच समझ मब सुनो समी जब कुरु कर्कक मिदि जाव ॥ कपाल द्विज रंगी फस्त बचान । मिला सखी पीतम निपट नहाव ॥

विषय—१०१ से १०८ तक—नादान पीतम की आहानी के कारण हुकित नायिका द्वारा अपनी सखी से बारह माहों की अपकी दशा वर्जन करना तथा बेजोड़ विवाह करने बाधों का उपद्रव ।

संख्या ४०२. रत्नहारा, रचयिता—रसबिधि, आगज—देसी, पद्य—११०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेद)—१०४४, पूर्व, रूप—आधीन पद्य कवि—मागरी, कविशिक—सं० ११०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गुस्ताबसिंह ग्राम—सूबा डाकपर—कुम्भवाह, शिक्का—इमीरपुर (बुदेलखंड) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रतन हजार निम्न्यते ॥ दोहा ॥ लयत सग्न
सिंधुर वदन भाल थली नव तेस । विघन हरन मगल करन गौरी तनय गनेन ॥ नमो प्रेम
परमारथी इहि जाचत हौ तोहि । नंदलाल के चरन कौं दे मिलाह किन मोहि ॥ नमो प्रेम
जिहि ने कियो हिय लग आइ प्रकास । रग रत वामी नारु कौं कान्ह गोपमन पाम ॥ निम
दिन गुजत रहत जे चिरट गरीव निवाज । है निज मणुकर सुतुन की कमल नैन तुहि लाज ॥

अंत—प्रभु करनी कर आपनी सब विधि लेहु सुधार ॥ कहै अल्प मति
कौन विधि तेरे गुन विस्तार दीन वधु प्रभु दीन वधु प्रभु दीन कौं लै हर विधि निस्तार ॥
इति श्री रसनिधि कृत रतन हजार संपूर्णम शुभ मस्तु ॥ भाव वटी १० दशमी सवत्
१९०८ वि० ॥

विषय—कविका श्री कृष्ण भगवान का निहोर आदि वर्णन ॥

सख्या ४०३ उपात्म शतक, रचयिता—सुकवि रसरूप, कागज—पाधारण,
पत्र—२२, आकार—१८ $\frac{1}{2}$ × ५ $\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—
४२६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—म० १८८६ = १८३२ ई०,
प्रासिस्थान—राजा अवधेश सिंह रईम, तालुकेदार, कालाकाकर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा—गण पति गिरा विधि हर हर हरि में सब को
धाम हरि गुर में गुर पद प्रथम ताते करों प्रणाम ॥ १ ॥ तजा विपाट विदेह जा वारुदत्त
चल पाय । वजा जगत में जौ लखे कीरति धुज वनाय ॥ २ ॥ कवित्त मनहरण—चाणी हो
भवानी हो इदिरा हो इतरानी हो ॥ उर्मिही ब्रह्म वाणी इहै वाणी वेद नाम की ॥ स्वाहा
स्वधा वेणी चरदान की हो देनी । राम धाम की नर्मिनी श्रेणी सुनै जोक नाम की ॥ रूप—
रासि राधिका हो सिद्धि की राधिका हो । वैरिन की वाधिका हो जये जाहि वाम की ॥
रस रूप रैहां तेरी जीभि ते न जैहां तू नि—हारु मोहि में हो महारानी रानी
राम की ॥ ३ ॥

अंत—सन्मुख भगु ते होत सन्मुख सकल सिद्धि, मद हास मद करि दारत कुमति
है—दृगन की कोर देपि फौजन की कोर देत, भ्रुव भंग किणु भंग वारुण विपति है ॥ रस
रूप हेरी हिये कौन कीनि बेरी लैन, महारानी मेरीं वेरा कहा तेरी गति है, एरुनि को फल में
पिनाक पति की दोहाई ॥ नेकु नारु मोरि तू करति नारु पति है दोहा हरि को जस रस
रूप यह । कहा कहै मति हीन । नज्जन जन करि हैं क्षमा । जानि आपनो दीन ॥ इति श्री
उपालभा शनक सुकवि रस रूप कृते राज श्री वर्णन नाम संपूर्ण शुभ मस्तु श्री जानकी
वल्लभो विजयते ॥ श्री हनुमते नमः ॥ सवत् १८८६ आश्विनि मासे कृष्ण पक्षे एकादश्या
लि' विश्रामदास पठनार्थ श्री लाल हनुमत सिंह जू श्री रामचन्द्राय नमो नमः ॥

विषय—(१) विनती उपदेश गुरु स्तुति कवित्त सामग्री गोपियों तथा उद्धव का
साक्षात्कार प्रत्युत्तर, पत्र निदर्शन, योग वर्णन आसन, यम, नियम, प्राणायाम प्रत्याहार,
योग ध्यान समाधि पृ० १—९, (२) उद्धव और गोपियों का संवाद उद्धव की योग
सवधी उक्तियों का गोपियों द्वारा खटन पृ० १०—२१ (३) गोपियों की पत्री का भेजना
गोपियों द्वारा योग पत्रिका का उत्तर राधिका सदेश रुमिणी, सत्यभामा जामवती नागजिती,

अर्द्धिही, मित्र विंदा लक्ष्मणा, सहिता चित्र गंध तथा सव गोपिकाओं का संज्ञा पृ० १२—
 ३० (४) बहमी चिरह वर्णन, चिरह व्याज से बसत, वर्णन मायिक का उपासक नयक
 प्रति मर्त्ता को उपासक मायिका प्रति मायिका का उपासक सत्री प्रति पृ० ३१—३३
 (५) प्रभा से मंगला चरण महावीरना मंगला चरण गुण वर्णन गुण हाता वर्णन
 पद्म बालि कीर्ति वग न प्रताप वर्णन दान वर्णन गज वर्णन निज भक्ति वर्णन अमन्यता
 वर्णन देव्या स्तुत । आदि वर्णन ॥ पृ० ३४ —

संख्या ४०४ ए. सनेहलीला, रचयिता—रसिकराय, अंगज—देसी, पत्र—१४,
 आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुष्प)—१४० पूर्ण,
 रूप—शीर्षशीर्ष पद्य छिपि—जागरी छिपिकास—सं० १८२६ × १७६९ ई०, प्रासिस्थान—
 श्री गंगाबहासिंह ग्राम—बगला काट, बाकपर—महमूदाबाद जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सेनह लीला कियते ॥ एक समय ब्रह्म बास की
 सुरति करी हरिराय । बिज जन अपनो जानिक उच्य किय बुलाय । श्री कृष्ण बचन नीमे
 कथा उच्य तम सुनि छेहु । भू जसोदा आदि दे जा ब्रह्म की सुप वेहु ॥ प्रजवासी बहुत
 सदा मर जीवत प्राण । ताते निमिष न बीमरी मोहि नंदराय की आन ॥ हनु उनसों बैसी
 कथो आवेंगे रिपु जीति । अन्ता रे किस बने पिता मात सों प्रीति ॥ उच्य वे ब्रह्म जोपिता
 उनके मरो प्यान । तिन्हे जाय उपद्रव देव पूरण प्रह्न भुजान ॥ बागा अपने बंग को श्रीर
 मुहुट पहिराय । सुति कुंडक माका इह अपनी बप बवाय । अए अपना रय साजि के
 सूत सारपी कीन ।

अंत—गोपी अह उच्य कथा भू पर परम पुनीत । लीन लीक र्चिदह भुवन बद्
 कीक शुभ गीत । बाधात सक्छ बन्धन की सुप उपगत मन मोद । श्री लुगछ चरण मकरंद
 मब पावत परम विमोद । श्री मुकुद् मम मनुप जह मक्छ संत अनुराग । पशुदा प्रेम प्रवाह
 में पने रहत बद् भाग । इति श्री सनह लीला सपूर्णम् शुभम् सिपरी सिव गुणाम तुने इत्यंजा
 मध्ये संवत् १९२६ विक्रम राज्ये ११ वसति जेह शुक्ला ॥ श्री नारायण श्री रामजी की इति ॥

विषय— श्री कृष्ण जी का ठपात्री के हाथ गोपियों को सन्देशा भेजना और गोपियों
 का श्री कृष्ण जी के प्रति प्रेम वर्णन ।

संख्या ४०४ पी. सनेहलीला, रचयिता—रसिकराय, अंगज—देसी, पत्र—१४
 आकार—६×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुष्प)—१२७, पूर्ण,
 रूप—प्राचीन, पद्य छिपि—जागरी छिपिकास—सं० १८७२ = १८१५ ई०, प्रासिस्थान—
 श्री जोधासिंह ग्राम—मिडलिया, बाकपर—इंमानगर जिला—छीरी ।

आदि—४०४ ए के समान ।

संख्या ४०५. मांक वतीनी, रचयिता—रसिकरूप, अंगज—माधारण पत्र—४,
 आकार = ६×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१० परिमाण (अनुपुष्प)—५०, रूप—
 प्राचीन, पद्य छिपि—जागरी प्रासिस्थान—महंत नंददास, ब्रह्मचारी का आश्रम, ग्राम—
 नमामपुर, बाकपर—परिबार्थी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री हरि प्यान द्वापयम ॥ अथ मांसवतीसी कियते ॥ हे हरि करणा

सिन्धु कृपाल तुम विन कौन करै प्रति पाल ॥ टीका ॥ श्री निवारक आचारज कर विधि
श्री शिव संकर्त्ता । श्री निवारक आचारज चरभौ भौ भक्ति विमत्ती रूप रसिक से दीन
दुपन के हौं तुम ही दुप हर्त्ता ॥ १ ॥ निपल मही मडल मडन मणि श्री हरि व्याप उदारा ।
जिनकी चरन शरन हम लागे जागे भाग हमारा ॥ रसिक अनन्य नृपति चूडामणि अंस
कला अवतारा । रूप रसिक प्रभु परें प्रेम को वरन्यो नित्य विहारा ॥ २ ॥

जब जब लाल निहारौं तुमको तब तब धारं ही मैं । यह मैं हों यह तुम हों यह कस्य
सुधि न रहै मो जी मैं ॥ तन मन धनादिक प्रमुदावत सबलै पावत पी मैं । रूप रसिक कस्य
कहि नहि आवत जो उपजावत ई मैं ॥ १६ ॥ जल में तरंग तरंगनि में जल पल नहीं परत
विछो है । घन में दामिनि दामिनि में घन सहज सदा सरसो हूँ ॥ सौरभ सुमन ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—श्री कृष्णानुराग-सवधी पद ।

संख्या ४०६. फतह प्रकास, रचयिता—रतनकवि, कागज—देशी, पत्र—५०,
आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपदुप्)—७००, रूप—
साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, प्रासिस्थान—श्री
हनुमानसिंह, ग्राम—गोधनी, ढाकघर—जैतीपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ फतह प्रकास रतन कवि कृत लिप्यते ॥ थोदि थिर
कीली भरकीली विधु कला भाल उर कीली भौहनि समाधि सरसति है ॥ प्रानायाम सांसन
कलित कमलासनमें विपति विनासनकी वासना वसति है ॥ सेंदुर भन्यो भुसुद मडल समीप
गज वदन के रदन की दुतियां लसति है ॥ सध्या श्रौन सरद के नीरद निकट मानौ हैज के
कलाधर की कला विगसति है ॥ १ ॥ गंग उतमंग आधे तरल तरंग भरी आधे भरी माग
सुकताहल सुदग की ॥ आधे कठ काल कूट कालिमा कलित आधे नील मीन की ललित
लपग उमगकी ॥ आधे उर केहरि की करति करति छवि आधे की मृगमद केमरिके रंग की ।
आधे निर वेद आधे हाव भेद ऐते भेद राज अभेद लीला शिव शिव संग की ॥ २ ॥ अथ
काव्य को प्रयोजन ॥ कविच ॥ माला सी वसति कंठ वाला सी विभूषित अदृषित गुनन
प्यारी छाजति छविन की । सुधासी मधुर वसुधा सी वसुदा है सद सुपठ समाधिसी है
आधि खेद विन की ॥ स्वति जैसी श्रवन सुहाई शशि सविता सी सब लोक गाई सत कविता
कविन की ॥ कीरति करति दान ताते फते पति की ज्यों पावन सुराय गा ल्यो सोहन
सविन की ॥ ३ ॥

अंत—रुद्र प्रयोजन विन जिते करी लक्षना होइ । वे आरथ दूपन वहे भापत पंडित
लोइ ॥ यथा दोहा ॥ तन दुतिसीं चंपक चपे दग वारिज जित लेत । वदन रोहिनी रमन
को चपरि चपेटा देत ॥ अप्रजुक्त सो दोष कहि जो आवै कवि कोइ ॥ इति श्री फतह प्रकास
पुस्तक जितनी देखी उत्तनी लिखी रामचकस मुराळ संवत १९०६ वि० श्रावण कृष्ण अष्टमी
श्री रामजी सदा सहाय करै ॥

विषय—काव्य लक्षण, वृत्तियाँ, ध्वनि, रस आदि काव्य प्रयोजन, कारण, लक्षण,
तीनों शब्द तीनों अर्थ तिनते व्यंग्य अविध्या, लक्षण उत्तम काव्य ध्वनि भेद रसध्वनि भाव
रसध्वनि भाव सधिताई आदि वर्णन ।

संख्या ४०७ सुयेय वैद्यक, रचयिता—रिद्ध (बेरी), कागज—दूरी, पत्र—८०,
 आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनुच्छेद)—१६८०, पृष्ठा,
 रूप—महीन, पत्र लिपि—मागरी, लिपिकाल—सं० १९३९ = १८७९ ई० प्राक्षिप्यान—
 श्री रामचरण वैद्य, ग्राम—मुहुरापुर, ढाकपुर—महामुखाबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुयेय वैद्यक लिप्यते ॥ श्री गणेश पद इन्द्र मन्वा
 सिद्धि मन्त्र परम् रविद्वेषेन ईशेन भागा टीका विरच्यते ॥ स्वर्ग वासियों के समूह के स्वामी
 श्री जनकवती श्री को प्रणाम कर संपूर्ण मुनियों के सम्मत किया अथ पान विधि को कहते
 हैं ॥ दिन के तीसरे पहर में पानी अर्धराशि में शरत् सुषोदय से पहिले शिशिर और सुषोदय
 के पीठे हेमन्त मन्वाह में प्रीप्स और पहर दिन चढ़े पहिले बसंत जैसे कुपल वैद्य अनुभू
 को कहते हैं ॥ अमृत को पीठे हुए गलद की के सुप जा मूद गिर उन्होंने सूर्य की किरणों
 की पत्तियों की तरह दोप रहने वाली बसन्त को आनन्द देने वाली अमुता की की तरह
 और महाद्वय को प्रिय रूप गंगा की की तरह अग्नि का हीपन करन वाली श्री की आदुति की
 तरह और अनेक प्रकार के रसों वाली पृष्ठी की तरह हार्द उपजी वह शास्त्रक्य तंत्र संघर्षि
 यार्थ में अंटे हैं । कष्ट बात का हरती हैं हीपन है पापन है मूल उदात्त गुम्भ अर गुद् रोग
 कुछ पांडु प्रमेह स्वास अतीमार गामी पयरी उद्दर रोग इन्को को हे राजन शीघ्र भागती है ॥

अंत—ईने लोक का हित के लिये दोप मन्वाक विमृत स्त्री अक्षयान का विधि किया
 सब प्रकार रस के उत्तम गुण और दोप घनवत्तरी की का सुप म सुने सदर कीगुक्त सहित
 और रस पाठ में विशेष्य रूप यह गुणियों के समूह के समुद्र रूप शीघों को सुप देनेवाला
 मीने रक्षा शरीर बाका को यह औषधि है यहाँ की सुपन देव ने रचित किया है आयुर्वेद महो
 इति में अक्षयान विधि समाप्त हुआ । काला कमक १ भाग मिर्च २ भाग भाग सोंठि ३,
 खीरा ४ भाग सांभर कमठ २ भाग मेघा कमक २ भाग इन्ही को पूर्ण कर यह पूर्ण मिद्वन
 राजा ने कहा है तब के संग संजाकिन किया गुम्भ अफता बिसुषिद्य है जा इन शर्तों को
 दरता है मात्रक के अंत में सरा लेना ॥ यहाँ की सुपन वैद्य का किया घंघ समाप्त हुआ ॥
 इति श्री शीघ तत्र मदेनाम्तर गत पेरी ग्राम निवासी गौड पंचायतम विविधि अक्षय परम
 पंडित श्री शिव महाय पुत्र हरियाना कुरक्षेत्र चर्ममंडक महोपदेशक रविद्वेष शास्त्रिार
 वैद्याभिरादिन सुपय कृतायुर्वेद महाइति भागा टीका समाप्तः ॥

विषय—वैद्यक ।

संख्या ४०८. रमहरनाबकी, रचयिता—अपमदेय, कागज—तापारज, पत्र—
 १०, आकार—१० × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८ परिमाण (अनुच्छेद)—१८०,
 पूर्ण, रूप—महीन, पत्र लिपि—मागरी, लिपिकाल—सं० १९३९ = १८५५ ई०,
 प्राक्षिप्यान—श्री रामचरण मुराक, ग्राम—पुरवा विधामग्राम, ढाकपुर—परिधापी
 जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री राम चंद्राय नमः ॥ शशा ॥ श्री गुरु गणगति शक्रापर गौरी गिरा
 गोपाल । बंदा सबके पद पनुम, रबी प्ररन हरि दास ॥ १ ॥ मेल अर्क का मूक है, पामार
 है विविध । पारि पदल चारी दिगा, अम से अंक परिध ॥ २ ॥

अत—(४४३) चारि चारि पर तीनि परि, थारे दिन के बीच । मसा फलै कलत्र सुत, दत्रि लाभ सुभ हींच ॥ गडं वस्तु मिलि हे सही, ताको लेहु निहारि । तेरे अग में तिल सही, ताते लेहु विचारि ॥ (४४४) चारि चारि फिरि चारि परि, मंगल मूल बनाइ । सुत कलत्र सुख पाइ है पै कुल देव पुजाइ ॥ होइ अगिनि में सोंति जौ, ब्राह्मन न्याँति चवाइ । तेरे घर के पूर्व ही, जल सचार वताइ ॥ इति श्री रिपभदेव विरचितायां रमल प्रदनावली संपूरण संवत् १९१० लिया विश्रामदास धारूपुर विषे ।

विषय—रमल (ज्योतिष) ।

संख्या ४०६. वारहमासा, रचयिता—रुद्रनाथ (विल्हौर), कागज—देशी, पत्र—७४, आकार—६×५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७६ = १८९९ ई०, लिपिकाल—सं० १८९९ = १८४२ ई०, प्रासित्वान—श्री रामभजन पाठक, ग्राम—महमूदपुर नवाब, डाकघर—हरगांव, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वारह मास कवि रुद्र नाथ कृत लिप्यते ॥ दो० ॥ श्री गन नाथ कृपाल के चरन कपल चितु लाइ । वरनाँ वारह मास वर अति सुंदर सुखदाइ ॥ सोरठा ॥ लाग्यो प्रथम भसाइ पिय विन तिय व्याकुल परी । परी मदन के गाइ कौन उपाइ करौं सपी ॥ चौ० ॥ उनए नरा धोर घन धुमईं । गरजै घटा चहुँ दिमि हुमईं ॥ विजुरी चमक चमक अति तदपै । पिय विन प्रान सपी मो टरपै ॥ अति उर पीर विरह की वादी । मदन तरंग रंग की गादी ॥ पवन चहुँ दिसि अमित अक्रोरें । मैन विरहसागर महं वोरें ॥ मोर शोर चहुँ वोर सुहायो । मदन वान सो हृदं लगायो ॥ चातक घातक कृत भारी । जरै विरह लुर मोसो प्यारी ॥ चहुँ वोरन अति भूमि हरेरी । इंद्र वधू छत्रि देत घनेरी ॥ सेज चावनी मनहु विछाई । तापर मपमल फरस सुहाई ॥ देपि सपी यह सोभा प्यारी । पिय विन देत माँहि दुप भारी ॥ इंद्र धनुष की देपत सोभा, पिय के मिलन हेत चित लोभा ॥ माँति भाति के पग वन बोलैं तरवर लता पवन लगी डोलैं ॥ हुलसैं हियो सपी लपि मेरो । काम ज्वाल जारत चित बेरो ॥ वरस बुंद बहु हुंद मचावत । राग मलार सुनत सुख आवत ॥ लगन लगावै मदन जरावै । पिय वरसन हित चित हिय गावै ॥ करौं उपाय कौन मैं आली पिय विन विरह विपति उर घाली ॥

अंत—जेष्ट शुक्ल पक्ष ॥ सोरठा ॥ वीति गयो मल मास लगो जेठ को पाप सित करि करि सकल हुलास करे दान व्रत सकल विधि ॥ छद् तोटक ॥ दस पाय हरा सपि आन लगो अति मोट सुचित महान जगो । सजि साज समाज समी सु चले । रहे दपति सोहत रूप भले ॥ वर गग अन्हात उमंग भरे वर दान विधान अनेक करै ॥ कर जोरि करै विनती सुप की । सुन गंग हरी अवटी दुप की ॥ अथ प्रमंसा गगा जू की ॥ चंद्र भुजग प्रियात ॥ दुयेते कट्टे पाप भाया भवानो । गिरी ईस के सीस त्रैलोक जानी ॥ तरंगे धुरंगे उमगे सुरंगे । नमो देव गंगे नमो देव गंगे ॥ घरै देवता ध्यान तेरो सदाई । घरे सीस पै ईस ज्ञानी महाई ॥ तुही पलुप मंगे तुही शक्ति अंगे । नमो देव गंगे नमो देव गंगे करै दीन हँ देर वेला तिहारी । उजारो महा सोक लागी न वारी । पगँ मोद रंगे वसै ईस श्रंगे नमो देव

गंगे ममो देव गंगे ॥ सुधा पानि को हेत खीची बिचारी तिहारी सुधा पारि कर्तक न्यारो ।
मिसे मुक्ति भंगे मरे मुक्ति संगे गंगो देव गंगे ममो देवपीये ॥ सदा आर्द्र बिचारी प्यान प्ररो ॥

अंत—इति विधि गंगा को मुमिरि इपति गांठि बंधाह । दान दिये बहु भांति के
सय द्विज एव निहाह ॥ मंडन करि बर सकळ विधि पाप सिधि सुम साज । निज मंदिर
फिर भाह के करत सकळ विधि राज ॥ बंध लोटक ॥ फिरि इपति भय सु मंदिर में सुप
भांतिन के बहु पूरि रमें । हरि के पूत की विधि बाह करी मुक्ति भापत मोद महाज भरी ॥
फिरि पूरबमामयि भान कगी मयि छठ समापति जोति जगी ॥ मिळि हास पिळास
अनग करे अति इपति साहत मोद भरे ॥ द्विप लीप पिया सुप पुंज छयो नित नित बुसासन
मोह मया ॥ दो० ॥ जो पट रितु को बुपह रयी धीते मई सुप छेप । बारह मास रहे सुई
पिय के बरमन देप ॥ यहि विधि बारह मास छत्र नाथ बरमन करे । भीरो सिंह प्रकास
चिंटीय सुप सर्वदा ॥ शोहा ॥ रस मुनि बमु चंद्र सहित ही संबन् सुप घाम । आसन
यदि विधि मुळको बारहमास तमाम ॥ इति श्री पुसाळी कवि चंद्रनाथ कृत बारह मास संपूर्ण
शुभमस्तु । प्राशन मुक्ति तीज गुद बासरे संबन् १८९९ सुम मूपात ॥ जे महादेव की शंकर की शानु ॥

विषय—बिहारे वर बारह मासा ॥

संख्या ४१० पंच कल्पानक, रचयिता—रूपचंद्र, अग्रज—साधारण, पत्र—१६,
आकार—६×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपुंज्)—१२०, पूर्ण,
रूप—नवीन पत्र, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मंदिर, ग्राम—इतरा मेदुनी
गांज, ढाकपर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—पत्र विधि पंच परम गुद गुरु जन शासनो । सकळ सिधि वातार मुचिबन
बिनासनो ॥ सारह श्री गुर गीतम सुमति प्रकासनी । मंगळ करहुंभी सय सु पाप पनासनी ॥
पाप नामन गुनहि गुद वा दान अछा दस रको । धरि प्यान कर्म बिनाम केबळ जान अविचर
जिन छयो ॥ प्रभु पंच कल्पानक सुमहिमा सुनत सब सुप पाह्यो । मन रूपचंद्र सुदेव
जिनपर जगत मंगळ ग्राह्यो ॥

अंत—मै मति हीन भगति बस भावन भाह्यो । मंगळ गीत प्रबंध मुजस जिन
गहवा ॥ ज बर पई सुने अग सुखर गावहीं । मन बंठित फल सो नर निहर्ष पावहीं ॥ पापि
ती मंगळ अष्ट नव विध मन प्रतीत लुखहवा । धम भाव लुटे सकळ मनको जिन स्वरूप
लुप्याहवा ॥ पुनि हरे पातिक डरै बिबन सुहोइ मंगळ नित नए । मनि रूप चंद्र सुदेव जिन
वर जगत मंगळ ग्राह्य ॥ इति पंच मंगळ रूप चंद्र कृत संपूर्ण ॥ १ ॥

संख्या ४११ पृ. गीत गोविंददर्श, रचयिता—रामचन्द्र नागर (गुजरात),
अग्रज—दौसी, पत्र—९०, आकार—६×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण
(अनुपुंज्)—१०००, पूर्ण रूप—प्राचीन, पत्र, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं०
१८११ = १०३४ ई०, लिपिकाळ—सं० १६०२ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री जगन्प सिद्ध, ग्राम—नरयाँ भयानी देरी, ढाकपर—मिथिलार, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणैसायनमः ॥ अथ गीत गोविन्दार्शं लिप्यने ॥ मंगला परम ॥
शोरश ॥ हरमुन मरुजनि गाय पांज बुदुनि क बंदि पुनि भोज देव मुन प्याब श्री जब देवदि

प्रणत करि ॥ १ ॥ जिन यह गीत गोविंद भूपगुण गुण रम धुनि महित । श्री राधा ब्रज चंद रहसि विलास कियो प्रगट ॥ ताको अति मति मंद हूँ भाषों भावारथें । चाहत कियो सुछंद स्वामी सासन पाइ बल । नागर ज्ञाति अधीन हीन छीन मति अज्ञ अति । राय चंद द्विज दीन नाउं गांऊ गुजरज जिहि ॥ जानत कहु न भेद कप्रिता के गुण द्रोप को काँज कृपा अभेद दीजै सुमति दयाल प्रभु ॥ सुजन सजनता मार जे जन तिनसों कहत अथ । प्रिय लियो अवतार तासु प्रयोजन हेतु हित ॥ नगर मुरशिदावाड आदि सुरसरी तीर शुभ सुवग वयें अविपाद जहा आशरम वरण मत्र तिहि पुर अतर मोहि महिमापुर महिमा महत । मही मार्हि सरि नाहि जाकी पुर एकाँ कहु सज्जन गन जन राज लाज समाज जहाज नृप अँसो और न आज शोधी वसुधा वसत तह । गुण गाहक गुण वान गुण थापरु मो निगुण के सुंदर सुवर सुजान सुपद सुबुधि सुवचन सुहृद ॥ आनंद कद अमट मजन कुमुद कुल चंद नृप । डाल चंद कुल चंद राय चंद प्रति पाल प्रभु ॥ इरु टिन सुनि यह गीत । गोविंद गुण गण मणि जटित ॥ वादी प्रीति प्रतीति मरम रहम रम रीति प्रति ॥ यद्यपि समुझि सुजान परम अरथ समुदित भये । तदपि अल्प मति जान मोंमे मूरुप नरन की ॥ जिन्हें मस्कृत ज्ञान मपनेहु सभव नहीं । तिन हित जान सुजान चरयो गय भाषा करन । मोसे परम अजान तासों यह आज्ञा दहु । मरम छंद मन आन सुगम करौ भाषा रचन ॥ यद्यपि अज्ञ अजान आयसु बल मैं हूँ तवै । यथा बुझि अनुमान भावारथ भाषा करी ॥

अंत—अष्टादश पदी भाषा ॥ राधिका माधव दक्षिणता ब्रज नारिन सों लपि राग विलास मैं ॥ मानि की हानि मने अनुमानि के मान कियो गइ आन निवाम मैं ॥ भोट भये विरहागि जगी हिय लाय लगी लागि काम के चाण की । छाड़ि विहार डियो मत हारि निहारि हरान जवै प्रिय प्राण की ॥ मीन ज्यों नीर विहीन टुहूँ की भई गति दीन दुहु डिशि चाह सों ॥ देपि अली तव व्याकुल हूँ चली ल्याय मिलाप करावन नाह सों । आश वधी तिय देजहि साजि श्रंगार सवारि सकेत निकेत मैं आहूँ आगम जानि चक्रे दग वज विछाये मनो मग स्वेत मैं सामुहे आवत देपि सहेली अनेली धकी मी निराशता वादी राम रमाह रसे विरमाह के काहु कहु यह चितति टाढ़ी । सोचत भोर भयों तव मोहन साँह परे अरसोहँ से आये ॥ आनि तियाँ अनुमानि करी रति मॉन गयो नहीं माने मनाये ॥ हारि करी मनुहारि हरी न निहान्यो तक पिय सामुहँ प्यारी ॥ नेक हूँ रोप को जोश धन्यो न गये उठि के तव हारि विहारी ॥ आंखिन ओझल इयाम भये तव काम की वामता वाम सताई सोच सपी पछिताय सर्पा सग लै तव इयाम के साँहँ सिधाई ॥ कारी खरी भय कारी निश्रीध उरीत घनी वन वीक्षिन जानि सों लाग लगी चित की चित चोर सों झूटि परी कुल कानि सों । वेन निरुंज सकेत निकेत के द्वार धै पथ निहारती लाल को । बाल निहाल विहाल भई लपि माधुरी मूरति रूप रसाल को ॥ लोचन लाज लजाइ रही मन छाय गयो रति राज समाज तैं टेलि अकेलि ये केलि के भौन सिधारी सहेली सवै मिसु काज तैं ॥ पाइ इकन्त निश्चित हूँ कत लई उर लाइ परे अभिलाप सों ॥ होय धनी निधनी जिमि और कों पाइ धन्यो धन कोटिक लाख को ॥ रैन सवै सुप मैनि मैं दपति मैन के रैन सुपेन वितार्ड ॥ भोर भये अरमात जभात भरे रंग रात के शोभ सुहाई ॥ प्रीति प्रतीति

बड़ाह के प्रीतम प्राण पिया संग यों रति रीति सों । नित्य करै रसरस बिकास प्रकाश संगीत
की रीत की नीति सों ॥ भावज साज पयावज बाजत बाहुत सुकुल तन् पिक काग सों ॥
तचयेह तचलयेह ततकिरंत गावत सरिगम मेव सांय सों ॥ माधव पो दित भायिकता
चित की अति रात्रिक संग बतार्ह ॥ सो कबि बारह बारह दोष महेरा सुरेश करेधान गार्ह ।
गीत गोविंद को या प्रतिबिंब सो जो पढ़े है मुनि गाइ है प्याह है । सो हरि निच विहार
बिखाम निवास के बास को अर्नह पाह है जैसे सदा भट नागर नागरी नागर श्रीन के नय
भद्र प्राय में । बास करौ बबदेव दवाहु सरास बिसाम ह्ये प्याह ह प्याम मै ॥ चौ० ॥
कृष्ण कृपा निधि कृपा करी । तब यह सुमति उर जानि धरी । बाकबद रूप अज्ञाई
राय चंद्र भाया निर्मई ॥ अन्तरह ही अद इकतीम । मंत्रत विक्रम रूप अचनीस तित
मबमी क्षत्रिदिन मधुमास गीत गोविंदादर्श प्रकास ॥ श्री मन्नाबा डालबदस्वाहा परिपाल
राय चंद्र नाग रीम बिरचिते गोविंदादर्श मंत्रे परिपूर्ण हादशाबकोहनम् ममात्म ॥ श्री राम
राम राम राम राम ॥

विषय—गीतगोविन्द संस्कृत का भाषानुवाद

संख्या ४११ यी गीतगोविंदादर्श, रचयिता—रामचंद्र (गुजरात), कागज—
देशी, पत्र—११२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनु
पुष्प)—८००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकार—सं० १८३१ =
१७०४, लिपिकार—सं० १९३० = १८७३ इंच, प्राप्तिस्थान—श्री नारायण जी, ग्राम—
तुमनुरपुर, बाकबर—मौराबा, जिला—उज्जैन ।

केप—४११ पृ के समान ।

मुद्रिका इस प्रकार है—श्री मन्नाबा डाल चंद्र स्वाहा परिपालक राय चंद्र
नागरेण बिरचिते श्री गोविंद दर्श मंत्रे परिपूर्ण समस्तमूर्तिस्त्वित शिव गौरी वैश्व रामनगर
संवत् १९३० विक्रमी ॥

संख्या ४११ सी गीतगोविंदादर्श, रचयिता—रामचंद्र नागर (गुजरात),
कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—१२ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण
(अनुपुष्प)—१०८०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकार—सं० १८३१
वि०, लिपिकार—सं० १८४० वि० प्राप्तिस्थान—श्री रामकरन सिंह, ग्राम—डकवा,
बाकबर—भोयल, जिला—खीरी ।

संख्या ४१२ प. प्राद्विषय भाया (महाभाष्य) रचयिता—सबकसिंह चौहान,
कागज—आधुनिक, पत्र—२४८, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण
(अनुपुष्प)—१६०४, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकार—सं० १९३४ =
१८७० इंच, प्राप्तिस्थान—श्री ज्योति सिंह जी अमीदार, ग्राम—पानीपुर, बाकबर—तालाब
बनसी जिला—छत्तमड ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ आदि पर्व भाया कृते लिप्यते ॥ चौपाई ॥ प्रथमदि
आदिद्वैभ्रम प्यार्थी । जा प्रयाह उपरुता बतार्थी ॥ अर्चं पुरुष अर्पित है रूपा । है सर बात
में रूप अन्या ॥ अक्षर मय जहारदि संभार । जामें हैप मय संभारा ॥ अक्षर मय भये

आसंदा । परम पुत्र कर रूप अनंदा ॥ जो मन्त्रन्य रूप निर लेया । ताकी महिमा को संश्लेषा ॥ जाके नाम श्रुत मयारा । जा अत्र नै दुःख संघारा ॥ एक वृद्धते आनि तरंगा । वरन वरन सबको है अंगा ॥ ताकी मया देवत मयऊ । त्रगुन अगुन एकै विरभयऊ ॥ संतोप मूल अति श्रे पुनि चारा । मूल रूप वरनी निर्कारा ॥ हरि हर वृद्धाको आंतरा । जन्म बुद्धि संघारन करी ॥ दोहा ॥ एक रूप वृद्धे कहैं जानि जान नहि भेद ।

अंत—अथ विचार कीन्ह तेहि वारा । राज सुई मप करी सुघारा ॥ लाक्षा गुठ प्रसु जरत टवारो । तिन पुनि पार्य महित वन जारो । राहु वेधि शोपनी विगाह । दिमि अर विदिमि भूमि अत्रगाह ॥ कृष्ण क्रपा पायो निहु घामा । क्रियो क्रमन परि पून कामा ॥ दोहा ॥ राज सुई मप कीजिये कलि विप विनमि क्रमानु । विष्ण हरन मंतन सुपद हरन विमल कर मानु ॥ पुन ॥ राज सुई मप कीजिये मय काटुन टहराय । सबलमिह यह कहत है व्याघ्रपति को आय ॥ इति श्री महाभारते आदि पर्व भाषा सबल मिह कृते वैमम्पायन राजा जन्मेजे सवाठो नाम त्रुर्दशो अध्यायः ॥ १४ ॥ जो प्रति देना सो लिपा निज द्रोप नहीं । जो कट्टु होय सो जा प्रति लिया तिसका । आदि पर्व समाप्त सुन नृपात् ॥ संवत् १९३४ तिथि ११ शुक्ल पक्षे क्षान्तिजा द्विधने लिपिनं पोथी वत्री । सुपाठनार्थे भाद्रमाने ॥ शिव विषय—महाभारत आदि पर्व में १४ अध्याय हैं ।

संख्या ४१२ चौ. आश्रम चांशक पर्व (महाभाग), रचयिता—सबलमिह, कागज—नवीन, पत्र—३८, आकार—१३ X ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुच्छेप)—३४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पय, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५१ = १६९४ ई०, लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वत्रीमिह जी जमींदार ग्राम—खानीपुर, टाकवर—तालाव चकरी, जिला—रत्ननर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ आश्रम वासिक लिप्यने ॥ जैति जैति रघुवर श्री रामा । भक्त जननके पून कामा ॥ वन्दो गुरु गोविन्द सुपदाता । वन्दो पुनि श्री पितु अर माता । वन्दो अज इन्द्रादिक देवा । वार वार गिवर्का करि सेवा ॥ श्री शक्ति सुन नारद देवी । मन्त्रि क्राव्य जनकी जो सेवी ॥ वन्दो व्यानादिक पुनि नारद । हनुमान जै ग्यान विदारद ॥ सबल मिह यह भारय भाषा । श्री प्रसु जव अग्या दे राषा ॥ औरंग शाह टिछी पति राजत । मित्रमेन भूपति तहं गाजत ॥ ये नृपके सुरपनमहं गाये । सबल मिह चौन बनायो ॥ मवत सत्रहमै इककावन । शुक्ल पक्ष दशमी बुध मावन ॥ तत्र मै कथा अरंभन कीन्हा । व्यास देव को सुमिरन कीन्हा ॥ दो० ॥ लक्ष्मी के वम जान है हे लक्ष्मी वम जाहि । ये लच्छन जामे मिले वन्दत हौं मै ताहि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ताहि ममै कलिजुग सुधि आई । देह दमा धर्मज दुःख पाई ॥ कह परय हरिपुर अत्र जैये । उत्तर चलहु कृष्ण कह लैये ॥ मानु पिताके हित इत रहऊ । ते सब गये सविवि तक हेऊ ॥ अब रहिवो नहि उचित सुभाई । ताते लावहु श्री हरि जाई ॥ अर्जुन सुनत सुनग रय नाजा । भीमहि मिले सबहि पुनि राजा ॥ दोहा ॥ वेगि वंत अर्जुन चले जहां वसत भगवान । आश्रम वासिक पर्व कहि सबल सिह चौहान ॥ २१ ॥ इति श्री महा भार्ये भाषा कृते आश्रम वासिक पर्व दुतीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ भाव नाम पय हरि तिर्यौ द्वैज वार रवि तौन । संवत् मर वनेय मै चौतिस सुमटा

सौम ॥ १ ॥ १२३४ ॥ पोर्वा लिखा बहो भीमी मंत्रि पानीपुर सुपाठनायें ॥ दोहा ॥ मोर
मुकुट बग भास छवि पीठ बसन चाड़े रस्य । कर इडिन ना जन गड़े जोती बामें हस्य ॥
मंद मंद देसे चले करनहि बिधि बतरात । पार्य सखित सेना सकल अतिहि प्रसन्नित गात
ध्यान चारिर्नव सखको ठा प्रसाद छिपि वेह । सदा भवानी संमुखो बित प्रति बाड़े नेह ॥३०
त्रिभ पारबती रावा

विषय—महामारत आश्रम वासिक पर्व ।

संख्या ४१२ टी अक्षरमेची पर्व (हव पत्र), रचयिता—सबलसिंह चौहान,
कागज—भापुनिद्र, पत्र—१५४, आकार—११ $\frac{१}{२}$ × ५ $\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११,
परिमाण (अनुपुष्प)—१९०६, पूर्ण रूप—जीर्ण, पद्य, छिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—
श्री बड़ी सिंह जी जमींदार, ग्राम—खानीपुर डाकघर—तासाव वक्सी, जिला—सज्जनाड ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ जय हव बग छिप्यते ॥ दोहा ॥ श्री गणपति सिध
राम हर भी गुण र्ज कबिराज । तुमझे सुमिरत हेत बेहि पूरण करियो काज ॥ १ ॥ माये
में सिधूर गुन चारि मुखे फरु चारि । रिडि सिडि इत उत चारो अनुकपा हूँ चारि ॥
सोरठ ॥ श्री प्रभु बीज वपास, बग उतपति पाकक बगान । सुमिरी ताहि कृपाक,
पबरि प्रभो हीने कसन ॥ ३ ॥ दोहा ॥ वाणी ब्रह्माय्यी सुमिरि शिबराय्यी हनुमान
समुद्र पार त्रिदि बिधि मयो करिय पार बलवान ॥ जन्मेब्रय अपति कहे निज सिर चरि
मुनि चर्य । केहि बिधि पर विनु बग किय कहिय नाथ बुन्य हर्ण ॥ ५ ॥ सुमिरि प्यास
निज गुण चरण हरण सकल भौ भाव । मनत पर्व हव मेधि कहे सबल सिंह चौहान ॥

अंत—दोहा पृष्ठी छप बेती किर्वा प्रभु दिखीय हरिचंद । सगर बृहद्रथ बल भुपति
दसरथ दृषा रथ नन्द ॥ १३० ॥ पारथ तिमि जोगत सही बुधिहर राज । राजन को महाराज
के चक्र बती सिर ताज ॥ १३१ ॥ बबते आपर काक युग तुम विन और न भूय । सामुरान्द्र
पद छदि मही सब पर भोग अनूप ॥ १३२ ॥ नागरकी सीमा सर्व हूँ सी चारिक पांच ।
योग करैगे भू सब हरि कइ आपत शोच ॥ १३३ ॥ सुनि कैर्नाके बैन अर्जुन हूँ गद्ग गद्ग
गरो । कदा नाथ किय दीन दासहि दैत बदा पबो ॥ १३४ ॥ मैं तुम चर्न भराव । बेहि
चरणन शुच शुच भये । तहां कि स्वनेहि वीच सात दीप नीलंड कइ ॥ १३५ ॥ हरि पारथ
इमि तेहि रजनि करके बाक बिलास । सैन बस्य तब होत मे तह सब भासि सुपास ॥
१३६ ॥ केसी कहि स्फिमगि रमण दमन करन दुःख सर्व । तामु कृपा भाया रचत बाजि
मेधि यह पर्व ॥ १३७ ॥ इति श्री महा भार्गे अक्षय मेधि पर्व भाषा कृते गृहीयोप्यायः
समाप्तम् ।

विषय—महा मारत—अक्षय मेघ पर्व ।

संख्या ४१२ टी बनपर्व (महामारत) रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—
साधारण पत्र—७०, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण
(अनुपुष्प)—६३०, पूर्ण रूप—साधारण, पद्य, छिपि—नागरी, छिपिकाल—सं०
१२२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री लखीरसिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—
तासाववक्सी, जिला—सज्जनाड ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वन पर्व लिप्यन्ते ॥ दोहा ॥ अथ वन पर्व कथा यह
 आगे मुनहु नरेम । झंडो देग धर्म नत कान्हो वन पन्वेम ॥ बम्पक विपिन रहे तव जाट्टे ।
 धाम्य नाम प्रोहित तहं आहं ॥ तहं विपिनि ई चट्टु विन्तारा । मिह माल वाराह अपारा ॥
 कर्मीक नाम डैल्य एक रहइ । महामो वीर पराक्रम अहइ ॥ ताके टर बहुतकी पराई । तेहि
 वन निमि वाम्य मों रहइ ॥ भा नव चाय पायके धायो । धर्म राज मन पूठन आयो ॥
 क्रियर नाम अहं वन मोग । को तुम वीर अहो वर जोग ॥ धर्म राज बोले यह बानी । पाटु
 पुत्र है मय जग जानी ॥ भीम धनंजय नकुल कुमाग । सर देव है लवु वसु हमारा ॥

अंत—लाज वत हर मेवा दाना । गंगाधर को कान्हो ध्याना ॥ बहुत प्रभार तपस्या
 करेकं । पांडो जीतो मन मई धरेक ॥ है प्रमन्न तव मंजर आयो । मांग मांग वर वन
 सनायो ॥ करि प्रणाम जै इय कहइ । जीतो पाच पांडवन जाई ॥ गंगाधर बोले यह बानी ।
 पारय तन मन शरगां पानी ॥ चारों बधौ जीतो राट । पारय कह जीने नहि पाट ॥ यह
 बरतौ गंगाधर दीन्हो । जै इय हई हर्ष बहु कान्हो ॥ दो० ॥ अहि वन पर्व कथा यह मुनु
 जन्मेजय राई । पुन्य कथा श्री नारतेहि सुवनहि पाप नमाई ॥ ७८ ॥ इति श्री महाभारते
 भाषाकरने अतिशय पर्व गणेश दुर्गाधन जन्म प्रमानो मिथुगज अपि मानो धर्म राजा तह मंगना
 X X X पै अष्टमो ध्याय समाप्त शुभ मन्तु सवत् १९२४ साके १७२९ चैत्राशो प्र ०

संख्या ४१२ ई०. मीम पर्व, रचयिता—सवलमिह चौहान, कागज—देवी, पत्र—
 ६०, आकार—१५ X ६ इंच, पन्कि (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुटुप्)—१२८२,
 पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१८ वि०, लिपिकाल—
 सं० १८०४ वि०, प्राप्तिस्थान—ब्रह्मचारी जी द्वारा लालिताप्रसाद खजाची, तहसील
 मिर्चाली, जिला—मीतापुर ।

आदि—श्री कृष्ण ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ पुस्तक श्री भीष्म पर्व ॥ श्लोक ॥
 ध्यान मूलं गुरु मूर्ति पूजा मूल गुरु पदं ॥ मंत्र मूल गुरु वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा ॥ १ ॥
 आकामान्पनिर्तं तोयं जथा गच्छति सागर । सर्व देव नमस्कार केशवां प्रतिपालति ॥ २ ॥
 चौ० ॥ गुरु गोविंद के चरन मनमै । जा प्रसाद उत्तम गति पैइयै । करि प्रणाम रघुपति के
 पाहन । चारि वेद ताके गुन गाहन ॥ अवधनाथ मीतापति सुंदर । तीन वसु रघुवंस पुंठर ॥
 मित्र मनकाटिक अंत नहि पावहि । नर नरूप केहि विधि गुन गावहि महिमा अमित कहत
 नाहें आवहि ॥ सहस्रनेन नहमौ सुप गावहि ॥ सुक मारठ नारठ मे पाठक हनुमान गाये
 गुगनाटक ॥ बालमीक रामायन करता । राम चरित पापन को हरता ॥ भाट्ट दन पुगन श्री
 भारथ । भाष्यो विश्वज्ञान पुरपारथ ॥ दो० ॥ पागसुर ते जन्म है व्यास देव रिपि राज ।
 जा सुप भारथ प्रगट भो सो कवि कुल मिरनाज ॥ चौ० ॥ गुरु गनेम सारठ के पाहन ।
 करहुं प्रणाम होहु सुमराहन । सवत मंत्रह सवै अशारिह । पूसौ निधि मंगल के वारहें माघ
 नाम में कथा विचारी । आरंश साहि दिनीपति भारी ॥ सव पुगन करे नाथक भारथ ।
 जामे कुरु पांडव पुरु भारथ ॥ व्यासदेव सुपभार निकरन भारथ रच्यो जगत के तारन
 ॥ दो० ॥ जोग बुद्धि रम मंत्र जो श्री भाग्य में सर्व । सवल मिह चौहान कहि । भाषा
 नीपम पर्व ।

अंत—श्री० ॥ पांडव इस आर्द्र मन कीति चरु संग्राम ॥ अर्जुन के रथ सारथी सुंदर भी घन स्वाम ॥ श्री० ॥ गोपन सहस्र दिये जा दानधि । जो फल सब तीरथ अनाधि ॥ जीकरु हाहि साधु के दरने । सो फल मंगुलाच के परसे ॥ जो फल मत पृच्छामि अन्धे । व फल होइ भूमि सब कीन्हे । जो फल रन में भूमि गवाये । सो फल भी मारथ सुनि पाये ॥ व्यास वैष भारथ के करता । काई पुनि पाप को हरता ॥ श्री० ॥ राम कृष्ण गोविंद हरि कीज सरा बचान् । भाषा भीषम पर्व यह सुनि सरा अघहान ॥ आसो सुनि ताहि परपाप ॥ इक्ष्व दया रापे संतोषे ॥ करि सेवा भीजन कर वार्थ ॥ छे नबीन वरतर पहिराये ॥ रूप हेम छे पूजन कीर्ति । धर्म ती भूमि दान कपु कीर्ति ॥ यह फलदायक उत्तम कथा । संतति कई जन्म की विधा । पाहि अगुनी मारी सुनि । प्रीति सहित मन में जा गुनि ॥ पावे पुण नाहि सिद्धा । जानै विद्वध करि मन वेदा ॥ रिनी होइ दिन ठ उधरे ॥ जो कोई यहि अचनन करै ॥ दा० ॥ मिहरी मन में रापिये सफल हात सप कात्र । कृष्ण प्यान मन में परे कल्प रापि ई कात्र ॥ कविप ॥ जाही पाप राजा सगर के न मचलि रही ताही पाप लछक परीछत को पायो है ॥ जाही पाप राजा द्धारथ के मरन मयो साई पाप बदन में विगम मति गायो है ॥ जाही पाप महस्त्रबाहु मुजर्नदन मये सोई पाप ईज ककला सो छायो है । जाही पाप रीना के न रीना रखो मचन माहि साई पाप खोगल ने दिखीया करिपायो है ॥ इति भीषम पर्व संपूरन समाप्त ॥ लिपत संबत १८०४ मिति अगहन सुवी २ राम

विषय—अर्जुन जीर भीष्मपितामह का युद्ध वर्णन ।

संख्या ४१२ पृष्. भीष्म पर्व (महाभारत), रचयिता—मवल सिंह चौहान, कागज—प्राचीन देवी पत्र—११ आकार—१० २/४ × ७ १/४ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुच्छेद)—१०८० पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य छिपि—बागरी, रचनाशक—सं० १०१८ = १९९१, छिपिदार—सं० ११०७ = १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बजरी सिंह, ग्राम—खानीपुर, हाइपर—तालाबकमी जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ भीष्म पर्व लिप्यते ॥ शुभ गुरुदिने को अरण मर्दिने । जदि प्रमाद अरण्य गति पैये ॥ के प्रणाम श्रुपति के पापन । आदि बद् आके गुन गावन ॥ अघप नाथ भीतापनि सुन्दर । दीन बंधु श्रुर्बन पुरहर ॥ सिब सनकादिक अंत न पावे । नर सुपने केहि विधि गुण गाये ॥ महिमा विगम कहत महि आधि । तैस सहस्र मुज ते गुन गाये ॥ मुक सारद सारद से पाठक । इन्मसान गाये गुन नाटक ॥ बाक भीक रामायन कर्ता । राम चरित्र पाप के हरता ॥ अष्टादश पुराण सी भारत । भाष्यो व्यास ज्ञान पुदधारथ ॥ श्री० ॥ पारामरत जन्म है व्यास वैष रिपि राज । आ सुप सारत प्रक्ये भी कवि कुष्ठ मिर कात्र । गुक गौण सारद के पापन । करि प्रणाम होइ सुम दायन ॥ संबत सप्रह सी अग्रह । पुनिमं त्रिपि संगक के बारह ॥ भाष मास में कथा विचारी ।

अंत—श्री० ॥ दान करन देना अघिहारी । अर्जुन के समाप्त अनुपारी ॥ पारथ नदि जीते अरने पर । आ मदि करदि कृष्ण रमना छे ॥ जह भीषम सर मेर्या सीगहो । तद्दृष्ट नगे करि दीगहो ॥ गंगा सुन कीगहो जब मीनदि । धर्म राज आये निज

भौनहि ॥ दोहा ॥ पांडव दल अलंढ मन जीति चले भैदान । अर्जुन के रथ सारथ सुन्दर
श्री भगवान ॥ गोधन सहस देह जो ढानहि । जो फल होइ तीर्थ अन्नानहि ॥ जो फल
होइ साउ के दरमे । जो फल होइ शत्रु के परमे ॥ जो फल घन एकादशि वीन्हें । जो फल
होइ भूमि दुज दीन्हें ॥ जो फल होइ ब्रह्म के ध्याये । सो फल रनमो प्रान गयाये ॥ जो फल
कोटिन्ह विप्र जिवांगु । सोइ फल होइ भारतहि सुनाये ॥ दो० व्यास देव भारत वो भाषा
भीषम पर्व । सबल सिंह चौहान कृत कथा सुगम अति जर्ष ॥ इति श्री महा भारत भीषम
पर्व भाषाया उन विंममोऽध्याय. समाप्त शुभ भूयात् ॥ मत्रत १९०७ अगहन मासे कृष्ण
पक्षे अमावस मंगल वासरे । लिखा देवी सिंह चौहान ॥

विषय—महाभारत का भीषम पर्व ।

संख्या ४१२ जी. भीषमपर्व, रचयिता—सबल सिंह चौहान, कागज—देशी, पत्र—
३४, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०४,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १७१८ वि०, लिपिकाल—
सं० १६४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री गयादीन शुक्ल, ग्राम—मानपुर, उकवर—तर्पार,
जिला—सीतापुर ।

श्लोक ४१२ पृष्ठ के समान ।

संख्या ४१२ पत्र द्रोणपर्व (महाभारत), रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—
आधुनिक देशी, पत्र—८६, आकार—११ X ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण
(अनुष्टुप्)—१०३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १७२७=
१६७० ई०, लिपिकाल—स० १६०७ = १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चट्टीसिंह जी,
ग्राम—खानीपुर, डाकवर—तालाव बकसी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु चरण दृढवत करिणु । जा प्रसाद भौ सागर
तरिणु ॥ बटो राम चंद रघुनंदन । महावीर दस कंध निकदन ॥ दीरघ बाहु कमल दल
लोचन । गनिका विद अहिरया मोचन ॥ व्यास देव कलि पातक हर्ता । चारि वेद श्री भारध
करता ॥ श्रोता जनमेजय गुण सागर । महावीर कुरु वंम उजागर ॥ उत्तम नग्न चंद्र गढ़
छाजा । भूपति मित्र साह तहें राजा ॥ दोहा ॥ रघुपति चरण मनाहर्क व्यास देव धरि ध्यान ।
द्रोण पर्व भाषा रचत सबल सिंह चौहान ॥ जब भीषम सर सेज्या लीन्ह्यो । दुर्जोधन बहुते
दु ख कीन्ह्यो ॥ अब काको सेनापति करिये । जाके बल पाये ते लरिये ॥ कही करण राजा
सुन लीजै । जो मौको सेनापति कीजै ॥ अर्जुन खेत्त मह मारै । सेना सहित न
एक उचारै ॥

अत—दोहा ॥ पांडो दल जै जै करत जीति परे भैदान । कौरो दल मलीन भौ
ज्यो सध्याकर भान ॥ तौ रथ हाकि कर्ण चलि आयो । आगे होइ सेना अटकायो ॥ सध्या
जानि कियो रथ गौनहिं । कुरु पंडो आये निज भौनहि ॥ आगे कहन मन लाये । असुस्थामा
कछु चेतन पाये ॥ द्वौ कर जोरि संसुके आगे । एहि विधि विनय करनको लागे । फेके रथ
गहि भीम भयकर । प्राणदान तुम दीन्हो संकर । एहि विधि वर डीजै मोहि स्वामी ।
होहु तेज गति अंतर जामी ॥ आजु रारि पहुंचौ कुरु पेतहि । कुरु पंडो जहं सेन समेतहि ॥

संकर बन्दी बिलंब न सीहो पहर एकमें खाइ तुर्महो ॥ यह सुन प्रोमी कीन्हो गीमहि ।
उपमा बैल बनत महि रीमहि ॥ पहर एक भां आयो ताहां । सैन सहित तुर्मोवन जाहां ॥
होहा ॥ तुर्मोपब मापन क्यो सुनौ बंधु यह बात । अगुठ जुग जूझे गुद घृष्ट बसन अति
भात ॥ इति श्री महा भारत प्रोम्य पर्व समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ सं० १९०० ॥ अगहब माये
शुद्ध पक्ष पूर्यमासी गुद बासर ॥ कि० दबी भीष्मी के ॥

विषय—महा भारत—प्रोम्य पर्व ।

संख्या ४१२ आई गदापत्र (महाभारत), रचयिता—सबख सिंह चौहान,
कागज—प्राथमिक, पत्र—१४, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुच्छेद)—३०६
पूर्य, रूप—जीर्ण, पत्र, विधि—नागरी, लिपिकार—सं० १९३४ = १८७० ई०, प्राप्ति
स्थान—श्री बन्दी सिंह जमीन्दार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—ठाकाव बरसी, जिला—
फर्रुखगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गदा पत्र लिख्यते ॥ होहा ॥ श्री गुद चरण सरोज
रत्न बरसी हरि अस सार । गदा पर्व भाष्य रची मित्र मति के अनुसार ॥ श्री० ॥ गदा पर्व
कव्य करत बखाना । तुर्मोवन मन में अनुमाया ॥ अंधकार मो गयो न कीन्ही । मुकुट ज्योति
सुपर्द छे कीन्हीं ॥ अस्त्र तुर्म बौद्ध जव पायो । कदना करन मूप मन कायो ॥ जूझो पुत्र
हमारे अजा । कहिहीं काइ भीम अति कजा ॥ ऐसो सुत अपूत संसार । मारिह गयो
मोहि पार उतारा ॥ रोई कछो तुर्मोवन राजा । विधि विद्वज कीन्हो यह काजा ॥ यहि
विधि रूप बरि जो रीई । अंधुक अग गिज धरि रीई ॥ अग्नि देन को भीमर नादी । कही
मित्र होहि ई का जाही ॥

अर्थ—जो फल सब तीरथ अस्त्रना । सो फल कोरिह कय्या दामा ॥ जो फल होइ
धरम के राजे । सो फल होइ सारम के माये ॥ सो फल ई परमारम कीन्हे । सो फल विन्द
गया के हीन्हे ॥ जो फल रण मह प्राण गवाये । सो फल सकल भूमि किरि आवे ॥
जो फल देवन पूजा कीन्हे । सो फल मित्र संघ को हीन्हे ॥ अस्तु किमे जो कपु फल
छहिये । सो फल भारत भूमि अर्थ कहिये ॥ सो फल वेद पारके कीन्हे । सो फल नाम
शुपिठिह कीन्हे ॥ जो फल विप्र भक्ति के कीन्हे । सो प्रतिपाक दानके हीन्हे ॥ सकल धर्म
कीन्हे फल जोई । सबहि सब कीन्हे फल सोई ॥ होहा ॥ भारत सुमे अनेक फल मोशों
कजा न बाप । अनायास बैकुण्ठ कहि बरसा बेई अनुग्राम ॥ २८ ॥ इति श्री महा भारते गदा
पर्व माका कृते सबस सिद्ध विरचितायां कुटीयो अस्याय २ ॥ होहा ॥ संवत् ससि^३ बी^३
आश्विने राम^३ बेई^३ सुकपास । ईश मास पञ्च बृषी कृष्ण पक्ष रविनाम ॥ ताहि समी सुमन्दा
मई गदा पर्व ई ग्राम । श्री गौरी पति कृपासे दिवस अने ई काम ॥ गदा पर्व समाप्त भई ॥
लिखा बन्दी पोषी सुपाठनाथे । समाप्त ॥

विषय—महाभारत का गदा पर्व ।

संख्या ४१२ के हरि चरित्र (भीष्म पत्र), रचयिता—सबख सिंह चौहान,
कागज—साधारण, पत्र—१००, अकार—८४ × ७४ ईंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९,
परिमाण (अनुच्छेद)—१२००, रूप—अति जीर्ण, पत्र, विधि—देवी, लिपिकार—

सं० १७९२ = १७३५ ई० प्रासिस्थान—श्री चंद्रगोपाल ओझा, ग्राम—मित्रपुर, टाकवर—
परियावा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—मकुनी अरु सहदेव रन, भरे दोट प्रचारि । नपत दुधी छते तव किचो
भयानक मारि ॥ भूरिस्त्रवाह माखकी संगहि, द्रत घर्मा विराट रन रगति ॥ भूमि भग-
दम नाहीं जव क्रोधित नावा । द्रुपद नरेम आयु रन टानेन । मोम दत उत्तरा रन मंडे ।
वानत ते रिपु सैन विहन्डे ॥ कृपाचार्य मन्मुष होय धाये । तिन मीं कागि राज रन लाये ।
घटोत्कच कीन्हों ते भंडाना । जुरे अलम्यु तिनरते भंडाना ॥ नृप समि विदु मंप भंडाना ।
क्रोधित लगे चलावन वाना । जव द्रोनी दिंग भियो पयाना । जुरे भिगंती ते भंडाना ॥

×

×

×

×

अंत—पंडां दल आनंदियुत जीति चले भंडान । अर्जुन के रथ सारथी, सुन्दर श्री
भगवान ॥ गोधन सहस्र देह जो दाना । जो फल मय तीरथ अन्नाना । जो फल होए मातु
के दरमे । जो फल होय शिशु के परमे ॥ जो फल होए वृत् पृथादयी कीन्हे । जो फल होए
भूमि सव दीने ॥

×

×

×

×

जो फल कौटिन विप्र जिमाए । जो फल तो भारथ सुनि पाए ॥ ताम देव भारत के
कर्ता । वादे पुन्य पाप के हरता ॥ राम कृष्ण गोविंद हरि, कीर्ज सस वपान । भाषा भीषम
पर्व की कहव मवल सिंह चौहान ॥ इति श्री हरि चरित्रे महा भारथे भाषा कृते भीषम
पर्व अठारहमोध्यायः, सपूरन समापत जो देषा सो लिषा मम दोष न वीक्षा मवत् १७००
मिती आश्वनि वदि वसही^० रोज मंगलवार को सात घरी फोती आरंभ आण्ण पोथी लिपतो-
पराय तिवारी का कोई दावा करै तो द्रष्टा लिताग धीराम धी साहेव मय रजपूत एह सही ॥
दन्त श्री साहेव राय का ॥

विषय—अर्जुन का युद्ध क्षेत्र में अरुचि दिखाने हुए शका करना तथा कृष्ण
द्वारा उसका समाधान और विविध योद्धाओं का परस्पर युद्ध के लिये प्रस्थान ।

संख्या ४१२ के. कर्णपर्व (महामारत), रचयिता—सवलसिंह चौहान, कागज—
साधारण, पत्र—४३, आकार—११ × ६३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण
(अनुष्टुप्)—४५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३४ =
१६७७ ई०, लिपिकाल—सं० १९१७ = १८६० ई०, प्रासिस्थान—श्री रणधीर सिंह जर्माटार,
ग्राम—खानीपुर, टाकवर—तालाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ कर्ण पर्व लिप्यते ॥ प्रथमहि गुरुके चरण
प्रणामहि । जाते हो सिद्धि सव कामहि । वदौ रामचन्द्र गुण सागर । सीतापति रघुवस
उजागर ॥ महिमा अगम न कोई जानहि । परम भक्त वदो हनुमानहि ॥ माना भूमि चद्र
गढ़ छाजत । मित्र × × तंह भूपति राजत ॥ पे वृपके पुरपन्ह मह आही । सवल
सिंह चौहान सिपाही ॥ तिन यह भारथ भाषा कीन्हो । जव आग्या श्री रघुपति दीन्हो ॥
सुरू पछ अस्विनि के मासहि । तिथि पाचै क्रियौ कथा प्रकासहि ॥ सवत सत्रह से

धींतीसा । अरंग साह दिकी पति ईसा ॥ दोहा ॥ रघुपति चरण मनाईके ध्यास देव
परि ध्याम कर्म पर्व भाषा रचत सबछ सिंह बीहान ॥

अंत—गंगा सुत मुनि ज्योषहि आयत । बाधि अत्र रज परविहि आयत ॥ गुण
सिप्यते माप्यो भारथ । बीबिस दिवस किया पुदपारम ॥ देवन भाई बिरथि करि कीन्हेउ ।
तब कन्या कस्तु कहिबे कीन्हेउ ॥ गंगा तीर में बिठा बनाप । देपो सर्व भारत मम भाये ।
छत्री हूँ देही अचतारा । तब भीषमको करी संहारा ॥ यह कहिके निज देहहि जान्यो ।
जन्म सिपही भीषम भाप्यो ॥ तबसो परस राम प्रज कीन्हेउ छत्री को विधा नहि कीन्हेउ ।
मुनिके धर्मराज सुप्रमाणा । सत्य बचन भाप्यो भगवाना ॥ दोहा ॥ जहाँ धर्म तह कृष्ण
है धर्म जगत परमाप । कर्म पर्व भाषा रची सबक सिंह बीहान ॥ इति श्री महाभारते कर्म
पर्व भाषा कृष्णे पंचमोऽध्यायः ५ मंत्र १११० पौष मासे शुक्ल पक्ष त्रयोदश्यां स्वीया
देवी ॥ श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण ॥

संख्या ४१० यत्न कण पव (महाभारत), रचयिता—सबकसिंह बीहान
कागज—देसी, पत्र—४२ आकार—८ १/२ × ५ इंच परिमाण (अनुष्टुप्)—४२४, पृष्ठा,
रूप—प्राचीन, पद्य, कृति—जागरी, विविध—सं० १९२४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री
शिवचारी कारु ग्राम—समवेत्तापुर, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गणेशाय नमः अथ करण पर्व सिप्यते । विरभमहि
गुण पद का पर नामाहिं जाते सिद्धि हाइ सब कामहिं, बंदी रामचन्द्र गुण सागर । सीता
पति रघुवरा ठागार महिमा अगम न काठ बपाने । परम भक्ति बंदे इजुमापे । सुकृष्ण
पठ अस्वणी के सासहिं । विधि सतमी का कथा प्रथमहिं सम्मत मग्रह से बीतीसा ।
अरंग साहि दिकी पति ईसा । रघुपति चरण मनाईके ध्यासदेव परि ध्याय । कर्म पर्व
भाषाया सबछ सिंह बीहान ॥ श्री० गुरु गोग नू के मंत्रानहि । बुजौपन तब जायु
बपानाहिं । ज्ञोनी करण शक्य से छत्री । अथ अनेक बंध सब अंधी । अथ का के सिर मुकुट
बंदीये । जात जेत पत्र रूप पथी । ज्ञोनी कही लुपति मुनि जीव । जायु सोच केदि कारण
कीन्हे से बीजे मर सिर दारहिं मारी कस्तु कर्म सिरदारहि । रचिसुत कर्म महाबल भारी ।
जठुन क समान घनुचारी

अंत—शे० परसराम तब ज्योष के कही धर्म हम भाष भीषम को से सीपिरे गहे
हाय सा हाय । जो—रघुपति जाइ कियो तब दरसन । भीषम वीरि कियो पर परसन ।
यतनो कदा हमारी कीज । ज भीमाक कन्या सो सीबि । कीन्हे कसल तितछो अपने ।
संगम नारि करै नहि सपने । जी मार्गी नहि कहो हमारे । तँ मीत जब जुग बिचारो ।
गंगा सुत मुनि ज्योषहि पावो बाधि अत्र मंत्रा नहि जायो । गुण सिप्य सीं मर्षी है भारथ ।
मस दिवस कीन्हे पुदपारथ देवन जाइ भीषु करि कीन्हे तब कन्या कस्तु कहिबे सान्धो
गंगा तीर का बिठा बनाई । देपी सबे जात में भाई । छत्री हूँ देही अचतारा । तब भीषम
को करे मंहारा । यह कहि के निज देह जाई । जन्म भी पंडी की मया जाई तब से
पर्व राम मग कीन्हे । छत्री कर्ष विधा नहि कीन्हे मुनि के धर्म रात्र सुख याया ।
अथ बचन भाषया भगवाना जहाँ धर्म तह कृष्ण धम जगत परमाप । कर्म पर्व भाषा

रच्यो सवलसिंह चौहान । इति श्री महाभारते कर्ण भाषा कृते पचमोऽध्यायः । मं०—१९०४
१७८८ साके अश्वनीमासे तिथि १५ गुरुवार ॥

विषय—प्रथम अध्याय—कर्ण को कौरवदल ना येनापनि बनाया जाना सुनी द्वारा कर्ण को गमनाया जाना और परशुराम ने पाये वाणो को कर्ण मे प्राप्त करना । द्वितीय अ०—कर्ण और भीम मे युद्ध । तृतीय—भीम ने कौरवों का घोर युद्ध । चतुर्थ—कर्ण का द्रुपाम्बर छोड़ना और कृष्ण द्वारा उसमे अर्जुन का वचाव । पंचम—अर्जुन का रड्र वाण और कर्ण का नारायण वाण छूटना । अर्जुन कर्ण का घोर युद्ध । कर्ण का युद्ध म जूटना । कर्ण का परशुराम से ५ वाण प्राप्त करने का प्रसंग ।

संख्या ४१२ यम. कर्णपर्व, रचयिता—सवलसिंह चौहान, कागज—आधुनिक, पत्र—४८, आकार—१२ $\frac{३}{४}$ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपुष्प)—५१०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३४ = १६७७ ई०, लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री दद्रीसिंह जी, ग्राम—रानीपुर, ढाकघर—तालाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४१२ एन. कर्णपर्व (महाभारत), रचयिता—सवलसिंह चौहान, कागज—साधारण, पत्र—४९, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुपुष्प)—२३३, खडित, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३४ = १६७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह, ग्राम—रानीपुर, ढाकघर—तालाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४१२ ओ. महाप्रस्थान पर्व, रचयिता—सवलसिंह चौहान, कागज—देवी प्राचीन, पत्र—१३, आकार—१२ $\frac{३}{४}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपुष्प)—१८६, पूर्ण, रूप—जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चद्रीसिंह, ग्राम—रानीपुर, ढाकघर—तालाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री जानकी बल्लभो विजयते नम ॥ दोहा ॥ गणा धीसको सुमिरिकै गिरिजा हर भगवान । सवल सिंह भाषा रचत सुपद, महा प्रस्थान ॥१॥ मूसल पर्व भयो औसेपा । जो अर्जुनमो करयो विलेपा ॥ दारुकि की सुनि यह दुःप वानी । वहन लगे नैनन सो पानी । पुनि धीरज धरि पारथ वीरा । देप्यो तंह वसुदेव अधीरा ॥ वसु देवको धीरज दे वीरा । चलयो जहां रनिवास गभीरा ॥ गयो मकल रानिन के पास । जिनहि कृष्ण विन और न आसा ॥ रोवन होय जाहि ते नाहीं । धरि धीरज अम भाप्यो ताही ॥ कृष्ण गयो जहं जदु कुल सर्व । करव फेरि हम दूसरि अर्ध ॥ यह सुनि करन लगौ सब साजा । कछो बुलाबहु चाजहि वाजा ॥

अत—सौरठा ॥ कह सुनीस ये दैन, विस्तरसौं हम सब कहव ॥ रोहिनि पर्व सुनैन तास मध्य कहिये नृपति ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ सुनौ नृपति आगे जो रापा । नृपति जुधिष्ठिर सबसौं भाषा ॥ करौ तिलक नृप प्रादित केरा । सो रोहणी माझमें हेरा ॥ तिलक सुनत तव भीम सु कहैक । कहौ मंत्रि कव साइत अहेक ॥ कह महदेव कालिसो अहई । चलन

हेतु आहर्तृ सो रहइ ॥ सुगत मद्क तब भठ ट्यराबा । करि प्रस्थान सा सुम तिथि पाबा ॥ सुमग छत्र सुम तिथि दिन आला । पूर्व भंगाय कीन् प्रस्थापा व दाहा ॥ करि प्रस्थान अनूप अति निजकर मुनिवर ध्यास । सबक सिंह भाषा रथ्यो बिनु हरि भीर न भाम ॥ २३ ॥ इति श्री महाभारते भाषा सबक सिंह विरचिते महाप्रस्थान पर्बे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ १९३४ ॥

विषय—महाभारत—महाप्रस्थान पर्ब ।

सूच्यता ४१२ पौ सुसक पर्ब (महाभारत), रचयिता—सबक सिंह बीहान, कागज—दूती बादामी, पत्र—३५, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुच्छेद)—२६६, पूर्ण, रूप—साधुवन, पद्य, किरि—जागरी, रचनाकार—सं० १७३० = १६७३ ई०, किरिअर—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बट्टी सिंह, ग्राम—खानीपुर, काकर—ताक्यन बबसी, जिला—कलकत्ता ।

आदि—श्री यज्ञेशाय बमः ॥ श्री जानकी बहुतना विजयत नमः ॥ दोहा ॥ श्री विरिञ्चा शनपति मुमिरी बरनि मफ हनुमान । मूक को भाषा करत सबक सिंह आहान ॥ २ ॥ अम्भे श्री सुत सो जयन भाष्यो मुनि सुम गाठ । ताहि शुभद भाषा रचत तिर भरि निज प्रभु पाय ॥ २ ॥ श्री ॥ बन्दो गुरु गोविन्द को पावन । ज्य प्रसाद हुते सुख वापन ॥ मुमिरी बीज भाष सीतापति । नारद सारव मुमिरी महा मति ॥ मुमिरी आदि कल्प बह ध्यासहि । काकी सविधि भाति मोहि आसहि ॥ ईश्वर रूप जानि जगती को । मुमिरी रामा आदि सिख तीर्थ ॥ संवत सत्र धी सुम तीमा । भाद्र मास सप्तम रजनीसा ॥ श्रीरंग घाह दिही पति भाषक । सबक सिंह तप हरि गुण गायक ॥ ईशपावन कहत मुनाई । मुमु मुमार्थ कुम्भर रूप राई ॥ जब भूत राहादिक सजानी । ते हरि पुर सह कुम्भी रानी ॥

अंत—कहु कविता करि करि सुन बानी । पति सह भरत मई सब जानी ॥ गई सकल मित्रि निज अंसन । जनि दख सुत बिष रक्षो न भंसन ॥ हत बहुत न पुनि धीरज धारा । बज्र पाय सह ते भूप द्वारा ॥ पत्र सुनि जो कमा सोहावन । बंस बुद्धि होय अति पावन ॥ दोहा ॥ पाय नई कीरति बहे ध्यास गिरा परमान । भगत पर्ब मूक कही सबक सिंह बीहान ॥ इति श्री महाभारते भाषा हुते मूक पर्बे हुतीयोध्यायः ॥ १ ॥ भाष मास पय स्वाम तिथि प्रथम नंद शनिवार । संवत ससि नम प्रह सुपद राम केव अंतर ॥ १९३४ ॥ पोधी किना बट्टी समाप्त ॥

विषय—महाभारत मीमांस पर्ब ।

सूच्यता ४१२ छत्र समा पय भाषा, रचयिता—सबक सिंह बीहान, कागज—साधारण पत्र—१०१, आकार—१३ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुच्छेद)—१५१२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, किरि—जागरी, रचनाकार—सं० १७२७ = १६७० ई०, किरिअर—सं० १९४१ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—जागरी प्रचारिणी समा, काजी ।

श्री परतरंगचौड़ीयुग्म मन्दिर, जयपुर

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ सुमरि व्याम गगपति चरण गिरिजा हरि
 भगवान् । सभापर्व भाषा भनत सवल मिह चौहान ॥ १ ॥ (१७२७) मन्त्रहर्म मगाडम
 सवत् शुभ मनु माम । नांमी गुरु अर पट्ट सित मैं यह कथा प्रथम ॥ २ ॥ चौपाई =
 अत्र नृप सुनौ कथा मैं जोई, तव हित हेत रुहत हम सोई ॥ उरु पाटव मोरहि द्वी
 आटे, जम समाज धरयो मैं पाटे ॥ इन्द्र प्रस्थ द्वी वगहि सुपारी, मति दग नद राज
 अधिकारी ॥ धन महि सपन साँपि मव दीन्हा, बुद्धि चक्षु निज सुत नृप कीन्हा ॥ कानि
 राज पद की अति भारी, भीषम द्रोण भे आज्ञा करी ॥ सोहत दुर्योधन नृप गार्दी, भूमि
 पाहु नदन कै मादी ॥

अत—चौपाई—अम गहि विदुर चरन गहि शरी, त्रिलपत भाषत आरत चानी ॥
 पुनि पुनि मिलत धर्म वर नाहू, बल्यो विदुर चप वारि प्रवाहू ॥ तेहि अत्रमर नुरु भायसु
 मानी, चहु दिमि वीर धीर अर रानी ॥ गहे अनेक नगिनि कर याला, रूप भयकर धनुष
 विशाला ॥ दोहा—धर्म सुतहि पारथ कयो नाथ रजायसु होइ । चलत वार कौरव मुभट
 कछुरु दीजिये पोई ॥ २१ ॥ नहि भाये पारथ वचन नाथ विदुर पट भाल । चलहु घटोक्च
 ने कयो सपट्टि धर्म महिपाल ॥ २२ ॥ लपि कुंभोक्च भूष रट आनुर वारि न लागि ।
 गर्जि तर्जि उच्चाट करि गयो नाग पुर त्यागि ॥ २३ ॥ सवल मिह मुनि विदुर सुप कौरव
 नाथ हेवाल । हूँ उदास मकुनी करन बोलि लिये तरकाल ॥ २४ ॥ इति श्री महाभारते
 सभापर्व भाषा क्रते विदुर प्रव संवादो नाम महमो ध्यायः ७ समाप्त पाँच माये शुक्र पक्षे
 तिथौ तृतीयाया शनि वामरे सवत १९४१

संख्या ४१२ आर सभापर्व, रचयिता—सवलमिह, कागज—देशी आनुनिक,
 पत्र—१५०, आकार—११ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—
 १७३४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७२७ = १६७० ई०,
 लिपिकाल—स० १६२२ = १८६५ ई०, प्राप्तस्थान—श्री बट्टीसिंह, ग्राम—खानीपुर,
 डाकघर—तालाबवक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४१२ एम शल्यपर्व, रचयिता—सवलसिंह चौहान, कागज—देशी वाटामी,
 पत्र—२३, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)
 २४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स १७२४ = १६६७ ई०,
 लिपिकाल—स० १६२२ = १८६५ ई०, प्राप्तस्थान—श्री बट्टीसिंह, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—
 तालाब वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शल्य पर्व लिप्यते जै जै जय गुरु चरण मन
 दीजै । रघुपति चरण वन्दना कीजै ॥ शारद शरण करौ परनामहि । वन्दो वालमीकि
 हनुमानहि ॥ कार्तिक मास पक्ष उजियारी । दसमी तिथिको कथा विचारी ॥ औरंग शाह
 दिह्यो अस्थाना । प्रबल प्रताप जगत सब जाना ॥ दोहा ॥ व्यास देव सब बधिके जो सुप
 वेद पुरान शल्य पर्व भाषा रचो सवल सिंह चौहान ॥ चौ० ॥ जूझे करण जगत जस पायो ।
 दुर्योधन यह वचन सुनायो ॥ हा हा मित्र परम सुख दायक । महा लुद्ध करिवे सब

रुपय १० तुमहि पादु निरु क्षत्री धर्महि । यह सब दोग हमार कर्महि ॥ बछसो अर्जुन सबै मारत । छछकै बचे जगत के कारण ॥

अंत—पार बार नहि आव न जाहीं । हथिर नहीं अति मई असाही १ पिरति नृपति शंक महि मममें । मा संग छोप जो अमिरत तन में ॥ बहुतन के कारण अरु शक्ति । पिरत थको पार नहि पावे ॥ जहां द्रोंग गावो श्री धर्महि । अमिरे तहां गवो निरु पंमहि ॥ गहिके पंम कियो बिनामहि । जिय सोचत पहुचो अित भामहि ॥ पकरो सोय बहुत मरु भारहि । बुद्धि जात सब सई न मारहि ॥ बिधि बस ऐक छोप तव गही । बुद्धा नहीं मारतिन सहो । चढे लोभ गहि हथिरहि पेकन । अमिरत छोप गदासो टेकत ॥ बहुत कट से उतरहि पारहि । तब अपने मन कियो बिचारहि ॥ दोहा ॥ फवन बीरको सोय यह कियो निबाह मिदान । सस्य पर्व भापा रबो सबळ सिंह चाहान ॥ इति श्री महा भारते सस्य पर्व भापा कृते द्वितीयो अध्याये ॥ १ ॥ वीप मासे छुछ पजे इमग्या सुप बासर ससम सस्य पर्व सिखा देवी सिंह सबळ १९२५ ।

त्रिपय—महामारत—सस्य पर्व ।

संख्या ४१२ टी शस्त्रनर्भ, रचयिता—सयससिंह चौहान, कागज—साधारण, पत्र—२१, आकार—११ × १२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपट्टप)—२३६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १६३४ = १६७७ ई०, प्रासिम्बान—श्री रणवीर सिंह अमीर, ग्राम—खानीपुर, ठाकर—ताकाब बनसी, जिह्वा—छलनक ।

संख्या ४१२ यू शक्तिरत्न (महामारत), रचयिता—सयससिंह चौहान, कागज—साधारण, पत्र—४०, आकार—११ × ७ इंच, परिमाण (अनुपट्टप)—१५०, पूर्ण रूप—साधारण पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्रासिम्बान—श्री रणवीर सिंहजी, ग्राम—खानीपुर, ठाकर—ताकाब बनसी, जिह्वा—छलनक ।

आदि—॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सांति पर्व लिप्ये ॥ दोहा ॥ सच्छ मुनिबद्ध बंदि के व्यास वैच परि व्यास । शबल सिंह चौहान कहि सांति पर्व मो जान ॥ १ ॥ श्रीपाई ॥ सुनु रामा यह क्या अपारा । करत राज नहि धर्म मुबारा ॥ ग्यान सौक्ये धर्म कुमारा । भाई नहीं राज सुप सारा ॥ दिन दिन बहुत सोच मन व्याग । चाहत नृप बम श्रीगुह पपाना ॥ सहित बहु द्विर्बोधन मार । शुद्ध द्रोंग को रव सपारे ॥ करण सो धनुनि या तब श्रीगुहा । सीपम ता मर सग्या श्रीगुहा ॥ महा मोच कृत दिन प्रति मार । रोदन करत भवन बल धारा ॥ यह मुनि सबै मुनिः स्वर आवे । नारद और बसिष्ठ मुहाये ॥

अंत—धन्य धन्य तब मति बर नापक । प्रद्वन मुग्धारि जगत सुप दायक भारत क्या पाप छ करई । जो मन बचन अचन को करई ॥ सच्छ सीर्य सनु करि अस्माना । मानहु श्रीगुह बहुत विधि बाग्य ॥ भारत मुनत प्रेम अधिछरई । कइत मुनत हरचित को पाई ॥ दोहा ॥ बंग वैस भापा रवे यह विन्व बनाइ । प्रति भाप प्राकन मुनत रचित पाप नमि जाइ ॥ इति श्री महा भारते पुराने सांति पर्व भापा सबळ सिंह कृते धर्म वर्णन मो

भीष्म स्वर्ग गवतनो नाम पचमो अध्याय ॥ ५ ॥ इति याति ९वें भाषा कृते धर्म वर्णनो नाम पचमो अध्याय ॥ जनि प्रति देवि विचारि मन आपनी जानि सुधारि, लिपि तीर्त्नी मयुरा ग्रह अपनी जानि सुधारि हो हु दयाल सुगारि । श्रावण सामे कृष्ण पक्षे तिथी १५ सवन १६३४ ॥ राम राम राम राम राम राम राम ।

संख्या ४१२ ची. खोपर्व (महाभारत), रचयिता—सवलमिह चौहान, कागज—आधुनिक, पत्र—२७, आकार—११ X ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुपुष्प)—२२८, पूर्ण, रूप—जोर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिम्यान—श्री यद्रीसिंह जी जर्मादार, ग्राम—खानीपुर, ढाकघर—तालाब बरमा, जिला—लग्ननऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ खोपर्व लिप्यते दो० ॥ मन्त्र देवको सुमरि कै इन्त्री मह गवर्व । सवल मिह भाषा रचन सुपदा स्त्री पर्व ॥ १ ॥ सो० ॥ व्यास देवको ध्याय जइ चेतन नय जक्तको । सवहि मदा गिर नाय वर्गो स्त्री पर्वको ॥ २ ॥ दो० ॥ वन्दन करि रिपि देवको दस औतार पुर्णत । तिनके नाम सुभापिर्क भाषन जो मन चीत ॥ ३ ॥ चौ० ॥ कक्ष स्वरूप मक्षको ध्यावो । सुम्नर गिहि हर्दे लगावो ॥ वावन परस गम सुपडाई । राम चंद्र अरु कृष्णहि ध्याई ॥ चौथ कलंकिहि री पुनि गावो । जाकी कृपा अधिक सुप पावो ॥ इनहि सर्व सुमिरो सुद पूरी । सुनी पराक्षित सुन दुन दूरी ॥ जवसे सुभट मारि रिपु शयना । नाहि मरै दुर्जोवन हैना ।

अत—तुमहि प्रथम मोहि दूत शुदरे । तुम ही मोहि ग्रह देन निरारे तुनही सत्य सुवनमें रहे । तुम्हरी मन्यहिने दुःख ग्रहे ॥ तुम्हरी सत्यहि कीन्ह परावा । कीचरु हाथ गई मोरि आवा ॥ तहा बकोटर मोहि बचायो । तुम्हरी मन्यहि सन्प्रहि द्रवु दुगयो । जो तौ बंधु भले अति होते । पकरि तुम्हें कागस शोते । तुम्हरी सत्यहि कीन्ह परावा । बबहू कहत नृपति बन जावा ॥ दोहा ॥ कुर्न देव्यो विकल अति धर्मज बोले बने । माता रहिषु धीर धरि होइ जाइने ईन ॥ ४३ ॥ सो० ॥ सुनु जन्मेजय राव सुनि पद जो क्या को । तुन न नेरे जाव लई ईन अनि ही शुभो ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ मातै बहुत प्रबोध कै कहि पृथ्वी आकार । सवल मिह चौहान कहि मिथ्या है सगार ॥ ४५ ॥ इति श्री महा भार्य पुराणे सवल मिह भाषा कृते प्रथमो अध्याय ॥ १ ॥ समाप्तं सुभ भूयात् ॥ पोधी लिपा चट्टी मौली मौले पानीपुर के । लिपिकै तयार भई गिब कृपामे ॥

विषय—महाभारत-पर्व ।

संख्या ४१२ इडल्यू. स्वर्गारोहनी ९वें, रचयिता—सवलमिह चौहान, कागज—देशी वादामी, पत्र—५५, आकार—१२ $\frac{३}{४}$ X ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुपुष्प)—२२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७८१ = १७२४ ई० लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिम्यान—श्री यद्रीसिंह जी जर्मादार, ग्राम—खानीपुर, ढाकघर—तालाब बरमा, जिला—लग्ननऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ स्वर्गा रोहनी पर्व लिप्यते ॥ दोहा ॥ प्रथमहि गुरुके चरण सुभ सुमिरौ शीघ्र नवाई । जाकी कृपा कटाक्षते सकल विघ्न मिटि जाइ ॥ १ ॥ दोहा ॥ महा देव पद पंज सुमिरौ द्योऊ कर जोरि । जो अभिलाष चट्टी मन सो पुरवै प्रभु

मोरी ॥ २ ॥ श्री शक्ति में विभवो लोही । माता पार उग्रवदु मोही ॥ हरि छीला बरनी
मनु झाई । सो हुम अप्पर देऊ मिछाई ॥ महावीर सुमिरी सब छापक भय रंजन मन
बांछित हायक ॥ महा बीर सुमिरी हुनुमाना । सो भरोस मी मन अनुमाना ॥ हीन मोहि
मम प्रभु उपरुहू । सो कहिही हिय सुमरि गनेसू ॥ कइहु हिई गुण ओ भरि ध्याना । ते ह
ते पावो निर्मक ज्ञाना ॥

अंत—काशी प्राग गयेक अस्माना । तम फरु यह सुनि प्यास बखाना ॥ दान अनेकम
व्य जो कोई । तस फरु होइ सुनि जा कोई ॥ सो० ॥ शंकर शारद शेष चारि बेद सहस्र पद ।
सवकर अस उपरेश भनु हरि बन बिहाइ छरु ॥ सबक सिंह मति हीन प्यास कहत भन
कछो हम, प्रभु तारत जन यीन साई मन कर्म भरोस कर ॥ इति श्री महा मार्घे सुगर्ग
रोहनि पर्व । सबल सिंह हूय श्री पांचव स्वर्ग वास बर्षमो नाम पंचमो अध्याय । इति
स्वर्ग रोहनि पर्व, आपाद नामे शुद्ध पक्षे अष्टम्यां मीम वासरे । संवत् १९३४ ॥ पोथी
छिन्ना चण्डी भीष्मी के परिचय खानीपुर के ।

विषय—महाभारत—स्वर्गरोहण पर्व ।

संख्या ४१२ पक्ष स्वर्गरोहण पर्व, रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—
बूसी पत्र—२८, आकार—१० × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुपुष्प)—
५६०, रूप—प्राचीन, पत्र, छापि—जागरी, रचनाकाल—सं० १७३१ वि०, छापिकाळ—
सं० १९३४ वि० प्रातिस्थान—श्री रामावतार सिंह, ग्राम—खुरकिया, डाकघर—महापुर,
जिला—सीतापुर ।

संख्या ४१२ याई उद्योग पर्व, रचयिता—सबलसिंह चौहान कागज—साधारण
पत्र—२७४ आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९ परिमाण (अनुपुष्प)—
२४६६, रूप—प्राचीन पत्र छापि—जागरी, छापिकाळ—सं० १९३३ व १८७६ ई०,
प्रातिस्थान—श्री रणधीर सिंह जी जमींदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बस्ती,
जिला—इलाहाबाद ।

भाहि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री हनुमाय नमः ॥ अथ उद्योग पर्व छिप्यते ॥
बाहा ॥ बिधि हरिहर गणपति गिरा गुण सुप पावन जोग । सबक सिंह चौहान कहि भनित
पर्व उद्योग चौपाई ॥ कइ अपि रास सुनुहु कुक केतु । कया सकल सुव मंगल हैतु ॥
अबहि हृदय राजा पंद व्याये । मिरुन हरी अति आनंद छाये ॥ गहे चरण मीमादिक भाई ।
पेट अति प्रमत्त अदुराई ॥ लख सुधि पाइ विराट सुचार । भाये ममा सहित परिचार ॥
उप्रा संय कुंवर शेर पाया । भाइ चरण परये अदुमया ॥ जरे मूप मिळि भये सुपार ।
गहि भुज निज समीप कैदरे ॥ सुठन ममंत हुपव महाराजा । प्रीष्ट केतु तेहि नामा
विराजा ॥ सो० ॥ वासिराज बडे सभा सूर शोनि भर भाइ । जुरा मिषु सुठ शानुषी मूप
सब सहित उछाह ॥

अंत—बाहा ॥ उग्री समर जो भर्तरी जगत ईसाई होइ । कै बिलक भरि ले
सबहु सूर कहायह भाई ॥ ३३४ ॥ इति श्री महाभारते भाष्य अने उद्योग पर्व मापापां
एक त्रिगो अध्याय ॥ ३१ ॥ इति श्री उद्योग पर्व रितः समाप्तं सर्वं ॥ शुभं भूवात्

चैत्र मासे कृष्ण पक्षे तिथी भैरव दस्यां ॥ श्री सम्बत ॥ १९३३ ॥ लिपित त्रिच प्रयाद
 भौली मौजे पार्ना पुर के ॥ दोहा ॥ जैमी प्रति देपा सुभग तसि प्रति ह्म लिपि टीन्ह ।
 पंडित कवि यह देपियां अपनी उक्ति न कीन्ह ॥ चौपाई ॥ पठिन जन सां विनती मोरी ।
 दूटे अजर वाचन जोरी ॥ मम अपराध न थे नौ जोरी । भं मति मंड बुद्धि है थोरी ॥
 दों ॥ है मयु माय मुहावनो कृष्ण पक्ष गुरु वार । नियां थ्योवदय अति सुभग पुम्नरु भई
 तवार ॥ नम कृष्ण ॥ राम राम राम राम राम राम ।

संख्या ४१२ जेड. उद्योग पर्व, रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—देशी,
 पत्र—३२२, आकार—११ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—
 २८६९, पूर्ण, रूप—नर्वान, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिस्थल—सं० १६३५ = १८६८ ई०,
 प्राप्तिस्थान—श्री बट्टीमिह, ग्राम—गानीपुर, डारुवर—तालाब बक्सी, जिला—रखनऊ ।

संख्या ४१२ ए. विगतपर्व (मशमा त), रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—
 देशी, पत्र—११२, आकार—११ × ५.३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनु-
 ष्टुप्)—१२६०, पूर्ण, रूप—नर्वान, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिस्थल—सं० १६२८ =
 १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बट्टीमिह जमादार, ग्राम—गानीपुर, डारुवर—तालाब बक्सी,
 जिला—रखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री व्यास देवाय नमः ॥ अथ विराट पर्व लिप्यते ॥
 कहे सकल वन पर्व के रिपि नरैय मो टाट । सबल सिंह चौहान कहे भाषा पर्व विराट ॥ १ ॥
 धर्म राज तव बिकल हूँ सुमिरे व्यास मुनीश । नामन दाय कलेस हित आयो जिमि जग
 दीस ॥ २ ॥ चौपाई ॥ दृढ प्रणाम नृपति उठि कीन्हा । मुनिवर विहमि लाइ उर लीन्हा ॥
 चारिकु वंशु द्रोपदी रानी । परने चरन व्यासके आनी । आईं टीन नृप चर्म विछाईं । चरन
 धोइ बैठार आईं ॥ पातननो बीजन करि लीन्हेऊ । पवन कुमार पवन तव कीन्हेऊ ॥
 भोजन तव लै आईं रानी । नकुल टीन्हे जन भाजन आनी । करि भोजन रिपि व्यास अनटै ।
 सहदेवक आनि चन तव वटे ॥ कहेऊ राऊ नैनन भरि वारी । भलेह नाय मन सुरति
 विपारी ॥

अंत—होईह मोई जो रचा करतारा । कह भीषम यह वागहि वारा ॥ कह मुनि
 सुनुहु मुकुट वर धारी । मोच हरन संतन हितकारी ॥ चले कृष्ण नृप को समुझाई । पहुचे
 धर्म पुत्र पह आई । पत्र वंशु नह सीस नवाये । दैठि कृष्ण यह वचन सुनाये ॥ रचक महि
 तुमको नहि देता । उठिस कीन्हेट भाग्य हेता ॥ विना बुद्ध महि क्वहु न देहै । जो जीते
 मोई मय ले लेहै ॥ वार वाग कह बाल कन्हाई । विना बुद्ध कौने महि पाहै ॥ दोहा ॥
 वीर भोग है जीनिरन कूर तजै कटराह । अत्र गहाँ मारव रचा लीजै नये छिनाह ॥ कृष्ण
 कहीं सबके भते मन मानी यह बात । धर्मराज वंशुन सहित भय प्रसन्न नित गात ॥ इति
 श्री महाभारते पुगने विराट पर्व भाषा कृते त्रयोदशो अध्याय ॥ १३ ॥ इति श्री विराट पर्व
 समते संपूर्ण सुभमस्तु । मार्ग शीर्ष मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दस्यां भौम वासरे लिपितं देवी सचन
 १६२८ ॥ रामजी ॥

विषय—महाभारत विराट पर्व ।

सुबपा ४१० वी^० विद्युत्तर्ब (महामारु), रचयिता—सबलसिंह चौहान, कागज—साधारण, पत्र—१३४, आकार—११ × ५३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुच्छेद)—१८७६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—जागरी, लिपिकार—स० १९३६=१८७६ इंच, प्राप्तिस्थान—श्री रत्नधीरसिंह जमींदार ग्राम—झानीपुर, बाकबर—साधारण यकसी, जिला—छत्तसगढ़ ।

सुबपा ४१३ ए मागवत दसमस्कंध, रचयिता—सबल स्वाम, कागज—शुद्धी, पत्र—२०६, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुच्छेद)—३१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—जागरी, लिपिकार—स० १७०५, प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुरतकासप, बाकबर—बिसबाँ, जिला—मीठापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री शारदाय नमः ॥ श्री शारदाकृष्ण ॥ बाई नील लल सरोजकथनं कथावम्यो कौटिलि स्मरणीय चास्मिन् विद्याम कुसलं वेदपादिक वेदतं गोपालं राजत भूपर जल हितं विश्वभरं मापय गोपी नमं पद् चक्रोत् शसित नदि बसोदासुतं । सरत्पद् भर्तुं कथत इम केमंत विपति वस्त्रं यन स्वाम वत्पहरत वलि इपमान चाप गुंजावर्तम वनतं सुरेसं रमेसं वदि ॥ अति उदार मंगल सदन वलय प्रबल दुप इंद ॥ सबल स्वाम सेवक मदा प्रभु मंदा वन चंद ॥ सा० ॥ गुरु पद् पंकर भूरि प्रबम ससि निज शपि करि, वरनी प्रभु सप्तमूरि सुपदायक सब दुप हरण ॥ र्था० ॥

अंत—॥ दो० ॥ सबल स्वाम भवमय इरन पावन जन्म उदार । कृपासिंध शरनपु सुपद् व्यापक जगदाधार ॥ इति पोषी भागवत इसम स्कंध समाप्त शुभ मस्तु सबत १७७५ समी नाम शेष शुद्ध नीमी बार शक्तिवार महप्र पुण्य मये अर्कः मध्याह्न दिना लेखक हरीशाम स्येदी शर्मादर मक्त मुत मिहि कद् बादे कथत है ।

सुबपा ४१३ वी^० हरि चरित्र रचयिता—सबल स्वाम कागज—साधारण, पत्र—२५००, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेद)—७१२५, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—जागरी, प्राप्तिस्थान—रामा बबबेदा सिंह रहूम तामुके शार, कासाकांवर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—दो० १—प्रावहि बहुतक गगन मग, भवमि धरनि पग धोर । जामु गग महु म्प्री हया विचित्र रम जोर ॥ १ ॥ वरन परन पत्र राज उदार । मनु मेव दविष पुर बारे ॥ वरपदि नद् विराजदि केष्टे । महिल पस कजस गिरि कैने ॥ पहन पटित भ्रमर केपरिनि । महि सिंधार विन्द के मद् नीरनि ॥ भगवित पयेरुं गर्भि श्री पारा । भगवित रथ भगवित अस्तवारा ॥ वनक जटित ममि रथ मग पाकनि । वरन रपन वर र्हुंग पताकनि ॥ बाबन विविधि न जाइ यथानी । केदि पटतर दीत्रिये रजधामी ॥ आभन चारि परन बहु चारी । जई मव सापु सती नर नारी ॥ बार वपू पद् रूप उच्यारी । जामु रूप रंभा बलिहारी ॥ दो० १—गग विराजदि पुर निरुद, बहु विधि वरण न जाइ । बाई मदन मनु राज शुन मव कनु रह सुमाइ ॥ ७ ॥ कदरी कदरी मेव रसासा, कदर कदर कंवरन आका । गुंगी ताल तमाल प्रापूरी भरिपर अंवर नारंगी मूरी ॥

X X X X

अंत—पृष्ठ ५०० मे—तव कीरति होइहि विमल, गाइहि सब सार । बहु विधि तो सेइ विजये, कहि दया मियु करतार ॥ चाइ निज रथ पारथ भगवाना, पश्चिम दिशि कह दीन्ह पयाना । सस डीप गिरि सिउ बिसाला, देखत लोक लोक फिर चाला ॥ कृपा सिंधु नव नीरठ वेसा । देखि बृहद तव कीन्ह प्रवेसा ॥ तहां हय मेव पुष्प सुग्रीवा, मैथ्य वलाहक अति बल सीवा ॥ निदरि सक्ति हय कीरति जिन्ह की, तम तहां थक्ति भई गति तिन्हकी जोमेश्वर हरि तुरग निहारी । जाकर चक्र धरंड नृप भारी । सहस महम कर दीपति जासू । किये उदू रित्त हतम कह आसू ॥ तम तहां पार जोति अति भारी । तहं प्रवेश भये हरन मुरारी ॥ दो० :—जोति प्रताप प्रकाश अति, भक्तेन पित्रये निहारि । मंड मड तिहि पन भई, वेगे प्रगट मुरारि ॥ चौ० दिव्य दृष्टि पारथ X X X

विषय—पृ० १ से पृ० ५ तक लुप्त । अध्याय १—राज समाज वर्णन । अध्याय २—पट वालक वध वर्णन । अध्याय ३—गर्भ शक्ति वर्णन । अध्याय ४—कृष्णावतार— ५—असुपाट्या निरुप मोहन ६—व्रज महोत्सव । ७—दंड विमोहन । ८—पूतना वध । ९—सकट । १०—नृणावर्त मोक्ष । ११—विश्वरूप वर्णन । १२—कमला खालिन की माखन चोरी । १३—गोप प्रमाद । १४—द्रुम निपात । १५—वत्सासुर, वकासुर वध । १६—असुर वध । मोक्ष । १७—विरांचि मोहन । १८—ब्रह्म स्तुति । १९—गो चारण । २०—काली वधन ॥ २१—गरुड श्राप । २२—प्रलव वध । २३—टावामि मोक्ष । २४—गोवर्द्धन धारण । २५—कुमारिका भिलाष्य । २६—, २७—विप्र प्रतप-हर । २८—इंद्र क्रोध निवारण । २९—गर्ग ज्ञान । ३०—भाम वने गोविंदाभिषेक ३०— ३१ व ३२—नदानयन । ३३—बाल चरित्र । ३४—कृष्ण का अन्तर्धान होना । ३५—गोप सुताविरह । ३६—गोपियों का कृष्ण को वन २ में हूटना और आखीर में कृष्ण का प्रकट होना । ३७—रागक्रीड़ा । ३८—सर्प रूप विवधरोद्धार । ३९—वृन्दावन की क्रीड़ा । ४०—अक्रूर आगमन । ४१—व्योम वध । ४२—अक्रूर नद का वार्तालाप । अक्रूर का कृष्ण प्रेम में निमग्न होना । अक्रूर मथुरा पयान । कृष्णागमन पर मथुरा वासियों की प्रसन्नता । ४६—मल्ल रंग वर्णन । ४७—कुवलया पीठ वध । ४८—कंस वध वर्णन । ४९—गुरु सदीपन दुःख मोचन । ४०—उद्धव व्रज गमन । ५१—उद्धव गोपिका सवाट उद्धव लाटना । ५२—सौरात्री मिलाप । ५३—पांडवों का दुःख वर्णन । ५४—दुर्गा निवेक्षण । ५५—मुचक्रुद स्तुति । ५६—द्वैतर्षी का संदेश । ५७—रुक्मिणी हरन । ५८—रुक्मिणी विवाह । ५९—प्रद्युम्न जन्म कथा । ६०—सत्राजित तथा मणि की कथा । ६१—सत धन्वा वध, अक्रूर का मणि देना । ६२—कृष्ण इन्द्रप्रस्थ गमन, ६३—कौशल राज । सुता विवाह । ६४—नरकासुर वध । ६५—रुक्मिणी सवाद । ६६—अनिरुद्ध विवाह । ६७—उषा की कथा तथा अनरुद्ध वियोग । ६८—शकर समर—कृष्ण विजय । ६९—नृगोपारयान, ७०—बलदेव विजय, जमुनाकर्षण । ७१—काशिराज पटु वध । ७२—द्विविद निपात । ७३—बलभद्र विजय, कृष्णात्मज का सुयोधन की पुत्री के साथ विवाह । ७४—नारदा गमन, कृष्ण का प्रभुत्व । ७५—नारद का हरि चरित्र देखना । ७६—

भगवान का इन्द्रप्रस्थ गमन । ७०—ब्राह्मिण्य वष । ७८—राज सूय यज्ञ विज्ञप । ७९—
 प्रीपथी का हान्य तुषोबन प्रति । ८०—संमर युज वण । ८१—साम्य वष । ८२—
 बरुदेव सीर्ष पात्रा । ८३—बर्हदेव द्वारावति आगतान । ८४—भगवान भीर सुदामा
 संवाद । ८५—भगवान ब्राह्मण संवाद । ८६—कृष्ण रवि पर्व के लिए गमन । ८७—
 द्वारावति वासी तथा ब्रह्म वासी ज्ञन परस्पर मिश्रण तथा वर्तोलाप । ८८—सीर्ष पात्रा से
 अपन २ ग्रह गमन । ८९—इबर्ही के मरे पुषों का कृष्ण द्वारा काया जाना । ९०—कृष्ण
 का द्विज धौंति इष से मिलाप । ९१—कृष्ण तथा नारद संवाद । ९२—यस्मानुर
 कथा । अपूर्व ।

सूक्त्या ११४ मंद् गां वरसाने की होझी, रचयिता—सहद्वष (रामगण), कागज—
 देही, पत्र—३, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुच्छेद)—
 ३२ पूर्ण, रूप—नवीन पत्र, लिपि—भागीरी, प्राक्षिस्थान—श्री राम बिलास, ग्राम—
 मदारनगर, अरुणर—बंभर, शिला—उप्राव ।

आदि—श्री गौशापनमः ॥ अथ मंद् गां वरसाने की होरी सींका लिप्यते ॥
 क्याक ॥ मर्ष भूम फगुल क मांम प्रभु वरसाने लकं होरी ॥ देस रहे मनस्याय रग से
 गुलाक से राये घोरी ॥ मद् गां व से कृष्ण पवार वरसाने राये प्यारी ॥ स गुलाक राये जी
 हाय मोहन के हाय में पिचकारी ॥ परत रग फरकत है भग मन मोहन करते है छावारी ॥
 मयत्र से ठार गुलाक छार तुम इतनी माफ करी प्यारी ॥ रग केयर का कीच मया है
 कम्पूरी मृग मद् घोरी ॥ १ ॥ मर्ष भूम भीत्री कीर बदन के लिपटे छगत रंग की पिचकारी ॥
 हाय जीव राये जी कई प्रभु कर्षी अद्ब म गिरघारी ॥ तुम तो ईश्वर हीं प्रभु मरे तुम
 से बात नही प्यारी ॥ परत रग निरकत है अंग कीकर ईसत कयत सकिपा सारी ॥
 देस रहे मनस्याय राधिक मुन्दर पप सुगुन जोरी ॥ मर्ष भू० ॥ २ ॥

जठ—मति पुनीत मत्र रज मत्र की भूमी कई मोहन अपतार किया ॥
 मत्र सींसा के कातिर प्रभु जी गठ छाक छोड़ दिया ॥ अनुर भार कटे है मारसब मच्छन
 का उजार किया ॥ मत्र रज मेवन नहीं करी था जम्न पाय कर पूया किया ॥ मत्र की
 महिमा अर्जत महद्वष कही घोरी घारी ॥ मर्ष भूम ॥ ७ ॥ नात रामगण बास सैठ श्री
 गुद गण्ड मळ भी मनस्याय को दान्य हासी कही बनाय मळ ॥ इति श्री मंद् गां वरसाने
 की हाकी मंपूर्ण समाप्तः ॥

विषय—श्री कृष्ण का ग्वाल वासों सहित भीर की राधिका की का सन्निधौ महित
 परस्पर द्वारी गल्पना ॥

सूक्त्या ४१४ प. इनुमान वात् सींसा, रचयिता—सहजराज, कागज—देही,
 पत्र—९, आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुच्छेद)—१०८;
 पूर्ण रूप—साधारण, पत्र लिपि—भागीरी, निविद्याल—मं० १८५४=१७९९ ई०,
 प्राक्षिस्थान—दपमिह, ग्राम—छाटागाँव, शिला—सीतापुर (जयध) ।

आदि—श्री गौशापनमः ॥ इनुमान वात् सींसा लिप्यत ॥ दोहा ॥ विधि इति
 इर शनवति गिरा श्री गुण पद् मिर काद् ॥ वाक कंति इनुमान की कही जया सतिगाद् ॥

चौ० । पूरव कल्प सुभ मन धाग । भयो केय केमरी कुमारा । सुर नर असुर वदि वृष
केतू । जाहिं सदा हरि दरसन हेतू ॥ जत्र प्रभु निष्ट उमापति आवहि ॥ प्रथम पूजि चरन
भिर नावहि ॥ भयो मदन रिपु मन संदेहा पूजा हेत वरी कपि देहा ॥ अथ यह कल्प कथा
अति पावनि रहीं सकल दुष दोष नयात्रनि ॥ अति पुनीत कि प्रपंड जहा वर्म केमरी
कपि पति तहा ताके नारी सुटर न्यामा । नाम अजनी अति अभिरामा ॥ एक वार पठ
भूपन माजे कज विलोचन अंजन आजे । करि श्रगारधैटा गिरि श्रगा । देपि पवन मन जनित
अनगा ॥ भयो अंजनी मन सदेहा परमत जन परपति ममदेहा । अहो देव मोहि परसन
कीजे । पाप बुधि तजि दरसन दीजे ॥ दोहा ॥ करहुं जो भग अर्नग वनु पतिवृत्त धर्म
हमार । देहीं पाय थाप सुर होइहि नाम तुम्हार ॥

अत—सहज राम कीनी कथा वालमीकि मत देपि सकल सुमगल दाइनी ॥ मगल
कार विनेप ॥ इति श्री सहजगम विरचते हनुमान वाल लीला ममाप्त संवत १८५४ क्वार
सुदी २ सुकवार । दसवत सुगालचद के विगवा मगर ग्राम चमत हे सत्र संतन को पर
नाम ॥ पातिर जानकी नाथ के लिये ॥

विषय—हनुमान जी की जन्म तथा और देवताओं का वन्दन । हनुमान जी को
अपनी माता से अपने ईष्ट गमजी की सेवा के लिये आज्ञा प्राप्त करना और अहोभाग्य
समझना ।

संख्या ४१५ वी. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—सहजगम, कागज—देशी, पत्र—८,
आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पथ, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०६ = १८४९ इ०, प्राप्तिस्थान—
श्री शिवराम, ग्राम—माधवपुर, डाकवर—खैराबाद, जिला—मीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रह्लाद चरित्र लिप्यने ॥ दो० ॥ उमा वचन
सुनि शूल धर कहन लगन इतिहास । जो सुनि संभे सोक भ्रम होइ मोह कर नान ॥ चौ० ॥
कनक कशिप निश्चर बलवाना । सुत प्रह्लाद जानु जग जाना । सदानकी कल गुग जाये
कनक कशिप सो तुरत बोलाये । सुत प्रह्लाद प्राण प्रिय मोरे । माँपों कहीं कर जोरे ॥
कीजे इन्हें पदाइ सचेता । स्वल्प तादना लाइ समेता ॥ सुनि नृप वचन विप्र अनुगागा ।
उँ नम सिद्धि पदवन लागा । लिपि पाटी दीन्ही कर वामा । सो लिपि लेपि लिख्यो हरिनामा ॥
विहंसै वालक बुन्ध विलोकी । राजकुमार सके किमि देकी । हंसत देपि पूछैट द्विज दोऊ
सैनहिं वाल वतावत सोऊ ॥ राम नाम अकित निरपि । महि सुर मन मुसकाहि । लिप्यो
बहुरि सो लेप्यो बहुरि वालक हंसै डिटाइ ॥ राम नाम को कौन फल विद्या को फल कौन ।
घाटा नफा विचारि के पड़े विप्र हम तौन ॥

अंत—दो० ॥ सहजराम ऐसे प्रभुहिं तजहिं नहीं प्रभु आन । सोइ पांवर सोइ मंद
मति सोइ नर परम अपान ॥ वार वार मनमानि सुर हरि भये अतरध्यान । देव दिनेस
सुनीस गन प्रसुदित कीन्ह प्रनाम ॥ इति प्रह्लाद चरित्र समाप्तम् निपतं घृरेलाल मुमदी
वनरहा वाले तिथि पंचमी श्रावण शुक्र सवन् १९०६ वि० ॥ शुभमस्तु ॥ श्री शिवायनमः ॥

विषय—प्रह्लाद चरित्र ॥

संख्या ४१५ सी प्रस्ताव पत्र, रचयिता—सहजराज, अग्रज—देवी, पत्र—
१०, अकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुच्छेद)—२००, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—मागरी, छिपिकाळ—सं० १२१०, प्राप्तिस्थान—श्री शिबराज
सिंह, ग्राम—संगपुरवा, अकर—श्रीरामदास, शिवा—सीतापुर (अक्षय) ।

संख्या ४१६ सहजोबाई की बानी, रचयिता—सहजोबाई, अग्रज—देवी, पत्र—
२४, अकार—८ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेद)—१४०,
रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—मागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा मनीराम दास, ग्राम—भरगोब,
अकर—श्रीराम, शिवा—सहजराज (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सहजोबाई की बानी लिख्यते इति ॥ निर्मल
आनन्द देव ही ब्रह्म रूप करि देव ॥ जीव रूप की आपरा ध्याया सब हरि कैव ॥ नमो
नमो मुखदेव गुसाई । प्रणव करी भखी जग माई ॥ श्रीभक्त भागवत मानु प्रकाश । पठ
मुनि करि तिमिर को फाँसा ॥ ज्ञान जोगधी नीम धनीनी ॥ चरण दास केवट की सीनी
बहुतक पापी जीव ज्ञाने भव सागर सू पार लगाये किरपा बखी हाथ में रापे । काहु ते
दुराचरन न भापे ॥ अमृत बचन बोकि शीमरी ॥ नर नारी रूप पतिव तिराई ॥ करु लुग
में सत लुग बिस्तारा । दियो भक्ति का खोख बूजारा । मुनि मुनि के शिष्याई भाई । उनह
के मरिह मिटाई ॥

अंत—हो० प्रेम दिवाने को भये परदि गयो सब रूप । सहजो छटि वा भावई
बहाई रंक कहा भूप ॥ प्रेम दिवाने का भये नम बरम गयो खोप । सहजो नर नारी हंसी
वा मन आनंद होय ॥ प्रेम दिवाने जो भये सहजो छिय मिग देह । पाँच परे कितकी किती
हरि संभार जब लेह ॥ प्रेम करक दुखन महा पाई गुरु के प्यान व भजपा मुमिरन कहत
ही उपरि केवल ज्ञान ॥ इति श्री सहजोबाई की बानी समाप्त ॥

विषय—गुरु की स्तुति, मुखदेव की स्तुति गोविंद व गुरु का अंतर, गुरु निंदन,
गुरु की महिमा कुछ साधु वीरग कर्म वासना वासकपन, बुझापा, श्राव्य कास नाम की
महिमा आदि का वर्णन ॥

संख्या ४१७ सद्गुरु विनय, रचयिता—परमहंस बाबा साकिग्राम, अग्रज—
आशुविनय, पत्र—६४, अकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनु
च्छेद)—१३३०, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—मागरी, छिपिकाळ—सं० १३४० = १८८३ इंच०
प्राप्तिस्थान—श्री रामदाससिंह, ग्राम—महुवा डाँड, अकर—सहजराज, शिवा—
सीतापुर (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सद्गुरु विनय प्रारम्भ ॥ परमहंस बाबा साकिग्र
राम कृत ॥ राम चरतीक व भजन ॥ श्री गणेश श्रुति नरेश प्रथम अक्ष ध्यावन । मुमिरत
बेदि मुनि महेश ब्रह्म विष्णु अक्ष ज्योत राम पश पक्षशि प्रेम मद्य आदि नमार्च । गीरी सुत
अक्ष सखक आप मद्य जगदि अक्षस निराकार निरविचार ज्ञानरूप पावन ॥ अक्षि भाँव
देव सागुन ही अथादि रूप अगुन दास बाक दधि प्रेम गोद ई वैभवर्च व साकिग्र राम

सुनि अम जय गणपति पद तन मन फंग सकल गुणन हीन नाथ चरण शरण आवन ॥ १ ॥
गणपति के चरण शरण मैं दुआर दीननं ॥ नहि विराग भक्ति प्रेम ज्ञान हीन सकल नेम
चतुर चपल बुद्धि नाहि जाति वरण हीनन ॥ मति तो उपल जड कठोर मागत है सुजय शोर
राम नाम ते विहीन चहत ब्रह्म लीनन ॥ कर्म धर्म ते विहीन पाप उदधि मन है मीन
केहि विधि निरवाह नाथ छिन छिन तन छीनन ॥ कोटि पतिव शरण तरं जै गणेश हरे हरे
सालिक राम ब्राह्मण जन पायों नाम भीगन ॥ २ ॥

अंत—धारो तेरे धरम का मैं देखत हौं देखत हौं प्रेम । केंवि प्रीति हमते काणो
भाव भक्ति का नेम ॥ भजन प्रारम्भ ॥ का पति देया धरम हमारे । विष्णु लाल मन तुम मों
पनि निदा दिन प्राण अघारा । तुम मन हम तन चहै ना देया कुमति के करत सहारे ॥
तेहि के धरम कर्वा ना देखयो हम मन वभि नित दीन करारे ॥ कुमति फिरे तुमका तजि
निश दिन लोभ मोह रत तुम्हें विसारे ॥ सुमति कुमति तुम्हरे पटरानी दुहुन के धरम
निहारो जो निश दिन जग तुम्हें थुकारे ॥ सालिकराम सुमति आगरि के विष्णु लाल सुनि
देना गये सटचाय साच यह कहती तव कुमती तन विकट निहारे ॥ २०० ॥ सुमति
आगरी वचन सुने अम विष्णु लाल जै कुमति निकारी । कुमति सवति जवते घर निजरी
सुमति आगरी राज सुमति के महलन मन विश्रामा । प्रगट सुजय सुत जग उजियारी ॥
सुमति के बाज अनहद वाजा कुमति भई दुखारी । निश दिन फिरै जगत मा भारी काम
क्रोध मट रत मतवारी । कुमती जर सुमति आगर पर करे उपाय अनेका कौनि
यतन यहिका धरि पटकी जसई हमरो भवन उजारी ॥ कुमति सुमति आगरि टोळ
वहिनी सवति स्वभाव विरोध । सालिक राम जाहि वदा मन नृप तेहिका तस जग
राज विचारी ॥

विषय—२जीतपुरवा तहसील, जिला उन्नाव, निवासी गिरजावरम सिंह राजा की
निधिरानी जो विधवा हो गई थी उसकी भगवान में भक्ति उत्पन्न करने के लिए परमहंस गुरु
शालिकराम ने भजन बनाया ।

संख्या ४१८ ए. भाषा भागवतदशम स्कंध उत्तरार्द्ध, रचयिता—शालिग्राम वैश्य
(मुरादाबाद), कागज—आधुनिक, पत्र—२५०, आकार—१२ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति
पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुपुष्प)—६०१०, पूर्ण, रूप—नवान, गद्य, लिपि—नागरी,
लिपिकाल—सं० १९५० = १८९३ ई०, प्राप्तिस्थान—रामचरण कुर्मी, ग्राम—इनायतपुर,
ठाकवर—विमवां, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ श्री मत्भागवत भाषा दशम स्कंध उत्तरार्द्ध लिप्यते
॥ दो० ॥ उत्तरार्द्ध प्रारंभ में ब्रजपति चरित ललाम । काणो पचाशाऽध्याय जरासंध
संग्राम ॥ श्री शुकदेव जी बोले कि हे नृप श्रेष्ठ परीक्षित अब पूर्वार्द्ध के उपरान्त ४१ अध्याय
में जो कथा है सो हम वर्णन करते हैं कि जरासिंध के भय में ही मानो समुद्र में किला
बनाकर श्री कृष्णचन्द्र अपने जादुवों को उसमें लेगये । व्यास पुत्र श्री शुकदेव जी बोले
कि हे भरत वसावतस परीक्षित अस्ति और प्राप्ति यह दोनों कस की रानी अपने पति
कंस के मरने में अत्यंत दुपी होकर अपने पिता के घर चली गईं ॥ अपने स्वामी के मरने

सं शीघ्रकृष्ण अस्ति प्राप्ति होषो बहियों मे अपने पिता मगधदेश के राजा जरासंध से जाकर सब वृतान्त कहा ॥ हे राजा परीक्षित यह बात सुनते ही जरासिन्धु अति क्रोध कर अपने जामात का सोक न सह पृथ्वी को पादक रक्षित करने का उपाय करने लगा और तेईस जड़ोहियि सैना को साथ लेकर जरासंध मे जाइयो की राजधानी मपुरा को चारो ओर से घेर लिया ॥

अंत—सब जीवों में अंतर यामी रूप होकर बाम करने वाले मगवान श्री कृष्णचंद्र सर्वदा उत्कर्षता पूर्णक विराजमान हैं ॥ देवकी में जन्म हुआ यह तो कथम ही मात्र है ब्रह्म जदुबशियों मे लेखित कृष्णमात्र से अघर्म क नाश करने में समर्थ हैं परंतु ती भी श्रीदा के लिये अपनी मुखाओं से अघर्म को दूर कर रखाबर जंगम सब जीवों का दुख दूर कर सुंदर मुमकान पुत्र अपने श्री मुप से ब्रह्म की श्री गोपिका और पुरी मञ्जुता द्वारक की श्रियों को कामदेव बढ़ाने वाले सर्वदा विराजमान रहते हैं हीये सर्वोत्तम भगवान श्री कृष्णचंद्र की जय हो ॥ अपने घर्म की रक्षा करने के लिये मत्स्य, कूर्मादिक अवतार धारण करने वाले जाइवों में उत्तम भगवान श्री कृष्ण चंद्र ने जो जो रूप धरकर जाग्य कर्म लिये थे उनको सुनकर पुरुष पाप कर्मों से छूट जाता है तीमें काक में बड़ी मुक्ति के देने वाले भगवान श्री कृष्ण चंद्र की श्रीभाषमान कथा का श्रवण कीर्तन और विचार करके पुरुष काक की गति रक्षित भगवान के नाम को प्राप्त होता है ॥ यह श्रवण करके अजयवर्षी राजा भी अपना राज्य त्याग श्री कृष्ण चंद्र की प्राप्ति के लिये ग्राम के बाहर बन को चले गये ॥ इति श्री भाषा भागवते महापुराणे श्री राम गंगा तटस्थ सुराहाबाद् नगर निवासी कथिबर माधुर बंशीय कामा साक्षिग्राम वैश्य कुत इतमस्वरूप उत्तरार्ध अष्टादश पादस्त्रयां संक्षिप्तायां श्री कृष्ण चन्द्र कन्द चरित्र वर्णन समाप्त कियेत् रामकथय शुद्ध शाहजहापुर मान्त जसाकाबाद् निवासी सवत १९५० भाषण शुद्ध सप्तमी ॥ श्री राम राम राम राम राम ॥

विषय—पद्मश्रियों का कुशलेत्र जाना ॥

संख्या ४१८ यो भी मन्नागवत माया इतमस्वरूप, रचयिता—साक्षिग्राम वैश्य (सुराहाबाद्), कलाज—देसी, पत्र—४०० आकार—१२×६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४००, रूप—गवीन, गद्य, छिपि—नागरी, छिपि काक—मं० १९५१=१८६४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामचरण कुर्मी ग्राम—इनायतपुर, बाकपर—बिमबा त्रिला—सीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री मद्भागवत माया इतमस्वरूप पूर्वांशं लिप्यते ॥ सर्वदा ॥ जाकी कुरा शुद्ध ज्ञानी भवे अति प्रशानो श्री स्वामी भये शिपुरारी । जाकी कुरा विधि वेद रच भये स्वाम पुराणन के जधिधरी ॥ जाकी कुरा ते त्रिलोक घनी मु कदावत श्री ब्रह्मचंद्र विहारी । मेरु काज करेयी माई श्री कृष्ण मिया रूपमानु दुकारी ॥ १ प्र कथित ॥ काहु को भरोमा है गणत दोषसारहा को काहु को भरोमा है कसिक्य ज्ञ मशानी का । काहु को भरोमा उमा रमा मिया कर्मी का काहु को भरोमी महादेव यह

ज्ञानी को । काहू को भरोसो गग जमुन हनुमान जी को काहू को भरोसो शिव वाहिनी भवानी को ॥ तन मन से यों कहे चार चार मालिग्राम मोको तो भरोसो एक राधा महरानी को ॥ दो० ॥ हे सुकुंद गोविंद हरि नंद नदन वनदयाम चरण दारण मोहिं रापिये कृपासिंधु सुप धाम ॥ श्री शुक्रदेव जी राजा परीक्षित ने बोले कि हे ईश तयालु आपने नवम स्कंध में चंद्रवंश और सूर्यवंश में जो जो नामी राजा हुए उन दोनों वंशों के सब राजाओं का अति विचित्र चरित्र विस्तार सहित वर्णन किया ॥ हे मुनिवर धर्म शील महाराज जदु का वंश भी विस्तार पूर्वक आपने अच्छी शैली में कहा परंतु अब दया करके वह कथा कहो जो महाराज जदु के वंश में बलराम जी के साथ परिपूर्ण रूप से अवतार धारण करके समार के सुप देने को जो जो अद्भुत लीला भगवान वासुदेव ने की उनको विस्तार सहित हमारे सामने वर्णन कीजिये ॥ सब प्राणियों के प्रति प्रालोक भगवान भूत भावन ने जदुकुल में जन्म लेकर जो जो आचर्ययुक्त चरित्र किये वह भी सब यथावत हमारे आगे कथन करो ॥

अत—भगवान की इच्छा को कौन पुरप पटन कर सकता है अर्थात् उसकी इच्छा के प्रतिकूल कुछ नहीं होता । सब उसकी इच्छानुसार ही होता है । जिन ईश्वर ने पृथ्वी का भार उतारने के कारण जदुकुल में आनकर अवतार लिया है जो ईश्वर विचारते में न आते ईश्वरी अपनी माया से इस विश्व को उत्तपन्न कर और उसमें प्रवेश कर कर्म तथा कर्मों के फल को अलग अलग कर जीवों को देने हैं ॥ जानने में न आते ईश्वरी लीलों से रचे हुए संसार चक्र के घुमाने वाले उस परमेश्वर को मैं बारंबार नमस्कार करता हूँ ॥ श्री शुक्रदेव जी बोले कि हे भरत वंशावतंम परीक्षित इस प्रकार जदुवंश उत्पन्न अक्रूर जी धृतराष्ट्र का अभिप्राय जान सुहृदों से आज्ञा ले मथुरा पुरी में आये । हे परीक्षित वल्लदेव श्री कृष्ण ने आज जिस कारण अक्रूर जी को पांडव के पाम भेजा था सो अक्रूर जी ने सब धृतराष्ट्र जी की कही वार्ता का अभिप्राय जानकर भगवान श्री कृष्णचन्द्र और वल्लदेव जी से कह दिया ॥ इति श्री भाषा भागवते महापुराणे माधुर वसीय धीयुत मालिग्राम वैश्य मुरादावाट निवाभि कृत दशम स्कंधे पूर्वार्धे ए.मोनपचाशत्तमोऽध्यायः । संपूर्ण समाप्त लिपित रामबावा शुक्र शाहजहापुर प्रान्त जलालावाट निवासी संवत् १९५१ वि० ईश्वर शुक्र राम नवमी । श्री रामजी मठा महाय करे ॥

विषय—यदुवंशियों और श्री कृष्ण जी की लीलाएँ, वर्णन ॥

संख्या ४:६ ए. बालकांड रामायण, रचयिता—समरदास, कागज—साधारण, पत्र—६२, आकार—१३ × ५३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८२, पूर्ण, रूप—साधारण प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल सं० १९१६ = १८५२ ई०, लिपिकाल—सं० १६३४ = १८७७ ई०, प्राप्तस्थान—श्री रणधीर सिंह जर्मोदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाब बक्मी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वाल काण्ड समरदास कृत लिप्यते ॥ भजन राग विलावल ॥ गनपति सुमिरां सिधि निधि दायक । लंबोदर गज वदन सदन सुख क्रपा सिंधु सब विधि सो लायक ॥ १ ॥ विघ्न हरण सुप करण उमासुत आदि देव समरथ गण

बायक ॥ २ ॥ मंगक करन इहन तुप दाएन संकर सुवन जक मन भायक ॥ ३ ॥ मुनहु
 अर्ज यह गर्ब समर की कही राम जम होड सहायक ॥ ४ ॥ राग भैरवी ॥ ध्यायीं आवि
 शक्ति महाराणी ॥ मझा बिबनु रज बेहि ध्यायेँ तुमरी गति अमुत जय राणी ॥ अगत सेव
 श्रीहोँ सुवन में बेद देस नहि मकठ बलानी ॥ एक बीज सम कोटिन दानव निमित्त में हुट
 बंधो है मबानी ॥ समर अहत रामजस बरगन करी सहाइ देवि वर दानी ॥ २ ॥ सौरा ॥
 तुम गुण ग्यान निधान में अग्यानी अपम ही । जानहु मोहिं अजान, करहु समर निस्तार
 प्रभु ॥ १ ॥ हे प्रभु बंदी कोर, कोर तकहु मम करि कृपा । दुरी मोर की तोर, कोर करहिं
 के समर मम ॥ २ ॥ तब पद अमुत्र बेह, देह जम्म मरि विर्ब है । तोहि समर जन गेह
 रहै पही मम भावना ॥ ३ ॥

अंत—गुरु संतम द्विज दहन सरना । कीरति श्री रघुपति की बरना । है वेक बार
 येही तन मरना । प्रभुक गुनहि गाई भव टरना ॥ सहाज उपाय भजन हरि करना । समर
 काल कीसी नहि परना ॥ होहा ॥ बाल चरित लीला कछों रामकु बार बछावि । समर
 अस रघुराह की कछो सुजस सुल दानि ॥ ७८ ॥ सोरटा ॥ राम बिबाह उडाह बे गीह
 चित प्रेम जुन । उनको अस निबदि समर लड़े धार्जद धम ॥ ७९ ॥ श्रीपाई ॥ संबए सहस
 बबीस बतीसा ज्येष्ठ सुहु रूपक दिन ईसा ॥ पाँचि अवन बार रजनी चर । समर बाल कदि
 सरम चराचर ॥ १८० ॥ इति श्री मित्रि सदन सकल अथ विध्व नामक भक्ति सुप दायक
 समरदास कृत बाल अष्ट समाप्त हुम मस्तु । श्री सम्बद् १९३४ आषाढ मासे अष्टम पक्षे
 तिथी दसम्यां शनि वासरे । कल्पत शिव प्रसाद श्रीहान टापुर भीखी मीनै पानी पुर के ॥
 सौरा ॥ नम माये क्षमिदार तिथी दसम्यां अति सुभग । लिपिके भई तयार कृपन पक्ष में
 बाल यह ॥ राम राम राम सीता

संख्या ४१६ थी भक्तवादी, रचयिता—समरदास, कागज—दुसी पीसा, पत्र—
 १८, आकार—७×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुच्छेप)—११०,
 पूर्व, रूप—नवीन पद्य, लिपि—जागरी, लिपिकास—सं० १९४८=१८६७ ई०,
 प्रातिस्थान—श्री चंद्रिका बरम सिंह, ग्राम—खानीपुर, टाकुर—ताकुर बक्सी, जिला—
 सनमठ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भक्तवादी लिप्यते ॥ भजन ॥ मुमिरहु राम नाम
 मन भाई ॥ शिव मनकादि भक्तो मझादिक अराह सारह सैसहु गाई ॥ पुंकीप पारामर
 ध्यामहु बाकमीक सुपद्व मुहाई ॥ बुरबासा नरभग कपिक मुनि कुंभज भरहाज बित
 लाई ॥ अत्रि बसिष्ठ सुतीन मुदामा गीतम सुलहु के मन भाई । विन्वामिन्न कृषीक सुपम्या
 भीष्म आदि परीं अपिभाई ॥ भुव प्रह्लाद जनक भागीरथ पवन तर्प निबि मीरा भाई
 ॥ २ ॥ हुपरी गोविंद भरत बिभीषन दक मांगद क्रमद्वि सभाई ॥ काग मुमुनि गद
 कविराजा जगदादि रिशेस जराई । नाम देव पीप्या नामा श्री माधव धना मजि मुक्ति
 बभाई । भजि गनिका रैवास नेवरी भजि निवाह मल पाप नभाई ॥ ३ ॥

अंत—पीत ई सति मैन छलाके । गृग बिसाक रचनारे मन्हार सीक ममूह अमोक्ष
 चलाके ॥ भुति कुद्वन सोहन ई विच गुंज गलाके ॥ पीत चैतनी कदि पर बाये कदि न

जाय अंग झलाके ॥ मोर मुकुट सिर उर वैजती भक्तन जोग्य न एक पलाके ॥ भूपन विज
जुवतिन वस कीन्हों छौल सिरामनि रूप छलाके ॥ ईश चराचर सब गुण आगर अनुकूले
सब भाति मला के समर स्याम छवि अति गति जाकी अवतारे पोडशौ कलाते ॥ २ ॥

इती श्री समर दास कृत भजनावली समाप्त सुभ मस्तु श्री पौष मासे शुक्ल पड़े
तिथर चतुदश्या बुध वासरे संवत् १९४८ हस्ताक्षर चन्द्रिका खानीपुर के भटली के निकट
पद्भुम ओर । लिपा सुपाठनार्थे ॥ सीता राम ॥ सीता राम ॥ सीता राम

विषय—भक्तों के भजन ।

संख्या ४१६ सी. किष्किन्धा कांड रामायण, रचयिता—समरदास, कागज—
साधारण, पत्र—४६, आकार—१३ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण
(अनुपट्टप्)—३०२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स०
१९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीरसिंह, ग्राम—खानीपुर, ढाकवर—तालाव-
वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ किष्किन्धा कांड समर दास कृत लिख्यते ॥
सोरठा ॥ वंदौ गणपति गौरि, रमा सारदा सुर सरी । नाय माय शिव पौरि, करौ वंदना
सुर सकल ॥ १ ॥ दोहा । महावीर को वंदना, सगरे सत महंत । समर तीर्थ वंदे सबै, जग
जे जीव अनंत ॥ २ ॥ भरत शत्रुहन लपन तव विनै करौ कर जोरि । रामायण भापत बनै
सुनिये विनती मोरि ॥ ३ ॥ सिया रामने अर्ज मम, तव प्रभु सुजसु अपार । सब जगते
लघु मोरि मति, राटर हाथ उवार ॥ ४ ॥ राम लपन दोऊ वीर शयाने । रीक मूक गिरि
जाय नेराने ॥ बाल बंधु मंत्रिन जुत तहवां । शैल विलंद विकट वन तहवा ॥ तव शुभ्रीव
दीप दोड भाई । भयो भीत मन अति दुचित्ताई ॥ ये कोई महावीर चलि आये । रूपवान
सब भांति सोहाये ॥

अंत—राम प्रभाव अपार है को करि शकै वपानि । मैं कस भापौ हीन मति हिये
बढ़ाई मान ॥ ४० ॥ रघुवर सुजसु वपानि हैं पढ़े शुनै जो कोइ । मन वाछा वर पाइहै
गगा धरसौ सोइ ॥ ४१ ॥ समर मूर्प की बुद्धिसौ जो कछु बनो न होइ । विनती बुध जन
संतसौ सोधो रख्यौ न गोइ ॥ ४२ ॥ सोरठा ॥ सवत सर ससि अंक, जानु दुतीया जुगम
लौ । पावस माहि निशक कृदन पक्ष श्रावण रहै ॥ ४३ ॥ तिथि आठै रविवार, है नक्षत्र
ध्रुव जोग को । भयो कांड अव वार किष्किन्धा सुभ समर कृत ॥ ४४ ॥ इति श्री सिद्धि
सदन सकल अव विधन नाशक भक्ति सुप दायक प्रेम हिंदे उपजायक सुप सुजसु वढायके
किष्किन्धा कांड समर दास कृत समाप्त संपूर्णम् अस्वनि मासे कृष्ण पक्षे त्रिथौ एका दस्यां ॥
गुरु वासरे संवत् १९३३ ॥ लिपित शिव प्रसाद भौली मौजे खानीपुर के ॥ सोरठा ॥
अस्वनि मास सो जानु कृष्ण पक्ष एकादशी । गुरु वासर सुभ मान, पुस्तक मई तयार तव ।
दोहा ॥ सीताराम मनाइकै जे जगमें सुर व्याप्त । तिन्है सकल वंदन करौ, पोथी भई समाप्त ॥
राम राम राम राम राम

विषय—किष्किन्धा कांड रामायण, तुलसी रामायण के आधार पर ।

संख्या ४१६ श्री किष्किना कांड रामायण, रचयिता—समरदास कागज—
 भाग्यनिष्ठ, पत्र—४०, आकार—१३×५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण
 (अनुच्छेद)—१००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, छिपि—नागरी, रचनाकाळ—सं० १९२२ =
 १८९५ ई०, सिपिकाळ—सं० १६३३ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रिका बक्स सिंह
 श्री जमींदार, ग्राम—खानीपुर, बाकबर—ठासाय बक्सी, जिल्हा—छत्तनग ।

संख्या ४१६ ई० लंकाकांड रामायण, कागज—देही पत्र—१३८, आकार—
 ११×५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुच्छेद)—१९०८, रूप—नवीन,
 पद्य, छिपि—नागरी, रचनाकाळ—सं० १९१९ = १८९९ ई०, सिपिकाळ—सं० १६३४ =
 १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रिका बक्स सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, बाकबर—
 ठासाय बक्सी, जिल्हा—छत्तनग ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ सौरभ ॥ श्री गणपति पद प्याय गत्र मुप प्य सुच
 पच मुप वेवसु मुकहि ममाय वेहु छिपय सुमातु सह ॥ १ ॥ अम समर दास कृत लंका
 कांड छिप्ये ॥ ॥ दोहा ॥ पद बन्दो गणनायके सकल गुणयके ज्ञानि । विष्णु इरव मुप कृत
 हि सिद्धि निश्चिके ज्ञानि ॥ २ ॥ सीछ सुता श्री चंद्रिका जन्त मातु मय प्याठ । हुरि करहि
 बाधा सकल मय बाँछ पछ पाठ ॥ २ ॥ ब्रह्मानी कमठीहि भजो महिमा अनुमुत्त आदि ।
 ज्यत माहि निर्मल सुबस बर्नत हे कवि ताहि ॥ ३ ॥ सौरभ ॥ सुर सारि सुबस अपार
 समर बंदन कृत है । मातु कगाबहु पार महा पठित मी सरन हीं ॥ ४ ॥ दोहा श्री केशवपी
 कुमारिका बन्दी बननी तोहि । समर कांड सिद्धि करी यह बर शीर्ष मोहि ॥ ५ ॥
 सौरभ ॥

अंत—विष्णु पद ॥ शीर्ष प्रबळ रिपि देव साधन की राम कृपाते तुसह धरे । महा
 लघन निरुधर कटोर जय प्रभु समुप कवि सर्षि तरै ॥ कवि जे जे तुहुमी बजाये आनंदित
 सुर सुमन धरे । हनुमदादि अपि रिक्त कृत अति करि रतुबीर कृपा उबरे । सिंगासन बीठय
 बिभीषण जी जे कर अष्ट उबरे ॥ कीन्ह विद् शत्रुसाय बाय नहि कपि भाखु ग्रह सुधि
 बिसरे । रिक्तनाथ सुधीय छंकापति प्रेमी सुध्याय ठाठि बरे । सुध्याय रूपन बिभीषण छिप
 प्रभु अपि प्यवान जीये उगार ॥ हनुमान् हनुनाथ पठाये समर भीष मग पई बरे ॥ १ ॥
 छंद ॥ विष्णुन हरि चरिते रमी । बूधे समर जो सर्षि क्षमी ॥ विद्य छंका सुध्या पराक्रमी ।
 अक्षर हुरै रवी है समी ॥ सौरभ ॥ अष्टमि सिद्धि रविबार रिक्त रैवती जोगतिव पुत्र
 कांड भीठार पौप मास सित समर कृत ॥ १०८ ॥ इति श्री सिद्धि सदाय सकळ छिप्य अथ
 बाध भक्ति सुप दायक जुव कांड संपूर्णम् ॥ सं० १९३०

विषय—समर दास कृत लंका कांड रामायण । निर्माण काळा—विद्य' अंक'
 जुग पराक्रमी अक्षर हुरै सी है समी ।

संख्या ४१६ एफ. लंकाकांड रामायण, रचयिता—समरदास, कागज—साधारण,
 पत्र—१४०, आकार—१३×५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुच्छेद)—
 १४००, पूर्ण, रूप—साधारण पद्य, छिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीरसिंह, ग्राम—
 खानीपुर, बाकबर—ठासाय बक्सी, जिल्हा—छत्तनग ।

संख्या ४१६ जी. सुंदरकांड रामायण, रचयिता—समरदास, कागज—साधारण, पत्र—८२, आकार—१३ X ५३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६२२=१८६५ ई०, प्रासिस्थान—श्री रणधीर सिंह जी जर्माद्वार, ग्राम—खानीपुर, ढाकवर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ सुन्दर कांड लिप्यते समर दास कृते ॥ दोहा ॥ गनपति हूँ वन्दो शिवा सरस्वती दिन ईश ॥ गिरिजा पति अंजनि तनै देव कोटि तेतीस ॥ १ ॥ सकल तीर्थ को वदना सायुन रिपिन समेत । हूँ नत्वा सब जगत के सुन्दर वनवे हेत ॥ २ ॥ सिया राम भ्राता सहित वन्दौ वारहु वार । गावहुं सुजसु अपार तव रबुवर लावहु पार ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ मंत्र रिक्ष पतिको मन भायो । काज समुझि मन हर्ष बढ़ायो ॥ मोरे हेत सिंधु तट मांही । वेलभ्यो जय लागि आवी नाही ॥ सियहि विलोके विन बढ़ सोचू । सुधि पाये दुप मिटे सकोचू ॥ जल निधि तट यक्र शैल विशाला । सहज मत्वापर जे ततकाला ॥

अंत—दोहा ॥ पढ़हिं सुनहिं जे प्रभु चरित करिके दृढ़ अनुराग । समर तरहि सोइ सत्य मत विना जोग जप जाग ॥ ८७ ॥ रामायन है कल्प तरु काम धेनु यह जान । शिव श्रुति सम्मत समर भल को करि सकै वपानि ॥ ८८ ॥ वालमीक व्यासादि कवि सेसादिक हनुमंत । रामायण तुलसी कहे प्रभु प्रभाव आनंत ॥ ८९ ॥ समर तुक्ष मति कवन गति कहिवे लायक नांहि । अविवेकी औगुन भरो रहत सदा मद मांहि ॥ ९० ॥ हरि दासन को दास है सकल जीव को दास । सुन्दर काण्ड समर कृत राम नाम की आस ॥ ९१ ॥ छंद सरसी ॥ दस नौ वाईसके सम्बत् यों फाल्गुण वदी द्वितीय । दिन गुरु सोभन जोग मया यह सुंदर पूनों कीय ॥ ९२ ॥ इति श्री सिद्धि सदन सकल अघ विघ्न नाशक भक्ति सुप दायक सुपार्णव सुन्दर कांड समर दास कृत सपूर्ण समाप्त शुभं भूयात् ॥ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिर्था सप्तया गुरु वासरे लिपतं शिव प्रसाद मौली मौजे पानीपुर के ॥

संख्या ४१६ एच. सुजस पताका, रचयिता—समरदास, कागज—देशी प्राचीन पीला, पत्र—१४, आकार—७ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९१, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२५ = १८६८ ई०, लिपिकाल—सं० १९४८ = १८९१ ई०, प्रासिस्थान—श्री चंद्रिका बक्स सिंह जर्माद्वार (भवली), ग्राम—खानीपुर, ढाकवर—तालाब बक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुजस पताका सातौ काँड का लिप्यते ॥ अथ वन्दना ॥ भजन ॥ गुरु गनपति वन्दौ गोरीसह ब्रह्मानी सुर सरि अहरानी ॥ तीर्थ सकल रवि देव पवन सुत सुमिरौं सियाराम उर आनी ॥ वालमीकि व्यासादि सबै मुनि ध्यावौं सुरन कहि हित मानी ॥ ग्यानी सिद्धि सत जगजीवन विनवै समर जोरि जुग पानी ॥ १ ॥ इति ॥ अथ वालकांड भजन ॥ नगर अजोध्या भूप श्रवन मा दसरथ सुतमे राम । सब कहँ आनद देहगे मुनि सग जज्ञ रापि तारे मुनि वाम ॥ मज्जन कीन्ह दरस सुरसरि के

दिक जनक पुरमा सुपनाम । मृष मद् गंभि मंभि शिव चाप द्वि करि विद्द क्य पूरण काम ॥
मृगु पनि गम विचारि सिपा बरि जाये अकब समर पूजुराम ॥ १ ॥

अंत—राम राम कहु राम कहु राम राम कहु राम । समर साथ मन कहत है भीर
व पदे काम ॥ ७ ॥ अकब पुरी प्राची दिना जो जन मानु प्रमानु । दिसा प्रतीची कपन
पुर कोस अठारह जानु ॥ ८ ॥ चन्द्र अंक श्री सुग्म सर समौ कृष्ण मनु माम । सोम बुधिया
मूक सौ समर राम श्री भास ॥ ९ ॥ समर छिप्या जन समर कृत हरि सुधिरन के हेतु ।
मज्जन भक्ति मी ग्यान जुत भव सागर को सनु ॥ ७० ॥ इति श्री सिद्धि सदन सकल रूप
विषय नासक भक्ति सुप दासक राम चरित्रे मुक्कस पताका भव मार्जो समरदास हत संपूर्ण
सुम मस्तु ॥ वीण भासे कृष्ण पक्षे तियक पेका इत्या मनि बासरे मन्वत १६४८ लिप्यंत
चन्द्रिका खानीपुर मनुकी क निरुद पद्युम को । डिपा सुपाटनार्थे ॥ दुर्गा दिव, कृष्ण ॥
सुमन पछम पताका पूर्ण मी राम कृष्ण मों तान जा कुड देप्यो प्रब में छिप्यो मही निव
कील ॥ राम ॥ राम ॥

विषय—रामायण के सातों कांडों का सार ।

संख्या ४२० प्रेममंजरी, रचयिता—सामरथी द्विज, कागज—साधारण, पत्र—
१६, आकार—१० × ६ इंच, परिमाण (अनुपुष्प)—३८५, पृष्, रूप—प्राचीन,
पत्र छिपि—भागी, प्राप्तिस्थान—रामानंद, ग्राम—किसकिछा रंजीतपुर, डाकघर—
मार्धीगंज, जिला—प्रतापगढ़ (अकब) ।

भाषि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ प्रेम मंजरी प्रारंभ ॥ मित्रि सदन करिबर बदन मुद
मंगल दातार । कमल चरण गज करन के, बिनयों बारहि बार ॥ १ ॥ श्री मनु मुद न सुप
सदन, मोहन मदन गोपाल । कृपा सिन्धु कोमल चरण, कृष्ण पत्र नैदखाल ॥ २ ॥
सर्वथा ॥ देव गजानन को पद कंत मनावत ही कर कोरि के होऊ । जाकर नाम उदार महा
मुक्त मूलक हू पदि पंथित होऊ ॥ शानी गुणो करि सिद्ध ममात्र जरम्म में प्यान परै सब
कीऊ मोगत हैं बर सामरथी सो विनायक मोर महायक होऊ ॥ ३ ॥

अंत—श्रीः—शिव कहु सम्भू जाय कहु रंकर कहु सुरपाल । हर कहु मव अत्र
पात कहु भोमानाव दपाल ॥ १०४ ॥ श्रीरति कसित गोराक की, मित्र मति के अनुमार ।
बचयो ममरक बास कधि, सकर दया अघार ॥ १०५ ॥ इति श्री द्विज सामरथी कृत, प्रेम
मंजरी श्री कृष्ण स्त्रीस्य समाप्तम् ॥ सुम मस्तु ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—मंगलाचरण कृष्ण जन्म, शाल स्वरूप
की सोमा, बाल प्रिया गोपिणों का प्रेम तथा मोह भीर हरण, दान कीला, (२) पृ०
१६ से पृ० २५ तक—मुरझिअ च्चनि, बन श्री बर्जम, रामतीला, गोपिणों का मित्र सीम्दर्प
पर गर्व, कृष्ण द्वारा उमक मर्दव और सिद्धाश्रम । पुनः राम ही में राधाकृष्ण का विवाह ।
उपास्यन बर्जम । (३) पृ० २६ से पृ० ३३ तक—मान बर्जम, पुटकर-दिघोरा, काग तथा
मत्र महिमा और शिव वाट्टर की बन्दना ।

संख्या ४२१ प वेणक पञ्जीरी रचयिता—दांमूनाथ त्रिपाठी, कागज—शैली
पीला, पत्र—४३९, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुपुष्प)—२०९६, रूप—

अति प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०९ = १७५२ ई०, लिपिकाल—सं० १८२६ = १७६९ ई०, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी मन्त्र काशी ।

आदि—श्री गणेशायनम श्री गुरभ्यां नम ॥ दोहा ॥ छवि कवच लखि अचके उमदत मोद अखड । कलरच करि करि वर चदन पौरत श्रुण्डा टंड ॥ १ ॥ कवित्त ॥ एरु सभै गिरि राज की नदनी आइ अन्हाइ कहु सरमीते । भासुर भाल दिये दल तौल को आनन सो शशि की छवि जीते ॥ सोहठि लेने को सूडि पयारी तहां गण नायक आइ अभीते । चाहिकै चोप सो दारि मनो हरे लेत सुधा अहिराज समीते ॥ २ ॥ अथराज वंश वर्णण ॥ हरि गीतिका छद ॥ धुव घरण खल दल मलन जिन आचरन कृत युग के विये । सनमान दान कृपान यंज्ञ विधान कै जग जस लिये ॥ द्विजराज कुलवन उमुद कोनुद दानि पूरण इहु भो । निज वश वारिज को दिनेश तिलोरुचंद नरिन्द भो ॥ ३ ॥ पुनि भयो आनंद कद पृथ्वीचद नृप ताके तनै । भुज जोर मो जुरि जंग में यमराज हूं नहि जो-गनै ॥ पुनि भयो ताके अजयचद अरिन्द कुलदल जिन हने । जग भगत जाके जम अजाँ सुर असुर मुनिगन जन भने ॥ ४ ॥

अत—सेवक वचन मातु सुनि लीजे । अच्य होई तौन मोहि दीजे ॥ तव यह हुकुम चडिक करयो । तपत कराह तेल से भरयो ॥ तामे डारि पुयो सभ दीन्हहु । हर वर कहु विलव जन कीन्हहु ॥ ह्ये है हेम पुरुष ये दोऊ । यह प्रसग जानै भल कोऊ ॥ दुआँ आवने घर में धरयो । तिनको काटि परिचु नितु करयो ॥ लेहो काटि अंग तुम जाँन । पूरण ह्ये अँ हे नृप तौन ॥ कहि देवी ए वचन प्रयान । नुरत गई है अंतर ध्यान ॥ वचन प्रमान देवि के करे । दुर्वा पुरुष नृप भीतर धरे ॥ आयो चहुरि मित्र के पास । क्या कही सब सहित हुलास ॥ ता दिन ते नृप आँ बैताल । एरुहि संग वितावत काल ॥ इति श्री श्री भद्राय रघुनाथ सिंहाज्ञया त्रिपाठी सभूनाथ कृतो बैताल पंच विंशति कथा सुपच विंशति तमीप्यम् ॥

विषय—सस्कृत बैतालपचीसी का हिन्दी अनुवाद । ग्रंथ निर्माण का कारण और समय—सभामध्य बैठे हुते एक समय रघुनाथ । वीर धीर उद्भट सुभट सुजन वंशु जन साथ ॥ कहयो कृपाकरि शशु साँ जी में मानि सनेहु । यह बैताल कथा हमें भापा में करि देहु ॥ नंद व्योम धृति जानिकै सबत्सर कवि शशु । भाव अंधारी द्वैज को कीन्ह्योँ ग्रथारंभु ॥ रस युग वृत्ति सबद × × × ससि साक पाँप कृष्ण सुभ कामतिथि वासरं अधिक × × ×

संख्या ४२१वीं जातक चद्रिका, रचयिता—शभूनाथ, कागज—प्राचीन देशी, पत्र—१२८, आकार—११ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बन्नीसिंह जमींदार, ग्राम - खानीपुर, डाकघर—तालाव बकसी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दुर्गारा कवित्त । मेप मिथुन कर्क सींह कन्या तुला वृश्चिक धन मकर कुम्भ मीन जानिये । क्रम ही ते जानिये चर रियरदि सुभाव येक है पुरुष येक नारी पहिचानिये । अरु लसित हरित पादल पिडौर रयामल असितपि संग

सग अक्षररूप उर ध्यानिये । नकुल बरन और मखीन राशि मेपादिक क्रमते विचार करि प्रकट बपानिये ॥ १ ॥ सोहा ॥ क्रूर धेक अक्रूर क्रम जानि बारही छेब बिपम धेक सम धेक पुनि यही रीति कहि देब ॥ २ ॥ अथ राशि पति कुञ्ज भृगु पुष्य भृगु भृसूत गुरु मंत्र । मंत्र जीव मेपादि ईस कहत कवि बू द ॥ ३ ॥ मंगल बुदिचक्र मेप को रूपन गुहा का शूक ई पुष्य कम्पा मियुन का । कर्कट चंद्र बपूक ॥ ४ ॥

अंत—भोगी मानी धनी बिनीत । आनन्द सहित अक्षर्य गीत । पूर्ण नित्य बिप गुरु देव । करी जनक जननी की सेवा । रूप बन्त अति परम उदार । रुई सुयंघ कुमुम को हार । जक मय होय पांचइ बर्ष । बठई बर्ष रहे उबर हर्ष । बर्ष बाइसीमे तुल पाई । पुनि चौबीस बर्ष जव धाई ॥ पूरब दिसा गमन तब होई । गनि कै कहत गवत सब कोइ जहिनी शुकु ईज गुरु बार । नपत कुतिछा कहत उदार । सायं काक मरे नर सीय । जो शसि मीन रासिका होय । १२ । इति श्री सम्भू माव कृते जातक चमित्रकायां पृक्कक्ष प्रक्याप्तमभाषि प्रगीत ॥ सम्बत् १९२३ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तिथी पटना ६ शुक्रवायरे समसि लिपा देवी पुस्तक ॥

बिषय—ज्योतिष (जातक) :

सूत्रपा ४२१ सी मुकुट चिंतामणि, रचयिता—संभूमाव त्रिपाठी, कागज—प्राचीन, पत्र—१३२, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुच्छेद)—१६८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पय छिपि—नागरी रचनाशाल—सं० १८०३ = १७४६ ई०, छिपिकाव—सं० १८७३ = १८१८ ई० प्रासिस्पाव—महाराज काइनेरी प्रतापगढ़, बिरुज—प्रतापगढ़ (अक्षय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मुकुटं चिन्ता मणिं कल्पिते ॥ सपन अघन के दहन को तुल समान को होइ । हरज बिनायक को हरि बिघन बिनायक सोइ ॥ १ ॥ छवि कर्ष छवि अंध के उमड़त मोद अर्पंड । कलरब करि करि नर बदन फल मुंडा इंड ॥ २ ॥ अति सुदस मय आचरन दमन को मिरतात । सब सुप करि बमा सर अहां बैस भूप को रात ॥ ३ ॥ जमक चरित तेहि दस को ज्यों सुर मरि को सोत । जहां घरनु आचरन सुप दिन दिन बूको होत ॥ प्रगट भयी तेहि दैस में जाकी बेम प्रमाड । अरि कुक मरदन सुप सदन मरदन रैबा राक ॥ ५ ॥ तेहि मरदनि राय के प्रगट भये अचछेस । जाके गुन गन की कवा बरनि सके नहिं सैस ॥ ६ ॥

अंत—मच्छम ॥ यनाहरी ॥ सुरज नपत तें कसस सुप शीशे पञ्च ताते प्रह अगिनि की ज्वालय सों जरतु ई । चारि चारि नपत बिचारि चहुं दिग्गम में शीशे फलु ताकी जीव दार न दरतु दे । उद बम काम दसि कजह बहुरि मध्य देस बेद में परी ही भनु अजनि हरतु ई ॥ तीनि परी बेदी में अनेक धन पाई तीनि कंट में परी तो रोह धरिता करतु ई ॥ १४५ ॥ अथ गृह प्रवेश विधि ॥ यनाहरी ॥ तीनि २० बितान मुकुटानि सो समेत गुन मंगरन के कान न सुपायी पीत्रियतु ई । बेद पुनि सुमन बगर २ सुर पूत्रि गुरु जन पर जन मो आयीम शीत्रियतु ई । गन की चिनेरे और कोग का यनरो जाहि तब पुरो

हिन दान दीजियतु हैं ॥ विहसत वदन सुमनतु रदन चढ़ि नूतन सदन को गमन की जि
अतु है ॥ १५ ॥ इति श्री मत महाराज कुमार अचल सिंहातया त्रिपाठी शंभूनाथ विर-
चिताया मुहुर्त मजय्यां गृह प्रवेदा प्रकरणं समाप्तं, शुभ मस्तु ॥ श्री महादेव कवित मर्या
८५७ सवत १८७५ ॥ मार्गे मासे कृष्ण पक्षे सप्तम्या ७ भृगु वासरे लिखितं शिव प्रनाटम्य
वेहथर ग्राम वासिन समाप्त शुभ मस्तु शुभ भुयात श्री राधा कृष्णाभ्या नमः ॥

विषय—सस्कृत मुहूर्त चिंतामणि का पद्यानुवाद ।

संख्या ४२१ डी. मुहूर्तचिंतामणि, रचयिता—शंभूनाथ त्रिपाठी, कागज—देशी, पत्र—
१०६, आकार—११ X ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—
९५४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०३=१७४६ ई०,
प्रासिस्थान—श्री वट्टीसिंह जर्मींदार, ग्राम—गानीपुर, ढाकवर—तालाव बकमी, जिला—
लखनऊ ।

संख्या ४२१ ई०. मुहूर्त कल्पद्रुम, रचयिता—शंभूनाथ, कागज—देशी, पत्र—
८०, आकार—१२ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४०,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०३=१७४६ ई०,
लिपिकाल—सं० १६३१=१८७४ ई०, प्रासिस्थान—श्री झामगिह जर्मींदार ग्राम—
संडीला, ढाकवर—मछरहटा, जिला—सीतापुर (अत्रय) ।

४२१ सी मे अभिन्न ।

संख्या ४२२. वारहमासा, रचयिता—शंकर कवि, कागज—देशी, पत्र—५,
आकार—६ X ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी,
सं० १८२७=१७७० ई०, प्रासिस्थान—श्री विश्वनाथ जी, ग्राम—कैमहरा, ढाकवर—
लखीमपुर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वारह मासा लिप्यते ॥ रात्रुलि चचन ॥ चौ० ॥
वारह मास कस सह्य दुहेली । मह-यद-कम करि रह्य अकेली । आग असाद मदन दल
वेरी । विरह खूर सों भै भट मेरी ॥ वरमै लाग गगन जल धारा । गात जवास भयो जरि
छारा ॥ अथ दहे काह करहि करतारा । व्याकुल भईउ विरह की छारा ॥ जननी मोहि
कहौ तुम जाना । निकसि प्राननतो करत पयाना ॥ निकस प्रान न तो जाइ हैं जो घर नाहीं
पीठ । स्याम धूम वारे जलद लपि घटा रही न जीठ ॥ चौ० ॥ मावन लाग घटा चहु
फेरी विरह विपति मोहिं परी वनेरी । चात्रि न दादुर सुठि जिउ लेई । कोयल कुहुकि
कुहुकि दुप देई ॥

अत—चौ० ॥ चढ़ा जेठ अति तपे पहारा मोरे तनहि वन्हि कै ज्वाला । भयो जेठ
सपि मो कह काला ॥ जर वर गया गात जस होरी । अजहु न सुधि पिठ लीन्ही
मोरी ॥ भले कत न कीन्हा फेरा । धौं किहि देसहिं लीन्ह वसेरा ॥ को यह पवरि सुनावै
मोरी । भै पिय लागि भई ज्यो वारी ॥ दो० ॥ वारह माना भापियाँ कविशकर चित
लाय । रात्रुलि विरहे जरि गई पीठ न बहुरा आइ ॥ इति श्री वारहमासा समाप्त कुवार
वदी अष्टमी बुधवार सवत १८२७ शुभ मस्तु ॥

विषय—बिरहिणी का चारहमासा ।

संवया ४२३ काम्याणव (काम्यानीं, काम्यासीं), रचयिता—संग्राम सिंह,
कागज—नेनी, पत्र—६३, आकर—९३ X ६३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६ परिमाण
(अनुच्छेद)—२२५२, पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य, कविता—नागरी, रचनाकाळ—सं०
१८६६ = १८०९ ई० प्राप्तिस्थान—श्री महावीर प्रसाद पाँडे, ग्राम—संग्रामपुर, ढाकपुर—
मार्शीगंज, प्रिया—प्रयागपुर (बनारस) ।

कावि—श्री गणेशाय नमः ॥ कवित ॥ मदन कदन सुत बुद्धि के मदन जो हैं करना
उदधि वर बारन बदन हैं । निज निज कारन अरुभ करें प्याह प्याह मया विष्णु ईसा जैसे
विषय हरन है ॥ निगमा गमादिक के भादि ही किय ते नाम सिद्धि कीं कइत रूप मंगल करन
हैं । तीनों कारु कर्म करतानि को कल्प तद काम्द असेप श्री गणापिय चरन हैं ॥ १ ॥
॥ छन्दे ॥ भाळ विज्ञाळ प्रमाळ भूरी बदन तें मंडित । उचित प्राग क भाग मनो ससि
विन्द कर्पडित ॥ सुहा वंङ प्रबंध भंग का मद्द नग ना है । चितित फळ जन देन मना मप
मुप मोहे ॥ वर मंड दान मंडित मनुप एक हंत सुपमा सदन । मुप प्याह मद्द बरदानि है
जयति अशति बारन बदन ॥ २ ॥

अंत—रत्नासीं ते हैं बहो काम्यानीं मखियेक । वारीं रान अनुर्सें घासें रान अनङ ॥
श्री मलि रंभा बाह्यी अमी रात्र गजरात्रि ॥ कल्पद्रुम ससि पेरु घनु घम्बरि विप
बात्रि ॥ बीरम वचारी विगुन भावाधिक नो जानि । छन्द नापका जाति बहु पंत रानै
मात्रि ॥ मक्ति मुक्ति बाभीरमाहरि बर्मन उरघारि । काम्यानीं में देविर्षि कौ रान विचारि ॥
॥ इत्येक ॥ भूयोसा सति भू मी निजपरमधिपाताकिना साछ गुके संख्या वतस्तथापि
प्रभुरपरगुर्मनोपबतो भवति ॥ पद्मपरीपूरुमाधुरतदनरककधमप्रत मंसातोई सार रत्नाकोपि
प्रवतिहि बितरंकित्र बुद्धि सरस्वां ॥ २६ ॥ २३ ॥ ६९ ॥

इति श्री मम्महाराज श्री शिरमीर बंसवर्षम श्री मन्मुपति संग्राम सिंह बिरचित्—
काम्यानीं व विप्र काम्यादिवर्षनंनाम पंच दशमस्तंभः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

विषय—(१) पृष्ठ १ से पृ० १६ तक—मंगला चरण पद्य निर्माण कास १—
संख १ म^१ रम^१ बसु^१ ममी^१ अंक शीति लपु चाद । कातिक मित दामनी गुद, भर्षी
प्रब अपहार ॥ (२) पृ० ७ से पृ० १२ तक द्वितीय तरंग—विंगलु देनु, गुद, अणु, विचार,
गुद की लपु, लपु नाम, गुद नाम, बुद्धल नाम, भादिलपु त्रिकाळ नाम, भादि गुद त्रिकाळ
नाम अनुच्छल नाम, अंत गुद अनुच्छल नाम, मरु गुद अनुच्छल नाम आदि गुद अनुच्छल
नाम, चारों लपु अनुच्छल नाम पंचरु नाम पंचरु के क्रम से नाम, वर्षगण, द्विगण,
त्रिचार, गण मिष लपु रणांतर विचार, भनर फटाफट अनुम वर्ग फल सुभ वर्ग फल,
पृ० १२ से १५ पृ० तक—माया प्रस्नारादि मसरुल प्रस्नार, पृथ त्रुलल अंक नष्ट प्रस्न,
उदिए माया मेद मेरु चाद, माया पताका, पताका अनुक्रमणी पताका सतरुल पताका
प्रस्नार विधि, मस फल में हूेण त्रुल पताका; त्रुल पताका प्रस्नार, मर्कटी सतल, मस
क्या मर्कटी, मूर्षी सतल वर्ग प्रस्नार दनु पंच वर्ग प्रस्नार पंच वर्ग संकवा, चर्न नष्ट

लक्षण, वर्ण उदिष्ट लक्षण, मेरु चक्र, वर्ण पताका लक्षण, पंच वर्ण पताका चक्र, पंड मेरु, पताका प्रस्तार, पंचवर्ण पताका, प्रस्तार द्वै गुरु जुक्त, वर्ण मर्कटी लक्षण, वर्णमर्कटीचक्र, वर्णसूची पंचवर्ण सूची, मात्रावृत्ति छंद, श्रीछंद लक्षण, मधु छंद, अन्यछंद, मही, सारु, कमला, चारमात्रिक, काम । रमनी, नरिंद, मदारि हरि । पंच मात्रिक—ससि, प्रिया, तरनिजा, पचाल, वरि, बुद्धि, निशि, जमक । (२) पृ० १६ से पृ० २६ तक—ऋचित सामिग्री, कवित्त भेद, जीव सरस व्यग, मध्यम काव्य लक्षण, शक चित्र, अर्थ चित्र, शब्दार्थ निर्णय, शब्द अर्थ भेद वाचक, लक्षक, रुढ़ि । प्रयोजन लक्षण, प्रयोजनवती लक्षण, लक्षित लक्षण, गौणी सरोपा, गौणी सरोपा साध्य वसाना, शुद्धा सागेपा, व्यजन लक्षण, व्यजन के दो भेद, अगूढ़, गूढ़, लक्षण मूल गूढ़ । लक्षण मूल अगूढ़ । अभिधा मूल व्यजक, अनेक भाति अभिधा और व्यग्य, सयोग, वियोग, सग-विरोध, अर्थ प्रसंग, और संग यथा चिन्ह कर, समय कर, देश करि । अर्थ के तीन प्रकार, वाच्य व्यजकता, लक्षक व्यंजकता, व्यंग्य व्यजक, केवल अर्थ व्यंजक, वक्रोक्ति प्रभाव से, वरण विशिष्ट, काकु से, वाक्य विशिष्ट, वाच्य विशिष्ट, प्रस्ताव विशेष, और के ढिग, देश से समय से, ध्वनि भेद, अविविधित वाच्य ध्वनि लक्षण, अर्थान्तर अत्यंत तिरस्कृत ध्वनि । (३) पृ० २६ से पृ० ३३ तक—रसको स्वरूप निरूपण, क्रमही से विभावादि, विभाव के दो भेद, अनुभाव, सात्विक भाव, संचारी भाव, नवरस स्थाई, शृंगार रस द्विधा, करुणारस, हास्यरस, रौद्र शान्त रस । (४) पृ० ३४ से पृ० ३६ तक—धारी छंद लक्षण, सारंगी छंद लक्षण, कुंडलिया, अमार, भुजग, मुक्तहरा, लक्ष्मीधर छंद, दुमिला, किरीट, मदिरा, मनहरन, तोटक, सजुता, मोदक, विनय । (५) पृ० ३६ से पृ० ५२ तक—मन हरण, मत्तगयद, मदिरा, चकोर मनहरण-दडक । अशोक पुष्पमंजरी, मालती, अनुपदुप, सोरठा, दोहा, दोहा का नाम, दोहा के नाम क्रम से, दोहा दोप, दोहा का उदाहरण, दोही दोहरा, गुण निरूपण, गुण लक्षण, माधुर्य, ओज, प्रसाद, नायका भेद जाति वर्णनम्, स्त्रीयादि लक्षण, दिग्पाल, स्त्रीया, परकीया, सामान्या, अज्ञात मुग्धा, वसत तिलक, ज्ञात मुग्धा, नवोद्गा, विश्रब्ध नवोद्गा, मध्या, प्रौढा, धीरादि, अधीरा, धीरा धीरा, जेष्ठा कनिष्ठा, परकीया भेद, गुप्तादि, क्रिया विदग्धा, अमर विलासिता, वचन विदग्धा, माली छंद, लक्षिता पथाहीरक छंद, कुलटा यथा चंचला छंद, मुदिता जथा, प्रथम अनुशया, कंद छंद, द्वितीय अनुशयना, वधु छंद, तीसरी अनुशयना, मोतिपदाभ, अन्य सभोग दु खिता, किरीट छंद, प्रेम गर्विता, रूप गर्विता, लक्ष्मीधर छंद, स्वाधीन-पतिका, गीता छंद, प्रोपित पतिका, मत्तगयंद, मात्रा सदैया, स्वकीया-वसती छंद, परकीया प्रोपित पतिका, गणिका प्रोपित पतिका, प्रवस्य पतिका, वासकसजा, उत्कठिता, विप्रलब्धा, कलहंतरिता,, पठिता आगत पतिका, अभिसारिका, शुक्लाभिसारिका, अमरावली, कृणाभि-सारिका, सुंदरी छंद, पति अनुरागिनी, समानिका छंद, नायक लक्षण, मान लक्षण, लघुमान, प्रमाणिका, मध्यम मान, भुजग प्रयात छंद, गुरु मान, छप धनाक्षरी छंद, दीप्ति वर्णन' चाच छंद, फुल्लदाम, मानिनी, क्रीडा वर्णन, कुसुमस्तवक दंडक, प्रचित दंडक, अनंग अनग शेखर दंडक, हिंडोला वर्णन, हाव लक्षण, लीला, विलास, विक्षित, विभ्रम, किल-किंचित, मोटाइत, कुटमित, विन्वोक, ललित हाव, विहित हाव । (६) पृ० ५२ से पृ०

६२ तक—कवित शप, काव्य रूपेण दशद् शोप, अर्थ शप, रम शप, श्रुति कृत् सप्तम, संस्कार रहित सप्तम, अत्रयुक्त सप्तम, असमर्थ सप्तम निहितार्थ सप्तम अनुचितार्थ निरर्थक, अक्षयित सप्तम, लज्जा, अमंगल अक्षयित म्यानिश्चयसील । अपर्याप्त सप्तम, अबाधक सप्तम, संदेही सप्तम, दीपाय सप्तम, सक्ति कवित जया द्विद्विसप्तम प्राग्य सप्तम, अक्षयुक्त विधेयमि सप्तम, विद्वज मति काव्य शोप । (७) पृ० ६३ से पृ० ७१ तक - मूनपद सप्तम, बृहत् शोप सप्तम, मात्रा विरत, रम विद्वज कृत, कवित पद सप्तम, प्रति कृत् वर्णन, पतय्यर्क सप्तम, प्रमिद्धवत् अमरम प्रतभीग सप्तम, समाप्त पुनरक्ति सप्तम अस्मान्स्वपद सप्तम, अर्थ शोप सप्तम । कटार्थ, म्याहन पुनरक्ति, दुष्कर्म, प्राग्य निरहेत, संदेही, पद युक्ति प्रमिद्धि विद्याविद्वज अनविद्वज, शब्दार्थ, काव्यत्रिचा-उत्तम मध्यम अपम । प्रथमा उंङ सप्तम, अर्थ असुता इंदक प्रिभंगी सप्तम, मत्त मातग सीसा अर इंदक, श्री मूत इंदक, मुजंगी इंद, रूप धनीछरी इंद, मन हरण इंदक, रति सेपा, माया, अथवा सुधा, मासिनी, आद्रितनया, चंचरी, मासिनी रूप चीपाई, दोषक, तरंगिणी पञ्चटिक, रूपक, तामरम उपग्रह, बच्चा, हरि कीला कल हस काम इंदक, नगम्बरूपी ।

(८) पृ० ७१ से ७८ तक—बिराट वर्णन, अविस्था उंङ, बिराटोत्पत्ति पत्रवेद प्रमाण, प्रमाण श्री भागवत । सीर इंदक, बिराट सूक्ष्मरूप वर्णन इ इ उंङ । (९) पृ० ७८ से पृ० ८६ तक—चंद्र वर्तमा उंङ शीपक उंङ चंद्रकला उंङ, सोमर उंङ, मास्य उंङ, करईत उंङ, संसा उंङ, मनहरण पत्रप्रमाण, श्री भागवत प्रमाण, मनहरण इंदक, मत्त वर्णद कुंडलिया, मारकंडि प्रमाण, पुराणोपवा तामगी सक्ति म्यरूप वर्णन वास्वरूपिणी उंङ, रति पद उंङ, चित्र पद उंङ, मुजंग प्रयात, नगस्वरूपउं, सोमर, कलया, शुभगा मुजंग मुजंगी, पत्र प्रमाण श्री भागवत । (१०) पृ० ८६ से पृ० ९६ तक—रत्न नाम, मदेमाबाच, प्रिबंधरा उंङ शीपकी उंङ, चंचरी उंङ, इलोक भागवते रूपयनाक्षरी, इंदकमनहरण हरिणी, दाहा कास्ती पुराणोपवा कवित जयास्तरे । (११) पृ० ९६ से पृ० १०९ तक—भूगोत्त वर्णन । (१२) पृ० १०९ से पृ० ११३ तक—उपश्रीय नाम, भागवते वधा, सेगुर्गला, गव शीपाविवति, ईश्र वादाहरति (१३) पृ० ११३ से पृ० १२६ तक—चित्रार्कधर, विरोह, मात्रा रहित, बहिर छापिका, अतर म्यपिका गुहातर सप्तम, पृकार्य गतागत, मित्रार्थ गतागत गतागत वयोधरे गाम्त्रिक्य वधा, अत्रगति चक्र, मंत्र गति कराट र्थ सार्वतोमुख, कर्तागुप्त कर्ताक्रिया गुप्त, पद्मगर्भ शोप, कमल र्थ ईवत्त्वर्थ, द्वितीय कमल र्थ चट अनुप्रास, ऐकानुप्रास, सातानुप्रास, अमकानुप्रास, उपमागिरिध, परया, कामला कृति सप्तम । श्रुति—भूपद-सप्तम किष्णुपद, श्री नारायण वद, कृद रूपान ।

सहया ४२२ प. दश श्रोत्रा माया, रचयिता—शंकराचार्य कागज—इसी पत्र— १४, आहार—८ × ४ इंच र्थि (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपट्ट)—८०, पूर्ण र्थ—वाचीन पत्र, मिरि—नागरी, छिपिकाल—मं० १८०४ = १७४४ ई०, प्रस्तरयान— श्री अमरकाय ग्राम—दानापुर टाकपर—मिथिला जिला—मीतापुर (जयप) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दश भंतिार भाषा निव्यने ॥ ईं एक मदी के बिने मझा श्री इंद कर्महल सहर अमरकाय श्री गणे मे तहां मत्त पुी मया मुर दानव उगपत्त म ॥

ताते ब्रह्माजी शिव पुरी तज स्वर्ग लोक को गये विनती करी तत्र स्वामी बोली कहो ब्रह्मा जी तुम कौन कारज शिव पुरी तज स्वर्ग लोक को आये । तव ब्रह्मा जी बोले ॥ हे शम्भू जी हम तो जोगी नगन भूपे भिपारी भिप्या मांग पार्थ वेद शान्ध की जुगत न जानै ताते ब्रह्मा जी अरु शिव पुरी तज स्वर्गलोक को आये असतुति करी तुम्हारी कर्ता तुमही कर्ता तुमही वेद तुमही जानो वेद शास्त्र का भेद ॥ चौथीम भद्र घर वेद पट ग्राह्य अठारा पुराण मत्तवार सताई नक्षत्र पट्टा तिथि वारामामे गंगाजी गीताजी गायत्री सावित्री मरस्वती अकरी । जकरी पट कर्मता शिव ली बोले सुनु ब्रह्मा जी हित चित्त लाई वधे धर्म पाप छे जाई । जुग जुग नारायण जी होई उतरे प्रथम नारायण जी मच्छ रूप हुइ उतरे भद्र की माता सद्यावती पिता अमर तेज गुरु मान धाता क्षेत्र द्वारापुर पटने दलंत मपासुर दानव लियो उदरंत ॥ १ ॥

अत—ऊँ नाँव में नारायण जी चौध रूप हुइ उतरे चौध की माता कूर्मावती पिता जमदग्नि ऋषि गुरु अगस्त्य मुनि क्षेत्र द्वारापुर पटने दलंत जगन्नाथ पुरी मट्टि लियो उदरंत ॥ ९ ॥ ऊँ दशमं नारायण जी निष्कलरूप रूप हुइ उतरे माव मामे शुक्र पक्षे एका दशी सोमवारे सूर्य उत्तरायणे सवत १९५७ राजा विक्रमाजीत विष्णुदाम्य ब्राह्मण के घर स्वेत बोड़ा स्वेत पलान सुप दिल्ली पूँछ पुरामान पजी हाथ मरद अठारा हाथ पग नव हाथ अंवर द्वाराल्ला उस मर्म मोह चरतेगा अजू समान गऊ होवैगी पांच वरदा की स्त्री प्रसूत होवैगी निह कलरु की माता महतागी पितापन रिषि गुरु महजा नद क्षेत्र सवलपूर पटने दलंत किंकर दानव लियो उधरत । दन औतार शक्राचार्य उचरंते धर्म दान वधे गुरु चरणारविद्वो नमोनम. राजा राज करे प्रजा सुप करे जैसे दम औतार पढ़े का धर्म अरु जैसे करोड गऊ दान का एक धर्म जैसे करोड गंगाजी के अमनान की एकाधर्म तैमे दस औतार सुने का धर्म जैसे दम औतार सडे लेकर धरे अरु पढ़े एकोत्तर सौपितर स्वर्ग लोक को चढ़े धर्म नाल सुनते पढ़ते मोक्ष मुक्ति लभते इति श्री दश औतार सपूर्णम् शुभम् ॥ लिपत काशीराम सारस्वत ब्राह्मण कश्मीरी संवत १८०४ वि० चैत्र सुक्र नौमीयाम् ॥

विषय—दश अवतारों की कथा ।

संख्या ४२४ वी दश औतार भाषा, रचयिता—शंकराचार्य, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मन्त्रीलाल गंगापुर, ग्राम—मिश्रिख, डाकघर—मिश्रिस, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि ४२४ ए के समान ।

पुष्पिका में किसी का नाम या तिथि नहीं है ।

संख्या ४२४ सी. नारायणस्तोत्र, रचयिता—शंकराचार्य, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—५ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६७ = १८४० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामदयाल, ग्राम—पिहानी, डाकघर—थानगाँव, जिला—सीतापुर, (अवध) ।

आदि—यी गणोपायनमा ॥ अथ नारायण स्तोत्र धारंम । नारायण नारायण जय गोपाळ हरे । नारायण नारायण जय गोपाळ हरे ॥ कन्दना नारायण नारायण जय गोपाळ हरे ॥ १ ॥ यम नीरद संभ्रता कृतकलि कन्मपनादा नारायण नारायण जय गोपाळ हरे ॥ २ ॥ पीतांबर परिधाना सुर कन्वाण विधाना । नारायण नारायण जय गोपाळ हरे ॥ ३ ॥ जमुना तीर विहारा भुत अस्तुम मणि द्वारा । नारायण नारायण जय गोपाळ हरे ॥ ४ ॥

अंत—संभ्रम सीता हारा साकेत पुर विहारा । नारायण नारायण जय गोबिंद हरे ॥ १७ ॥ अचलावति अक्षरकर मच्छामुग्रह तत्पर ॥ नारायण नारायण जय गोबिंद हरे ॥ २८ ॥ शैलम नाम विनोदा रक्षं मुत प्रहसता ॥ नारायण नारायण जय गोबिंद हरे ॥ २९ ॥ भारति रति बर शंकर नामायुत मणिकातर ॥ नारायण नारायण जय गोबिंद हरी नारायण नारायण जय गोपाळ हरे । इति श्री मध्यंकराचार्य विरचितानां नारायण स्तोत्र संपूर्ण ॥

विषय—नारायण स्तोत्र ।

संख्या ४२५. भूगोल, रचयिता—शंकरद्वय (शिखोई श्रीरामम), कागज—बेनी, पत्र—२२६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुच्छेद)—११३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, कवि—आगरी रचनाकाल—सं० १९९९ = १८७९ ई०, लिपिकाल—सं० १९९९ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराष्ट्र पुस्तकालय, प्रतापगढ़ (अक्षय) ।

आदि—अथ भूगोल वर्णन लिखते । श्री भुत सब पंडित विद्वज्जन श्री भागवत पुराण आदि क मत से कहत है कि प्यास ने किन्ता है कि पृष्ठी अक्षर और वेस कण्ठ आदि क आधार से स्थित है और हमीका प्रमाण करके पृष्ठी को अक्षर श्री आधार निश्चय करत है श्री उपाधि सूर्य सिद्धार्थ श्री सिद्धांत निरोमणि आदि ग्रंथों में लिखा है कि पृष्ठी अक्षर श्री निराधार आकास में परमेस्वर राखा है और ज्योतिष किन्ती तरे अस्तव नहीं हो सकता क्यों कि सकल विचार कर्म मुहूर्त ग्रहण पाया प्रश्न आदिका प्रमाण श्री त्रिपि पत्र गणित करके वनता है सब लोग ज्योतिष को साथ मान के निश्चय करते हैं हमने ज्योतिष किसी तरे अस्तव नहीं है ॥

अंत—सब पीठ से जा जा मलाई की है साथ में उनको साथ इज्जत के सरकार हलक और गाँव दिया और गैर नही का मेक नतीजा दिया इबलवे का हाल संक्षेप से पंडित शंकर द्वय जमुर्ष अण्पापक मदर्मी सरकारी प्रतापगढ़ का कपर से लिखा है भूगोल में ईहाता नहीं था ॥ इति ॥ संवत् १८२९ वैसाख कृष्ण ११ दिन शुक्र इमई सन १८७९ इमषी शुभ मद् भूगोल कृतान्त श्री पुक्त सकल गुणगालकृत मालवारी बुद्धि सागर श्रीपाद अजीत सिंह महापुर की अण्णामुमार पण्डित शंकर द्वय न लिखा मुकाम मदर्मी सरकारी त्रिले प्रतापगढ़ दाहा—उत्तम पुरी मे पुर्ब दिशि बीम कोन मम घाम राज तिस्तेह में बसू बिराज नाम है ग्राम भा० क० ११ सं० १९२९

विषय—विषय गाँव के भूगोल के आधार पर लिखा हुआ भूगोल ग्रन्थके अंत में भारतवर्ष का सक्षिप्त इतिहास भी है ।

संख्या ४२६. माधुरी विलास, रचयिता—शंकर दीक्षित (लग्ना), कागज—उत्तम, पत्र—५२, आकार—८ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनु-पुट्ट)—७१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—स० १९४४ = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवनरेण सिंह, ग्राम—रामनगर, डाकघर—मलापुर, जिला—तीतापुर (अयध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरु चरण सरोज रज शंकर कवि धर मीम । रचहि पद्य अनुभव सनै भक्ति देहु वरसीस । परम हंस सत गुरु मिले पूर्व पुन्य मे आय । भेद भर्म दुविधा हटी दीना अलख जगाय ॥ सर्व विस्व ज्ञानीन को ब्रह्म रूप दरयात । रहत ब्रह्म मय विस्व मय अचरज कहो न जात ॥ जे कर्ता करता सोई मे न कर कष्टु काज । जो है सो है मोहि क्या रचिहँ अपनी लाज ॥ श्री स्वामी महाराज को रहत ध्यान दिन रैन । धरी पलक विसरै नहीं जहा रहू तहँ दैन ॥ शंकर नाम सुदेह का लगना मध्य निवाम । दीक्षित है अटेर का गुरु स्वामी का दाम ॥ अथ कविच प्रथम तरंग ॥ वृद्धत वचाया भव सागर से बांह थाम अक में उठाया भेद भरम नसाया है ॥ शब्द सुनाया हर घट में लपाया विपि द्विविधा मिटाय स्वाद अमृत चपाया है ॥ लाया परतीति चिमराया है मनुष्य भाव पाया है अमोल धन दारिद्र गंवाया है । झठी जग माया मन मेरे ना रचत अत्र प्यारा गुरु स्वामी जो हमारे मन भाया है ॥

अंत—दो० ॥ कृष्ण रूप सतगुरु मिले भेद भर्म गयो छूट । साचे को जग साच है झूठे को है झूठ ॥ सोरठा ॥ श्री स्वामी उमराव पुरी गोसाई मत्य गुरु । परमहंस का भाव शीतल शुद्धि हृदय सदा । दोहा ॥ सत गुरु का आधार लहि बनो आतम ज्ञान । भूल चूक जो होइ तो छमियों सत सुजान ॥ दो० ॥ श्री दीक्षित अटेर के प्रगट भये हर-वस । तिनके बावू राय जी मंशाराम अवतंस । दो सुत बावू राय के रसिक लाल मतिधीर । कुटुम लाल छोटे सुवन पढित गुण गभीर ॥ रसिक लाल के पुत्र जुग प्रथम कालका जान दूजे शंकर कवि करै नित सतगुरु का ध्यान ॥ जेष्ट भ्रात जे मम रहे कान्ह स्वर्ग को वास ॥ मैं सत गुरु के प्रेम से ईश्वर का हूँ दास ॥ सतिदयाल शंभू बटुक वाला प्राग प्रवीन । वधु चचेरे पाच में विद्यमान हैं तीन ॥ शंभू वालादात और प्रागदात बुधिवान । भयो डाक्टर विदित है कृपा करत भगवान ॥ मैंने नहि रचना करी रचनहार कोई और । मेरे सिर ऊपर धरी जस कीरति को मार ॥ इति श्री माधुरी विलास श्री दीक्षित रसिकलालात्मज कवि शंकर दीक्षित चैतन्य कृति सपूर्णम् शुभम् ॥ लिपतं बच्चू राम सवत् १९४४ मिती चैत्र शुक्ल सन् १८८७ ई० ॥

विषय—आत्मज्ञान ।

संख्या ४२७ ए. काव्य विलास, रचयिता—सतदास (उरेरमऊ, सुलतानपुर), कागज—बादामी, पत्र—१५, आकार—८ १/४ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपुट्ट)—१९०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९६६ = १९०९ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत चंद्रभूषण दाम, ग्राम—उमनपुर, जिला—वाराणसी ।

आदि—दो० जब शरीर यहि प्रगट था, कहीं रह्यो तब स्वांस । तन सूटे फिरि जात कई, गुफ फुर करहु प्रकास ॥ जब शरीर यह यहि रहा, स्वांसा सुख्य विनास । तन सूटे फिरि सुख्य में, रहत स्वांस की वास ॥ यह स्वांसा केहि बिधि भयो, तब में आय प्रवेस । सो सत गुफ कदना भवन, कहियु वर उपदेस ॥ स्वांस सक्ति करि मार खैंसि मिमित रज मो जाय । कीर्ष संगही स्वांस फिरि, ठामे आनि समाब ॥

अंत—बड़ा बिदामद धन सत्यको समूह भव । रँहते प्रगट गनि इच्छा सुनि कीजियु । रँह ते पुण्य कहि प्रकृति सुताते कहि महातत्व वैज रपदि कईकर कीजियु ॥ ताते भउ तीनि गुन, रज, तम, सत सुन, सत ते कतुईस वैभवा सुनीजियु । तामने पंच मूल पंच तब मात्र कहि राज सते इही वस पंच प्राण हीजिये ॥ इत्यन्तु

बिषय—शरीर रचना, प्राण अपान आदि वायु तथा इन्द्रिय आदि का वर्णन ।

सवपा ४-७ वी स्वांस विद्यास, रचयिता—संतदास (डेरपुर सुल्तानपुर), कगज—सकंद मोय, पत्र—८९, आकर—८ x ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुच्छुप्)—१४७६, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य छिपि—नागरी, लिपिकास—सं० १६८३=१९९९ ई०, प्राप्तिस्वान—श्री त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूर पराम पौंढे, डाकघर—तिरुकोई, जिहा—रायबरोली ।

आदि—दो० नमो नमो श्री राम गुफ, संत दया के आनि । ई दयाक उर जाक मम, बसहु वास निज आनि ॥ कबित-नमो २ राम गुफ संतत सुतंत उर दया के निजान पुर सतगुण आदि ॥ बिषय हरम मुह मगल मरन, जन तारन तारन असरन सरण निह, बिधिहु महेस शैव शारद नारद गनेश बंदत सुरेभ भी मुनेस बहुतान ॥ ॥ बिनबत संत दास आनि द्विष खीसे वास, कीजे पर कास मम दाय भिज जान ॥ दो ॥ भार्या स्वांस विहास यह, प्रिय सकळ सिरमीर । सुनि बिचार करिईं मुजग, बोध करन सब ईर ॥

अंत—हृदया-असत सत जो ढगाठ आदि की सत्यता । प्रगट प्रत्यक्ष यह जानु स्वांस । आनि सोमा सकस मानिले अनुसबक सक्ति धार्मंत यह स्वांस भास ॥ इन्द्रि अंत। करन सकळ की बिभर सब को आ वरन सम्यकास ॥ अकळ जानोह अहंत अनुभी भ्राम एक है आयु गत नर्ब पास ॥ बय धुज निजा नन्द बिहू अज व्याध व्यापक यथा पुण्य बार्द । सदा निरिबर्त बिर्बाव नवान सना । बिया निर्वोष निष्प्रयरास ॥ सर्व करता करत पुनः क्यु ना करत रहित सब सहित सब जो बिकारस । स्वांस सबप्र सत पद्य कत्रि पद्य कलि तत्र गत पही विप्रात मत संतदास ॥ दो० कबि को बिहू बुध मंत जन सब सौ बिनय हमारि । कछो बाल बुधि जो कहु । गुम सब टेव संमारि ॥ इति ॥

बिषय—शरीर के अन्तर्गत पर चर्मों और बँक नाक आदिका वर्णन ॥

संख्या ४२८ प कारखड़ी रचयिता—संतदास, कगज—साबारज, पत्र—९, आकर—९ x ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४, परिमाण (अनुच्छुप्)—५०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, छिपि—नागरी प्राप्तिस्वान—महंत मोहनदास (प्रिय पीतांबर दास के पाम है), ग्राम—मीनामड डाकघर—परिवार्यो, जिन्ना—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गोविंदायनमः ॥ अथ वाराखड़ी लिप्यते ॥ कका ॥ कमल नैन जवते
गये, तव ते चित्त नहिं चैन । व्याकुल जल विन मीन ज्यो, पल नहिं लागत नैन ॥ १ ॥
पपा ॥ पवरि न पाई स्याम की, रहे मधुपुरी छाई । प्रीतम विद्युरे हँ सपी, कीजँ कौन
उपाइ ॥ २ ॥

अंत—भभा ॥ मनक परी मेरे कान में, का न कही कष्टु जात । लगी चटपटी
चित्त में, सुनी अटपटी वात ॥ २४ ॥ ममा ॥ मन मोहन मन में वये, मगल मूरति आय ।
मगन भई छवि निरपि कै, हमें न आन सुहाय ॥ २५ ॥

× × × ×

गगा ॥ ग्यान ध्यान करि कृष्ण के, वाल रही धरि मौन । संतस ऊधौ महित हरि,
कियो द्वारिका गौन ॥ ३४ ॥ इति श्री गोपी कृष्ण सनेह चौतीसी संपूरण ॥ लिपतं परधान
राजाराम ॥

विषय—कृष्ण के वियोग में ब्रज वनिताओं का प्रेमाकुल होकर मिलने की उत्कटा
तथा उपालम्भादि वर्णन ।

संख्या ४२८ वी. (गोपी कृष्ण की) वारखड़ी, रचयिता—संतदास, कागज—
देशी, पत्र—८, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—
७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७३ वि०, प्राप्तिस्थान—
श्री रामस्वरूप शुक्ल, ग्राम—सुभानपुर (वर्तमान निवास सरैया), डाकघर—विश्रवां,
जिला—सीतापुर ।

आदि—४२८ पृ के समान ।

अंत—ररा रोकत दोकत राह में मागत हम पर दान लो माग्यो जो सब दियो
कियो न कष्टु गुमान ॥ लला लोचन लोने लाल के ललिता के सुप देन । अनियारं प्यारे परे
मनो सांवरे धैन ॥ ववा वनि लीला अद्भुत करी मेस न पावत पार विपन वाटिका वाग में
कुंजनि किये विहार । ससा सरद रैनि कू सुदरी लीनी मवै बुलाय नैन सैन दे सांवरे
वनी मधुर वजाय ॥ पपा प्याल लाल के भले राति रची पट मास वमीवट जमुना निकट
कीने रास विलास शशा स्नान को जमुना गई अवर धरि के तीर नंद नदन तरु पै चढ़े
चोरि हमारे चीर हहा हाहा पाए टोक कर विनती करि हे वीर । न्यारी कीनी नीर ते
तव हंसि दीनो चीर । क्षक्षा छाय रहे अब मधुपुरी छिन छिन प्रीति बढ़ाय ॥ ऊधौ
मोहन की कथा कहा लागि कहि हो गाय ॥ ब्रत्रा ब्रभुवन की सोभा सवै रही स्याम पर
छाई । अँसो को जननी जन्यो जो न देपि ललचाय । ज्ञज्ञा ज्ञान ध्यान करि कृष्ण को
वाल रही धरि मौन संत दास ऊधौ गये करि प्रनाम निज भौन ॥ दोहा ॥ जो गावै सीपे
सुनै गोपी कृष्ण सनेह प्रीति परस्पर अति वढै उपजै हरि पद नेह । इति श्री गोपी कृष्ण
की वारह पढी संपूरणम् लिपतं ब्रज लाल ब्राह्मण संवत् १८७३ ॥

संख्या ४२८ सी विषय को अंग, रचयिता—संतदास (उररमऊ, सुलतान-
पुर), कागज—सफेद, आकार—७ ३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण
(अनुष्टुप्)—२८५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं०

१९८३ = १९२६ ई० प्रासिखान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पाँचे, बाकपर—तिछोई बिछा—रायबरछी ।

आदि—अथमहु दखि सुनि पुनि नैनहु बिम्बां सुपै मासिका बोछी । गुदाखाप इन्दी अरु पीध, बिगही हाप मुमेरहि तोरै ॥ (मुन्दरदाम कृत) कचे पाँच सूद पीधे को बिबरत तीनहुँ छोके में छोछी । मुन्दरदास कई सुम संतो, मछी भाँति पहि अर्य छोछे ॥ कबिच—अथग स्वरूप जानि नैन नाम पहिचानि नाम मुनि रटत स्वरूप दृष्टि भाषो है ॥ टीका ॥ जीम हू जिकि रिक्कि सूँघब सारम रुहि । नासिका बिसक रहि बोळ सत गायो है ॥ गुदा ज्ञान, खाब ध्यान इन्दी अतिवार मान । अरु प्रेम पीबत बहुत सुख पायो है । मन है सुमद तौल निर्बिर कल्प जानि मनि कहत हजारी जर्ब पूसही मुहायो है, ठैब नाम धेइ को सुभास पाँच कबिचित सूद अमिमान अरुबीचे कही स्वाग है तीन छोके काया तामे बिबरे निरसक मदा अमल अरुइ वाके फाँगी महीं दाग है ठैब पद पाँच अरु स्वाग अमिमान तब अतमा बिचार महीं रहे बित रुग है ॥ कहत हजारी दास बाकय को बिछास सत, आबिई बिचार मान जाके शाब जाग है ॥ इत्यादि—

× × × ×

अथ—सूद-आकर वैर पुरान परै किन, नीं व्याकरण परै जो कोय । संप्या गहै करै पद कर्महि, गुन अरु काळ बिचारै साय ॥ रासिकमत सबही बनि आरि, सब तत्रि मन में शलै दाब । मुन्दर दाम कई सुनु पंडित, राम नाम बिन मुक्ति न होय ॥ शाब्द पद वैर चारि परै सब झारि २ पहिके पुरान अइ इत बिबि कोई है । टीका—नब व्याकरण परै संप्या सीमि भाँति करै रहि पद कर्म धर्म भीकी बिधि माई है ॥ तीन गुण तीन काळ जानत बिचार हाल । रामि पद^{१२} बूज बाळ मछी बिधि माई है ॥ और बिधा दम^{१४} चारि पहिके सुधरि चारि, बिन राम नाम गति मुक्ति नहि होई है ॥

बिषय—मुन्दर दाम जी कृत बिषय का अंग नाम पुस्तक का टीका ।

सूचका ४ ६ प. अयोध्याकांड को टीका, रचयिता—संतसिंह, अंगज—देवी, पत्र—१०९, आकर—१२ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुपुष्ट)—१००८०, पूर्ण रूप—अर्थात् स्वच्छ गद्य, क्विपि—नागरी, छिपिकाय—सं० १९५२ वि० प्रासिखान—श्री महाराज प्रकाशसिंह जी महापुर जिल्ला—मीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः बालकांड में मंगले उपर चारों संवायों के हेतु समास प्राप्त करत ह्योपर श्री ब्रह्मादि को के प्रगट रग के आरम पुनः अथतार पारजा दुष्टों को मारना अनुप मगकर परशुरामादि को को बागर बनि बागना सीता सहित परम मंगल यय कोछलपुरी में यग आरवादिह प्रसंग कही नब अयोध्या कांड की निर्दिष्ट समाप्ति अरु प्रथी गमन हेतु बाँकर जी का स्व बिषयक आशीर्वादामक मंगल करते हैं । नाम के चरमि सो मगवान सकर सबदा मैरी रक्षा करो जिन नामांक बिषे गिरजा बिराही है चक्रमस्य अरु विमोति पद के सर्वत्र अनुकरण निमिरा है किंवा चक्र पुनः अर्थ मौ जिसके नाम अंग न बिद्युत माई सो पीछ कदि जावे है पुनः अत्रि सुतामी मोमती है पावती को

वाम ओर धारण को भाव यह जो मयांड में तन्पर है किंवा वैटक में हटावाम ओर ही कहा है ताते उमा को प्रेम सो हृदय में लगाए रापते हैं अरु भूधर सुता नाम को कथन का भाव यह शिव जी गिरीस है अपने ठाम की सुता जानकर कृपा करते हैं किंवा गिरों को प्रति उपकारी जानकर गिरिजा में भी सनेह करते हैं देव नदी श्री गंगा जिनके मस्तक कहाँ गिर विषे विराज है । प्रामाण अमर उचमान गिर शीर्ष मूर्च्छाना मन्त्रको त्रियां माल विषे जाके बाल चंद्रमा विराजे है ।

अंत—छट । मिय राम पियूष पूरण होत जनमन भरत को । मुनि मन अगम यमनेम समद्रम विषम वन आवरत को । दुख दाह दारिद्र्य दम दूषण मुजस मिय अपिहृत को । कलिकाल तुलसी मे मटन हट राम मनमुप करत को भरत चरित करि नेम तुलसी जो साठर सुनहि समि राम पद प्रेम अवम होठ भव रम विरत ॥ टीका ॥ मियेति प्रेम रपी अमृत कर पूरण जो भरत का तनु रपी पात्र है जो यह न उपजता तो मुनीश्वरों के मन में भी आवने जो कठिन व्रत केमाटिक हैं तिममो किमने प्रवर्तनाथा । दुपेति दुपहु कर जो हट्टे को दाह है अरु दारिद्र्य दमाटिक जो द्रोप है जिनका जस के मिय मिसने हरना या तत्व यह और नृपों के यश कथन का लोगोंको मिश्र्या वादाटिक लोगहु को द्रोप उपजने है और भगवत की भक्ति मिश्रित जो भरत की महिमा कहेंगे तिनके दोष नव नाश होवेंगे जाते संतों का प्रभाव प्रभो मम विपत है यह प्रभू पर उपकार हुआ अब अपने ऊपर उपकार कहिते हैं कल इति । इस घोर समयमें मुझमे मूढ़हु का श्री रामचन्द्र के ममुप किमने करना था तन्व यह भारत के वचनहुं मो सर्व पातकियों का उद्धार प्रभो की कारण कर कहा है तिस भरोमे कर मैं भी कारण आया हूँ ॥ अब अयोध्या कांड की समाप्ति करते हुए इसका फल कहिते हैं भगतेति यहि भरत चरित्रों का मिश्रित जो अयोध्या कांड है इसको जो नियम कर पढ़ेंगे तिनकी सीता श्री रामचंद्र चरणारविर्दों का प्रेम अवश्य होयगा अरु विषय रम में वैराग्य भी अवश्य होगा इसका भाव यह भरत के वचनहुं को सुनकर तौ प्रेम उपजैगा अरु राजादि को सुषों मे भरत की उपरतता सुनकर वैराज होइवेगा ॥ इति श्री रामायण अयोध्याकांडे टीका मतमिह वृत समाप्तो संवत् १९५२ वि० ।

विषय—तुलसीदास जी कृत अयोध्या काण्ड रामायण का तिलक ।

संख्या ४२६ बी. रामायण बाल कांड की टीका, रचयिता—संतमिह, कागज—देशी, पत्र—४३०, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनु-पुष्प)—७७६०, पूर्ण, रूप—नितांत स्वच्छ, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९५१, प्राप्तस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—पीतापुर ।

आदि—अथ श्री बाल कांड साटीक लिप्यते ॥ प्रथम विनायक विघ्न हर वर दायक पद वंद । पुनि शुभ दानि मरस्वर्ता प्रणवो आनंद कंड ॥ १ ॥ श्री गुरु नानक नमो नित नारायण वपु जान । दम्यौ रूप दस दिसामय दीपति दीजै दान ॥ २ ॥ गौरी शंकर जान घन वदौ सात सरूप । आदि कविह जिन राम जय वरन्यो जाहि अनूप ॥ ३ ॥ महावीर मतिधोर मम मम को कोटो पीर । नम तुहि तनय समीर मुहि दरमावो रघुवीर ॥ सीता सीतल रूप प्रभु राम बल्लभा जान । वदौ मो पर कृपा कर वरनौ भाव महान ॥ रमत

राम सुवधाम मम कुमति दाम को काट । राम चरित रम प्रगट कर कसो दियाबी बाट ॥
 तुलसीदास तुलसी मल रामहिं प्रिय गर्भोर । सिद्धि जब हुससी दीन तब मो मम वोपी
 पीर ॥ बातिक ॥ बातिक भी राम चरित मानस को भी संकर जी ने परम पवित्र जान कर
 जोशों के कस्याज निमित्त प्रथम तिसमो गिरिजा को भस्मान कराया है ॥ अरु सोइ चरित्र
 सागों के मनो से दाय निहासने हेतु अति विचित्र रीति सों ब्रह्मा जी ने सत कोट वर्जन
 अरु बार बार मानन करके अपनी बुद्धि अरु बानी क सफस करिबे हेतु प्रभू के मरोसे पर
 इसको पूजा मो प्रवर्तन की हृष्य करी सो भी राम चंद्र स्वामी संत सिद्ध को अपना
 दासानुदास जान के हम प्रबंध की निर्दिष्ट समाप्ती अरु प्रवचनगमनादि करावेगे ॥

अंत—मूल । बहुर लोग राजापु भवक । सुतन समेत रूपति गृह गयक । जहं
 तहं राम क्याह सब गयक । सुजस पुनीत कोक तहं छापा ॥ आये क्याहि राम पर जवते ।
 बसी अमंद् अक्षय सब तबते । प्रभु विवाह जस भयो उछाहू सकै न बरनि गिरा अहि
 नाहू । कबि कुछ जीवन पावन जानी । राम सिया जस मंगक पानी । तेहि ते मी कुछ कहा
 यवानी । करन पुनीत हेतु निज बानी (बहुर रति) बहुरे कहे छिरे । पर जाने की लोचों को
 राजा अंगु मई । तब सनी लोग अपने घर में प्राप्ति मये । भीर राजा भी अपने मंदिरों
 में पुत्रों समेत विधाम करते भये (जह इति स्पष्ट) जी कोक कई भीरो प्रभों से तुमने
 विवाह का उदास बड़ा कहा है तिम पर कहित है (प्रभु इति स्पष्ट) जो कोक के शेष
 भाग अरु सरस्वती नहीं कहि सकति तौ तुमने किस भांति वर्जन किया तिम पर कहिते
 है (कबि इति) कवीहरों क जा कुछ है सो मी भी राम चंद्र सुजस कर ही पवित्र
 दान है अरु मेरी विन्या के ऊपर भी सरस्वती है तिस कर से मेरे से रहा नहीं गया भयबा
 कबिबिनेपण अपने लगनकरा अपने कुछ परपरा को जीवन अरु पुनीत करणे द्वारा भी रामचंद्र
 का ही जम है ॥ सो अपना कुरु से शरीर का कुछ अयबा गुरों का संप्रदाय, भी भी रघु
 काय जी का ही उपास कया सो विचार कर अपनी वाणी पवित्र करने निमित्त भी राम चंद्र
 चरित्र कुछ मीने भी बरमान किया है अरु अब इस कांड को समाप्त करते हुए अपनी
 मति का पवित्रता कथन पूर्वक प्रभों के जस का महात्म पैक छेइ अरु पैक होइ में कहिते है ।
 निज गिरा पावन करन कारण राम जस तुलसी कसो । रघुबीर चरित अपार बारिष पार कबि
 कीने लखो । उपबीत क्याह उछाह मंगक मुनि जे सादर गावहीं । ईदहिं सम प्रमाद ते जन
 सर्वदा सुप पावहीं । मोरछ । भी रघुबीर विवाह जे सप्रेम गावहीं सुनहीं । तिम कह सदा
 उछाह मंगलाय तन रामजन ॥ टीका ॥ अपनी बानी पवित्र करन निमित्त रचक भाष
 रघुनाथ जी का जस मी कहा है अरु रामचंद्र को चरित्र रूरी समुद्र पार ती बास्मीकादि
 का भी नहीं होया । उपबीत कसो जन्मोपवीतादिक जा प्रसभो क मंगल है तिमको जा
 सादर से सुनो गार्हग तिमका सदा मंगल होईग प्रयाजन यह । भी रामचंद्र के जन्म से
 विवाह आदिक जा उपाह है जा इत्य के स्नेह पूर्वक इनको गांठ सुनना तिमको सदा
 मंगल हावगे प्रयाजन यह क्यादार परमार्य का अविनायी आनंद हावगा जान रामचंद्र का
 जप मित्तु । इति भी राम चरित मानने सहक कति करतु विघ्नमने अपिरक मति

सपादने प्रथम सोपान सपूर्ण ॥ श्री सवत १९५२ लिपि रामदीन मिश्र पठनार्थ श्री महा राजा धिराज राजा मुनीश्वर वक्स सिंह जू के ॥ श्री राम श्री राम ॥

विषय—श्री गोसाईं तुलसीदास कृत चालाण्ड का टीका ।

संख्या ४३०. कवितावली, सरजूदास, कागज—बादामी, पत्र—३०, आकार— $८\frac{1}{2} \times ६$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६५, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५० = १७९३ ई०, लिपिकाल—स० १९८० = १६२३ ई०, प्रासिस्थान—श्री जानकी सिंह, ग्राम—उमरवाला, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—कवित्त—अतुलित बल गेह स्वर्न शील के समान देह दानव कुलई धन को वन्दि ज्ञान धाम भो । बांद्र अधीश यक शीश महावीर धीश दास पीर हारी बुद्धि निद्धि निह काम भो ॥ बालक ब्रह्मचारी रास दास है सरारी जू को । लखन भरतरिनि मानौ दूजे राम भो । मारुत सुवन यश जाहिर सुवन विपे लिये जो कुअक माल मेटे गुन ग्राम भो ॥ सवैया—हनुमान महाबल पिग चरयो दशक धर गर्व विनाशन हौ । अंजनि पुत्र समीर तनै रामिष्ट भिया दुख नाशन हौ ॥ लक्ष्मण प्राण को दान दिहाँ अम्फाल्गुन मित्र प्रकाशन हौ । अति विस्तृत सिधु को पार गयो, हनुमान महा सुख वासन हौ ॥

अत—कवित्त—सुरन सतावैं विष्णु भक्तन को दु.रदेयं शिव ध्यान्य लेय पियैं सुरा भूमि सुरजो । चोर का वसावैं अस्ति बैल का कुचावैं, और केर पाप गावैं भागिलावैं विप्र पुरजो ॥ गर्भ गिरावैं उपकारी का नशावैं । कुंआताल को पुरावैं नही वोले न्याय फुर जो । केतिक हजार पाप वेदन वखान कियो, हनकी समान सब और पाप धुर जो ॥

विषय—धर्म नीति और कुकर्मों से बचने का उपदेश ।

संख्या ४३१. जैमुनि पुरान (जैमिनि पुराण महाभारत), रचयिता—सरयू राम पंडित, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—४८, आकार— $१६ \times ७\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३४१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०५ = १७४८ ई०, लिपिकाल—स० १९१५ = १८५८ ई०, प्रासिस्थान—श्री चंद्रिका वक्स सिंह जर्मीदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाचवक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाया नमः ॥ अथ जैमुनि पुरान लिख्यते । सोरठा ॥ सुन गुन ग्यान निधान । मंगल मय सुपमा सदन ॥ कलि विप तूल क्रसान । एक रदन करि वर वदन ॥ जाहि अमगल मूल । सुमिरति गनपति गौरि सुत ॥ जरहि व्याल जिमि तूल । विघन व्याधि सकट सकल ॥ छद् ॥ १ ॥ नमो गौरिजं ग्यान रूपं गनेशं । नमो मोहमग्यान नाशं दिनेश ॥ नमो धूम्रकेते गनेसौक दत्त । नमो विघन छेद धर परसु हस्तं ॥ नमो बुद्धि कांत नमो गौरि पुत्र । नमो निर्विकार नमो चारु वक्र ॥ नमो बुधि बोधा नमो शत रूपं । नमो ग्यान गोपार सिधिं सरूप ॥ भजेह गनेस गुनं ग्यान गेहं । नवीनार्क वारं नमो सुभ्र देह । करि द्रान नासोभिन इन्दु भालं । चतुर बाहु कठं चलं चारु मालं ॥ वरं कक्र पर फल अंबोज नेत्रं । दधत्तं महा दिव्यावस्त्र विचित्र ॥ सिर सुदर चदनं कुंकु मांग । डरोहेर

सोमाद्यप्युर्ध्वं सुरंगं ॥ प्रसन्ना भं संग संताप नासं । सुमं सर्वं कामं सग्यान प्रकारां ।
विभुं शयक घोषं पूरु प्रहारी । प्रदं सर्वं क्षिप्यार्थं फल पावकरी ॥

अंत—(बी०) ॥ भाषा भगित कूर कवि जोई । आवर—बोम्य-तदपि नहिं लोई ॥
करत विचारण्य कट्टु कविताई । हरि जस जानि सुनिप मय कार् ॥ परम इंस सुधि साधु
सुयानी । गुण प्राहक जग जिमि पय प्राणी ॥ गदि गुज कर औगुमदि दुरेई । कथत सुमत
सावर सुय पीई ॥ एंव ॥ सुय पाईई सुनि सुमन ओता जिमदि मिय हरि जस मही । पर
सिद्ध वैमुनि की कथा अति कूर कविता को कही ॥ बह बुधि विद्या हीन इतिमति जह
अवगुण मय महा । श्री गुरु कृपा यह चरित कट्टु निर्मित सो निज मति करि कथा ॥
शोहा ॥ विसिध प्योम बसु बुध्य वर सुकृत अष्टमी फाग । पूजा में श्री गुरु कृपा कथा
जुधिष्टिर राज ॥ १३१ ॥ इति श्री महा भारते पुराणे बर्मांसक मधि पर्बे सूत सौमिक
संवाद वैमुनि पुराणे जज्ञ कृतो राटा जुधिष्टिर समासं पद त्रिसमोऽध्यायः ॥ समासं द्यम
मस्तु । खानीपुर एक ग्राम इधि धर्म राजकी राज । राजत तैह संपति सहित बफ्तावर
महाराज ॥ ता मुपकं रक्खन जुग तामु लणप बळ धाम । गुप बुध सत संपते तैहि मय
प्रविसित अंग ॥ मासोतमे माये आपाइ माये शुक्रु पसे तिपी प्रति पद्यावी रवि वासरे
मिबं पुस्तकं लिप्यते दुर्गा मिमिर श्री महाराज बर्मांसतार धर्म मूर्ति श्रीदान बंस ठाकुर
देवी सिंह तस्य पठनार्थं श्री राम भी संवत् ११११ कृष्णाय वासु देव- ॥

विषय—इस पुस्तक में ३६ अध्याय हैं—प्रथम ४ अध्यायों में पद्म की सेवारी बोधा
छाया जाना और सेना एकत्रित होना कहे गये हैं, पंचम अध्याय में बोधा कृतम्य और उसकी
रक्षा में युद्ध वर्णित है । इसमें कृपसे अनुसाक नील रत्न इंसप्यज की गुण सुबेग राक्षस
(बकात्मक) बभ्रु बाहन अर्जुन पुत्र (संक्षिप्त रामवज) सीता त्याग छत्रकुल अम रामास्वमेये
छत्रकुल का राम आदि से युद्ध तथा राम के मोहित होने पर वात्सीकि द्वारा दक्ष सैम्य वीरम्य
और सीता राम सिद्धप कहा गया है । मयूर पत्र परि समां पन्द्र हास और समुद्रस्य
मुनि की कथाएँ अष्टमी रीति से वर्णित हैं । अंतिम अध्याय को छात्रर सबमें अमे हर्षण
युद्ध कहे गये है । अंत में युद्धों का संक्षिप्त इतिहास कह कर कवि ने अर्जुन की स्वपुर वात्रा
का वर्णन किया है । अंत के (३६ वें) अध्याय में ब्राह्मणों का श्रगदा कृष्ण द्वारिक्य वनव
सब राजाओं का अपने अपने घर जाना और कथा महात्म्य वर्णित है ।

विर्माण करकः—विसिध^१ प्योम बसु^२ बुध्यवर^३ सुकृत अष्टमी फाग पूजा में श्री
गुरु कृपा कथा जुधिष्टिर राज ॥ अगुम मुदी ८ संवत् १८०५ ।

संख्या ४३२, कृष्ण विद्यास, रचयिता—अविताद्य (सार्वी, हरदोई),
कागज—देसी, पत्र—४७, आकार—१० X ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण
(अनुपुद्)—११८०, पूर्ण रूप—प्राचीन पय कवि—वागरी, रचयिता—सं०
१०३५ = ११७८ ई० प्रासिस्थान—करला रामदयाल ग्राम—नदपुरवा, बाकबर—नेरी,
जिजा—सीतापुर ।

आदि—सिद्धि श्री रामेद्याय वमा ॥ श्री मंगक मूर्तिर्बयति ॥ सिध सरण्य सदा ॥
श्री गुरु वे नमः ॥ अय कृष्ण विद्यास लिप्यते ॥ अक्षत वदन पर भारती बद्ध भारती वाजु ।

दिन प्रति चरण गणेश के वंदनीय मन आनु ॥ सरन लहत जित सांकरे झारखंड के भूप ।
 वसत मही मंडल तिलकु चाटा नगर अनूप ॥ सदा रहत है दाहिनी भेरो गणन समेत । प्रगट
 महा काली जहा ममर गिद्धि की देत ॥ भए भूमि पति उग्र अति जहां एक ते एक । सुमति
 सुमील भुवनपती दाता सूर अनेक ॥ सदा मुखी जाकी रही मही भुजा ली छाह । देव अंम
 तिहि वंम में आक माहि नर नाह ॥ छट मन हरन कवित्त ॥ एक रम कीन्हो पतिव्रत मो
 मो निवाहि परि वासु करि सविता फतूह चाके पाठ में । पृथु की मी कीरति प्रयति भूम
 लोक जाकी देवन के ओक महा नागन के ठाड में । लोह बाकी नद धरनी तल को चट
 आजु जाहिर जहान करामात जाके नाड में । मेठनी मरट मट गलित गर्यदन को अंकुम में
 आक वानी रंठ जू नगाद ने ॥ दू कुमार सुकुमार अति हरपि टिये विधि ताहि । विदित
 नाम द्रुक् वाव जी अनुल केशवा साहि ॥ कवित्त ॥ गिरद ने वाही गौटवानो गोलकुंडा दावि
 वीजापुर पूरि रह्यो पूरन प्रभाव जी । मट के गर्यदन मो पकिन पुहुमि रही मक्ति निजाम
 माहि जाके तेग तावीजी ॥ सेघर करै सविता को उन्नत मेनी को और मंडनु आनी को अब
 नीको आफ ताव जी । घरि वहे भार भयनद पर आंक याकी बढयो वाहु चली वरिवंड वीर
 वीर वाव जी ॥

अंत—अथ कवि नगर वर्णन ॥ जप तप पूरन धमत जामें विप्र जे वै शासन लहत
 नाहीं कोन अवनीश ते ॥ वेद के निधान औ पढ़त व्याकरण अंग्यो जैमो नर लोक माह
 प्रगट्यो फनीस ते ॥ चारि कोम दक्षिण वहत जामें वेई जल तपु के भगीरथ जे कादे शिव
 सीस ते ॥ साडी नाम नगरी शिपा कर्नाज मंडन की सविता रहतु तामें सापि दस वीम
 ते ॥ अथ कवि गोत्र वर्णन ॥ छंठ छप्यै ॥ चतुर्वेद कुल को तिलकु गोत्र गांतम मुनि
 जाको ॥ विश्वनाथ वर विप्र पुत्र के सव पुनि ताको तासु पुत्र समरथ नाम गोवर्धन गायो ॥
 जाको सुत कवि मंजु भक्त रवि को जो कहायो ॥ ताके सुत सवितादत्त कवि कृष्ण साहि
 जस कर रहे । पूरन प्रबंध सरवर कियट विशद टकि अमृत वरपि ॥ अथ आशीर्वाद ॥ गंगा
 में जव लगि रहै सकल पाप हर पाथु सुप समेत तव लग जियो कृष्ण साहि नर नाथ ॥
 कृष्ण साहि आयसु मयो आदिहि कारन जासु । नाड धरयो या ग्रय को याते कृष्ण
 विलास ॥ संवत ॥ जादिन दैस कुमार की भई वरप वाईस । साके विक्रम भूप के संत्रह
 सै पैंतीस ॥ भादौ मास पुनीत अति जाते हरपति लोगु कृष्ण जन्म तिथि अष्टमी भौमवार
 निद्धि जोगु । कृष्णदेव जगदीस की कृपा साहि की होइ । सविता कृष्ण विलास की भई
 जन्म तिथि सोइ ॥ कियो सुदिन आरंभ तिहि श्रुति मुख छट बनाइ सविता सविता देव के
 चरण सरोज मनाइ ॥ छंठ छप्यै ॥ वलि जव लगि पाताल इंद्र जव लगि इंदासन । नभ
 जव लगि सविता मयक सव विश्व प्रकाशन ॥ जव लगि कृष्ण विलास लोगु महि मडल
 भापै । कमठ सेस वाराह भूमि जव लगि सिर रापै । बछा साहि नंदन नवल जग ऊपर
 जय जिन लियट । संतति संपति सव सुप सहित कृष्ण साहि तव लगि जियट ॥ दो० ॥
 गगा में जव लगु रहै सकल पाप हर पाथु सुप समेत तव लग जियो कृष्ण साहि नर नाथ ॥
 अथ ग्रंथ समाप्त गणेश सूर्य को कविच ॥ देव की दार कर गगन के गंगा जल जाको पट
 पंकज जुगुल भेयत है ॥ सविता प्रमाण सर्म सुप प्रगटनि सुर तर कुसुम पराग दरमतु है ॥

नाम के प्रभाव मंद मति सुदृग् नाव महा कविताई सिधु मे विसंक वेहूपतु है । भरि परे भव तम विषम विनाशान को देवगनपति विन पति सेहूपतु है ॥ इति श्री मम्महाराम कुमार श्री कृष्ण साहि कारिते श्री सवितादत्त कृते कृष्ण बिकासे सांगो पांग बव रस विर्यबो चतुर्ब ॥ समाप्तो प० कृष्ण विलासाः कविच संख्या १६६ । दोहा संख्या २१९ । छम मूपाय संपूर्ण छम मस्तु ॥

विषय—नायक नायिका मेह, नहरस आदि ।

संख्या ४३३ प. कविच रत्नाकर, रचयिता—सेनापति, अग्रज—देसी, पद्य—३९, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपमृत्)—५९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य छिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रामपुरा मिश्र, ग्राम—रतनपुर, बाकमर—बाहीगंज, जिला—घोरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ छन्दे ॥ कविच रत्नाकर छिप्यते । परमबोधि जाकी अन्त रमि रही निरंतर । आदि अंत अठ मध्य गगन द्वा दिधि बहि रतर ॥ गुन पुरात इतिहास बेह बंदी जन गावत । भरत ध्यान अनरगत पार ब्रह्मादि न पावत ॥ सेनापति अर्नद धन रिधि सिधि मंगल करन । नायक अनेक ब्रह्मांड के एक राम सेतत सरन ॥ कविच ॥ पाई जो कविन अरु यक तप जप कर विद्या उर धरि परि हरि रस ते सो है ॥ ताही कविताई को सुखसुखसु आहृत है सेनापति आन्त न अछर को बोसो है ॥ पाई के परस जाको सिंकार सचेत भइ पायो बोध सार सरदाक को धरोसो है ॥ अरु न्य मरोसी मिय परत बरोसो ताहि राम पद पंकज को पूज्य मरोसो है ॥ मूप समा मूपन छिपाये पर वूपन को बोल एकहु पन कहे न बेह पाई के ॥ राज महाजान रे सकळ कछानि सेनापति गुनपान अरु हू को गुनदाई के ॥ तुमही बताई कहु श्रीनी कविताई तामे होइ अगेताई दुखताई के सुभाई के ॥ बुद्धि के बिनाह के गुसाई कवि नाइ के सुखीजिये बनाह के दीक्षित परसुराम बार्हा है विहित नाम जिन कीन्हें अरुप जाकी जग में नदाई है ॥ गंगधर पिता गंगधर की समान जाकी रंगतीर बसति अनूप जिन पाई है ॥ महाजानि मनि विद्या दानिह के पिता मनि हीरामन दीक्षित ते पाई पंविताई है ॥ सेना पति सोई सिता पति के प्रसाद जाकी सब कवि कवन ई सुबत कविताई है ॥

अंतः—अथ रामायन वर्णन । सुर तद सार की समारी है विरिधि पधि कंचन सुप चिन चित्तमनि के अरुप की । रागी कमल को विप आगम कहन हार सुर तद देवी सुप देवी प्रभु माई की ॥ बेह में बपानी तीनों लोकन में उजुरामी ॥ सब जग जानी सेनापति के सहाय की देव सुप मंडन भरत सिर मंडन बंदी अथ पंडन पराक रसुराई की ॥ १ ॥ कंज के समान सिद्धि मानस अमुप निधि परमनिधान सुरसरि मकरद के सब सुप साज सुर राजन को सिरठाज भाजन है मंगळ मुकुटिरूप कंद के ॥ सरनू चिहारी रिपि गारी साय हारी शान दाता हित कारी सेनापति मति मंद क ॥ विश्व के भरन सनकादिक के सरन शोक राजत अरुन महाराजा रामचण्ड के ॥ २ ॥ छणै ॥ मूर्धित रसुर बंस मळ बलमल मव पंडन मुनि जन मावस ईस विहित सीता सुप मंडन ॥ त्रिमुवन पाठन धीर बीर राजन मद् गंडन ॥ ठहिट विभीषण भाग जेप निज परिजन रंजन ॥ सुरपति नरपति मुजगपति सेनापति

घंटत चरण ॥ राजाधिराज जय जय सदा राम विश्व मंगल करन ॥ ३ ॥ मद मुसकानि कोटि चंद्र ते अनंद राज दीपति दिनेस कोटिहू ते अधिकानिये । कोटि पवन मानहू ते महा-बल वान कोटि काम धेनु हूते अति दानि जग जानिये ॥ और ठौर मूढो बखत असो सेना-पनि सीतापति याहू ते अधिक गुन पानिये, असो अति उकति जुगति सो घतायो तासो राजाराम तीनि लोक नायक वपानिये ॥ (अपूर्ण)

विषय—शृंगार के कवित्त ।

संख्या ४३३ वी. कवित्त रत्नाकर, रचयिता—सेनापति, कागज—देशी, पत्र—८२, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३८४, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४१=१८८४ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री कृष्णविहारी मिश्र, माडेल हाउस, जिला—लखनऊ ।

आदि—४३३ पृ के समान ।

अंत—सेनापति वरन्यो तुरग उर गडम के पाइ । तीनि पाइ की भाति ज्यों चलत पारिह पाइ ॥ ७६ ॥ पाइ एक सौ साठि है तिन पुरु चले न । ताके सम वाजी चलै सेना पति हारै न ॥ ८० ॥ आदि अत जाके हैं आदि । अंत न जाके सो चौ वाडि ॥ ८१ ॥ देह विनार्हा हू तरु जात निसि दिन सोचि कहाँ सो वात ॥ ८२ ॥ जित पाठी सिर वो रहै कीनी परी अनूप । सेनापति वारह परी तिय पलका सम रूप ॥ ८३ ॥ सम्वत् सत्रह सै छर्म मेढ सियापति पाइ ॥ सेनापति कविता सजी सज्जन सजाँ सहाइ । ८४ । इति श्री कवि रत्नाकरे चित्रकाव्य वर्णन नाम पंच मस्त रंग ॥ ५ ॥ श्री सम्वत् १६४१ अस्विन मासे शुक्ल पक्षे तिथौ द्वितीया या लिखित मिटं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण मिश्र जुगुल किशोरस्य पाठार्थ श्री शुभ स्थान गंधौली ग्राम स्थल वरदार श्री जानकी बल्लभोजयति—श्री कृष्णाय नमो नमः ।

संख्या ४३४ सृष्टि पुराण, रचयिता—सेवादास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७२ = १७१५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रायलाल, ग्राम—रमुआपुर, ढाकघर—धौरहर, जिला—खोसी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सृष्टि पुराण सेवा दास कृत लिप्यते ॥ ऊँ एक उपराति हेरा नाही । द्योय पापे सृष्टि नाहीं । गुरु पापे ज्ञान नाहीं । सिद्धि उपराति ब्रह्म नाहीं । आपा पापे परचा नाहीं । काया उपराति क्षेत्र नाहीं । आत्मा उपराति देवता नाहीं । नाल उपराति मत नाहीं ॥ चक्षु उपराति दृष्टि नाहीं ॥ निर्भय उपराति अभय नाहीं ॥ संजम उपराति मुधि नाहीं । सतोष उपराति सुष नाहीं ॥ अमर उपराति सिद्धि नाहीं ॥ अभय उपराति करामात नाहीं ॥ माना उपरात जन्म नाहीं ॥ गर्भ उपराति नरक नाहीं ॥ पत उपराति हानि नाहीं । चित चंचल उपराति रोग नाहीं ॥

अंत—द्वेष उपराति कुतुषि नाहीं ॥ निर्दोष उपराति सुबद्धि नाहीं ॥ सृष्टि उप-राति पोष नाहीं ॥ अज्ञा उपराति जाप नाहीं ॥ अधोर उपराति मत्र नाहीं ॥ नारायण उपराति दृष्ट नाहीं ॥ निर्जन उपराति ध्यान नाहीं ॥ इति श्री सृष्टि पुराण सेवादास कृत

संपूर्ण समाप्तः क्लिप्तं गंगाराम निरंजनी ॥ संबद् १७७२ वि० शिव शिव शिव शिव शिव शिव
शिव श्री शाराप्य पारबद्ध परमात्मा ॥

विषय—कुड सिजान्त ॥

संख्या ४३५, संवत् १७७५, रचयिता—सेवकराम, कायत्र—देसी, पत्र—१६,
आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुच्छेद)—४००, पूर्ण,
रूप—गठित, पद्य, लिपि—बागरी, प्रासिस्थान—श्री गणप्यसाव, ग्राम—मनीगा, जिळा—
सीतापुर ।

श्री गणेशायनमः ॥ जय गंगाएक पुष्प विलास क्लिप्तये ॥ बहु रंग विरग कण्ठेक
करै । सब जंतु विकास के बाह बह ॥ सुर चरण सिद्धि मुनीस किते । गिठ सेवक रेनुका
बीच हुदै ॥ द्विज मति अनेकन जाप करै । मुक्ति सार सों वेद के पाठ करै । परि षण्ण
दिय मनु रापु तहां जहं पुष्पन जुक्त तरंग उठै ॥ १ ॥ उठरै बहु रंग उतंग द्विधोरसु पीप
प्रसंगनि काशि तरे ॥ मग बास सुकुंडुम बासित बारी मर्बा यन मोहत बिद्रु छरे ॥ कदि सेवक
गग मरीचिन की उपमा कवि बर्षत कयो न हई ॥ छवि देपि अघात न बधु तहां बह पुष्पन
जुक्त तरंग हुते ॥ २ ॥ अमरै सुमरै मिलि पान करै चहुं जोर सुगंधन की रूपटै । कडकै
हुककै थिकै हककै सुर जस बपू तट के निकरै ॥ छटकै परकै अमकी कटकै मन पाप पहार
करै । मरिचोचन सबक देपु तहां जहं पुष्पन जुक्त तरंग हुत ॥ उठरै छरै यहरै लहरै हहरै
द्विप शोप समूह करै । कसकै यककै छवि की हककै कककै अनु न्वस पिपूय भरे ॥ मति
चरु मणोहर कंति विखेकित जाति कलानिधि की बियटै ॥ बहर मन सेवक देपु तहां जहं
पुष्पन जुक्त तरंग हुते ॥

श्लोक—शीतला मबानी की ॥ गुह्रां आदि अरब संभारन अपिक सुद्धि भारी भरि यारनि
ए सबक से जान की । शैते रोग कष्ट विस्फोटक महागारिष्ट छिन में विभास करै रक्षा बाककन
की ॥ जाके नेकु भजन परोक्ष प्रसाद हूँते अंध कुट्ट टुड होत व्याधि जात तन की ॥
अतिले मबानी ए बिलोक टुकरानी धरि सीम में धरतद्व तरेहुं चरन की ॥ ४ ॥ जय छस्ता
देवी धंटा पहरान सुनि सुनत निसाव रूपे बुआ कहरान बिदरर कुक काजहीं ॥ जाके
बक बिपुक सुरेस कम लोक पास अमिमठ पर पाइ सुरपुर सुर गाजहीं ॥ नृकुटी मणोहर
कछित चाठ मुसक्यानि सेवक सहायक सब हासन निवाज हीं । नैमिप विपिन मध्य पंच
प्राग बूके तीर कलित बदन मानु छकित्ता विराजहीं ।

विषय—गंगाएक, दुर्गाएक और शिव, शीतला कछिता वनी जमराज विश्नु, सूर्य
अंधिका मबानी की स्तुति के कवित्त ।

संख्या ४३६, नैपय ग्रंथ, रचयिता—सेवासिंह (कठहर) कायत्र—देसी, पत्र—
१४८, आकार—६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुच्छेद)—१०००,
रूप—तबीन, पद्य, लिपि—बागरी, लिपिकाक—सं० १६५२ वि०, प्रासिस्थान—श्री
अर्धुनमिह, ग्राम—संठीका डाकघर—मठरहवा, जिळा—सीतापुर ।

आदि—एक सर्ग मधुदत्त रिपि धर्म सुबन के तीर । भाइ गने अपीठ बन सुमति
समुद्र गंभीर ॥ आसन दै बहु मति सो पूजा करी बन्याइ । कुसक मूय पृथन छा द्विप में

अति सुप पाइ ॥ सवैया ॥ दुपित दास को देपि दयानिधि आइ गये छिन में सुप माने ।
को यह प्रेम को पुज कहै सकि मेसहु पै नहिं जात वपानै ॥ होइहै कछु सुभ मानि परयो
तव या दस राज विलोचन आने ॥ पोत सो पाइ गये तुमको हम वृढत ते दुख में अकुलाने ॥
दो० ॥ आसिप दे अति विपद मन सुनि बोले मुसक्याइ । राज साज सव पाइ है धीरज
गहाँ बनाइ । कृपा रावरी सरस है रहि है धीरज प्रान । घर बैसो दुखित भयो सुनेउ भूप
कोठ आन ॥

अंत—दो० ॥ रहो सत सतगुनि तपनि राज कियो महिपाल पुन्य पुरुष गणना
विपे प्रथमहि गनियेताहि ॥ अनुज चारि वलवंत पुनि द्रुपद सुता पुनि तोर धर्म सुवन
साहस धरो परी कौन सी भीर ॥ इहि प्रकार समुझाइ पुनि है असीस रिपिराज । गये
तपोवन को इती सावधान महाराज ॥ अथ ग्रंथ कार वंश वर्णन ॥ छप्पे ॥ करन देव मैं करन
जासु जस पुहमी यहिय तेहि के हरि सिंह देव समर अरि शैल विधहिय ॥ सारंग धरतेहि
सुवन भुवन उदित उदारहुव । दीपसिंह मैं दीप विदित मंडित प्रताप भुव ॥ तेहि वंस
अस अवतंस मतिहू अद्याल करना कलित । थान सिंह तेहि तनय सवय किय समर
मडि अरि दल मलित ॥ लुहुग राइ तेहि सुवन राज फत्तेपुर थप्पिय । दान वीर रणधीर
दान दुज गनह समर्पिय । जीतसिंह अज्जीत सुजस ताको कुल मडल । झारि झारि किरवान
समर वर भवैरि विहंडन ॥ तेहि सुवन भुवन अवतार हुव सेवा सिंह अरुधुव । गहि
पग उरगा समग रिपु पडपंड करि पट्टि भुव । दोहा ॥ नल की कथा पवित्र यह कही व्यास
अभिराम । भापा सेवा सिंह कृत नल चरित्र यहि नाम ॥ मंगल करन अनूप है राज सत्य
एहि नाम । जे यहि कथा प्रीति करि सुनि लहि है विश्राम ॥ इति श्री सेवा सिंह विरचिते
नल चरित्र सपूर्णम् ॥ सवत् १९५२ विमारग सार्थ मासे शुक्ल पक्षे तियाँ चौथ वासर बुध
लेखक छ्वालाला ग्राम गौरिया ॥

विषय—नल दमयन्ती की कथा ।

संख्या ४३७ प. कवित्त, रचयिता—सिद्धादास (हरगाँव, सुलतानपुर), कागज-
सफेद मोटा, पत्र—८, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनु-
पृष्ठ)—२२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१० =
१७५३ ई०, लिपिकाल—सं० १६८५ = १९२८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद
त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परान पांडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—कवित्त—सिर मुकुट बाल भाल चंदन रसाल लाल, ललि छवि नैनन की
पकज लजावते । नासिका अमोल चारु चिबुक अमोल पुनि, अधर विलोल विहँसत मन
भावते ॥ कानन के कुंडल सुढौल लोल ढोलत हैं ॥ मानो निज जनन के मनको बुलावते ।
कहे द्विज चेरा प्रसु हाथ है निवरो, गुरु चरन की धूरि भूरि, शीश पै चढ़ावते ॥ सवैया—
इद ज्ञान नहीं मन में सुनि कोटिन वात न एक इढ़ावत हैं । श्रुति संत पुकारत मारग जो,
नहि आवत एक न भावत हैं ॥ हरिनाम निरंतर लेत नहीं, मन में करि साँचन ध्यावत है ।
द्विज सिद्धा कहै हरि आपुहि मा, पहिँचानि न आवत धावत है ॥

अंत—कुंडलिया—चेरा दूलन दास को वास करै हरि गाँव । चरन कमल आधार

ई रथ निरंतर नाच ॥ रथ निरंतर नाच बाधे अस बाहुरी न जाई । बड़े भाग्य से भाय
जन्म दिन के गृह पाई ॥ कपु न काम संग । अंग यह व्यापन ठेरा । सेकु परखि पहिचानि ।
शीत पर साहज बैरा ॥ १ ॥ बैरा बिरही नाम को बहुत न देही मास ॥ मैन पछक छापी
नहीं, मंद् २ बल स्वाँस ॥ मंद् २ बल स्वाँस, पास प्रभु निरखि टगई । मुरति सत्य
इराय, मुरति चरनन छपटाई ॥ अहपाम जुनि नाम, परम सुख सागर हेरा । कोक मान
अपमान त्यागी । भयो सत गुरु बेरा ॥ इति

विषय—मक्ति, ज्ञान, वैराग्य, ईश्वर के मन्त्र की विधि तथा विरह भादि का
वर्णन ।

सप्त्या ४३७ वी शब्दावली, रचयिता—सिद्धदास (हरगोब, मुक्तानपुर),
कागज—सफेद पत्र—३०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण
(अनुच्छेद)—११४, पूर्व, स्त—नवीन, पद्य, लिपि—मागरी, रचनाशैली—सं० १८१०—
१७५३ ई० लिपिशास्त्र—सं० १६८४ = १६२८ ई० प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद
त्रिपाठी, ग्राम—दूरे पराम पण्डि, शाकघर—तिरुवेई, जिन्ना—रायबरोखी ।

भादि—इसुमान विचार हो मी तुम्हरी बलिहारी । पवन तमय बळ घाम राम प्रिय,
हीनल के हितकारी ॥ बाळ घटी सत स्वामि धर्म रत अन्तर नाम अघारी । युग २ ध्यान
धरत सति मणि को । दारे रत न तारी ॥ भक्त उजागर सख गुन सागर, अजर पक्ष
विस्तारी । दास हेत तुम प्रगट तर्की भव संकट दत विचारी ॥ सब सुख दापक भायक
जन के, कपि कुक मणि उपकारी । "सिद्धा दास मक्ति बर पाई, निशि दिन विनय पुकारी
॥ १ ॥ × × × × इत्यादि ।

अंत—कहीं का जानत सब तुमही । जल पल घट २ ध्यापि रहो है, मोरेहु तन
मन ही ॥ मन मान बन तबन तुम जानत, समुझि के सकुचि रही । को तुम बहुत होत
है सोह, दूसर अजर नहीं ॥ निशि दिन ध्यास नाम रतना की सुरति किरत बही । राखहु
सरण द्याक द्या करि हित उपदस कही ॥ छवि रस आनि सुमी जुनि अन्तर, सुख संतोष
सही । सिद्धा दास पास छत्रि अपने, सत गुरु चरन गही ॥ इत्यादि ।

विषय—मक्ति, ज्ञान, वैराग्य तथा नाम की महिमा का वर्णन ।

सप्त्या ४३७ वी शब्दावली, रचयिता—सिद्धदास (हरगोब, मुक्तानपुर) कागज—
सफेद मोटा पत्र—२२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुच्छेद)—
१११ पूर्व, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—मागरी रचनाशैली—सं० १८१० = १७५३ ई०,
लिपिशास्त्र—सं० १६८५ = १६२८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—
दूरे पराम पण्डि, शाकघर—तिरुवेई, जिन्ना—रायबरोखी ।

भादि—श्री जग जिवन अक्ष गुण, दूकन धाकि उपार । सगुन सर्वहित जानि शुभ
सिद्धा, नाम अपार ॥ मैन के भीतर मन है । मैन कोरि छवि जानु । तामु चरन तरमन बस्यो,
सिद्धा निरखि हुकास ॥ नाम मैन है राम को दीख संत करि जान । ताहि मैन विचरै न
दिन, करि सिद्धा मय ध्यान ॥ बरै रैन दिन बौसुरी, धरे कदम तर ध्यान । सिद्धा ठाको का
करि । कर्म कोर परमान ॥

अत—महादेव को पूजहु, अवरन को स्नान । वटी भाग्य तें पाहुण, सिद्धा रूत गुरु ध्यान ॥ देखि रीति ससार की, कहत वनत नहिं वात । 'सिद्धा' गूंगा हूँ रहा, समुद्धि २ पछितात ॥ नाम करुहरा के पढ़े, समुद्धि परै सत पंथ । सिद्धा अपने मोह वश त्यागि दियो सव ग्रथ ॥ ग्रथ पढ़ै तो अति भल, हित कै सुमिरै नाम ॥ यहाँ वहाँ आराम है, सिद्धा पूरन काम ॥ स शब्द पदारथ^२, उर भरि राखे कोय । सिद्धा समुद्धे सुनेते, सुमिरन को फल होय ॥ इत्यलम् ।

विषय—ज्ञान और वैराग्य तथा ईश्वर के साक्षात्कार का वर्णन ।

संख्या ४३७ डी. विरह सत्य, रचयिता—सिद्धदाम (हरगाँव, सुलतानपुर), कागज—सफेद मोटा, पत्र—७, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, लिपिकाल—सं० १६८५ = १६२८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे परानपाड़े, डाकघर—तिलोई, जिला—रायवरेली ।

आदि—श्री गणेश शम्भू सहित, गिरजा गग समेत । द्विज सिद्धा विनती करै, देहु दया करि चेत ॥ सत गुरु दीन दयाल प्रभु, तुम लायक सव योग । द्विज सिद्धा चरनन परो मति मलीन वस भोग ॥ सत गुरु दाता नाम सम कल्प विभजन हार । द्विज सिद्धा चरनन परो, नाम सत्य आधार ॥ सत गुरु दाता राम सम, जन सिद्धा अति दीन । चरनन परि वर मागहुँ, चरन कमल मन लीन ॥ सत गुरु दाता सामरथ, सव ईशान के ईश । विनय करौं कर जोरिकै, देहु दरस वरसीस ।

अत—सिद्धा यहि ससार में, कत निरखि पहिंचानि । अहै निरतर पास ही, अपने मन दृढ़ जानि ॥ सिद्धा, नाम कि जिकिर तें, चौंसठि घरी वित्ताउ । कंत दरस की लालसा, छिन छिन चाउ बढ़ाउ ॥ विरह सत्य यह पोथी, शहर जौनपुर कीन । सिद्धा पिय पहिंचानि निज, चरनन तर सिर दीन ॥ अष्टा दस सै समय दस, मारग मास पुनीत । सिद्धा, हेरत आपु में, परखेउ आपन मीत ॥

विषय—ईश्वर का प्रेम भक्ति तथा भजन का वर्णन ॥

संख्या ४३८. ए. दिल लगन चिकित्सा, रचयिता—सीताराम (हसनपुर), कागज—देशी, पत्र—८४, आकार—६ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५३ = १७९६ ई०, लिपिकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सीतारामसिंह, ग्राम—महाराज नगर, डाकघर—मैगलगज, जिला—सीतापुर ।

आदि—अथ दिल लगन लिप्यते ॥ श्री गणेशायनमः शंभु बुध दायक गज आननं तिनकू सीस नवाऊं । पुनि देवी की चरण कमल की रज हृदयै लगाऊं ॥ श्री धनवंतर और अश्वनी सुत तिनहू चरण धर सीसा । कहुँ दिलगन चिकित्सा कृपा करै जगदीसा ॥ चार लाप वैद्यक दर्साईं जे मुनि जहो वपानी । कहुँक ग्रथ देपे निज गुरु सौं तिनकी भाषा ठानी ॥ सकल सृष्टि व्याधा जो नासी जव वैद्यक दर्साई । देहज व्यथा सुने ते जेहें भगवत इच्छा गाई ॥

भंत—मन्त्र करा जाती कल केसर सींग अक्षीम छवीली । गाली मासे भर भी पासत
 जल मे डिल रसीली । पाप सांस को पुदप नवेछी कामी कमी न हार । तेरी सीं हस बीस
 मामिनी भोग शक्ति में बाके । यह गुफा मुन सीतारामी रसिकन के मन माई । मेरो बित
 बस भीमे धीने ताते सोहि मुमाई ॥ बाके घाते पुदप पयोपर अप्पु वातु को हाने भरी काम
 मद् गरय गहीली तिनकी हु मद् पोषि ॥ देती ते कडि चतुर सिरोमणि मोको नीद घनेरी ।
 जान सई ईषकमें धीने अधिक निद्रता तेरी ॥ यह दिख लगन चिक्रिमा अन गिन पाद कर ।
 इन तेन तेर अन्न किये ते प्यारी वरनन कीन धीन ॥ अमित पंथ ईषक के जग में तिमकी
 भाय कीनी । चरकादिक जो ईष सिरोमणि तिनकी आज्ञा लीनी ॥ इही सिंह मुत पुन्तक
 कीनी अगनित प्रथम । मधि के अजगाहन में अजब अनो को सीस फूल लो कपि के ॥ जो
 यह प्रथ पड़े अह समझे मुन दिख लगन विपारी । सीताराम कियो यह जिहै तिनहुं म्यया
 क्यारी ॥ बाके तो इलाज अहवेली धीने सब अजमायो पया युक्त मुन पंडज खेचन धीने
 ताहि मुबायो ॥ संवत ठारा सै सत्तर महीना ? (तिरपन्ना) सावन अधिक मुहायो कृष्ण
 प्रयोदशी डिल छवीली चंद्रवार मुबतायो ॥ प्रियुर सुंदरी की कृपा संपूरण प्रथ बनायो ।
 कठिन चिक्रिमा सागर प्यारी माया कर वरमायो ॥ पूरण ईष समा क मूप्य गोइ विप
 गुण वाता । पादक इही सिंह मुत नाम है सीताराम विष्णुता ॥ शक्ति उपासक संकर सेबक
 पत्नी खिलो जति नाही । तिन यह प्रथ रचो है ताको प्राम इसमपुर मांही । और मरम
 मुको मत कोई मुन दिख लगन विपारी है दिख लगन उबसी नम भी सुंदर कुदरत प्यारी ॥
 भाई इकली और न काई निरा समी वा वाका क्रिया सिंगार बतीसो अमरन खेचो मुरान
 तुमाका ॥ इति श्री दिख लगन चिक्रिमा वा पोडमो शृंगार संपूर्ण समाप्त शुभ मरतु
 किल्लत गीरी चरम मुमही मेरठ की छावनी संवत १९०१ वि० बसंत पंचमी ॥

विषय—ईषक ॥

सख्या ४३८ थी दिखलगन चिक्रिमा, रचयिता—सीताराम, कागज—देसी, पत्र—
 ८४, आकार—८ × १ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुच्छेद)—११२३, पूर्ण,
 रूप—गहिल पद्य लिपि—जागरी रचनाकाल—सं० १८१३ = १७९६ ई०, लिपिवाल—
 सं० १८१८ = १८२२ ई०, प्रातिस्थान—श्री गजपतिजी बुवे, ग्राम—नयागाँव, बाकपार—
 सादरपुर, जिला—सीतापुर ।

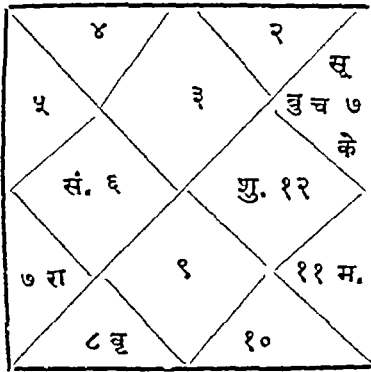
४३८ पृ के समान ।

पुष्पिका—इति श्री दिख लगन चिक्रिमा संपूर्ण समाप्त लिपित गंगा सहाय संवत्
 १९१९ वैश्व शक २ ॥

संख्या ४३८ सी दिख लगन चिक्रिमा, रचयिता—सीताराम (इसमपुर),
 कागज—देसी पत्र—१५६ आकार—१ × १, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण
 (अनुच्छेद)—११९०, पूर्ण रूप—साधारण पद्य, लिपि—जागरी, रचनाकाल—सं०
 १८५३ = १८८६ ई०, लिपिवाल—सं० १८२१ = १८६४ ई०, प्रातिस्थान—श्री दीपालमिह,
 ग्राम—भदली, बाकपार—ठासवा बजरी, लिख—नमनद्र ।

आदि—४३८ ए के समान ।

अत—॥ इति ॥ श्री हठी राम सुत सीताराम विरचिते दिल गन चिकित्सायां वैद्य
अथ जनम कुंडली चक्रम्



जीवने वाजी करनाधिकारा नाम सोइशो
श्रुगारः ॥ १६ ॥ श्री संवत् १९२१
साके १७८५ ॥ चैत्र शुक्ल पक्षे त्रिथौ
दुतियाय शुक्र वासरे घट्य. २६,३८ ॥
भरणी नक्षत्रे घ. × × ×

चैत्र शुक्ल अरु दुइज सुहावन
शुक्रवार शुभ कारी । भई समाप्ती
दिलगन चिकित्सा शुद्ध अशुद्ध
विचारी ॥ वल्ल देव दीक्षित वास
माझियामा तिनके मन अति भाई ।
तिहि ते लिखि बहुसक करि महिका
अति सुप दाई ॥

संख्या ४३६ कवित्त सग्रह, रचयिता—सीताराम शुक्ल (गोंडवा), कागज—
आधुनिक, पत्र—२०, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—
११३, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०,
प्रासिस्थान—श्री चंद्रमाला शुक्ल, ग्राम—गोनी, ढाकवर—अतरौली, जिला—हरदोई ।

आदि—प्यारी जशोमति की द्विज नारि चली वृषभानु पिया पंह आई । देपि सुता
वर व्याहन योग करो विनती अरु वात चलाई ॥ घरहै नो भलो वरसा वमे नन्द को वनै तो
करोरी सलोनी सगाई । नाहिरी नाहिरी नाहिँ करौ मोरी फोलसी राधिका कारो कन्हई ॥१॥
वैन सुनी द्विज नारि हसी हसि कै वृषभानु पियै समुझावै । फोल को गाहक भौर भलो
आली और को फूल में हात लगावै ॥ वृषभनै अव सोई करो अरु जो सगरे वृज के मन
आवै । सांवरे स्याम औ गोरी सो राधिका ज्यौं दामिनि घनमें छवि जावै ॥ इहा मिलि मोहन
सों मतिराम कि केलि करी अति आनन्द वारी । लेइ लता द्रुम देपत ही सुचलै असुवां अरि
वयान सौ भारी । जाती अहाँ जमुना जल को नहिँ जानत हौं पिछुरे गिरधारी । जानति हौं
सखि आवन चाहत कुंजन से कदि कुंज विहारी ।

अत—प्राति कियौं विनहीं समुझे सव छाडि हिये की ठीक रुई कवहु भरि अंक
लगायो नहीं सव लोगन में वदनाम भई । मारिये यहि सोच विसूरन में इतमोहन के उर
नेह नई । येहि लो कहु से परलोकहु से सजनी हम दूनौं और गई । प्यासे रहे दग दो
ऊ सदा न पियो सुप पाइकै पानि पपी को । भूपन साजि सिंगार सवै लपि पिय विन ताहि
लगे सव फोको । नाहक हूं वदनाम भई न भयो कवि गग मनोरथ जी को । जौ छिनहु
छतिया लगती तौ कलंक को लागिवो लागत नीको । तुमही कुलीन प्रवीन रहौ हमही कुल
छाडि गई तो गई । हमका कौहु चहै ते तो कहै नन्दवारे के संग ठई तो ठई । खगपति

यह प्रीति कि रीति बही एक संक की भारें सङ्ग तो कई । प्राम को वासी हई तो हई हम स्पाम की दासी भई तो भई ।

विषय—(१) कृष्ण का राधिक के संग सगाई । (२) प्रेमाहाप—कृष्ण राधिका का सम्मिलन । (३) कृष्ण का राधिका के घर बूढ़ी पहनाने के लिये जाना ।

(४) कृष्ण की बही पर गोपियों का आकषण । (५) वसंत ऋतु की महिमा । (६) वर्षा ऋतु वर्णन । (७) बियोगी जनों का विरह वर्णन ।

संख्या ४४०, काम्यदृश्यतक (बंशावली तिथोई राम), रचयिता—सीताराम (रायबरोही) कागज—रैसी, पत्र—५१५, जाकार—१० × ७ इंच, पन्कि (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—१०००, अंकित, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—मागरी रचनाकाळ—सं० १६१५ = १८७८ ई०, लिपिकाळ—सं० १९१६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—राज्य पुस्तकालय तिथोई, (रायबरोही) ।

आदि—मर्षवा—यग की तनया पति की मगनी पतिता सु पिता नमरा × रस को मुठ को मुठ्ठा मुठ की, अरि ठामु बम् पति फुलि कर × मच को पितु ता पितुता पितु के पतिकी पितु शैव रहो तु मरा सुदभ का मुतता तपनी मुजता, धरणी जबकी न ठरी । श्री० त्रिशी नगर बात यह छाई । नृप बलि मद्र जाद विचरताई । दो० एक समी की मुन कना, ये अचनीश मुयाम । मिरजापुर के मोगरु बोह तिन्हे मुक को मान ॥ मोगरु बेग आजम अहे, काशी करक बनाइ । बिहनाप गृह खोदि कै, महजित करि ही जाइ ॥ सी० ईतसिंह अमबाम काशी पति तदि काळ में ॥ मुनि महेस को नाम, पत्र लिप्यी सब नृपन को ।

अंत—छप्य—दूर संग परि हरी, सुधम की संगति सीत्रै × मातु पिता भू वैच प्रजन को पालन कीत्रै × प्रिय भरोम ना करब पूर्त को काम न सीप्या × रीति आप सम करब ब्रह्म तति गीत्रिय को × इठ कै बदि छाड़ब देऊ नृप धरारापि धर्म कपु कीत्रै × सम हम वृद्ध विभेव प अचनीश जर धरि सीत्रिये ×

विषय—रियामत तिथोई के काम्दसिंह स सेकर रामा सूर्य × तत्र का वर्णन ।

संख्या ४४१ प कवितरंग भाषा, रचयिता—सीताराम वैच (रीपड़ पंजाब), कागज—रैसी, पत्र—११६, जाकार—८ × ६ इंच, पन्कि (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुपुष्प)—११००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—मागरी, रचनाकाळ—सं० १७६० = १७०३ ई०, लिपिकाळ—सं० १८५५ = १७९८ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृतेचंद नृचे, प्राम—सुरैया, हाकर—बिसबाँ, शिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कवि तरंग भाषा सिष्यते ॥ श्री कवि सीताराम कृत प्रारंभ्यते ॥ प्रथम नमो परमात्मना धनुषो गारद् भाव । सिब मुत । पद् परताप ते भाषा कही बनाय ॥ भारग मित मृतिषा अमित साम दिवम शुभकार । एकाहदा संबन् समय धीर साठ निरधार ॥ देनी निव्व सहाबको उपज्यो मन जानद् ॥ अर्थ कास्मी कटिन से सुगम बनावे छद् ॥ ब्राह्मण तिरये बंग में कनाब मुठ कबिताम रीपड़ में भाषा करी कवि तरंग धर नाम ॥ कवि मीपनि भाषा करी तर्क न कीत्रै कोप । ज्यों रीपड़ के शीप ई घट उपज्यो

तन होय ॥ चरक आदि के ग्रंथ ले देखे उदधि समान । उनमे सार निकालि के रत्न गहे जिय जान ॥ रोग हरण औ सुप करण रत्न औपधी सोय । मेवै प्रति दिन मनुज जो रोग व्याधि को सोय । व्याधि हरण नर होय जो करै भक्ति करतार । युवती आदिक सुप करै भोग सार संसार ॥ याते पहिले देह की करौ सदा प्रति पाल । जो क्वहुं गिर जाय तो बहुदि न पावै काल ॥ जोतिहु ते एको वढ़ि जाय । तौ जानौ मृतु निकटी श्राय ॥

अत—अथ शस्त्र मज्जन प्रतीकार । टोहा ॥ इडोली का तेल कर मलै शस्त्र पर कोय । जंगाल मोरचा ना लगै वरस काल जो होय ॥ रापै गेहू रास में वरम काल के मांहि । मलै मोरचा ना लगै कह्यो कपट बहु नाहि ॥ अथ सवत कथिते ॥ चौ० ॥ गये जो विक्रम वीर विताय सत्रह सै अरु साठि गिनाय । मकर कृष्ण तृतीया परधान शुभ नक्षण भृगु वासर जान कह्यो सुगम कवि सीताराम सय काहू के आवै काम ॥ कष्ट हरण हे सुप का धाम । कवि तरंग राप्यो यहि नाम ॥ दो० ॥ अर्थ फारसी कठिन ते भाषा कही वपान ताते छमियो सकल कवि चूक परै कहुं आन ॥ पंड डीप मुनि टोहा जान कवि तरंग में कहे वपान । यान पढ राम चौपाई । संन्या ग्रंथ यहै सु बताई । रोग निधान औपधी कही । कवि तरंग में जानी सही । समझ चिकित्सा करै जो कोई । ताको अपयश क्वहु न होई । किंचित लोभ न कीजिये धर्म अर्थ पहिचान । दीजै औपदि दया करि श्री पति क्ह्यो वपान ॥ इति श्री कवि तरंग कवि सीताराम विरचित्तायां रोपण अस्थाने शत रुट्टो अवतरण सम्पूर्णम लिपित वाजीलाल ब्राह्मण अस्थान खेरी सवत् १८५५ वि० वैत्र राम नौमी ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय — तैद्यक ॥

संख्या ४४१ वी. रचयिता—सीताराम, कागज—देशी, पत्र—११६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६० = १७०३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री विष्णु भरोमे, ग्राम—कफारा, ढाकवर—धौरहरा, जिला—खेरी ।

संख्या ४४२ पवन परीक्षा, रचयिता—शिववक्स कवि (हत्याहरण), कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७५ = १८१८ ई०, लिपिकाल—सं० १८७९ = १८२२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री उमाशंकर दूवे, सैदपुर, गाजीपुर, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ पवन परीक्षा ग्रन्थ लिप्यते दो०—सकल सिधि सुमरन करत स्यावे सिद्धि प्रसिधि । सो सुमिरि मिव चक्रस कवि करौ बुद्धि की वृद्धि । कवित्त चन्द्रमा विसाल माल व्यालन विमट माल करमें त्रिसूल सोहे राजत रदन है । देवन में देव सत्रै सेवत प्रसिद्धि सिद्ध मकर सुवन सदा सिद्धि को सदन है । कवि सिव वक्ष्य के ते कारज करत मेरे पावत न पाप हेरे रिपु को कटन है । सुमति बदाइवे को विपति दहाइवे को दरिद्र दुराइवे को वरन वटन है ।

अंत—दो०—एक रूप धरती विषे एकै धाम पताक । एक राम सब में रमे प्रथे
पाठ सब काक । सदैवा—एक सरूप सदाशिव के उर एकै मवन मुमुक्षु के जोई । एक
विरधि विरधि के बासक सारव सेप सराहत सोई । एक सर्व मुनि के मन मंडित वेद
विचारत हाई । एकै राम रमे सबके सोइ और दण्ड न छोई ।

विषय—(१) शिव विषय, गणेश स्तुति, रामस्तुति । (२) रामचन्द्र की बाछा
बस्त्रा का वर्णन । (३) कृष्ण मति । (४) घरी में घर जरी की घरी भग्न—इस
कहावत की पूर्ण । (५) नई नाव नौ बोन की नहनी—इस कहावत की पूर्ण । (६) जना
जबाधा सहनाई बजाया—इस पर कथित । (७) जोषी ठै जीठि न गदहा के कान जसेठे ।
(८) भोसज के चाटे पियास नाहीं जाति ई ।

सर्वथा ४४६ प. उत्पत्त्यारण्य महात्म, रचयिता—सिखर, कागज—द्वैती, पत्र—
१२०, आकार—१० X ६ इंच, पण्डि (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपुष्प)—१६२८,
पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य, छिदि—मागरी, रचनाकार—सं० १९२६ = १८६९ ई०,
लिपिकार—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्रासिस्वान—श्री वेणीप्रसाद शास्त्री, ग्राम—
सकतिया, बाकधर—महोद्वी, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ उत्पत्त्यारण्य महात्म छिप्यते ॥ दो० ॥ आदि ब्रह्म
की अक्षय है महिमा अगम अपार । अह कोश तेहि से मयो विधि हरि हर अक्षरार । श्री० ॥
आपुदि सब मगल सुप दाता । सिद्धि विनायक अग विख्याता ॥ ताहि मुमिरि सारबहि
मनाबहु । आमु कृपा विमल मति पाबहु ॥ कृष्ण बन्ध बस्त्रेव गोसाई । राजा कलिता
दोड पकडाइ ॥ मन्व जलोहा पुनि सब गोपी । जे सब मति कृष्ण भित जोपी ॥ व्यास
वंदि हृदयेव मुजाना सुत सौमिन्द्रिक मुनि पाना ॥ गिरिजा गिरिजा कंत गोप्राइ । दया
काहु प्रनु होहु सहार् ॥ तुम भिन नाथ सकल अग माहीं । मो कई सुप दाता कोज भाही ॥
ताते कृपा करहु अब जानी । विमल असहि अनु हरहि मुजानी ॥ दो ॥ जेहि से बाकहि
प्रेम रुचि धरन मुनहि मन छाइ । करुणा मगर दीजिये मुगम उपाव बनाइ ॥

अंत—श्री० ॥ कसु सट्टेप कसुक विस्तारा । तुमहि मुनायेहु बह कुमारा ॥ जो यह
कृपा सुगत ततकाका । पाबहि मुक्ति स्वपच ब्रह्मका ॥ अब महात्म बच रूप० केरा । कैहई
शंकर समुक्ति धनेरा । गिरिजा सुनहहि ठग मन काई ॥ सो हम तुमहि कहव समुझाई ॥
विद इच्छ जेहि विश्व प्रकासा । सो प्रनु मीरे इदया निवासा ॥ कृपा अनुग्रह बहि विधि
कीनी सब अग पूज्य बुद्धि मोहि बीनी ॥ सोई कृष्ण कल्या गुण पानी । सदा प्रणाम करहु
मन बानी ॥ ब्रह्म क्षेत्र की कथा मोहाई । अति रमणीक कहहि जे गाई ॥ दो० ॥ सब
दहन को देव जो सिन्ध पर होत प्रसन्न सुकत सराहत आदरत । ते प्राची अग धन ॥
जाओ अमित महातम बरनि सकल नाई सेप । तेहि पद की बंदन करत छूट सकल कसेस ॥
पंच भूर्ति महिमा कही सुंदर विविध प्रकार । गिरजा आपदि करति है बरहिन मती बिहार
इकहस अघ्याय मये अब शिव गिरिजा संबाइ । अई महिमा पूरण शिव वच रामप्रसाइ ॥
नंबत् इस टग विक्रम तापर निधि अह चंद्रा ग्रंथ कियो धीरुन रवि करि सुंदर छंद ॥
इति श्री ब्रह्म महितार्थी उत्पत्त्यारण्य महात्मो शिव पारवती संबादे अथान्वा पंच भूर्ति कथनम्

संपूर्ण समाप्त. लिप्यत गोवर्धन तिवारी कानपुर का चामी गारम्यत ब्राह्मण मन्त्र
१६२८ वि० ॥

विषय.— उत्पलारण्य (ब्रह्मावर्त) महात्म्य जिगमें सीता जी का चन में छोड़ना
आदि कथाएँ हैं ॥

संख्या ४४३ बी. ब्रह्मावर्त महात्म (उत्पलारण्य महात्म), रचयिता—शिवदत्त
रामप्रसाद, कागज—देशी, पत्र—२४०, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६,
परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—
सं० १६२६ = १८६६ ई०, लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री
शिवाचरतनसिंह, ग्राम—श्रीनगर, ढाकघर—लक्ष्मीपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ब्रह्मावर्त महात्म लिप्यते ॥ (इसके बाद ४४३
ए के समान ।)

अत—दो० ॥ प्रथमहि गंग मिलि जव साठर तेहि क्षण न आइ । मन अति भयउ
उजागर ब्रह्मावर्त अन्हाइ । दर्शन मज्जन जह तह कीन्हे । विधिवत टान दक्षिणा ठीन्हे ।
पुरी मध्य थापन करि पूजा । मोरे इष्ट देव नहि दूजा । सकल कार्य भा सिद्धि हमारा ।
नाम सागरेद्वारी तुम्हारा । अस कहि सागर निज थल गयऊ पंचम नाम प्रगट यह भयऊ ॥
विविध सकल उपचार भगाई । जे इनका पूजहि मनलाई ॥ चूटहि तिनके पाप विकारा ।
भवसागर ते होइ है पारा ॥ पाच ना मूर्ति जे पाचहु । तिनही कथा सुनिहि जे सांचहु ॥
तिनके सुकृत मनोरथ जी के । सुफल करहि गिरजा इति श्री ब्रह्म साहिताया उत्पलारण्य
महात्मे शिव पार्वती संवादे भावान्या पंचमूर्ति कथन नामक विशोध्याय सभभवतु ॥ आश्विन
कृष्ण एकादश्याम संवत् १९३० वि० लिपितं गिरिजाशंकर रामराय ॥

विषय—पंचमूर्ति महात्म कथा वर्णन ॥

संख्या सी. ब्रह्मावर्त महात्म्य, रचयिता—शिवदत्त रामप्रसाद, कागज—देशी,
पत्र—५६, आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—
१५१५, खंडित, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२६ वि०, लिपि-
काल—स० १९४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल तिवारी गंगापुर, ग्राम—मिश्रिख,
ढाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

आदि—४४३ बी के समान ।

पुष्पिका नहीं है ।

संख्या ४४३ डी. ज्ञान प्राप्ति वारहमासी, रचयिता—शिवदत्त, कागज—देशी,
पत्र—८, आकार—८ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०,
पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०,
लिपिकाल—सं० १६३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा मनोहर दास, ग्राम—डकरोर,
ढाकघर—मवई, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ज्ञान की वारहमासी लिप्यते ॥ चैत रह्यो अचेत
शिशुपद वालपन खेलत गयो । पाप जोवन रूप गर्वित त्रियन के रम वस भये ॥ वृद्ध आस

दुरामपिता धाम माह महाबर्ही ॥ गुह नाम दिन तन तानि तरी जाति र्भया में बही ॥ १ ॥

अन—माय अगुम फिरल पूर्य पाप मुग संवनि नई । धरत रचि मुपि अरन पचि पचि पद न काहू की नई ॥ किरि र्ददि फिरत बंदे करत नामा करम ई भरम नई कोऊ करम पद गव अणमा का भरम है ॥ करि प्रेम नेम समेल जोई जन बारह मायी गाबही निबहा राम प्रताप नै साई जातमा रगि पाबही । तप जाग अग्य समाधि तीरव मय करि करि पचि करे कलि काल कलिग कराल है ॥ हरि नाम बिच कैये तरी ॥ इनि धी नाम प्राप्त तिबदुप कृत पाह मायी सपूर्ण गिरी गंगा राम त्रिपाटी संवत् १६३३ वि० ॥

विषय—बारहमायी क प्यात्र मे नाम का बणन ।

संदिया ४४३ इ गान की बारहमायी, रचयिता—शिबदत्त, बागत्र—देगी, पय—८, आहार—६×३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपुत्र)—४०, र्चय, हन—बचीन, पय सिनि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२३ = १८९९ ई०, निरिक्काम—सं० १६३३=१८७६ ई०, प्राप्तिरपान—धी रामदुतारे पावक, प्राय—तरावा हाकपर—उद्याव, त्रिप्य—उद्याव ।

४४३ ही के ममान ।

संदिया ४४४ राधा जी की बाहमायी, रचयिता—शिबदत्त (जगन्नाबाद), बागत्र—देगी, पय—१६, आहार—६×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११ परिमाण (अनुपुत्र)—९२, हन—प्राचीन पय सिनि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३३ = १८५८ ई०, निरिक्काम—सं० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिरपान—नामा हीम इपाल, प्राय—दरिवा, हाकपर—प्राचीनता त्रिप्य—उद्याव ।

आदि—धी गणेशायनमः ॥ अथ राधा जी की बारह मायी निष्यने ॥ अथ अमृति निष्यते ॥ बही धी गुन मीरी मुत तिब बिशु वंकर पाद ई । धी नरी मु मुनीन मुंदर इतिन जगन्नाबाद है रामदीन दुषेन्द्र संदम कृष्ण के संबक भण तिबदत्त अनुपुत्र इवाम राधे र्पाणि प्रभू मनुबन गये ॥ अणप ॥ अणद बाहर धरि आये मेप कट्टु रिमि गतु ही । जनि जाड रिवा पार्देन वही विधि नारि पीतम बरत्र ही तव छादि जोगी कात्र धोगी छाय नित्र नित्र धर गप तिबदत्त अनुपुत्र इवाम राधे र्पाणि प्रभू मनुबन गये ॥ १ ॥ रिमि सिमिड धावत्र मेप करि नरी मागर धावही । सिगद मत्री सत्रनी सर्व सिमि तीत्र र्चनन अणवही ॥ शई प्रीतम मंग प्यारी बहिरी मूबन नित्र नप । तिबदत्त अनुपुत्र इवाम राधे र्पाणि प्रभू मनुबन का गये ॥ २ ॥

अन—रिह पावक अंग जान परि मच दून परि हेरे बहन राधा दुगी हमने बिदिन बनि लक्ष्मी भण तिबदत्त अनुपुत्र इवाम राधे र्पाणि प्रभू मनुबन की गये ॥ १३ ॥ उमदम गी हम बौप संवन प्रद मन् प्राणि पंचमी । जहि मुमिदि आवा गमन हृत्त क्काल पर अणमा हमो । कुरुभेय मूत्र प्रदम क्काला कच शानि सिमि गये । तिबदत्त अनुपुत्र इवाम राधे र्पाणि प्रभू मनुबन की गये । इनि बारह मायी । करिग ॥ विपाके वा हृत्त क्क सिमि अन् तीत्र बई जगदी भण पई । गुन प्रपछ बही धन है मुन संवनि भाग पवित्र बनर्ब ॥ देग बिदेग में बंनु वही रिवा गुन अणदि आर बदारै ॥ तिबदत्त मु

पूजन भूपतिलौ त्रिद्याविन ब्राह्मण ज्यो पशु धारि ॥ दो० ॥ श्याम गान तन पीत पट उर
 वंजती माल । हृदय चर्मा शिवदयाल के राधा रमण कृपाल ॥ इति श्री शिवपाल कृत
 वाराह मानी संपूर्ण समाप्त लिंगा रामदयाल पाठक जलालापाठ निराम्य संवत् १९१८ वि
 श्री राम राम राम राम राम ॥

विषय—गणपति जी की स्तुति करि सा निवास स्थान और ज्ञानि, राधा जी के
 चिरहू जी चारह मानी ।

संख्या ४४५. श्री राधा कृष्ण विहार कुंज कल्प लतिका, रचयिता—शिवदास दास
 (काधरपुर, प्रतापगढ़), कागज—साधारण, पत्र—११५, आकार—८ ३/४ × ६ ३/४ इंच,
 पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र,
 लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९२=१८३५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री यंत्री नारायण
 सिंह, ग्राम—कोधरपुर, टाकुर—कोधर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शिव दान दाम कृत शब्द लिप्यन्ते ॥ राग काफी ॥
 कई छवि कान वृन्दा विपिन धाम की । मयन जन दुम रुज अति पुज अलि गुज करि
 कोकिला करि धुनि आठहू याम की ॥ १ ॥ जय री जय नाचत मोर मोर करि चोरि चित
 लेत सुधि रहत नहिँ काम की ॥ देव अर असुर नर नाग गधर्व पग जाति त्रिके हाय तेहि
 मनहु विनु दाम की ॥ २ ॥ मयन फल फूल अनुकूल जमुना पुनिन रहत तहिँ वात मव
 पात सह न्यान की ॥ बहत क्षति मद्र मातल सुरभि पवन तहिँ जेहि न भाजन तिन्हें मनहुँ
 विधि वाम की ॥ ३ ॥ मनिन्ह ते रचिन अति रचिन वृन भूमि यह मूरि जीवन कि तहिँ
 लहत विभ्राम की । दाम शिव दान अति दान तुम्हारो चहत जियट अय पाठ जहन सु ब्रज
 ग्राम की ॥ ४ ॥ १०

अत—अचरज की अहं श्याम तेरी बनिया । गडं मारन विप ल्याय पूतना ताहि
 दियौ सुन्दर गनिया ॥ १ ॥ केवट श्वपच अभी २ जवन पह मयन उपम जतिया । कोल
 किरात अधम पशु पामर ताहि मिलाय लियौ बनिया ॥ २ ॥ मेवरी को फल जूठ पाय के
 अर कुविजा के वनेहु रतिया । ब्रज में जाय पर नारिन के मग रीति रीक्षि लायहु छतिया
 ॥ ३ ॥ वेद पुरान संत मव गावन भावत तुम्हें इहें भँतिया । जन शिव दान दाम मो अय
 हों बछु वटि मलिन मतिया ॥ ७८ ॥

इति श्री राधा कृष्ण विहार कुज करप लतिका समाप्त शुभ मस्तु सग्वत् १८९२ ॥
 वैशाख मासे कृष्ण पक्षे पचम्यां शृगुवासरे ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ४१ तक—वृन्दावन धाम की शोभा तथा कृष्ण
 स्तुति, राधा, कृष्ण का एक दूसरे का वेष धारण करना, मर्या से कृष्ण को मिला देने की
 प्रार्थना, कृष्ण को गोपी की फटकार, राधा की स्तुति, तुलसी की महिमा, संत समाज की
 महिमा, चित्रकूट की शोभा (राम निवास सम्यन्ध से), कृष्ण की मोहिनी मूर्ति का वर्णन ।
 कृष्ण का बाल्यकाल वर्णन, वेदान्त के सवन्ध से कामादि चोरों का रूपक । भजन का
 आदेश । राम का मेवरी निवास स्थान पर आना, प्रेम की गागर का रूपक, संत तिरस्कार
 का दुष्परिणाम, कृष्ण वियोग, मुरली वर्णन, रामायण महात्म, राम लक्ष्मण रंग भूमि

प्रवेश, रावण मंदाहरी-संबाध, यत्रोदा से गापियों का उपासक, रामजन्म, शिव जी का रामद्वारा के अगमन, यत्रोदा द्वारा गोपी का फरकार, भक्ति व प्रेम, अथवा वर्णन, गंगा माहात्म्य, कृष्णावन नाम फल, सतमन्त्र, कृष्ण भोजन, जग में दीन होकर रहने का उपदेश राधा का मीनद्वय वर्णन, (१) पृ० ४२ से पृ० ७४ तक—गुरली ध्वनि, कृष्ण रूप, श्याम मदन उपदेश मोह वर्णन, वृषिबीला, ग्रेप-सुता भीर कागदा का जगदा, दान-सीला, कृष्ण बाल वर्णन, उदक संबाध, वियोग, मुन्नी, वाप्यश्रीदा, वियोग, विरह वर्णन, स्तुति संयोग, उपासकम हास्य, बंधीहरण, बंधी से सीतिया बाह, रास-रचन, कृष्ण घोषा, मान मानन, संयोग-ध्वनि वर्णन, बचन विदग्धा, (३) पृ० ७५ से पृ० १०६ तक—कृष्ण के भोजन का वर्णन कुवरी द्वेष वर्णन, बसुदा प्रति उपासक, कृष्ण की मर्काई वासन्ध विदग्धा, मोह राम भजन, उपदेश, विरह, पनपर-सीला धाग, बंधी सीला, मान सोका, होली । (४) पृ० १०७ से पृ० १९५ तक—जन्मसुत होली गेरुन, कृष्ण का शेष परि वर्णन भीर स्तुति द्वारा मंडा फूरना बेनी मापक ध्यान, ज्ञान वर्णन, मक्ति हरि के पावन चरित्र का वर्णन, होली, अथादा प्रति उलाहना, मुगल मूर्ति ।

संख्या ४४६ अमिप्राय दीपक, रचयिता—शिव डाल, कागज—बाबुनिक, पत्र—१०, आकार—११ $\frac{१}{२}$ × ९ $\frac{१}{४}$, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण—(अनुच्छेप)—३४५, पूर्ण रूप—साधारण, पद्य द्विपि—नागरी, लिपिकस—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्रासिध्दान—धी रणपीर सिंह जमींदार, ग्राम—ग्रामीपुर, बाकपर—ठाकाब दशपी, बिसा—कन्ननक ।

आदि—धी गनेसापे नाम । अथ अमिप्राय दीपक लिप्यते ॥ दोहा ॥ धी सीता रस रमिक अह अक्षिप भगत राम राज । रचिन मीय विचारि कै तुममी रचिपुत्र राज ॥ १ ॥ पानि बिष राजत आहु लगी धी सरजूके पार । पादक धी सिबलस उर रूपत उपासन हार ॥ २ ॥ छर अछर अछर रहित जानि निर छर पार । पार निर छर बिग बहदि जन फल ही उर पार ॥ ३ ॥ सख प्रहलक उर पदति बहदि आम्हबी कृत्र । धी महाराप पर रचेठ तिलक उपासन मूल ॥ ४ ॥ अमि प्राय दीपक लिप्यत द्विचल भगमता पैपि । मानस उमील माल कपी बिष बिहास विमेपि ॥ ५ ॥ रामनून यल पाईके साय सकारे पाय । मानस मंत्रदि संत यह दीपक द्वैत देपाव ॥ ६ ॥ सभा उपाय बसु मान रवि बागर उर बस संत । परत अथके उरम मुनि सन धये जनेत ॥ ७ ॥

अंत—पहर सार्व अथ हास्य रम वम द्वि गारी गाव रजनी गत मुनि सुत पंवेग्व मीदी दीप सगाय ॥ ११० ॥ आबत मिथिलेस्वर कली अमिदब इमरय काम । मित्र रहे सुप मित्र लपि भि वेदत्र वेनाक ॥ १११ ॥ हरड ठरम एक सत गनि अथ्यय हीस प्रघास । वास कीड करि बाल पीब ममानय पाम ॥ ११२ ॥ इति धी बाल कीड अमि प्राय दीपक समाप्त मुममनु मिदि रस्तु मुम संमन् १००२ मिठी अग्रहण मुदि नवमी सोमार धी सीतारामजी, धी सीता राम जी छ छ छ छ ॥ टीका रामायण लिपा अमि प्रायता नाब, बंदिन धी मिबलाक मित्र अतिमे भगम बनाव । १ । दोहा में बसु जनन नि बुर द्विपे बदि

वृक्ष । पढ़ि पढ़ि बहु हारही पडे गैल नही सूझ ॥ २ ॥ श्री मद् गुरुने ऋपा करी दहा लिपने नाम दरभगा रज पान पर लेपक सीतल राम उ छ छ छ ॥

विषय—रामायण की टीका ।

संख्या ४४७ त्रिमूर्ति शारती, रचयिता—शिवानन्द स्वामी, कागज—माधारण, पत्र—३, आकार—६×३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८०६ = १८४२ ई०, प्राप्ति-स्थान—श्री रामस्वरूपदर्मा—पण्डित का पुरवा, मौजा भट्टी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ ॐ जै शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा । ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अरधर्मा दारा ॥ जै शिव० ॥ १ ॥ एकानन चगुरानन पचानन राजे । ह्यममन गरटामन वृषवाहन साजे ॥ जै देव ३ ॥ २ ॥ छय भुज चार चतुर भुज दश भुजने सो ई । तीनों रूप निरपिता त्रिभुवन जन मोहे ॥ जै देव ३ ॥ ३ ॥ इवेताम्वर पीताम्वर चाधार अंगे । सनकादि व्युधादिक भूतादिक संगे ॥ जै देव ३ ॥ ४ ॥

अत—जो शिव तीनों पेक स्वरूप अतर धरता । हरि हर ब्रह्मा गुण गाथे भवमागर तरता ॥ जै देव ३ ॥ ८ ॥ ब्रह्मा विष्णु सदा शिव त्रिगुणात्मक आरति जो कौड गावें । भनत शिवानन्द स्वामी बोलित फल पावें ॥ जै देव ३ ॥ ६ ॥ इति त्रिमूर्ति शारती समाप्तम् ॥ श्रावण माने शुक्ल पत्रे अष्टम्या म्निवामरे सवत् १६९९ ॥ शिव शिव शिव शिव शिव

विषय—त्रिमूर्ति शारती तथा उमका फल ।

संख्या ४४८ सत उपदेश, रचयिता—शिवनारायण, कागज—प्राचीन देगी, पत्र—१४, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री भागवतलाल, प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—संतसरन ॥ सत गुरुत्यह ग्रथ सत उपदेश तीनी वानी परथ में अमर होत ने सही ॥ डोहा ॥ नीती नीती करत आनद ॥ शोभा अपनो पाइके छुटत मरुल सभ फंद ॥ गौ चले सभ ही माल के ॥ सभे मिलवै मीली चले, भेद भाव गुन बंत ॥ मसुझी वृझी सभ अमल करे समदरसी सो सत ॥ छाड़ी चलो घर आपना ॥ आवा गवन की राह ॥ सीव नारायण हे सोई भन सतनुह के नाह ॥ पड़े गुने मसुझे बुजे । पेही सत उपदेश । सीवनारायन कही दीवो चलो आपना देज ॥ सज ॥ करत आनद सत नी सुवासर नीज मन बंसी करी डारी हो ॥ डका देह वसे समु ऊपर काल आपना मारी हो ॥ जेह जेई चाहत करत तौन तव संसार सोमनाह गारी हो ॥ त्रीगुन सरगुन देखी मखखरी क्रम फंद तोरी डारी हो ॥ भौ जल देखा भरच के पानी उत्तरी पार करी जारी हो ॥

अत—गगन धरि प्रजात ही अमिक्षा पदारथ खाइ । अहमुद देखे अमर होऐ, अवागमन मेठी जाइ । मन मंजन हरी दम करे, धैठे सभा सत सग । जो जो हीछा सो करे, जब सत गुरु होवै प्रसूग । चौरामी से वाची परे, नीज रूप निरधार । तखत मकान चीचा रहे, त्री गुन गुनस्र ते पार ॥ खोरठा । तेज दोसरी आस, नीदा त्रीथा न सहइ ।

पही माद भरमकाम, भजहु छाड पर जो भई ॥ जागु पाठ पउताच । कंठ सीया हो वेसो
 करे ॥ संत सुमंत सुमान, पेह मय सीसा बीमार ही ॥ मुनि मुनी संत संदेस, पही मुनी
 मभ विचारी है ॥ हम भेय उपदेश, पारु देगी पर मारी है ॥ दोहा ॥ पदे गुने ममुहै
 पुम पेही संत उपदेश, सीबनारापन संत हाण भमळ कर नित्र हैस । प्रप संत उपदेश सीनी
 बानी सपुरम भई लम माद पतहीः । संत बचन परमान मा सही । पार पार पार पार

पिपय—हममें तीन बागियां हैं । पहली बागी ११ लंढकी है, संतों की महिमा
 और ज्ञान वर्णन है (पू० १—१९); बानी २—मनही को मय का कारण मानकर उमका
 काम वर्णन किया गया है लंढ ११ हममें भी किये गये हैं (पू० १६—३०); बानी ३—
 मनुष्य रूप ही सय म ओछे है । कर्म अकर्म गुण हाय प्याम धारण प्राणायाम आदि हनीके
 द्वारा दान हैं । संत अर्थात् सय कुठ पही हैं (पू० ३०—४४); सतगुरु महिमा वर्णन
 साधु वर्णन (पू० ४४—१४) ।

सूक्तयोः ४४६ ए, रस रंजन, रचयिता—शिवनाथ (मकरद्वनगर, कर्णगापाद)
 कागज—देसी, पय—२८, आकार—१० X ६ इंच, पत्रिका (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण
 (अनुपुत्र)—३३३, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य शिपि—जागरी, रचनाकाल—सं०
 १८४६ = १७८६ ई०, मासिस्वान—धी विक्रमासिंह ग्राम—उडवा ठाकुर—द्वामळ,
 जिला—उडवा ।

आदि—धी गणेशाय नमः ॥ अय हम रंजन काव्य लिप्यन ॥ कविता ॥ अंदन
 पनाइ चारु पूदन के भासम पी भारति संबारी गुन गावती धमेरे हैं ॥ कः शिवनाथ साय
 शबिका किमारां जारी शपि हिय अतर निरंतर नपर हैं ॥ पीरिहा तिहारे हम चारिहा तिहार
 राज हम उग्र पारी ज्यों निहारी भीति घर हैं ॥ दाहा न रति की घाई माय मों माइ है
 अंगार । ताहि कहत कवि हू तःह जाग विजाग विचार ॥ आलंबन श्यार की कही नाइम
 आदि अये सय कवि बदि गये प्रथम ताहि अविबाद ॥ प्रिविधि महा माया भई सीमि भेद
 परमान । स्नेया परझिया कही पुन जीविता विनाय ॥ तीस्यो क सेइनि रहे तीन अक
 परिपूर ॥ यदि त उपजन जग पही सजीबनि मूरि ॥ पाक भेइनि को कई ब्यडे वे तो जाय ।
 जानि परग या कहत हीं लखन नमुनि मुजान ॥

अंत—अय हम मभ कहुं बागिनि नचाड उरी अति माभा लीं अंग अंग ११
 भाये दे ॥ एक हाय हाक लीन पूनाच की माल कर्जण एक हाय प्याका जान देपिनन जा ये दे ॥
 कः शिव नाथ नाथ घन द घनद नम नृनि कीनीं शंय हम आनंद गमाये हैं ॥ मरगुन
 पाव माना मानिनी के काम एगे कानन गों बोविला यो येरु हैं काये ई ॥ मध्यम जया ॥
 ६० ॥ प्यारी जूक अय मे मन का जर्म भाव । अंग अष्ट रूप लपि मोई मध्यम राय ॥
 जया कविन ॥ पार्थ क मरु देन पार्थक यदन चंद्र चंद्रु कहा भया सोमनि उमान निसरति
 ६ अंगुरी गरज क पर पल्लव गों परबनि कहा भया दंतौल गों अयरा नुमति है ॥ कई
 पिपयःव जापै मार्ज क मिगार देरी अंतर के प्रम या निरतर समति ह ॥ अये बाप कामल
 ये रूप पर मति कभि कंसुही कल्पनि दनुगाइनि लमनि है । इति एग रंजन की कृप्य
 विनाये शिवनाथ शिपिये नाइरा भइ ममास ॥ शुभंभूयताः ॥ जिति कान संजन एग वेद

श्री भुजग चंद्र कुमहीते धरीजै अंक वाम मारग सुभगइ सों ससि ससि मुनि भूमि अंक साके को नीकी भाति लीजियो विचारि पुनि वाहिये गुनाई सों मार्यासित पक्ष आइ दसमी को चंद्रवार ताही दिन पूरन कैलिपियो भुलाइ सों । कहि जग रूप छमा कीजियो कटुक चूक परै लीजियो विचारि पै संग्हारौ चितु लाइमों ॥ श्री शंकर की जैय होय ॥

विषय—नायक नायिका भेट ॥

संख्या ४४६ बी. रस रजन काव्य, रचयिता—शिवनाथ, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४६ = १७८९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रामनारायण सिंह, ग्राम—चौदपुर, ढाकघर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

आदि-अंत—४४६ ए के समान ।

संख्या ४४६ सी रस रजन, रचयिता—शिवनाथ, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४६ = १७८९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री देवीप्रसाद शास्त्री, ग्राम—सकटिया, ढाकघर—महोली, जिला—सीतापुर ।

४४६ ए के समान,

संख्या ४४६ डी. रस रजन, रचयिता—शिवनाथ, कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल, तिवारी गंगापुर, ग्राम—मिश्रिख; जिला—सीतापुर ।

४४९ ए के समान ।

संख्या ४४६ ई रस रजन काव्य, रचयिता—शिवनाथ, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४६ = १७८९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राम भरोसे सिंह, ग्राम—सुलतानपुर, ढाकघर—राजेपुर, जिला—उन्नाव ।

विषय—नायिका नायक भेट ।

संख्या ४५०. छन्द सार विंगल, रचयिता—शिवप्रसाद कायस्थ, कागज—साधारण, पत्र—३७, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री राम प्रसाद मुराऊ, ग्राम—पुरवा विश्राम दास, ढाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ श्री मते रामानुजाय नमः ॥ श्री रामचन्द्रायनम ॥ सवैया ॥ मोद मनोरथ को फल देत विना भ्रम धोखेहु नाम लिये । गणनाथ अनाथ के

नाम सदा भुक्ति पावत है न बिचार किये ॥ कछ कीरति जासु पुरानन में बरनी धरनी घर
 सुख हिये । सुम मंगल स्वीपरसाद मिळै सुखि विंगल को रस पाक पिये ॥ मत्त खंखटा
 कंठ ॥—सैत सैत मेक अंत रिखि सिखि सो कसंत वंदि बंदि देब दैत्य कामना को पावई ।
 सुंठ इंड सो प्रबंध वंदि—वंदि पाप पुंठ आदि ही सो आदि अंत वैद ना बतावई ॥ नाक
 क्यक क विसाक कोटि भासु किमि साक दास पै दयाक स्वीमसाद गावई । रसि रसि स्वच्छ
 भाव आव्हिते बने बवाड हीजिय सो वैमि रीति छंद की वतावई ॥ गिरा गीरि गीरीम के,
 बरन कमल सिर माइ । पवम तमि अहि राज पद, प्रमवी बरु सुभि पाइ ॥

अंत—

					के									
					स									
					रि									
				पु	ता	क								
			भू	मि	क	ही	म							
		र	गा	ग	पु	सा	क	भ						
		के	त	रि	के	रे	म	न	व्वा	ड				
	म	गी	र	ब	के	प	प	की	ग	म	नी			
	को	हि	वे	घ	रि	के	र	हो	मि	ह	स	क	म	
को	ह	रि	को	क	हु	सी	ता	रा	म	न	भा	न	म	के
							सु							

के सरिता सपु भूमि कही नर नाग पुष्पाक भये तरि के । रेसक ध्याव भगीरथ के
 पय की गमनी को द्विप भरि के ॥ रहा विह संक भजो हरि को कहु सीताराम न जान
 बके ॥ के सरिता कपुरे परतासु सुतार परे पक तारि सके ॥ इति श्री कश्यपक भंशावर्तथा
 शिवप्रसाद कवि कृते छन्दसार नामक विंगल सप्तमोष्कासः ॥ ७ ॥ संपूर्ण सुभं भूषण
 सवत् १९१९ ॥ आश्वानि मासे शुक्ल पक्षे मित्तीपार्वी शुक्ल वासरे किय । राम दयाल पोधी
 राजापाल सिंह जीव को ।

विषय—प्रथम अहाम ॥ पृ० १ मे पृ० २ तक—मंगलचरण, गमेश, गिर, गीरि

आदि की वन्दना । पृ० ३ से पृ० ४ तक—वृष तुल्य वर्णन, कवि का नामोल्लेख तथा पिंगलोत्पत्ति । कामनाथ दानी है उमायी ग्याह साहन को जोम को वधाने राङ्गोम को जग्यो है भाल ॥ राह मुरताल के मपुत पूत भरथराड लठन कैतगिह नृ के नूपति मणु रिसाल ॥ क्षामगिह ताके वेग तेग पताके ताके गुमी ममता के जाके जाहि है जय जाल ॥ दीनन पे दया दृष्टि राधावर जाके दृष्ट परन प्रतापी ताके भये लाल पहिपाल ॥

— ६ —

चित्र गोपित्र पवित्र रच्यो कुल कायध के सुत द्वावश भेचे ॥ ताने वये वसुधा भुव मडल एक ते एक कहालीं गर्नये ॥ सेवक न्यापरसाठ भयो महिपाल कागो वदु छन्द वनेये । सूछम रीति कही सिगरी मत येमहि को जम उज्जल मैत्रे ॥ पिगल का अर्थ, पय तथा गद्य निरूपण, प्रस्तार लक्षण ।

द्वितीय उल्लास—पृ० ५ से पृ० १७ तक—प्रन्तार भेद, गणागण वर्णन । गणों के देवता व फल, लघु गुरु नाम, कलायज्ञा । गणों के शत्रु मित्र भेद । छंद के दूषण भेद । सूची उद्विष्ट नप, मेरु, पताका, मर्कटी (पाताल) । वर्ण वृत्ति उद्विष्ट, नष्ट भेद, वर्ण मर्कटी पताका वर्ण, वर्ण मेर ।

तृतीय उल्लास—पृ० १८ से पृ० २६ तक—मात्रिक छंद वर्णन—छंद भेद । छंदों के लक्षण—दोहा, मोन्द्रा चरच रोला रोला के लक्षण में नृप महिपाल का निवास स्थान—“महाराज महिपाल गिह जू है डिगवस को वामी । दान ज्ञान यज्ञान ज्ञान सब जाकी कीरति पामी ॥ चूना, चीन चमेली चांदी है उज्जल जम हीरा । नारद नाददई हंसि तामो दई मारदा बीरा” ॥ रसिक छंद, चौपेया छंद, सुलक्षण, पद्मरी, पदाकुल, भरिल्ल, चौपाई, रूप चौपाई, उल्लाहा, छप्ये, पद्माप्रती, प्रज्वलित, लीलावती, हरिगीतिका, त्रिभगी, हीराछंद, विद्याधारी, छविछंद, कुन्डलिया के छंद लक्षण ।

चतुर्थ उल्लास । पृ० २६ से पृ० ५० तक—वर्ण—वृत्त संबंधी छन्दों के लक्षण । श्री छंद, महिछंद, कामपद नाहू छंद, शशि, पंचाला, प्रिया, रमन, मंदरा, कमल, त्रिग, गजधारी, सम्मोहा, हरी, हंस, मेखा, जनक, निगालिका, तिलका, विजोहा, चौरंस, संरनारी, मालती मदनक, सावस, सामानिका, सीरपा, विंदुमाल, मल्लिका, परमानिका त्रिग, कमला, मानव क्रीडा, अनुष्टुप्, महा लक्ष्मी सारंगिका, रति-पति, विवा छंद, तोमर, रूपमाली, अमृत गति सजुक्तिका, चंपक माला, सारवती, सुपमा, दोधक, सुसुची, शालिनी, कंतिका, इन्द्र वज्र, उपजाति, मौक्तिक दाम, रथ वद्धता, भुजग प्रयात, स्वागता, लक्ष्मी, तोटक, सारग, मोदक, तरल नयन, तारक, कंड, द्रुतविलवित, मालिनी, नाराच, वसंत तिलका, चामर, भरमावती, निशिपालिका, सरभ, शिपरनी, शार्दूल, गीतिका, रूपमाला, सुन्दर के लक्षण व उदाहरण ।

पंचम उल्लास । पृ० ५० से पृ० ५७ तक—चक्र छंद, पाकावलि, प्रमिताक्षरा, मन्वृती, महर्ष-स्वाई, मुजंगी, छंदों के लक्षण व उदाहरण ।

षष्ठम उल्लास । पृ० ५७ से पृ० ६६ तक—किरीट सदैया, भदिरा, चकोर, मचगयंद, मानिनी, भुजंग, लक्ष्मी, द्रुमिला, आभार, अमुक्त हरा, वसुधा धारी, अमृत ध्वनि, के लक्षण ।

सप्तमोहाय । पृ० १६ स पृ० ७२ तक—बनाझरी कसानिधि प्रतापसूरी के लक्षण
य उवाहरम । बल सिद्ध वर्गन । सिंहावलोकन, महायनाझरी, के उवाहरण । पृ० ७० में
कपाट व डमरु बंध ।

अष्टमोहाय—पृ० ७३ से पृ० ७४ तक—मर्दव गादुख का और त्रिबदी नामक
विश्र काव्य ।

सप्तया ४५१ संमह, रचयिता—शिवप्रसाद सिंह (जानीपुर) कागज—
आनुधिक, पत्र—१११, आकार—९ × ५३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण
(अनुपुद्गु)—८३३ पूर्ण, रूप—मनीष, पद्य, लिपि—भागी, प्राक्षिप्तान—
श्री रणधीर सिंह जमींदार ग्राम—जानीपुर बाकसर—ताड़वा बरसी, विद्या—रूपनरक ।

आदि—३ १ ० कविप ॥ १ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ १ ॥ सर्वथा ० सिद्धि के
खंम अघार अरम के वंम दुरासा म्हालि की गाहिले ॥ सुष्ठ उईष्ट सों दंत तुरत देरि
दवाव तमो गुन साधिले ॥ हे गम माहँ उछाहँ की बाहँ ई अापने व्याभित भीष को
भाहिले ॥ वृत्त बिदेश न केम कटेम तुम्हारी दया मे महेसा के साधिले ॥ १ ॥ कद्व्य
गंजीका का बजीका मुजा पारी ततु भीसर को अछि बनि भीमर बिताहँ दू ॥ शोकता में
हीम हूँ न शोकता शरीर करु हारि सतरज को म राज को उछाहँ दू ॥ सारही की सेज
पर सा रही ई मति सेरी उसको जगाय जर्म फोमी से बचाने दू ॥ काव शैव शैव सायु
सिद्ध पुरसोचम की सब सुप भाम सीता राम गुण गावै दू ॥ २ ॥ छप्ये ॥ महा विष्णु
गढ़ एक पीरि तहां चारि बिरंतर । सिरधी बनी अल्प बीस जग गनी छिंभतर सीलि राव
जह बसत हस्त चदि करत पयागा । पद वस कामिनि संग युज बहु भांति न टामा ॥

अंत—उंचन के ककसा से कलित उरोज साहँ १म ही के खंम जामो जंय पर
कहासी । माहीं की कदमि सुप मंत्र की पदमि मारीं बिमरु कोन्हाई रति गनिब की
माता सी । कहे कवि तोप तुम्हे हूँ ई पुन्य आका ताते कीज चकि पाछा जरै मैन बिधा
जनामा सी । श्रीमिने बिहद बकि श्रीमिने सुरति जग्य भाज तकि काज बतो बाव्या मय सासा
सी ॥ २२१ ॥ अंजपर कमा तहँ चक हूँ बिरात्रै ताव ताके पर देहरी की अति छवि छाहँ ई ।
तापे कदवी भी अस इसके पतावा तामी पीठ जागे नाम भाग बमिदा सोहाई ई । तापे
शिव ताक विग कमरु सताछ भोंईं तापर गिपंडी तापे चद सुपदाई ई । तापे विंज विंज
सुक जग धनु देवो गैव पेसो उपमाकी बीज मेरे मीन आई ई ॥ २२३ ॥ गाबती जमारें
घड़ीकी गोप बरें मनी देवन की चारें को सिंगारें सरसाठी ई । अतर फुहारें पिचकारें
भरि भारें झारें होरिब कतारें कुम कुमन कहाठी ई । देवी करतारें एक एकज प्रचारें सीस
सारें न सैभारें मनमारें मैन भाठी ई । छामको रुजार हंस हरपि हंभरें भीष नंद हारें ये
बहारें बनि आठी ई ॥ २१७ ॥

सप्तया ४५२ प. गोकुल महात्म, रचयिता—शिवसिंह मोंगर (कंवा उवाच),
कागज—दूसी, पत्र—१६, आकार—१० × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण
अनुपुद्गु—१८४, पूर्ण, रूप—मनीष, पद्य, लिपि—भागी, रचनाकाक—सं० १९३३ ॥

१८७६ ई०, लिपिकाल—स० १९३३=१८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवमिह का पुस्तकालय, कांथा, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री चन्द्र भाल शिव की जय अथ भाषा गोकर्ण महारम लिप्यतेः ॥ दो० । गनपति गिरिजा गंग गृह गुरु गभरित्त गोपाल गिरा गिरा पति गिरिश पद पकज रज धरि भाल ॥ महिमा श्री गोकर्ण वर चंद्रभाल मुट कंट ॥ भाषा भापत मति सरम मेगर शिव मति मद ॥ एक सटन्न नव दान अधिक तैत्रिय खायन नाम । शुक्र पक्ष दिन शुक्र शुभ कीन्हो क्या प्रकाश ॥ चौ० ॥ जय गोकर्ण क्षेत्र प्रति पावन । जय जय चद्र भाल जन भावन ॥ कह म मद कुटिन रत कामी । कट चखि पावन पद शिव स्वामी ॥ कह पदाति कह पील पतगा ॥ कह दीपक कह सर कह गंगा ॥ पुहुमि पुप कह पकज पारद । कह पयन पारस कह कारद ॥ मेरु शिपर कह निकर रेनु के । गुरुर विर कह मथुप वेनु के । पय पयोधि कह पायल पानी ॥ कह पगु परानी ॥ शानि मरीचि कह श्रीपम तापा ॥ नृप दरीचि कह परन कलापा ॥

अंत—कश्चित ग्राम कोटरा नामा । तद् द्विज एक निधन पिन मामा ॥ नारि विशालाक्षी अभिधाना ॥ धर्म सुधर्म उभय मुत जाना ॥ पिता भक्त अति भयहु सुधर्मा । जननि भक्त भो बालक धर्मा ॥ द्विज पत्नी बोली यह चानी ॥ नाथ देहु मोहि आमिप पानी ॥ द्विज बेटेहु हम विप्र विशाला । दया धर्म रत दीन दयाला ॥ ग्राहि न माम वेद विद चानुर ॥ विप्रहि वरजित रिमा आतुर ॥ वरुना मत्य दयालु कहाई कंदि विधि प्रिये मासु हम खाई ॥ काहू कुल उपजै कहुं काह कर सुत मोहं ॥ पिंड दान गोकर्ण ते नरुं निवारं सोहं ॥ चौ० ॥ द्विज क्षत्री विठ अंत्यज शंकर । सर्व धर्म वहेर भेपज नर ॥ श्राद्ध अन कर भोजन कारी मथु पीवरु सुवर्न कर हारी ॥ ब्रह्म बधिक गुरु तल्यग चोरा । शठ विश्वास घात की थोरा ॥ उपात की कृतघनी जीवा । अपर जीव पापी अथ मोवा ॥ करि गोकर्ण अस्मर्ण सर्वा ॥ लेहि मोद मगल मुद खर्वा ॥ जन्मातर किय पाप हजारन ॥ जरत तूला जनु पाप अंगारन ॥ तहं न पाप उहरत जनु भारी ॥ सेवहु अम निज हृदय विचारी ॥ दरशन करि सब पाप विलाही सत्य सत्य ससय क्यु नही जो फल वसि कासी मत वरपू ॥ चैत्र दरश गोकर्ण अमरपू ॥ तेहि सानिध्य कुड अति पावन ॥ थीरथ अमित सहित मन भावन ॥ पाप ताप हारन जग तारन । अद्वितीय विद्या पद कारन ॥ दोहा० ॥ चहुं दिशि जो गोकर्ण के लिंग विराजत धात ॥ तिनके नाम पुनीत वर सुनहु चित दे तात ॥ चौ० ॥ पश्चिम जोजन तीनि प्रमाना स्वयंश्वर राजत भगवाना ॥ दक्षिण जोजन तीनि वपाना ॥ देवेश्वर शकर दातारा ॥ उत्तर जोजन तीनि उजागर । राजत शमु गदेश्वर नागर पंच तीर्थ जो मनुज नहावै ॥ ती मव पाप विगत गति पावै ॥ दो० मांड कुंड को नरुं वर भद्र गोकर्ण तात ॥ मज्जिपुन भू तीर्थ नर पुनि नहि आवत जात ॥ सोरठा० ॥ आदि करै अस्नान क्षीर कर्म पाछै करै अर्चि शमु भगवान पुनि तर्पन श्राद्धा दिवर ॥ चौ० ॥ यह तीरथ विधान हम गावा । जेहि कर नर पावे फल भावा ॥ जे पढ़िहैं सुनि हैं यह गाथा ॥ भुक्ति मुक्ति तिनके सब हाथा ॥ जो गोकर्ण नाम उच्चारहीं ते विन श्रम भवसागर तरहीं ॥ इति श्री पद्म

पुराणे उचर लडि गोऊर्न महाद्ये श्री सेगर रणजीत सिंगे भाव्यत्र सिवसिंह भाषा कृते पद्ये
ऽप्याय ॥ इति श्री लिखा रामनरोधसिंह सेगर संबत १९३३ वि० ॥

विषय—गोऊर्न भाष्य महादेव की महिमा और महात्म्य वर्णन ॥

संख्या ४५२ यी गोकर्ण महात्म, रचयिता—शिवसिंह (कंवा, उवाच),
कागज—बाबुनिक, पत्र—३२, आकार—८ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण
(अनुपुष्प)—१००, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाशैली—सं० १९३३ =
१८०६ ई०, लिपिकाळ—सं० १९३३ = १८८० ई०, प्रासिस्थान—श्री कुंभपुराळ, ग्राम—
सायीपुर, जिल्हा—उवाच ।

संख्या ४५३ ए. चानडी विषय, रचयिता—सिधाराम, कागज—दही, पत्र—११,
आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९४, परिमाण (अनुपुष्प)—२३१ पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी रचनाशैली—सं० १८१३ वि०, लिपिकाळ—सं०
१८८४ वि०, प्रासिस्थान—श्री मजुचुवन की देव, बाळ्यर—सीतापुर जिल्हा—सीतापुर ।

भाषि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जानकी विषय लिप्यते ॥ हो० । माई सीम वर
मोर्गी राम कृपा करि वेहु । जन्म जन्म प्रभु पद कमळ कवहुं घडे जति वेहु । बस कहि
मुनि वसिष्ठ गृह आवे । कृपासिंधु के मन जति भाषे ॥ पुनि रघुबीर सम्य मई गये । बहि
विधि करित करत मित मये । द्विजवर एक कौशल पुर माहीं । सब विधि कृपाल हिये बल
माहीं ॥ बरनि न जाय तामु गुण जाना । तेहि के मुठ पक परम सुजाना । वेत् पुराम स्मृति
सब दया । काव्य कोश जागम सुविनेया । अस्कार प्रथम सब जाये । त्रिह्व आग्र व्याकरण
बपामे ॥ समय मेम लपम्या कर ही । द्विविधि सोच अनुदिन अनुसरही ॥ कोमळ चित्त
संतोष सदा ही । मत्प वचन बोळै सब पाही । ज्ञान विज्ञान सरस मन माही । कपट चतुराई ।
मन कष्टु माहीं ॥ वे पावन गुन सबै बपामे । बस जान मन ते सब जाने ॥ मई अक्षर सुख
तेहि केरी । पिता इत्य अति तृपा बनेरी ॥ रोबहि नारि भारि करि छठी । तामु करित
कहि जाना भांठी ॥ वा० ॥ तब द्विज वर विज्ञान कहि समुझाई सब नारि । हे जग को
व्योहार यह वेपै इत्य विचारि ॥

अंत—मिय रघुवरहि प्रणाम करि जति सुंदर बच पाह । चळे सराहत मनहिं मन
हर्ष न इत्य समाह । श्री० ॥ एपि राम कृपियाम जपावन । चळे तहां पुर हृत सुहावन ॥
पत्र पवित्र विवित्र साभि करि । यह विधि चळे ह्य मंदिर भरि । नववपुरो भाषो तब
मागुळ । कैडे नद सिय सहित कृपाजळ ॥ देपि राम छवि चाम पुर्द्वर । अभिमत श्रीन्ह
इत्य कएताकर ॥ तब सत अत जुग यामि जोरि कर । अस्तुति करत निरपि कइया कर । कै
कृपाल जय जळ आवारक । असुरन मारि सुरन निस्तारक । कामकोष मइ लोभ मोह उत ।
गज मम मन तम बमत पांच गुत ॥ वर तब वचान पंच मुप रघुवर । करहु कृपा सुट्ठी
तब दुम्तर ॥ प्रभु तब भक्ति ज्ञान गुण सागर । तेहि वर बसहु सो जचीन उवाचार ॥ हो० ॥
करि बिगती सिर माई पुनि प्रभु अनुमासन पाह । अमरावति वासव गये हर्ष न इत्य
समाह ॥ सिय रघुबीर प्रताप ते मित नव मंगळ चार । को चरनि रघुबीर की लीला जगम
अपार ॥ छंद ॥ लीला कलित मिय राम कह जति गुप्त प्रथम रात्र ही । पावन करहि निज

गिरा सो पर सिद्धि भाषा करि कही । पढ कज जानुकी प्रीति जुत जे मुनहिं साठर गावहीं ।
सोभाग्य श्री संपति सकल सो कृप कल्पन पावहीं ॥ दो० ॥ एक सहस्र अरु आठ सै सवत
ठम अरु तीनि शुक्ल द्वितीया मास मधु भाषा कया नवीन ॥ इति श्री जानकी विजय
रामायन सहस्र सीसादिव्य रावण वध समाप्त शुभ मस्तु संवत १८८४ आसाढ़ मासे शुक्ल
पक्षे तिस्रौ अष्टम्या ८ रविवासरे ॥ दो० ॥ राम लक्ष्मन जान की भरत शत्रुघन प्रीति ।
कया जानुकी विजय की लिपी सिता वसु जानि ॥ श्री हनुमान जी सहाइ ॥

विषय—जानकी जीका अहिरावण का वध करना ।

संख्या ४५३ वी. जानकी विजय, रचयिता—सियाराम, कागज—साधारण, पत्र—
१८, आकार—६ X ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२, पूर्ण,
रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१३ = १७५६ ई०, लिपिकाल—
सं० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री रणधीर सिंह जर्मींदार, ग्राम—खानीपुर,
ठाकुर—तालाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४५३ सी जानकी विजय, रचयिता—सियाराम, कागज—प्राचीन देशी,
पत्र—१३, आकार—१४ X ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—
१८२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१३ = १७५६ ई०,
लिपिकाल—सं० १८३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चंद्रिका बक्स सिंह जर्मींदार,
ग्राम—खानीपुर, ठाकुर—तालाव बक्सी, जिला—लखनऊ ।

विशेष—निर्माण काल—एक शहश अरु आठ सै सवत दस अरु तीन । शुक्ल
द्वितीया मास मधु भाषी कया नवीन ॥ = १८१३

संख्या ४५४ ए. हनुमान विजय, रचयिता—श्रीधर गौड़ (गनेमावाद), कागज—
देशी, पत्र—४, आकार—६ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—
८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२१ = १८६४ ई०,
लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवकंठ तिवारी, ग्राम—वर-
गढिया, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हनुमान विजय लिप्यते ॥ स्वस्ति श्री पति पशुपती
गणपति मृग पति माय । श्रीधर जग पति खग पती वंदौ नग पति राय ॥ विजय हनु
वरणन करु हृदय धरु आनंद । श्रीधर भारत नद को दर्शन परमानंद ॥ छंद ॥ कइखा ॥
ऊँ नम शारदा सुमति मनमें वसो कुमति के अध को फद तोई ॥ ह्रीं नमः हांक हनुमान
महावीर की भीर का दुख का सुप. मोवै ॥ श्री नम सर्वदा संपदा आप श्री लक्ष्मी नाथ
के हाथ पावै । ह्रीं नमः क्लेश संताप दुख दूरको विजय हनुमान नर नाम गावै ॥ प्रथम जा
नाम सूँ काम जग में करै दुख के हरण सुख करण गन्ना । बुद्धि के सिधु श्री गिरि मुता
पुत्र के चरण पद शरण को धरण मन्ना ॥ गुरु पद कज करिंज मकरंद मन अमर ज्यू सुमर
कर सीस नाऊं ॥

अंत—दो० ॥ श्रीधर विजय कपीश की पढ़े सुनै मन लाय । महावीर खेड़ापती
पूरे मन की चाय ॥ अथ २१ कवित्त की अनुक्रमणिका ॥ कवित्त ॥ ऊँ नम. प्रथमजा

जगत में विजय हुआकहि की विपत्ति से किकिरि बाँटी । परै है गयो गढ़ कोट पै दधान
 अर गढ़ राम के हास पाटी ॥ बटयो भिनि अलिहहि बीर की राम के होत हूँ पुष्प के
 पाव साटी ॥ राम के नाम से राम का चरित है सारु हूँ बीस कवि काव्य छाँटी ॥ पठन
 करने का फल ॥ श्रीधर कछो जो हनुमान विजय ताको पाठ करैवा मंत्र का मपूर के
 पस सौं झाबा बचे ता छटि मुटि मूल मेठादिह दूर होय अन्ध धम प्राप्ति होय प्रह पीडा
 हरि हाय राम्य मान्य होय ॥ इति फलम् इति श्री हनुमान विजय श्रीधर कृत संपूर्णम्
 लिपतं संवत् १९२७ गोकुलवाय पठि बाभुर निवासी । राम राम राम राम राम राम
 राम राम राम ॥

विषय—हनुमान जी की बीरता और महिमा का वर्णन ॥

संख्या ४५४ पी हनुमान विजय, रचयिता—श्रीधर गौड़ (सलेमाबाद पुष्कर),
 कागज—रेसी, पत्र—४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२ परिमाण
 (अनुपुष्प)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन गलिष्ठ, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—
 सं० १९२१ वि०, छिपिआक—सं० १९३२ वि० प्राप्तिस्थान—श्री राम अघार मित्र,
 ग्राम—ग्रामनगर हाकधर—छत्तीसपुर, बिस्व—खीरी ।

भादि-अठ—४५४ प के समान ।

पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री हनुमान विजय श्रीधर कृत संपूर्णम् ॥ लिखतं संवत्
 १९३९ भावन मासे शुद्ध पक्षे तिथी पंचमी (नाग पंचमी) मित्र पठनार्थं बटरीद्वय जोषी ॥

संख्या ४५४ सी समुद्रिक, रचयिता—श्रीधर गौड़ (सलेमाबाद राजपुताना),
 कागज—रेसी, पत्र—७८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण
 (अनुपुष्प)—८५९, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं०
 १९२८ = १८७१ ई०, छिपिआक—सं० १९३१ = १८८४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री छास्ता
 प्रमाद बूबे, ग्राम—ब्रह्मपुर, हाकधर—मिथिल, ब्रिका—नीतापुर ।

भादि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्ण अनुभाषो जयति ॥ अब सामुद्रिकं लिप्यते ॥
 यह ग्रंथ के देखने से संपूर्ण जन्म के हवाल मासूम होय ॥ आयुर्जान होग्य जितना वर्ष
 बीबना होय सो ज्ञान होग्य । जो जो सुप किंवा दुप होय बाध जो जो वर्ष सौं होने बाका
 है सो ज्ञान हावेगा जितना इसको पुत्र होग्य किंवा कन्या होगी किंवा भयुंसक होग्य किंवा
 वस्तु होग्य सो सब हाक लिखा ज्ञान होग्य ॥ जितने धी सौं भोग है सो हाक मासूम होग्य ॥
 राजा हाने का बिन्दु प्रजा होने का बिन्दु धनी होने का बिन्दु पंडित होने का बिन्दु साधु
 हाने का बिन्दु पौर होने का छत्रण मुपी दुपी पापी पुण्यमान होने का सब हाक मासूम होने
 के बास्ते जाना प्रकर के संपूर्ण बिंदु का हाक लिखा जो है सो जानने बास्ते बड़ो परिश्रम
 करके यह ग्रंथ संग्रह हा गयो है । यह ग्रंथ बड़ा दुष्कम है सो संपूर्ण प्राणियों के ज्ञान होने
 के बास्ते प्रगट हुआ है इन सब से बड़ा उपकार ज्ञान होग्य ॥ मोर्दे मर्तात को श्री ब्रह्मा
 नू श्री हरि भागवान मो प्रदन करै ई कि हे प्रभू पुण्य का छत्रण श्री का छत्रण यथावत
 भाप करके हमसौं बड़ी त्रिमये शुभ अशुभ का परिज्ञान संपूर्ण प्रजामात्र को होवे ॥

अंत—श्री महादेव जी श्री भगवती पारवती जी मों कहे हैं कि हे गिरिराज नदनी प्रिये यह सामुद्रिक शास्त्र कौ श्री कृष्ण भगवान जू श्री ब्रह्मा जू मो कहा है । यह सामुद्रिक शास्त्र कौ यदि कोई प्रणी श्रवण करे याको पदे पढ़ावे तो यह सामुद्रिक शास्त्र के जानने मो वा प्राणी बुद्धि मान पंडित होके सपूर्ण ससार के मध्ये नाना प्रकार के चिन्ता को त्याग करके सुपी होगा सपूर्ण कामना को पावेगा ॥ इति श्री तत्र सामुद्रे हर गौरी संवादे सामुद्रिक लक्षणं सपूर्णम् स्त्री पुरुष या लक्षण शुभा शुभ कथन समाप्तम् लिपितं दयाराम पंडित संवत् १९१४ वि० जन्माष्टमी ॥

विषय—सामुद्रिक ।

संख्या ४५४ डी. शिक्षा कक्षा वचीमी, रचयिता—श्रीधर गौड (मन्मनाप्राट) कागज—डेगी, पत्र—२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुपुष्प)—४२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामअधार मिश्र, ग्राम—नगर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—गौरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शिक्षा कक्षा वचीमी लिप्यते ॥ ककारे कर्म धर्म कुल रीति समारो । खखारे खाड़े खूचे पग मति धारो । गगारे गर्त्रं छाटि वे गर्वहि रहिज्यो । ववारे वर आया को आडर करिज्यो ॥ ट टारे नमस्कार नित्य सूरज देवन ॥ चचारे चनुर पुष्प की संगति सेवन । छछारे छलीवली के संग न फिरजे ।

अत—आ आ आरे आडर भाव सवन नों कीजे ॥ इ इइरे ईश्वर को सुमिरण चित दीजे । ई. ईईरे ईर्पा द्वेष त्याग जो मन की ॥ उ उकरे उधर इधर तो टेपो तन की । ऊ ऊउरे ऊच पटी परमेश्वर देसी ॥ ए एएरे एक वार सुपदुप की कहसी ॥ ऐ० ऐरे ऐसी करणी तो कवहु न रहिये ॥ ओ ओओरे ओलंभो प्रभु को क्यों सहिये ॥ औ औऔरे और काम तो सवही दुराग ॥ अ अं अरे अंग हीण हरि भक्त विहूणा ॥ अ० अ अ रे अ अ करतो जल नहिं पीजे ॥ क क करे क्रम माये कन्हू नहिं कीजे ॥ ल ल लरे ल ल करतो घर घर नहिं फिरजे ॥ ऋ ऋ अरे ऋद्धि मिद्धि दाता हिय धरिजे ॥ दोहा ॥ यह शिक्षा वचीम को जो कोड वाचं सार । श्री धर साचा हेत सू परजा करे जुहार ॥ इति श्री शिक्षा कक्षा वचीमी संपूर्ण समाप्तः ॥

विषय—शिक्षा के ३२ छंद ।

संख्या ४५४ ई. शिक्षा कक्षा वचीमी, रचयिता—श्रीधर गौड, कागज—आधुनिक, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४, परिमाण (अनुपुष्प)—३२, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रमाकांत शुद्ध, ग्राम—पुरवा गरीबदास, डाकघर—गडवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

संख्या ४५५ ए. शालहोत्र प्रकाशिका, रचयिता—श्रीधर कवि, कागज—डेगी प्राचीन, पत्र—१४, आकार—११ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुपुष्प)—८८८, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बद्रीसिंह जर्मादार, ग्राम—खानोपुर, डाकघर—तालाव बक्मी, जिला—छन्ननऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शाक होत्र लिख्यते ॥ होहा ॥ श्री गणपति गीरी गिरा पति हरि हर के पद प्यापि । श्रीघर विरचित ग्रंथ को है कुलमे सुपदायि ॥१३ अथ छप्ये ॥ धिर पर लमत कीरीर काल में तिष्ठक विराजत । कुशल कामन मांदि गरे बन माका छात्रत । पीताम्बर कटि कने हाव दक्षिण ठा जनवर । स्वदन में आरूढ़ कदम ररसी पाप कर । टिग पारम सों मुमुक्षुवाठ किमी पम को धीमा करे । यहि वैप गोविंद धर्मद में मगल श्रीघर को करे ॥ २ ॥ अम्पय ॥ ब्रह्मा के मुठ भमि भमि के चम्द बपानो । जक इवरूप मयो तामु बसै गुन ज्ञान विधानो । तामु बंस में मये मुनिद महिपति जानो । मगर साल मक शीप तामु राज उर जानो ॥ ठिग पर राम जो पुत्र करि वहि शोदि सुर पुर गये । मृत भूप मये वहि देस म सकक उपद्रव बहु हुये ॥

अंत—किरि हीरै प्याम्ही त्यसो आहुति एक हजार ॥ गाई को भूत छानि कै काजे बुधि बदार ॥ इई दृष्टिना माति बहु बिघन को यहि जानि । मनु मायी को बरस त्रिय सांति बामु की मानि ॥ इति श्री शाक होत्र प्रकशिकायां श्रीघर मुकनि विरचितायां सिद्ध्या कौंडे हैशाका उपद्रव सांति बरमन नाम सप्त विसति उप्याय ॥ २७ ॥ इति श्री शाक होत्र ग्रंथ श्रीघर मुकनि विरचितं प्रथम सिद्ध्या कौंडे समाप्तं पुन मस्तु भावन भासे शुक्ल पत्रे तिथि पञ्चादमन्यां रविचार लिखा दबी ॥ संवत् १९२० वि० सम १९७७ अक्षरिणी ॥ शाक होत्र समाप्तं क्विपि कै कर्तुं तत्पर ॥ श्रीता राम राधा कृष्ण पारवती दिव—

विषय—इस शाक होत्र में २७ उप्याय है सौ वर्णन । (१) ग्रंथ निर्माण वर्णन अथ उपपत्ति (२) बाजी वर्णन (सत्री हैश्य दृष्ट संकर) (३) बाजी उपपत्ति देवा वर्णन उत्तम मत्पम अधम देवा बाजी (४) सिद्ध्या कौंड बाजी रंग वर्णन शुभा शुभ रंग पहिल-काइ रंग मंगल अटक इयाम करण रंग इयाम कर्ण पञ्चकन्याया रंग (५) अष्टम कदम (६) धारी वर्णन (७) अष्टम भीरी वर्णन (८) आसियत वर्णन, (९) शीप अंग वैचार वर्णन (१०) शुभ कदम (शुभ भीरी स्रजग) (११) अथवा वर्णन (१२) परीही कृषी की चेष्टा—बाजी वर्णन शुभ चेष्टा, (अष्टम-चेष्टा) (१३) मन विचार (१४) अथ सब का विचार (१५) बाजी अन्म विचार (१६) बाजी अन्म वर्णन (जामु प्रमाण) (१७) बौद्ध के प्रसब (समी ले बठेरा की विधि) बजम (१८) हृप पिछामा और उपचार (१९) हय को स्वरूप (२०) अथ बंग वर्णन (२१) अथ ज्योतिष गुह (अमचार गुह्य) (२२) अथ ताडन विधि (२३) अथ केरन विधि (२४) अथ को सकुन वर्णन (२५) शाका बनारम विधि (२६) बाजी प्रवेश विधि (२७) हय साध्या के उपद्रव कथन ।

सद्यपा धन्य धो शाकहोत्र प्रकाशिका रचयिता—राजा श्रीघर (ज्योषक), कागज—देही, पय—२८२, आकार—८×६ इंच, पण्डि (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुच्छेद)—७९३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पय, लिपि—जागरी, रचनाकाल—सं० १८९६ वि लिपिकाल—सं० १९३९ वि०, प्राप्ति-स्थान—श्री उमरावसिंह ग्राम—मन्डीका, टाकपर—मठराहदा, जिला—सीतापुर ।

आदि—४५, ५ के समान ।

अंत—इति श्री सालहोत्र प्रकाशिकायां श्रीधर सुकवि विरचितायां चिक्रिमा कांडे दाना विधि वरननं नाम चतुर चत्वारिपो अध्यायाम् ४८ सालहोत्र समाप्त सुभ मस्तु संवत् १९३९ साके १८०४ ।

संख्या ४५६. छोक श्रौंग शकुनविचार, रचयिता—श्रीधर (संगृहीत), कागज—आनुनिक, पत्र—१५, आकार—६ × ५ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामनाथ पाठे प्रधानाध्यापक प्राइमरी पाठशाला, ग्राम—कुरही, टाकधर—जिठवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ प० श्रीधर कृत संगृहीत शकुनव्यंती प्रारंभ ॥ प्रथम छोक विचार लिप्यते ॥ प्रथमहिं भाषां छोक विचारा । सकल सुभासुभ मति अनुसार ॥ छोक पीठि की शकुन उचारं । वाहं कारज मजी सँवारं ॥ मन्मुख छोक लराहं भासं । छोक दाहिनी दव्य विनासं ॥ ऊँची छोक कहँ जय कारी । नीची छोक होय भयभारी ॥ अपनी छोक महा दुप दाहं । ऐसे छोक विचारो भाहं ॥ छोक सूँघनी छल कर लीनी । छरदी धाँस कही फल हीनी ॥ वाहं ऊँची पीठि की । छोक कही सुगकार । नीची सन्मुख दाहिनी, अपनी छोक अमार ॥

दो नयन पट कर्ण भुजा रवि सजाणो । पोपा तच्च प्रमाण स्याम अरु स्वेत वखानौ ॥ सात शीम दश पंच दश दो पंक्ति सो रे । नरु शिख पंचक ईश करण शिव सख्या दो हे ॥ पय पय प्रति पंच दम अवर पट अगला चरण । श्रीधर माँचे देपिये ब्रह्म रूप अशरण शरण ॥ १ ॥ पोल पोल कर देपि औपि अन्तर की साँची । विन ममुझे सव कूट कूट की पोथी घाँची ॥ च्यार वेद पट शास्त्र आठ व्याकरण पुनीता । मौर्य योग वेदान्त भाष्य उपनिषद् गीता ॥ दोहा—अरु अरु प्रति अग सव, अपिल मृष्टि पूरण करण । श्रीधर साँचो देपिये, ब्रह्मरूप अशरण शरण ॥ २ ॥ इति भट्टडली विचार सपूर्ण ।

विषय—पृ० १ से पृ० ८ तक—छोक विचार, शकुन कुचे आदिकी बोली और भूमि खोदने के विचार से, शूद्रादि के मार्ग में मिलने का फल, नकुल तथा चक्का मिलने का फल, यात्रा के समय के शकुन, यात्रा के समय के कुछ योग्य कार्य । पृ० ९ से पृ० २४ तक—द्वादस मास गर्भ प्रमाण, गर्भनाम, वर्षा संबधी विचार, बारहों महीनों में वायु तथा मेघ के संबध से विचार । पृ० २५ से पृ० ३० तक—संक्राति विचार, ग्रहण विचार, छिपकली व गिरगिट को गिरने का विचार भिन्न २ अंगों के संबध से तथा श्रीधर कृत कुन्डलियाँ ॥

संख्या ४५७. प्रश्न तंत्रमाला, रचयिता—श्रीकृष्ण मिश्र, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—६ × ३ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय, टाकधर—बिसवाँ, जिला—मीतापुर ।

आदि—श्री गुरु गणधिप शारदाभ्योनमः ॥ श्री राधा कृष्णायनमः ॥ ॐ ॥ अथ प्रश्न तत्रे लिप्यते ॥ श्री राधा राधा रमन सुमिरि चरन चित्त चार । कियो मिश्र श्री कृष्ण तव

अप्य प्रह्न विचार ॥ श्री गुरु गनपति प्रारदा सकल देव करि महु । प्रह्न संघ बर्षन करहु
करुण करि बर देहु ॥ तुरिय भवन अपि सूक्ति कहु निज प्रभु सुभ सुव हेरि ॥ के सुभ
प्रभु की दृष्टि ते सुप्र गृह मू की देरि । कब तनिहे अचिकार बहु सुदो तु राप्यो रोकि ।
मपन छाहि वरनठ बिबुध सो कहु सगन बिलेकि ॥ जो प्रह्न समी चरन छगन होइ ।
निज नाथ किमुन सुन अपि तस होइ ॥ यो सुदो बंधे ते सुनि प्रवीन । पुनि ममुज होइ
अचिकार हीन ।

अंत—दूजी तिय तन गौर अति नौकाये पित सोइ । सर्प सहित छाबो ममुज
पह जायन सब कोप ॥ प्रह्न संघ श्री कृष्ण पह बरम्यो प्रमति दपि । भीरों ये पाते वडे
तिनम सपो बिलेपि ॥ निजु मति समी इमी कयो प्रभु जस सामठ भावि । मूक
निरपि देवज सय छमियो अपनी जानि ॥ कियो मिहूर पाराह जो जातक प्रह्न
विचार । तिनके सुत सुहम कियो ठाही को पह सार ॥ कृष्णादिक को मति निरपि
सीक उखल बंधु निजमति सम पंडित सुपु सोक पी पकि कीन ॥ तेही के अनुसारसो
बरम्यो प्रह्न विचार ताजक के मत के बर बाड़े प्रथ अपार ॥ समर सिंह कृत प्रथ में
ताजक लप्यो विचित्र । इस नारायण को कियो निरप्यो परम पवित्र नील कंठ को भागि है
ताजक तंत्र जर्मत । अमिठ योग तिनमें बर विज बर तिभे अंत ॥ अपि हाते भयभीत
बर कलि क अति विन्तार ताते मी सुहम रच्यो पह सुनि प्रह्न विचार । यिनु इदितुके पाहि
अपि कहिवा सुमति विचार ॥ १५० मिभ श्री कृष्ण पह परहित निज चितु चारि ॥ इति
श्री ममिभ हरिवृत्त चरमार बिंदु मकरंदा स्वातक श्री ममिभ छोकमन तनुज श्री कृष्ण
चर्चरी कवि रचिते तिविर प्रहोप प्रान तंत्र समाप्त ॥

विषय—प्रह्न विचार और शुभ अशुभ फल ।

संख्या ४५८—आराध्यनीतिर्षण, रचयिता—श्री छाक, कापड—जातुनिक, पत्र—

२८, आकार—८ x ४ इंच, पल्लि (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुपुष्ट)—१२९,
पूर्व, रूप—नवीन पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकार—सं० १६३० = १८७३ ई०,
लिपिकार—सं० १६४२ = १८८५ ई०, प्रातिस्थान—श्री गंगाधर प्राम—ममीरा पेवा,
जिजा—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ आराध्य नीति कर्षण लिप्यते ॥ अथ प्रथमोऽ
ध्याय ॥ तीन छोड़ के पाठन करने बाडे सर्व शक्ति मान विष्णु को मिर से प्रणाम करके
अनेक शास्त्रों में से निष्काह कर राज नीति समुदाय नामक ग्रंथ को रचता हूँ ॥ जो इसकी
विधि बत बढ़कर धर्म शास्त्र में प्रसिद्धि शुभ और अशुभ कर्म को जानता है वह अति
उत्तम गिना जाता है ॥ मैं लोगों की हित की इच्छा से इसको कहुंगा जिसके ज्ञान माघ से
संबंधता प्राप्त हो जाती है ॥ निर्वृद्धि सिध्य को पढ़ने से दुष्ट की के पोषण से दुष्टियों
के साथ व्यवहार करने से पंडित जन भी बुद्ध पाता है ॥

अंत—राजा वैद्यनाथ मम जति और पाठक वाचक और जाइवा प्राम कंटक अर्थात्
प्राम वासियों को बुद्ध देकर अपना निर्वोह करने वाला ये दुनों के दुष्ट को नहीं जानत ॥
है वाके भीने को क्या देगती हो तुम्हारा पृष्ठी पर क्या गिर गया तब जाने कहा रे रे

अंत—इति श्री सालहोत्र प्रकाशिकायां श्रीधर सुकवि विरचितायां चिकित्सा काटे दाना विधि वरनन नाम चतुर चत्वारिपो अध्यायाम ४४ सालहोत्र समाप्त सुभ मस्तु संवत् १९३९ साके १८०४ ।

संख्या ४५६. छोक शकूनविचार, रचयिता—श्रीधर (मंगूहीत), कागज—आधुनिक, पत्र—१५, आकार—६ X ४ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री रामनाथ पाठे प्रधानाध्यापक प्राइमरी पाठशाला, ग्राम—कुरही, ढाकघर—जिठवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प० श्रीधर कृत् मंगूहीत शकूनवती प्रारंभः ॥ प्रथम छोक विचार लिप्यते ॥ प्रथमहि भाषों छोक विचारा । सकल सुभासुभ मति अनुसार ॥ छोक पीठि की शकून उचारें । वाई कारज मवी सँवारें ॥ मन्मुख छोक लराई भासै । छीरु दाहिनी द्रव्य विनासै ॥ ऊँची छोक कहे जय कारी । नाँची छोक होय भयभारी ॥ अपनी छोक महा दुप दाई । ऐसे छोक विचारों भाई ॥ छोक मूँघनी छल कर लीनी । छरदी धाँम कही फल हीनी ॥ वाई ऊँची पीठि की । छोक कही सुप्रकाग । नाँची सन्मुख दाहिनी, अपनी छोक अग्यार ॥

दो नयन पट कर्ण भुजा रवि सजाणो । पोदा तत्र प्रमाण स्याम अरु स्वेत वखानौ ॥ सात शीस दश पंच दश दो पक्ति सो हे । नख शिर पंचक ईश करण शिव संख्या दो हे ॥ पय पय प्रति पंच दस अवर पट अन्ला चरण । श्रीधर साँचे देपिये ब्रह्म रूप अशरण शरण ॥ १ ॥ पोल पोल कर देपि अपि अन्तर की साँची । विन समुझे सव कूट कूट की पोथी वाँची ॥ च्यार वेद पट शास्त्र आठ व्याकरण पुनीता । साँरय योग वेदान्त भाष्य उपनिषद् गीता ॥ दोहा—अरु अरु प्रति अग सव, अपिल सृष्टि पूरण करण । श्रीधर साँचो देपिये, ब्रह्मरूप अशरण शरण ॥ २ ॥ इति भट्टडली विचार सपूर्ण ।

विषय—पृ० १ से पृ० ८ तक—छोक विचार, शकून कुचे आदि की बोली और भूमि खोदने के विचार से, शूद्रादि के मार्ग में मिलने का फल, नखुल तथा चक्रवा मिलने का फल, यात्रा के समय के शकून, यात्रा के समय के कुछ योग्य कार्य । पृ० ९ से पृ० २४ तक—द्वादस मास गर्भ प्रमाण, गर्भनाम, वर्षा संवधी विचार, वारहों महीनों में वायु तथा मेघ के संवध से विचार । पृ० २५ से पृ० ३० तक—संक्राति विचार, ग्रहण विचार, छिपकली व गिरगिट को गिरने का विचार भिन्न २ अगों के संवध से तथा श्रीधर कृत कुण्डलियाँ ॥

संख्या ४५७. प्रश्न तंत्रमाला, रचयिता—श्रीकृष्ण मिश्र, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—६ X ३ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय, ढाकघर—यिसवाँ, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गुरु गणधिप शारदाभ्योनमः ॥ श्री राधा कृष्णायनमः ॥ ॐ ॥ अथ प्रश्न तंत्रे लिप्यते ॥ श्री राधा राधा रमन सुमिरि चरन चित चार । कियो मिश्र श्री कृष्ण तव

भाषा प्रश्न विचार ॥ श्री गुप्त गणपति शारदा सकल वैभ करि नहु । प्रश्न तंत्र वर्णन करहु
 कदना करि बर देहु ॥ हरिप भजन छपि बुझि कहु निज प्रभु सुम सुव हेरि ॥ के सुम
 प्रभु श्री दृष्टि ते सुप गृह भू श्री डेरि । कब तनिहे अचिन्त बहु पुत्रो सु राप्यो रौकि ।
 भयन ताहि बरबत विदुष सो कहु लगन विबोकि ॥ जो प्रश्न समी खरन छग्न होइ ।
 निज नाय किमुम सुव छपि तस होइ प्र सो पुत्रे बंधे ते सुनि प्रवीन । पुनि मनुब होइ
 अचिन्त हीन ।

अंत—दूजी तिय तन घोर अति नीकाये विठ सोइ । सर्प सहित ताबी मनुष्य
 यह जायब सब कोप ॥ प्रश्न तत्र श्री कृष्ण यह बरभ्यो प्रयति देपि । भीरों के पाते बड़े
 तिनमे छपो बिसैपि ॥ विदु मति समी हरी कछो प्रभु यस सामत जानि । मूक
 निरपि देबज सब कसियो अपनी जानि ॥ कियो मिहर बाराह जो यातक प्रश्न
 विचार । तिनके सुत सुसम कियो ताही को यह सार ॥ कृष्णाविक को मति निरपि
 डीका उल्लख श्रीन्ह निजमति सम पंडित नृप सोड पी पति हीन ॥ तैही के अनुसारसो
 बरभ्यो प्रश्न विचार ताजक के मत के धर बांधे प्रथ जपार ॥ समर सिद्ध हृत प्रथ में
 ताजक छप्यो विविध । हास बरायम को कियो निरप्यो परम पवित्र नीक कंठ को जाति है
 ताजक तंत्र अंत ॥ अमित भोग तिनमें धरे द्विज बर तिन्ये भर्तत ॥ छपि होते भवनीत
 नर कसि क अति विस्तार ताते मी सुसम रण्यो यह सुनि प्रश्न विचार । धितु देहिदुके पाहि
 छपि कहियो सुमति विचार ॥ १७७० मिश्र श्री कृष्ण यह परहित निज विदु जाति ॥ इति
 श्री मंसिभ हरिदत्त चरनार बिंदु मकरंदा स्वादक श्री मंसिभ कोकभन तपुज श्री कृष्ण
 चर्चरी कवि रचिते तिथिर प्रहोप प्रश्न तंत्र समाप्त ॥

विषय—प्रश्न विचार और शुभ अशुभ फल ।

संख्या ४३८. वास्तव्यनीतिवर्णन, रचयिता—श्री लाक, कपयज्ञ—भातुनिक, पत्र—
 २८, आकार—८ X ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुच्छेद)—३३९,
 पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, कृति—नागरी, रचनाकारक—सं० १९३०=१८७३ ई०,
 कृति-कारक—सं० १९४२=१८८५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गंगाद्वय, ग्राम—समोरा खेड़ा,
 जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणैसायनमा ॥ अथ जालचय नीति वर्णन लिप्यते ॥ अथ प्रथमोऽ
 प्याय ॥ तीन लोक के पासन करने बाके सर्व शक्ति भाव विष्णु की सिर से प्रकाश करके
 अनेक शास्त्रों में से निजाक कर राज नीति समुच्चय नामक ग्रंथ को रचता हूँ ॥ जो इसको
 विधि बत बड़कर धर्म शास्त्र में प्रसिद्धि शुभ और अशुभ कार्य को जानता है वह अति
 उत्तम विद्या जाता है ॥ मैं स्त्रियों की हित की इच्छा से इसको कईगा जिसके ज्ञान मात्र से
 सर्वशुभा प्राप्त हो जाती है ॥ निर्बुद्धि शिष्य को पढ़ाने से कुछ भी के पोषण से बुधियों
 के साथ ब्योहार करने से पंडित जन भी दुख पाता है ॥

अंत—राजा देव्या कम अग्नि और पाठक पाचक और ज्योतिषी ग्राम कंटक अर्थात्
 ग्राम वासियों को कुछ देकर अपना निर्वाह करने बाधा से दूसरों के दुख को नहीं जानते ॥
 हे बासे नीच को क्या देखती हो तुम्हारा पृथ्वी पर क्या गिर गया तब भीने क्या दे दे

मूर्ख नहीं जानता कि मेरी तरणता रूप मोती गिर गई उसको खोज रही हूँ ॥ हे केंतकी यद्यपि तू सापो का घर है तो भी निष्फल है तुझ में काटे भी हैं टेढ़ी भी हैं कीचड ने तेरी उत्पत्ति है तू दुख से मिलती है तथापि एक गंध गुण ने सब जीवों को प्यारी हो रही है । निश्चय है कि एक भी गुण सपूर्ण दोषों को नाश कर देता है ॥ इति श्री चाणक्य नीति दर्पण भाषा टीका सपूर्ण समाप्त. लिखत ज्ञानीराम वैद्य स्वपठनार्थं सवत १९४२ वि० श्रावण शुक्ल सप्तमी ॥

विषय—भवानीदास कृत दोहा छंद आदि का भाषा में टीका ।

संख्या ४५६ काव्य सरोज, रचयिता—श्रीपति (कालपीनगर), कागज—देशी, पत्र—६७, आकार—१२ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुपु)—१४०७, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७७७=१७२० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्णविहारी मिश्र, माण्डल हाउस, लगनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काव्य सरोज लिख्यते ॥ सोरठा ॥ लक्षतवाल विपु भाल अरुन वसन मनि माल उर । शंकर सुवन दयाल वदत पद मुर अमुर नित ॥१॥ सेवक जन प्रतिपाल एक रदन वारन वदन । प्रियन हरन ततकाल विपति कदन मंगल मदन ॥२॥ दोहा ॥ अनि समस्वाद महान को जामो सुप मरसाह । राचत काव्य सरोज मो मीपति पंडित राह ॥३॥ सवत मुनि० मुनि० मुनि० दाशी० यावन सुभ उपधार । अतिम्य पचमी को लियो ललित ग्रंथ अवतार ॥ ४ ॥ सुकवि कालपी नगर को द्विज मनिगी पतिराह । जम सम स्वाद जहान को वरनत सुप समुदाय ॥ ५ ॥ अथ काव्य लक्षण ॥ शब्द अर्थ त्रिन दोष गुण अलंकार रसवान । तासों काव्य वरानिये शीपति परम सुजान ॥ ६ ॥ शक्ति निपुनता लोक मत विन पति अरु अभ्यास । अरु प्रतिभाते होति है ताको ललित प्रकाम ॥ ७ ॥

अंत—अथ वीर रस विभाव ॥ युद्ध दान अरु लवु दया बड़े जबै उरसाह । है विभाव रस वीर को प्रगट करै कविनाह ॥ २० ॥ वीरयुद्ध रमालवन ॥ युद्ध कौराव न आवत है । जो सहा मुनि देवन को दुपदायक ॥ जब अराति को दम दलो सुरवानर नाहि सको सहि सावक । जो हनुमान सकोह करै विफरै नल नील जुईरन लायक ॥ मूछि मरोरि विलोकि भुजा निज माथुरी हास हसे रघुनायक ॥२१॥ मधवा रिपु रन आवत ही वरवव-प्रलय बहरान लगी ॥ जित ही तित्त भागि चले कपि कायर गातन में थहरान लगी ॥ कवि श्री पति जू उरसाह नहीं हिय लच्छन के छहरान लगी ॥ दगरे दग के हरि के अनुहारि सुसुक्ष महा फहरान लगी ॥ २२ ॥

संख्या ४६०. अनवर चंद्रिका, रचयिता—सुभकरन (मुलतान शहर), कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—१० × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुपु)—९२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७१ वि०, लिपिकाल—सं० १८९३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री मधुसूदन जी वैद्य, डाकघर—सीतापुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—अथ अनवर चंद्रिका लिख्यते ॥ छथै ॥ सुसुप सुपद ससि धरनि धर हेरव अव सुत ॥ एक रदन गज करन सरन दायक से दुर जुत । कपिल विनायक विकट विचन

मासक गणाधिपति पूष केत चर परम धरम बुद्ध इरम भगति गति ॥ प्रमु संबोधर वारम
 बदन विषामय बुधि वेद मय धुम करम दास इच्छत करम वै वै वै संभर तनय ॥ जय राम
 कुन वर्गन ॥ मनि सैकुलक म्हादि साहि सकुदी जानी । साधिले साह सुजान साहि असगर
 पहिचानों ॥ जनम्बर साहि समर्थ मुनीवर साहि पम्पसम । हासिम साहि प्रबंड साहि
 कासिम मु जयुपम कहि बेसबर साहिव बरुंड बरु कैसर साहि सुजान बित पुनि मासिक
 अमरपुर साहि हुप कुठ मंदन जसु किय अमित ॥

अंत—जन्म अक्षयि पालिप विमक भो जग अर्थ अवार । रुहि गुनी लोंगर परी मछे
 न मुक्ता हार ॥ मूँह च्छापेहू रई पन्यो पीठि कच मार । ओ सिरदा बारे महिमा महि
 सहिपनु राजा राह । प्रगठ बडता आपनी मुकुट पहिरिबत पाह । लछी जाह झांके करे
 हाथिन को वै पाद बहि वृषठा पहि पुर बसे घोबी कीर कुम्हार ॥ विपम बुपावित की तृप
 जिये मतीरन सोधि । अमित अवार अगाध अक माडे भूष पयोबि ॥ यई देही मोठी सुगय
 तनय गरब निसोक बेहि पहिरै जंग हग पुसति स्मति ईसति सी नाक । इति श्री जनवर
 अक्षिअर्पा सतसई बिहारी छक कृत १७ अवार हो प्रकाश । इति श्री बिहारी छक कृत
 सतसई समाप्त शुभ मस्तु अंत माघे शुक्ल पक्षे तिथी ११ रबिवासरे संवत् १८६३
 राम राम ।

विषय—पृष्ठ १ से ४ तक साधारण नाबिक्र और राजबंसा, ५ से ८ तक नक सिक्का,
 ९ से १७ तक अष्ट गर्बिता, १५ में रूप गर्बिता १६ से १९ तक मामिनी नाबिक्र, २० से
 सुरतांव, २१ से २७ तक साधारण परकीया, २८ से २९ तक दम दसा, ३० में सात्विक
 भाव, ३१ में मघ वान, दस हाव भाव, ३२ से ३६ तक मघ रस, ३७—३४ तक नावक
 नाबिका सती उक्ति परकनु आदि वर्णन ।

संद्या ४६१ प. कबहण, रचयिता—सुदामा जी, अगम—साधारण, पत्र—०,
 अक्षर—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुपुष्प)—११०, पूर्ण,
 रूप—प्राचीन, पय । कियि—कैथी, प्रासिस्वान—श्री लकर राम तिबारी, ग्राम—मुगा
 सिक, डाकघर—कलाकाकर शिवा—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री राम जी सहाई । कनका ककतुग धाम अघारा । बेहि मुमिरे मघ
 उतरी पाता ॥ साधु सग मिलि हरि रस पीवै । जीवन जन्म सुकठ करि छीवै ॥ लकना
 खोजहु सकक बहान । बाओ गाबठ बेह पुरान ॥

अंत—सस्ता संत की करी बडाह । महिमा अमित सकै को गाह ॥ बिप सगी
 सत गुठ के चरना । रसना एक कहीं छी गॉड ॥ लकना खेचि लीम गुठ अपनी जोरा ।
 माया जाक फंद विम तोरा ॥ निरभी भये सकक मय त्यागी । दिवके मन गुठ चरबन
 लागी ॥ सस्ता सोच विचार मिटि जाह । बीपक बीन गुठ कान लगाह ॥ मिट सोच गय
 विमक प्रकास । मन सुरज जय कीन प्रकास ॥ हा हा करि गुठ सरन आपन । श्री गुठ
 चरबन मघ लाव ॥ जैसे चन्द्र चहुँ दिनि घेरा । प्रगठ मानु जब मय सवेरा ॥

विषय—पृ० १ से पृ० १३ तक—'क' वर्ण से 'ह' वर्ण तक के प्राचीन अक्षर को
 पद के आदि में रख कर उपरोक्त वर्णन ।

संख्या ४६१ वी. नाहन भेष, रचयिता—सुदामा, कागज—साधारण, पत्र—५, आकार—८ X ५ १/२ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—मं० १९२६ = १८६९ ई०, प्रासिन्धान—श्री ब्रजभूषण मिह, ग्राम—झुक्वारा, टाकवर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री राधा कृष्ण जी ॥ अथ नाहन भेष ॥ चौपही ॥ एक सभे वृजचन्द्र नन्द सुत मन में यही विचारी । करि स्वरूप नाटनि जो, जेये देवन प्राण-न्यारी ॥ लहँगा पहिर केंसव की लीन्हों और कुमुम की मारी । अंगिया पहिर स्याम माटन की अति छवि देत किनारी ॥ पहिर लिये नक सिक से गहने चले कृष्ण वरमाने । ऐसो भेष धरौ मनमोहन कोऊ भेट न जाने ॥

अंत—जाके हिये प्रेम हे पूरण, सोई हरि के श्यामा । विना प्रेम हरि निकट न आवै, कर करि कोटि प्रसन्ना ॥ सो तुम प्रेम प्रेम करि हरि सां दोरी मन की बाधा । हूँ प्रमत्त तुमको वर दूँ हूँ श्री गुविन्दा अह राधा ॥ इति श्री नाहन भेष समाप्त लिखते लाले उमराव मिह सुदर्सि परगनह तिंदवारी, शुभ मितौ चैत्र सुदी ६ तनौ मन्वत् १९१६ सुकाम बाँटा ।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—श्याम का नाहन भेष धारण करना, उनके चस्मालंकार का वर्णन, कृष्ण का ललिता के धाम में पर्तुचना, वहाँ राधादि स्त्रियों के समारोह का वर्णन, पारस्परिक परिचय, नाहन द्वारा राधा के उवटना तथा शृंगार करने का वर्णन । (२) पृ० ६ से पृ० १० तक—राधा के पैरों पर जावक लगाते हुए कृष्ण को हँसी आ जाना और चित्रा का पहिचानना, चित्रा तथा ललिता की काना फूसी । चित्रा का जावक देखने के बहाने से नाहन (कृष्ण) का पग उठा देना राधा का पशाहुंश देकर कृष्ण को पहिचानना और विविध विनय करना । ग्रंथकार का परिचय—हूँमि के चले कृष्ण जी मंदिर मन में अति सुख मानो । कहिये कहा 'सुदामा' हरि को, कंहु भेट न जानो ॥ लीला के पढ़ने का फल वर्णन, हरि प्रेम प्रशंसा ।

संख्या ४६१ सी. सुदामा जी की वाराखड़ी, रचयिता—सुदामादास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—मं० १६२४ वि०, प्रासिन्धान—श्री बड़ीप्रसाद शुक्ल, ग्राम—शिवगंज, टाकवर—हरगाँव, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुदामा जी की वाराखड़ी लिखते ॥ कका—कमल नयन नारायण स्वामी । वर्ये द्वारका अंतर जामी ॥ वासुदेव लकर पड़ छाड़ै पथुमन अनिरुद्ध विराजै ॥ कका कलजुग नाम अधारा प्रभु सुमिरौ अंतरौ भव पारा ॥ साउ संगति करि हरि रम पीजै ॥ जीवन जन्म सफल करि लीजै ॥

अंत—यथा—यह अवसर नहि चारंवारा । ताते पुनि पुनि करत पुकारा । मानव मित्र तुम चतुर सुजाना । विष रस छाड़ि भजी भगवाना ॥ ररा रदन हरी सो लावो हीरा जन्म जनि वादि संवावो । अँसो हीरा जो गम जाई । अवसर चूके फिर पछताई । लला—लाल असोलक मन मल हरना । तनुमंडार जतन करि धरना ॥ प्रभू लाल गुरु देव लपाया

तृप्या लोम सबद्विर रीदाया ॥ बधा—बारबार मामी पद माया ॥ उन पद कमल चरण चित
 दग्धा ॥ ससासत गुद की क्य करी बधाई ॥ महिमा सुप तै बरमि न बाई ॥ चित सगो
 सत गुद के चरणा । रसमा एक कदां छति बरणा । पया—खीच कियो गुद अपनी ओरा ।
 माया कंद पछक से तारा । निर्मय मय पाप सब त्यागे । जब गुद चरणों में बिनु लाग ॥
 दादा—शोच विचार मिटं त्रिय बधते । रीपक ज्ञान दिये गुद लबते ॥ नास्यो तिमिर मयो
 परमासा । माओ हबि पूरण करि मामा ॥ हहा—हरि गये पाप पराचत भापु । श्री गुद चरण
 कमल परतापु ॥ प्रीत भुंज श्रुं दिसि धरा । प्रग्न मानु जब मयो उबैरा ॥ ह्य्या—हेबे को
 हरि की को नामा । हेबे को अन्नदान समाना । परये क्य प्रभु जी को प्याना । सेवन को
 गुद चरण समाना । लप्रा—छांछन बिपय बदन सो चहिये । संत गुद चरणन हो रहिये ।
 माम मसुर रस विसी सुजाया , गर्म बास नहिं होइ पयाना । बारापही अर्नद गुण गाबी
 सब संतन का सोस नमामी ॥ शीम पतित है दास मुदामा । बमस्वर गुददेव मुनामा ॥
 इति श्री मुदामा जी की बारापही समप्रतः क्लिप्तं पं० बेनी मारी शुकु छहरपुर निवासी
 कृत माने शुकु पकीं छति बासर संवत् १९२४ वि० ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री ॥

विषय—संसार के जाकों से पचना, ईश्वर की शरण पकड़ उसकी उपासना, गुद
 की संतों की सेवा करना आदि उपदेश ।

संख्या ४६१ श्री. मुदामा जी की बारापही, रचयिता—मुदामा जी, कागज—
 देसी, पत्र—३, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (भुज्जुप)—
 ७०, पूर्ण रूप—माचीन, पद्य, कियि—जागी, कियिबाछ—सं० १९४३ = १८८८ ई०,
 प्राप्तिस्थान—श्री बाधा सिंह, ग्राम—मिच्छिया, बाकपर—ईसानगर, त्रिका—शीरी ।

संख्या ४६१ ई. बावलही, रचयिता—मुदामा जी, कागज—साधारण, पत्र—५,
 आकार—६ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (भुज्जुप)—१००,
 रूप—मशीन, पद्य, कियि—जागी, प्राप्तिस्थान—महंत मोहनदास, दिव्या स्वामी पीठांबर
 दास, ग्राम—सोमानऊ, बाकपर—परियाबी, त्रिका—प्रतापगढ़ ।

संख्या ४६१ पफ मुदामा की बारापही, रचयिता—मुदामा कागज—साधारण,
 पत्र—५०, आकार—६३ × ६३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (भुज्जुप)—
 ४७५, पूर्ण, रूप—मशीन, पद्य, कियि—जागी, प्राप्तिस्थान—गोस्वामी द्वारा श्री वज्रीनाथ
 मठ, हुमेनगंज, लखनऊ ।

संख्या ४६२ वैद्यक मियत्र प्रिया, रचयिता—मुदामा (इमीपुर) कागज—
 आनुनिक, पत्र—६६ आकार—९३ × ७३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण
 (भुज्जुप)—१४८५, पूर्ण रूप—मशीन, पद्य, कियि—जागी रचनाबाछ—सं०
 १७२६ = १६७२ ई०, कियिबाछ—सं० १८०२ = १७४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री ताराचंद
 मुनीम द्वारा मुरलीधर महादेव प्रसाद, ग्राम—विरवागंज त्रिखंड—शीखुरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ अथ वैद्यक मियत्र प्रिया कल्पिते ॥
 दा०—गत्र सुप्र मादृष्ट मुमग अति पृक रदन जगवद । बाष्ट मारु चिउ कनुक से मुमिरी
 विरिवागंज ॥ १ ॥ पूष नपन मुम मति करम हरन हरिइ धमात्र । अयम बमन चनु

बुधिवर महा दान गज वाज ॥ २ ॥ रिपु मर्दन सकट हरन करन सदा आनंद । मूपक
वाहन द्रमते मित्रत सकल दुप दूँट ॥ ३ ॥ चौ० ॥ एक रदन फरसा कर लीने । गज
आनन सुन्दर सिर चीने ॥ वुमति हरन सुभ मति उपजावत । तुरत प्रवीन सुबुधि वर
पावत ॥ धूप दीप मोदक कर पूजा । विद्या वर अस देव न दूजा ॥ प्रथम गणेश पठत दुज
गावँ । सुभ कारज मंगल जग पावँ ॥ मदन कदन सुत गुहगण नायक । अति बल विक्रम
को तुव लायक ॥ महा दान दरिद्र नमावत । अति जसवंत निधन धन पावत ॥ भय सकर
संग्राम सहायक । अष्ट सिद्धि दाता सुप दायक ॥ १ ॥ कविता मगला मुद्रित वपाने । सदा
ध्यान गनपति उर आने ॥ दो०:—वाणी जू के वडन विधु, सुधा अमृत विप कंद । सिव चकोर
जिमि चित्त वसँ, नहिं कलक मुप चद ॥

अंत-टीका ॥ मोंटि पीपर मिरच इन्द्र जव कुटकी हरँ मोया वहेरे आमरे इनकी सम
मात्रा ले क्वाथ कर हरद डारु हरद इनको चूरन करि डारे पियावे कटक ज्वर जाइ ॥ इति
त्रिकुटादि क्वाथ ॥ अथ शृगाक ॥ ककरासिगी कुरे की छाल हरँ मेयी कचूर चिरायतो
भारंगी, हरद कुटकी, पुहकर मूल सितावरि, चाव, सोंटि पीपर, कायफर, आँवरे देव डारु,
वहेरे मिरच कटैया की जर, अरुसे की जर ॥ इनकी सम मात्रा ले काढ़ो कर प्यावे कटक
ज्वर जाइ X इति श्री सुदर्शन भट्ट विरचितायँ भापा स्फुट मंजरी काल ज्ञान मतांत सर्व
द्वैधक सारे सर्व रोग चिकित्सा द्वैध के लक्षण तथा रोगी के लक्षण तथा नारी परीक्षा अरु
जिह्वा परीक्षादि संग्रह हरीत मुनि धन्वतर अश्वनी कुमार अन्न सुसुति इति मतांत लिप्यते
वद्यक विद्यासार ग्रंथ उत्तम शुभ मस्तु ॥ मिः सावन शु० १४ को पूरन भयो सवत
१८८२ की साल में मन्दिर बलदेव जी के में लिपी छोटेलाल ब्राह्मण ने प्रति गिरधर लाल
की पुस्तक पँते उत्तारी प्रमान ग्रथ क्रयासार लक्षण अधिक गुण विधा ॥

विषय—द्वैधक कवि तथा आश्रयदाता का परिचय.—गिरधर सुत भिपजा प्रिया ।
भापा क्रियो विलाम । सार सार संग्रह क्रियो । संकल ग्रंथ मति आस ॥ X X X
पंडित प्रगट प्रसिद्धि मय, हमीरपुर स्थान । पंच आत तिहि वंश में । नाम सुदर्शन जान ॥
जन्म भूमि है वासु की । पुर पवित्र सुचि धीर । अति प्रवीन नर तासु के । बसत वैतवे
तीर ॥ गहर वार कुल जगत जस । कालीस्वर महिपाल । कीन्हो राज कुठार गढ़ । सर्गन
सहि नर पाल ॥ कवि जन ताके वश को । कहेँ लगि करँ वपान । प्रताप दुम सुत जासु
को । उपजाँ धर्म निधान ॥ सुप समूह संपति महत । निस दिन रहत अनड । सुभग नगर
निज ओढओ । मधुकर साहि नरिँड ॥ ताको सुत प्रसिद्ध महा नृप नृसिंघ सो देव । जेते
देम विम नर करत भूपकी सेव ॥ दान करनपारथ समर, पति पूरनपरिवार । महाराज नृसिंघ
को दियो सहाय भुजचार ॥ बुदेल खंड वृत्त खंड मे, मध्य देस में देस । पहार सिंघ
महिपाल को संकत्त सकल नरेस ॥ तिहि कुल सुजान नृसिंघ नृप करी धर्म तुत रीति ।
द्वारपर जैमे कृष्ण सों, करी स्वयवर प्रीति ॥ ताकी परजा सव सुखी अन्न वमन धन धाम ।
निरभय राज सदा रहे, अहि निमि आठों जाम ॥ ग्रंथ निर्माण काल.—सवत् सत्रह से
वरप । लागी साल उशीस । रित वमत फागुन सुभग । कृष्ण पक्ष वृत्त ईस ॥ सन दिन
सुभग चतुर्दशी, सिद्ध जोग तिथि वार ॥ प्रथम ग्रहर आरंभ यह । ता दिन भयौ विचार ॥

संख्या ४६३ एकादशी महात्म, रचयिता—सुदसंभ, कागज—देसी, पत्र—
१०३, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेप)—१८३४,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी, रचनाकाल—सं० १००७ वि०, प्राप्तिस्थान—जानक
मदन पुस्तकालय, बाकहर—बिसवा, जिल्हा—सीतापुर ।

भाषा—श्री गणेशाय नमः ॥ ओ० ॥ कृपा करी रघुबीर जब तब कबि किभा विचार
कियो महात्म एकदसि रचि भाषा संसार ॥ १ ॥ सबहूँ ही सतहपरि सबत मे संसार ।
भाहौँ स्वहूँ स्वमार को कथा कीन्ह अंतर ॥ मारग यह सुरजोक को कथा सुने नर बीप
गंगा की को भक्ति है दरसन कबि बित सोइ ॥ प्रथमहिं भरीं मातु में गंगा । बेहि
सुमरे उपरै मति गंगा । बे नर वसहिं गंग के तीरा । ते दैकुंठ जाहिं बसबीरा ॥ एक बित
हुइ गंग नहावै । ते नर सबे पदारथ पावै ।

अंत—जब सुनु कथा विचित्र यह भयो अह यक पास तब कहे सब परस्पर नारिन
बहुत दुखस ॥ आठ कान्हि विधि है पुत्र पदारथ वास । हर हर मंगल साजहिं नर नारी
करि आस ॥ बेहि दिन पुत्र प्रगट कर वासर । हरि सेमिकरि सब क्य आइर । अस्वम्य
भास पछ उचिधारा । रवि वासर कह प्रगट कुमारा ॥ सुनि के जाचक धाये आतुर विध्या
नर धाये बुध आतुर । यहाँ से आगे पृष्ठ यही अपूर्ण पुस्तक है ॥

विषय—वर्ष भर की चौबीस प्रकारियों का माहात्म्य ॥

संख्या ४६४. रामायक, रचयिता—सुकवि, कागज—देसी, पत्र—३ आकार—
७ × २ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुच्छेप)—१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—मागरी, प्राप्तिस्थान—श्री भन्नीसाह गंगापुत्र ठिबारी, ग्राम—मिथिच,
बाकहर—मिथिच, जिल्हा—सीतापुर ।

भाषा—श्री श्री रामायनमः ॥ श्री श्री राम राम रघुनेशन राम राम ॥ श्री राम राम
मरठा प्रज राम राम ॥ श्री राम राम रण कर्ण राम राम ॥ श्री राम राम शरण्य भव
राम राम ॥ १ ॥ श्री राम राम सकलेश्वर राम राम ॥ श्री राम राम मनुजीश्वर राम राम ॥
श्री राम राम मनुजीश्वर राम राम ॥ श्री राम राम शरण्य भव राम राम ॥ २ ॥ श्री राम
राम कर्ण शरण राम राम ॥ श्री राम राम कर्णाकर राम राम ॥ श्री राम राम कर्णा मिय
राम राम ॥ श्री राम राम शरण्य भव राम राम ॥ ३ ॥ श्री राम राम कमलेश्वर राम राम ॥ श्री
राम राम कर्णा मिय राम राम ॥ श्री राम राम कमल मिय राम राम ॥ श्री राम शरण्य
भव राम राम ॥ ४ ॥ श्री राम राम कमलाधर राम राम ॥ श्री राम राम जगन्नाथ
राम राम ॥ श्री राम राम महाशय राम राम ॥ श्री राम राम शरण्य भव
राम राम ॥ ५ ॥

विषय—राम नाम माहात्म्य कर्णव ।

संख्या ४६५ ए. अन्वत्त प्रकाश, रचयिता—सुकदेव, कागज—देसी, पत्र—२३,
आकार—५ १/४ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुच्छेप)—४५०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—मागरी, लिपिकाल—सं० १८४३ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—
श्री रामस्वरूप मिश्र ग्राम—पंडित का पुरवा, बाकहर—संभ्रामगढ़, जिल्हा—प्रतापगढ़ ।

आदि—अथ अध्यात्म प्रकाश भाषा लिप्यते ॥ अज्ञान तिमिरा धानां ज्ञानां जन शला कपा । चक्षु रन्मालित येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥ मन्त्रेया ॥ वावर जगम जीव जिते जग भाति अनेकन भेष धरे ह । तामहि सच्चिदानन्द सुरूप सु आत्म एक प्रकाश करे है ॥ ताविन जानत सिंधु सो लागत जाने ते गोपद तुल्य तर है । यदित ताहि कहे सुपट्टेव सु ब्रह्म सदा सवही ते परे है ॥ व्याम मथन करि वेद म्व, रच्यो ग्रंथ अतिसार । श्री गुरु शंकर देव जू, कीन्हो चहु विस्तार ॥ तिन ग्रंथनि को समुधि मत, हिय धरि पर उपकार । भाषा करि सुपट्टेव कवि, रच्यो ग्रंथ अतिसार ॥ जैसे रवि के नेज सों अधकार मिटि जात । अध्यात्म प्रकाश ते त्यों अज्ञान नशात ॥

अंत— जीव ईम न्यारो कहे पाताजलि म्व काल । देह क्लेशन योग करि कहे मुक्ति सुखलाल ॥ प्रकृति पुरुष अरु तत्त्व को जाके होइ विवेक । यहै मुक्ति सापिक कहे ज्ञान भयो सव एक ॥ वेशेपक अम न्याय पुनि होइ ताकी जानि । भेद चाटनर के विषे, मुक्त पदारय जानि ॥ अवर शास्त्रन के मते परे जाल मँ जाइ । कल्पन लौं श्रुटे नहीं, जन्म मृत्यु हं भाइ ॥ अपनो मत यह वेद सिर सबतँ उत्तिम जानि । ताही को विश्वास करि भूल न अवरों मानि ॥ दुर्मति औरों नास्तिकी वेद विरोधी और । भूलि न तिन्हें सुनाइये चह मत सच सिर और ॥ जिनके उर हरि भक्ति है, अरु गुरु भक्ति ममान ॥ तिनके आगे रोलिये, यह उपदेश निदान ॥

× × × ×

इति श्री सुखदेव कृत भाषा अध्यात्म प्रकाश सपूर्ण शुभ मस्तु ॥ मिति भाइवनि सुदी परिवा नवरात्र का परथम दिन स० १८५५ रविवाररे ॥ जो देपा सो लिपा मम दोपो न दीयते ॥ मुकाम लक्षनपुरी ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १५ तक—मंगलाचरण, प्रस्तावना, गुरु शिष्य की व्याख्या, ज्ञान की परिभाषा, ज्ञान के चार साधन, वैराग्य विवेक, आत्म निरूपण, एक ब्रह्म के तीन भेद मानने के कारण, ईश्वर वर्णन, चतुर्गुण की अवधि, कल्प वर्णन, त्वपद वर्णन, त्रिगुण लक्षण, अज्ञान लक्षण, लिंग निरूपण, तत्त्वों के पत्री करण का वर्णन, स्थूल देह का वर्णन तथा पूरे शरीर का विस्तृत वर्णन । (२) पृ० १६ से पृ० ३२ तक—पंच कोश वर्णन, कर्मों के लक्षण, आत्मा की सत्यता तथा शरीर के मिथ्यात्व का वर्णन, ब्रह्मनिरूपण, वर्णाश्रम अभिमान, आश्रम वर्ण अभिमान, तत्त्वअसि का भेद, जगदीश की देह का वर्णन, तत्त्वअसि की व्याख्या, एक ब्रह्म के द्वादश नाम वर्णन, आनन्द वर्णन, पर ब्रह्म वर्णन में असमर्थता का कथन । ब्रह्म की सत्यता तथा प्रपच की असत्यता वर्णन । (३) पृ० ३३ से पृ० ४४ तक—उपादान तथा निमित्त कारण का वर्णन, भिन्न २ उदाहरणों से निज रूप का ज्ञान कराना ।

संख्या ४६५ बी. ग्रन्थात्म प्रकाश, रचयिता—सुखदेव, कागज—साधारण, पत्र—३०, आकार—६१ × ४३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—श्री गजाधर चौबे, ग्राम—बाँदा, ढाकघर—गडवारा, जिता—प्रतापगढ़ ।

संख्या ४६५ सी छद विचार, रचयिता—मुजदेबमिश्र (बंरिसा), कागज—
 देसी पीछा, पत्र—११, आकार—१२ × ८ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण
 (अनुच्छेद)—६३१, रूप—मशीन, पय लिपि—भागरी, लिपिग्रह—सं० १६४३ =
 १८८६ इ०, प्राक्षिप्याय—श्री कृष्ण बिहारी मिश्र माहम हाउम, एननड ।

आदि—× × मे बापल गात मनि मयो सूदि महिपाल ॥ बस प्रताप सौं
 तिम क्रियो जगमव केमो भाऊ ॥ १२ ॥ सुरज री प्रमुदित मयो निर्मल बापल गीत ॥
 ताम ताही सम क्रिया सूदि महीप उदात्त ॥ १३ ॥ परम पदिय विभिन्न रूप सध मये पा
 र्यत ॥ पहिल ही प्रागल मये सूदि नृपति अवर्तन ॥ १४ ॥ सूदि महीपति क मयो बहुरि
 महीप मनार ॥ कुमद कुंद सा जगममत जाओ पन चतुवार ॥ १५ ॥ परती पाल मनोर
 क मयो महीप सुजान ॥ भागुपदा मूपन मना दूजो मूपर भाग ॥ १६ ॥ महिप सुजान
 सुजान ते बहुरि मयो नृपराय ॥ त्रिनरु पमकी जगत में मदिमा कही न जाय ॥ १७ ॥
 बहुरि शांति बाहन मय राजन क शिरताम ॥ भान घाळे छीनि के तिम जीते रिपु
 यात्र ॥ १८ ॥ शृंगट मये तिमके बहुरि महाराज अपर्बद ॥ निज प्रताप सौं तिम क्रियो
 दुशामन को मद् मद् ॥ १९ ॥

अंत—सारह सोरह पानपर पिरति अंत मयु भाणि । यादे रूप पनासरी बहत
 मुकवि अरु जाकि ॥ २३१ ॥ पया ॥ सरूप ई सुपामय मुजनन हेरि हेरि निपट निहाम
 क्रियो मुकविम को समाज ॥ नैर सम शपदि दपदि समयेर गदि बर करि दैरिग घटेर जते
 यन की यात्र ॥ मंतु मृग नैनिन का मपुर मनाज निज ब्येज पुंज सर सब धूम को
 शिरताज ॥ महा बाहु रूपनि पदर को न दनु ई पहाद बदि मति को विमति सिद्ध
 महाराज ॥ २३२ ॥ रूप पनासरी अय गपास्या शहरवें ॥ जय अरु जेर करि सेर समयेर
 पहादुर दैरिपार वरन बिदाहरन सिद्ध समाय दस्य अकरय बलपरय समान महा वीरार्थिपीर
 समर धीर यरम सुधर धराधीन धबसधाम धकन सुजम पु विज्र मुर सुधीपार धबसत श्री
 महाराज पिराज दिम्मत सिद्ध पिरजीय ॥ २३३ ॥ गय अय काछारापहा ॥ बहुरि बरति
 अनुच्छेद जाति दूदती ९ पंक्ति १० इति श्री दिम्मत सिद्ध मिमिते मुकदेव हृत छंदो विचार
 बर्न इति माया इति विंगल सा श्रेति भाग्य समाप्तम् ॥ शुभम् श्री संवत् १९४३ व्यापक
 शुक्ल चतुदश्यां अ गी पूज ॥

संख्या ४६६ डी पात्रिज प्रकाश, रचयिता—मुजदेब मिश्र, कागज—देसी,
 पत्र—४४, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुच्छेद)—
 ५५० पृं, रूप—प्राचिन, पय, लिपि—भागरी, लिपिग्रह—सं० १६४० = १८८३ इ०,
 प्राक्षिप्याय—श्री हरिहर बरन सिद्ध, ग्राम—ममरेजापुर टाकपर—बेबीगंज, जिला—
 हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनमः अय पात्रिज प्रकाश निरयने । प्रथम श्रुति अनुप्रास
 साध अरुम—१०—पुर्ण शुद्ध केई वार वार जई आइ । कइ श्रुति अनुप्रास को पंक्ति
 कदि गमुदाई संश्रुतेरि ॥ आइ य बर्न संश्रुं श्रुति अनुप्रासादयः ॥ दो० ॥ अमरु मयन

करुना करन कमला पति करतार । करतु कृपा कविराज को कामट कान्ह कुमार २ ॥
छंद त्रिभंगी । छेका नुप्राश इन दुहून को लक्षण । पहिले कल दग पर मुनि वसु वसु पर
बहुरि सुरस पर विरति जहां । फनि भाषित मानो बुधिजन जानो गुरयक आनो अंत तहां ।
कहुं जगनज आवै कवि मन भावै श्रवन सुहावै गुनहि गढ़े । तिरभंगी नामा छट सुघामां
अति अभिरामा कीर्तिलहै । ३ ॥ छेका नुप्राश ताको लक्षण ॥ दो० । तुक सौं तुक जोरें
जहां । चरन चरन शुभ वृत्ति अक्षर के स्वर होई सम छेका कहत सुवृत्ति ।

अंत—अथ लखत बंध सर्वैया—जव लगि वेद पुराण पुरुष पूरण नारायण । जव
लगि भूधर भूमि मानु शशि घर तारायान । जव लगि गौरि गणेश सुर सुर पति सुर
सुनिये । जव लगि गंग समुद्र रुद्र च्यासादिक गुनिये । कविराज फाजिल अली महावली
कीरति लहै संपति समाज । संतति सहित सुचिरं जीव तव लगि रहै । ३२६ ॥
आशीर्वाद छथै ॥

स	त	रा	प	स	अ	क	धि	रि
चि	रं	जी	व	फा	जि	ल	प	ली
व	ग	व	न	ल्	न	स	र	प

इति श्री कवि कुलालंकार चूडामनि मिश्र शुक्रदेव कविराज विरचिते फाजिल
अली प्रकाश संपूर्णः ॥ सं० १९४० कार्तिक मासे कृष्णपक्षे त्रिंशो ७ चंड वासरे मेघ वर्ष
मिश्रेण लिखित : फाजिल अली प्रकासम् ।

विषय—नायक नायिका भेद ।

संख्या ४६५ ई. फाजिल अली प्रकाश, रचयिता—सुखदेव मिश्र (कपिला),
कागज—साधारण, पत्र—१५३, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५,
परिमाण (अनुष्टुप्)—११७०, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७३३ =
१६७६ ई०, प्राप्तिस্থान—श्री रणधीर सिंह जर्मादार, ग्राम—खानीपुर, ढाकवर—तालाव
वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि-अंत—४६५ डी के समान ।

गुणिका—इति श्री फाजिल अली प्रकाश काव्ये समाप्त शुभम् भूयात् ॥ वैशाख
मासे शुक्ल पक्षे त्रिंशो एकादस्यां भौम वासरे लिपतं पुस्तकं मिदं शिव प्रसाद भौली
मौला पानीपुर ।

संख्या ४६५ एफ. विंगल, रचयिता—सुखदेव, कागज—साधारण, पत्र—२२,
आकार—६३ × ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३०, रूप—
प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७७ = १८२० ई०, प्राप्तिस্থान—श्री
राधाकृष्ण शास्त्री, ग्राम—भर्वासी, ढाकवर—गढवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री ग्लोसायनमा ॥ श्री महा वैभवाय नमः ॥ हा० ॥ पाँच मुमिरि गोपाक के, पाय गुदम ते ग्याय । भाषा भाषत पिगळहि, मुमिपो मुकवि मुजान ॥ १ ॥ कपुगुद विचार—संज्ञोगी की आदि को अनुस्वार उठ होय । हीरघ ई कळ जासु में, गुद कडियत ई सोय ॥ २ ॥ चरन अंत के वरन में, गुद कपु बुझो विचार । एक कला की कपु कही, पिगळ के अनुस्वार ॥ ३ ॥

अंत—सैनिका उंद ॥ पाह पाह गोल गोल धारबर्न ५ । अंत हीह मय मानु सर्भ दे । साज बाज बाज मथा मानिये । सैनिका सुछंद देहु जानिये ॥ यथा ॥ हृष्य कृष्ण काली कंस कंदना । वासुदेव देव बंदना ॥ गोकुण्डेय मोरुडेय पडना । जय गोविंद विष्णु बंस मंडना ॥ माळती ॥ पाई पाई ग्यार गुद जहाँ सोहाई जो राई ॥ दोहा ॥ मापित फनि पति प्रथ जो । संगम किष्पी बभाय । भाषा कवि सुप देव करि । उंद पंथ सुप पाय ॥ गाव उंद दे आदि सभ कियो जो पिगळ नाम । प्रति सम सम अछर धरी । क्षमियो बुध जय काम ॥ सुख अनुक गति नही । महीं बुधि गति लीन । सुकवि मुजन करि राग मम सोषी प्रथ प्रधीन ॥ करो चई नू काव्य कपु उंद समेह लगाय । सुगम सदा परमान है, अगनहि द्यो मगाय ॥ इति श्री पिगळ समाप्त शुभ मस्तु प्रति भाषी सी किष्पते मम होयो न दीपते ॥ श्री संवत् १८७७ फासुग्य मासे च हृष्य पक्षे त्रितीयायां गुरु वासरे शुभ ॥ इति श्री पुस्तक प्रह्लाद सिंह नू राज कुमार की मन्मथन पोपर वहा तामु भागवत लिख्यते । राम सेवक सिंह विठ्ठ कर मोक्षम पास इवरूप ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १ तक—भंगका चरन कपुविचार, गुद विचार, गण विचार, दबता भीर उभके फल, दग्धाक्षर विचार, दग्धाक्षर का फल, भाषा छदो की अनु क्तमनिका (२) पृ० १ से पृ० २० तक—मात्रिक छंदों का लक्षण भीर उदाहरण गद्या, होहा, रोहा, रसिक, र्चपिया, घटा, घटार्चद, पादा कुकक, काव्य कुंडलिपा, उरुहाका, छर्प छपी के इकदर भेद छपी के दोष, कवित छपी के वरन । बीबोका छंद । मीहना, राईसेना, पद्मावती, सोमावती, शूलवा, माका, जुरियाला, सोरटा, कासिका, मनुभार, कुकुम, सरसी, इंदर, कला, दीपक बिडोकिठ, निमळा, सिंह बिकिठ, रद पद, लीकावती हरिगीतिका, विमंगी, बुर्मिका (अर्थात् ४७ मात्रिक छंदों के लक्षण) (३) पृ० २० से पृ० ४२ तक—वर्णपुच, वर्णहृत्तों के लक्षण च उदाहरणः—उरुका, प्रति उरुका, मधु, मही सार, मर्षा पृगी । रमना कमळ सुगंधु, मंदिरा, प्रतिघा, भेद चतुराक्षर प्रस्तार माळती, मुठिछा पंचाक्षर भेद हरिक, हंसी जमक, पद्माक्षर मेपरात्र छंद, तनुमर्षा, सशि बंदना, बसुमती, बिम्बुद, मथावा, संनगरी, मदनक, सप्ताक्षर प्रस्तार, सुखाम पराहं, शिष्टारूपक, मदन लेप, भेद अनुपुण्, प्रमातिका, मपिका, कमळ, विप्रपद, नवाक्षरप्रस्तार महाकक्षी उंद, सारगी, पाहता, सोमर, रूपमाळा, दसाक्षर प्रस्तार, मुज्य, रूपक माका मरवती, सुपमा, अनीगति, एकदक्ष अक्षर प्रस्तार, सुमुक, दोषक, मदनक, सैनिका, माळती । (४) पृ० ४२ से पृ० ४३ तक—ग्रंथ का उपनंदाह समा पाचन, ग्रंथ का आधार कथन—मापित फनि पति प्रथ जो । संगम किष्पी बभाय । भाषा कवि सुप देव करि । उंद पंथ सुप पाय ॥

सख्या ४६५ जी. वत विचार पिंगल, रचयिता—सुग्गदेव मिश्र, कागज—देशी, पत्र—९०, आकार—८×६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—११२५, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तस्थान—श्री कृष्ण विहारी मिश्र, माडल हाटम, लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः छंद गोपाल मंगला चरन ॥ जै जै मोहन मदन सुरारि ॥ कमल नयन केशव कंमारि ॥ करुणा करके मी रिपुकुशु ॥ जै वसुधा धर वामन विश्नु ॥ १ ॥ दंडक छंद ॥ विवन विनायन है आटे आपु आसन है ने ये पाऊ सासन है सुमति कर को ॥ आपदा को हरन है मंपदा के धरन है सदा के करन है सदा के धरन है । सरन अमरन को ॥ कुंज कुल को है नव पल्लवान जो है सरि सुप देव नो है धरे अरुन वरन को ॥ बुद्धि के विधायक मरुल सुग्गदयारु सु नेवो कथिनायक विनायक चरन को ॥ २ ॥ दोहा ॥ मदन गुपाल क्रपाल के चरन कमल चितु लाय ॥ मियो सुकृषि सुपदेव जहु वृत विचारन वनाय ॥ ३ ॥ पिंगल भान अगस्ति क्रत छंदो यात पछियत प्रात नित ॥ मापत कवि कुल चंद नाम अगस्ति—फनिंद मुनि ॥ ५ ॥ दोहा जैसे वेद-विहीन द्विज अत्य जेत अति निंद ॥ अंमै छदो ज्ञान विन कवि हे कहत फनिंद ॥ ६ ॥

अत—अभ्यच ॥ यद्धनित मृक्षग धुनि धरद्धकृद्धक मुनि उद्ध नय ममुद्धन पर सुद्ध सुनि सुनि चंड डमरु उदंड टिमि टिमि डड सुमरत लक्ष तमकि लक्ष तमकि वल मवत्त अथ प्रजलिया ॥ करु येक पाइ सोरु सुरेहु जह जगन जाहि गज अत देहु इति चार चरन प्रजलिय आवि कविराज सु पिंगल कहत जानि ॥ यथा ॥ गोपाल गरला धरि गोकुलेश केशवक्रपाल काटहु फलेम माधव मनुद मोहन सुरारि कविराज कहत संकट नेवारि ॥ अथ मागधी छंद ॥ वति सकल मरु चरन की विरति पीनि जय होइ । छदो विदिता सो कहै छंद मागधी सोइ ॥ यथा ॥ अति कमनीय कमल ते-कोमल कमलाकर कलि कलुपन काटे आत पत्र सित सपत्र सुलक्ष सुरंग रग पिरत पुरप वाटे अगम अगोचर विराम निता अवनैति वेलि कहि कीरति वाटे कितक काज कविराजत वन कह जो ध्रजराज के चित्त चाढे ॥ इति श्री सुरदेव मिश्र कविराज विरचिते वृत विचार-समाप्त सुभ मस्तु चैत्र शुक्ल पचम्या मृगवु सवत् १९३६ पुस्तक बलदेव मिश्रेण टोप्य श्री त्वदत्र वृदावन विहागेण नमः शशभ भूयात् ॥

संख्या ४६६. गुलाव केवडा, रचयिता—सुग्गनदन (आगरा), कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८×६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुपुष्प)—६००, पूर्ण, रूप—गलित, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तस्थान—श्री शिवराम, ग्राम—माधौपुर, टाकवर—खैराबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ गुलाव केवडा लिप्यते ॥ बैराग चपा चमेली का । एक दिन गुलाव और केवडा दोनो यार आपस में जातें करने लगे ॥ जवाय गुलाव का । अरं केवड़े यार तेने बहुत बुरा किया जो हजार रुपये खरचे और बुझाये में व्याह किया । कहाँ वो चमेली चारी वैस नवीन जोवन वाली की बुरी वाट मारी । क्योंकि । जैपुर की वेटी और गोकुल की गाय करम फूटे जय यार बाहर को जाय ॥ फिर राजस्थान जैपुर को छुड़ा उस

चमेली आगरे से ह्य बाका । बड़ो अमघ किया ॥ केवदा ॥ अरे भाई संतान के हेतु बुनिया
मदकशी है धन पार्थ होने से क्या है । मुझपे में कोई कुपल सपूत हो जाय ती जीवन सेवा
करे मेरे किया करे सराफ विद दान करे ती ह्यम गत है पित्रों को उक दान है तब तो
चमेली की सुप होगा ॥

अंत—जबवा चमेली का अरी बहन यह सब सब है मीन अपनी आशों से देख
किया पर हमेशा से मीन मंदिरों की झाडी थीर कया सुनी है पर का लख दखा
तो हरि के भजन थीर स्मरण थीर धर्म से ज्यादा न काई तीमरी बात संमार में है
सा है वहन सुप ह्य दान रम चले । थीर किसी तीर्थ स्थान में चल बने क्योंकि तुमने भी
जीजा जी की कमाई में बत्ताबो मो लाया तो अब दानों पापनी चले । थीर राह
में जो कुछ मिछा करेगा उमको खा पी पेठ भर किया करेगी तब ता यह पात रंपा के दिल में
भी ममाई । दोमो काई का मेप घर तीर्थ को रम चली । बानी मसल मशाहूर है कि री से
पूहे खाके विप्ली हज को चली तो अब रामेश्वर सत रंप जगन्नाथ अजाप्या काशी प्रयाग
ह्य धामों को प्रम्याम किया । थीर अपन मा बाप को रो रो के लो सी गासी रोज दिया
करे । थीर मा बाप का दाह चमेली थीर रंपा के दिल से सुदा न हो । थीर शहर शहर
गांव गांव में भीप मांगते मातापन संत्र भगवान का नाम छती फिर थीर नारायण की
आवाज हैती फिर ॥ पहचानाप करती फिर कि न हमारे मा बाप हजार रुपये डेते न हमारी
देवी गति होती ॥ अब सब तीर्थोंको कर भ्रम भूमि बानी मथुराकी का इरादा है सा आमेगी
थीर उबर से गुलाब थीर केपड़े की धरागी धरागी ह्य में मथुरा जी आते हैं सी विजांत
घाट के स्थान पर चारो मिछ फिर धामों को रवाना होंगे ॥ इति थी गुलाब केवदा रंपा
चमेली का किस्सा संपूर्ण समाप्त ॥ इस किस्से को सुपा राम आगर निवासी ने संबत् १९२७
में रचा माघ शुक्ल सप्तमी को लिपत गुलबारी छाल कायस्थ सं० १६२७ वि० ॥

विषय—कबदा दूदा या अर चमेली जबान थी दोमों का प्याह हुज्र गुलाब ने
मना किया । गुलाब मरीबाज था रंपा, चमेली की बहिन उम प्याही थी इसके माता पिता
१०००) हजार रुपया लकर प्याह किया । आजीर चमेली एक प्राज्ञ के लड़के से
रंप गई उसके पती ने यह हाल देय उम घर से निकाल दिया पही हाल गुलाब ने भी
किया । गुलाम कबदा सब घर बार दान कर जंगल को लप करके चले गये । इधर रंपा
चमेली भी मांगते आते मा बाप को कासते हुप तीर्थों की यात्रा करने लगी फिर चारों
धाम करके मथुरा जी पहुँची बही गुलाब केवदा भी बरागी बेप मे भान पहुँचे, वहाँ से
वे चारों मिसकर तीर्थयात्रा के लिये रवाना हुप ।

सुपदा ४६७ रीय जीवन, रचयिता—मुग्राबंध, अगत्र—देती, पत्र—२१२,
आकार—८×४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेप)—२१२०, पूर्व,
रूप—प्राचीन, पठ, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १६२० = १८१३ ई०, लिपिकर—
सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्नीलाल अचरणी, ग्राम—नारायणपुर,
ठाकुर—गोस्र गाकरननाथ जिला—पौरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रंध जीवन ग्रंथ सुपारंभ हुत लिप्यते ॥ विविध

सारदां दुर्गां गुरुं गणपतिं हरिम् सुपानदः प्रकुरु ने नर्या लोलिमा दीपिकाम् ॥ १ ॥ अथ लोलिमाराज कवि शिष्टाचार मङ्गी कृत्य प्रारब्ध ग्रथ न्याविधनेन परि ममाप्त ग्रथ श्री कृष्ण मर्य यत्राश्रीवांदात्म क मगल यात नोति प्रकृति सुभग गात्र मिति ॥ वो पुष्प म्य पाठ केम्य किमपि अनिर्वचनीयं धाम स्वरूपं मगलमभिप्रेतार्थं सिद्धिं दिशतु ददातु दिश अति सर्जने, सप्रदाने चतुर्थी किं भूत धाम श्यामलम अतनी पुप मदशम् । श्याम कृष्ण वणं वैशिष्ट्यमस्यास्ति सिध्यादित्वल्लचू पुन कि प्रभारम् प्रकृति सुभग गात्रम्, प्रकृत्यास्त्रभावेन सुभगं सुन्दरं कोटिकंठर्प लावण्य गात्रम् शरीरं पश्यतत् ॥

अत—तावे की भस्म, सुहागा शुद्ध गंधक सोधा हुआ माहुरा विप शोधित लीला थोता शोधा पारा सोधा खपरिया थोथा और शोधित हरताल इन सबके मम भागले के करेले के रम में एक घटी पर्यंत सरल में गेर के अच्छी भाति से मर्दन कर रापें कोड़े सा ज्वर होय उसमें जीरा और शर्करा के साथ एक रत्ती इमकी मात्रा खाय तो सब ज्वर दूर होय ॥ अथ कनक सुंदर रस माह मरीच बलि हिंगुलै रिति ॥ मरिच गंधक हिंगुल और विप, पीपल सुहागा और धतूरे के बीज इनके समान भाग लेके भांग के रम में दो पहर लग सरल में गेरू के इनको मर्दन करें तब कनक सुंदर रम बनै इमके खाने से ग्रहणी ज्वर अतीसार और मदाग्नि ये सब रोग नष्ट हो जाय ॥ अथ लोहे की भस्म अभरक की भस्म तावे की भस्म सोधा पारा इन चारों की समान मात्रा और दूनी गंधक इनको लोहे के पात्र में रख कर वेर की समिधि की मीठी मीठी आग से पकावे पकाय के गाय के गोबर से धरती को लीप के उस पर केले का पत्ता चिछाय के उस पर ढाल दे और दूसरे कडली पत्र से ढक दे तब पचामृत पर्यटी नाम से प्रसिद्ध रम होय उसे वैद्य की आज्ञा से शुभ दिन में भक्षण करा करें तो संग्रहणी राजयक्ष्मा अतीसार ज्वर और प्रदर आदि स्थियों के रोग और पाहू रोग विप का रोग अम्लपित्त अर्श रोग और मदाग्नि ये सब रोग विध्वस्त हो जाय ॥ इति श्री वैद्य जीवन सुपानंद कृत सपूर्ण ममाप्त लिपितं वृन्दावन निवामी पुरुपोतम दाम संवत १९३० वि० । श्री राम जी सदा सहाय करें राम राम राम ॥

विषय—वैद्यक ।

संख्या ४६८. पाराशरी भाषा, रचयिता—सुखाराम, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चन्द्रशेखर चतुर्वेदी, ग्राम—वहनेनवा, डाकघर—विसर्वा, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ पाराशरी भाषा लिप्यते ॥ श्री सरस्वती के रूप को उपासना जैसी मेरी बुद्धि है तिसके समान सुपराम जोतिप के बोध के कारण ग्रंथ करत है जासों जोतिपन के हर्ष प्राप्त होय ॥ और नक्षत्र दशाप्रकार करिके फल कहने को प्रकार कहते हैं और भावन को आदि लैके जो सब विचार हैं सो सामान्य शास्त्र ते ब्रह्मजात का आदि ग्रंथन ते जाननो अब या शास्त्र के अनुसार ते सज्ञा विशेष करिके कहते हैं ॥ अब दष्टि को विचार कहते हैं सूर्य आदिक नव ग्रह जा जा राशि के ऊपर बैठे होय ता ता राशि ते

सात मास राशि की पूर्ण दृष्टि दपते हैं तिसेही जहां बैठे ग्रह तिनको भी दपते हैं और राशिग्रह बृहस्पति मंगल ये तीनों ग्रह और भी राशि को पूर्ण दृष्टि दपते हैं ॥

अंत—जब अंतर दशा की रीति लिखते हैं अपनी अपनी दशा की वर्षों का तिगुना करिये तब एक वर्ष का दिव होय जैसे सूर्य की दशा ९ वर्ष की है यह तिगुना करा तब १८ दिन सूर्य की दशा में एक वर्ष के मय इसी तरह सब की दशा के वर्ष जानी ॥ सो सब का एक लिपि ॥ अब अंतर दशा का प्रकार लिखते हैं ॥ जा जा ग्रह दशा में अंतर दशा करनी होय ता ता के वर्षों के छठे भाग होय सो राहु की अंतर दशा समझो और ता में दशा भाग के एक वर्ष के दिन घटाते हैं सो शनिग्रह की अंतरदशा होय और शनिग्रह की अंतर दशा में दशा भाग के एक वर्ष के दिन घटाये तो राहु की अंतर दशा जानी और राहु की अंतर दशा में भाग के एक वर्ष के दिन घटाये तो बुध की अंतर दशा होय और बुध की अंतर दशा में दशा भाग के एक वर्ष दिन घटाये तो बृहस्पति की अंतर दशा जानी और बृहस्पति की अंतर दशा को भाषी करने से चंद्रमा की अंतर दशा होय है ॥ और राहु की अंतर दशा तीसरा भाग सो सूर्य की अंतर दशा जानी और दशा भाग के एक वर्ष के दिन सूर्य की अंतर दशा हाय है या रीति से अंतर दशा करिये ॥ बड़ा एक सूर्य की अंतर दशा का उदाहरण लिखते हैं ॥

पहिली दशा

दूसरी दशा

सु	ब	म	रा	बु	श	म	के	सु	ब	म	रा	बु	श	के	सु
१०	०	१८	१६	१६	१७	०	२०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

इति श्री पाराधारी भाग्य मुक्तम (मुक्तबोध) कृत संपूर्ण लिपितं राम प्रसाद सं० १९३७ ।

लिपक—ज्योतिष

संख्या ४६६ प. मुक्तीका, रचयिता—मुंदरकवि, कागज—भाषुनिक पत्र—३०, आकर—१० x ६ इंच, पन्दि (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुच्छेद)—१००, रूप—जीर्ण शीर्ष, पद्य लिपि—नागरी, लिपिद्वय—१० १९२६ = १८९९ ई०, प्रातिग्धान—छात्रा रामनारायण, धाम—यमीरपुर, बांधपर—कनारीमपुर, लिपक—सीरी ।

आदि—धी गणेशायनमः ॥ अथ मुक्तमोक्षा लिखते ॥ दोहा ॥ धी सारद की मुमिरी के मुमिरी धी भगवान ॥ सकल मित्रि दायक मदा विप्य विनामन जाय ॥ कबित ॥ सुपद मुना की देशों देर नेती दूर मुनी मरी बिर कगदर सो कान ना करी है ॥

मारत में भारी भीर भारई पर परी नहां तोड़ डारो गज वट पीर सो हरी है ॥ वेई तुम कान्ह मेरी कान क्यों ना सुनौ कान जान मान काहे कूं सो चुपकी सरी है ॥ सुदर सो वैद्य प्रभु और को जहान चीच जाँपे आप ईम तौ हमारी सुध खरी है ॥ सोरठा ॥ यह संसय मन माहिं, इन टैं मैं झूठी कवन ॥ कि मैं ही विश्व में नाहिं विश्वंभर नामहिं नहीं ॥

अंत—माय सपथ मोहि राम की मोय मिले राम सुजान । जो तू मानै झूठ ही तौ पुनि वनहि पयान ॥ दोहा ॥ भगवान वचन ॥ दो० ॥ अतरगत की जानि के चतुर्भुजी कियो रूप । सकल नम्र दर्शन कियो ध्रुव प्रताप जग भूप ॥ सोरठा ॥ कर गहि चोले श्याम, अरे पुत्र पुनि कहं चत्यो । भक्त वत्मल भो नाम । भक्तन ते न्यारो नहीं ॥ चौ० ॥ नृप उत-पात सुपटाई । पन्यो विश्व के चरणन धाई । रानिन सहिन दई तन फेरी । कहत धन्य प्रभु महिमा तेरी ॥ मोसम धन्य जगत नहिं कोई । सुर नर मुनि किन्नर किन होई ॥ अम कहि भूप चरण दोऊ धोये । जन्म जन्म के पातक खोये ॥

विषय—ध्रुव चरित्र ॥

संख्या ४६६ वी. सुदर शृंगार, रचयिता—सुंदर कवि, कागज—देशी, पत्र—७१, आकार—६×३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—९९४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६३१ = १६८८ ई०, लिपिकाल—स० १७३० = १६७३ ई०, प्राप्तिस्थान—आनंद भवन पुस्तकालय, ढाकघर—विसर्वा, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ दो० ॥ देवी पूजि सरस्वती, पूजौ हरि के पाय । नम-स्कार कर जोरि कै कहै महा कविराइ ॥ नगर आगरो वसत है जमुना तट सुभ थान तहां पात साही करै बैठे साहि जहान ॥ साहि वड़ो कविं सुप तनक क्यों गुन वरनै जाहिं । ज्यों तारे सब गगन के मूठी मैं न समाहिं ॥ जिन पुरिपन के वस में उपज्यो साहि जहान । तिन साहिन के नाम को अब हौं करौ वपान ॥ प्रथम मूर तैमूर लियो साहेव किरान पद । ताके मीर साहि वहरि सुल्तान मुहम्मद अबू सैद पुनि उमर सेप चावर जे हुमायूँ । साहि अकबर साहि । जहा गीरहि जु गनाऊ ॥ तेहि वस अस कविराज भनि साहि जहा वद्विभ वपत । धरि छत्र वड़ो अचल भुवपति साहि दिल्ली तपत ॥ त्रिभगी छंद ॥ जब लगि भवानी सिव सेनानी रवि असमानी पयनि में । जब लगि सुरगन गगन उढगन चरन अढगन ग्रयनि में ॥ जब लगि पुरदर हिमि गिरि मंदर वानी सुदर मनि सुपदा । तव लगि रहौ थिर भुव ध्रुव ज्यो थिर साहि जहां सिर छत्र सदा ॥ ऐक छिनचे गुन साहि के वरनै सब संसार । जीभ थकै वीतै वरप तऊ न पावे पार ॥

अत—आजु लपी ललना पठि के मैं कहा कहौ हो तो महा अनुरागी चारक तौ पहिले सुनि लेत हैं सुंदर बोल गुरुप सभागी । अछर यो अपने सुप ते उचरे फिरि वानी सुधारस पागी । मोहि लियो सो पठावन लागी ॥ फूली कमोदनी मोद में चंद विनोदनी सुदर तारे है त्योहीं । मोती के हार घने घनसार सनी सुप सेज सुगधन सोही ॥ राधिका माधव जू जमुना तट ये जुग जोन्ह में जाह में जोही ॥ जानतु हो अनुमान रमासग होहिंने

धीर ममुद्र म योही ॥ बबा ॥ रूपे की भूमि में पारो पन्वो गिगरे जग खंदन मों छपययो ।
 रूपि ज्येन्द्र महा कबिताइ कहीं उपला यह पाहु ते बाबो । यह के जसति को करि
 सुत विनो विधना सुन बंवर भानो । करप्रक के पुनि प्योसि वनाय दर्सी दिसि मों मदि
 रापे है मानी ॥ दोहा ॥ सुरवानी बेती करी बर पानी जो मिलाइ । जैसे मग रस रीति
 को सब ये समुझो जाय । यह मुद्र सिंगार की रची पोमी रची संभारि । दूक होइ जहं कहुं
 कहु धीरौ मुकवि मुधारि ॥ इति श्री मम्महाराज राइ बिरबितायां मुद्र सिंगार समाप्तं
 सुममम्पु । कैसाप मासे यिते पक्षे इकादश्यां मास वासरे स्थित सुमास चंद्रेम संवत १७३०

विषय—भाषक नायिका मेद छद्मज हाबमाब आदि ।

संख्या ४६६ सी मुद्र मृगार, रचयिता—मुद्र कवि (सीराबाइ), कागज—
 बैली, पत्र—०६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुच्छेद)—
 ३१४, रूप—प्राचीन, पद्य, कवि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९८८ = १९३१ ई०,
 लिपिकाल—सं० १८१२ = १७५५ ई०, प्रासिस्थान—श्री उमाराकर दूबे, सैरपुर, जिला—
 गाजीपुर ।

संख्या ४७० प. सभोवषोभा (कविच), रचयिता—मुद्रदास, कागज—देशी पुराना,
 पत्र—१०४, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुच्छेद)—०६१
 रूप—प्राचीन कमजोर, पद्य, कवि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९९४, प्रासिस्थान—
 श्री बड़ी सिंह जमींदार, ग्राम—पानीपुर, बाकुर—साढाबनवसी, जिला—रुद्रगढ़ ।

आदि—यही आपसे भूलि गयो मुन्य चाहते ॥ वीम मीन मास को निगलि जात
 होम छागि छोड़ की कण्ठक नही जानत उमा हेत ॥ जैसे कवि गागरिनी मूठि बांध रापि
 सठ छांदि शिदि दत सुती स्वाइ हीके बा दते ॥ जस ब मारियछ मुंच मदि कटकत मुद्र
 सइत रुप इपिया ही छत ॥ देह का मवागपाइ इजिन के वन पन्वो आपही को आप भूलि
 गयो मुन्य कहित ॥ इंदर छंद ॥ दहु चेतन मानत कैमो ॥ ज्यी कोठ मध पिदे अति
 छाकत नादि कहु मुभि भ्रम भेयो । ज्यी कोठ पाइ रहे इग मूरदि जामी नही कहु कारन
 कैमो ॥ ज्यी कोठ बालक संकट पावत कपि उटे अरु भागत मैसी ॥ तैसदि मुद्र आपसे
 भूलि मुद्रपदु चेतन मानत कैमो ॥ ५ ॥

अंत—देह्य के कहि संभ यके कहि प्रंय बके गिसि पासर गाति ॥ देप थक निव
 इन्द्र यके पुनि लात्र किया बहु माति बिबति ॥ पीर बके अर भीर यके पुनि धीर थक बहु
 वासि गिरति ॥ सुन्दर मीन गही सिध साधिक बीन कहेइ उसकी मुन्य वाति ॥ १४ ॥ जोगी
 यके कहिजन बक जयिनापन किइ दे कळ बात ॥ ग्यामी यके बन बामी यके तु बदासी यक
 बहु कर फिरति ॥ सेप मसारक थीर उलोइक बाकिर दे मन मी सुसझने ॥ सुन्दर मीन गही
 सिध साधिक बीन कहे उसकी मुप वाति ॥ १५ ॥ इति सारे अंग ॥ ३४ ॥ आइ ॥ ५५२ ॥
 मुद्र दाम कृत कविन सबत १९९४ × × × × × × × क शुकु पञ्चदश्यां शर्मा राम
 सीता रामायन × × × × × श्री राम श्री राम श्री राम ॥

विषय—इस पुस्तक के प्रथम के ३८ पृष्ठ नहीं हैं । ३९-४० पृष्ठ पर समस्या पूर्ण
 है । ४१-५० तक इरन उम्द में ही समस्या पूर्ण की है, ५० पृष्ठ से सौम्य शान का अंग

वर्णन है, १७ पृष्ठ से प्रश्नोत्तर देह सम्बन्धी वर्णन, पृ० ४०-४२ तक ब्रह्म निष्कल अंग, पृ० ४२-११५ तक अनुभव अंग, पृ० ११५-११७ तक निरसशय को अंग, पृ० ११७-११९ तक प्रेम परा ज्ञानी को अंग, पृ० ११९-१३१ तक अद्वैत ज्ञान को अंग, पृ० १३१-१३४ तक जगत मिथ्या को अंग, पृ० १३४-१४२ तक आश्चर्य को अंग वर्णन ।

संख्या ४७० वी. सवैया, रचयिता—सुंदरदास, कागज—साधारण, पत्र—५३, आकार—९ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०६५, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८५ = १८२८ ई०, प्राप्तस्थान—कुवर वहादुर, ग्राम—पढरिया, टाकवर—पट्टी, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दादू नमो निरंजन नमस्कार गुरु देवत. । वदन सर्व साधव प्रणाम पारं गत ॥ १ ॥ मौंज करी गुरु देव दया करि सवद सुनाय कहां हरि नेरौ । ज्यां रवि के प्रगटे निसि जात सु दूरि कियो भ्रम भांनि अंधेरौ ॥ काइक वाहक मानसहं करिहैं गुरु देवहि वदन मेरौ । सुन्दर दास कहै कर जोरि जु दादूदयाल कौहे नित चेरी ॥ १ ॥ पूरन ब्रह्म विचार निरतर काम न क्रोध न लोभ न मोहे । श्रोत्र त्वचा रसना अरु ध्यान सु वेपि कष्ट कहैं नैनन जोहे ॥ ज्ञान स्वरूप अनूप निरूपण जासु गिरा सुनि मो मन मोहे । सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादूदयालहि मोर न मोहे ॥ २ ॥

अत—जोगी थके कहि जैन थके रिपि तापक थाकि रहे फर पाते । सन्यामी थके वनवासी थके जु उदासी थके बहु फेरि फिरते ॥ सेप समायप और उलायक थाकि रहे मन में मुसकाते । सुंदर मौन गहरी सिधि साधक कौन कहै उसकी मुप वाते ॥ १५ ॥ इति श्री सुंदरदास कृत सवैया सपूर्ण मिति वैशाख वदी अमावस्या चन्द्रवासरे सूर्यपर्व संवत् १८८५ काश्या मध्ये ॥ श्री श्री श्री श्री श्री रामार्पणम् ॥

विषय—१. गुरुदेव का अंग, २ उपदेश चिन्तामणि को अंग, ३ काल चितामणि का उपदेश, ४. देह और आत्मा के विच्छेद का अंग, ५. तृष्णा को अंग, ६. पेप को अंग, ७. विश्वास को अंग, ८. देह मलीनता को अंग, ९ नारी निंदा को अंग, १०. पर निंदा का अंग, ११. मन चंचल को अंग, १२. वाणी को अंग, १३ विपरीत ज्ञान का अंग, १४. वचन चिवेक का अंग, १५. निर्गुण उपासना का अंग, १६ पतिव्रता का अंग, १७. विरह उराहने को अंग, १८. शब्द-सार को अंग, १९. सूरतन को अंग, २०. साधु को अंग, २१. सक्तिज्ञान-मिश्रित को अंग, २२. विपर्यय को अंग, २३ अपने भाव को अंग, २४. रूप विस्मरण को अंग, २५. सांख्य ज्ञान को अंग, २६. विचार को अंग; २७. ब्रह्म का निश्कलंक, २८. आत्मानुभव को अंग, २९ ज्ञानी को अंग, ३०. विदेह को अंग, ३१ जीवन्मुक्त को अंग, ३२ अद्वैत ज्ञान, ३३. आंति को अंग, ३४ विस्मै को अंग ।

संख्या ४७० सी सवैया, रचयिता—सुंदरदास (जयपुर), कागज—देशी, पत्र—३२४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तस्थान—श्री जगन्नाथ वाजपेयी, ग्राम—माखी, टाकवर—नेवतनी, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री राम जी सहाय श्री कृष्णायनमः ॥ अथ ग्रथ सुंदरदास जी का

सर्वथा छिपते ॥ प्रथम श्री गुरु द्वा क्य अंग इवै छद् ॥ मीत्र करी गुरु दैव दया करि
सम्प सुभाय कदा हरि गते । ज्यों रवि के प्रगटे निसि जस्त सु वृरि कियो भरम-भाम
अहेते । कायक वायक मानसहु करि ई गुरु द्वा हि बंदन मेरो । सुंदरदास क्यै कर कारि
तु दादु दयाक को हीं नित चेतो ॥ १ ॥

अंग—गुरु ही अंग रदो मरपुर तो वृमर कौन बठावन हारो । जो कोठ जीव करी
तु मान ली जीव कदा कहु प्रगटे ते म्यारी । ज्यों क्यै जीव भयो जगदीश्वरी ली रवि मादि
क्यै श्री अंबारो । सुंदर मीन गरी यह जानि के कौनहुं भांति न होति निवारो ॥ १ ॥ जो
इम-योगि करे अमि अंतर तो बहु पोग उरै ही विभाषै । श्री बाहर को उठि हीरत तो कहु
बाहर हाथ न आवै ॥ जो इम कहु को पूछत है पुनि सोऊ अगाप-अगाप बतारै ॥ ठाहिने
कोऊ न जानि सकै तेहि सुंदर कौन सी उर रहारै ॥ २ ॥ कौन क्यै उमकी सुप वारै ॥
नैनन दैवत सीमन आमन भासन स्वासन प्यामन वारै सीत न भाम न उर न बास न पुम
न बाम न बाप न माठि ॥ रूप न रेष न सेप अमेप न सेत न पीत न स्वाम न राठै ॥
सुंदर मीन गरी सिध साधिक कौन क्यै उसकी सुप वारै ॥ ३ ॥ वेद धके कहि लंघ धके
कहि प्रंय धके निमु बासुर गारै ॥ सेस धके सिध इन्द्र धके पुनि पोज कियो बहु भांति
विघारै ॥ पीर धके नर मीर धके पुनि भीर धके बहु बोल गिरारै ॥ सुंदर मीन गरी सिध
साधिक कौन क्यै उस की सुप वारै ॥ जोगी धके कहि जन रिपि तापस याकि नहे कस
वारै । म्यासी धके बनवामी धके लु उदामी धके बहु केरि फिरारै । सेप मसाइक भीर
पलाइक याकि रहे मन में सुमकारै ॥ सुंदर मीन गरी सिधि साधिक कौन क्यै उसकी
सुप वारै ॥ अंग सर्व ३३ इति सुंदरदास जी कृत सर्वथा संपूर्ण मिती माघव सुदी ९ वार
पतवार संवत् १९२३ वि० एक बर मये कृपा रघुनाथ भगत ॥

विषय—गुरु की अंग उपदेश चित्तवनी को अंग अक्षयितावनी को अंग, आत्मा
विद्योह को अंग, मृष्या को अंग जपीर को अंग, विन्यास को अंग, देह महीन को अंग,
भारी निद्रा को अंग, मनको अंग प्याक को अंग, विपरीत ज्ञान को अंग, बचन विषेक को
अंग मिरगुण उपासना को अंग, पठिमता को अंग, बिरह उदाहने को अंग इत्यादि ३३
अंग वर्णन ॥

सुधया ७७० श्री सुंदरविहास, रचयिता—सुंदरदास, कागज—माधारण पत्र—
८३, आकार—८ x २३ इंच, संकि (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुष्ट)—१६६०,
रूप—प्राचीन पद्य, छिपि—बागरी, प्रासिन्धान—श्री महावीरप्रसाद, ग्राम—बैनीपुर
बल्लभर—माधोगत्र, किरा—प्रतापगढ़ ।

श्रद्धि—कोऊ देत पुक धन कोऊ देत बर धन, कोऊ देत-नात्र सात्र देव अपि सुन्वो
है । कोऊ देत अय मान कोऊ देत रस भाग, कोऊ देत पिछा ज्ञान जगत में गुण्या है ॥
कोऊ देत कदि निदि कोऊ देत नच निदि कोऊ देत और कहु ताते हीस पुन्वो है ॥
सुंदर कहत एक दिपा जिन राम नाम, गुरु मो उदर कोऊ दर्पा है न सुन्वो है ॥ २० ॥

अंत—वेद धके कहि लंघ धके कहि प्रंय धके निति बासुर गरी । सेप धके सिध इन्द्र
धके पुनि छात्र कियो बहु भांति विघारै ॥ पीर धके पुनि मीर धके पुनि भीर धके बहु बोख

गिराते । सुन्दर मॉन गही सिद्धि साधक, कौन कहै उम्मी मुप वाते ॥ १४ ॥ योगि थके कहि जैन थके ऋषि तापम थाकि रहे फल पाते । सन्यासी थके वन वासी थके जो उदासी थके बहु फेर फिराते ॥ सेपहु सालिक और हुलाइअ थाकि रहे मन में सुसकाते । सुन्दर मॉन गनी सिद्धि साधक कौन कहै उसकी मुप वाते ॥ १५ ॥ इति आश्चर्य को अङ्ग समाप्त ॥ इति सुन्दर दाम जी कृत सुन्दर विलास ग्रथ समाप्त ॥

विषय—पृ० १ से पृ० ८ तक—गुरु देव को अंग, गुरु का महत्त्व, उनके उपदेश से अद्वितीय लाभ, गुरुनाम.—“सुन्दर कहत कष्ट महिमा कही न जात, एसो गुरुदेव “दादू” मेरे मन मान्यो है” । पृ० ८ से १९ तक—उपदेश चिन्ता मणि को अंग.—राम जप का उपदेश, नफस (نفس) को वश में करने का उपदेश, “तत्त्व मास” सिद्धान्त का उपदेश, एक “तूही” का उपदेश, देह की अनुपमता और उसका प्रयोग, त्याग का उपदेश, अभिमान त्याग, चचला का चापल्य, कामादि ठगों से स्तर्कता का उपदेश, इन्द्रियादि सुख को तिलांजलि देकर भगवद् भजन उपदेश, मनुष्य का पशुत्व और उसके त्याग का उपदेश, मोहादि त्याग उपदेश । पृ० १६ से पृ० २५ तक—काल चिन्ता मणि का उपदेश:—ससार की निस्सारता, काल की प्रचंडता, सबधों का मिथ्यावाद, भगवत भजन का उपदेश, ससार की नेत्र हीनता, मानवीय भूलें और उनसे छुटकारे का उपाय, काल की व्यापकता, सुकृति करने का उपदेश, झूठा प्राणी, ज्ञान द्वारा काल का विनाश, ब्रह्म विचार से काल का विनाश । पृ० २६ से पृ० ३० तक—देह और आत्मा के विद्योह का अंग—चेतन्य शक्ति के ही द्वारा लोगों का देह में सबध, चेतन्य के सबध से शरीर में रंग रूपादि का समर्ग, बोलते पुरुष के निकलने का किसी को पता न होना । पृ० ३१ से पृ० ३३ तक—तृष्णा के अंग । तृष्णा का दिन व दिन नवीन होना, संतोष का उपदेश, भूख का सबको नाच नचाना, तृष्णा त्याग का उपदेश । पृ० ३४ से पृ० ३७ तक—धीरज उलाहिने को अंग । पेट पाने का खेद, पेट के सदैव खाली रहने का उपदेश, पेट ही के कारण अनेक पाप होना और इसी कारण परमात्मा को उपालभ, पृ० ३७ से पृ० ४३ तक—विश्वास को अंग, देहमलीनता का गर्व प्रहार का अंग, “जिसने पेट दिया है वही खाने को देगा” इत्यादि वाक्यों द्वारा विश्वास की दृढ़ता, विश्वास का उपदेश, उतावला पन छोड़ भगवान पर विश्वास रखने का उपदेश, शरीर अपना नहीं, गर्व छोड़ने का उपदेश । पृ० ४३ से पृ० ४४ तक—नारी निन्दा को अंग—नारी के अंगों में वन और नर्क की उत्प्रेक्षा द्वारा उससे विरक्ति का उपदेश, पृ० ४५ से पृ० ४६ तक—दुष्टन को अंग—दुष्ट स्वभाव वर्णन, उससे सब प्रकार की बुराहयों की आशंका । दुष्ट स्वभाव के तीन प्रकार, दुष्ट सगत की बुराई । पृ० ४७ से पृ० ५३ तक—मन को अंग—मन की गति की अगम्यता, मन को अपराधी होना, मन की निर्लज्जता, मन की दगावाजी, मन की अधमता, मन का सब संसार के प्राणियोंको नचाना । मन को धिक्कार देकर भगवद् भजन, विविध उपप्रेक्षाओं द्वारा मन की निरकुशता का कथन, मन का “मन” नाम पढ़ने का कारण, मन के कर्म, उसके धर्म अम ही का मूल “मन” होने का कथन, अम विनाश के पश्चात् “मन” ही का “ब्रह्म” होना, पृ० ५४ से पृ० ६१ तक—चणाक को अंग.—विना ज्ञान के साधु-वेपादि की

निस्सारता, अज्ञान के रहते सिद्धि का निवास नहीं, तीर्थादि में परमात्मा नहीं, गुह्य उपदेश
 ज्ञान चक्षु की उत्पत्ति और परमेश्वर का पास ही मिलना, कुतुब्धि से हानि, बिना राम के
 सब क्रियाओं का निष्फल होना । पृ० १२ से पृ० १३ तक—विपरित ज्ञान का अंग—
 ससार में ऊपरी ज्ञानी की महत्ता ऊपरी ज्ञानियों की कुछ क्रियाओं का विरुद्धन,
 मुख्य ज्ञानी के कक्षग । पृ० १३ से पृ० १८ तक—वचन विवेक का अंग—
 चतुर के भागे मूर्ख के वचन का मूल्य, वाणी के भेद, वचनों से ही बंधन और मोक्ष के
 होने का विधान सिद्ध और कटुवाणी का अन्तर । पृ० १८ से पृ० २० तक—निर्गुण
 उपासना का अंग—वेद एवं ब्रह्मादि सब को छोड़ करके एक निरञ्जन के भजन का
 उपदेश, माया एवं मय्य निरूपण । पृ० २० से २२ तक—पतिव्रता को अंग । वैरी देव
 सब का परित्याग का आदेश, एक प्रभु के ध्यान का उपदेश, पृ० २२ से पृ० २३ तक—
 विरह उखाड़ने का अंग । विरह बेहसा से ब्रह्मण्य प्राप्त में कठिनाई । पृ० २३ से पृ० २६
 तक—सद्य सार का अङ्ग—आत्म विस्तृप्त, ज्ञान की परिभाषा, धूर, त्याग, तप, रच,
 और मत्त की परिभाषाएँ । मत्त इत्यादि के कक्षग । ज्ञान का ऋम विख्यात । पृ० २६ से
 ३० तक—भक्ति ज्ञान मिश्रित को अङ्ग । राम की व्यापकता का प्राधान्य । पृ० ३०
 से पृ० ८६ तक—विपर्यय शब्द को अङ्ग । कुछ गुणार्थक विपर्यय वचनों द्वारा मुख्यसार
 जानने के प्रसंग । रामनाम का उपदेश । पृ० ८६ से पृ० ९० तक—पूरायन को अङ्ग ।
 रण के योग्य धूर के कक्षग, मुख्य धूर, धूर कर्म, मत्त धूर के कक्षग, सातु-संश्राम की
 महत्ता, सातु के वच्य सातु । मन हस्ती के वक्ष में रखने को सातु के पास की सामग्री का
 वर्णन । पृ० ९० से पृ० १०० तक—सातु का अङ्ग । सातु संग का फल, संतों का प्रभाव,
 संतों के मुकर्म, संतों की गति जानने की असमर्थता का वर्णन । सातु के कक्षग, सातु
 महिमा, संत की परीक्षा मत्त भिन्दक की द्वारा । संत अनुसारी की प्रसंसा । संतों के
 केन्द्र-वेद के पदार्थ । पृ० १०१ से पृ० १०३ तक—शामी को अङ्ग । शामी की पहिचान,
 शामी की पहिचानने का अधिकारी, ज्ञान प्रकटा का काम, शामी के कुछ ज्ञान की धन
 से उपमा । पृ० १०४ से पृ० ११६ तक—सौम्य ज्ञान का अङ्ग । संतों का वर्णन, इन्द्रियों
 तथा उनके कर्म, सृष्टि रचना वर्णन । इन्द्रियों रूप, तेजादि के मिथ्यात्व का वर्णन । आत्म
 निरूपण । सांध्य का सार । पृ० ११७ से पृ० ११८ तक—अपने भाव को अंग प्रारंभ ।
 अर्द्ध भाव वर्णन, एक के ही अनेक रूपों का वर्णन, अपने भाव का प्रभाव । पृ० १२० से
 पृ० १२६ तक—स्वरूप विस्मरण को अंग । आत्म विस्तृति का कारण, मिथ्या ज्ञान, मेघ बगाने
 की द्वारा । पृ० १२७ से पृ० १३४ तक—विचार को अंग । ईश बुद्धि विचारणका उपदेश, विचार
 सगुण बुद्धि की प्रसंसा । धामा शुभ कर्म की विज्ञादि के तीन प्रभाव । विचार द्वारा मिथ्यात्व
 ससार का मिथ्याभाव और मय्य का प्रकाश । जीव—विचार । मय्य की विविधि-उपाधि ।
 मुख्य ज्ञान और मुख्य बाह्य का कक्षग । संकल्प विफल्य । पृ० १३४ से पृ० १३५ तक—
 मय्य निष्कल्य का अङ्ग । संपूर्ण सृष्टि का मय्य में होना, मय्य का निष्कल्यत्व । पृ० १३५
 से पृ० १४५ तक—आत्म अनुभव का अङ्ग । अनुभव, आत्मा को आत्मा ही ज्ञान हो
 मय्य का कथन । पन्नास का बाह्य और अनुभव का फल । अम विचारण का फल ।

आत्मा का लक्षण । ज्ञान के भेद, साक्षात्कार अनुभव प्रकाश, स्वरूप, पृ० १४५ से पृ० १४८ तक—ज्ञानी को अंग । ज्ञानी और अज्ञानी का भेद, दोनों के कर्म, प्रवीण साधु का लक्षण, ज्ञान प्रकाश का फल, ज्ञानी के देखने के तीन प्रकार । ज्ञान के तीन भेद, ज्ञानी की पट्टेच और बुद्धि पृ० १४९ से पृ० १५० तक—(निमग्न) को अङ्ग । ज्ञानी को निःशर रहने का कथन । पृ० १५० से पृ० १५१ तक—प्रेमज्ञानी के अंग का वर्णन । द्वन्द्व रहित परब्राह्म के प्रेम का कथन और प्रेमी की तल्लीनता । पृ० १५२ से पृ० १५८ तक—अद्वैत अंग । द्वैत के विनाश का ज्ञान-विधान, ब्रह्म की व्यापकता । भिन्न भिन्न रूपादि देखने का कारण । माया और ब्रह्म का एकीकरण । पृ० १५९ से पृ० १६० तक—जगत् मिथ्या का अंग । ब्रह्म के विकास में अज्ञान (माया) वृद्धि की बाधा । जगत् और ब्रह्म का एकीकरण । पृ० १६१ से पृ० १६५ तक—आश्चर्य का अंग । ब्रह्म के संबंध में ज्ञान दृढ़ता की कमी । “नेति” सिद्धांत ।

संख्या ४७० ई. वेदात्सार, रचयिता—सुदरदाम, कागज—साधारण, पत्र—८, आकार—५ × ३ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुपट्टप्)—७०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान—लाला पुरुषोत्तमदाम, रईम व्यापारी, ग्राम—कालाकाकर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—मेरो रूप भूमि है कि मेरो रूप आप है कि मेरो रूप तेज है कि मेरो रूप पौन है । मेरो रूप व्योम है कि मेरो रूप इन्द्र है कि अंतहकरन है कि वैद्य है कि गौन है ॥ मेरो रूप त्रिगुण कि अहंकार महत्त्व प्रकृति पुरुष किथां बोल है कि मौन है । मेरो रूप थूल है कि सुनि आहि मेरो रूप सुन्दर पृष्ठत गुरु मेरो रूप कौन है ॥

अंत—जीवन ही देव लोक जीवन ही इन्द्र लोक, जीवन ही जन तप मत्य लोक आयो है । जीवन ही विधि लोक जीवन ही सिव लोक, जीवन ही वैकुण्ठ लोक ज्यों अकुड गीयो है ॥ जीवन ही मोक्ष सिला जीवन ही भिस्ति माहिं, जीवन ही निकट परम पद पायो है ॥ आत्मा को अनुभव जिनको जीवन भयो, सुंदर कहत तिन संसै मिटायो है ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—शिष्य की निज रूप ज्ञान संबंधी शक्रा, गुरु द्वारा उसका निवारण, ब्रह्म की स्थिति, जपतप सम्बन्धी रूपक तथा आत्मदेव की महत्ता, चैतन्य स्वरूप के भजन करने का विधान, जीव की व्याख्या, सब अवस्थाओं में जीवन का निवास स्थान । (२) पृ० ९ से पृ० १६ तक—निज स्वरूप वर्णन, ब्रह्म की अति सूक्ष्मता का वर्णन, आत्म अनुभव की महत्ता, ईश्वर और जीव के अभेद ज्ञान में द्वैत उपाधि के विनाश का वर्णन, शरीर तथा आत्मा का सम्बन्ध विचार कर प्रत्येक कार्य के सार रूप होने का कथन, जीते ही आत्मानुभवी को सब कुछ यहीं प्राप्त होने का विधान ।

संख्या ४७१ ए. श्रष्टपदी वनयात्रा, रचयिता—सूरदाम, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—५, आकार—४ $\frac{३}{४}$ × ३ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुपट्टप्)—१९, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्रासिस्थान—श्री उमाशंकर दूबे, माहिल्यान्वेषक, जिला—हरदोई,

आदि—यह ब्रह्मात्म मरे मन भाई नू । धी यमुना विधागत श्वाय के भीके मैम
 किचाई नू ॥ यह ब्रह्मात्म मर मन भाई नू । मधुरा देवी दर्शन करके महा प्रभु हर साये
 नू । यह ब्रह्म रज० ॥ मधुवन ताल कुंदर बहुलावन सांठन कुंड में श्वाई नू । राधा कुंड भी
 कृष्ण कुंड भी मदिमा परनिन जाई नू गणवरधन की दे परिकरमा भावति गंगा श्वाई नू ।
 परमहता आदि मदीवन सांठोी पोर में भाई नू । यह ब्रह्म० ॥ कामा काम काममा पूरण यह
 धन अति सुखदाई नू । वरपान वन नन्द गांव पी कोकिष्ठा श्वादिन क्यहू नू । यह ब्रह्म० ॥
 बंट मंकेन शिद्रु वन बनि करि लान बरन पुत्राई नू । मेघ माग छाया हरि दर्शन जही
 पाये जगुराई नू । यह ब्रह्म० ॥ लखन ब्रह्म भी बीर घार पी नन्द घार दरमाव नू शाल मद्र
 मोहरि सडल वन मान मशार श्वाई नू । यह ब्रह्म० ॥

अंत—हरि विद्याम छाह वन बनि करि वन दाऊ पर माय नू । गोकुल भीर महा-
 वन मदिमा माराइ हू ना पाई नू । यह ब्रह्म मेर मन भाई नू धन धन मधुरा धन हूदावन
 मन्थ जमोधा भाई नू ॥ शिवकी मदिमा को कवि जाई प्रगटे कुंदर क्यहाई नू । यह ब्रह्म
 मरे मन भाई नू ॥ बारह वन बीबीम उपवन की लीला गाय मुनाई नू ॥ मुरदास भगवंत
 मोरसा पित्त बरनन में काई नू ॥ यह ब्रह्म मरे मन भाई नू ॥ इति अष्टपदी वनवाथा
 संपूर्णम् । ६० गर्गसप० ॥ सं० १९३९ ॥

विषय—वनवाथा के गीत ।

सुख्या ६७१ धी वांगुरी कीडा, रचयिता—मुरदास कागज—दाी, पद्य—१,
 आकार—८ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुपुष्ट)—३०, पूर्व,
 रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १८०३ = १७४६ ई०, प्राप्ति
 स्थान—धी जगरप सिंद, ग्राम—मर्षा भवानी डेरी, शहर—मिथिल मिना—
 सीतापुर ।

आदि—धी गणगाय कमः ॥ अथ वांगुरी कीटा लिप्यत ॥ वांगुरी कीटिपे हो
 मत्र नारि ॥ १ ॥ कृष्ण बचन ॥ अदि मयी पदि हीर वांगुरी भूमि विमारी । ल लु
 गर्द तुम याम डाऊ हम मुभी तुम्हारी । नादिन तुम्हरे काम की बंती हमरी हू । हम
 आनुर हू मांगरी तुम नादि लु नादि करी ॥ मयी बचन ॥ कं x कंठेया हीट तादि अथ
 बनि पती ॥ हारि दिया कदि भीरे x हमरी का दीप्री ॥ तुम यम जंगर केतक मांगत
 हममा लन कर अनुगई प्रभु छादि के तुम कदा नचावा दाय । कैमी बंती है तुमरी हम
 नवन न देवी । बाप तुम्हारे मापु जान तुम परे शिरे x जग मन्थन तुम चिरी कदि मन्थ
 विमरी गर्द लेरी गी बाबा कर्ता हम गुल्मी नादि लई ॥

अंत—मयी बंती दना । स्वात्मिन चतुर मुत्राम वांगुरी आयुदि हीगरी मादन चतुर
 मुत्राम मोहरे इति क जाही । ई बंती स्वात्मिन मिती धूपर बदन तुगाय मुरदास प्रभु
 दाी है स्वात्मिन ब्रति है अनुपदि राव ॥ धी कृष्ण का मुग्धी ब्रह्मात्म ॥ ई बंती अनुगाय
 जाव जमुना लट कीगरी । मुर तीर्नामा अदि बदी मारवन ज। सीगरी । मन्थ कामन मुग्-
 दापक राव गर को मान दिन से तुम प्रभु आयु ही तुम गावन मूर मुत्राम ॥ इति धी

सूरदाम कृत वसु लीला समाप्त शुभ मस्तु लिपा राम वल त्रिपाठी स्वपठनार्थं मंत्रत
१८०३ चैत्र पक्ष शुक्ल नवमीयाम् ॥ राम राम ।

विषय—एक रवालिनी का श्री कृष्ण जी की वंशी सुराना ।

संख्या ४७१ सी वाग्दमासा, रचयिता—सूरदाम, कागज—देशी, पत्र—
१४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१० = १८५२ ई०, प्राप्ति-
स्थान—श्री सूरत सिंह, ग्राम—पिचरा, डाकघर—महमूदाबाद, जिला—मीनापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सूरदाम कृत वारह मासा लिप्यन्ते ॥ तर्कति रही
मनुवन की डगरिया अब नहीं सुझि परै मजनी री ॥ लागत माम अयादु सपीरी जल में
भरि गईं ताल नदीरी । वैठी शोच करै ब्रज वाला कुत्ररीं मवतिया मे नेह लगीरी ॥
सावन सब सपि चीर सवारैं चुनि चुनि मोतियन पाग भरीरी । अब तो कई हरि श्रंवे
ब्रज में वीत गईं छठ मास वड़ीरी ॥ भादौ मेह क्षमात्रम वरम उमगि चली मधुरा की
गली री । डाढि विलोकै राधा कुंज भवन में अजहुं न आये श्री कृष्ण धनीरी ॥ बवार कुशल
नाहै पावो सपीरी अब जिय सोच विरोग भरीरी । अब हरि आश नहीं मिलने की ना कोद
आइ कई पतनीरी ॥ कातिक निरमल उगत चद्रमा निरपि रहै मसार धनीरी । छिटिक रहे
जैसे तारा गगन में चद्र चकोर मे मोज लगीरी ॥ अगहन सब सपि चीर सवारैं अपने
वलमुआ की सेज चलीरी । सोवै वलमुआ के गर धर वहिया या सुप नाहिन जात कहराी ॥
पुसुवा उन्हे नहीं भावै सपीरी जाके वलम परदेश गयेरी । नित उटि कंत के कौन मनावै
वरु मरि जैहों खाय कनीरी ॥ मववा उनै भल भावै सपीरी जेकरा वलम नित घरही
रहेरी । आली वसत के कौन मनावै दुख ठे गये लै कंत नईरी ॥ फागुन के फरकै वाई
अपिया अब कद्यु आगम जानि परीरी । चलहु सपी सब मगुन विचारैं अपने वलमुआ के
आवन सुनारी ॥ चैद्वत मकल वन तजति राधिका चद्र सपी लै लाइ लहीरी । मज्जन करि
सब देव मनावै पहिर पटोर भूपण अपनारी ॥ वैसपवै सबै सपि धारि विछावै छिरकत
गध सुगध भरीरी । आवेंगे कंत सोवै ब्रजवाला तव यह तन की अगिन सुतारी ॥ जठवा में
एक रथ हम देखोरी पवन के साथ में जात वहीरी । सूरदाम बलि जाउ चरण की गावत
मगल मृग नैनीरी ॥

श्रुत—कौन उपाव करौ मोरी आली श्याम भये कुत्ररी वन जाई ॥ चैद्वत मास
मोहि मदन सतवै वेसाप मास बहुत दुप पावै ॥ जेठ माम तन तपत धाम जो श्रंग चीर
मोहिं एकां न सुहाई ॥ असाद मास वन घेरि आये वटरा सावन माम वहे पुरवाई । भादौ
अगम पंथ नहीं सुझै जल से भरि गईं ताल तलाई ॥ क्वार मास श्याम नाहै धाये कातिक
ठियना अकाश वराई । अगहन अग्र सनेह श्यामवश को पतियां हमरी ले जाई ॥ पूस
मास मोहिं शीत सतावत माघ विना पिय जाइ न जाई ॥ फागुन फगुवा खेलव केकरे
संग सूर स्थाम अरु त्रिनु जदुराई ॥ इति सूरदास कृत वारहमास ग्रंथ सपूर्ण समाप्त सवत्
१९१० वि० अगहन मासे शुक्ल पक्षे त्रियोदस्याम् । इति ॥ जै राम जी की ॥

विषय—विरहिन ने अपने वारह महीने किस प्रकार व्यतीत किये यह वर्णन ॥

सद्यया ४७ श्री बिसातिन सोखा, रचयिता—सूरदास, कागज—द्वैती, पत्र—
१६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुच्छेद)—१५६, पूर्व,
रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी लिपिद्वारा—सं० १९३२ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—
लाहा रामनारायण, ग्राम—मसीरपुर, बाइबर—छत्तीसपुर जिला—झीरी ।

भाङ्गि—अथ बिसातिन स्वीकृता छिप्यते ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ एक समय मंत्र चंद
नंद सुत मन में यही विचारी । करके भेप बिसातिन श्री कर्म छलिये राधा प्यारी ॥ श्रीम
प्राब को छद्मगा पहिरे भरन जरकसी सारी ॥ अंगिया दास कास मंडन की अति छवि देत
किनारी ॥ मोतिन की पहिर नक बेसर हासर दार बनाई ॥ मानो रति पति गढ़ी आप कर
कहि न जात सुचराई ॥ करन पूछ अति सोई माय बीच बहाइ । ता ऊपर अति कसत
बंधनी मोतिन मांग भराइ ॥ कंड कसी तुझरी भइ तिछरी गज मोतिन के हारा । मानहु
गिरि मुनेर क्य विहाय करि पसी गंग की चारा ॥ गये इमेर माळ मोतिन को श्री पहिरे
बगबारे ॥ मानहु कान आपने कर से दधि दधि बीच संवारे ॥ वाकू बह वरन भल सो है
बहिषा जा मुज माहीं ॥ हरी धुरी भिष पटरा पहिरे उपमा की कोठ नाहीं ॥ हायन में कंकन
के चूना मोहरी अधिक बनी है । उपमा ताहि कौन अथ हीबे लगगी कमी घनी है ॥ हसी
अंगुरियन लई मुद्रिका हीरा अहित बनाई । को कहि सके स्थान सुबर की मैनन की मुच
राई ॥ अथ कधी शिबछी पर सोई दधि दधि मीची बांधी । सुबर नाम मनीहर दध सो चापर
भोली साधी ॥

अंत—यान दीजे माहि बिदा की मैं अपने घर जेहों ॥ तुम्हरी सीक सुभरई राधे
मधुरा में मैं कहिहीं । आनंद के करन अनु नंदन अनु नंदन सुपरासी ॥ श्रीमे रूप म
परिये मापी मैं करनन की दासी ॥ ये मज की नारी बवाहन मऊ सुप जा पावैं । घर घर
पहर करै मन मोहन बड़ो फसाइ मचाथी ॥ ताते आव मचन अपने को मुनिये मदन गुणाका ।
दग्दे तुमि अथ भेट हो मचक कुंज में लाहा ॥ भरस परम कंच सो करके मैन सो नैन मिसरि
॥ नंद नंदन आनंद मान के नंद गांव चकि आप ॥ असुदा कही सुनो हो हरकन सय दिन
कही गवाये बालन संग कठेना करिके तब से छिरि अथ भाये ॥ पेसत रहीं गुबासन संग
बंसीबर की छाई । नेकुन जहां नंद लगाई अमुना तट के माहीं ॥ भसी करी तुम प्राण पियारे
अथ बल करिये प्यारी ॥ परये हर ई तुम्हें बैसी परती घरी है घारी ॥ नंद साथ हरि योजन
कीन्हो वीरा मुप में दीन्ह ॥ साये आप परसंग के ऊपर हरप मानु सुप दीन्ह ॥ लुग लुग जीबो
कुबर राबिध लुग लुग कुंवर कण्ठार्थ सूरदास भगतन के देवक जिन यह सीका गाई ॥ जो
कोड कृष्ण विमातिन कीस्य सुनि सुनाये गाथे तारि पिंडुठ आप सइस मनगायल पावैं ॥ इति
बिसातिन स्वीकृता समाप्तम् ॥

विषय—श्री कृष्णजी विमातिन का भेप रत्न कर श्री राधिका जी के पास गव
धीर अपने प्रेम का परिचय दिका ॥

सद्यया ४७ ई० महादेव सोखा, रचयिता—सूरदास, कागज—द्वैती, पत्र—२,
आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुच्छेद)—४०, पूर्व, रूप—

नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामअधार मिश्र, ग्राम—ग्रामनगर, टाकवर—लखीमपुर, जिला—खीरी ।

आदि—अथ महादेव लीला प्रारंभ ॥ श्री गणेशायनमः अथ महादेव लीला लिप्यते ॥ मैं जोगी जश गाया रे वावा मैं जोगी जश गाया । तेरे सुत के दर्शन कारण मैं काशी ते धाया ॥ पार ब्रह्म पूरण पुरपोत्तम सकल लोक जामाया । अल्प निरंजन देखन कारण सकल लोक फिरि आया ॥ धनि धनि तेरो भाग्य जमोटा रानी जिन अमा सुत जाया । गुणन वडे छोटे मत मूलो अल्प रूप धरि आया । जो भावै सो लीजै रावर करो आपनी दाया । देहु अमीम मेरे बालक को अविचल बाड़े काया ॥ ना मैं लेहैं पाट पटवर नाम कंचन माया । सुप देखूं तेरे बालक को यह मेरे गुरु ने लखाया ॥ कर जॉरे विनद्वं नद रानी सुन जोगिन के राया । काला पीला गौर रूप हे वाधभर ओढ़ाया । कहुं डाकन की दृष्टि लगेगी बालक जात टिगया ॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यो जात टिठाया तौन लोक का साहेब मेरा तेरे भवन छिपाया ॥

अन—कृष्ण लाल को लाई जमोटा करि अचल सुप छाया । कर पमार चरण न रज लीन्हो श्रंगी नाद वजाया । अल्प अल्प कर पाय श्रुवे है । हसि बालक किलकाया । पांच वेर परिकर्मा करके अति आनद बढ़ाया ॥ हरि की लीला हर मन अटक्यो चित नहिं चलत चलाया । अल्प ब्रह्माड कोटि के नायक नदघरहि प्रगटाया । इन्द्र चंद्र सूरज सनकादिक सारठ पारन पाया ॥ लागि श्रवण मंत्र दीन सुनाई हसि बालक मुमकाया ॥ कौन देश के जोगी हौं तुम कौन नाम घर धाया कहां वास यह कहत जसोटा सुन जोगिन के राया ॥ तुमही ब्रह्मा तुमही विष्णु तुमही ईस कहाया । तुम विश्वभर तुम जग पालक तुमही करत सहाया ॥ चिरजीवी सुत महरि तिहागे हौं जोगी सुप पायो सूरदाम मिलि चल्यो रावरों शकर नाम वताओ । इति श्री महादेव लीला संपूर्ण समाप्त ॥ श्री गौंगेश की जै बोलो ॥ शिव ओंकारा ॥

विषय—शकरजी का कैलाश पर्वत से श्री कृष्ण जी के दर्शन को आना आदि वर्णन ।

संख्या ४७१ एफ नागलीला, रचयिता—सूरदाम, कागज—डेगी, पत्र—१, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०३ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री अमरनाथ, ग्राम—दातारपुर, डाकवर—मिश्रिख, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नागलीला लिप्यते ॥ शुभ घरी शुभ दिन शुभ सुहूरत नद के लाला भयो ॥ लाइये ब्रजराज पंडित सुर नरन के दुख गयो ॥ धनि धनि जसोटा भाग्य तेरे गोकुला को सुप भयो । कस आज्ञा फूल कारण कृष्ण वनमाली भयो ॥ मारो गेठ गिरो जमुना में कूटि कालीदह गयो । जहं नाग सोवै नागिन जागे कृष्ण पहुँचे जाइके ॥ कर जोरि विनती करत नागिनि जाहु लालन भागिके । नाग जागै हर्म लागै अब तो भागे ना बने ॥ होनि होइ सो होइ नागिनि नाग अब नाथे बने । कर जोरि विनती करत नागिनि श्रिसा लालन मति कहाँ ॥ जाके सहस फन दो सहस जिभ्या ताते सरि चरि मत लहाँ । कंस के सग फस खेलै नाग को सहारि के ॥

संत—इन्द्रोत्तर विनती करत नागिनि मायि पीतम पाइ हई । अहिबात दे जमुदा के मदन बधि छोरी कहाइहीं । ये जी तब ही नागिनि से यों बोके भव तू विनती कैंब करी ॥ तरो नाग छीनहिं सके केऊ चरन चिन्ह कछा सरक सर भारि निज अस कीन्ह संत सब सुप पावहीं ॥ नभ सूर के प्रभु नाग छीला रहस मंडल गावहीं ॥ इति श्री नाग-छीला सूरदास कृत समाप्तः ॥ छिपट बेनी भाषो कळाक विस्वा वासी माभ शुक्रु हाइस्वाम् संवत् १९०३ वि० ॥

विषय—श्री कृष्णजी का नाग वाचना ।

संतया ४७१ जी राधाकृष्ण मंगल, रचयिता—सूरदास, कवय—देवी, पत्र—३, आकार—१० × १ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुच्छेद)—२३, पूर्ण रूप—दीमक स्त्री हुई पद्य छिपि—नागरी, मासिस्थान—श्री रामनभार मिश्र, ग्राम—ग्रामनगर बाकधर—कलीमपुर, जिला—श्रीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राधा मंगल छिप्यते ॥ श्री० ॥ बरसा में रूपमान तुकारी । नंद बहनि मृग खोजनि प्यारी पंकज बसु गुण रूप रसाका । अकन गई है जहाँ नंदसाका ॥ निरप रूप नंद नू की राजी । गोइ उठाय मवन में आणी ॥ छंद ॥ गोइ उठाय मवन में आनी आभूषण पहिराहृषां । नाग मुच्छ पीत पट उर हार सुमन मुहाहृषां त बिन्दु कामस की वई कुम्भदेव मान मभाहृषे । सूर के प्रभु साभि नय नय कुचरि भरा पटाहृषे ॥ श्री० ॥ आनी मेरी प्राण तु प्यारी । मोहिं देखन कहां तु सिबारी कुम कुम माळ तिकक किन्ह कीनो । किन मृग मन्को विदा हीनो ॥ छंद ॥ विदा तो मृग मन् दिधो मस्तक निरपि ससि संनय पन्को । एक सरद निसि की कला पूरण मान मन गवर्ष हृष्यो ॥ हंसि हरि सुप सो कहत जननी अकक बेपी कै गुदी । सूर के प्रभु मोइ क्यानि साभि कह मोहि नइ उदी ॥ श्री० ॥ नंदजी के घरनी एक सो है । मरो बहय तब फिरि फिर जो है । देखत खोखत निष्ठ बेसारी मन में अपर्ष क्रियो है मारी ॥ छंद ॥ आनंद मन में क्रियो मारी निरकि सुप वनि वकि गई । वाबा नू को नाम की है तोहि हंसि गारी हई । पाटी तो परी संभारि मूषण गोइ छै मवा मरी । सूर के प्रभु हर्षि हिच में विषया सों विनती करी

संत—श्री कृष्ण मंगल ॥ छंद ॥ जनमे श्री कृष्ण मुगारि मछ हित कारने । मधुरा क्रियो अबतार गोकुल झूँ पाकने ॥ सिबि अष्टमी बुधवार भाहीं वदि की करी । रोहिणी नक्षत्र आपी रात जनम छियो सुम धरी । जनि देवकी बसुदेव जहाँ प्रभु अवतर । कल्प असीदा बाबा नंद महर धर पग धरे ॥ धन्य धन्य धुर नर मुनि सब अय जब करे । हुंइनि ब्रजत अकसत सुमन वर्षा करे ॥ अन्नवासी गोरस ग्नी भरि करि क्वावहीं । वृषि कार्य बाबा नंद मुकीच मचावहीं ॥ बाबत ताक मूर्धग बीन श्री बांसुरी । निरतत घोपी ग्वाक चरम थित पावरी । अनुमति नीर पहिराय मीरंग मई ग्वासनी । हुंइर बहन मिहारि ब्रजत मई मामिनी । श्री बलमद की के नीर अमुर एक नंदका । मछ बस्वक महाराज आव् कुक मंदका ॥ शंकर धरत है प्चाम मुगोइ पिखावहीं । सो सुप नूमति माइ सु पलना सुका वहीं । श्री नंद जमुदा से मेइ चरम थित क्वावहीं । हरि गुण मंगल गाय गोबिंद गुण गावहीं ॥ इति श्री राधा कृष्ण मंगल समाप्त ॥ श्री राधाकृष्णवर्षम मस्य शुभे मचनु ।

विषय—श्री कृष्णजी का जन्म और राधाकृष्ण का प्रेम आदि का वर्णन ।

संख्या ४७१ पद्य. राधामगल, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवविहारी, ग्राम—मिर्धाँली, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ राधा मगल लिख्यते ॥ चौपाईं वरपाने वृष भान दुत्तारी । चंद्र वदनि मृग लोचनि प्यारी । परुज वपु गुण रूप रमाला । पेलन गई है जहा नंद लाला ॥ निरप रूप नद जी की राधी । गोद उठाय भवन में आणी ॥ छंद ॥ गोद उठाय भवन में आणी आभूषण पहिराइयां मांग मुक्ता पांत पट कर हार मुमन सुहाइया ॥ विदु काजल की दई कुल देव मान मनाइये । सूर के प्रभु साजि नप चप कुवरि वरां पठाइयां ॥ चौ० ॥ आबो मेरी प्राण जु प्यारी । मोरहिं पेलन कहां जु मिधारी । कुम कुम भाल तिलक किन कीनो । किन मृग मृद को विंदा दीन्हो ॥ छंद ॥ विंदा तौ मृग मट कौं दियौं मस्तक निरप शीश संसय पन्थो ॥ एक शरद निशि की कला पूरण मान नभ गधर्व हन्थो ॥ हमि हेर सुप सौं कहत जननी अलक वेणी के गुही सूर के प्रभु मोह व्यापै सांचि कह मोहि भई उही ॥

अत—दिन दस पाच हटक जब कीन्ही कुवरि कुवरि को कृष्ण टिपाईं आन दीन्ही मुछिं परी जब तनु न सभान्यो लाटली को डन्थो भुजगम कान्यो ॥ छंद ॥ लाटली को डन्थो भुजगम कान्यो गारहू हाण्या सर्वे नद नंदन मंत्र काजू यह विप दाप्या नहिं डवै ॥ पठ्ये सपी गोपाल काजे ल्यावो आनठ कठ को सूर के प्रभु लहर उतरैं मिलै व्रज के चंद्र को ॥ चौपाईं ॥ कर मनुहार कृष्ण जब लाये । देपत ही विप दूर हो जाये ॥ उठ बैठी मन कियो है हुलासा । कीरति चली अपने पति पासा ॥ छंद ॥ कीरति चली अपने पति पासै प्रीति रीति वधारिये । व्याह का यक मत्र का जो सपियां मगल गाइये ॥ वृदा तो वन मे रच्यो स्वयंवर कुज मढप ठाइये । सूर के प्रभु इयाम घन श्री राधिका वर पाइये । इति श्री ललित राधा मगल सूरदास कृत समाप्त श्री राधा कृष्णार्पण मस्तु शुभ भवतु ॥ तिपा शिवगिरि वैरागी महमूद्रावाद कार्तिक वदी २ संवत् १९४० वि० जो वाचे लिपै सुने सुनावै सो आनंद को पावै मगल गावै । सब सुप पावै गोद पेलवै प्रिय ललना ॥ जै राम जी की ॥

विषय—राधिका जी का व्याह वर्णन ॥

संख्या ४७१ आई. रामजी की वारामहा (वारहमासा), रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८४ = १७२७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सीताराम सिंह, ग्राम—महाराज नगर, डाकघर—मंगलगज, जिला—सीतापुर ।

आदि—ॐ श्री रामायनमः ॥ अथ रामजी का वारामहा लिख्यते ॥ दोहरा ॥ ओं

द्वैतर पिता पितृवती फूट रही बन राई । दसरथ का मन मोह लिया राम सिंघासन पाई ॥
 पीठड़ी ॥ द्वैतर अंचल बड़ी अपार राम की महिमा अपरपार ॥ भर दशरथ के लिये आतार ।
 कंचन मुकुट विराजत बास ॥ कुंडल झक रहे बागो नाक । कि महिमा राम की ॥ प्रभु के
 कमसों कैने मन । मुन से बोले अद्भुत मन राम विभोगी साजन सन ॥ प्रभु की मगत करी
 दिन रैन मन तन अंत रहो वे रैन ॥ कि राम जब सुमरोई ॥ तिलक वै बिन्दी जोत सबाई ॥
 धन बिच बिजली चमक दिनाई ॥ पुरी जयोप्या राम सहाई दरसन करये नित फकाई ॥
 कइत धन कुसल्या माई ॥ जिने प्रभु जाया । धर दसरथ के मंदन राया । तैतीस करोड़ी
 मंगल गाया । मझा महेश्वर दर्शन पाया ॥ मेह अहुप्या नगरी आया । पूजा करये हित पित
 काया ॥ गोविंद जाक के राम अहुप्या नगरी आया ॥ मन तन भई अमंद ॥ संतारि देहु
 कास उपप्या उतर गइ सब अंद । जितकर अह अमंदे वरहा दरसन देया गोविंदा ॥ जो
 कहु राम नाम तुमारा अस गाबो । राकहु सरन मुकुवा ॥

अंत—पद्मगुन ॥ शहरा ॥ कीर्ती राम प्रतिप्या सीता लपा चलाई । सुर मर मुनि
 ई जे करे धन सिया रघुराई ॥ पीठड़ी ॥ कैमी रितु कागन की आई त्रिभुवन कूक रहे बन
 राइ । संतारि व हुलास बड़ाई ॥ मरघडड़ी के रघुराई । मारग ऊपर बैस जाई कये प्रभु
 भाष्या ॥ राम बिनीपन संत बुम्हाया । उसनू सब बिधि कहि समझाया ॥ पुपप विमान
 विरामपव सिंघाया । सीता साधिमन संग बड़ाया ॥ देवते ये कैचर बोलाया । प्रभु की
 कछ पीति सिंघाया ॥ अमुर सिंघारये उपो कर फूकी बाग बसंत । प्रभु जी सेना चड़ी
 विमंत । हरि मोठी काळ लईत अचरत देये कमला कंत ॥ नाक विभीषन होइया सत ॥
 सु प्रसन्न होइके धन मुहुरत धन बहार । प्रभुजी दधनी उतरे पार पबर होइया मरघ हुबार ।
 सुनि करि कीने दान अपार । पर की बासी सभ भई तपार आगे मिळने कये ॥ सुनि सुनि
 दरसन कये सन आबहि । कंचन माती मनि लिखाबहि । प्रभु तां देप महा मुप पाबहि ।
 उधे जाचक पजर न आबहि । जा छेबहि दाम नू ॥ कीसल्या पुर बिच मंगल गाबहि ब्रह्मा-
 दिक सगळे मन माहिहि । अवि आरे ते जान न हाई । तुसमम वृत्त रहिया कोई ॥ चौदा बरस
 मेख महया ॥ राम अहुप्या बासा कपिया ॥ माता दिग भर अक रोइया । प्रेम मन में
 ही ॥ मेका राम मरघ हा माइया ॥ संसारोग सगळ मिटि गयिया । राम केकई दीपी रोप
 यिया ॥ देप मुमिधा मन विगमयिया ॥ प्रभु दिन कउन करसो ययिया ॥ उषारे पतित को ॥
 राम कुसल्या मंदर आइया । माता आगे मया निवाइया । कबहि विद्युत्तर मुनि विगमायिया ।
 किया सिंघासन राम बैठाइया ॥ माभ तिलक बलिह छगाइया राजे राम इ ॥ गई तपीचर
 अपने धर को । प्रभु की आज्ञा पाई । हरि मोठी काळ जबाहर दे कुसल्या माई । पुर बिच
 जाचक कत जन आब । राम छे को पाई ॥ दोहरा ॥ जाचक भये सुमेर मि रंजन रहो पा
 कोई । सूर दाम की विनती प्रभु बरस तिहारो होई । इति श्री राम जी की बारामहा
 संपूर्णम् ॥ संवत् १७८४ वि० ॥

विषय—रामचन्द्र जी का बनबाय मे छेकर राजगद्दी तक की बारामासी पंजाबी
 भाषा में वर्णन ॥

संख्या ४७१ जे. रामजी का वाग्दमाह, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपट्टपू)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४७ = १७९० ई०, प्राप्तस्थान—श्री रामभूषण वैद्य, ग्राम—कामतापुर, ढाकघर—इटौला, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ रामजी का वारा माह लिख्यते ॥ दोहरा ॥ ओं वैचर चिंता चित वने । फूल रहो वन राई । दरसरथ का मन मोह लिया । राम सिंघायन पाई ॥ पउड़ी ॥ दंतर चचल चढ़ी वहार रामजी की महिमा अपरपार, घर दरसरथ के लिया औतार । कंचन मुकुट विराजत वाल । कुंडल छक रहे कानो नाल की महिमा राम की ॥ प्रभु के कमलों जैसे नैन मुख से बोलै अमृत दैन राम विजोगी साजन सैन ॥ प्रभु की भगत करो दिन रैन । मन तन अंत रहाँ वे दैन । कि राम जब मिमरोई ॥ तिलक डे चिंटां जोत सवाई । धन विच विजली चमक टिपाई ॥

श्रंत—दोहरा ॥ लीनी राम प्रतिज्ञा सीता वपाघराई । सुर नर मुनि जै जै करै छत्र सिंघा रघुराई ॥ पौउड़ी ॥ कैसी रितु फगन की आई त्रिभुवन फूल रहे वनराई ॥ सतारिटे हुलास वड़ाई । भरथ उड़ी के रघुपति राई ॥ मारग ऊपर दैशा जाई ॥ कद्रे प्रभु आवदा राम विभीषन संत बुलाइ या ॥ उमनू सब विधि कहि ममुद्गाइया । पुपप विमान विभीषन सिंघाइया ॥ सीता लल्लिमन संग चढ़ाइया ॥ देवतेया जैनार बुलाइया ॥ प्रभु जी लंका जीति सिंघाइया । असुर असुर सिंघारणों ज्यों कर फूली वाग वसत प्रभु जी येना चटी विथ्रत हीरे मोती लाल जड़त । अचरज टेपे कमला कत ॥ नाल विभीषन होइया संत ॥ स प्रमन होई कै धन महूरत धन वहार । प्रभु जी दधि धी उत्तरे पार ॥ पवर होइया भरथ दुआर ॥ सुनि करि कीने दान अपार ॥ पर की वासी सभ भई तैयार ॥ आगे मिलन को सुणि सुणि-दरसन को मव आवहि । कंचन मोती मनो लियावहि । प्रभु तो टेप महा सुप पावहि । उये जाचक नजरन आवहि । जो लेवहि दानन् ॥ कौसल्यापुर निच मंगल गावहि ॥ ब्रह्मादिक संग ले मन मोहहि ॥ अधियारे ते चान न होई दुसमन दूत रहे न कोई ॥ चौंटा वरम में मेला भइया । राम अजुध्या वासा लइया । माता द्रगभर अक रोयिया ॥ प्रेममन में वढी ॥ मेला राम भरथदा भइया । ससा रोग सकल मिटि गइया । राम केकेई टी पाही पइया ॥ टेप सुमित्रा मन विगसइया ॥ प्रभु विन कौन करसी दइया ॥ उघारे पतित को ॥ राम कुसल्या मंदिर अइया । माता आगे मथा निवाइया ॥ कराहिं निठावरी सुनि विगुमाइया ॥ लिया सिंघासन राम वैठाइया ॥ माथे तिलक वसिष्ठ लगाइया ॥ राजे रामटे ॥ गइं तपीश्वर अपने घर को ॥ प्रभु की आग्या पाई ॥ हीरे मोती लाल जवाहर टे कुमल्या माई ॥ पर विच जाचक कर नजर न आवै दान ले जो पाई ॥ दोहरा ॥ जचक भई सुमेर सी रंक न रही कोई । सूरदास की वीनती प्रभु दरसत्यहारो होई ॥ इति श्री राम जी को वारा महा सपूर्ण ॥ संवत् १८४७ त्रि० ॥

विषय - श्री रामचंद्र जी की जन्म, वनवास और लंका जीतकर घर (अजुध्या) लौट आने तक की लीला का वर्णन ॥

सबया ४७१ के. रामजी का बरहमहा (शरदमासा), रचयिता—सूरदास, कागज—दही, पत्र—२८, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ — १२, परिमाण (अनुष्टुप्)— १२६ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मन्त्रीबाबू तिवारी गंगापुर ग्राम—मिथिला, हाथपर—मिथिला, क्रिस—सीतापुर ।

संबया ४७१ पल्ल सूरदास, रचयिता—सूरदास, कागज—दही, पत्र—१४४, आकार—६ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिबाध—सं० १९३० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सिद्ध-पीन बाबूपयी, ग्राम—औरंगाबाद, क्रिस—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ मम सररस छिप्यते ॥ राग केदारा ॥ बरभौ बालमेप सुगारि । पकित जित तिल अमर मुनि जन मंछकाळ मिहारि ॥ बेस सिर बिनु बिपन हरि के छिरकि चहुं दिमि छारि ॥ मीस परि परि अद्य अनु मिसु रूप किस त्रिपुरारि ॥ सद्य रज तन स्वाम मोमित मुभाग इहि जनहारि ॥ मनहु अंग विभूति आबित सिमु सो मनुमारि ॥ तिलक ककित क्रिष्टाड केमरि बिनु सामा करि श्योष अदम गृतीय खोचन रह्यो रिपु तम जारि ॥ कंट स्वातिज नीक मनि मय माळ रची संवारि भीळ गिरजर गरळ मारी छीरियो मद् नारि । कुटिल हरि मय इदरे हरि क निरपिक नारि ॥ ईस अनु रजनीस राप्यो सीस तैठु उठारि ॥ त्रिदस पति पति असमठी मों असन कीं करै नारि । सूरदास बिरच बाबो अपत अस मुपचारि ॥ १ ॥ राग बिभाम ॥ प्रात समी उठि सोबत मुत को बहम उबाप्यो बह । रहि म सई अति सी कजुछाने मैन मिसा के टेंद ॥ रवण्ट सैज ठे मुप जव निरुप्यो गये तिमिरि मिदि मद् ॥ अनु पप निपि माप केनुपगत करि गइ विपाई बह । बापे बनुर चक्रर सूर मुनिये सब सपा स्वर्धद । रही न मुधि सरारि परि वसु पिबत क्रिमि मकरद ॥ २ ॥

धंत—राग कर नारायणी ॥ र मम निपदि निरुज अति नीति ॥ विभक्ति क्य कहु कीज चाई मरत विप तवनि प्रीति ॥ स्वाम बुबिज मुपज कारी अचन पुंछ बिहीन ॥ अगन भाजन कंट क्रिम मिर स्वाकनी आधीन ॥ विकट निचन कों छिपे आगुप करत तडिन धार ॥ अजा नाहक मम प्रीदि तद्वि वारंबार पिणक महि इहि पेह दही दष्ट देपत शोग ॥ सूर हरि से बिमुप के मर मठी केये भोग ॥ ४०९ ॥ राग सोरठ ॥ अर्धी हू सायबाब बर्यो न होदी ॥ माया बिमुप मुनगन की बिपु उतन्वो बाहिन ठाहीं राम नाम म्ये मय सजीवन त्रिब जग मरता विद्यायो ॥ बार बार साह अचन निरुट हाइ गुग गार रूपतायो ॥ जगि मदा रीइ बिहबल धैराग गीत के गायो ॥ मूर मिदे अग्यान मूरछा ग्याव मूर के धारि ॥ ४१० ॥ राग विक्रमळ ॥ करनी कदना सिनु की बहव बनि नारि । कपट हेत पर सीब की बननी गति नारि ॥ बैइ उपनिषद् जसु कई निरगुनहि बताव ॥ सोई मगुन हाइ मंद के व बरी बंधारि ॥ उपसेन की शीनता मुनि के बुप पाव । केम मारि राजा किषो आपनि सिग नारि ॥ अममय बन गाने ठपासी धाप दराव ॥ नये बाम दिनु येनु उयो मुमिरत उठि नारि ॥ जग सिनु की वंदि कटी रूप बुल जम गावे ॥ मोक ममुइ ते उपरे पांडव मइ नारि ॥ कलतुग नामा मगत ई जाधी छादि छवारि । बजुन दाय गनि मूर के ताते गहर सगारि ॥ ४११ ॥

इति श्री सूरदास कृत सूररत्न संपूर्ण शुभ्म मित्ती अपाद सुद्री १५ मंत्रत १६३०
शहर बनारस ॥

विषय—सूरदास जी के भजन सूरसागर से छांट कर संग्रह किये गये हैं ॥

संख्या ४७१ पम. सूरसागर, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—२२४,
आकार—८ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—००, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४८०, रूप—
प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८२७ वि०, प्रासिस्थान—श्री गंगाप्रसाद,
ग्राम—कजरा, ढाकघर—महमूदाबाद, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गुरु गोविंदाय नम ॥ श्री ब्रजवल्लभाय नमः ॥ अथ सूर सागर लिप्यते ॥
राग गंधार ॥ आज बन कोट जनि जाय ॥ सब गायन वद्या समेत लै आवहु चित्र बनाय ।
वालक है घर भयो नंद के कहत सुनाय सुनाय ॥ नृत्वत गावत करत कुलाहल आनद उर न
समाय कत हो गहर करत वे काजे वेगि चलौ उठि धाय ॥ अपने अपने मन के चीत्यो
नैनन देख्यो आय । एक फिरत दधि दूव देत सुप एक रहन गहिपाय ॥ येरु वसन पसु देत
बंधायै येक उठत हसि गाय वाल विरध नर नारिन के मन भयो चांगुनो चाय ॥ सूरदास
प्रभु प्रेम मुदित अति गनत न राजा राय ॥ १ ॥ आजु वधायो नद के गोपी गावहि मंगल
चार । आय जु मंगल कलस ले कै ता ऊपर फल डार । अछत रोचन दूव दधि लै चली बहु
विधि द्वार घर घरनि ते गावत चली ब्रज वधू झुड़ अपार । चली मव मिलि नद के वर
देपन नद कुमार ॥ देपि मोहन आग पूरी सर्व देति अमीस । महर नंद के लाडिले तुम
जियो कोटि वरीस । महरि दान जु बहु दियो अरु दीनो नंदराय । अँसो सुप देपो सपी जन
सूरदास कहै गाय ॥

अत—गूजरी ॥ सपीरी काहे को गहर लगावति ॥ कहति सुप मानि कै क्यों नाहीं
उठि आवति ॥ आजु सुवात विधाता कीन्ही मनहु हती नित आवति । सुत की जनम
जमोदा के घर ताघर तालगि तुमहि बोलावति ॥ कनक थार दधि ओदन भरि वेगि चलहु मिलि
ठकुराई ॥ महाराज रिपि राज सुरनवर देपत रहत लजाई ॥ निरुह देख राज ताको करि
लोगन परम उछाह ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह मव भये चोर ते माह ॥ दिढ़ विस्वास
कियो सिंहासन तापर बैठे भूप । हरि जसु विमल छत्र सिर सोहत राजत परम अनूप ॥
हरि पद पंकज प्रीति प्रिया वर ताही सो मन रातो मत्री ग्यान औसर पावे मकुचति कहत न
वातो ॥ अरथ काम दौड दूरि रहे दुरि धरम मोक्ष सिर नायो सुनि विवेकता द्वार पौरिया
सर्म न कवहु पायो ॥ अष्ट महा सिद्धि द्वारे ठाढ़ी कर जोरे कह लीने । छरीदार वैराग
विनोटी भिरकि वाहरे कीने । माया काल कछु नहिं व्यापे पारके रीति सो जानै ॥ सूरदास
प्रभु नर तन धरि कै गुरुप्रसाद पहिचानै ॥ जितना पाया उतना लिपा पुमालचद विमवा
निवाग्यी सवत १८२७ मित्ती ५ क्वारबदी ॥

विषय—कृष्ण जन्म से लेकर ब्रज में रहने तक की लीलाओं का वर्णन ।

संख्या ४७१ पन. सूरसागर, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—८०,
आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२०, रूप—

प्राचीन, पद्य, लिपि—भागरी, प्रासिस्थान—श्री दुर्गाचरण दीक्षित, ग्राम—सीकरी, डाकघर—
लंवीर, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ सूरमागर लिप्यते । जब बिप्यु पद् प्रारंभते ॥ भग-
रनि चली तुम कई नंद बोझायो । जमुमति जम्मे कान्ह बेगि चली गहरु बनि छाभो ।
कियो बेत् बिधि दान ॥ दीवत चली हाय छिये हंसुबा गोपिन ग्वाळ बोझायो । करते कीन्ह
सुतिअ छेपन काबळ छाह छोदायो भगना मास गरि बगरनि घरया कनक पत्र कन्हायो ।
पपर मर्हि दीन्ह बहुत कछ माग्यो हरि जू को नार छिनाभो । भार्ही रयनि मेह वढ़ पारुम
सुहया बळक तुझायी । सूरदास वलि जाई चरम की नथा जारमर्हि पायो ॥

अंत—बिन र गोपाळ बीरनि महुं मुंई ॥ तब ही लागी कता तरु सीतळ जब भई
बिपम जगिन की पंथी ॥ घृया बई जमुना पग बोळी कहीं कहीं कमलज अस्ति गुंई ॥ सीत
समीर तीर सम लागी दधि सुत किम भावु भइ मुंई ॥ ये ऊर्षी मायी सन कहिये मदन
मारि विरहिन भइ सुजं ॥ सूर स्वाम प्रभु तुम्हरे वरस को भग जोबत कछियां भईं बुंधे ॥
अपियां करि रही अति भारि । सुहर स्वाम पाहुने क मिळन जाई दिन चारि ॥ हाय बके
पाये रसे उदावत जब वर्षी अनुहारि ॥ हीं तबे स्वाम स्वाम करि डैरी कछिंद्री के करारि ॥
कमळ बेदना ऊपर ही पत्रन बूझत है बे चारि । सूरदास हरसन विन बेये सर्फ न पंप
पसारि ॥ मायी बळमि विदेस रहे ॥ अमर राव सुत रयनि दिव विरपत भीर बहे । मादत
सुत पति नंद गोप सुत हरि भयु बचन कहे । जस रितु बान बान भय छागे काके म्हु रहे ॥
कुंई पति पितु तात चारि भरता अरि दह दहे । पद सुत रिपु तनवा पति सजनी नाहिन
मेह विबहे । अथ सा सुवा तामु सुत बाहन बोसज जात सहे सूरदास भगवत मज्ज बिन
सुजमा छीन रहे ॥

बिपय—श्री कृष्ण की महिमा ठकव गोपियो के प्रति प्रेम गोपियों का विरह बीर
रुबो के हाथ सदिसा मेदना आदि ।

संख्या ४७१ ओ वेदीमाचन की वारमासी, कागज—देही, पत्र—२ अकार—
६ × ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६ परिमाण (अनुपुष्प)—२७, पूर्ण, रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—भागरी, लिपिकार—सं० १८१० = १७५३ ई०, प्रासिस्थान—श्री गंगावीन
मुराऊ ग्राम—श्री लछमनपुर डाकघर—मिथिल, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वेदीमाचन की वारमासी लिप्यते ॥ कर्तिक
किशोरु करै सब सलियां राधा बिचार करै मन मे रे ॥ मायी पिया को ज्ञान मिळायी माहीं
ती प्राण तर्फी छिन मेरे । हमको छांदि चले बेनी मायो राधा शोच करै मन मेरे ॥ १ ॥
भगवान गेद बनाय सांभरो जाय पेछे तउ जमुना के रे । पेरत गेद गिरो जमुना में कस्यी
नाय नारयो छिन मेरे ॥ हमको छांदि चले बेनी मायी राधा शोच करै मन मेरे ॥ २ ॥
पूष माह हमसे छल कीयो आप चले सीबां मनुचन कूरे । तुम नंदकाळ जनम के क्यरी
हम सो कपर कियो मन मेरे ॥ हमको छांदि गये बेनी मायी राधा शोच करै मन मेरे
॥ ३ ॥ माह मास पिया जाही सगत है पीद ब जाये मेरे नयनन को रे । हमको जोगिनि

कीनी माधौ जी घर घर अल्प जगावन कू रे ॥ हमको छांड़ि गये वेनी माधौ राधा सोच करै मन में रे ॥ ४ ॥ फागुन रग वनाय सांवेरे जाय खेलैं संग कुविजा के रे । फैंट गुलाल लीना पिचकारी मारत है तकि घूंघट में रे ॥ हमको छाड़ि गये वेनी माधौ राधा सोच करै मन में रे ॥ ५ ॥

अंत-भाटौ भवन नांठ नहीं आधे मोरवा चोलै वार्हीं मधुवन में रे ॥ कोयल होय मै वन वन हूढ़ो सूखे ताल वृन्दावन के रे ॥ हमको छांड़ि गये वेनीमाधौ राधा विचार करै मन में रे ॥ ११ ॥ वारा मास निर्मल भये चदा गोरी सोवैं अपने अगन में रे ॥ सूरदास तव आनि मिले हरि सुखी भई राधा मन में रे ॥ हमको छाड़ि चले वेनीमाधौ राधा सोच करै मन में रे ॥ १२ ॥ इति वेनीमाधौ की वारामासी सूरदास कृत सपूर्ण समाप्त लिपित ज्ञानी राम वैश्य शिवपुर वडोद निवासी सवत १८१० वि० चैत्र शुक्ल रामनवमी ॥ जै गोपाल हरे जै जगदीश हरे ॥ राम राम राम ॥

विषय—श्री कृष्णजी का श्री राधिका जी को छोड़कर बाहर चले जाना और राधिका जी का उनके विरह और सोच में ११ माह व्यतीत करना और १२ वें मास में श्री कृष्ण जी का आना और राधिका जी का प्रसन्न होना आदि ।

संख्या ४७२. अरजुन गीत, रचयिता—सूरदास, कागज—साधारण, पत्र—९, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री ब्रजभूषण सिंह, ग्राम—झुंकारा, ढाकवर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अरजुन गीत लिप्यते ॥ अरजुन पूछे कृष्ण तु कहै । भक्ती हेत परमारथ लहै ॥ कौन पाप ते वेटा मरि जाइ । सो कौन पाप चताउ मोहि कृष्ण कहै अरजुन सुनि लेउ, तुम सौं कहौं वेटा को भेउ । ब्राह्मण की वेटी जो घर में देही वेटी जीवै वेटा मरि जाहिं ॥

अत—अर्जुन पूछे कृष्ण जो कहै । भक्ति हेत परमारथ लहै ॥ जैसी भगति हमारी करै । जातै सभवसागर तरै ॥ कृष्ण कहै अर्जुन सुनि लेउ । तुमसैं कहौं भक्ति को भेउ ॥ छाड़ि पाप साची जिय धरै । जो में कळु कपट नहीं रापै ॥ भगती करै औ चिता जाइ । सूरदास ताकी वलि जाइ ॥ इति श्री अरजुन गीत संपूर्ण १ समाप्त ७ मिति वेगहन सुदी ५ सवत् १६३६ सन् १२ ॥

विषय—विविध पापों के कारण तथा भक्ति सम्वन्धी कुछ उपदेश ।

संख्या ४७३ ए पोथी एकादशी (एकादशी माहात्म्य), रचयिता—सूरजदास, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—६३ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भागवत लाल, ढाकवर—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः । श्री महावीर जी सहाय श्री पोथी एकादशी ॥ श्री लंबोदर गजवदन सदन वेद बुधि रास ॥ तौ सुमिरे अघ करत है होत बुद्धि परकास ॥

आपार्ह ४ बरनी गुर गन पति कर खोरी । बरनी देय तीतिन कर खोरी बरनी सुंदर चरन
सुरारी । बरनी अमरदेव त्रिपुरारी ॥ मात पिता अह गुर की दाया । अह्नर मिले देहु रसु
राबा । सत जुग सत भागे चकि गपठ । तेहि पाठे पुनि व्रता भयठ ॥ सब राज हरिचंद
सु धारा । नी पंड शिषयी कीन समारा । तकर पुत्र भए रोहिताना । पतरा बरन पाप
दुप गासा ॥ ताकर पुत्र ह्य मंगल रावा । करत पुन्य दुप द्वाभित्र भागा ॥

अथ—अथ बरनी घर सय हितकारी ॥ दोहा ॥ धन्य राजा रूप मंगल पाबा, पद
विरवान । श्रीदह सुभन सुपित भए बेगह कीन्हे अतना दाव ॥ चोनाई के फल परस
देव क द्वारा । से फल अगरनाय जनेभारा के फल अथ मेधि के कीन्हे । से फल गाह धाइन
क कीन्हे से फल सबल तीरथ के कीन्हे । सोइ फल एक वशी के कीन्हे दोहा । कोरि
तीरथ जनु कीन्हे । गहने कीन्हे दान सोई सोई फल पकावसी नू पावई पद विरवान ॥
पोषी—संपुत्रन पृथावसी महात्म संवत् १९१४ सन १९६४ फसली मिती सावन माने
शुक्ल पक्षे तिसी तिरोहसी वार सोमवार चंद्र वामरे ॥

विषय—एकवशी अथ की उत्पत्ति थीर उसका फल वर्जन वंदना—पृ० १ व्रता
में हरिश्चन्द्र राजा के पुत्र रोहितारव थीर उसके रूप मंगल राजा का होना वर्जन । पृ० २
राजा के भाग में इन्द्र का अपनी अपसरा का फल लेने के लिये भेजना उसका फल लेकर
विमान से चलना । वायवान की भी का जाना । मंडके पीछों को मराना और उसके ६
मने विमान का टुक कर पृथ्वी पर लीट जाना तथा पुनः न उठना राजा का आकर कारण
पूछना और एकवशी के माहात्म्य के महत्व से पुनः उठने का हाल सुन राजा में हींही पिट
जाना पाछे में बोधिन क उपवास से एकवशी के महत्व की प्राप्ति से उसके छू देने से
लेनात का उठकर इन्द्र लोक को जाना परिषों न एकवशी क फल का सुन राजा का
राम्य भर में एकवशी के अथ का प्रचार करना—पृ० ८-१२ मान के एकवशी अथ का
विधान थीर महत्त्व वर्जन—अपोष्या नगर महत्त्व वर्जन पृ० ८-१४ यम राजा का
एकवशी के पुन्य फल का उत्कर्ष न सहन कर इन्द्र के पास जाना । इन्द्र का कोप करना,
इन्द्र का यम को छकर विष्णु के पास जाना । विष्णु का संकर के पास भेजना ॥ संकर का
सय को छेकर ब्रह्मा के पास जाना ब्रह्मा का यम दक्षताओं को सुलाना और अथ भग का
उपाय पूछना । सब का अपनी अपनी समत्यानुसार कहना । नारद के उपदेश से मोहिनी
रूप की का भेजना, उसका वच में आकर माया रचना, राजा का उस पर मोहित होना,
उसका राजा न बचन बद्द होने की प्रार्थना पर पतिन रूप से अपोष्या जाना । एकवशी
के दिन राजा की एकवशी अथ से पूजक (अठ) होने के लिये हठ करना, उमका राजा
से उनके वक्षे में उनके एक मात्र पुत्र का सर काट कर मांगना राजा का दुखित होना,
रानी थीर कुमार की इच्छा से राजा का पुत्र को मारने के लिये उद्यत होना । भगवान का
ब्राह्मण का रूप धर कर माछन के पास जाना । परीक्षा से प्रसन्न हो वर दान देने को
कहना राजा का भगवान के साथ बैठे का वर मांगना । भगवान का प्रबल्लु कहना ।
वैद्यताओं का अपने २ वरों की लीज लेने से मोहिनी का मापक होना, राजा का बैठे का
वर्जन करना । एकवशी के फल की महिमा वर्जन पृ० १४-१४

संख्या ४७३ बी. रामजन्म, रचयिता—सूरजदाम, कागज—साधारण, पत्र—३५, आकार—८ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुष्प)—३६०, रूप—प्राचीन, वद्य । लिपि—केथी, लिपिकाल—सं० १६०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री माताफेर तिवारी, ग्राम—बटा, डारुवर—गउवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—पृष्ठ ५ —एक से एक महा रन वामा । सुप त्रिलाम् इन्द्रायन पाया ॥ ऐहि विधि राज करत दिन गण्डेऊ । आनट मंगल वटु विधि भण्डेऊ । एकै दिवस अहेर नृप गण्डेऊ । वन भूले पथ नहि पाण्डेऊ ॥ वन अपार तहे गण्डे राई । वन फिर पथ नहि पाई ॥ सरवर एक राव तव देपा । भई मात्र तह वर्मा विसेपा ॥ दो० .—सरवर निरुट धँटिकै, राजा करि अनुमान । आपु अकेले धँटि तहँ, हाथ लिये वनु वान ॥ विवि यँजोग सरवन तहँ आपे । मात पिता को तीर्य कराणे ॥ अधी अत्र रिपीयर ताही, छुध्रावत सरवन सो कार्हा ॥ पुत्र आन मोहि पानि सो पिआड । प्रान जात तुरत चलि आड पाँहो नीर रदे प्रान हमाग सुनि सरवन मन कीन विचारा ॥

अत—घर-घर आनँट वधावने होणे गो मंगल चार । परजा लोग सब हरप सो, सब के राम अधार ॥ सूरज दाम कवि जो सुना राम जनम विन्तार । गुरु प्रताप को दाआ सो, सब कहा पुकार ॥ राम जनम की पोथी पढ़े सुन मन लाग । सो नर नारी यमेत सुप वैकुण्ठहि चलि जाए ॥ इति श्री पोथी रामजनम कथा सपुरन यमाहा सुभ मितो जेठ वटी ६ स० १९०९ मुकाम कानपुर कै छावनी ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १४ तत्र—राजा का मृगया को जाना, मार्ग भूल जाना, रात्रि को एक तड़ाग के तट विश्राम लेना, धाँगे में श्रवण का राजा के वाण से मारा जाना, अन्धराज का दशरथ को श्राप देना । (२) पृ० १४ से पृ० ३२ तक—शुद्धी ऋषि द्वारा यज्ञ कराया जाना, रामादि दशरथ के पुत्रों का जन्म, उत्पत्ति कथन, यज्ञोपवीतादि सस्कार । विश्वामित्र आगमन, सहायता के लिये राम लक्ष्मण को मागकर ले जाना । (३) पृ० ३३ से पृ० ५० तक—गद्गा जी के भूमि पर आने का कारण, विश्वामित्र की आज्ञा से ताड़िका वध, राम का ऋषि के साथ जनकपुर गमन । (४) पृ० ५१ से पृ० ७० तक—धनुष भङ्ग, दशरथ के पास पत्र भेजना, वरात वर्णन, रामादि के विवाह का वर्णन, परशुराम संवाद, सबका अयोध्या में आगमन, अवध में उत्पन्न का मनाया जाना ।

संख्या ४७४ ए. अमर चद्रिका (विहारी सतसई टीका), रचयिता—सुरतमिश्र (नादुला, जोधपुर), कागज—साधारण, पत्र—१५४, आकार—१२ X ८ इंच, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनालाल—सं० १७९४ = १७३७ ई०, लिपिकाल—सं० १९६८ = १९११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री धलवंतमिह, ग्राम—लोलामऊ, डारुवर—सडीला, जिला—हरदोई ।

आदि—१—मूल दो०—मेरी भव वाधा हरौ राधा नागरि सोय । जातन की झाई परे श्याम हरित धुति होय ॥ टी० दो०—प्रथम मंगलाचरण यह कवि की विनती जन ।

प्रकृत है निज अपमता अधिकार्थ प्यनि धान ॥ त्रितो जपम तितनी बड़ी मय बाधा यह
 मय । यह इरिषि को चाहिये कोठ बयो समर्थ ॥ नर बाधा को मुरहरत मुर बाधा बछादि ।
 प्रछादिक की प्यापि का हरत जो श्याम जनादि ॥ कलि रापातिहि श्याम क बाधा ।
 रहत न कोप—पाते सों बाधा हरो शधा नागरि माय । तिमके एक क्षण बिरह में श्याम
 विह्वल विकलात । पुनि तिन तन झोड़ परे उड़ उड़े जात । बाधा त्रिमुवन बाध की हरन
 हारको आहि—तई मोम जपम की बाधा हरो निबाहि यहि बिधि सर्वोपरि परम इष्ट कनि
 मुल कर्म पाते इन्हीं को यस्यो प्रथम मंगलाचर्न ॥ काव्यकिंग सामर्थता यह इष्ट कहत
 प्रथोम । ह्यो मय बाधा हरन का इष्ट समथता कीन ।

२— मू० दो०—घोश मुकुट कटि काटनी कर मुरकी उर माल यहि बानरु मो
 मन बसी, मद्र बिहारी काल टी०—बूजे दाहा में कह्या प्रमु रच रूप को प्यान, काठे इक
 क्षण में नदी बिधन मृन्द भीर यहाँ जाति बसंधर है—कल्प्य बोही—जाति सो सैसो जासु
 को रूप कई तिहि सात्र सा ह्यो प्रमु बानरु उ हा कह्यो सोई कबिराज ।

अंत—मू० हा०—करो कुवत जग कुटिलिता, तजो न हीन दयाळ । तुली हाकुग
 मरत हिय बसत त्रिमंगी काल ॥ टी० प्र०—यह कुटिलता राक्यो चाहत है तहां कुटिल
 विषेई स्वाम आषि अर दीन दयाळ सम्बोधन सो दीन होय सो कई यह र्ता कुटिल है मु
 कुटिल दयाळ प्रमु को बाल नहीं नर कुटिल हीन कैसे ॥ उ० ३ कुटिल को बचन—मेरी
 कुटिलकाई का निन्दा जग करो तुम हीन दयाळ हो तुमको मैं तर्जो नहीं तहां भंगरीन को
 दीन जानिये । समावहार—यबा योग्य की र्ग अर काकृष्णि है काव्य छिग कुटिलता को
 ए किपो ।

मू० दो०—मोहि तुम्हे बड़ी बहस को जीते बुराराज । अपने अपने बिरह की मुहुन
 निबाहन छात्र ॥ निज करनी दाकुचाहि कत दाकु चावति यहि बाल । मोहूँ छे जाति त्रिमुल
 र्पो सम्मुल रह गापाल । टी०—अनुगुन और परिकरांकर को रंकर । सकुच पी शकुच
 पी दाकुच बहापो यह अनुगुन गापाल नाम साभि प्राय प्रप्पी पाल यह परिकरांकर—

मू० हा०—ठा अपनेक अचगुन कर चाहे पाहि बछाय । जो पति सम्पति हूँ बिना
 यनुपति शखी जराया अनुरागी बिच ना मति जनि मर्हि कोय । क्यों ज्यों बूई श्याम रंग
 त्यों त्यों उजगरक हो । टी०—विपपाळंकार—कारण को रंग और है कारण को और रंग
 श्याम रंग परमित मया, कया विपम बहि रंग रंग ।

विषय—विषय क विवरण के सम्बन्ध में कोई विरोध उच्छेत्तनीय बात नहीं प्रतीत
 होती । क्योंकि बिहारी जी के मूल शब्द अथ पुस्तकों में भी प्रकाशित हो चुके हैं । उपरोक्त
 पद्यतमक टीका के कुछ मसूद नोट मैं दे दिये गये हैं ।

संघपा ४७४ थी बैशाख पचीठी रचयिता—मूरत कवि, कागज—दर्या, पद्य—
 १०४, आकार—८ x ६ इंच पन्नि (प्रति पृष्ठ)—२५, परिणाम (अनुपुष्ट)—२२७५,
 पूर्व, रूप—जीर्ण जीर्ण गद्य, लिपि—नागरी, लिपिमास—सं० १८९३ = १०६६ ई०,
 प्राक्षिन्वान—गंगादीन गंगापुर ग्राम—बमीरपुर, शकपर—नेरी, जिहा—सीतापुर (अवध) ।

संख्या ४७३ वी. रामजन्म, रचयिता—सूरजदाम, कागज—साधारण, पत्र—३७, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेद)—४६०, रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १६०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री माताफेर तिवारी, ग्राम—घटा, डारुवर—गठ्वारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—पृष्ठ ५ :—एक से एक मरा न वामा । सुप विलाम इन्द्रायन पामा ॥
 ऐहि विधि राज करत दिन गण्डेऊ । आनद मंगल बहु विधि भण्डेऊ ।
 एकै दिवस अहेर नृप गण्डेऊ । वन भूले पथ नहिं पाण्डेऊ ॥ वन अपार तहँ गण्डे राहँ ।
 दन फिरँ पथ नहिं पाहँ ॥ सरवर एक राव तव देपा । भई साज तह वसो विनेपा ॥
 दो० —सरवर निम्ह दँडिकै, राजा करि अनुमान । आपु अकेले वैडि तहँ, हाथ लिये धनु वान ॥
 विधि येजोग मरवन तहँ आपे । मात पिता को तीर्य करापे ॥ अधी छय रिषीमर ताहीं,
 नुधावंत मरवन सो नहिं ॥ पुत्र आन मोहि पानि सो पिआड ।
 प्राण जात नुरत चलि आट पोहो नीर रते प्राण हमारा सुनि सरवन मन कीन विचारा ॥

अत—वर-वर आनंद वधावने होणे सो मंगल चार । परजा लोग मय हरप सो, सव के राम अधार ॥ सूरज दाम कवि जो सुना राम जनम विस्तार ।
 गुरु प्रताप को दाभा सो, मय कहा पुकार ॥ राम जनम की पोथी पढ़े सुने मन लाग ।
 सो नर नारी ममेत सुप वैकुण्ठि चलि जाए ॥ इति श्री पोथी रामजनम कथा सपुरन समाप्ता सुभ मितो जेठ वटी ६ सं० १९०९ मुकाम कानपुर के छावनी ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० १४ तक—राजा का मृगया को जाना, मार्ग भूल जाना, रात्रि को एक तडाग के तट विश्राम लेना, धोखे में श्रवण का राजा के वाण से मारा जाना, अन्धराज का दशरथ को श्राप देना । (२) पृ० १४ से पृ० ३२ तक—शुद्धी ऋषि द्वारा यज्ञ कराया जाना, रामादि दशरथ के पुत्रों का जन्म, उत्सवादि कथन, यज्ञोपवीतादि सस्कार । विश्वामित्र आगमन, सहायता के लिये राम लक्ष्मण को मागकर ले जाना । (३) पृ० ३३ से पृ० ५० तक—गङ्गा जी के भूमि पर आने का कारण, विश्वामित्र की आज्ञा से ताटिका वध, राम का ऋषि के साथ जनकपुर गमन । (४) पृ० ५१ से पृ० ७० तक—धनुष भङ्ग, दशरथ के पास पत्र भेजना, वरात वर्णन, रामादि के विवाह का वर्णन, परशुराम संवाद, सवका अयोध्या में आगमन, अवध में उत्सव का मनाया जाना ।

संख्या ४७४ ए. अमर चन्द्रिका (विहारी सतसई टीका), रचयिता—सूरतमिश्र (नादूला, जोधपुर), कागज—साधारण, पत्र—१५४, आकार—१२ × ८ इंच, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९४ = १७३७ ई०, लिपिकाल—सं० १९६८ = १९११ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री बलवत्सिंह, ग्राम—लोलामऊ, डारुवर—सदीला, जिला—हरदोई ।

आदि—१—मूल दो०—मेरी भव वाधा हरौ राधा नागरि सोय । जातन की झाड़ं परे श्याम हरित युति होय ॥ टी० दो०—प्रथम मंगलाचरण यह कवि की विनती जन ।

कहा वर मांगी जय राजा मे हाथ छोड़ कर कहा महाराज यह क्या मेरी संभार में प्रमिद
 हा । इह मे कहा जय तक चाँद मूम पृष्ठी आकाश दिधर है तब तक तेरी यह क्या
 प्रमिद रहेगी भार तु मय पृष्ठी का राज्य करेगा । इतना कह राजा इह अपने स्थान का
 गये राजा ने उन दोनों सोयों का से-सेक की कहाही में दस दिया तब वह दोनों भीर
 आप पहुँच । धीर कहन सगे हमें क्या आजा है । राजा न कहा जय में यद करे तब
 आजा हस तरह मे उनमे बचन स राजा अपन पर आ राज करन लगा । केना कहा है कि
 सदा हा वा अचान पंडित हो वा मूर्य वा बुद्धिमान हागा जयी की जय होगी । इति श्री
 विनाय पर्यायी मूरत कवि कृत संगुल समाप्त विपरीत मुमुखा पंडित संवत् १८२३ वि० ॥

विषय—राजा विक्रमादित्य भीरू केना की २५ कहानियाँ ।

संख्या ४७४ सी वैशाखचौथी, रचयिता—मूरतमिध, कागज—साधारण पत्र—
 २१०, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुच्छेद)—५१८०,
 पूर्ण, रूप—अर्पण जीर्ण, गद्य, सिधि—मागरी, सिधिसार—सं० १८०० = १८४० इंच,
 प्राप्तिस्थान—श्री रत्नसिंह, ग्राम—जयसिंहपुर, टाडर—तात, जिला—उध्याय (अध्याय) ।

संख्या ४७५ डी वैशाखचौथी, रचयिता—मूरतकवि (आगा) कागज—दही
 पत्र—२४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुच्छेद)—
 २३०२, पूर्ण, रूप—जील, गद्य, सिधि—मागरी, सिधिसार—सं० १००० = १८४३ इंच,
 प्राप्तिस्थान—श्री साठ्ठाप्रयाद अबस्वी ग्राम—बिहारी, जिला—फानपुर ।

संख्या ४७६ इ वैशाखचौथी, रचयिता—मूरतमिध, कागज—दही, पत्र—
 १०४ आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुच्छेद)—२१२४,
 पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, सिधि—मागरी, सिधिसार—सं० १०२४ = १८६७ इंच, प्राप्ति
 स्थान—रामचंद्र दूब, ग्राम—मुबारकपुर हाइपर—रुद्रपुर, जिला—सीतापुर (अध्याय) ।

संख्या ४७७ एफ चाणूर प्रकाश, रचयिता—मूरतमिध, कागज—दही, पत्र—
 ५६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुच्छेद)—२२१०,
 रूप—साधारण, पद्य, सिधि—मागरी, रचनास्थान—सं० १८०० = १७४३ इंच, प्राप्तिस्थान—
 श्री हनुमानसिंह ग्राम—शापनी, हाइपर—जयसिंहपुर जिला—उध्याय ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ चाणूर प्रकाश विधान ॥ पृथिवी मल बीजे आदि
 मान जग आदी वर पाद सैक गाथा गुण सैक विधि गति का । परम दयालु यह पूरन
 कृपाम करे तब में निहाल दे दे अर्पण मु अति वा ॥ परम परम जाही परम मनापनि
 मूल भवन मोना परे मनी मनि का । इतु है मुपायन की बुद्धि क प्रकाशन की विषय
 विनायन का नाम गच्छपति का ॥ ६१० ॥ श्रीचर प्रमिदि है अति गुणीनि मुअपाय ॥ श्री
 कृष्णजीनायन उदा है परम अमिताम ॥ मेव देव गज पद्म की उदा करत विन माह ।
 देवि काग कपी उदा अनु दिन रदन महाह । इतु दरनी करनी गुण है करनी मानु प्रमिदि ॥
 गन गुण का कथा उदा मरा परम की बुद्धि ॥ श्री चाणूर सिध जूराज कान निदि हीर ।
 मय विधा में अति विगुल त्रिभि समाप्त अहे भार ॥ देहिदु जनिदु कथाय अह करिना हम
 से लभ । निभ कवि मूरत सिध प कृता नद अति काव ॥ पदु विधि वा गनमान करि कही

एक दिन वात । पोथी केमवदाय की मधे कपिन विप्यात ॥ तिनमे यह रसिकप्रिया अति गभीर हूँ मोड, तिहि टीका अंगी कर्ण जो मसुझं मव कोट ॥ तव तिनके छित पट रच्यो अति विस्तार विलास । नाम घन्थो यह ग्रंथ को जोरावर प्रकाय ॥ अथ वच वरनन ॥ प्रगटे मूरज वच मं जोध नृपति यहि नाम जिन्हो वयायो जोधपुर सुदर सुपद सुधाम ॥ तिनके सुत द्वादस भणु तिनमें वीका राव । भणु परम परसिद्धि जग पूरन पुहमि प्रभाव ॥ जिन दिमि डिमि महि जीति बहु लई सुचल समयेर नगर वयायो नाम निज नीका वीकानेर ॥ तिनके सुत प्रगटे सुपद लोन करन सुपधाम । राव जेतमिछ पुनि भणु तिनके सुत अभिराम ॥ तिनके भये कल्यान मल राव कल्यान मरूप ॥ गृष्ट मिध तिनके भणु मछादानी सु अनूप । सवा कोट को टान दिय रागो देन वन्धु और । तत्र तिय भरनै मं दई चागन को नागार ॥ नृगसिब तिनके भये मछा सूर गुनान । कर्णमिध तिनके भये राजा कर्ण समान ॥ जस अनूप तिनके भये अनुप मिध इहि नाम । तिन के भये सुजान मिध सकल धर्म का धाम ॥ तिनकी कीरति गावही गुनि जन देम विदेम श्री जोरावरमिध सुन तिनके भणु नरेम । सूरत कवि तिनके सु हित रच्यो ग्रंथ सुपदाट । जिनके ज्ञान अरु टान को अति प्रभाव दर साइ ॥ जहाँ हरन तह टान नहि । जह टान नहि ग्यान । दोऊ रतन इकधे करे जोरावर इमिजान ॥ मंवंत मत्त अष्टादर्श फागुन सुदी गुरवार जोरावर प्रकाय का तिथी सप्तम अत्तार ॥

अत—श्री कृष्ण जू को चौधक हाव कवित ॥ सपि मोटन गोप मभामह गोविद वेंटे हुने दुति को धरिके । जनु केशव पूरनचट लये चित चारु व कोरनि की छरि के ॥ तिनको उलटो करि आनंद यों किहु नीरजनौर नणु भरिके कहि काहे ते नेक निहारी मनोहर फेरि दियो कलिका करिके ॥ टीका ॥ नीरज पानी सो भरिके उलटो करि आनि दियो यामें नायिका रुदन करति हूँ यह जानी मव नायिका ने कली करिके वा कमल को फेरि दियो यामें यह जतायो जव कमल मुदंगो राति को तव हम मिलि है प्रदन नीर नणु भरिके कहा नयो नीर को साँ उत्तर जरा कहा नन्नता माँ लाई मिर नीचो करे यहा हूँ प्रदन मे नेक निहारी के कली करि दियो नेक निहारि बोवा काँ प्रयोजन कहा उत्तर नायक हूँ ने अपनी प्रीति जताई कमल को देपि रहे यामें जताई कि तुम्हारे नेत्र कमल हमारे नेत्र निमों वमत है सो कमल को देपि रहियो सर्प ने उहा जाट कस्यो यहा हूँ सूक्ष्मालकार पूर्ववत ॥ दोहा राधा राधा रमन के कहे जथा मति दाव टिठइ केगवराइ की छमिथी कवि कवि राव ॥ इति श्री मन्महाराज जोरावरसिंघ जी विरचिते रसिक प्रिया विवरणे जोरावर प्रकाये हाव भाव वर्णने नाम पष्टमो विलास ॥ ६ ॥ अथ अष्ट नाइका दोहा ॥ ये मव जितनी नाइका चरनी मति अनुसार । केसव राइ वपानिये ते सब आठ प्रकार ॥ अपूर्ण ॥

विषय - रसिक प्रिया की टीका वर्णन ॥

संख्या ४७४ जी. रसगाहक चंद्रिका टीका (रसिक प्रिया), रचयिता—सूरति मिश्र (जोधपुर), कागज—आधुनिक, पत्र—५२, आकार—७ × ११ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६३, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—

सं० १९४८ = १५९१ इ०, छिपिडाक—सं० १७९१ = १७३४ इ०, प्राप्तिस्थान—भी
बलवंत सिंह ।

आदि—भी गणेशायनमः ॐ श्री कृष्ण सुन्दरी सिद्ध राम सुन्दर मन्द मन्द नाम
ममः अथ सूरति मित्र कृत रम प्राहक चम्पिका टीका संपुक्त रसिक प्रिया प्रारम्भतै । दो०
रसिक सितोममि रसिक प्रिय—रस सीका बितधोर । रसा रास रसमथ करी जय जब पुगुल
किमोर ॥ १ ॥ रसिक प्रिया टीका रची सूरति सुकवि यनाम । यहि रस प्राहक चम्पिका
मॉव पन्थो सुप्रदाम ॥ २ ॥ जिहि प्रकार यह प्रंय की रचना प्रगटी जाय । सो कारन
सुमिथे सकळ कवि कोविद् सुप्र दाम ॥ ३ ॥ तप्त जहानावाद् मैं श्री नसिक्खइ खान ।
दाम ज्ञान फिर पान बिधि यद्य जिहि प्रगट जहाम ॥ ४ ॥ कुकमा छंद ॥ बादशाह दिप
नाम निबास मुहम्मद प्दा जग जार्न । रस ग्राहक यह नाम आपनो कविताई में आनि ।
पंडित कवि जस गुबी अनेक सकळ बिधि जिन्हई सराई । पूर पस उचर चतुराई चमत्कार
पित चाई । दो० तिन्ह कवि सूरति मित्र सो पोथी पढ़ी अनेक । बिया गुरु करि पूजियो
अमिकाया सविबेक । बाहन बिबिध सुवास बसु दिप क्रिय बहु सन्नाम । दाम बिपे हातिम
करव चिह्न के अनुमान । अरु कुक गुरु पव्ची वई कइया यजन परछंस । सदा मुग्धार बंस
का नामहि हमर बंस । अगर आगर में सुकवि सूरति पुत अह्दाद् एक समय जावन कियो
तप्त जहानावाद् ।

मध्य—एक समय धैटे हुते ज्ञान सुयस्य भवदान, तिन कवि सूरति मित्र सों
कही आउ यह बात ॥ पाथी केशवदाम की सबे कठिन मति थीर । तिहि में यह रसिक
प्रिया महा अर्थ गभीर । थामी टीका कीजिये प्रथोत्तर निरपार । जाहि पदत सब रसिक
जन छई मोद् संसार । यह सुनि तब रचना रची सुमहु सुकवि सिर मीर । बहुत प्रसन्न
बहु अर्थ कइो सकळ इकट्ठीर ॥ सप्रह सी इककानवे भाष सुदी रविचार यह रस प्राहक
चम्पिका पुष्प मलत अवतार ॥

अंत—सं० मन्द मन्दन कछत ई बम गात कबी छवि चन्दन के जक की । रूप
मानु कुमारी बिछोकरिहीं छवि पित में चिह्न की शसकी ॥ गिरिजा तन जावत पाम न
प्यात बिरा कर पंकर के दूक की । बिहूसी सन गोप सुता हरि काचन मूदि सरोज रगंचक
की । बिहित हाव ॐ क० दो —बाकव के समये बिप बोछम देप न लाय । बिहित हाव
तासों कइे केशव कवि कबिराज ॥ राधा को बिहित हाव स०—मेरे कहे बहिये लुतठ फिर
प्रीयम ज्यों हठ काठ रहींगी । पिरिबो प्रेम समुद्र पारये कराये करे फित कबों निबहोंगी ॥
हीं समई सखनी टिगरी कबहु हरिसों हंसि बात कहोंगी । पीबित की चित्रसारी कही चित्र
की पुतरी भई कौसी रहींगी । प्रश्न । चित्रसारी में चतु ही चतुर तरुणि सखि जाव चित्र
रीति कहिये नहीं ह्ये ज बे चेतन माप ॥ कृष्ण को बिहित हाव ॥ स० केशव राय सों
व्याज सखी रूपमानु कुमारी उराहनो धीन्हो गारी वई अरु माद दइ भर दिग्भ्रम सों मनु
क हित हीनो सीप दई सुल पाप कइ उर छाय सुगंध कनाय बचीनो । उचर देव को मन्द
कुमार कसु सिर भीये ते ठंथो न कीन्हों ॥ प्रश्न ॥ प्रश्नसु केशव रामसों की रूपमानु कुमारी
धीन्हो कहा उराहनो उचर कही बिचार ॥

विषय—प्रथम विलास.—गणेशमनुनि, प्रन्व रचना का प्रथम । प्रथम कथांग विद्योप लक्षण, राधिका का प्रच्छल प्रियोग शृंगार । द्वितीय विलास—नायक के लक्षण :— अर्थात् अभिमानी, त्यागी तरुण कैलि कला में प्रवीण भव्य, क्षमी, सुन्दर, धनी, पवित्रता में रुचि रखने वाला और कुलीन आदि गुणों का होना । उनके चार प्रकार—अर्थात् अनुकूल-दक्ष-नाष्ठ और धृष्ट । चारों प्रकार के नायकों का वर्णन । तृतीय विलास—नायिका जाति अर्थात् पद्मिनी, चित्रिनी हस्तिनी शंखिनी आदि स्त्रियों के प्रकार । स्वकीया और परकीया स्त्रियों के मन्वध में वर्णन । चतुर्थ विलास—चार प्रकार के दर्शन—(१) नेत्रों से भली प्रकार देखना (२) चित्र दर्शन (३) स्वप्न दर्शन (४) श्रवण दर्शन । पंचम विलास—दम्पति चेष्टा दर्शन—प्राप्ति को प्रगट करने के लिये किये गए हुए उपायों में चेष्टा करने हैं । राधिका की प्रच्छल चेष्टा और उनका दृग्ग से मिलन वर्णन इत्यादि । षष्ठ विलास—भाव के लक्षण—सुष, नेत्र और वचन के द्वारा मन की बात त्रिय प्रकार प्रकट की जाय उसको भाव कहते हैं—भावों के पंचम प्रकार—विभाव अनुभाव, सारित्री, स्वार्थी और संचारी—(यहाँ से लेपक ने लिखना छोड़ दिया है) ।

संख्या ४७४ पत्र. रस रत्नाकर, रचयिता—सूरनिकरि, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०, पूर्ण, रूप—जोर्ण, पद्य, लिपि—गामरी, रचनाकाल—स० १०६८ = १७११ ई०, लिपिसाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कृष्णविहारी मिश्र, नयागाव माउल हाटम लखनऊ, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ रम रत्न लिखते ॥ योरा कमल नयन कमलादिवर कमल नामि कमलाय तिनके जल्ल चरण ग्नीं मो मन गुन जुन जाय ॥ १ ॥ नखरम आदि मिंगार पुनि हान करण रुद्रवीर ॥ नय बीनरम लुप्त चरन सात परम गुनधीर ॥ २ ॥ सूरत सतत रहे जहां रति को पूरन धर ॥ ताहि कहन मिंगार रम केवल मदन प्रसंग ॥ ३ ॥ सो यह रम मिंगार मैं वरनत कवि रम लीन ॥ प्रथम नायका नायकनि बहुरि क्रियानि प्रवीन ॥ ४ ॥

अंत—कवित्त ॥ सुकिया के त्रियोटम भेद नय जानीं येमे मध्या प्रौढ़ा धीरादिक भेदनि सो जानिये ॥ पुनि जे मठादि जोरे द्वादस ए सुग्धा एरु परजीया द्विविधि सामान्या एरु मानिये ॥ षोडश जे आठ जोरे एरु सौर अष्टादश उक्तत्रादि जोरे तीन सौ चौरासी जानिये ॥ सूरति सुकवि दिव्या दिव्य भेद कीने ऐमे श्यारह सो वाचन यो नाइका वपानिये ॥ २७ ॥ दोहा ॥ चौदह ये सव कवित है चौदह रत्न प्रमान ॥ याते नाम सो प्रथ की यह रम रत्न वपान ॥ २८ ॥ वसु रम मुनि विधि सबतहि माधव रीति दिन पाउं । रची ग्रंथ सूरति सुग्रह लहि श्री कृष्ण महाह ॥ २९ ॥ उति श्री सूरति कवि कृत रम रत्नाकर समाप्तम् ॥ सवत् १९१६ वैशाख शुक्ल चतुर्थी ४ भृगु समाप्ति शुभ मन्तु ॥

विषय—नारी भेद लक्षण (नायिका भेद)

संख्या ४७४ आई सतसई टीका, रचयिता—सूरतमिश्र, कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१६८,

रूप—गणित, पद्य, क्विपिबाल—जागरी, रचनाकाल—सं० १७९४, क्विपिबाल—सं० १८१८, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाश सिंह जी मरुतापुर त्रिछा—सीतापुर (अवध)।

आदि—अथ ग्रंथ आरंभते दोहा । मेरी मन्त्र बाधा हरो राधा नागर साह । जातव की झाड़ पर स्वाम हरित सुति हाय ॥ टीका ॥ पद्यम मंगला चरण में कवि की बिनती आनि । प्रगतनु अपनी अथमता अधिक कधीमी आनि ॥ त्रिंता अथम तितनी बड़ी मन्त्र बाधा वह अर्थ बहि हरिबे को चाहिये कोऊ बड़ो समर्थ ॥ मर व्याधा को मुरहरत मुर बाधा प्रहादि । महादिक की बाधा को हरत तु स्वाम अनादि ॥ क्विपि राधा तिन स्वाम की बाधा ररति न कोइ । पाते मो बाधा हरो राधा नागरि सोइ । तिन के हूक छिन बिरह में स्वामल बिकळ लपात । पुनि तिन तन झाई पर होत रह रहे गाठ ॥ (इसके भागे पड़ा नहीं जाता क्योंकि यद्ये बड़े छेप दीमक ने कर बाँधे हैं) ।

अर्थ—श्री० । प्यासे तुपहर जेट के चके मई जळ साधि । मरु घर पाय मतीन हू मारु कहत पयोधि ॥ टीका ॥ प्यासे मरुघर में पयिक पाय तु मरु मतीर । तब दे मारु सों कहत पे पयोधि है तोर ॥ चार्ता पयोधि सप्य क्षीर सागर प्यंग यह है कि भूप प्यास दीऊ पयिकन की गई । पाते पयोधि कछो । दोहा ॥ प्रहन पयिक जाम्बो परत सप्य माहि यहि रीर । इहाँ कछो माय कहत पे निधि अर्थन भीर । उधर । सब जळ सोधि फिरे तहाँ मारु जवने बाहि । वे ही जळ जानत बचन पाते पयिक कपाइ ॥ महा भास में बिरस जळ सोड सबदा हाय इहाँ देम की अष्टता दत मरु जळ सोइ ॥ द्वितीय प्रहर्षमार्कण्डर ॥ है तई अधिक मरु मतीर समान ॥ दोहा ॥ बुमह नुरानि प्रजानि कै क्यो न बड़ दुप ईइ । अचिक अंधेरो जग करै मिलि माम बर बँइ ॥ दृष्टाकाँक्षर ॥ बसि नुराई आमु तन ताही क्य मनमान । मसो मसो करि जोडिये पाते प्रह जय दान ॥ दृष्टांत काक्येकि ॥ दोहा ॥ कही यहै सुति सुतिहु यह सयान लोग । तीन द्वाबत निकसही । पातक राजा रोग ॥ प्रहन ॥ नुप पापी भी रोग ती निकसि द्वाबतति रीति । अथ ही सबसि द्वाबई मुरवर मुनि यह रीति ॥ जो पातक नुप रोग अथ दूही करी बपानि । ती तए तीनि द्वाबई सप्य न बसि मुजान ॥

विषय—सतसई का टीका सूत मित्र द्वारा ।

संख्या ४७५ ए, अमर कोश (उमदाय कोश) रचयिता—सुवस शुक्ल (बिमबां), कागज—पैसी, पद्य—१०८, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपुष्प)—१९४४ पृष्, रूप—प्राचीन, पद्य, विपि—जागरी, रचनाकाल—सं० १८६४, क्विपिबाल—सं० १९२६, प्राप्तिस्थान—श्री जर्जुन सिंह ग्राम—सडीसा, बाँकर—मणराहा त्रिछा—सीतापुर (अवध) ।

आदि—विदि श्री गणेशायनमः श्री सरम्भार्थे नमः अथ जमर क्षीप (उमदाय कोश) क्विप्ये ॥ शी० ॥ विदि करन अमरन मरन हरिद हरन द्वाळ । मन भायक हायक सदा गी गायक गमपाळ ॥ १ ॥ अथ पर पद छंद ॥ करत बास किस्कोळ केकि ककराव क्य करि करि । करन हावडा दंड प्रतिज्ञा पाओ परि परि । मुग्घ न अम बुम्भ परत अमन ते क्षरि क्षरि ॥ मकि सयन गदि कौन शुभै आनंद कर भरि भरि ॥ उरकाइ

ललिक सुम्बन वदन यह सुवश भाष्ये । परपि सुपदेव नृपति उमराव को उमा उमा नदन हरपि ॥ अथ राजस्थान वर्णन ॥ घनाक्षरी टडक ॥ जामें चारो वरन करन के नमान डेने वे भरम चारों पाड धरम हशत है ॥ देरी देवता से नर नारि नीति रीति गद्दे प्रीति देवता को दिन दिन सरसत है ॥ सुकवि सुवश कई रतन अमोल जटे मानो भूमि भाल को विभूषण लसत है देश देश जाहिर नरेश यों वपान करे वेश आंध गंटल में विसत्रा वग्यत है ॥ दो० ॥ जाके उपवन कोकिला करती कलरव वेश । मनो मनो भव यों कई रति की सपी सदेश ॥

अंत—स्वनाम ॥ निज अरधन पुनि ज्ञानि गुनि जुन निन वस्तु सिहारि गे चारो स्वाकहि सुकवि सुवस वपानि ॥ कुकुटनाम ॥ अश मुप्य नृप चिन्ह त्रय इन्दे उरुद ऐ नाम कुट कली तारा मवा मवा जुगल बुधि धाम ॥ गत नाम ॥ माउ मत्य पुनि श्रेष्ठ गनि औ प्रसस्त मन पानि । ए चारों को गत कहत सुकवि सुवस विचारि ॥ चौ० ॥ वर्ग विशेष निधन द्वै मित्र सहित अनेका अर्थ विचित्र द्वैसे छट सत्तरि ददतर काउ तीसरे में है बुधिवर ॥ सवत ॥ जुग इम वसु अरु निसापति सवत सरसु विचार माघ कृष्ण प्रतिपदा को भयो त्रय अवतार ॥ त्रथ सत्या ॥ दो० ॥ वर्ग चौस एक काडरें क्षितिरस वंसु ससि छट । भापे सुकवि सुवस कवि करिके महा अनद ॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा पड मडल धराधीस कायस्थ चौधरी सिवसिंह वशावतस उमराव सिंह कारिते सुवस कवि विरचिते उमराव को से त्रितीय काडे अनेकार्य पुस्तक अमर कोप समाप्त ॥ शुभमस्तु सवत १९२६ ताके १७९१ फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे तिथी द्वादश्याम रविवासरे लिपतं पं० रामप्रसाद पटनार्थ नृपति-सिंह कछवाहा ठाकुर अस्थान वीदर श्री राधा कृष्णायनम ॥

विषय—कोप छट चौपाई दोहा आदि में वर्णन ।

संख्या ४७५ वी. उमराव कोप, रचयिता—सुवसशुक्ल, कागज—देदी, पत्र—१६८, आकार—८ X ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुपट्ट)—३०२४, पूर्ण, रूप—जीर्ण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६५ ई०, लिपिकाल—सं० १८६३ प्रासिस्थान—महाराजा श्री प्रकाशसिंह, ग्राम—मल्लापुर, ढाकवर—मल्लापुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ उमराव कोप लिप्यते ॥ दोहा सिद्धि करन असरन सरन दारिद दरन दयाल । मन भायक दायक सदा गो गायक गणपाल । छर्षे ॥ करत वाल किल्लोल केलि कलरव को करि करि । फेरत सुदा दड प्रति छाया को धरि धरि ॥ मुक्ता से श्रम बुद परत आनन ते झरि झरि सद्य सक्ति गहि लीन सुते आनंद उर भरि भरि । उर लाइ ललकि चूमति वदन यह सुवस भाग्यो परपि । सुपदेव नृपति उमराव को उमा उमानंदन हरपि ॥

अंत—सतनाम ॥ साधु सत पुनि श्रेष्ठ गनि औ असस्त मन मानिये चारो को सत कहत सुकवि सुवंस वपानि ॥ चौ० ॥ गवे विशेष निधन द्वै मित्र सहित अनेका अर्थ विचित्र द्वै से छंद सत्तरि ददर काड तीसरे में है बुधिवर ॥ दो० ॥ जुग रस वसु अरु निसापति सवत वर्ष विचारि माघ कृष्ण प्रति पदा को भयो त्रय अवतार । त्रथ संज्ञा ॥ वर्ग चौस यक

कंठ न् इति रस वसु मणि उंद् । आप मुहु मुबंम कवि करिके महा भनर्द् ॥ इति श्री
विश्वनाथ पुरा पंड मंडल धराधीम चौपरी सिधसिंह बंमाधर्मत उमराय सिंह करिते मुबंम
बिरचिन उमराय, कोम मृगीय कांड भनर्धर्मः ॥ संवत् १८९३ च्याकगुन माये कृष्ण पक्षे
तिथी इमण्या गुर वासरे उमराय काय अमरमत संपूर्ण समाप्त सम सस्यु

विषय—उगमग १५०० मामो के अनेक नाम

संबंधा ४७२ सी विगल, रचयिता—मुषम कवि (बिसर्वा), कगज—देसी,
पत्र—३३, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुपम)—
६४७, पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपे—नागरी, रचनाशाल—मं० १८६५, लिपि—
मं० १८६४, प्राप्तिस्थान—यत्रभूपम श्री, ग्राम—दानपालपुर, डाकघर—ठंभीर, जिला—
सीतापुर (मध्य) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ विगल लिप्यते ॥ हाहा ॥ गणपति गौरि गिरीस
गिरा गुह गापाई ध्याय । कवि मुबंम उमराय को देत अमीम वनाय ॥ उरी ॥ जब सगि
गज पति गौरि गिरा गंगा गंगाधर । जय सगि गहड गोबिंद गगन गुल कपति गिरिधर
जय सग पत्रग राज पुरी अद् प्राग पुरदर जब सगि सातो सिंघु सिंघु की सुता मुभापर ।
कहि कवि मुबंम जब सगि मुब बिरचीब मुनी संसु सुत लय सगि राग्य उमराय मुप करी
मडल मपति तुत ॥ अथ राग्य स्थान वचन । घनाक्षरी ॥ अमल परल चारवा करन समा
जामे छाई ई मुर्गय घर बाहर अगार की । रमा को निबाम बेद् विद्या को प्रकाम जामे मद्द
मपदी क प्रीति मीति के उगर की । गली गली गेद् गेद् राग रंग होत जामे भी न दोति
मृष्या कबू परवा अगार की । देन ही वनि आर्ष मुकवि मुबंम कदे कहा भी साराही
सामा विमको नगर की ॥ दो० ॥ धर्म रूप तामे मयो वालर्बद् अवनीम । आओ जय
गावन धिरत चहुं दिम मडल कबीम ॥ विषय गुल से प्रगट भी भी बाम्त्व मुगात मस
कर्मदस से कथ्यो जैगे गुर सरि सात ॥

अंत—अथ एक प्रिसद्वर प्रस्तावः ॥ हा० ॥ मारद पंड्रह बरल पे बिरति अंत गुर
हाह । गुह ससु केम बिहीन है उंद् मन हरन साह ॥ यथा ॥ पारि सो विपदिन की मीस
पर मारदात कहरान पद उहरान एबि लन की कडे कठनी की भीक छिये नदबारो भेप गरे
गुज मान मामा मीगुनी मद्द से ॥ कर लस कमल क्य दिरापत ही मुकवि मुर्गय कहे
इंमल मपन ने । उंद् को पदत मुर पंद् से अनेर्द मंद् मंद् मंद् आबत मुर्षिद् मन्दावन से ॥
इति मन हरन । अथ हाविर्ग एषर प्रस्तावः ॥ हा० ॥ मौरह मारद पे बिरति गुह ससु
के मकमानि पलिन अघर अंत ससु उंद् जस हरन जामि ॥ यथा ॥ जयघर मम म्याम
लन अभिराम शरी अरद् तुगुन पद चोत्रुी मादे विगल । काठमी कलिज करि लट में मुबंम
कडे कर परधीन पाद गेर में पुदुन मान् । मुंद्ग कनक क उठिन मनि कानन में मीमि
में विरिद अर हमरि को चौरि मान् । पर मन मर जया हर दिये धारि कर्दा आटी जाम
गाराक गागारक गावान् ॥ हरि मीनिका ॥ जब सगि विपाता वेद् है अर गेम हार जय को
कडे । तज सगि दिग बसुधा विषि उमराय वृता करन है ॥ अदि के पने से धय विना
अर कन की रचना कर बरि राज द दिप में मुर्गय कडे मद्द गुन क्य मरे ॥ इति

विश्वनाथ । इति श्री सुकुल सुवंस विरचिते पिगल ग्रंथ समाप्त । मवत १८९४ त्राके
१७५९ मार्ग मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमाया तिर्था भाम वामरे लिपतं गंगात्रीन पंडित ॥
विषय—पिगल ।

सख्या ४७५ डी. पिगल, रचयिमा—सुवंस शुक्ल, (विमर्षा), कागज—देशी,
पत्र—३६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ३६, परिमाण (अनुष्टुप्) ९५०, पूर्ण,
लिपि—नागरी, पद्य, रचनाकाल—स० १८६५, लिपिकाल—स० १८९४, प्राप्तिस্থान—श्री
महाराजा प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—मीतापुर, (अवध) ।

आदि—अंत—४७५ सी के समान ।

पुष्पिका इत्य प्रकार है.—इति विश्वनाथ पुराधरा धीम मटल चौधरी मिश्रमिह वंसा
वतस चौधरी उमराव सिंह कारिते सुकुल सुवंस विरचिते पिगल ग्रंथ समाप्त ॥ लिपन मर्हाट्ट
तिह मवत १८९४ इवके १७५६ ।

संख्या ४७५ ई रसमजरी, रचयिता—सुवंस शुक्ल, कागज—देशी, पत्र—३६,
आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण अनुष्टुप्—७०८, पूर्ण, रूप—
जोर्ण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६५, लिपिकाल—स० १८६५, प्राप्तिस্থान—
श्री महाराजा प्रकाश सिंह जी, मल्लापुर, जिला—मीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ रसमंजरी लिप्यते ॥ दोहा ॥ मगल करन विघन
हरन मिद्धि निद्धि के डानि । वटां गणपति के चरन अमल कमल गुन पान ॥ कपित्त ॥
मारग चलत में विचारि श्रम सका हिण धरो निज पद भूमिनत अंतग में । प्यारी फुलवारी
में प्रवेस कै सुपेट जाति स्वय कर ही गो तेरी सुमन उमग में । चरम हिरन की विछाय
कै हरपि मेज भाग आपने सो मन्य करै सुप सग में । प्रेम मार आलय मामि बाको
सुवंस भाप्यो वाम जानि वाम ये व राप्यो वाम श्रग में ॥ अथ नाइका लक्षण ॥ दोहा
जाके जोहत ही हिण भरि आवत है भंन । ताहि वपानत नाइका कवि कौविट करि रंन ॥
यथा ॥ चह चही चार चिवनि से चुरावें चित्त चंचल चपनि सो चकोर चूमि हारी है ।
लह लही श्रंगन लुनाई की लहरि उठै गह गही गहिरी गुराई यों सुहाई है महा सुपकारी
प्यारी सुकवि सुवंस कई जोहतेही जरपै काहू पलकन पारी है । तोरति है लोक लाज पूरति
मनोज साज मूरति वमी केरि नाइका निहारी है ॥ दोहा ॥ त्रिविधि नाइका सो कही
प्रथम सुकीया नाम परकी याहै दूमरी तीर्जा गनिका वाम ॥ सुकीया निज पति की तिया
परकीया हित नारि । वित्त हेत बहु पति कही गनिका ताहि विचारि ॥

अत—अथ सात्विक । स्वभ स्त्रेड रोमच स्वर भग कप जिय जानि । चिवरन
शंसुवा प्रलं सात्विक आठ वपानि ॥ नवो सात्विक भाव है सभा जिय में जानि । आसम ते
प्रगटे सर्व कवि कर कहत वपानि ॥ यथा ॥ अच सभ या सरीर उमगत श्रम नीर उठे रोम
उमनि अपंड सुप धान्यो है ॥ कठे तुत रात वात कंप अति करै गति विवरन आनन
धगन नीर डान्यो है । इहां कौनि रोधा औ सुवंस कई जसुहाति सात्वि भयो है तेरे प्यारी
में सिहान्यो है ॥ चंद ते दुषट सुप सट नट नद राजै ताकी इंद सुपी तै निमंक ह्वै निहान्यो
है ॥ अथ अद्भुत रम नवीरम ॥ दोहा ॥ विसमै थाइ भाव जह तंह रस अद्भुत मानि पीत

ब्रह्म विधि देवता कथा सुयंत्र वपामि ॥ इत्थं जात आदिक तद्वा बरगत मुक्ति विमाय ।
 अनिय लाचन आदि दे तद्वा होत अनुभाव ॥ स्तंभादिक तद्वा जानिया संचारो ई मित्र ।
 रम प्रथम का मानि मत बरगत मुक्ति विधिप्र प्रथमा ॥ बालकृता में सुबंस वपानन संकर को
 धनु तारि पसापो । भूमि तत्री पर जीरन मी अद्भुतम् समान समुद्र बंधाबा । रावम मारि
 कबूतर सा फिर आइ बसिष्ट का सीम नवाया । सीवति का यह इति परिध महा विमर्ष
 सब क मन आया ॥ दो० ॥ मर पर वसु अद्भुत सपि कर्मों संवत वर्ष विचारि सावनि मुदि
 तेरम गुरी भयो प्रथ बरवतार ॥ इति श्री मुकु सुवस विरचितायो रम मंत्ररी प्रथ समाप्त
 सुम मन्त्रु संवत १८६६ लिपतं माहेंद्र मिह ॥

विषय—नायक नायिका सक्षम, नवोरम आदि का वर्णन ।

संख्या ४७५ एक. रसतरंगिनी, रचयिता—सुबस शुक, कागज—पत्ती, पत्र—
 २०, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६ परिमाण (अनुष्टुप्)—११२३,
 पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९१ लिपिग्रह—
 सं० १८६३, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रकाशमिह जी मन्मथपुर स्टेट, त्रिला—
 सीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रम तरंगिनी निरूपत ॥ मित्रि मित्रि मंगल सुभग
 मी मीरम के मद्य । कवि अदि के दामी महा बानी क पद् पत्र ॥ पानी क पद् बदि के
 महामाद् मरमाद् । कवि सुबंस उमराव को देत अमीम वनाद् ॥ प्रथम प्रकामा कबितु ॥
 रीसा जोर मा का इति इत्यो विगमन कवि जीम अण अंनुम क । वापु कीन्दा चाइ के ॥
 छविम को अरुम दिन करि इत्यो है ज्ञ मरम में रावने विद्वान्वा माद् भाईके मायन सुराद्
 जीम घापा है बहिन है के रण ल मरमन का निमा मीषी चाठकेना देत मेघराका परि
 लिख सुव्य ताल तत्री मा सुबस विदमरता कर उमराव का ॥ रम का कारण भाव है बानी
 प्रथमी ताहि रम अनुष्टुप् विहार मा भाव जानिया आदि । इत अल्पया भाव जो पा बिजा रे
 कदि थीर । है विहार ई भाति का मानम सुदय मरीर ॥ स्याई स्वमिचारी पदुरि बुविध
 मान मा मानि । मारिदिक दि सुबंस कवि मानिक भाव वपामि ॥ अथ स्याई ॥ अंत मर्य
 मी रिबर रद यो रिपाई त्रिय जानि । इतर भाव नापत्रु मद्वा आण भाति का मातु ॥ रनि
 दोमी अद्भुत कदि अथ उपाद्वा जानि । उर विरा विमर्ष कद् स्याई काठ वपामि ॥

अन—दक्षिणी ॥ माने क विपर पर मर्य को कुमारी रात्री पूरन वारद् अनु रात्री चाद
 बंदरी । काग जुग बानी बंजरीर जुग राजन दे वार ८ मारु सिंघ में शुभा है गुंदरी ॥ आरमी
 तुगुन राम राजनि कर्णोप इति हाटक तुगुन कम् भावर्ष क बंदरी । बंदरी अयत वरउपनी
 है वृद एक मरिता तदाद् भाति पाति पाकियो अर्बंदरी । दाहा ॥ अंजन रग कामक परिमल
 अनि मुचि अग । अल्प इतरकी इराम पदु रनि बिलाम रिग रग ॥ अथ विपरीती का कथा ॥
 क उमुगी शृंग मैत्रिब है तन मूरम है दिपमें कद्वा नामप । राम मणी तैदिसै वरधीन गु प्राणिदि
 है मरता मर नामप । कीदिक देव तु ईन मर्य कच इराम अल्पय है है तद नामदि ॥
 अथ धीपिनी लक्षण ॥ दीपय कन लर्य विर पि शुमन्नाक बुद्धदि की परि पाते । मूरम है

तनु बटन तीक्ष्ण और सुभाव सु है पिमुनारे ॥ सूक्ष्म श्री फल से रुच है सुच है अंगनि
 मैं गति मद्र सुहारे ॥ कोरे वकोरे कठोर विराजत राम नपत्रत की दुतिभार । अथ हस्तनी
 लक्षण ॥ पीन पयोधर पीन मरीर लक्ष्म मन क्रूर सुलाज नहीं है पिगल गधित केम लर्म कट्ट
 बोलत कधर थूल लही है ॥ विवहि से अधराल द्विष्ट तन में वगनी मम गधि रही है । राम
 कई बहु भोजन के सुप नेकु नहीं दुप भोग वही है ॥ इति दल्लजात प्रकाम्पते श्री चौधरी
 उमरावमिंह कारिते सुवम सुकु विरचिते रम तर गिनी जध्य जनक धैरिभाय रमाभाव वर्णन
 ममिरम अर वसुमती सवत वर्ष विचारि कातिक सुदि गुग तीन को भयो ग्रथ अवतार
 मवत १८९५ माके १७६० फालगुन मामे कृष्ण पक्षे सप्तमी ७ बुध वायरे लिपत महीद्वामिह
 विषय—नरोरम, नायिका नायक भेट और लक्षण वर्णन ।

संख्या ४७६ पाठवयसैदु चद्रिका, रचयिता—स्वरूपदाय, कागज—साधारण,
 पत्र—१४०, आकार—१० ३/४ × ९ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २०, परिमाण (अनुष्टुप्) २९२८,
 पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०६ = १८६६ ई०, प्राप्ति-
 स्थान—नागरी प्रचारिणी सभा बनारस ।

आदि—श्री गणेशायै नमः ॥ श्री शरस्वतिये नमः ॥ श्री गुण्डे नमः ॥ अथ रमालकृत
 चौधरी पाठव यमैदु चद्रिका प्रारम्भ ॥ गुग लंकारिणों वीरों धनु स्तौत्र विचारिणों । भूभार
 हारेणो ॥ वदे नरनारायण वभो ॥ १ ॥ दोहाः ॥ ध्यान करितन वदना ॥ त्रिविध मंगला
 चर्न ॥ प्रथम अनुष्टु पविच सोई ॥ भस त्रिधा सुभ फर्न ॥ २ ॥ नमो अनंत ब्रह्मांड के सुर
 भूपन के शुभ ॥ पाठवयसैदु चद्रिका ॥ वरनत दाय स्वरूप ॥ ३ ॥ न्यार्मा के पीठे रहे ॥
 आदि होत उच्चार ॥ नर नर नारायण शब्द कू दाय स्वरूप वाचारि ॥ ४ ॥

अंत—॥ दोहा ॥ रम रूप अलकृत ग्रंथ में लिपे नाहि इहिं भासः ॥ ममद्वहि
 बुधि जन विन लिपे ॥ अनुष लिपेन लपाय ॥ ५९ ॥ प्यंगल टिगल मन्कृत सव ममज्ञन
 के काज ॥ मिथित सी भाया धर ॥ टिमा करहु कविगज ॥ ६० ॥ कलि जुग छाटे ग्रथ कू
 लिपे पठे मव लोक ॥ ताते श्लोक हजार भय सर्व ग्रथ के ओक ॥ ६१ ॥ कविता रचना
 भई ॥ वाल छंद विच लीन ॥ नई टक्ति कवितान मैं कथा मँकीरन कीन ॥ ६२ ॥ नाहि
 कविता को धर्म है नाहि भारत की वात ॥ निक मैं चचलना करी ॥ करहु टिमा कवि
 पांत ॥ ६३ ॥ इति श्री पाठव यमैदु चद्रिका स्वरूप दाय विरचिते रम मयूप ॥ १६ ॥
 चद्रिका संपूर्णम् ॥ ममसा ॥ लिपि कृतं वै वेदव नः शुकनाय दास निरवाणी नम्र नां मच
 मध्ये ॥ श्री रामचद्र × × के मदीद-समत ॥ १९२६ मीती माहा शुक्र पक्ष १२ ॥
 रविवासरे ॥ पटी नाथजाजी श्री लवजी ॥ ग्राम जायद मध्यमे मेठ भुगरमीग जी का
 गम श्री रन्तू ॥

विषय—पिगल अलंकारा को वर्णन और महा भारत की संक्षिप्त कथा ।

संख्या ४७७. ज्ञान चंद्रोदय, रचयिता—डा० तेजसिंह (मेरिया जिला आगरा),
 कागज—डेशी, पत्र—३२, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) १४, परिमाण
 (अनुष्टुप्) २५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३० =

१८०३ ई०, प्रासिद्धान—डा० शिवनरदा सिंह, ग्राम—रामनगर, बरभर—मस्कापुर, जिला—सीतापुर, (जयप) ।

आदि—श्री ग्लोदाय ममः ॥ इस ज्ञान चंद्रोदय प्रस्तावली के देखने को यह शक्ति है कि जो कोई आदमी पंडित के निरुद्ध आये उस आदमी से उस जंको पर जो कि इस जंत्र में मरे हुए हैं वह कद्दकर उगली धरवानी चाहिये । बिज्ज हारन मंगल करण पुरम पुण्य प्रकाम । नाम लेत गन्नेस का सभी काम हो राधा ॥ और यह कहे कि ये शिव जी महाराज जो इस आदमी का काम सिद्ध होने बास्त हो तो अच्छे भंड पर उगली पड़ाइया ॥

फल (१ अंक कर)

जंत्र यह है

हे प्रकृत करने वाले जो काम देने अपने मन में माचा है बहुत जल्द परमेश्वर सिद्ध करेगा और कुछ क्षण भी हाथ छगगा रोजगार भी किसी के बर्साक से कोगा और मत्सक तुम्हारा सप पूरा होगा ॥ अगर एतवार य ही तो देत को तुम्हारा मुह पर तिक है अगर मन सके तो शरीरों की का पुजन कर और शमीश्वर के दिन काक कुपे को पेजे जिला ॥

५	४	३	२	१
६	७	८	९	१०
१५	१४	१३	१२	११
१६	१७	१८	१९	२०

अंत—यदि कनिष्ठका उंगली केन्द्र तर्जनी मूल पर्यंत एक रेखा परिपूर्ण करण वर्ष शुभ जान परे तो जाना बड़ा उषम राजेश्वर का चिन्ह है ॥ यदि तर्जनी अंगुली के समीप उर्ध्वरेखा हो तो राजा का वृत्त और कनिष्ठका अंगुली के मूल में यदि सात रेखा हों तो संसार में बड़ा सुखी धनवान पुत्रवान गुणवान हा ॥ और तीन रेखा हो तो तीन पदार्थ के लोक मध्य में माग करने का चिन्ह है तर्जनी अंगुली के मध्य से चकके पट्टे में जा मिले वह रेखा माती की कहलाती है और पिता की रेखा अंगुली के मध्य से बल के आयु रेखा क बीचो हस्त में होती है और यहूत रेखा होने से दरिद्री होता है ॥ हस्त के बाम पार्श्वों उर के ज्ञान प्रतीत हाता है । एक चक्र वाचाल हो चक्र गुणवंत तीन निच धन पार चक्र दक्षिणी पांच सर्वांग विकास उदा रस बाम मातवां बहु सुप अठवां रोगी तथा राज धनवां सिद्धि हो । एक संप वर सुखी कहाई वृज संप दरिद्र का भाई तृतीय मंथ से निर्गुन जानो वार संप मे बहु गुन माका पांच मंथ से निर्धन हाई उदा मंथ जाने सब कोई । अथ नप कल्पन ॥ अथ नप सुखी काका नप सुखी रथत नप शोभी पाप करे । पीत नप परदेश करे स्वस नप तैजस । हरित नप सदा सुखी पाप कर ॥ अथ काम कल्पन ॥ अथे काम जाने मे भागवतान अथे पर होने से दक्षिणी वषी मुजा होन से सुखी और सूरपीर होता है ॥ इति श्री ज्ञान चंद्रोदय प्रस्तावली टाकुर तैजसिह ग्राम नरिया विरागद किम्व भगवा निवामी ह्य समाप्तः शुभ मस्तु ग्रंथ १५ संवत् १९३० माघ की वर्मत पंचमी ॥ शुभ राम राम राम ॥

विषय—सामुद्रिक, अंग रक्षण वर्जन ॥

संख्या ४७८ देवकीनंदन तिलक, रचयिता—ठाकुर ऋषि (असनी), कागज—आधुनिक, पत्र—१७५, आकार—१२ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०००, रूप—पढ़ने में कठिन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९६३, प्राप्तिस्थान—श्री महाराजा प्रसाद सिंह, मन्दापुर, जिला—मीतापुर (अत्र) ।

आदि—मूल । टिनकि उधारति टिन द्युवति रापति टिनक टिपाय । सब टिन पिय सटित अधर दरपन देपत जाय ॥ तिलक ॥ यामें सपी ने छिपकर नायक को या भाव देप्यो है । सो सपी सो कहति है कि सुरन मै वाफो अधर जो दत सो पडित भयो है फेरि छिनुकु छिपाय रापति है या भाति पिय सो जो पडिन अधर है ताहि दरपन मे देपत वाफो सब टिन जाइ कहे वीतत है तो दत उत नहू जो नहीं देपति नत्र उधारति है द्युवति है काम तै फेरि लाज तै टराति है कोऊ आइ न जाइ जो देपे ताने छियाय रापति है और नायक कृत छल है ताते देपे दरम सुप पावति है ॥ द्युये स्पयं सुप पावति है सो जानाँ तो लाजते नायक को दरम परमि पुलि कै नार्हा सकति याते काम ने नप उत में अंसाँ करति है ॥

श्रंत—ऋषि ठाकुर प्रसाद कृष्ण दोहा ॥ पर ब्रह्म श्री कृष्ण है परमानन्द सुरूप । तामु सक्ति आत्हादिनी राधा परम अनूप ॥ सब के मात पिता परम राधा कृष्ण दयाल । कलजुग आवत जानि ब्रज लीला करी रमाल ॥ परकीया उपपति बने हैं तिय पुरूप अनादि । छल बल किये अनेक रम गोरम चोरी आदि । कलि जन हैं है पाप रत पैदे अति दुग जानि । तिन कह यह लीला रची तरि है कहि सुनि मानि । कीन्हीं लीला प्रगट ब्रज कृपा सिंधु यह हेत । अचुत अदूपन आदि हैं परमानन्द समेत ॥ लीला परमानन्द मदा परमानन्द की दानि । वनें लोक परलोक भजि भजै न अति जड़ जानि ॥ ते विन बाधा विनहिं श्रम मदा सर्व सुप लेत । जिन अब राधा परम हित राधा हरि को हेत ॥ राधा हरि को यह भई अति सतमई पियारि । तब अरथ समुझत नतो मोड जग इहै विचारि ॥ देवकीनन्दन क्रियो तिनकी रथ पथ भूप । जेहि जेहि प्रगटे दोहा अरथ आसय सहित अनूप ॥ हरि विचारि ज्यो सिंधु सो प्रगटे रतन सुरूप । त्यो सतमैया मे अरथ योकी नदन भूप ॥ घोकी नदन तिलक है याते याको नाम सतमैया वरनार्थ मत प्रगट करत अभिराम ॥ लोक रीति गति नीति की परमारथ हरि प्रीति । जु चहे सु लहे समुझि भल तिलक अरथ पथ रीति ॥ पुत्र सुकवि ऋषि नाथ को हो है ठाकुर नाम । अमनी वानी में कटो या लपि नृप गुन धाम ॥ लेप सवत १९६३ मितो भाद्र शुक्ल नौमी भौमवागरे ॥ कवि ठाकुर प्रसाद पुत्र रिपिनाथ कृत सतसई तिलक समाप्त ॥

विषय—विहारी सतसई की टीका ।

संख्या ४७९ तिव्वरत्नाकर, रचयिता—ठाकुर प्रसाद, कागज—देशी, पत्र—२६०, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००५, पूर्ण, रूप—माधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४३ = १८८६ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामदुलारे मिश्र, ग्राम—रतनपुर, ढाकघर—अलीगज, जिला—खीरी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ तिव्व रत्नाकर लिप्यते ॥ पहली फसल ॥ जरूरी

धीपत्तियों की क्रिया और सुदृष्टी में ॥ चारों हासलों में ईश्वर न पेसी जिय बपाई है । कि गरमी के संग लुहरी और ठरीके संग सररी इकरो महीं हो सखी और इन चारों का एक एक बल प्राप्त किया है गर्मी और लुहरी में कर्ता और ठरी और सररी में कर्म इन दोनों परा कर्मों के बिना किसी एक का बल माकूम नहीं हो सख्य अर्थात् जब ताई कर्म मीयूत न हाय तब ताई कर्ता की क्रिया किस की सहायता से प्रगट हो सके । इस कारण से विद्वय होता है कि प्रत्येक धीपथि में दो हासलों मीयूत हैं गर्मी के संग ठरी तथा लुहरी के संग सररी तथा ठरी के तथा लुहरी के और धीपथी काम में खाने से इब चारों हासलों में चार द्रव्या विकसते हैं ॥

अंत—बबामीर अस्का भा मे जपनी पुरतक में किला है कि सख्य और गूगक बराबर खेके गोली बना के जितनी मुनासिब जाते उतनी क्षाये और लगाने से तुरंत अच्छी होती है ॥ मार्ग के अधिक चलने की परकाश और जोड़ों की अकड़ जाना भार बंध जाना ये सब बलों पर कोई रोक लगाने और जोड़ों में गरम पानी और गरमी में शीतक पानी जोष ताई लवा हीक उसी जगह तक मिडवाने से दूर होंय परंतु पानी बाकी शरीर पर पहुंचने पावे ॥ हाय पांशों की लुहरी नष्ट होती है । गरम पानी में नान मिला के पो वाले लो लुहरी अस्त जाती रहेगी ॥ इति पूनामी दिक्मत ग्रंथ का भाष्यनुवाद अर्थात् तिष्य रखा कर ग्रंथ संपूर्ण समाप्तः फस्त्युज संवत् १९७३ वि० शुभ मस्तु ॥

विषय—पूनामी (इक्ष्मी) चिकित्सा ।

संख्या ४०० द्रव्येक प्रकाश, रचयिता—धानकवि, कागज—देसी पीछा, पत्र—५६ आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३१, परिमाण (अनुपुत्र)—१४६३, पूर्ण, रूप—गर्जन, पत्र, कियि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७०=१७९१ ई०, लिपिकार—सं० १९४६ = १८८९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृष्णबिहारी मिश्र, माडल हाउस, करमज ॥

अधि—श्री गणेशायनमः ॥ कर्प्ये ॥ श्री अंबोदर हांशु सुबन अमोदक कोषन ॥ चर्चित बंदन बंदनमाक बंदन इधि रोचन ॥ मुक मंडल गंडालि गड मंडित मुक्ति कुदस्य । सुंदावन वर सुंद चरन बंदन आकंदन ॥ वर जमब गदा अंबुदा धरत विषय हरम मगक करन ॥ कवि धाम नवासी मित्रि पर एक दंत श्री तुष धारन ॥ १ ॥ सरस्वती वर्गन ॥ हासक पि हादिनी परम हंस पादिनी ही पौपी कर बीनामुर मंडल मइत है । अस्तन कबल भंग अंबर धवल मुत्र बंद सों अबर रंग नवल चइत है ॥ पेयी मानु भारती की भारती करत धाम जाको बस विधि पेये पंडित पइत है । छाकी इया होमि फाल पान्तर निरारंब रके मुल ते मपुर मंत्रु जापर कइत है ॥ २ ॥ गुर देव उष्ये ॥ श्री गणैस गुर देव प्रह्य गुद देव विधाता । रमारमन गुद देव देव गुद धंकर दाता ॥

अंत—ग्रंथ द्रव्येक प्रकाश को पई गुनै चित्त ज्ञाप । बाबक अहक अर्थ की शक्ति हाय मुप पाव ॥ ८ ॥ राधा राधा रमन के वर्गन पद् अंगार । नामा भांति मुभाव गुन नामा भांति विहार ॥ ९ ॥ लई सख्य कम्बाग पद् भी संतन का संग बई दलेक प्रकाश की बई सुमंगल रंग ॥ १० ॥ इति श्री कवि मान विरचिते प्रकाशे चित्र काव्य वर्णयो नाम एका

दशोह्याम् ॥ ११ ॥ दोहा रम श्रुति निधि प्राशि वर्ष अरु आश्विन वृषा सुमास । दर्म कुजहि
दिन पूर्ण भो सिंह दलेल प्रकाश ॥

विषय—यह ग्रथ पिगल एवं शृंगार रस का है ।

संख्या ४८१ प. समरविजय, रचयिता—तीर्थराज, दागज—साधारण, पद्य—
३१, आकार—७ X ४ दृच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) २०,—परिमाण (अनुष्टुप् —७५०, पूर्ण,
रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०७ = १७५० ई०, लिपिकाल—
स० १८०९ = १७०२ ई०, प्रासिन्धान—प० अवधविहारी मिश्र, पुनारी कालाकांकर,
जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ समर विजय लिप्यते ॥ टां०—श्री गणपति पद
कमल विन, तूँ छिन छिन छवि छीन । रंग्यो स्याम रग में फिगत, मो मन मनुकर दीन
॥ १ ॥ छप्पे—जय जय जय गुण रूप भूप, जटुकुल बल मदन । भक्त हेत सुप देत, डीह
दानन दल खडन ॥ करि करि विनय अनन्त, मन चितत उर धरि धरि । तासो मव ब्रज
वाम, रूप पावत दग भरि भरि ॥ कहि राज कौन ब्रज राज विन, भव बाधा सकट हरन ।
जय दीन वधु गिर वर धरन, राधा वर वर्य चरन ॥ २ ॥

अत—समर सार भाषा कन्यो, समर विजय सुन देत । धर्म धुंधर जानिके,
अचल सिंह नृप हेत ॥ ५१ ॥ आशीर्वादः—जौलौ काम तरु की उदारता वपाने कवि,
जौलौ भवसागर में फीरति सुहाती है । जौलौ पच तत्व है विधाता के अखिल धनु, जौलौ
कमला की कला कलि में अवाती है ॥ जौलौ वसुधा में राम राम धाम धाम कहै, जौलौ
वाम वाम श्रंग भव के विभाती है ॥ तौलौ श्री अचल सिंह धरनी में राज करौ, धरम
धुरधर पुरधर कौ नाती है ॥ ५२ ॥ विजय ॥ धारिये भूपति वम समुद्र कला निधि श्री
सुप शक निहारिये । करिये आठ गुनो पुनि ताहि सु एक ते लक्षनि हूँ लौं विचारिये ॥
चारिये जोरि के तीस गुनो करि राज कहै सुकलानियो तारिये । तारिये त्रेप तिथानि सौं
श्री अचलेन की आयु समा निरधारिये ॥ ५३ ॥ इति श्री महाराज कुमार अचल सिंहाज्ञया
तीर्थराज कृते—समर विजये छाया पुरुष दर्शन नाम ७ प्रकाम यमास ॥ शुभ संवत्
१८०९ वैशाख सुदि ३ शनी लि० तीर्थराज नागर ब्राह्मणेन ।

विषय—समरसार का भाषानुवाद ।

विशेष—राजवंश वर्णन.—जिन वम पालन रीति राहन सालि वाहन ग्याहमी ।
जिन विक्रमानि सौं जीति विक्रम भौति विक्रम सो जमी तिहि वम में प्रगट्यो अनट तिलोक
चद महीप है । जिन मारि अरि दल रागि दल किय राज जवू दीप है ॥ ६ ॥ तिनकौ
सुलक्षण द्वैज कैसो चद पृथ्वीचद है । जिहि स्वक्ष अक्षन लक्ष्य लक्षण नवत सीम नरिंद है ॥
पुनि देवराइ नरेस भौ जसु देय देमनि में भयौ, रिपु जीति रीति विवेक सौं भुवदेवराय
मनौ भयौ ॥ ७ ॥ पुनि भयौ भैरवदास भैरव पास जासुन दिन तजिय । अरु अरिन को
भैरव लौं वर वर नरन कौं अरिन किय ॥ तात नथ ताराचद को कविचद समान वपानियो ।
जस चन्द्रिका छिति छाड निस दिन मद चंद्रहु को कियो ॥ ८ ॥ पुनि भयौ राव संग्राम
साहि संग्राम साहन सौं कियौ । गिर वरनि से अरि करि वरनि केहरनि ज्यौं धरि

इपरिषा ॥ तिनके भये मुक्त जगत आहिर, कमरुसिंह नरेस ईं अमु गुन राज रागति को
 मई पार पावत सेस ईं ॥ १८ ॥ ता तनप पूम्बीराज पुपु र्थो प्रजा पावन को भयी । दान
 करि सममान करि किरधाम करि जिन अमु बयी ॥ पुनि भी पुरंदर सीं पुरंदर रथ्या विधि
 कथिक्यक में । सुरपाल यह नरपाल यह तलकाल कियि दिय भाऊ में ॥ १० ॥ पुनि भये
 सरदमसिंह तिनमी कौन ममसरि करि सकी । सब मुकप रंग करि कुसुपि छपि की पुरप
 भीरज धरि सकी ॥ बइत रज मुख सहु सगमुप काज नहिं सर चाप सों । करवाल
 छेकर जापने इपटें करिदुनि वाप सां ॥ राव मरदन नंद आनद कंद पंच कुमार ईं ।
 पंच आनद सहित मारुई पंचवान उदार ईं ॥ १९ ॥ दादा—तिन में कचल नरस
 सब गुन गल को इरिमाड । दान मान किरधाम रूपि रीसे कयि कथि राव ॥ १३ ॥
 सरदम रिया राठ के जेदे भीर कुमार । कचल कृपा कचलेस पर कचल राग छिर मार
 ॥ १४ ॥ ईस बज्यो हल बल बज्यो तन मन बज्यो छत्राह ॥ भी कचलेम क्रोम की
 दिनति बही सुमाई ॥ १५ ॥ (क)—धंय निर्माणादि कारण—एक समी दरबार में, बड़े
 कचल नरस । गुन संकित पंडित मरुल सोहत मनो भुरेस ॥ १८ ॥ सोरख—श्री मना
 सुदेस, सरनि को मजकूर सुनि । भाव बचन भरस, छे मन वतत सबंधा ॥ ११ ॥ वृप
 उवाच—हार अति यह कर्मगति, मग्मुक करिषी कर्म । सार्य सीक साहस सहित, ए
 छयिन के कर्म ॥ २० ॥ घरी सुभाबत समर मग, पगन चरि इहि देव । विना घरी विधि
 हर हरी, भरी भीर छत्रि देव ॥ २१ ॥ यह कहि तीरथ राव सो, पुनि बोछे वृप राह ।
 समर सार भाषा इमी, बीधि धंय बनाइ ॥ २२ ॥ (ग)—धंय निर्माण कालः—सबन्
 मुनि* नम उरग* समि*, जठ मुख रवि तीज । ययी सुजम फल लहम कों, समर
 विजय की बीज ॥ २३ ॥

संख्या ४८२ धो. समर विजय, रचयिता—सीधराज, कागज—बैसी, पत्र—३०,
 आकार—१२ x ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३ परिमाण (अनुनुप)—५००, पूर्ण रूप—
 प्राचीन, पद्य विधि—सागरी रचमाकाल—सं० १८०० = १७५० ई०, छपिकाल—सं०
 १९०१ = १८४४ ई०, प्रासिस्वान—पं० कालिकाप्रसाद शूब, धम्म—गीरिवारसूक्तपुर, वाक-
 बर—मिमरिख, प्रिन्स—मीतापुर (अवध) ।

कादि—भी गलेसापकमः ॥ दादा ॥ बागी नू को मुनिरि के विधि सुतोइप पंच
 धर्म बंध राजानि के कर्म कीविपत धंय ॥ मल मुक मर मुक पुनि वृप लख के काज ।
 बाही प्रति बाही विषय बरगत सब कविराज ॥ दुहु विमिगन कविचारि के कइत बिर्मि के
 देव । धे निदान यह जानिये धर्मबंध करि पत ॥ सोरख ॥ यह बर दापक छत्र कथि से
 समर विचार इह । पडे पार ममुइ रावम मे ककरपत वृप ॥ विजया ॥ कौन्ही स्वरादय शीकर
 नू कफ जापत वैई सधि विधि धारन । काऊ कहुं गुद सख पडे हित राजन के जग में जम
 कारण ॥ धीके विचारि सरे मर एक बनेक करिदुव मारत धारन । आयुन त सब भाह परे
 से जरे विमि धीप पतंग हजारन ॥ धिर्मगो ॥ शीजा कथि बचन पूर मल रचन जो धे कचल
 हर बरसै । सारणहिं कुयल में राव पक में काप भयल में ब धारम ॥ ताते मनि बंठनि
 हीजी मंतनि प्रमु परी ॥ विद्या मुप रागी कवर कत्रामी मुपुन प्रकथी जगु दरम ॥

दो० ॥ अब हीं कहत विचारि के सवै जया जय भेट सुभट श्रवण टै जो सुनै रहै न उर में पेद ॥

अत—४८१ पृ के समान ।

पुष्पिका—इति श्री मन महाराज कुमार अचलसिंह आज्ञा तार्थ्य राज कृते समर विजये छाया पुरुष दर्शनं नाम षष्ठम प्रकाशः समाप्तम् म्वत् १९०१ भाद्र सुदी १५ गुरौ लिपतं विहारी लाल दुबे ग्राम झालरा पाटन मध्ये ॥

संख्या ४८१ सी. समर विजय, रचयिता—तीर्थराज, कागज देशी, पत्र—४४, आकार—११ × ६३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, पद्य, रचनाकाल—स० १८०७ = १७५० ई०, लिपिकाल—स० १९०९ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर चंद्रिका वक्त्र सिंह जमींदार, ग्राम—खानीपुर, ढाकघर—तालाव वक्त्रमी, जिला—लखनऊ ।

आदि—अत—४८१ पृ के समान ।

पुष्पिका—इति श्री समर विजय समाप्तं ॥ म्वत् १९०६ ॥ भाद्र मासे कृष्ण पक्षे द्वितीय भौम वासर लिप्यते ॥ मिदम पुस्तक देवी सिंह लिपा पोथी सुद भौली ॥ जो प्रति देखा सो लिपा मम दोषो न दियेते ॥ श्री सीता राम राम सहाइ सदा ॥

संख्या ४८१ डी. समर विजय, रचयिता—तीर्थराज, कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—१२ × ६३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०७, लिपिकाल—सं० १९३०, प्राप्तिस्थान—हुलासमिंह जी जमींदार, ग्राम—सडीला, ढाकघर—मछरहटा, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—अत—४८१ पृ के समान ।

पुष्पिका—इति श्री महाराज कुमार श्री अचल सिंह ज्ञयां तीर्थ्य राज कृते समर विजय वरनन छाया पुरुष दर्शन नाम सप्तमो प्रकाश समाप्त सुभंभूयात् ॥ सवत् १९३२ शाके १७९७ लिपतं गणेश कलवाहा अस्थान सडिला ग्राम भाद्र शुक्ल त्रयोदस्याम सोन वासरा चिताया ॥

संख्या ४८२. आत्मानुशासन भाषाटीका, रचयिता—दोडरमल, कागज—साधारण, पत्र—२०३, आकार—१० × ६३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४८५, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—जैनमठिर, ग्राम—कटरा, ढाकघर—प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—ऊ नमः सिद्धेभ्य ॥ अथ आत्मानुशासन ग्रंथ की भाषाटीका लिख्यते ॥ दोहा—श्री जिन शासन गुरुजमें, नाना विधि सुखकार । आत्म हित उपदेशमै, करै मंगल चार ॥ सवैया ॥ सोहे जिन शासन में आत्मानुशासन थति जाकी दुखहारी सुखकारी साची सासना, जाकौ गुन भद्र कर्ता गुन भद्र जाको जाति भद्र गुन धारी भव्य करत उपासना ॥ असे सारशास्त्र की प्रकाशें अर्थ जीवनी को वनै उपकारना । नासे मिथ्या भ्रम वासना । ताते देश भाषा को अर्थ को प्रकाश करो जाते मद कुबुद्धि हकै होत अर्थ भाषना ॥

अंत—आपार्थ—शिवर की सेवा के आचार्यों सब में मुख्य गण पर देव हैं तिनकी मक्ति विर्ये आरुद्र विष जिनका ऐसे गजवि करि मद्र कदिये कन्दवान रूप मुनि राज जिन के आचार्यों तिमका भाया यह प्रथ है अथवा तिन संगचार्यों का सिष्य जो गुन मद्र का भाष्या है वे होत कर्ष प्रमाण हैं ॥

आजे कहें हैं श्री रिपन देव तुमको कस्याय के करता हैं ।

कर्ष—जिन राज के पुत्र श्री अयमद्रुव तुम हूँ महा कस्याय के निमिष होहु जाके ज्ञान रूप ब्रह्म विर्ये सकल जात कमल तुल्य भासैं हैं ॥

इति श्री आरामानुजासन ग्रंथ संपूर्ण समाप्तम् ॥

(१) पृ० १ से पृ० ५७ तक—सगळाचरण । कश्मी इत्यादि सूत्र बुलात इत्यादि सूत्र, प्राज्ञादि संबधी श्लोक समानावरु के छक्षण साक्ष वक्ष्य के लक्षण, सिष्य के सक्षण, व्यासनिश्चय करने के उपदेश आराधना के चार प्रकार अथात्र के भेद अर्थ प्राज्ञा इत्यादि संग्रह सूत्र सम्यक् भेदवर्णन साक्ष के लक्षण चरित्र आराधना वर्णन धर्म रक्षा का आदेश, धर्म फल वर्णन किंसा धर्म उपान बनना । शिवधी बन की निम्ना, धर्म विनासी कर्मों द्वारा पाप होने का कथन दृष्टान्त मुगपादि प्यसनों का त्यागो-पदेश परिग्रहादि त्याग वर्णन उपकारी छक्षण संसारी भाषा का वर्णन यथादि होय छोड़ मोक्ष मार्गावर्णनी बनने का उपदेश इह अनिष्ट कल्पनाओं के त्याग का उपदेश संसार की विस्तारता का वर्णन कृष्णा की व्यर्थाता मोह जात्रिय जिज्ञा के त्याग का कथन संसार को पुणों का घर बताना मनुष्य को उसमें रह देकर ग्रंथ कर्षों का आश्चर्य और संसार त्याग का उपदेश शरीर का बन्दीरुह कथन करना । सब कुछ त्याग जिन धर्म का कथन ।

(२) पृ० ५० से पृ० ८१ तक—अर्थ सकनी के त्याग का वर्णन मुनियों के गुणों की प्रशंसा, शरीर स्वाम तथा अयु इत्यादि की विस्तारता का वर्णन श्री की निम्ना और उसके शरीर का अकस्यानकारी बताना मनुष्य पयोस के शरीर विरि विहता अश्मा कहा करे हैं ? इसका वर्णन शृङ्गावस्था से प्रथम ही बुद्धि की दृढता कर संसार को त्यागन का वर्णन कर वैराग्य उपजाना ॥

(३) पृ० ८७ से पृ० ११० तक—वैराग्य प्राप्त पुरुष को किसी भी प्रकार के फल की इच्छा न होने का कथन । शरीर की गर्भ स्थित का वर्णन सम्मगादर्शन का काम कुछ उपजाने वाली वस्तुएं काम अथात्र के उपत हुए जीवों का कृत्य, उत्कृष्ट संवादा के त्यागियों का कथन कश्मी त्यागने वालों के कार्य विवेकियों सारा कश्मी के सद्य शरीर त्याग का कथन रागादिक त्यागने का कथन विवेकपूर्वक परिग्रह त्याग रूप मार्ग के मोक्ष पद प्राप्ति का आधार बताना त्यागी की प्रशंसा अथवा आराधना का स्वरूप का अनुक्रम के कर्ष बुद्धिम इत्यादि सूत्र बारह प्रकार के रूप विर्ये मुक्ति का निरु साधन प्यान रूप तप उनके ज्ये आदिक वर्णन सब विरस प्बन्धि श्री प्रशंसा, ज्ञान आराधना का अनुक्रम, शिव आराधना का आराधक, चार प्रकार की आराधना वाले को मोक्ष भी प्राप्ति, चकने शिवर के तैतीस उपद्रव ब्रह्म उपद्रव के कर्मों में प्रवृत्तिका निषेध, श्री के अंगों की

अशुचिता का वर्णन दोष विवेचन ग्रहण त्याग विषे, दूषण, कारण सहित गुण और दोष जानने का विधान, धिवेकी द्वारा हित की वृद्धि और अहित का नाश, सुगति के साधन धर्मरूप भावों की वृद्धि के कर्त्ता जीवों की गणना कम होने का कथन, आचार्यों की उपदेश न मानने वालों की सगति का अवरोध, याचना की तुच्छता, यात्रकता पर अयाचक की गति विशेष का वर्णन जीव के सम्य कर्म के कर्त्तव्य, तप त्याग की निन्दन, समय विधान का उपदेश, मत विरोध का आदेश, शास्त्राभ्या स्त्री की महानता । (४) पृ० १६१ मे पृ० तब—श्रुति ज्ञान भावना सम स्वभाव ज्ञान को पानेवाले फल वर्णन, भव्य अभव्यों को फल प्राप्ति, ध्यान की सामग्री, जीव की सधि, अनमोक्ष का करण विषयक पाय जीतने की विधि, सर्व अनर्थों का मृत कारण शरीर को बताना और तप द्वारा उमकी शुद्धता का विधान इन्द्रिय विग्रही गृहस्थ की अपूर्वता स्त्री तथा शरीरादि मे विरक्त होने का उपदेश कपाय केवसीभूत होने वालों का उपहास, अहंकार के त्याग का कथन, मात्रा चार के योग से जीवका अकल्याण लोग की जीविका से अकाज, अकल्याण कारी कपाय को जीतने का कथन, मुक्ति के हेतु धारण क्रिये रक्ष की रक्षा का आदेश, ज्ञानादि उपाय अगीकार करने की शिक्षा, निवृत्ति के अभ्यास के कथन, प्रवृत्ति और निवृत्ति का स्वरूप, हितकारि तथा अहित-कारी वस्तु का ज्ञान शुभादि तीन हित का निषेध, निस्पृह की परिभाषा, बंधनाश, अनुक्रम, योगी का लक्षण, आश्रव का विरोध, महापुरणों के संयम की हानि के कारण, शरीर और आत्मा का संयोग, कर्मों की निर्जला, मातृगुण, पुरातन धर्म, निर्जला तथा नव्य कर्म मवर प्रथ की आज्ञानुसार आचरण करनेवालों को फल । प्रयकार गुरु का परिचय —

जिनमेनाचार्य पाद स्मरणी धनिचेतया । गुणभद्र भदताना कृत्ति रामानुमाम्यन ॥

संख्या ४८३. वकाद्री, रचयिता—तोमरदाम (ताड़ीपुर, जिला रायवरेली), कागज—सफेद मोटा, पत्र—२५, आकार—८ $\frac{1}{2}$ X ६ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—७०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८५ = १८२८ ई०, लिपिकाल—सं० १९८५ = १९२८ ई०, प्राप्तस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरेपरान पाड़े, ढावकर—तिलोई, जिला—रायवरेली (अबध) ।

आदि—छन्द—करतार करणा कंड कौशल चट टशरथ नदरे । अपराध भव गुण गेह में, अति पोच मति का मंद रे ॥ जय राम अलख अनादि अज आर्चित पुरुष परंदरे । अध ओघ विवनकु व्याधि हरू संशय सकल दुख ददरे ॥ है भक्त वत्सल वानि प्रभु की करीं सत सौगंड रे । अर्धान नाम पुकारते मन कटे यम के फदरे । निर्भय शरण नहि त्रास उर निशि रोज सदा दुर्चदरे । प्रभु दुलन चरण प्रताप तैं जन तौमर मन आनद रे ॥

अंत—गुक आपन स्वारथी हरि और को केहि केर रे । हृदय समुझि विचारि मनुरे सुमिरु अवेहु सवेर रे ॥ सगी सगेदिन चारि के, सपने क अस भड मेर रे । विद्युरे न हेरे मिलै फिरि दहु कहाँ काहि वमेर रे ॥ होत आखिर कूच-सव का अगारि कोउ अवेर रे । अवलंब एकै रामजिउ ते सबहि करहि निवेर रे ॥ हित मीत नातन गोत कोइ यम दूत

कीन्ह धर रे । सिमरी सहायक सङ्गुद, प्रमु दुरुन मलय मुमर रे ॥ सरन सबहित मचक
 सोमर रहत चरन न नेर रे ॥

विषय—मर्ण्य व्यक्तियों की स्वयं के क्रम से एक एक अक्षर पर एक २ पद राम
 नाम की महिमा आदि पर लिखा गया है ।

संख्या ४८४ पं. रामायण आरण्यकांड, रचयिता—गुरुसीदास (रामपुर),
 अंगर—देसी, पत्र—२३ आकार—३×७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण
 (अनुच्छेद)—११३ म्य—प्राचीन, पद्य—मार्गी, लिपि—मागरी लिपिकाक—सं० १८७५=१८१८ ई०, प्राप्तिस्थान—उमासंकर कूबे, ग्राम—सैदपुर, जिला—गाजीपुर ।

आदि—शे० अति कृपाकृत रघुनाथक सदा दीन पर महु । ता मुनु काइ कीन्ह उरु
 मूरख अचगुन गह ॥ श्री० परित मंच ब्रह्म सर धावा चक्रा भात्रि बाधसमय पावा । परि
 नित्र रूप गयो पितु पाहीं । राम विमुक्त सोइ सत्वा नाहीं । मा निराख उपजी मन प्रासा ।
 कया चक्र मय रिपि दुरबाण महाभाम सिधपुरि सब छोका । फिरा अमित प्याकृत मय
 सोका काहु बंदन कदा न भोही । रात्रि के मकर राम कर ब्रोही । मातु मृत्यु पित समन
 समाजा । सुधा हाइ बिपु मुनु हरिजाया । मित्र करै सत रिपु कै करनी ॥ सब जग तैहि
 बनकइ ते नाठा । जो रघुवीर विमुग्ध मुन आठा । शे० तिमि तिमि भागत सकमुत प्या
 कुल अति हुनदीन । तिमि २ धाबत घामसर पाऊ परम प्रधीन ॥

धत—सम्पन्न के लच्छन रघुवीरा । कइहु नाथ मंडन मच मीरा । मुमुमुनि संतन
 के गुन कइई । त्रिभू त में उनके वत रहई । लट बिकार जिन अचम अचमा । अचल
 अकिंचन मुधि मुक्तबाम । अमित बोध अनीह मिठयोगी सत्य संच कवि कोबिद जोगी ।
 सावधान मानइ मइ हीना । धीर भक्ति पथ परम प्रधीना । गुनागार संसार हुन रहित
 विगत संदह । तत्रि मम चरन सरोत त्रिय त्रिबई वृहम गोइ । निमगुन अचम मुक्त सकु-
 चाहीं । परगुन मुक्त अधिक हरपाहीं । समसीतल नहीं त्यागहि नीही सरल मुमाय सबहिं
 सब प्रीती । जप तप ब्रतदम संभ्रमनमा गुण गोविंद बिप्र पश्येमा । अजा उमा मैत्री दाया ।
 मुदिता मम पद प्रीति अमाया । बिरति विदेक विनय विशाना । बोध अपारथ बइ पुरावा ।
 बंन मानपद करहिं न काऊ । भूक्ति न हैहि कुमारग पाऊ । गाबहिं मुनहिं सदा मम
 लीला । हेतु रहित परहित रतमीला ।

विषय—राम चरित ।

संख्या ४८५ पं. रामायण अरण्यकांड, रचयिता—गुरुसीदास (रामपुर),
 अंगर—देसी, पत्र—३३, आकार—१×३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण
 (अनुच्छेद)—३०१, रूप—प्राचीन, पद्य—मार्गी, लिपि—मागरी, रचनाकाक—सं० १९३१=१५७४ ई०, लिपिकाक—सं० १८२०=१७८० ई०, प्राप्तिस्थान—उमासंकर कूबे, ग्राम—
 सैदपुर, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री०—कइहिं सप्रेम एक एक पाहीं । राम कथन सखि होहिं की नाहीं ॥
 बप बपु वरन रूप सोइ आकी । सील सनेह मरिस सम चाकी ॥ वेपु न सोसपि सीय न

सगा । आगे अनी चली चतुरंगा ॥ नहिं प्रमत्त सुप मानम्य पेदा । सपि मन्देह होइ यहि
 भेदा ॥ तासु तरकतिय गनमनमानी । कहहिं मन्ल तेहि समन सयानी ॥ लेहि सराहि
 वानी फुर पूजी । बोली मथुर वचनमिय दूजी ॥ कहि मप्रेम मय कथा प्रसगू । जेहि विधि
 रामराज रस भगू ॥ भरतहि बहुरि सगहन लागी । नील मनेह सुभाय सुभागी । दो०—
 चलत पयाटे पात फल पीतडीन्हु तजिराजु ॥ जात मनावन रघुवरहिं भरत सरिम को आजु
 ॥ २०३ ॥ चौ० ॥—भायप भगति भरत आचरनु । कहत सुनै दुप दुपन हगनु ॥ जो कछु
 कहव योर सन्नि सोइ । राम वन्तु आस काहे न होई ॥

श्रंत—चौ० टोड दिमि ममुझि कहत सय लोगू । मय विधि भरत मराहन जोगू ॥
 सुनि व्रतनेम म्थाय सकुचार्हा । देपि दमा मनि राज लजाहीं ॥ परम पुनीत भरत आचरनु ।
 मधुर मंजु मुद मंगल कानू ॥ हरन कठिन कनि क्लुप कलेरु । महामोह निमि दलन
 दिनेसू ॥ पाप पुंज कुंजर भृगराजु ॥ ममन मक्ल सन्ताप समाजू ॥ जनरंजन भंजन भव
 भारू ॥ राममनेह सुधाकर सारू ॥ छन्द—मियराम प्रेम पियूप पून होत जनम न भरत
 को । मुनिमन अगम जमणेम । समदम विषय व्रत आचरत को ॥ दुप दाह दारिद दम
 भूपन सुजसमिमि अप हरत को कलिकाल तुलसी सठहिं हठि राम मनसुप करत को ।
 सोरठा—भगत चरित करिनेम तुलसी जे सादर सुनहि । सीयराम पदप्रेम अवसि होइ भवनम
 विरति ॥ इति श्री राम चरित मानमे सकल कलि क्लुप विध्वंसने विमलमं पाटिनी
 दुतियो सोपानः समाप्त । शुभमस्तु सवव १८३७ मिति फाल्गुन सुदि प्रति भद्रायां
 आदित्य सुत वासरे कास्या मध्ये लिप्यते रामदत्त ब्राह्मण । शुभ ॥ राम राम राम राम ॥
 विषय—राम चरित ।

संख्या ४८४ सी श्रयोव्याकाड, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—
 १७२, आकार—१० × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४५१,
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४०, प्राप्तिस्थान—स्वामी ब्रह्म-
 चारी जी द्वारा दावू लालताप्रसाद खजांची, ग्राम—सिधौली, जिला—मीतापुर (अवध) ।

आदि—मुद्रित मातु सव सपी सहेली । कलित विलोक मनोहर चेली । राम रूप
 गुन शील सुभाऊ । प्रमुद्रित होंहि देपि सुनि रऊ ॥ दो० ॥ मव के डर अभिलाप यह
 कहहिं मनाइ महेस । आप अद्भुत युवराज पद रामहिं देहिं नरेम ।

श्रंत—छन्द ॥ सिय राम प्रेम पियूप पून होत जनम न भरत को । मुनि मन
 अगम नेम मम दम व्रत आचरत को ॥ दुप दाह दारिद दम दूपन सुजस नि.सि अपहरत को ।
 कलिकाल तुलसी से म्ठाहिं हठि राम मसुप करत को ॥ सोरठा ॥ भरत चरित्र करि नेम
 तुलसी सादर जे सुनहि सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव रस विरति ॥ इति श्री दुतिय
 सोपान अजोध्या कांड समापत सुभ मस्तु लिपतं गंगा गिरि गोसाईं संवत १८४० चैत्र
 शुक्ल द्वितीया ॥

संख्या ४८४ डी. रामायण श्रयोव्याकाड, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—३४४,
 आकार—९ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०६६, रूप—

प्राचीन, पद्य, छिपि—जागरी छिपिकाळ—सं० १८६२ = १८०५ ई०, प्रासिस्थान—मुंसी
 ब्रजमोहन स्वस साहब, ग्राम—देवा जिळा—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्रीरि मनोज देवी छवि मोहा । सीता कर पामर पर सोहा । तेहि अक्षर
 मुनि नारद आप । सुरहित सागी विरंची पटाप । तेज पुत्र तनु करतल बीणा । हरि गुन
 गावत लख सीमा । देविराम महमा उठि आप । करत हंजवत मुनि उर आप । सादर भिज
 आसन बीदार । जनक मुता तव करव पधारे ।

अंत—सोरठा । भरत चरित कर भेम ॥ तुलसी जे सादर मुनिहि । सिपा राम पद
 भेम ॥ अक्षरि ते नर मज रस बिरत ॥ इति श्री राम चरित्रे मायस सकळ कवी काल
 कृत्युप बीधसने नाम विमल बीराग्या दुई प स्तोत्रान अशोष्या कांड रामायन संपूरण संवत
 १८६२ वि० ॥

विषय—प्रथम पत्र अंकित है । प्रजा द्वारा मेजा हुआ नारद का आना, राम्यामियेक
 के छिपे राजा का मनोरथ, देवताओं का सरस्वती की सहायता से मंत्रा द्वारा कैकेयी से
 विष्णु उपस्थित करवाना । कइ विनता की कथा, वृक्षरथ जी का कोप भवन में कैकेयी को
 देलना, कारण पूजना, बरदान मांगना, रामचंद्र जी का सबसे बिदा मांग कर बन जाना ।
 सीता और अक्षय का साथ जाना, शंभुपुर आना गुह से भेंट, सुमंत का विदा होकर
 वापस आना, गंगा पार होकर रामचंद्र जी का प्रयाग में आना, भरद्वाज के आश्रम में
 रहकर काकमीकि मुनि के आश्रम में आना, चित्रकूट में विवास, सुमंत का वृक्षरथ से
 निकलना, वृक्षरथ जी का बिकाप, कौसिल्या जी से अश्विन के आप की कथा कहना, राम
 विषोग में वृक्षरथ जी का प्राण त्याग । नसिद्ध जी का नामा प्रकार के उपदेशों से सब को
 सांगना, भरत का आना, मृतक संस्कार करना भरत का बन गमन, गुह से भेंट, प्रयाग
 होते हुए चित्रकूट में राम से भेंट, संवाद महाराज जनक जी का चित्रकूट आना । भरत जी
 का पादुका लेकर अयोध्या वापस आना आदि वर्णन ॥

संख्या ४८४ ई अयोध्याकांड रामायण, रचयिता—गो० तुलसीदास (राजापुर),
 कागज—देसी, पत्र—२००, आकार—१३३ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण
 (अनुच्छेद)—२३०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—जागरी, छिपिकाळ—सं० १८८४ =
 १८९७ ई०, प्रासिस्थान—अ० चंद्रिका अक्षरसिंह जी जमींदार, धाम—लानीपुर, झांझर—
 ताखत बकनी, जिळा—कलकत्ता ।

संख्या ४८४ एफ अयोध्याकांड रामायण, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर),
 कागज—देसी, आकार—८३ × ९३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६ परिमाण (अनुच्छेद)—
 ३२३२ पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—जागरी, छिपिकाळ—सं० १८९७ = १८४० ई०,
 प्रासिस्थान—मुंसी शीतलप्रसाद, ग्राम—दरौंगा, जिळा—प्रतापगढ़ (अजय) ।

संख्या ४८४ जी बाहुक विनय, रचयिता—तुलसीदास गोस्वामी (राजापुर बाँदा)
 कागज—आपारण, पत्र—३२, आकार—६३ × ९३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परि
 माण (अनुच्छेद)—१७०, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य छिपि—जागरी, छिपिकाळ सं०
 १६४५ = १८८८ ई०, प्रासिस्थान—जागरीप्रचारिणी समा काशी ।

आदि—श्रीमते वायु पुत्राय नमः ॥ छप्पै ॥ सिंधु तरन सिय मोच हरन रवि बाल वरन, तनु भुज विशाल मूरति कराल कालहु को काल जनु, गहन दहन निर दहन लंक निः संक वंक भुव, जातु धान बलवान मान मद दवन पवन सुव, कहि तुलसि दास सेवत सुलभ सेवक हित संतत निरुद, गुन गुन गनन नमत सुमिरत जपत समन सकल संकट विकट ॥ १ ॥ स्वर्ण.....ल संका सकौटि रवि तरुण तेज वन, उर विशाल भुज दड चढ नप वज्र वज्र तन, पिंग नैन भृकुटी कराल रसना दसनानन, कपि सकेस कर कसल गूल पल दल भल भानन, कहि तुलसि दास वस जासु उर मारुत सुत मूरति विकट, संताप पाप तेहि पुरुष कह सपनेऊ नहिं आवत निकट ॥ २ ॥

अंत—(सी)शीता पति (सा)शाहेव सहाय हनुमान नित हित उपदेस(श) को महेस(श) मानै गुर कै । मानस वचन काय सरण तिहारी पाय तुम्हरै भरोसे सुर मै न जानो सुरकै ॥ व्याधि भूत जनित उपाधि काहू पलकी समाधि कीजे तुलसी को जानि जन फुरकै । कपिनाथ रघुनाथ मोरा नाथ भूत नाथ रोग सिंधु क्यों न डारियत गाय पुरकै ॥ ४४ ॥ कहा हनुमान सौं सुजान राम राम सौं कृपानिधान सकर सो सावधान सुनिये । हरप विषाद राग दोष गुन दोष मई विरची विरचि सब देपियत हुनिये ॥ माया जीव काल के कर में सुभाय के करैया राम वेद कहै सांची मन गुनिये । तुमते कहा न होय हा हा मो बुझाय मोहि हौं हू रहौं मान ही वयोशो जानि लुनिये ॥ ४५ ॥ इति श्री गोसाईं तुलसी दास कृत बाहुक विनै समाप्त शुभ भूयात । संवत् १९४५ चैत्र शुक्ल एकादश्या रविवारे ॥ श्रीः श्रीः श्रीः

विषय—इस पुस्तक में हनुमान जी की स्तुति ४५ छंदों में की गई है ।

संख्या ४६४ यच. वजरग वाण, रचयिता—तुलसीदास, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—५ X ३.३ इंच, पक्कि (प्रति पृष्ठ) ५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जगन्नाथ प्रसाद, डाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—निश्चै प्रीति प्रतीतिते । विनै करयो सनमान । तेहि के कारज सकल सिद्धि । सुरत करयो हनुमान ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ जै हनिमत संत हितकारी । सुनि लीजै प्रभु भरज हमारी ॥ जन के काम विलंब न कीजै । आतुर दवरि महा सुख दीनै ॥ २ ॥ जैसे सिन्धु कूदि वहि पारा । सुरसा के हनि मुष्टिक मारा । आगे जाय लंकिनि रोक । मारेउ लात गई सुरलोका ॥ ३ ॥ जाय विभीषण का सुख दीन्हा । सीतहिं निरखि परम पद लीन्हा । वाग उजारि सिन्ध में वीरा । अति आतुर जम कातर तोरा ॥ ४ ॥ अठे कुमारहिं मारि सघारा । लूम लपेटि लंक का जारा ॥ लाह समान लंका जरि गई । जै जेधुनि सुर पुर मा भई ॥ ५ ॥ अत्र विलंब केहि कारण स्वामी । कृपा करौ उर अन्तर जामी ॥ जै लक्ष्मण प्राण के दाता । आतुर है दुख करौ निपाता ॥ ६ ॥

अत—उहु चलु तोहि रामदोहाई । पाँय परौं करि जोरि मनाई ॥ चं चं चं चं चपल चलता । हनु हनु हनु हनु हनु हनुमता ॥ १६ ॥ हं हं हांक देत कपि चचल । सं सं सहमि परावे खलदल ॥ अपने जनका काहे न उवरौ । सुभिरत होत अनंद हमारो ॥ १७ ॥

पंदि बजरंग बाल अ जायै । ताको मूठ प्रेत सब कर्षै । पट करै बजरंग बाल का । इनिमत्त
रक्षा करै प्राय का ॥ १८ ॥ यह बजरंग बाल बेहि मारै । ताहि कर्षै किरि कबत बचारी ॥
भूष देह बरु बर्ष हमेमा । ताके तन नहि रहै कयेमा ॥ १९ ॥ प्रेम प्रीति बरि कपि मये ।
सदा परै नर ध्यान । तेहि कर करज सकल बिधि । सिद्धि करै इनुमान ॥ २० ॥

इति श्री बजरंग नाम तुलसी दास कृत ॥ सङ्पूर्णम् ॥

विषय—इनुमान श्री श्री प्रथमा करते हुए उनसे रक्षा की विषय करना । मूठादि से
बचाये तथा भयम दैन की प्रार्थना । इस बजरंग बाल नामक ग्रंथ के प्रयोग का फल ।

संख्या ४८४ आई बजरंग साठिका, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी पीला,
पत्र—१०, आकार—२ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुपुष्प)—५७
पूर्ण, रूप—प्राचीन कमखोर पद्य, लिपि—मागरी, लिपिकाळ—सं० १८९३ = १८३६ ई०,
प्राप्तिस्थान—धड़िका बरस सिंह, ग्राम—जाजीपुर, झाकपर—ताऊब बकसी, जिला—
ससनक ।

संख्या ४८४ से रामायण बासकंड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—
देशी प्राचीन, पत्र—४७०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण
(अनुपुष्प)—४२३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी, रचकाळ—सं०
१६३१ = १३७४ ई०, लिपिकाळ—सं० १८३६ ई०, प्राप्तिस्थान—मजसाहन काळ, ग्राम—
देवा, जिला—मठापगढ़ (मधय) ।

संख्या ४८४ के. रामायण बासकंड, रचयिता—श्री० तुलसीदास (राजापुर),
कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—५ ३/४ × ३ ३/४ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण
(अनुपुष्प)—११३, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—मागरी रचकाळ—सं० १६३१ =
१५७४ ई०, लिपिकाळ—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—उमार्सकर वृत्ते सैधपुर,
जिला—गाजीपुर ।

संख्या ४८४ यत्त भासकंड रामायण, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर, बाँदा),
कागज—देशी, पत्र—१७६, आकार—९ × ६ ३/४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण
(अनुपुष्प)—२६६२, रूप—प्राचीन पद्य लिपि—मागरी, प्राप्तिस्थान—धीतराप्रसाद,
जिला—प्रतापगढ़ ।

संख्या ४८४ एम बरौ रामायण, रचयिता—श्री० तुलसीदास श्री (राजापुर बाँदा),
कागज—देशी पत्र—४, आकार—९ ३/४ × ६ ३/४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण
(अनुपुष्प)—४८ पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी, लिपिकाळ—सं०
१७६७ = १७४० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़, जिला—प्रतापगढ़
(मधय) ।

आदि—श्री रामी जयति श्री राम सीता । श्री गणैसायनमः । राग बिरौ । सीय राम
बद कपन चके मग आदि । ग्राम बारि नर निरपत्त रूप तुमाहि । सजस नयन तन पुक-

कित गद् गद् धैन । कहहिं निछावरि करिये कोटिक भैन ॥ जहि जेहि गाऊ गोइदवां निक-
सहिं जाइ । देप दैन्ह के मनहि लेहि संग लाइ ॥ सोमा कहि नहि सकाहि देपि मन्मोह ।
जनु वसंत रति सहित मदन वनु मोह ॥

अंत—सुमिरत राम सुलभ फल चारि । वेद पुरान पुकारत कहत पुकारि ॥ राम
नाम पर तुलसी नेह निवाहु । येहि ते नहीं अधिक कष्टु जीवन लाहु ॥ दोप दुरित दुप
दारिद्र दाहक नामह । सकल सुमंगल दायक तुलसी राम ॥

विषय—चरवा छंद में रामायण की कथा ।

संख्या ४८४ एन धरमराय की गीता, रचयिता—तुलसीदास, कागज—साधारण,
पत्र—१०, आकार—६३ × ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९२ ई०, प्राप्तिस्थान—
पं० रमाकांत शुक्ल, ग्राम—पुरवा गरीबदास, ढाकघर—गढ़वारा, जिला—प्रतापगढ़
(अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ धरम राय की गीता लिख्यते धरमराय के दूत बडा
महा रूप विकराल । मन वच कर्म विचारिये । हे पापिन के साल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ धरम
राय के दूत अनरे । जिनकाँ डरपतु रहिमन मेरे ॥ दीरघ महां भयानक अंगा । कजल वरन
सनैन सुरंगा ॥ ठाढे केमनि लम्बी पैचें । मानो देह निरदडं जल सीचें ॥ दुष्टन देखि धरें नहि
धीरा । करैं सहस्र बीघिन की पीरा ॥ तीछन दंत भैन गडि रहें । दैन दड दुष्टनि काँ गये ॥
मुदगर लीनै कीनै क्रोधा । लेत फिरैं पापिन के सोधा ॥ जोरि अजुली जम के आगे । मृत
मंडल काँ आया मागै ॥ जत्र जमराज देत है सिच्छा । तुम जिमि विचरौ अपनी हूच्छा ॥५॥
तीनि लोक सोधाँ तुम जाई । करौ साधना साकल तहं पाई ॥ साधनि ते नहीं कीजै दीठी ।
देपि दूरि ते दीजै पीठी ॥ ६ ॥ मदिर वासे करैं रसोहें । तहां तिहारौ डेरा होई ॥ उपदौ
विरछु जहां जु मसानु । तहां जाइ लीजौ विश्रामु ॥३२॥ × सुन्दर नारि देहि जे त्यागि ।
धन में जाय लगवै आगि । रिनु मैटे सुप मिथ्या बोलैं जहां जाउ जय अंतन डोले ॥ ४ ॥ ×
× यहि कहि माँतु भय रवि नदु । उपजाँ दूतनि काँ आनदु ॥ ताते सावधान ई रहौ । छाँडौ
दोप धर्म पय लहौ ॥ ४३ ॥ धर्म राय की गीतिका, गाई तुलसीदास । संत चरन डर में
वसे, पावै हरि पुरवामु ॥ ४४ ॥ इहि विधि जमकी गीतिका, कहै सुनै चितु लाइ । कवि
कौविद लो ऊचरैं । सो नरु नरकन जाइ ॥ ४५ ॥ इति श्री धरमराय की गीता सपूर्ण ॥
शुभं मस्तु ॥ धर्मर्पण मस्तु संवतु १८९२ मित्ती मारग सुदी १ मंगलवार ॥ दमकत
देवीसौंघ जाट ॥

विषय—पृ० १ से पृ० १० तक—धर्मराय के दूतों के स्वरूप का वर्णन नर को यम
पुर लाने के विषय में दूतों के प्रश्न तथा धर्मराय के द्विपु ह्युप उत्तर ।

संख्या ४८४ श्रो. दोहावली, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर, बाँदा), कागज—
देगी प्राचीन पत्र—३५, आकार—१३ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण

(अनुष्टुप्)—१३०, पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, छिपिब्रह्म—सं० १७२७ = १७४० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय, प्रतापगढ़ (अबध) ।

आदि—श्री रामायणमः । अथ दोहा । गुमाई तुलसीदास कृत । राम नाम विसि
आनकी रूपन दाहिनी बोर । ध्यान सकल कल्पान मय मुर तरु तुलसी तोर ॥ १ ॥ सीता
कपन समेत प्रभु मोहत तुलसी दास । हरपत मुर बरपत सुमन सगुन मुर्मगळ बास ॥ २ ॥
५७ बरो बर विरप तर सीता कपन समेत । मोहत तुलसी दास प्रभु सकळ मुर्मगळ देत
॥ ३ ॥ शिव कूट सब दिन बसत प्रभु शिव सपन समेत । राम राम जप जाप कहि तुलसी
जमिदत देत ॥ ४ ॥ पयगदाह कळ पाह जपु राम नाम पर मास । सकळ मुर्मगळ सिद्धि
सब करतल तुलसीदास ॥ ५ ॥ राम नाम मनि दीप बध जीह देहरी हार । तुलसी भीतर
बाहिरहु श्री आपद्मि उजियार ॥ ६ ॥

श्रंत—इवन जनक प्रबंध ॥ ७०३ ॥ सोरठा । कलि पापंड प्रचार प्रबल पाब पाबर
पवित । उभय अपार राम नाम मुर सरि सकल ॥ ७०४ ॥ रामचंद्र सुप चंद्रमा बित
बभोर अब होइ ॥ ७०५ ॥ श्रीराम गुन गव मयन अल अक्षर पुष्कळति । मुकुटी सुतपु
सुपेत बर बिलसति तुलसी भाकि ॥ पुष्कराथ श्वाभ सकळ परमार्थ परिणाम । मुकुम
मिद्धि सब साहिब हि सुमिरत सीता राम ॥ ७०७ ॥ मति मय होहा दीप जहें उर बर
प्रगट प्रथमु । तहन मोहतम पत मत मि कलि कहु कीका बिलामु ॥ ७०८ ॥ इति श्री
गोसाई तुलसी दास कर होहा समाप्त, सुम मस्तु संवत् १७९७ ।

विषय—शक्ति वैराग्य प्रेम और मक्ति पक्ष के दोहे वर्णन ॥

संख्या ४८३ पी दोहावली, रचयिता—शे० तुलसीदास जी (राजापुर, बाँदा),
विराज—साधारण, पद्य—६२, आकार—१३ $\frac{१}{२}$ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच पंक्ति (मति पद्य)—९,
परिमाण (अनुष्टुप्)—६६८, लक्षित, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी छिपिब्रह्म—
सं० १८६२ = १८३५ ई० प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी समूह, बनारस ।

आदि—कि ॥ तुलसी हूँ श्री गुरुमी गने जानु श्री कालि ॥ १० ॥ राम राम
कबकहि बिनु परमार्थ की व्याम ॥ तुलसी चाहत चरन राहि बारिद बूंद अक्षयस ॥ ११ ॥
राम सर्वही राम राति राम चरन रति जाहि । तुलसी फळ जय जन्मकी विषी विषाहा
छाहि ॥ १२ ॥ राम नाम औराधिबी तुलसी बादिन जाह । करिकाई को पैरिभो जाने होत
सदाह ॥ १३ ॥ क्यसी मुख बसि लन लखै इति लख लखै प्रभाग । तुलसी जो फळ ली
मुकुम राम नाम अक्षराग ॥ १४ ॥ श्रीरह चारि अक्षराई नव पर बदि कर लीक । तुलसी
प्रभु चीन्हे बिबा ज्यौ पछी चरीक ॥ १५ ॥

श्रंत—जाति हीन अथ ब्रह्म महि मुक्ति कीन्ह अति नारि ॥ महामंद मन सुप
बहसि येये वृषुद्धि बिसारि ॥ ५९ ॥ तुलसी संपति के साथ परत विपति में चीन्ह ॥ सज्जन
बंभन कसन को विपति कर्सी कीन्ह ॥ ६० ॥ रोगवर्सी लन अश्लि जन तुलसी संग
कुमेग ॥ राम कृपा विधि पाकिई सब बिधि पाकन जोग ॥ ६१ ॥ शिव कपलै मकलै लखी
अहमय बड़ी बलाप ॥ तुलसी रक्षुवर जन सुपद नम तेहि निकट न जाय ॥ ६२ ॥ प्रकृत
पबक म मित्य ही मय मातंग मिहाय ॥ तुलसी जक बित विर बये नम अतम वर

साय ॥ ६२ ॥ इति श्री राम चरित दोहावली समाप्त ॥ समत १८९२ मिति वैसाप वदी
५ ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

संख्या ४८४ क्यू. दोहावली, रचयिता—गो० तुलसी दास जी, (राजापुर)
कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण
(अनुष्टुप्) ३१, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—उमाशकर दूबे, सैदपुर,
जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ दोहावली लिख्यते । दो० अपने २ कर थपें लिपि
पूजत तिय मीत । सुफल फलै मन कामना तुलसी प्रेम प्रतीत तुलसी जहां विवेक नहीं
तहां न कीजै वाश । सेत सेत सब एक हैं करर कपूर कपास । राम नाम आराधनो तुलसी
वृथा न जाय । लरि काई को पैरिवौ आगे होत सहाय ।

श्रंत—जव लगि शंकुस देह में तव लगि निर्मल देह । तुलसी अकुस वाहिरे सिर
पर डारत पेह । तुलसी काया बीज है मनसा भयो किसान । पाप पुन्य डोड बीज है बुवै
सु लुनै निदान । याक घवी आधी घड़ी आधी हू में आध । तुलसी सगत साधु की हरै
कोटि अपराध । स्वामी तें सेवक बड़ो जेहि निज धर्म समान । राम वाधि उत्तरे जलधि
कूट गये हनुमान स्वामी को सेवक घने सेवक को प्रभु एक । तुलसी दोमें सो बड़ो जाके
मन में टेक—

संख्या ४८४ आर. गीतावली, रचयिता—तुलसी दास जी, (राजापुर, बाँदा)
कागज—देशी, पत्र—३२४, आकार—९ $\frac{३}{४}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण
(अनुष्टुप्) १६४८५, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७६७ =
१७४० ई०, प्राप्तस्थान—महाराजा पुस्तकालय, प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः । श्री जानकी वल्लभो विजयते । नीलांबुज स्यामल
कौमलाग सीता समारो पित वाम भांग पानी महासपैक चारू चार्प नमामि रामं रघुवश
नार्य ॥ ११ ॥ राग करना घरी । आज सुदिन सुभ घरी सुहाई । रूप सील गुन धाम
राम नृप भवन प्रगट मै आई ॥ अति पुनित मधु मास लगन ग्रह वार जोग समुदाई ।
हरपवत चर अचर भूमि तरू तन रूह पुलकि जनाई । वरपहि विबुध निरुट कुसमावलि
नभ टुटभी बजाई । कौमिल्यादि मातु सन हरपित यह वरनि न जाई ॥ सुनि दसरथ
सुत जनम लियौ गव गुरु जन विप्र बोलाई ॥ वेद विदित करि कृपा परम सुचि आनंद
ठर न समाई ॥

अत—इति श्री राम मिता वल्य स्वामी तुलसी दास कृत भापा संपूर्ण समाप्त ।
सुभ मस्तु ॥ सवत १७०७ मिति जेष्ठ सुवादि वृतीता । वार सनिश्चर को पोथी लिखा
प्रतापगढ़ । दोहा । लिपित मियनी प्रान नाथ सुकथ जथा मति देपि । सुद्ध असुद्ध विचारि
पित पटित पढ़िहहिं विज्ञेय ॥

विषय—राम की कथा विविध रागों में वर्णन ॥

संख्या ४८४ यस्त. गीतावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—देशी,
पत्र—७०, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ५०, परिमाण (अनुष्टुप्) २२५०,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी लिपिकाळ—सं० १८९१, प्राप्तिस्थान—पं० संकट
प्रसाद अक्षयी, ग्राम—इटरा, तहसील—विसर्वा, डाकघर—इटरा, जिल्हा—भीठापुर, (अक्षय)।
आदि—अंत—३८३ धर के समान ।

पुरिका—इति श्री गीताबली तुलसी कृत सातो कांड समाप्त सवत १८९१ कुमार
बही ११ लिपितं मुम्बू पांडे मेरुकी बाळे ७

सख्या ४८४ टी इनुमानबाहुक, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, (राजापुर),
कागज—दोषी, पत्र—४४, आकार—१० × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण
(अनुच्छेद)—१५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी, लिपिकाळ—सं० १८९१ =
१८३९ ई, प्राप्तिस्थान—ग्र० ब्रह्मोमिह जमींदार, ग्राम—खानीपुर डाकघर—ताकाव बक्सी,
जिल्हा—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ बाहुक लिप्यते । कवित ७ कमल की पीठि चाकी
गौरव की गाई हात हाप केसो भाजन ज्यो जलनिधि जलमो ७ तातु धान बहन प्रमान को
हरग भवो महामीन आमीतमि मान को सुबल भो ७ कुंभ करन रावन पयोपुन वई धन भो
तुलसी प्रताप आके प्रबल बनल भो । भोपन कहत मेरो जनमान इनोमान सेखो त्रिकाळ
मात्रि छोके नही बाल म । बूत राम राप को सपूत पूत धपन को तु अंजनी की मन्दन के
प्रताप भूरी मान सो सिय सोके हरन दुरित हाप वरन शरन आये प्रबल छपन प्रिय प्राण
भो । दम मुख नुसह दक्षिण दरिबे को भयो प्रगत त्रिकोक छोके तुलसी विधान सों ।

अंत—सिन्धु धरन सिय सोके हरन रवि वरन बाल तनु उर विनाल मूर्ति कराल
कालहु के काळ यनु । गहन बदन निर्दहन कंक निह संक बंक मुल । सातु धान बरुवान मान
मह इमन पवन सुभ कहत है कर मेरिह बार की बार न कथा ३३९ ७ धरन सपक संकस
कोदि रवि तदन तैज धन उर विनाल मुजदंठ पंड नख नव बर जव तन । पग नयन भृगुटी
करान रमना इसतानन । कपि सकेस कर कस कंगु खल वल बक मानत । कहत तुलसी
दासु बसु जामु मन माकठ सुत मूर्ति हास सेबत सुकम मारज सुत मूर्ति विकट गुन
गुवन गमत सुमिरत जत तसमन सरकल संकट निकट ७ ४१ ३ इति श्री इनुमत गुनानुबाद
तुलसीदास कृत सम्पूर्ण समाप्त ७ सवत १८९८ वैशाख मासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां भीम
वासरे किरित मिहं पुस्तकै रामदीन महा पात्रेण ७

विषय—इनुमान जी की स्तुति ७

संख्या ४८४ यू इनुमान बाहुक, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (ठारी, बाँदा),
कागज—साधारण, पत्र—३४, आकार—१० × ३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परि
माण (अनुच्छेद)—२२५, कवित रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी, लिपिकाळ—सं०
१९१० = १८५३ ई० प्राप्तिस्थान—पं० रघुनंदन मिश्र मेई बालेइबर, जिल्हा—मागरी ।

सख्या ४८४ थी इनुमान बाहुक, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर , कागज—
दोषी पुराना, पत्र—१८, आकार—१० ३/४ × ३ ३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९ परिमाण
(अनुच्छेद)—१४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मागरी लिपिकाळ—सं० १९१९ =
१८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—मागवत कास, जिल्हा—मठापगड (अक्षय) ।

संख्या ४८४ डब्ल्यू हनुमान वदीमोचन, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—साधारण, पत्र—२१, आकार—५ X ३३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जगन्नाथ प्रसाद, ग्राम—अजगरा खुर्द, ढाकघर—अजगरा, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ दोहा ॥ वीर वरानु पवन सुत, जानत सकल जहान । धन्य धन्य अजनी तनय । सकट हरो हनुमान ॥ चांपाई ॥ मगल मूर्ति मारुत नदन । सकल अमंगल मूल निकंडन ॥ जै जै हनुमान अणगी । जै जै महावीर वजरगी ॥ २ ॥ जै कपीस जै पवन कुमार । जै जगवदन सील अगारा ॥ जै अटभुत अमल अधिकारी । अरि मरदन जै जै गिरधारी ॥ ३ ॥ अंजनि उदर जन्म तुम्ह लीन्हा । जै जै कार देवतन्ह क्रीन्हा ॥ वजी दुदभि गगन गभीरा । सुर मुनि हरखे असुरतन पीरा ॥ ४ ॥ काँपै सिन्धु गढ़ लंक सकाने । छूटि बदि देवतन जाने । आखि समूह निकट चलि आए । पवन तनै के पगु सिर नाए ॥ ५ ॥

अत—जैयति जैयति जै जै जग स्वामी । समर पुरुष तुम अतर जामी ॥ अजनि तनै नाम हनुमाना । सो तुलसी के कृपा निधाना ॥ दोहा ॥ जै कपीस सुग्रीव की । जै अगद हनुमान । राम लखन जै जानकी । सदा करहि कल्यान ॥ वधि मोचन नाम यह । भूम्य वार परमान । ध्यान धरै नर निश्चै, पावै पद निरवान ॥ जो यह पाठ पढ़ै नित, तुलसी कहय विचारि । परै न सकट ताहि तन, साखी हैं त्रिपुरारि ॥ इति श्री तुलसी दास जी कृत हनुमान वधि मोचन ॥ सम्पूर्णम् ॥

संख्या ४८४ एक्स. हनुमान चालीसा, रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१६, आकार—८ X ३३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, परिमाण (अनुष्टुप्) ६६, पूर्ण, रूप—साधारण नया, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई० प्राप्तिस्थान—ठा० रणधीर सिंह जर्माँदार, ग्राम—खानीपुर, ढाकघर—तालाव-वक्सी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ बुधि बला जानिकै । सुमिरौ तनै शभिर बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं पति सहित शरीर ॥ जयै हनुमान ग्यान गुन सागर । जयै कपि सिक्किट लोक उजागर ॥

अंत—दिग गणु जीव कहा समाई । हरि चले पछताऊ सोई ॥ तन जान कहि नाम वढ़ाई ॥ जाहि जपे भव फट कटे यमथशोई गुम देहु देखाई ॥ एहि जग जीवन जम धोरे के टिभ का करि तारा जराई । कह कहो कल उबेवरा । करे छल छदिम पुनि जम गावई ॥ रे मन चोर अधोर जपो । अव का करि है जसुज्जारि । शम जिवद अकह पुनिशा । ध्रुव केशधति पै है श्रम पथ पुनि लोक वडा । पुति श्री अस्तुति महाविर चरितु समापतम् ॥ जो प्रति देपी शो लिखी मम दोस न दीयते । संमत १६००२ ॥ मिति चैत्र शुदी ॥ १० ॥ गुरु वासरे ॥ लिखी राम जीवन पंडित छावणी नीमच की मधे ॥ पठनार्थ ईसरि परसाद दूवे । पलटण गायत्री कंपनी लैट । शुभ मस्तु ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

सख्या ४२४ घाई हनुमान बाहीरा, रचयिता—गुरुमी दास जी, (-राजापुर),
 कागज—दही पीछा, पत्र—८ आकार—७ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ७, परिमाण
 (अनुपुष्प) ३८, पूर्ण, रूप—मधीम, पद्य, छिपि—मागरी, प्राप्तिस्थान—स० बड़ीसिंह
 बहीरार, ग्राम—शानीपुर मंडळी डाकघर—तालाब बकसी, जिळा—रत्नगड ।

सख्या ४२४ जेष्ठ. हनुमान साठिक, रचयिता—गुरुमीदास जी, कागज—साधा
 रण पत्र—१४, आकार—६३ X ४३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुपुष्प)—
 ७३, पूर्ण, रूप—माधीम, पद्य, छिपि—मागरी कैथी मिश्रित, छिपिकाल—सं० १९०७ =
 १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—बाहिरिमाळक, ग्राम—नवाबाग, जिळा—प्रतापगड (भवप) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री श्री श्री हनुमान अर्चनी । श्री श्री महावीर बजरानी ॥
 श्री कपास श्री पवन कुमार । श्री जग बंधन सील भगारा ॥ श्री अर्घ्यांत भमरु जविकारी ।
 श्री मईम श्री श्री गिरधारी । अग्नि उदर जगम गुम सोमर । श्री श्री कार देवतन कीना ॥
 बड़ी बुद्धमी गगत गंभीरा । गिरा मुरा मे हरपित भमुरा ।

बाहू छा मुह निरुद चलि भाप । पवन तनप के पद् सिर नाप ॥ बार बार
 अस्तुति ताकर दया । अगमक गाम बरा हनुमाना ॥

अंत—यय कपीस सुधीव की, श्री अर्द्ध हनुमान ॥ राम सठिमन मानकी, सदा
 करई कन्याम ॥ १ ॥ वंदी मोचन नाम पृष्टि, भौमचार परमान । सो भर निहई सदाई,
 पावइ पद् गिरवान ॥ २ ॥ जो इह पूरन के पदइ गुरुमी कहे विचार । परइ म संकट ताहि
 तब, सुप्री होइ विपुारी ॥ ३ ॥ इति श्री हनुमान साठिक संपूर्णम् ॥ जेष्ठ कृष्ण दशम्यां गुरी
 संवत् १९०६ श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम श्री राम ॥

विषय—१० १ से १० १४ तक—हनुमान जन्म, उनकी गुणों सहित विपदाबली
 का वर्णन पंचम पुस्तक के पद्य-पाठक का फल ।

सख्या ४२४ ए. हनुमान शोभ, रचयिता—गुरुमीदासजी कागज—साधारण,
 पत्र—९, आकार—६३ X ४३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७ परिमाण (अनुपुष्प)—३२,
 पूर्ण रूप—प्राचीम, पद्य, छिपि—मागरी, प्राप्तिस्थान—प० गवाघर बाँधि, ग्राम—बाँधा,
 डाकघर—गडबारा, जिळा—प्रतापगड (भवप) ।

आदि—श्री राम जी सहाय ॥ श्री श्रीरानी लाल देव विनास तैज प्रभु जालें मुप
 हाळें ॥ श्रीन द्वाळें सदा म्दालें जन प्रन पाळें भरिसागें ॥ विद्याल स्वरूपें उदित अर्घ्य
 मरकट रूपें रत्नगें ॥ श्री श्री हनुमंत रघुवर संतें ज हनुमंत बजरंग ॥ १ ॥ श्री शरकट रूपें
 मिर सिद्धें टवि भरि पूरें बड पूर ॥ बह बिपे मिर गुणें मुरपन पुर पग पग पूरन बच कर
 ॥ वीराम प्रबध हरि विपु अर्थ रन वंगें श्री श्री हनुमंत रघुवर सन्तें श्री श्री हनुमंत बजरंग ॥ २ ॥

अंत—श्री श्री मनवीरें ज रमपीरें इरजन पीरें मुपदाता ॥ श्रीरानी भंदन बुह निरुद
 मुनिजन बंदन जग आता ॥ आदि सुदरें मुरमच मर्ब सुदतत मेरबं मित्रु मीगें ॥ भगत महिषें
 कदत भरार्थें गुम समरार्थें प्रति वीगें ॥ श्री श्री हनुमंत रघुवर संतें ज हनुमंत बजरंग ॥ ११ ॥
 मुत्र सेत संका मुर्दरान तदन तेज एत उन विनाल ॥ मुत्र दंड पदन बदन उरें बजू तन
 विगन मन मुहुटी विसाल ॥ रमनी तय आनन कवि मुर्दर करकविक गुर पन दूक बल

आननं । कहि तुलसीदास उर जासु वस माखत सुत मूरत विकृत तापमोक तिहूँ पुरस काँ सपनेहुँ नहीं आवत निरुत ॥ १ ॥

विषय—पृ० १ मे पृ० १२, तरु—हनुमान स्तोत्र ।

संख्या ४८४ वी.^१ जानकीमंगल, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—म० १८६० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवरतनसिंह, ग्राम—धौनगर, डाकवर—लक्ष्मीपुर, जिला—सीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अय जानकी मंगल लिप्यते प्रथम सुमिरि गुरुदेव गणेश मनाइये । शारद को सिर नाय राम गुग गाइये ॥ प्रभु गुग सिउ समान कौन वर्णन करै । जेमी जाकी बुद्धि तैमि दइय धरै ॥ तव बोले रिपि राज अवधपुर गाइये । राम भये अवतार जय हित लाइये ॥ करि सरजू अस्नान नृपति गृह आइये । बहु विधि पूजा करि सिंघामन घेठाइये ॥

अंत—रघुवंसी महाराज श्री दशरथ राय के । महा सुभट रणधीर दोऊ गुग लायके । नारी नर यों कहें ये दोऊ वय किशोर हैं ॥ शिव धनु कठिन कठोर कैसे का तोरिहें ॥ ये छवि श्यामल गौर हरपि निरपि कर लीजिये । वारै काम कोटि स्वरूप सुंदर नयन भरि भरि पीजिये ॥ अष्ट सौ मल कष्ट करिके धनु सभा मध्य आनियो । लागे हँ वड़े वड़े भूप जोधा धनुष काहु न तानियो ॥ कहत सिया सुन तात धनुष प्रणता जिन करौ ॥ नातरु तजिहौं प्राण के जेई वर मैं वरौं ॥ करुणा सागर राम जीय को जानिये । पीतावर कटि वाधि धनुष लै तानिये ॥ जय जय कार भई तिहु लोक भूप सवे मुरझाइये । श्री रामचंद्र सुप निरपि सिया ये सुमन माल पहिराइये ॥ सोहत सीताराम कचन मडप तरै । सिर मोने को मुकुट मखु मुक्ता गरे ॥ राजत अमल कपोल कि मुक्ता मोल के । सुंदर लोचन लोल कमल जनु भोर के । सुरग चूनरी निपट पीत पट छा रही । मानो अरुण घनश्याम चपलता है रही ॥ यह भूषण प्रति विंव राम छवि उर धरै । मानौ जसुना जल मध्य दीख दीपक जरै ॥ राम भुजा के निरुत सिया भुज यों लयै ॥ मरकत मणि के खभ मनो कचन कये ॥ राम भये तनु गौर सिया भई सावरी । साठर मो बुधिवत वधू भई वावरी ॥ राम भये घनश्याम सिया भई दामिनी । मुनि भणु चद्र चक्रोर चक्रत भई भामिनी ॥ पुष्पन वर्षत मेघ मुनि सब थर हरैं । होत जनकपुर व्याह राम भामरि करै ॥ राम सिया को ध्यान सदा शंकर करै । ब्रह्मा रूप निहार इद्र पूजा करै । सुर नर मुनि आनद सुमन वर्षा करै । ब्रह्मा आदि सब देव मुदित जय जय करै ॥ तुलसी सीताराम सहिन उर आनिये । राम भजन विनु जन्म सुमिध्या जानिये ॥ इति श्री जानकी मंगल श्री गो० तुलसी दास कृत संपूर्ण समाप्त. सवत् १८६० वि० ॥ राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—रामजन्म से उनके विवाह तक वर्णन ।

संख्या ४८४ सी.^१ जानकीमंगल, रचयिता—तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३,

पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, किरि—नागरी प्राप्तिस्थान—१० बन्नीप्रसाद टाकुर, ग्राम—
शिवागढ़, बाक्यर—हरगांव, जिंसा—सीतापुर ।

संख्या ४८४ डी^१ कवितावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजा-
पुर, बाँदा), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—८२, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५६, पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य किरि—नागरी, किरिपत्रक—सं० १७९० = १७४०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़, (अवध) ।

धादि—श्री गणेशायनमः ॥ यथाश्रुती० ॥ ज्योत्स्नामिराम प्रबन्धाम राम रूप
सिद्ध सची कई सची सो सुप्रेम पय पाली री । बाक्यक मुपाक नू के प्याक ही पिना क तो
रयो मंडली कर्मंडली प्रताप दाप वालीरी । जनको सिपको हमारो तेरो तुलसी को सब को
मावती है है मीनू कर्षा क्यकिरी ॥ क्यसिस्था कि कोपि परतोपितन वा पैरी राप रचरम श्री
बकाई कीरी जाकोरी ॥ १ ॥ पूब एपि रोचन कनक धार भरि मरि भारती सवारि बर
नारो कसी ग्यवती ॥ कइये जय माक करकई सो है जानकी के पहुँची री रापी श्री को
सदेही मिपावती । तुलसी मुदित जनक नगर जन बाकई सरोपा कगी सोभा रानी
पावती । मानहु बहोरी चारु कैठी निज निज श्रीइ पीवत बंध कि पिनि पसई म
कावती ॥ २ ॥

अंत—हुक्यों न चरिय गाह पुर को ॥ २४२ ॥ कइो हनुमान सोकाय राम राम
सो कृपा मिधान संकर सो सावधान सुनिये । हरप बिषय राम रोन गुन बोप मई विरंचि
सब हैपियत हुनिये । माय जीब काक के करम के सुमाय के करैषा राम बेनु कई साची
मनु गुनिये । तुमसे कहान होइ कइो सो बुझाइ मोहरि । होइर हो मीन ही बयो सो जाकि
सुनिये ॥ ३४३ ॥ इति श्री गुमाई तुलसी दाय कृत श्री राम चरित कवित समाप्त ॥ संवत्
१०९७ क्रिपित आषाढ मासे शुक्ल पक्षे चार मंगलको पोधी सीवारी मी जो देषा सो कृपा मम
बोयो न—नीयत मोक्षम जीबबस प्रगने मानिकपुर सुबे प्राय कृपा परतापगढ़ मह दिवैतिन
के बर यह पोधी कृपा वा रूप कुभरि सादेब पोधी क्य नाम तुलसी सागर जो बाँचे लाकी
पुन्य बटुठिक होइ । क्रिपित सिवनी मान मुत कया कया मति देपि । मुज असुज बिचारि
चित पंडित पइहि बिसपि ॥ १ ॥ श्री राम श्री राम श्री राम ।

विषय—कवियों मे राम चरित ॥

संख्या ४८४ ई^१ कवितावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजा-
पुर, बाँदा), कागज—देशी, पत्र—११ आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण
(अनुष्टुप्)—११३, पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य किरि—नागरी, प्राप्तिस्थान—उमाराकर,
सिद्धपुर, मिठा—गासीपुर ।

संख्या ४८४ एफ.^१ कवित उमापद्य, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, (राजा-
पुर, बाँदा), कागज—देशी, पत्र—१०४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६,
परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६०, पूर्व, रूप—प्राचीन, पद्य किरि—नागरी, किरिपत्रक—
सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—वरगदिशा बाबा, मुझम—हिंदोलने का नाम,
बाक्यर—मसुनक (अवध) ।

संख्या ४८४ जी^१ त्रिषिकाकाड रामायण, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजा-पुर, बाँदा), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—३०, आकार—११ × ५ $\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१६, पूर्ण, रूप—माधारण, पद्य, लिपि—लिपिकाल—सं० १६०५ = १८४८ ई०; प्राप्तिस्थान—ठा० चन्द्रिका बक्स मिह जर्मादार, नागरी (अष्टुक्), ग्राम—जानापुर, डाकघर—तालाब बक्की, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्रीः गणेशये नम ॥ मोरठ ॥ मुक्ति जन्म महि जान ग्यान पानि अघ हानि कर । जहँ वसि मसु भवानि सो कामी नेटये कसन ॥ १ ॥ जगत सफल मर वृन्द विषाम गरल जिन्ह पानि क्रिये । तेहि न भजमि मति मद को कृपाल शरर मरिस ॥ २ ॥ चोपट्टे ॥ जागे चले बहुरि रघुगये । रिपि मुक पर्यंत नियराये । तह रह सचिदा महिन सुप्रवा । अवत देपि अतुल बल सीवा ॥ अनि मर्मांत कह सुनु हनुमाना पुत्रप जुगुल बल रूप निधाना ॥ धरि बट रूप देषु तँ लाई कहे मुजान जिया सैन बुजाई ॥ पठना बालि होइ मन मैला । भर्जा तुरत तर्जा यह सैला ॥ विप्र रूपा धरि कपि तह गयेऊ । माथा नाइ पुलन अम भयेऊ ॥ को तुम श्यामल गौर सरौरा । उत्री रूपा किर्ग वन वीरा ॥ कठिन भूमि कोमल पद गामी । फवन हेतु वन विचाराहु स्वामी ॥

अंत—जामवत मै पृच्छहु तांही । उचित सिपापन दीजे मोही ॥ चेतना करहु तात तुम जाई । सीतहि देपि कहाँ सुधि आई ॥ येहि ते अधिक सिपावन नाहीं वेगि करु तुम धरि मन माही ॥ तव निज भुजबल राजिव नैना । कौतुक लागि संग कपि येना ॥ छद् ॥ कपि मपने सध सीधरि निशिचर राम सीतहि आनि हे । ब्रैलोक पावन सुजसु सुग मुनि नारदादि वपानिहँ । जो सुनत गावन कहत नमुझत परम पद नर पावई रघुवीर पद पायोज मनुकर दाम तुलसी गावही ॥ दोहा ॥ भये भेषज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर अह नारि । तिनके मरुल मनोरथ सिद्धि करहि त्रिपुरगि ॥ नील जलद तन स्याम, काम कोटि मोभा अधिक । सुनिये तानु गुण ग्राम जासु नाम अघ पर दाघक ॥ इति श्री राम चरित मानमे सकल कलि क्लृप विध्वंसने । विमल देशग्य भक्ति मपादीजी नाम चतुर्थ मोपान किष्किन्वा कांड समाप्त ॥ पूस माने सुकुल पक्षे ॥ मगर दीन । क्रिऊध कड ममपित ॥ सबहु १९०५ ॥ मन १२५६ ॥ राम लछिमन भरत शत्रोहन जानुकी सीधी करहि । राम राम

विषय—तुलसी कृत रामायण त्रिषिका काण्ड की कथा का चर्चन ।

संख्या ४८४ पत्र.^१ श्री कृष्ण गीतावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजा-पुर, बाँदा), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१९, आकार—९ $\frac{१}{२}$ × ६ $\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७९७ = १७४० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ श्री कृष्णायनम ॥ अथ श्रीकृष्ण चरित तुलसीदास कृत । राग विलवल । माता लै उद्यम गोविन्द सुप वात्वार निरपे । पुलकित तन आनंद घन छन छन मन मह हरपे । पृच्छत ती नुतरात बात मानहि जहु राई ॥ अति सै सुप जो तो तोहि मोहि कहु मसुझाई ॥ देपत ती वदन कमल मम आनंद होई । कहँ कौन नरन मोनु जानै

कोई कोई ॥ सुंदर सुप मोहि रपा उड़छा कति मारे ॥ मम समान पुस्य पुंज वाचक नहीं
 गेरे । मुनमी प्रमु प्रम बस्य मनुज रूप धारी बाळ कलि सोळा रस ब्रज चबहित करी ७१७

अंत—गह गह गगन ईदुमी वाजी । बरपि मुमन सुरगन गाबत जस हरप मगन
 मुनि मुजन समाजी । सानुस सगन संस विबजी घन मण सुप मलिन पार पछ पाजी ।
 कदम गाम उनि बनि कुचालि ककि परी यत्राइ कहु कहु गाजी ॥ प्रीति प्रतीति सुपद लनया
 की भसी मूरि मी ममरि न भाजी । कहि पारव सारपिहि सराइछ गाहू बहोरि गरीब मबाजी
 सिपिल सनह मुद्रित मम ही मम बसन बीच विच बपू बिराजी, समा सिंधु अइपति जप
 मय सनु शया प्रगट सिंधु भव मी आजी । ठग ठग जग साक के सब के समन कइस
 कुमात्र मु साजी । तुलसी कर्मन हाइ मुनि कीरति कुरन कृपाल भगति पभ राजी ॥ ६० ॥
 इति राम गीता बस्या तुलन चरित भवर गीता समाप्त शुभ मस्तु ॥ संवत् १७६७ वि०
 निरपित व्यापाइ मासे कृष्ण पक्षे चार मुकबार का पापी संधारी मी सिपा मिबनी क्यमस्य
 जयदीम दास कर नाती प्रातनाथ को सुठ लिखाया—जो इया सो सिपा मम होय न
 हीयने ॥ राम ॥

विषय—विभिन्न शायों में श्री कृष्ण चरित्र वर्णन ॥

रुचया ४२४ आई १ रामायण लंकाकांड, रचयिता—मुलसीहामजी, कागज—
 दसी, पत्र—१८, आकार—१० × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुप)—
 १८३०, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—स० १८४४, प्राक्षिन्वाक—४० दुर्गादीन जो
 होसित, ग्राम—सीकरी, डाकघर—लंबीर, जिन्ना—सीतापुर (मध्य) ।

आदि—होहा श्री रघुबीर प्रहाप ते सिंधु तर पापान । ते भति मंद जे राम लखि
 भजहि जाइ प्रमु आन ॥ श्री० ॥ पापि सेतु अति सुदिह बनावा हेपि कृपानिधि क मम
 भावा ॥ पछा कटक लुछ बानि न जाइ । गजहि मर्द भट समुदाई ॥ संत बंदि विग चरि
 १पुराई । पितबहि कृपाक सिंधु रघुदाई ॥ दैवत कई प्रमु कदमा कंश । प्रगट मप सब जलचर
 मन्दा ॥ नामा मकर बाक मय ब्याला । सठ जोवन तन परम बिसाला ॥ प्रसेद एक विपहि
 परि पही । एक म दर एक बराही ॥ प्रमुहि बिलोहहि रूहि न टारे मम हर्षत सब भये
 सुपारे ॥ निनक बाट न दपिय बारी मगन मप सब रूप निहारी ॥ चछा कटक कपु बानि
 न जाई । को कहि मक कपि दूख विपुछाई ॥ हो० ॥ सेत बंद महु भीर भति कपि मम
 पंय बदाहि । अरर जळ बरन ऊरर चरि चरि पारहि जाइ ॥

अंत—प्रमु हनुमंतहि कदा पुंछाई । परि बहू रूप भवष पुर जाई ॥ भरतहि कुमल
 इमारि मुनापहु । समाचार मी मुम चलि आपहु ॥ तुलन पवन सुठ गहनत भपहु । तब
 प्रमु भरहात्र पर गणउ ॥ नामा शिपि पुनि पूजा कीन्हा । अमुति के पुनि ध्यापिय कीन्हा ॥
 मुनि पद बंदि तुगुल कर जोरी । चरि विमान प्रमु चल पहोरी ॥ इहां निवाइ मुमठ प्रमु
 आवे । नाप बौध कहि-कोग बोकाउ ॥ सुरमरि नाधि जान जब भावा । उलस्या छट प्रमु
 आपसु थापा ॥ तब सीता पूजी सुरमरी । बहु मकार पुनि चरनन परी । कीन्हा ध्यमीम
 दापि तब गगा । सुन्दरि तप अहिबात अर्धया ॥ मुकन दुहा पाव परमातुस ॥ आप निन्द
 परम सुंदर कुन । प्रमुहि विभाकि मरित कीर्हा । परी चरन तन मुचि नहि तेही ॥ प्रीति

परम बिलोकि रघुराडे । हरिपि उटाहं लीन उर लाहं । छंद ॥ लिपि हृदय लगाह क्रपा नि
 भक्ति हित राम रमा पति वैशारि परम समीप पूसी कुसल कुमल छमा पती । भव कुसल
 पंकज बिलोकै जे चरन मंकर मेवने । सुपधाम पून काम राम नमामि राम रमापने मव
 अधम निपाठ सो जिमि भरत ज्यौं उर लाहयो मति मंड तुलसीदास यों प्रभु मोह वम
 राहयो यह राम रावन चरित पावन करहि मठ रत प्रद मदा । कामादि हर विज्ञान क
 सिउ मुनि गावहिं मुदा । टो० ॥ नसर यह रघुवीर के चरित जो कहहि सुजान ।
 विवेक विभूत अति तिनहिं देख भगवान । यह कलि काल मलाय नन मन करि ट्रेपु वि
 श्री रघुनायक नाम तजि नहि कुठ आन अधार ॥

इति श्री राम चरित्रे मानमे मकल कलि कलपु विध्वयने उमा महेश्वर मराटे
 वैराग्य संपादिना नाम पठ मां गोपान लकाकाड समाप्त सुभमस्तु १८४४ भाव मामे
 दादम्यां चद्रवामरे शुक्र पत्रे ।

त्रिपथ—लकाकाण्ड रामायण ।

संख्या ४८४ जे.^१ लकाकाड रामायण, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (रा
 वांदा), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१३२, आकार—१३ X ४३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ
 ९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिका
 सं० १९०० = १८४३ ई०, प्रासिस्थान—रा० चट्टिका बक्म मिह जी जर्मादार, प्रा
 खानीपुर, डकवर—तालाय बक्मी, जिला—रत्नऊ ।

संख्या ४८४ के.^१ लकाकाड, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजा
 कागज—देशी, पत्र—१००, आकार—९ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, पक्ति
 (अनुष्टुप्)—६७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—तिलंगान, प्रासिस्थान—टमारांकर, मै
 जिला—नाजीपुर ।

संख्या ८८४ प्ल.^१ रामशलाका, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, काग
 देशी, पत्र—२३, आकार—६ X ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्
 ५१७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६५५, लिपिका
 सं० १८५०, प्रासिस्थान—देवसिंह, ग्राम—छोटागाँव, जिला—मीतापुर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम शलाका लिप्यते ॥ अथ प्रथम स
 प्रथम सप्तक ॥ वानि विनायक अंबु रवि गुरु हर राम रमेन । सुमिरि करहु सब काज
 मगल देस विदेस ॥ गुरु सुर श्री सिंउर बदन शक्ति सुर मरि पुर गाह । सुमिरि
 मंगल मुदित होइहि सुकृत सहाय ॥ गिरा गौरि गुन गनपहर मंडुल मगल मूल । सु
 कर तल सिद्धि सब होइ ईश अनुपूल ॥ भरत भाइ रिति रिपुदमन गुरु गनेम दुष
 सुमिरत सुलभ सुधर्म फल विद्या विनय विचार ॥ सुर गुरु गुरु मिय राम गुरु राउ
 उर आनि । जो कुछ करिय सो होइ सुभ पुई सुमंगल पानि ॥ सुक सुमिरि गुरु
 गनपत पन हनुमान । करिय काज सुभमाज भल निपटहि नीक निदान ॥ तुलसी तुलसी
 मिय सुमिर लपन हनुमान कान विचारहु सो करहु दिन दिन वइ कल्याण ॥ अथ
 सर्ग की द्वितीय मसक ॥ दशरथ राज न ईतिमय नहिं दुप दुरित दुकाल । प्रमुदित

प्रमद सब सब सुप सदा सुकाक ॥ कसिसा पद माह मिर सुमिरि सुमिप्रा पाह । करिष
काज मंगल कुमाक बिधि हरि होनु सहाय ॥

अत—सपन राम सिय बसत बन विरह विहल पुर कोग समी सगुन कह कर्म बस
दुप सुप जोग विजोग ॥ तुलसी काह १साक तर निज कर मीचत सीप । कपी सुकल
मक मगुन सुम समी कहत कमनीय ॥ अय सप्तम सर्ग की महम सप्त ॥ सुदिन साधि
पोषी भेदित पुषि प्रमात स्पेम । सगुन बिचारब चाह मति साहर सुमति सुनम ॥ मुनि
गनि दिन गनि बार गनि दोहा वैपि बिचारि । वस कर्म करता बचन समी सगुन अनुहारि ॥
सगुन मह ससि नयन गुनि अथधि अथिक मयचान । होइ सुकल सुम जासु की प्रीति
प्रतीति प्रमान गुर गनस हर गौरि सिय राम छपन इनुमान । तुलसी साहर सुमिरि सब
सगुन बिचार बिधान ॥ इनुमान सामुज भरत राम सिय उर आनि छपन सुमिरि तुलसी
कहत सगुन बिचार बपान ॥ जो कहि काज अनुहारै सो दोहा बच होइ । सगुन समय
सब मंति फल कहत राम मत सोइ । गुन बिस्वास बिचित्र मनि सगुन मनोहर हार ।
तुलसी रघुबर भजत उर बिहसत बिमल बिचार ॥ इति राम सदाकायां सप्तम सर्ग की
सप्तम सप्तक समाप्त ७ ॥ शुभ मस्तु ॥ समय नाम विसाप शुकु पुँकार्दवां ११ चन्द्र
बासरे कबीर चन्द्रके सेपि अष्टोत्तर सप्त कबल फल मूँटि तीनि परिमाण भागु सप्त र्
जो रई ताके मक अनुमानि प्रथम सर्ग जो सैप रह पूजे सप्त होइ तीजे दोहा व्यापिय
सगुन बिचारब सोइ ॥ श्री राम चंद्राय नमः संबत १८१० ॥ विक्रमीय

विषय - शुभ अशुभ फल जानन की रीति का वर्णन ।

संख्या ४८४ एम १ राम सदाका, रचयिता—ग० तुलसीदास जी (राजापुर
बाँदा), कागज—देसी, पत्र—२६, आकार—१३ × ६३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५,
परिमाण (अनुच्छेद)—४७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, लिपि—ब्रज—
सं० १०९७ = १७४० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़ (अजमेर) ।

संख्या ४८४ एम १ राम सदाका सगुनावली, रचयिता—ग० तुलसीदास जी
(राजापुर बाँदा), कागज—देसी पोका गंध, पत्र—३७, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण
(अनुच्छेद)—१६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रा० बही
मिह जी कर्मीहार, ग्राम—आबीपुर, डाकघर—ताकाब बरसी, जिला—छत्तनगर ।

संख्या ४८४ ओ १ रामस्य लः माग अयोध्याकांड के अतिरिक्त रचयिता—तुलसी
दास जी, कागज—देसी, पत्र—३०, आकार—१० × ७ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५,
परिमाण (अनुच्छेद)—५३१३, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, छिपि—नागरी, लिपि—ब्रज—सं०
१८३६, प्राप्तिस्थान—उमासेकर लूके, सीरपुर, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री महावीर जी सहाय श्री पोषी बाबा कावड लिप्यते ।
जेही सुमिरे सीधी होइ गननाबक करी कर बदन करहु अनुग्रह सोइ बुधी रासी सुम गुन
बदल । मूक होइ बाबास वंगु कर्षी गिरिबर गहन जासु रुदन मुदपास इबहु मकल कलि
मक दहन कीक सरोहर स्वाम तरन अदन बारिज नयन करहु मो मम नाम सदा पीर सागर
सणन । कुंद ईहु सम देह उमारमन कदन सो मम उर । जाही दीन पर मेह कवहु कृपा

मरदन मगुन । वदौ गुरुपद कंज क्रिपा म्निनु नररूप हरि । महा मोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर । चौ० वदौ गुरु पद पदुम परागा । सुरसी सुवास सरग अनुरागा अमीअ सुरी मण चूरन चारु । समन सकल भव रज परवारु सुकृत संभुतन विपल विभूती । मज्जल मंगल मोद प्रसुती । जनमन मंजु सुकुर मल हरनी । कीणु तिलक गुन गन चम करनी श्री गुरुपद नव मनियन जोती । सुमिरत दीव्य दृष्टि हिय होती ।

अंत—पाई न गति केहि पतित पावन राम भजु सुनु सठ मना । गनिका भजामल शिष व्याधि गजादि पल तारे घना । आभिर जमन किरात रग सुपचादि जे अघरूप ते । कहि नाम वारकतेपि पावन होइ राम नमामि ते रघुवश भूपन चरित णहि नर सुनै जे सादर गावही । कलिमल मनोमल खोइ विनश्रम राम धाम सिधावही । सतपच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे । दासन अविद्या पय जनित विकार श्री रघुवर हरै । सुदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर करि प्रीति को सो एक राम अकाम प्रिअ निर्मान सम पद आन को । जा की कृपा लवलेस ते मति मद तुलसी दास हू । पाण्डु अचल विध्राम राम समान प्रभु कहु आन हूँ ।

दो०—मौ सम दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर अम विचारि रघुवशमनि हरहु विषय भव भार । कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि जिमि प्रिय दाम । तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागह श्री राम । इति श्री उत्तर काठ समाप्त सुभमस्तु मितौ का० वदी १४ रविवार स० १८९३ ।

विषय—राम चरित्र ।

संख्या ४=४०पी^१ रामायण, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—३१२, आकार—१० $\frac{३}{४}$ × ७ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपुप)—५६१६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१६ = १८५९ ई०, प्रास्थिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस ।

संख्या ४८४ क्यू^१ सगुन माला, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर, बांदा), कागज—देशी, पत्र—२१, आकार—१० × ४ इंच; पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुप)—५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५६ = १७९९ ई०, प्रास्थिस्थान—ठा० हनुमानसिंह, ग्राम—गोधनी, डाकघर—जतीपुर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री जानकी वल्लभो विजयते । दो० ॥ वानि विनायक अव रवि गुरु हनु रमा रमेस । सुमिरि काहु सुभ काज सब मंगल देस विदेस ॥ १ ॥ गुरु सरसइ सिंशुर वदन सति सुरसरि सुर गाइ ॥ सुमिरि चल्हु मन मुदित मन होइहि सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुर गणय हनु मंगल मंगल मूल । सुमिरत करतल सिद्धि सब होइ ईस अनुकूल ॥ ३ ॥ भरत भारती रिगु दवन गुरु गणेषु बुध वाह । सुमिरत सुलभ सुधरम फल विद्या विनय विचारु ॥ ४ ॥ सुर गुर गुर सियराम गन राउ गिरा उर आनि । जो कछु करिय सो होइ सुभ पुलहि सुमंगल पान ॥ ५ ॥ सुक्त सुमिरि गुरु सारदा गनपु लपन हनुमान । कहिय काजु सब साजु भल निपटहिं नीक निदानु ॥ ६ ॥

तुलसी तुलसी राम मिय सुमिरि सपन हनुमान ॥ अरु विचारेहु आ करहु दिन दिन बह
कल्पाम ॥ इति प्रथम सप्तम ॥

अंत—अथ पंचम सप्तम । उद्बस अक्षय नरेस विनु । देव दुषी नर नारि । राम
संग कुममात्र बह गत मह चाळि विचारि ॥ १ ॥ अथय प्रसेस अनंद बह सगुन सुनंगल
माळ । राम लिळक अथसर कहव सुप संतोप सुकाल ॥ २ ॥ राम राम बाधक विपुष कहव
सगुन सति भाठ देपि देव कृत होय दुप कीत्रिय दक्षित उपाव ॥ ३ ॥ मंद मंधरा मोह
बन कुटिल, कुंठई क्षीम । क्यानि विपति सब देव कृत समय सगुन कदि शीम ॥ ४ ॥ राम
बिरह हमराय बुधित कइत कइ कर्क काकु । कुमलय आय उपाय सब केवल करम विपाक ॥
कलन राम मिय बसत बन बिरह विकरु पुर लोम । समय सगुन कइ करम बस सुप सुप
जोग बिरोग ॥ तुलसी साइ रमाळ तरु नित्र कर सीचनि सीय । कुयी सक्क सब सगुन
सुम समय कहव कमबीय ॥ ७ ॥ अथ पष्टम सप्त ॥ सुदिन सांस पोमो नेवति पूषि प्रभात
सप्रेम । सगुन विचारव चारु मति सादर सत्य सनेम ॥ १ ॥ मुनि गनि दिव गनि धातु
गनि होहा देपि विचारि देस करम कता बचन सगुन समय बनुहारि ॥ २ ॥ सगुन सत्य
सति बयन अबधि अधिष्ठ मयबान । होइ सुकल सुम जसु जसि प्रीति प्रतीति प्रमान ॥
गुरु गनेस हनु गौरि सिय राम छपन हनुमान । तुलसी सादर सुमिरि सब सगुन विचारि
विधान ॥ ३ ॥ हनुमान मानुज भरत रामु सिय उर गानि । छयन सुमिरि तुलसी कइत
सगुन विचारक क्यानि ॥ ४ ॥ जो जेहि कजहि अनुहरइ सो होहा जब होई । सगुन समय
सब सत्य फल कहव राम गति जोई ॥ ५ ॥ गुन बिरचाम विविध मनि सगुन मयोहर
हार । तुलसी शुकुषर भगत उरबिलमल धिमल विचारु ॥

सर्ग	सप्तक	श्लोक
१।२।३।४।५।६।७।	१।२।३।४।५।६।७।	१।२।३।४।५।६।७।

कमल बीज सव जट गीत तीन मुष्टिकरि ठेव । मुनि गुनि दिन गुनि धातु गुनि
सगुन सत्य कदि देव ॥ इति श्री तुलसीदास कृती सगुन माझ्या सप्तमः सर्ग सुभ मस्तु ॥
संस्कृत १८५६ वि० आदिबन द्युक्त द्वादसी गुरु धामर डिगपट रामबकस कायस्त सोना
रामपुर मध्ये ॥

विषय—सगुन असगुन का विचार पर्यंत ॥

संबंध्या ४८४ आट. संकट मोचन, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (रामपुर
बोधा, कागाड—आधुनिक मीसा, पत्र—३ आकार—११×५२ इंच पंक्ति (मति पृष्ठ)—
१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण रूप—नबीम, पद्य, छिद्रि—आगरी, सिपिकास—
सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—टि० ब्रिटिका बक्स मिह जी, जर्मीदार ग्राम—
प्राणीपुर, बाकुर—साछाब बबमी, शिका—सम्बनक ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ कविध गर्पया संकट मोचन ॥ गुप्तार्ह तुलसी दास
कृत छिद्रियते ॥ याक समी रवि मङ्ग किया छय तीमहु म्हाक मबो अंधियारो । तदि ते जग
प्रास भई मबझे अति मंडर काहु ते जात न टारो । देवन भाय करी बिनती सब छानि
दिबो रवि कट निपारो । का नदि जानत है जगमें प्रभु मंडर मंचक साम तिहारो ॥ १ ॥

वालिकी त्रास कपीस वने गिरि जात महा प्रभु पय विचारो चौंकि महासुनि श्राप दयो तय चाहिय कौन विचार विचारो । कै टिज रूप लै आयो महो प्रभु सो तुम टामको मोक निवारो । को नहि जानत है जगमों प्रभु मंकठ मोचन नाम तिहारो ॥ २ ॥ अंगट के मग कीश अनेक गये सिय पोज कपीस अपारो । जीवत हानि वचो हमहूं सो विन सुद्धि लिये इनको पगु धारो । हेरि थके टट सिध सये तय लै मिय । सुद्धि मो प्राण उवारो । को नहि जानत है जगमें प्रभु सकट मोचन नाम तिहारो ॥ ३ ॥ रावन त्राम डई मिय को तव रक्षस सो कहि सोक निवारो । ताहि समैं हनुमान नहाप्रभु जाइ तहां रजनिश्चर मारो । चहत मिया असोक्ते आगि तवै दीन्ह सु सुद्रिक डारो । को नाहैं जानत है जगमो प्रभु संकट मोचन नाम तिहारो ॥ ४ ॥ सुत रावण जुद्ध अचानक कीन्ह सो नागकी फाय मर्द सिर डारो । श्री रघुनाथ समेत भयो दलमो अति ही अति सकट भारो । आनि पगोसहि को हनुमान सो बंधन छोडिके फास निवारो । को नहि जानत है जगमो प्रभु सकट मोचन नाम तिहारो ॥ ५ ॥ वान लगो डर लक्षण के पौन तनय सुत रावन मारो । लं गृह ईद सुपेन समेत सुपी गिरि द्रोण मो वीर उवारो ।

अत—आनि सजीवन हाय दई तव लक्षणके तुम प्राण उचारो । को नहि जानत है जगमो प्रभु सकट मोचन नाम तिहारो ॥ ६ ॥ वजु समेत जई महि रावन लै रघुनाथ पताल सिधारो । देविहि पूज भली विधि सों तव वानव दो प्रभु मत्र विचारो । जाइ महोड भयो तहँवाँ महिरावन सैन समेत सँधारो । को नहि जानत है जगमो प्रभु सकट मोचन नाम तिहारो ॥ ७ ॥ काज कियो बड लोगन के तुम वीर महा प्रभु देपि विचारो । कौन सो सकट मोहिं गरीब को जो तुम सों नहि जात है डारो । वेगि हरौ हनुमान महाप्रभु जो ऋषु मंकठ होइ हमारो । को नहि जानत है जगमों प्रभु संकट मोचन नाम तिहारो ॥ ८ ॥ इति श्री गुमाईं क्रत मङ्कट मोचन सामास सुम्भू भयात् अत्त्वनि माते सुक्क पक्षे तिथौ ५ संवत १९३४ ॥ पोथी लिपा वद्री सुपाठनार्थे राधा कृष्ण हरे शिव शिवा शिव राम जानुकी ॥

विषय—हनुमान की प्रशंसा ।

संख्या ४८४ एस. सच भक्त उपदेश, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजा-पुर वादा), कागज—आधुनिक, पत्र—४२, आकार—८ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन फटी, पय, लिपि—नागरी, लिपि-काल—सं० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तस्थान—ठा० वद्रीसिंह जर्मोदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाव बक्सरी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ भक्ति मुक्ति श्री पति सिया पति कछु अटक तह नाहि । पासहि तंदुक दास धर सो प्रभु देपि मुपाहि ॥ १ ॥ दुरा धर्त्वं महाराज वद इन्द्रादिक भय लेत से रघुवर निज दाम को चूक परे हँसि देत ॥ २ ॥ प्रथमै जुग्रह राम की या सिप मागु नवाहि । पुनि तुहि राम हि छाडित है जया अवल भागादि ॥ ३ ॥ साधु गुरु द्विज धेनु को सदा सेउ चित चाउ ॥ जधपि आंगनहूं दूसेतदपि मानु हरि भाऊ ॥ ४ ॥ क्रोध हिंसके लालची विखई निदक वेद । एसहु होइ तो सेइए मानस करिये न खेद ॥ ५ ॥ नर हरि वामन परसुधर कृष्ण बुद्ध इव जान ॥ तुलसी ऐसे भाव ते होत सदा

कल्पान ॥ १ ॥ इतिथन माया सो एक जन पद् होत म छाम । पद्म पाद् मकु मुक्ति गये
मिदिड न द्वीपक नाम ॥

अत—गाम पद्म सो सब पद्मो सकळ शास्त्र को वेद् ॥ नाम बिना मटकठ फिरे
पदि पदि चारिउ वेद् ॥ ५० ॥ इति श्री गुणार्ई तुलसीदास सत शुक उपदेश समाप्तम् ।
सैसाक मासे शुद्ध पञ्चे परबायी रबिबासरे संवत् १९३३ शिवा बन्नी जन श्री तुलसीदास
गुणार्ई कृत पोषी समाप्त भई ई ह्य पोषी श्री बराबरी श्रीरे मे ज्ञान नहीं है । श्री
रामचन्द्रायनमः ॥

विषय—तुलसीदास के अनुपदष्ट के ५० दोहे ॥

सखया ४८४ टी^१ सीतास्वयंवर, रचयिता—शो० तुलसीदास श्री, आगब—
साधारण, पत्र—१३, आकार—६३×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण
(अनुपदष्ट)—२८०, रूप—नवीन पद्य, शिपि—बागरी, प्राप्तिस्थान—महंत मोहनदास
वर्तमान—स्वामी पीतांबर श्याम, ग्राम—ओबा मऊ, आकषण—परिपाकी, त्रिका—प्रतापगढ़
(अवध) ।

आदि—श्री ज्ञानश्री बहुभाषणम् ॥ अथ सीतास्वयंवर किम्बते ॥ गुण गणपति
गिरजापति गौरी पति गिर पति । भारत खोप मुकवि मुमुति संत सरक मति ॥ ह्यन ज्ञानि
करि बिनाय सबहि सिर बाबक । सिय रघुबीर बिबाह यथा मति गायक ॥ सुम दिन रबिड
स्वयंवर मंगळ दायक । मुनत अचन हिय बनहि सीय रघुनायक ॥ वैम सुहावन पावन
वेद् बगानिप । भूमि तिरुड समति रहति त्रिभुवन जामिप ॥ ठई बसे नगर जनकपुर परम
उबागर । मिय रूपि जई प्रगथी सब सुप सागर ॥ बनक गाम तिहि नगर बसहि बर
नाहक । सब गुन जवधि न बूमर पदतर काहक ॥ भपड न होइहि है म जनक मम बर
पई । सीय मुता भइ जानु मकळ मंगळ मई ॥ गुप कपि कुंवरि सयानि बोळि गुण परिजन ।
करि मति हचेड स्वयंवर सिब घनु धरि पन ॥

अंत—मंगळ बिरप मंठक बिजुल ह्यि बूध अक्षत शोचनी । भर धारि भारति सजहि
सब सारंग सावक शोचनी ॥ मुबन मुद्रित कौशल्या मुमिता सकळ भूपति भागिनी । सबि
साज परिठन बली रामहि मत्त कुंवर गामिनी ॥ बंधुन समेत धारि मुत मातु मिहारही ।
कारहि बार भारती मुदिन उतारही ॥ कारहि निछापट छिन छिन मंगळ मुद् मरी । पून्ड
मुन्दिन देपि प्रेम पावन परी ॥ देत पावेड भाप चळी छै सारद जम " ।

विषय—(१) पृ० १ से पृ० २२ तक—मंगलाचरण प्रस्तावना, स्वयंवर शास्त्र
का सूत्रम पर्यंत विद्वामिध जपोष्या गमक, राम कर्मण्य श्री इत्यरथ जी से मँगलर आना,
साहकारि बध, अहिस्वोद्वार, राम जनकपुर गमन, जनक का राम परिचय राजाओं का
समारोह और उनमें अर्पि का म चयना । (२) पृ० २२ से पृ० ३३ तक—राम द्वारा
पनुप मंग, जनकपुर वासियों का ह्य प्रकृत, सीता का राम के गले में जपमाला डालना,
जनक का जवापना का भूचना देना, राजा इत्यरथ का बरात राजाकर जनकपुर आना । जन
करी इत्यादि का वर्णन । राम का विबाह तथा विविध वैवाहिक संबंधी कृति, शिपों का
प्रेममय शाली प्रदान तथा मन्वार्जन, अन्ध तीनों आताओं के विबाह । ज्योनारादि वर्णन ।

(३) पृ० ३४ से पृ० ३६ तक—वरात विदा के समय जनक का मोह और दोनों सम-धियों का प्रेम वर्णन । वरात विदा, मार्ग में परशुराम का मिलना और क्रोधित होना । राम के परितोष देने पर उनका सारंड देकर चला जाना और वरात का अवध प्रवेश । अवध उत्सव, वधूयुक्त पुत्रों को निहार कर रानियों का हर्ष ।

संख्या ४८४यू.^१ रामायण सुंदरकांड, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (गजापुर), कागज—देशी, पत्र—२९, आकार—९ $\frac{१}{२}$ × ६ $\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुपुट्प)—२७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—उमाशंकर द्वे सैदपुर, जिला—गाजीपुर ।

संख्या ४८४ वही.^१ उत्तरकांड रामायण, रचयिता—तुलसीदास जी (राजापुर), कागज—देशी प्राचीन, पत्र—१४१, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुपुट्प)—११९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२४ = १७६७ ई०, प्राप्तिस्थान—टा० चंद्रिका चक्रवर्ति जी जर्मीदार, ग्राम—खानीपुर, डाकघर—तालाचकवर्मा, जिला—लखनऊ ।

संख्या ४८४ डवल्यू^१ विजय दोहावली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राजापुर), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुपुट्प)—२००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३५ = १५७८ ई०, लिपिकाल—सं० १८४० = १७८३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामनाथ मिश्र, ग्राम—डमलिया, डाकघर—सदरपुर, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विजय दोहावली लिप्यन्ते दो० ॥ सौरह सौ पैंतीस को संवत है सुप रास । राम विजय दोहावली वरणी तुलसीदास ॥ विजय राम दोहावली जाने जे नर कोय । गुप्त अर्थ रामायणं प्रगट कीजिये सोइ ॥ दो० ॥ मूक होइ वाचाल पंगु चढ़े गिरिवर गहन ॥ दो० ॥ नहीं मेघ के कट गति नही अरुन के पाइ । वास करैं आकास में रविरथ चढ़िगे धार ॥ चौ० ॥ नाम रूप दुइ ईम उपाधी । अकथ अनादि सो समुझहिं साधी ॥ दो० ॥ नाम जपति शकर धके शेष न पायो पार । सब प्रकार सो अकथ है महिमा अगम अपार ॥ चौ० ॥ भाव कुभाव अनप आलस हू । राम जपति मगल दस दिसहू ॥ दो० ॥ भाव सहित सकर जप्यो कहि कुभाव मुनि वाल । कुभकरण आलस जप्यो अनप जप्यो दस माल ॥ छंद ॥ दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अय ॥ दो० ॥ अभय घरी सुर लोक में ब्रह्म लोक दुइ दंड । रघो भुवन में दिवस निसि व्याप्यो मदन प्रचंड ॥

अत—चौ० ॥ उलटा नाम जपत जग जाना । बालगीक भये ब्रह्म समाना ॥ दो० ॥ एक बोंस वध पाय यहि भरौ तुम्हारी देह । महि मारौ तौ ना मरै तुलसी चरण सनेह ॥ पाच भुजा कैलास को दूँ पठये रघुवीर । दम दस हृदय गयाल को पाच सिधु के तीर ॥ चोला छांड़्यो स्वय मनु देवन धन्यो उठाइ । जचहिं निपाते लक पति दसरथ प्रहारे आइ ॥ रही दरस की लालसा राम लपन सिय नेह । आये रण की भूमि में स्वयम् मनु की देह ॥ तुलसी कहत पुकारि के चित सुनि हित कर मान ॥ हेम दान गज दान ते बढ़ी दान सन-

मान ॥ तुलसी या संसार में पांच रतन हैं सार आशु मिठन अरु हरि भजन दया दान उप
 कार ॥ और परासी से छग सह स्नान नाम अपार । तुलदा तुलही से छग एक रकार मकर ॥
 तुलसी रा के बहुत ही निकरि रसि विहार । फिर आबन की कहत है दत मकार कियार ॥
 इति श्री गुमाई तुलसीदास कृत विजय दोहाबली संपूर्ण समाप्त छिपतं गानीराम मिश्र
 संवत् १८४० वि० पीप शुद्ध ११ बुधवारि दश पुनिके द्यूा वा दस छिपतं मया यदि शुद्ध
 शुद्ध नामम दापो न दीपते ॥ इति श्री विजय दोहाबली संपूर्ण छिछी ॥

विषय—तुलसीदास के रामायण के दशों चौपाइयों और छंदों के गूढ़ अर्थ ।

सख्या ४८१ पृष्ठ १ विजय दोहाबली, रचयिता—गो० तुलसीदास जी,
 कागज—दुती, पत्र—१२, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४०, पृष्ठ, रूप—
 प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकार—सं० १९३५, छपिकार—१७४१, प्राप्ति
 स्थान—सं० मन्त्रीकारु तिवारी गंगापुर, ग्राम—मिथिन, डाकघर—मिथिन, विजय—
 सीतापुर ।

सख्या ४-४ पाई १ विजय पत्रिका, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—
 दुती, पत्र—१९९, आकार—८ × ३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुपुत्र)—
 १८७५, रूप—प्राचीन हीमकरुणी, पद्य, लिपि—नागरी, छपिकार—सं० १०२० = १७०३
 ई०, प्राप्तिस्थान—सं० शिवरतन सिंह, ग्राम—धो नगर डाकघर—छत्तीसपुर, विजय—
 लीरी (कबच) ।

आदि—राग रामकली ॥ भागिय गिरिजा पति कामी ॥ आशु मवन अति मादिक
 दासी ॥ अचरु दानि दानि मुनि वीरे । सखत न हीन देखि कर जोरे । सुख मंपति मति
 सुगति सदाई । संक मुसम दीकर मेवझई ॥ गण के सरण भारत के हीनदे । निरति निहाक
 किमिपि मंद कीनदे ॥ तुलसी दास जाचक गुन गाबे बिमल मति रघुपति की पाये ॥

अर्थ—राम राय विनु रावर मार के दिनु सांघे स्वामी मरिठ सबगों धरौ । मुनि
 मुनि बिसये काऊ रेप हूमरा कांघे । देह जीय जोग के सला मृगा टांजन टांघे ॥ किये
 विचार सार कइकी जो मपि कनिह नंग लघु छलत बीचबिप कांघे ॥ विजय पत्रिका हीन की
 बाप अरही बांघा ॥ दिनु देरि तुलसी भिखा मा गुभाय सही करि बहुरि पूंठि अदि मांघा
 ॥ १ ॥ पवन मुख दिनु दवन भरत साह कलन हीन की निज निज अचरु मुनि किं बनि
 जाई दाम आम पूजि है न्याम गीन को ॥ राज द्वार मको सप कइ साधु समी बीन की ॥
 मुक्य मुख मगोप कृपा स्वारय परमारय गति भई गति बिहीन की ॥ समय तुम्हारि
 सुचारि तुलसी मनीन की ॥ प्रीति रीति नमुमाई प्रमत पाल कृपालदि परनिधि परापीन
 की ॥ साधु मच दधि भरत की कपि सरन करी है ॥ कलि कालु नाम नाम मा प्रतीति
 श्रीनि एक किंकर की निरही है ॥ सकल सभा मुनि ई उठे जाति रीति रही है कृपा परोब
 निवाज को दखत गरीब का सहमा पांइ गरी है ॥ विहमि राम कछा साथ है मुधि घोइ
 लही है मुदिग माय नाबन बनी तुलसी भनाब की परी रघुनाथ सही है ॥ इति कामकांड
 प्रभु पांच अयोप्या करि मन मोहे उदर बन्यो धारण्य लक्ष्य कियकिपा मा है सुंदर प्रीय
 मुगाविह संझ कहे गाये जेहि मा रावन आदि निपावर मभी ममाय मस्तक उत्तर कांड

हरि सहि विधि तुलसी दास न आदि अंत लौं देखिगु रामायण श्री राम तन ॥ इति श्री मद्रोसाई तुलसीदास कृत विनयपत्रिका सम्पूर्ण ममाप्तः संवत् १७६० वि० मार्ग शीर्ष तिथि पचम्याम लिखतं घृटे मुमही ॥ राम राम राम राम राम

विषय—रामचन्द्र जी व शररजी की स्तुति भजनो में ।

संख्या ४८४ जेड^१. विनय पत्रिका, रचयिता—तुलसीदास जी, कागज—देशी मोटा, पत्र—७८, आकार—१० × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) - १२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७०, रूप—प्राचीन, पद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८७६ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शालिग्राम टीक्षित, ग्राम—जामु, ढाकघर—मढोला, जिला—हरदोई,

संख्या ४८४ ए^२. विनय पत्रिका, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—४ × ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—टमाशकर सेठपुर, जिला—गाजीपुर ।

संख्या ४८४ बी.^३ विनय पत्रिका, रचयिता—गो० तुलसी दास जी (राजापुर, बांदा), कागज—देशी, पत्र—९६, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८७५, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०३ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—धैद्य रामभूषण, ग्राम—धनकौली, ढाकघर—मवई, जिला—उन्नाव (अवध) ।

संख्या ४८४ सी.^२. विनय पत्रिका, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—९६, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—०७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८, प्राप्तिस्थान—ठा० राम करन सिंह, ग्राम—ढकवा, ढाकघर—ओयल, जिला—खीरी, (अवध) ।

अंत—राजद्वार भलो सब कहै साउ समी चीन की । सुकृत सुजय साहेव कृपा स्वारथ परमारथ गति भई मति विहीन की समय सगहारि सुधारिवो तुलसी भलनि की प्रीति रीति समुझाड प्रणत पाल कृपालहि वरनि तियराधोन की ॥ २७९ ॥ मास्त मन रचि भरत की लपि लपन कही है ॥ कलि कालहु नाथ नाम सौं प्रतीति प्रीति एक किकर की निवही है ॥ सकल सभा सुनि लै उठी जानि रीति रही है कृपा परोव निवाज को देपत गरीव को सहसा वाह गही है ॥ विहंसि राम कछो सत्य है सुधि मोह लही है मुदित माथ नावत वनी तुलसी अनाथ की परी रघुनाथ सही है ॥ २८० ॥ इति वालकांड प्रभु पाय अयोध्या कटि मन मोहै उदर बन्यो आरन्य हृदय किंपिंधा मोहै ॥ सुंदर ग्रीव सुपार विंद लका कहि गाये । जेहि मो रावण आदि निशाचर सभी समाए । उत्तर भरतक कांड हरि सहि विधि तुलसीदास न आदि अंत लौं देखिगु रामायण श्री रामतन ॥ इति श्री मद्रोसाई तुलसीदास कृत विनय पत्रिका सम्पूर्णम् संवत् १९२८ शुभ स्थान राजवाट काशी ॥

विषय—श्री राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, अक्षुण्ण, हनुमान, महादेव गंगा, भादि को स्तुति और विषय ।

संख्या ४८४ बी २ वैष्णव संदीपिनी, रचयिता—गो० तुलसीदास जी (राठापुर) कागज—रेशी, पत्र—१४, आकार—८ X ४ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८ परिमाण (अनुष्टुप्)—८८, पूर्ण, पद्य, कियि—जागरी, रचनाकाळ—सं० १८८६ = १८९१ ई०, प्रासिद्धान्त—उमाशंकर दूबे सीदपुर, बिला—गाजीपुर ।

भादि—श्री गणेशायनमः—विराग संदीपनी लिप्यते । दो० राम नाम ममि वीप पर जीह बहरी द्वार । तुलसी बाहर मीठरी जो चाहे उज्जिभार । राम नाम दोसि आनुकी कपन दाहिनी बोर । ध्यान समय कस्यान मय तुलसी सुर तह तोर । तुलसी मिटे न मोह तम किये कोटि गुन गाम । इक्ष्णु कर्मक फूँडे बहरी दिन रवि कुल रविराम । सुगत कपल श्रुति नयन बिन रसबा बिन रम खेन—वासु भासिअ बिनु कहे परसठ बिना निकेत । सीरदा—अत्र अर्चैत अनाम अकळ रूप गुम रवि तजो । भाया पति सोइ राम दास हेत नरतन बरोठ । दो० तुलसी यह तगत कइ तपत सदा भे ताप सात होइ अब सात पावै राम प्रताप । तुलसी वंद पुरान मठ पुरण साक विचार । यह वैराग्य संदीपनी अकिल ज्ञान को सार ॥

अंत—अमळ अदाग सांति पदसार । सऊल कळसम करत प्रहार । तुलसी गदि धरै जो कोई । रहै अनन्दसिन्धु मई सोई । विविधि ताप संभव जताया । मिटे दोष तुल बुसह कस्या । पारमसांत सुख रहो साई । ताको ताप न भेरी भाई । तुलसी येमे सीतल संता । सदा बसत यहि भांति पकंता ॥ श्रीभूदे गरल सिता उर्पा भंग । कहा कौपक खेग भुमंग । दो० अति सीतल तिहि सुपद सऊल कामना हीन । तुलसी ताहि अती गनि सांति वृत्ति कब छीब । चौ० जो कोट कोप करै मुल देना । सगमुक ही गिरा सर पैना । तुलसी तह छेस रिस गहीं । सो सीतल किये जगमाही । दो० तुलसी ससंधीप नी बंड हीं तीन छोड जग माहिं सान्ठ समाज सुख और दूसरो भादि । अहां सांठ सतगुरु की हई । तहां श्लेष की जर जर गई । इति श्री वैराग्य संदीपनी महामोह विघ्नस तुलसीदास कृत चार छंद १३ श्रीमवांसरे सं० = १८८६ ॥

विषय—प्रथम प्रकाशः—राम नाम महिमा, संत सुभाष वर्नन । द्वितीय प्रकाश—संतों को महिमा वर्नन । तृतीय प्रकाशः—शान्ति भाव की पर्यला कम श्लेषादि विचरों का पूर भागना ।

संख्या ४८५ प. भरतविलाप, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—रेशी, पत्र—१६, आकार—१० X ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, कियि—कैथी जागरी मुहा मिथित, प्रासिद्धान्त—पं० साहिप्राम दीक्षित, ग्राम—जामू बाकबर—संटीला, बिला—हरदोई ।

भादि—अथ भरत मीलाप श्री गणेश जी सहाय । श्री सरोसती जी सहाय । श्री पोषी भरत बिलाप कवा ॥ चौ०ः—श्री राम बंदर के चरन मग्नवी । श्रेद्धि से भादि अन्त सब लखो ॥ गुरु गनेस सदा भव लखो । जीव प्रसाद अछर सुधि पावो ॥ नारद के ई

चरन मनावो । तव श्री राम अथ गुन गावो ॥ कहै विचित्र कथा विमत्तारा । कवि कोविद् मुनि लेख सुधारा ॥ जस आध्रम पसु वधे न मीता । धंटे दमरथ चानी सम जुगुता ॥ विधि वसी तहा सरवन दीस आवा । मात पिता कह तीरथ पराना ॥ अंधरीपी अपनी ही मोढ़ । कहहि पुत्र जल भीषा होई ॥ श्रीगा धोये मरो तुम सुतमाय । मरो अपराधी ऋषी तुम्हारा ॥ मोहिहो ऐगो क्रो विचारा । मरो अपराधी रीपे तोहारा ॥ पीआडु नीर रहै प्राण तोहारा । जस जानहु तर करहु विचारा ॥ पुत्र चाव जय मुनि के साप नृपति कह दीना । जो गति भई हमारी सुन वियोग जो कीन ।

अत—चो० वार वार समुद्रावे ग्युनाई । मो कह अपघ जो डीन पटाई । जय मोहि अवधहि डीन पटाइ तव हम रहये धरतीम माई । वारए वरप राम वन पठई ॥ तव लागि सुपु अथ नहि करई (२) पक आ पूजि अथ मन लाजा निम दिन पाँवा नावहि माया ॥ तीम दिन पाँवा नावहि माया । सुमिरि दटे रामहि रघुनाथा ॥ धन अथ जीवन जय माही । सब कोड कहा प्रीति अस आही ॥ कहै लोग मत्र प्रीतम जानी । ऐसी विधि अथर ह मन जानी ॥ अथ कवा तीनि लोकहि गाई । ताकर पाप तुरत छटि जाई ॥ अथ कया हव मत पर भाऊ । महा महा मुनि जे मन भाऊ ॥ दोहा—नीय दिन पूजहि पाँ आ राम लपन मन लाये । तुलसीदास सन मीत्र भक्ति करै मन लाये ।

श्री पोथी अथ विलाप सप्रग्न समापतः

विषय—प्रथम ने तृतीय दोहे तक श्रवण की कथा, उमका राजा दशरथ द्वारा तीर से मारा जाना और श्रवण के पिता का राजा दशरथ को श्राप देना तीसरे से पाचवें दोहे तक श्यामी ऋषि द्वारा राजा दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ करना पुत्रोत्पत्ति १६ वर्ष की अवस्था में राम का विश्वामित्र के साथ जाना, ताड़का वध इत्यादि । पांचवें से सातवें दोहे तक मथरा द्वारा कैकेयी का बुद्धि परिवर्तन और राम को वनव्राम देने का वर्णन ।

सातवें से नवम दोहे तक सुमित्रा का लक्ष्मण को रामचन्द्र के साथ वन जाने का उपदेश । सीता और लक्ष्मण के साथ राम को वन के लिये पयान । पुनः सुमत्र का उन्हें पहुंचाकर आना और राजा दशरथ से यह समाचार कहना । राजा दशरथ का प्राण त्याग । भरत का बुलवाया जाना । उनका नगरवासियों दशरथ तथा पिता माता रामचन्द्र आदि के विषय में समाचार पृष्ठना । रामचन्द्र के विना नगरवासियों की हीन दम्पा देग्न कर भरत का विलाप करते हुए राज भवन में प्रवेश करना । कैकेयी द्वारा सब समाचार सुनकर भरत का मूर्छित हो जाना और नाना प्रकार से विलाप करना और पुन कैकेयी को धिक्कारना । राजा दशरथ की दाह क्रिया, राम से मिलने के लिये भरत का सपरिवार वन को प्रस्थान । लक्ष्मण का दूरही से भूल उड़ती हुई देखना और धनुष वाण का संधान करना । भरत का समीप आना और रामचन्द्र से मिलाप ।

संख्या ४२५ वी सूर्य पुराण, रचयिता—तुलसीदास जी, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६ X ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७०, प्राप्तिस्थान—रा० शिवसिंह, ग्राम—विक्रमपुर, ढाकवर—ओयल, जिला—सीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सूर्य पुराण लिप्यत । सूर्य पुराण्य प्रारम्भा ॥ दो० ॥
 बंदी चरण इत्यथ चरि मक्ति प्रेम कवसीन महिमा अगम अपार है सो बहु ज्ञान प्रवीन ॥
 बंदी चरणन औरि करि श्री पति गौरि गणेश तुलसीदास भक्ति प्रेम से बर्णित कथा दिनेस
 ॥ २ ॥ श्री० ॥ सूर्य देवता सुमिरिं तोही । सुमिरत ज्ञान बुद्धि दे मोही ज्योति रूप आवित
 ब्रह्मज्ञाना । तैत्र प्रताप सु अग्नि समाप्य ॥ तुम आवित परमेश्वर स्वामी । अक्षय निरंजन
 अंतर जाती । बजिन जाहू जाति श्री धीका । धर्म सुरेश्वर परम सुसीका ॥ ज्योति कथा
 चहुं आर बिरासे । जगमग कालन कुंडल छत्र । गौरु वर्ण छवि ह्य असवारी । ज्ञान
 निधान धर्म वृत्त चारी । परम पुनोति अवित भविनासी । अजमु अभादि सकळ बट बासी ।
 जामु कथा मैं करीं बयाबा । मां पुष्ट्य है अग्नि ममाना ॥ महिमा अवित अगम अपारा ।
 सीनुं कांक ज्योति उजियारा ॥ दो० ॥ आवित कथा पुनीति है गांविं संशु सुजाय । तीन
 लोक छवि उदित है करहिं प्रताप बयाम ॥

अंत—अथ ऋत विधान लिप्यते ॥ दो० ॥ कार्तिक मास जो प्राणी रहई । तीन
 पत्र तुलसी बूक रहई । अगहन मास प्यान अ परई । शकडर चाटि के भोजन करई ॥
 पून माह जो प्राणी रहई । तीन वृत्त के भोजन करई ॥ माम मास के सुनहु विचारा
 तिल पढ़ी के करै अहारा ॥ प्यरुगुन मास जो यहि विधि रहई यहि पंढी के डिग
 हो रहई । वैश्र मास जो सुनहु विचारा । धृत गंधूय मरि करै अहारा ॥ वैसाप मास जो
 प्राणी रहई । अमिळ ताम चाटि सो रहई ॥ जेठ माम कर सुनहु विचारा । तीनि अंयक
 बस करै अहारा ॥ आसाढ़ माम जो प्राणी रहई । तीनि मिरच को भोजन करई ॥ साव्य
 माम पढ़ी अंबहारा कपिका सूत्र गंधूय अहारा ॥ भाषी मास जो यहि विधि रहई । गोबर
 पंडि के डिग हो रहई । कुंभार मास जो सुनहु विचारा । अंबन पंडि के करै अहारा ॥ इति
 सूर्य महात्म महा पुराणे ऋत महात्म्य समाप्तम् ॥ इति श्री सूर्य पुराण संपूर्णम समाप्तं
 लिप्यंत गंगाराम वैद्य पीतेपुर वासी संवत् १८०० दिन शुभ वासर भाद्रपद शुद्ध पक्ष ॥
 सीता राम श्री अथ ॥

विषय—सूर्य भगवान की कथा और ऋत का वर्णन ।

सप्त्या ४८५ स्त्री सूर्य पुण्य, रचयिता—तुलसीदास जी (राजापुर, वर्धा),
 अग्रज—प्राचीन इषी, पत्र—५०, अकार—७२ × ४ इंच, पत्रि (प्रति पृष्ठ)—८,
 परिमाण (अनुपुष्प)—३००, पूर्ण, रूप—प्राचीन पत्र, लिपि—नागरी, लिपिअक्षर—
 सं० १८०६-१८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—राजेश्वरप्रसाद, देवा जिंका—प्रतापगढ़,
 (मध्य) ।

आदि—श्री गणेशायनम बंदी चरण औरि कर ॥ श्री पति गौरि गणेश ॥ तुलसी
 दास करते मुक्त ॥ बरनी कथा दिनेस ॥ १ ॥ एक समी गिरिजा सहित । ममु रहे कैलाम ।
 अपका जर अनुताग हीट ॥ मुक्तन कथा परतास ॥ २ ॥ भाषी मबानी संकर हि पुत्रा प्रेम
 पीठई ॥ तुज चरीत जो कथा है ॥ मोहि कबहु समुसाह ॥ श्रीपाई ॥ धी सुज वैवता
 सुमिरिं ताहि ॥ सुमिरत प्यान बुद्धि दे मोही ॥ ज्योति मरुय आवित ब्रह्मज्ञान । तैत्र प्रताप
 छवी अग्नि समाप्य ॥ तुम आवित परमेश्वर स्वामी ॥ अक्षयनी रंजन अंतर जाती ॥

वरनी न जाइ जोती कै लीला ॥ धरम धुरधर परम सुसीला ॥ जोती कला चहु ओर
विराजै ॥ जग मग कान न कुडल साजै ॥ नील वरन छवी तुरंग सवारी । ग्यान निधान
धरम व्रत धारी ॥

अत—रोग सकल तन ते मिट्टी जाई ॥ तेज मान रवी प्रवसहि आई ॥ पुत्र पवोत्र
सप्रदाहि पाई ॥ सो वीसेप्यो कै सुनी अस गावै ॥ भागुवी भौंटीन दीन अधीकावै ॥ तापर
आदीत होइ सहाई ॥ सुर दुर्लभ जग वीवीधी भोग करी ॥ अंत अस्या सुजदेह धरी ॥
रांप्यी पुर वास ताहि कर होई ॥ रवी कर भगती जान नर मोई ॥ कह लागि कहाँ सुज
प्रसुताई ॥ सहस्रौ मुख से वरनी न जाई ॥ दोहा ॥ ऐह इतिहास पुनीत अती ॥ उमहि
वहेउ समुझाई ॥ वरत की नाम ही लीये । मो सुर लोकहि जाई ॥ इति श्री पद्म पुराने ॥
सुज महातमे सीव उमा सवाटे द्वादस मों अध्याय ॥ १२ ॥ सुज पुरान ममास संवत
१८७६ मिति माघ वदी ॥ १५ ॥ आमावस रोज अतवार जो देखा सो लीपा मम दोमो न
दीअते ॥ वसपत लाला सीउदीन कायस्थ का ॥

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम
६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ६

विषय—पद्म पुराणान्तर्गत सूर्य्य माहात्म्य की कथा और व्रत फल विधि आदि ॥

संख्या ४८५ डी. सूरज पुराण, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$,
पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य,
लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६२ = १८३५ ई०, प्राप्तिस्थान—रामप्रसाद मुराऊ,
ग्राम—पुरवाविश्रामदास, डाकघर—परियावाँ, जिला—प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—वंदी चरन उर धारि भक्ति प्रेम लवलीन । सहिमा अगम अपार है साहिव
ग्यान प्रवीन ॥ १ ॥ गनपति फनपति देवपति रवि ससि पवन कुमार । करौ मनोरथ सकल
तुम सहिमा अगम अपार ॥ २ ॥ सूरज देवता सुमिराँ तोहीं । सुमिरत ज्ञान बुद्धि टे मोही
॥ ३ ॥ जोति रूप अदित वलवाना । तेज प्रताप तुव अगिन समाना ॥३॥ तुम अदित पर-
मेश्वर स्वामी । अल्प निरजन अंतरजामी ॥ ५ ॥

अंत—नेम धर्म करि हँ बहु भांती । धर्म कथा हुइ है दिन राती ॥ विप्र जिवाइ
आयु जव जै हँ । निसि दिन नाम सूरज को लै हँ ॥ लछिमी घर घर लेइ अवतारा । धर्म
कथा हुइ है विस्तारा ॥ मिथ्या वचन न कोऊ भापै । निस दिन टेक सूरज पर रापै ॥
धर्म विचार सूरज जव करि हँ । द्वादस कला जोति विस्तरिहँ ॥ दो० :—द्वादस कला जो
उगि है । आवित जवहीं आइ । पूरव जन्म के पाप सब । कथा सुनत छै जाइ ॥ इति श्री
सूरज पुरान महात्मे द्वादशमोध्याय ॥ संपूरन समाप्त ॥ मिति मारग सुदी ५ मंगलवार
संवत १८९२ प्रति दैपी तैसी लिपी मम दोष न दीए ॥ करत न महातेजत्रिं पाप छिन्नं
करते परते परभोत रवि दरसन ॥

विषय—वांझ को पुत्र प्राप्ति कथा माहात्म्य । व्रत विधान पृथक् फल कथा का
विधान । परीक्षित की कन्या तथा नारद की कथा पंपासुर की कथा, सूर्य स्तुति ॥ कथा

प्रथम फल, भारत को सिद्धा, भारत का स्थाप मुक्ति होना । भारत का पत्र करना । कथा तथा प्रतापि फल ।

सूक्त्या ४२५ ईं सूय पुरान, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—दीप्ती प्राचीन गंधा, पत्र—२६, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपुष्टुर्)—२२३, पूर्ण, रूप—साधारण, पत्र, लिपि—आगरी, लिपिभ्रम—सं० १२०५=१८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—अ० बन्नीसिंह बन्नीदार, प्राम—खानीपुर, हाकर—शास्त्राच बन्नी, जिज्ञा—कृष्णनर ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री पोषी सूर्य पुरान को लिख्यते ॥ दोहा ॥ बंधी बरन जोर कर ॥ श्री पति गौरि यमो ॥ तुलसी दास कहते सुखसँ ॥ बर्य कथा दिनस ॥ १ ॥ बंधी बरन हृदय भरि ॥ भक्ति प्रेम सबछीन ॥ महिमा भगम अपार है । गोविंद ज्ञान प्रवीन ॥ २ ॥ एक समय गिरिजा सहित ॥ विष्णु रहे कैलास ॥ उपजा मन अनुराग हठ ॥ सूरज कथा पर गाऊ ॥ ३ ॥ आदि मन्वानी संकरहि ॥ पृच्छि प्रेम हटाई ॥ श्री सूरज प्रताप आ कथा है ॥ सो मोहि कहां बुझाई ॥ ४ ॥ श्री सूरज की महिमा संकर बरनै लीन ॥ काटि किम बुझाई कर कंचन बसिन हीन ॥ ५ ॥ बीपाई श्री सूरज देवता सुमिरीं होई । सुमिरित ज्ञान बुधि बे माहीं ॥ जोति मरूप आदित बखवान ॥ तेज प्रताप तुम अग्नि समान ॥ तुम आदिच परमेशुर स्वामी । अरुप निरंजन अंतर खामी ॥ बरनि न जाई जाति थी कीका । परम सुरंधर । परम शुसीध ॥

अंत—अब सुनि जमा कइो अस्थान् ॥ पाठ जोग पूजा कर जानू ॥ विविधि मदी या सरनू ठौरा ॥ बसिय मंदिर उत्तम नीरा । जपका पीपर बट तरगाबा । बरन करै रवि पाठ कइाबा ॥ रोग सकळ तन ते तब जाई । तेजु बाध रवि प्रबिसहि आई ॥ पुत्र पीत्र संपदा सो पावहि । साधि सेम कहि इवति सब गावहि ॥ माग्य विमव दिन दिन अधि क्यई । तापर आत्रिण रहहि सहाई ॥ मुर दुरछम जग विविधि भोग करि । अंत अबरया मुर न हैद धरि ॥ मुर पुर बान ताहि कर होई । रवि की भक्ति करै जो कोई ॥ दोहा ॥ आ यह कथा मन काइक हठ परै मठ क्यान ॥ जोई इच्छा करि पठै भर सोई पुरषी भगवान ॥ यहि प्रकर सिव जमा कहि बार बार ममुझाई । श्री श्री सीता राम कछि, दीन्ह कपाट छगाई ॥ इति श्री शूर्व महात्मै महा पुराणे सिव पारवती सम्बादे पूजा पाठ विधान नाम द्वादशो अध्याय ॥ १२ ॥ मिति जेष्ठ बदी ९ रविवासरै मन्वत् १२०५ क्रियापते श्री वैष्णु मित्र जी जोग हरि भक्ति भव लिपते श्री पंडित कैसब देव जो जोश हरिदास दासाय ॥—राम—राम ॥

विषय—सूर्य की कथा ॥

सूक्त्या ४२५ एक सूर्य पुठन, रचयिता—गो० तुलसीदास जी, कागज—साधा रज पत्र—४४ पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२, परिमाण (अनुपुष्टुर्)—२००, पूर्ण, रूप—मधीन पत्र, लिपि—आगरी, लिपिभ्रम—सं० १२१२=१८६२ ई० प्राप्तिस्थान—प० सिवराजन पोड, प्राम—मिठरी, हाकर—परिवादी, जिज्ञा—प्रतापगढ़ (अरुप) ।

सूक्त्या ४२५ जी सूर्य पुठन, रचयिता—तुलसीदास जी कागज—दीप्ती, पत्र—३३, आकार—१०×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुष्टुर्)—२४, पूर्ण,

रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—
शिवधारी लाल, ग्राम—ममरेजापुर, डाकघर—वेनीगंज, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ सूर्य पुराण लिख्यते । श्री गणेशायनमः । दो०—
वदि कंज पठ जोरि कर श्रीपति गौरि गणेश । तुलसीदास करते सुजय वरना कथा दिनेश ।
वंदो चणन हृद भरि प्रेम भक्ति मन लाई । महिमा अगम अपार है साहेव ज्ञान सिवाइ ।
२॥ सूर्य देवता सुमिरां तोही । स्मृति ज्ञान बुद्धि दे मोही । ज्योति स्वरूप भानु बलवाना ।
तेज प्रतापी अग्नि समाना । तुम आवित परमेश्वर स्वामी । अलख निरजन अंतरयामी ।
वरणि न जाइ ज्योति कै लीला । धर्म धुरंधर धर्म सुशीला । ज्योति सकल चहु ओर विराजै ।
जगमग कानन कुंडल छाजै । नील वरण वरहम असवारी ज्ञान निधान धर्म वृतधारी ॥

अत—जेठ मास की भाव विपाटी । तीनि अजुली जल अभ्यादी मास आसाइ वरत
कहं धरई । तीनि मिरिच आलवन करई सावन मास वरत रवि जी का । पाठ तीनि फल
है सबही का । भादौ मास अमित सुखदाई । भै अंजुलि गोमू तहिं खाई आश्विन मास वरत
शुभ आनै । फल कदली के तीनि वपानै कातिक मास वरत रवि करई । भै फल हृथ आनि
कै धरई । दो०—विधि यह वारह मास लगि । विधि विधान के लीन । रविपूजा विधि
व्रत सहित मुनि दुर्लभ सो दीन ॥

संख्या ४८५ पत्र सूर्य पुराण, रचयिता—गो० तुलसीदासजी, कागज—आधुनिक,
पत्र—८०, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५, परिमाण (अनुपट्टम्)—२५०,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४१ = १८८४ ई०, प्राप्ति-
स्थान—महाराजा पुस्तकालय प्रतापगढ़ (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सूर्य पुराण लिख्यते । दोहा । वदि कमलपठ जोरि
करि श्रीपति गौरि गणेश । तुलसी दाम करते सुयस वर्ण कथा दिनेश । वन्दो चरन हृदय
धरि प्रेम भक्ति मन लाय । महिमा अगम अपार है साहव राम सिवाय । चौपाई । सूर्य
देवता सुमिरां तोही । सुमिरत ज्ञान बुद्धि दे मोही ज्योति स्वरूप भानु बलवाना । तेज
प्रतापी अग्नि समाना । तुम आवित प्रमेश्वर स्वामी । अलख निरजन अतरयामी । वरणि
न जाइ जोति कै लीला ॥ धरम धुरंधर परम सुशीला जोति कला चहु ओर विराजै । जग
मग कानन कुंडल छाजै । नील वरण वर है अमवारी । ज्ञान निधान धर्म वृत धारी ॥

अत—सव्रत विचारि नित । सन्म सो प्रागटे आइ ॥ अथ जो कन्धु कहियो उमा ।
सो वर्णा हरपाय । इति श्री म० सू० निधान वर्णन नाम पुरु दशो अध्याय ॥ ११ ॥ चौ०
सो मुनि उमा हर्ष अति भई । माया मोह कथा सब गई ॥ धन्य धन्य सुन संकर स्वामी ।
कथा कह्यो हर्षित निज गामी ॥ जो कर जोरि पूजत है लोगा । करहि अनन्द मिलै सब
भोगा ॥ कथा और कष्ट कह्यो गोसाई । कराह अनन्द लोक सुखदाई ॥ इति सूर्य मा०
उमा महेश्वर सवादे द्वादशोऽध्याय ॥ १२ ॥ समाप्तम् । मिति मार्ग सीर्ष शुक्ल १४ शशि
चासरे सवत १९४१ हस्ताक्षर कुंज विहारी मिश्र ॥

संख्या ४८५, आदि—सूर्य पुराण भाषा, रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी
पीला, पत्र—१४, आकार—६ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपट्टम्)—

२४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, कियि—मागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कृपानारायण शुद्ध, ग्राम—मुंसीगंज कररा, डाकघर—मन्डीहाबाद, जिला—सतनामठ ।

संख्या ४८६, सगुन विद्यास, रचयिता—उदयनाथ (रत्तीली), कागज—देरी, पत्र—१६, आकार—१२ x ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्ट)—३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, कियि—मागरी, कियिकाल—सं० १९१९, प्राप्तिस्थान—मूलचंद्र तिवारी, ग्राम—सासर, डाकघर—बिसबां, जिला—सीतापुर (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सगुनावली लिप्यते ॥ बाहा ॥ अमरु सरोवर गुर चरन प्याहम सर्वं तत्रि काम । राम दाहिने होईं जेहिं नित प्रति हित जेहिं नाम ॥ श्री ॥ गुरु पद सुमिरहु गुरुकर जोरी । वेहु मनीषा क्यहुं निहोरी ॥ बिब गुरु मुक्ति होइ नही कईं सुखल बिचार कहहिं मुनि नाहू ॥ दोहा ॥ गुरु दयाळ हरि भक्त कृप कोम मोह तत्रि काम । जैसे गुरु नित पूजिये कहइ दिव्य सुरपाम ॥ जेहि क उर गुरु भक्ति पसारा । तिमहि ब दुर्लभ कृष् संसारा । जगत जननि गिरि जहिं सुमिरि बार बार सिर नाहू । रापहु प्रभु जनु जानि कहि जहिते मंसी बाह ॥

अंत—॥ अंत ॥ श्री कृष्ण भ्याम बुक्ति अमित भावस कळ दुःखनि के दन मे । गावत वेद महेश सुमिरर सेस नित कृति बंदन ॥ कृष्ण अवन कपाल रामत बंसिबरे अति सुदर । करि किंकर्ये वनमाल सोमित पीठ पर किइ सुदर ॥ मीर माक बुक्ति चिबुक राजति कंज सुप कर मोहन ॥ शुकुदी कुरिळ बन कंज सोचन नीळ वन तन सोमित ॥ प्रब मीठ केपि अमीठ कीन्हे अरेव नप हरि अंदर ॥ अम पंठ कीन्हेठ बसब की पकि लकपि में अति अघर ॥ पीठना पय पान करि गति विद्या त्रिभुवन मायक । देवकी मत कंस पंथ संत १ म परं बन्धी दायक ॥ लहित सो अति रघुन रामित कंज पद तुप संजर्न । उदयनाथ गार्थि प्रेम छन कस्तुपादि पळ दल पंथन ॥ ककर आदि उकर छहु बाहा अस्तुति छव । हरि रस कीरति गावहिं रीन परहिं मब फद ॥ इति श्री उदयनाथ कृते हरि चरित्र मास माराग चरित्र समाप्त सुममस्तु सुममूपाठ श्री संवत् १९१९ श्री राम श्री राम श्री राम ।

विषय—इंध विमब सगुनावली अंत कृष्ण श्री श्री महिमा ।

संख्या ४८७ श्री भगवद्गीता मापा, रचयिता—उदयनाथ दास, कागज—देरी पीठा, पत्र—१८, आकार—१२ x ९ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुपुष्ट)—११०५, पून, रूप—अर्थात् प्राचीन पद्य, कियि—मागरी कियिकाल—सं० १७७१ = १७१४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कृपानारायण शुद्ध, ग्राम—मुंसीगंज कररा डाकघर—मन्डीहा बाद, जिला—सतनामठ ।

आदि—सिद्धि श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री भगवद्गीता लिप्यते ॥ द्विरद अद्वय रद्वय एक दैव बुधि च्युह बुधि विधि लखोदर असरन कृपाम सुमिरन प्रतिष्ठ सिधि ॥ मनुप निकर सेकित कपाल मंथन मनुवि अथ ॥ परमानंद सुमते करत निर्मय गुंजारव ॥ अमिमत्त अल दातार प्रभु अपत नाम सुर अमुर वर ॥ गवरी शिव संभव बली गन नाहू वर लिप्यद्व ॥ १ ॥ इदु बुंद उज्जल बुद्ध वीणा मंहित कर कापी विमक विसाम प्रकास विरामन मूमवर ॥

आमन स्वेत मरोज दुरित जदता अपहारनि ॥ टेवी सुगदियता आनदित सुम जम कारनि ॥
हरि गुन गन वरनव रहं ॥ उदरराज जन की कृपा ब्रह्म सुता कोरति जुताहस चहिनी
करि कृपा ॥ २ ॥

अंत—सजय उवाच ॥ यह मैं वासुदेव अर्जुन कौ ॥ महत आन माया घत गुन कौ
॥ ७६ ॥ अति अद्भुत सवा दुखु नीकौ ॥ रोम प्रहर्षन भायो जीकौ ॥ व्याम प्रमाद सुन्यो
मनु दुन्यौ ॥ जोग परम पद सीजौ जुन्यो ॥ ७७ ॥ जोगा धीम कृशुन को कर्यौ ॥ मो मेरे
उर अंतर रघ्यौ ॥ वह हरि कौ अति अद्भुत रूप ॥ सुमिरि सुमिरि नृप परम अनूप ॥ ७८ ॥
विस्मय महाराजमो हियो ॥ हरपित रोम पुलकित न किर्यौ ॥ ताहि मरहारि मरहारि मरहापति
केद्रव अर्जुन की जु विमल मति ॥ ७९ ॥ रोम हर्ष मेरे तन होई ॥ वारंवार वंई ममिराही ॥
जहा कृशुन प्रभु जोगा धीम ॥ धनुष धन अर्जुन उर्वीण ॥ ८० ॥ तथा विभूति चिजै श्री
वसै ॥ यह विचार निजमो मति लये ॥ ८१ ॥ इति श्री भगवद्गीता सूपनिषसु ब्रह्म
विद्याया योग शास्त्रे श्री कृशुनार्जुन सवाटे उदरराज दासेन कृत्तभापाया चतुर्वर्नकर्म कथन नम्
अष्टादशोध्याय = १।१८ = शुभ ॥ सवत १७७१ शके १६३६ वर्षे प्रथम आपाद सुदि ४
शर्ना लिपितय भाव सिंह मिश्रेण ॥ शुभ भवता लेपक पाठकयो ॥ शुभं ॥

संख्या ४८८ अर्थात् रामायण टीका, रचयिता—उमादत्त, कागज—आधुनिक,
पत्र—५८०, आकार—१२ X ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—
१३६६०, पूर्ण, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ = १७७९ ई०,
प्रासिद्धान—प० शिवदुलारे वाजपेयी, ग्राम—भीमपुर, ढाकवर—नेमगाँव, जिला—
खीरी (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अध्यात्म रामायण लिप्यते ॥ सूत उवाच ॥
अप्रमेयेति नहीं जिसका प्रमाण हो सके अर्थात् इतना है अंसा जो मन मे न आ सके उसको
अप्रमेय कहते हैं अंसा जो तीन गुणों मे परे जो निर्मल ज्ञान अर्थात् माया रूप मल जिसमें
न होवे । अंसा जो शुद्ध ज्ञान वही है मूर्ति स्वरूप जिसका अं इसी मे मन और वाणी
इनसे दूर अर्थात् इनके विषय न हो सके अंसे जो दक्षिणा मूर्ति सदा शिव तिनके अर्थ मेरा
नमस्कार है इसका अभिप्राय यह है कि जो त्रिगुण पदार्थ है वही मन और वाणी का गोचर
हो सक्ता है सदा शिव तो ब्रह्मरूप होने से मन और वाणी इनके अगोचर है अथवा अप्रमेय
प्रमाण करने की अशक्य जो त्रय नाम माया जीव ईश्वर इनको अति क्रमण करने वाला जो
निर्मल ज्ञान शुद्ध ब्रह्म वही स्वरूप जिसका अंसे जो दक्षिणा मूर्ति सदा शिव तिनको
नमस्कार है अब सूत जी सौनकादि ऋषियों से कथा कहते हैं ॥ किसी समय में जोगाम्ब्यास
में तत्पर अंसे जो नारद जी मो जीवों के कल्याण की इच्छा करिके सब लोकों में विचरते
सत्य लोक में आते हुए सत्यलोक भी ब्रह्म लोक के अतरगत है ।

अत—यह भविष्यदर्थयुक्त अर्थात् होनेवाला जो उत्तर राम चरित्र तिम करके युक्त
आदि से लेके सपूर्ण अध्यात्म रामायण रूप राम चरित्र कहा तसको सुनके राम प्रसन्न होते
हैं ॥ अर्थात् सर्व व्यापक जो राम तिमको यह रामायण हम सुनाते हैं अंसे मन मे सकल्प

करके जो राम की प्रीति के लिये जो संपूर्ण रामायण को पाँचता उसके ऊपर राम प्रसन्न होते हैं । और श्री महादेव जी ने पार्वती के लिये कहा जो परम पुण्य का देनेवाला उचम काव्य अथवा रामायण तिलको भक्ति में जो सुनता है सो सैकड़ों जन्मों के पापों से छूट जाता है और जो अथवा रामायण को नित्य पढ़ता है अथवा जो कोई भक्ति करके सुनता है अथवा जो कोई सिलसला है तिसके ऊपर राम भक्ति प्रसन्न होकर सदा समीप वास करते हुए उसकी कृपा बिलाल करते हैं अर्थात् उस पुरुष को कभी कभी परित्याग नहीं करती । महादि देवों करके अस्तुति किया गया और मनुष्यों के मन को हरन वाला भैसा जो भक्ति उचम अथवा काव्य रामायण तिसका अन्त मुक्त जो पुरण नित्य पढ़ता है अथवा सुनता है सो एक बिच होके विलुके लोक को प्राप्त होता है ॥ इति श्री महाध्यात्म रामायण उभा महेस्वर संवाद उचर कहे श्री भद्र रविमयी गर्भज गुण तुमाराम सज्जु त्रिपटी उमादत्त कृती भाषा श्रीकृष्ण ब्रह्मा सर्गा समाप्ता ॥ श्री राम जी की छे ॥

विषय—आध्यात्म रामायण की कथा का वर्णन ।

संख्या ४-६ पृ. बाधमात्र, रचयिता—बहाब, कागज—साधरण पत्र—११, आकार—१६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुष्प)—३००, पूर्ण, रूप—नवीन पद्य लिपि—घारसी, छिपिकाल—१८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—०० बाहू राम विद्यतिया, ग्राम—सिरसागंज, जिला—सीकपुरी (यू० पी०) ।

आदि—या प्रतापक हकीकी ॥ बारह माँसा इजरात बहाब—बिसमिल्ला उस रह माने रहीम । सली बिलाल कइानी मैं सुनाई । कि बारह माँस विष विष क्यों रौबाई सुनत ही भौंभु भर भाये बयन में । जिसे बेदन बिरह की होय तब मैं ॥ माह अपाह अपाह अब सात्र के हल मुझसे मेरा । कई धनइपाम से की हल मेरा ॥ नककरे मेघ के वाँके गगन में । मदन की शेष काग मुझ बदन में ॥ उठी है रीज क्यारी सी क्यारी । क्यारी का नहीं पर मैं मुरारी ॥ नहीं त्रिपि हयाम बावर घेर आप । जो होते कंध भर लगते मुहाप ॥ गगन में मेघ क्यों छोड़े मित्राण । मकी मत्र-मय मे हाथी बसप ॥ × × × × जहा मैं दिख में उनके पास जाई । सली भौंभों से भौंभें मैं जगगई ॥ गिने माई कि वस या भीम के य । सत्रत ये बंध से तार से सब ये ॥ गली उजकी मैं पीरों से मुहाई । सली पछमें न उनके पाँप झाई ॥ नवीनों में भरे इतका कइौ या । कि पूरुँ उस गली प्यार जहाँ था ॥ पछपक भौंभ मेरी लुल गई री । ब देखा कुछ बहुत हैरान हुई री ॥ सलीरी भौंभ मुँसी फिर माई । उठी देला सली कौई न कौई ॥ नसीब अपना सली पावा मैं लुँटा । कि इतकों पर मुझे साईं न पूँजा ॥ मरीसा है मुझ साईं का अपन । दिन के तार से देला मैं सपने ॥ बही साईं मुझे पिठ से मिलाया । बही साईं मे पापों मे बचाया ॥ मरी बंधन होगा पीठ मेरा । लगा देगा नलीरी पार देवा ॥ कई बहाब सपि मारि बिरहन । का अग्ये पिठ के बिलुरी न जोहन ॥ तमाम शुद् । × × × बंधा मधुरा प्रसाद ब लारीन् दिजइरहम माह दिमन्यर सम् १८४८ ईस्वी । दुकिया हरकाम—पाप्त हर मुकाम बाँदा ॥

विषय—किसी विरहँगना की वारह माम की विरह वेदना का वर्णन । स्वप्न दर्शन आदि वर्णन ॥

संख्या ४८६ वी. वहाव का वारहमासा, रचयिता—वहाव, कागज—देशी, पत्र—
१६, आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१६=१८५९ ई०, प्राप्ति-
स्थान—पं० शिवरूढ तिवारी, ग्राम—वरगाटिया, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि-अंत—४८९ पृ के समान ।

पुष्पिका.—इति वहाव का वारहमासा समस्तः ॥ लिपित शिवदयाल कायथ महीना
सावन सुदी १० वार सत्रत् १९१६ वि०

विषय—एक विरहिनि ने १० महीने अपने पति के वियोग में व्यतीत किये उर्मी
की विरहव्यथा इसमें वर्णित है ।

संख्या ४८६ सी वहाव का वारहमासा, रचयिता—वहाव, कागज—देशी, पत्र—
१६, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८,
पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२७, प्राप्तिस्थान—
लाला दिलसुखराय, ग्राम—महोली, जिला—सीतापुर (अवध) ।

४८९ पृ के समान ।

पुष्पिका—इति श्री वहाव का वारहमासा ममाप्तम् लिखा मन्नुलाल ने मवत
१६२७ वि० महीना सावन सुदी १० वार सनीवार ॥ श्री राम श्री राम श्री राम ॥

संख्या ४६०. वल्लभरसिक वाहमी, रचयिता—वल्लभ रसिक, कागज—देशी, पत्र—१२,
आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६=१८३९ ई०,
प्राप्तिस्थान—राधा वल्लभ, ग्राम—खैराबाद, डारुवर—राजेपुर, जिला—उन्नाव
(अवध) ।

आदि—पानन सो आनन रचे हैं नैन काननि सों रूप रस पानन सो नेक न अघात
है ॥ पानन सों पानन एक मैं कह्यो न आन रहे मन की सिंहान पंच सर मरसात हैं ॥ वल्लभ
रसिक रीझ आनन मिलानन मैं तानन मैं हानन मैं दैन दरसात है ॥ भृकुटी कमानन
कटाक्ष नैन वानन चढे जुनेह साननि सान वेध जात है ॥ १ ॥ चली उठि पलिका ते अलिका
हूं भाति भली कटकिकि लटकिकि पिय पर अलसान की ॥ लाई लाई बदन मदन उपजाई लेत
ज्याइ लेति जियहि सुरनि सुर वानि की ॥ वल्लभ रसिक को विकार्यों की वानपरी वार परी
धारी तेहि सुर सुमकान की ॥ २ ॥

अत—तन थिर मान धरें मन थिर मान तान जूर कला गी सौ थिरमान को ॥
कुरती इजार लेत कुल तीनों कुल तीके अधिक राती सौ लपि भरत सुप मानको वल्लभ रसिक
बलि माया बलि मान करी बल माहि लपत भजा बलि मान मान को ॥ २१ ॥ पागन
के पंच मैं भाग सपेचन मैं लागि कटि धँचन मैं धैलि कटाव लह्यौ ॥ दुत्तही ईजार दुतही

आ- कुरती पी बलि क्या काम बल मह रथिक भक्ति बखो है ॥ बेस्ति क्या बन रांडा विरमा
 पी कुरती क रंग रस सचन तरन पूकि गया है ॥ जागे भानि देपि होठ बार्नि भानि बैठे
 सपी बार्नि बनि रहे किन्नी वाग बनि रखो है ॥ इति बहभरमिक बाह्मी संपूर्ण समाप्त
 संवत् १८९९ वि० वैश्व वशी वैशख ३

विषय—२२ कवित्त सर्वेषो मे शृंगार रस वर्जन ॥

संख्या ४६१ मरती महता, रचयिता—रमंत, कागज—बेसी, पत्र—१४,
 आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्ठुप्)—१०३, पूर्व, रूप—
 प्राचीन, पद्य, छिपि—नागरी, छिपि-काल—सं० १८७३, प्राक्षिम्पान—प० राम स्वरूप
 शुक्ल सुमानपुर, बतमान ग्राम—मरैया, बाकबर—बिसबा, जिला—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री राधा रमन जी सहाय ॥ अथ मरती महता लिख्यते ॥ गानपति को
 आया पाठ हरि भक्तम को जय गाऊं व उचम कुल गुजरातो । वे बीजागढ़ के बासी ।
 वे हरि ही हरि को धारी । जल सौं भस्मान करावैं वे पत्र बलि ही बजावैं । बाबर बंदन कर
 चावैं । निहई करि प्यान लगावैं व दाढ़े गास बजावैं । जब रीते है शिब रात्रा । कहीं कदा
 तिहारो काजा । जय बोल महाद्वज जी बानी । हम तम्हर मन की जानी । तुमसो
 मार्गी सो दिदिगे । तुमसो नहिं माहिं करेगे । हमें और कष्ट ना चाहिये श्री राधा कृष्ण
 बर्न ये । तुम बय माग्यो है मारी । भनि मरती बुद्धि तिहारी ॥ राग विंगळा समापिता ॥
 जाय पदुये गऊ खोक बुद्धा पन हरि जूने रहम रपाये हैं । गोपी रूप घन्वो गोपेस्वर मरती
 मन्ना बनाए हैं । वाजत ताल बुद्ध मधुर मुरली धुनि झामरिया प्रर काये हैं । जह पिय
 प्यारी निरत करत नित निरपि निरपि सुख पाये हैं । मभ मोहन हृया करि बोले शिबजी
 भक्त कहति छाये हैं ॥ ये सेबक हमरा कहिये है तुम शरणागत आवे हैं । मांगि मांगि
 मरती शक्तिपा जो तरे मन भाये हैं । हमें और कष्ट ना चाहिये विबकर रूप दिपाये हैं ॥
 मन मोहन हृया करि दीयो राग केदरो गाये हैं ॥

अंत—राग पत्रं । एकै निरही समपी की सा बी झीपत आई है ॥ टेक ॥ कपडे
 की हम बहिन तुम्हारी कपडे का लू आई । एक को मासू तारी पहिराई एक व साल
 उछाई ॥ १ ॥ हमरी बेर कूं मूखि गये तुम तेरी मति रीताई ॥ कहीं गयो बह मरती मेहता
 हमकूं बेद बगाई ॥ २ ॥ जाऊगी छाऊंगी उन सो मोहूं राम बुझाई है कोस भरे लीं
 जान न दऊं ता बाबा की जाई है ॥ ३ ॥ राग सोरठि ॥ लबक लू लीं छीं रदिये मरती
 मेहता दीरि दीरि ता कू हरति अछं एक बाठ मुनि जामाया बहुत सुटाई है तुमने हमको
 कहे कदा ॥ लनक ॥ १ ॥ तुमसो लीं मैं कष्ट न कहुंगी कहुंगी साबल साह पेक अय आंगी
 हूं की हम कूं दे के लू घर जा ॥ लनक ॥ २ ॥ मरती मेहता ताल बजाई होन छपी ऐ
 बरपा किन कदा पत्रतीन के बरये एक ही लियो ऐ उछाय ॥ लनक ॥ ३ ॥ भक्तनू के प्रमु
 कारण येही अय आवे हैं हरि राय कहत बर्मत मुनि प्रम पिपारे भले ही लियो छै निर
 भाय ॥ लनक छौट ॥ ४ ॥ जो मरती अंगार्य बलि बचंड यदुरि मदि आई । जो मरती को
 मुनि है ताका अति जम की पुनि है ताकी भक्ति दिन दिन बाहे ताके पाप रई नहिं छाये

भक्तन में प्रेम पिथारे सब मिलि सवते हैं न्यारे । तानी महिमां अगम अनंता चरनन की सरन वसंता ॥ इति श्री नरसी मेहता सम्पूर्णम् शुभ लिपतं व्रजलाल सं० १८७३ वि०

विषय—नरसी मेहता का शिवजी की उपासना, और राधाकृष्ण के दर्शन का शिव जी वरदान पाना । श्री कृष्ण जी का मेहता की पुत्री के विवाह के समय सहायता पहुँचाना ॥

संख्या ४६२ ए कार्तिक महात्म, रचयिता—वसंतराम (कोयला, अलीगढ़), कागज—देशी, पत्र—१४०, आकार—१० X ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२५ = १८६८ ई०, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवदुलारे, ग्राम—लखनपुर, डाकघर—मगरौर, जिला—उन्नाव (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कार्तिक महात्म लिप्यते ॥ दो० ॥ गुरु पद सीस नवाय के बंदों चरन गनेस चतुरानन सिर नाई के सुमिरौ चरन महेस ॥ सब देवतनि की करि विनय वदौ पद गोविंद । सब देवन के देव हैं पूरन परमानंद ॥ जिनके चरन सरोज से वही सुरसरी धार । सो मस्तक धारन करी शंभू जटा पसार ॥ जाके चरन प्रताप ते मूक होय वाचाल । पगुल गिरि लवन करै जासु कृपा ततकाल ॥ जासु कृपा करि अध को सब दरसै जग माहि । जासु कृपा करि रंक सिर छत्र फिरै छिन माहि ॥

अत—सवते अधिक कृष्ण को प्यारो । कलि के फल भय नामन हारो ॥ पुत्र पौत्र धनदायक जानौ कामधेनु समदाता भानौ ॥ कार्तिक अस्नान करै चितलाई । कहा करै वह तीरथ जाई ॥ सुनै सुनावै यह कथा जो जन धिर चित होई । फल प्राग वद्राकाश्रमहि तिनको प्रापति जोई ॥ इति श्रीपद्मपुराणे कार्तिक महात्मे कार्तिकेय ईश्वर सवादे वर्मंत कृत भापाया शालिग्राम शिला नहात्मे नाम त्रिंशोध्याय ॥ दो० ॥ जिन वसंत भापा विषे कीनी कथा प्रकास जिले अलीगढ़ कोल में ताको रहे निवास ॥ पदो न पुस्तक में कछु सुनो न वेद पुराण हरि गुरु चरन प्रताप ते कीनी कथा वपान ॥ पढ़े पढ़ावै यह कथा जो जन संत सुजान ॥ करौ निवारन चूक को दास आपनो जान ॥ एक सहस्र प्रथमहि गिनी नौ से अधिक प्रमान विश पंच ताते अधिक लीजै सबत जान ॥ शुक्र पक्ष वैसाख में पूर्ण शुभ तिथि जानि । करी समापत यह कथा सुमिरि चरन भगवान ॥ मिती प्रथम वैसाख वदी ९ संवत् १९२६ वि० लिपत मिश्र पूरन चंद पठनार्थे श्रीवसंत राय जी वासी कोल ॥ जै राम जी की ॥

विषय—प्रथम ईश्वर वदना आदि के कार्तिक महात्म वर्णन ॥

संख्या ४६२ बी. कार्तिक महात्म्य भाषा, रचयिता—वसंतराय (कोयला, अलीगढ़), कागज—देशी, पत्र—१४०, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२५ = १८६८, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बलदेव प्रसाद तिवारी, ग्राम—अंता, डाकघर—ककवन, जिला—कानपुर ।

संख्या ४६२ सी. वसंत राज शकुनावली, रचयिता—वसंतराज, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्) ६६,

पूर्व, दप—प्राधारण, पय, सिपि—भागी, विविहाल—सं० ११०५ = १८४८ ई०, प्राप्ति
स्वात—१० रामभरामे मिध, प्राम—वर्तीली दाइपर—केरी जिना—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वायुन वसत राज कृत लिप्यने ॥ दो० ॥ पापस
महात्मी सिद्धा श्रीर गिरादिग लघु । पय परि पहर विद्यान में आर्यई मने दप ॥ दो० ॥
शुभ अर अशुभ ममाम में निर्णय मगुन पयन । निरुप करिके जानिये संवत राज परि
मान ॥ पू० ई० ५० वा० म० ६० अ० दिग लघा रा० रा० २० च० म० बु० मु० शु० लेपु ॥

अत—भृगु घर निशि पति ओ पुनि दर्पा । युव विवाह लर्ष कपु लेग ॥ भृगुघर
भू मुन आयो हार् । ती मरुठ मिठि ई लघु कोई ॥ मार्गव ग्रह विपु मुठ को फंद । द्वाद
गम की ममा अर्षद ॥ भृगु ग्रह वाचरति अ लघु । हानि मनेछदि होई विनेपि ॥ हानि
उपद्रव कन्द दुन दधिर आगि द्वा चार । राहु के घर में अशुभ मव बचन पंदवन केर
॥ श्री० ॥ राहु होइ तह नार्ही मीव । जार्मी अति फीके ले श्रीअ ॥ दो० ॥ वा भमगुन
के हान ही अर अ जा अर् । निर्दर करिके जानिये कोई में वागु होई ॥ इति सकुन परीक्षा
वर्षत राज कृत संपूर्ण ममसा लिप्यने गिराघर पंडित श्रीराय पाम संवत् १९०५ वि० ॥

विदप—सकुन परीक्षा ॥

मयया ४६० श्री शकुनविषार, रचयिता—वर्षतरात्र, कागत्र—दुसी, पत्र—८,
आधार—८ x १ इंच, पन्धि (प्रति पृष्ठ)—३० परिमाण (अनुपुष्ट)—१२०,
रूप—प्राचीन, पय, सिपि—भागी, प्राप्तिस्थान—१० विष्णु भरामे, प्राम—बेनामऊ,
दाइपर—अर्षन, जिना—उषाव ।

संख्या ४६३ विधान प्रकाश, रचयिता—वागुदेव (कटित्री, बानपुर),
कागत्र—दुसी, पत्र—८०, आधार—८ x १ इंच, पन्धि (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण
(अनुपुष्ट)—९०८, पूर्ण, रूप—नवीन पय, सिपि—भागी, रचनास्थान—१० १९२७ =
१८७०, विविहाल—म० १९२७ = १९००, प्राप्तिस्थान—१० रामभद्र पुजारी, प्राम—
कलावषा, दाइपर—मउरार्ग, जिना— उषाव ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ इत्यादि ॥ वागुदेव मई जया मम धूपो नभेदत
मुमुक्षु वा दिनाय व विविन माय प्रपद्यते ॥ भूपद ॥ प्रथम पूज गौरीकाठ ॥ मद्रा पूर्ण
विरातु पूर्ण भार पूज श्रीभाल ॥ १ ॥ शक्ति पूर्ण मद्रा पूज श्री पूर्ण मद्राकाठ ॥ २ ॥
ईश पूज क्षेत्र पूर्ण श्री पूर्ण विसवराठ ॥ ३ ॥ गंगा पूज विपु पूर्ण भार पूर्ण मद्रा काठ
॥ ४ ॥ वागुदेव स्वामी मानु विपु पूर्ण राम पूर्ण मधवाठ ॥ ५ ॥

अंत—रिगु आर्ष वसंत विपु मद्राकाठ ॥ परिहा के वायु मगि लगन अल ॥ १ ॥
पूज पूर्ण मद्राकाठ तद मद्राकी अकन पुद्द पुद्द पुनि कारमी रपाम विना जनु मीव आय ॥ २ ॥
मान मोर पट्टे अम मचाव । अर श्री मुद्द काई टमुका पूरे मरु काठ ॥ ३ ॥ पूजा
गुहाव कामती पूरे मंद मंद वायु मगि काई कृष्ण जिना मम कुरत अल ॥ ४ ॥ वागुदेव
स्वामी विहाल अति भाषा कल न परं बर्ष । पर विन अछा ई कटर जमुया को काठ
॥ ५ ॥ रिगु आर्ष वसंत विन मद्राकाठ ॥ रंग गाराग ॥ अपुरम रम का गा मुनाई ॥ गार्

सब संतन के आगे भला गाऊ सब सतन के आगे अपने गुरु जो सीस नाऊं ॥ १ ॥ धिनकट
 धिनकट धिकट धिकट धा धा ताधिनरु ताधिनरु धिन सुनाऊ ॥ २ ॥ दिवां ताना दिवां
 ताना तादि अम दीं दीम दीम तादीम तादीम ताल सुनाऊ ॥ ३ ॥ छम छम छम छम छ
 ना ना ना ना ना ना ना कृष्ण नाच लखि दग रिखाऊ ॥ ४ ॥ वासुदेव स्वामी श्याम
 कमिया वजावै गावै देवि ललित छवि हिय वसाऊ । ५ । चतुरंग रस को गा सुनाऊं ॥
 वसंत पहिले अक सप्त धरि लीजे उपर नयन तासु करि दीजै रुद्र लिंगों तिहि ऊपर जाई
 तेहि पर चद्र वच बहु भाई यहि विधि अंक सीस सो लीजै मग्या तिन अक्रो की कीजै ॥
 गणना तिन अक्रों की होई सवत शुभ जानौ सय कोई ॥ इति श्री मान्य महाराज परम हंग्य
 परिव्रजकाचार्य श्री स्वामी वासुदेव आश्रम कृत विज्ञान प्रकाश सपूर्ण समाप्त ॥

विषय—श्री कृष्ण राधिका के पद ब्रह्म के पद आदि वर्णन ।

संख्या ४६४ आत्म प्रबोध, रचयिता—विकटेश स्वामी, कागज—माधारण,
 पत्र—२०, आकार—६३ × ४३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—
 ३५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य । लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठातुर रघुराज मिट्ट, ग्राम—
 मादर भामोन, ढाकवर—जिठवारा, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम. आत्म प्रबोध विस्वमारो । उधार लिख्यते श्लोक अध्याये
 पाप बाधा आप. निस पचते सिदानाम बोधाभिध्यर्थ तत्त्व इय कलत् क क यात मिय
 उवाच हे स्यामी जी आप कहाँ के परमात्म ॥ निह प्रपच है ॥ अरु वेहु प्रपच रूप है ।
 सो मोको याको वडो सदेह होत है ॥ या ससार में अनेक शास्त्र है ॥ ते अनेक मत हैं सो
 ऐसो जान कै ॥ मोको भ्रम होतु है ॥ किमि ॥ कै परमात्मा तौ निराकार हो ॥ सो कैसे
 एकते अनेक भयो और अनेक तै एक कैसे भयो । या को निराधार मोयो ॥ परम कपाल
 होइ कहियै ॥ आप ईश्वर ॥ सरवग्य है ॥ आपके अनुग्रह तै ॥ कोउ मदेह नहीं रहैगो ॥
 तासै हे देव ॥ अब मोसो परम दयाल होइकरि कहाँ ॥

अन—अध्यात्म आदि भूतिक आदि दैविक सो जो आत्मा को स्वरूप है ॥ अपने
 सरूप में मिलि कै आनंद करतु रहतु है । अरु अपुन कछु न्यारी वस्तु नाही है सो ऐसे कर
 जानौ सो आत्मा आनंद रूप कहावै ॥ अरु ऐसे आत्मा विवेक करै तै जो माया प्रपंच
 मरीच का ऐसे दिपात है ॥ सो ऐसे विचार करिकै सर्व-मिथ्या कर जानै लै अद्वैत ज्ञान
 उपजै सो ज्ञान उपजै तै अज्ञान जाय ॥ अज्ञान के गये तै अविवेक जाय । अहंकार के गये तै
 दोष जाय ॥ दोष गये तै राग जाय ॥ राग गये तै कर्म लूटै ॥ कर्म लूटै ते देह अभिमान जाय ॥
 देह अभिमान लूटै तै ज्ञान उपजै । ज्ञान तै अज्ञान लूटै सो अज्ञान कल्पित कर द्वैत भाव
 रहतु है सो अब निर्मल ज्ञान भयो तब आपुको ईश्वर को दोई एक कर जानत है ॥ X X X
 इति श्रीपियु श्रदेर्य चीकरते गौरी ईश्वर संवादे रचीमी विकटेश विरचि द्वितियौ वद्ग ॥२॥

विषय—पृ० १ से पृ०—१६ तक —आत्मा की सत्ता का रूप, माया अध्यात्म
 क्रिया, इन्द्रिया । अन्तःकरण चतुष्टया पंच डाला (पंची करण) पंच कापु । पद प्रकार
 के लक्षण । पद उर्माँ ते लक्षण । चौबीस तत्त्व । चौबीस तत्वों की उत्पत्ति । विराट के नाम ।
 पथम अध्याय ।

(२) पृ० १६ से पृ० ४० तक—विंश ब्रह्मांड उपम । पद् समाधि छद्मग । पंच महा भूत का कारण । तीन शरीर का सङ्गम सूक्ष्म शरीर । कारण शरीर । पंचतत्व के गुण । पंच महा भूत के रूप । तीनों गुणों का वर्तमान । पंच भूत से चतुष्टय कोषों की उत्पत्ति । विंश ब्रह्म की उपम का विचार । गमाचार वर्तन । पद् चक्र के नाम देवता आदि । पंच कोष का सङ्गम । आत्मा का स्वरूप । ज्ञान सिद्धि का उपाय । द्वितीयो अध्याय ॥

संख्या ४९५ गुणसुधा, रचयिता—विद्यारण्य स्वामी, कंगड - साधारण, पत्र—१९, आकार—८२ × ५२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुच्छेद)—१३७५, पूर्ण, रूप—पत्थिन, पद्य किरि—नागरी, रचनाकास—सं० १८२८ = १८४१ ई०, किरिकास—सं० १८९८ = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मन्त्रकास पुस्तकालय, मुरारपुर गया विद्या—गया ।

आदि—अथ इवाम सुधा ॥ काशी ॥ स्वाम चरित ई रग रगीको ॥ जामें पुरन झरक रहा ई पुरन पुरातन छिक छरीको ॥ १ ॥ राम चरित पाही संप्रन होत दिनहु दिन वस्त रमीको ॥ जैसे भारत से मुक्ति को रस सुकृत पकासत गरुन गमीको ॥ २ ॥

श्लोक—वसंत—मंगल नाम रूप जग मंगल गुन गन मंगल धाम । मंगल चरित मातुजग मंगल जग द्वित कारण पूरन काम ॥ मंगल श्री वसुदेव देवकी नन्द जसोदा गोकुल धाम । मंगल जमुना मंगल हू के मंगल सुन्दर स्वामा स्वाम ॥ ३०१ ॥ होरी—जादिन बरत बघाई, श्री राम जनम की । तादिन कृप्य सुधा पूरन भई, संतन की प्रमुठाई । × × इति विद्यारण्य धीर्यहृदा गुणसुधा ॥ संवत् १८२८ ॥

विषय— १) पृ० १ से पृ० १०८ तक—मंगलाचरण, जन्मीस्तव वर्णन, राधा का जन्मोत्सव, राधा मंगल नाम, प्लव्हा चरित, धर्म भोजन, नृगवर्त चरित, विद्वत् रूप वर्णन, नाम कल्प रामोदर चरित, बत्सामुर स्तिका, बक बध, अघामुर बध, वेनुक बध, कालिया-हमन, हाथानरु, प्रकृत्य चरित और इतर हीहित नारी चरित, गोवर्धन पारन, रस स्वीका, वृषभा मुर बध, ज्योम चरित, रजक चरित, धनुमंग, गजवध मुष्टिक बध, कंस बध, स्वाम उद्यापन प्रकर, प्लव्हा मेह, पूजा प्रकर, मोर मुकुटादि वर्णन, मुरली वर्णन, गो पारण, मुल कोमा गाय करा कर छीटो समय, कस्तुरी का वर्णन, गंगा सप्तमी, मुर्तिह जन्म वसंत का धाम धीप्मादि का धाम । २) पञ्चात्रा, हिंदोका । श्रुति पंचमी, बामन का अघतार । बरपा धाम (२) पृ० १०९ से पृ० तक—कस्तुरी का कुल और वर्णन, बघपा भक्ति माधव तथा उज्ज्व संवाद, गोविन्दा प्रेम वर्णन साधुओं के कस्तुरीदि वर्णन के साथ कुल भक्ति मय पद्, उज्ज्वान के संबंध से भक्ति के पद्, जीवन की असारता तथा भक्ति महत्त्व । दाक की इत्यादि के ध्यान का वर्णन ।

प्रथम निर्माण काक :—संवत् भाद्र^१ अह^२ अह^३ १८९८ ॥ बार परी कुच आई । रामस्वाम में भेद नहीं कष्टु अघि मति गुवन सिखाई ॥

प्रथम निर्माण कारण—श्री मत् करसि राज ने प्तारे मान बुद्धि अति पाई । बाहू राम प्रसन्न सिंह के बह सचि हेतु बनाई ॥

संख्या ४६६ विक्रम सतसई, रचयिता—महाराजा विक्रमाजीत त्रिजयवहादुर (चव्वांरी), कागज—साधारण, पत्र—१२०, आकार—२२ × १६, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—डेव नागरी ।

आदि—श्री गणेशाय श्री सर सुती नू श्री परम गुरुभे नमः टोहा—तो पद पकूज लाल कवि बंदत वागहिं वार । लंबोदर कीजे कृपा दीजे बुद्धि उदार ॥ १ ॥ बुद्धि सदन करिवर वदन दीजे बुधि वर सोड ॥ जाते विक्रम सत मईं टीकां नीकां होइ ॥ २ ॥ वदौ स्यामा स्याम के सुदर पद अर विंद । मुकत मपुर मधु लोभ जहें मुनि मन भुभत मलिंद ॥ ३ ॥ मन मुख तिनके होत ही सुग्य समूह सर साइ । तपन ताप तम के हरन राधा प्रिय के पाइ ॥ ४ ॥ अथ राज वंस वरनन ॥ गहिर वार सुभ वस यह हस वंस अवतंस ॥ जामे भूपति अवतरे महावीर प्रभु अय ॥ ५ ॥ उदित भये तेहि वंस मे उदयाजित महि पाल । ति जाहिर जग में करी जग जीत करवाल ॥ ६ ॥ सुत उदया जिन के भये प्रेम चद कुल चद । कृति चांठनी सौं किर्यां तिन गय जग सानंद ॥ ७ ॥

अंत—कठिन भूमि पांयन चलत मिय कन कोमल बाल मूल भटक मारग यहै गहें लाल की चाल ॥ ७२८ टोहा—लखी लाल कर नारंगी सुवर नंद सुमकाय । सुख मिलाय रजनी रही श्रगुरी हिये लगाइ ॥ ७२९ ॥ इति नायक वर्णन अय विनय ॥ टोहा ॥ जव जान्यौ या जीव कौं कहूं नहिं विश्राम सुन माके जग चार के तातें ताके राम ॥ ७३० ॥ जो कवि मति में आदरत साहित रीति विचार मो निहार लप करि कर्यौ निज के अनुमार ॥ ७३१ ॥ गनत सात मै में कहे होर परम प्रवीन । ताको नाम प्रसिद्ध जग स०***

विषय—नायिका भेट तथा ऋतुओं आदि का वर्णन ।

संख्या ४९७. उड्डोष, रचयिता—वीरभद्र, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६३ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, रूप—नवीन, गद्य । लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० श्यामचरण ज्योतिषी द्वारा पं० आदित्य प्रसाद पांडेय, ग्राम—करौंटिया, डाकघर—हलिया, जिला—मिर्जापुर ।

आदि—॥ ४ ॥ ॐ नमः ॥ एहि मंत्र करिकें नीके प्रकार ते जप करें तौं सर्व पाप दूरि होइ खेचर तुल्य होइ ॥ ५ ॥ ॐ हि हः ही नम एहि मंत्र का भक्ति पूर्वक जपे तौं बहु काल करिकें खेचर होइ ॥ ६ ॥ ॐ छकाली कर्प यामि छं छ फट् एहि मंत्र एक पद स्थित होइ के जपे जल विषे एक सौं आठ वार अजा के मास के वलि देइ १८ पुष्प समेत तो छ. महीना मा मनुष्य सिद्धि का प्राप्त होइ जो जो वस्तु का इच्छा कर्षना करे सोइ प्राप्त होइ अय मसे ॥ ७ ॥

अंत—कुंठ. एहि मंत्र ते सुकर का हाइ तेही का कीलक हजार मंत्र ते मंत्रित करिकें जेहि के ग्रीह मा लिलै तेहि का समस्त धन चोरी जाइ उचारि डारै फिरि मिलै ॥ एं ह्यो आकर्षय कुंठं एहि मंत्र ते सा कोट शी होर व्रीछ का काष्ठ का कालक दश अगुल एक हजार मंत्र ते मंत्रित करिकें जेहि के गृह विषे तेहि का सर्वे कार्थ्य सिद्धि होइ ॥ १८ ॥ हु फट् मंत्र जं दट ह. एहि मंत्र ते भेड़ा के हाइ का कीलक हजार मंत्र ते मंत्रित करिकें

आदि के ग्रह मध्य स्थिति तिथि का संयुक्त बस्तु जनेग्रह भाव ॥ १३ ॥ इति उद्गीरो विभजे
मृतीय परले स परिकरं समाप्त मगमत् ।

विषय—(१) पृ० १ स पृ० ३ तक—प्रथम परल । बहीकरणादिक मंत्र संग्रह ।
(२) पृ० ५ स पृ० ७ तक—द्वितीय परल । वसीकरण, मारणादि संधी मंत्र तथा
विधि, (३) पृ० ७ से पृ० १० तक—मृतीय परल । मंत्र तथा जननी विधियाँ ।

सप्तया ६३८ ए इतिमयी मंगल, रचयिता—विष्णुदास, कागज—पैसी, पत्र—
४०, आकार—६×३ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमात्र (अनुपुष्प)—५४०, पूर्ण,
रूप—गोचीन, पत्र, लिपि—नागरी, लिपिकार—सं० १९१६=१८५६ ई०, प्राप्तिसंयाम—
५० गमपत्र लाल रूबे ग्राम—गडवापुर, दारुवर—मिथिला, शिक्षा—सीतापुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा विष्णुदास कृत इतिमयी मंगल स्वरूपते ॥
श्री राग रागा ॥ शिष्य सिध मुञ्ज सकल विधि भव विधि के गुण ज्ञान ॥ गन मन सत पत
पाइपत गणरत को करि स्थान ॥ आठे चरन प्रताप ते तुल्य सुग परी भाई वीठ । ता नत्र
मुल्य मुल्य करण श्री सरन अबर वीठ ॥ पद् ॥ प्रथम ही गुरु के चरन बंधत गौरी पुत्र
मनाइये । आदि है विष्णु सुगाइ है ब्रह्मा संकर स्थान छगाइये ॥ देवी पूजमकर चर भागत
बुध भी ज्ञान विद्याइये ॥ ताते अति मुल्य होय श्री आनंद मंगल माइये ॥ गोरा छदमी
स्वरहा मरस्वति तिनझे सोस मनाइये । चंद्र सूर्य दाऊ गगा जमुना तिनको ते अति सुग
पाइये ॥ मंत महंत श्री पगरत से मन्त्रक तिलक बनाइये । विष्णुदास प्रभु प्रिया प्रीतम को
दकमनी मंगल बनाइये ॥ राग गौरी । गुन गाऊँ गोपाळ के चरन कमल चितसाप ॥ मन
इच्छा पूरण करो जो हरि होय सहाइ । भीषम नृप श्री काइली कृष्ण ब्रह्म अवतार त्रिनकी
अनुक्ति कहत हीं सुन स्वीको नर नार ॥ पद् ॥ तुष्ट मत मारी बारी सी बौराई भाषा कल्प
बनाई । रोम राम रसना जा पाऊँ महिमा बर्म नहि जाई ॥ नुर नर मुनि जन स्थान घरत है
गति किन्हू नहि पाई स्वीला जवरंपार प्रभु की करि सकै बनाई विष समान गुण गाऊ
स्थान के हुना करी जाहौराई । जा बौराई मरन पड़े है रावरो श्री रति जग में छाई । विष्णुदास
घन बीजन जनको प्रभु श्री म प्रीति लगगई ॥

अंत—रागनी पूर्वी रागा ॥ बिदा होय जनस्थान नू तिलक करे कुल मारि । तात
मात दकमन मिहरी चंद्रियन जोसु हारि ॥ मोहन दकमिन छ चके पडुये हारका जाय ।
मातिपन चंद्र पुताप के किषी जारती माय ॥ अथ बघाई बाज माई बसुदेव के दरबार ।
मन मोहन प्रभु बघाई कर जाये पुरी हारका राई अति आनंद मया है नगर में घर घर मंगल
गाई ॥ अंग व लन में भूषण पहिर शब मिळि करत समाज । बाजे बाजत कानन सुनियत
बाजत घन गधुं बाज ॥ नर मारिन मिलि देन बघाई । सुप उपजे दुप भाज । गजत गजत
मूर्धंग बाज रंग बसाबत भाज । विष्णुदास प्रभु की ऊपर कोटिक सम्मथ लाज । रागनी
पनामिरी होहा ॥ पूजत देवी अविद्या पूजन भीर गणेश चंद्र सूर्य दोऊ पूज के पूजन करत
महेस ॥ कुल की सति अनु आइके बडुन करी जन सेव । मोहन छदियन लन के भीर पूजी
कुल देव ॥ पद् ॥ मोहन महसन करत बिलाय । कमल मंदिर में केकि करत है भीर कोऊ
नहि पाम । दकमिन चरन मिराव पिय के पूजी मन की नाम ॥ जो आहा मा भवि पावो

हरि पत देवकी साथ । तुम विन और न कोऊ मेरो धरणि पताल अकाम ॥ निसदिन सुमिरन करत तिहारो सब पूरन परकाम । घट घट व्यापक अतर जामी त्रिसुवन स्वामी सब सुखदास । विष्णुदास रुकमन अपनाई । जनम जनम की दाम ॥ इति श्री रुकमनी मगल गोसाईं विष्णुदास कृत समाप्तं सन् १९१६ वि लिखा वल्लेव ने अपने पठनार्थ ॥

विषय—श्री कृष्ण और रुक्मिणी जी का व्याह ।

संख्या ४६८ धी. रुक्मिणीमगल, रचयिता—विष्णुदाम, कागज—टेम्पी, पत्र—२०, आकार—१२×८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६४०, प्राप्तस्थान—प० रामनाथ शुक्ल, ग्राम—सेदवा, ढाकुर—मिहोली, जिला—सीतापुर (अवध) ।

संख्या ४६९. सनेह लीला, रचयिता—विष्णुदाम, कागज—साधारण, पत्र—४, आकार—९ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६४ = १८०७ ई०, प्राप्तस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा बनारस ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ एकू समें ब्रज वाम की सुरति मई हरिण निज जन अपनो जनि के उधव लिये बुलाय १ श्री कृष्ण वचन असैं कई ऊधव तुम सुनि लेऊ नंद जसोदा आदि टे ब्रजहि जाय सुप टेऊ २ ब्रज वामी वल्लभ मदा मेर जीवन प्रान तिनकुं नाहिन विसरू मोहि नंद राम की आसा इ मे उनये अस कएओ आवगे रिपु जीति अव तोरे कसे बने पिता मात सुप्रीति ४ उधो वे ब्रज जोपिता उनके मेरो ध्यान तिनहि जाय उपदेश धो पूर्न सु ब्रह्म जान ५ वामे अपनो अगको कीट मुकुट पहराण सुरत कुमल माला दहूं अपनो वित वपाग ६ अरु अपनो रथ साजि के सूत स्वारथी दीन उधव चले प्रणाम करि उधव चले प्रणाम करि रथ आपे इन कीन ७

श्रत—तव उधो आये यहाँ श्री कृष्ण चंद के धाम, पाय लागि वदन कीयो । बोलत ले ले नाम १०६ ग्वाल वाल मव गोपिका. ब्रज के जीव अनन्य तुमही पाय लागन कहयो सुनो देव ब्रह्मन्य ११० नद जसोदा हेत की कहीये कहा वनाय. धै जाने कै तुम भलै: मो पै कहो न जाय १११ वे चित ते टारत नही स्याम राम की जोर मधि नामक मुरली ब्रह्मै: मूरलि मधुर किमोर ११२ अरु गोपिन के प्रेम की महिमा बछु अनत. भै पृथी पट मास लो तउन भायो श्रत ११३ देह ग्रह सब छामि की' करत रूप को ध्यान. वनको भजन विचारिये तो सब फीको ग्यान १४ संत भक्ति भूतल विषै: धै सब ब्रज की नारि चरण शरण रही सदा: मिथ्या जोग विचारि: ११५ उनके गुण निच गइये करि करि उत्तम प्रीति: भै नाहिन देपी कहूं ब्रज वासन की रीति ११६ तव हरि उधो सौं कहयो हूं जानत सब श्रंग हौं कवहु छाड्यो नही: वासिन्ह को मंग ११७ ब्रज तजि अनत न जाय हौं मेर तो या टेक. भूतल भार उतारि हो. धरि हो रूप अनक ११८ या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह जन मोहन जे गावही ते पावत नर देह १२० जो गाव सीप सुनै . भाव भक्ति करे हेत: रसिक राम पूण कृपा मन वाछित फल देत १२१ इनेह लिला मपूर्णम् ॥ संमत १८६४ पोस सुदी ५ गुरे ॥ लिपितं वेणी दतेन ग्राम वसी मध्ये लिखि: ।

विषय—श्री कृष्ण का उद्भव का नई समोदा तथा गावियों को ज्ञानोपदेश देन के द्विजे ब्रह्म भोजना । उद्भव का उद्देशे ज्ञानोपदेश देना, प्रमुत्तर में गावियों का कृष्ण के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को प्रकट करना । उद्भव का कृष्ण के निम्न छोटकर आना और ब्रह्म की अवस्था का वर्णन ॥

संख्या १०० वसंत विकास, रचयिता—विष्णुदत्त (नसरथपुर) कागज—साधारण, पत्र—१५, आकार—११ × ५ ३/४ इंच, पैकि (प्रति पृष्ठ)—७ परिमाण (अतुष्टु)—७९०, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, कवि—नागरी रचनाकार—सं० १८६६ = १८०१ ई०, लिपिकार—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्रासिस्थान—रामा जयवेश सिंह रास, कासुबेदार काकाकाकर त्रिका—प्रतापगढ़ (अजय) ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मंगला चरण ॥ मंगल काम पाप ताप को हरण तुल्य वारिद वरण पूजा धारण परण है । औरत वरम करे आरिद फल शरी यन को परन सो है सोम आभारन है ॥ तेम का तरन दानव वारि का झरण शुद्धि बुद्धि का धरण सिद्धि करण करण है । वारन बदन धन भारन भरन असरण के सरण श्री गणेश के चरण है ॥ १ ॥

अपर च दोहा—श्री रघुपति का पद्ममस बन्दी वारि वार । जगु कृपा से सिद्ध में बोहित भय पहार ॥ २ ॥ अम्बु—गुरु को पद बन्दन करी, इया सिद्धु भगवान । जाके सुमिरत ही मिटे, माया कृत अज्ञान ॥

अथ—पृ० ८१ से—उदत केतकी कुमुन रज चर्तुद्विदि पाद् समीर । जनु बसन्त नित्र सिचनि पर वारत जगु अर्षीर ॥ ४४ ॥ सरीपा अद्—पावक भन पक्षम का पृच्छति सूक सो केतकी पूय सोहापी । सोप विभिन्न बर्षबर मो मिर गंग तरंग सो कृष्ण बनानी ॥ घोर विभूति परागन की मन भोद सो भूंगन को गन गयो । ताक कपाल सुर्षग नित्री मुर्षग नित्री रितुराय के व्याज त शंकर आया ॥ ४५ ॥ (पृष्ठ १००) तीर समासक की अवली कता कुंज बितान कयी है । याग करे मुनि मित्र जहाँ महा उद्भव वारि की वार घरी है ॥ बन्दन मास मराठन के गन माहत्त कंठ कयी विष्णवी है । ताही को उम्म बड़ो त्रिके उर गंग की मूर्ति मंजु बयी है ॥ ४५ ॥ (पृष्ठ १०२) आरिदु केर पद विधि मो त्यों पुराण अट्टरह का मित गाथी । मुक्ति के काम पुष्य पहार हकारन बर्य समाधि लागाथी ॥ कंचन दान मुमेर समान बड़ी मत्त संगति में चित कथि । हाथ उटाय कर्दी सब सो तबहु रघुनाथ को भेद न पाये ॥ (पृ० १०५-१०६) यद्यपि विभिन्न उपाय, बंद पुराणक कही । मौर मत्त टहराय । राम नाम पद मुक्ति पर । इति श्री बसन्त बिलामे महाकाव्ये परिहार वंशावर्तन श्री सरनाम सिंह कृता शान्त रस बर्णनो नाम अतुर्प विसाम ॥ ४ ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ३४ तक—प्रथम बिलाम प्रस्ताविक बर्णन । मंगला चरण, देश तीय कथन—मकर इत को मुक्त मनि, मध्य देश अमिराम । तीरय राज प्रयाग तर्द सङ्ग मुर्मगल धाम ॥ तीर्थराज बर्णन—जमेश्वर-रूपक अथ, अट्टपर की वि विता सिध बंजर निरागत सबिध विबक-बिराग, याग संपन भट गाजन ॥ बन्दी विमल पुराय, हार वरिद मुनि वारी । भस पुरी अमिराम, मदा जाडी निष वारी ॥ धर्माधिहार

आचार सुत, मिहामन पट कूल भनि । इन्द्राटि टेव भृपित मभा, जय प्रयाग भूपाल मनि ॥
परिगन कथन.—परिगन सुभग सिक्कन्दरा, जहा धर्म की रीति पडिन मूर पतिव्रता, धनिक
परस्पर प्रोति ॥

ग्राम कथन—सुरमरि उत्तर भाग में नगरथपुत्र शुभ ग्राम । चारि वर्ण आश्रम
जहां, विलम्बत आशैं जाम ॥ वन उपजत नाना विहंग, बहु विधि करत विलाम । विमल
सरोवर में कमल, फूलि रहे चहुे पास ॥

वश वर्णन—खेरगाह भूपति जहा तेगमाह परिहार । जो अग्रंत भुज दट में धरे-
धरणि को भार ॥ ताको पुत्र प्रमिद्ध जग, इन्द्रजीत नृपरी । याहि त्रिलोकत ममर में,
रिपुगण धरत न धीर ॥ ताको सुत अह्लाढ नृप, महावीर मिरताज । ताको दान कृपाण
जस, वर्णत सुकवि समाज ॥ तासु कुमार उदार मति, जेठो नृप सरनाम । लडुरो श्री अभि-
राम जू, शील सिंधु बलधाम ॥ कमलामन अति जतनगों, मय गुग करि एक शैर ॥ श्री
सरनाम नरेम को, विरचे नृप मिरमौर ॥

प्रथ निर्माण काल—श्री सरनाम महीप मणि, पूरित तिये हुलाम । विष्णुदत्त कवि
सों कहो, करौ वनत विलाम ॥

ग्रथ निर्माण काल—रस रन वसु रजनीश, मित मन्वत सुर गुरु वार । भादों
कृष्ण त्रियोदशी, नयो ग्रथ अवतार ॥ ग्रथोपक्रम, अतिशयोक्ति अलंकार, प्रतीय मुक्ति अलं-
कार भ्रमराटि की व्याज से, उपमालंकार, प्रकृति कथन, समुच्चय अलंकार, प्रेम प्रसंग,
दृष्टत अलंकार, गुरजन स्वभाव वर्णन, काव्य लिंगोलंकार, पूर्ववदलंकार, अनुप्रासलंकार,
शकरलंकार, समुच्चयानुप्रासलंकार, व्याधप्रतीयालंकार । -

(२) पृष्ठ ३५ मे पृष्ठ ६३ तक—द्वितीय विलाम—श्रंगार वर्णन । मुख वर्णन, कोम-
लता वर्णन, प्रोषित नायका दशा स्मरण, कुच वर्णन, कपोल वर्णन, केश वर्णन, अभिलाष
दशा, स्मरण दशा, स्वकीया सखिता, आगत पतिका, धृष्ट नायक, त्रिया विदग्धा, प्रेम प्रसंग,
विश्रब्ध नवोढा, प्रोषित पतिका, सखिता, मानिनी नायिका, व्याधि दशा, स्मरण दशा,
प्रमोदा लिंगन, सुरति, नवोढा, प्रथम समागम, चेटक, स्वकीयाभिस्कारिका, प्रवलय
प्रेयषी, माननी प्रति दूती वचन, गुरु मानिनी, कलहानारिता, अनुशयना, अनुकूल नायक,
हास्यरस वर्णन, करुण रस, रौद्ररस, वीर रस, भयानक रस, वीभत्स रस, अद्भुत रस,
शांत रस, षोडश श्रंगार ।

(३) पृष्ठ ६४ से पृष्ठ ८३ तक—तृतीय विलाम—वसत-वर्णन वसंत वैभव, संयोग
सुरत, समीराटि वर्णन, मान भग, वसतमें विरहावस्था, वसत में मोह व कामोदीपन वर्णन ।

(४) पृष्ठ ८४ मे पृष्ठ १०९ तक—चतुर्थ विलाम—शातरस वन वनाटि के वर्णन
के साथ भक्ति रस वर्णन, भक्ति न होने पर निन्दा, भक्ति की सर्वोपरिता, भवमिथु की दुर्ग-
मता, अभ्यिका की प्रशंसा, भक्ति संवधी उपदेश, गंगा वर्णन, भक्ति से कुटिल स्वभाव
सुधार, वर माँगना ।

कवि वश परिचय—कवि नरहरि को कुमार हरिनाथ भयो हरिवंश ताको सुनु परम
प्रवीनो है । ताको घनस्याम श्रीगोविंद नाम ताको तनै जाको पाय वदन दिली को पति

कीन्हों है ॥ ताको तारानाथ तारानाथ सो उदित भयो ताकीं रामबकस सुजस छोक भीमा है ॥ ताका सुत पूरण भगवद रामबच ताको ताको विष्णुवच सो विमल प्रभ कीन्हो है— मंगल्यचरण ।

प्रथम छेपन काठः—अम्बर आदि पृष्ठी राजनीक सम्बत् माघ मन्वीरम भास है । स्वामल पक्ष तिथी पुष्यवार छमे तिथि सप्तमी भोग बिद्यस है ॥ इत्त गङ्गा सुर्मगळ सूक विवाकर उचर बर्मे प्रभस है । श्री अच्यार महीप किले निज पाठ के हेत बसंत विकास है ॥

सुख्या ५०१ इद पाण्यस्य राजनीति भाषा, रचयिता—विष्णु गिरि, अगज— देसी, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपुष्प)— १६०, पूर्ण, रूप—माषीन, पद्य, सिपि—जागरी, क्लिपिकाळ—सं० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—५० सिवबरा गुरु, ग्राम—जयतीपुर, जिळा—उद्याय (अजय) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ मैं तत् सत् ॥ जब बुद्ध पाण्यस्य मुनि हृत राज भीति भाषा विष्णु गिरि हृत छिप्यते ॥ तीनि छोक अधि पति प्रभू बिन्दु प्रजस्य शिर नाथ । भीति शास्य पाण्यस्य को सङ्घ शास्य से पाय ॥ १ ॥ मानव पहिया शास्य को जानै गो सब तत्व काज अकारु ह्यम अद्यम धर्म सिपावन मत्त ॥ सीं हीं नीके कहत हीं सब गर को दिवकार । जिहू के जाने मात्रते ह्ये सर्वत प्रभर ॥ मूर्त्त सिप्य उपदेश करि द्वारा हुट बसाय । श्री के पानि परं पवित्र हुं सीदाय ॥

अंत—अमर द्विज सत पुरप ये तूँ है सतमाव । भीर पान पाव ते पवित कास्य प्रभाव ॥ उचन को प्रविपात करि सूर भेद करि जीति । भीष अस्य ही दान करि निज दुख पीक्य रीति ॥ अगिन छत माँह काष्ठ सें उद्युधि नरी बारि । काल वृत्ति पाई जीवते नरते वृत्ति न मारि ॥ यज्ञ के भागे बुद्ध में सोमा पाई ईत्त । पवित इरिद्र बूर करि ल्यो सञ्जन घन वंत ॥ सुत विन घर सूयो शुनिव विन बांधव पुत्र देस । मूरप को सूयो हृदय निर घन सूय्य अग सैम ॥ नारि केळ आकार गर दिसे जग में कोइ । पदरी फळ आकार बहु कपर मीढे होइ ॥ जिबके सुत पवित नहीं भकि माँह नहि सूर । अंधकार बुद्ध जान स्यो विन सधि निघाकर ॥ निशि हीपक शक्ति देपिये रवि दिन हीपक पान । धर्म हीप तिहुँ छोक को कुछ हीपक सुत जान ॥ तुप्या पानि अगाध है नहि भरिये तल सीर । जो निस दिन ही भरन सें पवती जाय गंभीर ॥ जिन जिवत अंधि ह्ये मित्रक बांधव छोइ ताको जीवन सङ्घ मिन उचर भरो सब कोइ ॥ राजनीति पाण्यस्य को सप्तम बुद्ध अण्णाव होहा भाषा करि रण्यो कवि गिरि विष्णु बनाय ॥ इति श्री बुद्ध पाण्यस्य राज भीति शास्य गो० विष्णु गिरि ह्ये भाषा यां संपूर्ण समाप्तः संवत् १९०८ वि० राम राम राम राम राम राम राम ॥

विषय—राज भीति ॥

संख्या ५०२ स्वरोदय, रचयिता—श्री विष्णुमर, अगज—साधारण, पत्र—२५, आकार—६३ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपुष्प)—१८८, लंबित । रूप—साधारण, पद्य, सिपि—जागरी, प्राप्तिस्थान—डा० रणधीर सिंह बर्मद्वार, ग्राम—खासीपुर, बाकुर—साकान बवती जिळा—कस्तमंड ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री विसुंभर कृत श्रोत्रं लिप्यते । श्री मह देव पार-
वती मन्त्रे ॥ पवन वीज पुस्तक, तथा पिंड वृहंड वखान । तत्व ग्यान सुर भेद सो निवृत्ति
प्रवृत्ति सुपदान ॥ पिंडे सोमहृदे अथ प्रथम तत्त्व फेरि दूनो सुरसौ पाच तत्व पहिचानौ ।
पाच तत्वके पाच पाच भेद जानौ ॥ तुचा १ रांस २ अस्तिन ३ नस ४ माश ५ ॥ पृथ्वी
तत्वके गुण । वीज १ मूत्र २ रुधिर ३ लार ४ मल ५ ॥ ए जल तत्वके गुण (न)
जानौ । क्रांति १ भप २ प्यास ३ निद्रा ४ आलस्य ५ ॥ ए तेजके गुण । बानी १ नेहचौ
२ आनद ३ गध ४ गवन ५ ॥ ये वायुके गुण । ढोश १ मोह २ राग ३ भय ४ लज्या
५ ॥ ए आकाश के गुण जानौ ॥ जेहि तत्व मय जाका वास है सो शिव जी कहत हैं
धूँटमें जांघमें पृथ्वी को वाश है । चरन में जलको वासु है । दोट कधनमें अग्निको वासु
है ॥ पांच तत्वको पाच प्रकार करि जानिये ॥

अत—अथ माश ॥ १ ॥ अ० दोड सुर निरतर चलै माश ॥ अथ दिन ज्ञान तुह
दिन सूर्ज सुर चलै तो दिन भग अ० पाच राति दिन सूर्ज सुर चलै तो वर्ष ॥ १ ॥ दश
राति दिन सुरज सुर चलै तो ॥ ६ ॥ माश अ० वीश राति दिन सूर्ज सुर चलै तो माश
॥ १ ॥ अ० अष्टादश दिन राति सूर्ज सुर चलै तो दिन ॥ १५ ॥ तीश दिन रात सूर्ज सुर
चलै तो दिन ॥ १० ॥ वतिस दिन राति सूर्ज सुर चले तो दिन १ ॥ अ० जादिन दोनौ
सुर चलै ताँ छिन भगी मृत्यु आवै आयु दिन प्रवान मूत्र टिटि सकरमें छूटे और कानकी
लौर हालै काप नेत्र अगुरिन मै वीर चलै ताँ दिन दस ॥ १० ॥ अ० एक आपी वैठि जाइ
तव दोट आपिन में धूँधी छावै लिलाट की लुनी मिट जाइ तव दिन ॥ १ ॥ अ० आप
जीभ्या नही दीसै ताँ दिन ॥ १ ॥ जीवै रूपनी भौह नही दीपै ताँ दिन ॥ ७ ॥ अ० आपनी
नासिका को अग्रभाग नही दीसै तो दिन ॥ १ ॥ जी अँ अनहद नान सुनै ताँ दिन ॥ ५ ॥
जीवै ॥ X X X X

विषय—यह स्वरोदय शास्त्र श्री विदाभर द्वारा रचित है । इसमें निम्न लिखित
विषय हैं :—

(१) तत्व ज्ञान (२) स्वर पहिचान (३) स्वर माधना (४) इडा पिंगला
का ज्ञान (५) स्वर भेद (६) भूपन वज्र दृढ दिवाद (७) टाकुर नेवा स्वामी मत्र
देवता दर्शन विधि (८) जंत्र मंत्र (९) गवन विधि (१०) भोग विधि (११) श्राप
विधि (१२) वार, तिथि पक्ष आदि का वर्णन (१३) नक्षत्र आठिका वर्णन (१४)
रात दिनका वर्णन आदि २ विषय वर्णित हैं । पुस्तक अपूर्ण है । भाषा दूषित है ।

संख्या ५०३ प. शान्त शतक, रचयिता—महाराजा विश्वनाथ सिंह (शीवा),
कागज—साधारण, पत्र—७३, आकार—६३ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण
(अनुपट्ट)—२६००, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाळ—स०
१९०६ = १८४६ ई०, प्रासिस्थान—कुटी मानिकपुर, गंगातट ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शान्त शतक लिप्यते ॥ दोहा ॥ सिय रघुनंदन
सरस्वती, गौरि शशु गन ईंस । हनुमान हरि गुरु प्रिया, दास चरन धरि सीस ॥ १ ॥
टीका—मुक्ति प्रदीपिका करत अहै विमुनाथ । गुरु सुप सुनि यही विधि करहि पांच मुक्ति

देहि हाथ ॥ २ ॥ कविता—नयनि मपत करि कोहरी कपट उर मुजनि भुजंग बारीं किस
 है करन में । बदन में बिनु बारीं मैन नगकिन बारीं मत्त खंचरीक बारीं कुचित कचन में ॥
 नाथ विस्वनाथ क समस्य राव रामचन्द्र जगत के नाथ बारीं आप गुनगन में । काठ द्रव
 भुजता में बिधि वेद बिज्ञता में बारीं बिस्त बार बार कन सरन में ॥ १ ॥ लिखक—यह
 कविता में ठी प्रतिपा संकार कियो ताते रघुनंदन के ज्ञान की अनिर्बचनी भाता स्वयंजित भई
 भइ काठ द्रव भुजता में ओ बारपो तात काठ द्रव द्रव है के भस्म मात्र करि देह है ।
 श्री रघुनंदन मुक्ति हृदय है यह स्वयंजित भयो ताते इनको अंधी और नून सामी प्रसन्नता
 ते अधिक है यह स्वयंजित भयो भय विष्णु को सरन करन में ओ चारपी ताते विष्णु को
 सहु को सरन राखिबो नहीं बारपो भी रघुनंदन जघपि जल्प गद्गु कियो की बिना राक्षस की
 पृथ्वी करीगों ठक विभीषण को सरन राखिबेई कियो भरु बार बार का कियो ताको महा
 वैकुंठ छीर सागर साई श्री महाशयन भूमादिक ओ विष्णु क रूप तिनको दहन आयो जद
 श्री महाशयन सरन भये जे मुर्खाभा है तिनकी सरन ना राप्पी अम्मरीरि क पास पटाह
 दिवी मागवतापराधी जानि के और श्री रघुनंदन साहाय्य श्री जानुकी जी के पूँछ हू जयंत
 को सरन में राखि तिनो अरु बाधाहित करी दियो ताते आगे जो पाप है ते जरि गये अरु
 कबहुं ना करेयो पादि बनी रहैगी आपी कियो तो कृष्ण कियो यह स्वयंजित भयो अरु बिधि
 वेद बिज्ञता में जा लिप्यो सो वैसो वैसो काठ द्रव संघार में है और श्री महाशयन सरन
 रसन में है ऐसे ज्ञान की की बरोबरि वेद का ज्ञान बारो नहीं है ताते वेद का ज्यार्थ जर्ष
 मरी के मत में है, यह स्वयंजित भयो ताते कवि की द्रव्य संप्रदाय स्वयंजित भई ॥ १ ॥

बत—बहुत बेदांतन सार बिबिधि संतन मत छीयो । गुप्त मठन प्रगटन हित
 सांत सतक मय कीयो ॥ ५६७ कविता करि अम्याय यहि रीति जो करि है । यह मय पारा
 बार अम्यु गोपय सम ठरि है ॥ यह पाई करि है जो पुरय मय समुसि बित मी धरहि ।
 सो कसु दिन में अज्ञान लजि बिरति ज्ञान प्रकियु कहहि ॥ ३२ ॥ बहुत जे है बेदान्त
 तिनको अम्यास करिके और बहुत जे हैं संत तिनकर संग करि तिनके से बहुत मत है तिनको
 के के पा सार रुठक मी बनायो है ये में संतन के जो गुप्त भावना है और जे सास्त्रन के मत
 के सार है ते धरि दियो ५ ये की कविता का अम्यास करि के पाई रीति जो करि है सा
 पा संसार समुद्र जो है ताको सीम ही मो पद सम उतरि है है अरु जो वा मक्ति को
 कोई साधन वा करिके गो र्थ पाको पाठ मात्र करैगो मूळ लिखक को अर्थ समुसि के पित
 धरैगो ताको वैराग्य ज्ञान मक्ति होबई करैगी जीनी भक्ति मो धोरो बहुत अम्यास करैगी
 तात पाई परिखा करि रुच यह उपदेश स्वयंजित भयो ॥ ३२ ॥

इति श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा बहादुर मीता रामचन्द्र हृपापा
 आधिकारी बिबनाम नू द्रव हृत मुक्ति मय सांत सतक धममः सुम मस्तु जेठ बदि सं
 १९०९ के ।

विषय—(१) पृ० १ स पृ० ५१ तक—अगस्त्य चरण इह वैच तथा गुह आदि
 की बहना । शार की बिस्मयता समझकर राम नाम का उपदेश । राम विना सब वैभव
 की स्पर्धता । राम नाम सार की श्रेष्ठता । जय तपादि से राम मक्ति की प्रदानता । राम

के समान कोई दाता नहीं। पुत्र बलत्रादि नाते का मिथ्यात्व और भक्ति की मत्तता। काम क्रोधादि रूपी चोरोँ में बचने का उपदेश। विषय वागनादि से मुक्ति का अवरोध। झूठी इच्छाओं की निस्मारता। इन्द्री विषयों को त्याग भक्ति ग्रहण का उपदेश। आनंद कद ही में आनंद का निवास। वागनाओं के मिटाने से भक्ति का ग्रहण। अहम्मन्यता को दोष बताना। माया की प्रवृत्ता और नीताराम की भक्ति से उगका प्रिनाग। अच्छा ज्ञान पात्र होने के लिये मार्ग निदर्शन। भक्ति रण्ड सम्पूर्ण।

(२) पृ० ५२ से पृ० १०१ तक—न्याय मतादि का ग्यटन कर ग्रंथ कर्ता का अपना ही ब्रह्म होना सिद्ध करना। ब्रह्म ही का विध वा कारण कथन। ज्ञान के प्रदान से मोह को जलाकर भक्ति के आनंद देने का कथन। कुमकादि से यदि समाधि होती और समाधि में सुख होता तो समाधि नष्टने पर माया क्यों भरमाती ? जावादि निरूपण। कालादि में भी राम की प्रवृत्ता। राम की महिमा, कर्म को छोड़ परमात्मा को पाने का वर्णन। आत्मा के गुण। जीव-शरीर तथा इन्द्रियों से उसकी पृथक्ता। ब्रह्म की व्यापकता उनको न चीन्हने से दुख की प्राप्ति। आत्मा का रूप। परमात्मा को पाने का विधान। राम कोही सर्वत्र मानने में सुगोद्भव। रकार और मकार की प्रनाया। मन विष अहमार के त्याग के पश्चात् राम द्वारा विशुद्ध शरीर पाने का कथन। ज्ञान काड सम्पूर्ण ॥

(३) पृ० १०२ से पृ० १४५ तक—नवधा भक्ति के भेद। उनके साधन। भक्ति योग वर्णन। प्रेमाभक्ति वर्णन। ध्यानादि विधान। पूजन तथा आर्ती आदि का विधान। रामनाम जप विधान। रति के लक्षण, भाव प्रेमा भक्ति। प्रेमा के पांच मुख्य और पांच गौण भेदों का वर्णन। सुधा, दास्य, सरय, वास्य, प्रियता के लक्षण। इन पांचों को पांच रसों का स्थाई भाव बताना और पांचो रसों में शृंगार रस की प्रधानता। दम्पति मूर्ति सेवा विधान। दम्पति-ध्यान रखने वाले संतों की मर्या। शांत शतक बनाने का अभिप्राय। इसके पाठादि करने वालों को फल प्राप्ति ॥

संख्या ५०३ वीं। शांत शतक, रचयिता—महाराजा विश्वनाथ सिंह (रीवा), कागज—साधारण, पत्र—१४०, आकार—१० × ६३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—२६००, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०७=१८५० ई०, प्राप्तिस्थान—चौथे लक्ष्मीचंद कोर्ट आव वार्ड चंद्रपुर, डारुघर—कमतरी, जिला—आगरा।

संख्या ५०४. भाव पंचाशिका, रचयिता—वृंद कवि (औरंगाबाद), कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—७ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुपुष्प)—२४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७४३, लिपिकाल—सं० १८२६, प्राप्तिस्थान—ठा० गंगासिंह जी, ग्राम—देवरिया, डारुघर—घसोरा, जिला—सीतापुर (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ भाव पंचाशिका लिप्यते ॥ दो० ॥ अद्भुत अमित अनंत अति अगम अपार अनूप ॥ व्यापक दृश्या दृश्य मय जय जय

ज्योति स्वरूप ॥ कवि हासन के भाव मुनि कष्टुठ मया पित्त बाव ॥ कहीं भाव पंचासिका
 बुन्द मुकवि परि भाव ॥ भाव सहित सामा लई पूजा जब तप मिच ॥ पाते बुन्द विचारि
 कै कौमे भाव कबिच ॥ सतरँ शैताजीम सुदि फगुन मंगळ वार चापि भाव पंचासिका
 बबनि भयो भवतार ॥ उकि युक्ति करिके कवित कीन्हे भाव दुराह । शैसे भाव प्रकाशिकीं
 होहा किये बनाह ॥ सर्वथा ॥ बावत ताक सुदंग उरंग महा मुनि तीमहुं सोक छई है ।
 बुंद कईं मुर किन्नर भूल पिनाच परँ अस उक्ति नई है भावत गौरि के हेत किये पित्त कंड
 दिवे अनुराग मई है ॥ चारहु अर परापर ऊपर मय बिना उक वृति मई है ॥ दो० ॥
 गति अनेक गावत तहां श्री सित कंड सधीर अमरी गति कौं छत ही प्रसन्नो गगा भीर ॥
 सर्वथा ॥ अचत है उक अवावत है नर पावत देह हरी हर की जो । तारनि तीमहुं सोक
 विहारनि पाप निवारनि बंठित शीया ॥ बुन्द कईं मु विवेक विचारि कै मेरी यहि बिनती
 मुनि खीची ॥ केसव मोहि करीं बिन गंग हृपा करि माहि सया सिव कीबो ॥

अंत—पिच उदासन कोमक हास उसास मई मुप कीने रई मत ॥ छीम सपीन के
 संय न बँटति हेपिये खीन कईं न मुनीबत ॥ बुन्द कईं यह भाव कदा अति मिदित है विचि
 कौं अपने मत ॥ बाओ न रोगन पी को विषोगन योग कळस को पंथी नुसाकत ॥ दो० ॥
 करि है दिन द्वे चार में पिय परदम पयान मुनय मई कौंयो वृसा समुसाव भाव सधान ॥
 सर्वथा ॥ प्राण पती के पयान समी अति काम बरी बुहरी द्विय में धब । क्यौं द्विय धीरब
 कौं परि है उ कदा करि है उपचार खपो जन । बुन्द कईं घनघोर उठे करि सोर उठे फिक
 मोरन के गन । वीतकि संक निरंक मई पुनि मीपि द्वियो मन मोहन को मन ॥ दो० ॥
 द्विय मन बीनो पीप को अब ही कियो पयान । जब टर कदा मनोज को समुसाहु बुधि
 विचाव ॥ सं० ॥ अथ कबिच मरूपव रावरी तामें जवाहर भाव भरई ॥ सुष्यम देत सुलक्ष्म
 पोपि महानिरहाप परे मुधरे है ॥ ताक दुराव के ताका द्ये समुसे बुधिबाव दुराह बरे ई ॥
 बुन्द कईं पुनि ताके प्रकासकीं कृपी समाव के दोहा करे ई ॥ दो० ॥ रबी भाव पंचासिका
 बुन्द भाव मुविचार मूक्ति बूक कष्टु होय सो कीबीं मुकवि सुधार ॥ पुन^३ सागर^४ मुप^५
 सोम^६ सम^७ काशु^८ बाहु^९ निधि^{१०} बाहू मई भाव पंचामिका यह अंतरगावद ॥ इति
 ओ भाव पंचासिका बुन्द कवि कृत संपूरण धुन मस्तु कियत विहारीलाल मिश्र सवत
 १८२६ अठे छह दशहरा (व्रामी) श्री राम जी सहाय ॥

विषय—भाषिका के भाव वर्णन ।

सर्वथा २०५, ज्योतिपसार, रचयिता—बृहावन कागज—द्वैती, पत्र—६०,
 आकार—८ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्ठान)—१४००, पूर्ण,
 रूप—प्राचीन गद्य, कवि—काशी, कविग्रह—सं० १८०० = १८१२ ई०, मासिस्वान—
 मविषय मिश्र बीप दांभ मुनाबपुर लहरपुर । वर्तमान ग्राम—गंगापुर आकर—कहरपुर,
 मिश्र—सीतापुर ।

आदि—श्री गजेसायनमः ॥ अब ज्योतिप सार भाषा लिख्यते । आठिबाहन के शक
 में १२ मिलावे और ६० का भाग देवे शेष रहे तो प्रमदादिक सवत का नाम जानना ॥

शालिवाहन के शाका में १३५ ए.क सौ पैंतीस मिलाये तो रेवा नदी के उत्तर के किनारे पैं वसै जो विक्रम राजा जियका संवत सर जानना ॥ सवन सरों के नाम ॥ प्रभवः विभवः शुक्र. प्रमोद. प्रजापति श्रंगिरा श्री सुप भाव युवा धाता ईश्वर बहुधन्व, प्रमाथी विक्रम वृष. चित्रभानु, सुभानु, तारण पार्थिव, व्यय सर्वजित, सर्वधारी, विरोधी त्रिभुति सर. नदनः विजय जय मन्मथ. दुर्मुप., हेम लंब, विलय, त्रिकारी, सर्वरी, प्लव, शुभ, कृत, शोभन, क्रोधी, विश्वावसु, पराभव, प्लवग, नीलक र्नाम्य. साधारण विगंधकृत्, परिधावी प्रमाटी, आनंद राक्षस, बल., पिंगल, कालयुक्त., मिश्रार्थी, रंद्र, दुर्मति दुदुभी, रुधिराद्वारी, रक्ताक्षी, कोधन. क्षय ये ६० संवत सर हैं ॥ सवत सर फल ॥ प्रभवादि सवन सरों में वर्तमान सवत तिमै दूना करे और तीन उममे ये घटाय दे और मात का भाग दे प्रोप रहे तो शुभाशुभ जानना १।४। वचे तो महगा कहना २।५। वचे तो मस्ता कहना ३।६ वचे तो सम जानना और सून्य वचे तो पीडा जानना ॥

अत—अतरंग वहिरंग नक्षत्र । सूर्य नक्षत्र मे चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इय प्रकार वर्तमान नक्षत्र तक वारंवार गिने तो विक्रम मे अतरंग वहिरंग मङ्गल होते हैं उनमें लाना व पठवाना आदि कर्म करे मृतिका स्नान हस्त जेष्टा पूर्वा फाल्गुनी म्वाति धनिष्ठा रेवती अनुराधा मृग अश्वनी और तीनों उत्तरा रोहिणी इन नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री का स्नान शुभ कहा गया है परंतु रिक्ता तिथि में न करे ये मुर्नादों का कथन है ॥ अथ पूर्णिमा हुआमिनी फलम् ॥ फाल्गुन सुदी पूर्णमा में जो होली की लौ पूर्व जाय तौ प्रजा को और राजा को सुप जानिये ॥ और दक्षिण को जाती हो तो प्रजा भाग जाय, और अकाल पडे निश्चय करके जानना और जो पश्चिम को लौ जाती होय तौ वृष चंद्र सपति होय जो उत्तर को जाय तो अन्न बढ़े और आकाश को जाय तौ राजा गढ़ में जाय धंटे और विग्रह होय ॥ धूल वर्षा फल ॥ जो बूल की वर्षा होय तौ क्षय करे और जो कुटुर पड़े तौ भयकर लोक में जानिये । जो बिजली पात होय तौ अग्नि चारों ओर में लगे और जो वज्र पात होय तौ राजा का भय जानिये, और जो इनक्षण शब्द करती प्रचट पवन चलै तौ चौरन का भय जानिये, और जो ग्रहन में जुद्ध हो तौ राजान में जुद्ध जानिये, जो जेठ उदय दीपे तौ जुद्ध का भय जानना चाहिये और जो ग्रह के शत में वर्षा होय तौ सर्व दुषों को दूर करे ॥ इति श्री शुक्रदेव जी विरचिते जोतिष सारे वृन्दावन कृत भाषा टीका संपूर्ण शुभम लिपतं वनवारी लाल १८७० सन ई० ॥

विषय—ज्योतिष वर्णन ॥

संख्या ५०६ ए भूगोल, रचयिता—व्यास, कागज—डेशी, पत्र—२९, आकार—१३ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६ । परिमाण (अनुाट्प)—१७७, पूर्ण, रूप—नवीन, गद्य । लिपि—नागरी । प्राप्तिस्थान—राजा अवधेश सिंह जी साहब, रहंस व तअल्लुकेदार, कालाकाँकर प्रतापगढ़—अवध ।

प्रारम्भ—श्रीमते रामानुजाय नमः । अथ भूगोल लिप्यते भाषा कथयामि । पहिले आकाश उपजा । आकाश से वायु उत्पन्न हुआ । वायु से तेज भा । तेज से जल भा । जल

से प्रज्ञांश भा । सो प्रज्ञांश हृदय की कृपा से कृति आधामा । प्रज्ञांश के मध्य में जल बिन्दु व विष्णु उत्पन्न भा । ता परमेश्वर के नामी कमल में प्रज्ञा उत्पन्न मे । प्रज्ञा मे पृथ्वी की प्रथम मीम कर्त्तव्य^{२१} कोटि जातन को प्रमाण है । ताके मध्य में सुमेरु पर्वत है । चौरासी लक्ष योजन ऊँचा ताके सोरह हजार आठम पृथ्वी में गहिरा । बीस हजार तीरम मध्य में चकका । जल का नामा सैसा सीमा मध्य में मोटा । तहा भग पतला सुमेरु पर्व है ।

अंत—कलयुगव्यवस्था—चार काक वरिस हजार कलतुग प्रमाण । मानुष्य प्रमाण हस्त ॥ ३ ॥ सूर्य पर्व एक हजार । चन्द्र पर्व ७ हजार । तीर्थ गंगप्रती । द्वाी चामुंडा पाप । १८ । पुण्य । २ । श्री प्रसूतिचार । २१ ॥ मानुष्यार्कल । १२० । बीस बोधन बार ॥ १ ॥ छद्म । १ ॥ जान जल पह । राज शक्ति बाहन । ताके पुत्र । कुमार । ताके पुत्र ईर्ष्यु ॥ ताके पुत्र प्रज्ञा । × × × × चारिड बरन तुकुक उजुराई । इमी वस्तु मईगी । बड़ा वस्तु सस्ती । धर्म करमे वाले दुषी । पापी क्येमी कर्पट कुपुक इमुसो सबमों प्रोति । सैसा कलतुग में परमेश्वर की भक्ति पुच्छ मनुष्यम क्य बाबा धार होथि । परिणाम में धर्म सदा सहाय है । इति कलयुग बरननं मृगाक संपूजम् । धिती र्थेय बबम्या । रविवासरे ।

विषय—१—पृष्ठ १ से पृ० ५ तक—पृथ्वी इत्यादि की उत्पत्ति, पृथ्वी के नव पर्वत, महा द्वीप । २—पृ० ६ से पृ० ९ तक—पाताल कूर्प विचार, पृथ्वी का कूर्म, पृथ्वी के आठ पर्वत, चन्द्रो जमो के नाम । ३—पृष्ठ १० से पृष्ठ १३ तक—अष्टाक्ष प्रमाण, महा महद्य विचार ईश्वर के स्वाम निरुत्तरण । ४—पृ० १६ से पृ० १९ तक—बंशावली । वेस विचार । ५—पृ० २० से पृ० २७ तक—सतसुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था ।

संख्या ५०६ वी भूयोद्ध पुत्रन, रचयिता—ग्याम जी, कागद—त्रेती, पत्र—७, आकार—९ × ५३ इंच पृष्ठ—२४, परिमाण (अनुपुत्रु) —२६४ पृथ, रूप—प्राचीन, गद्य, कवि—नागरी, प्राक्षिस्थाय—बा० राम मनाहर जी विचपुरिवा, पुराणी वस्ती कटनी मुदबार, जयपुर (सी पी) ।

प्रारम्भ—भोगोक पुरान किग है । तपदि परि पेसा णक प्रज्ञांश नीक बरब ॥ प्रज्ञांश बिम्ब सिव पातपी पय ॥ आक्यम ते बानु उत्तपति बाई ते तेज उत्तपेति तेजते ॥ प्रज्ञांश कृति कृति की भये । ताकल भये विष्णु रहे हे । विष्णु के नामि कमल के बिसें प्रज्ञा रह हे । सो प्रज्ञांश बांड कीय है । पचाम क्येमी जोजन उर्बाई ॥ सोरह सहस्र जोजन भरती मर्ध गहो है । बीम सहस्र जोजनं उपर बिम्बार है । सरवा के कर्षक्यर सुमेरु पर्वतु हे ॥ ता सुमेरु पर्वत की अस्त भंग हे मामती भंग स्पीक भंग मास्विती भंग जामबती भंग । नप निधि भंग ॥ उत्तमाल भंग महाभग । पर्व अस्त भंग है । ऐक ठेक भंग कितभा अंतर हे ठेक ठेक कल जोजन आपम भये कुम्यामप अंतर है ॥ × × ×

अंत—कौम कौम राजा मण । राजा सरि बाहन ॥ १ ॥ राजा सक्ति कुमार ॥ २ ॥ राजा हरि ब्रह्म ॥ ३ ॥ राजा अर्जुन ॥ ४ ॥ राजा प्रहस्य ॥ ५ ॥ राजा इंद्र ॥ ६ ॥ राजा अर्जुन ॥ ७ ॥ राजा महीपति ॥ ८ ॥ राजा गंगध सेनि ॥ ९ ॥ राजा विक्रमा धीत

॥ १० ॥ राजा मही फलु ॥ ११ ॥ राजा चित्रक ॥ १२ ॥ राजा हरि पु ॥ १३ ॥ राजा विक्रमा चक्रु ॥ १४ ॥ राजा भोज ॥ १५ ॥ ता उपरांत नभ वती इंती पतमाही कौन कौन ॥ गोरी स्यबुदीन ॥ १ ॥ अलाबुदीन । २ ॥ नसीरउदीन । ३ ॥ लोहशाम महेमूद ॥ ४ ॥ बडो महमूद ॥ ५ ॥ सूर्ज माही ॥ ६ ॥ तिमिर लिंग पातमाही । ७ । चवरमाही ॥ ८ ॥ हिमाड साहि ॥ ९ ॥ जक्रवर साहि ॥ १० ॥ जहागीर ॥ ११ ॥ साहि जिहा ॥ १२ ॥ औरंगजेव ॥ १३ ॥ श्री वेदव्यास भासित भोगोल पुरान समाप्त ॥

संख्या ५०६ सी. पृथ्वी भूगोल प्रमाण, रचयिता—व्यास, कागज—देशी पुराना, पत्र—७, आकार—१० × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुपटुप्)—११, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, प्रासिस्थान— टा० चन्द्रिका सिंह जी जमीदार, ग्राम—खानीपुर, डा०—बकमी तालाब, जिला—लखनऊ।

प्रारम्भ—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पृथ्वी भूगोल प्रमाण लिख्यते । यथा आकाश ते वायु उत्पन्न वायु ते तेज उत्पन्न पानी पृथ्वी अणु उत्पन्न ब्रह्मांड धारि द्विपण्ड भये तेहि जल मध्ये विश्नु रहत है विश्नु की नाभि कमल मध्य ब्रह्मा उत्पन्न भये सो ब्रह्मा उवाच क्रिये हैं पचास कोटि योजन पृथ्वी प्रमाण है पृथ्वी मध्ये सुमेरु परवत है चौरासी योजन उच्च है सोरह योजन पृथ्वी मध्य गटी है विस सहस्र योजन त्रिव विस्तार है सेर वाकी आकार सुमेरु है ता सुमेरु के अष्ट शृंग है । कवन कवन शृंग है हेमवत शृंग १ नील शृंग २ श्वेत शृंग ३ उच्च शृंग ४ मालिवत शृंग ५ गंध महन शृंग ६ महा शृंग ७ पृव अष्टागति पर्वत ऐक ऐक शृंग कीतना अंतर है अपनाते ऐक ऐक लक्ष योजन अंतर है ता सुमेर मध्ये पर्वत सुवर्ण मय है आकाश मटिर है वैदर्य मणि मुक्तय यह महागण गधर्व पक्ष मुनि परिजात है मालि मान राजा वैठे हैं वैकुण्ठ यहा पुण्य प्रधान प्रदायक है; इति सुमेर विषे अग है ।

अंत—एक लक्ष योजन ७००००० बृहस्पति लोक है । अष्टासी सहस्र योजन ८८००० बृहस्पति लोक को विवसार है बृहस्पति मंडल को परि एक लक्ष योजन ७००००० बुध मंडल है तीस सहस्र योजन ३०००० बुध मंडल को विम्व विस्तार है बुध मंडल परि-एक लक्ष योजन ७००००० शनि मंगल है अष्टासी सहस्र योजन ८८००० शनि मंडल को विव विस्तार है शनि मंडल ऊपर येक लक्ष योजन ७००००० राहु मंडल है अठासी सहस्र योजन ८८००० राहु मंडल को त्रिव विस्तार है राहु मंडल ऊपर एक लक्ष योजन १००००० केतु मंडल है येक सहस्र योजन १००० विम्व विस्तार है केतु मंडल को शनि मंडल कुश्न वर्ण ताते राहु नाही देपि परत है केतु मंडल ऊपर येक लक्ष योजन १००००० सप्तऋपिन को मंडल है भिन्न भिन्न सातो ऐक ऐक लक्ष योजन १००००० अपना अपना मा अंतर है तीस सहस्र योजन ३०००० विव विस्तार है सप्त ऋपि मंडल को । राम राम कुश्न राम राम कुश्न राम राम

विषय—आकाश, वायु, तेज, पानी आदि की उत्पत्ति ब्रह्माण्ड ब्रह्मा, पृथ्वी आदि की उत्पत्ति पृथ्वी में सुमेर पर्वत और उसके शृंगों के नाम व जवूबुक्ष आदि वर्णन पृथ्वी स्वड

द्वीप, सप्त द्वीप प्रमाण ७ समुद्र पृथ्वी के रक्षपाकक, अमरावती का विस्तार; यमपुरी यमभाम कुबेर पुरी कुबेर नाम सूर्यक्षोक चन्द्रक्षोक नक्षत्र लोक उनका विस्तार विग्रह विस्तार तूरी आदि आदि वर्णित है ।

संख्या २०६ डी सगुनाबद्धी, रचयिता—व्यास, कागज—दही, पत्र—३, आकार—८ x ४ पंक्ति (प्रथि पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेद)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, शिर्ष—भागी, लिपिकार—सं० १८२७ वि०, प्राप्तिस्थान—विसर्वा भारद्वाज भवन पुस्तकालय, हाकधर—बिसबा, जिला—सीतापुर (जनक) ।

आदि—श्रीगणेशायनमः अथ मगुनीती व्यास कृत लिप्येत । वासमिपुर वात कडे दिन चारी ३ (१६) महा विचोग देपावडु चारी (९) आगम वेद जा पवरी जनावा (४)

१६	६	४	५
३	९	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

मुक्त चतुरदस कुसल मुनावा (१४)
रवारह पत्र वेगि चलि भावा (११)

पंडी नाम बगि चलि भावा (५) संप्या तीनि कई कळ जाती (६) पटामंद तम कडा पपानी (६) तिधि विमैपि कई विरभापी (१५) राबन नाम होदि चित पायी (१०) बहु विधि काम वेपत मारा (१३) मुर मची मी वपहि चोरा (१२) अगहपा इगद वेगि चलि भावा (१) अमुर भाग सो मर्म जनावा (८) मंगन पंचन विविध घर बने (२) अपर विरोधा सापर घने (७)

अत—गये चिंता होइदि (२५) जाहु काज होइदि (२६) जनि र्ही काज होइ (२७) र्ही म पिपा करी (२८) काज अबसि हाइ (२९) कळ मम के हादि । (३०) मका होइ भमो न (३१) काज होइ बहु दिन में (३२) दिन जलो पिता नदि । (३३) काज हादि अबसि (३४) यद पात मुम है (३५) काज न होइदि (३६) काज होइदि भळ (३७) समगम पात है । (३८) मनमा जनि करी (३९) पहि दिन कसन (४०) गये कळ हाइदि (४१) पात मम गम है (४२) मनसा पूर्व अबसि कै (४३) मन पुनी का हील (४४) काज मुम्य है कळ न (४५) काजवनि है मळ (४६) काज अप्य र्ही न (४७) काज मुम्य र्ही (४८) मुमुष कळ हाइ (४९) निरपन ही म र्ही देयी (५०) मन चिंता कळ होइ (५१) काज होइदि मय (५२) भासा पत्रदि जव (५३) गये कळ होइदि (५४) काज गपवा कै होइ (५५) जवहीं बेट रदहु (५६) गये कळ होइदि (५७) चितमह होइ गो करी र्ही न (५८) काज मुम्य है बहहु (५९) काज मुम्य है मय (६०) काज मुम है; प्रबसि कै इति धी मगुनीती गमासं मंवर १८२७ बुवार वर्षी अष्टमी बुधवार दशम्यत पुनल चंद क ।

विषय—शास्त्र अथशास्त्र ज्ञान की दो रीतें ।

संख्या २०७ ताम्रिक, रचयिता—शास्त्री यमुनाच, कागज—माधारण, पत्र—

३९, आकार— $६ \times ५\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपट्टू)—८७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०३ = १७४६ ई०, लिपिकाल—१६२४ = १८६७ ई०, प्रासित्वान—श्री कृष्णपाल मिह, ग्राम—तिवारीपुर, टारुवर-सागीपुर, जिला—प्रतापगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ सामुद्रिक ॥ श्री दाम्नी यदुनायो जयति ग्रथ सामुद्रिकं ॥ इय ग्रथ के देखते यो सम्पूर्ण जन्म का हवाल ज्ञात होगा । आयु ज्ञान होगा जितना वर्ष जीवन होगा सो ज्ञान होगा जो जो सुख किन्वा दुःख होनेवाला जो जो वर्ष यो होने वाला है सो ज्ञान होंवेगा जितना जिमका पुत्र होगा किम्बा कन्या होगी किम्बा नपुंसक होगा वन्धा होगा सो सब हाल लिखा ज्ञान होगा जितनी स्त्री यो भोग होगा यो हान मालूम होगा राजा होने का चिन्ह । चोर होने का लक्षण सुगी दुर्गी पापी पुण्यात्मा होने का सब हाल मालूम होने के वास्ते नाना प्रकार के सपूर्ण चिन्ह का हाल लिखा जो है सो जानिये वास्ते बढ़ो परिश्रम करके यह ग्रथ समग्र हो गया है । इस ग्रथ बढ़ो दुर्लभ है सो सपूर्ण प्राणियों के ज्ञान होने के वास्ते प्रगट हुआ है । इस ग्रथ से बढ़ा उपकार ज्ञान होगा मोठ वृत्तान्त के श्री ब्रह्मा जू श्री हरि भगवान सो प्रदत्त करें हैं कि हे प्रभु पुत्र का लक्षण, स्त्री का लक्षण यथोचित आप कृपा करके हमसों कहों ॥

अत—इदद्रिक शास्त्र विष्णुणा परिभाषितं । श्रुत्वाधत्वा यदि ग्याचशौकान जहति पंडितः ॥ अर्थ ॥ श्री महादेव जी श्री पार्वती भगवती जी सों कहें हें कि हे गिरिराज नन्दिनी प्रिये यह सामुद्रिक शास्त्र तो श्री विष्णु भगवान जू श्री ब्रह्मा जू सों कहा है । यह सामुद्रिक शास्त्र को यदि कोई प्राणी श्रवण करे याके अर्थ को धारण करे याको पढ़े पढ़ावे तो यह सामुद्रिक शास्त्र के जानने सो वा प्राणी बुद्धिमान पंडित होके सपूर्ण मन्मार के मध्ये नाना प्रकार की चिन्ता को त्याग करके सुखी होगा ॥ सपूर्ण कामना को पावेगा ॥ इति श्री तत्र सासुद्धै हर गौरी सवादे संपूर्ण स्त्री-पुरुष लक्षण शुभाशुभ कथन समाप्तम् ॥

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ३२ तक—भूमिका, हस्त के चिन्ह के प्रसार, टाहिने हाथ में पुरुष के और बायें हाथ में स्त्रियों के देखने का आदेश, मीन, तुला, ध्वजा, पद्म-पत्र, धनुषादि चिन्हों के फलाफल, अंगुष्ठ चिन्ह विचार, अंगुणियों के मूलादि के चिन्हों का विचार चिन्हों द्वारा आयु विचार, माता पिता का विचार, बहु रखा विचार । शयन-पद्म विचार । शीप का विचार, नख के विचार, हस्त के विचार ।

(२) पृष्ठ ३२ से पृ० ७८ तक.—लिङ्ग लक्षण, लिङ्ग के प्रसार, ललाट वर्णन, योनि लक्षण एवं उसके प्रकार, योनि के फलाफल, कोख लक्षण और उसके फलाफल, भुजा लक्षण, जंघ लक्षण चरण लक्षण, गुदा लक्षण, सर्वाङ्ग लक्षण । स्त्रियों की नाभि, उदर, कुच, हृत्वादि के चिन्हों का विचार । शरीर के वर्ण के संबध से फलाफल, मुखआकार के विचार से, रोम के संबध से विचार, नारी की चाल के विचार से फलाफल, भाग्यवती स्त्री के लक्षण, प्राणी के चरणादि के आकार-प्रकार के अनुसार शुभाशुभ लक्षण । वीर्य तथा मूत्र की गंध तथा धार के विचार । सामुद्रिक के पटन पाटन का फल ।

प्रथम निर्माण-कारण—शामा कासङ्ग चन्द्रा बने, मार्ग स्त्रीयें सिते हूँ । ह्रादस्वाँ चरबी
श्री मद् पशुनाये बमो दित में ३

संख्या ५०८, मुगुल्लहट, रचयिता—मुगुल्लहटोर, कागज—भाषाविक, पत्र—८९,
आकार—८×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुच्छेद)—८६०, पूर्ण,
रूप—नवीन, पद्य, कवि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री संकटाप्रसाद अवस्थी, ग्राम—कीरट, जिला सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । जय जगुल्ल हट कृष्णते ॥ आहुरी छवि अधिक कसी
है । बेबीरी या बीच नकीकिक आसीरी आश्रित बीच बसी है ॥ करिपट ककित काकनी
अडे पीठ पिडीरी मति कसी है । ठापर सेजु विपाम विराजत हा ऊपर गो रोम रसी है ।
मुचमात बबमाळ रही कबि कबि उपमा कडे कीन पेसी है मरकत मंदिर ते मंडाकिनि पुत
पूजा पुग धारबसी है गोपबंस अब तंस अछोकिक सेत घात रज गाव बबसी है । बरहा
पीठ नीच सोभा को बदन बिलोकिक आजत मसी है ॥ कुडक मकर निकर अलक्य भूत अबर
मपुर सुंदु मंद इसी है । कियो है शौराय रम प्रियुवन को वसत वमक दरसाव वसी है ॥
जगुल्ल आदि अनुराग न या कबि ताहि त्यागु मुच काइ मसी है ॥

अंत—राजत राकेस बंस सैबत पद परम इस अहुजुल्ल अवतस अंस बाहु सहित
प्यारी ॥ हुन्दावन अति अर्बद फूके तक विविधि बन्ध कटक उपदि कटा बेकि सब क्रिम
मुक करी ॥ तावन के हुम असीय परम रम्य सोमधीय तपनि तनय मोह नीय सोमा सुठ
प्यारी । इत्यक मणि जडित लौनि दशिर सुचिर भांति लौनि जग मग नग होति ज्योति
उचत उजियारी ॥ बिहरत मित नव किशोर ह्य राशि चित के चोर बाम श्रेण राजत नुपमान
की हुनारी । जप्य जप्य सुचमि जोहिं ललित ककित कर कनोहि सुवर अंपार हार मूपय तप
पारी मिरलत कर मन्थिय बाहु कान माक सेत बाहु बाजत मृदंग रंग मुरकि तान तारी ।
धोरत तत बेह येह कोलत मुक मंजु सैह इसल वसन वसन वैलि दामिनि दुतिबारी विच
विच में रसिक क्यक विच विच नम छविने जाक मरकत मणि हुंहु माल भाषिये संबारी ॥
माथी धव कदिन कदन वमक बकत पीठ परम शककत बिभु आनन पर अककन हुंहुवारी ॥
कुंरल की बटक मटक नये नये सोह मुकुट कटक चाक पदकी पटक पायक की कटक झटक
मुकि अकक संमारी कंकर मंजीर झनक किंकन पपर की कवक प्योम जाव मुर मुजाव सेत
सुधि संमारी ॥ इरत सिर मुकुट माल कुचत अम बारिमाळ पोछत इसि मंजुलाक परी मुप
सुधारी । पुककति मझादि बैपि काबत महि मित्र मिनेपि प्रसि धयि बयबाक कइत कोषक
अक भारी । अमक परत बमत माम पुहुमि मुहुमि पर प्रथम दाम्बो बजु दुतिय रास मिर
पत अथिधारी । सब विधि मतिमंद जासु बरमत कबि जगुल्लास शीमे रति रसिक राम
जान अयत तारी ॥ वपा श्री बानी नू की कृपा वपा सुरेस कृपाल । मह समासि यह जगुल्ल
कृति सुवशा लादिसी काक ॥

विषय—शामा कृष्ण का प्रेम क्रीला और क्रीला आदि मजनों में वर्णन ।

संख्या ३०१, श्री कृष्ण पत्र, रचयिता—जाहरमिह, कागज—पैसी, पत्र—३२,
आकार—६×९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुच्छेद)—३२०, रूप—

विल्कुल फटी, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्रासिस्थान—
लाला दीनदयाल, ग्राम—देवरिया, डाकघर—धानी पेडा, जिला—उन्नाव ।

आदि—कान्हा भयोरी व्रज आँतारी ॥ टेक ॥ हाट वाट में वहियां मतकत हे वांसुरी
में देवे गारी । ग्वाल बाल सवही सग लीने सँचत चीर हजारी ॥ कान्हा ॥ १ ॥ होरी
के दिन आमन टे सांवरे वोरि टीजो रग शारी जाहर की ताँ अर्ज यही हे सुनो हो कृष्ण
सुरारी ॥ कान्हा ॥ २ ॥ कान्हा । भयोरी होरी को गिलारी ॥ टेक ॥ फोटे चढ़ ताँ कींचहि
मारँ जमुना जांऊ पिचकारी, गोकुल जाऊ ताँ रगही में वोरें ग्रँमी कत मोह वारी ॥
कान्हा ॥ चिन वोलिन मोकूँ दैन न आवत काहे वो करत वरजोरी । जाहर पिया मे विनती
करत हे जान देव गिरधारी ॥ कान्हा ॥ पिय आयोरी आज हमारो ॥ टेक ॥ मुनियोरी मोरी
संग की सजनी स्वही करँ सिंगारौ । पिया सग चलि होली जु खेलें करि देव वाम मत
वारो ॥ पिंग ॥ बहुत दिना पाठे पिया जु आयो मोमे रहत निआरौ । अच के पिया मे
अँमी मिलूगी जैसे गगन बीच तारो ॥ अच के फाग में पिया जु आयो सवही दुख विसारो ।
जाहर पियामे ओही रहत हे तुम गाओ मंगल चारो ॥

अंत—इतनी कोइ कहियो हमारी ॥ नदनदन व्रज राज मावरे मे पे ह्यो नारी ॥
पांय परमि कर विनती करियो आँ करि जोरि के डाटी ॥ ता पीठे इतनी कहि टीजो पिय
मोहिं काहे को निमारी सुधि लीनी न पकाँ वारी ॥ मोय गुलाल लाल चिन तेरे भई हे
रँनि अधियारी । असुवन को मँने रंग वनायो नयनन श्री पिचकारी पिया मोही आस
तिहारी ॥ वृन्दावन की कुंज गलिन में दूढ दूढ मैं हारी ॥ देव दरस पिय अपनी माँज
मे पेहो कृष्ण सुरारी ॥ अर्ज सुनि लीजाँ हमारी ॥ लावनी० ॥ चलो यार कहीं सैर करँगो
वाग चमन गुलजार हुआ नहीं किसी मे काम हमारा दिल तेरे अखतयार हुआ ॥ सवज
अँस आँर बीच में वगला नशे बीच सरमार हुआ ॥ एक पलग पर अँस करँगें अच पूरा
इकगर हुआ ॥ खिला मोतिया रायवेली आँर चमेली पर क्या प्यार हुआ ॥ गुल चीनी
आँर गुलाब हुआ हो चटक चटक लाचार हुआ ॥ गुल रदोसन नव खिला ववूना मारँ सिरी
गल हार हुआ ॥ चमक चादनी मुख पे तेरे चम्पा चाँकीदार हुआ ॥ करलेना एक फेरा
सुझको फिरता हूँ हुमियार हुआ ॥ मोन जुही के कवे कान में गुल तुराँ पुर कार हुआ ॥
मर चाटे तू गरदन सुझको मे तेरा तावेदार हुआ ॥ कर वाले तू तावेदारी मन राजा सुखतार
हुआ ॥ नहीं हुसन तेरा खिला केवडा जीवन थानेदार हुआ ॥ नरगस सी वनरही कामनी
गुल टेस गुलदार हुआ ॥ हे दीवानो सूँढ फूल हजारा गैदा मे तकरार हुआ ॥ गुल मेहदी मे
लकी कामनी उनका यही इजहार हुआ ॥ कैला कई अकेला तुझविन इन बातों में खार
हुआ ॥ कहीं मालती माल गीर तुम में देख तैयार हुआ ॥ महक केतकी रही वजे मे कमर
सौर गुल जार हुआ ॥ मरे दुष्ट अज्ञान बहुत से जब कौड़ा तैयार हुआ । गुरु नयन सिंह
कई हमरे से मिल हमारा डर हुआ ॥ चलो यार कहीं सैर करँगो वाग चमन गुलजार हुआ ॥
दो० ॥ रितु वसत को देख कर मन हुलस्यो अति अंत । होली की चरचा यहँ मित्रों के सत
संग ॥ जो जन याको देखि हैं सवते विनती मोर । भली प्रकार विचारि कै सुद्ध करँ मौखोर ॥

इति श्री कृष्ण चाग याहर सिंह कृत संपूर्ण समाप्तः श्री शशी रामनीामी संवत् १९३२
वि० ४ लिखा रामसिंह टाकुर ईसवादा बार मे श्री राम जी की ॥

विषय—हार्मी वर्णन ।

सप्तपदा ३१० पं. शशीश्वर देव की कथा, रचयिता—श्रीराबरमल (नागपुर),
कागज—शरी, पत्र—४०, आकार—१×५ इंच, पैकि (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण
(अमुचुपू)—२५०, पूर्ण, रूप—बहीन, पद्य, छिपि—नागरी, रचनाकार—सं० १८२७ =
१७१७ ई०, लिपिकाळ—सं० १९२६=१८१६ ई०, प्राप्तस्थान—श्री त्रिसुबन सिंह, ग्राम—
शाहपुर, बाक्यर—नेरी, शिक्षा—सीतापुर ।

शक्ति—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शशीश्वर देव की कथा किय्यते ॥ सुरमुनि सुमिरी
मारी माय । गमपति छागू चार पांच ॥ तू सुमिरांग सुप संपति धाय । गीरी सूत मोहि
बुद्धि बनाय ॥ गुह प्रगाम करि सीस नवाळ । सुरज सुत गाया गुण गाळ ॥ गुह की आज्ञा
जो मैं पाळ । शशी देव को प्रथम बनाळ ॥ कथा करूँ सनि देव की माया सरस बनाय ।
गुह की आज्ञा पाइक मन में किया बिचार । आपय जोरी सुगुत सों कथा करी विस्तार ॥
श्री० ॥ सुमिरी देव शशीश्वर राजा ॥ मन बाँझित मारै सब काजा ॥ साँपों देव शशीश्वर
कहूँ । जाके पंच मदा में रहौ ॥ सुर तीनीस मुनीश्वर प्यावै । ब्रह्मा विशुन महेश मनावै ॥
सब सूँ सिरि गिरि अति मारी । निस दिन प्यान घरै नर नारी ॥ सुमिरे जाक सदा सुप
क्यारी मूँल ताकी करै पुचारी ॥ सुरज सुत छाया को पूत । जाकी माया है अद्भुत ॥ सुर
नर मोसूँ कोई न छानि । सदा सर्वदा पाछूँ मानै ॥ पाकी कथा सुनि चितलाप । बिबन टरी
सुप संपति धाय ॥ नीठ प्रह सदा सुप दाइ । एक समै मिळि समा बनाई ॥ अमुचुत
सभा देवि मन हरथी । ताकी छवि मैं कहाँ ली बरणी ॥

अंत—सनि देव मोझे है गिरि । नीठ प्रह में सब सों सिरि मैं इनका अपमान क्यो
हो ॥ तो मैं इतनो बुद्ध पन्थो ही ॥ गुह संकट सचही मैं सद्यो । अपनो सब पिरतांत तू
कथा राजा कहे बहुत बुद्ध पायो । मेहर भया तब तुम पै जायो ॥ सचही सनि की पूजा
करै । अपनो मंऊत गयो ई परै ॥ सारे सहर में बोड़ी छिरबाई । पूजा करिबो शनि की
भाई ॥ सारे सहर में पूजा करी । राजा कहे सा बात है परी ॥ शैली काम शनि की मे
क्रियो । प्रसन्न हूँ की राजा छिर दिया ॥ राजा बचन सदा सत कयो । बहुत बरप रत्ना सुनी
रह्यो ॥ निरा दिन प्यान शनी को करसी । सबबाँझित कारज सब सरसी ॥ आपय माशुर
भीष कृष्ण बग नागपुर बास । निस दिन प्याब शनी को पूरे मन की भास ॥ श्रीराबर मल
नाम है बुद्धमराय सुन जाव । क्यको जीबमशाम है ताकी गोद बनाय ॥ उरम बरम बचोम
की प्रथ किया कबिराज । कछदायक शुभ सजन हूँ पढ़ब सुगब के काज ॥ शशी कथा
सनेह सूँ परै सुनि नर नारि । अष्ट मिळि ताको मिलै निहई चिन में धारि ॥ सुनि सुनाई
शनि कथा मन में प्रीति बनाय । सत्य बचन शनि जी कहत ताके संकट जाय ॥ अपनी
मति अनुचार यह कथा कही ततमार । भूट भूट जो शय सा लीजी कही सुचार ॥ श्री मे
दे बचन करी तीमें भूट न भूर । बिक्रम भूष इतिहास की भाई कथा सरपूर ॥ संबन्ध पुराण

वीस हैं तापर वेद वपाण । सोमवार सुदि पचमी जेट माम की जाण ॥ इति श्री शनीश्चर देव की कथा संपूर्णम् सवत् १९२६ में लिखी ॥

विषय चिक्रमादित्य राजा की जो दशा शनिश्चर देव के क्रोध से हुई थी उसका वर्णन ॥

संख्या ५१० वी. शनिश्चर की कथा, रचयिता—जोरावरमल (रामपुर), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुदुप्)—२५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२४ = १७६७ ई०, लिपिकाल—सं० १८२६ = १७६९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री शिवदीन जोशी, ग्राम—पतरामा, ढाकवर—खैराबाद, जिला—सीतापुर ।

तृतीय परिशिष्ट

अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ



तृतीय परिशिष्ट

अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल		विशेष
			ईसाई संवत्	ईसाई संवत्	
१	अतरिया देव की कथा	कथा जिसके पठ से पापी का बुरा छूट जाता है		१८२६	
२	अन पद	शुक्ल विचार		१८१७	
३	अर्थ	प्रकृत एवं गणितनोतिव	---		
४	अष्टावक्र वेदांत की ज्ञाना	दार्शनिक अष्टावक्र गीता का पद्यानुवाद		१८६६	
५	अश्वमेध खपेटिका	अश्वमेध विषयक निद्रात्मक पद्य		१८७७	
६	शंभुनाथ	बाभूगरी			तीन प्रतिषाँ
७	एकादशी महादश	एकादशी व्रत का माहमस्य	..		
८	ओनामासी पञ्चपटी आदि	प्राचीन ढंग से हिंदी बर्णनात्मक सिद्धान्त का नवविधान		..	
९	श्रीपत्रियों की पुस्तक	वेपथु		..	तीन प्रतिषाँ
१०	श्रीपत्रि संग्रह	"			दो प्रतिषाँ एक प्रथम
११	श्रीपत्रिय				
१२	कच्छरा में भी महादेव का विवाह	शंकर-विवाह का पद्यबद्ध कथन आकाशदि क्रम से		१८६८	
१३	कथा संग्रह	हास्यपूर्ण की कथानियों का संग्रह			
१४	कलिकावत-वचन	कलियुग बर्णन		..	
१५	कवितावली अंगगत्रा	पद्यावली			
१६	कवित	"	
१७	कवित संग्रह	"	दो प्रतिषाँ
१८	कवित सार	"		..	
१९	काव्य बरक	मृत्यु का टीका मविष्य कथन के ढंग	..		
२०	केवल प्रश्न दिवाकर	बर्णित	दो प्रतिषाँ
२१	सोह	राधा-कृष्ण संबंधी गृह्यारिदादे	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल		लिपिकाल	विशेष
			ईसवी संवत्	ईसवी संवत्		
२२	गणेश व्रत कथा	गणेश व्रत की कथा	...	१८१३		
२३	गरुड पुराण	पुराण	१८४७	...		तीनप्रतियाँ
२४	गर्भगीता	पुनर्जन्म-मिथ्यात गद्य में	१७१०	१७१०		तीनप्रतियाँ
२५	गीतागोदानुवाद	गीता का गद्य में अनुवाद		
२६	ग्रहण की पोथी	सूर्य और चंद्र-ग्रहण	१८७१	१८७४		२ प्रतियाँ
२७	घोड़ों का इलाज	पशु विषयक		
२८	चर्चासिफिक.महावीरपुराण)	ज्ञान दर्शन		
२९	चित्रकूट माहात्म्य	चित्रकूट तीर्थ का माहात्म्य		
३०	चौदह विधान	शृंगारी	..	१८३५		
३१	जत्र मंत्र	भाडफूँक		
३२	जत्रावली	"		
३३	जोगिनी दस को विचार	ज्योतिष		
३४	ज्योतिष	"		
३५	टिकारी राज्य का इतिहास	टिकारी राज्य का इतिहास		
३६	दश अवतार	भगवान के दश अवतारों का वर्णन		
३७	दान लीला	राधा-कृष्ण विषयक शृंगारी काव्य		
३८	दृष्टातसार	आदर्श उपदेश	...	१८३४		
३९	दोहासार	विभिन्न कवियों कृत उपदे- शात्मक दोहों का संग्रह	...	१८५६		
४०	द्वादश राशि विचार	ज्योतिष		
४१	धर्म सवाद	दो मुनियों का पौराणिक सवाद	...	१८४०		पाँचप्रतियाँ
४२	नक्षत्र प्रकाश	ज्योतिष	१८२६	१८२८		
४३	नाडी प्रकाश	नाडी-गति-विज्ञान (वैद्यक)		
४४	नामराशि लक्षण	ज्योतिष		
४५	पंचयज्ञ विधि	पाँच बलियों का विधान		
४६	पंचागदर्पण	ज्योतिष		
४७	पदमावत	रानी पदमावती की कथा		उच्चउर्दूमें
४८	पियूप प्रवाह	पशु-चिकित्सा और वैद्यक		हसमें हाथी बोद्रे, ऊंट, कुत्ते, बिल्ली पक्षी, गो चिकित्सा तथा अंतमें मानव चिकित्साके नुसखे ।

संख्या	ग्रंथ नाम	विषय	रचनाकाल ईसवी संवत्	संपिण्डकाल ईसवी संवत्	विशेष
४८	पूतना विधान	त्रिवो एवं बाहको की चिकित्सा		..	श्री प्रतिष्ठा
४९	पोषी प्रश्न	उपोत्थिप		१८११	
५०	पोषी रमल	"		..	
५१	पाषी सर्वगुण	वैद्यक		१८१७	
५२	प्रश्न चाल	उपोत्थिप		१८८८	
५३	प्रश्न और	"		१८१५	
५४	प्रश्न सब करज	"			
५५	प्रेम बोध	हिंदू प्रयोगों के आधार पर मगधमठि वर्णन	१६६६		
५६	प्रेम प्रबोध	प्रश्न की आधार मठि		१७२६	
५७	पौलनामा	गज चिकित्सा		१८८६	
५८	भारद राधि ज्ञान	आसु पर राधियों का प्रमाण	१८०३	१८०६	
६०	बिहारी सतसई की टीका	बिहारी कृत सतसई की टीका			
६१	वैशाख पचीसी	पचीस कहानियाँ	१७२५		
६२	मगधप्रतीता की बाल बाधिनी टीका	गीता का पद्यानुवाद		१८१०	
६३	मगधान दसो अक्षरार	मगधान के दसो अक्षर राधों का वर्णन			
६४	मगध संग्रह	धार्मिक गीतों का संग्रह	...		
६५	मरत मिश्राप	भरत की राम से मेट का मध्य वर्णन			
६६	भूगोष्ठ प्रमाण	पुराने टंग का प्रारम्भिक भूगोष्ठ			
६७	मंत्र	मंत्रकर्मक			
६८	मंत्र की पुस्तक	ब्रह्मकार के मंत्र			श्री प्रतिष्ठा
६९	मंत्र प्रयोग	" "			
७०	मंत्र संग्रह	" "	श्री प्रतिष्ठा
७१	मनिहारिन मेप	कृष्ण की गृहारी सीका			
७२	मनोहर कदनी	ब्रह्मकारपूर्ण कहानियों का संग्रह	१८३६		
७३	महादेव विवाह	शिव के विवाह का वर्णन		१८३६	
७४	मुक्तिका प्रश्न	उपोत्थिप		१८२७	
७५	दृष्टव विचार	शुभ पदिकों की उपोत्थि- पातुसार गणना		..	
७६	मोठी विनाले का मगधा	मोठी और कई के बीचका परस्पर उच्यताका बाद विवाद	..	१८७६	

संख्या	ग्रंथ नाम	विषय	रचनाकाल		लिपिकाल	विशेष
			ईसवी संवत्	ईसवी संवत्		
७७	यंत्रावली	भाङ्ग फूँक	तीनप्रतियाँ	
७८	युद्ध दीपक	राम-रावण-युद्ध		
७९	रंभाशुक सवाद	शुक और रंभा का सवाद		
८०	रमल	ज्योतिष		
८१	रमल प्रश्न	"		
८२	रमल सकुनावली	ज्योतिष		
८३	रमल सगुन	"		
८४	रमलसार प्रश्नावली	"		
८५	रमलसार-फलनामा	"	१५७६	१५७६		
८६	रवि कथा	"		
८७	रसनिरूपण	कोटिध्वज के पुत्र रवि की कथा तथा पार्श्वनाथ की भक्ति का उपदेश		
८८	राजुल पचीसी	काव्य रस का विवेचन		
८९	राधानाममाधुरी	नेमिनाथ विवाह की कथा		
९०	राधा स्वामी	शृंगार रस		
९१	रामगीता की टीका	राधास्वामी संप्रदाय के सिद्धांत	..	१८१६		
९२	रामचंद्र की बारहमासी	अध्यात्म रामायण के दार्शनिक सवाद		
९३	लेख पहाड़ा	वनवास में राम की वर्ष- चर्या का विवरण	...	१८७१		
९४	वदीमोचन कथा	पुराने समय का आरंभिक गणित		
९५	विषवा विवाह	नंदी देवी की स्तुति		
९६	बृंदावन साहस	प्राचीन धर्मशास्त्रानुसार विषवा-विवाह खडन		
९७	वेदात के प्रश्न	कृष्ण की प्रेम लीला		
९८	वैद्यक	दार्शनिक गुत्थियों के सुलभाव	...	१८३३		
९९	वैद्यक फरॉसीस	वैद्यक		
१००	वैद्यक सग्रह	फरॉसीसी वैद्यक		
१०१	वैद्यक सार	वैद्यक	...	१७८३		दो प्रतियाँ
१०२	व्यवहार दर्पण	"		
१०३	संग्रह	न्यायालय-विधान पद्यावली	...	१८३४		
			...	१८४७		
				

संख्या	ग्रंथ नाम	विषय	रचनाकाळ ईसाई संवत्	प्रकाशक ईसाई संवत्	विशेष
१०४	सकुन कुसकुन परीक्षा	अश्वे और शुरे लक्ष्यों की परीक्षा			
१०५	सगुन नव दिशा	ज्योतिष			
१०६	सगुनाबली	अक्षर फूँक			
१०७	सगुनीती	ज्योतिष			
१०८	सतसंवत्सर-मन्त्र	सो बयों का ज्योतिषा नुसार मन्त्र	१७१२	..	
१०९	समरसार	ज्योतिष	१७३६	१७६९	
११०	सार्मतसार बखनाबली	कठिनय बार्मिक विषय		१८८६	
१११	सामुद्रिक	इस्तरेला		१८१८	
११२	सारंगपर संहिता	वेद्यक		..	
११३	सार गीता	वेदांत दर्शन		१८१५	तीनपठियाँ
११४	सार संमह	वेद्यक			
११५	सापर मंत्र शास्त्र	अक्षर फूँक	..		
११६	सिद्धा सठार्ष	ठपदेश के शीरे			
११७	सिद्धांत	गुरु रामदास के सिद्धांत		..	
११८	सुख बहचरी	बहसर रोचक कहानियाँ	१८७३		
११९	सुभाषित	शिक्षाप्रद पद्य	१८६०		
१२०	सोचकपट्ट	अक्षर फूँक और ज्योतिष	
१२१	स्वरोदय	रुनास द्वारा शुभाशुभ विचार	..	१८६०	
१२२	स्वर्गरीहणी	मोक्ष			
१२३	इतल्ल सोपन	विष-विज्ञान			
१२४	इस्तरेला विचार	इस्तरेला			
१२५	हितोपदेश	राजनीति एवं शिक्षाप्रद कथाएँ	..		
१२६	हृदय प्रकाश	आत्मविद्या तथा सृष्टि रहस्य	१७१२		
१२७	हीरी	हीरी के गीत	..		
	अज्ञातनामा ग्रंथ	वेद्यक		..	दो पठियाँ



चतुर्थ परिशिष्ट

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय एवं सन् १९२८ ई० तक प्रकाशित
खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

८८

१

१

२

३

४

चतुर्थ परिशिष्ट

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय एव सन् १९२८ ई० तक प्रकाशित
स्रोत्र-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्रातः हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनके समय	विशेष
१	अमदास	१ रामचान मंजरी २ दितोरदेश उपाख्यान	१८२४ (लो० वि० १३०० सं० ७७), (लो० वि० १३०६-८ सं० २२१ ए), १८२६ (लो० वि० १३२०-२२, सं० १ बी.), (लो० वि० १३२३-२५ सं० ४), १८२० (लो० वि० १३२६ २८ सं० ४ ए. पी. सी) १३२६ (लो० वि० १३०३ सं० ६०), (लो० वि० १३०४-८ सं० १२१ ए), १८२४ (लो० वि० १३२० २२ सं० १ ए.)	इस ग्रंथ का नाम अमदास की कुंडलिया भी है।
२	अमृत्य रसिक उपनाम भगवती रसिक	१ निरुप विहारी सुप्रख्यान २ निर्विरोध ३ प्रेमदीपिका	लो० वि० १३२३ २५ सं० २०), (लो० वि० १३०० सं० २६) (लो० वि० १३०० सं० ३३) (लो० वि० १३२६ २८ सं० १४ बी. सी. बी.)	
३	कबीरदास	१ अमरमूल २ अत्रुपम सागर ३ अमृतनामा कबीर का ४ अक्षिप्रनामा (प्रथम और द्वितीय)	१८०६ (लो० वि० १३०६-८ सं० १७७ के) १८६३ (लो० वि० १३०६-८ सं० १७७ के), १७६० (लो० वि० १३०६ ११ सं० १४३ एफ) (लो० वि० १३२३-२५ सं० १६८) (लो० वि० १३०६ ११ सं० १४३ बी.) (लो० वि० १३०६ ११ सं० १४३ बी. ई.)	

संख्या	रचयिताओं के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		५ आरती कवीर कृत	(खो० वि० १६०६-११ सं० १४३ एच)	
		६ उग्रगीता	१७७६ (खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ एच.) (खो० वि० १६२३-२५ सं० १६८ ई.)	
		७ उग्र ज्ञान मूल सिद्धांत दसा मात्र	१८६१ (खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ एल.)	
		८ कवीर श्रष्टक	(खो० वि० १६०६-११ सं० १४३ डब्ल्यू.)	
		९ कवीर का वीजक	(खो० वि० १६०६-११ सं० १४३ एल.), १८५६ (खो० वि० १६२०-२२ संख्या ७४ ए.), (खो० वि० १६२१-२५ सं० १६८ डी.)	
		१० कवीर की रामायण	(खो० वि० १६०२ सं० १८५)	
		११ कवीर के दोहे	(खो० वि० १६०२ सं० ५४)	
		१२ कवीर की बानी	(खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ ए.), १७६७ (खो० वि० १६०६-११ सं० १४३ एम)	
		१३ कवीर गोरख गोष्ठी	१७५३ (खो० वि० १६०६-११ सं० १४३ यू पी.)	
		१४ कवीर जी का कृत	(खो० वि० १६०२ सं० १८८)	
		१५ कवीर जी का पद	(खो० वि० १६०२ सं० ५२, सं० १८२)	
		१६ कवीर जी की साखी	१७६४ (खो० वि० १६०१ सं० ८५); (खो० वि० १६०६-११ सं० १४३ वी.), (खो० वि० १६०२ सं० ५५, १८६, १८७)	
		१७ कवीर धर्म-दास की गोष्ठी	(खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ आई.)	
		१८ कवीर परिचय की साखी	१८८५ (खो० वि० १९०६-०८ सं० १७७ ओ)	

संख्या	रूपविशेषों के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		१६ कबीर साहिब की बानी	(खो० वि० १६०६ ११ सं० १४३ एम)	
		१० काया पंथी	(लो० वि० १६१७-१६ सं० ६२ बी)	
		२१ ज्ञान गुदरी	(गी० वि० १६०६ ११ सं० १४३ आर.)	
		२२ ज्ञान चौतीका	(सो० वि० १६०६ ११ सं० १४३ बी.), (गी० वि० १६२० २२ सं० ७४ बी.)	
		२३ ज्ञान सरोदय	(लो० वि० १६०६ ११ सं० १४३ डी.), (लो० वि० १६२३-२८ सं० २२४ बी.)	
		२४ ज्ञान सागर	१७९० (गी० वि० १६०६ ११ सं० १४३ एम)	
		२५ नाम मादान	(गी० वि० १६०६ ११ सं० १४३ ए. बी.)	
		२६ निमै ज्ञान	१८८८ (गा० वि० १६०६ ११ सं० १४३ ए.) (खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ आर.)	
		२७ ब्रह्म निरुत्तम	१८६१ (गी० वि० १९०६-८ सं० १७७ एम)	
		२८ मोहमद कोष	(लो० वि० १६०६ ११ सं० १४३ जेट)	
		१६ रमैनी	(गी० वि० १६०६-८ सं० १७७ ई) (गी० वि० १६०६ ११ सं० १४३ बी सी.) (गा० वि० १६२३ २५ सं० १६८)	
		१० रामरघा	१८४६ (गा० वि० १६०६ ८ सं० १७७ एम)	
		११ राममर	(गा० वि० १६०६ सं० १०८)	
		१२ विषयमाहा	(लो० वि० १६१७-१६ सं० ६२ ए.)	
		१३ विरहमाहा	(गा० वि० १६१७-१६ सं० ६२ ए.)	
		१४ ब्रह्म नाम	(गा० वि० १६०६ ११ सं० १४३ बी)	
		१५ सुवर्णकारकी	१७३७ (खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ जी)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		३६ सट्टावली	१८०४ (खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ पी.)	
		३७ सुरति-सवाद	१८६७ (खो० वि० १६२०-२२ सं० ७६ बी)	
		३८ स्वास गुंजार	१८४६ (खो० वि० १६०६-११ सं० १४३ जे.)	
		३९ हस मुक्तावली	१८६१ (खो० वि० १६०६-८ सं० १७७एन.)	
		४० हिडोरा व रिखता	(खो० वि० १६०६-८ सं० १७७ डी), १६०४ (खो० वि० १६०६-११ सं० १४३)	
४	कालीदत्त नागर	१ छविरतन	(खो० वि० १६२६-२८ सं० २१५ ए.)	
		२ रसिक विनोद	(खो० वि० १६२६-२८ सं० २१५ बी. सी)	
५	कालीदास त्रिवेदी	१ जंजीरा	(खो० वि० १६०४ सं० ५), (खो० वि० १६०६ सं० १७८ डी), (खो० वि० १६२३-२५ सं० २००)	
		२ वधू विनोद	१७६१ (खो० वि० १६०१ सं० ६८), १८१० (खो० वि० १६०६ सं० १७८बी.), १८८३ (खो० वि० १६२०-२२ सं० ७५), (खो० वि० १६२३-२५ सं० २००)	इस ग्रंथ का नाम 'राधा-माधव मिलन वधू विनोद' भी है।
६	कुलपति मिश्र	१ दुर्गा भक्ति चन्द्रिका	१७५४ (खो० वि० १६१७ १६ सं० १००)	
		२ द्रौण पर्व भाषा	१८१५ (खो० वि० १६०० सं० ७२)	
		३ नखशिख	१८५८ (खो० वि० १६०६-८ सं० १८५ बी.)	
		४ युक्ति तरंगिनी	(खो० वि० १६०६-८ सं० १८५ ए.)	
		५ रस रहस्य	१६७० (खो० वि० १६०३ सं० ५१), १८०२ (खो० वि० १६०६-११ सं० १६०), (खो० वि० १६२०-२२ सं० ८९ ए बी), (खो० वि० १६२३-२५	

संख्या	रूपविशेषों का नाम	इन्डलेनों के नाम	मास इन्डलेनों के उल्लेख तथा उसका समय	विशेष
७	केराबदास	<p>१ कविनिषा</p> <p>२ नग्नविषा</p> <p>३ रसिक विषा</p> <p>४ राम चंद्रिका</p> <p>५ विमान-बीजा</p>	<p>सं० २२८), (गो० वि० १६२६ २८ सं० १५० ए. बी सी)</p> <p>(गो० वि० १६०० सं० ५२), (लो० वि० १६०२ सं० १८२), (लो० वि० १६०४ सं० १२३, १२६), १७६९ (गो० वि० १७६ सं० ६६ ए.), (गो० वि० १६२० २२ सं० ८२ ए. बी.), (गो० वि० १६२१ २३ सं० २०७), गो० वि० १६२६ २८ सं० २३३ बी. सी. डी)</p> <p>१७६६ (गो० वि० १६०३ सं० २६)</p> <p>(गो० वि० १६०३ सं० ८६), १८१४ (गो० वि० १६०४ सं० १२८), (लो० वि० १६१७-१६ सं० ६६ बी), १७१७ (गो० वि० १६२० २२ सं० ८६ बी), (लो० वि० १६२३ २५ सं० १०७), (गो० वि० १६२६ २८ सं० २३३ ए. बी.)</p> <p>१८२३ (गो० वि० १६०२ सं० २३२), १६३१ (गो० वि० १६०३ सं० २१), (लो० वि० १६२३ २५ सं० १०७), (गो० वि० १६२६ २८ सं० २३३ ई)</p> <p>(गो० वि० १६०० सं० ५५), १८८६ (गो० वि० १६०४ सं० १२७), १८८१ (गो० वि० १६२० २२ सं० ८६ बी), (गो० वि० १६२३ २५ सं० १०७), (गो० वि० १६२६ २८ सं० २३३ ए. बी.)</p>	
८	भयभानसिंह	१ भुगवत सुना घरी	(गो० वि० १६२३ २५ सं० २२७)	

सख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनकी समय	विशेष
६	गवाल	२ रामगीता माला ३ राम चरित्र वृत्त प्रकाश १ अलंकार २ अलंकार भ्रमभंजन ३ कवि दर्पण ४ कवि हृदय विनोद ५ दूषण जू की नलशिख ६ गोपी पचीसी ७ जमुना लहरी ८ दूषण दर्पण ९ बखी बीसा १० भक्त भावन ग्रय ११ रस रग १२ रसिकानंद १३ हम्मीर हठ	(खो० वि० १६२३-२५ सं० २२७) (खो० वि० १६२३-२५ सं० २२७) (खो० वि० १६०५ सं० १२) (खो० वि० १६१७ १६ सं० ६५ ए) (खो० वि० १६१७ १६ सं० ६५ सी) १८३१ (खो० वि० १६२०-२२ सं० ५८ बी.), (खो० वि० १६२३-२५ सं० १४६) १८२२ (खो० वि० १६०१ सं० ८६), (खो० वि० १६२०-२२ सं० ५८ डी.), (खो० वि० १६२३-२५ सं० १४६), (खो० वि० १६२६-२८ सं० १६१ सी) १८८२ (खो० वि० १६०१ सं० ६०) १८६२ (खो० वि० १६२०-२२ सं० ५८ ए.), (खो० वि० १६२३ २५ सं० १४६), (खो० वि० १६२६-२८ सं० १६१ ए.) १८२२ (खो० वि० १६०१ सं० ८८), (खो० वि० १६२०-२२ सं० ५८ बी.) १८३४ (खो० वि० १६०६-११ सं० १०२) (खो० वि० १६१७ १६ सं० १५ डी.) १८६७ (खो० वि० १६०५ सं० १४), (खो० वि० १६१७-१६ सं० ६५ बी.) १८६७ (खो० वि० १६०५ सं० ११) १८६३ (खो० वि० १६०० सं० ८४), (खो० वि० १६२६-२८ सं० १६१ बी.) १८८८ (खो० वि० १६०५ सं० १३)	

संख्या	स्वामिप्राप्तों का नाम	हस्तगतों के नाम	प्रत्येक हस्तगतों के उल्लेख तथा उनका समय	दिनांक
१०	सद्वरदार	पुरुषोत्तम ठापा	१८२१ (गो. वि. १६०० सं. २, (गो. वि. १६०० सं. ६२), १५८८ (गो. वि. १६०० सं. ६३) १८२२ (गो. वि. १६०१ सं. ३८), १६६८ (गो. वि. १६०१ सं. ४७) (गो. वि. १६०२ सं. ८१, सं. २७२), (गो. वि. १६०८ सं. ११५), (गो. वि. १६०९ सं. १४६, १४७), (गो. वि. १६१० सं. ३५) १७६० (गो. वि. १६२०-२२ सं. २५ ए.), (गो. वि. १६२१ सं. २५ ए. बी, १६४७ (गो. वि. १६२३ सं. ७५ ए. बी)	
११	बालदास	१ अनेक प्रकार २ अमासोड अर्गट नाम ३ अलीग योग ४ अली रागदस ५ अगदर	१७२४ (गो. वि. १६२० सं. ३० ए.), (गो. वि. १६२३ सं. ७२) (गो. वि. १६०६ सं. १४७ ए. ए.) (गो. वि. १६१० सं. ३८ ए.), (गो. वि. १६२३ सं. ७८ ए.) १८८४ (गो. वि. १६०५ सं. १७), (गो. वि. १६१२ सं. ३६) १८३३ (गो. वि. १६०१ सं. ७०), १८१५ (गो. वि. १६०३ सं. १३५), (गो. वि. १६०६ सं. १४० ई), (गो. वि. १६१० सं. ३८ ए.) (गो. वि. १६२३ सं. ७२ ए. बी), (गो. वि. १६२३ सं. ७२ ए. बी), (गो. वि. १६२३ सं. ७८ ए. बी) १८२७ (गो. वि. १६२३ सं. ३८ ए. बी)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष		
१२	चिंतामणि	८ ब्रह्मज्ञान सागर	१८५८ (खो० वि० १६१२-१६ सं० ३६ सी) (खो० वि० १६२६-२८ सं० ७८ डी. ई० एफ जी.)			
		७ भक्ति पदारथ	(खो० वि० १६०६८ सं० १४७ डी.), (खो० वि० १६१७-१६ सं० ३८ बी.), (खो० वि० १६२३-२५ सं० ७४)			
		८ भक्ति सागर	१७८२ (खो० वि० १६१२-१६ सं० ३६ ए), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ७८ बी. सी)			
		९ राम माला	१८४६ (खो० वि० १६०६-८ सं० १४७ ए)			
		१० सदेह सागर	१८६३ (खो० वि० १६०५ सं० १६)			
		११ शब्द	(खो० वि० १६०६८ सं० १४७ सी.), (खो० वि० १६१७-१६ सं० ३८ डी.), (खो० वि० १६२३-२५ सं० ७४)			
		१ कवि कुल कल्पतरु	(खो० वि० १६२३-२५ सं० ८०), (खो० वि० १६०० सं० १२७), (खो० वि० १६०३ सं० १३७), (खो० वि० १६०४ सं० ११८)			
		२ पिंगल	१८६६ (खो० वि० १६०३ सं० ३६), १८१७ (खो० वि० १६०४ सं० ११६), १७८२ (खो० वि० १६०६-८ सं० १५१ ए.), (खो० वि० १६०६-११ सं० ५०), (खो० वि० १६२१-२२ सं० ३०)			
		१३	जगतसिंह चौता के	१ अलंकार सटि दर्पण	(खो० वि० १६२३-२५ सं० १७६ डी.)	
				२ नखसिख	(खो० वि० १६२३-२५ सं० १७६ जे.)	
				३ रसिक प्रिया तिलक	(खो० वि० १६२३-२५ सं० १७६ बी.), (खो० वि० १६२६-२८ सं० १६२ ए.)	

संख्या	रक्षिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
१४	अक्षयवसिष्ठ, (महाशय)	४ साहित्य मुद्रा निधि १ अक्षयवसिष्ठ सिद्धांत २ माया भूयस	(ला० वि० १९२३ २५ सं० १७६), (लो० वि० १९२६ २८ सं० १९२ बी.) (लो० वि० १९०१ सं० ७१), १७२७ (लो० वि० १९०२ सं० १४) (लो० वि० १९२६ २८ सं० २०१ ए) (लो० वि० १९०२ सं० ४७), १८०१ (लो० वि० १९०३ सं० १४४), (लो० वि० १९०६-८ सं० २४१), १८६० (लो० वि० १९२० २२ सं० ७०), १७८२ (लो० वि० १९०६-८ सं० १७६), (लो० वि० १९२३ २४ सं० १८३) (लो० वि० १९२६-२८ सं० २०१ बी., सी., टी., ई.)	
१५	जीवरात्रसिंह विमुन	१ प्रेम पपीसी	१८७९ (लो० वि० १९२३-२४ सं० १९७)	
१६	देहरमल, अपपुर के	२ मोरनिधि दीपिका १ गोमाधर सम ग्राम चंद्रिका २ पिछोके सार ३ मोदमाग प्रकाश	(लो० वि० १९२३ २५ सं० १९७) (लो० वि० १९२३ २५ सं० ४२६) (लो० वि० १९२३ २५ सं० ४२६) (ला० वि० १९२३ २५ सं० ४२६)	
१७	ठाकुर	१ कूट कविच	(लो० वि० १९२३ २४ सं० ४२६)	
१८	दससी-गस (गाम्बामी)	२ सतसेवा बर्नार्थ १ उपदेश दोहा २ कवित्त रामा वष्य	१८५३ (लो० वि० १९०४ सं० १८) १८६० (ला० वि० १९०६ ११ सं० ३१३ जे) १९६६ (ला० वि० १९०३ सं० १७५), १८५६ (लो० वि० १९२०-२२ सं० १९८ एए) (ला० वि० १९२३ २५ सं० ४३२), (ला० वि० १९२६ २८ सं० ४८२ ई एए)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		३ कृष्ण गीता-वली	१८०२ (खो० वि० १६०४ सं० १०७), १८३५ (खो० वि० १६०६-११ सं० ३२३ सी.), (खो० वि० १६२०-२२ सं० १६८ जी.), (खो० वि० १६२३-२५ सं० ४३२), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ४८२ एच)	
		४ गीतावली	१८०२ (खो० वि० १६०४ सं० ६०), १८६७ (खो० वि० १६०६-११ सं० ३२३ जी.), (खो० वि० १६१७-१६ सं० १६६ सी.), १८२४ (खो० वि० १६२०-२२ सं० १६८ एच.), (खो० वि० १६२३-२५ सं० ४३२), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ४८२ आर. एस)	
		५ छुप्पय रामायण	१८७१ (खो० वि० १६०६ ८ सं० २४५ एच)	
		६ जानकी मंगल	(खो० वि० १६०३ सं० ७६), १८१७ (खो० वि० १६०६-८ सं० २४५ एफ.), १५७५ (खो० वि० १६२०-२२ सं० १९८ ई.), (खो० वि० १६२३ २५ सं० ४३२), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ४८२ बी सी डी.)	
		७ जान दीपिका	(खो० वि० १६०५ सं० २१), १६०१ (खो० वि० १६०६-११ सं० ३२३ सी), (खो० वि० १६२३-२५ सं० ४३२)	
		८ तुलसीदास जी की बानी	१७६६ (खो० वि० १६०६-११ सं० ३२३ जे)	
		९ दोहावली	(खो० वि० १६०४ सं० ६२), १८४४ (खो० वि० १६०६-८ सं० २४५ सी), १८३६ (खो० वि० १६०९-११ सं० ३२३ बी), (खो० वि० १६२०-२२ सं० १९८ बी.सी.)	

क्र.सं.	रूपदिजाओ का नाम	इसमें से नाम	मान इसमें से उम्मेदवार का उम्र का समय	स्टिपेंड
१६	दुसरी गण समय:	१० बारी सम्पन्न	(गा. वि. १६२१ २५ सं. ११२) (गा. वि. १६२१ २८ सं. ४२२ को. पी. ए.) १८१६ (गा. वि. १६०१ सं. ८०), १८६० (गा. वि. १६०६ सं. २५५ ए), (गा. वि. १६१० १६ १६६ बी)	
		११ बाहु सार्व	१८२५ (गा. वि. १६०२ सं. ११)	
		१२ मंगल रामा पथ	१८२६ (गो. वि. १६०६ ११ सं. २२२ ए) (गो. वि. १६११ २५ सं. ४२२)	
		१३ गुरार सभावा	१८०६ (गो. वि. १६२० २२ सं. १६८ ए)	
		१४ रामचन्द्र मानस	१६५७ (गो. वि. १६०० सं. १), १६०८ (गो. वि. १६०१ सं. २२), १६७८ (गा. वि. १६०१ सं. ८८) १७१७ (गा. वि. १६०२ सं. १६७ १६८, १६९), १८१८ (गा. वि. १६०८ सं. १७५) १६०५ (गो. वि. १६२० २२ सं. १६८ ए), (गा. वि. १६०१ २५ सं. ४१७), (गो. वि. १६११ २८ सं. ४२२ ए बी सी डी ई ए. ओ, ए. ए. ए. ई. ई. ई.)	
		१५ राम रजारा	१८०२ (गा. वि. १६०२ सं. ६३), (गा. वि. १६११ २५ सं. ४१२)	
		१६ रामलाल जी का राम दारा	१७१६ (गो. वि. १६०१ सं. ८७, १८) (गो. वि. १६०६ सं. २५५ डी), १८२८ (गो. वि. १६०६ ११ सं. २१७ ए), (गो.	

संख्या	रचयिताओं के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		<p>१७ विनयपत्रिका</p> <p>१८ वैराग्य सटी-पनी</p> <p>१९ हनुमान बाहुक</p>	<p>वि० १९२३-२५ सं० ४३२), (खो० वि० १९२६-२८ सं० ४०४, ४८२ ए.ग. एम.) एन, ग्री, पी, क्यू)</p> <p>१८२७ (खो० वि० १९०६-८ सं० २४५ जी), १८२२ (खो० वि० १९०६-११ सं० ३२३ एल.), (खो० वि० १९१७ १९ सं० १९६ एफ.) (खो० वि० १९२०-२२ सं० १९८ के.), (खो० वि० १९२३-२५ सं० ३३२), (खो० वि० १९२६ २८ ४८२ ए२ बी२ सी२)</p> <p>(खो० वि० १९०० सं० ७), (खो० वि० १९०३ सं० ८१), १८२६ (खो० वि० १९०६ ८ सं० २४५ ई०), १८०० (खो० वि० १९०६-११ सं० ३२३), (खो० वि० १९१७-१९ सं० १९६ डी.), (खो० वि० १९२०-२२ सं० १९८ जे), (खो० वि० १९२६-२८ सं० ४८२ डी.)</p> <p>१८०२ (खो० वि० १९०१ सं० ६०), (खो० वि० १९०३ सं० १७०), १८७१ (खो० वि० १९०६ ८ सं० २४५ बी. सी), १८६० (खो० वि० १९०६-११ सं० ३३२ डी, ८५०), (खो० वि० १९२० २२ सं० १९८ डी.), (खो० वि० १९२३-२५ सं० ४३२), (खो० वि० १९२६-२८ सं० ४८२ टी, यू, वी.)</p> <p>१८६३ (खो० वि० १९१२-१६ सं० १८९)</p> <p>१७८६ (खो० वि० १९२०-२२ सं० १९६)</p>	
२०	तोपनिधि	<p>१ दीन व्यंग सत</p> <p>२ रति मञ्जरी</p>		

संख्या	रचयिताओं का नाम	इस्तलेखों के नाम	प्रस्त इस्तलेखों के उस्तलेख तथा उनका समय	विशेष
२१	बुद्धनदास	१ सुभानिधि साखी या बोधानखी	१८८२ खो. वि. १९०९ ११ सं. ११९) खो. वि. १९२१ २५ सं. १०६, खो. वि. १९०९ ११ सं. ७८, खो. वि. १९२० २२ सं. ४६	
२२	बुद्ध	कविकुल कंडामाल	खो. वि. १९०३ सं. ४३, खो. वि. १९०६-८ सं. १६२ १८७३ (खो. वि. १९०९ ११ सं. ७७), १८८७ (खो. वि. १९२० २२ सं. ४५ प., बी) (खो. वि. १९२३-२४ सं. १०७)	
२३	देवदत्त (देव)	१ अष्ट याम २ काम्य रसायन ३ कुपल विज्ञान ४ प्रेम वर्ण चंद्रिका	(खो. वि. १९०० सं. ३३), (खो. वि. १९०२ सं. १२१), १७५७ (खो. वि. १९०३ सं. १३८), (खो. वि. १९०४ सं. १२०), १८२० (खो. वि. १९२० २२ सं. ३८ बी), (खो. वि. १९२३-२४ सं. ८९), (खो. वि. १९२६-२८ सं. ९५ प.) (खो. वि. १९०५ सं. २८), (खो. वि. १९०६-८ सं. १५६) १८९८ (खो. वि. १९०९ ११ सं. ६४ सी), (खो. वि. १९२० २२ सं. ३९ ई), (खो. वि. १९२३ २५ सं. ८९), (खो. वि. १९२६-२८ सं. ९८ प.) १८३६ (खो. वि. १९०४ सं. ३७) १८८० (खो. वि. १९०३ सं. २८), (खो. वि. १९०४ सं. १२१), (खो. वि. १९०९ ११ सं. ६४ बी), (खो. वि. १९२३ २५ सं. ८९), (खो. वि. १९२६-२८ सं. ९५ प.)	

संख्या	रचयिताओं के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
२४	नंददास	५ प्रेम दर्शन	१६०४ (खो० वि० १६०६-११ स० ६४ ए.), १८४१ (खो० वि० १६२०-२२ स० ३६ एफ.)	
		६ भाव विलास	१८०० (खो० वि० १६०३ स० ४१), (खो० वि० १६०४ स० १२१), १८४८ (खो० वि० १६०६-११ स० ६४ एफ.), १८४८ (खो० वि० १६२०-२२ स० ३६ ए.), (खो० वि० १६२३-२५ स० ८६),	
		७ सुखसागर	१८१८ (खो० वि० १६०६-११ स० ६४ ए.), १८४१ (खो० वि० १६२०-२२ स० ३९ डी.), (खो० वि० १६२३-२५ स० ८३)	
		८ सुजान-विनोद	१८०० (खो० वि० १६०३ स० १०८)	
		१ अनेकार्थ मञ्जरी	(खो० वि० १६०२ स० ५८), १८०२ (खो० वि० १६०३ स० १५३), १८०६ (खो० वि० १६०६-११ स० २०८ डी), १८०१-१८४६ खो० वि० १६२०-२२ स० ११३ डी ई०), (खो० वि० १६२३-२५ स० २६४), (खो० वि० १६२६-२८ स० ३१६ ए, बी, सी, डी, ई, एफ, जी.)	
		२ जोगलीला	(खो० वि० १६०६-८ स० २०० डी)	
३ दसम स्कंध भागवत	१७७६ (खो० वि० १६०१ स० ११), (खो० वि० १६०६ स० २०० बी. सी) १८४७ (खो० वि० १६०६-११ स० २०८ बी) १८०१-१८४६ (खो० वि० १६२०-२२ स० ११३ ए., बी), (खो० वि० १६१७-१६ स०			

संख्या	रूपविग्रहों के नाम	हस्तलेखों के नाम	प्रस्तुत हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका नाम	विशेष
		५ नासचैत पुण्य	११६ ए), (लो० वि० १६२३ २५ सं० २६४)	
		६ पञ्चाग्यायी	१०५६ (लो० वि० १६०६ ११ सं० २०८ ए)	
		७ विरह मंत्रि	१०६१ (लो० वि० १६०१ सं० ६६), १८१५ (लो० वि० १६०६-८ सं० २०० ए), १०३७ (लो० वि० १६१७- १६ सं० ११६ बी.)	
		८ मरुत गीत	(लो० वि० १६०६ ११ सं० २०८ एफ)	
		९ माल मंत्रि	१८६६ (लो० वि० १६२० ११ सं० ११३ एफ)	
		१० रस मंत्रि	(लो० वि० १६०२ सं० २०६), (लो० वि० १६०३ सं० १५८), १८०६ (लो० वि० १६०६ ११ सं० २०८ सी.) (लो० वि० १६२६ १८ सं० ३१६ एन)	इस ग्रंथ का नाम नाम मात्र ही है
		११ स्वाम समारं	(लो० वि० १६०६ ८ सं० २०० इ०), (लो० वि० १६१७-१६ सं० ११९ सी.)	
२३	नरोत्तमदास	कथा मुद्रामा	१८१४ (लो० वि० १६०० सं० २२), १८३० (लो० वि० १६०६ ८ सं० २०१), (लो० वि० १६१७-१६ सं० १२४), (लो० वि० १६२० २२ सं० ११७), (लो० वि० १६२३ २५ सं० ३००), (लो० वि० १६२६ २८ सं० ३२४ ए बी सी)	
२४	नानकगुरु	१ सतनाम	(लो० वि० १६२३-२५ सं० २६३)	
		२ सत मुमिरिनी	(लो० वि० १६२३ २५ सं० २६३)	
		३ साली खान काँट	(लो० वि० १६२३ २५ सं० २६३) (लो० वि० १६२६ २८ सं० ३२४)	

Handwritten header text, possibly a title or date, mostly illegible due to blurriness.

Handwritten text block, possibly a list or notes, with some faint markings.

Handwritten text block, continuing the notes or list.

Handwritten text block, including some mathematical symbols like $\frac{1}{2}$.

Handwritten text block, possibly concluding the notes.

संख्या	रक्षयिवाधो का नाम	इस्तरोलो के नाम	प्राप्त इस्तरोलो के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
		५. पदमामराज	१८२६ (क्रो. वि. १६०५ सं. ५५) १८२१ (क्रो. वि. १६०६-८ सं. ८२ बी.), (क्रो. वि. १६२१ २५ सं. १०७)	
		३ प्रबोध पचा- सिद्ध	(क्रो. वि. १६०९-२१ सं. ११० ए.)	
		७ राम रत्नामन धमापय	१८१७ (क्रो. वि. १६०१ सं. १, २, ३, ४, ५, ६)	
		८ विद्वत्कवी	(क्रो. वि. १६०६-८ सं. ८२ बी.)	
३०	पद्मबाल दास	१ अग्नि	(क्रो. वि. १६२६-२८ सं. ३४० ए.)	
		२ उपस्थान विशेष	(क्रो. वि. १६२६ २८ सं. ३४० बी.)	
		३ मुक्तिदान	(क्रो. वि. १६२६-२८ सं. ३०० बी.)	
		४ विरहसागर	(क्रो. वि. १६२६-२८ सं. ३४० सी.)	
३१	पौहकार	रस रसन	१८३५ (क्रो. वि. १६०५ सं. ५८), १८०८ (क्रो. वि. १६०६-८ सं. ९०८), १८३५ (क्रो. वि. १६१७-१९ सं. १४०), (क्रो. वि. १६२०-२१ सं. १२८)	
३२	माननाथ	१ अज्ञो रस	१७८३ (क्रो. वि. १६२०-२१ सं. १२६) (क्रो. वि. १६२१ २५ सं. ११८)	
		२ धनी श्री के चालोकी श्रीपई	(क्रो. वि. १६२६ २८ सं. ३४८ ए.)	
३३	मिथादास	१ मऊ प्रभा की मुञ्जीबनी दीक्षा	१८३२ (क्रो. वि. १६१० २१ सं. १३५ ई.)	
		२ मऊमाख रस बोधिनी दीक्षा	(क्रो. वि. १६०१ सं. ५५), १७७८ (क्रो. वि. १६०१ सं. ११६), १७८४ १८०७ (क्रो. वि. १६०५ सं. १३६ १३७), (क्रो. वि. १६१७-१९ सं. १३८) १८२२ १८३१ (क्रो. वि.	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
३४	निहारीलाल	सतसई	<p>१६२०-२२ सं० १३५ ए वी.), (खी० वि० १६२३-२५ सं० ३२३), (खी० वि० १६२६-२८ सं० ३६१ ए वी.) (खी० वि० १६०० सं० ११५), १७१८ (खी० वि० १६०१ सं० १७), १७८० (खी० वि० १६०१ सं० ५२, ७५), १७६६-१७४६ (खी० वि० १६०२ सं० ८), १७८२ (खी० वि० १६०३ सं० १३३-१३५), (खी० वि० १६०६-८ सं० ३ ए.), १७६३ (खी० वि० १६०६-८ सं० ६६ ए), १७१७ (खी० वि० १६२०-२२ सं० २० ए), १८०५ (खी० वि० १६२०-२२ सं० २० वी) (खी० वि० १६२३-२५ सं० ६२ ए. से जे. तक), (खी० वि० १९२६-२८ सं० ६८ ए. से ई तक)</p>	
३५	मिखारीदास	१ काव्य निर्णय	<p>१८१४ (खी० वि० १६०३ सं० ६१), १८६२ (खी० वि० १६२०-२२ सं० १७ ए), १८६६ (खी० वि० १६२०-२२ सं० १७ वी.) (खी० वि० १६२३-२५ सं० ५५ डी. ई.), (खी० वि० १६२६-२८ सं० ६१ ई से आई. तक)</p>	
		२ छुदार्णव पिंगल	<p>(खी० वि० १६२०-२२ सं० १७ सी)' (खी० वि० १६०३ सं० ३१), (खी० वि० १६२३-२५ सं० ५५ ए, वी., सी.), १६१४ (खी० वि० १६२६-२८ सं० ६१ सी.)</p>	
		३ रस सारग	<p>१७८६ (खी० वि० १६०४ सं० २१) (खी० वि० १६२३-२५ सं० ५५ एफ., जी), (खी० वि० १६२६-२८ सं० ६१ जे. से एन. तक)</p>	

संख्या	रक्षितानामों का नाम	इस्तफेलों के नाम	प्राप्त इस्तफेलों के उन्कोल तथा उनका समय	विशेष
३६	भूपय	शिवयज भूपय	१६०२ (लो. वि. १६२३ २५ सं. ६१ ए., बी. सी.), (लो. वि. १६०३ सं. ५८) (लो. वि. १६१२ १४ सं. २४), (लो. वि. १६२६-२८ सं. ६७ ए., बी.)	
३७	मस्तिराम	१ रसराज	१६८२ (लो. वि. १६०० सं. ४०), १७६१ (लो. वि. १६०१ सं. ६७), १८३३ (लो. वि. १६०६ सं. ६८ ए.), (लो. वि. १६२०-२२ सं. १०५ बी.), (लो. वि. १६२३-२५ सं. २७६) (लो. वि. १६२६ २८ सं. ३०० डी. से जे. वफ)	
		२ बलन शृंगार	१६२२ (लो. वि. १६०६-८ सं. १६६ सी)	
		३ लक्ष्मि खसाम	(लो. वि. १६०३ सं. ६७), १७८२ (लो. वि. १६०४ सं. १३२), (लो. वि. १६२३-२४ सं. २७६), (लो. वि. १६२६ २८ सं. ३०० ए., बी., सी)	
		४ बृच श्रीमुरी	१८६६ (लो. वि. १६२० २२ सं. १०५ ए.)	
		५ साहित्य सार	१८३७ (लो. वि. १६०६-८ सं. १६६ बी)	
३८	मोतीबाब	१ गणेश पुराय	(लो. वि. १६२३ २५ सं. २८२), (लो. वि. १६०१ सं. ७६), (लो. वि. १६०६ ११ सं. २००), (लो. वि. १६२६ २८ सं. ३०६ ए., बी., सी, डी)	
		२ गणेश कथा	लो. वि. १६२३-२४ सं. २८२)	
		३ गणेश महात्म्य बृच	(लो. वि. १६२३ २५ सं. २८२)	

Date	Description	Amount
1/1/00	Initial deposit	1000.00
1/15/00	Interest earned	50.00
2/1/00	Withdrawal	200.00
2/15/00	Interest earned	25.00
3/1/00	Deposit	300.00
3/15/00	Interest earned	15.00
4/1/00	Withdrawal	150.00
4/15/00	Interest earned	7.50
5/1/00	Deposit	250.00
5/15/00	Interest earned	12.50
6/1/00	Withdrawal	100.00
6/15/00	Interest earned	5.00
7/1/00	Deposit	150.00
7/15/00	Interest earned	7.50
8/1/00	Withdrawal	80.00
8/15/00	Interest earned	4.00
9/1/00	Deposit	100.00
9/15/00	Interest earned	5.00
10/1/00	Withdrawal	60.00
10/15/00	Interest earned	3.00
11/1/00	Deposit	80.00
11/15/00	Interest earned	4.00
12/1/00	Withdrawal	50.00
12/15/00	Interest earned	2.50
1/1/01	Final balance	1000.00

Total
 1000.00

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
४१	सोफीशास	१ सवर्षाशिका	१८१३ (लो. वि. १६०६ ११ सं. २४५ बी.), (लो. वि. १६२६ २८ सं. ३०० बी.)	
		२ सेवा विधि	१८०३ (लो. वि. १६०६ ११ सं. २४५ एफ.), १८०४ (लो. वि. १९२०-२२) सं. १४५ सी.)	
		३ प्रहसाद शक्ति	(लो. वि. १६२३-२४ सं. २४८)	
४२	व्यास जी	२ भक्ति प्रकार	१८०१ (लो. वि. १६२३-२४ सं. २४८)	
		३ भागवत गीताखली	(लो. वि. १६२३ २५ सं. २४८)	
		१ पदावली	१८४६ (लो. वि. १६०६ ११ सं. ३३२ बी.)	
४३	संमुनाथ मिश्र	२ योगशास्त्र	१७६८ (लो. वि. १६०६-८ सं. ११८ बी.)	
		३ व्यासजी के रास पद	१८५८ (लो. वि. १६०६ सं. ११८ बी.)	
		१ अक्षरकार दीपिका	१८०२ (लो. वि. १६०४ सं. २०), १६०१ (लो. वि. १६०६-८ सं. २३३), (लो. वि. १६१७-१६ सं. १६०)	
४४	सहायम्	१ अक्षर मकर	१८१६ (लो. वि. १६०६ ११ सं. २०२ ए.)	
		२ अनुभव आनंद सिंधु	(लो. वि. १६०६ ११ सं. २०२ सी.)	
		३ नाटक दीपिका	(लो. वि. १६०६ ११ सं. २०२ बी.)	
		४ बौध विद्यास	(लो. वि. १६०६ ११ सं. २०२ डी.)	
४५	सबह सिंह चौहान	महामारत (१० वर्ष)	(लो. वि. १६२३ २४ सं. ६३), (लो. वि. १६२६ २८ सं. ४११ बी, सी, डी, आदि)	
४६	सरदार कवि	१ कासिगुप्त मकराशिका २ रामायण रमाकर	१८५३ (लो. वि. १६०४ सं. ३६) १८५६ (लो. वि. १६०४ सं. ४६)	कविधिया श्रीटीका

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
४७	सहजो बाई	३ वियग विलास	१८६६ (खो० वि० १६०६-११ सं० २८३ बी०)	
		४ सुख विलासिका	१८४६ (खो० वि० १६०४ सं० ५७)	
		५ सिंगार सम्रह	१८७५ (खो० वि० १६०६-११ सं० २८३ ए)	
४७	सहजो बाई	सहज प्रकाश बहु अग्र	(खो० वि० १६०० सं० १२६), (खो० वि० १६०३ सं० १६२), १८१६ (खो० वि० १९०६-८ सं० २२६), (खो० वि० १६२०-२२ सं० १७१), (खो० वि० १६२६ २८ सं० ४१५)	
४८	सीतल प्रसाद	गुलजार चमन	१८६० (खो० वि० १६०६-११ सं० २६२), (खो० वि० १६१७ १६ सं० १७२), (खो० वि० १६२०-२२ सं० १७६)	
४९	सुंदरदास	१ ज्ञान समुद्र	१७७३ (खो० वि० १६०२ सं० १६५), १८०० (खो० वि० १६०३ सं० ३४), १८६३ (खो० वि० १६०६ सं० २४२ बी.), १८७८ (खो० वि० १६०६-११ सं० ३११ ए.), (खो० वि० १६२३-२५ सं० ४१५)	
		२ पंचेन्द्रिय निर्णय	१८४३ (खो० वि० १६१२-१६ सं० १८४ ए.)	
		३ विचारमाला	१८७८ (खो० वि० १६०६-११ सं० ३११ सी.)	
		४ विनयसार	१८७० (खो० वि० १६०२ सं० ८८)	
		५ विवेकचिन्तामणि ६ सवैया	(खो० वि० १६०६-११ सं० ३११) १७७३ (खो० वि० १६०२ सं० २५, २६), १८७० (खो० वि० १६०६ सं० २४२ ए.), १८३४ (खो० वि० १६१२-१६ सं० १८४ बी.) (खो० वि० १६२३-१५ सं० ४१५), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ४६६ बी०सी०डी०)	

संख्या	रचयिताओं के नाम	इस्तेमाल के नाम	प्राप्त इस्तेमालों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
१०	मुख्यदेव मिश्र	<p>७ मुन्दर दास की बानी</p> <p>८ मुन्दर विद्यास</p> <p>१ ब्रह्मराम प्रकाश</p> <p>२ कृष्ण विचार</p> <p>३ विगल</p> <p>४ पात्रिषष्टी प्रकाश</p> <p>५ मैदान रघुस्यंभ</p>	<p>१७१५ (लो० वि० १६०६ ११ सं० ३११ बी.)</p> <p>१८७० (लो० वि० १६०६ ८ सं० २४१ सी.), (लो० वि० १६२३-२५ सं० ४१५)</p> <p>१८८८ (लो० वि० १६०५ सं० ६७, १८११ (लो० वि० १६०६ ८ सं० २४० सी०) (लो० वि० १६१७ १६७ सं० २४१ ए.) (लो० वि० १६२० २२ सं० १८७ ए बी), (लो० वि० १६२३ २५ सं० ४१२), (लो० वि० १९२६ २८ सं० ४६४ ए. बी १६३१ और १७९३ (लो० वि० १६०६ ८ सं० २४० ए.), (लो० वि० १६१७-१६ सं० १८३ बी), (लो० वि० १६२०-२२ सं० १८७ ई०), (लो० वि० १६२३ २५ सं० ४१२), (लो० वि० १६२६ २८ सं० ४६४), (लो० वि० १६०३ सं० १२३), (लो० वि० १६०६-८ सं० २४० बी) १८८१ (लो० वि० १६०६ ११ सं० ३०७ बी) (लो० वि० १६१७ १६ सं० १८३ सी), (लो० वि० १९२० २२ सं० १८७ सी.), (लो० वि० १६२३ २५ सं० ४१२), (लो० वि० १६२६ २८ सं० ४६४ एफ जी)</p> <p>१८६२ (लो० वि० १६०६ ११ सं० ३०७ ए.), (लो० वि० १६१७-१६ सं० १८३ सी) १८६६ (लो० वि० १६२० २२ सं० १८७ सी.), (लो० वि० १६२३-२५ सं० ४१२), (लो० वि० १६२६ २८ सं० ४६४ जी ई),</p> <p>१८०२ (लो० वि० १६०३ सं० १२४), १८१४ (लो० वि०</p>	<p>रसरसार्थक नाम से</p>

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
५१	सुवस शुक्ल	६ सिखनख १ उमराव वृत्ताकार २ राम चरित्र ३ स्फुट काव्य	१६०४ सं० ३३), १७४६ (खो० वि० १६२०-२२ सं० १८७ डी.), (खो० वि० १६२३ २५ सं० ४१२) १८८५ (खो० वि० १६०६-११ सं० ३०७ सी०) (खो० वि० १६२३-२५ सं० ४२२) (खो० वि० १६२३-२५ सं० ४२२) (खो० वि० १६२३-२५ सं० ४२२)	
५२	सूरतिमिश्र	१ अमर चंद्रिका २ अलंकार माला ३ कविप्रिया सटीका ४ रस गाहक चंद्रिका ५ रस रत्न ६ रसिक प्रिया टीका	१८१० (खो० वि० १६०६-८ सं० २४३ सी.), (खो० वि० १६०६-११ सं० ३१४ सी.), (खो० वि० १६२६-२८ सं० ४८२ ए) १७५६ (खो० वि० १६०३ सं० १०४) १७६६ (खो० वि० १६१२-१६ सं० १८६) १८१२ (खो० वि० १६०६-८ सं० २४३ ए) १७८५ (खो० वि० १६०६ ११ सं० ३१४ ए.) (खो० वि० १६२६-२८ सं० ४७२ जी.) १८३० (खो० वि० १६०१ सं० ८६), (खो० वि० १६०६-८ सं० २४३ डी.) (खो० वि० १६२०-२२ सं० १६०), खो० वि० १६२६-२८ सं० ४७२ एच.) १८३० (खो० वि० १६०६-८ सं० २४३ डी) १७७५ (खो० वि० १६०६-११ सं० ३१४ सी.) (खो० वि० १६२३-२५ सं० ४१६)	जोरावर प्रकाश के नाम से भी प्रसिद्ध है

संख्या	स्वयंविद्यालयों का नाम	इस्सलेशों के नाम	प्रप्त इस्सलेशों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
५३	सेनावति	७ सरस रास कविच रत्नाकर	१८६७ (लो० वि० १६०६ ११ सं० ३१५) १८८१ (ला० वि० १६०६ ११ सं० २८७), (लो० वि० १६२३ २५ सं० ३७६), (लो० वि० १६२६-२८ सं० ५३२ ए, बी.)	
५४	सेनादास महंत	१ दयाबोध २ छत्रिपुराण	(लो० वि० १६२३-२५ सं० ३८९) (लो० वि० १६२३ २५ सं० ३८९), लो० वि० १६२६ २८ सं० ३२३)	
५५	सेनादास	१ अमरगीत २ बहमनी विवाह ३ विष्णु पद ४ शूरसंगार	(लो० वि० १६२३-२५ सं० ५११) लो० वि० १६२३-२५ सं० ५१६), (लो० वि० १६२६ २८ सं० ५७७ एष) (लो० वि० १६२३ २५ सं० ५१६) (ला० वि० १६२३ २५ सं० ५१६), (लो० वि० १६२६ २८ सं० ५७७ एष एम. एन)	
५६	धीरति	अनुनाम १ कन्यपर्व ३ काण्डमुवाकर ४ निजोद-काम्य सरोज	१८१७ (लो० वि० १६०६ ११ सं० ३०५ बी.) १८२३ (लो० वि० १६२०-२२ सं० १८६) (लो० वि० १६२३-२६ सं० ५०५) (लो० वि० १६०४ सं० ५८), १८२४ (लो० वि० १६०६ ११ सं० ३०४ सी) (लो० वि० १६२३ २५ सं० ५०४)	
५७	हंसराज	१ हिमाल प्रकाश २ पुण्डरीक मेर २ विग्रह विज्ञान	१८५८ (लो० वि० १६०६-८ सं० २३८) लो० वि० १६२६ २८ सं० १६५ ए) (लो० वि० १९२६-२८ सं० १६५ सी.)	

संख्या	रचयिताओं का नाम	हस्तलेखों के नाम	प्राप्त हस्तलेखों के उल्लेख तथा उनका समय	विशेष
५८	हरिचरनदास	३ सनेह सागर १ कविवल्लभ २ कवि प्रियामरन ३ भाषाभूषण टीका ४ सभा प्रकास ५ हरिप्रकास टीका (सतसई)	(खो० वि० १६२६ २८ सं० १६५ बी) १८४३ (खो० वि० १६०६-८ २५५ ए) १७८० (खो० वि० १६०४ सं० ५३), १८८० (खो० वि० १६०६-११ सं० १०८) १८८३ (खो० वि० १६२०-२२ सं० ५६ ए.) १८३६ (खो० वि० १६०६ ८ सं० २५५ बी) १८४६ (खो० वि० १६२०-२२ सं० ५६) १८२४ (खो० वि० १६०४ सं० ४), (खो० वि० १६१७-१६ सं० ७१), (खो० वि० १६२३-२५ सं० १५३)	

अथकारों की अनुक्रमणिका

अथकारों के सामने श्री संस्कार्य परिशिष्ट १ और २ में ही गढ़ क्रमसंख्याएँ हैं ।

अंयदु शास्त्री	१६	अरु बंद	२२४
अपने राय	१७	अबौर दास	२१४
अंबर राम	८	अमरुदाम दीप्य	२१९
अमदास	४	अमला	२१८
अचलदास	९	अमरुदाम भद्र	२२०
अचलदास	५	अरुम महापात्र	२१३
अश्रीत सिंह मेहता	६	अरुदर राम	२१३
अनन्य या अक्षर अनन्य	१४	अरुदर शरण	२१७
अनाथ पुरी	१५	अरुदर सेठ	२१६
अष्टुरु अश्रीदु	१	अरुदर शरण	२१५
अमर सिंह	७	अरुदर गिरि बभारसी	२२०
अमीरुद	३	अरुदरमाय	२२८
अयोप्या प्रसाद बाबुपेपी	२१	अरुदरमाय	२२३
अनघ बिहारी कावस्थ	१९	अरुदरदास	२२६
असगर हुसैन	१८	अरुदर प्रभु	२२१
अरुदु	१०	अरुदरमेन	२४२
अरुदुबन	१२	अरुदरम	२५२
अरुदु राम	१३	अरुदरप्रसाद	२५१
अरुदुदी हीन	११	अरुदर सेन कावस्थ	२२३
अरुदुदर मिथ	३	अरुदुपति मिथ	२५०
अरुदुदी लाल	२०	अरुदुदरसिंह	२५४
अरुदुदी बरना	१८४	अरुदुदरबाम स्वामी	२५४
अरुदुदर त्रिपाठी	१८६	अरुदुदराम	२५५
अरुदुदी दास	१८२	अरुदुदर कवि	२५८
अरुदुदरमाय	४८६	अरुदुदराम पबहारी	२५७
अरुदुदराम दास	४८७	अरुदुदर मणि	२५९
अरुदुदर त्रिपाठी	४८८	अरुदुदर विहारी	२५६
अरुदुदरसिंह	१२१	अरुदुदर	२६१
अरुदुदर बरना पाल	१२२	अरुदुदरदाम (कावस्थ)	१३३

केशवदास मिश्र	२३२	गोपाल (सुकवि)	१४६
केशवप्रसाद द्विवेदी	२३०	गोपाल द्विज	१४८
कोविद	२४३	गीपीनाथ	१४९
सुमान या मान	२३७	गोवर्द्धन दास (मिश्र)	१५३
सुशालचन्द काला	२३९	गोवर्द्धन दाम सारस्वत	१५२
सुशाल दूबे	२३८	गोविन्द दास	१५४
खेत सिंह	२३६	गोमती गिरि परमहंस	१४५
खेमकरन द्विज	२३५	गोरेलाल पुरोहित	१५०
खैरा शाह	२३४	गोसाईं दास	१५७-१५१
ख्यालीदास	२४०	गौरीशंकर भट्ट	१३३
गंग	१२६	ग्वाल	१६१
गंगादास	१२७	घनश्याम राय	१३४
गंगाधर शास्त्री	१२८	घनश्याम व्यास	१३५
गंजन	१२९	घासीराम	१३६
गजाधर दास	१२१	घीसाराम	१३७
गणेश जी	१२४	घीसियाचन दास बाबा	१३८
गणेश दास ब्राह्मण	१२३	चंद	७६
गणेश प्रसाद	१२५	चंद या चंदवरदाई	७५
गन्नाराम	१३०	चंदन	७७
गरती जन	१३१	चतुरदास	७९
गरीब दास	१३२	चरनदास	७८
गल्लू जी	१२२	चेतन चंद	८०
गिरिधर चंद	१३९	छत्रसिंह	८३
गिरिधर दास	१४०	छविनाथ	८२
गिरिधारी दास	१४१	छथील	८१
गिरिधर दास	१४२	छुटकन द्विज	११६
गुमान मिश्र	१५७	छेदीलाल	८४
गुमानी	१५८	जगजीवनदास	१८७
गुरुगोविन्द सिंह	१५५	जगतसिंह विशेन	१९२
गुरुदत्तदास	१५९	जगन्नाथ	१८८
गुरु प्रसाद	१६०	जगन्नाथ	१८९
गुलजारी लाल रसिक	१५६	जगन्नाथ	१९०
गोकुल कायस्थ	१४३	जगन्नाथ	१६१
गोकुलनाथ बंटीजन	१४४	जन जगन्नाथ	१९४
गोपाल	१४६	जन दयाल	१६४

बन बपाल	१९३	हरिया साहू	८८
जनराम हित	१९६	बळपति राय	८९
जनाईन भद्र	२००	दसम्पदास	८०
जयचंद	२०३	बाठाराम	९०
जयराज भारतीय	२०५	बाठाराम भापुर	९१
जयसाक	२०४	बाबू बपाल	८३
जयसुख	२०६	वामीदर दास	८७
जसवंत सिंह	२०१	दिगिबन्धन सिंह	१०३
जसवन्त सिंह	२०२	बीनाबाय	१०७
जानकी प्रसाद	१६६	दुर्गा प्रसाद	११२
जानकी प्रसाद	१६७	दुर्गा प्रसाद त्रिपाठी	११३
जानकी मंगल	१९३	दुर्गादास कापस्य	१११
जानकी सहाय	१९८	दूबापारी	१०८
जाहर सिंह	५०६	दूकन दास	१०६
जुगतराय	२१२	देवकीनंदन	९६
जुगलदास	२११	देवदास	९५
जेठ मठ	२०७	देव स्वामी	९७
जोराबर मठ	५१०	देवीदास	९८
जानदास	२०६	देवीदास	९९
जानी जी	२१०	देवीदास	१००
ज्योतिष राव	२१३	देवीसिंह	१०१
शाम राम	२०८	दानत राय	११७
शेखर मठ बौध	४८२	हारिका प्रसाद	११४
शंकर कवि	४७८	हारिका प्रसाद	११५
शंकर प्रसाद पंडित	४७६	धनपति	१०२
शं गार काक	११०	धनीराम	१०३
शीर्षराज	४८१	धरम देव	१०४
शुक्लदास	४८५	शुभदास	१०५
शुक्लदास गौस्वामी	४८४	नंदकिशोर	११७
शैबसिंह शंकर	४७७	नंददास	११३
शोभर दास	४८३	नयकाक	११८
शान्ताकवि या शानाराम	४८०	नंदकाक	२१६
शंभुदास	६१	नकुल	११४
शंभाबाई	६३	नमौर	११६
शंभाराम	९४	नयन सुख	१११

नयन सुम्ब	३३२	प्रताप साही	३५१
नरोत्तम दास	३२४	प्रताप सिंह	३५२
नवलदास	३२७	प्रयाग दत्त पाठक	३५४
नवरंग कायस्थ	३२८	प्रयाग दास (स्वामी)	३५३
नवरंग स्वामी	३२९	प्रान किशन	३४८
नवीन कवि	३३०	प्राणनाथ	३४९
नागरीदास	३१३	प्रेमदास	३५५
नाथ कवि	३२५	प्रेमदास	३५६
नाथ गुलाम त्रिपाठी	३२६	प्रेमनिधि	३५७
नानक	३१५	प्रेमसागर	३५८
नारायण	३२०	फकीरदाम वाया	११६
नारायण	३२१	फतहमिह	१२०
नारायण दास	३२३	वंशीधर	४१
नारायण भट्ट	३२२	वट्टीलाल	२३
नित्यानन्द	३३७	वनारसी दास जैन	३९
निधान कवि	३३४	वलदेव	३२
निधिरानी	३३५	वलदेव	३३
निहालदास	३३६	वलदेव प्रसाद	३४
पतितदास स्वामी	३४६	वलभद्र	२६
पद्मनन्ददास कायस्थ	३३९	वलवीर द्विवेदी	३८
पद्माकर भट्ट	३३८	वांकेराम दीक्षित	४०
परमानन्द दास	३४१	वाजी लाल	२८
परमाणन्द स्वामी	३४२	वावूराम पांडेय	२२
पर्वतदास	३४५	वालक राम नयन सुख	३६
परसन दास पांडेय	३४३	वाल गोविंद	३५
परसुराय	३४४	वाल गोविंद वैष्णव	३५
पहलवान दाम	३४०	वाल चंद	३०
पुरुपोत्तमदास	२६३	वालदास	३१
पुरुपोत्तम शुक्ल	३६४	वाल मकंद	३७
पूरन	३६२	विभ्राम	६६
पृथ्वीजस	३५९	विहारी लाल	६८
पृथ्वी लाल	३६०	बुध	७३
प्रियादास	३६१	बुधजन	७४
प्रगन	३४७	बेनी प्रवीन	४५
प्रताप जैन	३५०	बेनी चक्र	४२

देवी माधव	४३	मधुसूदन शाह परिपाचायी	२८७
देवीमाधव दाम्य बाबा	४४	मनिदेव भट्ट	२९३
द्विजनाथ	२४	मविराम	३००
दीनू	२५	मधुरादाम कापस्थ	२९६
दीतारु कवि	२७	मधुरादास भास्कर	२९८
दीरीसाक	२९	मदुबागोपाल सिंह	२७२
दोष भट्ट	७०	मदुपपाक	१७३
दोषीदास	७१	मधुसूदनशाम	२७८
दशपासीदास	७२	मनरंगकाळ पत्नीबाळ	२६१
दाल राम	५६	मन्नालाक	२९५
दामोदर राय रशिची	४९	मनोहर दास	२९९
दागवती दास द्विज	३५	मणिक मुहम्मद आपसी	२८६
दावाब दास निर्बन्नी	४८	मन्नाबाब	२९०
दाहरी	३६	महादेव	२७९
दादनाथ द्विद्विज	४७	महादेव क्षत्रिय	२८१
दादानी	५८	महादेव कनिषा	२८०
दादानीदास	५९	महाराज दाम	२८२
दागवती दास	६०	महापीर	२८३
दागवती दास	५०	महावीर प्रसाद कापस्थ	२८४
दागवती दास	५१	महेबाबू	२८५
दागवती दास	५२	मातादीन शूद्र	२८७
दागवती दास	५३	माधव या माधो	२७४
दागवती दास	५४	माधव नू	२७६
दागवती दास	६१	माधवदास	२७५
दादानी	६२	माधवालयद मारती	२७७
दादानी	६३	मीरपनाह बखी	२७८
दादानी	६४	मीराबाई	२७९
दादानी (दोष)	६५	मुन्ना	२८१
दादानी	६७	मुरली	२८२
दादानी	६८	मूषर्षद	२८०
दादानी	५७	दीधाराज	२७२
दादानी	२६४	दीधेळाक	२७१
दादानी	२६५	दीदीकांत	२७९
दादानी	२८६	दीदीन (कवि)	२७५
दादानी	२८८	दीदीनदास (वन)	२७७

मोहनदास कायस्थ	३०६	गमनाथ महाय	३८७
मोहन सूरत	३०८	रामनेस या रमण विहारी	३८८
यदुनाथ शास्त्री	५०७	रामप्रसाद कथिक	३८९
युगल किशोर मिश्र	५०८	रामप्रसाद	३९०
रंगीलाल	३९९	रामरत्न	३९२
रगीलाल	४००	रामरात या रामराज	३९१
रगीलाल द्विज	४०१	रामराय	३९३
रघुनाथ	३६७	रामसंगे	३९५
रघुनाथ	३६८	गमसहाय कायस्थ	३९४
रघुनाथ दास	३७२	रामसिंह (महाराज)	३९६
रघुनाथ दास जी	३७०	रामानन्द	३८३
रघुनाथ वंटीजन	३६९	रायराणा करण	३९८
रघुराजसिंह (महाराज)	३७१	रावचंद्र नागर	४११
रणजीतसिंह (महाराज)	३९७	रिपभट्टेव	४०८
रत्न कवि	४०६	रुद्रनाथ	४०९
रविदत्त	४०७	रूपचंद्र	४१०
रसनिधि	४०२	लक्ष्मण सिंह राजा	२५६
रसरूप	४०३	लक्ष्मीपति	२५७
रसिकराम	४०४	लक्ष्मीप्रसाद तिवारी	२५८
रसिकरूप	४०५	लछिमन	२५५
राघव या राघवदास	३६६	ललनपिया	२६४
राधाकृष्ण चौधे	३६५	ललिता प्रसाद	२६५
र.म आनरे	३७४	लल्लूजी लाल	२६६
राम कवि	३७३	लाल कवि	२५९
रामकृष्ण	३८२	लालचंद जैन	२६०
रामचंद्र (वसु)	३७५	लालचराम	२६१
रामचंद्र	३७६	लालदास (बरेली निवासी)	२६२
रामचंद्र	३७७	लालदास वैश्य	२६३
रामचरनदास	३७९	लेखराज मिश्र	२६७
रामचरन दास	३७८	लेखराजसिंह ठाकुर	२६८
रामदास	३८०	लोकसिंह चावू	२७०
रामदास	३८१	लोचनसिंह	२६९
रामनाथ	३८४	लोनेदास	२७१
रामनाथ (पंडित)	३८५	वल्लभरसिक	४९०
रामनाथ प्रधान	३८६	वसंत	४९१

बर्मतराज	४९२	संभ्रामसिंह (राजा)	४२३
बहाब	४८९	संतदाम	४२७
बामुदेव स्वामी	४९३	संतदाम	४२८
बिहमात्रीत बिजयबहादुर	४९६	संतसिंह मिश्र	४२९
बिघारण्य स्वामी	४०५	संतमुनाथ विपाठी	४२३
बिहारीमर	५०२	संवर कवि	४२२
बिधनाथ सिंह महाराज	५०३	सबन सिंह	४१२
बिष्णु गिरि गाम्वासी	५०१	सबलस्वाम	४१३
बिष्णुदास	५००	सरपूदास	४३०
बिष्णुदास	४९८	सरपूदास पंडित	४३१
बिष्णुदास	४९९	सवितादास	४३२
वीरभद्र	४९७	सहजराज	४१५
दुंदुबुद्धि	५०४	सहजोबाई	४१६
दू राजन	५०५	सहज	४१४
दोडेरा	४९४	सामरदास	४१९
द्वाम	५०६	सामर्थी द्विज	४२०
दांडरदास	४९५	सावित्राम परमईस	४१७
दांडर हरिदास	४२६	सावित्राम वैद्य	४१८
दांडराचार्य	४२४	विद्यादास	४३७
दांडरदास	४४३	विद्याराम	४२३
दांडरदास	४४४	दांडर पन्ना	४४९
दांडरदास	४४५	सी० ई० इंडियट	४३८
दांडरदास	४४६	सीताराम	४३८
दांडरदास	४४८	सीताराम उपाध्याय	४३०
दांडरदास	४५०	सीताराम वैद्य	४४१
दांडरदास सिंह अमर	४५१	सीताराम शर्मा	४३९
दांडरदास पंडित	४४९	मुंदरदास	४६९
दांडरदास सेगर	४५२	मुंदरदास शारूपणी	४७०
दांडरदास स्वामी	४५७	मुद्गलि	४६४
दांडरदास मिश्र	४५७	मुन्दरेश मिश्र	४६५
दांडर	४५५	मुन्नाद	४६६
दांडर रीत	४५४	मुन्नाद	४६७
दांडर पंडित	४५६	मुन्नाद	४६८
दांडर मिश्र	४५९	मुन्नाद	४६२
दांडर	४५८	मुन्दरदास मिश्र	४६३

(ज)

सुदामा	४६१	हरिप्रसाद	१७०
सुमकरन	४६०	हरिप्रसाद मिश्र	१७१
सुवश कवि	४७५	हरिवश	१७४
सूरजदास	४७३	हरिवंशराय	१७५
सूरतिमिश्र	४७४	हरिवल्लभ	१७३
सूरदास	४७१	हरिविलास	१७६
सूरदास	४७२	हरिविलास	१७७
सेनापति	४३३	हरिशंकर	१७२
सेवकराम	४३५	हरिहरब्रह्म	१६९
सेवादास	४३४	हलधर	१६३
सेवार्सिंह ठाकुर	४३६	हित हरिवंश	१७६
स्वरूपदास	४७६	हुकुमराज	१८१
हसराम वक्शी	१६५	हुलास पाठक (कवि)	१८३
हमीमुद्दीन काजी	१६४	हुलासराय वैद्य	१८२
हरदास	१६६	हृदयराम	१८०
हरदेव	१६८	हेमराज	१७८
हरनाम	१६७	हैदर	१६२

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

ग्रंथों के सामने श्री संख्याएँ परिशिष्ट १ और २ में दी गई क्रमसंख्याएँ हैं ।

अंशशास्त्र गद्यमंथन	३४६ पृ	अर्जुन गीता	४०९
अक्षर वाच्य प्रपातिग्रन्थ	५१ पृ	असंकर रघाकर	८६ पृ
अक्षरावली	१२४	असिफ नाम	८८
अक्षरदास का सूत्रना	१ पृ, बी	अवध विद्याम	२६२ पृ
अज्ञेय मंत्राली	१२ पृ	अवधमेघ पर्व	४१२ सी
अठारह पुराणों और पचीस अपठारों के नाम	२८५	अष्टपदी ब्रह्म वाधा	४०१ पृ
अद्वैत नामा	१४४ पृ	अष्टपाम	९५ पृ
अध्यात्म प्रकाश	४६२ पृ बी	श्री अष्टपाम (शैबानिधि)	३०८ पृ
अध्यात्म शमापण टीका	४८८	अष्टपाम प्रकाश	१४३
अनवर चरित्रिका	१६०	आखारावली	२१४ पृ
अनमक ग्रंथ (पञ्चाक्षर पुराण)	२०९ पृ	आयमनुशासन (भाषा टीका)	४८२
अनुमक प्रकाश	२ बी	आत्म प्रबोध	४९४
अनुराग विराग	१०६	आदि पर्व (महाभारत)	४१२ पृ
अनकार्य नाममाला	३१६ पृ, बी, सी, डी, ई, एफ, जी पृ	आदि शक्ति श्री कविता	३०५ पृ
अप्रोक्ष सिद्धांत ग्रंथ	२०१ पृ	आदिपुत्रन नू की कविता	१२ पृ
अभिप्राय दीपक	४४६	आदिपुत्रन नू की पद्यावली	१२ बी
अमर कोश (अमराव कोश)	४०५ पृ, पी	आनंद मंत्राली	२९८
अमर चरित्रिका (टीका बिहारी मत्तसहूँ)	४७४ पृ	आनंद रस कल्पतरु	३८१
अमर तिलक	६१ पृ, पी	आनंद ब्रह्मिणी	१११ पृ
अमर कोश विन्न घामछीला	७८ पृ	आनंदबालु निधि	३०१ पृ
अमर विलोच	७ पृ, बी, सी	आनंद (ईश्वर हरन)	१९ बी
अमरावली	२ पृ	आनंद लठ	१९ पृ
अमृतधारा	४८	आनंद लंठ	११८
अमृत सामा	३५२ पृ, पी सी, पी	आनंद लंठ (पूष्पीराज रासो)	७३ पृ
अपोष्पाकांड श्री टीका	४२९	आनंद लंठ (रामायण)	२६५
अरिष्ट	३३० पृ	आश्रम बरिष्ठ पर्व	४१२ बी
		इतिहास सार समुच्चय	२६३ पृ
		इष्टक तरंग	२६४

उग्रगीता	२१४ ई	कविता सवैया	३०१
उड्डीस	४६७	कविप्रिया	२३३ बी, सी, डी
उत्तम चरित्र	१४ जी	कहरनामा	२८९ ए
उत्पलारण्य महात्म	४४३ ए	काटंवरि	३७५ ए, बी, सी, डी
उद्योग पर्व (महाभारत)	४१२ वाई, जेड	कान्यकुब्ज वंशावली	२८
उपखान विवेक	३४० सी	कायाविलाम	४०७ ए
उपदश चिकित्सा	३७६	कार्तिक महात्म	४९२ ए, बी
उपालभ शतक	४०३	काल ज्ञान	३७६
ऊपा चरित्र	३४४	कालीदमन	३६५
ऊपा चरित्र वारहसिद्धी	२५२ बी	काव्य कलाधर	३६९ बी, सी, डी
एकाक्षरी	४८३	काव्यकला विलाम	३५१ ए, बी, सी, टी, ई
एकादशी महात्म्य	४६३	काव्य कटातरु (वंशावली)	४४०
एकादशी महात्म्य	४७३ए	काव्य निर्णय	६१ ई, यफ, जी, यच, आइ
औखिक पर्व (महाभारत)	२६३ ए	काव्य प्रकाश प्रभाकर	३९१ ए, बी
औपधि वर्ग नाममाला	१११ ए	काव्य रसायन	६५ टी
औपधि संग्रह	२२	काव्य शृंगार	३७८ ई
ककहरा	४६१ए	काव्य सरोज	४५६
कन्वैया रत्न मंजरी	२२२	काव्याभरण	७७
कपीश विनय	३०५ एफ	काव्यामृत प्रवाह	१३३ ए
कधीरजी कृत माढ्यो	२१४ सी	काव्यारणव	४२३
कमरुद्दी खॉ हुलास	१२९	काशिराज वंशावली	३५४
कमल नेत्र	९१ ए, बी,	कासिद नामा	१६२ ए, बी
करुणा पच्चीसी	३५७	किर्णिका काड	- ४१६ सी, डी
करुणा वत्तीसी	२७५ ए, बी	कुचरी संग विहार वारामासी	३५८
करुणाष्टक	३८८ ए	कृष्ण क्रीडा	२१७ ए, बी, सी
कर्ण पर्व (महाभारत)	४१२ के, एल, एम, यन	कृष्ण गीतावली	४८४ जी
कलाधर वंशावली विधान	१११ बी	कृष्ण ग्वालिनी का झगडा	३६८
कलेश भजनी (तोफतुल गुर्वा)	१ए, बी	कृष्ण लीला	३३
कवि तरंग भाषा	४४१ ए, बी	कृष्ण विलाम	४३२
कवितावली	४३०	कैलाश मार्ग (स्कंद पुराण का द्रहोत्तर	
कवितावली	४८४ सी, डी, ई	खट)	२७७ ए
कविता सम्रह	२५	कोक मजरी	१० ए, बी
कवित्त	४३७ ए	कोक सार	१० सी, डी, ई, यफ, जी, यच,
कवित्त दाता रामकृत	६० बी		आई, जे, के
कवित्त रत्नाकर	४३३ ए, बी	कोकसार	३८७
कवित्त सम्रह	४३९		

कोविद् भूषण	१७६	गोपी पचीसी	१६१ प
कीर्तिस्वया जी की बारहमासी	१०१	गोपी कुरुदाऊ की बारहमासी	२४१
खवास जी की कथा	९	गोपी विरह छंदारकी	२४ प
सुरवीद् भेनजीर	१८४ सी	गापी विरह महात्म	९० प
गंगा जी की स्तुति	३७६ की	गोविन्ददास की बारहमासी	१५४
गंगा पचीसी	१३६ प, की, सी	गोसाईं तुलसीदास की का चरित्र ८९ प, की	
गंगा भरज	२६७	चरित्रोपाख्यानांतगत त्रिपा चरित्र	
गंगा कहरी	२६७ प	मूप मंत्री सवाद	१५३
गंगा कहरी	३३८ प	जापक्य भीति टीका	६०
गंगा व्याह काक	३८१	जापक्य भीति दर्पण	४५८
गंगाचक्र	१३२	जापक्य भीति भाषा	१५८
गणेश महात्मोत्तर गत संस्कृत मत कथा १७२		प्यारों विशाभों के मुक्त पुःनल वर्णन	१४७ प
गदापर्व (महाभारत)	४१२ आई	चित्त बोध	३१ की
गमक अष्टादिक	१९९ प, की	सुरिहारिब मेस	१६५ प
गबेरा चौप की कथा	२३३	शौताक चित्तामणि	११६
गनेरा पुताल ३०९ प, की, सी, की, ई		शौताक पचासा	२०
गर्म चित्तामणि	२०६ प, की	शौरासी पद	१७६ प, की
गामे के पद	१०७ प	छंद विचार	४६५ सी
गारी ज्ञान की	११९ की, सी	छंद चित्तामणि	४७
गिरिधर जी की मुरली	१६६ प, की	छंदमार पिंगल	४५०
गीत गोविन्दार्श	४११, प, की, सी	छंदारण्य (छंदार्णव]	६१ की, की
गीता	२३४ प, की	छत्र प्रकाश	१५०
गीतावली	४४८ अक्षर, पक्ष	छवि रत्नम्	२१३ प
गुरु की महिमा	१८६ प	छीक तथा सजुन विचार	४५६
गुरु चरित्र	१८९ की	जंजुर कलम हिंदुस्तानी	३४९ की
गुरु महिमा	३१२	जगद् विनोद	३३८ सी
गुणक केवदा	४६६	जयमाळ	२३०
गुणक चंद्रादप	१५७ प, की	जातक चंद्रिका	४२१ की
गृह कर्म विचार	३३७	जातक भाषा	२३८ प
गृहकर्म महात्म्य	२८८ सी	जातकसंस्कार (भाषा)	२६१ प, की, की
गोर्धन महात्म्य	४३३ प, की	जाति बिलाम	६४ सी
गोत्र प्रवर दर्पण	२२० प, की	जानकी मंगल	४८४ प, की
गोपी कृष्ण की बारह नवी	४२८ प, की	जानकी विजय	३२ प, की
गोपीचंद्र	२५५ प, की	जानकी विजय	४३३ प की, की
गोपीचंद्र का क्याम	११०	जानकी विदु	९७

जुगल किशोर की वारहमामी	१८८	तिल शतक	२१०
जुगलदास की बानी	२११	तोनों स्वरूपों की वृत्तिका	३४६ यच
जुगल विलाम	३९६ बी	तीर्थ महाम्य	३८०
जुगल विहार	३१०	तेरिज काव्य निर्णय	६१ ओ
जैमिनि पुराण	३५६	तेरिज रस साराङ्ग	६१ पी
जैमिनि पुराण	३६३	तोता भैना	३९६
जैमिनि पुराण (महाभारत)	४३१	त्रिमूर्ति भारती	४४७
जोरावर प्रकाश	४८४ यफ	दधिलीला	३४१ ए, बी
ज्ञान का वारह मामा	११९ यफ	दयाघाट की वाणी	९३
ज्ञान की वारह मामी	४८३ डी, ई	दया विलाम	९४
ज्ञान गीता	२०६ ए	दर्प विसोक पर्व	३६३ बी
ज्ञान चंद्रोदय	४७७	दूलेल प्रकाश	४८०
ज्ञान दीपक	५३ बी	दश अवतार भाषा	४२४ ए, बी
ज्ञान दोहावली	२९७ ए, बी	दम्तूर मालोका	२१८
ज्ञान प्रज्ञावली	८७	दादू की बानी	८५
ज्ञान वारहमामा	३६० सी, डी	दानलीला	१३९
ज्ञानमाला	२१६ ए, बी	दानलीला	२४७ ए, बी, सी, डी, ई
ज्ञान विलाम	१०८	दानलीला	३४१ सी, डी
ज्ञान स्वरोदल	७८ यच	दानलीला का वारामामा	३८४ ए
ज्ञान स्वरोदय	३२७ ए	दानलीला कृष्णगीत	३८२
ज्ञान स्वरोदय	२१८ बी	दिग्विजय भूषण	१४३ बी
ज्योतिष	३४६ ई	दिल लगन वैयक	४३८ ए, बी, सी
ज्योतिष की लावनी	१३५	दुर्गापाठ भाषा	१४ ए
ज्योतिष भाषा	२२६	दृष्टत बोधिका (विरह अंग)	३७८ सी, डी
ज्योतिष विचार	७३ ए, बी, सी	देवी जी की स्तुति	३४६ बी
ज्योतिषसार	२३० ए, बी	देवमाया प्रपञ्च नाटक	६५ बी
ज्योतिषमार	५०५	दोहावली	१४२
टीका रामायण बालकांड	४२९ बी	दोहावली	१८७ ए
तत्र-मत्र यत्रावली	३४६ यम	दोहावली	३४६ सी
तत्व ज्ञान की वारह मामी	११५ ए, बी	दोहावली	४८४ ओ, पी, क्यू
तत्व रत्न टीपिका	१४५	द्रोणापर्व (महाभारत)	४१२ एच
हत्वार्थ प्रदीप	१०३ बी	धनवंतर स्तुति	३६०
तवल्लुद	१६४	धनी जी की चले की चौपाई	३४६ ए
तारतम्य	३४६ जी	धर्मराय की गीता	४८४ एन
तिन्त्र लाकर	४७९	धर्म सवाद	१९३
		धर्मादर्श	३९७

ध्याममंजरी	४ पृ, बी सी डी	पधरस ग्रंथ	२०९ बी
भुवलीका	२८०	पक्षी चैतावनी	२३३
भुवलीका	४१९ प	पक्षी विलाम	१३६
मंद्गाँव बरमाबा की होरी	४१४	पत्तल	२४२ पृ
मंदोत्पन्न कीला	२४० पृ, बी	पथ्या पथ्य विचार	२३० इ, पृथ
मसप्र रासि चरण कुंडली फल	३४६ पृथ	पद् रामायण	११३ पृ, सी, सी
मख शिख	६२	पदार्थ तत्व हीपिका	२६६
मखशिख वर्णम	२९ पृ, बी	पद्मावती	२८६ बी
मखशिख बणत	३८ पृ, सी	पद्मावती मंड (पूष्यीराज रासो)	७५ बी
मखशिख वर्णम	९३ ई	पद्मवद की रंगत संगी	३१८
मरसिंह शरिय	२३७ सी	परतत्व प्रकाश	१२४ पृ, बी
मरसिंह ३० को जटक	३०५ बी	परमावद् विलास	३४९ प
मरसी मेहता	४९१	पवन परीक्षा	४४२
मरसी मेहता की कुंडी	२०७ पृ, बी, सी	पवन प्रियय स्वरोद्य	३०६
मवरंग विलास	२२८ पृ	पोंडव पक्षेन्दु चंद्रिका	४०६
मवरस चरंग	४५	पारासारी भाषा	४६८
माइन मेप	४११ बी	पार्श्वभाष्य पुराण	१०४
मागर सभा	५०	पिंगळ	४६३ पृथ
मागलीका	७६	पिंगळ	४७५ सी, बी
मागलीका	३७१ पृथ	पिंगळ छंद	३२३
माहि प्रकाश	६३ बी, सी	पुकार पक्षीमी	९९
मापार्थ मख संग्रहावली	२६० अ, के	पुण्य पक्षीसी	५४
माममास्य	१११ सी	पुरय की संबाद्	१४७ बी
माम सागर	२ सी	प्रकरण सागरन का	३४६ ई
मारावण कुठ पदमंमह	३९०	प्रभाती	१८१
मारावण स्तोत्र	४२४ सी	प्रधाग विज्ञान विज्ञय	३५३
मारी	३४६ जी	प्रध विचार	२१३
वासकेत कथा प्रसंग	५५	प्रध विचार भाषा	४५७
वासकेत पुराण भाषा	२०३	मह्यद् चरित्र	२५५ सी, बी
मोठिसंहाह	२८१	मह्यद् चरित्र	४१५ बी, सी
मेमचंद्रिका	२९१	मार्चमा	११ बी
मैपत्र ग्रंथ	४३६	मिवाह्यम कुठ संग्रह	२६१ सी
पंचत की रंगत हौर ही	३१८	मैम चंद्रिका	२५ पृथ
पंच उपनिषत् अथवाग वेद् की भाषा ७८ पृथ		मैम हीपिका	१४ बी, सी, डी
पचकल्पामक	४१०	मैम पिसूप	८४

प्रेममजरी	४२०	वालगोपाल चरित्र	३६६ ए
प्रेम रत्नाकर	९८	वाल चरित्र	२५३ ए
फकीरा दास की वानी	११९ जी	वाल चिकित्सा	३६
फतह प्रकाश	४० ई	वालमुकुंद कृत वारहमासा	३७
फरमान	३४६ बी	वलराम कथा मृतांतर विदुर नीति	१४०
फाजिल प्रकाश	४६५ डी, ई	वावन सर्वैया	३६ ए
फुटकर हनुमान जी के कवित्त	४९ ए	वाहुक विनय	४८४ जी
फूल चरित्र	२६६	विहारी सतसई	६८ ए, बी, सी, डी, ई
वजरग वान	४८४ एच	विहारी सतसई टीका	४७८
वन पर्व (महाभारत)	१४४	विहारी सतसई सटीक	२४८ ए, बी
वन पर्व (महाभारत)	४१२ डी	बुद्धिविलास	१२५ ए
वदुवाहन कथा	२२१	<u>बुधजन सतसई</u>	७४
वदुवाहन की कथा	३९० ए	ब्रह्मवाद	३१ ए
वरवा रामायण	४८४ एम	ब्रह्मज्ञान सागर	७८ डी, ई, एफ, जी
वलभद्र प्रकाश (टीका भाषा भूषण)	२२५	ब्रह्मावर्त महात्म्य	४४३ बी, सी
वलभद्र प्रकाश	३७३	ब्रह्मोत्तर खड भाषा	१०७
वलवंत प्रकाश	२७०	भँवर गीत	३४७ ए, बी
वलतराज शकुन	४९२ सी, डी	भक्त चिंतामणि	५६
वहाव का वारहमासा	४८६ बी, सी	भक्तमाल महात्म	५१ बी
वहुरंगीसार	३४२ बी	भक्तमाला (भक्त रसवोधनी टीका सहित)	२६१ ए, बी
वारहमास सग्रह	४७१ सी	भक्त विनोद	७०
वारहमासा	१७	भक्त विरदावली	८ ए, बी
वारहमासा	१९ सी	भक्त सागर	७८ बी, सी
वारहमासा	१९०	भक्तामर (भाषा टीका सहित)	१७८
वारहमासा	२३४ ए, डी	भक्ति विलास	८१
वारहमासा	३९० बी	भगत वछल	२६०
वारहमासा	४०९	भगवत् गीता	१७५ ए, बी
दारहमासा	४८९ ए	भगवत्गीता भाषा	२४६
वारहमासा कृष्णजी का	१६६ सी, डी	भगवती विनय	१९६ ए
वारहमासा निपट नादान का	४०१	भगवद्गीता	३५
वारहमासा भक्तसूद	२८६	भगवद्गीता	३५
वारहमासा राजुल का	४२२	भगवद्गीता भाषा	१३
वारहमासा वर्णन	२३३ ए	भजनविनोद	१६८
वारहमासी	४३	भजनावली	४१९ बी
वालकाड रामायण	४१६ ए		

महेशपुराण	४६ पृ	माधुरी बिलसत	४९३
महेश्वरी कृत सगुणावली	४६ सी, डी	मानसीका	६९ पृ, डी
भारतेशी की बारामासी	२६२ डी	मानस दीपिका	३०२ डी
भारत बिलाम	४८४ पृ	मानमीतीर्ष महापद्य	२६३ डी
भारथरी चरित्र	२२९ पृ, डी, सी	मित्र मनोहर	४१
भवनसार संग्रह	२३८ डी, सी, डी	मिथुन श्री महाराज की छोट साहब से	६४
भागवत पञ्चाङ्ग ६६५ डी भाषा	७६	मीराबाई के पद्य	३०३
भागवत चरित्र	५१ पृ	मुग्धवन	३७० डी
भागवत द्वादश स्कंध (भाषा)	१६	सुक्ति रामायण	१६७
भागवत द्वादश स्कंध	२८८ डी	सुहृत् मंत्ररी	४२१ सी
भागवतद्वादश स्कंध	४१३ पृ	सुहृत्कण्ठजुम	४२१ ई
भागवत भाषा द्वादश	२६१ पृ	सुहृत् वित्तममि	४२१ डी
भ्यष पञ्चासिका	३०४	सूक्त गीताई चरित्र	४४
भाषा गीता ज्ञान (महाभूतीता)	१७३ पृ, डी	सूक्तपर्व (महाभारत)	४१२ पी
भाषा मरण	२६	मेघमाला	३०२
भाषा भागवत (मुष्णसागर)	२८८ पृ	मोक्ष-मार्ग विरूपण	३३०
भाषा भागवत पञ्चाङ्ग स्कंध	२७३ पृ	मोहनी चरित्र	३४८ पृ, डी
भाषाभागवत द्वादशस्कंध उत्तरार्ध	४१८ पृ डी	मोहमर्त्य राज्या की कथा	१६४ डी
भाषामूपण अर्द्धरत्न रत्नाकर	८६ पी	पत्नीदा श्री कृष्ण का शागवा	३८४ डी
भाषामूपण	२०१ डी, सी, डी, ई	पात्रा गुण	३४६ पी
मिथुनपर्व	४२१ ई, पृ, डी	पुंगव शीर	५०८
भृगोक्त	४२५	पुंगवमुखा	४६५
भृगोक्त	३०६ पृ, डी, सी	पूनामी सार	१८
मंगल भारती	११७	योगवाधिह	७१
मंगल व्याहृ	३९५	योग संहिता सागर	७८ भाई का के
मतिराम सतसई	३०० के, पृ	रंग भाव माधुरी	१६८
मह चरित्र	९० सी	रंगभूमि	३२५
मदन बिमोह त्रिदाम	२०३ पृ, डी, डी	रघुभाज मन्वारी	२३
मनमोहन मणि बिलाम	३६६ पृ	रत्नस्वस्व रोम-श्रीप प्रथ	३४६ पृ, भाई, डी
मनिहारिन कीला	२०५	रत्न इजारा	४०२
मयूर चित्रम्	२३० डी, डी	रत्न महूर्त	१७१ पृ, डी
महादेव कीला	४७१ ई	रत्न बिलाम	२१६
महाप्रस्थान पर्व (महाभारत)	४१२ ओ	रत्न सागर	२ ई
मौन बत्तीसी	४०५	रत्नज्ञान नामा	१८४ डी
माधव बिलाम	३६६ पृ	रत्न रहस्य की	३४९ पृ
माधवी शंकर द्विचित्रप	२०७ डी		

रमल	३४६ के	राजनीतिभाषा (चाणक्य नीति)	३२१ ए,वी
रमल नवरत्न दर्पण	६२ डी	राजनीति वृद्ध चाणक्य कृत	२४२
रमल प्रश्नावली	४०८	राधाकृष्ण मंगल	४७१ जी
रमल विचार	२४३	राधाकृष्ण विहार कुज कल्प लतिका	४४५
रस ग्राहक चंद्रिका (टीका रसिक प्रिया)	४७४ जी	राधाजी और ललित सखी का वारहमासा	३०८
रस तरंगिणी	४७५ एफ	राधाजी की वारहमासी	४४४
रस मजरी	३६७	राधाजी की चारामहा	४७१ आई, जे, के
रस मजरी	४७५ ई	राधाविलास	११४ ए, वी, सी
रस रजन काव्य	४४९ ए, वी, सी, डी, ई	राधा मंगल	४७१ एच
रस रत्नाकर	४७४ एच	राधा विलास	२०६ वी
रस रत्नावली	२९२ ए, वी, सी, डी	रामकलेवा	३८६ ए, वी
रस रहस्य	२५ ए, वी, सी	रामकलेवा रहस्य	३४५ ए, वी
रसरज	३०० डी., ई., एफ, जी., एच., आई, जे	रामगीताष्टक	२९७ सी, डी
रस शिरोमणि	३९६ सी	रामगुणोदय	१०३ ए
रससागर (व्यक्तिविलास)	३८ सी, डी, ई	रामचंद्र की वारहमासी	५८
रस सारांश	६१ जे, के	रामचंद्रिका	२३३ ई
रस सागरिणी	२९७ जी, एच	रामचरितावली	३६२ वी
रसिक प्रिया	२३३ एफ, जी	राम चरित्र	२२४
रसिक प्रिया टीका या (जगत विलास)	११२ ए	राम जनम	४७३ वी
रसिक विनोद	१७४ ए, वी, सी	राम जानकी चरण चिन्ह	३७८ एफ
रसिक विनोद	२१५ वी, सी, डी	रामत रहस्य की	३४६ एफ
रसिकानंद	१६१ वी	रामनवरत्न	१९६ वी, सी
रसीले तरंग	१५६	रामनाम की महिमा	२०४ ई
राग प्रबोध	३१९	राम वारहखंडी	३९२ ए
रागमाला	१३१	राम मिलन	३१५
राग रत्नाकर	१३३ वी	राम रक्षा	३८३
राग रत्नावली	१२५ वी	रामरस	१३८
रागलावनी छंद चौपाया	१२७ वी	रामरासो	३३७ डी
राग सग्रह	९६	रामविनोद	३७७ ए, वी
राघवचेतावनी प्रश्न	३६६	रामशलाका	४८४ के, एल, एम
राजनीति (हितोपदेश)	८२	रामाश्वमेध	३२६
राजनीति (मित्रलाम)	२६६ वी	राम सावित्री	५२
राजनीति	३१६ आई, जे	राम स्वयंवर	३७१ वी
		रामायण (आरण्यकांड)	४८४ ए

रामायण (अयोध्या कांड)	४८४ बी, सी, डी इ, एफ	कीला मीठनपुरी	३४९ डी
रामायण (किष्किंधा कांड)	४८४ एफ	ईसी मजनु	३९३ ए, बी, सी
रामायण (संकाशकांड)	४८४ एफ, आई, जे	बहुभारमिक बाईसी	४९०
रामायण (बासकांड)	४८४ जे, के, एफ	बसंत बिल्लास	६३
रामायण (जयोध्या कांड)	४८४ एन, ओ	बसंत बिल्लास	५००
रामायण (सुंदरकांड)	४८४ ए	बाणीमूपम	३६९ ए, बी
रामायण (उत्तरकांड)	४८४ सी	वाम बिल्लास	२४ बी
रामायण का बारहमासा	१३७	बासुदेव अष्टक	३०५ डी
रामायण विंगक	२०८ ए, बी	बासुरी छीसा	४७१ बी
रामायण बालकांड की टीका	३७८ डी	बिक्रम भठमई (टीका)	४९६ ✓
रामायणमाळा	३६७ ई, एफ	बिच्चार भास्व	१५ ए, बी
रामायण माहात्म्य	१४८ ए, बी	बिजय शीहाबली	४८४ डब्ल्यू बक्स
रामायण माहात्म्य	२५१	बिजय मुच्छाबली (आदिपर्व)	८३ ए
रामायण रामविकास	१८६	बिजय मुच्छाबली (बच बिराट पर्व)	८३ सी
रामायण संकाशकांड (कृतवासकृत)	२६८	बिजय मुच्छाबली (भीष्म पर्व)	८३ सी
रामायणी	२ डी	बिजय मुच्छाबली (द्रोण पर्व)	८३ डी
रामायणमेघ	२७८ ए, बी, सी	बिजय मुच्छाबली (यज्ञपर्व)	८३ ई, एफ
रामायणक	६१ सी	बिजय मुच्छाबली कर्ण पर्व	८३ डी
रामायणक	४६४	बिजय मुच्छाबली (समापर्व)	८३ एफ
रामायणवाचपायी	३१३	बिजय मुच्छाबली (शक्य पर्व)	८३ आई
रुक्मिणी भंगक	मं नं ३६८ ए, बी	बिजय मुच्छाबली (उद्योग पर्व)	८३ जे
रूस वर्णन	२७४	बिजय मुच्छाबली	८३ के
रोगाकर्षण	१७० सी	बिज्ञान गीता	२३३ एफ आई
रुंकाकांड (रामायण)	४१६ ई, एफ	बिज्ञान प्रकाश	३६३
रुंकाणी रंगत	१२७ ए	बिद्या बत्तीसी	१ ई एफ, जी
रुक्मिणी परिचय शतक	२३७ ए	बिजय पत्रिका	२७२
रुक्मिणी शतक	२३७ डी	बिजय पत्रिका	४८४ आई ^१ जेई ^१ ए ^२ बी ^२ सी ^२
रुग्ण पचीमी	२४४	बिपर्यय का भंग	४२८ डी
रुक्मिणी कलाम	३०० ए, बी सी	बिरह बर्णन बारहमासी	१३० ए, बी
रुक्मिणी (मरहटी कला)	२२० बी	बिरह बिल्लास	१६५ सी
रुग्ण पुराणभाषा (पूर्वार्ध)	११२ ए, ओ	बिरह सत्य	३३७ डी
रुग्ण पुराण भाषा (उत्तरार्ध)	११२ सी डी	बिरह मागर	३४० डी
रुक्मिणी	१००	बिरहिणी बारहमासा	३४
रुक्मिणी	१८७ वी	बिराग संदिपनी	४८४ डी ^२

विश्व पर्व (महाभारत)	४१२ पृ० बी०	वैद्य विलास	१८३ बी
विश्राम मानस	३७२ पृ	ब्रजराज विनोद	५९
विश्व रूप विनय	३४६ ओ	ब्रजविलास	७० पृ, बी
विष्णु पुराण	६१ क्यू, आर	व्यंजन प्रझर	३०४
विष्णु विनोद	१५३ सी	शकावली रामायण	३७२ सी
विसातिन लीला	३५५ पृ, बी	शकुतला नाटक	२५६
विसातिन लीला	४७१ टी	शकुन विचार	४६ ई
वृत्रावन सत्	१०५ पृ, बी	शक्ति चिंतामणि	५७
वृत्त तरंगिणी	३९४ पृ, बी	शनिश्चर की कथा	५६० पृ, बी
वृत्तविचार पिंगल	४६५ जी	शब्द गुजार	० यफ
वृद्ध चाणक्य राजनीति भाषा	५०१	शब्द पारखी	२१०
वृहस्पति कांड	४६ बी	शब्द भागर	२ जी
वैगीमाधव की चारामासी	४७१ ओ	शब्द सागर	१८७ सी
वेद निर्णय पंचामिका	३६ सी	शब्दावली (अजयदामजी)	५ सी
वेदांत त्रयी	२९५	शब्दावली	१५१
वेदांतसार	४७० ई	शब्दावली	१०९
वैताल चरित्र (कृष्णजनम)	२४३ पृ	शब्दावली	४३७ बी
वैताल पञ्चीसी	०७	शब्दावली अथवा दोहावली	१५६
वैताल पञ्चीसी	४२१ पृ	शाल्य पर्व (महाभारत)	४१२ यम, टी
वैताल पञ्चीसी	४७४ बी, सी, डी, ई	शांतिपर्व (महाभारत)	१४९
वैताल कल्प	३४६ गुन	शांतिपर्व (महाभारत)	४१२ यू
वैद्यक के मुस्वे (वैद्य मनोत्सव)	३३२ पृ	शांति शतक	५०३ पृ, बी
वैद्यक जर्नीही	४००	शारदास्तोत्र	१६९
वैद्यक भिपज प्रिया	४६०	शाल होत्र	८० पृ, बी
वैद्यक या मुक्ति विलास	२३१	शाल होत्र भाषा	३३४
वैद्यक योग सग्रह	३ पृ, बी, सी	शालि होत्र	१८३ पृ
वैद्यकसार	२५८	शालि होत्र	३१४
वैद्यकसार संग्रह	२९९	शालि होत्र प्रकाशिका	४५५ पृ, बी
वैद्यकसार सग्रह	३७४	शिक्षा कक्का वत्तीसी	४५४ डी, ई
वैद्यजीवन	४६७	शिक्षा वत्तीसी	६ पृ, बी, सी, डी
वैद्यप्रकाश	१२३	शिव जी की विनती	२०४ सी
वैद्यप्रिया	२३६ पृ, बी	शिवराज भूपण	६७ पृ, बी
वैद्य मनोत्सव	३३२ बी, सी	शिव विनोद	१५३ बी
वैद्य रत्न	२०० पृ, बी, सी	शिव विलास	१५३ पृ
वैद्य विनोद	११३	शिव स्तुति	३४६ यल

दिव स्तोत्र	१९५	संगीत भुव करिप्र	३३१
दीप्र बोध भाषा	२२८ पृ, धी, सी डी	संगीत सार सुराध्याय	१०३ धी
शृंगार तिकटक भाषा	६५	संग्रह	४५१
शृंगार निर्णय	६१ पृ, यम, यन	संग्रह प्रथ मास	४३३
शृंगार दातक	३३० पृ, धी	संग्रह मिहाफदास हृत	३३६ सी
शृंगार शिरोमणि	२०२	संग्रहावली	२६७ आई
श्याम बिलाम	१४१	संग्रहावली	२९७ पृ
श्री कृष्ण गीतावली	२८८ पृ, धी	संग्रहित कविका	६० धी
श्री कृष्ण गीतावली	४८४ धी	संतसरय	४४८
श्री कृष्णचन्द्र श्री का नगरसिध	१६१ मी	संतानकल्प सतिका	३११
श्री कृष्ण की श्री बारहनासी	१६१ पृ, धी	संतो की गाली	२१४ धी
श्री कृष्ण चंद्र श्री की विमली	२०४ धी	सगुनमास	४८४ धी
श्री कृष्ण षडंग	३०९	सगुन बिलास	४८६
श्री कृष्ण रक्षावली	२४७	सगुनावली	५०६ धी
श्री पञ्चरंग साहित्य	४८४ आई	सत पंचासिका	३७८ पृ
श्री मन्मथक महात्म्य	३७०	सत भक्त उपदेश	४८४ आर
श्री भगवत गीता	४८७	सतसई टीका	४७४ आई
श्री मन्मथीता के प्रश्न	३२३	सतषया	९६
श्रीमद्भागवत	१४६	सतषया टीका कविका में	३६५
श्रीमद्भागवत गीता	१०३ सी	सत्यनारायण कथा	१२८
श्रीमद्भागवत भाषा इनाम रईय पूर्वार्ध ८१८ धी		सत्यनारायण कथा	३३०
श्रीराधाकृष्ण रमरामि धीका	३३६ धी	सद्गुरु विनय	४१०
श्री राधा कृष्ण द्विदोहा	३३६ पृ	सदाफकीरी	१८४ ई
श्री शायरमन श्रीके नियम कर्तव्य के पद १२२		सनेह धीका	३०७ पृ, धी
श्री राम अष्टक	३०५ सी	सनेह धीका	४०४ पृ, धी
श्री राममह धीका	३८८ धी सी	सनेह धीका	४९९
श्री निष्णु गीतावली	२८४ मी	सनेह सागर	१६५ धी
श्री हनुमत् यज्ञ	११ पृ	सम्पन्न (महाभारत)	४१२ पृ, आर
श्री हनुमान की श्री शिवभग	२३७ ई	सभा बिलास	३६६ मी, धी
पद रहस्य (रामचरित्र)	३४५ मी, धी ई	समय बोध	२४५ धी
पदरूप मुक्ति (गुरु बोधा श्री गोष्ठी) ७६ पम		समर विजय	४८१ पृ, धी, मी धी
पद पंचासिका अग्रलिपि	३३९	सर्व संग्रह	२४६
पद पंचासिका	२३ पृ, धी मी	सर्वोपयोग कविका	४७० पृ
संस्कृत मोचन	४८४ पृ	सर्षपा	४०० धी, सी
संयुक्त गोवन्दन धीका	२५३ धी	सहजो आई धी बानी	४१६

सागीन भुव चरित्र	३३१	सांगरी त्रिदा	३४
सागीत लैला मजनू	६१ मी	सांगे लोहे का क्षण	२८
सागीत बुदरे मुनीर	१०२	स्मृति महावीर चरित्र	४८१ टी
सागी	४३७ मी	स्त्री पर्व (महाभारत)	४१२ म
सामुद्रक	८० वी	स्वप्न परीक्षा	१३४
सामुद्रक	२७८	स्वप्न परीक्षा	१८०
सामुद्रक की पोथी	४० पृ	स्वप्नार्थ चिन्तामणि	१-४ वी, म
सामुद्रिक	४५१ मी	स्वप्नभेद	७८ म
सामुद्रिक	५०७	स्वप्नोदय	३०
नास्वत साग मजुफर कलानिधि	२७६	स्वप्नोदय	७८ ओं, पी, फ
साहित्य सुधा निधि	१७० पृ, वी,	स्वप्नोदय	१६
साहित्य सुधानिधि	११२ मी	स्वप्नोदय	५०
सिन्हात बंध	१४ टं, एफ	स्वर्गारोहण गमन कथा	२७
सीता स्वयंवर	४८४ यम	स्वर्गारोहण पर्व (महाभारत)	१८१
सुंदर काठ (रामायण)	४१६ पृच	स्वर्गारोहण पर्व	४१२ इत्यु, यम
सुंदर शृंगार	४६९ वी मी,	स्वर्ग विलाम	४२७ वं
सुंदर विलाम	४७० टी०	हम जवाहर	२८१
सुंदरी तिलक	१५०	हमनामा	३३३ पृ, वं
सुंदरी तिलक	४६४	हनुमत चिनय	३०५
सुक्ति मुक्तावली	३६ वी	हनुमन पचाया	१९ प
सुयमनि	३१५	हनुमान चालीसा	४८१ पृम
सुयमागर	३२७ वी	हनुमानजी के कवित	३०७ म
सुदामा चरित्र	१६३	हनुमान नाटक	१८०
सुदामा चरित्र	२८२	हनुमान पंज	३५०
सुदामा चरित्र	३२१ पृ, वी, मी,	हनुमान वडी मोचन	४८४ इत्यु
सुदामा जी की वाराणसी	४६१ मी, टी,	हनुमान वाललीला	४१५
	टं, एफ	हनुमान बाहुरु	४८४ टी, य, मं
सुभाषितावली ग्रंथ की भाषा	२३९	हनुमान विजय	४५१ पृ, वं
सुयश पताका	४१६ जी	हनुमान साठिका (देविपु श्री यजुंग	
सुपेन वैद्यक	४०७	साठिका)	
सूर रत्न	४७१ पृल	हनुमान स्तोत्र	४८४ जेत
सूर सागर	४७१ यम, यन	हरनाम का वारहमासा	१६७ पृ, वं
सूर्य पुराण	४८५ वी, सी, टी, टं, यफ	हरिचरित्र	४१३ वं
	जी, एच, आई	हरिचरित्र (भीष्म पर्व)	४१२ टं
सृष्टि पुराण	४३४	हरिचरित्र भागवत महापुराण	२६१ वं

हरिभक्ति मित्रांत समुंज	१२०	द्वितीपदत	३३६
या		हिम्मत बहादुर चिह्नदापची	३३८ पी
वीकृष्ण श्रुति विद्वदापली		हृदय मानसी पूजा (अष्टयाम सेवा	
हर विकास संग्रह	१०० बी	विधि)	३०८ बी
हरिहर्षं कथा	४२	होरी ज्ञान की	११६ बी, ई
हतर नामा	१८४ बी	होरी संग्रह	१२४ पृ
द्वितीपदेत	३२२ पृ, बी, सी,	..	१६ बी

श्री ज्ञानमन्दिरीय ज्ञान मन्दिर राणपुर

श्री ज्ञानमन्दिरीय ज्ञान मन्दिर, वयपुर